कम्ब रामायणम्

युद्ध काण्ड

प्रथम संस्करण—

१९८२-८३ ई०

पृष्ठसंख्या—१८×२२÷८=८४०

मूल्य— ७०·०० रुपया

मुद्रक—

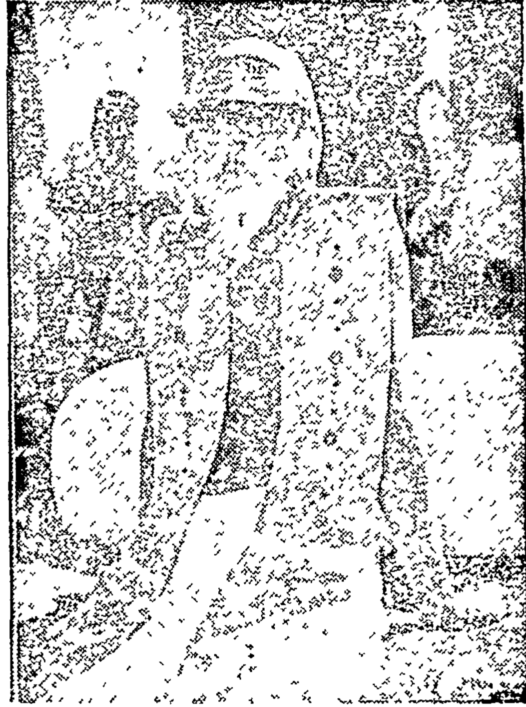
वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

दिवंगत ब्रह्मर्षि आचार्य विनोबा भावे की पुण्यस्मृति में

समर्पण

भारत के द्वितीय शुकदेव ! भीष्म ने स्वार्थवश शरीर त्यागने में "उत्तरायण" की प्रतीक्षा की। आपने प्राणि-हित में, सन्निकट "उत्तरायण" की प्रतीक्षा किये बिना, "दक्षिणायन" में ही दिव्यलोक को प्रयाण किया।



आपने, नागरी लिपि के माध्यम से विविध भाषाई क्षेत्रों के वाङ्मय को अखिल राष्ट्रव्यापी एवं विश्वतोमुख बनाने में अनुपम भूमिका प्रस्तुत की।

अकिञ्चन् ने सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण का कार्य सन् १९४७ ई० में अपनाया। सन् ६९ में तदर्थ "भुवन वाणी ट्रस्ट" की स्थापना की। आपसे अनेक बार शुभाशिष् एवं सतत सराहना प्राप्त कर हमारा श्रम सार्थक होता रहा। आपकी संस्तुति पर स्व० श्रीमन्जी ने "नागरी लिपि परिषद्" के पंजीकरण-आवेदन में आवश्यक सात बुनियादी सदस्यों में मुझको गौरव प्रदान किया।

मेरा परम सौभाग्य है कि "नागरी लिपि" के पुष्कल कार्य में, आज ७६ वर्ष की आयु में, सतत रत हूँ; और श्वासान्त तक ऐसा ही रत रह सकूँ, यह भगवान् से प्रार्थना है।

हमारे अनेकानेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथों में, तमिळ का यह महाकाव्य "कम्ब रामायण" अति जटिल एवं विलक्षण सिद्ध हुआ। इसके पिछले चार खण्ड एवं हमारे सभी कार्यों का आपने अपनी सहज प्रसन्न मुद्रा में अवलोकन किया है। उन पर चर्चा की है।

आज यह शिरोमणि ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ। आपकी पुण्यस्मृति में यह भाषाई मंगल-कलश हम भगवदर्पण कर रहे हैं। "जय जगत्" आपका उद्घोष रहा है। "जय जगत्" कह कर ही हम आपको प्रणाम करते हैं।

१७ नवम्बर, १९८२ ई०

—नन्दकुमार अवस्थी

बाम्बे यज्ञशाला
१४-११-७६

श्री स्वामी चिन्मयानन्द

श्री शेषाद्रि

मदुरै

धन्य ॐ

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।



कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रेम

(प्रेमसहित)

ॐ चिन्मयानन्द

Shri swami Chinmayananda

Zurich, Switzerland
23rd May, 1982

Sri. T. Seshadri,
Madurai, 625011

Blessed Self,

Hari Om ! Hari Om ! Hari Om !
Salutations.

Truths are eternal. They don't change with times or places. Differences in language cannot sully the chaste beauty of the permanent or eternal. Masters have presented it in different ways, and in India this Spiritual Essence has been the theme for all artists, poets and literary men in their mighty compositions.

The Sanskrit Ramayan of Valmiki, considered-to be the first great poetry in the languages of the World, has been an inspiration down the centuries for the entire past of our culture. No other book has influenced literature and art as Ramayana has accomplished.

The spirit of Rama has given the Hindus, even in their material and political life, their utopia, famously expressed as "Rama Rajya"—the reign of Rama.

Naturally, therefore, in all the well developed and important state languages of India we find great poets compellingly inspired to translate and communicate these inevitable life of Rama. If in North India Tulsi Ramayana is popular, in Tamil Nadu Kamban is equally famous and universally accepted.

Kamban Ramayana is not a mechanical translation of the original Valmiki. The poet had his feet planted in his society of his times, and although his head soared above the clouds, in his stupendous vision, his hands wove a pattern of beauty, all his own, within the frame of Valmiki vision. In fact, in some of the situations, I feel Kamban has handled more dexterously and smoothed out the unpolished areas of Valmiki's collosal work of art.

Sri Seshadri is a fit person, graciously equipped for this subtle work of serving as a bridge between North and South with his translation of this Tamil Classic into chaste modern Hindi (with Nagri transliteration as well.)

It wasn't a pleasant job. Though inspired, amidst his domestic and worldly pre-occupations, Prof Seshadri had to struggle now for more than 4 years to accomplish this work. It has been brought out in 5 volumes and here he is presenting the 5th and the last volume. I shall confess that I am awestricken at the plenitude of his ever expanding mastery in language, and the torrential gush of appropriate telling expressions employed to bring out even the suggestive imports of that Tamil Scholar's unerring diction and irresistible food of his images.

If I say that I congratulate Sri. Seshadri, it only means that I have become silent at the benediction behind the frail professor as he sits bent upon his translation work. Jai Jai Sri Ramachandra.

With prem and Om,
Thy Own Self

(हिन्दी अनुवाद)

श्री टी० शेषाद्रि,
मदुरै, 625011

पवित्र आत्मन्

हरि ओम् ! हरि ओम् ! हरि ओम् !

नमस्कार !

सत्य तथ्य सनातन हैं। वे देश या काल के साथ नहीं बदलते। भाषाओं की भिन्नता अमर या अनन्त रखनेवाली उस वस्तु की अव्यभिचारी सौंदर्य पर बट्टा नहीं लगा सकती। आचार्यों ने उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रतिपादित किया है और भारत में यह आध्यात्मिक सार तत्त्व ही सभी कलाकारों, कवियों तथा साहित्यिकों का वर्ण्य-विषय रहता आता है।

वाल्मीकि की संस्कृत भाषा में रचित रामायण जो संसार की भाषाओं के काव्यों में सर्वप्रथम रचित काव्य ग्रंथ है, सदियों से हमारी भारतीय संस्कृति का प्रेरणास्रोत रही है। किसी भी अन्य ग्रंथ ने हमारे साहित्य और कला पर इतना प्रभाव नहीं डाला है जितना कि रामायण ने।

श्रीराम-तत्त्व ने हिन्दुओं को, उनके घोर भौतिक तथा सियासी जीवन में भी उनके यूरोपिया (कल्पित पर इच्छित स्वर्ग) का 'रामराज्य' की कल्पना का अश्वासन दिया है।

फिर, स्वाभाविक था कि भारत की सभी श्रेष्ठ तथा मँजी हुई प्रांतीय भाषाओं में हमें महान कवियों का साक्षात्कार मिले जिन्हें कि श्रीराम के जीवन के तत्त्वों के अनुवाद तथा प्रस्तुतीकरण की अदम्य प्रेरणा हुई। उत्तर में जहाँ गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण लोकप्रिय रहती है, वहाँ तमिळ्नाडु में कम्बन (का ग्रंथ) समान रूप से प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य है।

कम्बन की रामायण मूल-वाल्मीकि-रामायण का यंत्रवत् उलथा नहीं है। कम्बन के चरण अपने समय के समाज की धरती में खूब जमे थे। और यद्यपि उनका सिर मेघमंडल के ऊपर उठा था अपने परमाद्भुत अवलोकन के फलस्वरूप, उनके हाथों ने वाल्मीकि को कल्पना के ढाँचे के अंतर्गत एक सौंदर्य की सृष्टि की जो एक दम उनकी अपनी थी। सच पूछा जाय, मेरी राय में, अनेक संदर्भो का, कम्बन ने अधिक चातुर्य से निर्वाह किया है और वाल्मीकि की बहुत विशद कलाकृति के कम प्रशस्त कच्चे स्थलों को चिकना व चमकदार बना दिया है।

श्री शेषाद्रि योग्य व्यक्ति है, जिसके पास तमिळ महाकाव्य के आधुनिक तथा शुद्ध हिन्दी में अनुवाद द्वारा उत्तर व दक्षिण के बीच (आदान-प्रदान का) पुल वनाने के नाजुक कार्य के लिए आवश्यक ईश्वरदत्त साधन हैं।

यह कार्य कोई पूर्ण सुखद काम नहीं था। हाँ, वे अवश्य अंत:प्रेरणा से भरे थे; तो भी अपने घरेलू तथा सांसारिक कर्तव्यों के बीच श्री शेषाद्रि को इसे पूरा करने में चार-पाँच वर्षों से अधिक जूझना पड़ा। यह कृति पाँच जिल्दों (भागों) में पूर्ण हो रही है। अब पाँचवाँ भाग आपके सामने है। मैं स्वीकार करूँगा कि उनके वर्धनशील भाषा पर अधिकार का विस्तार, तथा उन तमिळ के विद्वान कम्बन की अचूक अभिव्यंजना शैली तथा उनके प्रतीकों तथा चित्रणों के अपार प्रवाह के अंतर्निहित तात्पर्यों का भी प्रगटन करने में उनके द्वारा प्रयुक्त प्रभावकारी तथा उचित शब्दों के प्रयोग में पाया जानेवाला प्रपात-सा-वेग —ये मुझे अभिभूत करते हैं।

जो मैं कहूँ कि मैं श्री शेषाद्रि को बधाई देता हूँ उसका तात्पर्य इतना है कि मैं उन कृशकार्य आचार्य के पीछे, जब वे अपने अनुवाद के पावन कार्य में झुके बैठे हैं, जो ईश्वरीय कृपा है उसके सामने अवाक् हो जाता हूँ।

जय जय श्रीरामचन्द्र !

जूरिच, स्विट्ज़र्लैंड
23 मई, 1982

प्रेम तथा ओम् सहित
आपका ही आत्मीय
ॐ चिन्मयानन्द

FOREWORD

Dr. V. Sp. Manickam, Ph.D., D.Litt.
Vice-Chancellor, Madurai Kamaraj University

Palkalai nagar
Madurai-625021

21-1-1982

Professor T. Seshadri has done a national service by his faithful translation in Hindi (along with Nagri transliteration) of the complete epic of Ramayanam in Tamil by the greatest poet Kamban. This valuable contribution by the learned professor to the wealth of Indian Literature will certainly open new vistas for tne comparative study of Ramayana from the Tamil point of view.



Dr. V. Sp. Manickam

It is traditionally stated that Kamban followed in the footsteps of Valmiki in composing his Tamil epic. This is only a general statement. On minute item-wise comparison in the narration of the story, in the arrangement of incidents, in the delineation of characters, in their conversational points, in the description of natural backgrounds, in the manifestation of culture, in the technique of niceties and subtlities and above all in the universal outlook of life, dissimilarities exceed and excel similarities in the epics of Valmiki and Kamban. Here we have to ponder over the reason for distinction and deviation of Kamban in his epic.

Many Indian scholars are not still aware of the fact that the ancient Tamil Cankam Literature has preserved several notable references to Rama and that according to Tamil version, Rama was a true historical personage. It will be thrilling to know that Valmiki was one of the Tamil poets of the Cankam period and his poem in Purananuru (358) philosophises on the renunciation of Raman. The devotional songs of the twelve Alwars have embedded innumerable new references about Rama

[डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् तमिळ के मूर्धन्य महाविद्वानों में एक हैं। अध्ययन के आधार पर मिली उपाधियों के अलावा साहित्यिक साधना के सम्मानार्थ शॅम्मल् (श्रेष्ठ पुरुष), मुदु पॅरुम् पुलवर् (उच्चकोटि के महाविद्वान), पॅरुन् तमिळ्क् कावलर् (महान तमिळरक्षक) आदि उपाधियों से भी विभूषित हैं। उनको शिक्षण के अलावा अन्वेषण के क्षेत्र में भी उत्तम अनुभव प्राप्त है। वे अण्णामलै विश्वविद्यालय के तमिळ-विभाग के आचार्य तथा भारतीय-भाषा-विभाग के 'डीन' रहने के बाद कारैक्कुडी कालेज के प्रिंसिपल बने। वे तिरुवनंतपुरम् के अंतर्देशीय-द्रविड़भाषा-शास्त्र-पाठशाला के सीनियर फ़ेलो भी रहे हैं। सम्प्रति वे मदुरै के मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के उपकुलपति हैं। वे अंग्रेजी, संस्कृत, मलयाळम और हिन्दी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। साहित्य तथा भाषा के अलावा शैव-सिद्धांत-संप्रदाय के क्षेत्र में भी उनकी बड़ी कीर्ति है। स्वाभाविक था कि उन्हें इस कृति के प्रति सम्मान का भाव हो और ट्रस्ट के कार्य से संतोष हो। ट्रस्ट तदर्थ गौरवान्वित है।]

—ति० शेषाद्रि

traditionally handed down from generation to generation. Kamban who was well versed in these Tamil traditions developed the spirit of independence in the making and texture of his magnificient epic and established himself as an original poet. Kamban is a slave of Rama in his devotion and not a slave of Valmiki in his composition.

The abovs explanation will provs the incalculable value of this translation in Hindi by Professor Seshadri, a renowned scholar both in Hindi and Tamil at a time when we the Indians are trying our best to develop the emotional integration in the minds of the youth. I am convinced that only through a proper study and perfect under-standing of the value of the literary works in all Indian languages, integration by emotion and intelligence is possible. Thus Prof. Seshadri's contribution to the world of Indian Muse will have a far reaching effect on the analytical and synthetic approach. To translate the complete epic of Kamban into Hindi with necessary explanations and expositions is no mean achievement in these days of disturbed atmosphere. Steadfastness, patience, sincerity and national spirit which the Professor possesses in abundance enabled him to take up this monumental project and accomplish it in a few years.

I am happy to know that Bhuvan Vani Trust, Lucknow has published several volumes of translation by Prof. Seshadri and eminent scholars of all Indian languages. by investing heavy amouuts in this laudable objective. But for the financial assistance of this Trust, no work of this nature will see the light of publication. Hence the service of this Trust is unique and exemplary. Both the author and the Trust deserve our appreciation and gratefulness.

Madurai. V. Sp. Manickam
21.1.82

(हिन्दी अनुवाद)

कविश्रेष्ठ कम्बन के (रचित), ऐतिहासिक महाकाव्य, पूरी रामायण का हू-ब-हू हिन्दी अनुवाद (तथा नागरी लिपि में लेखन व उच्चारण —दोनों पद्धतियों पर लिप्यन्तरण) करके प्रोफ़ेसर शेषाद्रि ने राष्ट्र की अच्छी सेवा की है। भारतीय साहित्य-भण्डार को यह अति मूल्यवान देन है और इससे अवश्य ही तमिळ के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन के नये-नये क्षेत्र खुल आयेंगे।

परंपरागत जनश्रुति है कि कंबन ने इस ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना में वाल्मीकि के पदचिह्नों का अनुकरण किया है। यह तो मोटे तौर की साधारण उक्ति है। पर कथा-कथन के प्रकार में, घटना के विधान में, चरित्र-चित्रण में, वार्त्तालाप के विन्यास में, प्राकृतिक पृष्ठभूमि के वर्णनों में, संस्कृति के प्रकाशन में, बारीक और ललित युक्तियों (शैली) में और सबके ऊपर जीवन के विश्वव्यापी दर्शन में— बात-बात को लेकर सूक्ष्मता से देखा जाय तो ध्यान में आयगा कि वाल्मीकि और कम्बन में अंतर अधिक है और विशिष्ट भी, बजाए समानताओं के। यहाँ कंबन के ऐतिहासिक महाकाव्य में विशिष्टता के हेतुओं पर सोचना आवश्यक है।

अनेक तमिऴ के विद्वान अब भी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि तमिऴ के प्राचीन संघ-साहित्य में राम संबंधी अनेक उल्लेखनीय संदर्भ सुरक्षित रखे पाये जाते हैं। और तमिऴ के कथांतरों के अनुसार राम एक सच्चा ऐतिहासिक पुरुष है। यह जानकर लोगों को रोमांच होगा कि 'वाल्मीकी' (वाल्मीकि ही का तमिऴ नाम) संघ काल के तमिऴ कवियों में एक थे और उनकी "पुरनानूरु" (चार सौ मुक्तक कविताओं के संग्रह) की एक कविता ने (सं० ३५८) राम के त्याग की दार्शनिक व्याख्या दी है। बारह आऴवारों के भक्ति के पदों में अनेकानेक अनोखे व नये रामकथा संबंधी संदर्भ अंतर्निहित हैं, जो क्रम से पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी सुनती आ रही है। कंबन इस परंपरा में सने हुए थे और उसी के आधार पर उन्होंने अपने अत्युत्कृष्ट महाकाव्य की संरचना में एक स्वतन्त्रता की भावना का विकास कर लिया है। और इसी के बल अपने को एक मौलिक कवि के रूप में संस्थापित कर लिया है। कम्बन अपनी भक्ति में राम का ग़ुलाम थे पर अपनी रचना में वाल्मीकि के ग़ुलाम नहीं रहे।

यह सफ़ाई प्रो० शेषाद्रि के, जो हिन्दी और तमिऴ के विख्यात विद्वान हैं, इस हिन्दी अनुवाद के अतुल मूल्य को प्रमाणित कर देगी— विशेषकर ऐसे संदर्भ में जब हम भारतीय अपने युवकों के मन में भावात्मक एकता के विचार को बढ़ाने के कार्य में अधिक से अधिक प्रयत्न-तत्पर हैं। मेरा पक्का विश्वास है कि सभी भारतीय भाषाओं के उचित अध्ययन और उनके महत्त्व के पूर्ण ज्ञान द्वारा ही भावात्मक तथा बौद्धिक एकता लाना संभव है। इस भाँति भारतीय चिंतन के संसार को प्रो० शेषाद्रि की भेंट विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक अध्ययन-प्रवेश-द्वार (Approach) पर दूर-गामी प्रभाव डालेगी। कंबन के पूरे महाकाव्य को हिन्दी में आवश्यक व्याख्याओं और टीकाओं के साथ अनूदित करना साधारण साधना का काम नहीं— ख़ासकर विक्षुब्ध वातावरण के इन दिनों में। अचल लगन, सहनशीलता, ईमानदारी और राष्ट्रीय चेतना, इन सबने, जो शेषाद्रि में कसरत से हैं, उन्हें यह चिरस्मरणीय कार्य में हाथ लगाने और फिर कुछ ही वर्षों में संपन्न कराने की क्षमता दिलायी है।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने प्रो० शेषाद्रि और अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट विद्वानों के कई ग्रंथों को इस प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारी धन लगाकर प्रकाशित किया है —यह जानकर मुझे अत्यंत आनंद होता है। इस न्यास की आर्थिक सहायता के बिना ऐसी कृतियाँ प्रकाशन के प्रकाश में आ ही नहीं सकेंगी। इस ट्रस्ट की सेवा विशिष्ट है तथा अनुकरणीय भी। लेखक तथा ट्रस्ट दोनों हमारी बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं।

21-1-1982

(ह०) वी० एस्पी० माणिक्कम्

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक
संत की वाणी।
सम्पूर्ण विश्व में
घर-घर है पहुँचानी ।।



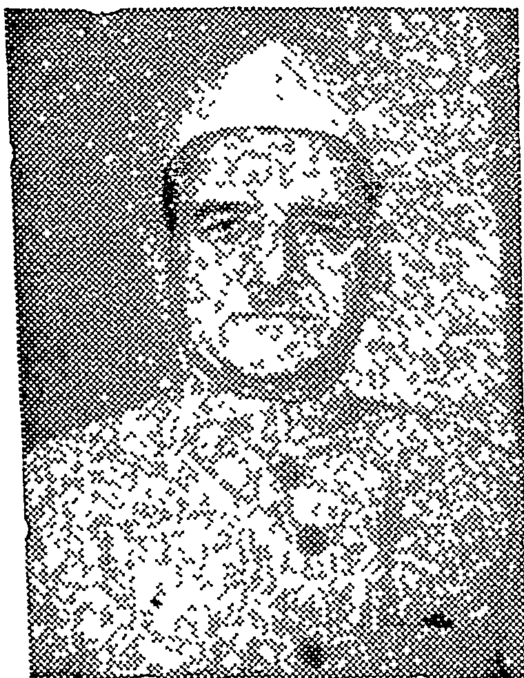
विश्व-वाङ्मय से निःसृत
अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने
अब भूतल-भ्रमण विचारा ।।

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता।

संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है। यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली, लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना ('अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार। सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार)। एक स्वर में एक ही भार (वज़न) से प्रत्येक अक्षर को बोलना। एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। जैसा लिखना वैसा ही बोलना, वैसा ही अक्षर का एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग



आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे

अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता और प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि अन्य लिपियों का उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरकरार रहना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अलिप्यन्तरित हमारी समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली का वाङ्मय रह गया। हमारा प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही

लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य जानिए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। भुवन वाणी ट्रस्ट ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को नष्ट कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। पेट्रोल अरब का है, अतः हम उसको नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते

हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अलबत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अ़रबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अ़रबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अ़रबी' में केवल २८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अ़िल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अ़रबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्तःस्फुट अक्षरों को भी अ़रबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है ? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने ऐसा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से किया है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ; उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग) बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा

दिया जाय, प्रयोग में तो "एक ही रूप में" अपने निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का लेखानुरूप शुद्ध उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। उसी भाँति पंजाबी, बंगाली, मद्रासी के अंग्रेज़ी के उद्‌भट विद्वान् अंग्रेजी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार की वरीयता।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। उसकी रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्‌ध मत कीजिए। खाद्‌यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल तक नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् माने। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है— (अई, अऊ)। किन्तु खडी बोली व उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती है। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत

बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं ? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय ? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है। क्या कभी वह पूर्ण होगा ? पूर्ण तो ब्रह्म ही है। "बेस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् एनिमी ऑफ़् गुड्।" (Best is the greatest enemy of Good.) इसलिए शग़ल और शोव्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं ?

आज क्या करना है ?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— (ही नहीं) बल्कि "भी" बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिऴ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने, अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

ग्रन्थ सम्पूर्ण

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी, लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्ण कर दिया। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी। वर्ष ८१-८२ में युद्धकाण्ड की प्रथम जिल्द (पूर्वार्ध) १०१६ पृष्ठों में सम्पूर्ण होकर आपके सम्मुख आ चुकी है। और आज, युद्धकाण्ड की दूसरी जिल्द (उत्तरार्ध) भी आपके सामने प्रस्तुत है। लगभग ३-४ वर्षों में ही इस प्रकार कम्ब रामायण का महाकाव्य पाँच खण्डों में नागरी-जगत में सम्पूर्ण कलाओं-सहित अवतरित हो गया। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम बारम्बार नमन करते हैं।

इस तमिऴ-भागीरथी के भगीरथ ?

तमिऴ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और ट्रस्ट के विद्वानों तथा शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर ही हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह कथन उत्तरोत्तर चरितार्थ हो रहा है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। श्री शेषाद्रि ही वे भगीरथ हैं, जिनकी विद्वत्ता, निष्ठा और अथक एवं अहर्निश श्रम की बदौलत अखिल भारत में आज यह नागरी-सलिला "तमिऴगंगा" प्रवहमान है।

प्रो० ति० शेषाद्रि का परिचय

इन भगीरथ आचार्य प्रो० ति० शेषाद्रि का जन्म, तमिऴनाडु में तंजाउर ज़िला, तहसील नागपट्टणम् के कोऴैयूर ग्राम में १४-६-१९१६ ई० को हुआ। गाँव में कक्षा ५ तक शिक्षा प्राप्त कर, नागपट्टणम् में

नेशनल हाई स्कूल से सन् १९३३ ई० में एस्० एस्० एल्० सी०, पश्चात् प्रशिक्षित (ट्रेण्ड) होकर अध्यापन-कार्य में लगे। कुछ ही समय बाद, राष्ट्र के सौभाग्य से वे राष्ट्रभाषा की सेवा में लग गये। हिन्दी प्रचार सभा से प्रचारक कोर्स, और निजी तौर पर मद्रास विश्वविद्यालय से 'हिन्दी-विद्वान' की उपाधि प्राप्त की। बी० ओ० एल० करने के उपरांत एम० ए० में निष्णात होकर, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक रहकर शिक्षा, विशेष रूप से राष्ट्रभाषा की शिक्षा एवं प्रचार में रत रहे। सन् १९४७ ई० में मदुरै कालेज में प्राध्यापक एवं आचार्य पद को सुशोभित किया। १९७६ ई० तदनन्तर में सेवानिवृत्त होकर, ६० वर्ष की आयु से पूर्णरूपेण राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु अर्पित हो गये। १९७९-८० में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र में प्राचार्य, और १९८१ से असेफ़ा प्रशिक्षण केन्द्र में प्रिंसिपल रूप में विद्यमान हैं।

मध्यम परिवार में संघर्षशील जीवन बिताते हुए, आंध्र, केरल तथा मद्रास की परीक्षाओं के परीक्षक, मद्रास विश्वविद्यालय की अकेडेमिक कौन्सिल के सदस्य, और सम्प्रति मदुरै कामराज वि० वि० की अकेडेमिक कौन्सिल के, महामहिल राज्यपाल द्वारा मनोनीत, सदस्य हैं।

गांधीदर्शन के सक्रिय विचारक एव लेखक, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज के परमभक्त एवं उनके कई ग्रन्थों के अनुवादक तथा अनगिनत कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं में लेख— यह सब उनकी आजीवन की दिनचर्या है।

और सर्वोपरि, कम्ब रामायण का लगभग ५००० पृष्ठों का तमिऴ ग्रन्थ— लेखन एवं उच्चारण पद्धति पर नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय, पदच्छेद और हिन्दी भावानुवाद ही वह भगीरथ-कार्य है, जिसके वे 'वर्तमान-भगीरथ' हैं। प्रो० शेषाद्रि "भुवन वाणी ट्रस्ट" के आजीवन न्यासी हैं। उनके स्वस्थ शतायु होने की कामना करता हूँ।

तमिऴ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिऴ-जन तक सीमित नहीं है। वह अब न केवल तमिऴ प्रदेश, वरन् संपूर्ण राष्ट्र तथा हिन्दी-जगत की सम्पत्ति बन चुका है। तमिऴ की वर्णमाला, उनके लेखन-उच्चारण में भेद की जटिलता को प्रत्येक खण्ड में पाठकों की सुविधा के लिए दे दिया गया है। प्रथम चार खण्डों में, विद्वान अनुवादक ने व्याकरण का एक धारावाहिक प्रकरण दिया है। कम्ब रामायण के पाँचों खण्डों पर प्रकाशकीय वक्तव्यों एवं विद्वानों से उपलब्ध प्रशस्तियों का सार इस अन्तिम खण्ड में पुनः दे देना पाठकों को रुचिकर होगा:—

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई०

से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिऴ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिऴ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक ही मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद, मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्‌चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिऴनाडु के चीफ़् जस्टिस् श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस् श्री महाराजन; श्री के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन। और सर्वोपरि महर्षि कम्बर् का शोधपूर्ण जीवनचरित्र।

टी० के० सी०

※ कम्ब रामायण के अनेक पदों में, ※ यह चिह्न मुद्रित है। कम्ब रामायण का एक संस्करण टी० के० चिदम्बरनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। उनके मत से ये चिह्नित केवल १५१० पद मात्र ही कम्ब की मौलिक रचना हैं। शेष पद प्रक्षिप्त हैं, कम्बन द्वारा रचित नहीं। अधिकांश विद्वान उनके इस मत से सहमत नहीं हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्‌घोष जनार्दन का उद्‌घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही हैं। जोश की एक लहर आई। विशेष रूप से तमिऴनाडु में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का स्थान-स्थान पर स्वागत एवं उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिऴनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन!

अयोध्या-अरण्यकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

श्री प्रभुदास बी० पटवारी तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों

के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत्-कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं यत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा।" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से निरन्तर राष्ट्रसेवी, तमिळ्नाडु के जाने-माने महापुरुष श्री ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया भी दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळ्नाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय खण्ड) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। २२ मार्च, सन् १९८१ के दिन, कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर, 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी के सम्बन्ध में यह भी कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने—का—के—की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुगम नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी है। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ्-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको कितनी अधिक कठिनाई प्रतीत होगी? इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें उदार होना चाहिए।

उसी प्रकार तमिळ्भाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की

वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिळ में, वे एक हीं अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है। जिसके फलस्वरूप तमिळभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिळ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह, राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

युद्धकाण्ड (पूर्वार्ध) में अनुवादकीय एवं प्रकाशकीय का सार

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळभाषा और तमिळकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम तीन जिल्दों के तारतम्य में, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध में व्याकरण प्रकरण समाप्त हुआ है। विशेष ज्ञान के लिए जिज्ञासु पाठकों को व्याकरण का विशेष अध्ययन करना श्रेयस्कर है।

प्रस्तुत युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) में ग्रन्थ सम्पूर्ण

सर्वप्रथम स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने अपने योग्यतम शिष्य श्री शेषाद्रि के हाथों यह महत्-कार्य सम्पादित होने की भविष्यवाणी की थी। बालकाण्ड में उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ और अब इस अंतिम खण्ड में उन्होंने अपने शिष्य की सफल साधना के उपलक्ष में 'जयघोष' के साथ साधुवाद दिया है। यही नहीं, कम्बन-काव्य के नागरी-अवतरण की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए समग्र भारत के समस्रोत में प्रवाहित होने का निर्देश दिया है।

दूसरा उल्लेखनीय है मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर अपरिमित विद्वान डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् का प्राक्कथन। उन्होंने न केवल उत्तर-दक्षिण, वरन् सभी भाषाई क्षेत्रों के भेद-विभेद के प्रपञ्च को त्यागकर राष्ट्रीय एकीकरण के लिए युवावर्ग का आह्वान किया है। कम्बन की अलौकिक प्रतिभा और उनके ग्रन्थ कम्ब रामायण की नाना दृष्टियों से मौलिकता पर विशद व्याख्या करते हुए, कल्पनातीत एक अद्भुत प्रसंग उपस्थित कर दिया है। अब तक महर्षि अगस्त्य उत्तर-दक्षिण के सेतु माने जाते थे। डॉ० माणिक्कम् ने तमिळ के अति प्राचीत कवितासंग्रह "पुरनानूरु" का उद्धरण देते हुए साधार-सप्रमाण एक तथ्य को प्रकाश

दिया है कि "महर्षि वाल्मीकि" द्रविड़ देश के निवासी थे। फलस्वरूप उनकी मातृभूमि एवं उनकी रचना आदिकाव्य "वाल्मीकि रामायण" की सर्वव्यापकता, इन दोनों से उत्तर-दक्षिण का पुरातन का एकत्व एवं शोधकर्ता विद्वानों के लिए एक नवीन शोध-विषय की सृष्टि हुई है। डॉ० माणिक्कम् ने विद्वान शेषाद्रि के अथक श्रम और भुवन वाणी ट्रस्ट के विविध भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण के कार्य की भूरि-भूरि सराहना की है।

विश्वनगारी लिपि

इसी खण्ड में पृष्ठ ११-१६ में "विश्वनागरी लिपि" पर अकिञ्चन् द्वारा प्रस्तुत एक निबन्ध पठनीय है। उससे सहमत उदार विद्वानों तथा श्रीमानों से सहयोग एवं सहकार की हम अपेक्षा रखते हैं।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का ८४० पृष्ठों का युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) पञ्चम (अन्तिम) खण्ड है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और उत्तर प्रदेश शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत "समापन ग्रन्थ" के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ-रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने, और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। आशा है सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करता रहेगा।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

दिवंगत मनीषी

न्यायमूर्ति स्व० श्री एस्० महाराजन्



लोकप्रख्यात स्व० के० सन्थानम्



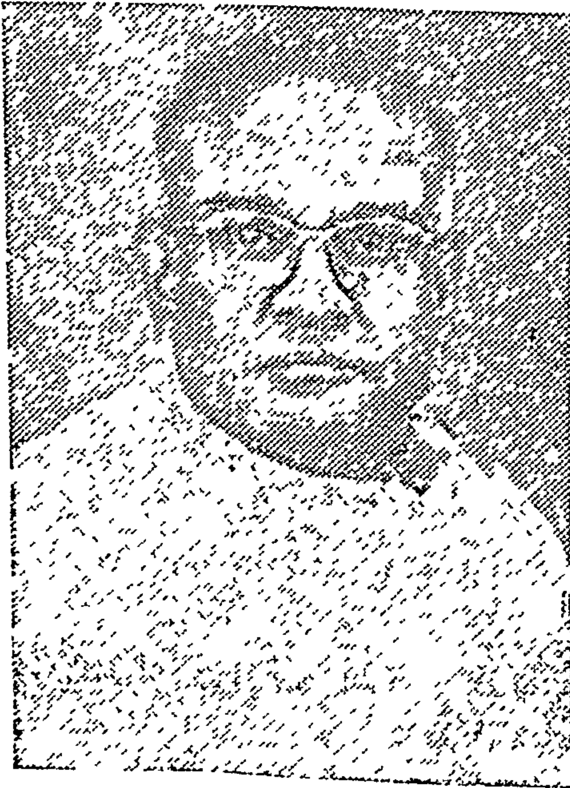
क्लेश का समाचार है कि ये शीर्षस्थ विद्वान आज हमारे बीच नहीं हैं। न्यायमूर्ति स्व० श्री एस० महाराजन्, स्व० श्री के० सन्थानम्; तथा स्व० श्री सा० गणेशन् कम्बन्-अडिप्पॉडि (कम्बन की चरणरेणु), जो "कम्बन् मणिमण्डपम्" के समीप ही कम्बन के चरणों में समाहित हो गये। बालकाण्ड में इनके वक्तव्य पठनीय हैं। उनकी परम शान्ति हेतु हम भगवान से प्रार्थना करते हैं।

—नन्दकुमार अवस्थी

कम्बन्-मणिमण्डपम्



तमिळनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशन-कोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन् द्वारा स्थापित "कम्बन् मणिमण्डपम्।"



कम्बन्-चरणरेणु स्व० श्री सा० गणेशन्



सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

अनुवादक की अवतरणिका

(अन्तिम वक्तव्य)

सहृदय, साहित्यमर्मज्ञ, स्नेही तथा विज्ञ पाठकगण !

अब ग्रंथ समाप्त हो गया है। कार्य का अंजाम हो गया है। प्रभु की कृपा का क्या कहा जाय ?

अब स्वभावतः मेरा मन कार्यभार-निर्वाह की सफलता से उत्पन्न निर्वृति की राहत की साँस लेता है। इसमें न तो गर्वोत्कट आनंद है, न अतृप्ति का रञ्चमात्र क्लेश। जो है सो उनका है ! और उन्हीं को समर्पित है। उनकी सृष्टि में भी गुण-दोष-मय संसार पाया जाता है और वे उसी ससार में रमते हैं। वे चाहें तो मेरे अवगुणों को गुणों में परिवर्तित कर सकते हैं— कम से कम गुणधारा में छिपा दे सकते हैं। वे जो चाहें, करें; और भविष्य यह तमाशा देखे-- मैं कौन होता हूँ कि उनकी लीला में दखल देना चाहूँ या दे सकूँ ?

अब थोड़ा मुड़कर देखता हूँ। पाँच साल बीत गये हैं, मुझे इस शुभ कार्य में हाथ लगाये। इन पाँच सालों में मेरी मनोनौका किन-किन भाव-लहरों में चल चुकी है ? यह स्मरण करना एक ओर थकावट का वाईस वनता है, तो दूसरी ओर एक संयत आनंद के अनुभव का।

अव आभार मानूँ तो किन-किन का ? सवसे परले महात्मा स्वामी चिन्मयानंद जी महाराज का स्मरण हो आता है, जिनकी निराकार, अप्रत्यक्ष तथा सूक्ष्म प्रेरणा इसकी नीव में है। उस प्रेरणा में यह साफ़ इंगित तो नहीं था कि कौन सा पवित्र कार्य मेरे ज़िम्मे आ रहा है, पर साफ़ संकेत था कि बीमार पड़ने का यह समय नहीं; कोई महान कार्य, महान सेवा करने को तैयार रहो ! उनकी कृपा का, आभार-प्रदर्शन के मेरे अल्प शब्दों में, कियत् ही अंश में ही सही, वदला चुकाया जा सकता है ? फिर आयी साकार प्रेरणा (या प्रत्यक्ष आज्ञा कहिए) हमारे वन्दनीय भाषा-तपस्वी श्रीवर नंदकुमार अवस्थी जी की। इन दोनों का प्रभु श्रीराम, और उनके भक्त कंबन की साभार कृपा लेकर अभिनंदन करता हूँ। इन दोनों के संबंध में अधिक वातें कहना मेरी श्रद्धा की पवित्रता को कलुषित करना होगा। अतः उन दोनों को प्रणाम करके आगे वढ़ता हूँ।

अगर काल का संकोच तथा पृष्ठों के अधिक हो जाने का डर नहीं

रहता तो निम्नलिखित सज्जनों में एक-एक का अनेक वाक्यों में आभार लिखना चाहूँगा। पर अब उन विभूतियों का एक साथ नाम लेता हूँ और अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

श्री प्रभुदास बी पटवारी
न्यायमूर्ति श्री एम्० एम्० इस्माइल
डॉ० वी० एस्० पी० माणिक्कम्
श्री ना० म० रा० सुब्बरामन
श्री अवधनंदन
डॉ० शंकरराजु नायुडु
श्री रा० शौरिराजन
श्री के० संतानम जी
जस्टिस महाराजन
कम्बनडिप्पॉडि शा० गणेशन

इन्होंने बड़ी कृपा करके अपने-अपने संस्तुति के वाक्यों से हमें गौरव दिलाया है।

(इधर शोक की बात है कि इनमें तीन— श्री संतानम जी, न्यायमूर्ति श्री महाराजन तथा कम्बन-अडिप्पॉडि नहीं रहे। इनके निधन से सारा साहित्य-संसार अनाथ-सा हो गया है।)

इनके अलावा विशेष रूप से मैं अपनी दो रिश्तेदारिन तरुणियों की चर्चा करना चाहता हूँ, जिसके लिए स्नेही पाठक मुझे क्षमा करें।


श्रीमती जया राजन्

इन्होंने जो सहायता दी उसके मूल्य का सही आँकन तभी हो सकता है जब मेरी स्वास्थ्य-स्थिति का साफ़ भान हो। ग्रंथ का काम चलते-चलते ऐसा समय आ गया जब दृष्टिरोग तथा गिरे हुए स्वास्थ्य ने इतनी भयंकर हालत पैदा कर दी कि मुझे डर लगने लगा कि यह काम मेरे हाथों पूरा नहीं होगा; और यह विश्वास हो गया कि भगवान

ने कोई दूसरा व्यक्ति तैयार कर रखा है और समय आने पर उसको मेरे स्थान पर बिठा देंगे।

उस स्थिति में मेरे मन की लाचारी से उत्पन्न बेचैनी का विचार, असफलता तथा असमर्थता की भावना से उत्पन्न टीस तथा पछतावे का अनुभव, हे सहृदय पाठक! आप कर सकते हैं। तब इन दोनों ने पद्यों की नक़ल उतार के मेरी सहायता क्या की— ग्रंथ-समापन को संभव बना दिया।



श्रीमती ऊषा चंद्र

पहली श्रीमती जया राजन् मेरी सौभाग्यवती कन्या है और दूसरी श्रीमती ऊषा चंद्र मेरी साली की कन्या है। ये दोनों चिरायु तथा सौभाग्यशालिनी रहें —भगवान से मेरी यह विनीत प्रार्थना है।

अन्ततः श्री अवस्थी जी के सुपुत्र श्री विनयकुमार अवस्थी, उनके परिवार के सदस्य, उनके प्रेस के कार्यकर्ता विद्वानों एवं शिल्पियों —सबको सस्नेह नमस्कार करता हूँ। सबके प्रति मेरी शुभकामनाएँ हैं।

अब मैं मौन हो जाता हूँ।

99, भारती रोड,
मदुरै— 625011
25.9.1982

विनीत
ति० शेषाद्रि

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त
(तमिळ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिळ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

तमिळ-देवनागरी वर्णमाला

அ अ	ஆ आ	இ इ	ஈ ई
क	का	कि	की
உ उ	ஊ ऊ	எ ऒ	ஏ ए
कु	कू	कॆ	के
ஐ ऐ	ஒ ऒ	ஓ ओ	ஔ औ
कै	कॊ	को	कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ, ऴ	ள ळ
ற ऱ, ऱ	ன ऩ, ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिळ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ द्रष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिळ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप ॆ ॊ; े ो हैं। देखिए पृष्ठ ३०-३२ पर।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

तमिऴ-उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ है। लब्धलिपि ह्रस्व:—अ इ उ ऍ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)—1मात्रा

दीर्घ:—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:—आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अत: बाद के पदों में ऐ कै···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर) मूल १८ हैं

लब्धलिपि वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
मॅल्लॅऴुत्तु—कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से वह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिऴ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु, पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम्— शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता। उदाहरण : अच्चु, पॉऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद—संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।)
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु। अन्यत्र वह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष : न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्यम ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन्, उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और न के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ सस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते है।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे–– निन्पॅरुञ् को निन्बॅरुञ् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुञ् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आख़िर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी ग़लती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखे) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलाकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तव पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तव 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सव नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

मकराक्ष आदि की मृत्यु सुनकर रावण का मेघनाद को बुलाना; इन्द्रजित् का युद्ध पर जाना; क्रौंचव्यूह और धनु को टंकृत करना; वानरों का भय से काँपना; श्रीराम-लक्ष्मण का राक्षस-सेना के साथ लड़ना; इन्द्रजित् का श्रीराम-लक्ष्मण के युद्ध-चातुर्य से प्रभावित होना; राक्षसों का डरना और इन्द्रजित् का उन्हें डाँटकर राम-लक्ष्मण पर चढ़ आना; लक्ष्मण का सौगन्द खाना; लक्ष्मण का युद्ध करने के लिए उठ आना; राक्षस-सेना का नाश; इन्द्रजित् तथा राम-लक्ष्मण का संवाद; लक्ष्मण-इन्द्रजित् की परस्पर सौगन्द; इन्द्रजित् का भीषण युद्ध करना; लक्ष्मण का जीतना और श्रीराम के कथन से वानरों का जय-जयकार; इन्द्रजित् का आकाश में छिप जाना; लक्ष्मण को ब्रह्मास्त्र चलाने से श्रीराम का रोकना; इन्द्रजित् के छिपने का आशय न जानकर श्रीराम और लक्ष्मण का युद्ध रोकना; श्रीराम का विभीषण को सेना के लिए भोजन लाने भेजना; लक्ष्मण को छोड़कर श्रीराम का अस्त्र-पूजार्थ चलना; इन्द्रजित् का अपने पिता से ब्रह्मास्त्र चलाने सम्बन्धी सलाह करना; रावण का महोदर को वानरों को बहकाने के लिए भेजना; महोदर का बड़ी सेना के साथ जाना; राक्षस-वानर युद्ध; उनका मरकर देव बनना; सुग्रीव आदि का अलग-अलग राक्षस-सेना-मध्य फँस जाना; अकंप-हनुमान का युद्ध और अकंपन की मृत्यु; हनुमान का लक्ष्मण की खोज में जाना; हनुमान का लक्ष्मण से आ मिलना; लक्ष्मण का पाशुपतास्त्र छोड़कर माया-मोह को हटाना; महोदर का हट जाना और मोह से छूटकर वानरों का मिलना; दूतों का रावण से राक्षस-नाश का समाचार देना; रावण का मेघनाद को समाचार देने की आज्ञा देना; इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र चलाने के पूर्वांग में यज्ञ करना; रावणि का आकाश में छिपकर ताक में रहना; महोदर का माया-युद्ध करना, जिसमें इन्द्रादि देव और अन्य ऋषि-मानव आदि दिखाई देते हैं; लक्ष्मण का हनुमान से संशय कहना; इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र चलाना; वानरों का मरना; लक्ष्मण, हनुमान आदि का बेहोश होना; मरे वानरों का देव बनना और उनका देवलोक में स्वागत; इन्द्रजित् का रावण के पास जाकर युद्ध का समाचार देना; इन्द्रजित् और महोदर का अपने-अपने स्थान जाना; श्रीराम का अस्त्र-पूजा के बाद युद्धस्थल में आना; मरे हुए वानरों और बेहोश वीरों को देखकर श्रीराम का दुःख करना; लक्ष्मण को देखकर श्रीराम का विलाप करना; श्रीराम का निद्रामग्न होना; देवों का श्रीराम को सच्ची बात बताना; श्रीराम की बेहोशी; दूतों का रावण से श्रीराम की हालत कहना।

22 सीता-युद्धस्थल-दर्शन पटल 137-150

23 ओषधि-पर्वत पटल 150-197

24 मद्यपान-केलि पटल 197-207

25 मायासीता पटल 207-244

26 निकुंभिला-याग पटल 244-320

श्रीराम का विभीषण आदि की प्रशंसा करना; विभीषण का श्रीराम से लक्ष्मण को यज्ञ रोकने के लिए भेजने की प्रार्थना करना; श्रीराम का लक्ष्मण को आवश्यक उपदेश देना और अस्त्रादि का प्रदान करना; लक्ष्मण का युद्ध पर जाना; लक्ष्मण का वानरों के साथ निकुंभिला जाना; राक्षस-वानर युद्ध; लक्ष्मण का युद्ध करना; इन्द्रजित् के यज्ञ का नाश; इन्द्रजित् का क्रोध के साथ कथन; हनुमान का वीरकृत्य तथा वीर वचन; इन्द्रजित् का उत्तर में कथन; इन्द्रजित् का प्रचण्ड युद्धोपक्रम; देवों का घबड़ाना और सँभलना; लक्ष्मण-इन्द्रजित् युद्ध; लक्ष्मण का ब्रह्मास्त्र की उग्रता कम करना; शिवजी का देवों को श्रीराम-लक्ष्मण की सत्यस्थिति बताना; इन्द्रजित् के सारे अस्त्रों का नष्ट होना; विभीषण का भय और लक्ष्मण का धीरज देना; इन्द्रजित् का विभीषण की निंदा करना; विभीषण का उत्तर देना; विभीषण का इन्द्रजित् के सारथी को मार देना; इन्द्रजित् का रावण के पास जाना।

27 इन्द्रजित्-वध पटल 320-351

रावण-इन्द्रजित् का संभाषण; इन्द्रजित् का लक्ष्मण की प्रशंसा करना; रावण को सलाह देना; रावण का दंभ के साथ झिड़कना और स्वयं युद्ध में जाने को उद्यत होना; इन्द्रजित् का उसे रोककर स्वयं जाना; लक्ष्मण का सामना करना; इन्द्रजित्-लक्ष्मण युद्ध; परस्पर प्रशंसा; विभीषण का लक्ष्मण को सचेत करना; इन्द्रजित् का आकाश में छिपकर प्रस्तर-वर्षा कराना; लक्ष्मण का इन्द्रजित् के हाथ को काट देना; इन्द्रजित् का वीर वचन; लक्ष्मण का श्रीराम की शपथ खाकर अस्त्र चलाना और इन्द्रजित् का सिर कटकर मरना; राक्षसों का भाग जाना; देवताओं के वर से वानरों का जी उठना; अंगद का इन्द्रजित् का सिर उठाकर आगे-आगे चलना तथा हनुमान लक्ष्मण को उठाये हुए पीछे-पीछे जाना; श्रीराम का आनंद; श्रीराम का लक्ष्मण के व्रणों को स्पर्श करके दर्द दूर करना; श्रीराम का विभीषण की प्रशंसा करना।

28 रावण-शोक पटल 351-374

रावण का समाचार पाकर क्रुद्ध होना; फिर कलपना; रावण का युद्धस्थल में जाकर पुत्र को ढूँढ़ना; हाथ को देखना; दुःख की स्थिति; सिर न पाकर रोना; लाश लेकर लंका में आना; मंदोदरी का दुःख; उसका विलाप; रावण का सीता को काटने निकलना और महोदर का रोकना; इन्द्रजित् के शरीर को तैल-द्रोणी में रखना।

29 सेना-संदर्शन पटल 374-396

सेनाओं का आना और रावण को बताना; सेनाओं का वर्णन; रावण का सेनाओं को देखना और दूतों का विवरण देना; सेनाओं की शक्ति का बखान; सेना-नायकों का आकर रावण को नमस्कार करना; सेना-नायकों की हँसी और वह्नि का गम्भीर रूप से प्रश्न करना; माल्यवान का श्रीराम के पराक्रम का वर्णन करना; वह्नि का युद्ध की सलाह देना।

30 मूल-वल-वध पटल 396-493

रावण का सेना-नायकों को राम-लक्ष्मण को मारने की हिदायत देकर भेजना; फिर मूलवल को पहले जाने की आज्ञा देना; चतुरंगिनी सेना-व्यूह का वर्णन; वानरों का भाग जाना; देवों का भय से शिवजी से प्रार्थना करना; शिवजी का सुरों को धैर्य दिलाना; श्रीराम के पूछने पर विभीषण का सेनाओं का वृत्तांत वताना; श्रीराम का अंगद से भागे हुए वानरों को वुला लाने को कहना; वानरयूथपों का अंगद से भागने का कारण वताना; अंगद का उन्हें समझाना; जाम्ववान का उत्तर; जाम्ववान की वात मानकर वानरयूथपों का लौट आना; श्रीराम का लक्ष्मण से मारुति के साथ रहकर वानरों की रक्षा करने की आज्ञा देना; श्रीराम का हनुमान को समझाना; विभीषण और सुग्रीव आदि का लक्ष्मण की सहायता में चलना; श्रीराम का युद्ध करना; श्रीराम के अस्त्र का कार्य; श्रीराम का अकेले ही सवका नाश कर देना; युद्धस्थल में रक्त, शवों आदि का वर्णन; वह्नि का श्रीराम की प्रशंसा करना; श्रीराम का सेना-नायकों के साथ युद्ध करना; देवों का शिवजी से प्रश्न करना और शिवजी का धैर्य दिलाना; श्रीराम के युद्ध का फिर वर्णन; उनका शरमंडप वनाना; वह्नि का राक्षसों से श्रीराम के साथ युद्ध करने को कहना; श्रीराम और वचे राक्षसों का युद्ध; मूलवल का नाश; आगत सेना के वीरों का आक्रमण; राक्षसों का नाश; आपस में लड़कर मरना; श्रीराम की धनुर्विद्या की महिमा; देवों का विस्मय; राक्षसों का नाश और भूमिदेवी की भारनिवृत्ति; देवों का स्तुति करना; श्रीराम का लक्ष्मण की ओर जाना; वानरों का धैर्य पाकर लौट आना।

31 शक्ति-धारण पटल 493-514

रावण का रथ पर आरोहण करके सेनाएँ लेकर जाना; वानरों का कोलाहल; वानर-राक्षस युद्ध; मरी सेना का वर्णन; मारुति और लक्ष्मण द्वारा राक्षसों का नाश; रावण का वानरो पर अस्त्र छोड़ना; लक्ष्मण-रावण युद्ध; रावण का विभीषण पर शक्ति छोड़ना; लक्ष्मण का अपने वक्ष पर उस शक्ति को झेल लेना; विभीषण का रावण के सारथी और अश्वों को मारना; रावण का लंका में चला जाना; विभीषण का आत्महत्या का प्रयत्न और जाम्ववान को रोकना; हनुमान का ओषधि लाकर लक्ष्मण को जिलाना; सवका श्रीराम के पास जाना; श्रीराम का लक्ष्मण की शरणागत-रक्षा के लिए प्रशंसा करना; श्रीराम का विश्रांति पाना।

32 वानर-युद्धभूमि-संदर्शन पटल 514-529

सुग्रीव और वानरों का श्रीराम के द्वारा मारे गये राक्षसों की वड़ाई देखकर विस्मय करना; श्रीराम का विभीषण को सुग्रीव के साथ युद्धक्षेत्र के संदर्शनार्थ भेजना; विभीषण का मरी हुई सेना का विवरण देना; वानरों का वीच में ही देखना छोड़कर श्रीराम के पास चला जाना।

33 रावण-युद्धक्षेत्र-संदर्शन पटल 529-540

लंका में रावण का संतोष के साथ रहना; सहायकों को दावत देने की आज्ञा देना; अप्सराओं का भोगवस्तुओं के साथ आना; राक्षसों का सुखभोग; दूतों का आकर मूल-वल-वध का समाचार देकर विलासिता को रोकना; रावण का विस्मय

38 किरीट-धारण पटल 804-822

39 विदाई पटल 822-840



श्रीराम-पञ्चायतन





अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

युद्धकाण्डम् (उत्तरार्ध)

21. पिरमात्तिरप् पडलम् (ब्रह्मास्त्र पटल)

करन्मकन् पट्ट वाऱुम् कुरुदियिन् कण्णन् कालिन्
चिरम्नेरिन् दुक्क वाऱुम् जिङ्गत्त दीऱुम् जेत्तप्
परमिनि युलहुक् काहा वॆन्बदुम् बहरक् केट्टान्
वरन्मुऱै तुऱन्दान् वल्लैन् तरुदिरॆन् महनै यॆन्ऱान् 2377

करन् मकन्–खर के पुत्र के; पट्ट आऱुम्–मरने का हाल; कुरुतियिन् कण्णन्–शोणिताक्ष के; कालिन्–(वानर के) पैरों से; चिरम् नेरिन्तु–सिर दरार खाकर; उक्क आऱुम्–जो मरा वह प्रकार; चिङ्कत्तु ईऱुम्–सिंह का अंत और; सेनै परम्–सेना का भार; इनि–आगे; उलकुक्कु आकातु–लोक में नहीं रहा; ऎन्पतुम्–यह समाचार; पकर–(दूतों को) कहते; केट्टान्–सुना; वरन् मुऱै तुऱन्तान्–क्रम का उल्लंघन करके; ऎन् मकनै–मेरे पुत्र को; वल्लै–तुरंत; तरुतिर्–लाओ; ऎन्ऱान्–(रावण ने) हुकुम दिया। २३७७

खर के पुत्र (मकराक्ष) के मरने का हाल, शोणिताक्ष का वानर-चरण से सिर के फटने से मरना, सिंह का अन्त और सेना-भार का इस संसार में न रहना आदि बातें रावण ने दूतों के मुख से सुनी तो घटना-क्रम से हटकर उसने आज्ञा दी कि मेरे पुत्र को तुरंत ला दो। २३७७

कूयिन नुन्दै यॆन्ऱार् कुन्ऱॆनक् कुविन्द तोळान्
पोयिन निरुद रियारुम् बोन्ऱिनर् पोलु मॆन्ऱान्
एयिन पिन्नै मीळ्वार् नीयला दियाव रॆन्ना
मेयदु शॊन्नार् तूदर् तादैपाल् विरैविन् वन्दान् 2378

उन्तै कूयिनन्–आपके पिता ने बुलाया; ऎन्ऱार्–कहा (दूतों ने); कुन्ऱु ऎन–पर्वत हो जैसे; कुविन्त–पुष्ट; तोळान्–कंधों वाले (इन्द्रजित्) ने; पोयिन निरुतर् यारुम्–जो गये वे सभी राक्षस; पोन्ऱिनर् पोलुम्–मर गये शायद क्या; ऎन्ऱान्–पूछा; एयिन पिन्नै–प्रेषित होने के बाद; मीळ्वार्–लौटनेवाले; नी अलातु–आपके सिवा; यावर्–कौन हैं; ऎन्ना–कहकर; मेयतु–जो हुआ वह;

तूतर् चॊन्नार्–दूतों ने कहा; ताते पाल्–पिता के पास; विरैविन् वन्तान्–शीघ्र आया। २३७८

(इन्द्रजित् से दूतों ने जाकर कहा कि) आपके पिता ने आपको बुलाया है, तो इन्द्रजित् ने, जिसके कंधे पर्वत के समान पुष्ट थे, पूछा कि युद्ध में जो राक्षस गये थे क्या वे सब मर गये थे शायद ? दूतों ने उत्तर दिया कि युद्ध में जाने की आज्ञा से जो लोग जाते हैं, उनमें आपके सिवा लौट आनेवाले कौन हैं ? उन्होंने, जो हुआ वह सारा हाल बता दिया। इन्द्रजित् अपने पिता के पास शीघ्र आया। २३७८

वणङ्गिनी यैय नॊय्दिन् माण्डनर् मक्क ळॆन्न
उणङ्गलै यिन्रु काण्डि युलप्परु कुरङ्गै नीक्किप
पिणङ्गळिन् कुप्पै मऱ्ऱै नररुयिर् पिरिन्द याक्कै
कणङ्गुळैच् चीदै तानुममररुङ् गाण्ब रॆन्ऱान् 2379

वणङ्कि–पिता का नमस्कार करके; ऐय–तात; मक्कळ् नॊय्तिन् माण्टनर्–लोग आसानी से मर गये; ऎन्न–सोचकर; उणङ्कलै–दुःख मत करें; उलप्पु अरु कुरङ्कै–अनंत संख्या के वानरों को; नीक्कि–मारकर; पिणङ्कळिन् कुप्पै–लाशों के ढेर; मऱ्ऱै–और; उयिर् पिरिन्त–प्राण-वियुक्त; नरर् याक्कै–मनुष्यों के शरीरों को; कणम् कुऴै–भारी कुंडलों की; चीतै तानुम्–सीता और; अमररुम्–देव; काण्पर्–देखेंगे; इन्ऱु काण्टि–आज ही देख लें; ऎन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। २३७९

इन्द्रजित् ने पिता से नमस्कार करके कहा, पिताजी ! लोग यों मर गये, यह समझकर आप दुःखी नहीं हों। असंख्य वानरों की लाशों के ढेरों को और मरे हुए राम-लक्ष्मण के शरीरो को भारी कुंडलधारिणी सीता देखेगी और देव भी देखेंगे। आज ही आप उसे देखेंगे। २३७९

वलङ्गॊण्डु वणङ्गि वान्चॆ लायिर मडङ्गल् पूण्ड
पॊलङ्गॊडि नॆडुन्दे रेऱिप् पोर्प्पणै मुऴङ्गप् पोनान्
अलङ्गल्वा ळरक्कर् तानै यरुबदु वॆळ्ळ मियानैक्
कुलङ्गळुन् देरु मावुङ् गुळाङ्गॊळक् कुऴीइय वन्ऱे 2380

वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वान् चॆल्–आकाश में जा सकनेवाले; आयिरम् मटङ्कल् पूण्ट–एक हजार सिंहों से युक्त; पॊलम् कॊटि–और सुन्दर ध्वजा से अलंकृत; नॆटु तेर्–बड़े रथ पर; एऱि–चढ़कर; पोर् पणै–मारू बाजों के; मुऴङ्क–बजते; पोनान्–गया; अलङ्कल् वाळ्–माला से अलंकृत तलवारधारी; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना; अरुपतु वॆळ्ळम्–साठ वॆळ्ळम्; यानै कुलङ्कळुम्–हाथियों के झुंड; तेरुम्–और रथ; मावुम्–अश्व; कुळाम् कॊळ–झुंडों में; कुऴीइय–जुड़े गये। २३८०

इन्द्रजित् रावण की परिक्रमा व नमस्कार करके एक रथ पर सवार होके गया, जिस आकाशचारी रथ से हजार सिंह जुते थे और जिस पर वहुत

सुन्दर ध्वजा फहरती थी। उसके साथ मारू बाजे बजते गये और माला से अलंकृत तलवार लिये हुए राक्षस वीर साठ 'वॆळ्ळम्' की संख्या में गये। इसके अलावा गजों, रथों और अश्वों के दल भी गये। २३८०

कुम्बिहै तिमिलै शॅण्डै कुरड्डुमाप् पेरि कॊट्टुम्
पम्बैदार् मुरशञ् जङ्गम् बाण्डिल्पोर्प् पणवन् दूरि
कम्बलि युरुमै तक्कै करडिहै डुडिवेय् कण्डै
यम्बलि कणुवै यूमै शहडैयो डार्त्तत वन्ऱे 2381

कुम्पिकै–कुंबिकै; तिमिलै–तिमिलै; चॆण्टै–शॅण्डै; कुरट्टु–कुरड्डु; मा पेरि–बड़ी भेरी; कॊट्टुम् पम्पै–पिटनेवाला 'पंबै'; तार् मुरचम्–माला से अलंकृत नगाड़े; चङ्कम्–शंख; पाण्टिल्–पांडिल; पोर् पणवम्–युद्ध पणव; तूरि–तूर्य; कम्पलि–कंबलि; उरुमै तक्कै करटिकै–उरुमै, तक्कै, करडिहै; तुटि–डमरू; वेय्–मुरलियाँ; कण्टै–कण्डै; अम्पलि–अंबलि; कणुवै–कणुवै; ऊमै–ऊमै; चकटैयोटु–शकट आदि वाद्य; आर्त्तत–नाद कर उठे। २३८१

निम्नलिखित बाजे बजते गये : "कुंबिकै", "तिमिलै", "शॅण्डै", "कुरड्डु", बड़ी भेरियाँ, 'पंबै', माला से अलंकृत नगाड़े, शंख, "पांडिल", मारू पणव, तुरही, "कंबली", "उरुमै", "तक्कै", "करडिकै", डमरू, वंशी, 'कण्डै', "अंबली", "कणुवै", "ऊमै" और "शकडै"। २३८१

यानैमेऱ् पऱैशा लीट्टत् तरैमणि यार्त्तत दाऴि
मानमाप् पुरविप् पॊऱ्ऱार् माक्कॊडि कॊण्ड पण्णैच्
चेनैयोर् कऴलुन् दारुञ् जेडहप् पुळहच् चिल्लि
वानहत् तोडु माऴि यलैयॆन वळर्न्द वन्ऱे 2382

यानै मेल्–हाथियों पर के; पऱै–ढिंढोरों के; चाल् ईट्टत्तु–बड़े दलों के साथ; अरै मणि–बारी-बारी से बजनेवाली घंटियाँ; आऴि आर्त्तलतु–समुद्र के समान नाद करती रहीं; मानम् मा पुरवि–शानदार बड़े अश्व के; पॊन् तार्–स्वर्ण-निर्मित घुंघुरू; मा कॊटि कॊण्ट–बड़ी ध्वजाएँ लिये हुए; पण्णै–दलबद्ध; चेनैयोर्–सेना-वीरों की; कऴलुम्–पायलें; तारुम्–माला; चेटकम् पुळकम् चिल्लि–शानदार व आईनों से सज्जित रथों के पहिये; वानकत्तोटु–आकाश तक; आऴि अलै ऎन–समुद्र की लहरों के समान; वळर्न्तल–(सबकी ध्वनियाँ) बढ़ीं। २३८२

हाथियों पर रहनेवाले ढिंढोरों के बड़े दलों के साथ बारी-बारी से (बजनेवाली) हाथियों के दोनों बाजुओं में लटकनेवाली घंटियाँ समुद्र के समान नाद करती गयीं। शानदार घोड़ों के स्वर्ण की लड़ियाँ, बड़ी-बड़ी ध्वजाओं को लिये हुए चलनेवाले वीरों की पायलें, घुंघुरू और शालीन व शीशे-लगे रथों के पहिये —इनके द्वारा उत्पन्न नाद आकाश तक बढ़ी हुई समुद्र-तरंगों की ध्वनि के समान ऊपर उठे। २३८२

शङ्गोलि वयिरि नोशै याहुळि दळङ्गु काळम्
पोङ्गोलि वरिकण् बीलिप्पेरोलि वेयिन् पोम्मल्
शिङ्गत्तिन् मुळक्कम् वाशिच् चिरिप्पुत्ते रिडिप्पुत् तिण्कैम्
मङ्गुलि नदिर्वु वान मळैयोडु मलैन्द वन्रे 2383

मङ्कु ओलि–शंख की ध्वनि; वयिरिन् ओचै–तुरही का नाद; आकुळि–आहुलि (नामक ढोल); तळङ्कु काळम्–बजनेवाले काहल का; पोङ्कु ओलि–गुंजायमान नाद; वरि कण् पोलि–मयूरपंख-लगे 'पीली' नामक वाद्य का; पेरोलि–बड़ा स्वर; वेयिन् पोम्मल्–वंशी का स्वर; चिङ्कत्तिन् मुळक्कम्–सिंहों का गर्जन; वाचि चिरिप्पु–अश्वों की हँसी (हिनहिनाने की ध्वनि); तेर् इटिप्पु–रथों की गड़गड़ाहट; तिण् कै–मजबूत सूँड़ों वाले; मङ्कुलिन् अतिर्वु–मेघ-सम हाथियों की चिंघाड़; वान मळै योटु–आकाश के मेघों के साथ; मलैन्त–(सबने) होड़ लगायी। २३८३

शंखनाद, तुरहीस्वर, आकुली (नामक पटहे) का स्वर, स्वरित काहल का उभरा हुआ नाद, मयूर-पंखों से अलंकृत "पीली" की ध्वनि, वंशी की गुंजार, सिंह का गर्जन, घोड़ों का हिनहिनाना, रथों की गड़गड़ाहट और सशक्त सूँड़ों वाले मेघ-सम हाथियों की चिंघाड़ —ये सब आकाश के मेघों से होड़ लगाते उठे। २३८३

विल्लोलि वयव रार्क्कुम् विळियोलि तॅळिप्पि नोङ्गुम्
ऑल्लोलि वीरर् पेशु मुरैयोलि युरप्पिर् ड्रोन्रुञ्
जॅल्लोलि तिरडोळ् गॉट्टुञ् जेणोलि निलत्तिर् चॅल्लुङ्
गल्लोलि तुरप्प मर्ड्रैक् कडलोलि करन्द दन्रे 2384

विल् ओलि–धनु की टंकार; वयवर् आर्क्कुम्–वीरों का नर्दन; विळि ओलि–आह्वान का स्वर; तॅळिप्पिन् ओङ्कुम्–जोर से बुलाने के कारण ऊँची; ओल् ओलि–'ऑल्ल' की ध्वनि; वीरर् पेचुम् उरै ओलि–वीरों की बोली का स्वर; उरप्पिल् तोन्रुम्–डाँटने पर हुआ; चॅल् ओलि–अशनि-स्वर; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों को; कॉट्टुम्–ठोंकने का; चेण् ओलि–बहुत ऊँचा नाद; निलत्तिल् चॅल्लुम्–भूमि पर चलते वक्त होनेवाले; कल् ओलि–'गल्ल' की ध्वनि; तुरप्प–इनसे भगाये जाने के कारण; मर्ड्रै–अन्य; कटल् ओलि–समुद्र-गर्जन; करन्ततु–छिप गया। २३८४

धनु की टंकार, वीरों की नर्दनध्वनि, आह्वान से उठी हुई ऊँची 'ऑल्' की ध्वनि, वीरों की आपस में बोलने से उठनेवाली ध्वनि, डाँटने का अशनिस्वर, कंधे ठोंकने से उत्पन्न नाद, भूमि पर चलने से उठती "गल्" की ध्वनि —इन सबने मानो समुद्र के शोर को भगा दिया। इसलिए समुद्र-गर्जन थम गया। २३८४

नाट्कड लनैय तानै नडन्दिडक् किडन्द पारिन्
मेट्कडुत् तॅळुन्द तूळि विशुम्बिन्मेर् ड्रोडर्न्दु वीश

मार्कडऱ् चेनै काणुम् वानवर् महळिर् मातप्
पार्कड लनैय वाट्कण् बनिक्कडल् पडुत्त दन्ऱे 2385

नाल् कटल् अनैय तानै–चार समुद्रों के समान सेना; नटन्तिट–चली, इसलिए; किटन्त पारित्–पड़ी रहनेवाली धरती से; मेल्–ऊपर; कटुत्तु ॲळुन्त–जो सवेग उठी वह; तूणि–धूल; विचुम्पित् मेल्–आकाश पर; तोटर्न्तु वीच–बराबर उठती रही, इसलिए; माल्–बड़ी; कटल् चेनै–सागर-सी सेना; काणुम्–देखने वाले; वानवर् मकळिर्–देवांगनाओं की; मात–शालीन; पाल् कटल् अनैय–क्षीरसागर-सम; वाळ् कण्–सुन्दर आँखों ने; पनि कटल्–शीतल सागर; पटुत्तततु–निर्मित किया। २३८५

चार समुद्र के समान चतुरंगिनि सेना चली, इसलिए विशाल भूमि से धूल वेग के साथ उठी और बराबर आकाश में फैली। इसलिए समुद्र-सदृश सेना के दर्शक देवांगनाओं की क्षीरसागर-सम श्रेष्ठ आँखों ने शीतल समुद्र का सृजन कर दिया। (यानी आँसू बरसाये)। २३८५

आयिर कोडित् तिण्डे रमरर्को नहर मेंन्न
मेयवर् शुऱ्ऱल् तानोर् कोऱ्ऱप्पोऱ् ऱेरिन् मेलान्
तूयपोऱ् चुडर्ह ळॅल्लाञ् जुऱ्ऱुर नडुवट् टोन्ऱुम्
नायहप् परिदि पोन्ऱान् ऱेवरै नडुक्कङ् गण्डान् 2386

अमरर् कोन् नकरम् ॲन्त–देवेन्द्रनगर के-से; आयिरम् कोटि–एक हजार करोड़; तिण् तेर् मेयवर्–मजबूत रथारूढ़ वीरों के; चुऱ्ऱ–घेरे रहते; तेवरै नटुक्कम् कण्टान्–देव-भयकारी (इन्द्रजित्); तान्–स्वयं; ओर् कोऱ्ऱम् पोन् तेरिन् मेलान्–एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर आरूढ़; तूय पोन् चुटर्कळ् ॲल्लाम्–पवित्र और सुन्दर ज्वलंत सारे ग्रहों के; चुऱ्ऱुर–घेरे रहते; नटुवण् तोन्ऱुम्–मध्य दिखनेवाले; नायकम् परिति–स्वामी सूर्य; पोन्ऱान्–के समान रहा। २३८६

देवेन्द्र के महल के वीरों के समान हजार करोड़ राक्षस वीर मजबूत रथों पर सवार होकर देवेन्द्र-भयंकर इन्द्रजित् को घेरे रहे। वह स्वयं एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर सवार था। तब वह ऐसे नायक सूर्य के समान दिखा जो पवित्र, सुन्दर और उज्ज्वल ग्रहों के मध्य शोभता हो। २३८६

शॅन्ऱुवॅङ् गळत्तै यॅय्दिच् चिऱैयोडु तुण्डञ् जॅङ्गण्
ऑन्ऱिय कळुत्तु मेनि कालुहिर् वालो डॊप्पप्
पिन्ऱलिल् वॅळळत् तानै मुऱैपडप् परप्पिप् पेळ्वाय्
अन्ऱिलि लुरुव दाय वणिवहुत् तमैन्दु निन्ऱान् 2387

चॅन्ऱु–जाकर; वॅम् कळत्तै ॲय्ति–भयानक युद्ध-रंग में जाकर; चिऱैयोटु तुण्टम्–पंखों के साथ चोंच और; चॅम् कण् ऑन्ऱिय–लाल आँखों-सहित; कळुत्तुम्–गले और; मेनि–शरीर; काल्–पैर; उकिर–नाखून; वालोटु ऑप्प–पूंछ आदि के युक्त रीति से बनते; पिन्ऱल् इल्–जो कभी पिछड़ती नहीं; वॅळ्ळम् तानै–

'वॆळ्ळमों' की संख्या की सेना को; मुऱै पट–क्रम से; परप्पि–फैलाकर; पेऴ्वाय्–फटे मुख के; अन्ऱिलिन् उरुवतु आय–क्रौंच के रूप में बने; अणि वकुत्तु–व्यूह-रचना करके; अमैन्तु निन्ऱान्–उद्यत रहा। २३८७

इन्द्रजित् ने भयानक युद्धस्थल में जाकर सेना को क्रौंचव्यूह में व्यूहबद्ध किया; जिसके पंख, चोंच, लाल आँखें, ठीक डौल का गला, शरीर, पैर, नाख़ून, पूंछ और फटे मुख से यह व्यूहरचना मेल रखती थी। वह युद्धसन्नद्ध रहा। २३८७

पुरन्दरन् शॆरुविऱ् ऱन्दु पोयदु पुणरि येऴुम्
उरन्दविर्त् तूऴि पेरुङ् गालत्तु ळॊलिक्कु मोदै
करन्ददु वयिऱ्ऱुक् काल वलम्बुरि कैयिन् वाङ्गिच्
चिरम् बॊदिर्न् दमर रञ्ज वूदिनान् ऱिशैयुञ् जिन्द 2388

पुरन्तरन्–पुरन्दर; चॆरुविल् तन्तु पोयतु–युद्ध में (जिसे) दे गया; एऴु पुणरियुम्–सातों समुद्र; उरम् तविर्त्तु–(सारी सृष्टि का) बल मिटाकर; ऊऴि पेरुम् कालत्तुळ्–युगपरिवर्तन के समय; ऑलिक्कुम् ओतै–जो नाद करते उसे; वयिऱ्ऱु करन्ततु–अपने पेट में जो छिपाए रहा; कालन्–यम-सम; वलम् पुरि–दक्षिणावर्त शंख; कैयिन् वाङ्कि–हाथ में लेकर; चिरम् पॊतिर्न्तु–सिरों के हिलते; अमरर् अञ्च–देवों के डरते; तिचैयुम् चिन्त–दिशाओं को अस्त-व्यस्त करते हुए; ऊतिनान्–बजाया। २३८८

इन्द्रजित् ने बाद शंख बजाया। वह शंख इन्द्र को युद्ध में हराकर अपना लिया गया था। युगपरिवर्तन के समय सारी सृष्टि का बल मिटा कर सातों समुद्र उमड़कर जो भयंकर नाद उठाते हैं, वह स्वर मानो उसके पेट में समा गया हो, ऐसा नाद उठानेवाला था। काल के समान था और दक्षिणावर्त शंख था। शंखनाद सुनकर देवों के सिर काँपे और वे भयपीड़ित हो गये। दिशाएँ भी अस्त-व्यस्त हो गयीं। २३८८

शङ्गत्तिन् मुऴक्कङ् गेट्ट कविप्पॆरुन् दानै यानै
शिङ्गत्तिन् मुऴक्कङ् गेट्ट वॊत्तदु विरिन्दु शिन्दि
ऎङ्गुऱ्ऱ वॆन्ना वण्ण मिरिन्ददी दन्ऱि येऴै
पङ्गत्तन् मलैवि लॆन्नच् चिलैयॊलि परप्पि यार्त्तान् 2389

चङ्कत्तिन् मुऴक्कम् केट्ट–शंखनाद जिसने सुना; कवि पॆरु तानै–वानरों की बड़ी सेना; चिङ्कत्तिन् मुऴक्कम् केट्टतु–सिंहगर्जन जिसने सुना उस; यानै ऑत्ततु–हाथी के समान बनी; विरिन्तु चिन्ति–तितर-बितर छितरकर; ऎङ्कुऱ्ऱ–कहाँ गयी; ऎन्ना वण्णम्–न जाना जाए, इस प्रकार; इरिन्ततु–भागी; ईतु अन्ऱि–इसके अलावा; एऴै पङ्कत्तन्–अर्धनारीश्वर के; मलै विल् ऎन्न–मेरु-धनु-ध्वनि के समान; चिलै ऑलि–धनु-ध्वनि; परप्पि–फैलाकर; आर्त्तान्–नर्दन किया। २३८९

शंख-ध्वनि-श्रोता वानर-सेना सिंह-ध्वनि-श्रोता गजों के समान भाग

खड़ी हुई। यह पता ही नहीं चलता था कि कहाँ भागी। यही नहीं इन्द्रजित् ने अर्धनारीश्वर के मेरुधनुष के समान अपने धनु से नाद उठाकर स्वयं नर्दन किया। २३८९

कीण्डत्त शॅविह णॅञ्जङ् किऴिन्दत्त किळर्न्दु शॅल्ला
मीण्डत्त काल्हळ् कैयित्त् विऴुन्दत्त मरनुम् वॅर्पुम्
पूण्डत्त नडुक्कम् वाय्हळ् पुलर्न्दत्त मयिरुम् बौङ्ग
माण्डत्त मत्त्रो वॅन्त्र वानर मॅवैयु मादो 2390

वानरम् ॲवैयुम्–सभी वानर के; चॅविकळ् कीण्टत्त–फटे कानों के हुए; नॅञ्चम् किऴिन्तत्त–चिरे मन के हो गये; काल्कळ्–उनके पैर; किळर्न्तु चॅल्ला–उत्साह के साथ आगे न जाकर; मीण्टत्त–मुड़ गये; कैयित्–हाथों में; मरनुम् वॅर्पुम्–पेड़ और पहाड़; विऴुन्तत्त–नीचे गिर गये; नटुक्कम् पूण्टत्त–काँप गये; वाय्कळ् पुलर्न्तत्त–मुख सूख गये; मयिरुम् पोङ्क–रोमों के गिरते; माण्टत्तम् अत्त्रे–हम मरे न; ॲन्त्र–ऐसा बोले। २३९०

सभी वानरों के कान फट गये; मन विदीर्ण हो गये। उनके पैर उत्साह-हीन होकर मुड़ आये। उनके हाथों के पर्वत और पेड़ फिसलकर गिर गये। शरीर काँपे और मुख सूखे। वे यह कहने लगे कि हमारे बाल कम हो गये और हम मर गये। २३९०

शॅङ्गदिर्च् चॅल्वत्त् शेयुञ् जमीरणत् शिरुवत्त् रानुम्
अङ्गदप् पॅयरि त्तानु मण्णलु मिळैय कोवुम्
वॅङ्गदिर् मौलिच् चॅङ्गण् वीडणत् मुदलाम् वीरर्
इङ्गिवर् नित्त्रा रल्ल तिरिन्ददु शेतै यॅल्लाम् 2391

चॅम् कतिर् चॅल्वत्त्–लाल किरणमाली का; चेयुम्–पुत्र और; चमीरणत् चिरुवत् तानुम्–समीरण का सूनु; अङ्कतत् पॅयरितानुम्–अंगद नाम का वानरपति; अण्णलुम्–महान् श्रीराम; इळैय कोवुम्–और लघुराज; वॅम् कतिर् मौलि–गरम किरणें छिटकानेवाले मुकुटधारी; चॅम् कण् वीटणत् मुतलाम्–लाल आँखों वाला विभीषण आदि; वीरर्–वीर; इवर्–ये; इङ्कु नित्त्रार्–यहाँ टिके रहे; अल्लतु–इनके सिवा; चेतै ॲल्लाम्–सारी सेना; इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २३९१

लाल किरणमाली का पुत्र सुग्रीव और समीरणसूनु, अंगद, महान् श्रीराम, लघुराज लक्ष्मण और गरम किरणें निकालनेवाले मुकुटधारी और अरुणाक्ष विभीषण आदि ये टिके रहे। अन्य सभी अस्त-व्यस्त होकर भाग गये। २३९१

पडैप्पॅरुन् दलैवर् निर्कप् पल्बॅरुन् दानै वेलै
उडैप्पुरु पुत्तलि तोड वूऴिना ळुवरि योदै

किडैत्तिड मुळङ्गि यार्त्तुक् किळर्न्दतु निरुदर् शेनै
अडैत्तदु तिशैह ळेल्ला मन्नव रहत्त रानार् 2392

पटै पॅरु तलैवर् निऱ्क–बड़े सेनापतियों के टिके रहते; पल् पॅरु तानै वेलै–विविध बड़ी सेना का सागर; उटैप्पु उऱु–तीर को तोड़कर जानेवाले; पुनलिन्–जल के समान; ओट–भाग गया; निरुतर् चेनै–राक्षस-सेना ने; ऊऴि नाळ् उदरि–युगांत-सागर के-से उठनेवाले; ओतै किटैत्तिट–नाद को पैदा करते हुए; मुळङ्गि आर्त्तु–उमगकर नारे लगाकर; किळर्न्ततु–उत्साहपूर्ण रहने से; तिचैकळ् ॲल्लाम्–सारी दिशाओं में; अटैत्ततु–रोक लगा दी (या भर गयी); अन्नवर्–वे वानर; अकत्तर् आनार्–युद्ध के मैदान में रह गये। २३९२

बड़े-बड़े सेनानायक खड़े रहे और विविध और बड़ी-बड़ी वानर-सेनाएँ तीर तोड़कर बहनेवाले जल के समान भाग गयीं। तब राक्षस-सेना ने युगांतकालीन समुद्रगर्जन के समान नर्दन करते हुए उमंग के साथ सारी दिशाओं में रोक लगा दी तो वानर-सेना को मैदान में आना पड़ा। २३९२

मारुदि यलङ्गल् मालै मणियणि वयिरत् तोण्मेल्
वीरनुम् वालि शेय्दन् विऱलॅळु शिहरत् तोण्मेल्
आरियर् किळैय गोवु मेऱिन रमरर् वाऴ्त्ति
वेरियम् बूविन् मारि शॊरिन्दन रिडैविडामै 2393

मारुति–मारुति के; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला से; अणि–अलंकृत; मणि वयिरम् तोळ् मेल्–सुन्दर वज्रस्कंध पर; वीरनुम्–श्रीवीरराघव और; वालि चेय् तन्–वाली के पुत्र के; विऱल् ॲळु–मजबूत; चिकरम् तोळ् मेल्–शिखर-सम कंधों पर; आरियर्कु–आर्य श्रीराम के; इळैय कोवुम्–छोटे राजकुमार भी; एऱिनार्–आरूढ़ हुए; अमरर् वाऴ्त्ति–देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके; वेरि–शहद-सहित; अम् पूविन् मारि–सुन्दर फूलों की वर्षा; इटैविटामै चॊरिन्तनर्–लगातार करायी। २३९३

मारुति के खिलनेवाली माला से अलंकृत मनोरम वज्रस्कंध पर श्रीवीरराघव और वाली के पुत्र के शसक्त, पर्वतशिखर-सम कंधों पर आर्य श्रीराम के छोटे भाई आरूढ हुए, तब देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके मधुयुक्त सुन्दर पुष्पवर्षा बराबर करायी। २३९३

विडैयिन्मेऱ् कलुळन् ऱन्मेल् विल्लिनर् विळङ्गु हिन्ऱ
कडैयिन्मे लुयर्न्द काट्चि यिरुवरुङ् गडुत्तार् कण्णुऱ्
ऱडैयिन्मे रुवैयुञ् जाय्क्कु मनुमनङ् गदनॆन् ऱिन्नार्
तॊडैयिन्मेन् मलर्न्द तारर् तोळिन्मेऱ् ऱोन्ऱुम् वीरर् 2394

कण्णुऱ्ऱु अटैयिन्–दृष्टिपथ में आने पर; मेरुवैयुम्–मेरु (पर्वत) को; चाय्क्कुम्–नष्ट कर सकनेवाले; अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद; ॲन्ऱु–जो थे; इन्नार्–उनके; तोळिन्मेल् तोन्ऱुम्–कन्धे पर शोभायमान; मेल्–श्रेष्ठ; मलरन्त–विकसित पुष्प की; तॊटैयिन् तारर्–गुँथी मालाधारी; विल्लिनर्–धनुर्हस्त;

वीरर्–वीर (राम-लक्ष्मण); विटैयित् मेल्–ऋषभ और; कलुळत् तन्मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुकित्ऱ–शोभायमान; कटैयिन् मेल् उयर्न्दल–अपार महिमावाले; काट्चि–दर्शनीय; इरुवरुम्–दोनों (शिव, विष्णु); कट्टुत्तार–के समान लगते थे। २३६४

दृष्टिगोचर होने पर मेरु को भी गिरा सकनेवाले हनुमान और अंगद के कंधों पर दिखनेवाले शोभायमान और खिले पुष्पों की मालाधारी और धनुर्हस्त वीर (राम-लक्ष्मण) ऋषभ-गरुड़ पर शोभायमान उत्कृष्ट दर्शन के पात्र दोनों (शिव और विष्णु) के समान लगे। २३९४

नीलनै मुदला युळ्ळ नॅडुल्बडैत् तलैवर् निन्ड्रार्
तालमु मलैयु मेन्दित् ताक्कुवात् शमैन्व वेलै
ञालमुम् विशुम्बुङ् गात्त नानिलक् किळवन् मैन्दन्
मेलमर् विळैवै युन्नि विलक्किनन् विळम्ब लुड्रान् 2395

नीलनै मुतला उळळ–नील को आदि में लेकर जो रहे; नॅट्ट पटै तलैवर्–बड़े सेनापति; तालमुम् मलैयुम्–तालतरुओं और पर्वतों को; एन्दि–लेकर; निन्ड्रार्–खड़े रहे; ताक्कुवात्–आक्रमण करने; चमैन्त वेलै–जब उद्यत हुए तब; ञालमुम् विचुम्पुम् कात्त–भूमि और आकाश की रक्षा करनेवाले; नाल् निलम् किळवन्–चतुर्विधा भूमि के पति के; मैन्तन्–पुत्र श्रीराम ने; मेल् विळैवु–आगे आनेवाले; अमरै उन्नि–युद्ध को सोचकर; विलक्किनन्–उन्हें रोककर; विळम्पल् उड्रान्–(और) कहने लगे। २३६५

नील आदि श्रेष्ठ सेनापति कालवृक्ष और गिरियों को उठाये हुए खड़े होकर जब आक्रमण करने लगे, तब आकाश और भूमि को बचानेवाले धराधिप दाशरथी ने आगे आनेवाले युद्ध की बात सोचकर उनको रोका। वे आगे बोले। २३९५

कडवुळर् बडैयै नुम्मेल् वॅय्यवन् ऱुरन्द कालैत्
तडैयुळ वल्ल दाङ्गुन् दन्मैयि रल्लिर् ताक्किर्
किडैयुळ दॅम्बा नल्हिप् पिन्निरै निऱ्ऱि रीण्डिप्
पडैयुळ दनैयु मिन्ड्रॅम् विऱ्ऱॊळिल् पार्त्ति रॅन्ड्रान् 2396

वॅय्यवन्–दुष्ट इन्द्रजित्; नुम् मेल्–तुम लोगों पर; कटवुळर् पटैयै–दिव्य अस्त्रों को; तुरन्त कालै–जब चलाएगा तब; तटै उळ अल्ल–वे अवार्य होंगे; ताङ्कुम् तन्मैयर् अल्लिर्–(तुम लोग) सहने की शक्ति नहीं रखते; ताक्किर्कु–आक्रमण करने का; इटै उळतु–जो स्थान है उसे; ऍम्पाल्–हमारे पास; नल्कि–देकर; पिन् निरै–पीछे की पंक्तियों में; निऱ्ऱिर्–खड़े रहो; ईण्टु–यहाँ; इ पटै उळ तनैयुम्–इस सेना के रहते तक; इन्ड्रु–आज; ऍम् विल् तॊळिल्–हमारा धनुकर्म; पार्त्तिर्–देखो; ऍन्ड्रान्–कहा श्रीराम ने। २३६६

जब दुष्ट इन्द्रजित् तुम लोगों पर दिव्य अस्त्र चलाएगा, तब अवार्य

उनको आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। आक्रमण के लिए आगे का स्थान हमको देकर पीछे की पंक्तियों में खड़े रहो। यहाँ इस राक्षस-सेना के रहते तक हमारा धनुकर्म देख लो। २३९६

अरुण्मुऱै　अवरु　निन्ऱा　राण्डहै　वीर　राळि
उरुण्मुऱै　तेरिन्　माविन्　ऩोडैमाल्　वरैयि　नूळि
इरुण्मुऱै　निरुदर्　तम्मे　लेविन　रिसैप्पि　लोरुम्
मरुण्मुऱै　यॅय्दिड्　रैन्नवर्　शिलैवळ्ळ्ङ्　गशनि　मारि 2397

अरुळ् मुऱै—कृपा की आज्ञा के अनुसार; अवरुम् निन्ऱार्—वे भी स्थित हुए; आण्डहै वीरर्—पौरुषपूर्ण वीर; आळि उरुळ् मुऱै—पहियों के बल पर चलकर आनेवाले; तेरिन्—रथों पर; माविन्—घोड़े पर; ओडै—मुखपटालंकृत; माल् वरैयिन्—बड़े पर्वतों (-सम गजों) पर; ऊळि इरुळ् मुऱै—और युगांतकालीन अन्धकार-सम; निरुदर् तम् मेल्—राक्षसों पर; चिलै वळ्ळ्ङ्कु—धनु जिन्हें चलाता है; अचनि मारि—उन (बाण रूपी) अशनियों की वर्षा; एविन्ऱर्—प्रेषित की। २३९७

श्रीराम की करुणामय आज्ञा के अनुसार वानर वीर खड़े हो गये। पौरुषपूर्ण श्रीराम और लक्ष्मण ने पहियोंदार रथों, अश्वों और मुखपटालंकृत गजों और युगांत के अंधकार-सदृश राक्षसों पर, धनुर्निर्गत आशनि-वर्षा करायी। इससे अपलक देवों को भी भ्रमित होने की नौबत आ गयी। २३९७

तेरिन्मेऱ्　चिलैयि　निन्ऱ　विन्दिर　शित्तॅन्　ऱोदुम्
वीररुळ्　वीरन्　कण्डान्　विळुन्दन　विळुन्द　वॅन्नुम्
पारिन्मे　नोक्कि　नन्ऱेऱ्　पट्टनर्　पट्टा　रॅन्नुम्
पोरिन्मे　नोक्कि　लाद　विरुवरुम्　पोरुद　पूशल् 2398

विळुन्दन विळुन्द—गिरते ही रहे; ऍन्नुम्—ऐसा कहने योग्य रीति से; पारिन् मेल् नोक्किल् अन्ऱेल्—भूमि पर (गिरती लाशों को) देखने के सिवा; पट्टनर्—(कौन) हत हुए; पट्टार्—कौन मरे; ऍन्नुम्—यह निश्चित रूप से कहें ऐसा; पोरिन् मेल् नोक्कु इलात—युद्ध में ध्यान जो नहीं देते रहे; इरुवरुम्—दोनों; पोरुत पूचल्—जो लड़ाई लड़े उसको; तेरिन् मेल्—रथ पर; चिलैयिन् निन्ऱ—धनु को टेककर जो खड़ा रहा (या पत्थर की तरह जो खड़ा रहा) उस; इन्तिरचित्तु ऍन्ऱु ओतुम्—इन्द्रजित् के नाम से शंसित; वीररुळ् वीरन्—वीरों में वीर ने; कण्टान्—देखा। २३९८

श्रीराम और लक्ष्मण ऐसे युद्ध करते रहे कि लाशें गिरती ही रहीं और यह निश्चित रहा कि जिस पर शर लगा वह मर ही गया। इतना होने पर भी वे युद्ध पर विशेष ध्यान देकर लड़ते नहीं मालूम होते थे। इस युद्ध को रथ पर से इन्द्रजित् शंसित वीरों में वीर धनु को टेककर देखता ही रहा। ("शिलै" का अर्थ "धनु" भी है, "पत्थर" भी है। इसलिए प्रस्तरवत् यानी अवाक् देखता रहा।)। २३९८

५१ यानैपट् टनवो वॅन्ड्रा निरदमिर् इनवो वॅन्ड्रान्
मानमा वन्द वॅल्ला मड्रिन्दॊळिन् दनवो वॅन्ड्रान्
एनैवा ळरक्क रियारु मिल्लैयो वॆडुक्क वॅन्ड्रान्
वानुयर् बिणत्तिन् कुप्पै मऱैत्तलिन् मयक्क मुड्रान् 2399

वान् उयर्–आकाश तक ऊँचे; पिणत्तिन् कुप्पै–लाशों के ढेर के; मऱैत्तलिन्–छिपाने से; मयक्कम् उड्रान्–भ्रमित हुआ; यानै पट्टनवो–हाथी हत हो गये क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा; इरतम् इड्रनवो ॲन्ड्रान्–रथ मिट गये क्या; वन्त–आगत; मानम्–शानदार; मा ॲल्लाम्–अश्व सारे; मड्रिन्तु ऑळिन्तनवो–मर मिटे क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा; ॲटुक्क–(लाश को) लेने (हटाने); एनै वाळ् अरक्कर्–अन्य तलवारधारी राक्षस; यारुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा (नैराश्य प्रगट किया)। २३९९

गगनोन्नत लाशों के ढेर के छिपाने से इन्द्रजित् भ्रमित हुआ और उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी कि क्या हाथी हत हो गये ? रथ टूट गये ? युद्ध में आगत सभी शानदार अश्व शव हो गये ? मृतकों को उठाने के लिए अन्य तलवारधारी राक्षस वीर नहीं हैं क्या ? । २३९९

शॆय्हिन्ड्रा रिरुवर् वॆम्बोर् शिदैहिन्ड्र शेनै नोक्किन्
ऐयन्दा निल्ला वॆळ्ळ मरुवदु मविह वॅन्ड्रु
वैहिन्ड्रा रल्ल राह वरिशिलै वलत्तान् माळ
ॲय्हिन्ड्रा रल्ल रीदॆव् विन्दिर शाल मॆन्ड्रान् 2400

वॆम् पोर् चॆय्किन्ड्रार्–घमासान युद्ध करते थे; इरुवर्–दोनों ही; चितैकिन्ड्र चेनै–मिटनेवाली सेना को; नोक्किल्–देखने पर; ऐयम् तान् इल्ला–असंदिग्ध; अरुपतु वॆळ्ळम्–साठ 'वॆळ्ळम'; अविक–मिट जाए; ॲन्ड्रु–कहकर; वैकिन्ड्रार्–शाप देते (मार देते है); अल्लर् आक–नहीं तो; वरि चिलै वलत्तान् माळ–सबन्ध धनु के बल से मारने; ॲय्किन्ड्रारुम् अल्लर्–बाण छोड़नेवाले नहीं लगते; ईतु–यह काम; ॲव् इन्तिर चालमो–क्या इन्द्रजाल है; ॲन्ड्रान्–विस्मय-कथन किया। २४००

घमासान युद्ध करनेवाले ये दोनों, हत सेना की स्थिति देखने पर यही लगता था कि, असंदिग्ध रूप से साठ हजार 'वॆळ्ळम्' की सेना को "मरो" का शाप देकर मार रहे हैं। नहीं तो सबंध धनु की शक्ति से मारने के लिए शर नहीं छोड़ रहे (यानी बहुत ही अनायास रूप से लड़ रहे हैं)। यह क्या इन्द्रजाल है ? इन्द्रजित् ने ऐसा विस्मय किया। २४००

अम्बिन्मा मळैयै नोक्कु मुदिरत्तिन् ड्राड्रै नोक्कुम्
उम्बरि नळवुम् ॲन्ड्रु पिणक्कुन्ड्रि नुयर्वै नोक्कुम्
कॊम्बड्र वुदिर्न्द मुत्तिन् कुप्पैयै नोक्कुङ् गॊन्ड्र
तुम्बियै नोक्कुम् वीरर् शुन्दरत् तोळै नोक्कुम् 2401

अम्पित् मा मऴैयै नोक्कुम्–अस्त्रों की घनी वर्षा को देखता; उतिरत्तिन्–रुधिर को; आऱ्ऱै नोक्कुम्–नदी को देखता; उम्परिन् अळवुम्–आकाश तक; चॅन्ऱ–गयी; पिणम् कुन्ऱिन् उयर्वै–लाशों के पर्वत की ऊँचाई को; नोक्कुम्–देखता; कॉम्पु अऱ–दाँतों के टूटने से; उतिर्न्त–गिरे हुए; मुत्तिन् कुप्पैयै–मोतियों की राशियों को; नोक्कुम्–देखता; कॊन्ऱ तुम्पियै–हत हाथियों को; नोक्कुम्–देखता; वीरर् चुन्तरम् तोळै–वीरों की सुन्दर भुजाओं को; नोक्कुम्–देखता। २४०१

इन्द्रजित् विपुल शरवर्षा को देखता। रुधिर की नदी पर दृष्टि दौड़ाता। आकाश तक गयी हुई लाशों के ढेर की ऊँचाई पर ध्यान देता। हाथियों के दाँतों के कटने से गिरनेवाले मोतियों के ढेर को देखता। मारे गये हाथियों को देखता और वीरों की सुन्दर भुजाओं पर दृष्टि दौड़ाता। २४०१

मलैहळै नोक्कु मऱ्ऱ वानुऱक् कुविन्द वन्गण्
तलैहळै नोक्कुम् वीरर् शरङ्गळै नोक्कुन् दाक्कि
उलैहॊळ्वॅम् बॊऱियि नुक्क पडैक्कलत् तॊऴुक्कै नोक्कुम्
शिलैहळै नोक्कु नाणेऱ् ऱिडियिनैच् चॅवियि नेऱ्कुम् 2402

मलैकळै नोक्कुम्–पर्वतों को देखता; मऱ्ऱु–और; अव् वान् उऱ–उस आकाश तक लगे; कुविन्त–ढेर लगे; वन् कण्–क्रूर आँखों वाले; तलैकळै नोक्कुम्–सिरों को देखता; वीरर्–वीरों के; चरङ्कळै–शरों को; नोक्कुम्–देखता; ताक्कि–टकराकर; उलै कॊळ्–भट्ठी के-से; वॅम् पॊऱियिन्–गरम अंगारों के साथ; उक्क–छितरे पड़े रहे; पटै कलत्तु ऑऴुक्कै–हथियारों की पंक्तियों को; नोक्कुम्–देखता; चिलैकळै नोक्कुम्–धनुओं को देखता; नाण् एऱ्ऱु–डोरा टंकोरने से उत्पन्न; इटियिनै–अशनि-स्वर को; चॅवियिन् एऱ्कुम्–कानों पर (सुन) लेता। २४०२

वह पर्वतों को देखता और आकाश तक ढेर में रहे क्रूर आँखों के सिरों को देखता। वीरों (राम-लक्ष्मण) के शरों का बल सोचता। टकराने से गरम अंगारों के साथ गिरे पड़े रहे हथियारों की पंक्तियाँ देखता। उन वीरों के धनुओं को देखता और उनके डोरों से उत्पन्न अशनि-नाद श्रवण करता। २४०२

आयिरन् देरै याड लानैयै यलङ्गल् मावै
आयिरन् दलैयै याऴिप् पडैहळै यऱुत्तु मप्पाऱ्
पोयिन वहऴि वेहत् तन्मैयैप् पुरिन्दु नोक्कुम्
पायुमॅम् बहऴिक् कॊन्ऱङ् गणक्किलाप् परप्पैप् पाऱ्कुम् 2403

आयिरम् तेरै–हजार रथों को; आटल् आनैयै–मजबूत हाथियों; अलङ्कल् मावै–नाचनेवाले घोड़ों को; आयिरम् तलैयै–हजार (वीरों के) सिरों को; आऴि पटैकळै–और नाशकारी हथियारों को; अऱुत्तुम्–काटकर भी; अप्पाल् पोयिन पकऴि–आगे जानेवाले अस्त्रों को; वेकत् तन्मैयै–वेग-गति को; पुरिन्तु नोक्कुम्–

चाव के साथ देखता; पायुम्-सवेग चलनेवाले; वॆम् पकळिक्कु-भयंकर शरों का; कणक्कु ऒन्ऱुम् इला-असाप; परप्पॆ पार्क्कुम्-विस्तार देखता। २४०३

उसने देखा कि बाण हज़ार रथों, मज़बूत हाथियों, नाचनेवाले घोड़ों, वीरों के हज़ारों सिरों और नाशकारी हथियारों को काटकर भी नहीं रुकते। वह उनकी गति को चाव के साथ देखता और यह भी देखता कि त्वरित उनके सामने अपार विस्तार है। २४०३

अऱुबदु वॆळ्ळ माय वरक्करद् माऱ्ऱ्ऱ् कॆऱ्ऱ
ऎऱिवत्र वॆय्व पॆय्व वॆऱ्ऱुऱु पडैह् ळियावुम्
पॊऱिवलम् वॆन्द पॊलच् चाम्बरायप् पोय दल्लाऱ्
चॆऱिवत्र विल्ला वाऱ्ऱैच् चिन्दैयाऱ् ऱॆरिय नोक्कुम् 2404

अऱुपतु वॆळ्ळम् आय-साठ 'वॆळ्ळम्' के; अरक्कर् तम् आऱ्ऱऱ्कु एऱ्ऱ-राक्षसों के बल के योग्य; ऎऱिवत्र-फेंके जानेवाले; ऎय्व-चलाये जानेवाले; पॆय्व-बरसाये जानेवाले; ऎऱ्ऱु उऱु-पीटनेवाले; पटैकळ् यावुम्-सारे हथियार; पॊऱि वलम् वॆन्त पोल-यन्त्रवन (कारखाना) जल गया हो, इस भाँति; चाम्पराय् पोयतु अल्लाल्-राख बनाना छोड़; चॆऱिवत्र इल्ला आऱ्ऱै-पास नहीं जाते यह हाल; चिन्तैयाल्-मन से; तॆरिय नोक्कुम्-सोचकर देखता। २४०४

साठ हज़ार वीरों ने कितने ही तरह के हथियार चलाये। फेंके जानेवाले, चलाये जानेवाले, पीटनेवाले, खोंसनेवाले, चुभोनेवाले, कितने ही हथियार थे पर वे सभी यंत्रवन के समान राख बनने के सिवा जाकर शत्रु पर नहीं लग सके। इन्द्रजित् इस बात को विस्मय के साथ सोचता। २४०४

वयिऱलैत् तोडि वन्दु कॊळ्ळुनर्मेऱ् महळिर् माळ्हिक्
कुयिऱलत् तुक्क वॆन्तक् कुऴैहिऱ्ऱ् कुऴैवै नोक्कुम्
ऎयिऱलैत् तिडिक्कुम् बॆळ्वायत् तलैयिला वाक्कै यीट्टम्
पयिऱलैप् पऱवै पारिऱ् पडिहिलाप् परप्पैप् पार्क्कुम् 2405

वयिऱु अलैत्तु-पेट पीटती हुई; ओटि वन्तु-भागती आकर; कॊळ्नर् मेल्-पतियों के शरीरों पर; मकळिर् माळ्कि-स्त्रियाँ दुःखी होकर; कुयिल् तलत्तु उक्क ऎन्त-कोयलें नीचे भूमि पर गिरी हों जैसे; कुऴैकिऱ्ऱ-व्यथित होनेवालियों की; कुऴैवै नोक्कुम्-व्यथा को देखते; ऎयिऱु अलैत्तु-दाँत पीसकर; इटिक्कुम्-शोर मचानेवाले; पॆळ्वाय्-फटे मुखों के; तलै इला आक्कै-सिरहीन शरीरों (कबन्धों) के; ईट्टम्-झुण्डों का; पयिल्तलै-नाच और; पऱवै-पक्षियों का; पारिल् पटिकिला-भूमि पर न आने का; पटियै पार्क्कुम्-हाल देखता। २४०५

इन्द्रजित् उन स्त्रियों की व्यग्रता देखता, जो पेट पीटती हुई आतीं और अपने पतियों पर रोती हुई गिरतीं और आहत हो भूमि पर गिरी कोकिलाओं के समान व्यग्र होतीं। दाँत पीसते हुए गर्जन करनेवाले फटे-

से मुखों के सिरों से हीन कबंध नाचते थे और उनसे डरकर पक्षी, भूमि पर उतर नहीं आते। इन्द्रजित् इसको भी देखता। २४०५

अङ्गद रन्नद कोडि युळरॅन्ऱु मनुम मॅन्ऱुबाऱ्कु
किङ्गिलि युलह मॅल्ला मिडमिलै पोलु मॅन्ऩुनुम्
ऑङ्गुमिम् मनिद रॅन्बा रिरुवरे कोल्लॅन् ऱुन्नुन्
जिङ्गवे ऱनैय वीरर् गडुमैयैत् तॅरिहि लादान् 2406

चिङ्क एऱु अन्नैय–नर केसरी-सदृश; वीरर्–वीर (हनुमान और अंगद) के; कटुमैयै–वेग को; तॅरिकिलातान्–जो जान नहीं पाया वह इन्द्रजित्; अङ्कतर्–अंगद; अनन्त कोटि उळर्–अनंत कोटि हैं; ऍन्नुम्–कहता; अनुमत् ऍन्पाऱ्कु–हनुमान के लिए; इनि–आगे; इङ्कु–यहाँ; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक में; इटम् इलै पोलुम्–स्थान नहीं है शायद; ऍन्नुम्–कहता; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; इ मनितर् ऍन्पार्–ये नर-कथित; इरुवर् कोल्–दोनों ही है क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नुम्–कहता। २४०६

केसरी-निभ वीर, हनुमान और अंगद की तेज़ी को इन्द्रजित् जान नहीं सका। इसलिए वह विस्मय के साथ कहता कि अनंत कोटि अंगद हैं और हनुमान के लिए दुनिया भर में गन्तव्य स्थान नहीं है। वह भी आश्चर्य किया कि क्या सर्वत्र राम और लक्ष्मण दो ही हैं? । २४०६

आर्क्किन्ऱ वमरर् दम्मै नोक्कुमाङ् गवर्ह ळळ्ळित्
तूर्क्किन्ऱ पूवै नोक्कुन् दुडिक्किन्ऱ विडत्तो णोक्कुम्
बार्क्किन्ऱ तिशैह ळॅङ्गुम् पडुम्बिणप् परप्पैप् पाक्कुम्
ईर्क्किन्ऱ कुरुदि यार्ट्रिन् यानैयिन् पिणत्तै नोक्कुम् 2407

आर्क्किन्ऱ–आनंदरव करनेवाले; अमरर् तम्मै–देवों को; नोक्कुम्–देखता; आङ्कु–वहाँ; अवर्कळ्–वे; अळ्ळि तूर्क्किन्ऱ–जो उठाकर फेंकते; पूवै नोक्कुम्–उन फूलों को देखता; तुटिक्किन्ऱ–फड़कनेवाले; इट तोळ्–बायें कंधे को; नोक्कुम्–देखता; पार्क्किन्ऱ· तिचैकळ् ऍङ्कुम्–जहाँ देखता उन सभी दिशाओं में; पटुम्–दृष्टिगत होनेवाले; पिणम् परप्पै–लाशों के ढेरों को; पार्क्कुम्–देखता; कुरुति आट्रिन्–रक्त-नदी से; ईर्क्किन्ऱ–खींच लिये जानेवाले; यानैयिन् पिणत्तै नोक्कुम्–गजशवों को देखता। २४०७

वह आनंद-आरव करनेवाले देवों को देखता और उनके बरसाये हुए पुष्पों को देखता। फड़कनेवाली अपनी बायी भुजा को देखता और लाशों के विस्तार को देखता, जो सभी दृष्टिगोचर दिशाओं में पाया जाता। उन गज-शवों को देखता, जो रुधिर-नदी में खींच लिये जाते। २४०७

आयिर कोडित् तेरु मरक्करु मॉळिय वल्लार्
मायिरुम् जेनै यॅल्ला माय्न्दवा कण्डुम् वल्लॅ

पोयित् कुरक्कुत् तात्त पुहुन्दिल दत्रे पौंरुड्रेर्त्
तीयवत् इत्मे लुळ्ळ पयत्तिताड् कलक्कन् दीरा 2408

आयिरम् कोटि-हज़ार करोड़; तेरुम्-रथों; अरक्करुम्-और राक्षसों को; ओळिय-छोड़कर; अल्लार्-अन्यों की; मा इरु चेत्तै ॲल्लाम्-बहुत बड़ी सेनाएँ, सारी; मायन्तवा कण्टुम्-मर गयीं देखकर; वल्लै-उतावली के साथ; पोयित्त-जो गयी; कुरक्कु तात्तै-वानर-सेना; पौत् तेर्-स्वर्णरथारूढ़; तीयवत् तत्त मेल् उळ्ळ-दुष्ट (इन्द्रजित्) से; पयत्तिताल्-भय के कारण; कलक्कम् तीरा-भ्रम न दूर हुआ इसलिए; पुकुन्तिलतु-लौट नहीं आयी। २४०८

एक हज़ार करोड़ रथों और राक्षसों को छोड़कर अन्य सारी सेना मिट गयी। यह देखकर भी जो वानर-सेना भाग गयी थी, वह स्वर्ण-रथारूढ़ इन्द्रजित् से भय के कारण भ्रांति से न छूटकर लौट नहीं आयी। २४०८

तळप्पॅरुञ् जेत्तै वॅळ्ळ मरुबदुन् दलत्त दाह
अळप्परुन् देरि नुळ्ळ दायिरक् कोडि याहत्
तुळक्कमि लाड्रल् वीरर् पौरुदपोर्त् तौळिलै नोक्कि
अळप्परुन् दोळैक् कौट्टि यञ्जतै मदलै यार्त्तात् 2409

तळम् पॅरु चेत्तै वॅळ्ळम्-दल-बद्ध बड़ी सेना के 'वॅळ्ळम्'; अरुपतुम्-साठों; तलत्ततु आक-धराशायी हो गये; अळप्परुम् तेरित्-अनंत रथों के वीरों का; उळ्ळतु-जो बचा रहा वह; आयिरम् कोटि आक-हज़ार कोटि का ही रहा; तुळक्कम् इल्-अचंचल; आड्रल् वीरर्-बलवान वीर; पौरुत पोर् तौळिलै-जो लड़े उस लड़ाई के कार्य को; नोक्कि-देखकर; अञ्चतै मतलै-अंजनासुत ने; अळप्पु अरु-अमाप; तोळै कौट्टि-अपने कंधों को ठोंककर; आर्त्तात्-नाद उठाया। २४०९

दलबद्ध बड़ी राक्षस-सेना मिट्टी में मिल गयी। बेशुमार रथों की उस सेना के केवल एक हज़ार करोड़ ही बच सके। अचंचल मन के बलवान वीर राम और लक्ष्मण का यह अपूर्व युद्धकर्म देखकर अंजनासुत ने अपने अमाप कंधों को ठोंककर उच्च नर्दन किया। २४०९

आरिडै यनुम नार्त्त वार्प्पौलि यशनि कॅळात्
तेरिडै निन्रु वीळ्न्दार् शिलर्शिलर् पडैहल् शिन्दिप्
पारिडै यिरुन्दु वीळ्न्दु पदैत्तनर पैम्बौ निञ्जि
ऊरिडै निन्रु ळारु मुयिरिनो डुदिरङ् गान्रार् 2410

अरुमै इटै-अगम युद्धस्थल में; अनुमन् आर्त्त-हनुमान द्वारा उठाया गया; आर्प्पु ऑलि-नर्दन-स्वर (रूपी); अचत्ति कॅळा-अशनिनाद सुनकर; चिलर्-कुछ राक्षस; तेर् इटै निन्रु वीळ्न्तार्-रथ से नीचे गिरे; चिलर्-कुछ; पटैकळ् चिन्ति-हथियार गिराकर; पार् इटै इरुन्तु-भूमि पर से ही; वीळ्न्तु-गिरकर; पतैत्ततर्-छटपटाये; पचुमै पौत् इञ्चि-चोखे स्वर्ण के प्राचीरों के मध्य; ऊर् इटै

निऩ्ऱुळारुम्–नगर में जो खड़े रहे उन्होंने भी; उयिरिऩोटु उतिरम् काऩ्ऱार्–अपने प्राणों के साथ रक्त वमन किया। २४१०

कठोर युद्धस्थल में हनुमान ने जो नारे लगाये, उनकी ध्वनि रूपी अशनि को सुनकर कुछ राक्षस रथों पर से नीचे गिर गये। कुछ राक्षस जो भूमि पर ही रहे अपने हथियार गिराकर भूमि पर गिरे और छटपटाये। चोखे सोने के प्राचीरों के मध्य लंका नगर में रहनेवाले राक्षसों ने भी अपने प्राणों के साथ रक्त का वमन कर दिया। २४१०

अञ्जिऩीर् पोमिऩ् निऩ्ऱो रार्प्पॊलिक् कऴियर् पालिर्
वॆञ्जमम् विळैप्प दॆऩ्ऩो नीरुमिव् वीर रोडु
तुञ्जिलिर् पोलु मऩ्ऱो वॆऩ्ऱवर्च् चुऴित्तु नोक्कि
मञ्जिलिर् करिय मॆय्या ऩिरुवर्मे लॊरुवऩ् वन्दाऩ् 2411

मञ्चिलिल्–मेघ से अधिक; करिय मॆय्याऩ्–काले रंग के शरीर के इन्द्रजित् ने; इऩ्ऱु–अब; ओर्–एक; आर्प्पु ऑलिक्कु–नारे के स्वर के सामने; अऴियल् पालिर्–मरनेवाले; अञ्चितीर्–कायर; पोमिऩ्–(लौट के) चलो; वॆम् चमम्–कठोर युद्ध; विळैप्पतु ऍऩ्ऩो–करो कहाँ; नीरुम्–तुम भी; इव् वीररोटु–इन (मृतक) वीरों के साथ; तुञ्चिलिर् पोलुम् अऩ्ऱो–मर ही गये न; ऍऩ्ऱु–कहा और; अवर् चुऴित्तु नोक्कि–उन पर कोपदृष्टि डालकर; इरुवर् मेल्–उन दोनों पर; ऑरुवऩ्–अकेले ही; वन्ताऩ्–चढ़ आया। २४११

मेघ से भी काले रंग के इन्द्रजित् ने उनको डाँटा। एक ही नारे के सामने मरनेवाले, हे कायर लोगो! लौट चलो। कहाँ करोगे कठोर युद्ध? तुम भी इन (मृत) वीरों के साथ मर गये न। उन पर कोप-दृष्टि दौड़ाकर वह इन दोनों पर अकेले ही चढ़ आया। २४११

अक्कणत् तार्त्तु मण्डि यायिर कोडित् तेरुम्
पुक्कऩ नेमिप् पाट्टिऱ् किऴिन्दऩ पुवऩ मॆन्नत्
तिक्कणि निऩ्ऱ यानै शिरम्बॊदि रॆऱियप् पारिऩ्
उक्कऩ विशुम्बिऩ् मीऩ्ग ळुदिर्न्दिडत् तेव रुट्क 2412

अ कणत्तु–उसी क्षण; तिक्कु अणि निऩ्ऱ यानै–दिशाओं के शृंगाररूप स्थित गजों के; चिरम् पॊतिर् ऍऱिय–सिर काँप उठें और; विचुम्पिऩ् मीऩ्कळ्–आकाश के नक्षत्र; पारिऩ्–भूमि पर; उक्कु अऩ–टूटे-से; उतिर्न्तिट–गिरें और; तेवर् उट्क–देव डरें, ऐसा; आयिरम् कोटि तेरुम्–हजार करोड़ रथ; आर्त्तु मण्टि–बड़े शोर के साथ पास आये और; नेमि पाट्टिल्–चक्रों के चलने से; पुवऩम् किऴिन्तऩ ऍऩ्ऩ–भूमि चिर गयी हो ऐसा; पुक्कऩ–युद्धस्थल में पहुँचे। २४१२

तभी दिशाओं के शृंगार, दिग्गजों के सिर काँपने लगे। आकाश के नक्षत्र भूमि पर चू पड़े। देवगण भयातुर हुए। अपने चक्रों को, मानो भूमि को चीरते हुए चलाकर एक हज़ार रथ युद्ध के मैदान में आ पहुँचे। २४१२

मार्रसौल् ऱिळैयवन् वळैविऱ् चङ्गरत्
तेऱ्ऱिनन् वणङ्गिनिन्ऱ् ऱियम्बु वानिहल्
आऱ्ऱिल लरवुकौण् डशैप्प वारमर्
तोऱ्ऱलॅ लॅन्ऱुकौण् डुलहम् जौल्लुमाल् 2413

वळै विल्–वक्र धनु को; चॅम् करत्तु–लाल हाथ में; एऱ्ऱिनन्–लिये हुए; वणङ्कि निन्ऱु–नमस्कार करके; इळैयवन्–छोटे (लक्ष्मण) ने; माऱ्ऱम् ऑन्ऱु–एक बात; इयम्पुवान्–कही; इकल् आऱ्ऱिलन्–वैर दिखानेवाले इन्द्रजित् के; अरवु कोण्टु अचैप्प–नागपाश से बाँधने से; अरुमै अमर्–अगम युद्ध में; तोऱ्ऱलॅन्–हार गया; ऍन्ऱु–ऐसा; उलकम् चौल्लुम्–लोक (निंदा) कहेगा। २४१३

वक्र धनु को अपने लाल हाथ में लिये हुए लक्ष्मण ने नमस्कार करके श्रीराम से निवेदन किया कि वैरी इन्द्रजित् के नागपाश के बंधन से मैंने श्रेष्ठ युद्ध में हार खायी। इसको लेकर दुनिया मेरी निंदा करेगी। २४१३

काक्कवुङ् गिऱ्ऱिलन् काद लणबरैप्
पोक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नौरुवन् पोय्प्पिणि
आक्कवुङ् गिऱ्ऱिलन् अमरि लारुयिर्
नीक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नॅन्ऱु निन्ऱदाल् 2414

कातल् नण्परै–प्यारे मित्रों की; काक्कवुम्–रक्षा; किऱ्ऱिलन्–नहीं कर सका; पोक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–(पाश को) हटा नहीं सका; ऑरुवन् पोय्–अकेले जाकर; पिणि आक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–(इन्द्रजित् को) हानि भी नहीं कर सका; अमरिल्–युद्ध में; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–त्याग भी नहीं सका; ऍन्ऱु निन्ऱतु–ऐसी निंदा स्थिर हो गयी है। २४१४

"वह प्यारे मित्रों को बचा नहीं सका। पाश नहीं हटा सका। अकेले जाकर इन्द्रजित् को कोई क्लेश भी नहीं दे सका, युद्ध में अपने प्राण भी नहीं छोड़ सका" यह निंदा की बात टिक गयी है। २४१४

इन्दिरन् पहैयॅनु मिवनै यॅन्शरम्
अन्दरत् तरुन्दलै यऱुक्क लावॅनिन्
वॅन्दौऴिऱ् चॅय्हैयन् विरुन्दु मायॅनु
मैन्दरिऱ् कडैयॅनप् पडुवन् वाऴियाय् 2415

वाऴियाय्–आयुष्मान्; इन्तिरन् पकै ऍनप्–इन्द्रशत्रु-कथित; इवनै–इसके; अरु तलै–अपूर्व सिर को; ऍन् चरम्–मेरा शर; अन्तरत्तु–आकाश में ही; अऱुक्कलावु ऍनिन्–नहीं काटेगा तो; वॅम् तौऴिल् चॅय्कैयन्–नृशंसकारी (यम) का; विरुन्तुम् आय्–अतिथि बनूं और; मॅटु मैन्तरिल्–सम्मान्य लोगों में (गणना न पाकर); कटै–निकृष्ट; ऍन पटुवन्–कहा जाऊँ। २४१५

आयुष्मान्! इन्द्रशत्रु-कथित इसके बहुमूल्य सिर को मेरा शर

अन्तरिक्ष में ही नहीं काटे तो क्रूरकर्म यग के मेहमान बनकर जो गौरव समन्वित हुए उनमें मेरी गिनती नहीं होगी और मैं अति निकृष्ट रहूँगा । २४१५

नित्तुडै मुन्नरियान् नॅऱियिल् नीर्मैयान्
तन्नुडैच् चिरत्तैयॅन् शरत्तिऩ् तळ्ळिनाऩ्
पॊन्नुडै वनैकऴऱ् पॊलम्बॊऩ् ऱोळिनाय्
ऎन्नुडै यडिमैयु मिशैयिऩ् ऱामरो 2416

पॊन् उडै वनै–स्वर्णनिर्मित; कऴल्–पायलधारी; पॊलम् पॊन् तोळिनाय्–स्वर्ण (-आभरणों) से अलंकृत कंधोंवाले; निन् उडै मुन्नर्–आपके ही सामने; यान्–मैं; नॅऱि इल् नीर्मैयान्–सन्मार्ग पर जाने का स्वभाव जिसका नहीं; तन्नुडै–उसके; चिरत्तै–सिर को; ऎन् शरत्तिल् तळ्ळिनाल्–अपने बाण से काट गिराऊँ तभी; ऎन् उडै अडिमैयुम्–मेरी दासता भी; इशैयिऩ् ताम्–यशस्विनी होगी । २४१६

स्वर्ण-निर्मित वीर पायलधारी और स्वर्णाभरणालंकृत कंधों वाले ! आपकी ही आँखों के सामने उस सन्मार्गप्रवेश-हीन इन्द्रजित् का सिर काट डालूँ, तभी मेरी दासता यशस्विनी होगी । २४१६

कडिदिनि युलहॅलाङ् गण्डु निऱ्कवॅन्
अडुशर मिवन्ऱलै यऱुत्ति लादॅनिन्
मुडियवॊन् ऱुणर्त्तुवॅ नुनक्कु नान्मुयल्
अडिमैयिन् पयनिहन् दऱुह वाऴियाय् 2417

आऴियाय्–(आज्ञा-) चक्रधर; कटितिनिन्–जल्दी; उलकु ऎलाम्–सारे संसार के; कण्टु निऱ्क–देखते रहते; ऎन्–मेरा; अटु चरम्–संहारक शर; इवन् तलै–इसके सिर को; अऱुत्तिलातु ऎनिन्–नहीं काट दे तो; मुटिय–निश्चित रूप से; ऒन्ऱु उणर्त्तुवॆन्–एक बात बताऊँगा; उनक्कु–आपको; नान् मुयल् अटिमैयिन्–मेरी प्रयत्नशील दासता का; पयन् इकन्तु अऱुक–फल मुझे छोड़ जाए । २४१७

(आज्ञा) चक्रधारी ! वेग के साथ, दुनिया के देखते, अगर मेरा संहारक वाण इसका सिर नहीं काटेगा तो मैं निश्चित रूप से एक बात बताऊँगा । मेरी प्रयत्नशील दासता का फल मुझे नहीं मिले । २४१७

वल्लव नव्वुरै वऴङ्गु मेल्वैयिन्
अल्लनीङ् गिन्नॆल वमर राऱ्ऱनर्
ऎल्लैयि लुलहमुम् यावु माऱ्ऱन
नल्लऱ माऱ्ऱदु नरन्ऱ माऱ्ऱनन् 2418

वल्लवन्–बलवान लक्ष्मण; अव् उरै–वह कथन; वऴङ्कुम्–जब कर रहे थे; एल्वैयिन्–उस समय; अमरर्–देवों ने; अल्लल् नीङ्किनम्–

कष्ट से मुक्त हुए; ॲॅन-कहकर; आर्त्तनर्-आरव किया; ॲल्लै इल् उलकमुम् यावुम्-अनंत सभी लोकों ने, और अन्य सभी ने; आर्त्तन-हो-हल्ला मचाया; नल् अऱम् आर्त्तनु-श्रेष्ठ धर्मदेवता ने नर्दन किया; नमनुम् आर्त्ततन्-यम ने भी आनंदनाद उठाया। २४१८

जब समर्थ लक्ष्मण ने यह बात कही तो देवों ने आनंद के साथ, "संकट-मुक्त हो गये" कहकर हो-हल्ला मचाया। अन्य जीवों ने भी उच्च स्वर में नर्दन किया। श्रेष्ठ धर्मदेवता के साथ यम भी आनन्द मनाने लगा। २४१८

मुऱुवल्वाळ् मुहत्तिनन् मुळरिक् कण्णनुम्
अऱिवनी यडुवलॅन् ऱमैदि यामॅनिन्
इऱुदियुङ् गावलु मियऱ्ऱु मीशरुम्
वॅऱुवियर् वेऱिनि विळैवदि यादॅन्ऱान् 2419

मुळरि कण्णनुम्-कमलाक्ष भी; मुऱुवल्-मंदहास (से); वाळ् मुकत्तिनन्-शोभायमान श्रीमुख के होकर; अऱिव-बुद्धिमान; नी-तुम; अडुवल्-मारूँगा; ॲन्ऱु अमैति आम् ॲनिन्-ऐसा संकल्प कर लोगे तो; इऱुतियुम्-संहार और; कावलुम्-पालन के काम; इयऱ्ऱुम् ईचरुम्-करनेवाले (शिव और विष्णु) देवता भी; वॅऱुवियर्-कुछ नहीं होंगे; इनि-अब; विळैवतु-होनेवाला; वेऱु यातु-दूसरा क्या होगा। २४१९

कमलाक्ष श्रीराम ने मन्दहास की छटा से दीप्त मुख वाले होकर कहा कि ऐ बुद्धिमान्! अगर तुम किसी को मारने का संकल्प करो तो सृष्टि के पालक और संहारक दोनों (विष्णु और शिव तुम्हारे सामने) कुछ नहीं होंगे, फिर उसे छोड़ क्या होगा? । २४१९

शॉल्लदु केट्टडि तॉळुदु शुऱ्ऱिय
पल्पॅरुन् दॅरॉडु मरक्कर् पण्णैयैक्
कॉल्वॅनिङ् गन्नदु काण्डि कॉल्लॅन
ऑल्लैयि लॅळुन्दन नुवहै युळ्ळत्तान् 2420

अदु चॉल् केट्टु-यह शब्द सुनकर; अटि तॉळुतु-चरणों में नमस्कार करके; चुऱ्ऱिय-घेरे रहे; पल्-अनेक; पॅरु तेरॉटुम्-बड़े रथों और; अरक्कर् पण्णैयै-राक्षस-दलों को; इङ्कु कॉल्वॅन्-अभी मारूँगा; अन्नतु काण्टि-वह देखो; ॲॅन-ऐसा; उवकै उळ्ळत्तान्-उत्साहपूर्णमन हो; ऑल्लैयिल् ॲॅळुन्तनन्-झट उठा। २४२०

लक्ष्मण ने उनका कथन सुनकर उनकी चरण-वन्दना करके दावे के साथ कहा कि इन्द्रजित् को घेरे रहनेवाले अनेक बड़े-बड़े रथों के साथ राक्षसों के विपुल दल को अभी मार दूँगा—वह देख लीजिए। यह कहकर वह आनन्दपूरित मन के साथ झट उठा। २४२०

अङ्गद नार्त्तन नशनि येऱ्ऱॅत, स्डुगुलिन् उदिर्न्दन वयवन् ऱेर्पुतै
शिङ्गमु नडुङ्गुडत् तिरुवि नायहन् शङ्गमॊन्ऱु ऑलित्तदु कडलुन् दळ्ळुऱ 2421

वयवन् तेर्–वीर (इन्द्रजित् के) रथ से; पुतै–जुते; शिङ्कमुम्–सिंहों को भी; नडुङ्कुऱ–कँपाते हुए; मझ्कुष् निलुङ्–मेघ से; अतिर्न्तन–शोर करनेवाले; अशनि एऱु ऎॅन–तुमुल अशनिश्रेष्ठ के समान; अङ्कतन् आर्त्ततन्–अंगद ने मारे उठाए; कडलुम् तळ्ळुऱ–समुद्र को भी पीछे ढकेलते हुए (गर्जन में); तिरुविन् नायकन् चङ्कम् ऑन्ऱु–लक्ष्मीवान (लक्ष्मण का) शंख एक; ऑलित्ततु–क्वणित हुआ। २४२१

तब अंगद ने ऐसा नाद उठाया कि वीर इन्द्रजित् के रथों से जुते हुए सिंह काँप उठें और वह शब्द मेघ-से नाद करनेवाले वज्र के समान हो। (विजय-) लक्ष्मीवान लक्ष्मण का एक शंख भी वज उठा, जिसके कारण समुद्र-गर्जन पिछड़ गया। २४२१

ऎॅऴुमऴुच् चक्कर मीट्टि तोमरम्
मुऴुमुरट् टण्डुवेल् मुशुण्डि मूविलै
कऴुयिर् कप्पणङ् गवण्गल् कन्नहम्
विऴुमऴैक् किरट्टिविट् टरक्कर् वीशिनार् 2422

ऎॅऴु–खंभे (के आकार के हथियार); मऴु–परशु; चक्करम्–चक्र; ईट्टि–भाले; तोमरम्–तोमर; मुऴु मुरण्–पूर्ण सारयुक्त; तण्टु–गदा; वेल्–साँग; मुशुण्टि–मुशुण्डी; मूविलै कऴु–त्रिशूल; अयिल्–धारदार; कप्पणम्–"कप्पण"; कवण् कल्–ढेलेवाँस; कन्नकम्–कर्णक; विऴु मऴैक्कु इरट्टि–वर्षा के दुगुने (परिमाण में); अरक्कर्–राक्षसों ने; विट्टु वीशिनार्–चलाये। २४२२

राक्षसों ने निम्नलिखित हथियार आकाश से गिरनेवाले वर्षा के दुगुने रूप में चलाये:— खम्भे, परशु, चक्र, भाले, तोमर, वहुत मजबूत गदाएँ, शक्ति, मुशुंडी, त्रिशूल, तीक्ष्ण साँग, ढेलावाँस और कर्णक। २४२२

मीनॅलाम् विण्णिनिन् ऱॊरुङ्गु वीऴ्न्दॆन
वानॅला मण्णॅला मऱैय वन्दन
कानॅलान् दुणिन्दुपोय्त् तहर्न्दु कान्दिल
वेनिला नन्नैयवन् बहऴि वॆम्मैयाल् 2423

वेनिलान्–वसंतनाथ; अन्नैयवन्–जैसे (सुन्दर) के; पकऴि वॆम्मैयाल्–शरों की नाशक शक्ति से; मीन् ऎॅलाम्–सारे नक्षत्र; विण्णिन् निन्ऱु–आकाश से; ऒरुङ्कु वीऴ्न्ततु ऎॅन–एक साथ गिरे जैसे; वान् ऎॅलाम्–सारा आकाश; मण् ऎॅलाम्–और सारी पृथ्वी; मऱैय वन्तन–ढँकते जो आये; कान् ऎॅलाम्–हथियार सब; तुणिन्तु पोय्–भिन्न होकर; तकर्न्तु–चर होकर; कान्तिल–प्रकाशहीन होते पड़े रहे। २४२३

वसंतदेवता के समान बड़े ही सुन्दर लक्ष्मण के बाणों की गर्मी से

सभी हथियार, जो आकाश के सारे नक्षत्र एक साथ नीचे गिरे जैसे आकाश और भूमि को ढकते हुए आ रहे थे, कटे, चूर हुए और कांति खो पड़े रहे। २४२३

आयिरन् देरॊड तॊडैयि नच्चिड्रम्
पाय्वरिक् कुलम्बडुम् बाहर् पॊन्ऱुवर्
नायहर् नॆडुन्दलै तुमियु नामऱत्
तीयॆऴुम् बुहैयॆऴु मुलहन् दीयुमाल् 2424

ऒरु तॊडैयिन्–एक खेप (बाण) से; आयिरम् तेर्–हज़ार रथ; अच्चु इऱुम्–धुरी-कटे हो गिरते; पाय् परि कुलम्–सरपट भागनेवाले घोड़ों के दल; पडुम्–मरते; पाकर् पॊन्ऱुवर्–सारथी मरते; नाम् अऱ–भय दूर करते हुए; नायकर् नॆडु तलै–नायकों के बड़े सिर; तुमियुम्–कट जाते; ती ऎऴुम्–आग निकलती; पुकै ऎऴुम्–धुआँ उठता; उलकम् तीयुम्–लोक जलते। २४२४

उनके एक बाण से हज़ार रथों की धुरियाँ टूट जातीं और वे गिर जाते। सरपट भागनेवाले अश्वदल धराशायी हो जाते। उनके सवार भी मर जाते। भय दूर करते हुए सेनापतियों के बड़े सिर कट कर गिरते। आग ऊपर उठती। धुआँ फैलता और लोक जल जाता। २४२४

अडियऱुम् देर्मुर णाऴि यच्चिऱम्
वडिनॆडुञ् जिलैयऱुम् वाशि मार्बऱुम्
कॊडियऱुङ् गुडैयऱुङ् गॊडुर् वीरर्दम्
मुडियऱु मुरशऱु मुहिलुञ् शिन्दुमाल् 2425

तेर्–रथ का; अटि–निचला भाग; अऱुम्–टूट जाता; मुरण् आऴि–मज़बूत पहियों का; अच्चु इऱुम्–धुरी के साथ नाश हो जाता; वटि–चुना हुआ (श्रेष्ठ); नॆटु चिलै–दीर्घ धनु; अऱुम्–कट जाता; वाचि–अश्व; मार्पु अऱुम्–चिरे वक्ष के हो जाते; कॊटि अऱुम्–ध्वजा कट जाती; कुटै अऱुम्–छत्र कट जाते; कॊटुर्म् वीरर् तम्–विजयी वीरों के; मुटि अऱुम्–सिर कट जाते; मुरचु अऱुम्–नगाड़े फट जाते; मुकिलुम् चिन्दुम्–मेघ भी चू पड़ते। २४२५

रथ के निचले भाग दूर हो जाते। मजबूत पहियों के साथ धुरी मिट जाती। चुने हुए दीर्घ धनुष कट जाते। अश्वों के वक्ष चिर जाते। ध्वजा कट जाती। छाता दूर हो जाता। विजयी वीरों के सिर चले जाते। नगाड़े का चमड़ा फट जाता। मेघ भी बिखरकर चूर हो जाते। २४२५

इऩ्ऩदो रुऱुप्पिनै यिनय तेर्परि
मन्नव रिवरिवर् पडैञर् मऱ्ऱुळोर्

ॲन्नवोर् तन्मैयुन् दॅरिन्द चिलैयाल्
शिन्नबिन्न तङ्गळाय् मयङ्गिच् चिन्दलाल् 2426

चिन्न पिन्नतङ्कळाय्–छिन्न-भिन्न हो; मयङ्कि चिन्तलाल्–मिश्रित और बिखरे रहने से; इन्नतु ओर् उरुप्पु–यह यह अंग है; इवै इतैय तेर्–ये अमुक रथ हैं; परि–अश्व; इवर् मन्नवर्–ये राजा; इवर् पटैजर्–ये सैनिक हैं; मऱ्ऱोर्–अन्य हैं; ॲन्न–ऐसा; ओर् तन्मैयुम्–कोई भेद; तॅरिन्ततु इल्लै–नहीं जाना गया। २४२६

छिन्न-भिन्न होकर सभी अंग छितर गये थे, इसलिए यह कौन सा अंग है ? ये कैसे रथ हैं या अश्व हैं ? ये ही राजा हैं। ये वीर हैं या ये अन्य हैं। —इस तरह का कोई विवेक नहीं हो सकता था। २४२६

तन्दैयर् तेरिडैत् तनयर् वन्दलै
वन्दन तादैयर् वयिर वान्शिरम्
शिन्दिन कादलर् तेरिड् चिन्नमाय्
अन्दरत् तम्बॊडु मऱ्ऱु ऴुन्दन 2427

चिन्नमाय्–खण्डों के रूप में; अऱ्ऱु–कटकर; अम्पॊटु–बाणों के साथ; अन्तरत्तु ॲऴुन्तन–आकाश में जो गये वे; तनयर् वन् तलै–पुत्रों के कठोर सिर; तन्तैयर् तेर् इटै–पिताओं के रथों में; वन्तन–आ गिरे; तातैयर–पिताओं के; वयिरम् वान् चिरम्–वृहत् वज्र-सिर; कातलर् तेरिल्–पुत्रों के रथों में; चिन्तिन–गिरे। २४२७

पुत्रों के कठोर सिर छिन्न होकर अस्त्र के साथ जो आकाश में गये, वे उनके पिताओं के रथों के आगे आ गिरे। पिताओं के वृहत् वज्र-सिर पुत्रों के रथों में पाये गये। २४२७

शॆम्बॆरुङ् गुरुदियिऱ् ऱिहऴ्न्द शॆङ्गण्मीन्
कॊम्बॊडुम् परवैयिऱ् ऱिरियुङ् गॊट्पॆनत्
तुम्बैयन् दॊडैयलर्त् तडक्कै तूणिवाङ्
गम्बॊडुन् दुणिन्दन निलैयॊ डऱ्ऱन 2428

तूणि–तूणीर से; वाङ्कु अम्पॊटुम्–जिसको निकालते रहे उस बाण के साथ; निलैयॊटु अऱ्ऱन–अपनी स्थिति से जो कट गये वे; तुम्पै अम् तॊटैयलर्–'तुंबै' (नामक युद्धद्योतक) फूलों की माला से अलंकृत राक्षसों के; तट कै–बड़े हाथ; चॆम् कण् मीन्–लाल आँखों के मत्स्य; कॊम्पॊटुम्–सींगों के साथ; परवैयिल् तिरियुम्–सागर में घूमते; कॊट्पु ॲन–जैसे, उसी प्रकार; चॆम्–लाल; पॆरु–बड़े; कुरुतियिल्–रक्त-प्रवाह में; तिकऴ्न्त–रहे। २४२८

तूणीर से कुछ राक्षस अस्त्र निकाल रहे थे, उसी स्थिति में उन "तुम्बै" मालाधारी राक्षसों के हाथ कट गये। वे रक्त के प्रवाह में उन

बड़े मत्स्यों के समान दिखे, जो समुद्र में लाल आँखों और बड़े सींग के साथ घूम रहे हों। २४२८

तडिवत्त कोडुञ्जरन् वळ्ळल् तळ्ळुड़
मडिवत्त कॉडिहळुड् गुडैयु मड़ड़वुम्
वॅडिपडु कडलिहर् कुरुदि वॅळ्ळत्तिड़्
पडिवत्त वोत्तन पड़वैप् पन्मैय 2429

तटिवत्त–काटने का काम करनेवाले; कोटु चरम्–क्रूर शरों के; तळ्ळ तळ्ळुड़–अधिक परिमाण में काटने से; मटिवत्त–जो नाश हुए; कॉटिकळुम् कुटैयुम्–वे ध्वजाएँ और छत्रियाँ; मड़्ड़वुम्–और अन्य वस्तुएँ; वॅटि पटु–भयानक; कटल् निकर्–समुद्र-सम; कुरुति वॅळ्ळत्तिल्–रक्त के प्रवाह में; पटिवत्त–गिरनेवाले; पन्मैय–विविध और अनेक; पड़वै ओत्तत–पक्षियों के सदृश रहे। २४२९

काटनेवाले भयंकर शरों ने सबको काट गिराया तो कटे छाते और कटी ध्वजाएँ और अन्य चीज़ें भयंकर समुद्र-सम रक्त-प्रवाह में गिरते हुए विविध पक्षियों के समान लगे। २४२९

शिन्दु रङ्गळिन् परुममुम् वहळियुन् देरुम्
कुन्दु वन्नॅडुञ् जिलैमुदड़् पडैहळुङ् गॉडियुम्
इन्द नङ्गळा यिड़न्दवर् विळिक्कत लिलङ्ग
वॅन्द वॅम्बिणम् बिळुङ्गिन कळुहळ् विरुम्बि 2430

चिन्तुरङ्कळिन् परुममुम्–गजों के कण्ठों के गद्दे; पकळियुम्–बाण; तेरुम्–रथ और; कुन्तु–(बाण जिन पर) बैठते हैं, वे; वल् नॅटु चिलै–कठोर और दीर्घ चाप; मुतल्–आदि; पटैकळुम्–हथियार; कॉटियुम्–ध्वजाएँ; इन्तनङ्कळाय्–इंधन बने; इड़न्तवर् विळि–मृतकों की आँखें; कतल् इलङ्क–आग बनीं; वॅन्त वॅम्पिणम्–जो पके उन (दुर्गन्धपूर्ण) घृणित लाशों को; कळुतुकळ्–भूतों ने; विरुम्पि–चाव के साथ; विळुङ्कित–निगल लिये। २४३०

(युद्ध के मैदान में लाशें पकीं। कैसे? सुनिए।) गजों पर के गद्दे, रथ, कठोर और बड़े धनु आदि हथियार और ध्वजाएँ—ये सब ईंधन बने और मृतकों की आँखें अग्नि बनीं। तब लाशें पकीं और उनसे दुर्गन्ध फैली। उन लाशों को भूतगण चाव से निगलने लगे। २४३०

शिल्लि यूडड़च् चिदड़िन शिलशिल कोत्त
वल्लि यूडड़ मड़िन्दन पुरविहळ् मडियप्
पुल्लि मण्जिडैप् पुरण्डन शिलशिल पोराळ्
विल्लि शारदि यॉडुम्बडत् तिरिन्दन वॅड़िय 2431

चिल–कुछ रथ; चिल्लि ऊटु अड़–पहियों के बीच से टूट जाने से; चितड़िन–छिन्न हुए; चिल–कुछ; कोत्त–बँधी हुई; वल्लि–(रास की) रस्सी के; ऊट

अड्र–बीच में कट जाने से; मण् इटै मटिय–भूमि पर गिरकर मरें ऐसा; पुरविकळ्–अश्व; पुल्लि पुरण्टन–लगकर लोटे और; अट्रिन्तन–मर गये; विल चिल–कुछ-कुछ; पोर् आळ्–योद्धा; विल्लि–धनुर्धर; चारतियोंटुम्–सारथी के साथ; पट–मरे तो; वॆट्रिय तिरिन्तन–खाली घूमते रहे थे। २४३१

कुछ रथ पहियों के बीच से टूटने से टूटे। कुछ रथों की रस्सियों के टूटने से घोड़े भूमि पर गिरे और लुढ़क गये। कुछ रथ, योद्धा और धनुर्धर सारथियों के मर जाने से खाली घूम रहे थे। २४३१

अलङ्गु पल्मणिक् कदिरन कुरुदियि नळून्दि
विलङ्गु शॆम्जुडर् विडुवन वॆळियिनट्रि मिडैन्द
कुलङ्गॊळ् वॆय्यव रमरक्कळत् तीयिडैक् कुळित्त
इलङ्गै मानहर् माळिहै निहर्त्तन विरदम् 2432

अलङ्कु–रह-रहकर प्रकाश देनेवाले; पल्मणि कतिरन–विविध रत्नों की कांति से भरे; कुरुतियिन् अळुन्ति–रक्त में मग्न होकर; विलङ्कु–दिखनेवाले; चॆम् चुटर् विटुवन–लाल रंग की ज्योति देनेवाले; वॆळि इन्ट्रि–रिक्त स्थान न छोड़कर; मिटैन्त इरतम्–जो सटे रहे वे रथ; कुलम् कॊळ्–समूह में रहे; वॆय्यवर्–क्रूर राक्षसों के; अमर् कळम् ती इटै–युद्धस्थल की आग में; कुळित्त–मग्न हुए; इलङ्कै मा नकर–उस लंका महानगर के; माळिकै निकर्त्तन–महलों के समान दिखे। २४३२

रह-रहकर प्रकाश छिटकानेवाले अनेक रत्नों-सहित अनेक रथ रक्त में मग्न होकर लाल रोशनी फैला रहे थे। सटे हुए रहे वे उन लंका नगर के महलों के समान लगे, जो क्रूर राक्षसों के युद्ध के कारण उठी आग के मध्य रहते हों। २४३२

आन कालैयि निरामनु मयित्मुहप् पहळि
शोनै मारियिऩ् चॊरिन्दन ननुमनैत् तूण्डि
वान मानङ्गण् मट्रिन्दॆनत् तेरॆला मडियत्
तानुन् दॆरुमे यायिन निरावणन् ऱनयन् 2433

आन कालैयिन्–तब; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; अनुमनै–हनुमान को; तूण्टि–उकसाकर; अयिल् मुकम्–तीक्ष्णमुखी; पकळि–शरों को; चोनै मारियिल्–लगातार वर्षा के समान; चॊरिन्तनन्–चलाया; वानम् मानङ्कळ्–आकाशचारी यान; मट्रिन्तन–टूटकर गिरे जैसे; तेर् ऎलाम् मटिय–सारे रथ मिट गये तो; इरावणन् तनयन्–रावण का पुत्र; तानुम् तेरुमे आयिनन्–अकेले रथ का और अकेला हो गया। २४३३

तब श्रीराम ने मारुति को आगे चलाया और तीक्ष्णमुखी शरों को घनघोर वर्षा के समान चलाया। देवयान टूटकर गिरे-जैसे सभी रथ

मटियामेट हो गये। और रावणपुत्र अपने अकेले रथ के साथ अकेला हो गया। २४३३

पल्वि लङ्गॉडु पुरविहळ् पूण्डतेरप् परवै
वल्वि लङ्गलपो लरक्करदङ् गुळात्तॉडु मडिय
विल्वि लङ्गिय वीररै नोक्किनन् वॅहुण्डान्
शॉल्वि लङ्गलन् शॉल्लिनन् निरावणन् द्रोन्रल् 2434

पल् विलङ्कॉटु–विविध पशुओं के साथ; पुरविकळ् पूण्ट–जिनसे अश्व जुते थे; तेर् परवै–उन रथों का विस्तार; वल्–कठोर; विलङ्कल् पोल्–पर्वतों के समान; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुळात्तॉटु–दलों के साथ; मटिय–मिटे तो; विल् विलङ्किय–धनुष्कर्म में जो पिछड़ गये उन; वीररै–वीरों को; नोक्किनन्–देख; वॅकुण्टान्–क्रुद्ध होकर; इरावणन् तोन्रल्–रावण के पुत्र ने; विलङ्कलन्–अपने स्थान से न हटकर; ओर चॉल्–एक बात; चॉल्लिनन्–कही। २४३४

विविध पशुओं और अश्वों से युक्त रथों का समूह मज़बूत पर्वतों के समान राक्षसदलों के साथ मिट गये। तब इन्द्रजित् धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम और लक्ष्मण को तरेरकर अपनी स्थिति से नहीं हटते हुए, एक बात कही। २४३४

इरुवि रॅन्नॉडु पॉरुदिरो वन्रॅनि नेर्र
ऑरुविर् वन्दुयिर् तरुदिरो वुम्बडै योडुम्
पॉरुदु पोन्रुदल् पुरिदिरो वुरुवदु पुहलुम्
तरुव निन्रुळक् केर्कुळ यानॅनच् चलित्तान् 2435

इरुविर् ऍन्नॉटु पॉरुतिरो–दोनों मेरे साथ लड़ोगे; अन्रु ऍनिन्–नहीं तो; एर्र–योग्य; ऑरुविर् वन्तु–एक आकर; उयिर् तरुतिरो–अपने प्राण दोगे; उम् पटैयोटुम्–अपनी सेना के साथ; पॉरुतु–युद्ध करके; पोन्रुतल् पुरितिरो–मरने का काम करोगे; उरुवतु पुकलुम्–जो करोगे वह करो; यान्–मैं; इन्रु–अब; उमक्कु एर्कुळ–तुम्हारे योग्य बात; तरुवन्–करूँगा; ऍन–कहकर; चलित्तान्–झुंझलाया। २४३५

उसने पूछा— क्या तुम दोनों मेरे साथ लड़ोगे? या योग्य एक आकर मरना चाहोगे या अपनी सेना-सहित लड़कर यम के मेहमान बनना चाहोगे? अपना निर्णय कहो। जो माँगो वही दूँगा। इन्द्रजित् झुँझलाया। २४३५

वाळिर् ड्रिण्शिलैत् तॉळिलिनिन् मल्लिनिन् मर्रै
आळुर् रॅण्णिय पडैक्कल मॅवर्रिनु ममरिल्
कोळुर् रुन्नॉडु कुरित्तलर् शॅयदुयिर् कॉळ्वान्
शूळुर् ड्रेनिवु शरदमॅन् ड्रिलक्कुवन् शॉन्नान् 2436

वाळिल्-तलवार से; लिण् चिलै तोळ्लिलितिल्-सुदृढ़ धनुकर्म से; मल्लितिल्-मल्लयुद्ध करके; मट्रै-अन्य; आळ् उड्रु-दक्ष होकर; ॲण्णिय-गण्य; पटै कलम् ॲवट्रिनुम्-सभी हथियारों से; अमरिल्-युद्ध में; कोळ् उड्रु-बल दिखाकर; उन्नोटु कुरित्तु-तुम्हारा सामना करके; अमर् चॅय्तु-युद्ध करके; उयिर् कॉळ्वान्-प्राण हरने को; चूळ् उड्रेन्-सौगंध खायी है; इतु चरतम्-यह निश्चित है; ॲन्न-ऐसा; इलक्कुवन् चॊन्नान्-लक्ष्मण ने कहा। २४३६

तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि मैंने ही शपथ खायी है कि तलवार, धनु, मल्लयुद्ध में और अन्य हथियारों द्वारा तुम्हारा सामना करूँ और तुम्हारे प्राण हर लूं। २४३६

मुन्पि इन्दनिन् इमैयनै मुडैतविर्त् तुनक्कुप्
पिन्पि इन्दव नाक्कुवॅन् पिन्पिइन् दोयै
मुन्पि इन्दव नाक्कुवॅ निदुमुडि येनेल्
ॲन्पि इन्दव नाट्पय निरावणर् कॅन्ड्रान् 2437

मुन् पिइन्त-पहले जनमे; निन् तमैयनै-तुम्हारे अग्रज को; मुडै तविर्त्तु-क्रम भंग करके; उनक्कु पिन्पु-तुम्हारे बाद; इड्रन्तवन् आक्कुवेन्-मरनेवाला बना दूंगा; पिन् पिइन्तोयै-अनुज को; मुन्पु इड्रन्तवन् आक्कुवॅन्-पहले मरनेवाला बनाऊँगा; इतु-यह; मुडियेनेल्-न कर चुकूं तो; इरावणर्कु-रावण के पुत्र के रूप में; पिड्रन्ततनाल् पयन् ॲन्-जनमने से क्या लाभ; ॲन्ड्रान्-कहा रावणि ने। २४३७

तब रावणि ने जवाब दिया कि अब मैं अग्रज अनुज का क्रम तोड़कर पहले तुमको मार दूंगा और अनुज को अग्रज (पहले जानेवाला) और अग्रज को अनुज बना दूंगा। अगर यह न करूँ तो रावण का पुत्र बनने से क्या लाभ हुआ? । २४३७

इलक्कु वन्नॅनुम् बॅयरुनक् कियैवदे यॅन्न
इलक्कु वक्णक् काक्कुवॅ निडुपुहुन् दिडैये
विलक्कु वॅन्नॅन्न विडैयवन् विलक्किनुम् वीरम्
कलक्कु वॅन्निदु काणुमुन् ड्रमैयनुम् कण्णाल् 2438

इलक्कुवन्-'इलक्कुवन्' (लक्ष्मण का तमिऴ रूप); ॲनुम् पॅयर्-का नाम; उनक्कु इयैवते-तुम्हारे लिए युक्त है; ॲन्न-ऐसा; वन् कणक्कु-कठोर शर का; इलक्कु आक्कुवॅन्-'इलक्कु' (लक्ष्य) बनाऊँगा; इतु-यहाँ; इडैये पुकुन्तु-बीच में घुसकर; विलक्कुवॅन्-रोक लूंगा; ॲन्न-कहकर; विडैयवन्-ऋषभवाहन; विलक्किनुम्-रोकेगा तो भी; वीरम् कलक्कुवॅन्-उसकी वीरता को बेकार कर दूंगा; इतु-यह; उन् तमैयनुम्-तुम्हारा बड़ा भाई भी; कण्णाल् काणुम्-अपनी आँखों से देख लेगा। २४३८

"इलक्कुवन्" के तुम्हारे नाम को सार्थक बनाकर मैं तुम्हें अपने

बाण का "इलक्कु" (लक्ष्य) बना दूँगा। ऋषभवाहन शिव भी क्यों आड़े आवें, उनकी वीरता को बेकार कर दूँगा। यह मेरी करामात तुम्हारा बड़ा भाई देखेगा। (इलक्कुवन् "लक्ष्मण" शब्द का तमिऴ रूप है। उस शब्द के आधार पर कम्बन श्लेष का प्रयोग करते हैं।)। २४३८

अऱुब दाहिय वॆळ्ळत्ति ऩरक्करै यम्बाल्
इऱुव दाक्किय विरण्डुविल् लिऩरुङ्गण् डिरङ्ग
मऱुव दाक्किय वॆऴुबदु वॆळ्ळमु माळ
वॆऱुवि दाक्कुव ऩुलहिऩैक् कणत्तिऩोर् विल्लाल् 2439

अऱुपतु वॆळ्ळत्तिऩर्–साठ 'वॆळ्ळम्'; आकिय–के जो थे; अरक्करै–उन राक्षसों को; अम्पाल्–बाणों से; इऱुवतु आक्किय–जिन्होंने अन्त करा दिया उन; इरण्टु विल्लिऩरुम्–दोनों धनुर्धर; कण्टु इरङ्क–देखकर बेचैन हों ऐसा; मऱुवतु आक्किय–(राक्षसों पर) जिन्होंने कलंक लगवा दिया; ऎऴुपतु वॆळ्ळमुम्–वे सत्तर 'वॆळ्ळम्'; माळ–मर जाएँ ऐसा; ओर् कणत्तिऩिल्–एक क्षण में; विल्लाल्–अपने धनु से; उलकिऩै–संसार को; वॆऱुवितु आक्कुवॆऩ्–खाली करा दूँगा। २४३९

तुम दोनों धनुर्धरों ने साठ 'वॆळ्ळम्' राक्षसों को अपने बाणों से निर्मूल कर दिया। अब तुम दोनों देखकर तरसो, इस तरह मैं राक्षस-कलंकदायक सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना को मिटा दूँगा और अपने धनु से संसार को रिक्त करा दूँगा। २४३९

कुम्ब कऩ्ऩॆऩ्ऩ् ऱॊरुवऩी रम्बिऩैक् कुऱैत्त
तम्बि यल्लना ऩिरावणऩ् महऩ्ऱॊऱ तमियेऩ्
ऎम्बि मारुक्कु मॆऩ्ऩिऱै तादैक्कु मिरुविर्
शॆम्बु ऩीर्कॊडु कडऩ्गऴिप् पॆऩ्ऩॆऩ्ऱु तॆरित्ताऩ् 2440

नीर् अम्पिऩै कुऱैत्त–तुम लोगों ने अपने बाणों से जिसको काटा; कुम्पकऩ्ऩऩ् ऎऩ्ऱु ऒरुवऩ्–वह कुंभकर्ण नाम का एक; तम्पि अल्लऩ् नाऩ्–छोटा भाई नहीं हूँ मैं; इरावणऩ् मकऩ्–मैं तो रावण का पुत्र हूँ; ओर् तमियेऩ्–अलग रूप से (श्रेष्ठ) हूँ मैं; ऎम्पिमारुक्कुम्–अपने छोटे भाइयों के लिए और; ऎऩ् ऎऩ्ऱै तातैक्कुम्–अपने चाचा के लिए; इरुविर्–तुम दोनों के; चॆम् पुऩ् नीर् कॊण्टु–रुधिरजल से; कटऩ् कऴिप्पॆऩ्–तर्पण-क्रिया करूँगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; तॆरित्ताऩ्–बताया (इन्द्रजित् ने)। २४४०

मैं रावण का भाई कुम्भकर्ण नहीं हूँ, जिसे तुमने अपने बाण से मारा था। मैं रावण का पुत्र हूँ। बल्कि (अन्य पुत्रों से) अलग हूँ। मैं तुम लोगों के रक्त से अपने छोटे भाइयों और चचा का तर्पण-कृत्य करूँगा। २४४०

अरक्क रॆऩ्बदोर् पॆयर्पडैत् तवर्क्कॆला मडुत्त
पुरक्कु नऩ्कडऩ् शॆयवऩ्ऩ् वीडणऩ् पोऩ्दाऩ्

करक्कु तुनैक्कु नीशैयक् कडवन कडन्गळ्
इरक्क मुडुत्तक् कवन्शैयु मॅन्ड्रन तिळैयोन् 2441

अरक्कर् ॲन्पतु–राक्षस का; ओर् पॅयर् पटैत्तवर्कट्कु ॲल्लाम्–एक नाम जिनका है उन सभी के लिए; अट्टुत्त–अवश्यम्भावी; पुरक्कुम्–परलोक-क्षेमकारी; नल् कटन्–श्रेष्ठ अपर कर्मों को; चॅय–करने के लिए; वीटणन्–विभीषण; पोन्तान् उळन्–आया है; करक्कुम् तुनैक्कु–छिपनेवाले तुम्हारे पिता के लिए; नी चॅय कटवन कटन्कळ्–तुम्हारे कर्तव्य कर्मों को; इरक्कम् उरुत्तु–दया करके; उनक्कु–तुम्हारे लिए; अवन् चॅयुम्–वह करेगा; ॲन्ड्रनन् इळैयोन्–कहा छोटे ने। २४४१

तब लक्ष्मण ने यह उत्तर दिया। राक्षस नामधारी सभी लोगों का अवश्यम्भावी और शुभफलदायक तर्पणकृत्य करने के लिए विभीषण पहले ही इधर आकर तैयार है। तुम्हारे पिता का, जो तुम्हें करना है, वह कृत्य वह दया करके तुम्हारे लिए करेगा। २४४१

आन कालैयि नयिलॅयिऱ् इरक्कनॅञ् जळन्ड्रान्
वानुम् वैयमुन् दिशैहळु मियावैयु मरैयप्
पानल् वेलैयैप् परुहुव शुडर्मुहप् पहळि
शोनै मारियि निरुमडि मुम्मडि शॉरिन्दान् 2442

आन कालैयिन्–तब; अयिल् ॲयिरुऱु–तीक्ष्ण दाँतों वाले; अरक्कन्–राक्षस (इन्द्रजित्) ने; नॅञ्चु अळन्ड्रान्–मन में तप्त होकर; वानुम्–आकाश; वैयमुम्–भूमि और; तिचैकळुम्–दिशाओं और; यावैयुम्–सभी को; मरैय–छिपाकर; नल् पाल् वेलैयै–श्रेष्ठ क्षीरसागर(-सम वानर-सेना) को; परुकुव–पीनेवाले; चुटर् मुकम्–प्रकाशमुख; पकळि वाणों को; चोनै मारियिन्–धारावाही वर्षा के; इरुमटि मुम्मटि–दुगुने, तिगुने; चॉरिन्तान्–बरसाए। २४४२

तब तीक्ष्ण दाँतों वाले इन्द्रजित् ने क्रुद्धमन होकर आकाश, भूमि और दिशाओं को छिपाते हुए क्षीरसागर-सम वानर-सेना को सोख सकनेवाले प्रकाश-मुख शरों को घनघोर वर्षा के दुगुने, तिगुने परिमाण में चलाया। २४४२

अङ्ग दन्ड्रन्मे लायिर मवर्ड्रिरुक्कि रट्टि
वॅङ्गण् मारुदि मेनिमेल् वेऱुळ वीरच्
चिङ्ग मन्नव राक्कैमे लुलप्पिल शॅलुत्ति
ॲङ्गुम् वॅङ्गणै याक्किन निरावणन् शिऱुवन् 2443

इरावणन् चिऱुवन्–रावण के पुत्र ने; अङ्कतन् तन् मेल्–अंगद पर; आयिरम्–हजार; अवर्ड्रिनुक्कु इरट्टि–उनके दुगुने; वॅम् कण्–क्रोधारुणाक्ष; मारुति मेनि मेल्–मारुति के शरीर पर; वेऱु उळ–अन्य जो थे; वीर चिङ्कम् अन्नवर्–वीर केसरी-सम वीरों के; आक्कै मेल्–शरीरों पर; उलप्पिल–अनगिनत (शर); चॅलुत्ति–चलाकर; ॲङ्कुम् वॅम् कणै आक्किनन्–सर्वत्र भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

रावणपुत्र ने अंगद पर एक हज़ार, अरुणाक्ष हनुमान पर दुगुने (दो हज़ार) और अन्य वीरों पर बेशुमार बाण चलाये और सभी स्थानों को भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

इळैय मैन्दन्मे लिरामन्मे लिरावणि यिहलि
विळैयुम् वन्रिरल् वानर वीरर्मेन् मॅय्युड्
रुळैयुम् वॅञ्जरम् जॊरिन्दन नाळिहै यॊन्रु
वळैयु मण्डलप् पिड़ैयॅन निन्रदव् वरिविल् 2444

इरावणि–रावणि; इळैय मैन्तन् मेल्–लघुराज पर; इरामन् मेल्–श्रीराम पर; इकलि विळैयुम्–विरोध में लगे; वल् तिऱल्–अति बलवान; वानर वीरर् मेल्–वानर वीरों पर; मॅय् उड्रु–शरीर में घुसकर; उळैयुम्–पीड़ा देनेवाले; वॆम् चरम्–क्रूर शरों को; चॊरिन्ततन्–बरसाया; वरि विल्–सबन्ध चाप; वळैयुम्–वक्र; मण्टलम् पिड़ै ॲॅन–मंडल के अर्धचन्द्र-सम; नाळिकै ऒन्ऱु–एक घड़ी तक; निन्ऱतु–स्थिर रहा। २४४४

रावणि ने राम और लक्ष्मण पर और वैरी वानर वीरों पर जो शर चलाये, वे अतिक्रूर शर उनके शरीरों में घुसकर उनको बहुत दुःख देने लगे। इन्द्रजित् का टेढ़ा बना धनु अर्धचंद्र के समान लगा और एक घड़ी तक एक ही स्थिति में रहा (यानी लगातार एक घड़ी तक बाण चलाता रहा।)। २४४४

पच्चि मत्तिनु मुहत्तिनु मरुङ्गिनुम् बहळि
उच्चि मुऱ्ऱिय वॆय्यवन् कदिरॆन वुमिळक्
कच्च मुऱ्ऱवन् गैत्तुणैक् कडुमैयैक् काणा
अच्च मुऱ्ऱनर् कण्पुदैत् तडङ्गिन रमरर् 2445

उच्चि मुऱ्ऱिय वॆय्यवन्–मध्याह्न-सूर्य की; कतिर् अन–किरणों के सदृश; पकळि–गरम बाणों को; पच्चिमत्तिनुम्–पृष्ठ भागों में; मुकत्तिनुम्–मुख में; मरुङ्किनुम्–पार्श्वों में; उमिळ–चलाते हुए; कच्चम् उऱ्ऱवन्–संकल्पबद्ध इन्द्रजित् के; तुणै कै कटुमैयै–हस्तद्वय की गति को; काणा–देखकर; अमरर्–देवगण; अच्चम् उऱ्ऱनर्–डर गये; कण् पुतैत्तु–आँखें मूँदकर; अटङ्कितर्–संकुचित हुए। २४४५

आकाश-मध्य आये हुए मध्याह्न-सूर्य की किरणों के समान शरों को संकल्पबद्ध इन्द्रजित् ने शत्रुओं के पृष्ठ भाग में, मुखों पर और पार्श्वों में चलाया। उसकी हस्तगति देखकर देवगणों ने भय से अपनी आँखें मूँद लीं और संकुचित रह गये। २४४५

मॅय्यिर् पट्टन पडप्पडा दत्तवॆलाम् विलक्कित्
तॅय्वप् पोर्क्कणैक् कत्तुणैक् कत्तुणै शॆलुत्ति

ऐयऱ् काङ्गिळङ् गोळरि यऱ्रिविला तऱ्रेन्द
पॉय्यिऱ् पोम्बडि याक्किनन् कडिदिनिऱ् पुक्कान् 2446

आङ्कु–तब; ऐयऱ्कु इळ कोळरि–श्रीराम के छोटे भ्राता केसरी-सम लक्ष्मण; कटितितिल्–शीघ्रता के साथ; पुक्कान्–पहुँचे; मॅय्यिल् पट्टन–शरीर पर लगे; पट पटातन–और जो न लगे उन्हें; ॲलाम्–सभी को; विलक्कि–रोककर; अऱम् इलान्–अधर्मी के; अऱ्रन्त पॉय्यिल्–कहे असत्य की तरह; तॅय्वम् पोर् कणैक्कु–दिव्य और युद्ध में प्रयुक्त अस्त्रों को; अ तुणैक्कु अ तुणै चॅलुत्ति–उतनों के लिए उतने चलाकर; पोम्पटि आक्किनन्–मिटा दिया। २४४६

तब श्रीराम के छोटे भाई सिंह-सम लक्ष्मण सवेग युद्धस्थल में आये। उन्होंने अपने शरीर पर लगे हुए अस्त्रों को और तभी आ रहे अस्त्रों को दूर करके शत्रु के दिव्य अस्त्रों को वे ही अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। २४४६

पिऱहि निन्ऱनन् पॅरुन्दहै यिळवलैप् पिरियान्
अऱनि दन्ऱॅन वरक्कन्मेऱ् चरन्दॊडुत् तरुळान्
इऱवु कण्डिल रिरुवरु मॊरुवरै यॊरुवर्
विऱहिन् वॅन्दॅन विशुम्बिडैच् चॅऱिन्दन विशिहम् 2447

पॅरुन्तकै–सम्मानित प्रभु ने; इतु अऱन् अन्ऱु–यह धर्म नहीं; ॲन–ऐसा; अरक्कन् मेल् चरम् तॊटुत्तु–राक्षस पर बाण चलाकर; अरुळान्–कृपा नहीं की; इळवलै पिरियान्–छोटे भाई से अलग नहीं हुए; पिऱकिल् निन्ऱनन्–पीछे खड़े रहे; इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और इन्द्रजित्) को; ऑरुवरै ऑरुवर्–एक-दूसरे पर; इऱवु कण्टिलर्–हावी आते किसी ने नहीं देखा; विचिकम्–विशिख; विऱकिन् वॅन्तन–लकड़ी जली जैसे; विचुम्पु इटै–आकाश-मध्य; चॅऱिन्तन–भर गये। २४४७

उदार प्रभु श्रीराम ने सोचा कि मेरा स्वयं बाण चलाना धर्म नहीं होगा, इसलिए उन्होंने स्वयं बाण चलाने की कृपा नहीं की। लेकिन वे अपने लघु सहोदर लक्ष्मण से अलग नहीं हुए। उनके पीछे पास ही रहे। लक्ष्मण और इन्द्रजित्, इनमें किसी को दूसरे पर हावी आते कोई देख नहीं सके। दोनों के विशिख लकड़ी के समान जलकर आकाश में भर गये। २४४७

माडॆ रिन्दॆऴुन् दिरुवर्दङ् गणैहळुम् वऴङ्गक्
काडॆ रिन्दन कनवरै यॆरिन्दन कनह
वीडॆ रिन्दन वेलैह ळॆरिन्दन मेहम्
ऊडॆ रिन्दन वूऴियि नॆरिन्दन वुलहम् 2448

इरुवर्–दोनों ने; तम् कणैकळुम्–अपने-अपने अस्त्र; वऴङ्क–जो छोड़े; माटु–आसपास; ॲरिन्तु ॲऴुन्तु–जलते उठे तो; काटु ॲरिन्तन–जंगल जले;

कतम् वरै–बड़े पर्वत; ऍरिन्तत–जले; कनकम् वीटु–स्वर्णमहल; ऍरिन्तत–जले; वेलैकळ् ऍरिन्तत–समुद्र जले; मेकम् ऊटु ऍरिन्तत–मेघ के मध्य भाग जले; उलकम्–लोक; ऊळियिल् ऍरिन्तत–युगान्त की अग्नि में जैसे जले। २४४८

जब दोनों ने बाण चलाये, तब वे बाण आसपास जलते हुए उठ चले। इसलिए आसपास के वन, बड़े-बड़े पहाड़, स्वर्णमय मकान, समुद्र, मेघों के अंदर के भाग और लोक युगांत की आग में जैसे जल उठे। २४४८

पडङ्गॊळ् पाम्बणै तुऱन्दवऱ् किळैयवऩ् पहऴि
विडङ्गॊळ् वॆळ्ळत्तिऩ् मेलऩ वरुवऩ विलक्कि
इडङ्ग रेऱऩ वॆऩ्ऴ्वलि यरक्कऩ्ऱे रिऴुक्कुम्
मडङ्ग लैयिरु नूऱ्ऱैयुङ् गूऱ्ऱिऩ्वाय् मडुत्ताऩ् 2449

पटम् कॊळ्–फणयुक्त; पाम्पु अणै–शेष-शय्या; तुऱन्तवऱ्कु–जो छोड़ आये थे उनके; इळैयवऩ्–छोटे भाई; वॆळ्ळत्तिऩ् मेलऩ–"वॆळ्ळम्" से भी अधिक; वरुवऩ–आनेवाले; विटम् कॊळ् पकऴि–विषाक्त बाण; विलक्कि–रोककर; ऍऩ्ऴ् वलि–अधिक मजबूत; अरक्कऩ् तेर्–राक्षस के रथ के साथ; इऴुक्कुम्–उसको खींचनेवाले; इटङ्कर् एऱ अऩ–नर मगर के समान; मटङ्कल्–सिंहों; ऐ इरु नूऱ्ऱैयुम्–(पांच × दो =) दस सौ को; कूऱ्ऱिऩ् वाय्–यम के मुख में; मटुत्ताऩ्–पहुँचा दिया। २४४९

फणीशेष-शय्या को जो छोड़ आये थे, उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने 'वॆळ्ळम्' से भी अधिक संख्या में आनेवाले विषाक्त बाणों को रोका और बहुत मजबूत राक्षस के रथ के साथ उसको खींचनेवाले नर मगर के समान हज़ार सिंहों को मौत के घाट उतार दिया। २४४९

तेर ऴिन्दिडच् चेमत्तेर् पिऱ्ऱिदिलऩ् शॆऱिन्द
ऊर ऴिन्दिडत् तऩिनिऩ्ऱ कदिरव ऩॊत्ताऩ्
पार ऴिन्दडु कुरङ्गॆऩुम् बॆयरॆऩप् पदैत्तार्
शूर ऴिन्दिडत् तुरन्दऩऩ् शुडुशरञ् जॊरिन्दाऩ् 2450

तेर् अऴिन्तिट–रथ के नष्ट होने पर; चेमम् तेर्–आरक्षित रथ; पिऱ्ऱितु इलऩ्–दूसरा नहीं रहा उसके पास; चॆऱिन्त–घने; ऊर् अऴिन्तिट–परिवेश के मिटने पर; तऩि निऩ्ऱ–अकेला दिखते; कतिरवऩ् ऒत्ताऩ्–सूर्य के समान बना; चूर् अऴिन्तिट–वीर्य कम हो गया; तुरन्तऩऩ्–रथ चलाया; कुरङ्कु ऍऩुम् पॆयर्–वानर का नाम ही; पार् अऴिन्ततु–भूमि पर मिट गया; ऍऩ–ऐसा सोचकर; पतैत्तार्–सब काँप उठे। २४५०

इन्द्रजित् का रथ बेकार हो गया। दूसरा आरक्षित रथ नहीं मिल रहा, तब वह परिवेश-रहित सूर्य के समान दिख रहा था। तो भी वह गरम बाणों को छोड़ता हुआ गलते वीर्य के साथ रथ चलाता बढ़ा। वानर का नाम ही अब दुनिया में न रह गया, यह सोचकर सभी लोग काँप उठे। २४५०

अट्ऱ तेर्मिशै निन्ऱुपो रङ्गद तलङ्गर्
कॊट्ऱत् तोळिनु मिलक्कुवन् पुयत्तिनुङ् गुळित्तु
मुट्ऱ वॆण्णिला मुरट्कणै तूर्त्तनन् मुरट्पोर्
ऒट्ऱैच् चङ्गॊडुत् तूदिना नुलहॆला मुलैय 2451

मुरण्पोर्–वैरीयुद्ध में; अट्ऱ तेर् मिचै निन्ऱु–भग्न रथ पर खड़े होकर; पोर् अङ्कतन्–योद्धा अंगद के; अलङ्कल्–माला पहने हुए; कॊट्ऱम् तोळितुम्–विजय-भूषित कंधों पर; इलक्कुवन् पुयत्तिनुम्–लक्ष्मण की भुजाओं में; कुळित्तु मुट्ऱ–चुभकर मग्न हों ऐसा; वॆळ् निला–श्वेत अर्धचन्द्र-सम; मुरण् कणै–कठोर अस्त्र; तूर्त्तनन्–बहुत चलाये; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; ऒट्ऱै चङ्कु ऍट्त्तु–एक शंख लेकर; ऊतिनान्–फूंका। २५५१

वैरप्रेरित उस युद्ध में अंगहीन रथ पर खड़े होकर उसने समर-समर्थ अंगद के मालाधारी और विजयी कंधों पर और लक्ष्मण की भुजाओं पर चुभोते हुए अर्धचन्द्र वाण छोड़े और साथ-साथ एक शंख लेकर वजाया जिससे सारा लोक हिल गया। २४५१

शङ्ग मूदिय तशमुहन् ऱनिमहन् ऱरित्त
कङ्ग मार्पॆरुङ् गवशमु मूट्टऱक् कळल
वॆङ्ग डुङ्गणै यैयिरण् डुरमॆन वीशिच्
चिङ्गवे ऱन्न विलक्कुवन् शिलैयैना णॆऱिन्दान् 2452

चिङ्क एऱु अन्न इलक्कुवन्–नर केसरी-समान लक्ष्मण; चङ्कम् ऊतिय–शंख बजानेवाले; तचमुकन् तनिमकन्–दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के; तरित्त–पहने हुए; कङ्कम् आर् पॆरु कवचमुम्–स्वर्णमय बड़े कवच को; मूट्टु अऱ कळल–सन्धियाँ टूटकर अलग हो जाए ऐसा; वॆम् चुटु कणै–भयंकर और संदाहक वाण; ऐयिरण्टु–दस; उरुम् ॲन वीचि–अशनि के समान चलाकर; चिलैयै–धनु को; नाण् ऍऱिन्तान्–डोरा टंकोरकर ध्वनित किया। २४५२

नरकेसरी के समान लक्ष्मण ने दस संतापक अशनि-सम अस्त्र चलाकर शंख वजानेवाले दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के सोने के वड़े कवच की संधि काटकर गिरा दिया। उन्होंने शंखध्वनि के जवाव में धनु की ध्वनि निकाली। २४५२

कण्ड कार्मुहिल् वण्णनुङ् गमलक्कण् कलुळत्
तुण्ड वॆण्बिऱै निलवॆन मुरुवलुन् दोन्ऱ
अण्ड मुण्डतन् वायिना लार्मिनॆन् ऱरुळ
विण्ड तण्डमॆन् ऱुलैन्दिड वार्त्तनर् वीरर् 2453

कण्ट–देखकर; कार्मुकिल् वण्णनुम्–मेघश्याम ने भी; कमलम् कण् कलुळ–कमलनेत्र से आनंदाश्रु बहाकर; वॆळ् तुण्टम् पिऱै–श्वेत अर्धचन्द्र से; निलवु ॲन–

चाँदनी छूटती जैसे; मुऱुवलुम् तोत्ऱ-मंदहास प्रकट करके; अण्टम् उण्ट-अण्ड-भक्षक; तन् वायिताल्-अपने मुख से; आर्मिन्-नारे लगाओ; ऎन्ऱु अरुळ-ऐसी कृपाज्ञा देने पर; वीरर्-वानर वीर; अण्टम् विण्टतु-अण्ड फट गया; ऎन्ऱु-ऐसा; उलैन्तिट-सब दहल उठें, ऐसा; आर्त्तनर्-नर्दन कर उठे। २४५३

उसको देखकर मेघश्याम श्रीराम के कमल-नेत्रों से आनंद के आँसू बह चले। एक मुस्कुराहट से अर्धचन्द्र की चाँदनी-सम प्रकाश फैला। उन्होंने अंडभक्षक अपने श्रीमुख से कहा कि नारे लगाओ। वानरों ने अंड को फाड़ते हुए और क्षोभ फैलाते हुए उच्च नर्दन किया। २४५३

कण्णि मैप्पदत् मुन्बुपोय् विशुम्बिडैक् करन्दान्
अण्णल् मर्ऱव नाक्कैकण् डरिहिल नाहिप्
पण्ण वऩ्किवन् पिऴैक्कुमेऱ् पडैक्कुनम् बडैयै
ऎण्ण मऱ्ऱिलै ययन्पडै तॊडुप्पॆऩ्ऩ् ऱिशैत्तान् 2454

कण् इमैप्पतन् मुन्पु-पलक मारने से पहले; पोय्-जाकर; विचुम्पिटै-आकाश में; करन्तान्-छिप गया (इन्द्रजित्); अण्णल्-महिमावान लक्ष्मण; अवन् आक्कै कण्टु अऱिकिलन् आकि-उसका शरीर न देख-समझ पाकर; इवन् पिऴैक्कुमेल्-यह (जीवित) बचेगा तो; नम् पटैयै पटुक्कुम्-हमारी सेना का नाश करा देगा; मऱ्ऱु ऎण्णम् इलै-दूसरा विचार न हो; अयन् पटै-ब्रह्मास्त्र; तॊटुप्पॆन्-चलाऊँगा; ऎन्ऱु-ऐसा; पण्णवऱ्कु-श्रीराम से; इचैत्तान्-कहा। २४५४

इन्द्रजित् (डरकर) आकाश में जाकर छिप गया। महिमामय सुमित्रानंदन ने उसको न देखकर श्रीराम से कहा कि अगर यह जीता बचेगा तो हमारी सेना का नाश करा देगा, इसलिए कोई दूसरी चिंता न करके उस पर ब्रह्मास्त्र चला दूँगा। २४५४

आऩ्ऱ वऩ्ऩदु पुहऱ्लु मऱ्निलै वऴावाय्
ईन्ऱ वन्दणन् पडैक्कलन् ऱॊडुक्किलिव् वुलहम्
मून्ऱै युम्जुडु मॊरुवनान् मुडिहल दॆन्ऱान्
शान्ऱ वऩ्ऩदु तविर्न्दन लुणर्वुडैत् तम्बि 2455

आन्ऱवन्-श्रेष्ठ लक्ष्मण के; अतु पुकऱ्लुम्-वह कहते ही; अऱम् निलै वऴाताय्-धर्मविमुख; उलकम् ईन्ऱ अन्तणन्-लोक-सर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का; पटैक्कलम्-अस्त्र; तॊटुक्किल्-चलाओ तो; इव् उलकम् मून्ऱैयुम्-इन तीनों लोकों को; चुटुम्-जला देगा; ऒरुवनाल् मुटिक्कलतु-किसी से भी रोका नहीं जा सकेगा; ऎन्ऱान्-कहा; उणर्वुटै तम्पि-प्राज्ञ छोटे भाई; चान्ऱवन्-साधू ने; अतु तविर्न्तनन्-उसे बचा लिया। २४५५

मनुष्यश्रेष्ठ लक्ष्मण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने उनसे कहा कि हे धर्माविमुख! लोकस्रष्टा के अस्त्र को जो छोड़ोगे तो वह तीनों लोकों को

जला देगा। उसका कोई निवारण नहीं कर सकेगा। सद्विचारक साधू लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र चलाने का विचार छोड़ दिया। २४५५

मऱैन्दु पोय्निन्ऱ वञ्जनु मवरुडै मनत्तै
अऱिन्दु तॆय्ववान् पडैक्कलन् दॊडुप्पदऱ् कमैन्दान्
पिरिन्दु पोवदे करुममिप् पॊऴुदॆनप् पॆयर्न्दान्
शॆऱिन्द देवर्ह ळावलङ् गॊट्टिनर् शिरित्तार् 2456

मऱैन्तु पोय्–छिपे जाकर; निन्ऱ–जो रहा; वञ्चनुम्–वह वंचक भी; **अवरुटैय मनत्तै**–उनके विचार को; अऱिन्तु–जानकर; तॆय्वम्–दिव्य; वान्–उत्तम; पटैकलम्–अस्त्र; तॊटुप्पतऱ्कु अमैन्तान्–चलाने का संकल्प करके; इप्पॊऴुतु–अब; पिरिन्तु पोवते–अलग जाना ही; करुमम्–करणीय है; ऎन–सोचकर; पॆयर्न्तान्–वहाँ से हट गया; चॆऱिन्त तेवर्कळ्–जो भीड़ लगा रहे, उन देवों ने; आवलम् कॊट्टिनर्–ताल बजाये; चिरित्तार्–हँसे। २४५६

जो छिप गया उस इन्द्रजित् ने उनका मन जानकर खुद ब्रह्मास्त्र चलाने का संकल्प कर लिया। (उसकी कुछ पूर्वक्रियाएँ करने के लिए) "अब अलग जाना ही योग्य काम है" —यह सोचकर वह अलग चला गया। बड़ी भीड़ लगाये जो देव खड़े रहे वे हो-हल्ला मचाकर हँसे। २४५६

शॆञ्ज रत्तॊडु शॆण्कदिर् विशुम्बिन्मेऱ् चॆल्ला
मञ्जिन् मामऴै पोयिन दामॆन मार
अञ्जि नान्मऱैन् दानहन् ऱानॆन वार्त्तार्
वॆञ्जि नन्दरु कळिप्पिनर् वानर वीरर् 2457

चॆम् चरत्तॊटु–लाल बाण के साथ; चेण्–बहुत दूर; कतिर्–सूर्य जहाँ संचार करता है; विचुम्पिन् मेल् चॆल्ला–उस आकाश में जाकर; मन्चिन् मा मऴै–काला जलगर्भ मेघ; पोयिततु आम् ऎन–चला जैसे; माऱ–(इन्द्रजित् के) चलने पर; वानर वीरर्–वानर वीरों ने; अञ्चिनान्–डर गया; मऱैन्तान्–छिप गया; अकन्ऱान्–हट गया; ऎन–कहकर; वॆञ्चिनम् तरु–क्रोध के साथ उत्पन्न; कळिप्पिनर्–आनंदित होकर; आर्त्तार्–नारे लगाये। २४५७

लाल रंग के बाण के साथ बहुत दूर आसमान में, जिसमें सूर्य संचार करता है, काले जल-भरे मेघ के समान चला गया। तब वानर वीरों ने धोखे में आकर यह समझ लिया कि इन्द्रजित् डर के कारण चला गया। उन्हें क्रूर कोप के साथ हँसी भी आयी। उन्होंने नारे लगाये। २४५७

उडैन्द वानरच् चेनैयु मोदनी रुवरि
अडैन्द दामॆन वन्दिरैत् तार्त्तॆऴुन् दाडित्
तॊडर्न्दु शॆन्ऱडु तोऱ्ऱवन् यावर्क्कुन् दोन्ऱाक्
कडैन्द वेलैपेरऱ् कलङ्गुऱ मिलङ्गैयिऱ् करन्दान् 2458

उटैन्त–जो हार गये; वानर् चेनैयुम्–वह वानर-सेना; ओतम् नीर् उवरि–विपुल जल-सागर; अटैन्ततु आम् अँत–टूट पड़ा हो जैसे; वन्तु–आकर; इरैत्तु आर्त्तु–जोर के साथ शोर मचाकर; अॅळुन्तु–उठकर; आटि–नाचकर; तॊटर्न्तु चॆन्र्तु–लगातार गयी; तोर्रवन्–हारा हुआ इन्द्रजित्; यावर्क्कुम् तोन्रा–किसी का भी दृष्टिगोचर न होकर; कटैन्त वेलै पोल्–मथे समुद्र के समान; कलक्कुरुम्–व्यथित; इलङ्कैयिल्–लंका में; करन्तान्–छिप गया। २४५८

वानर-सेना, जो हारकर भागी थी, अधिक जल के सागर के समान ज़ोर-शोर के साथ वापस आयी और नाचते हुए बराबर गयी। हारने वाला इन्द्रजित् किसी की आँखों में न पड़कर मथे हुए सागर के समान क्षुब्ध लंका में आकर छिप गया। २४५८

अॅर्कॊ णान्मुहत्न् पडैक्कल मिवरॅन्मेल् विडामुन्
मुन्कॊळ् वेन्नु मुयर्चियन् मरैमुरै मॊळिन्द
शॊर्कॊळ् वेळ्विपोय्त् तॊडङ्गुवा नमैन्दवन् रुणिवै
मर्कॊ डोळव रुणर्न्दिल रवन्रिर मरन्दार् 2459

मल्कॊळ् तोळवर्–भुजबली; अवन् तिरम् मरन्तार्–उसका सामर्थ्य भूल गये; अॅल् कॊळ्–उज्ज्वल; नान् मुकन् पटै कलम्–ब्रह्मास्त्र; इवर्–ये; अॅन् मेल् विटा मुन्–मुझ पर (न) चलाएँ इसके पहले ही; मुन् कॊळ्वेन्–मैं प्रथम हो जाऊँगा; अॅन्नुम् मुयर्चियन्–इस प्रयत्न में; मरै मुरै मॊळिन्त–वेदोक्त; चॊल् कॊळ्–मंत्र उच्चारण कर; वेळ्वि पोय् तॊटङ्कुवान्–यज्ञ जाकर आरम्भ करने के लिए; अमैन्तवन्–उद्यत जो हो गया; तुणिवै–उसका मनोबल; उणर्न्तिलर्–जान नहीं पाये। २४५९

भुजबली श्रीराम और लक्ष्मण इन्द्रजित् की शक्ति को भूल गये। इन्द्रजित् यह संकल्प लेकर गया था कि इनके मेरे ऊपर ब्रह्मास्त्र को चलाने से पहले मैं इन पर ब्रह्मास्त्र प्रेरित कर दूँगा। उसके लिए वेदोक्त कोई यज्ञ करना था, उसे संपन्न करने का उसका दृढ़ संकल्प इन्होंने नहीं जाना। २४५९

अनुम नङ्गदन् ऱोळिनि ऱिळिन्दन राहित्
तनुवुम् वॅङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशमुन् दडक्कैक्
किऩिय कोदैयुन् दुरन्दन रिरुन्दन रिमैयोर्
पनिम लर्त्तोहै पॊळिन्दनर् वाळ्त्तॊलि परप्पि 2460

अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद के; तोळिनिन्ऱु–कंधों से; इळिन्तवर् आकि–उतरकर; तनुवुम्–धनु; वॅम् कणै पुट्टिलुम्–भयानक बाणों के तूणीर; कवचमुम्–और कवच; तट कैक्कु–विशाल हस्तों के; इनिय कोतैयुम्–सुखद हस्तत्राण; तुरन्तनर्–छोड़कर; इरुन्तनर्–रहे; इमैयोर्–देवों ने; वाळ्त्तॊलि परप्पि–बधाई के शब्द कहकर; पनि मलर्–शीतल पुष्प; तॊकै पॊळिन्तनर्–राशियाँ बरसायीं। २४६०

राम और लक्ष्मण, हनुमान और अंगद के कंधों से नीचे उतर आये। धनु, कठोर अस्त्रों के तूणीर, कवच, मधुर विशाल हस्तत्राण आदि उतार दिया। देवों ने स्तुति करके शीतल फूल बरसाये। २४६०

आर्त्त शेनैयि नमलैपोय् विचुम्बिलै यलंक्क
ईर्त्त तेरोडुङ् गडिदुशॆन्ऱान् इरवि
तीर्त्तत्तन् मेलवन् ऱिशैमुहन् पडैक्कलन् जॆलुत्तप्
पार्क्किलेन्मुन्दिप् पडुवदे नन्ऱॆनप् पट्टान् 2461

आर्त्त चेनैयिन्–जिसने युद्धारव किये, उस सेना का; अमलै–शोर; पोय्–जाकर; विचुम्पिलै अलैक्क–आकाश को झकझोरने लगा तो; ईर्त्त तेरोटुम्–(अश्वों द्वारा) खींचे जानेवाले रथ के साथ; इरवि–सूर्य; अकनृऱु–हटकर; कटितु चॆन्ऱान्–तेजी से चला; तीर्त्तत्तन् मेल्–पवित्र लक्ष्मण पर; अवन्–उस (इन्द्रजित्) का; तिचैमुकन् पटैक्कलन्–ब्रह्मास्त्र; चॆलुत्त पार्क्किलेन्–चलाना नहीं देख सकूँगा; मुन्ति पटुवते नन्ऱु–पहले अस्त होना ही अच्छा है; ऎन–सोचकर; पट्टान्–अस्त हुआ। २४६१

नारे उठानेवाली सेना के शोर ने आकाश को हिला दिया। सूर्य अश्वों के खींचे हुए रथ के साथ शीघ्र (अस्ताचल की ओर) चला। वह अस्त हुआ, मानो यह सोचकर कि "पवित्र लक्ष्मण पर इन्द्रजित् जो ब्रह्मास्त्र चलाएगा उसे देख नहीं सकूँगा, इसलिए पहले ही डूब जाना अच्छा है"। २४६१

इरवु नन्पह लुम्बॆरु नॆडुम्जॆरु वियऱ्ऱि
उरवु नम्बडै मॆलिन्दुळ दरुन्दुदऱ् कुणवु
वरवु ताऴ्त्तदु वीडण वल्लैयि नेहित्
तरवु वेण्डिन ऎन्ऱनन् ऱामरैक् कण्णन् 2462

इरवुम्–रात; नन् पकलुम्–अच्छे दिन में; पॆरु–बड़ा; नॆटु–दीर्घ; चॆरु इयऱ्ऱि–युद्ध करके; उरवु नम् पटै–बलवान हमारी सेना; मॆलिन्तुळतु–निर्बल हुई है; अरुन्तुतऱ्कु–खाने के लिए; उणवु–भोजन का; वरवु–आना; ताऴ्त्ततु–विलंबित हो गया; वीटण–विभीषण; वल्लैयिन् एकि–जल्दी जाकर; तरवु वेण्टिनॆन्–लाना यह चाहता हूँ; तामरै कण्णन्–कमलाक्ष ने; ऎन्ऱनन्–कहा। २४६२

तब श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हमारी बड़ी सेना रात और दिन लम्बी लड़ाई करके निर्बल हो गयी है। भोजन के आने में विलम्ब हो रहा है। हे विभीषण ! मैं चाहता हूँ कि जल्दी जाकर भोजन लाओ। अरुणाक्ष राम ने विभीषण से ऐसा कहा। २४६२

इन्न देकडि दियऱ्ऱुवॆ नॆन्नत्तॊऴ् दॆऴुन्दान्
पॊन्नितिन् मौलियन् वीडणन् ऱमरोडुम् बोनान्

कऩ्ऱ लॉऩ्ड्रिलोर् कङ्गुलिऩ् वेलैयैक् कडऩ्दाऩ्
कऩ्ऱ वेलैयि ऩिरामऩ्ऱी दिळैयवर् करैऩ्दाऩ् 2463
अऩ्ऱ

पॉऩ्ऱिऩ् मौलियऩ्–स्वर्णकिरीटी; इऩ्ऱते–यह काम; कटितु–शीघ्र; इयऱ्ऱुवॅऩ्–करूँगा; ॲऩ–कहकर; तॊऴुतु ॲऴुन्ताऩ्–नमस्कार कर उठा; तमरॊटुम् पोताऩ्–अपनों के साथ गया; कऩ्ऱल् ऒऩ्ऱिल्–एक घड़ी में; ओर् कङ्कुलिऩ् वेलैयै–एक रात के काम को; कटन्ताऩ्–पूरा किया; अऩ्ऱ वेलैयिल्–उस समय; इरामऩ्–श्रीराम; इळैयवर्कु–छोटे भाई से; ईतु अरैन्ताऩ्–यों बोले। २४६३

स्वर्णकिरीटी, "अभी करूँगा" कहकर नमस्कार कर उठा। अपने लोगों को ले जाकर एक ही घड़ी में रात भर होनेवाले कार्य को कर दिया। तब श्रीराम ने अपने छोटे भाई से यों कहा—। २४६३

तॅय्व वाऩ्पॅरुम् बडैहट्कु वरऩ्मुऱै तिरुन्दु
मॅय्कॊळ् पूशऩै यियऱ्ऱिऩम् विडुमिदु विदियाल्
ऐय नाऩिवै याऱ्ऱिऩऩ् वरुवदो रळवुम्
कैहॊळ् शेऩैयैक् कावॅऩप् पोर्क्कळङ् गडऩ्दाऩ् 2464

तॅय्वम्–दिव्य; वाऩ्–बहुत; पॅरुपटै कट्कु–श्रेष्ठ अस्त्रों को; वरऩ् मुऱै–यथाक्रम; तिरुन्तु–सुव्यवस्थित; मॅय् कॊळ्–यथार्थ; पूचऩै–पूजा; इयऱ्ऱिऩम्–करके; विटुम्–(तभी) प्रयोग करें; इतु विति–यही विधि है; ऐय–तात; नाऩ् इवै–मैं यह; आऱ्ऱिऩॆऩ्–पूरा करूँ; वरुवतु ओर् अळवुम्–और वापस आऊँ, उस समय तक; कै कॊळ् चेऩैयै–व्यूहबद्ध सेना की; का–रक्षा करो; ॲऩ–कहकर; पोर्क्कळम्–युद्ध के मैदान को; कटन्ताऩ्–पार करके गया। २४६४

श्रेष्ठ और दिव्य अस्त्रों की यथाक्रम उत्कृष्ट और सच्ची पूजा करना, बाद उनको चलना, यही उचित क्रम है। मैं जाकर वह पूजा कर आऊँ, तब तक उन व्यूहगत सेना की रक्षा करो। यह सुनाकर श्रीराम युद्धस्थल पार कर अन्यत्र चले गये। २४६४

तऩ्दै यैक्कण्डु पुहुन्दुळ तऩ्मैयुऩ् दऩ्मेल्
मुऩ्दै नाळ्मुहऩ् पडैक्कलऩ् ऱॊडुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्
शिऩ्दै युट्पुहच् चॅप्पिऩ तऩैयवऩ् ऱिहैत्ताऩ्
ॲऩ्दै यॆऩ्ऩिलिच् चॅयत्तक्क दिशैयॆऩ विशैत्ताऩ् 2465

तऩ्तैयै कण्टु–पिता को देखकर; पुकुन्तु उळ तऩ्मैयुम्–जो हुआ वह; तऩ् मेल्–अपने ऊपर; मुऩ्तै–प्राचीन; नाऩ् मुकऩ् पटैक्कलम्–और ब्रह्मा का अस्त्र; तॊटुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्–चलाने सम्बन्धी (शत्रु का) भाव; चिन्तै उट्पुक–मन में लग जाए ऐसा; चॅप्पिऩऩ्–कहा इन्द्रजित् ने; अतैयवऩ् तिकैत्ताऩ्–रावण ठिठक गया; ॲऩ्तै–पिताजी; इति चॅय तक्कतु ॲऩ्–अब करना क्या है; इचै–कहो; ॲऩ विचैत्ताऩ्–ऐसा पूछा। २४६५

इन्द्रजित् ने अपने पिता से मिलकर घटी हुई बातें और ब्रह्मास्त्र-सम्बन्धी शत्रु का विचार बताया। रावण यह सुनकर ठिठक गया और उसने पुत्र से पूछा कि तात ! अब क्या करना है ? बताओ। २४६५

तन्नैक् कॉल्वदु तुणिवरेऌ इनक्कदु तहुमेल्
मुन्नरक् कॉल्लिय मुयल्हवॅन् ऱरिञरे मॉऴिन्दार्
अन्नप् पोरव रऱिन्दुरा वहैमऱैन् दयन्ऱन्
वॅन्नप् पोर्प्पडै विडुदले नलमिदु विदियाल् 2466

तन्नै कॉल्वतु तुणिवरेल्–अपने को कोई (किसी को) मारना ठान ले तो; तक्कु अतु तकुमेल्–(मारे जाने को जो है) उसे वह संभव हो तो; मुन्नर् कॉल्लिय मुयल्क–वह पहले मारने का यत्न करे; ऍन्ऱु अऱिञरे मॉऴिन्तार्–ऐसा पंडितों ने ही कहा है; अन्न पोर्–उस तरह के युद्ध को; अवर्–वे (नर); अऱिवुऱा वकै–न जानें, इस प्रकार; मऱैन्तु–छिपे रहकर; अयन् तन् वॅन्न पोर्प्पटै–ब्रह्म के युद्धास्त्र का; विटुतले–प्रयोग करना ही; नलम्–भला है; इतु वितियाल्–यही विधि के अनुकूल होगा। २४६६

इन्द्रजित् ने बताया कि विद्वानों का कथन है कि जो किसी को मारने का संकल्प करे तो हो सके तो वह (जिसे मारने का उद्देश्य है) पहले ही उसको मारने का प्रयत्न करे। मैं यह युद्ध, वे जान नहीं पायें ऐसा छिपा रहकर करूँ और ब्रह्मास्त्र चलाऊँ, यही अच्छा है। यह उचित भी है। २४६६

तॉडुक्किन् ऱेनॅन्नुब दुणर्वरे लप्पडै तॉडुत्ते
तडुप्पर् काण्बरेऌ कॉल्लवुम् वल्लरत् तवत्तोर्
इडुक्कॉन् ऱाहिन्ऱ दिल्लैनल् वेळ्वियै यियऱ्ऱि
मुडिप्पॅन् निन्ऱवर् वाऴ्वैयोर् कणत्तॅन मॉऴिन्दान् 2467

तॉटुक्किन्ऱेन्–चलानेवाला हूँ; ऍन्पतु–यह बात; उणर्वरेल्–जान लेंगे तो; अ पटै तॉटुत्ते–वही ब्रह्मास्त्र संधान कर; तटुप्पर्–रोक देंगे; काण्परेल्–(मुझे) देख लेंगे तो; अ तवत्तोर्–वे तपस्वी; कॉल्लवुम् वल्लर्–मार भी सकेंगे; इटुक्कु ऑन्ऱु–बीच में कुछ; आकिन्ऱतु इल्लै–होनेवाला नहीं है; नल् वेळ्वियै इयऱ्ऱि–अच्छा यज्ञ करके; अवर् वाऴ्वै–उनके जीवन को; इन्ऱु–आज ही; ओर् कणत्तु–एक क्षण में; मुटिप्पॅन्–समाप्त कर दूँगा; ऍन–ऐसा; मॉऴिन्तान्–कहा (इन्द्रजित्) ने। २४६७

अगर उन्हें मालूम हो जाय तो वे वही अस्त्र चलाकर उसको रोक देंगे। वे तपस्वी मुझे देख लेंगे तो मार भी सकेंगे। बीच में कुछ नहीं होगा। यज्ञ ठीक तरह से करूँगा और आज ही एक क्षण में उनके जीवन का अन्त कर दूँगा। इन्द्रजित् ने यों कहा। २४६७

ऎन्ऱै यन्ऩवर् अऱिन्दिला वहैशॆय लियऱ्ऱत्
तुन्नु पोर्प्पडै मुडिविला दवर्वयिऱ् ऱूण्डिन्
पिन्ऩै निन्ऱदु पुरिवॆन्ऩ् ऱॆन्ऩवन् पेश
मन्ऩन् मुन्निन्ऱ महोदरऱ् किम्मॊऴि वऴङ्गुम् 2468

ऎन्ऩै-मुझे; अन्ऩवर्-वे; अऱिन्तिला वकै-न जानें इस प्रकार; चॆयल् इयऱ्ऱ-काम करूँ उसके लिए; तुन्नु-खूब घनी; पोर् पटै-व युद्ध करनेवाली सेना को; मुटिविलातु-अनंत रीति से; अवर् वयिऩ्-उन पर; तूण्टिऩ्-भेजेंगे तो; पिऩ्ऩै-फिर; निऩ्ऱतु-जो है; पुरिवॆऩ्-करूँगा; ऎऩ्ऱ-ऐसा; अऩ्ऩवऩ् पेच-इन्द्रजित् के कहने पर; मऩ्ऩऩ्-(लंका के) राजा ने; मुऩ् निऩ्ऱ-सामने स्थित; मकोतरऱ्कु-महोदर से; इ मॊऴि-यह बात; पकर्वाऩ्-कही। २४६८

ताकि मैं उनकी आँख बचाकर यह काम करूँ, इसलिए अच्छी तरह युद्ध कर सकनेवाली घनी सेनाओं को उन पर धावा करने के लिए प्रेरित कर भेज दीजिए। तब मैं जो करना चाहता हूँ, वह करूँगा। इन्द्रजित् का वह कथन सुनकर राक्षसराज ने अपने सामने स्थित महोदर से यह बात कही। २४६८

वॆळ्ळ नूऱुडै वॆञ्जिनच् चेऩैयै वीर
अळ्ळि लैप्पडै यहम्बनऩ् मुदलिय वरक्कर्
ऎळ्ळि लॆण्णिलर् तम्मॊडु विरैन्दनै येहिक्
कॊळ्ळै वॆञ्जॆरु वियऱ्ऱुदि मऩिदरैक् कुऱुहि 2469

वीर-वीर; अळ् इलै-घने पत्र के; पटै-भाले के हथियार वाले; अकम्पऩ् मुतलिय अरक्कर्-अकंप आदि राक्षस; ऎळ्ळिल्-तिल के समान; ऎण् इलर् तम्मॊटु-असंख्यक लोगों के साथ; नूऱु वॆळ्ळम् उटै-सौ 'वॆळ्ळम्' के; वॆम् चिऩम्-कड़े क्रोध के; चेऩैयै-वीरों की सेना को लेकर; विरैन्तऩै एकि-शीघ्र जाकर; कॊळ्ळै-चीरों की जान लूटनेवाले; वॆम् चॆरु-कठोर युद्ध को; मऩितरै कुऱुकि-नरों से जाकर; इयऱ्ऱुति-करो। २४६९

वीर! पत्र-सिर भालेधारी अकम्प आदि, तिल भी नीचे न गिरे, ऐसे अनगिनत वीरों के साथ सौ 'वॆळ्ळम्' की रोषपूर्ण सेना को लेकर शीघ्र जाओ और उन नरों से ऐसा घोर युद्ध करो जिसमें जीवों को अपार परिमाण में मारा जाय। २४६९

माय यॆन्ऩुऩ वल्लऩ यावैयुम् वऴङ्गित्
तीयि ऩुट्पॆऱुम् बरप्पिऩैच् चॆऱिवुऱत् तिरुत्ति
नीयॊ ऱुत्तऩे युलहॊऱु मूऩ्ऱैयु निमिर्वाय्
पोयु ऱुत्तव ऩुयिर्कुडित् तुदवॆऩप् पुहन्ऱान् 2470

नी ऑरुत्तऩे-तुम्हीं एक; वल्लऩ-समर्थ; मायै ऎऩ्ऩुऩ-"माया" कहलाने

वाले; यावैयुम् वल्लक्कि–सभी कार्य करके; ती–बुरे; इरुळ् पॆरुम् परप्पिनै–अन्धकार के बड़े विस्तार को; चॆय्दुवुम् तिरुत्ति–घने रूप से पैदा करके; उलकु ओरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों में; निमिर्वाय्–विजयी होगे; पोय्–जाकर; उरुत्तवर्–हमसे रुष्टों के; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर; उतवु–उपकार करो; ॲॅन–ऐसा; पुकन्ऱान्–कहा (रावण ने)। २४७०

तुम ही अकेले बहुत शक्ति की सभी मायाओं को रचने और भयानक घना अंधकार-विस्तार बनाने में समर्थ हो। तीनों लोकों को जीत कर शानदार रह सकते हो। जाओ हमसे रुष्ट उनके प्राणों को पीकर हमारी सहायता करो। २४७०

ॲॅन्ऱ कालैयि नॆन्ऱुकॊ लेवुव दॆन्ऱु
निन्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कन् मुवहैयि निमिर्न्दान्
शॆन्ऱु तेर्मिशै येऱिन निराक्कदर् शॆऱिन्दार्
कुन्ऱु शुऱ्ऱिय मदक्करिक् कुलमनैन्न कुऱियार् 2471

ॲॅन्ऱ कालैयिन्–उसके कहने पर; एवुवतु ॲॅन्ऱु कॊल्–आज्ञा होगी कब; ॲॅन्ऱु–कहकर (प्रतीक्षा में); निन्ऱ–जो रहा; वाळ् ॲॅयिऱु अरक्कनुम्–तलवार-सदृश दाँतों वाला राक्षस भी; उवकैयिन् निमिर्न्तान्–संतोष के साथ सिर ऊँचा करके; चॆन्ऱु–जाकर; तेर्मिचै–रथ पर; एऱिनन्–चढ़ा; कुन्ऱु चुऱ्ऱिय–पर्वत को घेरे आनेवाले; मतम् करि कुलम् अन्न–मत्त गजवृन्द के समान; कुऱियार्–स्वभाव वाले; इराक्कतर् चॆऱिन्तार्–राक्षस बहुत आये। २४७१

जब लंकेश ने ऐसा कहा तो तलवार के समान दाँतों वाला महोदर, जो यही प्रतीक्षा कर रहा था कि कब मुझे आज्ञा मिलेगी, खुशी से फूल गया। सिर उठाकर गया और रथ पर आरूढ़ हो गया। पर्वत को घेरे रहनेवाले मत्त गजों के समान राक्षस सटे हुए मिल आये। २४७१

कोडि कोडिनू ऱायिर मायिरङ् गुऱित्त
आड लानैह ळणितॊरु मणितॊरुममैन्द
ओडु तेर्क्कुल मुलप्पिल वोडिवन् दुऱ्ऱ
केडिल् वाम्बरि कणक्कैयुङ् गडन्दन किळर्न्द 2472

कोटि कोटि नूऱु आयिरम्–करोड़-करोड़, दस हजार; आयिरम्–हजार; कुऱित्त–गिने हुए; आटल् आनैकळ्–बलवान हाथी; अणि तॊऱुम् अणि तॊऱुम् अमैन्त–हर दल में रहे; ओटु तेर् कुलम्–त्वरितगामी रथवृन्द; उलप्पु इल–असंख्यक; ओटि वन्तु उऱ्ऱ–दौड़ के आये; केटु इल्–निर्दोष; वाम्परि–लपक चलनेवाले घोड़े; कणक्कैयुम् कटन्तन–गणित को पार कर (बेशुमार रीति से); किळर्न्त–उमग उठे। २४७२

हर पलटन में कोटि-कोटि और लक्ष-लक्ष मजबूत हाथी रहे। त्वरितगामी रथसमूह बेशुमार थे। वे भी दौड़े आकर मिल गये। निष्कलंक वाजी गणना पार कर उमँग उठे। २४७२

पडैक्क लङ्गळुम् बरुमणिप् पूण्गळुम् बहुवाय्
इडैक्क लन्दपे रॅयिऱ्ङिळम् बिऱैहळु मॅरिप्पप्
पुडैप्प रन्दत्त वॅयिल्हळु निलाक्कळुम् बुरळ
विडैक्कु लङ्गळ्पो लिराक्कदप् पदादियु मिडैन्द 2473

पडै कलङ्कळुम्–हथियार और; परु मणि पूण्कळुम्–और मोटे रत्नों के आभरण; पकुवाय् इडै–फटे-से मुखों के बीच से; कलन्त–जो मिले रहे; पेर् ऍयिऱु–बड़े दाँतों रूपी; इळम् पिऱैकळुम्–बालचन्द्र; ऍरिप्प–प्रकाश देते रहे इसलिए; पुडै परन्तत–पार्श्वों में फैले; वॅयिल्कळुम्–धूप के समान प्रकाश; निलाक्कळुम्–और चाँदनी-सा प्रकाश; पुरळ–बारी-बारी से दिखायी दिया; विडै कुलङ्कळ् पोल्–बैलों के झुण्डों के समान; इराक्कतर पतातियुम्–राक्षस पदाति वीर; मिडैन्त–सटे आये। २४७३

हथियारों, स्थूल रत्नाभरणों और फटे मुखों के अंदर के बड़े दाँत रूपी अर्धचन्द्रों से प्रकाश छूट रहा था। इसलिए धूप और चाँदनी (की-सी रोशनी) बारी-बारी से छूट रही थी। ऋषभवृन्दों के समान पदाति वीर सटे खड़े रहे। २४७३

कॉडिक्कु ळीइयित्त कॉळुन्दॅडुत् तॅळुन्दु मेऱ्कॉळ्ळ
इडिक्कु ळीइयॅळु मळैप्पॅरुङ् गुलङ्गळै यिरित्त
अडिक्कु ळीइयिडु मिडन्दॉऱुम् अदिर्न्दॅळुन् दारत्त
पॉडिक्कु ळीइयण्डम् बडैत्तवन् कण्णैयुम् बुदैत्त 2472

कुळीइयित्त कॉडि–मिली रही ध्वजाएँ; कॉळुन्तु–अपने अग्र भाग को; ऍडुत्तु ऍळुन्तु–ऊपर करके उठीं और; मेल् कॉळ्ळ–आकाश को व्याप गयीं तो; इडि–अशनियाँ; कुळीइ–मिलाकर; ऍळ–उठनेवाले; मळै पॅरु कुलङ्कळै–बड़े मेघवृन्दों को; इरित्त–अस्त-व्यस्त कर दिया (ध्वजाओं ने); अडि–पैर; कुळीइ–मिलकर; इडुम्–जहाँ रखे जाते हैं; इडम् तॉऱुम्–उन स्थानों से; अतिर्न्तु ऍळुन्तु–शोर के साथ उठकर; आर्त्त पॉडि–जो भरी उस धूल से; कुळीइ–मिलकर; अण्डम् पडैत्तवन्–अण्डसर्जक; कण्णैयुम्–(ब्रह्मा की) आँखों को भी; पुतैत्त–मुँदवा लिया। २४७४

पताकाओं के ऊपर के भाग आकाश में बहुत ऊपर हिल रहे थे, इसलिए अशनियुक्त मेघों के समूह अस्त-व्यस्त हुए। इनके पदाघात से धूल शोर के साथ उठी और उसकी राशि ने लोक-सर्जक की आँखों को भी मुँदवा लिया। २४७४

आनै यॅन्नुमा मलैहळि त्तिळिमद वरुवि
वान याऱुहळ् वाशिवाय् नुरैयॊडु मयङ्गिक्
कान मामरङ् गल्लॊडु मोर्त्तत्त कडिदिऱ्
पोल पोक्करम् बॅरुमैय पुणरियुद् पुक्क 2475

आनै ऍन्नुम्–गज रूपी; मा मलैकळिन्–बड़े पर्वतों से; इळि–सरकनेवाली; मतम् अरुवि–मदनीर रूपी; वातम् याऱुकळ्–आकाशसरिताएँ; वाचि वाय्–घोड़ों के मुख के; नुरैयोटुम्–झाग के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; कातम् मा मरम्–जंगल के बड़े पेड़ों को; कल्लोटुम् ईर्त्तन–पत्थरों-सह खींच लेती हुई; कटितिन् पोन–सवेग जाकर; पोक्क अरु पॆरुमैय–गुरुता-सह; पुणरियुळ् पुक्क–समुद्र में घुसीं। २४७५

हाथी रूपी पर्वतों से गिरनेवाली मदनीर की आकाश-नदियाँ घोड़ों के मुखों से निकलनेवाले झागों से मिलकर जंगल के बड़े-बड़े पेड़ों और पत्थरों को खींच ले गयीं और अगम शान के साथ समुद्र में घुस गयीं। २४७५

तडित्तु मिन्गुलम् विशुम्बिडैत् तयङ्गुव शलत्तिन्
मडित्त वायिनर् वाळॆयिऱ् ऱरक्करतम् वलत्तिऱ्
पिडित्त तिण्पडै विदिर्त्तिड विदिर्त्तिडप् पिऱऴ्न्दु
पॊडित्त वॆम्बॊऱि पुहैयॊडु पोवन पोल्व 2476

चलत्तिन्–कोप से; मटित्त वायिनर्–ओंठ काटते हुए; वाळ् ऍयिऱु अरक्कर्–तलवार-सम दाँतों वाले राक्षस; तम् वलत्तिल्–अपने दायें हाथों में; पिटित्त–पकड़े हुए; तिण् पटै–कठोर हथियारों को; वितिर्त्तिट वितिर्त्तिट–ज्यों-ज्यों झटकाते; पिऱऴ्न्तु पॊटित्त–बारी-बारी से निकले; वॆम् पॊऱि–गरम अंगारे; पुकैयोटु–धुएँ के साथ; पोवन–आगे गये; तटित्तु मिऩ्कुलम्–तडितों की राशि; विचुम्पिटै–आकाश में; तयङ्कुव पोल्व–प्रकाश देतीं जैसे रहीं। २४७६

ज्यों-ज्यों क्रोध के कारण अधरों को दाँतों के मध्य दबाए रहनेवाले घोर दंतोरे राक्षस अपने दाहिने हाथों के पकड़े हुए हथियारों को हिलाते, त्यों-त्यों अंगारे उठे और धुएँ के साथ बढ़े और आकाश में तडित् के समान छविमान रहे। २४७६

शॊन्न नूऱडै वॆळ्ळमन् ऱिरावणन् ऱुरन्द
अन्न शेनैयै वायिलू डुमिऴ्हिन्ऱ वमैदि
मुन्नम् वेलैयै मुऴुवदुङ् गुडित्तदु मुऱैयॆ
ऎन्न मीट्टुमिऴ् तमिऴ्मुनि यॊत्तदव् विलङ्गै 2477

अन्ऱु–उस दिन; इरावणन् तुरन्त चॊन्न–रावण का भेजा जो कहा गया उसके अनुसार; नूऱु उटै वॆळ्ळम्–सौ 'वॆळ्ळम्' की; अन्न चेनैयै–उस सेना को; इलङ्कै–लंका; वायिल् ऊटु–मुख से; उमिऴ्किन्ऱ अमैति–उगल रही थी उस प्रकार से; मुन्नम्–पहले; वेलैयै–समुद्र को; मुऴुवतुम् कुटित्ततु–पूर्ण रूप से पीकर (उगल रहा); ईतु मुऱै ऍन्न–यही वह प्रकार है, ऐसा; मीट्टु उमिऴ्–उगलनेवाले; तमिऴ् मुनि–'तमिऴ्' के निर्माता मुनि; ऒत्तततु–के समान रहा। २४७७

उस दिन रावण ने (एक सौ 'वॆळ्ळम्' सेना) कही थी। लंका के नगर-द्वार से वह सेना बाहर निकली तो ऐसा लगा मानो पहले कभी

समुद्र पीकर अगस्त्य मुनि ने जैसे उसका वमन किया था, उसी प्रकार वह नगर सेना को वमन कर रहा हो। २४७७

शङ्गु पेरियुङ् गाळमुन् दाळमुन् दलैवर्
शिङ्ग नादमुन् जिलैयिना णॊलिहळुग् जिनमाप्
पॊङ्गु मोदैयुम् बुरवियि नमलैयुम् बॊलन्देर्
वॆङ्ग णोलमु मालॆन विळुङ्गिय वुलहै 2478

चङ्कु–शंख; पेरियुम्–भेरियाँ; काळमुम्–काहल; ताळमुम्–ताल; तलैवर् चिङ्क नातमुम्–सेनानायकों का केसरी-गर्जन; चिलैयिन्–चापों के; नाण् ऑलिकळुम्–ज्यास्वन; चित्त मा–क्रोधी गजों की; पॊङ्कुम् ओतैयुम्–गुंजायमान चिघाड़; पुरवियिन्–घोड़ों के; अमलैयुम्–हिनहिनाने के स्वर; पॊलम्–सुन्दर; तेर्–रथों के; वॆम् कण् ओलमुम्–भयंकर चक्रस्थल की गड़गड़ाहट; माल् ऎन–श्रीविष्णु के समान; उलकै विळुङ्किय–संसार को ढाँप गये। २४७८

शंख, भेरियाँ, काहल, ताल, सिंहनाद, धनुष्टंकार, क्रोधी हाथियों की गुंजायमान चिंघाड़, घोड़ों का हिनहिनाना, स्वर्णरथों के पहियों की गड़गड़ाहट —इन सबने भुवनों को उदरस्थ करनेवाले विष्णु के समान इस संसार को अपने अन्दर समा लिया। २४७८

पुक्क दार्पॆरुम् बोर्प्पडै पऱ्ऱन्दलैप् पुऱत्तिल्
तॊक्क दॆट्टु वानरत् तानैयुन् दुवन्ऱि
ऒक्क वार्त्तन वुरुक्किन तॆळित्तन वुरुमिन्
मिक्क वान्पडै विडुकणै मामलै विलक्कि 2479

पॆरुम् पोर् पटै–बड़ी युद्ध-सेना; पऱ्ऱन्तलै–मिलकर; पुऱत्तिल् पुक्कतु–युद्ध-मैदान में घुसी; ऎट्टु वानरत् तानैयुम्–बड़ी वानर-सेना भी; तुवन्ऱि तॊक्कतु–मिलकर आयी; मिक्क–अधिक; वान् पटै–परिमाण की राक्षस-सेना द्वारा; विटु कणै–प्रयुक्त बाणों को; मा मलै–बड़े पहाड़ों से; विलक्कि–रोककर; ऒक्क आर्त्तन–एक साथ शोर कर उठे (वानर); उरुक्किन–डाँटे; उरुमिन्–अशनि के समान; तॆळित्तन–डपटे। २४७९

बड़े युद्ध के लिए तैयार वह सेना मिलकर मैदान में आयी। बड़ी वानर-सेना भी मिलकर आयी और लड़ाई शुरू हो गयी। राक्षसों ने बाण छोड़े, वानरों ने उनको बड़े-बड़े पर्वतों से रोका, मर्दन किया। वानर वीर डाँटे-डपटे। २४७९

कुन्ऱु कॊडियुङ् गॊडिमेऱ् कॊडियुङ् गुऱित्त
वॆन्ऱि वानर वीरर्हण् मुहन्दॊऱुम् विलङ्गल्
ऒन्ऱि ऱ्माल्वरु मैवरु मिराक्कद रुलन्दार्
पॊन्ऱि वीऴ्न्दन पॊरुकरि पाय्परि पॊलन्देर् 2480

मुकम् तोंऱुम्–स्थान-स्थान पर; कोटियुम् कोटि मेल् कोटियुम्–कोटियों और उन पर कोटियों की संख्या में; कुन्ऱु–पर्वतों को; कुऱित्तु–निशाना बाँधकर फेंकनेवाले; वॅन्ऱि वानर वीरर्कळ्–विजयी वानर वीरों के; विलङ्कल् ऒन्ऱिल्–एक-एक पर्वत से; नाल्वरुम् ऐवरुम्–चार-चार, पाँच-पाँच; इराक्कतर्–राक्षस; उलन्तार्–मरे; पोरु करि–लड़नेवाले हाथी; पाय् परि–लपकनेवाले घोड़े और; पोलम् तेर्–स्वर्णमय रथ; पोन्ऱि वीऴ्न्तन–नाश होकर गिरे। २४८०

विजयाभिलाषी वानर वीरों ने कोटियों पर कोटियों में पर्वत लेकर निशाना बाँधकर चलाये। हर पर्वत ने चार-पाँच राक्षसों का काम तमाम कर दिया। लड़ाकू हाथी, सरपट भागनेवाले घोड़े और स्वर्णमय रथ मर मिटे। २४८०

मऴुवुञ् जूलमुम् वलयमुम् नाञ्जिलुम् वाळुम्
ऎऴुवु मीट्टियुन् दोट्टियु मॆऴुमुनैत् तण्डुम्
तऴुवुम् वॅलोडु कणैयमुम् बहऴियुन् दाक्कक्
कुऴुवि नोडुपट् टुरुण्डन वानरक् कुलङ्गळ् 2481

मऴुवुम्–परशु और; शूलमुम्–शूल; वलयमुम्–वलय और; नाञ्चिलुम्–'नांजिल' (हल ?); वाळुम्–तलवार; ऎऴुवुम्–और खम्भे; ईट्टियुम्–साँग; तोट्टियुम्–अंकुश; ऎऴुमुनै तण्टुम्–खम्भे-सदृश अग्रभाग वाले दण्ड; तऴुवुम्–लगनेवाले; वेलोटु–भाले के साथ; कणैयमुम्–'कणयम्'; पकऴियुम्–और वाणों के; ताक्क–प्रहार से; वानरर् कुलङ्कळ्–वानरगण; कुऴुविनोटु–झुण्ड के झुण्ड में; पट्टु–मरकर; उरुण्टन–लोट गये। २४८१

परशु, शूल, वलय, "नांञ्जिल" (हल?), तलवार, खम्भे, साँग, अंकुश, गदा और "वेल", "कणयम" और वाणों के लगने से वानरकुल झुण्डों में मरे। २४८१

मुऱ्क रङ्गळु मुशलमु मुशुण्डियु मुळैयुम्
शक्क रङ्गळुम् बिण्डिबा लत्तोडु तण्डुम्
कप्प णङ्गळुम् वळैयमुङ् गवणुमिऴ् कल्लुम्
वॅऱ्पि नङ्गळै नुऱुक्किन कविहळै वीऴ्त्तन 2482

मुऱ्करङ्कळुम्–मुद्गर; मुचलमुम्–मूसल; मुचुण्टियुम्–मुशुण्डी; मुळैयुम्–बाँस; चक्करङ्कळुम्–चक्र; पिण्टिपालत्तोटु–भिंडीपालों के साथ; तण्टुम्–गदा; कप्पणङ्कळुम्–'कप्पण'; वळैयमुम्–वलय; कवण् उमिऴ् कल्लुम्–ढेलेबाँस; वॅऱ्पिनङ्कळै–(उन हथियारों ने) पर्वतसमूहों को; नुऱुक्किन–चूर कर दिया; कविकळै–वानरों को; वीऴ्त्तन–गिराया। २४८२

मुद्गर, मूसल, मुशुंडी, बाँस, चक्र, भिण्डीपाल, गदा, कप्पन, वलय, और ढेलेबाँस आदि ने पर्वतों को चूर-चूर कर दिया और वानरों को मार गिराया। २४८२

कदिर यिऱ्पडैक् कलम्वरन् मुऱैमुऱै कडाव
अदिर्पि णप्पॅरुङ् गुन्ऱुहळ् पडप्पड वळिन्द
उदिर मुऱ्ऱुपे राऱुहळ् तिशैत्तिशै योड
ऍदिर्न डक्किल कुरक्किन मरक्करु मियङ्गार् 2483

कतिर्–उज्ज्वल; अयिल्–तीक्ष्ण; पटै कलम्–हथियारों को; वरन् मुऱै मुऱै कटाव–यथाक्रम चलाने से; कुरक्किनम्–वानर-समूह; ऍतिर् नटक्किल–सामने जा नहीं सके; अतिर् पिणम्–शोर के साथ गिरनेवाली लाशों के; पॅरु कुन्ऱुकळ्–बड़े-बड़े पर्वतों के; पट पट–उत्तरोत्तर गिरते रहने से; अळिन्त–उनसे अधिक परिमाण में निकलनेवाले; उतिरम् उऱ्ऱ पेर् आऱुकळ्–रुधिर की बनी बड़ी नदियों के; तिचै तिचै ओट–दिशा-दिशा में बहने से; अरक्करुम् इयङ्कार्–राक्षस भी बढ़ नहीं सके। २४८३

राक्षसों के ज्वलंत हथियारों को यथाक्रम चलाने से वानरदल आगे नहीं बढ़ सके। शोर मचाते हुए गिरनेवाली लाशों के बड़े-बड़े पर्वतों से टकराना पड़ा और उनसे बहनेवाली बड़ी-बड़ी रक्त-नदियाँ सभी दिशाओं में बह रही थीं। इसलिए राक्षस भी नहीं चल-फिर सके। २४८३

याव राङ्गिहल् वानर रायिन रॅवरुम्
तेव रादलि नवरोडुम् विशुम्बिडैत् तिरिन्दार्
मेवु कादलिन् मॅलिवुरु मरम्बैयर् विरुम्बि
आवि योन्ऱिडत् तळुविनर् पिरिवुनो यहन्ऱार् 2484

आङ्कु–वहाँ; यावर्–जो; इकल् वानरर् आयिनर्–लड़नेवाले वानर थे; ऍवरुम्–वे सभी; तेवर् आतलिन्–(पूर्ववत्) देव बने, इसलिए; अवरोटुम्–उनके साथ; विचुम्पिटै तिरिन्तार्–व्योमलोक में घूमती; मेवु कातलिन्–जाग्रत् प्रेम से; मॅलिवुऱुम् अरम्पैयर्–पतली बनी अप्सराओं ने; विरुम्पि–कामना-सह; आवि ऑन्ऱिट–प्राण एक करके; तळुविनर्–आलिंगन किया; पिरिव नोय्–विरह-रोग से; अकन्ऱार्–छूटीं। २४८४

उस युद्ध में जो मरे वे सभी वानर अपने यथार्थ में देव थे। अब वे फिर से देव बन गये और उनकी स्त्रियाँ आकाश में विरह के साथ थकी हुई घूम रही थीं। अब इनको एक-प्राण होकर गले लगाकर विरह-पीड़ा से मुक्त हुईं। २४८४

करक्कु मायमुम् वञ्जमुङ् गळवुमे कडना
इरक्क मेमुदल् तरुमत्ति नॅऱियोन्ऱु मिलला
अरक्क रॅप्पॅरुन् दैवर्ह ळाक्किन वमलन्
शरत्तिन् वेऱिनिप् पवित्तिर मुळदॅनत् तहुमो 2485

करक्कुम्–आँख बचाकर; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वंचना; कळवुमे–चोरी ही; कटना–अपना कर्तव्य बना लेकर; इरक्कमे मुतल्–दया आदि;

तरुमत्तिन् नॅरि ऒन्रुम् इल्ला—कोई धर्म-मार्ग न अपनाकर जो रहे; अरक्करै—उन राक्षसों को; पॅरु तेवर्कळ्—बड़े-बड़े देवों में; आक्किन—बदल दिया; अमलन्—निर्मल लक्ष्मण के; चरत्तिन्—बाणों से बढ़कर; इनि—अब; पवित्तिरम्—पवित्र; वेऱु—अन्य कुछ; उळतु ॲन—है कहना; तकुमो—ठीक होगा क्या। २४८५

उधर राक्षस भी, जिनका स्वभाव माया, वंचकता, चोरी और निर्दयता का था, अमर बन गये। यह लक्ष्मण के बाणों की पवित्रता का फल था। फिर उनसे पवित्र कोई चीज़ है, यह कहा जा सकता है क्या? । २४८५

अन्द हन्पॅरुम् बडॅक्कल मन्दिरित् तमैन्दात्
इन्दु वॅळ्ळॅयिड् ररक्करु मियात्तॅयुन् देरुम्
वन्द वन्दन वान्ह मिडम्बॅरा वण्णम्
शिन्दि नान्शर मिलक्कुवन् मुहन्दॉरुन् दिरिन्दात् 2486

इलक्कुवन्—लक्ष्मण; अन्तकन् पॅरु पटैक्कलम्—यम का बड़ा अस्त्र; मन्तिरित्तु अमैन्तात्—अभिमंत्रित कर लिये हुए; मुकम् तोऱुम्—हर युद्धाग्रस्थल में; तिरिन्तान्—जाते रहे और; इन्तु वॅळ् ॲयिऱु—चन्द्र-सम श्वेत दाँतों वाले; अरक्करुम्—राक्षस और; यात्तॅयुम् तेरुम्—गज और रथ; वन्त वन्तन—जो भी आये उन्हें; वानकम्—आकाश-स्थल को; इटम् पॅऱा वण्णम्—स्थान न मिले ऐसा; चरम् चिन्तितान्—शर (बहुत संख्या में) चलाते रहे। २४८६

लघुराज लक्ष्मण यमास्त्र को अभिमंत्रित कर हाथ में लिये हुए फिरे और उनके अस्त्रों से अर्धचन्द्र-सम दाँतोंवाले राक्षस हाथी और गज जो भी उनके सामने आये, मरकर आकाश में ऐसे भर गये कि कोई स्थान बाक़ी नहीं रहा। २४८६

कुम्ब कन्नन्राण् डिट्टदु वयिरवान् कुन्ड्रित्
वॅम्बु वॅञ्जुडर् विरिप्पदु तेवरै मॆन्नाळ्
तुम्बॅ यिन्ड्रलॆत् तुरन्ददु ञ्जुडर्मणित् तण्डॊन्
ड्रिम्बर् ञालत्तै नॅळिप्पदु मारुदि यॅडुत्तात् 2487

कुम्पकन्नन् आण्टु इट्टतु—कुंभकर्ण ने जिसे वहाँ छोड़ दिया था वह; वान् वयिरम् कुन्ऱित्—बड़े वज्र-पर्वत के समान; वॅम्पु—तापक; वॅम् चुटर्—गरम दीप्ति को; विरिप्पतु—छिटकानेवाली; मॆल् नाळ्—पुराने ज़माने में; तेवरै—देवों को; तुम्पैयिन् तलै—युद्ध में; तुरन्ततु—जिसने भगाया वह; इम्पर् ञालत्तै—इहलोक को; नॅळिप्पतु—लचकानेवाली; चुटर् मणि—ज्वलन्त मणि-जड़ित; तण्टु ऒन्ऱु—एक गदा को; मारुति ॲटुत्तान्—मारुति ने लिया। २४८७

मारुति ने एक गदा हाथ में ली। वह गदा कुम्भकर्ण की थी, जो वहाँ छोड़ी गयी थी। बड़े वज्रपर्वत के समान थी और संतापक किरणों को

निकालती थी। उसने पुराने ज़माने में युद्ध के अवसर पर देवों को हराकर भगाया था। उसके सामने इहलोक भी लचक जाता था और उसमें कांति-पूर्ण मणियाँ जड़ी हुई थीं। २४८७

काऱ्ऱत्ऱिवु कनलन्ऱॆन्ऩ विमैयोरिडै काणा
वेऱ्ऱङ्गडु विशैयोडुयर् कॊलैनीडिय दियल्बाल्
शीऱ्ऱनदनि युरुवायिडै तेऱादवॊर् माऱाय्क्
कूऱ्ऱङ्गॊडु मुनैवन्दॆनक् कॊन्ऱालिहल् निन्ऱान् 2488

इकल् निन्ऱान्–विरोध में जो खड़ा रहा वह हनुमान; एऱ्ऱम्–बढ़ती; कडुविचैयोडु–अधिक तेजी के साथ; उयर् कॊलै–बड़े हत्या-कार्य में लगा; नीडिय इयल्पाल्–उसके स्वाभाविक प्रकार से; इतु काऱ्ऱु अन्ऱु–यह पवन नहीं; इतु कनल् अन्ऱु–यह आग नहीं; ॲन्ऩ–कहकर; इमैयोर् इटै काणा–देव सच्ची स्थिति न जान सकें; कूऱ्ऱम् चीऱ्ऱम् तनि उरुवाय्–(ऐसा) यम का मूर्तिमान क्रोध; इटै तेऱातवु–सत्य नहीं जाना जाए, इस रीति से; ओर् माऱाय्–अनुपम रीति से बदले हुए रूप में; कॊटु मुनै–भयंकर युद्धक्षेत्र में; वन्तु ॲन्ऩ–आया हो ऐसा; कॊन्ऱान्–हत्या करता रहा। २४८८

रोषपूर्ण हनुमान ने अत्यधिक वेग के साथ बहुत लोगों को लगातार मारते हुए गदा चलायी। देवों को यह लगा कि यह पवन नहीं है, न आग ही। वे सच्ची स्थिति जान नहीं सके। यम के क्रोध का रूप बनकर वह अशांत वैर के साथ क्रूर युद्धस्थल में आया हो, इस तरह हत्या-काम करने लगा। २४८८

वॆङ्गणमद मलैमेल् विरै परिमेल् विडु तेर्मेल्
शङ्गनदरु पडै वीरर्ह ळुडऩ्मे लवर् तलैमेल्
ॲङ्गुमुमुळ नीरुवन् ऩदिर्त् तिरुनान् मऱै तॆरिक्कुञ्
जॆङ्गणवऩ् निवनॆ यॆन्ऩत् तिरिन्दान् कलै तॆरिन्दान् 2489

कलै तॆरिन्तान्–कलाविद् हनुमान; वॆम् कण्–क्रूर आँखों और; मतम्–मद वाले; मलै मेल्–पर्वत (-सम) गजों पर; विरै परि मेल्–सवेग घोड़ों पर; विटु तेर् मेल्–चालित रथों पर; चङ्कम् तरु पटै वीरर्कळ्–झुण्डों के राक्षसों के; उटल् मेल्–शरीरों पर; अवर् तलै मेल्–उनके सिरों पर; इरु–श्रेष्ठ; नान् मऱै तॆरिक्कुम्–चतुर्वेद-प्रतिपादित; चॆङ्कण्णवन्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; इवऩे–यही; ॲन्ऩ–ऐसा; ऒरुवन् ॲङ्कुम् उळन् आकि–सर्वव्यापी बना; ॲतिर्त्तु तिरिन्तान्–प्रहार करता फिरा। २४८९

विविध कलाविद् हनुमान क्रूर आँखोंवाले मदमत्त पर्वत-सम गजों पर, तेज दौड़नेवाले घोड़ों पर और झुंडों के राक्षसों के शरीरों और सिरों पर प्रहार करता हुआ घूमा कि वह एक ही समय में सर्वत्र दिखायी दिया

और लोग कहने लगे कि वे प्रशंसित वेदप्रतिपादित अरुण कमलाक्ष यही हैं। २४८९

किळर्न्दारैयुङ् गिडैत्तारैयुङ् गिळित्तान्कनल् विळित्तान्
कळन्दान्नीरु कुळम्बाम्वहै यरत्तान्निरु करत्तान्
वळर्न्दानिलै युणर्न्दारुल हीरुमून्ऱैयुम् वलत्ताल्
अळन्दान्मुन्न भिवनेयॆन्न विमैयोर्हळु मयिर्त्तार् 2490

किळर्न्तारैयुम्–उमँगकर बढ़ आनेवालों और; किटैत्तारैयुम्–उसके हाथों में जो फँस गये उन्हें; कनल् विळित्तान्–आग के समान दृष्टि डालकर; किळित्तान्–चीरा और; कळम्–भूमि; ओर् कुळम्पु आम् वकै–कीच बन जाए, ऐसा; इरु करत्तान्–दोनों हाथों से; अरैत्तान्–पीस डाला; वळर्न्तान् निलै–जो प्रवृद्ध हो गया उसकी स्थिति; उणर्न्तार्–स्थिति जानकर; इमैयोर्कळुन्–देवों ने भी; ओरु उलकु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; वलत्ताल्–बल से; मुन्नम्–पहले; अळन्तान् इवन्–जिन्होंने मापा था वे यही हैं; ऎन–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय किया। २४९०

हनुमान ने उत्साह के साथ बढ़ आनेवालों और अपने हाथ में फँसे हुए राक्षसों को आग बरसाती आँखों से तरेरकर उनको चीरा और युद्धस्थल को कीच बनाते हुए अपने दोनों हाथों से पीस दिया। विश्व-रूप में उसका रूप देखकर देवों ने यह संदेह किया कि वही त्रिलोकमापक त्रिविक्रम देव है। २४९०

मत्तक्करि नॆडुमत्तहम् वहिर्प्पट्टुह मण्मेल्
मुत्तिऱ्पॊलि मुळुमेनियन् मुहिल्विण्डॊडु मॆय्यान्
ऒत्तक्कडै युहमुऱ्ऱुळि युरुकाल्पॊर वुडुमीन्
तॊत्तप्पॊलि कनहक्किरि वॆयिल्सुऱ्ऱिय वॊत्तान् 2491

मत्त करि–मत्त गजों के; नॆटु मत्तकम्–बड़े मस्तक; वकिर पट्टु–फूटे और; उक–(मोती) गिरे; मण् मेल्–इस भूमि पर; मुत्तिल् पॊलि–उन मोतियों के साथ शोभायमान; मुळु मेनियन्–पूर्ण शरीर वाला; मुकिल् विण्–मेघ-भरे आकाश को; तॊटु मॆय्यान्–छूनेवाले आकार का; ऒत्तु अ कटै उकम् उऱ्ऱुळि–सब मिलकर जब युगान्त में नष्ट होते हैं तब; उरु काल् पॊर–बड़ी प्रबल वायु के झोंके से; उटु मीन्–उडु-नक्षत्र; तॊत्त–लगे रहें; पॊलि–ऐसे दीप्तिमान; वॆयिल् चुऱ्ऱियतु–और सूर्य जिसकी परिक्रमा करता है उस; कनकम् किरि–कनकगिरि के; ऒत्तान्–समान रहा। २४९१

मत्त गजों के माथे फूटे और उनसे निकले मोतियों से उसका शरीर अलंकृत हो गया। मेघाश्रय आकाशव्याप्त-शरीरी हनुमान उस कनकगिरि के समान लगा, जिस पर युगांतकालीन झंझा से नक्षत्र आकर लगे हुए लटकते हों और जिसकी सूर्य परिक्रमा करता हो। २४९१

इडित्तानिलम् विशुम्बोडन्न विट्टानडि यॅळुन्दान्
पॊडित्तान्कडर् पॆरुञ्जेनैयैप् पॊलन्दण्डुतन् वलत्ताल्
पिडित्तान्मद करितेर्मुदल् पिळम्बानवै कुळम्बा
अडित्तानुयिर् कुडित्तानॆडुत् तार्त्तान्पहै तीर्त्तान् 2492

पॊलम् तण्टु–सुन्दर गदायुध; तन् वलत्ताल्–अपने दाहिने हाथ से; पिटित्तान्–पकड़ लेकर; निलम्–भूमि और; विचुम्पोटु–आकाश को; इटित्तान्–तोड़ता; ऎन्–जैसे; अटि इट्टान्–पग धरता; ऎळुन्तान्–ऊँचा बना; कटल् पॆरु चेनैयै–सागर-सी बड़ी सेना को; पॊटित्तान्–चूर कर दिया; मतम् करि–मत्त गज; तेर् मुतल्–रथ आदि; पिळम्पु आनवै–जो रूपधारी पदार्थ थे, उन सबको; कुळम्पा–(सालन) कीच; अटित्तान्–बना दिया; उयिर् कुटित्तान्–प्राण पी लिये; पकै तीर्त्तान्–शत्रु मिटाकर; ऎटुत्तु आर्त्तान्–स्वर उन्नत कर नाद किया। २४९२

मारुति उज्ज्वल-दण्ड गदा को अपने दाहिने हाथ में पकड़कर आकाश और भूमि को अस्त-व्यस्त करता था। पग धरकर जो ऊँचा हुआ उसने सागर-सम बड़ी सेना को छिन्न-भिन्न किया। मत्त गजों, रथों और अन्य रूपधारी पदार्थों को रूपहीन कीच बनाया। प्राण पिये और उच्च स्वर नाद उठाया। २४९२

नूऱायिर मदमाल्करि यॊरुनाळिहै नुवल्पो
दाऱायॆनॆडुङ् कडुञ्जोरियि नळऱाक्कवहै यरैप्पान्
एऱायिर मॆन्नलायॆळु वयवीररै यिडऱित्
तेऱादुरु कॊलैसेविय तिशैयानैयिऱ् ऱिरिन्दान् 2493

ऒरु नाळिकै नुवल् पोतु–एक घड़ी कहलानेवाले समय के अन्दर; आऱाय्–नदी बनकर बहनेवाले; नॆटु–बहुत; कटु–भयंकर; चोरियिन्–रक्त में; नूऱु आयिरम्–सौ हजार; मतम् माल् करि–मत्त, बड़े गजों को; अळऱु आम् वकै–कीच बनाकर; अरैप्पान्–पीसता; आयिरम् एऱु ऎन्नलाय्–हजार सिंह मानो ऐसा; ऎळु–उठके आनेवाले; वयम् वीररै–बलवान वीरों को; इटऱि–पैर से ठुकराकर; तेऱातु उरु–मद में अपने को भूले हुए और; कॊलै सेविय–हत्या-प्रेमी; तिचै यानैयिल्–दिग्गज के समान; तिरिन्तान्–घूमा। २४९३

एक घड़ी में नदियों के रूप में बहनेवाले अति भयानक रक्त में लाखों गजों को कीच बनाते हुए पीसा और वह हज़ारों की संख्या में नर केसरियों के समान चढ़ आनेवाले बलवान राक्षसों को पैर से ठुकराता हुआ मत्त और हत्या-प्रेमी दिग्गज के समान घूमता रहा। २४९३

तेरॆऱिन्नर् परियॆऱिन्नर् विडैयॆऱिन्नर् शिन्नवॆङ्
गारॆऱिन्नर् मळैयॆऱिन्नर् कलैयॆऱिन्नर् पलवॆम्
पोरॆऱिन्नर् पुहळॆऱिन्नर् पुहुन्दार्पुडै वळैन्दार्
नेरॆऱिन्नर् विशुम्बॆऱिड नॆरित्तान्कदै तिरित्तान् 2494

विटै एऱ्ऱिनर्–ऋषभ-सम; तेर् एऱ्ऱिनर्–रथारूढ़; परि एऱ्ऱिनर्–अश्वारूढ़ वितम् वॅम् कार्–क्रुद्ध भयंकरगजों पर; एऱ्ऱिनर्–सवार; मऴै एऱ्ऱिनर्–वर्षा करने वाले; कलै एऱ्ऱिनर्–युद्धविद्या में बढ़े-चढ़े; पल वॅम् पोर् एऱ्ऱिनर्–अनेक भयंकर युद्ध जो कर चुके; पुकऴ् ऐऱ्ऱिनर्–और बड़े कीर्तिमान हो गये; पुकुन्तार्–(वे सब) युद्धभूमि में पहुँचे; पुटै वळैन्तार्–चारों ओर से घेर आये; नेर् एऱ्ऱिनर्–सीधे युद्ध किया, उन सबको; कतै–गदा; तिरित्तान्–घुमाकर; विचुम्पु एऱ्ऱिट–आकाश में चढ़ जाने को मजबूर करते हुए (मृत्युलोक में पहुँचाते हुए); नॅरित्तान्–सटाकर मारा। २४९४

ऋषभ के समान राक्षस, रथारूढ़, अश्वारूढ़ और क्रूर क्रोधी गजों पर आरूढ़ हो आये। वे युद्धकलाज्ञानी, क्रूर युद्धों के अभ्यस्त और यशस्वी थे। वे युद्ध के मैदान में आये और उसको घेरकर आगे बढ़े। हनुमान ने गदा घुमाकर उनको सटाकर मारा और आकाश पर चढ़वा दिया। २४९४

अरिकुल मन्न नील नङ्गदन् कुमुदन् शाम्बन्
परुवलिप् पनश नॅन्ऱिप् पडैत्तलै वीरर् यारुम्
वॅरुशिनन् दिरुहि वॅट्ऱिप् पोर्क्कळ मरुङ्गिऱ् पुक्कार्
ऑरुवरै यॉरुवर् काणा रुयर्पडैक् कडलि नुळ्ळार् 2495

अरिकुलम् मन्नन्–वानरकुल का राजा; नीलन्–नील; अङ्कतन्–अंगद; कुमुतन्–कुमुद; चाम्पन्–जाम्बवान; परुवलि–अतिबली; पनचन्–पनश; अन्ऱु–वरारः; इ पटै तलै वीरर् यारुम्–ये सभी सेनानायक वीर; पॊरु चितम् तिरुकि–युद्धप्रेरक कोप में ऐंठकर; वॅऱ्ऱि पोर्क्कळम् मरुङ्किल्–विजयदायी युद्धमंच के पार्श्व में; पुक्कार्–घुसे; ऑरुवरै ऑरुवर् काणार्–एक-दूसरे को न देख सके; उयर्–बड़े; पटै कटलिन्–राक्षसों की सेना के सागर के मध्य; उळ्ळार्–रह गये। २४९५

वानरकुलराजा सुग्रीव, अंगद, कुमुद, जाम्बवान, अतिबलिष्ठ पनस आदि सभी वीर विजय-स्थल, युद्ध के मैदान के मध्य आये और एक-दूसरे से अदृश्य होकर राक्षस-सेना-सागर के अंदर रहनेवाले हो गये। २४९५

तॊहुम्बडै यरक्कर् वॅळ्ळन् दुऱैदुऱै यळ्ळित् तूवि
नहम्बडै याहक् कॊल्लु नरशिङ्ग नडन्द दॅन्न
मिहुम्बडैक् कडलुट् चॆल्लु मारुदि वीर वाऴ्क्कै
अगम्बनैक् किडैत्तान् ऱण्डा लरक्करै यरैक्कुङ् गैयान् 2496

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' की गिनती में; तॊकुम् पटै अरक्कर्–दलगत सेना के राक्षसों को; तुऱै तुऱै–स्थान-स्थान में; अळ्ळि तूवि–उठा, छितराकर; नकम् पटै आक–नख को हथियार बनाकर; कॊल्लुम् नरचिङ्कम्–मारनेवाले नरसिंह; नटन्ततु अन्न–चले जैसे; मिकुम् पटै कटलुळ्–बहुत बड़ी सेना के सागर में; चॆल्लुम् मारुति–जो घुस चला वह मारुति; तण्टाल्–गदा से; अरक्करै अरैक्कुम् कैयान्–राक्षसों को पीसने वाले हाथ का बनकर; वीरम् वाऴ्क्कै–वीरजीवी; अकम्पनै किटैत्तान्–अकंप को मिला। २४९६

'वॅळ्ळम्' की संख्या में इकट्ठी हुई राक्षस-सेना को यत्र-तत्र उठाकर फेंकता हुआ, नखायुध नरसिंह के समान बहुत अधिक राक्षस-सेना के मध्य हनुमान चला और गदा से राक्षसों को पीसते हुए हाथों वाला बनकर वीर-जीवी अकंप के सामने आया। २४९६

मलैप्पॅरुङ् गळुदै यैञ्जूऱ् ऱिरट्टियान् मनत्तिऱ् चॅल्लुन्
दलैत्तडन् देरन् विल्लन् ऱारुहनॅन्नुन् दन्मैक्
कॉलैत्तॉळि लवुणन् पिन्नै यिराक्कद वेडङ् गॉण्डान्
शिलैत्तॉळिऱ् कुमरन् कॉल्लत् तॉल्लैनाट् चॅरुविऱ् ऱीर्न्दान् 2497

मलै पॅरु–पर्वत-से बड़े; कळुतै–गधे; ऐन्नूरु इरट्टियान्–एक हज़ार से जुता रहा उससे; मनत्तिल् चॅल्लुम्–मन की-सी गति पर जानेवाले; तलै तट तेरन्–नायक-विशाल-रथी; विल्लन्–धनुर्धर; तारुकन् ऍन्नुम्–दारुक नामक; कॉलैत्तॉळिल् तन्मै–हत्या के कार्य में लगे चित्तवाला; अवुणन्–दानव; चिलै तॉळिल्–धनुकार्य-समर्थ; कुमरन्–कुमार (षण्मुख) द्वारा; तॉल्लै नाळ्–पुराने ज़माने में; चॅरुविल् कॉल्ल तीरन्तान्–युद्ध में मारा जाकर; पिन्नै–बाद; इराक्कत वेटम् कॉण्टान्–इस राक्षस के रूप में आया। २४९७

धनुर्धर अकंप ऐसे रथ पर सवार था, जिससे एक हज़ार पर्वतोपम खच्चर जुते हुए थे और जो मन से भी अधिक तेज़ी से जा सकता था। वह हत्याकारी दारुक नामक दानव था, जो पहले धनुकर्म-चतुर कार्तिक कुमार द्वारा युद्ध में मारा गया और जो अब राक्षस-जन्म ले आया था। २४९७

पाहशा दन्नु मऱ्ऱैप् पहैयडुन् दिहिरि पऱ्ऱुम्
एहशा दन्नु मून्ऱु पुरमुमॅण् डॅरित्तु ळोन्नुम्
पोहता मॉरुवर् मऱ्ऱिक् कुरङ्गॉडु पॉरक्कऱ् ऱारे
आहक्कूऱ् ऱावि युण्ब दिदनिन् मेऱ्ऱाहु मॅन्ऱान् 2498

पाकचातनतुम्–पाकशासन; मऱ्ऱै–और; पकै अटुम्–शत्रुहंता; तिकिरि–चक्र; पऱ्ऱुम्–धारी; एक चातनतुम्–एकसाधन श्रीविष्णु; मून्ऱु पुरमुम्–त्रिपुरों को; पण्टु–प्राचीन समय में; ऍरित्तुळोन्नुम्–जिन्होंने जलाया वे शिव; पोक–जाएँ; ताम् ऑरुवर्–अकेले खुद कोई; इ कुरङ्कॉटु–इस वानर के साथ; पॉर कऱ्ऱारे आक–लड़ना भले ही सीख गया हो; कूऱ्ऱु–यम द्वारा; आवि उण्पतु–प्राण खाना; इततिन् मेऱ्ऱु आकुम्–इस वानर का काम होगा। २४९८

(अकंप ने हनुमान की प्रशंसा की।) उसने कहा, पाकशासन, शत्रुहंता चक्रधर, जिनका एक ही (चक्र) है, और त्रिपुरांतक चाहे उससे लड़ने जाएँ, या और कोई भी हो जिसने इससे लड़ना सीख लिया हो—इस वानर के पास ऐसा सामर्थ्य है कि वह यम को मजबूर करेगा कि वह उनकी जान निकलवा दे। २४९८

यान्ऱडे ऎन्निन् मऱ्ऱिव् वॆळ्दिरै वळाह मॆन्नाम्
वान्ऱडा दरक्क रॆन्नुम् बॆयरैयु मायक्कु मॆन्ना
ऊन्ऱडा निन्ऱ वाळि मळैतुरन् दुरुत्तुच् चॆन्ड्रान्
मीन्ऱॊडा निन्ऱ दिण्डो ळनुमनुम् विरैविन् वन्दान् 2499

यान् तटेन्–अगर मैं नहीं रोकूँ; ऎन्निल्–तो; इव ऎळुतिरै वळाकम्–सप्त-समुद्रवलयित यह भूमंडल; ऎन् आम्–क्या होगा; वान्–आकाशवासी; तटातु–नहीं रोक सकेंगे; अरक्कर् ऎन्नुम् पॆयरैयुम्–राक्षस का नाम ही; मायक्कुम्–मिटा देगा; ऎन्ना–कहकर; ऊन्–शरीरधारी जीवों को; तटा निन्ऱ–रोकनेवाले; वाळि मळै–बाणों की वर्षा; तुरनतु–छोड़ता हुआ; उरुत्तु–रोष दिखाकर; चॆन्ड्रान्–गया; मीन् तॊटा निन्ऱ–नक्षत्रस्पर्शी; तिण् तोळ्–कठोर कंधों वाला; अनुमनम्–हनुमान भी; विरैविन् वन्तान्–सवेग आया। २४६६

अगर मैं इसको नहीं रोकूँ तो इस सप्त-समुद्रवलयित भूमण्डल का क्या होगा? व्योमलोकवासी इसको रोक नहीं सकेंगे। यह राक्षसों का नाम तक मिटा देगा। यह कहते हुए वह सामने आनेवाले जीवों को रोककर शर-वर्षा करता हुआ सरोष बढ़ता चला। नक्षत्र-स्पर्शी सुदृढ़ कंधों वाला हनुमान भी सवेग आया। २४९९

तेरॊडु कळिऱु मावु मरक्करु नॆरुङ्गित् तॊड़्ऱक्
कारॊडु कनलुङ् गालुङ् गिळर्न्द दॊऱ् कालमॆन्न
वारॊडुन् दॊडर्न्द पैम्बॊऱ् कळ्लिनान् वरुद लोडुम्
जूरॊडुन् दॊडर्न्द तण्डैच् चुळ्ऱ्ऱिनान् वयिरत् तोळान् 2500

तेरॊटुम्–रथ के साथ; कळिऱुम् मावुम्–हाथी और घोड़े; अरक्करुम्–राक्षस; नॆरुङ्कि–सटकर; तॊड़्ऱ–साथ आये तब; कारॊटु–मेघ के साथ; कनलुम् कालुम्–अनल और अनिल; किळर्न्तन्ु ओर् कालम् ऎन्न–मिल आये ऐसे सान्य समय के समान; वारॊटुम् तॊटर्न्त–फ़ीतों से बद्ध; पचुम् पॊन् कळ्लिनान्–चोखे स्वर्ण की पायलधारी; वरुतल् ओटुम्–जब आया (अकंप) तब; वयिरम् तोळान्–वज्रस्कंध; चूरॊटुम् तॊटर्न्त–शौर्य के साथ पकड़ी रही; तण्टै–गदा को; चुळऱ्ऱिनान्–(हनुमान ने) घुमाया। २५००

अकंप को चारों ओर से रथ, गज, तुरग, पदाति घेर आये। वह फ़ीते से बद्ध, स्वर्णपायलधारी युगांत के संमिश्रित उठे मेघ, अनल और अनिल के समान जब आया, तब वज्रस्कन्ध हनुमान ने शौर्य-प्रभावित दण्ड को घुमाया। २५००

ऎऱ्ऱिन वॆऱिन्द वॆल्लै यॆय्दिन वॆय्द पॆय्द
मुऱ्ऱिन पडैह ळियावु मुऱैमुऱै मुरिन्दु शिन्दच्
चुऱ्ऱिन वयिरत् तण्डाऱ् ऱुहैत्तन ऱमरर् तुळ्ळक्
कऱ्ऱिल निन्ऱु कऱ्ऱान् कदैयिनाल् वदैयिन् कल्वि 2501

ऍऱ्ऱिंत-जिनसे पीटा गया; ऍऱ्रिनृत-जो फेंके गये; ऍल्लै ऍय्तिऩ ऍय्त-निशाना लगाकर जो चलाये गये; पॆय्त-जो बरसाये गये; मुऱ्ऱित-पूर्ण; पटैकळ् यावुम्-वे सभी हथियार; मुऱै मुऱै मुऱिनृतु-क्रम से टटकर; चिन्त-बिखर जाएँ ऐसा; चुऱ्ऱित-घुमायी गयी; वयिरम् तण्टाल्-वज्रदण्ड से; अमरर् तुळ्ळ-देवों को संतोष से उछलने देकर; तुकैत्ततऩऩ्-कुचल डाला; कऱ्ऱिलऩ्-नहीं सीखा था; इऩ्ऱु-आज ही; कतैयिऩाल्-गदा से; वतैयिऩ् कल्वि-वध करने की विद्या; कऱ्ऱाऩ्-सीखी। २५०१

तब हनुमान ने राक्षसों से प्रेषित, प्रहरित, प्रेरित और वर्षित सभी सबल हथियारों को क्रम से तोड़कर छितरा दिया। देवगण इसको देखकर आनंद से उछल पड़े। हनुमान ने गदायुद्ध नहीं सीखा था, तो भी अब वह गदा द्वारा वध में दक्ष हो गया। २५०१

अहम्बनङ् गाणक् काण वैयिरु कोडिक् कैम्मा
मुहम्बयिल् कलिऩप् पाय्मा मुनैवयिर् ऱूण्डु मूरि
नुहम्बयि ऱेरि ऩोडु नुरुक्किन नूऴि ऱीर्त्ताऩ्
उहम्बॆय रूऴिक् काऱ्ऱि ऩुलैविला मेरु वॊप्पाऩ् 2502

उकम् पॆयर्-युगसन्धि में; ऊऴि काऱ्ऱिऩ्-युगान्त की हवा से; उलैवु इला-जो चंचल नहीं होता; मेरु ऒप्पाऩ्-उस मेरु के समान; अकम्पऩुम् काण काण-अकंप के भी देखते-देखते; ऐयिरु कोटि कैम् मा-दस करोड़ गजों को; मुकम् पयिल्-मुख में लगी; कलिऩम्-रास-युक्त; पाय् मा-अश्वों को; मुनै वयिऩ्-युद्धस्थल में; तूण्टुम्-चालित; मूरि नुकम् पयिल्-सारयुक्त जुए के साथ रहनेवाले; तेरिऩोटुम्-रथों के साथ; नुरुक्किऩऩ्-चूर किया; नूऴिल् तीर्त्ताऩ्-मारकर ढेर लगाये। २५०२

युगांत के पवन के सामने भी चलित न होनेवाले मेरु के समान अकंप के देखते-देखते हनुमान ने दस करोड़ हाथियों, लगाम-लगे घोड़ों और युद्ध में चालित और सबल जुओं से युक्त रथों को तोड़-फोड़ ढेर लगा दिया। २५०२

इऩ्ऱिवन् ऱऩ्ऩै विण्णा डेऱ्ऱिवा ळिलङ्गै वेन्दै
वॆऩ्ऱिय ऩाक्कि मऱ्ऱै मऩिदरै वॆऱिय राक्कि
निऩ्ऱुयर् नॆडिय तुऩ्ब ममरर्पा ऩिरुप्पॆ ऩॆऩ्ऩाच्
चॆऩ्ऱऩ ऩरक्क ऩऩ्ऱु वरुहॆऩ वऩुमऩ् ऱेर्नदाऩ् 2503

इऩ्ऱु-आज; इवऩ् तऩ्ऩै-इसको; विण् नाटु-स्वर्गलोक में; एऱ्ऱि-पहुँचाकर; वाळ्-तलवारधारी; इलङ्कै वेन्तै-लंका के राजा को; वॆऩ्ऱियऩ् आक्कि-विजेता बनाकर; मऱ्ऱै-और; मऩितरै-नरों को; वॆऱियराक्कि-हारे हुए बनाकर; अमरर् पाल्-देवों के पास; निऩ्ऱु उयर्-रहते बड़े; नॆटिय-गम्भीर; तुऩ्पम्-दुःख को; निरुप्पॆऩ्-स्थायी बना दूंगा; ऍऩ्ऩा-कहकर; अरक्कऩ्-राक्षस; चॆऩ्ऱऩऩ्-

गया; नन्रु वरुक-अच्छा, आओ; अॅन-कहकर; अनुमन् चेर्न्तान्-हनुमान भी आ मिला। २५०३

राक्षस ने यह दावे का वचन कहा कि आज मैं इसको स्वर्ग में चढ़ा दूँगा; तलवारधारी लंकाधिपति रावण को विजयी बना दूँगा; उन नरों को विजित बना दूँगा और देवों के गम्भीर दुःख को स्थायी बना दूँगा। हनुमान भी यह कहकर उससे आ मिला कि अच्छा है। आओ। २५०३

पडुकळप् परप्पै नोक्किप् पाऴिवाय् मडित्तु नूऴिऱ्
चुडुतऴऱ् पुहैवॅङ् गण्णिऱ् ऱोन्ऱिडक् कॊडित्तेर् तूण्डि
विडुकणैप् पडल मारि मऴैयिन् मुम्मै वीशि
मुडुहुरच् चॅन्ऱु कुन्ऱिन् मुट्टिनान् मुहिलि नार्प्पान् 2504

पट्टु कळम् परपपै नोक्कि-युद्ध के मैदान का विस्तार देखकर; पाऴि वाय मटित्तु-गुहा-सम मुख को मोड़कर; नूऴिल्-मारकर ढेर लगाने के काम में; चुट्टु-जलनेवाली; तऴल्-आग के साथ; पुकै-उठनेवाले धुएँ के; वॅम् कण्णिल् तोन्ऱिट-क्रूर आँखों में दिखायी देते; कॊटि तेर्-ध्वजा से अलंकृत रथ को; तूण्टि-चलाते हुए; विट्टु कणै पटलम् मारि-प्रेषित बाणों की राशियों की वर्षा को; मऴैयिनुम् मुम्मै-वर्षा से तिगुनी; वीचि-चलाकर; मुकिलिन् आर्प्पान्-मेघ के समान शब्द करता हुआ; मुट्कु उऱ-बहुत तेजी से; चॅन्ऱु-जाकर; कुन्ऱिन् मुट्टिनान्-पर्वत के समान टकराया। २५०४

अकंप ने मैदान का विस्तार देखा। ओंठ काटा। उसकी क्रूर आँखों में गरम आग और धुआँ प्रकट हुआ जो खुद शत्रुओं को मारकर ढेर लगा दे। वह ध्वजा से अलंकृत रथ चलाता हुआ और वर्षा से तिगुनी शर-वर्षा करता हुआ मेघ-सम नाद के साथ सवेग आया और पर्वत के समान हनुमान से टकराया। २५०४

शॊरिन्दन पहऴि मारि तोळिनु मार्बिन् मेलुन्
दॅरिन्दन वशनि पोलुव शॆऱिपॊऱि पिदिर्व तिक्किन्
वरिन्दन वॅरुवै मानच् चिऱैहळा लमरर् मार्बै
अरिन्दन वडिम्बु पॊन्कॊण् डणिन्दन वाहुङ् गण्ण 2505

अचनि पोलुव-अशनि-सदृश; चॅऱि-घने; पॊऱि-अंगारों को; तिक्किन् पितिर्व-दिशाओं में छितरानेवाले; ॲरुवै-गीधों के; मानम् चिऱैकळाल्-बड़े पंखों से; वरिन्तन-बाँधे गये; अमरर् मार्पै-देवों की छातियों को; अरिन्तन-जिन्होंने पहले खण्डित किया था; पॊन् कॊण्टु-स्वर्ण से; वटिम्पु अणिन्तन-जिनके अग्रभाग निर्मित थे; आकुम् कण्ण-जो बड़े चौड़े थे; चॊरिन्तन-बरसाये जो गये; पकऴि मारि-उन शरों की वर्षा; तोळितुम् मार्पिन् मेलुम्-कंधों और छाती पर; तॆरिन्तन-दिखायी दिये। २५०५

उसके अस्त्र अशनि-सम थे। घने रूप से दिशाओं में अंगारे बिखेरने

वाले थे। कंक-पक्षों से बद्ध थे। देववक्षभेदक थे। स्वर्णमुख थे और बड़े थे। वे हनुमान के कंधों और छाती पर लगे। २५०५

मार्बित्तुम् दोळिन् मेलुम् वाळिवाय् मडुत्त वायिर्
चोर्पॅरुङ् गुरुदि शोरत् तुळङ्गुवान् ऱेऱा मुन्नन्
देरिरण् डरुहु पूण्ड कळुदैयु मच्चुम् जिन्दच्
चारदि पुरळ वीरत् तण्डित्ताऱ् कण्डञ् जॅय्दान् 2506

मार्पित्तुम् तोळिन् मेलुम्–छाती और कंधों पर; वाळि वाय् मट्टुत्त–जहाँ शर भेद चले; वायिल्–वहाँ से; चोर्–बहनेवाला; पॅरु कुरुति–बड़ा रक्त-प्रवाह; चोर–बहता रहा; तुळङ्कुवान्–चंचल बना (हनुमान); तेऱा मुन्नम्–स्वस्थ बने, इसके पहले; तेर् इरण्टु अरुकु–रथ के दोनों बाजुओं में; पूण्ट–जुते हुए; कळुतैयुम्–(गधे या खच्चर); अच्चुम्–और धुरी के; चिन्त–नष्ट होने पर; चारति पुरळ–सारथी लोट गया ऐसा; वीरम् तण्टित्ताल्–वीरताप्रदर्शक दण्ड से; कण्टम् चॅय्तान्–खण्डित किया (हनुमान ने)। २५०६

हनुमान के वक्ष और कंधों पर जहाँ बाण चुभे थे, उन व्रणों से रक्त बहता रहा और हनुमान थोड़ा श्रांत हो गया। उसके स्वस्थ होने से पहले ही उसने गदा से रथ के दोनों बाजुओं में जुते खच्चरों को गिराया। धुरी को तोड़ दिया और सारथी को लुढ़का दिया। २५०६

विल्लिन्ना लिवनै वॅल्ल लरिदॅन निरुदन् वॅय्य
मल्लिन्ना लियन्ऱ तोळिन् वलियिनाल् वानत् तच्चन्
कॊल्लिन्ना लमैत्त दाण्डोर् कॊडुमुनैत् तण्डु कॊण्डान्
अल्लिनाल् वहुत्त दन्न मेन्नियान् कडलि नार्प्पान् 2507

इवनै–इसे; विल्लिनाल्–धनु से; वॅल्लल् अरितु–हराना कठिन है; अॅन–ऐसा सोचकर; अल्लिनाल् वकुत्ततु अन्न–अन्धकार का बनाया जैसा शरीर वाला; कटलिन् आर्प्पान्–समुद्र के समान शब्द करनेवाला; निरुतन्–राक्षस (अकंप); वॅय्य–कठोर; मल्लिनाल् इयन्ऱ–सबल; तोळिन् वलियिनाल्–भुजबल से; वानम् तच्चन्–देवशिल्पी के; कॊल्लिनाल्–लुहार के कार्य से; अमैत्ततु–निर्मित; कॊटु मुनै–तीक्ष्ण नोकदार; ओर् तण्टु–एक गदा; आण्टु–तब; कॊण्टान्–हाथ में लिया। २५०७

अंधकार-निर्मित-से शरीर वाले ने, जो समुद्र-सम गरजनेवाला राक्षस था, यह सोचा कि इसको धनु के सहारे जीतना कठिन है। इसलिए उसने देवशिल्पी द्वारा निर्मित, तीक्ष्ण नुकीला एक दण्डायुध हाथ में लिया, जिसे वही अपने भुजबल से चला सकता था। २५०७

ताक्किन्ना रिडत्तु मरुक्क् वलत्तिनुन् दिरिन्दार् शारि
ओक्किन्ना रूळि नार्प्पुक् कॊट्टिन्नार् किट्टि नार्कोळ्त्

तूक्कितार् शुळऱ्ऱि मेन्मेऱ् चुऱ्ऱित्ता रॅऱ्ऱि वॅऱ्ऱि
नोक्कित्तार् नॅरुक्कि ऩार्मे नॅरुङ्गित्तार् नीङ्गि ऩार्मेल् 2508

ताक्कितार्–परस्पर प्रहार किया; मऱ्ऱुम्–और; इटत्तुम् वलत्ततित्तुम्–बायाँ और दायाँ; चारि तिरिन्तार्–पैंतरे बदलकर घूमे; ऊऴित्–युगान्त के समान; आर्प्पु ओक्कितार्–उच्च घोष किया; कोट्टितार्–(कंधे) ठोंके; कीऴ् किट्टित्तार्–नीचे से जाकर; तूक्कित्तार्–उठाया; चुळऱ्ऱि–लपेट लिया; मेऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; चुऱ्ऱितार्–घुमाया; अॅऱ्ऱि–पीटकर; वॅऱ्ऱि नोक्कितार्–विजयी होने से रोका; नॅरुक्कितार्–कस लिया; मेल् नॅरुक्कितार्–पास गये और; मेल् नीङ्कित्तार्–दूर हटे। २५०८

अकंप और हनुमान टकराये; दायें-बायें पैंतरे बदले, प्रलयनाद उठाया, कंधे ठोंके; एक-दूसरे को नीचे से सिर लगाकर उठा लिया, घुमाया। परस्पर विजय से वंचित करने का प्रयास किया। लिपटे और अलग हुए। २५०८

तट्टित्तार् तऴुवि ऩार्मेऱ् ऱावित्तार् तरैयि ऩोडुङ्
गिट्टित्तार् किडैत्तार् वीशिप् पुडैत्तवै; कीऴु मेलुङ्
गट्टित्तार् कात्ता रॊऩ्ऱुङ् गाणगिला रिऱवु कण्णुऱ्
ऱोट्टित्तार् माऱ्ऱि वट्ट मोडित्ता रादि पोऩार् 2509

तट्टित्तार्–कंधे ठोंककर; तऴुवितार्–पाशबद्ध कर लिया; मेल् तावितार्–ऊपर उछले; तरैयिऩोडुम् किट्टित्तार्–धरती पर एक-दूसरे को बाँध लिया; किटैत्तार्–एक-दूसरे को मिल गये; वीचि पुटैत्तवै–ज़ोर के साथ पीटा तो; कीऴुम् मेलुम् कट्टित्तार् कात्तार्–नीचे और ऊपर कसकर बचा लिया; इऱवु ओऩ्ऱुम्–कोई बढ़ना; काणकिलार्–न देख सके; कण्णुऱ्ऱु–परस्पर देखकर; ओट्टित्तार्–ललकारा; वट्टम् ओटित्तार्–गोल-गोल घूमे; माऱ्ऱि–बदलकर; आति पोऩार्–सीधे गये। २५०९

दोनों ने कंधे ठोंककर परस्पर लपेट लिया। ऊपर उछले। भूमि पर आ भिड़े। प्रहार से बचे। दूसरे की बड़ाई न देख सके। ललकारा। कभी चक्राकार घूमे। कभी उसको छोड़ के सीधे गये। २५०९

मैयोडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ निऱत्तिऩाऩ् वयिर मार्बिऱ्
पोय्योडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ कुणत्तिऩाऩ् पुहुन्दु मोद
वॅय्यव ऩदऩैत् तण्डाल् विलक्किऩाऩ् विलक्क लोडुङ्
गैयोडु मिऱ्ऱु मऱ्ऱक् कदैकळङ् गिडन्द दऩ्ऱे 2510

पोय्योटुम्–असत्य से; पकैत्तु निऩ्ऱ–शत्रुता किये रहने के; कुणत्तिताऩ्–गुण वाले हनुमान ने; मैयोटुम् पकैत्तु निऩ्ऱ–काजल से होड़ लगाये रहनेवाले; निऱत्तिताऩ्–रंग के अकंप से; वयिरम् मार्पिल्–वज्र-सम वक्ष पर; पुकुन्तु मोत–

(दण्ड) चलाकर प्रहार किया तो; वॅय्यवतु–क्रूर अकंपन ने; अतत्तै–उसे; तण्टाल् विलक्कितान्–दण्डायुध से निवारा; विलक्कलोटुम्–रोकने पर; अ कतै–वह गदा; कैयोटुम्–हाथ के साथ; इट्रु–कटकर; कळम्–युद्धभूमि पर; किटन्ततु–गिर गया। २५१०

असत्यशत्रु हनुमान ने अंजन से होड़ लगानेवाले रंग के अकंप के वज्रवक्ष पर दण्ड से प्रहार किया तो अकंप ने उसको अपने दण्ड से रोका। तब वह गदा उसके साथ के साथ कटकर युद्धभूमि में गिर गयी। २५१०

कैयोडु तण्डु नीङ्गक् कडलॅनक् कलक्क मुट्रु
मॅय्योडु निन्ऱ वॅय्योन् मिडलुडै यिडक्कै वीशि
ऐयनै यलङ्ग लाहत् तडित्तन तडित्त लोडुम्
ऑय्यॅन वयिरक् कुन्ऱत् तुरुमिनै यिडित्त दॉत्त 2511

कैयोटु–हाथ के साथ; तण्टुम् नीङ्क–गदा के नष्ट होने पर; कटल् ॲन–समुद्र के समान; कलक्कम् उट्रु–अस्त-व्यस्त होकर; मॅय्योटु निन्ऱ–शरीर के साथ जो खड़ा रहा उस; वॅय्योन्–क्रूर राक्षस ने; मिटल् उटै–बलवान; इट कै वीचि–बायें हाथ को बढ़ाकर; ऐयनै–हनुमान को; अलङ्कल् आकत्तु–मालायुक्त वक्ष पर; अटित्तनन्–पीटा; अटित्तलोटुम्–पीटते ही; ऑय्यॅन–त्वरित गति से; वयिरम् कुन्ऱत्तु–वज्रगिरि पर; उरुमिन् एऱु–बहुत बड़ी अशनि; इटित्ततु ऑत्त–फूटी जैसे हो गया। २५११

हाथ और गदा खोकर समुद्र-सम क्षुब्ध क्रूर राक्षस ने सशक्त अपने बायें हाथ को चलाकर हनुमान के मालाधारी वक्ष पर प्रहार किया। वह प्रहार वज्रगिरि पर सवेग गिरनेवाले अशनिराज-सम था। २५११

अडित्तवन् ऱन्नै नोक्कि यशनिये ऱनैय तण्डु
पिडित्तुनिन् ऱेयु मॅट्रान् वॅऱुङ्गैयान् पिळैयिट् ऱॅन्ना
मडित्तुवा यिडत्तुक् कैयान् मार्बिडैक् कुत्त वायार्
कुडित्तुनिन् ऱुमिळ्वा नॅन्नक् कक्किनन् कुरुदि वॅळ्ळम् 2512

अचनि एऱु–अशनिराज; अनैय तण्टु–के समान दण्ड; पिटित्तु निन्ऱेयुम्–पकड़े रहा तो भी; अटित्तवन् तन्नै नोक्कि–प्रहारक को देखकर; वॅऱुम् कैयान्–यह खाली हाथ है; पिळैयिट्रु–(इसको मारना) ग़लत होगा; ॲन्ना–ऐसा सोचकर; ॲट्रान्–पीटा नहीं; वाय् मटित्तु–ओंठ काटकर; इटत्तु कैयान्–बायें हाथ से; मार्पिटै कुत्त–छाती में घूंसा मारा; कुरुति वॅळ्ळम्–रक्त-प्रवाह को; वायाल् कुटित्तु निन्ऱु–मुख से पहले पीकर; उमिळ्वान् ॲन्न–वमन करता जैसे; कक्किनान् अकंप ने वमन किया। २५१२

हनुमान के हाथ में अशनिराज-सी गदा थी। तो भी उसने सोचा कि यह खाली हाथ है। इसको गदा से मारना ग़लत है। ओंठ काटकर उसने

अपने बायें हाथ से उसकी छाती पर घूँसा मारा। तब उसके मुख से ऐसा रक्त निकला मानो वह पिया हुआ रक्त वमन कर रहा हो। २५१२

मीट्टुमक् कैयाल् वीशिच् चॅवित्तलत् तॅऱ्ऱि वीऴ्त्तात्
कूट्टिऩा ऩुयिरै विण्णोर् कुऴात्तिडै यरक्कर् कूट्टङ्
गाट्टिल्वाऴ् विलङ्गु माक्कळ् कोळरि कण्ड वॅऩ्ऩ
ईट्टमुऱ् ऱॅदिर्न्द वॅल्ला मिरिन्दऩ तिशैह ळॅङ्गुम् 2513

मीट्टुम्–फिर; कैयाल् वीचि–(उसी) हाथ को चलाकर; चॅवि तलत्तु ऍऱ्ऱि–कानों पर प्रहार किया और; वीऴ्त्तात्–गिराया और; उयिरै–जीव की; विण्णोर् कुऴात्तु इटै–देवों के दलों में; कूट्टिऩात्–मिला दिया; ईट्टमुऱ्ऱु–दल बाँधकर; ऍतिर्न्त–जो लड़े थे; अरक्कर् कूट्टम् ऍल्लाम्–राक्षसों का दल; कोळरि कण्ट–सिंह देखकर; काट्टिल् वाऴ्–वनवासी; विलङ्कु माक्कळ् ऍऩ्ऩ–तिरछे बढ़नेवाले जानवर जैसे; तिसैकळ् ऍङ्कुम्–सभी दिशाओं में; इरिन्तऩ–भागे। २५१३

हनुमान ने फिर से उसकी कर्णपटी में हाथ से मारकर शरीर को नीचे गिराया और जीव को देवसमूह में मिला दिया। भीड़ में आये सभी राक्षस सिंह-दर्शक जंगल के जानवरों के समान सभी दिशाओं में अस्त-व्यस्त होकर भागे। २५१३

माण्डऩ ऩहम्बऩ् मण्मेऩ् मडिन्दऩ निरुदर् शेऩै
मीण्डऩर् कुरक्कु वीरर् विऴ्न्दऩ शिऩक्कै वेऴम्
तूण्डिऩ कॉडित्ते रऱ्ऱु तुणिन्दऩ तॉडुत्त वाशि
आण्डहै यिळैय वीर ऩ़डुशिलै पॉऴियु मम्बाल् 2514

अकम्पऩ्–अकंप; मण् मेल् माण्टऩऩ्–पृथ्वी पर मरकर गिर गया; निरुतर् चेऩै मटिन्तऩ–राक्षस-सेनाएँ नाश हो गयीं; कुरक्कु वीरर्–वानर वीर; मीण्टऩर्–बचे लौट आये; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इळैय वीरऩ्–लघुवीर के; चिलै पॉऴियुम्–धनुनिर्गत; अटुम् अम्पाल्–संहारक बाणों से; चिऩम्–क्रुद्ध; कै वेऴम्–शुंडी गज; विऴ्न्तऩ–गिरे; तूण्टिऩ–चालित; कॉटि तेर्–ध्वजा-सहित रथ; अऱ्ऱु–टूटे तो; तॉटुत्त वाचि–जुते हुए घोड़े; तुणिन्तऩ–कट गये। २५१४

अकंप भूमि पर लोट गया। राक्षस-सेना धराशायी हो गयी। पुरुषश्रेष्ठ लघु वीर के धनु से निर्गत बाणों से क्रोधी करि मरकर गिरे। राक्षस द्वारा चालित ध्वजायुक्त रथ टूटे और उनसे जुते घोड़े कटे। २५१४

आर्क्किऩ्ऱ कुरलुङ् गेळा निलक्कुव ऩशनि येऱ्ऱैप्
पोर्क्किऩ्ऱ शिलैयि ऩाणिऩ् पोरॉलि केळाऩ् वीरर्
यार्क्किऩ्ऩ लुऱ्ऱ दॆऩ्ऩ दुणर्न्दिल ऩिशैप्पो रिल्लैप्
पोर्क्कुऩ्ऱ मऩ्ऩैय तोळा ऩ़ैयदोर् पॊरुम् लुऱ्ऱाऩ् 2515

आर्क्किन्ऱ कुरल्–गर्जन का स्वर; केळातुम्–हनुमान न सुन पाया; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; अचनि एऱ्ऱै–अशनिराज को; पोर्क्किन्ऱ–बेकार करनेवाली; विलैयिन्–धनु की; नाणिन्–प्रत्यंचा की; पोर् ऑलि–युद्ध-ध्वनि; केळान्–न सुन पाया; वीरर् यार्क्कु–किस वीर की; इन्नल् उऱ्ऱतु–हानि हुई; ऎन्पतु उणर्न्तिलन्–यह जो न जान पाया; इचॆप्पोर् इल्लै–बतानेवाला कोई नहीं रहा; पोर् कुन्ऱम् अनैय–युद्धगिरि-सम; तोळान्–कन्धों वाला; अनैयतु ओर्–उसी (गिरि) सम; ओर् पॊरुमल् उऱ्ऱान्–एक खेद का अनुभव किया। २५१५

हनुमान ने वानरों का नाद नहीं सुना, लक्ष्मण के धनु के अशनिराज-सम ज्यास्वन नहीं सुना। उसे यह न मालूम हुआ कि किस वीर का क्या हाल हुआ। न वह किसी से सुन सका, क्योंकि आकर बतलानेवाला कोई नहीं था। इसलिए युद्धयोग्य पर्वत-सम कंधों वाला हनुमान शोकाकुल हुआ। २५१५

वीशिन निरुदर् शेनै वेलैयिऱ् ऱॆन्मेऱ् ऱिक्किन्
योशनै येऴु शॆन्ऱा नङ्गद नवनुक् कप्पाल्
आशैयि निरट्टि शॆन्ऱा नरिकुलत् तलैव नप्पाल्
ईशनुक् किळैय वीर निरट्टिक्कु मिरट्टि शॆन्ऱान् 2516

वीचिन–बहुत दूर तक फैली रही; निरुतर् चेनै–राक्षस-सेना; वेलैयिल्–सागर में; तॆन् मेल् तिक्किल्–दक्षिण-पश्चिम दिशा में; अङ्कतन्–अंगद; एऴु योचनै चॆन्ऱान्–सात योजन गया; अरि कुलम् तलैवन्–वानरकुलाधिपति; अवनुक्कु अप्पाल्–उससे भी आगे; आचैयिन्–दिशा में; इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी दूर गया; ईचनुक्कु–ईश्वर श्रीराम के; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर; अप्पाल्–उससे भी आगे; इरट्टिक्कुम् इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी की दुगुनी दूर गया था। २५१६

बहुत दूर तक फैली रही राक्षस-सेना के सागर में दक्षिण-पश्चिम दिशा में अंगद सात योजन दूर चला गया था। उसके आगे वानर-कुलपति (सुग्रीव) दुगुनी दूर चला गया था। ईश्वर राम के छोटे भाई दुगुनी की दुगुनी दूर यानी छप्पन योजन चले गये थे। २५१६

मऱ्ऱैयोर् नालु मैन्दुम् योशनै मलैन्दु पुक्कार्
कॊऱ्ऱमा रुदियुम् वळ्ळ लिलक्कुव निन्ऱ शूऴल्
मुऱ्ऱिन निरण्डु मून्ऱु कावद मॊऴियप् पिन्नुञ्
जुऱ्ऱिय शेनै नीर्मेऱ् पाशिपोऱ् मिडैन्दु तुन्न 2517

मऱ्ऱैयोर्–अन्य वानर वीर; मलैन्तु–लड़कर; योचनै–योजन; नालुम् ऐन्तुम्–(चार और पाँच) नौ; पुक्कार्–गये; पिन्नुम् चुऱ्ऱिय चेनै–उसके ऊपर भी घेरे जो रही वह सेना; नीर् मेल् पाचि पोल्–जल पर काई के समान; मिटैन्तु तुन्न–घने रूप से मिली रही तो; कॊऱ्ऱम् मारुतियुम्–विजयी मारुति; वळ्ळल्

इलक्कुवत्–उदार प्रभु लक्ष्मण; नितृर चूऴल्–जहाँ रहे उस स्थान को; इरुणट्ट मूनृ कावतम्–दो-तीन कोस; ऒऴिय–अंतर रखकर; मुऱ्ऱितन्–पहुँचा। २५१७

अन्य वानर वीर लड़ते-लड़ते नौ योजन दूर चले गये। उस पर घेरकर जो सेना रही, वह जल के ऊपर काई के समान फैली रही। मारुति उदार प्रभु लक्ष्मण के स्थान से दो-तीन कोश दूर पर आ गया। २५१७

इळैयव नितृर शूऴ लॆय्दुवॆन् विरैवि नॆंतृरोर्
उळैवुवन् दुळ्ळन् दूण्ड वूऴिवॆङ् गालिऱ् चॆल्वान्
कळैवरुन् दुतृब नीङ्गक् कण्डत्त नॆंतृव मतृतो
विळैवत्त शॆरुविऱ् पल्वे ऱायित्त कुऱिहळ् मेय 2518

उळ्ळम्–मन में; ओर् उळैवु–एक व्यथा के; वनृतु तूणट–उठकर उकसाने से; इळैयवत् नितृर चूऴल्–लघु वीर जहाँ हैं उस स्थान को; विरैविन् ऍय्तुवॆन्–जल्दी चला जाऊँगा; ऍनृरु–कहकर; ऊऴि–युगांत के; वॆम् कालिन्–घनघोर पवन के समान; चॆल्वान्–जाता हुआ; कळैवु अरुम्–अवार्य; तुन्पम् नीक्क–दुःख दूर करते हुए (घटनेवाले); चॆरुविल् विळैवत्त–युद्ध में जो हुए; पल् वेऱु आयित्त–विविध; कुऱिकळ्–आसार; मेय कण्टतन्–हुए, देखा। २५१८

हनुमान के मन में लक्ष्मण को न देखकर बेचैनी पैदा हो गयी। "उनके पास शीघ्र जाऊँगा"—यह कहकर प्रलयकालीन पवन के समान जल्दी जाने लगा। तब युद्ध के कुछ ऐसे आसरे मिले जिनसे अवार्य दुःख दूर हुआ। २५१८

आतैयित् कोडुम् बीलित् तळैहळु मारत् तोडु
मानमा मणियुम् बॊनृनु मुत्तमुङ् गॊऴित्तु वारि
मीनॆंत्त वङ्गु मिङ्गुम् बडैक्कल मिळिर वीशुम्
पेत्तवॆण् गुडैय वाय कुरुदिप्पे राऱु कण्डान् 2519

आतैयित् कोटुम्–हाथियों के दाँत; पीलि तळैकळुम्–'पीलि' नामक वाद्य; आरत्तोटु–हारों के साथ; मानम् मा मणियुम्–अनेक बड़े रत्न; पॊन्नुम् मुत्तमुम्–स्वर्ण और मोती; कॊऴित्तु–अलग करके ले जाते हुए; वारि मीन् ऍन–जल की मछलियों के समान; पटैक्कलम्–हथियारों के; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; मिळिर–चमकते; वीचुम् पेत्तम्–चलनेवाले फेन के समान; वॆण् कुटैय–स्वेतछत्र वाली; आय–जो बनी थीं; कुरुति पेर् आऱु–रक्त की बड़ी नदियाँ; कण्टान्–देखीं हनुमान ने। २५१९

गजदंत, "पीली" नाम के बाजे, हार के साथ अनेक रत्न, स्वर्ण और मोती इनको छाँट लेती हुई रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह रही थीं; जिनमें जल में मछलियों के समान हथियार इधर-उधर चमक रहे थे और फेन के समान श्वेत छत्र तिर रहे थे। २५१९

आशैह डोरुम् जुर्ऱि मलैहित्ऱ वरक्कर् तम्मेल्
वीशित्त पहळि यर्ऱ तलैयॉडुम् विशुम्बै मुट्टि
ओशैयि नुलह मॅङ्गु मदिर्वुऱ वूळि नाळिर्
काशऱु कल्लित् मारि पॉळिवपोल् विळुव कण्डात् 2520

आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चुर्ऱि मलैकित्ऱ–घूमकर जो लड़े; अरक्कर् तम् मेल्–उन राक्षसों पर; वीचित्त पकळि–चलाये गये बाण; अर्ऱ तलैयोटुम्–कटे सिरों के साथ; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; ओचैयिन्–उस शोर से; उलकम् अॅङ्कुम् अतिर्वु उऱ–सारे लोक थर्रा उठें, ऐसा; ऊळि नाळिल्–युगांत में; काचु अऱ–निर्दोष; कल्लित् मारि–पत्थरों की वर्षा; पॉळिव पोल्–हो रही जैसे; विळुव कण्टात्–गिर रहे, वह हनुमान ने देखा। २५२०

दिशा-दिशा में घेरकर जो राक्षस लड़ रहे थे, उन पर अस्त्र चलाये गये थे। वे अस्त्र कटे हुए सिरों के साथ आकाश से टकराकर, उस शब्द से सारे लोकों को कँपाते हुए प्रलयकालीन निर्दोष प्रस्तरवर्षा के समान नीचे गिरे। हनुमान ने उसको देखा। २५२०

मानवे लरक्कर् विट्ट पडैक्कल वान मारि
आनवन् पहळि शिन्दत् तिशैतॉरुम् वॉऱियो डर्ऱ
मीन्निनम् विशुम्बि निन्ऱु मिरुळुह विळुव पोलक्
कानहन् दॉडर्न्द तीयिर् चुडुवन पलवुङ् गण्डात् 2521

आनवन् पकळि–(युद्ध-) योग्य लक्ष्मण के शरों के; चिन्त–अधिक परिमाण में लगने से; मानम् वेल् अरक्कर्–शानदार भालों के धारक राक्षसों के; विट्ट–चलाये; पटैक्कलम्–हथियारों की; वानम् मारि–आकाश की वर्षा; तिचै तॉऱुम्–दिशा-दिशा में; पॉऱियोटु अर्ऱ–अंगारों के साथ मिट गये; मीन् इनम्–नक्षत्रसमूह; विचुम्पिन् निन्ऱुम्–आकाश से; इरुळ् उक–अंधकार मिटाते हुए; विळुव पोल–गिरते जैसे; कानकम् तॉटर्न्त–वन में लगी; तीयिल्–आग के समान; चुटुवन–जलनेवाले; पलवुम् कण्टान्–अनेक देखे। २५२१

लक्ष्मण के शरों ने शानदार राक्षसों के हथियारों को काटकर छितराया। तो वे हर दिशा में अंगारों के साथ अपनी शक्ति खोकर आकाश से अँधेरा दूर करके गिरनेवाले नक्षत्रों के समान नीचे गिरे और जंगल की आग के समान जलते रहे। हनुमान ने ऐसे बहुत से हथियार देखे। २५२१

मरुळ्डैक् कुरिशिल् वाळि यन्दर मॅङ्गुन् वामायत्
तॅरुळुर्ऱ तॉडर्न्दु वीशिच् चॅल्वन तेवर् काण
इरुळिडैच् चुडलैयॉडु मॅण्बुयत् तण्णल् वण्णच्
चरुळ्डैच् चडैयित् कर्ऱैच् चुर्ऱॅनच् चुडर्व कण्डात् 2522

अरुळ् उटै–करुणावान; कुरिचिल्–प्रभु के; वाळि–वाण; अनृतरम् ऍङ्कुम् तामाय्–आकाश भर में स्वयं वे ही रहे; तॅरुळ् उऱ–प्रकाश देते हुए; तॊटर्न्तु वीचि चॆल्वत्त–लगातार बढ़ते चले; इरुळ् इटै–रात में; चुटलै–श्मशान में; तेवर् काण–देवों के देखते; आटुम्–नाचनेवाले; ऍण् पुयत्तु अण्णल्–अष्टभुज शिवजी की; वण्णम्–सुन्दर; चुरुळ् उटै कट्टै चटैयिन् चरुकु ऍत्त–घुँघुराली जटा-जूट के समान; चुटर्व–प्रकाश देते थे, यह; कण्टान्–देखा (हनुमान ने)। २५२२

करुणामय प्रभु के शर आकाश भर में पूर्ण रूप से व्याप गये और आगे बढ़ते जाते हुए श्मशान में देवों के देखते नाचनेवाले अष्टभुज शिवजी की सुन्दर घुँघुराली जटाजूट के समान प्रकाश दे रहे थे। हनुमान ने वह भी देखा। २५२२

नॆय्युऱक् कॊळुत्तप् पट्ट नॆरुप्पॆत्तप् पॊरुप्पि तोङ्गुम्
मॆय्युऱक् कुरुदित् तारै विशुम्बुऱ विळङ्गि नित्तऱ
वैयनिक् कङ्गुल् मालै यरशॆत्त वरिन्दु कालङ्
गैविळक् कॆडुत्त दॆत्तनक् कवन्दत्तिन् काडु कण्डान् 2523

नॆय् उऱ–घी भरकर; कॊळुत्तप् पट्ट–जो जलायी गयी हो; नॆरुप्पु ऍत्त–वैसी आग के समान; पॊरुप्पिन् ओङ्कुम्–पर्वत के समान ऊँचा रहनेवाले; मॆय् उऱ–शरीर से अधिक; कुरुति तारै–रक्त का प्रवाह; विचुम्पु उऱ–आकाश पर लगे; विळङ्कि निन्ऱतु–जो शोभता रहा वह; ऐयन्–सुन्दर कुमार लक्ष्मण (को); अरचु ऍत्त–राजा के रूप में; अऱिन्तु–जानकर; इ कङ्कुल् मालै कालम्–यह रात का समय; कै विळक्कु ऍट्टुत्ततु–हस्तदीप लिये हुए हो; ऍत्त–जैसा; कवन्तत्तित् काटु कण्टात्–कबन्धों का जंगल देखा। २५२३

घी डालकर उभारी गयी आग के समान राक्षसों के पर्वतोपम शरीरों से रुधिर बहा और वह रक्त आकाश तक उछल रहा था। इस स्थिति में कबंध नाच रहे थे। वह रात के राजा लक्ष्मण के अभिनंदनार्थ हाथ में दीप लिये नाचने के समान था। हनुमान उन कबंधों का वह जंगल देखा। २५२३

आळॆला मळिन्द तेरु मात्तैयु माडत् मावुम्
नाळॆला मॆण्णि नालुन् दॊलैविला नाद रित्ऱिल्
ताळॆलाङ् गुलैय वोडित् तिरिवन ताङ्ग लाऱ्ऱुङ्
गोळिला मत्त नाट्टिऱ् कुडियॆनक् कुलैव कण्डान् 2524

आळ् ऍलाम्–वीर सभी; अऴिन्त तेरुम्–जिनके मिट गये थे वे रथ; आत्तैयुम्–गज; आटल् मावुम्–नृत्यशील घोड़े; नाळ् ऍलाम्–दिन भर; ऍण्णितालुम्–गिनो तो भी; तॊलैवु इला–जिनका अन्त नहीं हो सकता; नातर् इन्ऱि–अनाथ होकर; ताळ् ऍलाम् कुलैय–पैर थकाते हुए; ओटि तिरिवत–दौड़ते फिरनेवाले; ताङ्कल् आऱ्ऱम्–पालनकर्म के; कोळ् इला–सिद्धान्त से हीन; मत्तत् नाट्टिल्–राजा के

राज्य में; कुटि अँत–प्रजा के समान; कुलैव–अस्त-व्यस्त थे, यह; कण्टान्–देखा। २५२४

हनुमान ने सारथी-रहित रथ, गज, घोड़े आदि देखे। वे अपने पैरों को बहुत दुःख देते हुए, सिद्धांतहीन राजा के राज्य की प्रजा के समान अस्त-व्यस्त हो भाग रहे थे। २५२४

मिडल्हॉळम् बहळि मारि वानिनु मुम्मै वीशि
मडल्हॉळु मलङ्गन् मार्बन् मलैन्दिड वुलैन्दु माण्डार्
उडल्हळु मुदिर नीरु मॉळिर्बडैक् कलमु मुट्ट
कडल्हळु नॅडिय कानुङ् गार्तवळ् मलैयुङ् गण्डान् 2525

मटल् कॉळुम्–दलसंकुल; अलङ्कल् मार्पन्–पुष्पमाला से अलंकृत वक्ष वाले लक्ष्मण ने; मिटल् कॉळुम्–सारयुक्त; पकळि मारि–शर-वर्षा को; वानिनुम्–आकाश की वर्षा से; मुम्मै वीचि–तिगुनी चलाते हुए; मलैन्तिट–युद्ध किया, इसलिए; उलन्तु माण्टार्–प्राण खोकर जो मरे उनके; उटल्कळुम्–शरीर और; उतिरम् नीरुम्–रक्तजल; ऑळिर् पटै कलमुम्–उज्ज्वल हथियार; उट्ट–जिनमें जा मिले थे उन; कटल्कळुम्–समुद्रों और; नॅटिय कानुम्–विशाल वन को; कार् तवळ्–मेघ जिन पर रेंगते हैं, ऐसे; मलैयुम्–पर्वत को; कण्टान्–देखा हनुमान ने। २५२५

दललसित पुष्पमालाधारी वक्ष वाले लक्ष्मण के सशक्त शर-वर्षा को मेघ-वर्षा से तिगुना चलाते हुए युद्ध करने से मरे हुए राक्षसों के शरीर-रक्त का प्रवाह और उज्ज्वल हथियार, इनसे युक्त सागरों, विशाल वनों और मेघावृत पर्वतों को हनुमान ने देखा। २५२५

शुळित्तॅरि यूळिक् कालिङ् रुरुवितन् तॉडरुन् दोन्रल्
तळिक्कॉण्ड कुरुदि वेलै तावुवान् रनिप्पे रण्डङ्
गिळिन्दटु क्किळिन्द दॅन्नु नाणुरु मेरु केट्टान्
अळित्तॉळि कालत् तार्क्कु मार्हलिक् किरट्टि यार्त्तान् 2526

चुळित्तु ऍरि–चक्करों में बहनेवाली; ऊळि कालिल्–युगान्त की हवा के समान; तुरुवितन्–टटोलकर; तॉटरुम्–बढ़नेवाला और; तळिक् कॉण्ट–उसे भग्न करनेवाले; कुरुति वेलै–रक्त-समुद्र को; तावुवान्–पार करनेवाला जो था; तोन्रल्–उस महिमावान हनुमान ने; तनि पेर् अण्टम्–अनोखा एक बड़ा अण्ड; किळिन्तत्तु किळिन्ततु–फटा, फटा; ऍन्नम्–जैसा; नाण् उरुम् एरु–ज्यास्वन का अशनिराज; केट्टान्–सुना; अळित्तु ऑळि–(लोक) नाशक; कालत्तु–युगान्तकालीन; आर्क्कुम्–गरजनेवाले; आर् कलिक्कु–समुद्र से; इरट्टि–दुगुना; आर्त्तान्–(आनन्द-) नाद उठाया। २५२६

हनुमान युगांत के बवंडर के समान ढूँढ़ता हुआ बढ़ रहा था और रक्त के समुद्रों को पार करता हुआ जा रहा था। तब उसने डोरा

खीचने का अशनि-सम शब्द सुना, जिससे यह विलक्षण बड़ा अंड फट गया, ऐसी स्थिति हो गयी। उसको सुनकर हनुमान ने सर्वनाशक युगांत के समुद्र-गर्जन का दुगुना नाद उठाया। २५२६

आर्त्तपे रमलै केळा वणुहित्त त्तम तॆल्लार्
वार्त्तैयुङ् गेट्क लाहु मॆन्ऱह महिऴ्न्दु वळ्ळल्
पार्प्पदन् मुन्नम् वन्दु पणिन्ददन् विशयप् पावै
तूर्त्तनै यिळैय वीरन् ऱऴुविन् तिन्नैय शॊन्नान् 2527

आर्त्तुत पेर् अमलै–उठा उच्च ज्यास्वन; केळा–सुनकर; अनुमन्–हनुमान; अणुकित्तु–पास जाकर; ॲल्लार् वार्त्तैयुम्–सभी का समाचार; केट्कलाकुम्–सुन सकूँगे; ॲन्ऱु–ऐसा; अकम् मकिऴ्न्तु–संतोष करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु; पार्प्पतन् मुन्नम्–देख लें, इसके पहले; वन्तु पणिन्ततन्–आकर नत हुआ; विसय पावै तूर्त्तनै–विजयलक्ष्मी के कामुक हनुमान को; इळैय वीरन्–लघुवीर ने; तऴुवित्तन्–आलिंगन कर लिया और; इन्नैय चॊन्नान्–ये बातें कहीं। २५२७

हनुमान ने लक्ष्मण के धनुष की टंकार सुनकर सोचा कि लक्ष्मण पास ही हैं। सारा समाचार सुन सकूँगा। उत्साह के साथ वह, लक्ष्मण उसको देखें इसके पहिले ही, सामने आकर झुका। विजयश्री के कामुक हनुमान को लघुराज ने गले लगाकर उससे ये बाते पूछीं। २५२७

अरिकुल वीर रैय याण्डैय ररुक्कन् मैन्दन्
पिरिवुन्नैच् चॆय्द दॆव्वा ऱङ्गदन् पॆयर्न्द दॆङ्गे
विरियुरुट् परवैच् चेनै वॆळ्ळत्तु विळैन्द वॊन्ऱुन्
दॆरिहिल तुरैत्ति यॆन्ऱान् चॆन्निमेल् कैयन् शॊन्नान् 2528

ऐय–तात; अरिकुल वीरर्–वानरकुल के वीर; याण्टैयर्–कहाँ हैं; अरुक्कन् मैन्तन्–सूर्यसूनु ने; उन्नै–आपको; पिरिवु चॆय्ततु–अलग किया; ॲव्वाऱु–कैसा; अङ्कतन् पॆयर्न्ततु–अंगद अलग गया; ॲङ्के–कहाँ; विरि इरुळ्–विशाल अंधकार के; परवै–सागर में मिली; चेनै वॆळ्ळत्तु–सेना के सागर में; विळैन्ततु–जो हुआ; ऑन्ऱुम् तॆरिकिलेन्–एक समाचार भी नहीं जानता; उरैत्ति–कहो; ॲन्ऱान्–लक्ष्मण ने पूछा; चॆन्निमेल् कैयन्–सिर पर धृत हाथों वाले ने; चॊन्नान्–कहा। २५२८

तात! वानरकुल वीर कहाँ हैं? अर्कपुत्र तुमसे अलग हुआ कैसे? अंगद गया कहाँ? विशाल अंधकार में सेना का प्रवाह छिप गया और मुझे कुछ भी विदित नहीं हो रहा है। बताओ। हनुमान ने जुड़े हाथ सिर पर रख लिये और यों कहा। २५२८

पोयिनार् पोय वाऱुम् बोयिन दन्ऱिप् पोरिल्
आयिना राय दॊन्ऱु मऱिन्दिल नैय याऱुम्

मेयित्तार् मेय पोदै तॆरियलाम् विळैन्द दन्ऱान्
तायिन्नान् वेलै योडु मयिन्दिरप् परवै तन्नै 2529

वेलैयोट्टुम्–समुद्र और; ऐन्तिरम् परवै तन्नै–ऐंद्रव्याकरण-सागर को; तायिन्नान्–जिसने पार किया था; ऐय–(उस हनुमान ने) प्रभु; पोयित्तार् पोय आरुम्–जो गये उनके जाने का हाल; पोयित्तु अन्ऱि–जाने के अलावा; पोरिल् आयित्तार्–युद्धरत जो रहे; आयतु ऑन्ऱुम्–उनका क्या हुआ, यह कुछ; अऱिन्तिलन्–नहीं जाना; यारुम्–किसी के बारे में; मेयित्तार् मेय पोते–जो गये हैं उनके आने पर ही; विळैन्त–जो हुआ वह; तॆरियलाम्–जाना जा सकता है; ऍन्ऱान्–कहा। २५२९

समुद्र और ऐंद्र (व्याकरण) के पारंगत हनुमान ने निवेदन किया कि प्रभु ! जो गये उनकी बातें या जो लड़े उनकी स्थिति मैं नहीं जानता। उनके लौटने पर ही बातें मालूम हो सकती हैं। २५२९

मन्दिर मुळदा लैय वुणर्वुरु मालैत् तः(ह्)दुन्
चिन्दैयि नुणर्न्दु शॆय्यर् पाऱ्ऱिन्च् चॆय्दि तॆव्वर्
तन्दिर मिदनैत् तॆय्वप् पडैयिनाऱ् चमैक्कि नल्लाल्
ऍन्दैनिन् नडियर् यारु मॆय्दलर् निन्नै यॆन्ऱान् 2530

ऐय–प्रभु; उणर्वु उरु–प्रज्ञा पाने की; मालैतुतु–शक्तिदायक; मन्तिरम् उळ्ळतु–मंत्र है; अ:तु–वह; उन् चिन्तैयिन् उणर्न्तु–आपके चित्त में ध्यान करके; चॆय्यल् पाऱ्ऱु–करने अर्ह है; इन्ऱि–अब; चॆय्ति–कीजिए; तॆव्वर्–शत्रुओं की; तन्तिरम्–साजिश से हुए; इततै–इस (भ्रम) को; तॆय्व पटैयिनाल्–दिव्यास्त्र से; चमैक्किन् अल्लाल्–हटाये बग़ैर; ऍन्तै–पिताजी; निन् अटियर् यारुम्–आपका भक्त कोई; निन्नै ऍय्तिलर्–आपको नहीं मिलेंगे; ऍन्ऱान्–कहा, हनुमान ने। २५३०

हनुमान ने आगे कहा कि प्रभु ! मोह दूर करके प्रज्ञा दिलानेवाला एक मंत्र है। आप उस मंत्र का मन लगाकर प्रयोग करें। शत्रु की माया से यह भ्रांति उत्पन्न है, दिव्यास्त्र छोड़कर इसको दूर किये विना, हे धाता ! आपके दास कोई आपके पास नहीं आयेंगे। २५३०

अन्नदु पुरिवे नॆन्ना वायिर नामत् तण्णल्
तन्नैये वणङ्गि वाळ्त्तिच् चरङ्गळैत् तॆरिन्दु वाङ्गिप्
पॊन्मलै विल्लि नान्ऱन् पडैक्कलम् वॊरुन्द वेन्दि
मिन्नॆयिऱ् ऱरक्कर् तम्मेल् वीशिनान् विल्लिन् शॆल्वन् 2531

विल्लिन् चॆल्वन्–धनुर्धनी लक्ष्मण ने; अन्नतु पुरिवेन्–वही करूँगा; ऍन्ना–कहकर; आयिरम् नामत्तु–सहस्रनामी; अण्णल् तन्नैये–प्रभु श्रीराम का; वणङ्कि वाळ्त्ति–नमन और स्तुति करके; चरङ्कळै–बाणों को; तॆरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; पॊन् मलै विल्लिनान् तन्–स्वर्णमेरुधन्वा के; पटै कलम्–अस्त्र को

(पाशुपतास्त्र को); पॊरुन्त एन्ति–युक्त रीति से संधानकर; मिन् ऎयिऱ्–बिजली के समान दाँतों वाले; अरक्कर् तम् मेल्–राक्षसों पर; वीचितान्–चलाया। २५३१

धनुर्धनी लक्ष्मण ने हनुमान की वह बात सुनकर उत्तर दिया कि मैं वही करूँगा। फिर उन्होंने सहस्रनामी श्रीराम को नमस्कार करके स्वर्णमेरुधन्वा शिवजी का पाशुपतास्त्र चुनकर उठाया और बिजली-सम दाँतोंवाले राक्षसों पर चलाया। २५३१

मुक्कणात् पडैयै मूट्टि विडुदलु मूङ्गिल् काट्टिल्
पुक्कदो रूऴित् तीयिऱ् पुऱत्तितो रुरुवुम् बोहा
दक्कणत् तॆरिन्दु वीऴ्न्द दरक्कर्दम् जेनै याऴि
तिक्कॆला मिरुळुन् दीर्न्द तेवरु मयक्कन् दीर्न्दार् 2532

मुक्कणात् पडैयै–त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को; मूट्टि विडुतलुम्–संधान कर छोड़ते ही; मूङ्किल् काट्टिल्–बाँस के वन में; पुक्कतु–लगी; ओर् ऊऴि तीयिल्–युगांत की आग के समान; पुऱत्तिन्–उस तरफ़; ओर् उरुवुम् पोकातु–एक पदार्थ भी न हट जाए ऐसा; अरक्कर् चेनै आऴि–राक्षस-सेना-सागर; अक्कणत्तु–उसी क्षण में; ऎरिन्तु वीऴ्न्ततु–जलकर गिरा (नष्ट हुआ); तिक्कु ऎल्लाम्–सभी दिशाओं में; इरुळुम् तीर्न्ततु–अन्धकार मिट गया; तेवरुम्–देव भी; मयक्कम् तीर्न्तार्–भ्रममुक्त हुए। २५३२

त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को जब लक्ष्मण ने छोड़ा, तब उससे बाँस के वन में फैली युगांत की अग्नि के समान आग जल उठी और राक्षस-सेना उसी क्षण जलकर मिट गयी। कोई भी जीव इधर-उधर नहीं जा सका। सारी दिशाओं का अंधकार मिट गया। देवों को भी होश आया। २५३२

तेवर्दम् बडैयै विट्टा नॆन्बदु चिन्दै शॆय्या
मावॆरु मायै नीङ्ग महोदरन् मऱैयप् पोनान्
यावरु मिरिन्दा रॆल्ला मिनमऴै कऴिय वार्त्तुक्
कोविळङ् गळिऱ्ऱै वन्दु कूडिना राडल् कॊण्डार् 2533

तेवर् तम् पटैयै–ईश्वर का पाशुपतास्त्र; विट्टान् ऎन्पतु–यह बात; चिन्तै चॆय्या–सोचकर; मा पॆरु मायै नीङ्क–बहुत बड़ी माया के दूर होने पर; मकोतरन् मऱैय पोनान्–महोदर छिपकर चला गया; इरिन्तार् यावरुम्–तितर-बितर जो गये वे सभी; इनम् मऴै ऎल्लाम्–इकट्ठे हुए सारे मेघ; कऴिय–पिछड़ जाएँ ऐसा; आर्त्तु–शब्द करते हुए; इळम् कळिऱ्ऱै–कलभ-सम लक्ष्मण के पास; वन्तु कूटिनार्–आ जमा हुए; ऎल्लाम् आटल् कॊण्टार्–सब नाचने लगे। २५३३

महोदर ने जान लिया कि लक्ष्मण ने पाशुपतास्त्र का प्रयोग किया है, तो वह छिपकर चला गया। जो भागे थे वे सभी वानर मेघों के गर्जन-

नाद को भी हरानेवाले शोर के साथ लौट आये और कलभ-सम लक्षमण से आ मिले और नाचने लग गये। २५३३

यावर्क्कुन् दीदि लामै कण्डुकण् डुवहै येऱत्
तेवर्क्कुन् देवन् ऱम्बि तिरुमनत् तैयन् दीर्न्दान्
कावर्पोर्क् कुरक्कुच् चेनै कल्लॆनक् कलन्दु पुल्लप्
पूवर्क्क मिमैयोर् दूवप् पॊलिन्दनन् दूदर् पोनार् 2534

तेवर्क्कुम् तेवन् तम्पि–देवाधिदेव के छोटे भाई ने; यावर्क्कुम्–सभी (किसी) को; तीतु इलामै कण्टु–हानि-रहित देखकर; कण्टु–देखकर; उवकै एऱ–आनंद के बढ़ने से; तिरुमनत्तु–श्रीमन में से; ऐयम् तीर्न्तान्–संदेह दूर कर दिया; कावल्–रक्षण में; पोर् कुरक्कु चेनै–युद्ध-योग्य वानर-सेना के; कल् ऎन कलन्तु पुल्ल–'गल्ल्' शब्द के साथ आकर मिलने पर; इमैयोर्–देवों के; पू वर्क्कम् तूव–पुष्पराशि बरसाते; पॊलिन्तनन्–शोभित रहा; तूतर् पोनार्–दूत (रावण के पास) गये। २५३४

देवादिदेव लक्ष्मण को यह देखकर सन्तोष हुआ कि किसी की कुछ हानि नहीं हुई है। उनके मन का संशय दूर हो गया। उनके रक्षण में लड़ने के लिए वानर-सेना 'गल्ल' शब्द के साथ आ जुट गयी। देवों ने पुष्पवर्षा की। इस स्थिति में लक्ष्मण शोभायमान रहे। रावण के दूत यह देखकर रावण के पास समाचार देने चले। २५३४

इलङ्गैयर् कोनै यॆय्दि यॆय्दिय दुरैत्तार् नीविर्
विलङ्गिनिर् पोलुम् वॆळ्ळ नूऱ्ऱैयोर् विल्लिन् वेळक्
कुलङ्गळि नोडुङ् गॊल्लक् कूडुमो वॆन्नक् कॊन्ऱै
अलङ्गलान् पडैयि नॆन्ऱा रन्नदे लाहु मॆन्ऱान् 2535

इलङ्कैयर् कोनै ऎय्ति–लंकाधिपति के पास जाकर; ऎय्तियतु उरैत्तार्–जो हुआ वह बताया; नीविर्–तुम लोग; विलङ्किनिर् पोलुम्–डर से अलग हट गये शायद क्या; वेळम् कुलङ्कळिनोटुम्–गजवृन्दों के साथ; वॆळ्ळम् नूऱ्ऱै–सौ 'वॆळ्ळम्' सेना को; ओर् विल्लिन्–एक धनु से; कॊल्ल कूडुमो–मारा जा सकता है क्या; ऎन्न–पूछने पर; कॊन्ऱै–अमलतास पुष्प की; अलङ्कलान्–मालाधारी शिव के; पटैयिन्–(पाशुपत-) अस्त्र से; ऎन्ऱार्–कहा; अन्नतेल् आकुम्–वह बात हो तो हो सकता है; ऎन्ऱान्–मान लिया (रावण ने)। २५३५

दूतों ने लंकेश के पास जाकर बीती बात कही। रावण ने पूछा। तुम लोग डर के मारे दूर ही रहे शायद क्या? सौ 'वॆळ्ळम्' सेना को हाथियों-सहित एक ही धनु द्वारा मारा जा सकता है क्या? दूतों ने उत्तर दिया कि अमलतास के फूलों की मालाधारी शिवजी के (पाशुपत-) अस्त्र से ऐसा काम हुआ, तो रावण ने माना कि वही हो तो संभव है! । २५३५

तोडवि ऴलङ्ग ळॅन्शेय्क् कुणर्त्तुमि ऱॅन्लच् चॊन्नान्
ओडिनार् शारर् वल्लॅ युणर्त्तिनर् तुणुक्क मॅय्दा
आडवर् तिलहन् याण्डै यानिह लनुम लेनोर्
वीडणन् याङ्ग णुळ्ळा रुणर्त्तुमिन् विरैवि ऩॅन्ड्रान् 2536

तोट्टु अविऴ्-विकसितदल; अलङ्कल्-मालाधारी; ऍन् चेय्क्कु-मेरे पुत्र को; उणर्त्तुमिन्-बताओ; ऍन्न-ऐसा; चॊन्नान्-कहा; चारर्-दूत; वल्लै-शीघ्र; ओटिनार्-दौड़े; उणर्त्तिनर्-समझाया; तुणुक्कम् ऍय्ता-डरकर; आटवर् तिलकन्-पुरुषतिलक; याण्टैयान्-कहाँ (रहता है); इकल् अनुमन्-वीर हनुमान; एनोर्-अन्य वानर; याङ्कण् उळ्ळार्-कहाँ हैं; विरैविन् उणर्त्तुमिन्-जल्दी कहो; ऍन्ड्रान्-पूछा (इन्द्रजित् ने)। २५३६

रावण ने कहा कि तुम लोग जाओ और विकसित दलों वाले पुष्पों की मालाधारी मेरे पुत्र को यह समाचार सुनाओ। चर शीघ्र भागे। इन्द्रजित् को समझाया। इन्द्रजित् काँप उठा। पुरुषतिलक श्रीराम कहाँ है? बलवान हनुमान कहाँ? अन्य वानर कहाँ? तुरन्त बताओ। —इन्द्रजित् ने पूछा। २५३६

वन्दिल निरामन् वेड़ोर् मलैयुळा नुन्द मायन्
दन्दन्न ऱॅरिवान् पोना नुण्वन्न ताऴ्क्कत् ताळा
ऍन्दैती दियन्ड्र दॅन्न महोदर नियाण्डै यॅन्न
अन्दरत् तिडैय ऩॅन्न विरावणि यऴहिड् ऱॅन्ड्रान् 2537

इरामन् वन्तिलन्-राम नहीं आया; वेड्रोर् मलै उळान्-अन्य किसी पहाड़ पर है; मायम् तन्तत्तन्-माया जो की जाती है उसे; तॅरिवान् उन्तै-उसे जाननेवाले तुम्हारे पिता (चाचा); उण्पन्न ताऴ्क्क-रसद के आने में देरी होने से; पोतान्-गये; ताळा ऍन्तै-विलंब न करनेवाले मेरे पिता (तुल्य); तीतु इयन्ड्रतु-हानि हो गयी है; ऍन्न-(दूतों के ऐसा) कहने पर; मकोतरन् याण्टै-महोदर कहाँ; ऍन्न-पूछने पर; अन्तरत्तु इटैयन्-आकाशमध्य; ऍन्न-कहने पर; इरावणि-रावणि ने; अऴकितु-सुन्दर है यह; ऍन्ड्रान्-कहा। २५३७

राम आया नहीं। वह कहीं दूसरे पर्वत पर है। माया पहचान सकनेवाले आपके चाचा रसद आने में विलम्ब हुआ तो रसद लाने गये। अविलम्ब कार्य करनेवाले तात! नुक़सान हो गया। दूतों ने यह कहा, तो इन्द्रजित् ने प्रश्न किया कि महोदर कहाँ है? 'आकाश में' —जवाब मिलने पर रावणि ने कहा कि यह भी सुन्दर रहा। २५३७

काल मीदॅन्क् करुदिय विरावणन् ऱादल्
आल मामर मॊन्ड्रिन्नै विरैविनि नडैन्दान्
मूल चेळ्विक्कु वेण्डव कलप्पैहण् मुरैयार्
कल नोङ्गिय विराक्कदप् पुशुरर् कॊणर्न्दार् 2538

ईतु–यही; कालम्–युक्त समय है; ॲन्न करुतिय–ऐसा सोचा; इरावणन् कातल्–रावणनंदन; मा आल मरम् ऑन्ऱिनै–बड़े वटवृक्ष के पास; विरैविनिन्–जल्दी; अटैन्तान्–पहुँचा; फूलम् नीङ्किय–अतिक्रमी; इराक्कतर् पूचुरर्–राक्षस-ब्राह्मण; मूलम् वेळ्विक्कु वेण्टुव–प्रधान यज्ञ के लिए आवश्यक; कलप्पैकळ्–सामग्रियाँ; मुऱैयाल् कोणर्न्तार्–क्रम से लाये। २५३८

रावणनन्दन ने सोचा कि ब्रह्मास्त्र चलाने का यही समय है। वह एक बड़े बरगद के पेड़ के पास शीघ्र गया। अमर्यादित कर्मकाण्डी राक्षस-ब्राह्मण यागसामग्रियाँ यथारीति लाये। २५३८

अम्बि नाड्पॆरुञ् जमिदैह ळमैन्दन नत्तलिल्
तुम्बै मामलर् तूविनन् कारियॆळ् चॊरिन्दान्
कॊम्बु पल्लॊडु करियवॆळ् ळाट्टिरुङ् गुरुदि
वॆम्बु वॆन्दशै मुऱैयिलिट् टॆण्णैयाल् वेट्टान् 2539

अम्पिनाल्–बाणों से; पॆरुम् चमितैकळ्–बड़ी समिधाएँ; अमैत्तनन्–बनायीं; अत्तलिल्–आग में; तुम्पै मा मलर्–'तुंबै' के बड़े पुष्पों को; तूविनन्–डाला; कारि ॲळ्–काले तिल को; चॊरिन्तान्–होम किया; कॊम्पु पल्लॊटु–सींग और दाँतों-सह; करिय वॆळ् आटु–बकरी का; इरु कुरुति–अधिक रक्त; वॆम्पु–पके जाने योग्य; वॆम् तचै–कठिन मांस; मुऱैयिन् इट्टु–क्रम से डालकर; ॲण् नॆयाल्–मुख्य-मान्य घी से; वेट्टान्–यज्ञ सम्पन्न किया। २५३९

इन्द्रजित् ने अस्त्रों की समिधा बनायी। आग में 'तुंबै' के बड़े फूलों को डाला। काला तिल होम किया। सींगों और दाँतों के साथ बकरी का रक्त और मांस डालकर श्रेष्ठ घी से होमकार्य सम्पन्न किया। २५३९

वलञ्जु ळितुवन् दॆळुन्दॆरि नऱुवॆंड्रि वयङ्गि
नलञ्जु रन्दन पॆरुङ्गुड्रि मुऱैमैयि नल्हक्
कुलञ्जु रन्दॆळु कॊडुमैयान् मुऱैयिलिङ् कॊण्डे
निलञ्जु रन्दॆळु वॆन्ड्रियॆन् ऱुम्बरि निमिर्न्दान् 2540

ॲरि–यागाग्नि; नऱु वॆंड्रि वयङ्कि–सुगंधिसंमिश्रित; वलम् चुळित्तु वन्तु–दायीं ओर से घूमकर; ॲळुन्तु–उठी और; नलम् चुरन्तन–शुभकारी; पॆरु कुड्रि–बड़े शकुन; मुऱैमैयिल् नल्क–यथेच्छित दिखाये तो; कुलम् चुरन्तु ॲळु–कुल भर में होनेवाली; कॊटुमैयान्–दुष्टता का आगार; वॆन्ड्रि–विजय; निलम् चुरन्तु ॲळुम्–युद्धभूमि से मिलेगी ऐसा; मुऱैयिनिल् कॊण्टे–यथारीति मन में मानकर; उम्परिन् निमिर्न्तान्–आकाश में ऊँचा खड़ा रहा। २५४०

यागाग्नि सुगन्ध के साथ दायीं तरफ़ घूम उठी। अच्छे शकुन प्रकट हुए। सारे राक्षसकुल की सम्पूर्ण क्रूरता का मूर्तिमान इन्द्रजित् यह विश्वास लेकर आकाश में उठा कि युद्धभूमि से हित अवश्य होगा। २५४०

विशुम्बु पोयिऩऩ् मायैयिऩ् पॅरुमैयाऩ् मेलैप्
पशुम्बॉ ऩाट्टवर् नाट्टमु मुळ्ळमुम् बडरा
वशुम्बु विण्णिडै यडङ्गिऩऩ् मुऩिवरुम् मऱियार्
तशुम्बु नुण्णॆंडुङ् गोळॊडु कालमुञ् जार 2541

मायैयिऩ् पॅरुमैयाऩ्–माया के प्रभाव से; विचुम्पु पोयिऩऩ्–आकाश में जाकर; तचुम्पु–कुम्भराशि के; नुण् नॆंटु कोळॊटु–शनि ग्रह के साथ; नॆंटुकोळॊटु–लंबे (केतु) ग्रह के साथ; कालमुम् चार–काल के मिलने से; मेलै–ऊपर; पचुम् पॊऩ् नाट्टवर्–स्वर्णनगरी के वासियों के; नाट्टमुम् उळ्ळमुम्–नेत्र और मन; पटरा–जहाँ नहीं पहुँच पाते; अचुम्पु विण् इटै–मैले जलकणों के साथ रहे आकाश में; अटङ्किऩऩ्–बचा रहा; मुऩिवरुम् अऱियार्–ऋषि भी जान नहीं पाये। २५४१

माया के बल से वह आकाश में चला। कुंभ राशि का देवता शनि लक्ष्मण के नक्षत्र की चन्द्रराशि में केतु के साथ आ गया था। इन्द्रजित् आकाश में ऐसे स्थान पर जा छिपा रहा, जहाँ ऊपर के स्वर्गलोक के वासी देवों की आँखें क्या उनका मन भी नहीं पहुँच सकता था। २५४१

अऩैय निऩ्ऱऩ ऩव्वऴि महोदर ऩऱिन्दोर्
विऩैय मॆण्णिऩ ऩिन्दिर वेडत्तै मेवित्
तुऩैव लत्तयि राबदक् कळिऱ्ऱिऩ्मेऱ् ऱोऩ्ऱि
मुऩैवर् वाऩव रवरॊडुम् बोर्शॆय मूण्डाऩ् 2542

अऩैयऩ्–वह रावणि; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा रहा; अ वऴि–तब; मकोतरऩ्–महोदर ने; अऱिन्तु–जान-बूझकर; ओर् विऩैयम्–एक उपाय; ऍण्णिऩऩ्–सोचा; इन्तिर वेटत्तै मेवि–इन्द्र का वेश धरकर; तुऩै वलत्तु–तेज गति और बल से युक्त; अयिरापतम् कळिऱ्ऱिऩ् मेल् तोऩ्ऱि–ऐरावत गज पर प्रकट हो; मुऩैवर् वाऩवर् अवरॊटुम्–मुनियों और देवों के साथ; पोर् चॆय्–युद्ध करने को; मूण्टाऩ्–उद्यत हुआ। २५४२

रावणि जब वहाँ खड़ा रहा, तब महोदर ने खूब सोचकर एक माया रची। उसने इन्द्र का वेश धर लिया। उसने बलवान और वेगवान गज ऐरावत पर आरूढ़ होकर देवों-मुनियों को साथ लाकर युद्ध छेड़ा। २५४२

अरक्कर् माऩिडर् कुरङ्गॆनु मवैयॆला मल्ल
उरुक्कळि यावुळ वुयिरिऩि युलहत्ति ऩुळ्ळव
तरुक्कु पोर्क्कुडऩ् वन्दुळ वामॆऩच् चमैत्ताऩ्
वॆरुक्कॊ ळप्पॆरुङ् गविप्पडै कुलैन्ददु विलङ्गि 2543

अरक्कर् माऩिटर्–राक्षस, मनुष्य और; कुरङ्कु ऍऩुम्–वानर आदि; अवै ऍलाम् अल्ल–वे सब नहीं; इप्पोतु–अब; उलकत्तिऩ् उळ्ळव–संसार में चलने-फिरनेवाले; उरुक्कळ् उयिर्–रूपधारी जीव; इऩि या उळ–अब जो हैं; अवै ऍलाम्–वे सभी; तरुक्कु–सगर्व; पोर्क्कु–युद्ध के लिए; उटऩ् वन्तऩ आम्–

साथ आये हैं क्या; अॅन्नु चमैत्तात्–(ऐसा मान्य रीति से) माया रची; पॅरु कवि पटै–बड़ी वानर-सेना; वॅरु कॉळ–डर गयी; विलक्कि कुलैन्तदु–हटी और तितर-बितर हो गयी। २५४३

राक्षस, मानव और वानर क्या ? लोक में शरीरधारी जीव जितने हैं, वे सब युद्ध में आये हों,—ऐसी भ्रमोत्पादक माया रची महोदर ने। उसको देखकर वानर-सेना भय खाकर पीछे हटी और अस्त-व्यस्त हो गयी। २५४३

कोडु नान्गुडैप् पानिरक् कुन्ऱमेर् कॉण्डान्
आड लिन्दिर नल्लव रियावरु ममरर्
शेडर् शिन्दनै मुनिवर्ह ळमर्बॊरच् चीऱि
ऊडु वन्दुऱ्ऱ दॆन्गॊलो निबमॆन्नु वुलैन्दार् 2544

नान्कु कोट्टु उटै–चार दाँतों वाले; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; कुन्ऱम् मेल् कॉण्टान्–पर्वत (-सम) दिग्गज ऐरावत पर जो सवार था; आटल् इन्तिरन्–बलशाली इन्द्र हैं; अल्लवर् अमरर्–अन्य सभी देव हैं; चेटर्–बाक़ी सब; चिन्तनै मुनिवर्कळ्–ध्यानरत मुनिगण हैं; पॊर–(ये सब) युद्ध करने; चीऱि–रोष के साथ; ऊटु–मध्य; वन्तु उऱ्ऱतु–आ गये इसका; निपम् ॲन्नु कॊलो–कारण क्या ही होगा; ॲन्न उलैन्तार्–ऐसा शंकित और क्षुब्ध हुए (असली देव)। २५४४

"चार दाँतों वाले क्षीरवर्ण पर्वत (गज) पर आरूढ़ जो है, वह इन्द्र है। उसके परिवार देव हैं। अन्य ईश्वरध्यानमग्न ऋषि हैं। वे सभी इस युद्ध में क्रोध के साथ लड़ने आये हैं, किस कारण से ?" यह सोचकर सभी क्षुब्ध हुए। २५४४

अनुमन् वाण्मुह नोक्किन नाऴियै यहऱ्ऱित्
तनुव लङ्गॊण्ड तामरैक् कण्णवन् ऱम्बि
मुनिवर् वानवर् मुनिन्दुवन् दॆय्दया मुयन्ऱ
तुनिह ळॆन्गॊलो शॊल्लुदि विरैन्दॆनच् चॊन्नान् 2545

आऴियै अकऱ्ऱि–चक्रायुध चलाकर; तनुवलम् कॊण्ट–धनु को दायें हाथ में लिये हुए; तामरैक् कण्णवन् तम्पि–कमलाक्ष के भाई (लक्ष्मण) ने; अनुमन् वाळ् मुकम्–हनुमान के उज्ज्वल मुख को; नोक्किनन्–देखकर; मुनिवर् वानवर्–मुनि और देव; मुनिन्तु वन्तु ॲय्यत–कोप करके आएँ इसके लिए; याम् मुयन्ऱ–हमारे यत्न से किये; तुनिकळ् ॲन् कॊलो–बुरे कृत्य क्या हैं; विरैन्तु चॊल्लुति–जल्दी बोलो; ॲन्न चॊन्नान्–ऐसा पूछा। २५४५

चक्रायुध त्यागकर जिन्होंने कोदण्ड हाथ में लिया था, उन कमलाक्ष श्रीराम के भाई ने हनुमान का तेजोमय मुख निहारा और पूछा कि मुनिगण और देव भी हमारे विरुद्ध लड़ने आएँ, ऐसा हमारे यत्न से क्या बुराई हो गयी ? शीघ्र बताओ। २५४५

इन्न कालैयि त्तिलक्कुवन् मेत्तिमे लॅय्दान्
मुन्नै नान्मुहन् पडैक्कल मिमैप्पदन् मुन्नम्
बौन्तिन् माल्वरैक् कुरीइयिन मीय्प्पत्त बोलप्
पन्न लान्दर मल्लत्त शुडर्क्कणै पाय्न्द 2546

इन्न कालैयिन्–इसी समय; मुन्नै–प्राचीन; नान्मुकन् पटै कलम्–चतुर्मुख के अस्त्र को; इमैप्पतन् मुन्नम्–पलक मारने के समय के अंदर; इलक्कुवन् मेत्ति मेल्–लक्ष्मण के शरीर पर; ऍय्तान्–चलाया; पॊन्तिन् माल् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) पर; कुरीइ इनम्–चिड़ियों के दल; मॊय्प्पत्त पोल–बैठे हों ऐसा; पन्नलाम् तरम् अल्लन्–विवरण योग्य नहीं, ऐसे; चुटर् कणै–ज्वलंत शर; पाय्न्त–(लक्ष्मण के शरीर पर) चुभे। २५४६

जितने में यह सब हो रहा था उतने में ही इन्द्रजित् ने पलक झपने के अन्दर प्राचीन ब्रह्मास्त्र को लक्ष्मण के शरीर पर चला दिया। उनके सारे शरीर पर अवर्ण्य रीति से ज्वलंत अस्त्र ऐसे जा चुभ गये जैसे बड़े स्वर्ण-पर्वत पर चिड़ियों के दल आ बैठे हों। २५४६

कोडि कोडिनू ड्रायिरङ् गॊड्डङ्गणैक् कुळाङ्गळ्
मूडि मेत्तियै मुर्रुरच् चुर्रिन मूळ्ह
ऊडु शॆय्वदोन् ड्रुणर्न्दिल न्नुणर्वुपुक् कॊड्ङ्ग
आडल् माकरि शॆवह ममैन्दॆन वयर्न्दान् 2547

कोटि कोटि–करोड़ों; नूरायिरम्–लाख; कॊटु कणै–कठोर बाण; कुळाक्कळ्–समूह; मेत्तियै–शरीर को; मूर्रु मूटि–पूर्ण रूप से आवत कर; चुर्रित–ढँककर; मूळ्क–अन्दर घुसे; ऊटु–इतने में; चॆय्वतु–करना; ऒन्ऱु–कुछ; उणर्न्तिलन्–नहीं जाना; उणर्वु–प्रज्ञा; पुक्कु–जाकर; ऒटुङ्क–क्षीण हुई तो; आटल् मा करि–सशक्त बड़ा गज; चेवकम् अमैन्तु–अपने निद्रास्थल में चूर पड़ा हो; ऍन–ऐसा; अयर्न्तान्–दब गये। २५४७

करोड़ों और लाखों संदाहक शरों के समूह उनके सारे शरीर को पूर्ण रूप से ढँककर अन्दर घुस गये। लक्ष्मण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। सुध-बुध खोकर वे निर्बल हुए बड़े सबल गज के अपने निद्रास्थल में जैसे दबे पड़े रह गये। २५४७

अनुम तिन्दिरन् वन्दव नॆन्गोली दमैन्दान्
इनिय नॆर्रुवन् कळिर्रिनो डॆडुत्तॆन वॆळ्न्दान्
तनुवि नायिरङ् गोडिवॆङ् गडुङ्गणै तैक्क
निनैवुन् जॆय्हैयु मर्रनुपोय् नॆडुनिलञ् जेर्न्दान् 2548

अनुमन्–हनुमान; इनियन् इन्तिरन्–हमारा प्रिय मित्र इन्द्र; वन्तवन्–जो आया; ईतु ऍन् कॊल् अमैन्तान्–इस काम में क्यों लगा; कळिर्रिनोटु ऍटुत्तु–हाथी

के साथ उठाकर; ऍंड्ड्वेंन्–पटक दूंगा; ऍंत ऍंळुन्तान्–कहकर उठा; तन्बिल्–शरीर में; आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; वॅम् कटु कणै–सालनेवाले कठोर शर; तैक्क–चुभे, इसलिए; नितैवुम् चॅय्कैयुम्–स्मरण और कर्म; मड़न्तु पोय्–भूलकर; नॅटु निलम् चाय्न्तान्–विशाल भूमि पर गिर गया। २५४८

हनुमान को भी संशय रहा कि हमारा मित्र इन्द्र यह क्या करने आया है? तो भी उसने संकल्प किया कि जो हो इसको हाथी के साथ उठाकर पटक दूंगा। ज्योंही वह उठने लगा, त्योंही उसके शरीर पर हज़ार करोड़ भयंकर शर आ चुभ गये। वह सोचना और करना भूल गया और धराशायी हो गया। २५४८

अरुक्कन् मामह नाडहक् कुन्ड्रमीन् ड्रलर्न्द
मुरुक्किन् कानह मामॅतक् कुरुदिनीर् मुडुहत्
तरुक्कि वॅञ्जरन् दलैत्तलै मयड्गित्त तैक्क
उरुक्कु चॅम्बत्त कण्णित्त नॅडुनिल मुड्रान् 2549

अरुक्कन् मा मकन्–सूर्य का उत्तम पुत्र; आटकम् कुन्ड्रम् ऑन्ड्रु–एक स्वर्ण-पर्वत पर; अलर्न्त–विकसित; मुरुक्कित् कानकम् आम् ॲंत–कँटीले पलाश के पुष्पवन के समान; कुरुतिनीर्–रक्त के; मुटुक–तुरंत निकल बहते; तरुक्कि–तमककर; वॅम् चरम्–वेदनादायी शरों के; तलै तलै–स्थान-स्थान पर; मयक्कित्त तैक्क–मिश्रित होकर चुभते; उरुक्कु–पिघले; चॅम्पु अन–ताम्र के समान; कण्णितन्–नेत्रों वाला बनकर; नॅटु निलम् उड्रान्–विशाल धराशायी हो रहा। २५४९

सूर्य के महान पुत्र सुग्रीव के शरीर पर रक्त इतना बहा कि वह स्वर्णपर्वत के समान लगा, जिस पर कँटीले पलाशवन के अति लाल फूल तभी खिले हों। भयंकर शर शरीर के सभी भागों पर चुभे तो पिघले ताम्र के समान आँखों का होकर वह धराशायी बन गया। २५४९

अड्ग दन्पदि नायिर मयिर्कणै यळुन्दच्
चिड्ग वेरिडि युण्डॅन नॅडुनिलञ् जेर्न्दान्
शड्ग मेरिय पॅरुम्बुहळ्च् चाम्बनुञ् जाय्न्दान्
तुड्ग मार्बैयुन् दोळैयुम् तडिक्कणै तुळैक्क 2550

अङ्कतन्–अंगद; पतितायिरम्–दस हज़ार; अयिल् कणै–तीक्ष्ण शरों के; अळुन्त–चुभने से; चिङ्क एड्ड–पुरुष सिंह; इटि उण्टॅन–वज्राहत हो गया ऐसे; नॅटु निलम् चेर्न्तान्–विशाल धरती पर गिर गया; चङ्कम् एड्रिय–वीरसंघ में प्रशंसित; पॅरु पुकळ्–बड़ा यशस्वी; चाम्पनुम्–जाम्बवान भी; तुङ्कम् मार्पैयुम्–तुंग वक्ष और; तोळैयुम्–कंधों को; तटि कणै–मोटे शरों ने; तुळैक्क–भेदा, इसलिए; चाय्न्तान्–गिर गया। २५५०

अंगद का क्या हाल था? उसके शरीर पर दस हज़ार तीक्ष्ण शर धँसे। वह वज्राहत सिंह के समान भूमि पर गिर गया। वीरों के समूह में अग्रगण्य

जाम्बवान भी, उसके तुंग वक्ष और कंधों को स्थूल शरों के भेदने से, भूमि पर गिर गया। २५५०

नील ऩायिरम् वडिक्कणै निऱम्बुक्कु नॅरुङ्गक्
काल ऩार्मुहङ् गण्डऩ ऩिडबन्विण् कलन्दाऩ्
आल मेयऩ्ऩ पहऴियाऱ् पऩशऩु मयर्न्दाऩ्
कोलिऩ् मेविय कूऱ्ऱिऩाऱ् कुमुदऩुङ् गुलैन्दाऩ् 2551

नीलऩ्–नील ने; आयिरम्–हज़ार; वटि कणै–तीक्ष्ण शरों के; निऱम् पुक्कु–वक्ष में घुसकर; नॅरुङ्क–त्रस्त करने से; कालऩार् मुकम् कण्टऩऩ्–यम का मुख देखा (प्राण छोड़ दिये); इटपऩ् विण् कलन्ताऩ्–ऋषभ स्वर्ग चला गया; पऩचऩुम्–पनश भी; आलमे अऩ्ऩ–हलाहल ही सम; पकऴियाल्–अस्त्र से; अयर्न्ताऩ्–निर्जीव पड़ गया; कुमुतऩुम्–कुमुद भी; कोलिऩ् मेविय–अस्त्र पर स्थित; कूऱ्ऱिऩाल्–यम से; कुलैन्ताऩ्–ढेर हो गया। २५५१

नील के वक्ष में हज़ार तीक्ष्ण बाण घुसकर सालने लगे तो उसने यम का मुख देख लिया (मृत्यु पा ली)। ऋषभ यम का मेहमान बन गया। हलाहल के समान शर लगा तो पनस का भी काम तमाम हो गया। कुमुद भी बाण पर स्वेच्छा से स्थित यमदेव से प्राणहीन कर दिया गया। २५५१

वेलै तट्टव ऩायिरम् वहऴियाल् वीऴ्न्दाऩ्
वालि नेर्वलि मैन्दऩुन् दम्बियु मडिन्दार्
काल वॅन्दॊऴिऱ् कवयनुम् वाऩहङ् गण्डाऩ्
मालै वाऴियिऱ् केशरि मण्णिडै मऱैन्दाऩ् 2552

वेलै तट्टवऩ्–समुद्र पर सेतु जिसने बनाया था वह नल; आयिरम् पकऴियाल्–हज़ार अस्त्रों से; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा (मरा); वालि नेर् वलि–वाली का समबली; मयिन्तऩुम्–मैंद और; तम्पियुम्–उसका छोटा भाई द्विविद; मटिन्तार्–मर गये; कालऩ् वॅम् तॊऴिल्–यम के समान क्रूर कार्यकारी; कवयऩुम्–गवय भी; वाऩकम् कण्टाऩ्–आकाश का दर्शक बना (मरा); केचरि–केसरी; मालै वाऴियिऩ्–अस्त्रमाला से; मण् इटै मऱैन्ताऩ्–धरती में अदृश्य हो गया। २५५२

समुद्रसेतु-निर्माता नील हज़ार बाणों का शिकार होकर यम का मेहमान बन गया। वाली के सदृश बलवान मैंद और उसका भाई द्विविद हत हुए। कालदेवता-सा क्रूर-कर्म गवय भी स्वर्गवासी हो गया। केसरी पर बाण-माला-सी आ लगी और वह धरती में लोट गया और 'अब नहीं' हो गया। २५५२

विन्द मऩ्ऩदोट् चदवलि शुशेडणऩ् विऩदऩ्
कॅन्द मादऩ ऩिडुम्बन्वऩ् ऱदिमुहऩ् किळर

उन्दु वार्कणै कोडिदम् मुडलमुड् रॉळिप्पत्
तन्द नल्लुणर् वीड्ङ्गिनर् मण्णुरच् चायन्दार् 2553

विन्तम् अन्त तोळ्–विंध्यपर्वत-सम कंधों वाला; चतवलि–शतबली और; चुटेणन्–सुषेण; वित्ततन्–विनत; कॉन्तमाततन्–गंधमादन और; इट्टुम्पतुम्–हिंडिब; वल् ततिमुकतुम्–बलवान दधिमुख; फिळर्–ऊपर उठ जायँ ऐसा; उन्तुबार्–प्रेषित; कोटि कणै–करोड़ अस्त्र; तम् उटलम् उर्रु–उनके शरीरों में लगकर; ऑळिप्प–छिपे तो; तम् तम् नल् उणर्वु–अपनी-अपनी सुधि; ऑट्टुक्कितर्–खो बी; मण् उर चायन्तार्–और धराशायी हो गये। २५५३

विंध्यस्कंध शतबली, सुषेण, विनत, गंधमादन, हिडिंब, बलवान दधिमुख, इन सभी पर ऊपर उठकर बढ़ें, ऐसे प्रेरित करोड़ों अस्त्र घुसे और छिप गये तो वे सुध-बुध खोकर धराशायी हो गये। २५५३

मर्रै वीरर्ह ळियावरुम् वडिक्कणै मळैयाल्
मुर्रुम् वीन्दनर् मुळङ्गुपे रुदिरत्तिन् मुन्नीर्
ऑर्रु वात्तिरैक् कडलोडुम् बॉरुदुशॅल् ऱेऱ
ऑर्रै वान्कणै यायिरङ् गुरङ्गित्तै युरुट्ट 2554

मुळङ्कु–शब्दायमान; पेर्–बड़ा; उतिरत्तिन् मुन्नीर्–रुधिर-सागर; ऑर्रु–जिनको उछालता है; वान् तिरै कटलोटुम्–उन आकाश-स्पर्शी तरंगों से युक्त सागर; पॉरुतु चॅन्रु एर्–टकराने के लिए जा चढ़े ऐसा; ऑर्रै–अनुपम; वान् कणै आयिरम्–श्रेष्ठ हजार बाण; कुरङ्कित्तै उरुट्ट–वानरों को लुढ़का रहे थे, इसलिए; मर्रै वीरर्कळ्–अन्य वीर; यावरुम्–सभी; वटि कणै मळैयाल्–तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से; मुर्रुम् वीन्ततर्–बिलकुल प्राणहीन हो गये। २५५४

शब्दायमान रक्त-सागर उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र से होड़ लगाकर बहे, ऐसा हजारों अनुपम शरों ने वानरों को लुढ़का दिया, इसलिए अन्य वानर वीर भी तीक्ष्ण-शर-वर्षा से बिलकुल मिट गये। २५५४

तळैत्तु वैत्तदु शदुमुहन् पॅरुम्बड तळ्ळि
ऑळिक्क मर्रॊरु पुहलिड मुणर्हिल रुरुमिन्
वळैत्तु वित्तिय वाळियान् मण्णॊडु तिण्णम्
मुळैप्पु डैत्तन वीत्तन वानर मुडिन्द 2555

चतुमुकन् पॅरु पटै–ब्रह्मा के बड़े अस्त्र ने; तळ्ळि–गिराकर; तळैत्तु वैत्ततु–बाँध-सा लिया; ऑळिक्क–उससे बचकर छिपने के लिए; मर्रु ऑरु पुकल् इटम्–कोई दूसरा आश्रय-स्थान; उणर्किलर्–जान नहीं पाये; वळैत्तु वित्तिय–घेरकर बोया हो ऐसा प्रेषित; उरुमित्–अशनि-सदृश; वाळियान्–(इन्द्रजित् के) बाणों से; मण्णॊटु–धरती के साथ; तिण्णम्–अटल; मुळै पुटैत्तत–अंकुर उगे हों, ऐसे; वानरम् मुटिन्त–वानर हत हुए। २५५५

श्रेष्ठ ब्रह्मास्त्र ने वीरों को पछाड़कर वाँध-सा दिया। उससे वचने का वानरों के पास कोई मार्ग नहीं था। बाणों के साथ वे प्राणहीन वानर अंकुरों के समान लगे जो वोये गये-से अस्त्रों से उग आये हों। २५५५

कुवळैक् कण्णियर् वानवर् मडन्दैयर् कोट्टित्
तुवळप् पारिडैक् किडन्दनर् कुरुदिनीर् शुट्रित्
तिवळक् कीऴ्ंडु मेल्पुडै परन्दिडै शॅट्रियप्
पवळक् काडुडैप् पाट्कड लॊत्तदप् परवै 2556

कुवळै कण्णियर्–कुवलयाक्षी; वानवर् मटन्तैयर्–सुरांगनाएँ; कोट्टि तुवळ–सिर झुकाकर मुरझा जाएँ ऐसा; पार् इटै–(लक्ष्मण और वानर) भूमि पर; किटन्तनर्–पड़े रहे; कुरुति नीर् चुट्रि–रक्त चारों ओर बहकर; कीऴ्ट् मेल् पुटै–नीचे और ऊपर; परन्तु–फैलकर; इटै तिवळ चॅट्रिय–सभी जगह आँखों में खूब घेर आया; अ परवै–तो वह (वानर-सेना-) सागर; पवळम् काटु उटै–प्रवालवन-सहित; पाल् कटल् ऑत्ततु–क्षीर-सागर-सम लगा। २५५६

कुवलयाक्षी सुरवालाएँ इनको देखकर दुःख से सिर झुका लें, ऐसा वे भूमि पर पड़े रहे। रक्त का सागर ऊपर, नीचे और चारों ओर सर्वत्र दिखायी दे रहा था। तब वह सेना-सागर प्रबाल-वन-सहित क्षीरसागर के समान लगा। २५५६

विण्णिड़ चॅन्ड्रदु कविक्कुलप् पॅरुम्बडै वॅळ्ळङ्
गण्णिड़ कण्डनर् वानवर् विरुन्दॅनक् कलन्दार्
उण्णिड़ कुम्बॅरुङ् गळिप्पिन रळवळा युवन्दार्
मण्णिड़ चॅल्लुदि रिक्कणत् तेयॅन वलिन्दार् 2557

कविकुलम्–वानरों का; पॅरु पटै वॅळ्ळम्–बड़ा सेना-प्रवाह; विण्णिल् चॅन्ड्रतु–आकाश में गया; वानवर् कण्णिल् कण्टनर्–देवों ने समक्ष देखा; विरुन्तु ऍन कलन्तार्–अतिथि के रूप में स्वागत करके; उळ् निऱ्कुम्–अंतस्थ; पॅरु कळिप्पिनर्–बहुत सुख से प्रभावित होकर; अळवळाय्–दिल दे वातें करके; उवन्तार्–आनंदित हुए; इ कणत्ते–इसी क्षण; मण्णिल् चॅल्लुतिर्–पृथ्वी पर (राक्षसों का नाश करने) जाओ; ऍन वलिन्तार्–कहकर जवरदस्त किया। २५५७

वानरों की वड़ी सेना का सागर स्वर्गलोक चला गया। सुरों ने इसे देखा। वानरों का अतिथि के रूप में स्वागत किया। आनंद से भरकर आपस में वातचीत करके मुदित हुए, फिर तक़ाज़ा किया कि अभी भूलोक चले जाओ। २५५७

पार्प डॆत्तवन् पडैक्कॊरु पूशनै पडैत्तीर्
नीर् पडक्कड वीरलीर् वरिशिलै नॆंडियोन्

पेर्प डैत्तवर् कडियवर्क् कडियरुम् बॅरुवार्
वेर्प डैत्तवॅम् बिऱवियाऱ् ऱुवक्कुणा वीडु 2558

पार् पटॆत्तवऩ्–लोकस्रष्टा के; पटैक्कु–हथियार की; ऒरु पूचऩै पटैत्तीर्–एक पूजा की; नीर् पट कटवीर् अलीर–तुम लोग मरने अर्ह नहीं हो; वरि चिलै–सबन्ध धनुर्धर; नॆटियोऩ् पेर् पटैत्त वर्कु–त्रिविक्रम नामधारी (श्रीराम) के; अटियवर्कु अटियरुम्–दासों के दास भी; वेर् पटैत्त–समूल; वॆम् पिऱवियाल्–दुःखदायी जन्म के कारण होनेवाले; तुवक्कु ओणा–बन्धन से रहित; वीटु पॆरुवार्–मोक्ष पा जाते हैं। २५५८

तुम लोगों ने लोकस्रष्टा के ब्रह्मास्त्र का आदर किया। नहीं तो तुम मरनेवाले नहीं थे। सबंध धनुर्धर त्रिविक्रम नामधारी श्रीराम के दास के दास भी बद्धमूल व भयानक भवरोग से अछूते होकर मोक्ष पाने के हक़दार होते हैं। २५५८

नङ्गळ् कारिय मियऱ्ऱुवा ऩुलहिडै नडऩ्दीर्
उङ्ग ळारुयि रॆम्मुयि रुडल्पिरि दुऱ्ऱीर्
शॆङ्ग णायहऱ् काहवॆङ् गळत्तिडैत् तीर्ऩ्दीर्
ऎङ्ग णायहर् नीङ्गळॆऩ् ऱिमैयव रिशैत्तार् 2559

नङ्कळ्–हमारा; कारियम् इयऱ्ऱुवाऩ्–कार्य पूरा करने के निमित्त; उलकिटै नटन्तीर्–पृथ्वी में गये थे; उङ्कळ् अरुमै उयिर्–आपके बहुमूल्य प्राण; ऎम् उयिर्–हमारे प्राण हैं; उटल् पिरितु उऱ्ऱीर्–केवल शरीर पृथक् पा गये; चॆम् कण् नायकऱ्कु–अरुणाक्ष जगन्नाथ; आक–के लिए; वॆम् कळत्तिटै–भयंकर युद्धाजिर में; तीर्न्तीर्–मरे; नीङ्कळ् ऎङ्कळ् नायकर्–तुम लोग हमारे नायक हो; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों ने; इचैत्तार्–कहा। २५५९

हमारे हितार्थ तुम लोग पृथ्वी पर गये थे। तुम्हारे प्राण हमारे प्राण हैं। केवल शरीर से भिन्न हो। अरुणाक्ष श्रीराम के निमित्त तुम लोगों ने युद्धक्षेत्र में प्राण छोड़े। तुम लोग हमारे नायक हैं। देव यों बोले। २५५९

वॆङ्गण् वानरक् कुळुवॊडु मिळैयवऩ् विळिन्दाऩ्
इङ्गु वन्दिल ऩहऩ्ऱऩ ऩिरामऩॆऩ् ऱिहळ्न्दाऩ्
शङ्ग मूदिऩऩ् ऱादैयै वल्लैयिऱ् चार्न्दाऩ्
पॊङ्गु पोरिडैप् पुहुन्दुळ पॊरुळॆलाम् बुहऩ्ऱाऩ् 2560

वॆम् कण्–भयानक आँखों के; वानरर् कुळुवॊटु–वानरगणों के साथ; इळैयवऩ्–छोटे राजा; विळिन्ताऩ्–मरे; इरामऩ्–श्रीराम; इङ्कु–यहाँ; वन्तिलऩ्–न आकर; अकऩ्ऱऩऩ्–दूर हट गया; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इकळ्न्ताऩ्–निंदा की (इन्द्रजित् ने); चङ्कम् ऊतिऩऩ्–विजयशंख बजाया; तातैयै–पिता के पास; वल्लैयिल्–

शीघ्र; चाऱ्ऩ्ताऩ्–पहुँचा; पॊङ्कु पोर् इटै–उत्साहवर्धक युद्ध में; पुकुन्तुळ पॊरुळ् ॲलाम्–जो हुए वे सभी; पुकऩ्ऱाऩ्–कह सुनाया। २५६०

इन्द्रजित् ने ताना मारा कि क्रूर आँखों वाले वानरवृन्दों के साथ छोटा भाई मर गया। राम तो इधर आया ही नहीं! कहीं दूर चलकर है! फिर विजयशंख बजाकर पिता के पास सवेग गया। जाकर उसने रावण से उत्साह के साथ जो लड़ाई की गयी, उसमें घटी बातें बतायीं। २५६०

इऱन्दि लऩ्कॊलव् विरामऩॆऩ् ऱिरावण ऩिशैत्ताऩ्
तुऱन्दु नीङ्गिऩ ऩल्लऩेऱ् ऱम्बियैत् तॊलैत्तुच्
चिऱन्द नण्बरैक् कॊऩ्ऱुतऩ् शेऩैयैच् चिदैक्क
मऱन्दु निऱ्कुमो मऱ्ऱवऩ् ऱिऱऩॆऩ्ऱाऩ् मदलै 2561

अव् इरामऩ्–वह राम; इऱन्तिलऩ् कॊल्–मरा नहीं क्या; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इरावणऩ् इचैत्ताऩ्–रावण ने पूछा; मतलै–पुत्र ने; तुऱन्तु नीङ्किऩऩ्–(सबको भय के कारण) छोड़ गया; अल्लऩेल्–नहीं जाता तो; तम्पियै तॊलैत्तु–छोटे भाई को मरवाकर; चिऱन्त नण्परै कॊऩ्ऱु–श्रेष्ठ मित्रों को मरवाकर; तऩ् चेऩैयै चितैक्क–अपनी सेना के मिटते तक; मऱ्ऱवऩ्–वह अपना; तिऱम् मऱन्तु–बल भूलकर; निऱ्कुमो–चुप खड़ा रहता क्या; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। २५६१

रावण ने पूछा कि क्या वह राम मरा नहीं है? पुत्र ने उत्तर दिया, मैदान छोड़ गया न! नहीं जाता तो क्या वह अपने भाई को, मित्रों को और अपनी सेना को मिटते देखकर भी अपना बल भूलकर चुप रहता?। २५६१

अऩ्ऩ देयॆऩ वरक्कऩु मादरित् तमैन्दाऩ्
शॊऩ्ऩ मैन्दऩुन् दऩ्पॆरुङ् गोयिलैत् तॊडर्न्दाऩ्
मऩ्ऩ ऩेवलिऩ् महोदरऩ् पोयिऩऩ् वन्दाऩ्
ॲऩ्ऩै याळुडै नायहऩ् वेऱिडत् तिरुन्दाऩ् 2562

अरक्कऩुम्–राक्षसराज ने भी; अऩ्ऩते–वही हुआ होगा; ॲऩ्ऱु–कहकर; आतरित्तु अमैन्ताऩ्–स्वीकार कर लिया; चॊऩ्ऩ मैन्तऩुम्–ऐसा जो कहा वह कुमार भी; तऩ् पॆरु कोयिलै–अपने बड़े मंदिर की तरफ़; तॊटर्न्ताऩ्–बढ़ चला; मऩ्ऩऩ् एवलिऩ् वन्ताऩ्–राजाज्ञा से जो आया था वह; मकोतरऩ्–महोदर भी; पोयिऩऩ्–अपने स्थान चला गया; वेऱु इटत्तु इरुन्ताऩ्–दूसरे स्थान में जो रहे; ॲऩ्ऩै आळुटै नायकऩ्–मेरे मालिक। २५६२

रावण ने सकारा— हाँ वही हुआ होगा! यह कहकर इन्द्रजित् अपने बड़े महल की तरफ़ रवाना हो गया। महोदर भी, जो राजाज्ञा से आया था, चला गया। उधर मुझ दास (कवि) के नायक प्रभु —। २५६२

शय्य तामर नाण्मलर्क् कैत्तलञ् जेप्पत्
तुय्य तेवर्दम् वडैक्कॅलाम् वरन्मुरै तुरक्कुम्
मॅय्हॊळ् पूशनै विदिमुरै यियऱ्ऱिमेल् वीरन्
मॊय्हॊळ् पोर्क्कळत् तॅय्दुवा मितिॅयॅन्न मुयन्ऱान् 2563

वीरन्–वीर; चॅय्य–लाल; तामरै नाळ् मलर्–कमल के ताजे फूल के समान; कै तलम्–हाथ को; चेप्प–और भी लाल बनाते हुए; तुय्य–पवित्र; तेवर् तम् पटैक्कु ॲलाम्–देवों के सभी अस्त्रों को; वरन्मुरै तुरक्कुम्–यथारीति की जानेवाली; मॅय्कॊळ् पूचनै–यथार्थ पूजा; विति मुरै इयऱ्ऱि–विधिवत् करके; मेल्–फिर; इनि–आगे; मॊय् कॊळ्–बलवान वीरों के; पोर् कळत्तु–युद्ध के स्थल में; ॲय्तुवाम्–जाएँगे; ॲन–कहकर; मुयन्ऱान्–यत्न करने लगे। २५६३

श्रीवीरराघव ने अपने कमलारुण हाथों को और भी लाल करते हुए पवित्र दिव्यास्त्रों की यथारीति विधिवत् पूजा करके वीरों के पास युद्धक्षेत्र में जाने का उपक्रम किया। २५६३

कॊळ्ळि यिऱ्चुड रन्नलिदन् पहळिकैक् कॊण्डान्
अळ्ळि नुङ्गला मारिरुट् पिळम्बिनै यळित्तान्
वॅळ्ळ वॆङ्गळप् परप्पिनैप् पॊरुक्कॅन विळित्तान्
तळ्ळि ऱामरैच् चेवडि नुडङ्गुरच् चार्न्दान् 2564

कॊळ्ळियिल्–अधजली लकड़ी के समान; चुटरुम्–प्रकाश देनेवाले; अन्नलि तन्–अग्नि के; पकळि–अस्त्र को; कै कॊण्टान्–हाथ में लेकर; अळ्ळि नुकलाम्–उठाकर पी सकें, ऐसे; अरुमै–अपार; इरुळ् पिळम्पिनै–अंधकार-पुंज को; अळित्तान्–मिटा दिया; तळ्ळिल् तामरै चेवटि–उत्कृष्ट कमल-चरण; नुटङ्कुर–चंचल करते हुए; चार्न्तान्–जाकर; वॅळ्ळम्–सेनाप्रवाह-युक्त; वॆम् कळम् परप्पिनै–भयंकर युद्धस्थल के विस्तार को; पॊरुक्कॅन–झटिति; विळित्तान्–देखा। २५६४

उन्होंने अधजली लकड़ी के समान आग्नेयास्त्र हाथ में लिया। उससे पेय-से रहनेवाला पुंजीभूत अंधकार दूर हो गया। अनिंद्य अपने कमल-चरणों (पर बल देते) हुए वे युद्धक्षेत्र में गये और वानरसेना-सागर-युक्त उस भूमि को ठिठककर देखा। २५६४

नोक्कि नान्पॆरुन् दिशैतॊऱुम् मुरैमुरै नोक्कि
ऊक्कि नान्ऱडन् दामरैत् तिरुमुहत् तुदिरम्
पोक्कि नानिणप् परन्दलै यळुवत्तुट् पुक्कान्
ताक्कुम् वन्दुणैत् तलैवरैत् तनित्तनिक् कण्डान् 2565

पॆरु तिचै तॊऱुम्–बड़ी दिशाओं में; नोक्किनान्–दृष्टि दौड़ायी; ऊक्किनान्–यत्न के साथ; मुरै मुरै नोक्कि–लगातार देखकर; तट तामरै तिरुमुकत्तु–विशाल मुखकमल पर; उतिरम् पोक्किनान्–रक्त फैलने दिया; निणम्–मांस-भरे; परन्तलै अळुवत्तुळ्–युद्धस्थल के विस्तार में; पुक्कान्–पहुँचे; ताक्कुम्–आक्रमण-

कारी; वल् तुणै तलैवरै—सहायक वानरपतियों को; तत्ति तत्ति कण्टान्—एक-एक करके देखा। २५६५

दिशा-दिशा में उन्होंने दृष्टि दौड़ायी। रह-रहकर यत्न से देखा। तब उनका विशाल श्रीमुख अकस्मात् रक्त के तेज़ दौरे से लाल हो उठा। फिर मांससंकुल मैदान में आगे बढ़े। शत्रुओं से टकरानेवाले नायक वीरों को अलग-अलग देखा। २५६५

शुक्कि रीवन नोक्कितन्न् ऱामरैत् तुणैक्कण्
उक्क नीर्त्तिर ळॊळ्हिड नॆडिदुनिन् ऱुयिर्त्तान्
तक्क दोविदु निनक्कॆन्ऱु तन्मनन् दळर्न्दान्
पक्क नोक्किनन् मारुदि तन्नैयैप् पार्त्तान् 2566

शुक्किरीवनै नोक्कि—सुग्रीव की ओर मुख करके; तन् तामरै तुणै कण्—अपनी कमल-सी आँखों के जोड़े से; उक्क नीर् तिरळ्—निकलनेवाले अश्रुप्रवाह को; ऑळ्किट—बहने देते हुए; निन्ऱु—खड़े रहकर; नॆटितु उयिर्त्तात्—लम्बी आहें भरीं; इतु—यह; निनक्कु तक्कतो—तुम्हारे लिए योग्य है क्या; ऎन्ऱु—कहकर; तन् मनम् तळर्न्तान्—अपने मन को जर्जर कर दिया; पक्कम् नोक्किनन्—पास देखा; मारुति तन्नैयै पार्त्तान्—मारुति की स्थिति को जाना। २५६६

सुग्रीव को देखा तो कमल-नेत्रों से आँसू बहने लगा और बहता ही रहा। बहुत देर तक अवाक् खड़े रहे। फिर लम्बी आह भरकर उद्गार निकाली कि क्या यह (ऐसा पड़ा रहना) तुमको सोहता है? उनका मन क्षुब्ध हुआ। उस तरफ़ फिरकर देखा तो मारुति की स्थिति नज़र लगी। २५६६

कडल् कडन्दुपुक् करक्करैक् करुमुदऱ् कलक्कि
इडर् कडन्दुना निरुक्कनी नल्हिय दिदऱ्को
उडल् कडन्दन वोवुनै यरक्कन्विल् लुदैत्त
अडल् कडन्दपोर् वाळियॆन् ऱाहुलित् तळुदान् 2567

कटल् कटन्तु—समुद्र पार करके; पुक्कु—लंका में प्रवेश करके; अरक्करै—राक्षसों को; करु मुतल् कलक्कि—गर्भस्थित शिशु से लेकर कष्ट देकर; नान् इटर् कटन्तु इरुक्क—मैं दुःख पार कर रहूँ, इस वास्ते; नी नल्कियतु—तुम्हारा अच्छा कार्य करना; इतऱ्को—इस वास्ते क्या; अरक्कन् विल् उतैत्त—राक्षस के धनु ने जिसे लात मारकर निकाला; कटन्त अटल्—वह अति कठोर; पोर् वाळि—युद्धास्त्र; उनै—तुम्हारे; उटल् कटन्तनवो—शरीर पार कर गया क्या; ऎन्ऱु कूऱि—ऐसा कहकर; आकुलित्तु—व्याकुल होकर; अळुतान्—रोये। २५६७

हाय! हनुमान! मेरे हितार्थ तुमने समुद्र लाँघा और राक्षसों को गर्भस्थ शिशु से लेकर क्षुब्ध किया। क्या ऐसे उपकार का कार्य इसी अन्त के लिए

था ? राक्षस-धनु-प्रेषित शर तुम्हारे शरीरों को भी भेद सके क्या ? ऐसा विलाप करके श्रीराम व्याकुल हुए। २५६७

मुन्नैत् तेवर्दम् वरङ्गळु मुनिवर्दम् मॉऴियुम्
बिन्नैच् चानहि युदवियुम् बिऴैत्तन पिऱन्द
पुन्मैच् चॅय्दॉऴि लॅन्विनैक् कॉडुमैयाऱ् पुहऴोय्
ॲन्नैप् पोल्बव राण्ळ रॉरुवरॆन् ऱिशैत्तान् 2568

पुकऴोय्–यशस्वी; पिऱन्त–सहज; पुन्मै चॆय् तॊऴिल्–नीचकर्मकारी; ॲन् विनै कॊटुमैयाल्–मेरे प्रारब्ध की क्रूरता से; मुन्नै–पहले; तेवर्तम् वरङ्कळुम्–देवों के दिये वर; मुनिवर् तम् मॊऴियुम्–और मुनियों के आशीर्वचन; पिन्नै–बाद; चानकि उतवियुम्–जानकी का उपकार; पिऴैत्तन–असफल हो गये; ॲन्नै पोल्पवर्–मेरे समान; ऒरुवर्–कोई; आर् उळर्–कौन है; ॲन्ऱु–ऐसा; इचैत्तान्–कहा। २५६८

यशस्वी ! सहजात नीच कर्मकारी मेरे प्रारब्ध के बल से पहले देवों द्वारा दिये गये वर, मुनियों के आशीर्वचन, बाद जानकी का उपकार सब बेकार हो गया। हाय ! मेरे समान और कौन होगा ? श्रीराम ने ऐसा विलाप किया। २५६८

पुन्ऱॉ ऴिऱ्पुलै यरशिनै वॆः(ह्)हिनेन् पूण्डन्
ऱॉन्ऱै रुक्किने ॲन्दैयैच् चडायुवैक् कुऱैत्तेन्
इन्ऱॉ रुक्किने नित्तनै वीररै यिरुन्देन्
वन्ऱॉ ऴिऱ्कॉरु वरम्बुमुण् डाय्वर वऱ्ऱो 2569

पुन् तॊऴिल्–क्षुद्रकार्य के; पुलै अरचिनै–नीचराज्य को; वॆः किनेन् पूण्टेन्–चाहकर मैंने अपनाया; ॲन्तैयै कॊन्ऱु–अपने पिता को मरवाकर; ऒरुक्किनेन्–मिटा दिया; ॲन्तैयै चटायुवै–पितातुल्य जटायु को; कुऱैत्तेन्–आयुहीन कर दिया; इन्ऱु–आज; इत्तनै वीररै–इतने वीरों को; ऒरुक्किनेन्–प्राणहीन कर दिया; इरुन्तेन्–मैं रह गया; वन् तॊऴिऱ्कु–मेरे कठोर कर्म की; ऒरु वरम्पुम् उण्टाय् वर वऱ्ऱो–कोई सीमा हो सकेगी क्या। २५६९

मैंने क्षुद्रकर्म नीच शासन की इच्छा की और लिया। उसके परिणाम में मेरे पिता स्वर्गवासी हुए। पितृहंता हुआ। फिर पितातुल्य जटायु की आयु क्षीण करा दी। आज इतने वीरों का काम तमाम करवाकर सुख से रह रहा हूँ ! मेरे बेरहम कार्यों की भी सीमा है क्या ? । २५६९

तमैय नैक्कॉन्ऱु तम्बिक्कु वानरत् तलैमै
अमैय नल्हिनै नडङ्गलु मविप्पदऱ् कमैन्देन्
कमैबि डित्तुनित् ऱुङ्गळै यित्तुणै कण्डेन्
शुमैयु डऱ्पॊरै शुमक्कवन् दनन्नैच् चॊन्नान् 2570

तेमैयत्तै कॊन्ऱु–ज्येष्ठ भ्राता को मारकर; तम्पिककु–छोटे भाई को; वानरत् तलैमै–वानरपतित्व; अमैय नल्किन्नॆन्–ठीक रूप से देकर; अटङ्कलुम् अविप्पतऱ्कु–सबका नाश करने का; अमैन्तेन्–यत्न करनेवाला बन गया; कमै पिटित्तु निन्ऱु–क्षमा अपनाकर; उङ्कळै इ तुण्बम् कण्टेन्–तुम लोगों पर इतना सारा दुःख ढा दिया; चुमै–भूभार-रूप; उटल् पॊऱै–शरीर-भार; चुमक्क वन्ततन्–ढोने पैदा हुआ हूँ; अॆन–ऐसा; चॊन्तान्–दुःखी होकर कहा। २५७०

मैंने बड़े भाई (वाली) को मारकर छोटे भाई को नायकत्व देकर क्या ही उपकार किया! सारे वानरों पर मृत्यु ला दी। क्षमाशील बनकर मैंने तुम्हें अपार कष्ट दिया है। यह शरीर बड़ा भार है और उसे ढोने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। ऐसा कहकर श्रीराम रोये। २५७०

विडैक्कु लङ्गळि नडुवणोर् विडैकिडन् दॆन्नक्
कडैक्कण् डीयुह वङ्गदक् कळिऱ्ऱिनैक् कण्डान्
पडैक्क लङ्गळैच् चुमक्किन्ऱ पदहनेन् पळिपार्त्
तडैक्क लप्पॊरुळ् कात्तवा ऱळहिदॆन् ऱळुदान् 2571

विटै कुलङ्कळिल् नटुवण्–ऋषभवृन्द में; ओर्–अनुपम; विटै–ऋषभ एक; किटन्तु अॆन्न–रहता हो जैसे; अङ्कतन् कळिऱ्ऱै–अंगद रूपी गज को; कण्टान्–देखा; कण् कटै–आँखों के कोरों से; ती उक–आग निकालते हुए; पटै कलङ्कळै चुमक्किन्ऱ–हथियार धारण करनेवाला; पतकनेन्–पापी मैं; पळि पार्त्तु–निंदा देखकर; अटैक्कलम् पॊरुळ् कात्त आऱु–धरोहर के पालन का प्रकार; अळकितु–बड़ा सुन्दर है यह; अॆन्ऱु–कहकर; अळुतान्–रोये। २५७१

श्रीराम ने मामूली बैलों के मध्य पड़े हुए ऋषभराज के समान अंगद रूपी गज को पड़ा देखा। तब उनकी आँखों के कोर से आग-सी निकल पड़ी। "हथियारधारी पापी हूँ मैं! कलंक लगवा लेते हुए मेरा अपने धरोहर के (आश्रित) लोगों की रक्षा करने का यह प्रकार भी बड़ा सुन्दर रहा" —यह कहते हुए वे रोने लगे। २५७१

उडलि डैत्तॊडर् पहळियि नॊळिर्हदिर्क् कऱ्ऱैच्
चुडरु डैप्पॆरुङ् गुरुदियिऱ् पाम्बॆनच् चुमन्द
मिडलु डैप्पण मीमिशैत् तान्पणडै वॆळ्ळक्
कडलि डैत्तुयिल् वानॆन तम्बियैक् कण्डान् 2572

उटल् इटै तॊटर्–शरीर पर लगातार लगे; पकळियिन्–बाणों के; ऒळिर् कतिर् कऱ्ऱै–ज्वलन्त प्रकाश की लटों से; चुटर् उटै–प्रकाशमान; पॆरु कुरुतियिल्–बड़े रक्तप्रवाह में; पाम्पु अॆन–सर्प के समान; चुमन्त–ढोए हुए; मिटल् उटै–सबल; पणम् मी मिचै–फन के ऊपर; पण्टै–प्राचीन; वॆळ्ळम् कटल् इटै–प्रवाहमय समुद्र पर; तुयिल्वान् तान् अॆन्न–सोनेवाले-से; तम्पियै–छोटे भाई को; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। २५७२

श्रीराम ने लघुसहोदर को देखा। वे रक्त के मध्य पड़े रहे, जिस पर उनके ही शरीर पर बराबर आ लगे शरों का प्रकाश पड़ रहा था। वे प्राचीन क्षीरसागरमध्य सबल सर्पफनों पर योगनिद्रारत रहनेवाले विष्णु के ही समान सर्प की भाँति पड़े रहे। २५७२

पौरुमि नात्तहम् बौङ्गित्ता नुयिर्मुऱ्ऱुम् बुहैन्दात्
कुरुम णित्तिरु मेन्नियु मत्तमेन्नक् कुलैन्दात्
तरुम निन्ऱुतन् कणपुडैत् तलम्वरच् चायन्दात्
उरुमि नालिडि युण्डदोर् मरामर मौत्तान् 2573

अकम् पौरुमित्तात्–उत्तप्त-मन हुए; पौङ्कित्तात्–क्रुद्ध हुए; उयिर् मुऱ्ऱुम्–श्वास सब; पुकैन्तात्–धुएँ के हो गये; कुरु मणि–नोली मणि-सम; तिरुमेनियुम्–श्रीशरीर; मतम् अन्न कुलैन्तात्–मन के ही समान जर्जर हुआ; तरुमम्–धर्म-देवता; निन्ऱु–खड़े होकर; तन् कण् पुडैत्तु–अपनी आँखें पीटकर; अलम् वर–दुःखी हो ऐसा; उरुमिताल् इटि उण्टतु–वज्राहत; ओर् मरामरम् ऑत्तात्–एक सालवृक्ष-सदृश हो गये। २५७३

श्रीराम का मन बहुत दुखा। उन्हें क्रोध आया। श्वास ही धुएँ बनकर निकले। उनका नीलमणि-सा शरीर मन के समान निस्तेज हुआ। तब वे वज्राहत सालवृक्ष के समान लगे, जिन्हें देखकर धर्मदेवता अपनी आँखें पीटकर व्याकुल हुआ। २५७३

उयिर्त्ति लन्नौरु नाऴिहै युणर्न्दिल नौन्ऱुम्
वियर्त्ति लत्तुडल् विऴित्तिलन् कण्णिणै विण्णोर्
अयर्त्तन न्न्गोलॅन् ऱञ्जिन रङ्गयुन् दाळुम्
बॅयर्त्ति लन्नुयिर् पिरिन्दिलन् करुणैयाऱ् पिऱन्दान् 2574

करुणैयाल्–भूतदया के कारण; पिऱन्तान्–अवतरित श्रीराम; ओरु नाऴिकै–एक घड़ी; उयिर्त्तिलन्–श्वासहीन रहे; ऑन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–किसी की सुध नहीं की; वियर्त्तिलन्–स्वेद नहीं निकाला; कण् इणै–अक्षद्वय; विऴित्तिलन्–नहीं खोला; अम् कैयुम् ताळुम्–सुन्दर हाथों और पैरों को; पॅयर्त्तिलन्–नहीं हिलाया; उयिर् पिरिन्तिलन्–प्राणहीन न हुए यही ग़नीमत थी; विण्णोर्–देव; अयर्त्तनन् कॉल्–प्राणहीन हो गये क्या; अन्ऱु अञ्चितर्–ऐसा डरे। २५७४

जीवों पर दया के कारण अवतरित श्रीराम एक घड़ी बेहोश रह गये। श्वास नहीं निकाले; कुछ सुधि नहीं रह गयी। शरीर पर स्वेद झलक नहीं आया। आँखें नहीं खुलीं। हाथ या पैर नहीं हिले। केवल प्राण छूटे नहीं। देव यह संशय करने लगे कि क्या ये प्राणहीन हो गये? । २५७४

ताङ्गु वारिलैत् तम्बियैत् तऴीइक्कौण्ड तडक्कै
वाङ्गु वारिलै वाक्किनाल् तॅरुट्टुवा रिलै

पाङ्ग रायुऴळो रियावरुम् बट्टऩर् पट्ट
तीङ्गु दाऩिदु तमियनै यार्तुयर् तीर्प्पार् 2575

पाङ्‌कराय् उऴळोर्–मित्र जो रहे वे; यावरुम् पट्टऩर्–सभी मर गये; ताङ्‌कुवार् इल्लै–सँभालनेवाले नहीं थे; तम्पियै तऴीइ कीण्ट–भाई का आलिंगन करते जो पड़े रहे उन; तट कै–(श्रीराम के) वड़े हाथों को; वाङ्‌कुवार् इल्लै–हटानेवाले नहीं; वाक्किऩाल्–शब्दों से; तेरुट्टुवार् इल्लै–सांत्वना देनेवाले नहीं; पट्ट तीङ्कु इतु–उनका भोगा दुःख ऐसा था; तमियऩै–एकाकी को; तुयर् तीर्प्पार् पार्–दुःखमुक्त करे कौन। २५७५

उनके मित्र सभी मर गये। सँभालनेवाला कोई नहीं रहा। लघुभ्राता से लगकर पड़े रहे उनके विशाल हाथ को हटानेवाला कोई नहीं था। सान्त्वना के शब्द कहनेवाला कोई नहीं। उनकी बुरी स्थिति ऐसी हो गयी। एकाकी जो हो गये थे, उनका दुःख दूर करे कौन ?। २५७५

कवन्द पन्दमुङ् गऴदुन्दङ् गणवरैक् काणाच्
चिवन्द कण्णियर् तेडिऩर् तिरिववर् तिरऴुम्
उवन्द शादहत् तीट्टमुम् ओरियि ऩॊऴक्कुम्
निवन्द वल्लदु पिऱविल्लैक् कडत्तिडै निऩ्ऱ 2576

कवन्त पन्तमुम्–कवन्धवृन्द; कऴुतुम्–और भूत; तम् कणवरै काणार्–अपने पतियों का पता न पाकर; चिवन्त कण्णियर्–लाल हुई आँखों वाली; तेटिऩर् तिरिपवर्–खोजती फिरनेवालियों के; तिरऴुम्–समूह; उवन्त–नन्दित; चातकत्तु ईट्टमुम्–पिशाचों का (भद्रकाली देवी के भृत्यों का) झुण्ड; ओरियिऩ् ऒऴुक्कुम्–और सियारों की पंक्तियाँ; निवन्त–हावी रहे; अल्लाल्–उन्हें छोड़कर; कटत्तिटै निऩ्ऱ–जंगल में जो जीवित रहे; पिऱ इल्लै–अन्य कुछ नहीं रहे। २५७६

वहाँ तब कबंधवृन्द, भूत, पति की खोज में लगी लाल आँखों वाली स्त्रियों के झुंड, भद्रकालिका देवी के मुदित भृत्य, भूतों के समूह, सियारों की पंक्तियाँ —ये सब भरे रहे। फिर वहाँ क्या रहा ?। २५७६

वाऩ नाडियर् वयिऱलैत् तऴुदकण् मऴैनीर्
शोनै मारियिऱ् चॊरिन्दऩ तेवरुञ् जॊरिन्दार्
एऩै निऱ्पवुन् दिरिबवु मिरङ्गिऩ वॆवैयुम्
ञाऩ नायह ऩुरुवमे यादला ऩडुङ्गि 2577

वाऩ नाटियर्–देवलोकदयिताएँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अऴुत कण् मऴै नीर्–जो रोयीं तब निकली अश्रुवर्षा; चोनै मारियिल्–अविरत वर्षा के समान; चॊरिन्तऩ–बरसी; तेवरुम् चॊरिन्तार्–देवों ने भी बरसायी; ऎवैयुम्–सभी; ञाऩ नायकऩ् उरुवमे–ज्ञाननायक (श्रीराम) के ही रूप हैं; आतलाल्–इसलिए; नटुङ्कि–काँपकर; एऩै निऱ्पवम्–अन्य अचर और; तिरिपवुम्–चर; इरङ्किऩ–शोकाकुल हुए। २५७७

देवलोकदयिताएँ पेट पीटती रोयीं और उनका अश्रुजल वर्षा के समान गिरा। देव भी रोये। प्रपंच के सभी जीवधारी ज्ञाननायक श्रीराम के ही रूप के सिवा कुछ नहीं। इसलिए चराचर सब काँपे और दुःखपीड़ित हुए। २५७७

मुहैयि ताण्मलर्क् किळवर्कु मुक्कणान् रतक्कुम्
तहैयि नीङ्गिय तिरुमुहङ् गरुणैयि नलिन्द
तौहैयि लित्रवर्क् कुळ्ळदु शॉल्लियॆन् तॊडर्न्द
पहैयुम् बार्क्कित्र पावमुङ् गलुळ्न्दन परिवाल् 2578

मुकै इल्–जो कली नहीं; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल के; किळवर्कुम्–वासी ब्रह्मा के; मुक्कणान् ततक्कुम्–त्रिनेत्र शिवजी के; तकैयित् नीङ्किय–स्वभाव-विपरीत; तिरुमुकम्–श्रीमुख; करुणैयित् नलिन्त–सहानुभूति के कारण निष्प्रभ हुए; तौकैयित् नित्रवर्क्कु–एक ही समूह के जो रहते हैं उनका; उळ्ळतु–जो हाल होता है; चॊल्लि ऎन्न–वह क्या कहें; तॊटर्न्त पकैयुम्–लगी हुई शत्रुता ने और; पार्क्कित्र–उसको देखनेवाले; पावमुम्–पाप ने भी; परिवाल् कलुळ्न्तन–सहानुभूति से अश्रु बहाये। २५७८

कली जो नहीं रहा पर जो ताज़ा खिल गया, उस पद्म के प्रभु ब्रह्मा का श्रीमुख और त्रिनेत्र शिवजी का श्रीमुख स्वभाव के विपरीत सहानुभूति-जनित करुणा के कारण मलिन हो गये। एक ही समूह के हैं —उनके दुःख का क्या कहा जाय ? शत्रुता और पाप ने भी अश्रु बहाये ! । २५७८

अण्ण लुऩ्जिरि दुणर्वित्तो डयर्वुयिर्प् पणुहिक्
कण्वि ळित्तनन् तम्बियैत् तॆरिवुऱ्क् कण्डान्
विण्णे युऱ्ऱनन् मीळ्हिल नॆन्ऱहम् वॆदुम्बप्
पुण्णि नुऱ्ऱदो रॆरियन्न तुयरिनन् पुलम्बुम् 2579

अण्णलुन्–महिमावान श्रीराम ने भी; चिऱितु उणर्वित्तोटु–कुछ प्रज्ञा के साथ; अयर्वु–थकावट; उयिर्प्पु–और लम्बे श्वासों के साथ; अणुकि–लगकर; कण् विळित्तनन्–आँखें खोलीं; तम्पियै–अपने भाई को; तॆरिवुऱ् कण्टान्–साफ़-साफ़ देखा; विण्णै उऱ्ऱनन्–स्वर्ग पहुँच गया; मीळ्किलन्–लौट नहीं आयेगा; ऎन्ऱु–यह कहकर; अकम् वॆतुम्प–चित्त के तप्त होते; पुण्णित्–व्रण में; ओर् ऎरि–एक आग; उऱ्ऱतु अन्न–घुसी जैसे; तुयरिनन्–दुःखी हो; पुलम्पुम्–विलाप करने लगे। २५७९

महिमामय श्रीराम थोड़ा आश्वस्त हुए। लम्बी आह के साथ सुधि आयी। आँखें खोलकर उन्होंने भाई को खूब देखा। 'यह स्वर्गवासी हो गया। लौटेगा नहीं !' यह सोचकर उनका मन तप्त हुआ। व्रण में आग लगी हो जैसे वे वेदना के साथ यों विलाप करने लगे। २५७९

ऍन्दै यिऱन्दा तॆन्रु मिरुन्दे नुलहॆल्लान्
दन्दत्त नॆन्नुङ् गोळ्हे तविर्न्देत् ऱनियल्लेन्
उय्न्दु मिरुन्दाय् नीयॆन्न निन्ऱे नुरैकाणेन्
वन्दन्न नैया वन्दन्न नैया विन्निवाळ्हेन् 2580

ऍन्नै इऱन्तान् ऍन्ऱुम्–मेरे पिता मर गये, यह सुनकर भी; इरुन्तेन्–मैं जीवित रहा; उलकु ऍल्लाम् तन्तनन् ऍन्ऱुम्–सभी लोकों को भरत का कर दिया यह; कोळ्कै तविर्न्तेन्–धारणा भी झुठला दी; तनि अल्लेन्–(मुझे) एकाकी न बनाते हुए; भी उय्न्तुम् इरुन्ताय्–तुम जीवित रहे; निन्ऱेन्–इसी विचार से (सुखी) रहा; उरै काणेन्–तुम्हारा बोलना नहीं देखता; इनि वाळ्केन्–अब न जीऊँगा; ऐया–तात; वन्तनन्–आ गया; ऐया–तात; वन्तनन्–आ गया तुम्हारे पास। २५८०

अपने पिता की मृत्यु सुनकर भी मैं जीवित रहा। भरत को राज्य दे दिया —यह दावा भी छोड़ा। तब तुम साथ थे; मैं अकेला नहीं था। उसी से मैं जीवित रहा। अब तुम्हारी वाणी नहीं सुन पाता। मैं नहीं जीऊँगा तात! आ गया! तात! आ गया तुम्हारे पास। २५८०

तायो नीये तन्दैयु नीये तवनीये
शेयो नीये तम्बियु नीये तिरुनीये
पोयो निन्ऱा यॆन्नै यिहन्दाय् पुहळ्पाराय्
नीयो यान्नो निन्निनु नॆञ्जम् वलियेन्नाल् 2581

तायो नीये–माता भी तुम हो; तन्तैयुम् नीये–पिता भी तुम्हीं; तवम् नीये–तप (का फल) भी तुम्हीं; चेयो नीये–पुत्र भी तुम्हीं; तम्पियुम् नीये–लघु सहोदर भी तुम्हीं; तिरु नीये–संपत्ति भी तुम्हीं; नीयो–तुम तो; पुकळ् पाराय्–यश न चाहकर; ऍन्नै इकन्ताय्–मेरी उपेक्षा करके; पोयो निन्ऱाय्–जा ही गये; यानो–मैं तो; निन्निनुम्–तुमसे बढ़कर; नॆञ्चम् वलियेन्–चित्त का कठोर हूँ। २५८१

माता, पिता, तप, पुत्र, लघुभ्राता सभी तुम्हीं हो! मेरी सारी श्री तुम्हीं हो! पर तुम तो यश की अवहेलना करके मुझे छोड़ गये! मैं (जो अब भी जीवित हूँ) तुमसे भी कठोर दिल का हूँ। २५८१

ऊऱाय् निन्ऱ पुण्णुडै यायपा लुयिर्काणेन्
आऱा निन्ऱे नावि शुमन्दे यळ्हिन्ऱेन्
एऱे यिन्नु मुय्यिनु मुय्वे निरुकूऱाक्
कीऱा नॆञ्जम् वॆऱ्ऱन नन्ऱो कॆडुवेन्ने 2582

ऊऱाय् निन्ऱ–दुःखकारी; पुण् उटैयाय् पाल्–व्रणों से भरे शरीर में; उयिर् काणेन्–प्राण नहीं देखता; आऱा निन्ऱेन्–सँभलकर; आवि चुमन्ते–प्राण ढोते हुए; अळुकिन्ऱेन्–रोता हूँ; एऱे–सिंह; कॆटुवेन्–मिट जाऊँगा; इरु कूऱा–दो भागों में; कीऱा नॆञ्चम्–जो नहीं फटता ऐसा मन; पॆऱ्ऱनन् अन्ऱो–मैंने पाया है न; इन्नुम्–और भी; उय्यिनम् उय्वेन्–जीता तो रहूँगा; अन्ऱो–न। २५८२

तुम्हारे बहते व्रणों के शरीर में प्राणों का निशान नहीं। तुम साँसें नहीं छोड़ते। शांत होकर प्राण ढोता हुआ रो रहा हूँ। हे नरकेसरी ! मैं मिटा ! मेरे ऐसा कठोर दिल है जो दो भागों में फटता नहीं ! फिर भी जीवित रह जाऊँगा (तो आश्चर्य नहीं) ! । २५८२

पयिलुङ् गालम् बत्तॊडु नालुम् बडर्कानत्
तयिल्हिन् ड्रेनुक् कावन्न नल्हि ययिलादाय्
वॆयिलॆन् रुन्नाय् निन्रु तळर्न्दे मॆलिवॆय्दित्
तुयिल्हिन् ड्रायो विन्रिव् वुरक्कन् दुड्रवायो 2583

पटर् कानत्तु–विशाल कानन में; पयिलुम् कालम् पत्तॊट्टु नालुम्–मिले जब रहे उन चौदहों सालों में; अयिल्कित्रेनुक्कु–खानेवाले मुझे; आवन्न नल्कि–भोग्य वस्तुएँ देकर; अयिलाताय्–हे स्वयं कुछ न खानेवाले; वॆयिल् ऎन्रु उन्नाय्–धूप की परवाह नहीं करते; तळर्न्तु नित्रे–श्लथ रहकर; मॆलिवु ऎय्ति–निर्बल होकर; इन्रु तुयिल्कित्रायो–आज सोते हो क्या; इव् उरक्कम्–यह निद्रा; तुड्रवायो–न छोड़ोगे क्या। २५८३

विशाल कानन में चौदह साल हम एक साथ रहे। तुमने मेरा खाने का प्रबन्ध मेरी इच्छा के अनुसार कराया। पर तुम विना खाए ही रह जाते थे। धूप नहीं देखते। शरीर को कृश बना लिया। आज क्या मन के भी शिथिल पड़ जाने से सोये पड़े हो ? क्या यह निद्रा नहीं त्यागोगे ? । २५८३

अयिरा नॆञ्जु मावियु मॊन्ड्रे यॆनुमच्चॊल्
पयिरा वॆल्लैप् पादह नेर्कुम् बरिवुण्डो
शॆयिरो विल्ला वुन्नै यिळन्दुन् दिरिहिन्रेन्
उयिरो नान्नो वारिनि युन्नो डुड्रवेया 2584

अयिरा–संशय न करके; नॆञ्चुम् आवियुम्–मन और प्राण; ऒन्ड्रे–एक ही; ऎनुम् अ चॊल्–वैसा वह कथन; पयिरा ऎल्लै–जब निरर्थक हो गया; पातकनेर्कुम्–पापी मुझमें; परिवु उण्टो–करुणा होगी क्या; चॆयिर् इल्ला–निर्दोष; उन्नै इळन्तुम्–तुमको खोकर भी; तिरिकित्रेन्–सप्राण घूमता हूँ; ऐया–तात; इनि–अब; उन्नॊटु उड्रवु–तुम्हारे साथ रिश्ता; उयिरो–मेरे प्राण; नानो–या मैं; आर्–कौन। २५८४

हम परस्पर विश्वासी एक-मन एक-प्राण हैं —ऐसा लोग कहते थे। वह कथन अब निरर्थक हो गया है। तब मुझ पातक में अनुताप रहता है क्या ? निर्दोष तुम्हें खोकर भी मैं घूमता फिरता हूँ। तात ! अब तुम्हारे साथ नाता निबाहें मेरे प्राण ? या निबाहूँ मैं ? कौन ? । २५८४

बेळ्विक् केहि विल्लु मिरुत्तोर् विडमम्मा
वाळ्विक् कुम्मॆन् रॆण्णिनन् मुन्ने वरुवित्तेन्

शूऴ्वित् तैत्तैच् चुड्रित्त रोडुम् जुडुवित्तेन्
ताऴ्वित् तेन्तो वित्तत्त केडुन् दरुवित्तेन् 2585

वेळ्विक्कु एकि–(जनक के) यज्ञ में जाकर; विल्लुम् इरुत्तु–धनु भी तोड़कर; ओर् विटम्–एक विष (सीता); वाऴ्विक्कुम्–हमको जिलायगा; ऍन्ऱु ऍण्णितेन्–सोचा मैंने; मुन्ने वरुवित्तेन्–सामने लाया; चूऴ्वित्तु–वंचना करके; ऍन्नै चुड्रित्तरोटुम्–अपने सभी बन्धु-बान्धवों को; चुटुवित्तेन्–जलवा दिया; ताऴ्वित्तेतो–पीछे हटा क्या; इत्तनै केटुम् तरुवित्तेन्–इतने कष्ट ला दिये; अम्मा–माँ री। २५८५

जनक के धनुर्यज्ञ में गया, शिवधनुष तोड़ा और सोचा कि सीता रूपी विष हमको जिलाएगा (सुखमय जीवन दिलाएगा)। उसे सामने ले आने दिया। सबको वंचना करके रिश्तेदारों के साथ जला दिया! कुछ भी संकोच किया क्या मैंने? ओह! कितनी ही हानियाँ करा दीं!। २५८५

मण्मेल् वैत्त कादलिन् मादा मुदलोर्क्कुप्
पुण्मेल् वैत्त तीनिहर् तुन्बम् बुहुवित्तेन्
पॅण्मेल् वैत्त कादलि न्निप्पे रुहळ्पॅड्रेन्
ऍण्मेल् वैत्त वॅन्पुहऴ् नन्ड्रा लॅळियनो 2586

मण् मेल् वैत्त कातलिन्–धरती पर हुई इच्छा से; माता मुतलोर्क्कु–माता (कैकेयी) आदि लोगों को; पुण् मेल् वैत्त–व्रण में रखी; ती निकर्–आग के समान;. तुन्पम् पुकुवित्तेन्–दुःख दिलाया; पॅण् मेल् वैत्त कातलिन्–स्त्री पर रखे प्रेम से; इ पेरुकळ् पॅड्रेन्–ये लाभ पाये; ऍण् मेल् वैत्त–मान्य; ऍन् पुकऴ्–मेरा यश भी; नन्ड्रु–खूब रहा; ऍळियेतो–दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ क्या। २५८६

मैंने राज्यलिप्सा के कारण माता (कैकेयी) आदियों को व्रण पर रखी आग के समान दुःख पहुँचाया। स्त्रीलिप्सा के कारण ये सब लाभ पाये। मान्य मेरा यश भी बड़ा अच्छा रहा! क्या मैं दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ?। २५८६

माण्डाय् नीयो यानोरु पोदु मुयिर्वाऴेन्
आण्डा नल्ल नानिल मन्दो परदन्ड्रान्
पूण्डा रॅल्लाम् बॊन्ऱुवर् तुन्बम् बॊड्रैयाड्रार्
वेण्डा वोना नल्लर मञ्जि मॅलिवुड्राल् 2587

नीयो माण्टाय्–तुम तो मर गये; यान्–मैं; ऒरु पोतुम् उयिर् वाऴेन्–मैं कदापि नहीं जीवित रहूँगा; परतन्–(तव) भरत; नानिलम् आण्टान् अल्लन्–चतुर्विधा भूमि का शासन नहीं करेगा; अन्तो–हन्त; तुन्पम् पॊड्रै आड्रार्–दुःखभार वहन न कर सककर; पूण्टार् ऍल्लाम्–रिश्तेदार सभी; पॊन्ऱुवर्–मर जाएँगे; यान्–मैं; नल् अड्रम् अञ्चि–श्रेष्ठधर्म-भीरु होकर; मॅलिवुड्राल्–निर्बल रहा तो; वेण्टावो–ये सब न होने चाहिए क्या। २५८७

तुम तो चल बसे ! मैं एक पल भर भी प्राणधारण नहीं करूँगा। (उस स्थिति में) भरत भूमि का पालन नहीं करेगा। हन्त ! दुःख-भार न सह सककर सभी नातेदार मर जाएँगे। अच्छे धर्म से डरकर मैं निर्बल रह गया न ? इतना काफ़ी है क्या मुझे ? । २५८७

अऱन्दाय् तन्दै शुट्ऱमु मट्ऱु मॅन्नैयल्लाल्
तुऱन्दा यॅन्ऱु मॅन्नै मऱादाय् तुणैवन्दु
पिऱन्दा यॅन्नैप् पिन्बु तॉडर्न्दाय् पिरिवाट्ऱाय्
इऱन्दा युन्नैक् कण्डु मिरुन्दे नॅळियेनो 2588

अऱम्–धर्म; ताय् तन्दै–माता-पिता; चुट्ऱमुम्–और रिश्तेदार; मट्ऱुम्–अन्य सभी को; ॲन्नै अल्लाल्–मुझे छोड़; तुऱन्ताय्–छोड़ चलनेवाले; ॲन्ऱुम् ॲन्नै मऱाताय्–कभी मुझे न भूलनेवाले; तुणै वन्तु पिऱन्ताय्–साथी भाई के रूप में जनमे; पिरिवु आट्ऱाय्–वियोग न सह सकनेवाले; ॲन्नै–मेरा; पिन्पु तॊटर्न्ताय्–पीछा कर आये; इऱन्ताय्–मर गये; उन्नै कण्टुम्–तुम्हें देखकर भी; इरुन्तेन्–जीवित रहता हूँ; ॲळियेनो–दीन हूँ क्या। २५८८

तुमने धर्म, माँ, बाप, रिश्तेदार सभी को त्यागा, केवल मेरे वास्ते ! हे मुझे कभी न भूलनेवाले; मेरे सहोदर के रूप में जनमे मेरे भाई ! वियोग सह नहीं सककर, मेरे पीछे जंगल आनेवाले ! तुम मर गये तो भी देखता रह रहा हूँ मैं ! क्या मैं दीन हूँ ? । २५८८

शान्ऱोर् मादैत् तक्क वरक्कन् शिऱै तट्टाल्
आन्ऱोर् शॉल्लु नल्लऱ मन्नान् वयमानाल्
मून्ऱाय् निन्ऱ पेरुल हॊन्ऱाय् मुडिया वेल्
तोन्ऱा वोवॆन् विल्वलि दीरत् तॊऴिलम्मा 2589

चान्ऱोर् मातै–सुयोग्य पुरुष की पुत्री को; तक्क अरक्कन्–बलवान राक्षस; चिऱै तट्टाल्–कारा में बाँध रखे तो; आन्ऱोर् चॊल्लुम् नल् अऱम्–साधुशंसित श्रेष्ठ धर्मदेवता; अन्नान् वयम्–उसके वश में; आताल्–हो जाय तो; [मून्ऱाय् निन्ऱ पेर् उलकु–त्रिविध बड़े लोक; ऒन्ऱाय् मुटियावेल्–एक साथ न मिटें तो; ॲन् विल् वलि–मेरे धनु का बल; तीरम् तॊऴिल्–और पराक्रम; तोन्ऱावो–प्रकट नहीं होगा क्या। २५८९

बहुत ही सुयोग्य (जनक) की दुहिता को बली राक्षस ने कारा में बंद रखा है। तो धनु को उसका नाश करा देना चाहिए। पर श्रेष्ठ धर्मदेवता उसके वश में रह गया। तो तीनों लोकों को एक साथ मिट जाना चाहिए। वह भी न हुआ,तो क्या मेरा धनु का वीर कार्य प्रकट नहीं हो ? भैया, यह क्या आश्चर्य है ? । २५८९

वेलैप् पळ्ळक् कुण्डह ळिक्कुम् विरादर्कुङ्
गालिर् चॅल्लुङ् गाह मणिक्कुङ् गरनुक्कुम्
मूलप् पॉत्तर् चॅत्त मरत्तेळ् मुदलुक्कुम्
वालिक् कुम्मे यायिन वाऱॅन् वलियम्मा 2590

वेलै–सागर-कथित; पळ्ळम् कुण्टु अकळिक्कुम्–गड्ढे रूपी लंका की गहरी खाई के विषय में; विरातर्कुम्–विराध; कालिल् चॅल्लुम्–पवनगतिगामी; काकम्–काकासुर की; मणिक्कुम्–आँख के तारे; करनुक्कुम्–खर; मूलम् पॉत्तल्–जड़ में छेद के साथ; चॅत्त–सत्त्वहीन; मरत्तु एळ् मुतलुक्कुम्–सात सालवृक्ष आदि के विषय में और; वालिक्कुम् ए–वाली के विषय में ही; ॲन् वलि–मेरा बल; आयिन वाऱ ॲन्–कारगर रहा, यह हाल कैसा। २५६०

लंका की सागर की ही परिखा, विराध, पवनगति काग की आँख की पुतली, खर, खोखली जड़ के सत्त्वहीन सात सालवृक्ष और वाली —इनके ही विषय में मेरा वल कारगर रहा ! यह क्या हाल है ? । २५९०

इरुन्दे नाता लिन्दिर शित्ते मुदलाय
पॅरुन्दे रारैक् कॉन्ऱु पिळैक्कप् पॅऱुवेनो
वरुन्दे नीये वॅल्लुदि यॅन्नुम् वलिकॉण्डेन्
पॉरुन्दे नातिप् पॉय्प्पिऱ विक्कुम् बॉऱैयल्लेन् 2591

वरुन्तेन्–(यत्न) कष्ट नहीं करूँगा; नीये वॅल्लुति–तुम्हीं जीतोगे (रावणि को); ॲन्नुम् वलि कॉण्टेन्–यह कहने का जो साहस करता था; इरुन्तेन् आताल्–वह मैं इधर रहता तो; इन्तिरचित्ते मुतल् आय–इन्द्रजित् आदि; पॅरु तेरारै–महारथियों को; कॉन्ऱु–मारकर; पिळैक्क पॅऱुवेनो–बच सकता क्या; नान् पॉरुन्तेन्–मैं (तुम्हारा सहोदर होने) योग्य नहीं हूँ; इति–अब; पॉय् पिऱविक्कुम्–वृथा जन्म का; पॉऱै अल्लेन्–भार ढोने भी योग्य नहीं। २५६१

'मैं कष्ट न करूँगा, तुम्हीं जीतोगे (इन्द्रजित्) को' यह कहने का धैर्य मुझमें रहा। ऐसा मैं यही रहता तो इन्द्रजित् आदि महारथियों को मारकर बचता क्या ? मैं तुम्हारा सहोदर होने योग्य ही नहीं ! यह सारहीन जीवन ढोने की शक्ति भी नहीं रखता। (सब तरह से असमर्थ साबित हो गया हूँ।) । २५९१

मादा वुम्नञ् जुऱ्ऱमु नाडु मऱैयोरुम्
एदा नारो वॅन्ऱु तळर्न्दे यिरुवारैत्
तादाय् काणच् चाल निऱैन्देन् ऱळर्हिन्ऱेन्
पोदा यैया पॉन्मुडि यॅन्नैप् पुऩैविप्पान् 2592

मातावुम्–माता और; नम् चुऱ्ऱमुम्–हमारे रिश्तेदार; नाटुम्–और हमारे देशवासी; मऱैयोरुम्–ब्राह्मण लोग; एतानारो–क्या हो गये; ॲन्ऱु तळर्न्तु–ऐसा

सोचकर शिथिल पड़कर; इरुवारै–जो क्षीण होंगे उनको; ताताय्–तात; काण–देखने की इच्छा; चाल निन्नैन्तेन्–खूब की; तळर्किन्ऱेन्–घुलता हूँ; ऐया–बाबा; ॲन्नै–मुझे; पोन् मुटि पुनैविप्पान्–स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए; पोताय्–उठ आओ। २५९२

हे तात ! मैं बहुत चाहता था कि जाऊँ और माताओं, बन्धु-बान्धवों और ब्राह्मणों को, जो मेरी स्थिति के सम्बन्ध में संशय करते हुए मलिन होते होंगे, देखूँ। मैं इसी विचार से निर्बल होता रहता हूँ। तात ! उठो ! मुझे स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए ही सही आओ। २५९२

पाशमु मुऱ्ऱच् चुऱ्ऱिय पोदुम् बहैयाले
नाशमु ऱ्ऱिप् पोदु नडन्दे नुडनल्लेन्
नेशमु मऱ्ऱार् शॅय्वन शॅय्दे निलैनिन्ऱेन्
तेशमु मुऱ्ऱॆन् कॊऱ्ऱ नलत्तैच् चिरियारो 2593

पाचमुम्–नागपाश; मुऱ्ऱ चुऱ्ऱिय पोतुम्–जब पूर्ण रूप से लिपटा रहा तब भी; पकैयाले–शत्रु द्वारा; नाचम् उऱ्ऱु–नाश को प्राप्त होने के; इप्पोतु–इस समय में भी; उटन् अल्लेन्–साथ नहीं रहा; नटन्तेन्–दूर चला गया; नेचमुम् अऱ्ऱार्–स्नेहहीन; चॅय्वन–जो करेंगे वही; चॅय्ते–करके; निलै निन्ऱेन्–अचल रहता हूँ; तेचमुम्–देशवासी; उऱ्ऱु–लगकर; ॲन् कॊऱ्ऱम् नलत्तै–मेरी विजय की श्रेष्ठता को; चिरियारो–हँसी नहीं उड़ायेंगे क्या। २५९३

मैं तब भी तुम्हारे पास नहीं रहा, जब नागपाश तुम पर लिपट गया था। मैं अबकी बार भी न रहा, जब शत्रु के हाथ तुम्हारा मरण हो गया। दोनों बार दूर चला गया था। स्नेहहीन का-सा काम करके अचल रहता हूँ। देशवासी क्या, युक्त ही रीति से, मेरी विजयश्रेष्ठता की हँसी नहीं करेंगे ?। २५९३

कॊडुत्ते नन्ऱे वीडण नुक्कुक् कुलमाळ
मुडित्तोर् शॅल्व मियान्मुडि यादे मुडिहिन्ऱेन्
पडित्ते नॅन्ऱे पॊय्म्मै कुडिक्कुप् पळिपॆऱ्ऱेन्
ऑडित्ते नन्ऱे यॆन्बुहळ् नाने युणर्वऱ्ऱेन् 2594

वीटणनुक्कु–विभीषण को; कुलम् आळ–कुल का शासन करने हेतु; मुटित्तु–मुकुट पहनाकर; ओर् चॅल्वम् कॊटुत्तेन्–एक सम्पत्ति दिलायी मैंने; अन्ऱे–दिया न; मुटियाते–उसको सम्पन्न किये विना; यान् मुटिकिन्ऱेन्–मरनेवाला हूँ; पॊय्म्मै पटित्तेन्–असत्य सीख लिया; ॲन्ऱे–ऐसा ही; कुटिक्कु–(इक्ष्वाकु) वंश को; पळि पॆऱ्ऱेन्–कलंक दिला दिया; उणर्वु अऱ्ऱेन्–बुद्धिहीन हूँ; ॲन् पुकळ्–अपने यश को; नाने ऑटित्तेन्–मैंने स्वयं तोड़ (नष्ट कर) दिया। २५९४

मैंने विभीषण को राक्षसकुलाधिपत्य देकर किरीट पहनाया।

पहनाकर राज्यश्री दिलायी न ! अब उसे पूरा किये विना ही मैं अंत होने वाला हूँ। असत्यवादी बनकर इक्ष्वाकुकुल पर कलंक सम्पादित कर लगवा दिया। दुर्बुद्धि मैंने अपना यश स्वयं ही नष्ट कर लिया। २५९४

ऍऩ्ऱॆऩ् ऱेङ्गा विम्मु मुयिर्क्कु मिडैय:(ह्)कच्
चॆऩ्ऱोऩ् ऱॊऩ्ऱो डिऩ्दिय मॆल्लाञ् जिऱैयॆय्दप्
पॊऩ्ऱुम् मॆऩ्ऩुऩ् दम्बियै मार्वत् तॊडुपुल्लि
ऑऩ्ऱुम् बेशाऩ् ऱऩ्ऩै मऱन्दाऩ् तुयिल्वुऱ्ऱाऩ् 2595

ऍऩ्ऱॆऩ्ऱु–ऐसा-ऐसा; एङ्का–विलाप करके; विम्मुम्–सिसकते; उयिर्क्कुम्–लम्बी आहें छोड़ते; इटै–बीच में; अ:कि चॆऩ्ऱु–क्षीण पड़कर; ऑऩ्ऱोटु–एक इन्द्रिय (मन) के साथ; इन्तियम् ऍल्लाम्–सारी इन्द्रियाँ; ऑऩ्ऱु–मिलतीं और; चिऱै ऍय्त–बद्ध हो जातीं और; पॊऩ्ऱुम् ऍऩ्ऩुम्–मृतक बने; तम्पियै–लघु सहोदर को; मार्वत्तॊटु पुल्लि–छाती से लगाकर; ऑऩ्ऱुम् पेचाऩ्–कुछ नहीं बोलते; तऩ्ऩै मऱन्ताऩ्–अपने को भूल जाते और; तुयिल्वुऱ्ऱाऩ्–निद्रामग्न हो गये। २५९५

ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए श्रीराम सिसके; रोये। लम्बी आहें भरीं। क्षीण हुए। उनकी सारी इन्द्रियाँ मन के साथ निष्क्रिय हुईं। और वे मृतक-से पड़े रहे छोटे भाई को गले से लगा लेते हुए अवाक् होकर निद्रामग्न हो गये। २५९५

कण्डार् विण्णोर् कण्गळ् पुडैत्तार् कलुऴिहिऩ्ऱार्
कॊण्डार् तुऩ्ब मॆऩ्मुडि वॆऩ्ऩक् कुलैहिऩ्ऱार्
अण्डा वैया वॆङ्गळ् पॊरुट्टा लयर्हिऩ्ऱाय्
उण्डो वुऩ्बाऱ् ऱुऩ्बॆऩ वऩ्बा लुरैशॆय्दार् 2596

विण्णोर्–देवों ने; कण्टार्–देखा; कण्कळ् पुटैत्तार्–आँखें पीट लीं; कलुऴकिऩ्ऱार्–रोये; तुऩ्पम् कॊण्टार्–दुःखी हुए; मुटिवु ऍऩ्ऩ–परिणाम क्या होगा; ऍऩ्–कहकर; कुलैकिऩ्ऱार्–अधीर होते हैं; अण्टा–देव; ऐया–प्रभु; ऍङ्कळ् पॊरुट्टाल्–हमारे वास्ते; अयर्किऩ्ऱाय्–कष्ट उठाते हैं; उऩ् पाल् तुऩ्पु उण्टो–आपके पास दुःख भी भटकेगा क्या; ऍऩ्ऩ–ऐसा; अऩ्पाल्–भक्ति के कारण; उरै चॆय्तार्–कहा। २५९६

देवों ने यह देखा तो आँखें पीट लीं और रोये। दुःखी हुए और परिणाम के सम्बन्ध में संशय करते हुए काँप उठे। वे भक्ति के साथ बोले कि अंडनायक ! हमारे वास्ते आप दुःख सह रहे हैं। नहीं तो आपके पास दुःख भटक भी सकता है क्या ? । २५९६

उऩ्ऩै युळ्ळ पडियऱियो मुलह मुळ्ळ तिऱमुळ्ळोम्
बिऩ्ऩै यऱियो मुऩ्ऩऱियो मिडैयु मऱियोम् पिऱऴामल्

निन्नै वणङ्गि नीवहुत्त नॅरियि निऱ्कु मदुवल्लाल्
ॲन्नै यडियेम् जॅयऱ्पाल विन्ब दुन्ब मिल्लोने 2597

इन्प तुन्पम् इल्लोने–सुख-दुःख-विमुक्त; उन्नै उळ्ळपटि अऱियोम्–आपको यथार्थ से नहीं जानते; उलकम्–लोक; उळ्ळ तिऱम्–जैसे (आपके अन्दर) रहते हैं, वह प्रकार; उळ्ळोम–न जानते; पिन्नै अऱियोम्–आगे का नहीं जानते; मुन्नु अऱियोम्–पीछे का नहीं जानते; इटैयुम् अऱियोम्–मध्य भी मालूम नहीं; पिऱळामल्–क्रम भंग किये बगैर; अऱियोम्–बातें नहीं जानते; निन्नै वणङ्कि–आपकी पूजा करके; नी वकुत्त नॅऱियिन्–आपके निर्दिष्ट मार्ग में; निऱ्कुम् अतु अल्लाल्–रहने की वह बात छोड़कर; अटियेम् चॅयऱ्पाल–हम दासों के कृत्य; ॲन्नै–क्या हैं। २५९७

(देव आगे बोले :) हे सुख-दुःख-रहित ! हम आप की यथार्थ स्थिति नहीं जानते। लोकस्थिति भी न जानते। न आगे की बात जानते, न पीछे की, न मध्य की ही। यथाक्रम बातें जानना भी हमें आता नहीं ! आपकी स्तुति करें, और आपके निर्दिष्ट मार्ग पर स्थित हों, इसके सिवा हमारा कृत्य क्या होगा ? । २५९७

अरक्कर् कुलत्तै वेरऱुत्तॅम् मल्ल नीक्कि यरुळायॅन्
ऱिरक्क वॅम्मेऱ् करुणैयिना लिशैया वुरुव मिवैयॅय्दिप्
पुरक्कु मन्नर् कुडिप्पिऱन्दु पोन्दा यऱत्तैप् पॉऱैतीर्प्पान्
करक्क निन्ऱे नॅडुमाय मॅमक्कुङ् गाट्टक् कडवायो 2598

अरक्कर् कुलत्तै–राक्षसकुल को; वेरऱुत्तु–मूल से काटकर; ॲम् अल्लल् नीक्कि–हमारे कष्ट को दूर करके; अरुळाय्–कृपा दरसाएँ; ॲन्ऱु–कहकर; इरक्क–हमने याचना की तो; ॲम् मेल्–हम पर; करुणैयिनाल्–करुणा से; इचैया उरुवम् इवै–अयोग्य ये रूप; ॲय्ति–लेकर; पुरक्कुम् मन्नर्–देशपालक राजा के; कुटि पिऱन्तु–गृह में जन्म लेकर; पोन्ताय्–प्रकट होनेवाले; अऱत्तै पॉऱै तीर्प्पान्–धर्म का भार दूर करने; करक्क निन्ऱे–छिपे ही रहकर; मायम्–जो माया रचते हैं उसको; ॲमक्कुम्–हमें भी; काट्ट कटवायो–नहीं दरसा सकोगे क्या। २५९८

हमने प्रार्थना की थी कि राक्षसकुल को निर्मूल करें और हमारा संकट हरके हम पर दया बरतें। हम पर कृपा करके आपने अपने लिए बिलकुल न सोहनेवाला रूप धर लिया। लोकपालक राजकुल में अवतरित हे देव ! धर्मदेवता का संकट-भार हटाने के लिए छिपे रहते हैं। क्या उसी रूप में आप अपनी माया का रहस्य हमें नहीं दरसाएँगे। २५९८

ईन्ऱॅम् मिडुक्कण् डडैत्तळिप्पा निऱङ्गि यरश रिऱ्पिऱन्दाय्
मून्ऱा मुलहन् दुयर्दीर्त्ति यॅन्नु माशै मुयल्हिन्ऱोम्
एन्ऱु मरन्दो मवनल्लन् मनिद नॅन्ऱे यिदुमायम्
पोन्ऱ दिल्लै याळुडैयाय् पॉय्युम् बुहलप् पुक्कायो 2599

ईन्ऱ ॲम्–आपसे सृष्ट हमारे; इडुक्कण् तुटैत्तु–संकट पोंछकर; अळिप्पान् इरक्कि–पालने की दया के भाव लेकर; अरचर् इल् पिऱन्ताय्–हे राजगृह में अवतरित; मून्ऱाम् उलकम्–त्रिविध लोकों का; तुयर् तीर्त्ति–दुःख दूर करेंगे; ॲन्नुम् आचै–इस आशा से; मुयल्किन्ऱोम्–यत्नशील हैं; एन्ऱु–आपकी स्थिति को सच्चा मानकर; अवन् अल्लन्–वे (परमपुरुष) नहीं; मनितन्–मानव ही; ॲन्ऱु–मानकर; मऱन्तोम्–(आपका यथार्थ) भूल गये; इतु मायै पोन्ऱतु–ऐसी माया का-सा कार्य दूसरा; इल्लै–नहीं; आळ् उटैयाय्–हम दासों के मालिक; पोय्युम्–असत्य भी; पुकल–कहने; पुक्कायो–लगे क्या। २५९९

आपके सृष्ट हमारे संकट दूर करके हमारी रक्षा करने के निमित्त दया से राजकुल में अवतरित, हे देव ! त्रिलोक का संकट भी दूर करेंगे, इस आशा में हम यत्नवान हैं। आपकी अब की स्थिति को सच्चा मानकर हम आपके यथार्थ परत्व को भूल गये। ऐसी माया भी कहीं होती है ? हे हमारा दासत्व ग्रहण करनेवाले हमारे स्वामी ! आप असत्य-वादन भी आरम्भ कर चुके क्या ? । २५९९

अण्डम् पलवु मनैत्तुयिरु महत्तुम् बुऱत्तु मुळवाक्कि
उण्डु मुमिऴ्न्दु मळन्दिडन्दु मुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळैयाहिक्
कॊण्डु शिलम्बि तन्वायिऱ् कूऱ्नूलियैयक् कूडियऱ्ऱिप्
पण्डु मिन्ऱु मम्मैक्किन्ऱ पडियै यॊरुवाय् परमेट्टि 2600

परमेट्टि–परमेष्ठि; अण्टम् पलवुम्–अनेक अण्ड; अनैत्तुयिरुम्–सभी जीव; उण्टुम्–निगलकर; उमिऴ्न्तुम्–उगलकर; अकत्तुम् पुऱत्तुम् उळ आक्कि–अन्दर और बाहर के बनाकर; अळन्तुम् इटन्तुम्–मापकर और भाग बनाकर; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–भीतर और बाहर; उळैयाकि–रहनेवाले बने; चिलम्पि–मकड़ा; तन् वायिल्–अपने मुख में; कूर् नूल् इयैय–महीन सूत्र के निकलते; कॊण्टु–उससे; कूटु इयऱ्ऱि–जाला बनाकर; पण्टुम्–पहले और; इन्ऱुम्–आज भी; अमैक्किन्ऱ पटियै–जो करता रहता है, उस प्रकार से; ऑरुवाय्–नहीं हटते। २६००

परमेष्टि ! आप सारे अंडों व सारे जीवों को निगलते और उगलते; उदरस्थ भी रखते और बाहर भी रखते। मापते और भाग करते ! भीतर भी रहते और बाहर भी रहते। जैसे मकड़ा अपने मुख के महीन सूत से जाला बुनता है, उसी प्रकार आप तब भी करते रहे और अब भी करते रहते हैं। उसे आप छोड़ेंगे नहीं ! । २६००

तुन्ब विळैयाट्टिडुवेयु मुन्नैत् तुन्बन् दोंडर्विन्मै
इन्ब विळैयाट्टामॆनित्तु मऱियादेमुक् किडरुऱ्ऱाल्
अन्बु विळैयु मरुळ्विळैयु मऱिवु विळैयु मवैयॆल्लाम्
मुन्बु पिन्बु नडुविल्लाय् मुडित्ता लन्ऱि मुडियावे 2601

मुन्पु पिन्पु नटु इल्लाय्–आद्यन्तमध्य-हीन; उन्नै–आपको; तुन्पम् तॊटर्पु

इन्मै–दुःख नहीं लगता इसलिए; इतु तुन्प विळैयाट्टाम्–यह दुःख का खेल भी; इन्प विळैयाट्टाम्–सुख का खेल ही है; ॲतिनुम्–तो भी; अरियातेमुक्कु–जो नहीं जानते उन हमारे लिए; इटर् उऱ्ऱाल्–आप पर संकट आये तो; अन्पु विळैयुम्–प्रेम होगा; अरुळ् विळैयुम्–कृपा होगी; अऱिवु विळैयुम्–ज्ञान होगा; अवै ॲल्लाम्–वे सभी; मुटित्ताल् अन्ऱि–आप न हटाएँ तो; मुटियावे–न हटेंगे। २६०१

आदि-मध्य-अन्त-रहित ! आपको दुःख छू नहीं सकता। अतः यह दुःख की लीला रचते हैं, क्योंकि यह सुख की लीला है ! तो भी हम अज्ञ हैं। अतः प्रेम, करुणा, दया आदि लेकर हम दुःखी होते हैं। आप उसका अंत करें तभी दुःख का अन्त हो। २६०१

वरुवाय्पोल वारादाय् वन्दा यॅन्ऱु मनङ् गळिप्प
बॅरुवा दिरुन्दो नीयिडॅंये तुन्बम् विळैक्क मॅलिहिन्ऱोम्
करुवा यळिक्कुम् कळैकण्णे नीये यिदनैक् कळैयायेल्
तिरुवाळ् मार्ब निन्मायै यॅम्माऱ् ऱीर्क्कत् तीरुमो 2602

वरुवाय् पोल–गोचर होनेवाले के समान; वारातय्–पर न होनेवाले; वन्ताय्–अवतरित हुए (दुष्ट-निग्रह शिष्ट-परिपालनार्थ); ॲन्ऱु–सोचकर; मनम् कळिप्प–मन में आनन्द के साथ; वॅरुवातु इरुन्तोम्–निडर रहे; तुन्पम् विळैक्क–दुःख होने पर; मॅलिकिन्ऱोम्–क्षीण होते हैं; करुवाय्–गर्भवासी होकर; अळिक्कुम्–हमारे रक्षक बने; कळैकण्णे–हमारे आश्रय; नीये–आप ही; इतनै कळैयायेल्–इस संकट को दूर न करें तो; तिरुवाळ् मार्प–श्रीनिवासवक्ष; निन् मायै–आपकी माया; ॲम्माल् तीर्क्क–हमसे हटाए; तीरुमो–दूर होगी क्या। २६०२

हे गोचर-अगोचर ! हमारे वास्ते आपने अवतार लिया है—उसी विचार में हम भयरहित हो खुश रहे। आप दुःख में पड़ते है तो हम निर्बल हो जाते हैं। गर्भवास करके हमारा संकट हरनेवाले हे हमारे आश्रय ! हे श्रीवक्ष ! अगर आप यह दुःख दूर नहीं करेंगे तो हमसे निवारे निवारण हो सकता है क्या ?। २६०२

अम्ब रीडऱ् करुळियदु मयन्नार् महन्नुक् कळित्तदुवुम्
ॲम्बि रान्ने यॅमक्किन्ऱु पयन्दा यॅन्ऱे येमुऱ्ऱोम्
वॅम्बु तुयर नीयुळक्क वॅळिका णादु मॅलिहिन्ऱोम्
तम्बि तुणैवा नीयिदनैत् तविर्त्तॅम् मुणर्वैत् तारायो 2603

ॲम्पिरान्ने–हमारे प्रभु; अम्परीटऱ्कु अरुळियतुम्–अम्बरीष पर कृपा जो की; अयतार् मकन्नुक्कु–अजसुत रुद्र को; अरुळियतुम्–जो कृपा-दान किया वह; ॲमक्कु–हमें; इन्ऱु–आज; पयन्ताय्–दिया; ॲन्ऱे–उसी विचार से; एमुऱ्ऱोम्–आपके रक्षण की प्रतीक्षा में सुरक्षित है; वॅम्पु तुयरम्–सन्ताप देनेवाले दुःख से; नी उळक्क–आप संकट उठावें; वॅळि काणातु–छूटने का उपाय न जानकर; मॅलिकिन्ऱोम्–क्षीण हो रहे हैं; तम्पि तुणैवा–लघु सहोदर के साथी; इतनै तविर्त्तु–यह दुःख दूर करके; ॲम् उणर्वै–हमें बुद्धि को; तारायो–नहीं देंगे क्या। २६०३

हमारे प्रभु ! "आपने जैसे अंबरीष पर कृपा की, ब्रह्मा-पुत्र रुद्र का उपकार किया, वैसे ही हम पर दया दिखाएँगे" —यही सोचकर हम आपके रक्षण की आशा लिये रहते हैं। पर आपको दुःख में मग्न देखकर कोई उपाय न देखकर हाथ मले रह जाते हैं। सहोदर के उपकारी साथी! यह संकट दूर कीजिए। [राजा अंबरीष एकादशी के दिन अनशन व्रत रखते थे और द्वादशी के दिन भोजन करके उसका पारायण करने का नियम पालते थे। एक द्वादशी के सवेरे दुर्वासा आये और स्नान आदि करके लौटने की बात कहकर जलाशय में चले गये। उनको समय पर आता न देख राजा ने भगवान का चरणामृत भोग कर व्रतभंग होने से अपने को बचा लिया। तो भी भोजन नहीं किया। फिर भी दुर्वासा ने गुस्सा करके अपने बल से एक भूत को पैदा करके राजा पर भेजा। तब श्रीविष्णु का चक्र आकर मुनि को भगाने लगा। दुर्वासा आखिर श्रीविष्णु की शरण आये तभी जाकर वे बच सके। रुद्र के बचने की कहानी भस्मासुर-वध की कहानी है। भस्मासुर ने शिवजी से यह वर प्राप्त कर लिया कि वह जिस किसी के भी सिर पर हाथ रखे तो वह भस्म हो जाय। उसने शिवजी के ही सिर पर हाथ रखकर वर की शक्ति की परीक्षा लेना चाहा। शिव डर से भागे। श्रीविष्णु मोहनी के रूप में असुर के सामने आये और काम-मुग्ध उससे उसके सिर पर स्वयं हाथ रखवा दिया। वह भस्म हो गया। शिवजी बचे। पर उनका मोहनी पर प्रेम हो गया। उस प्रेम के फल-स्वरूप जो पुत्र पैदा हुआ वही दक्षिण में शास्ता या हरिहरपुत्र या अय्यनार् के रूप में पूजा जाता है। 'शबरीमलै' (दक्षिण में एक पर्वत) पर जो शास्ता का मन्दिर है वह अतिविख्यात है और लाखों लोग हर साल वहाँ निश्चित दिन (अर्थात् मकरसंक्रांति के दिन) आकर दर्शन कर जीवन सार्थक बना लेते हैं। मन्दिर में जाने के पहले कठिन उपवास और अन्य व्रतों का पालन करना पड़ता है। रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता है और जंगली रास्ता बड़ा भयानक होता है। भक्ति की महिमा है लोग सकुशल यात्रा तथा दर्शन सम्पन्न कर लेते हैं।]। २६०३

ऍन्व पलवु ऍडुत्तियम्बि यिमैया दोरुमिड रुळन्दार्
अन्बु मिहुदि यालैय ताबि युळ्ळे यडङ्गिनान्
तुन्ब मनिदर् करुमसे पुणर मुन्बु तुणिन्दमैयार्
पुन्ग णिरुदर् पॅरुन्दूदर् पोता ररक्क लिडम्बुक्कार् 2604

ऍन्प–ऐसे; पलवुम्–अनेक; ऍडुत्तु इयम्पि–ले कहकर; इमैयोरुम्–देव भी; इटर् उळन्तार्–दुःखपीड़ित हुए; तुन्पम् मतितर्–दुःखपात्र मानव का; तोळिले–चरित्र ही; पुणर–मिला रहे ऐसा; मुन्पु–(अवतार लेने से) पहले ही; तुणिन्तमैयाल्–संकल्प कर लेने से; अन्पु मिकुतियाल्–वात्सल्याधिक्य से; ऐयन्–प्रभु

ने; आवि उळ्ळे अटङ्कितान्–प्राण अन्दर खींच लिये; पुन् कण् निरुतर्–क्षुद्र-स्वभाव राक्षस के; पॅरु तूतर्–बड़े दूत; पोनार्–गये; अरक्कतिटम् पुक्कार्–राक्षस (रावण) के पास पहुँचे। २६०४

देवों ने दुःखपीड़ित होकर ऐसी बहुत सी बातें कहीं। श्रीराम तो जान-बूझकर ही दुःखालय मानव का अवतार लिया था। इसलिए वात्सल्य-अतिरेक से उन्होंने अपने प्राणों को अन्दर खींच लिया था। यह देखकर क्षुद्र राक्षसकुल के बड़े दूत रावण के पास गये। २६०४

अँन्वन् ददुनी रॅन्ऱरक्करक्क् किऱैव नियम्ब वॅरिशॅरुविल्
निन्मैन् दन्ऱन् नॅडुञ्जरत्ताऱ् ऱुणैव रॅल्ला निलञ्जेरप्
पिन्वन् दवन् मुयिरिऴन्द पिऴैयै नोक्किप् पॅरुन्दुयराल्
मुन्वन् दवनु मुडिन्दानुन् पहैपोय् मुडिन्द दॅन्ऱमॊऴिन्दार् 2605

अरक्करक्कु इऱैवन्–राक्षसराज के; नीर् वन्ततु–तुम्हारा आना; अँन्–क्या (लेकर); अँन्ऱु इयम्प–ऐसा पूछने पर; अॅरि वॅरुविल्–(परस्पर) टकराने के युद्ध में; नित् मैन्तन् तन्–तुम्हारे पुत्र के; नॅटु चरत्ताल्–बड़े बाण से; तुणैवर् अॅल्लाम् निलम् चेर–मित्रों के धराशायी होने पर; पिन् वन्तवतुम्–और अनुज के भी; उयिर् इऴन्त–प्राण खोने का; पिऴैयै नोक्कि–बुरा कार्य देख; पॅरु तुयराल्–गम्भीर दुःख से; मुन् वन्तवतुम्–अग्रज (श्रीराम) भी; मुडिन्तान्–अन्त हो गया; उन् पकै–आपका शत्रुत्व; पोय् मुटिन्ततु–आखिर चलकर ख़त्म हो गया; अँन्ऱ मॊऴिन्तार्–ऐसा कहा। २६०५

राक्षसराज ने उनके आने का कारण पूछा तो वे बोले, "आपसी आक्रमण के युद्ध में आपके पुत्र इन्द्रजित् के बड़े शरों के लगने से राम के सभी मित्र भूशायी हो गये। राम का अनुज भी प्राणहीन हो गया। यह आफ़त देखकर उसके अग्रज ने भी दुःख से अभिभूत होकर प्राण छोड़ दिये। अब आपके शत्रु का अन्त हो गया।"। २६०५

22. पिराट्टि कळङ्गाण् पडलम् (देवी-युद्धस्थल-दर्शन पटल)

पॊय्यार् तूद रॅन्ऱबदनाऱ् पॊङ्गि यॅऴुन्द वुवहैयिनान्
मॆय्यार् निदियम् पॅरुवॆरुक्के वॅरुक्क वीशि विळैन्दपडि
कैयार् वरैमेल् मुरशेऱ्ऱिच् चाऱ्ऱि नहरङ् गळिशिऱप्प
नॆय्या राडल् कॊळ्हॆन्ऱु निहऴ्त्तु हॆन्ऱा नॆऱियिल्लान् 2606

नॅरि इल्लात्–सन्मार्ग-रहित रावण; तूतर् पॊय्यार्–दूत असत्य नहीं कहेंगे, ऐसा; अँन्ऱपततार्–होने से; पॊङ्कि अॅऴुन्त–जो उमंग उठा उस; उवकैयितान्–आनन्द के साथ; मॅय् आर्–(शंख, पद्म आदि रूप में) एकत्रित; पॅरु वॅरुक्कै नितियम्–बहुत बड़ी निधि को; वॅरुक्क–(दान लेनेवाले) ऊब जाएँ इतना; वीचि–लुटाकर; विळैन्त पटि–जैसा (युद्ध का हाल) हुआ वैसा; कै आर्–सूँड़-सहित;

वरै मेल्-पर्वत (गज) पर; मुरचु एऱ्ऱि-नगाड़ा चढ़ाकर; चाऱ्ऱि-घोषणा करके; नकरम्-नगर; कळि चिऱप्प-आनन्द में पगकर; नॅय्यार् आटल्-घी मलकर स्नान; कॉळ्क-करे; ऍन्ऱु-ऐसा; निकऴ्त्तुक-मुनादी करा दो; ऍन्ऱान्-आज्ञा सुनायी। २६०६

कुमार्गी रावण का विश्वास था कि दूत झूठ नहीं बोले। उसका आनन्द उमग आया। उसने बहुत बड़ी निधि दान में लुटाई कि स्वयं दान लेनेवाले अघा गये। फिर उसने आज्ञा दिलायी कि हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और युद्ध में हुई बात की घोषणा कर दो। साथ-साथ यह भी मुनादी पिटवा दो कि लंकानगर-वासी घी मलकर स्नान करके आनंद मनाएँ और वढ़ा लें। २६०६

अन्द नॅऱियै यवर्शॅय्य वरक्कन् मरुत्तन् ऱत्तैक्कूवि
मुन्द नीपो यरक्करुडल् मुऴ्दुङ् गडलिल् मुडक्किडुनिन्
शिन्दै यॉऴियप् पिऱररिियिऱ् चिरमुम् वरमुञ् जिन्दुवॅन्ऩ्
ऱुन्द ववन्बो यरक्करुडल् मुऴ्दुङ् गडलि नुळ्ळिट्टान् 2607

अन्त नॅऱियै-वह काम; अवर् चॅय्य-उन्होंने (भृत्यों ने) किया तब; अरक्कन्-रावण; मरुत्तन् तत्तै कूवि-मरुत को बुलाकर; मुन्त नी पोय्-पहले तुम जाकर; अरक्कर् उटल् मुऴुतुम्-सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिल् मुटुक्किटु-समुद्र में डाल दो; निन् चिन्तै ऑऴिय-तुम्हारे अपने मन के सिवा; पिऱर् अऱियिल्-दूसरे जान लें तो; चिरमुम्-तुम्हारा सिर और; वरमुम्-वर (सुविधाएँ); चिन्तुवॅन्-हर लूँगा; ऍन्ऱु-कहकर; उन्त-भेज दिया तो; अवन्-उसने; पोय्-जाकर; अरक्कर् उटल् मुऴुतुम्-सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिन् उळ्-समुद्र के अन्दर; इट्टान्-डाल दिया। २६०७

मुनादी पीटनेवाले वह काम करने चले गये। रावण ने मरुत को बुला भेजा और उससे कहा कि तुरंत जाओ और सारे राक्षसों के शरीरों को समुद्र में डुवो दो। यह वात केवल तुम्हारा मन जाने; और कोई जान पाया तो समझ लो कि मैं तुम्हारा सिर और वर (दी गयी सुविधाएँ) हरण कर लूँगा। मरुत ने वैसे ही सारी राक्षस-लाशों को समुद्र में डाल दिया। २६०७

तॅय्व विमानत् तिडैयेऱ्ऱि मनितत्तरक् कुऱ्ऱ शॅयलॅल्लान्
तैयल् काणक् काट्टुमित्गळ् कण्डा लन्ऱित् तन्नुळ्ळत्
तैय नीङ्गा ळॅन्ऱुरैक्क वरक्कर् महळि रिरैत्तोण्डि
उय्यु मुणर्वु नीत्ताळै नॅडुम्बोर्क् कळत्तिन् मिशैयुय्त्तार् 2608

तॅय्व विमानत्तु इटै एऱ्ऱि-दिव्य (पुष्पक) यान पर चढ़ाकर; मनितर्क्कु-नरों पर; उऱ्ऱ चॅयल् ऍल्लाम्-जो बीता वह कृत्य सब; तैयल् काण-स्त्री (देवी) देख ले; काट्टु मित्कळ्-दिखा दो; कण्टाल् अन्ऱि-देखे विना; तन् उळ्ळत्तु ऐयम्-अपने

मन का संदेह; नीङ्काळ्–दूर नहीं करेगी; अॅन्ऱु उरैक्क–ऐसा करने पर; अरक्कर् मकळिर्–राक्षस-स्त्रियाँ; इरैत्तु ईण्टि–हो-हल्ला मचाती हुई जमा होकर; उय्युम्–हम बचीं; उणर्वु नीत्ताळै–यह सुध जो खोकर रहती है; नॅंटु पोर्क्कळत्तिन् मिचै–विशाल युद्धमैदान में; उय्त्तार्–पहुँचाया। २६०८

(फिर रावण ने सीता के पास जो पहरे पर बैठी थीं, उनको आज्ञा सुनायी—) दिव्य पुष्पक यान पर सीता को बैठाकर युद्धक्षेत्र में ले जाओ और उसे दिखा दो कि नरों का क्या हाल हुआ है? वह अपनी आँखों नहीं देखे तो अपना संशय दूर नहीं कर सकेगी। यह सुनकर राक्षस-नारियाँ शोर मचाती हुई मिल आयीं और बचने की आशा छोड़ जो बैठी थी उन सीता जी को विशाल युद्धभूमि पर ले गयीं। २६०८

कण्डाळ् कण्णार् कणवत्तुरु वन्ऱि यॊन्ऱुङ् गाणादाळ्
उण्डाळ् विडत्तै यॆन्नवुडलु मुणर्वु मुयिर्प्पु मुडन्ओय्न्दाळ्
तण्डा मरैप्पू नॆरुप्पुऱ्ऱ तन्मै युऱ्ऱा डरियादाळ्
पॆण्डा नुऱ्ऱ बॆरुम्बीळै युलहुक् कॆल्लाम् बॆरिदन्ऱो 2609

कणवन् उरु अन्ऱि–पति के रूप के सिवा; ऑन्ऱुम् काणाळ्–और कोई न देखनेवाली सीतादेवी ने; कण्णाळ्–अपनी आँखों से; कण्टाळ्–देखा (श्रीराम को); तरियाताळ्–सह नहीं सकीं; विटत्तै उण्टाळ् ॲन्न–विष खाया हो ऐसा; उटलुम् उणर्वुम्–शरीर और मन तथा; उयिर्प्पुम्–श्वास को; उटन् ओय्न्ताळ्–एक साथ शिथिल पाकर; तण् तामरै पू–शीतल कमलपुष्प; नॅरुप्पु उऱ्ऱ तन्मै–आग से ग्रस्त हो ऐसी स्थिति; उऱ्ऱाळ्–पा गयीं; पॅण् उऱ्ऱ पॅरु पीळै–एक रमणी की वेदना; उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे लोक की आँखों में; पॅरितु अन्ऱो–बहुत बड़ा है न। २६०९

सीताजी श्रीराम के रूप के सिवा किसी भी रूप का ध्यान नहीं करती थीं। उन्होंने जब श्रीराम को बेहोशी की स्थिति में देखा तो वे सह नहीं सकीं। विष खा चुकी हों ऐसे उनकी सुध-बुध और श्वास-शक्ति सब चली गयीं। अग्नितप्त कमलपुष्प की-सी स्थिति में पड़ गयीं। स्त्री का दुःख! सारी दुनिया को वह बहुत बड़ा (असह्य) लगेगा न? । २६०९

मङ्गै यळुदाळ् वानाट्टु मयिल्ह ळळुदार् मळविडैयोन्
पङ्गि नुऱैयुङ् गुयिलळुदाळ् पदुमत् तिरुन्द मादळुदाळ्
गङ्गै यळुदा णामडन्दै यळुदाळ् कमलत् तडङ्गणणन्
तङ्गै यळुदा ळिरङ्गाद वरक्कि मारुन् दळर्न्दळुदार् 2610

मङ्कै अळुताळ्–देवी रोयीं; वान् नाट्टु–आकाशलोक की; मयिल्कळ्–मयूरनिभ स्त्रियाँ; अळुतार्–रोयीं; मळ विटैयोन्–तरुण-वृषभारूढ़ शिवजी के; पङ्किन् उऱैयुम्–(बायें) अंग में रहनेवाली; कुयिल् अळुताळ्–कोकिला (-सी भाषिणी) रोयीं; पतुमत्तु इरुन्त मातु–पद्मासनस्था (लक्ष्मी) देवी; अळुताळ्–

रोयीं; कङ्कै अऴुताळ्-गंगामाता रोयीं; नामटन्तै-वाणीदेवी; अऴुताळ्-रोयीं; कमलम् तट कण्णन-कमल-विशालाक्ष (श्रीविष्णु) की; तङ्कै अऴुताळ्-लघु सहोदरा (देवी दुर्गा) रोयीं; इरङ्कात अरक्कि मारुम्-निर्दय राक्षस-स्त्रियाँ भी; तळर्न्तु अऴुतार्-शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

सीताजी रोयीं तो आकाश-देश की कलापी-सी रमणियाँ रोयीं। तरुण ऋषभ पर सवार शिव के आधे अंग की रहनेवाली कोकिला-सी देवी पार्वती रोयीं। पद्मासनस्था श्रीदेवी रोयीं। भागीरथी गंगा माता रोयीं। वाग्देवी सरस्वती रोयीं। कमलपत्रविशाला श्रीविष्णु की भगिनी देवी दुर्गा रोयीं। निर्मम राक्षसियाँ शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

पॊऩ्ऱाळ् कुऴैया डऩैयीऩ्ऱ पूमा मडन्दै पुरिन्दऴुदाळ्
कुऩ्ऱा मऱैयुन् दरुममुमॆय् कुऴैन्दु कुऴैन्दु तळर्न्दऴुव
पिऩ्ऱा दुडऱ्ऱुम् बॆरुम्बाव मऴुद पिऩ्ऩॆन् बिऱर्चॆय्है
निऩ्ऱार् निऩ्ऱ पडियऴुदार् निऩैप्पु मुयिर्प्पु नीत्तिट्टाळ् 2611

पॊऩ् ताळ्-स्वर्णमय; कुऴैयाळ् तऩै-कुंडलधारिणी को; ईऩ्ऱ-जिसने जन्म दिया था वह; पू मा मटन्तै-भूदेवी; पुरिन्तु अऴुताळ्-समझकर रोयीं; कुऩ्ऱा मऱैयुम्-अक्षय वेद; तरुममुम्-और धर्मदेवता; मॆय् कुऴैन्तु कुऴैन्तु-शरीर लचका-लचकाकर; तळर्न्तु अऴुत-शिथिल पड़कर रोये; पिऩ्ऱातु-विना पिछड़े; उटऱ्ऱुम्-दुःख देनेवाला; पॆरुम् पावम् अऴुत-बड़ा पाप भी रोया; पिऱर् चॆय्कै-दूसरों का काम; पिऩ् ऎऩ्-फिर क्या कहा जाय; निऩ्ऱार्-जो जहाँ थे वे वहीं; निऩ्ऱपटि-खड़े-खड़े; अऴुतार्-रोये; निऩैप्पुम् उयिर्प्पुम्-स्मरण और श्वास लेना; नीत्तिट्टाळ्-देवी ने छोड़ा। २६११

स्वर्णकुण्डलधारिणी सीताजी की जननी, भूदेवी सहानुभूति करके रोयी। अक्षय वेद और धर्मदेवता जर्जर हो गये। अचूक रीति से संकट देनेवाला पाप भी रोया, तो अन्यों की बात क्या कही जाए? जो जहाँ रहे वे वहीं खड़े-खड़े रोने लगे। तब देवी की सुध-बुध तथा श्वास भी खो गया। २६११

निऩैप्पु मुयिर्प्पु नीत्ताळै नीराऱ् ऱॆळित्तु नॆडुम्बॊऴुदिऩ्
इऩत्ति ऩरक्कर् मडवार्ह ळॆडुत्ता रुयिर्वन् दॆङ्गिऩाळ्
कऩत्ति ऩिऱत्ताऩ् ऱऩैप्पॆयर्त्तुङ् गण्डाळ् कयलैक् कमलत्तार्
चिऩत्ति ऩलैप्पा ळॆऩक्कण्णैच् चिदैयक् कैयाऩ् मोदिऩाळ् 2612

अरक्कर् इऩत्तिऩ्-राक्षसकुल की; मटवार्कळ्-स्त्रियों ने; निऩैप्पुम् उयिर्प्पुम् नीत्ताळै-प्रज्ञा और श्वास जो त्याग चुकीं उन्हें; नीराल् तॆळित्तु-जल छिड़ककर; ऎटुत्तार्-सँभाल लिया; नॆटुम् पॊऴुतिऩ्-लम्बी देर के बाद; उयिर् वन्तु-होश में आकर; एङ्किऩाळ्-दुखने लगीं; कऩत्तिऩ् निऱत्ताऩ् तऩै-मेघश्याम को; पॆयर्त्तुम् कण्टाळ्-फिर से देखा; चिऩत्तिऩ्-कोप से; कयलै-कयल

मछली को; कमलत्ताळ्–कमल-पुष्प से; अलैप्पाळ् ॲन–पीटती जैसे; कण्णै–अपनी आँखों को; चितैय–बेहाल करते हुए; कैयाऌ–हाथों से; मोतित्ताळ्–पीटा। २६१२

राक्षसकुल की उन स्त्रियों ने मूर्च्छित सीतादेवी पर जल छिड़का। अपने हाथों पर उठाया। बहुत देर के बाद सीताजी जाग पड़ीं। फिर मेघश्याम को देखकर उन्होंने रुष्ट होकर कमल-पुष्प से कयल मछली को मारती-सी अपनी आँखों को बेहाल करते हुए अपने हाथों से पीट लिया। २६१२

अडित्ताण् मुलैमेल् वयिऱलैत्ता ळऴुदा डॊऴुदा ळनल्वीऴ्न्द
कॊडित्ता नॆन्न मॆय्पुरुण्डाळ् कॊदित्ताळ् पदैत्ताळ् कुलैवुऱ्ऱाळ्
तुडित्ताण् मिन्बो लुयिर्हरप्पच् चोर्न्दाळ् शुऴन्ऱा डुळ्ळिनाळ्
कुडित्ता डुयरै युयिरोडुङ् गुळैत्ता ळुळैत्ताळ् कुयिलन्नाळ् 2613

कुयिल् अन्नाळ्–कोयल-सी देवी ने; मुलै मेल् अटित्ताळ्–(स्तनों पर) छाती पीट ली; वयिऱु अलैत्ताळ्–पेट पीटा; अऴुताळ्–रोयीं; तॊऴुताळ्–नमस्कार किया; अनल् वीऴ्न्त–आग में पड़ी; कॊटितान् ॲन्न–लता-सी हो; मॆय् पुरुण्टाळ्–शुष्क शरीर हो गयीं; कॊतित्ताळ्–खौल उठीं; पतैत्ताळ्–बेचैन हुई; कुलैवु उऱ्ऱाळ्–विकृत हुई; मिन् पोल्–बिजली के समान; तुटित्ताळ्–छटपटायीं; उयिर् करप्प–श्वास छिप गये; चोर्न्ताळ्–निर्बल हुई; चुऴन्ऱाळ्–मन भ्रान्त हो गया; तुळ्ळिनाळ्–उछल पड़ीं; तुयरै कुटित्ताळ्–दुःख पी लिया; उयिरोटुम् कूट्टि कुळैत्ताळ्–प्राणों से (उस दुःख को) घोला; उळैत्ताळ्–अत्यन्त वेदना से ग्रस्त रहीं। २६१३

कोकिला-सी सीताजी ने अपनी छाती पीट ली। पेट पीट लिया। रोयीं। नमस्कार किया। आग में पड़ी लता के समान मुरझायीं। तप्त हुई। बेचैन हुई। जर्जर हुई। मछली के समान छटपटायीं। श्वास रुक-सा गया। लचक गयीं। उनका मन भ्रमित हुआ। वे उछलीं। उन्होंने दुःख पीकर और प्राणों से मिलाकर घोल दिया। इस भाँति वे बहुत दुःखी हुई। २६१३

विऴुन्दाळ् पुरण्डा ळुडत्मुऴुदुम् वियर्त्ता ळुयिर्त्ताळ् वॆदुम्बिनाळ्
ॲऴुन्दा ळिरुन्दाण् मलर्क्करत्तै नॆरित्ताळ् शिरित्ता ळॆङ्गिनाळ्
कॊऴुन्दा वॆन्ऱा ळयोत्तियर्दङ् गोवे यॆन्ऱा ळॆव्वुलहुन्
दॊऴुन्दा ळरशे योवॆन्ऱाळ् शोर्न्दा ळरऱ्ऱल् ऱॊडङ्गिनाळ् 2614

विऴुन्ताळ्–गिरीं; पुरण्टाळ्–लोटीं; उटल् मुऴुतुम्–सारे शरीर में; वियर्त्ताळ्–स्वेदित हुई; उयिर्त्ताळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; वॆतुम्पिनाळ्–तप्तमन हुई; ॲऴुन्तु इरुन्ताळ्–उठ बैठीं; मलर् करत्तै–कमल-हस्त को; नॆरित्ताळ्–चटकाया; चिरित्ताळ्–हँसीं; एङ्किनाळ्–तरसीं; कॊऴुन्ता–पति; ॲन्ऱाळ्–

कहकर बुलाया; अयोत्तियर् तम्–अयोध्यावासियों के; कोवे–राजा; ऍन्ड्राळ्–कहा; ऍंव् उलकुम् तॊळुम्–सर्वलोकवंद्य; ताळ् अरचेयो–चरणों वाले राजा; ऍन्ड्राळ्–बुलाया; अरट्र् तॊटङ्कित्ताळ्–विलाप करने लगीं। २६१४

देवी विमान में ही गिर गयीं। शरीर भर में स्वेदयुक्त हुईं। लम्बी आहें भरीं। तप्तचित्त हुईं। उठ बैठीं। कमलहस्त चटकाया। हँसीं। तरसीं। 'हे मेरे पति' कहकर बुलाया। "अयोध्याधिपति! सर्वलोकवंद्य-चरण प्रभु!" आदि संबोधन किये। जर्जर हुईं। फिर वे विलाप करने लगीं। २६१४

उड्मे वियहा दलुनक् कुडैयार्, पुड्मे दुमिला रॊडुपू णहिलाय्
मड्मे पुरिवार् वशमा यिनैयो, अड्मे कॊडिया यिदुवो वरुडान् 2615

अड्मे–धर्मदेवता; उनक्कु–तुम्हारे प्रति; उड् मेविय–खूब लगे; कातल्–प्रेम से; उटैयार्–युक्त; पुड्म्–अन्य; एतुम् इलारॊटु–किसी से कोई सम्बन्ध न रखनेवाले (मेरे पति) से; पूणकिलाय्–मित्रता न रखकर; मड्मे–पाप ही; पुरिवार्–करनेवाले; वचम् आयिनैयो–वश में हो चुके हो क्या; कॊटियोय्–निर्मम; अरुळ् तान् इतुवो–क्या यही कृपा है। २६१५

हे धर्मदेवता! तुम पर मेरे पति अपार प्रेम रखते थे और धर्मेतर बातों से उनका लगाव नही था। उनसे तुमने मित्रता नहीं रखी। क्या तुम पापियों के वश में आ गये? हे क्रूर! यही तुम्हारी करुणा है?। २६१५

मुदिया रुणर्वेद मॊळिन् दवलार्, कदिये तुमिलार् दुयर्का णुदियो
मदियेन् मदिये तुनैवाय् मैयिला, विदिये कॊडियाय् विळैया डुदियो 2616

वाय्मै इला–नेकी विना रहनेवाले; वितिये–विधिदेवता; मुतियार्–ज्ञानवृद्धों के; उणर् वेतम्–ज्ञात वेदों के; मॊळिन्त वलाल्–कहे प्रकार के सिवा; कति एतुम् इलार्–अन्य गति जिनकी नहीं; तुयर् काणुतियो–उनका दुःख देखना चाहते हो क्या; उनै मतियेन्–तुमको कुछ गिन नहीं सकूँगी; कॊटियाय्–क्रूर; विळैयाटुतियो–खेल है तुम्हारा क्या। २६१६

आर्जव-हीन विधि! ज्ञानवृद्धों द्वारा ज्ञेय वेदोक्त मार्ग को छोड़ हम इतर मार्ग पर जानेवाले नहीं हैं। ऐसे हमारा दुःख देखने की इच्छा करोगे क्या तुम! तुमको मैं कुछ नहीं मानती। हे क्रूर! तुम खिलवाड़ करते हो क्या?। २६१६

कॊडिये निवैकाण् गिलनॆन् नुयिर्होळ्, मुडिया नमने मुड़ैयो मुड़ैयो
विडिया विरुळ्वा यॆनैवी शिनैये, अडिये नुयिरे यरुणा यहने 2617

कॊटियेन्–मैं क्रूर हूँ; इवै–यह; काण्किलेन्–देख सह नहीं सकती; ऍन् उयिर् कोळ्–मेरे प्राण ले; मुटियात नमने–मेरा अन्त न करनेवाले, हे यम; मुड़ैयो–(उनका अन्त करना) क्रम है क्या; मुड़ैयो–क्रम है क्या; अटियेन् उयिरे–मेरे प्राण; अरुळ्

नायकते–दयामय नाथ; विटिया इरुळ्वाय्–अमिट अन्धकार में; ऍन्नै वीच्चित्तैयो–मुझे डाल दिया क्या । २६१७

मैं बड़ी क्रूर हूँ। मैं यह दृश्य सह नहीं सकती। मेरे प्राण न ले सकनेवाले यम! तुम्हारा यह (उनके प्राण-हरण का) काम क्रमसंगत है क्या? क्रमसंगत है? हे मेरे प्राण! करुणानाथ! क्या मुझे अमिट अन्धकार में आपने फेंक दिया है? । २६१७

ऍण्णा वुयिरो डुमिरुन् दद्रुनिन्, पुण्णा हियमेनि पोरुन् दिडवो
मण्णो रुयिरे यिमैयोर् वलिये, कण्णे यमुदे करुणा हरने 2618

मण्णोर् उयिरे–पृथ्वीवासियों के प्राण; इमैयोर् वलिये–देवों के बल; कण्णे–मेरी आँख; अमुते–अमृत; करुणा करने–करुणाकर; ऍण्णा–(दुःखों की) परवाह न करके; उयिरोटुम् इरुन्ततु–सप्राण रही; निन्–आपके; पुण्णाकिय मेनि–व्रणसहित शरीर से; पोरुन्तिटवो–लगने के लिए क्या । २६१८

पृथ्वीवासियों के प्राण (हे राम)! देवों के बल! मेरे नेत्र! अमृत! करुणाकर! अपने दुःखों की परवाह न करके मेरा अब तक प्राणधारण क्या आपके व्रण-सहित शरीर को देखने के अर्थ था? । २६१८

मेविक् कनन्मुन् मिदिलैत् तलैयेन्, पाविक् कैपिडित् तदुपण् णवनिन्
आविक् कोरुकोळ् वरवो वलर्वाळ्, देविक् कमुदे मरैयिन् ऱॆळिवे 2619

अलर् वाळ् तेविक्कु–कमलनिवासिनी देवी के; अमुते–अमृत; मरैयिन् तॆळिवे–वेदों के निर्धारित अर्थ; पण्णव–ईश्वर; मितिलै तलै–मिथिला में; कनल् मुन् मेवि–अग्नि-सम्मुख विराजकर; पावि–पापिनी; ऍन् कै पिटित्ततु–मेरा पाणिग्रहण करना; निन् आविक्कु–आपके प्राणों पर; ओरु कोळ् वरवो–बन आये इस वास्ते क्या । २६१९

हे कमला के अमृत! वेदों के साफ़ अर्थ! ईश्वर! मिथिला में आपका मेरा पाणिग्रहण करना क्या आपके प्राणों पर बन आये, इस वास्ते था? । २६१९

उय्या ळुयर्हो शलैतन् नुयिरो, डैया विळैयो रुयिर्वाळ् हिलराल्
मॆय्या विनैयॆण् णिविडुत् तकोडुङ्, गैहे शिहरुत् तिदुवो कळिरे 2620

कळिरे–कलभ (निभ); उयर् कोचलै–मानार्ह कौसल्या; तन् उयिरोटु उय्याळ्–अपने प्राण ले जीवित नहीं रहेंगी; मॆय्या–सत्यसन्ध; ऐया–प्रभु; इळैयोर् उयिर् वाळ्किलर्–छोटे भी जीवित नहीं रहेंगे; विनै ऍण्णि–(संभाव्य) हानि का विचार करके; विटुत्त–(जिन्होंने वन) भेजा; कोटु कैकेचि–उन क्रूर कैकेयी का; करुत्तु–भाव; इतुवो–यही था क्या । २६२०

हे गज-सम! मानार्ह कौसल्यादेवी जीवित नहीं रहेंगी! हे सत्यसंध!

आपसे छोटे लोग भी जीवन धारण नहीं करेंगे। बुराई सोचकर क्रूर कैकेयी ने जो हमें वन भिजवाया, उनका भाव यही था क्या ? । २६२०

तहैवा णहरूनी तविर्वा यॆन्नवुम्, वहैया दुतॊडर्न् दॊरुमान् मुदलाप्
पुहैया डियका डुपुहुन् दुडने, पहैया डियवा परिवे दुमिलेन् 2621

तकै–सुसंपन्न; वाऴ् नकर्–प्रकाशमय नगर (अयोध्या) में; नी–तुम; तविर्वाय्–ठहरो; ऎन्नवुम्–ऐसा (मुझसे आपके) कहने पर; नान् वकैयातु–मैं उसमें न आकर; तॊटर्न्तु–आपका पीछा करके; पुकै आटिय काटु–धुएँ जिसमें उठते थे, उस जंगल में; पुकुन्तु–पहुँची, तब; उटले–तुरन्त; ऒरु मान् मुतल–(स्वर्ण-) मृग से लेकर; पकै–शत्रुओं को; आटिय नेर्न्त–मारने की स्थिति जो आयी; आ–वह प्रकार भी कैसा; परिवु–प्रेम; एतुम् इलेन्–कुछ भी नहीं मुझमें। २६२१

"सर्वसमृद्ध अयोध्या में ही रह जाओ" —यह आपने मुझसे कहा। मैं उसको अनसुना करके आपके पीछे आग और धुएँ से भरे जंगल में आयी। तुरन्त आपको एक विलक्षण मृग से लेकर शत्रुओं को मारना जो पड़ा, वह भी कितना विचित्र हाल है ! मैं भी कितनी निर्दय हूँ ! । २६२१

इन्ऱी हिलैये लिऱविव् विडैमान्, अन्ऱी यॆन्नवुम् बरिवो डडियेन्
निन्ऱी वदुनिन् नॆनॆडुञ् जॆरुविऱ्, कॊन्ऱी वदॊर् हॊळ्है कुऱित्तलिनो 2622

इन्ऱु–आज ही; इव् इटै–यहाँ; मान् ईकिलैयेल्–हिरन (पकड़कर) न दोगे तो; इऱवु–मृत्यु; ई–दो; ऎन्नवुम्–कहते ही; परिवोटु–दुःख के साथ; निन्ऱीवतु–मेरा असहाय रह जाना; नॆटु चॆरुविल्–दीर्घ सागर में; कॊन्ऱु ईवतु–मार देने की; ऒरु कॊळ्कै कुऱित्तलिनो–एक धारणा लेकर क्या। २६२२

"अभी आप मृग पकड़कर नहीं देंगे तो मेरा मरण निश्चित है ! अतः आप पकड़ दें।" मैंने यह प्रार्थना की ! दुःख के साथ मेरा अकेला रह जाना क्या लम्बे युद्ध में आपको मरवाने की योजना के कारण था ? । २६२२

मेदा विळैयोय् विदियार् विळैवाऱ्, पोदा नॆऱियॆम् मॊडुपो वुऱुनाळ्
मूदा नवन्मुन् नमुडिन् दिडॆन्नुम्, मादा वुरैयिन् वऴिनिन् ऱनैयो 2623

वितियार् विळैवाल्–प्रारब्ध के फल से; पोता नॆऱि–दुर्गम मार्ग में; ऎम्मोटु–हमारे साथ; पोतुऱु नाळ्–जब जाने लगे तब; इळैयोय्–छोटे भैया; मेता–मेधावि; मूतानवन्–ज्येष्ठ; मुन्नम् मुटिन्तिटु–(के) पहले मर जाओ; ऎन्नुम्–यह आज्ञा देनेवाली; माता उरैयिन् वऴि–माँ के कहे मार्ग में; निन्ऱनैयो–रहे क्या (रहकर मरे क्या)। २६२३

प्रारब्धवश हो जब हम अगम जंगल के मार्ग पर जाने लगे, तभी लक्ष्मण से उनकी माँ ने कहा कि अपने बड़े भाई के पहले तुम मर जाओ (उन पर कुछ होने की नौबत आये तो)। हे लक्ष्मण ! क्या तुम अपनी माता की आज्ञा के पालन के मार्ग में रह गये ? । २६२३

पूवुन् दळिरुन् दोट्टुपोङ् गणैमेऱ्, कोविन् तुयिलैत् तविर्वाय् कॊडियार्
एविन् ऱलैवन् दविरुङ् गणैयिऩ्, मेवुम् कुळिर्मॆल् लणैमे विऩ्ऩैयो 2624

पूवुम् तळिरुम्–पुष्प और पत्र; तोंकु–जिस पर एकत्रित थे; पोङ्कु अणै मेल्–उस उत्साहवर्द्धक शय्या में; कोविऩ् तुयिलै–राजोचित नींद के; तविर्वाय्–हे त्यागी; कोंटियार्–क्रूरों (राक्षसों) के; एविऩ् तलै वन्त–धनु से निर्गत; इरु कणैयिऩ्–बड़े शरों से; मेवुम्–बने; कुळिर्मॆल् अणै–शीतल नरम शय्या (शर-तल्प); मेविऩैयो–चाह ली क्या। २६२४

राजोचित पुष्प-पल्लव-संयुक्त व उल्लासमय शय्या में निद्रा को त्यागनेवाले! क्या आपने क्रूर राक्षसधनु-निर्गत बड़े शरों की बनी शय्या चाह ली? । २६२४

नॆय्यार् अळल्वेळ् विनिरप् पिनॆडुञ्, जॆय्यार् पुनऩा डुदिरुत् तुदियाल्
मॆय्या हियवा शहमुम् विदियुम्, बॊय्या नवॆऩ्मे ऩिपॊरुन् दुदलाल् 2625

नॆय् आर् अळल् वेळ्वि–घी डालकर अग्नि में किये जानेवाले यज्ञ; निरप्पि–सम्पन्न करके; नॆटु चॆय् आर्–बड़े खेतों से भरे; पुऩल् नाट–जलसम्पन्न कोसल देश को; तिरुत्तुत्ति–सुव्यवस्थित करते रह गये होते; ॲऩ् मेऩि पॊरुन्तुतलाल्–मेरे शरीर का स्पर्श किया, इसलिए; मॆय्याकिय वाचकमुम्–आपके सत्यवचन; वितियुम्–और अच्छे कर्मफल; पॊय्यात–झूठे हो गये है। २६२५

सब ठीक रहा तो आप आग में घी देकर किये जानेवाले यागों को संपन्न करते हुए लम्बे खेतों से भरी अयोध्या में देश को सुव्यवस्थित रखते रह जाते! पर मेरे शरीर के स्पर्श से आपके सत्यवचन और अच्छा प्रारब्ध भी झूठा हो गया। २६२५

मळुवाळ् वरिऩुम् बिळवा मऩऩुण्, डळुवे ळिऩियॆऩ् ऩिडरा ऱिडयाऩ्
विळुवे ऩवऩ्मे ऩियिऩ् मीदिलॆऩा, ॲळुवा ळैविलक् कियियम् बिऩळाल् 2626

मळु–परशु; वाळ्–और तलवार; वरिऩुम्–आ लगें तो भी; पिळवा–जो नहीं कटता; मऩऩ् उण्टु–वैसा मेरा मन है; अळुवेऩ्–मैं रोती हूँ; इऩि–अब; ॲऩ् इटर् आऱ्रिट–अपना दुःख दूर करने; अवऩ् मेऩियिऩ् मीतिल्–उनके शरीर पर; विळुवेऩ्–गिरूँगी; ॲऩा–कहकर; ॲळुवाळै–जो उठीं उनको; विलक्कि–रोककर; इयम्पिऩळाल्–कहने लगी (त्रिजटा)। २६२६

परशु, तलवार आदि के प्रहार से भी अभेद्य है मेरा मन! रोती मैं उनके शरीर पर गिरकर मरूँगी और अपना दुःख मेटूँगी। यह कहकर देवी उठीं तो त्रिजटा ने उन्हें रोका और कहा। २६२६

माडुऱ वळैनॆदु निऩ्ऱ वळैयॆयिऱ् ऱरक्कि मारप्
पाडुऱ वहऱ्ऱि नोक्किप् पावैयैत् तळुविप् पऱ्ऱिक्

कूडिन ळत्त निन्ऱु शॅवियिडैक् कुऱुहिच् चॊन्नाळ्
तेडिय तवमे यन्न तिरिशडै मरुक्कन् दीर्प्पाळ् 2627

तेटिय तवमे अन्न–(पिछले जन्म में) सुरक्षित तप के फल के समान; तिरिचटै–त्रिजटा; मरुक्कम् तीर्प्पाळ्–भ्रम दूर करते हुए; मावुऱ वळैन्तु निन्ऱ–पास घेरे रहनेवाली; वळै ऎयिऱु अरक्किमारै–वक्रदन्तोरी राक्षसियों को; पाटु उऱ–दूर जाएँ, ऐसा; अकऱ्ऱि–हटाकर; पावैयै नोक्कि–प्रतिमा (-सी सीता) को देखकर; कुऱुकि–पास जाकर; पऱ्ऱि तऴुवि–पकड़कर आलिंगन कर; कूटिनळ् ॲन्न–समागत हो गयी हो ऐसा; निन्ऱु–खड़ी होकर; चॅवि इटै–कान में; चॊन्नाळ्–कहने लगी। २६२७

त्रिजटा, जो सीताजी के पूर्व-जन्म-सुकृत के फल के रूप में मिली थी, उनका दुःख दूर करने के इरादे से घेरी खड़ी रही राक्षसियों को अलग करके सीताजी के पास गयी। प्रतिमा-सी उन्हें आलिंगन करके 'शरीर एक हो गये हों' —ऐसा रहकर उनके कान में कहने लगी। २६२७

मायमान् विडुत्त वाऱुम् जनहनै वहुत्त वाऱुम्
पोयनाळ् नाह पाशम् विणित्तदु पोन वाऱुम्
नीयमा निनैयाय् माळ निनैदियो नॅऱियि लाराल्
आयमा माय मॊन्ऱु मञ्जलै यन्न मन्नाय् 2628

अन्नम् अन्नाय्–हंस-समाना; पोय नाळ्–बीते दिनों में; मायमान् विटुत्त आऱुम्–मायामृग जो भेजा था, वह हाल; चनकनै वकुत्त आऱुम्–जनक का निर्माण जो हुआ था, वह हाल; नाक पाचम् पिणित्ततु–जो नागपाश-बन्धन हुआ था, उसके; पोन आऱुम्–निरसन का हाल; अम्मा–माते; नी–तुम; निनैयाय्–नहीं सोचतीं; माळ निनैतियो–मरना सोचोगी; नॅऱियिलाराल्–कुमार्गी लोगों से; आय–रची; मा मायम्–बड़ी माया से; ऒन्ऱुम् अञ्चिलै–कुछ भी मत डरो। २६२८

हे हंसिनी-सी माते! पहले जो-जो हुए थे तुम जानती हो। मायामृग भेजा गया था। माया-जनक रचा गया था। नागपाश का बंधन और मुक्ति हुई थी। हे माते! तुम यह सब नहीं सोचकर मरने का विचार करती हो! कुमार्गी और दुष्ट राक्षसों की बड़ी से बड़ी माया से भी मत डरो। २६२८

कण्डन कनवुम् बॅऱ्ऱ निमित्तमु निनदु कऱ्पुन्
दण्डह मुऱैयु नाळिऱ् चॅय्हैयुन् दरुमन् दाङ्गुम्
अण्डर्ना यहन्ऱन् वीरत् तन्मैयु मयरेऱ् चॅङ्गट्
पुण्डरी हक्कु मुण्डो विरुदियिप् पुल्लर् हैयाल् 2629

कण्टन कनवुम्–देखे गये स्वप्न; पॅऱ्ऱ निमित्तमुम्–और जो मिले वे शकुन; निनतु कऱ्पुम्–और तुम्हारा पातिव्रत्य; तण्टकम् उऱैयुम् नाळिल्–दंडक वनवास के समय में; चय्कैयुम्–जो हुई थीं, वे घटनाएँ; तरुमम् ताङ्कुम्–धर्म-संस्थापनार्थ

अवतरित; अण्टर् नायकन् तन्–अण्डनायक का; वीरम् तन्मैयुम्–वीर स्वभाव; अयरेल्–मत भूलो; पुण्टरीकम् इ चॅङ्कण्णऱ्कुम्–इन अरुण कमलाक्ष का भी; पुल्लर् कैयाल्–क्षुद्र लोगों के हाथों; इऱुति उणटो–अन्त होगा क्या। २६२९

मेरे देखे स्वप्न, हुए शकुन, तुम्हारा पातिव्रत्य, दण्डक वन में घटी घटनाएँ, अंडनायक श्रीराम की वीरता —इन सबको भूलो मत। अरुण-पुण्डरीकाक्ष श्रीराम की मृत्यु क्षुद्रों के हाथों होगी भी क्या ? । २६२९

आऴियान् ताक्कै ताक्कि यम्बॊन्ऱु मऱुक्कि लामै
एऴैनी काण्डि यन्ऱे यिळैयवऩ् वदन मिऩ्ऩुम्
ऊऴिना ळिरवि यॆऩ्ऩ वॊळिर्हिऩ्ऱु दुयिरुक् किऩ्ऩल्
वाऴियाऱ् किल्लै वाळा मयङ्गलै मण्णिल् वन्दाय् 2630

एऴै–वराकी; आऴियान्–चक्रधारी श्रीराम के; आक्कै–श्रीशरीर में; ऑन्ऱु अम्पुम् ताक्कि–एक अस्त्र का भी लगकर; अऱुक्किलामै–न भेदना; नी काण्टि–तुम देखो; मण्णिल् वन्ताय्–भूमिजा; इळैयवऩ् वदऩम्–छोटे (लक्ष्मण) का वदन; इऩ्ऩुम्–अब भी; ऊऴिनाळ् इरवि ऑन्ऩ–युगान्त के सूर्य के समान; ऑळिर्किऩ्ऱतु–छवि बिखेरता है; वाऴियार्क्कु–आयुष्मान् के; उयिरुक्कु इऩ्ऩल् इल्लै–प्राणों की हानि नहीं; वाळा मयङ्कलै–बेकार मोह में मत पड़ो। २६३०

हे वराकी ! तुम साफ़ देखो— चक्रधारी श्रीराम के शरीर पर कोई भी शर लगकर नहीं भेद सका है ! हे भूमिजा ! छोटे लक्ष्मण का मुख देखो। उनका वदन युगांत के रवि के समान छविमय रहता है ! अतः साफ़ है कि उनकी कोई हानि नहीं हुई। तुम व्यर्थ भ्रमित नहीं हो। २६३०

वीयन्दुळ ऩिराम ऩॆऩ्ऩि ऩुलहमो रेऴु मेऴुन्
दीर्न्दऱु मिरवि पिऩ्ऩुन् दिरियुमे तॆय्व मॆऩ्ऩाम्
वीयन्दुऱुम् विरिञ्जऩ् मुऩ्ऩा वुयिरॆलाम् वॆरुव लऩ्ऩै
आयन्दवै युळ्ळ पोदे यवरुळ रऱमु मुण्डाल् 2631

इरामऩ् वीयन्तुळऩ्–श्रीराम मरे होते; ऍऩ्ऩिऩ्–तो; उलकम् ओर् एऴुम् एऴुम्–चौदहों लोक; तीर्न्तु अऱम्–मटियामेट हो जाते; पिऩ्ऩुम्–और भी; इरवि तिरियुमे–सूर्य संचार करता (क्या); तॆय्वम् ऍऩ्ऩाम्–ईश्वर क्या हो; विरिञ्चऩ् मुऩ्ऩा–विरंचि से लेकर; उयिर् ऍलाम्–सारे जीव; वीयन्तुऱुम्–नष्ट हो जाते; आयन्तवै–कथित ये; उळ्ळ पोते–जब रहते हैं तब; अवर् उळर्–वे भी जीवित हैं; अऱमुम् उण्टु–धर्म भी चालू है; अऩ्ऩै–माते; वॆरुवल्–मत डरो। २६३१

अगर श्रीराम मरे होते तो चौदहों भुवन मिट जाते ! उस हालत में रवि भी संचार करता क्या ? फिर दैव का क्या अर्थ होगा ? विरंचि से लेकर सारे जीव मिट जाते। उक्त सभी चीज़ें जब यथाप्रकार हैं, तो उसका अर्थ है कि वे जीवित ही हैं। धर्म भी स्थायी है। हे माते ! डरो मत। २६३१

मारुदिक् किल्लै यन्ऱे मङ्गैनिन् वरत्ति नाले
आरुयिर् नीङ्गल् निन्बाड् कऱ्पुक्कु मळिवुण् डामे
शोरिय दन्ऱि यॊन्ऱुन् दिशैमुहन् पडैयिन् शॆय्है
पेरुमिप् पॊऴुदे तेव रॆण्णमुम् बिऴैप्प दुण्डो 2632

मङ्कै–देवी; निन् वरत्तिनाले–तुम्हारे वर से; मारुतिक्कु–मारुति के; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीङ्कल् इल्लै–छूटे नहीं; अन्ऱे–न; निन् पाल् कऱ्पुक्कुम्–(अगर वह मरता तो) तुम्हारे पातिव्रत्य पर भी; अऴिवुणटाम्–संकट आ जायगा; इतु–ऐसा सोचना; ऑन्ऱुम् चोरियतु अन्ऱु–किसी विध श्लाघ्य नहीं; तिचैमुकन् पटैयिन् चॆय्कै–(चतुर्मख के) ब्रह्मास्त्र का कार्य; इप्पॊऴुते पेरुम्–अभी दूर हो जायगा; तेवर् ऍण्णमुम्–देवों का विचार; पिऴैप्पतु उण्टो–व्यर्थ होगा क्या। २६३२

देवी ! आपके दिये गये वर से मारुति के प्यारे प्राण छूटे नहीं हैं ! नहीं न ! अगर वह मर जाता तो आपके पातिव्रत्य की भी हानि हो जायगी। यह विचार भी श्लाघ्य नहीं होगा ! ब्रह्मास्त्र के फलस्वरूप जो हुआ है, वह अभी दूर हो जाएगा। देवों का विचार भी झूठा हो सकता है क्या ? । २६३२

तेवरैक् कण्डेन् पैम्बॊऱ् चॆङ्गरञ् जिरत्तिऱ् चेर्त्ति
मूवरैक् कणडा लॆन्न विरुवरै मुऱैयि नोक्कि
आवलिप् पॆय्दु हिन्ऱा रयर्त्तिल रञ्ज लन्नै
कूवलिऱ् पुक्कु वेलै कोट्पडु मॆन्ऱु कॊळ्ळेल् 2633

तेवरै कण्टेन्–देवों को देखती हूँ; मू वरै कण्टाल् ऍन्न–त्रिमूर्ति को देखते हों जैसे; इरुवरै मुऱैयिन् नोक्कि–इन दोनों को आदर के साथ देखकर; पचुम् पॊन्–चोखे स्वर्ण के बने आभरणों के; चॆम् करम्–लाल हाथों को; चिरत्तिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करके; आवलिप्पु ऍय्तुकिन्ऱार्–सोत्साह है; अयर्त्तिलर्–संशय-पीड़ित नहीं; वेलै–समुद्र; कूवलिल् पुक्कु–कुएँ में प्रवेश करके; कोट्पटुम्–उसको अपने अंदर समा लेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; कॊळ्ळेल्–मत समझो। २६३३

मैं देवों को देखती हूँ। वे इन दोनों को त्रिमूर्तिवत् देखते हैं। चोखे स्वर्णाभूषणभूषित लाल हाथों को अपने सिर पर रखे बड़े उत्साह के साथ रहते हैं। वे कुछ भी क्षुब्ध नहीं दिखते। इसलिए, हे माते ! मत डरो। समुद्र कुएँ के अन्दर घुसकर उसमें समा जाएगा —ऐसा मत सोचो। २६३३

मङ्गल नोङ्गि नारै यारुयिर् वाङ्गि नारै
नङ्गैयिक् कडवुण् मानन् दाङ्गुरु नवैयिऱ् ऱन्ऱाल्
इङ्गिवै यळवै याह विडर्क्कडल् कडत्ति यॆन्ऱाळ्
शङ्गैय ळाय तैयल् शिऱिदुयिर् दरिप्प दानाळ् 2634

नङ्कै–देवी; मङ्कलम् नीङ्कितारै–सधवापन से रहित स्त्रियों; आरुयिर् वाङ्कितारै–और प्यारे प्राणों से हीन लोगों को; इ कटवुळ् मातम्–यह दिव्य यान; ताङ्कुरुम् नवैयिऱ्ऱु अन्ऱु–धारण करने का दोषयुक्त नहीं; इङ्कु इवै–अब ये; अळवै–प्रमाण हैं; आक–इसलिए; इटर् कटल् कटत्ति–दुःख-सागर तर लो; ॲन्ऱाळ्–कहा; चङ्कैयळ् आय तैयल्–शंकित जो रहीं वे देवी; चिऱिदु उयिर् तरिप्पताऩाळ्–थोड़ा प्राणधारण करने लगीं (सँभलीं)। २६३४

हे देवी ! यह दिव्य यान विधवाओं और मृतकों को धारण करने का अपराध नहीं करता। इन सब प्रमाणों के आधार पर दुःख-सागर तर जाओ। त्रिजटा ने यह सब कहा तो देवी सीता, जिसके मन में शंका थी, अब थोड़ा आश्वस्त हुई ! और प्राणधारण करने लगीं। २६३४

अन्ऩैनी युरैत्त दीन्ऱु मऴिन्दिल दाद लाऩे
उन्ऩैये दॅय्व माक्कॊण् डित्तनै काल मुयन्देऩ्
इन्ऩमिव् विरवु मुऱ्ऱु मिरुक्कितुऱ्ऱे ऩिऱत्त लॅन्बाल्
मुन्ऩमे मुडिन्द दन्ऱे यॅन्ऱनळ् मुळरि नीत्ताळ् 2635

मुळरि नीत्ताळ्–कमलवासत्यागिनी ने; अन्ऩै–माते; नी उरैत्तदु ऑन्ऱुम्–तुम्हारा कहना कुछ; अऴिन्दिलदु–वृथा नहीं गया है; आतलाऩ्–इसलिए; उन्ऩैये तॅय्वमा कॊण्टु–तुमको ही देव मानकर; इत्तुणै कालम्–इतने दिन; उयन्तेऩ्–जीवित रही; इन्ऩम्–और भी; इव् इरवु मुऱ्ऱुम्–इस रात भर में; इरुक्कितुऱ्ऱेऩ्–जीवन रखूँगी; इऱत्तल्–मरना तो; ॲन्पाल्–मेरी ओर से; मुन्ऩमे मुटिन्ततु अन्ऱे–पहले ही हो गया न; ॲन्ऱऩळ्–कहा। २६३५

कमलवासत्यागिनी सीता ने कहा कि हे माते ! तुम्हारा कहा कुछ भी व्यर्थ नहीं गया है ! इसीलिए मैं तुम्हें देव मानकर अब तक जीवन धारण कर रही हूँ। और भी आज रात तक जीवित रहूँगी। मरना तो, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, पहले ही निश्चित हो गया है न !। २६३५

नाणॆलान् दुऱन्दे ऩिल्लि नन्मैयि नल्लार्क् कॆय्न्द
पूणॆलान् दुऱन्दे ऩॆन्ऱऩ् पॊरुशिलै मेहन् दन्ऩैक्
काणला मॆन्नु माशै तडुक्कवॆन् ऩावि कात्तेऩ्
एणिला वुडल नीक्क लॆळिदॆन्ऩ कॆन्नवुञ् जॊन्ऩाळ् 2636

नाण् ॲलाम् तुऱन्तेऩ्–लज्जा सब छोड़ चुकी हूँ; इल्लिन्–गृहस्थी योग्य; नन्मैयिन्–श्रेष्ठ और; नल्लार्क्कु एय्न्त–उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक; पूण् ॲलाम्–आभरण-मान्य गुण सभी को; तुऱन्तेऩ्–छोड़ चुकी; ॲन् तन्–मेरे; पॊरु चिलै–युद्ध धनुर्धर; मेकम् तन्ऩै–मेघ (-श्याम) को; काणलाम् ॲन्नुम् आचै–देखने की इच्छा ने; तटुक्क–रोका, इसलिए; ॲन् आवि कात्तेऩ्–अपने प्राणों का रक्षण कर लिया; एण् इला–गौरवहीन; उटलम् नीक्कल्–शरीर का त्याग; ॲन्ऩक्कु ॲळितु–मेरे लिए सुलभ है; ॲन्ऩवुम्–ऐसा भी; चॊन्ऩाळ्–कहा देवी ने। २६३६

देवी ने और भी कहा कि मैं लज्जा त्याग चुकी। और गृहिणी के लिए मंगल देनेवाले और उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक आभरण-से गुणों से भी हाथ धो चुकी। तो भी अपने युद्धधनुर्धर मेघश्याम के दर्शन की लालसा के रोकने से मैं अपने प्राणों को सुरक्षित रख रही हूँ। नहीं तो क्षुद्र इस शरीर का त्याग कोई कठिन बात नहीं! । २६३६

तैयलै यिरामऩ् मेऩि तैत्तवेऱ् ऱुडङ्ग णाळक्
कैहळिऱ् पऱ्ऱिक् कॊण्डार् विमाऩत्तैक् कडावु हिऩ्ऱार्
मॆय्युयि रुलहत् ताह विदियेयुम् वलित्तु विण्मेल्
पॊय्युडल् कॊण्डु शॆल्लु नमऩुडैत् तूदर् पोऩ्ऱार् 2637

इरामऩ् मेऩि तैत्त–श्रीराम के शरीर पर लगी; वेल् तटम् कणाळै–भाले-सी विशाल आँखों वाली; तैयल्–देवी को; कैकळिल् पऱ्ऱि कॊण्टार्–हाथों से पकड़ लेकर; विमाऩत्तै कटावुकिऩ्ऱार्–दिव्य यान को चलानेवाली राक्षसियाँ; मॆय् उयिर् उलकत्तु आक–सच्चे जीव को (जीवात्मा को) यहीं इस लोक में छोड़कर; वितियैयुम् वलित्तु–विधि के बल से; विण्मेल्–आकाशमार्ग में; पॊय् उटल् कॊण्टु–झूठा शरीर ले; चॆल्लुम्–जानेवाले; नमऩ् उटै–यम के; तूतर् पोऩ्ऱार्–दूत के समान रहीं। २६३७

राक्षसियाँ सीता को, जिसकी भाले-सी आँखों की दृष्टि श्रीराम के शरीर पर गड़ी थी, अपने हाथों से पकड़ लेकर दिव्य यान को चलाती गयीं। तब वे उन यमदूतों के समान थीं, जो विधि के बल से सच्चे जीव (-आत्मा) को भूमि पर छोड़कर आकाश-मार्ग से मिथ्या शरीर को ले जाते है। २६३७

23. मरुत्तुमलैप् पडलम् (ओषधि-पर्वत पटल)

पोयिऩ ळैय लिप्पाऱ् पुरिहॆऩप् पुलवर् कोमाऩ्
एयिऩ करुम नोक्कि येहिय विलङ्गै वेन्दऩ्
मेयिऩ वुणवु कॊण्डु मीण्डवै युऱैयुळ् विट्ट
आयिऩ वाक्किल् ताऩ्वन् दमर्प्पॆरुङ् गळत्त ऩाऩाऩ् 2638

तैयल् पोयिऩळ्–देवी गयीं; इप्पाल्–इधर; पुरिक ऎऩ–(भोजन लाने का काम) करो यह; पुलवर् कोमाऩ्–देवपति के द्वारा; एयिऩ करुमम्–आज्ञापित कार्य को; नोक्कि–उद्देश्य करके; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंकाधिपति विभीषण; मेयिऩ उणवु कॊण्टु–उचित भोजन लेकर; मीण्टु–लौटा; अवै–उन्हें; उऱैयुळ् विट्ट आयिऩ आक्कि–पड़ावों के अन्दर रखा बनाकर; ताऩ् वन्तु–स्वयं आकर; अमर् पॆरुकळत्तऩ् आऩाऩ्–बड़े युद्धस्थल का बना (में पहुँचा।)। २६३८

सीतादेवी गयीं। उधर लंकाधिपति विभीषण, जो श्रीराम की आज्ञा

से भोजन लाने गया था, उचित भोजनसामग्रियाँ ले लौटा। फिर उन्हें डेरों के अन्दर रखकर युद्ध के क्षेत्र में आया। २६३८

नोक्किनान् कण्डान् पण्डिव् वुलहङ्गळ् पडैक्क नोऱ्ऱान्
वाक्किनाल् माण्डा रॆन्न वानर वीरर् मुऱ्ऱुम्
ताक्किना रॆल्लाम् बट्ट तन्मैये विडत्तै तानॆ
तेक्किना नॆन्न निन्ऱु तियङ्गिना नुणर्वु तीर्न्दान् 2639

पण्टु–पहले; इव् उलकङ्कळ्–इन लोकों को; पटैक्क–रचने के लिए; नोऱ्ऱान्–जिसने व्रत पाला था, उस ब्रह्मा के; वाक्किनाल्–शाप-वचन से; माण्टार् ऎन्न–जो मरते हैं, उनके समान; वानर वीरर्–वानर वीर; मुऱ्ऱुम् ताक्किनार्–पूर्ण रूप से आघात पाकर; ऎल्लाम् पट्ट तन्मैयै–सब मरे पड़े थे वहहाल; नोक्किनान्–देखा; कण्टान्–समझा; विटत्तै तानॆ तेक्किनान् ऎन्न–विष स्वयं पी लिया हो ऐसा; निन्ऱु–(भ्रान्त) खड़े होकर; उणर्वु तीर्न्तान्–मूर्च्छित हुआ। २६३९

उधर उसने देखा कि सभी वानर वीर ब्रह्मास्त्र से शाप पाकर मरे हुओं के समान पड़े रहते हैं। यह देखकर अधिक विष को अकेला खा चुका जैसे भ्रमित खड़ा रहा; फिर मूर्च्छित हो गया। २६३९

विळैन्दवा ऱुणर्न्दि लादा नॆङ्गिनान् वॆंदुम्बि नान्मेल्
उळैन्दुळैन् दुयिर्त्ता नावि युण्डिलै यॆन्न वोय्न्दान्
वळैन्दपेय्क् कणमु नायु नरिहळु मिरिय वन्दान्
इळङ्गिळै योडुम् जायन्द विरामनै यॆय्दिक् कण्डान् 2640

विळैन्त आऱु–जो हुआ है, उसका प्रकार; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह विभीषण; एङ्कितान्–तरसकर; वॆतुम्पितान्–तप्त हुआ; मेल्–और; उळैन्तु–व्यग्र होकर; उळैन्तु–लटकर; उयिर्त्तान्–निःश्वास छोड़ा; आवि उण्टु इलै ऎन्न–प्राण है या नहीं यह संशय हो, ऐसा; ओय्न्तान्–निर्जीव हुआ; वळैन्त पेय् कणमुम्–भूत-गण जो घेरे रहे; नायुम् नरिकळुम्–और कुत्ते और सियार; इरिय–अस्त-व्यस्त भागें ऐसा; वन्तान्–आया; इळ किळैयोटुम्–लक्ष्मण के साथ; चायन्तु–गिरे पड़े रहे; इरामनै ऎय्ति–श्रीराम के पास पहुँचकर; कण्टान्–देखा। २६४०

उसे मालूम नहीं था कि क्या हुआ? वह तरसा, तप्त हुआ और क्षुब्ध हुआ। उसने लम्बी आहें भरीं। ऐसी स्थिति में आया कि यह संशय हो कि वह जीवित है या मरा हुआ। वह घेरे रहनेवाले भूतगणों, कुत्तों, और सियारों को अस्त-व्यस्त भागने देते हुए वहाँ आया, जहाँ अपने छोटे भाई के साथ श्रीराम पड़े थे। वहाँ आकर उसने उनको देखा। २६४०

ऎन्बॆन्ब दियाक्कै यॆन्ब दुयिरॆन्ब दिवैह ळॆल्लाम्
विन्बॆन्ब वल्ल वेनुन् दम्मुडै निलैयिऱ् पेरा

मॅन्बॅन्ब वुळदॅन् ड्रालु मुळुवदुन् दॅरिन्द वाड्राल्
अन्बॅन्ब दॊन्ड्रिन् ड्रन्मै यमररु मड्रिन्द दन्ड्राल् 2641

ऍन्पु ऍन्पतु–हड्डियाँ कहना; याक्कै ऍन्पतु–संघात (शरीर) कहना; उयिर् ऍन्पतु–जीव (या प्राण) कहना; इवैकळ् ऍल्लाम्–ये सब; पिन्पु ऍन्प–बाद के कहते हैं; अल्ल–नहीं; एनुम्–तो भी; तम्मुटै निलैयिल् पेरा–अपनी स्थिति से अविचलित; मुळुवतुम् तॆरिन्त आट्राल्–पूर्ण रूप से विश्लेषण करने पर; अन्पु ऍन्पतु–प्रेम नाम के; ऒन्ड्रिन् तन्मै–एक तत्त्व का स्वभाव; अमररुम् अड्रिन्ततु अन्ड्र–देव भी जानते हों ऐसा एक नहीं। २६४१

शरीर, प्राण, हड्डियाँ आदि प्रेम के पीछे की नहीं हैं। यानी उनके बाद ही प्रेम की गणना है। तो भी उस अटल प्रेम का रहस्य पूर्ण रूप से विवेचना करने पर, देवों को भी मालूम नहीं। २६४१

आयिनु मिवरुक् किल्लै यळिवॅनु मदना लावि
पोयिन दिल्लै वायाड् पुलम्बिलन् पॊरुमिप् पॊङ्गित्
तीयिनु मॅरियु नॆञ्जिन् वॆरुवलन् ड्रॅरिय नोक्कि
नायहन् मेनिक् किल्लै वडुवॅन नडुक्कन् दीर्न्दान् 2642

आयिनुम्–तो भी; इवरुक्कु अळिवु इल्लै–इनका अन्त नहीं होगा; ऍनुम्–ऐसे; अतनाल्–उस विचार से; आवि पोयिततु इल्लै–प्राण छूटे नहीं; वायाल् पुलम्पिलन्–मुख खोलकर विलाप न करके; पॊरुमि पॊङ्कि–दुःख से भरकर; तीयिनुम् ऍरियुम्–आग से भी अधिक जलनेवाले; नॆञ्चिन्–मन से; वॆरुवलन्–निडरता से; तॆरिय नोक्कि–सोचकर, देखकर; नायकन् मेनिक्कु–नायक के शरीर पर; वटु इल्लै–व्रण नहीं; ऍन–सोचकर; नटुक्कम् तीर्न्तान्–(भय-) विकंपित होना छोड़ दिया। २६४२

वैसे प्रेमी विभीषण ने विचार किया। इन श्रीराम का अन्त नहीं हो सकता। अतः उनके प्राण छूटे नहीं। उसने मुख खोलकर विलाप करता हुआ, अग्नि से भी अधिक तपते मन के साथ निडर होकर देखा कि श्रीराम के शरीर पर कोई व्रण नहीं। इसलिए उसने भयकंपन छोड़ दिया। २६४२

अन्दणन् पडैयाल् वन्द दॆन्बदु माड्रल् शान्र
इन्दिर शित्ते यॆय्दा नॆन्बदु मिळ वर्काह
नॊन्दन निराम नॆन्नु मुण्मैयु नॊय्दु नोक्किच्
चिन्दैयि नॆण्णि यॆण्णित् तीर्वदो रुबायन् देर्वान् 2643

अन्तणन् पटैयाल्–ब्राह्मण-श्रेष्ठ (ब्रह्मा) के अस्त्र से; वन्ततु–आया; ऍन्पतुम्–यह बात और; आड्रल् चान्र–बलसंयुक्त; इन्तिर चित्ते ऍय्तान्–और इन्द्रजित् ने ही चलाया; ऍन्पतुम्–यह बात; इळवर्काक–छोटे भाई के लिए; इरामन्–श्रीराम; नॊन्तनन्–दुःखी हुए; ऍन्नुम् उण्मैयुम्–यह तथ्य भी; नॊय्तु नोक्कि–

शीघ्र जानकर; चिन्तैयित् ऍण्णि–मन में विवेचना करके; ऍण्णि–विवेचना करके; तीर्वतु ओर् उपायम्–इस संकट से मुक्त होने का एक उपाय; तेर्वान्–सोचने लगा। २६४३

उसने अनुमान कर लिया कि यह ब्रह्मास्त्र की करतूत है। उसे बलवान इन्द्रजित् ने चलाया। श्रीराम लक्ष्मण का हाल देखकर दुःख से बेसुध हो गये हैं। उसने बहुत सोचा कि इस स्थिति के निवारण का मार्ग क्या हो? । २६४३

उळ्ळुरु तुन्ब मूत्ऱ वुऱ्ऱ नुऱक्क मन्ऱो
तॆळ्ळिदि लुणर्न्द पिन्नैच् चिन्दनै तॆरिव दन्ऱे
वळ्ळलो तम्बि माय वाळ्हिलन् माय वाळ्क्कैक्
कळ्वरो वॆन्ऱा रॆन्ना मळैयॆनक् कलुळुङ् गण्णान् 2644

उळ् उऱु तुन्पम्–अन्दर का दुःख; ऊन्ऱ–गड़ा (गम्भीर) रहा इसलिए; उऱक्कम् उऱ्ऱनन् अन्ऱो–मूर्च्छित हो गये न; तॆळ्ळितिन् उणर्न्त पिन्नै–साफ़ समझने के बाद; चिन्तनै तॆरिवतु–उनका विचार जान लेना है; वळ्ळलो–प्रभु तो; तम्पि माय–छोटे भाई के मरने पर; वाळ्किलन्–नहीं मरेगा; माय वाळ्क्कै–वंचकजीवी; कळ्वरो–चोर; वॆन्ऱार्–विजयी हो जाएँगे;. ऍन्ना–ऐसा सोचकर; मळै ऍन–बारिश के समान; कलुळुम् कण्णान्–रोनेवाली आँखों का बनकर (विभीषण)। २६४४

"भीतरी दुःख के गंभीर रूप से कष्ट देने से श्रीराम मूर्च्छित हो गये न? निश्चित रूप से जानने के बाद उनका मन जान लेना होगा। क्योंकि प्रभु, भाई मर गये तो जीवन धारण नहीं करेंगे। तब मायाजीवी वंचकों की जीत होगी।" यह सोचकर वह बारिश के समान बहनेवाले अश्रु की आँखों का हो गया। २६४४

पाशम्बो यिऱ्ऱाऱ् पोलप् पदुमत्तोन् पडैयु मिन्ऱे
नाशम्बो यॆय्दु नम्बि तम्बिक्कु नाश मिल्लै
वीशुम्बोर्क् कळत्तु वीळ्न्द शेनैयु मीळुम् वॆय्य
नीशन्बोर् वॆल्व दुण्डो वॆन्ऱह निनैन्दु निन्ऱान् 2645

पाचम् पोय् इऱ्ऱाल् पोल–पाश टूटा जैसे; पतुमत्तोन् पटैयुम्–कमलासन का अस्त्र भी; इन्ऱे नाचम् पोय् ऍय्तुम्–आज ही नाश हो जायगा; नम्पि तम्पिक्कुम्–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के भाई का; नाचम् इल्लै–नाश नहीं होगा; वीचुम्–जहाँ हथियार चलाये जाते हैं उस; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; वीळ्न्त चेनैयुम्–मरी सेना भी; मीळुम्–जीवित हो जाएगी; वॆय्य नीचन्–क्रूर नीच रावण भी; पोर् वॆल्वतु उण्टो–युद्ध जीते क्या; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अकम्–मन में; निनैन्तु निन्ऱान्–सोचते हुए खड़ा रहा। २६४५

पाश का बन्धन जैसे टूटा था वैसे ही ब्रह्मास्त्र (का असर) भी

आज नाश को प्राप्त हो जायगा। जगन्नाथ के भाई की भी कोई हानि नहीं होगी। हथियार जिसमें खूब चलाये जाते हैं, उस युद्ध में मरे वानर वीर भी जी उठेंगे। क्या क्रूर व नीच रावण को जीत मिल सकेगी ? ऐसा सोचता हुआ वह खड़ा रहा। २६४५

उणर्वदन् मुन्न मिन्ने मुऱ्ऱुऴि युदवर्‌ कॉन्त
तुणैवरुह ळुळ्ळ लिल्ला रुळरॅनिऱ्‌ ऱुरुवित्‌ तेडिक्‌
कॉणरुहुवॅन्‌ विरैवि लॅन्नाक्‌ कॉळ्ळियॉन्‌ ऱङ्गै कॉण्डान्‌
पुणरियि नुदिर वॅळ्ळत्‌ तॊरुदनि विरैविऱ्‌ पोनान्‌ 2646

उणर्वतन् मुन्नम्-(श्रीराम के) होश में आने के पहले; इन्ने-अभी; उऱ्ऱुऴि उतवऱ्‌कु ओन्त-संकट के समय में सहायता देने योग्य; तुणैवर्कळ्-साथी; उळ्ळल् इल्लार्-कोई जीवित; उळर् ॲनिल्-हो तो; तुरुवि तेटि-टटोलकर-ढूंढ़कर; विरैविल् कॉणर्कुवॅन्-जल्दी लाऊँगा; ॲन्ना-कहकर; कॉळ्ळि ऑन्ऱु-आधी जली लकड़ी एक; अम् कै कॉण्टान्-सुन्दर हाथ मे लिया; उतिरम् पुणरियिन् वॅळ्ळत्तु-रक्त-सागर के प्रवाह में; ऑरु तनि-अकेला; विरैविल् पोनान्-जल्दी-जल्दी गया। २६४६

"श्रीराम को मूर्च्छा से जागने के पूर्व मैं जाकर ढूंढूँगा यह देखने के लिए कि आफ़त के समय में सहायता देनेवाले कोई साथी जीवित हैं। अगर मिलें तो ले आऊँगा।" यह सोचकर वह एक लूक (अधजली लकड़ी हाथ में लेकर रक्त-प्रवाह के मध्य अकेले सवेग गया। २६४६

वाय्मडित्‌ तिरण्डु कैयु मुरुक्कित्तन्‌ वयिरच्‌ चॅङ्गण्‌
तीयुहक्‌ कनहक्‌ कुन्ऱिऱ्‌ ऱिरण्डदोण्‌ मळैयैत्‌ तीण्ड
आयिर कोडि यानैप्‌ पॅरुम्पिणत्‌ तमळि मेलान्‌
काय्शिनत्‌ तनुम नॅन्नुङ्‌ गडल्‌हिडन्‌ दानैक्‌ कण्डान्‌ 2647

वाय् मटित्तु-अधर मोड़कर; इरण्टु कैयुम् मुरुक्कि-दोनों हाथों को ऐंठकर; तन् वयिरम् चॅं कण्-अपनी वैरयुक्त लाल आँखों से; ती उक-अंगारे छोड़ते हुए; कनकम् कुन्ऱिल्-कनकगिरि (मेरु) सम; तिरण्ट तोळ् मऴैयै तीण्ट-पुष्ट कन्धों के मेघों का स्पर्श करते; आयिरम् कोटि यानै-हज़ार करोड़ हाथियों की; पॅरुम् पिणत्तु-अनेक लाशों की; अमळि मेलान्-शय्या पर पड़े रहनेवाले; काय् चिनत्तु अनुमन् ॲन्नुम्-जलानेवाले क्रोध से अभिभूत हनुमान जो; कटल् किटन्तानै-सागर-सम पड़ा था उसे; कण्टान्-देखा। २६४७

उसने हनुमान को देखा। हनुमान के अधर मुड़े हुए थे, हाथ ऐंठे थे। वैरप्रदर्शक लाल आँखों से आग-सी निकल रही थी। कनकपर्वत (मेरु) सम कंधे आकाश को छू रहे थे। हज़ार करोड़ हाथियों की लाशों पर वह क्रुद्ध पड़ा रहा। समुद्र के समान पड़े रहे उसको विभीषण ने देखा। २६४७

कण्डुतन् कण्ग ळूडु मळैयॆन्नक् कलुळि काल
उण्डुयि रॆन्ब दुन्नि युडऱ्कणै यॊन्ऱॊन् ऱाह
विण्डनीरुप् पुण्णि निन्ऱु मॆल्लॆन विरहिन् वाङ्गिक्
कॊण्डनीर् कॊणर्न्दु कोल मुहत्तिनैक् कुळिरच् चॆय्दान् 2648

कण्टु—देखकर; तन् कण्कळ् ऊटु—अपनी आँखों से होकर; मळै अॆन—बारिश के समान; कलुळि काल—अश्रु निकालते हुए; उयिर् उण्टु—जीव है; अॆन्पतु उन्नि—यह अनुमान लगाकर; विण्ट पुण्णिन्—खुले व्रण के; नीर् निन्ऱु—रक्त से; मॆल्ल—धीरे-धीरे; उटल् कणै—शरीर पर लगे बाणों को; ओन्ऱु ओन्ऱु आक—एक-एक करके; विरकिन् वाङ्कि—कुशलता से निकालकर; कॊण्टल् नीर्—मेघ का जल; कॊणर्न्तु—लाकर; कोल मुकत्तिनै—मनोरम मुख को; कुळिर चॆय्तान्—शीतल बनाया। २६४८

विभीषण ने हनुमान को देखा तो उसकी आँखों से अश्रु-वर्षा-सी होने लगी। उसने अनुमान कर लिया कि वह जीवित है। उसने रक्तमय व्रणों में उसके शरीर पर लगे अस्त्रों को धीरे-धीरे दक्षता के साथ एक-एक करके निकाला। फिर मेघ से जल ले आकर उसके मनोरम मुख को शीतल किया। २६४८

उयिर्प्पुमुन् नुदित्त पिन्न ऱुरोमङ्गळ् शिलिर्प्प वूडु
वियर्प्पुळ दाहक् कण्गळ् विळित्तन मेनि मॆल्लप्
पॆयर्त्तुवाय् पुनल्वन् दूऱ विक्कलुम् बिऱन्द दाह
अयर्त्तिल निराम नामम् वाळ्त्तिन नमर रार्त्तार् 2649

उयिर्प्पु—श्वास; मुन् उतित्त पिन्नर्—पहले निकला उसके बाद; उरोमङ्कळ् चिलिर्प्प—रोम पुलकित हुए; ऊटु—शरीर पर; वियर्प्पु उळतु आक—पसीना निकला तो; कण्कळ् विळित्तन—आँखें खुलीं; मेनि—शरीर को; मॆल्ल पॆयर्त्तु—धीरे-धीरे मुद्रा बदलकर; वाय्—मुख में; पुनल् वन्तु ऊऱ—जल के स्रवते; विक्कलुम् पिऱन्ततु आक—हिचकी बँधी; अयर्त्तिलन्—प्रज्ञा न खोकर; इरामनामम् वाळ्त्तिनन्—श्रीराम के नाम की स्तुति की (हनुमान ने); अमरर्—देवगण; आर्त्तार्—चिल्ला उठे। २६४९

हनुमान ने साँसें छोड़ना आरंभ किया। फिर रोम पुलकित हुए। शरीर स्वेदित हुआ। आँखें खुलीं। तब उसने धीरे-धीरे अपने शरीर की मुद्रा को बदला। मुख में जल स्रवने लगा। हिचकी बँधी। उस स्थिति में भी अप्रमत्त रूप से उसने श्रीराम-नाम की दुहाई दी। देवों ने यह सुनकर आनंद-आरव किया। २६४९

अळुहैयो डुवहै युऱ्ऱ वीडण नार्वङ् गूरत्
तळुविन नवनैत् तानु मन्बोडु तळुवित् तक्कोय्
वळुविल नन्ऱे वळ्ळ लॆन्ऱनन् वलिय नॆन्ऱान्
तॊळुवन नुलह मून्ऱन् नुलैयिन्मेऱ् कॊळ्ळन् वुयान् 2650

अऴुकैयोटु–रुलाई के साथ; उवकै उड्र–आनंदित जो हुआ उस; वीटणन्–विभीषण ने; आर्वम् कूर–प्रेम के बढ़ने से; अवनै–उसे; तऴुविनन्–आलिंगन में लिया; तानुम्–हनुमान ने भी; अन्पोडु तऴुवि–प्रेम के साथ आलिंगन करके; तक्कोय्–सुयोग्य; वळ्ळल्–प्रभु; वऴुविलन् अन्ड्रे–आँच-रहित हैं न; अॅन्ड्रनन्–पूछा; वलियन्–कुशल से हैं; अॅन्ड्रान्–कहा; उलकम् मून्ड्रुम्–तीनों लोक; तलैयिन् मेल् कॉळ्ळुम्–जिसको सिर पर धारण करते हैं; तूयान्–और जो पवित्र है, उस हनुमान ने; तॉऴुतनन्–नमस्कार किया। २६५०

एक साथ रोते-हँसते विभीषण का प्रेम बढ़ आया। उसने हनुमान का आलिंगन कर लिया। हनुमान ने भी उसे गले से लगा लिया। पूछा कि सुयोग्य! प्रभु श्रीराम पर कोई आँच तो नहीं आयी न? विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ "स्वस्थ हैं"। यह सुनकर त्रिलोकवंद्य हनुमान ने श्रीराम को वहीं से नमन किया। २६५०

अन्बुदन् ऱम्बि मेलात् तऱिविनै मयक्क वैयन्
तुन्बोडुन् दुयिल नाना नुणर्विनिन् तॉडर्न्द पिन्नै
अॅन्बुहुन् दॅय्दु मॅन्ब दऱिहिलॅ मॅन्ड्र लोडुन्
दन्बॅरुन् दन्मैक् कोन्न शाम्बवन् तलैय नॅन्ड्रान् 2651

अन्पु तन् तम्पि मेल् आततु–प्यार अपने भाई पर रखने से; अऱिविनै मयक्क–सुधि को भ्रष्ट करने से; ऐयन्–प्रभु; तुन्पुटन्–दुःख के साथ; तुयिलन् आनान्–मूर्च्छित हैं; इनि–अब; उणर्वु तॉटर्न्त पिन्नै–होश के आने के बाद; अॅन् पुकुन्तु अॅय्तुम्–क्या आ मिलेगा; अॅन्पतु अऱिकिलॅम्–यह नहीं जानते; अॅन्ड्रलोटुम्–यह (विभीषण के) कहने पर; तन् पॅरु तन्मैक्कु ऑन्न–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण स्वोपम; चाम्पन्–जाम्बवान; अॅ तलैयन्–कहाँ हैं; अॅन्ड्रान्–पूछा मारुति ने। २६५१

विभीषण ने कहा— भाई पर प्रेम के आधिक्य से श्रीराम की बुद्धि भ्रमित हो गयी और वे दुःख के साथ मूर्च्छित हैं। सुध आने के बाद क्या होगा? —नहीं जानते! हनुमान ने पूछा कि स्वोपम गुणश्रेष्ठ जाम्बवान् कहाँ हैं? । २६५१

अऱिन्दिल नवनै याण्डुङ् गण्डिल नावि याक्कै
पिऱिन्दुळ दिलदॅन् ड्रॉन्ड्रुन् दॅरिन्दिलॅन् पॅयर्न्दे नॅन्ड्रु
शॅऱिन्दतार् निरुदर् वेन्द नुरैशॅयक् कालिन् शॅम्मल्
इऱन्दिऱ मवनुक् किन्ड्रा नाडुदु मेहि यॅन्ड्रान् 2652

अवनै अऱिन्तिलन्–उसके बारे में नहीं जानता; याण्टुम् कण्टिलन्–कहीं नहीं देखा; याक्कै आवि पिरिन्तुळतु–(क्या) शरीर प्राण छोड़ चुका है या; इलतु–नहीं; अॅन्ड्रु–ऐसा; ऑन्ड्रुम् तॅरिन्तिलॅन्–नहीं जानता; पॅयर्न्तेन्–उसी स्थिति में आ गया हूँ; अॅन्ड्रु–ऐसा; चॅऱिन्त तार्–घनी मालाधारी; निरुतर् वेन्तन्–राक्षसराज के; उरै चॅय–उत्तर कहने पर; कालिन् चॅम्मल्–वायुनंदन ने; अवनुक्कु

इरम् तिरम् इतुरु–उसका मरना नहीं है; एकि–जाकर; नाट्टुतुम्–ढूँढ़ेंगे; ॲन्रान्–कहा। २६५२

उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। शरीर से प्राण छूट गये या नहीं —मैं नहीं जानता। उसी स्थिति में मैं इधर आया। घनी माला-धारी राक्षसराज के यह कहने पर वायुकुमार ने कहा कि वे तो मरनेवाले नहीं। चलो जाकर ढूँढ़ लें। २६५२

अन्नवन् इन्नैक् कण्डा लाणैये यरक्करक् कॅल्लाम्
मन्नव नम्मै मीट्टु वाळ्विक्कु मुबायम् वल्लन्
ॲन्नलु मुय्न्दो मैय वेहुदुम् विरैवि नॅन्ना
मिन्निऱ् वौळियिऱ् चॅन्ऱार् शाम्बनै विरैविऱ् चेर्न्दार् 2653

अरक्करक्कु ॲल्लाम् मन्नव–सर्वराक्षसपति; अन्नवन् तन्नै–उसको; कण्टाल्–देख लें तो; नम्मै–हमें; मीट्टुम्–पुनः; वाळ्विक्कुम् उपायम्–जिलाने का उपाय; वल्लन्–कह सकेंगे; आणैये–यह ध्रुव है; ॲन्नलुम्–कहने पर; ऐय–प्रभु; उय्न्तोम्–हम बच गये; विरैविन् एकुतुम्–जल्दी जायँ; ॲन्ना–(विभीषण के) यह कहने पर; मिन् निऱ ऑळियिल्–बिजली के श्वेत प्रकाश में; चाम्पनै विरैविल् चेर्न्तार्–जल्दी जाम्बवान के पास गये। २६५३

सर्वराक्षसपति! उसको पा लेंगे तो वे बचने का उपाय बता सकेंगे। यह निश्चित है! —हनुमान ने ऐसा कहा। "तब तो हम बचे। चलो जल्दी चलें।" यह कहकर विभीषण चलने लगा। दोनों बिजली के प्रकाश का सहारा लेकर गये और जाम्बवान के पास पहुँच गये। २६५३

ॲरिहिन्ऱ मूप्पि नालु मेवुण्ड नोवि नालुम्
अरिक्किन्ऱ तुन्बत् तालु मारुयिर्प् पडङ्गि यौन्ऱुन्
दॅरिहिन्ऱ दिल्ला मम्मर्च् चिन्दैय नॅन्निनुम् वीरर्
वरुहिन्ऱ शुवट्टै योर्न्दान् शॅविहळाल् वयिरत् तोळान् 2654

ॲरिकिन्ऱ–संतापक; मूप्पिनालुम्–बुढ़ापे से और; एवुण्ट नोविनालुम्–शर के लगने से होनेवाली वेदना से; अरिक्किन्ऱ–जर्जर करनेवाले; तुन्पत्तालुम्–मानसिक चिन्ता से; अरुमै उयिर्प्पु अटङ्कि–अच्छे श्वास के बन्द होते; ऑन्ऱुम् तॆरिकिन्ऱतु इल्ला–कुछ न जान सकनेवाले; मम्मर् चिन्तैयन् ॲन्निनुम्–अस्पष्ट मन वाला रहा तो भी; वयिरम् तोळान्–वज्र-सम कन्धों वाले ने; वरुकिन्ऱ चुवट्टै–उनके आने की आहट; चॆविकळाल्–कानों से; ओर्न्तान्–सुन ली। २६५४

जाम्बवान संतापक बुढ़ापा, शरदत्त पीड़ा, अंदर ही अंदर छेदनेवाला दुःख —इनके प्रभाव से क्षीणश्वास रहे और उनका मन कुछ जानने की दशा में नहीं था और अस्पष्ट था। तो भी उसने लोगों के आने की आहट सुन ली। २६५४

अरक्कन्रो वॅन्तै याळ् मण्णलो वन्मन् ऱान्रो
इरक्कमुऱ् ऱरुळ वन्द तेवरो मुन्वि रेयो
वरक्कड वाऱ्ह ळॅल्लिन् माऱ्ऱलर् मलैन्दु पोनार्
पुरक्कवुळ् ळारे यॅन्न निनैन्दनन् पॉरुम ह्रीरन्दान् 2655

अरक्कन्रो–विभीषण क्या; ऍन्तै आळुम्–मेरे शासक; अण्णलो–प्रभु क्या; अनुमन् तानो–या हनुमान ही; इरक्कम् उऱ्ऱु–दया करके; अरुळ वन्त–उपकार करने के लिए आगत; तेवरो–देव लोग हैं; मुनिवरेयो–या मुनि हो; ऍल्लिल्–निशा में; माऱ्ऱलर्–शत्रु; मलैन्तु पोनार्–विजय पाकर लौट गये; पुरक्क उळ्ळारे–सहायता करनेवाले ही; वर कटवार्कळ्–आ गये होंगे; ऍन्न–ऐसा; निनैन्ततन्–सोचकर; पॉरुमल् तीर्न्तान्–दुःख से मुक्त हुआ। २६५५

उसने सोचा— आनेवाले कौन ? राक्षस विभीषण ? या मेरे शासक प्रभु श्रीराम ? या मारुति ही आ रहा है क्या ? या मुझ पर दया करके उपकारार्थ देव आ रहे हैं ? या मुनि लोग ? रात को शत्रु लड़ाई में विजय पाकर लौट जा चुके थे। अतः अब आनेवाले हमारे रक्षक ही होंगे। तब उसका मन आश्वस्त हुआ। २६५५

वन्दय निन्ऱु कुन्ऱिन् वार्न्दुवी ऴरुवि मानच्
चिन्दिय कण्णि नीर रेङ्गुवार् तम्मैत् तेऱ्ऱि
अनन्दमिल् कुणत्ति रियावि रणुहिनि रॅन्ऱा नैय
उयन्दन सुयन्दो मॅन्ऱ वोडण नुरैयॆक् केट्टान् 2656

वन्तु–आकर; अयल् निन्ऱु–पास खड़े होकर; कुन्ऱिन्–पर्वत से; वार्न्तु वीऴ्–गिरनेवाली; अरुवि मान–सरिता के समान; चिन्तिय–बहनेवाले; कण्णिन् नीरर्–अश्रु वाले; एङ्कुवार् तम्मै–व्याकुल रहनेवाले उन्हें; तेऱ्ऱि–ढाढ़स दिलाकर; अनन्तम् इल् कुणत्तिर्–अनंतगुणी; अणुकितिर् याविर्–पास आये कौन हो; ऍन्ऱान्–पूछा (जाम्बवान ने); ऐया–बाबा; उय्न्तनम्–जी गये; उय्न्तोम्–सकुशल हो गये; ऍन्ऱ–ऐसा जिसने कहा उस; वीटणन् उरैयै–विभीषण के वचन को; केट्टान्–सुना। २६५६

वे उसके पास आये। उनकी आँखों से पर्वत से झरनेवाली सरिता के समान अश्रुधारा बह रही थी। व्याकुल उन्हें आश्वस्त करके जाम्बवान ने पूछा कि हे अनन्त सुगुणी ! पास आये हुए कौन हो ? विभीषण आनन्द से चिल्लाया कि हम जी गये; जी गये। जाम्बवान ने वह सुना और स्वर पहचाना। २६५६

मऱ्ऱय निन्ऱा नियाव नॅन्नमा रुदियुम् वाऴि
कॉऱ्ऱव वनुम निन्ऱेन् ऱॉऴुदन नॅन्ऱु कूऱ
इऱ्ऱिल मैय वॅल्लो मॅऴुन्दन मॅऴुन्दो मॅन्ना
उऱ्ऱपे रुवहै याले योङ्गिना नूऱ्ऱ मुऱ्ऱान् 2657

मर्रु-फिर; अयल् निन्ट्रान्-पास खड़ा है; यावन्-कौन; ॲन्न-पूछने पर; मारुतियुम्-हनुमान ने भी; कॉर्र्व-विजयी वीर; वाळ्ि-जय हो; अनुमन् निन्ड्रेन्-हनुमान खड़ा हूँ; तॉळुतनन्-प्रणाम करता हूँ; ॲन्ड्र कूर-ऐसा कहा तो; इर्रिलम्-नष्ट नहीं हुए; ऐय-तात; ॲल्लोम ॲळुन्ततम्-हम सब उठ गये; ॲळुन्तोम्-उठ गये; ॲन्ना-कहकर; उर्र पेर् उवकैयाले-हुए बहुत आनन्द से; ओङ्कितान्-फूल गया। २६५७

फिर जाम्बवान ने पूछा— पास खड़ा कौन है ? मारुति ने उत्तर दिया कि विजयी वीर ! जय हो। मैं हनुमान खड़ा हूँ ! नमस्कार करता हूँ। प्रतापी जाम्बवान ने उत्साह के साथ कहा कि अब हम मरेंगे नहीं। सब जीवित हो जाएँगे। तात ! हम सब जी जायँगे। वह फूला नहीं समाया। २६५७

विरिञ्जन् वॅम् बडैयॅन्ड्रालुम् वेदत्ति नुट्पङ् गूरुम्
अरिन्दमन् ड्रन्नै यॉन्रु मार्र्रल वॅन्न मार्र्रल्
तॅरिन्दनन् मुन्ने यन्नान् शॅय्ददॅन् ड्रॅरित्ति यॅन्ड्रान्
पॅरुन्दहै तुन्ब वॅळ्ळत् तुयिलुळान् पॅरुम वॅन्ड्रान् 2658

बिरिञ्चन् वॅम्पडै ॲन्ड्रालुम्-भयानक ब्रह्मास्त्र ही क्यों न हो; वेतत्तिन् नुट्पम् कूरुम्-वेदों के सूक्ष्म अर्थतत्त्व; अरिन्तमन् तन्नै-अरिंदम श्रीराम को; ऑन्रुम् आर्र्रलतु-कुछ नहीं कर सकता; ॲन्नुम् आर्र्रल्-यह शक्तिदायक बात; तॅरिन्तनन्-जानता हूँ; अन्नान् चॅय्ततु ॲन्-उन्होंने क्या किया; मुन्ने तॅरित्ति-पहले बताओ; ॲन्ड्रान्-पूछा (जाम्बवान ने); पॅरुम्-आदरणीय; पॅरुन्तकै-सम्मान्य श्रीराम; तुन्प वॅळ्ळम्-दुःख की बहुलता से; तुयिलुळान्-निद्रित (मूर्च्छित) हैं; ॲन्ड्रान्-कहा। २६५८

"ब्रह्मास्त्र भी वेदसूक्ष्मतत्त्व अरिंदम श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह बलवर्धक बात मुझे मालूम है। उन्होंने क्या किया ? वह बताओ पहले।" —जाम्बवान ने पूछा। विभीषण ने उत्तर में कहा कि श्रीराम दुःखप्रवाह में निद्रित (मूर्च्छित) हैं। २६५८

अन्नवन् ड्रन्नैक् कण्डा लार्रुमो वाक्कै वेरे
इन्नुयि रॉन्ड्रे मूलत् तिरुवरु मॉरुव रेयाल्
इन्नदु किडप्पत् ताळा विड्गिनि यिमैप्पिन् मुन्नर्क्
कॉन्नियल् वयिरत् तोळाय् मरुन्दुबोय्क् कॉणर्दि यॅन्ड्रान् 2659

अन्नवन् तन्नै कण्टाल्-उस (लक्ष्मण) को देखकर; आर्रुमो-धैर्य धारण कर सकते हैं क्या; मूलत्तु-मूल बात को देखने पर; इरुवरुम् ऑरुवरे-दोनों एक हैं; आक्कै वेरु-शरीर भिन्न हैं; इन् उयिर् ऑन्ड्रे-प्यारे प्राण एक ही हैं; कॉन् इयल्-भयानक; वयिरम् तोळाय्-सुदृढ़ कन्धों वाले; इन्नतु किटप्प-बात जब ऐसी रहती है; इति-अब; इङ्कु ताळा-इधर विलम्ब न करके; इमैप्पिन् मुन्नर्-पलक

मारने से पहले; पोय्–जाकर; मरुन्तु कॊणर्ति–ओषधि लाओ; ऎन्ऱान्–कहा (जाम्बवान ने)। २६५८

जाम्बवान ने कहा— भाई की हालत देखकर वे कैसे धीरज धर सकेंगे ? मूल में दोनों एक ही हैं। शरीर दो पर प्राण एक हैं उनके। हे शत्रुनाशक कंधोंवाले ! जब हालत ऐसी है तो तुम यहाँ विलम्ब मत करो। जाओ पल भर में ओषधि (संजीवनी अमृत) लाओ। २६५९

ऎऴुबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरामनु मिळैय कोवुम्
मुळ्ळुमिव् वुलह मून्ऱु नल्लऱ मूर्त्ति तानुम्
वऴुवलिन् मऱैयु मुन्ऩाल् वाऴ्न्दन वाहु मैन्द
पॊऴुदिऱै ताऴा दॆन्शॊन् नॆऱिदरक् कडिदु पोदि 2660

मैन्त–पुत्र; ऎऴुपतु वॆळ्ळत्तोरुम्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' सब; इरामनुम्–श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा; मुळ्ळुम् इ उलकम् मुन्ऱुम्–सम्पूर्ण ये तीनों लोक; नल् अऱम् मूर्त्ति तानुम्–श्रेष्ठ धर्मदेवता; वऴुवल् इल् मऱैयुम्–अमोघ वेद; उन्ताल्–तुम्हारे कृत्य से; वाऴ्न्तन आकुम्–जी जाएँगे; इऱै पॊऴुतु ताऴातु–कुछ भी समय विलम्ब न करके; ऎन् चॊल् नॆऱि तर–मेरे वचन के मार्ग निर्दिष्ट करते; कटितु पोति–झट जाओ। २६६०

"पुत्र ! तुम मेरे कहे अनुसार मार्ग तय करके जाओ और अमृत लाओ, तो सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना, श्रीराम, छोटे राजा, पूर्ण रूप से ये तीनों लोक, अच्छे धर्मदेवता, अमोघ वेद —सब तुम्हारे कार्य से जीवित हो जायेंगे। जल्दी चलो। २६६०

पिन्बुळदिक् कडलॆन्ऩप् पॆयरन्द दऱ्पित् योशनैहळ् पेशनिन्ऱ
ऒन्बदिना यिरङ्गडन्दा लिमयमॆनुङ् गुलवरैयै युऱुदि युऱ्ऱाल्
तन्बॆरुमै योरिरण्डा यिरमुळो शनैयदुपिन् ऱविरप् पोनाल्
मुन्बुळयो शनैयॆल्ला मुऱ्ऱिनैपॊऱ् कूडञ्जॆन् ऱुऱुदि मॊय्म्ब 2661

मॊय्म्प–विक्रमी; इ कटल्–इस सागर को; पिन्पु उळतु ऎन्ऩ–पीछे रहता छोड़; पॆयर्न्ततन् पिन्–आगे जाने के बाद; पेच निन्ऱ योचनैकळ्–कथनीय योजन; ऒन्पतिनायिरम्–नौ हज़ार; कटन्ताल्–पार करोगे तो; इमयम् ऎनुम् कुलवरैयै–हिमवान नामक कुलगिरि को; उऱुति–पहुँचोगे; उऱ्ऱाल्–पहुँचने पर; तन् पॆरुमै–उसकी चौड़ाई; ओर् इरण्टु आयिरम् उळ–दो हज़ार योजन है; पिन् तविर–उसे पीछे छोड़; मुन्पु उळ–आगे रहे; योचनै ऎल्लाम् मुऱ्ऱिनै–सभी योजनों को पूरी पार करके; पॊन् कूटम् चॆन्ऱु उऱुति–हेमकूट जा पहुँचो। २६६१

बलवान ! इस समुद्र को पार कर नौ हज़ार योजन जाओ तो हिमालय नामक कुलगिरि मिलेगी। उसकी चौड़ाई दो हज़ार योजन है। उसे पार करके नौ हज़ार योजन जाओ तो हेमकूट पर जाओगे। २६६१

इम्मलैक्कु मौत्बदिन्ना यिरमुळदा लियोशनैयि न्निडद मॅन्नुञ्
जॅम्मलैक्कु मुळवाय वत्तनैयो शनैकडन्दार् चॅन्रु काण्डि
ॲम्मलैक्कुम् बॅरिदाय वडमलैयै यम्मलैयि नहल मॅण्णिन्
मॉय्म्मलैन्द तिण्डोळाय् मुप्पत्ती रायिरमियो शनैयिन् मुर्रुम् 2662

इ मलैक्कुम्–इस (हेमकूट) पर्वत से; ऑन्पतिनायिरम् योचनैयिल्–नौ हज़ार योजन पर; निटतम् ॲन्नुम् चॅम्मलै उळ्ळतु–निषध नामक लाल पर्वत है; अम्मलैक्कुम्–उस गिरि से; उळवाय् अत्तनै योचनै कटन्ताल्–जो है उतने योजन की दूरी पार करो तो; ॲ मलैक्कुम् पॅरितु आय–सभी पर्वतों से बड़े; वट मलैयै चॅन्रु काण्टि–(मेरु) उत्तर गिरि को जा देखोगे; अ मलैयिन् अकलम् ऑण्णिन्–उस गिरि की चौड़ाई सोचो तो; मॉय् मलैन्त तिण् तोळाय्–सबल और युद्धचतुर सुदृढ़ कंधों वाले; मुप्पत्तीरायिरम् योचनैयिन् मुर्रुम्–बत्तीस हज़ार योजन की होगी। २६६२

हेमकूट से नौ हज़ार योजन पर श्रेष्ठ निषध पहाड़ है। फिर नौ हज़ार योजन चलो तो सबसे बड़े 'मेरु पर्वत पर पहुँचोगे। हे सबल तथा युद्धसमर्थ कंधोंवाले! उसकी चौड़ाई बत्तीस हज़ार योजन में समाप्त होगी। २६६२

मेरुविनैक् कडन्दप्पा लॉन्बदिना यिरमुळवो शनैयै विट्टाल्
नेरणुहु नीलगिरि तानिरण्डा यिरमुळयो शनैयि निर्कुम्
मारुदिमर् ऱदर्कप्पा लियोशनैना लायिरत्तिन् मरुन्दु वैहुङ्
गार्वरैयैक् काणुदिमर् ऱडुकाण वित्तुयर्क्कुक् करैयुङ् गाण्डि 2663

मेरुविनै कटन्तु–मेरु को पार करके; अप्पाल्–आगे; ऑन्पतिनायिरम् उळ योचनैयै विट्टाल्–नौ हज़ार योजन पार करो तो; नेर् अणुकुम्–सामने मिलनेवाली; नील किरि तान्–नीलगिरि ही है; इरण्टायिरम् उळ योचनैयिन् निर्कुम्–दो हज़ार योजन (की चौड़ाई) ले खड़ी है; मारुति–मारुति; म र्रु–फिर; अतर्कु अप्पाल्–उसके उस पार; नालायिरम् योचनैयिल्–चार हज़ार योजन पर; मरुन्तु वैकुम्–जिसमें ओषधि रहती है; कार् वरैयै–उस काले पर्वत को; काणुति–देखोगे; काण–देखो तो; इ तुयर्क्कु–इस दुःख का; करैयुम् काण्टि–कूल भी देख लोगे। २६६३

मेरु के बाद नौ हज़ार योजन पार करो तो सामने नीलगिरि ही होगी। मारुति! उससे चार हज़ार योजन पर वह काला पर्वत है, जिसमें ये ओषधियाँ हैं। उसको देख लो तो समझो कि दुःख के पार पहुँच गये। २६६३

माण्डारै युय्विक्कु .मरुन्दॊन्रु मॅय्वेरु वहिर्हळाहक्
कोण्डालुम् वॉरुन्दु विप्पदॊरुमरुन्दुम् वडॅक्कलङ्गळ् किळर्प्पदॊन्रुम्
मोण्डेयुन् दम्मुरुवे यरुळुवदोर् मॅय्म्मरुन्दु मुळनीवीर
आण्डेहिक् कॊणर्दियॆन वडॆयाळत् तॊडुमुरैत्ता नरिविन्मिक्कान् 2664

माण्टारै–मरे हुओं को; उय्विक्कुम्–जिलाने की; मरुन्तु ऑन्ऱु–एक ओषधि और; मॅय्–शरीर; वेऱु वकिर्कळ् आक–अलग-अलग भागों में; कीण्टालुम्–चिर जाए तो भी; पॊरुन्तुविप्पतु–मिलानेवाली; ऑरु मरुन्तुम्–एक ओषधि; पटॅकलङ्कळ्–हथियारों को; किळर्प्पतु ऑन्ऱुम्–(शरीर से) निकालनेवाली एक ओषधि और; मीण्टॅयुम्–फिर से; तम् उरुवे–(विकृत मूल) रूप को; अरुळुवतु–दिलानेवाली; ओर् मॅय् मरुन्तुम्–एक सच्ची ओषधि; उळ–हैं; वीर–वीर; आण्टु एकि–वहाँ जाकर; कॊणर्ति–लाओ; ऍन्ऩ–ऐसा; अटॅयाळत्तॊटुम्–उनके लक्षणों के साथ; उरैत्तान्–कहा; अऱिविन् मिक्कान्–मतिश्रेष्ठ (जाम्बवान) ने। २६६४

मतिश्रेष्ठ जाम्ववान ने कहा— मृतक को जिलाने की ओषधि एक; छिन्न शरीरों को एक करानेवाली एक; शरीर पर लगे हथियारों को निकालनेवाली एक और विकार-प्राप्त आकार को मूल रूप दिलानेवाली एक— (आदि) चार कारगर ओषधियाँ हैं। वीर! तुम वहाँ जाकर उन्हें लाओ। साथ-साथ जाम्ववान ने उनके लक्षण भी बताये। २६६४

इन्ऩमरुन् दॊरुनान्गुम् बयोददियैक् कलक्कियञान् ऱॅळुन्द तेवर्
मुन्ऩियमैत् तनर्मऱैक्कु मॅट्टाद परञ्जुडरिव् वुलह मूनऱुम्
तन्ऩिरुता ळुळ्ळडक्किप् पॊलि पॊळ्दिन् यान्मुरशञ् जाऱ्ऱुम्वेलै
अन्ऩवैकण् डुयावुदलुन् दॊन्मुनिव रवर्ऱियलॆऩ् कऱिवित् ताराल् 2665

इन्ऩ मरुन्तु–ये ओषधियाँ; ऑरु नान्कुम्–चारों; तेवर्–देवों के; पयोततियैं कलक्किय ञान्ऱु–पयोधि को मथते दिन; ऍळुन्त–प्रकट हुईं; मुन्ऩि–(उनका प्रभाव) सोचकर; अमैत्तनर्–सुरक्षित रखा है; मऱैक्कुम् ऍट्टात–वेद के लिए भी अग्राह्य; परम् चुटर्–परमज्योतिस्वरूप (त्रिविक्रम); इव् उलकम् मून्ऱुम्–इन तीनों लोकों को; तन् इरु ताळ् उळ् अटक्कि–अपने दोनों चरणों के अन्तर्गत करके; पॊलि पॊळ्तिन्–जब शोभे तब; यान् मुरचम् चाऱ्ऱुम् वेलै–मैं जब ढिंढोरा पीटता गया; अन्ऩवै कण्टु–उनको देखकर; उयावुतलुम्–प्रश्न करने पर; तॊल् मुनिवर्–प्राचीन मुनियों ने; अवऱ्ऱु इयल्–उनके गुणों को; ऍऩ्क्कु अऱिवित्तार्–मुझे बताया। २६६५

ये सब उस दिन प्रकट हुई थीं, जिस दिन देवों ने पयोदधि को मथा था। उनकी शक्ति जानकर उन्हें गोपनीय रखा है। जब वेदों के लिए भी अग्राह्य परमज्योतिस्वरूप त्रिविक्रम अपने दोनों चरणों के दायरे में इन लोकों को मापकर शोभायमान रहे, तब मैंने मुनादी पीटी थी। उस अवसर पर इन्हें देखकर विवरण पूछा, तो प्राचीन मुनियों ने उनके गुण बताये थे। २६६५

इम्मरुन्दु कात्तुरैब वॅण्णिलवार् ऱॅय्वङ्ग ळिरङ्गा यार्क्कुम्
नॅय्म्मरुङ्गु पडरहिल्ला नॅडुनेमिप् पडॅयुमवर् ऱुडन्ऱे निऱ्कुम्

पॊय्म्मरुङ्गि तिल्लादाय् पुरिहिन्ऱ कारियत्तिन् पॊरुळै नोक्किक्
कैम्मरुङ्गुण् डानिन्नैक् कायावा मप्पुऱम्बोय्क् करक्कु मॆन्ऱान् 2666

इ मरुन्तु–इन ओषधियों को; कात्तु उऱैव–जो रक्षित करते रहते हैं; तय्वङ्कळ् ऍण्णिल–वे देवता असंख्यक हैं; यार्क्कुम् इरङ्का–किसी पर दया नहीं करते; नॆय्–धृतरंजित; मरुङ्कु पटरकिल्ला–पास भटकने न देनेवाले; नॆटु नेमि पटैयुम्–बड़ा चक्रायुध भी; अवर्ऱुटने निऱ्कुम्–उनका सहायक रहता है; पॊय् मरुङ्किन् निल्लाताय्–असत्य के पास भी न जानेवाले; पुरिकिन्ऱ कारियत्तिन् पॊरुळै नोक्कि–तुम जो करनेवाले हो उस कार्य को देखकर; कै मरुङ्कु उण्टाम्–वे तुम्हारे हाथ में आ जाएँगी; निन्नै कायावाम्–वे देवता भी तुमसे रुष्ट नहीं होंगे; अप्पुऱम् पोय् करक्कुम्–दूसरी ओर जाकर छिप जायँगे; ऍन्ऱान्–कहा। २६६६

असंख्य देव इन ओषधियों की रक्षा करते रहते हैं। वे किसी पर रहम नहीं करेंगे। धृतरंजित और अगम चक्रायुध भी इनकी सहायता में रहता है। हे असत्य के पास भी न जानेवाले! तुम्हारे कार्य का हेतु समझकर वे औषध तुम्हारे हाथ लग जाएँगी। वे देव भी तुम पर कोप नहीं करेंगे। वे स्वयं अलग छिप जाएँगे। जाम्बवान ने बताया। २६६६

ईङ्गिदुवे पणियाहि निऱन्दारुम् बिऱन्दारे यॆङ्गोक् कियादुन्
तीङ्गिडैयू ऱॆय्दामऱ् ऱॆरुट्टिडुदिर्बो यॆन्नच्चॊल्लि यवरैत् तीर्न्दान्
ओङ्गिनन्वा नॆडुमुहट्टै युऱ्ऱनन्पॊर् ऱोळिरण्डुन् दिशैयो डॊक्क
वीङ्गिनवा हाशत्तै विळुङ्गिनन्ने यन्नवळर्न्दान् वेदम् बॊल्वान् 2667

ईङ्कु–यहाँ; इतुवे–यही; पणियाकित्–आज्ञा हो; इऱन्तारुम्–मृतक भी; पिऱन्तारे–जन्म ले चुके; ऍम् कोक्कु–हमारे राजा को; यातुम्–कोई भी; तीङ्कु–हानि; इटैयूऱु–बाधा; ऍय्तामल्–न हो ऐसा; पोय्–जाकर; तॆरुट्टिटुतिर्–समझाओ; ऍन्न चॊल्लि–ऐसा कहकर; अवरै तीर्न्तान्–उनसे हटा (हनुमान); वेतम् पोल्वान्–वेद-सम; ओङ्कितन्–ऊँचा बढ़कर; वान् नॆटु मुकट्टै–आकाश की चोटी को; उऱ्ऱनन्–पहुँचा; पॊन् तोळ् इरण्टुम्–सुन्दर दोनों कन्धे; तिचैयोटु ऒक्क–दिशाओं से एक-सम; वीङ्कित्त–फूले; आकाचत्तै विळुङ्कितन्ने ऍन–आकाश को निगल लिया (समा लिया) जैसे; वळर्न्तान्–विवर्धित हुआ। २६६७

हनुमान ने उत्साह के साथ कहा कि इतना ही हुक्म है तो सभी मरे हुए लोग जी उठे। देखो हमारे प्रभु पर कोई आँच न आये—इसकी सावधानी रखो! वह उन्हें छोड़ अलग हुआ। वेदसदृश आकाश की चोटी को छूते हुए बढ़ा। उसके दोनों सुन्दर कंधे दिशाओं के समान वर्द्धित हुए। आकाश को निगल लिया हो, ऐसा वह फूल गया। २६६७

कोळोडु तारहैहळ् कोत्तमैत्त मणियारक् कोवै पोन्ऱ
तोळोडु तोळहल मायिरमियो शत्तॆयॆन्वुन् जॊल्ल वॊण्णा

ताळोडु ताळ्पॅयर्क्क विडमिलदा हियदिलङ्गै तडक्कै वीश
नीळोडु तिशैपोदा विशैत्तॅऴुवा नुरुवत्ति निलैयि दम्मा 2668

कोळोटु–ग्रहों के साथ; तारकैकळ्–नक्षत्र; कोत्तु अमैत्त–गूँथकर रचित; मणि आरम्–रत्नहारों के; कोवै पोऩ्ऱ–समूह-से लगे; तोळोटु तोळ्–कन्धे से कन्धा; अकलम्–चौड़ाई में; आयिरम् योचऩै ॲतवुम्–हज़ार योजन ही; चॊल्ल ऒण्णा–कह नहीं सकते; ताळोटु ताळ् पॅयर्क्क–पैर बदलने के लिए; इलङ्कै–लंका; इटम् इलतु आकियतु–ख़ाली स्थान से हीन हो गयी; तट कै वीच–विशाल हाथों को हिलाने; नीळ् ओटु तिचै–लम्बी-चौड़ी दिशाएँ; पोता–पर्याप्त नहीं रहीं; विचैत्तु ॲऴुवान्–झटका देकर जो उठा, उसके; उरुवत्तिन् निलै इतु–आकार की यह स्थिति थी। २६६८

तब ग्रह और तारे गुँथे हुए रत्नहारों के समान लगे। कंधे से कंधा हज़ार योजन से भी दूर पड़ता था। पैर बदलकर रखने के लिए लंका में स्थान नहीं रह गया। विशाल हाथों को हिलाने के लिए दिशाएँ कम पड़ गयीं। झटके के साथ जो उठा, उस हनुमान के आकार की स्थिति यह थी। २६६८

वाल्वळैत्तुक् कैन्निमिर्त्तु वायिनैयुञ् जिऱिदहल मडित्तु मानक्
कानिलत्ति निडैयूनऱि युरम्विरित्तुक् कळुत्तिनैयुञ् जुरुक्किक् काट्टित्
तोन्मयिर्क्कुन् दळञ्जिलिर्प्प विशैत्तॅऴुन्दा नव्विलङ्गै तुळङ्गिच् चूऴ्न्द
वेलैयिर्पुक् कऴुन्दियदोर् मरक्कलम्बोऱ् ऱिरिन्दयर विशयत् तोळान् 2669

विचयम् तोळान्–विजय-स्कन्ध; वाल् वळैत्तु–पूँछ टेढ़ी करके; कै निमिर्त्तु–हाथ को ऊँचा उठाकर; वायितैयुम्–मुख को; चिऱितु अकल–थोड़ा चौड़ा; मटित्तु–मुड़ाकर; मानम् काल्–बड़ पैरों को; निलत्तिन् इटै–भूमि में; ऊऩ्ऱि–स्थिर रखकर; उरम् विरित्तु–छाती फुलाकर; कळुत्तितैयुम्–गले को; चुरुक्कि काट्टि–सँकरा कर दर्शित करके; तोल्–चर्म पर के; मयिर् कुन्तळम् चिलिर्प्प–बालों को पुलकित करके; तुळन्ति–अस्त-व्यस्त हो; चूऴ्न्त–आवरण के; वेलैयिल् पुक्कु–समुद्र में घुसकर; अऴुन्तियतु–जो डूब गया उस; ओर् मरक्कलम् पोल्–एक पोत के समान; अव् इलङ्कै–उस लंका के; तिरिन्तु अयर–घूमकर अस्त-व्यस्त हो ऐसा; विचैत्तु ॲऴुन्तान्–ज़ोर लगाकर उछला। २६६९

विजयस्कंध हनुमान ने पूँछ टेढ़ी की; हाथ उठाये; मुख को थोड़ा चौड़ा मुड़ाया; प्रशंसा योग्य पैर भूमि पर गड़ाये; छाती फुलायी और कंठ को संकुचित कर लिया। उसके शरीर पर के रोम पुलकित हुए। वह ससंभ्रम ज़ोर से उठा तो लंका नगरी समुद्रमध्य पोत के समान हिल उठी और कंपित हुई। २६६९

किळिन्दनमा मळैक्कुलङ्गळ् कीण्डदुनीण् डहल्वेलै किळक्कु मेऱ्कुम्
वॊळिन्दन मीन्दोडर्न्वॅळुन्द पॊरुप्पिनमुन् तरुक्कुलमुम् बिऱवुम् बॊङ्गि

अळिन्दनवा नवर्मान माहायत् तिडैयिनिऱ्पे रशनि यॆन्न
निळुन्दननीर्क् कडलळुन्द वेरिनमेऱ् कीरिनपोय्त् तिशैह ळॆल्लाम् 2670

मा मळै कुलङ्कळ्–बड़े मेघवृन्द; किळिन्तन–चिर गये; नीण्टु अकल्–लम्बा-चौड़ा; वेलै–सागर; कीण्टतु–चिर गया; किळक्कुम् मेऱ्कुम्–पूर्व और पश्चिम में; मीन् पॊळिन्तन–नक्षत्र चू पड़े; पॊरुप्पु इनमुम्–पर्वत-श्रेणियाँ और; तरु कुलमुम्–तरुवृन्द; पिऱवुम्–और अन्य; पॊङ्कि–उठे और; तॊटर्न्तु ॲळुन्त–साथ लगे ऊपर गये; वानवर् मानम्–देवों के यान; आकायत्तु इटैयितिल्–आकाश के मध्य; पेर् अचनि ॲन्न–बड़े वज्रों के समान; नीर् कटल्–उदधि में; अळुन्त–डूबते हुए; विळुन्तन–गिरे; तिचैकळ् ॲल्लाम् पोय्–सारी दिशाओं को जाकर; कीऱिन–फाड़ डाला (जल ने)। २६७०

और बड़े मेघसमूह चिरे। लंबा-चौड़ा सागर फटा। पूरब और पश्चिम में नक्षत्र चू गये। पर्वतसमूह और तरुकुल साथ उठ चले। देवयान आकाश-मध्य अशनि के समान समुद्र में गिरे और डूबे। समुद्रजल दिशाओं को फाड़ गया। २६७०

पायन्दननङ् गप्पॊळुदे परुवरैह ळॆनैप्पलवुम् वडपा हत्तुच्
चायन्दनपे रुडऱ्पिऱन्द शण्डमा रुदम्वीशत् तादै शाल
ओयन्दनॆंन् ऱुरैशॆय्य विशुम्बूडु पडर्हिन्ऱा नुरुवे हत्ताऱ्
कायन्दनवे लैकण्मेहङ् गरिन्दनवॆन् दॆरिन्दबॆरुङ् गान मॆल्लाम् 2671

अप्पॊळुते–तभी; अङ्कु पायन्तनन्–वहाँ उछला; परुवरैकळ्–बड़े-बड़े पर्वत; एनै पलवुम्–अन्य अनेक; पेर् उटल्–बृहदाकार शरीर से; पिऱन्त–निकले; चण्टम् मारुतम् वीच–चण्डमारुत के बहने से; वट पाकत्तु चायन्तन–उत्तर में गिरे; तातै–पिता (पवनदेव); चाल ओयन्तनन्–निपट थक गया; ॲन्ऱु उरै चॆय्य–कहा जाय ऐसा; विचुम्पु ऊटु–आकाश-मार्ग से; पटर्किन्ऱान्–जो जा रहा था उसके; उरु वेकत्ताल्–ग़ज़ब के वेग से; वेलैकळ् कायन्तन–समुद्र सूखे; मेकम् करिन्तन–मेघ झुलसे; पॆरु कानम् ॲल्लाम्–बड़े-बड़े कानन सब; वॆन्तु ॲरिन्त–जल-भुन गये। २६७१

तभी वह उधर झपटा। उसके बड़े शरीर से पवन चालित हुआ और उससे बड़े-बड़े पर्वत उत्तर की तरफ़ झुक गये। हनुमान इतने वेग से आकाश में उड़ता चला कि लोग कहने लगे कि उसका पिता बहुत थक गया। उसके शरीर के वेग की गति से समुद्र सूख गये और मेघ झुलस गये। सभी बड़े कानन जल-भुन गये। २६७१

कडल्पिन्ने निमिर्न्दोडक् कान्मुन्ने कडिदोडक् कालिऱ् चॆल्वान्
उडल्मुन्ने शॆलवॊळ्ळङ् गडैकुळैयाच् चॆलच्चॆल्वा नरुवे नोक्कि
अडन्मुन्ने तॊडङ्गियना ळाळुहडल्शू ळिलङ्गैयॆन्नु मरक्कर् वाळुन्
दिडर्मुन्नो रिडैप्पडुत्तुप् पऱित्तननन् दुयरॆन्ऱार् तेव रॆल्लाम् 2672

कटल्–सागर; पिन्ते–पीछे-पीछे; निमिर्न्तु ओट–तनकर चला और; काल्–पवन; मुन्ते–आगे-आगे; कटितु ओट–तेज़ी से चला; कालिल् चॅल्वान्–पवनगति से चलनेवाला; उटल् मुन्ते चॅल–शरीर को आगे चलाकर; उळ्ळम्–मन को; कटै कुळैया चॅल–पीछे चलाता हुआ; चॅल्वान्–जो जा रहा था उसके; उरुवै नोक्कि–आकार को देखकर; तेवर् ॲल्लाम्–सभी देवों ने; मुन्ते–पहले; अटल् तोंटङ्किय नाळ्–बलप्रदर्शन आरम्भ करने के दिन; आळ् कटल् चूळ्–गहरे सागर से आवृत; इलङ्कै ॲंनुम्–लंका नाम का; अरक्कर् वाळुम् तिटर्–राक्षसावास द्वीप को; मुन्नीर् इटै पट्टुतु–(दुःख-) सागर में डुबोकर; नम् तुयर् पट्रितुततन्–हमारे दुःख को दूर कर दिया; ॲन्ऱार्–कहा। २६७२

समुद्र उठकर पीछे-पीछे चला। पवन आगे भागा। पवनगति में जानेवाले हनुमान का शरीर आगे गया और मन पीछे। उसका रूप देखकर देवों ने कहा कि जब इसने अपना पराक्रम-प्रदर्शन आरम्भ किया, तभी समुद्र-वलयित लंका का टीला दुःख-सागर में डूब गया और उसने हमारे दुःख को दूर कर दिया। २६७२

मेहत्तिन् पदङ्गडन्दु वॆंङ्गदिरुल् दण्गदिरुम् विरैविड् चॆल्लुम्
माहत्ति नॆरिक्कप्पाल् वानमीन् कुलम्वळङ्गुम् वरैप्पु नीङ्गिप्
पोहत्तिन् कुरितॊडर्न्दार् पुहलिडङ्गळ् पिऱ्पडप्पोय्प् पूविन् वन्द
एहत्तन् दणनिरुक्कै यिनिच्चेय्त्तन् ड्रासॆन्न वॆळ्न्दु शॆन्ड्रान् 2673

मेकत्तिन् पतम् कटन्तु–मेघों का स्थान पार करके; वॆम् कतिरुम्–गरम किरणमाली; तण् कतिरुम्–शीतल-किरण चन्द्र; विरैविल् चॅल्लुम्–जहाँ सवेग चलते हैं; माकत्तिन् नॆरिक्कु अप्पाल्–उस आकाश-मार्ग के उस पार; वान मीन् कुलम्–आकाश के नक्षत्रगण; वळङ्कुम्–जहाँ संचार करते हैं; वरैप्पु नीङ्कि–उस सीमा को भी पार करके; पोकत्तिन् कुरि तॊटर्न्तार्–(स्वर्ग-) भोग को उद्देश्य करके जिन्होंने यागादि कर्म किये हैं; पुकल् इटङ्कळ्–उन लोगों के गम्य-स्थान स्वर्ग आदि स्थानों को; पिन् पट पोय्–पीछे छोड़ जाकर; पूविन् वन्त–(श्रीविष्णु के नाभी-) कमल पर प्रगट; एकत्तु अन्तणन्–अद्वितीय ब्राह्मण (ब्रह्मा) का; इरुक्कै–लोक; इनि–अब; चेय्त्तु अन्ऱु आम्–दूर नहीं है; ॲन्न–ऐसा कहने योग्य स्थिति पर; ॲळ्न्तु चॅन्ऱान्–उड़ चला। २६७३

उसने मेघों का स्थान, गरमकिरणमाली सूर्य और शीतलकिरण चन्द्र का आकाश-मार्ग आदि के उस पार नक्षत्रमंडल की सीमा पार की। भोगप्रसक्त लोग यागादि करके जहाँ पहुँचते हैं, उन स्वर्गादि लोकों को भी पीछे छोड़ वह आगे चला। अब 'श्रीविष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा का लोक दूर नहीं' जहाँ कहा जा सकता था उस स्थान पर पहुँचा। २६७३

वाननाट् टुरैहिन्ड्रार् वयक्कलुळन् वल्विशैयान् मायन् वॆहुन्
वाननाद् टुरुहिन्ड्रा नॆन्ऱुरैत्तार् शिलर्शिलर्हळ् विरिज्जन् ड्रान्ड्रन्

एत्तैनाट् टॅळ्हित्ऱा नॅत्ऱुरैत्तार् शिलर्शिलर्ह ळीश नल्लार्
पोत्तनाट् टिडैपोह वल्लत्तो विवत्मुक्कट् पुतिद नॅत्ऱार् 2674

वातम् नाट्टु उऱैकिन्ऱार् चिलर्–आकाशलोकवासी कुछ; वयम् कलुळऩ्–बलवान गरुड़; वल् विचैयाल्–बहुत जोर के साथ; मायन् वैकुम्–जहाँ मायावी (श्रीविष्णु) रहते हैं; तातम् नाट्टु उऱुकिन्ऱान्–उस स्थान (लोक) को जा रहा है; ॲन्ऱु उरैत्तार्–ऐसा बोले; चिलर्कळ्–कुछ; विरिञ्चन् तान्–विरंचि ही; तन्–अपने; एत्तै नाट्–अन्य लोक को; ॲळ्किन्ऱान्–जाता है; ॲन्ऱु–ऐसा; उरैत्तार्–बोले; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ईचन् अल्लाल्–ईश्वर नहीं तो; पोत नाट्टु इटै–बहुत ऊँचे लोक में; पोक वल्लत्तो–जा सकता है क्या वह; इवन् मुक्कण् पुनितन्–यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही है; ॲन्ऱार्–ऐसा बोले। २६७४

कुछ व्योमलोकवासियों ने कहा कि बलवान गरुड़ अधिक तेज़ी से श्रीविष्णु के वासस्थान को जा रहा है! कुछ ने कहा कि विरंचि अपने दूसरे लोक (ब्रह्मलोक) को जा रहा है! कुछ-कुछ ने कहा कि ईश्वर को छोड़ कोई इतने ऊपर के लोक में जा सकेगा क्या? अतः यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही हैं! । २६७४

वेण्डुरुवङ् गॊण्डुवन्दु विळैयाडु हित्ऱान्मॅय् वेद नान्गुन्
दीण्डुरुव नल्लाद तिरुमाले यिवतॅन्ऱार् तॅरिय नोक्किक्
काण्डुमॅन विमैप्पदन्मुन् कट्पुलत्तैक् कडन्दहलु मिन्नुङ् गाण्मिन्
मीण्डुवरुन् दरमल्ला वीट्टुलहम् बुहुमॅन्ऱार् मॅन्मे लुळ्ळार् 2675

मॅत् मेल् उळ्ळार्–ऊपर और ऊपर रहनेवाले; वेण्टुरुवम् कॊण्टु वन्तु–मनचाहा रूप ले आकर; विळैयाट्किन्ऱान्–खेलता; मॅय्–सचमुच; वेतम् नान्कुम्–चारों वेदों के; तीण्टु उरुवन् अल्लात–अस्पृश्य रूप वाला; तिरुमाले इवन्–श्रीविष्णु ही है; ॲन्ऱार्–ऐसा बोले; तॅरिय नोक्कि–खूब ध्यान देकर; काण्टुम्–देखें; ॲन–सोचकर; इमैप्पतन् मुन्–पलक मारने से पहले; कण् पुलत्तै कटन्तु–दृष्टि की भूमि को पार कर; अकलुम्–दूर जानेवाला है; इन्नुम् काण्मिन्–और देखो; मीण्टु वरुम् तरम् अल्ला–जहाँ से लौटने का मार्ग नहीं होता उस; वीटु उलकम् पुकुम्–मोक्षलोक में जाएगा; ॲन्ऱार्–कहा। २६७५

ऊपर और ऊपर रहनेवालों ने अनुमान किया कि ये चतुर्वेद-अग्राह्य विष्णु ही होंगे। मनचाहा रूप ले आया है और लीला रच रहा है! ध्यान लगाकर देखें कहकर देखा और कहा कि पलक झपने के समय के अन्दर दृष्टिपथ पार कर लेता है! और देखो। वह उस मोक्षलोक पहुँच जायगा, जहाँ से लौटना नहीं होता। २६७५

उरुवॅन्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळॊळियॅन्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळॊळिरु मेनि
अरुवॅन्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळण्डत्तुक् कप्पुऱनिन् ऱुलहु माक्कुङ्
गरुवॅन्ऱार् शिलर्शिलर्हळ् काऱ्ऱॅन्ऱार् शिलर्शिलर्हळ् कडलैत् ताविच्
चॅरुवॅन्ऱा तिलैयॊन्ऱुन् दॅरियहिला रुलहत्तुन् दॅरियुञ् जॅल्वर् 2676

उलकु अनैत्तुम्–सारे लोकों को; तॆरियुम् चॆल्वम्–जाननेवाले (ज्ञान के) धनी; कटलै तावि–सागर लाँघकर; चॆरु वॆन्ऱान्–युद्ध जिसने जीता था उसकी; निलै ऒन्ऱुम् तॆरियकिलार्–स्थिति कुछ नहीं जान सके; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ऒळिवम् मेति–शोभायमान शरीर; उरु–(साकार) रूप है; ऎन्ऱार्–कहते; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ऒळि–ज्योति है; ऎन्ऱार्–कहते; पिन्नुम् चिलर् चिलर्–और कोई-कोई; काऱ्ऱु ऎन्ऱार्–वायु कहते; चिलर् चिलर्–अन्य कोई-कोई; अरु ऎन्ऱार्–निराकार कहते; मऱ्ऱुम् चिलर् चिलर्–अन्य कुछ-कुछ; अण्टत्तुक्कु अप्पुरम् निन्ऱु–अण्ड के उस पार से; उलकम् आक्कुम्–लोक सृष्ट करनेवाला; करु–निमित्त कारण (ईश्वर) है; ऎन्ऱार्–कहते। २६७६

सर्वलोकज्ञानधनी भी समझ नहीं सके कि समुद्र लाँघकर युद्ध जिसने जीता था, उस हनुमान की स्थिति क्या है! कुछ लोगों ने कहा कि छविमय शरीर साकार है। कुछ लोगों ने केवल ज्योति माना। और कुछ लोगों ने पवन का अनुमान लगाया। कुछ लोगों ने कहा कि यह अरूप है! कुछ लोगों का अनुमान था कि वह अण्ड पार रहनेवाला लोकसृष्टि का निमित्त कारण है। २६७६

वाशनाण् मलरोन्ऱ नुलहळवु निमिर्न्दनमेल् वान्न मान्न
काशमा यिन्नवॆल्लाङ् गरन्ददन्न दुरुविडैये कन्नहत् तोळ्हळ्
वीशवान् मुहडुरिञ्ज विशैत्तॆऴुवा नुडऱ्पिऱन्द मुऴक्कम् विम्म
आशंका वलर्तलैहळ् पॊदिरॆऱिन्दार् विदिरॆऱिन्द दण्ड कोळम् 2677

वाचम् नाळ् मलरोन् तन्–सुगन्धित नवविकसित कमलासन के; उलकु अळवुम्–सत्यलोक तक; निमिर्न्तन–ऊँचे; मेल् वानम् आन–ऊपर के आकाश जो हैं; काचम् आयिन ऎल्लाम्–उन सारे आकाशों को; करन्त–छिपानेवाले; तनतु उरु इटैयॆ–अपने शरीर के; कनकम् तोळ्कळ्–मनोरम कन्धे; वीच–आगे-पीछे गये, इसलिए; वान् मुकटु उरिञ्च–आकाश की चोटी को स्पर्श करते हुए; विचैत्तु ऎऴुवान्–ज़ोर से उठ चलनेवाले हनुमान के; उटल् पिऱन्त–शरीर से निकला; मुऴक्कम्–शब्द; विम्म–स्फीत हो उठा तो; आचै कावलर्–दिग्पालक; तलैकळ् पॊतिर् ऎऱिन्तार्–काँपते सिर के हो गये; अण्टकोळम् वितिर् ऎऱिन्तत–अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

उसके रूप के अन्दर सुगंधित तथा नितनवविकसित कमल के देव ब्रह्मा के सत्यलोक तक फैला आकाश सब छिप सकता था। अपने स्वर्ण-कंधों को हिलाते हुए जब वह आकाश को स्पर्श करता उठा, तब उसके शरीर से ज़ोर का शोर उठा। उसके बढ़ने से दिग्पालों के सिर काँप गये और अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

तॊडुत्तनाण् मालै वान्नोर् मुनिवरे मुदल तॊल्लोर्
अडुत्तनान् मऱैहु ळोदि वाऴ्त्तला लवणर् वेन्दन्

कॊडुत्तना ळळन्दु हॊण्ड कुऱळऩार् कुऱिय पादम्
ऎडुत्तना ळॊत्त दण्ण लॆऴुन्दना ळुलहुक् कॆल्लाम् 2678

अण्णल् ऎऴुन्त नाळ्–महिमावान जिस दिन ऊँचा उठा वह दिन; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोकों के लिए; तॊट्टुत नाळ् मालै–गुँथी हुई नव-विकसित पुष्पों की मालाधारी; वानोर्–देव; मुनिवर् मुतल–मुनि आदि; तॊल्लोर्–प्राचीन लोग; अडुत्त–उचित; नान् मऱैकळ् ओति–चतुर्वेदोच्चारण करके; वाऴ्त्तलाल्–मंगल-वचन करते रहे इसलिए; अवुणर् वेन्तऩ्–दानवराजा महाबली ने; कॊडुत्त नाळ्–जिस दिन उदक ढालकर दान किया तब; अळन्तु कॊण्ट–भूमि को चरणों से जिन्होंने नाप लिया उन; कुऱळऩार्–वामन-मूर्ति ने; कुऱिय पातम्–अपने छोटे चरण को; ऎडुत्त नाळ्–उठाया, उस दिन; ऒत्तवु–के समान रहा। २६७८

महान हनुमान के ऊपर उठ जाने का वह दिन उस दिन के समान था, जिस दिन नवविकसित पुष्पमालाधारी देवों और मुनियों द्वारा वेदों के उच्चारण के साथ स्तुति का पात्र बनकर महाबली ने उदक ढालकर दान किया था और वामन (त्रिविक्रम) देवता ने, जिन्होंने दो ही चरणों में सारे लोकों को नाप लिया, अपने छोटे चरण को उठाया था। २६७८

तेवरु मुनिवर् तामुज् जित्तरुन् दॆरिवै मारुम्
मूवहै युलहि नुळ्ळा रुवहैयाल् तॊडर्न्दु मॊय्त्तार्
तूवित मणियुज् जान्दुज् जुण्णमु मलरुन् दॊत्तप्
पूवुडै यमरर् दॆय्वत् तरुवॆऩ विशुम्बिऱ् पोऩाऩ् 2679

मूवकै उलकिऩ् उळ्ळार्–त्रिलोकवासी; तेवरुम् मुनिवर् तामुम्–देवों और मुनियों; चित्तरुम् तॆरिवै मारुम्–सिद्धों और उन सबकी देवियों ने; उवकैयाल्–मोद से; तॊटर्न्तु मॊय्त्तार्–पीछे लगी भीड़ में; तूवित–जो बिखेरे; मणियुम्–वे रत्न और; चान्तुम् चुण्णमुम्–चन्दन और चूर्ण; मलरुम् तॊत्त–उसके शरीर पर लगे लटके; पू उटै–पुष्प-भरे; अमरर् तॆय्वम् तरु ऎऩ–देवों के कल्पतरु के समान; विचुम्पिऩ् पोऩाऩ्–आकाश-मार्ग में गया। २६७९

त्रिलोकवासी, देव, मुनिगण, सिद्ध लोग और उन सभी की पत्नियाँ आनंद से आकर भीड़ बना गयीं। उन्होंने जो रत्न, चन्दन, सुगंधचूर्ण आदि उस पर डाले उनके साथ हनुमान पुष्पित दिव्य कल्पतरु के समान आकाश में उड़ता चला। २६७९

इमयमाल् वरैयै युऱ्ऱा नङ्गुळ विमैप्पि लोरुङ्
गमैयुडै मुनिवर् मऱ्ऱु मऱ्ऱॆऩि कलन्दो रॆल्लाम्
अमैहनिऩ् करुम मॆऩ्ऩॊ वाऴ्त्तिऩ रदनुक् कप्पाल्
उमैयॊरु पाहऩ् वैहुङ् गयिलैहण् डुवहै युऱ्ऱाऩ् 2680

इमयम् माल् वरैयै उऱ्ऱाऩ्–हिमालय के बड़े पर्वत पर पहुँचा; अङ्कु उळ–वहाँ रहनेवाले; इमैप्पिलोरुम्–अपलक और; कमै उटै मुनिवर्–क्षमाशील मुनि;

मऱ्ऱुम्–और; अऱम् मॆऱ्ऱि–धर्म-मार्ग पर; कलन्तोर् ऎल्लाम्–आनेवाले सभी ने; निन् करुमम् अमैक–तुम्हारा कार्य सफल हो; ऎन्ऱु वाऴ्त्तिनर्–ऐसी शुभ कामना प्रगट की; अतऩुक्कु अप्पाल्–उसके बाद; उमै ओरु पाकऩ्–उमादेवी को एक अंग में रखनेवाले शिवजी; वैकुम्–जहाँ रहते हैं; कयिलै कण्टु–उस कैलास को देखकर; उवकै उऱ्ऱाऩ्–मुदित हुआ। २६८०

हनुमान बड़े हिमालय पर्वत पर गया। वहाँ के अपलक और क्षमाशील मुनियों और धर्मपथगामी साधुओं ने शुभकामना प्रकट की कि तुम्हारा कार्य सफल हो। उसके बाद वह कैलास को, जिस पर देवी उमा को अपने आधे अंग में स्थान दिये रहनेवाले शिवजी वास करते थे, देखकर मुदित हुआ। २६८०

वडकुण तिशैयिऱ् ऱोऩ्ऱु मऴुवला ऩाण्डु वैहुन्
दडवरै यदऩै नोक्कित् तामरैच् चॆङ्गै गूप्पिप्
पडर्हुवाऩ् ऱऩ्ऩै यऩ्ऩ परमऩुम् बरिविऩ् पार्त्तुत्
तडमुलै युमैक्कुक् काट्टि वायुविऩ् ऱऩय ऩॆऩ्ऱाऩ् 2681

वटकुणम् तिचैयिल्–उत्तर-पूर्व दिशा में; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; मऴुवलाम्–परशुधर; आण्टु वैकुम्–जहाँ शासन करते हुए विद्यमान हैं; तट वरै अतऩै–विशाल पर्वत उसको; नोक्कि–देखकर; तामरै चॆम् कै कूप्पि–कमल-विशाल हस्त जोड़कर; पटर्कुवाऩ् तऩ्ऩै–जानेवाले उस हनुमान को; अऩ्ऩ परमऩुम्–उन परमेश्वर ने; परिविऩ् पार्त्तु–प्रेम से देखकर; तटमुलै–पीनस्तनी; उमैक्कु काट्टि–उमा को दिखाकर; वायुविऩ् तऩयऩ्–वायु का पुत्र; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २६८१

उत्तर पूरब में दर्शन देनेवाले परशुधर परमेश्वर के शासन-निवासस्थान उस विशाल कैलास पर्वत को देखकर हनुमान ने अरुणपद्महस्त जोड़कर नमस्कार किया। उन परमेश्वर ने भी उस पर स्नेहार्द्र दृष्टि डाली और पीनस्तनी उमा को दिखाकर कहा कि यह वायुपुत्र हनुमान है। २६८१

ऎऩ्ऩिव ऩॆऴुन्द तऩ्मै यॆऩ्ऱुल हीऩ्ऱाळ् केट्प
मऩ्ऩव ऩिरामऩ् ऱूदऩ् मरुन्दिऩ्मेल् वन्दाऩ् वञ्जर्
ऱॆऩ्ऩह रिलङ्गैत् तीमै तीर्वदु तिण्णञ् जेर्न्दु
नऩ्ऩुद ऩामुम् वॆम्बोर् काणुदु नाळै यॆऩ्ऱाऩ् 2682

इवऩ् ऎऴुन्त तऩ्मै ऎऩ्–इसके जाने का कारण क्या; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उलकु ईऩ्ऱाळ् केट्प–जगज्जननी के पूछने पर; मऩ्ऩवऩ्–राजा; इरामऩ् तूतऩ्–राम का दूत; मरुन्तिऩ् मेल् वन्ताऩ्–ओषधि लेने आया है; वञ्चर्–वंचक राक्षसों की; तॆऩ् नकर् इलङ्कै–दक्षिण में स्थित लंका की; तीमै–बुराई; तीर्वतु तिण्णम्–दूर होगी यह निश्चित है; नल् नुतल्–सुन्दर भाल वाली; नामुम्–हम भी; चेर्न्तु–मिलकर; नाळै–कल; वॆम् पोर्–घमासान लड़ाई; काणुतुम्–देखेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २६८२

जगज्जननी ने पूछा कि इसके जाने का कारण क्या है? परमेश्वर ने

कहा कि यह श्रीराजाराम का दूत है, ओषधि लाने जा रहा है। अब राक्षसों की दक्षिण में स्थिता लंका की बुराई का अन्त निश्चित है। हे सुन्दर भालवाली भामिनी ! कल हम भी देवों के साथ मिलकर घमासान युद्ध देखें। २६८२

नामयो शत्तैहळ् कॉण्ड दायिर नडुवु नीङ्गि
एमकूडत्ति तुम्ब रंय्दित्त तिरुदि यिल्लाक्
काममे नुहरुत्र् जॅल्वक् कडवुळ रीट्टङ् गण्डात्
नेमियित् विशैयिर् चॅल्वा निडदत्ति तॅर्रि युर्रात् 2683

नेमियित् विचैयिल्–चक्रायुधगति में; चॅल्वात्–जानेवाला; नामम् आयिरम् योचत्तैकळ् कॉण्टतु–नामी हज़ार योजन की; नदुवु नीङ्कि–दूरी पार करके; एमकूटत्तित् उम्पर्–हेमकूट के ऊपर; ॲय्तितत्–पहुँचा; इरुति इल्ला–अनंत; काममे नुकरुम्–भोगवादी; चॅल्वम् कटवुळर्–ऐश्वर्ययुक्त देवों की; ईट्टम्–भीड़; कण्टात्–देखी; निटतत्तित् नॅर्रि उर्रात्–निषध की चोटी पर पहुँचा। २६८३

चक्रायुधगति में जानेवाला हनुमान एक हज़ार योजन का अन्तर पार करके हेमकूट के ऊपर आया। वहाँ अनन्त भोगमग्न देवों का जमघट देखा। फिर वह निषधपर्वत के ऊपर गया। २६८३

ॲण्णुक्कु मळवि लाद वरिविनो रिरुन्तु नोक्कुङ्
गण्णुक्कुङ् गरुदुन् दॅय्व मनत्तिर्कुङ् गडिय नाताल्
मण्णुक्कुन् दिशैहळ् वॅन्द वरम्बिर्कु मलरोत् वैहुम्
विण्णुक्कु मळवै याय मेरुवित् मीदु शॅन्रात् 2684

ॲण्णुक्कुम्–सोचकर; अळवु इलात–मापने में असाध्य; अरिवित्तोर्–बुद्धिमान; इरुन्तु नोक्कुम्–बैठकर जिससे देखते हैं; कण्णुक्कुम्–उस ज्ञानचक्षु के लिए और; करुतुम्–ध्यान लगा सकनेवाले; तॅय्वम् मनत्तिर्कुम्–दिव्य मन के लिए भी; कटियत् आतात्–न गोचर हो सके इतना वेगवान बना; मण्णुक्कुम्–पृथ्वी का; तिचैकळ् वॅत्त वरम्पिर्कुम्–और दिगन्त का; मलरोत् वैकुम्–कमलासन का वासस्थान; विण्णुक्कुम्–सत्यलोक का; अळवै आय–जो मानदण्ड-सा रहा; मेरुवित् मीतु चॅन्रात्–उस मेरु पर से गया। २६८४

अचिंत्य अपार ज्ञानियों के ज्ञानचक्षु और दिव्य ध्यान-क्षम मन के लिए भी अज्ञेय तीव्रता से हनुमान जा रहा था। फिर वह मेरु पर गया जो भूमि, दिगंत और कमलासन का सत्यलोक —इन सबका मानदंड-सा है। २६८४

यावदु निलैमैत् तन्मै यित्तदॅत् रिमैया नाट्टत्
तेवरुन् दॅरिन्दि लाद वडमलैक् कुम्बरच् चॅत्रात्
नावलम् बॅरुन्दी वॅन्ना नळिर्हडल् वळाह वैप्पिर्
कावत्मून् रुलह मोडुङ् गडवुण्मा मरत्तैक् कण्डात् 2685

इमैया नाट्टम्–अपलकचक्षु; तेवरुम्–देवों ने भी; निलैमै तन्मै इन्नतु ॲन्ड्र–गतिविधि क्या है ऐसा; यावतुम्–कुछ भी (जिसके बारे में); तॆरिन्तिलात–नहीं जाना; वट मलैक्कु–उस उत्तरी (मेरु) पर्वत के; उम्पर् चॆन्ड्रात्–ऊपर गया; नळिर् कटल् वळाक वैयपिल्–शीतल सागरावृत्त पृथ्वी पर; पॆरु–सम्मान्य; नावलम् तीवु ॲन्ना–जम्बूद्वीप; कावल् मून्ड्र उलकम् ओतुम्–(जिसके नाम पर) सुरक्षित तीनों लोक कहते हैं उस; कटवुळ् मा मरत्तै–दिव्य बड़े तरु को; कण्टात्–देखा। २६८५

अपलक देव भी जिसकी सच्ची स्थिति नहीं जान सके, उस उत्तरी मेरु पर्वत के ऊपर हनुमान गया। वहाँ उस जामुन के दिव्य पेड़ को देखा, जिसके कारण पृथ्वी का त्रिलोकशंसित जम्बूद्वीप नाम पड़ा था। २६८५

अन्नमा मलैयि नुम्ब रुलहॆला मयैत्त वण्णल्
नन्नह रदनै नोक्कि यदनडु नाप्प णामप्
पॊन्मलर्प् पीडन् दन्मे नान्मुहन् पॊलियत् तोन्ड्रन्
दन्मैयुङ् गण्डु कैयाल् वणङ्गिनान् ड्ररुमम् बोल्वान् 2686

तरुमम् पोल्वान्–धर्ममूर्ति; अन्न मा मलैयिन् उम्पर्–उस बड़े पर्वत के ऊपर; उलकु ॲलाम्–सारे प्रपंच को; अमैत्त अण्णल्–सृष्टि करनेवाले प्रभु ब्रह्मा के; नन्नकर् अतनै नोक्कि–श्रेष्ठ लोक को देखकर; अतन् नटु नाप्पण्–उसके ठीक मध्य में; नामम्–प्रसिद्ध; पॊन् मलर् पीटम् तन् मेल्–स्वर्णसुमन के पीठ पर; नान् मुकन्–चतुर्मुख; पॊलिय तोन्ड्रम् तन्मैयुम्–शोभा के साथ विराजमान थे वह हाल; कण्टु–देखकर; कैयाल् वणङ्कितान्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया। २६८६

धर्ममूर्ति ने उस पर्वत पर लोकस्रष्टा ब्रह्मा का लोक देखा। उसके बीचोबीच स्वर्ण-कमल-पीठ पर चतुर्मुख विराज रहे थे। उस शोभा को देखकर उसने हाथ जोड़े। २६८६

तरुवन्न मॊन्ड्रि वान्नोर् तलैत्तलै मयङ्गित् ताळप्
पॊरुवरु मुनिवर् वेदम् पुहळ्न्दुरै योदै बॊङ्ग
मरुविरि तुळव मौलि मानिलक् किळत्ति योडुन्
दिरुवॊडु मिरुन्द मूलत् तेवैयुम् वणक्कञ् जॆय्दान् 2687

तरु वन्नम् ऒन्ड्रि–तरुलसित वन के साथ; वान्नोर्–व्योमवासी; तलै तलै–स्थान-स्थान पर; मयङ्कि ताळ–भक्तिमुग्ध हो जहाँ सिर झुकाते हैं; पॊरु अरु मुनिवर्–अनुपम मुनि; वेतम् पुकळ्न्तु–वेदों से स्तुति करके; उरै–जो कह रहे थे वह; ओतै पॊङ्क–शब्द जहाँ फैल रहा था वहाँ; मा निलम् किळत्तियोटुम्–श्रेष्ठ भूदेवी के साथ; तिरुवॊटुम्–श्री (लक्ष्मी) देवी के साथ; मरु विरि तुळपम् मौलि–सुगन्ध-भरी तुलसी से अलंकृत मुकुटधारी; मूलम् तेवैयुम्–आदिकारण श्रीमन्नारायण को भी; वणक्कम् चॆय्तान्–नमस्कार किया। २६८७

फिर उस स्थान में भूदेवी व श्रीदेवी-सहित तुलसीमाला-किरीटालंकृत श्रीमन्नारायण के दर्शन किये, जहाँ तरुसंकुल वन था, जहाँ स्थान-स्थान पर

देव भक्तिमुग्ध होकर सिर नवा रहे थे और जहाँ से मुनियों की वेदस्तुति का पावन शब्द सब जगह फैल रहा था। २६८७

आयदऩ् वडहीऴ् पाहत् तायिर मरुक्क राऩ्ऱ
कायहदिर् परप्पि यञ्जु कदिर्मुहक् कमलङ् गाट्टित्
तूयपे रुलह मूऩ्ऱुन् दूविय मलरिऱ् चूऴ्न्द
शेयिऴै पाहत् तॆण्डो ळॊरुवऩै वणक्कञ् जॆय्दान् 2688

आयतत्तु वट कीऴ् पाकत्तु—उसके उत्तर-पूर्व भाग में; आऩ्ऱ—उत्कृष्ट; आयिरम् अरुक्कर्—सहस्र सूर्य-सम; काय् कतिर्—(अन्धकार) निवारक किरणों के साथ; परप्पि—फैलाकर; अञ्चु कतिर् मुकम् कमलम् काट्टि—पाँच उज्ज्वल मुखकमल दिखाते हुए; तूय—पवित्र; पेर् उलकम् मूऩ्ऱुम्—तीनों बड़े लोकों के वासी द्वारा; तूविय—अर्पित; मलरिल् चूऴ्न्त—पुष्पों से आवृत; चॆम्मै इऴै—लाल स्वर्णाभरणभूषित पार्वतीदेवी को; पाकत्तु—अपने अंग में रखनेवाले; ऎण् तोळ् ऒरुवऩै—अष्टभुज देवता (रुद्र) को; वणक्कम् चॆय्ताऩ्—नमस्कार किया। २६८८

उसके उत्तर-पूर्व में उसने अष्टभुज रुद्र के दर्शन किये, जो हज़ार सूर्यों की सम्मिलित प्रभा के समान ज्योतिर्मय थे; पाँच मुखकमल दरसा रहे थे; और जो पवित्र त्रिलोकवासियों द्वारा पूजा में अर्पित पुष्पों से आवृत थे। उनके बायें अर्धांग में लाल स्वर्ण से निर्मित आभरणभूषिता पार्वतीदेवी थीं। उसने उनको नमस्कार किया। २६८८

शन्दिर ऩऩैय कॊऱ्ऱत् तऩिक्कुडै तलैयिऱ् ऱाहच्
चुन्दर महळि रङ्गैच् चामरै तॆऩ्ऱल् ऱूव
अन्दर वाऩ नाड रडितॊऴ मुरश मार्प्प
इन्दिर ऩिरुन्द तन्मै कण्डुवन् दिऱैञ्जिप् पोऩाऩ् 2689

चन्तिरऩ् अऩैय—चन्द्र-सम; कॊऱ्ऱम् तऩि कुटै—अप्रतिम विजयछत्र; तलैयिऱ्ऱु आक—सिर के ऊपर था; चुन्तरम् मकळिर्—सुन्दर स्त्रियाँ; अकम् कै चामरै—जो अपने हाथ में लिये थीं वे चामर; तॆऩ्ऱल् तूव—मलयपवन (सी हवा) कर रहे थे; अन्तरम् वातम्—अन्तरिक्ष आकाश के; नाटर्—लोकवासी; अटि तॊऴ—चरणवन्दना कर रहे थे; मुरचम् आर्प्प—भेरी बज रही थी; इन्तिरऩ् इरुन्त—(इस सन्निवेश में) इन्द्र जो विराजमान रहा वह; तऩ्मै कण्टु—शान देखकर; उवन्तु—खुश होकर; इऱैञ्चि—नमन करके; पोऩाऩ्—गया। २६८९

फिर उसने इन्द्र के दर्शन किये। इन्द्र के ऊपर चंद्र-सम विजयछत्र शोभ रहा था। सुन्दर अप्सराएँ चामर डुलाकर मलयपवन-सी वायु संचरित करा रही थीं। व्योमलोकवासी देव चरणों में नमन कर रहे थे। भेरियाँ बज रही थीं। यह वैभव देखकर हनुमान हुलसित हुआ और नमस्कार करके आगे गया। २६८९

पूवलर् मरत्तैप् पोर्प्पप् पॊऱ्पहम् विरिन्दु पॊङ्गित्
तेवर्द मिरुक्कै यात्त मेरुवित् शिहरच् चेऱ्पित्
मूवहै युलहुम् जळ्न्द मुरट्टिशै मुऱैयिऱ् ऱाङ्गुङ्
गावल रॆण्मर् नित्ऱ तन्मैयुन् दॆरियक् कण्डान् 2690

पू अलर्–विकसित पुष्पयुक्त; मरत्तै पोर्प्प–कल्पतरु को घेरे; पॊऱ्पु–छटा; अकम् विरिन्तु पॊङ्कि–जिससे निकलकर बढ़ी; तेवर् तम् इरुक्कै आत–जो देवों का वासस्थान था; मेरुवित् चिकरम् चेर्प्पिल्–मेरु के शिखर-स्थल में; मू वकै उलकुम् चूऴ्न्त–त्रिविध लोकों में फैली; मुरण् तिचै–परस्पर विपरीत दिशाओं को; मुऱैयिल् ताङ्कुम्–यथोचित रीति से धारण करनेवाले; ऎण्मर् कावलर्–अष्ट दिग्पालकों के; नित्ऱ तन्मैयुम्–स्थित रहने का हाल भी; तॆरिय कण्टान्–खूब देखा। २६६०

मेरुशिखर पर, जो पुष्पित कल्पक वृक्ष के समान शोभा का आगार अतः देवों का वासस्थान बना था, उसने आठों दिक्पालों को देखा जो विपरीतवर्ती दिशाओं को सँभालते थे। २६९०

अत्तडङ् गिरियै नीङ्गि यत्तलै यडैन्द वळ्ळल्
उत्तर कुरुवै युऱ्ऱा नॊळियवन् कदिर्ह ळूत्ऱिच्
चॆऱ्ऱिय विरुळिन् ऱाक्कि विळङ्गिय शॆयलै नोक्कि
वित्तहन् विटिन्द दॆन्ना मुडिन्ददॆन् वेह मॆन्ऱान् 2691

अ तट किरियै–उस बड़े पर्वत को; नीङ्कि–छोड़कर; अ तलै–उस पार; अटैन्त वळ्ळल्–जो गया वह उदार प्रभु; उत्तर कुरुवै उऱ्ऱान्–उत्तरकुरु में गया; ऒळियवन् कतिर्कळ् ऊत्ऱि–सूर्य की किरणें स्थायी रहीं; चॆऱ्ऱिय–घने; इरुळ् इन्ऱु आक्कि–अँधेरे का अभाव बनाकर; विळङ्किय चॆयलै नोक्कि–शोभ रहा था उस (जादू के) काम को देखकर; वित्तकन्–विदग्ध ने; विटिन्ततु–प्रभात हो गया; ऎन्ना–कहकर; ऎन् वेकम् मुटिन्ततु–मेरा वेग भी बन्द हो गया; ऎन्ऱान्–कहा। २६६१

प्रभु हनुमान ने उस बड़े पर्वत को पार किया। उस तरफ़ उत्तर कुरु प्रदेश में आया। वहाँ देखा कि किरणमाली की किरणें खूब फैली हैं और अँधेरे का अभाव हो गया है। विदग्ध हनुमान ने सोचा कि प्रभात हो गया और मेरा वेग (बल भी) समाप्ति पर है। (उसे दुःख हुआ)। २६९१

आदिया नुणरा मुन्न मरुमरुन् दुदवि यल्लिऱ्
पादिया लतॆय तुन्ब महऱ्ऱुवान् वावित् तेऱ्कुच्
चोदिया नुदयञ् जॆय्दा नुऱ्ऱदोर् तुणिद लाऱ्ऱेन्
एदियान् शॆय्व दॆन्ना विडरुऱ्ऱा निणैयि लादान् 2692

इणैयिलातान्–अनुपम हनुमान; आतियान् उणरा मुन्नम्–आदिपुरुष श्रीराम के होश में आने से पहले; अरु मरुन्तु उतवि–श्रेष्ठ औषध को देकर; अल्लिल्

पातियाल्–अर्धरात्रि के अन्दर; अतैय तुन्पम् अकर्ड्रुवात्–उनका वैसा दुःख दूर करने का; पावित्तेर्कु–विचार रखनेवाले मुझे (निराश करने); चोतियात् उतयम् चॆय्तात्–किरणमाली उदित हो गया; उर्ड्रतु–हानि हो गयी; ओर् तुणितल् आर्ड्रेन्–कोई निर्णय नहीं कर पाता; यान् चॆय्वतु ऎतु–अब मेरा करणीय कृत्य क्या है; ऎन्ना–ऐसा सोचकर; इटर् उर्ड्रान्–दुःखी हुआ। २६९२

अनुपम हनुमान ने आप ही आप चिंता के साथ कहा— पुरुष पुरातन श्रीराम के जागने से पहले औषध देकर आधी रात के अंदर क्लेश दूर करने की बात मैंने सोची थी। पर अब ज्योतिष्मान सूर्य उग आया। बस ! मेरी इच्छा असफल हो गयी और मुझे कष्ट मिल गया। अब कोई निर्णय नहीं कर पा रहा। अब मुझे कर्तव्य क्या है ? । २६९२

कार्ड्रिशै शुरुङ्गच् चॆल्लुङ् गडुमैयान् कदिरिन् शॆल्वन्
मेर्ड्रिशै यॆळुवा नल्लन् विडिन्ददु मन्रु मेरु
मार्ड्रिनात् वडपार् ड्रोन्रु मॆन्बदु मऱैहळ् वल्लोर्
शार्ड्रिना रॆन्नत् तुन्बन् दणिन्दनन् र्रवत्तु मिक्कान् 2693

तवत्तु मिक्कान्–तपोश्रेष्ठ; काल् तिचै चुरुङ्क–पवन दिशा में मन्द चले, ऐसा; चॆल्लुम्–चलनेवाला; कटुमैयान्–वेगवान हनुमान; कतिरिन् चॆल्वन्–किरणधनी; मेल् चिैत–पश्चिम दिशा में; ऎळुवान् अल्लन्–उगनेवाला नहीं; विटिन्ततुम् अन्रु–प्रभात हुआ भी नहीं; मेरु–मेरु पर; मार्ड्रितान्–अपनी दिशा बदलकर; वटपाल् तोन्रुम् ऎन्पतु–उत्तर में; तोन्रुम्–पश्चिम में दिखायी देगा (सूर्य); ऎन्पतु–यह बात; मऱैकळ् वल्लोर्–वेदपारंगतों ने; चार्ड्रितार्–कहा है; ऎन्न–ऐसा सोचकर; तुन्पम् तणिन्तनन्–दुःख शान्त कर लिया। २६९३

तपोश्रेष्ठ तथा पवन-गति-गामी हनुमान ने देखा कि सूर्य अपनी बायीं तरफ़ उगा है। उसने मुड़कर देखा तो सूर्य को दायीं ओर देखा। तब सोचने लगा कि किरणमाली पश्चिम दिशा में उगनेवाला नहीं। इसलिए प्रभात भी नहीं हुआ है। वेदज्ञों का कहना है कि (यह पुराणों का मत है कि मेरु के) उत्तर भाग में सूर्य के उदय की दिशा पश्चिम है। इसलिए उसने दुःख छोड़ दिया। २६९३

इरुवरे तोन्रि यॆन्रु मीर्ड्रिला वायु ळॆय्दि
ऑरुवरो डॊरुव रुळ्ळ मुयिरॊडु मॊन्रे याहिप्
पॊरुवरु मिन्बन् दुय्त्तुप् पुण्णियम् बुरिन्दोर् वैहुन्
दिरुवुर् कमल मन्न नाट्टैयुन् दॆरियक् कण्डान् 2694

इरुवरे तोन्रि–(स्त्री-पुरुष) दो ही पैदा होकर; ऎन्रुम् ईरु इला–कभी अन्त न होनेवाली; आयुळ् ऎय्ति–आयु पाकर; ऒरुवरोटु ऒरुवर्–परस्पर; उळ्ळम् उयिरॊटु–मन और प्राण के; ऒन्रे आकि–एक होकर; पॊरुवरुम् इन्पम् तुय्त्तु–अनुपम सुख भोगकर; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यकृत जहाँ रहते थे; तिरु उऱै

कमलम् अन्न–श्री जिस पर रहती हैं, उस कमल के समान; नाट्टैयुम् तॆरियक् कण्टाऩ्–उत्तरकुरु प्रदेश को देखा (हनुमान ने)। २६९४

उस उत्तर कुरु देश में वे ही लोग रहते थे जो बिना जन्म बदले, स्त्री और पुरुष का जन्म लेकर, एक-प्राण-मन हो अपार सुख-भोग में सर्वदा लीन थे। वे ऐसा पुण्य कर चुके थे। वह और भी श्रीलक्ष्मी के वास के कमल के समान था। हनुमान ने उस देश को खूब देखा। २६९४

वऩ्ऩिनाट् टियपॊऩ् मौलि वाऩवऩ् मलरिऩ् मेलाऩ्
कऩ्ऩिनाट् टिरुवंच् चेर्न्द कण्णऩ् माळुङ् गाणिच्
चॆऩ्ऩिनाट् टॆरियल् वीरऩ् ऱियाहमा विऩोदऩ् ऱॆय्वप्
पॊऩ्ऩिनाट् टुवमै वैप्पप् पुलऩ्गॊळ नोक्किप् पोऩाऩ् 2695

वऩ्ऩि नाट्टिय–वह्नि पुष्पधारी; पॊऩ् मौलि–स्वर्णकिरीटी; वाऩवऩ्–देव शिवजी और; मलरिऩ् मेलाऩ्–कमलासन; नाळ् नाळ्–नित्ययौवना, नित्यसुन्दरी; कऩ्ऩि तिरुवं चेर्न्त–कन्या श्री को अपने वक्ष में रखे हुए; कण्णऩ्म्–पद्मपत्र-विशालाक्ष; आळुम् काणि–(उनके द्वारा) शासित भूमि; चॆऩ्ऩि–सिर पर; नाळ् तॆरियल्–उसी दिन खिले पुष्पों की मालाधारी; वीरऩ्–वीर; तियाकमा विऩोतऩ्–त्याग ही जिसका विनोद था उस चोळ राजा के; तॆय्वम् पॊऩ्ऩि नाट्टु उवमै–दिव्य कावेरी प्रदेश के समान; वैप्पै–भूभागों को; पुलऩ् कॊळ नोक्कि–चक्षुरिंद्रिय खूब जमाकर देखते हुए; पोऩाऩ्–गया। २६९५

वहाँ 'वह्नि' पुष्पधारी स्वर्णकिरीटी शिवजी, कमलासन ब्रह्मा और नित्यसुन्दरी नित्ययौवना श्री का वासस्थान जिनका वक्ष है, वे पद्माक्ष शासन करते थे। वहाँ के भूभाग उस 'त्याग-विनोद' चोळ राजा के दिव्य कावेरी प्रदेश के समान उर्वर थे, जो ताज़े फूलों की माला सिर पर धारण करता था। हनुमान उनको आँख भर देखता गया। (एक चोळ राजा का विरुद 'त्यागविनोद' पड़ा था। यह कुलोत्तुंग चोळ ही था, यह एक धारणा है। अन्य लोगों का कहना है कि यह विरुद और कुछ राजाओं को भी मिला था। अतः इसके आधार पर कम्बन का काल-निर्णय करना उचित नहीं माना जाता।) । २६९५

विरियवाऩ् मेरु वॆऩ्ऩुम् वॆऱ्पिऩिऩ् मीदु चॆल्लुम्
पॆरियव ऩयऩार् चॆल्वम् पॆऱ्ऱवऩ् पिऱप्पिऱ् पेर्न्दाऩ्
अरियवा ऩुलह मॆल्ला मळन्दनाळ् वळर्न्दु तोऩ्ऱुङ्
गरियव ऩॆऩ्ऩ निऩ्ऱ नीलमाल् वरैयैक् कण्डाऩ् 2696

वाऩ् विरिय–आकाश चीरते हुए; मेरु ऎऩ्ऩुम् वॆऱ्पिऩिऩ् मीतु–मेरु कथित पर्वत के ऊपर; चॆल्लुम्–जानेवाले; पॆरियवऩ्–महान; अयऩार् चॆल्वम् पॆऱ्ऱवम्–ब्रह्मपद के लिए नामबद; पिऱप्पिल् पेर्न्ताऩ्–आगे जिसका जन्म नहीं, उस हनुमान ने; उलकम् ऎल्लाम् अळन्त नाळ्–त्रिलोक मापने के उस दिन; वळर्न्तु तोऩ्ऱुम्–जो बढ़ते दिखे;

अरियवन् करियवन् अँन्न–हरि-नाम के श्यामल देव के समान; निन्ड्र–जो खड़ा था उस; नीलम् माल् वरैयै कण्टान्–नीले बड़े पर्वत को देखा। २६९६

महान हनुमान ने, जो आकाश को चीरते हुए मेरु के पर्वत के ऊपर से जा रहा था, जो ब्रह्मा के पद के लिए नामजद हो चुका था, जो आगे जन्म नहीं लेनेवाला था, नीले पर्वत को देखा जो त्रिलोक मापने के उस दिन बढ़े रहे त्रिविक्रमदेव के समान ऊँचा बढ़ा था। २६९६

अऱ्कुन्ऱ वलङ्गु शोदि यम्मलै यहलप् पोनात्
पॊऱ्कुन्ऱ मतैय तोळा नोक्किनान् पुलवन् शॊन्न
नऱ्कुन्ऱ मदनैक् कण्डा नुणर्न्दन नाह मुऱ्ऱ
अॅऱ्कुन्ऱ वॅरियुन् दॅय्व मरुन्दडै याळ मॅन्न 2697

अल् कुन्ऱ–अन्धकार को भी संकोच में डालते हुए; अलङ्कु चोति–रहनेवाली छटा से युक्त; अ मलै–वह पर्वत; अकल–दूर हो ऐसा; पोतान्–आगे गया; पॊन् कुन्ऱम् अतैय–स्वर्णपर्वत-सदृश; तोळान्–कन्धों वाले ने; नोक्कितान्–दृष्टि दौड़ाकर; पुलवन् चॊन्न–विद्वान (जाम्बवान) से कथित; नल् कुन्ऱम् अतनै–श्रेष्ठ पर्वत को; कण्टान्–देखा; तॅय्वम् मरुन्तु अटैयाळम्–दिव्य ओषधि का लक्षण; नाकम् मुऱ्ऱ–स्वर्ग भर में; अॅल् कुन्ऱ–सूर्य को फीका करते हुए; अॅरियुम्–प्रकाश छिटकाना; अॅन्न–ऐसा अनुमान करके; उणर्न्ततन्–जान लिया। २६९७

वह पर्वत अँधेरे को भी संकोच में डालते हुए शोभ रहा था। पर्वतोपम कंधों वाला उसको पीछे छोड़ आगे गया। उसने जाम्बवान से निर्दिष्ट ओषधि-पर्वत को देखा। दिव्य ओषधि का लक्षण आकाशलोक भर में सूर्य के प्रकाश को निष्प्रभ बनाते हुए प्रकाश देना है। इस तर्क के आधार पर उसने अनुमान कर लिया कि यह वही पर्वत है। २६९७

पाय्न्दनन् पाय्द लोडु मम्मलै पाद लत्तुच्
चाय्न्ददु काक्कुन् दॅय्वञ् जलित्तन तडुत्तु वन्दु
काय्न्दन नीदा नियावन् करुत्तॅन्गॊल् कळ्ऱु हॅन्न
आय्न्दव नुऱ्ऱ दॅल्ला मवऱ्ऱिनुक् कऱियच् चॊन्नान् 2698

पाय्न्तनन्–झपटा; पाय्तलोटुम्–झपटने पर; अम् मलै–वह पर्वत; पातलत्तु चाय्न्ततु–पाताल में चला गया; काक्कुम् तॅय्वम्–रक्षक देवता; चलित्तन–विचलित हुए; तटुत्तु वन्त–(बाद) रोकते हुए आये; काय्न्तन–गुस्सा दिखाकर; नी तान् यावन्–तुम हो कौन; करुत्तु अॅन्–अभिप्राय क्या है; कळ्ऱुक–बताओ; अॅन्न–(उनके) पूछने पर; आय्न्तवन्–विवेकी (हनुमान) ने; उऱ्ऱतु अॅल्लाम्–जो हुआ वह सब; अवऱ्ऱिनुक्कु–उन्हें; अऱिय–समझाकर; चॊन्नान्–कहा। २६९८

हनुमान उस पर झपटा। तो वह पर्वत पाताल तक धँस गया। पालक देवता विचलित हुए। फिर गुस्सा करके आये और रोकते हुए

पूछा कि तू है कौन ? तेरा अभिप्राय भी क्या है ? तब विवेकशील हनुमान ने अपने आने का सारा हाल बताया। २६९८

केट्टवै ऐय वेण्डिऱ्‌ ऱियऱ्‌ऱिप्पिन्‌ कॅडाम लॅम्बाऱ्‌
काट्टॅन्‌ वुणर्‌त्ति वाऴ्‌त्तिक्‌ करन्‌दन्‌ कमलक्‌ कण्णन्‌
वाट्टलै नेमि तोन्‌ऱि मऱैन्‌दडु मण्णि निऩ्ऱुन्‌
दोट्टन्‌ ननुमन्‌ मऱ्ऱक्‌ कुन्‌ऱिनै वयिरत्‌ तोळाल्‌ 2699

केट्टवै–श्रोता देवता; ऐय–बाबा; वेण्टिऱ्ऱु इयऱ्ऱि–जो चाहते हो वह काम पूरा करके; पिन्‌–फिर; कॆटामल्–हानि किये बिना; ऎम्पाल् काट्टु–हमारे पास ला दिखाओ; ऎन्‌–ऐसा; उणर्‌त्ति वाऴ्‌त्ति–समझाकर आशीर्वाद देकर; करन्तन–छिप गये; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीविष्ण का; वाऴ् तलै–तीक्ष्ण धारदार; नेमि–चक्र; तोन्‌ऱि–प्रगट होकर; मऱैन्‌ततु–छिप गया; वयिरम् तोळाल्–वज्र-दृढ़ हाथों से; अनुमन्–हनुमान ने; मऱ्ऱु–बाद; अ कुन्‌ऱिनै–उस पर्वत को; मण्णिन् निन्ऱुम्–पृथ्वी से; तोट्टनन्–जड़ से खोद लिया। २६९९

हनुमान का कहा सुनकर उन देवताओं ने कहा कि बाबा ! ले जाओ अपना काम पूरा करो और बाद उन्हें बिना हानि के हमारे पास लौटाकर दिखा दो। फिर उसे आशीर्वाद देकर वे ओझल हो गये। तब कमलाक्ष श्रीविष्णु के चक्र ने भी आ दर्शन दिये और अपने को छिपा लिया। वज्रदृढ़ कंधों वाले हनुमान ने उस पर्वत को भूमि से मूल के साथ उखाड़ लिया। २६९९

इङ्गुनिन्‌ ऱिन्‌नत मरुन्‌दॅन्‌ ऱॅण्णिनाऱ्‌
चिङ्गुमाऱ्‌ कालमॅन्‌ ऱुणर्‌न्‌द शिन्‌दैयान्‌
अङ्गदु वेरोडु मङ्गै ताङ्गिनान्‌
पोङ्गिय विशुम्बिडैक्‌ कडिदु पोहुवान्‌ 2700

इङ्कु निन्ऱु–यहाँ रहकर; इन्‌नत मरुन्‌तु–यह औषध है; ऎन्ऱु ऎण्णिनाल्–ऐसा सोचते रहें तो; कालम् चिङ्कुम्–काल व्यर्थ जायगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्‌न्त चिन्तैयान्–समझकर सोचनेवाला; अङ्कु–तब; अतु–उस पर्वत को; वेरोटुम्–मूल के साथ; अम् कै ताङ्किनान्–अपने सुन्दर हाथों में उठा लेकर; पोङ्किय विशुम्पु इटै–विशाल आकाश में; कटितु पोकुवान्–तेजी से (उड़ता) चला। २७००

हनुमान ने सोचा कि यहीं रहकर ओषधि के सम्बन्ध में सोचता रहूँ, तो समय व्यर्थ बीत जायगा। वह पर्वत को अपने लाल हाथ में उठाये झट विशाल आकाश में उड़ चला। २७००

आयिर मियोशनै यहल मीदुयर्‌न्‌
दायिर मियोशनै याऴ्‌न्‌द दम्मलै

एयॅन् मात्तिरत् तॊरुहै येन्दिनान्
नायिन नुलहॆलाम् दवळ्न्द शीर्त्तियान् 2701

उलकु ऍलाम्–संसार भर में; तवळ्न्त चीर्त्तिवान्–जिसकी कीर्ति फैली थी; आयिरम् योचनै तूरम् अकलम्–हज़ार योजन दूर; मऱ्पुऱत्तु उयर्न्तु–ऊपर उठकर; आयिरम् योचनै–हज़ार योजन; आऴ्न्तत्तु–जिसकी जड़ गयी थी, जो भूमि के अंदर; अ मलै–उस पर्वत को; ए ऎन्नुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देरी के अन्दर; ओरुकै एन्तिनान्–एक हाथ में उठा लिया (उस हनुमान ने)। २७०१

हनुमान ने, जिसका यश सभी लोकों में व्याप्त था, हज़ार योजन ऊँचे और हज़ार योजन गहरे उस पर्वत को 'ऐ' कहने के समय के अन्दर उठा लिया। वह उसे अपने एक हाथ में उठा लिये लपक चला। २७०१

अत्तलै यन्नव नन्नैय नायिनान्, इत्तलै यिरुवरुम् विरैवि नॆय्दिनार्
कैत्तलत् तालडि वरुडुङ् गालॆयिल्, उत्तमर् कुऱ्ऱवै युणर्त्तु वामरो 2702

अ तलै अन्नवन्–वहाँ वह; अन्नैयन् आयिनान्–वैसा हुआ; इ तलै–यहाँ; इरुवरुम्–दोनों (जाम्बवान और विभीषण); विरैविन्–शीघ्र; ऍय्तिनार्–पहुँचे (श्रीराम के पास); कै तलत्ताल्–हाथों से; अटि वरुटुम् कालैयिल्–पैर सहलाते समय; उत्तमर्कु–पुरुषोत्तम का; उऱ्ऱवै–जो हुआ; उणर्त्तुवाम्–वह कहेंगे। २७०२

उधर उसकी स्थिति वह रही। इधर जाम्बवान और विभीषण दोनों शीघ्र श्रीराम के पास जा पहुँचे। उन्होंने जब श्रीराम के पैर सहलाये, तब श्रीराम का क्या हाल हुआ वह अब हम (कवि) बताएँगे। २७०२

वण्डॆन मडन्दैयर् मनत्तै वेरॊडुङ्
गण्डन कॊळवरुङ् गरुणै तामॆनक्
कॊण्डन कॊडुप्पन वरङ्गळ् कोळिलाप्
पुण्डरी हत्तुणै तरुमम् बूत्तन 2703

वण्टु ऍन–भ्रमरों के समान; मटन्तैयर् मनत्तै–रमणियों के मनों को; वेरॊटुम् कण्टन–मूल के साथ जिन्होने अपना बना लिया था; कॊळ वरुम्–सब उठा ले, ऐसी; करुणै ताम् ऍन–करुणा यही है; कॊण्टन–ऐसे गुण अपने में रखनेवाली; वरङ्कळ् कॊटुप्पन–वरदायी जो हैं; कोळ् इला–विषमता-रहित; पुण्टरीकम् तुणै–आँखों का कमलद्वय; तरुमम् पूत्तन–धर्म के समान खिल उठे। २७०३

उनकी कमल-सम आँखें, जो भ्रमरों के समान रमणियों के मनों को मूल के साथ अपना बना ले सकती थीं, जो सब जीवों के ग्रहण योग्य करुणा-रूप थीं और जो वरदायिनी थीं, धीरे-धीरे धर्म के समान विकसित हुईं। २७०३

नोक्कितन् करडिहट् करशु नोन्बुहळ्
आक्किय निरुदन मळव कण्णिनार्

तूक्किय तलैयिनर् तॊऴुद कैयिनर्
एक्कमुऱ् ऱरुहिरुन् दिरङ्गु वार्हळै 2704

अऴुत कण्णितार्–रोती आँखों वाले; तूक्किय तलैयितर्–उठाए हुए सिर वाले; तॊऴुत कैयितर्–नमस्कार की मुद्रा में धरे हुए हाथों वाले; एक्कमुऱ्ऱु–तरसकर; अरुकु इरुन्तु–पास रहकर; इरङ्कुवार्कळै–जो दुःख से पीड़ित हो रहे थे उन; करटिकट्कु अरचु–रीछों के राजा को; नोन् पुकऴ् आक्किय–और यश को बढ़ा लेनेवाले; निरुतनुम्–राक्षस (विभीषण) को; नोक्कितन्–श्रीराम ने देखा। २७०४

श्रीराम ने आँखों को खोलकर रीछों के राजा जाम्बवान और बड़े यशस्वी राक्षसराजा विभीषण पर अपनी दृष्टि डाली। वे आँसू बहाते हुए अंजलिबद्ध हो पास खड़े, दुःख से रो रहे थे। २७०४

एविय कारिय मियऱ्ऱि यय्दिनै
नोविलै कॊल्लॆन नोक्क वीडणन्
तावरुम् बॆरुम्बुहऴ्च् चाम्बन् ऱन्नैयुम्
आविवन् दनैहॊलॆन् ऱरुळि नानरो 2705

वीटणन् नोक्कि–विभीषण को देखकर; एविय कारियम्–आज्ञापित कार्य; इयऱ्ऱि ऍय्तिनै–पूरा करके आये क्या; नोवु इलै कॊल्–कोई कष्ट नहीं है क्या; ऍन–ऐसा और; ता अरु–निर्दोष; पॆरु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; चाम्पन् तन्नैयुम्–और जाम्बवान को देखकर; आवि वन्तनै कॊल्–जीवंत हो गये क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; अरुळितान्–पूछने की कृपा की। २७०५

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि क्या तुम मेरी आज्ञा का काम पूरा कर आये? कोई कष्ट तो नहीं है न? फिर निर्दोष यशस्वी जाम्बवान से पूछने की कृपा की कि तुम जीवित हो गये?। २७०५

ऐयन्मीर् नमक्कुऱ्ऱ वऴिवि दादलिन्
शॆय्वहै पिऴिदिला वुयिरिऴ् ऴीर्न्दवर्
उय्हिल रिनिच्चॆयऱ् कुरिय वुण्डॆनिऱ्
पॊय्यिलीर् पुहलुदिर् पुलमै युळ्ळत्तीर् 2706

ऐयन्मीर्–जी; पिऴितु चॆय्वकै इला–प्रत्यवायहीन रीति से; उयिरिऴ् तीर्न्तवर्–जो प्राणहीन हो गये; उय्किलर्–नहीं जीवित हुए; नमक्कु उऱ्ऱ–हमें प्राप्त; अऴिवु इतु–नष्ट यह; आतलिन्–इसलिए; इनि–अब; चॆयऱ्कु उरियतु उण्टु–करने योग्य काम कुछ है; ऍनिल्–तो; पुलमै उळ्ळत्तीर्–ज्ञानी मन वाले; पॊय्यिलीर्–असत्य न बोलनेवाले; पुकलुतिर्–कहो। २७०६

मित्रो! प्रत्यवायहीन रीति से जो मरे हैं वे मर ही चुके हैं। हमारी बड़ी हानि है यह। अब हमें करने को कुछ हो, हे बुद्धिमान लोगो! बताओ। २७०६

शीदैयॆन् ऑरुत्तिया लुळ्ळन् दैम्बिय
पेदैयेन् शिरुमैया लुट्र पॆट्रियै
यादॆन्न वुणर्त्तुहे नुलही डिव्वुराक्
कादैवन् बळियॊडुन् दिरुत्तिक् काट्टिनेन् 2707

चीतै ऍन्नुर् ऑरुत्तियाल्–सीता नाम की एक स्त्री के कारण; उळ्ळम् तेम्पिय–चित्तभ्रमित; पेतैयेन्–अज्ञ मुझे; चिरुमैयाल्–अल्पता के कारण; उट्र पॆट्रियै–जो मिली वह उपलब्धि; यातु ऍन्न–क्या; उणर्त्तुकेन्–बताऊँगा; इव् उलकोटु उरा–इस लोक से असंबद्ध; कातै–अपनी गाथा को; वन् पळियॊटुम्–क्रूर निंदा के साथ; निरुत्ति–लगवाकर; काट्टिनेन्–दिखाया। २७०७

सीता नाम की स्त्री के कारण बुद्धिहीन मेरा मन विकृत हो गया था। क्षुद्र बुद्धि से मुझ पर क्या आया है—इसका क्या बताऊँ? मेरी गाथा संसार की रीति से बिलकुल अलग रह गयी और मैंने उसे निंद्य बना छोड़ा है। २७०७

मायैयिन् मानॆन्न वॆम्बि वाय्मैयाल्
तूयन वुरुदिहळ् शॊन्न शॊट्कॊळेन्
पोयिनन् पॆण्णुरै मरादु पोन्दाल्
आयदिप् पळियुडै यानि यन्बिनीर् 2708

अन्पिनीर्–प्यारे; मायैयिन् मान्–माया का मृग; ऍन्न–ऐसा; ऍम्पि–मेरे लघु सहोदर के; वाय्मैयाल्–सच्चे रूप से; तूयन उरुतिकळ् चॊन्न–पवित्र हित में कहे; चॊल् कॆळेन्–वचन मैंने नहीं सुने; पोयिनन्–(पकड़ने) गया; पॆण् उरै मरातु–स्त्री का कहा इन्कार न करके; पोन्ताल्–गया इसलिए; इ पळि उटै–यह निन्दा-सहित; आनि आयतु–हानि हो गयी। २७०८

प्यारो! मेरे भाई ने मायामृग के सम्बन्ध में सचेत किया था। पर उसके पवित्र और हितकारी वचनों पर मैंने ध्यान नहीं दिया। हिरन पकड़ने गया। स्त्री के वचन से न मुकरने का फल यह हुआ कि निन्दा भी आ गयी है और बड़ी हानि भी हो गयी है। २७०८

कण्डन निरावणन् ऱन्नैक् कण्गळाल्
मण्डमर् पुरिन्दनन् वलियि नारुयिर्
कॊण्डिल नुऱवॆलाङ् गॊडुत्तु माळनान्
पण्डुडैत् तीविनै पयन्द पण्बिनाल् 2709

इरावणन् तन्नै–रावण को; कण्कळाल् कण्टनन्–आँखों से देखा; वलियिन्–जोर के साथ; मण्टु अमर् पुरिन्तनन्–घोर युद्ध किया (मैंने); नान् पण्टु उटै–मेरा पूर्वजन्मकृत; तीविनै–बुरा कर्म; पयन्त–फल देने लग गया; पण्पिनाल्–उसके फलस्वरूप; उऱवु ऍलाम् माळ–सब नातेदारों को मरने; कॊटुत्तु–देकर; वलियिन्–जबरदस्ती; आरुयिर् कॊण्टिलन्–उसके प्राण न हर लिये मैंने। २७०९

रावण को मैंने अपनी आँखों देखा और उससे घमासान लड़ाई भी

की थी। पर पूर्वजन्मों के पापों का फल था कि मैंने उसके प्यारे प्राण नहीं हरे और मेरे सभी बन्धु-मित्र भी मर गये। २७०९

तेवर्दम् पडैक्कलन् दॊडुत्तुत् तीयवऩ्
शावदु काण्डुमॆऩ् ऱिळवल् शाऱ्ऱवुम्
आववै यिशैन्दिल ऩऴिव वॆऩ्ऩवयिऩ्
मेवुद लुऱुवदोर् विदियिऩ् वॆम्मैयाल् 2710

इळवल्–मेरा छोटा भाई; तेवर् तम् पटैक्कलम्–ब्रह्मा (देव) का अस्त्र; तॊटुत्तु–चलाकर; तीयवऩ् चावतु काण्टुम्–खल (इन्द्रजित्) का मरना देख लें; ऎऩ्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱवुम्–जब बोला तब; अऴिवतु–नाश का समय; ऎऩ् वयिऩ् मेवुतल् उऱुवतु–मेरे पास आ जाने के; ओर् वितियिऩ् वॆम्मैयाल्–प्रारब्ध की क्रूरता से; आववै–हितकारी उससे; इचैन्तिलऩ्–सहमत नहीं हुआ। २७१०

मेरे छोटे भैया ने मुझसे सुझाया कि ब्रह्मास्त्र चलाकर खल मेघनाद का वध करा दूंगा। पर "विनाशकाल आ जाए मेरा" —यह क्रूर विधि का भयंकर विधान था और मैंने उसे अनुमति नहीं दी। २७१०

निऩ्ऱिल तुडऩॆऱि पडैक्कु नीदियाल्
ऒऩ्ऱिय पूशऩै यियऱ्ऱ वुऩ्ऩिऩेऩ्
पॊऩ्ऱिऩर् तमरॆला मिळवल् पोयिनाऩ्
वॆऩ्ऱिल ऩरक्कऩै विदियिऩ् वॆम्मैयाल् 2711

निऩ्ऱिलऩ्–(भाई के साथ युद्धस्थल में) न खड़ा रहकर; ऎऱि पटैक्कु–चलाये जानेवाले अस्त्र-शस्त्रों की; नीतियाल्–उचित क्रम से; ऒऩ्ऱिय–युक्त; पूचऩै इयऱ्ऱ–पूजा करने को; उऩ्ऩिऩेऩ्–सोचा था; वितियिऩ् वॆम्मैयाल्–विधि के क्रूर विधान से; तमर् ऎलाम् पॊऩ्ऱिऩर्–अपने सभी लोग मर गये; इळवल्–मेरा छोटा भाई; अरक्कऩै वॆऩ्ऱिलऩ्–राक्षस को न हराकर; पोयिऩाऩ्–चल बसा। २७११

मैं अपने भाई के साथ न रहा। मैंने यथोचित रीति से युद्ध में प्रयुक्त होनेवाले अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करनी चाही। विधि की क्रूरता थी कि मेरे अपने सभी हत हो गये। मेरा भाई भी राक्षस को न हराने का दुःख लेकर मर गया। २७११

ईण्डिव णिरुन्दवै यियम्बु मेऴैमै
वेण्डुव दऩ्ऱिऩि यमरिऩ् वीडिय
आण्डहै यऩ्बरै यमरर् नाट्टिडैक्
काण्डले नलम्बिऱ कण्ड दिल्लैयाल् 2712

ईण्टु–अब; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; इवै–ये बातें; इयम्पुम्–कहने की; एऴैमै–बुद्धिहीनता; वेण्टुवतु अऩ्ऱु–नहीं चाहिए; इऩि–अब; अमरिऩ् वीटिय–युद्ध में हत; आण् तकै अऩ्परै–वीर मित्रों को; अमरर् नाट्टु इटै–स्वर्गलोक में; काण्टले नलम्–देखना ही भला है; पिऱ कण्टतु इल्लै–दूसरा उपाय नहीं है। २७१२

अब यहाँ रहकर ऐसी दीन बातें करते रहने की बुद्धिहीनता की आवश्यकता नहीं। पर जो युद्ध में प्राण त्याग चुके, उन प्यारे वीरों को स्वर्ग में (देखने) पहुँचाने का कार्य करना ही भला होगा। फिर कोई रास्ता नहीं दीखता उन्हें यहाँ रख लेने का। २७१२

ऍम्बियैत्	तुणैवरै	यिऴन्दप्	पालिति
वॅम्बुपो	ररक्करै	मुरुक्कि	वेरुत्
तम्बिति	तिरावण	नावि	पाऴ्पडुत्
तुम्बरुक्	कुदविमे	लुरुव	दॅन्नरो 2713

ऍम्पियै–अपने लघु सहोदर को; तुणै वरै–और मित्रों को; इऴन्तु–खोकर; अप्पाल्–बाद; इति–आगे; वॅम्पु अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; पोर्–युद्ध में; मुरुक्कि–मारकर; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; अम्पितिल्–अपने शर से; इरावणन् आवि पाऴ् पट्टुत्तु–रावण के प्राण छुड़ाकर; उम्परुक्कु उतवि–देवों का उपकार करके; मेल् उऱुवतु ऍन्–बाद पाऊँ, ऐसा क्या है। २७१३

प्यारे भाई और मित्रों को मरने देने के बाद नृशंसकारी राक्षसों को युद्ध में हराऊँ, निर्मूल करूँ और अपने अस्त्र से रावण के प्राणों का अन्त करके देवों की सहायता करूँ भी तो लाभ क्या होगा? । २७१३

इळैयव	निरन्दपिन्	नॅवरु	मॅन्नॅनक्
कळवरु	कोर्त्तियॅन्	नरनॅन्	नाण्मैयॅन्
गिळैयुरु	शुर्रमॅन्	नरशॅन्	गेण्मैयॅन्
विळैवुदा	नॅन्मरै	विदियॅन्	मॅय्म्मैयॅन् 2714

इळैयवन् इरन्त पिन–लघुसहोदर के मरने के बाद; ऍतक्कु ऍवरुम् ऍन्–मेरे लिए कोई क्या है; अळवु अऱु कीर्त्ति ऍन्–अपार कीर्ति से क्या; अऱन् ऍन्–धर्म क्या; आण्मै ऍन्–पौरुष (वीरता) से क्या है; किळै उऱु–शाखायुक्त; चुऱ्ऱम् ऍन्–बन्धुओं से क्या; केण्मै ऍन्–मित्रों से क्या; अरचु ऍन्–राज्य से क्या; विळैवु तान् ऍन्–अन्य नतीजों से क्या; नान् मऱै विति ऍन्–चतुर्वेदविहित विधियों से क्या; मॅय्म्मै ऍन्–सत्य से क्या। २७१४

अपने छोटे भाई को खो देने के बाद किससे क्या वास्ता? अपार यश का भी क्या होगा? धर्मपालन, वीरता, शाखा-सम बन्धु-बान्धव, मित्र, राज्य या अन्य कोई लाभ —किससे क्या मतलब? चतुर्वेदविहित चरित्र-पालन या सत्यनिष्ठा से भी क्या होगा? । २७१४

इरक्कमुम्	वाऴ्पड	वॅम्वि	योरुकण्
डरक्करै	वॅन्ऱुनिन्	ऱाण्मै	याऴ्वॅन्नेल्
मरक्कणवन्	कळ्वलॅन्	वञ्ज	नॅन्निनक्
करक्कुम	वल्लवोर्	कडन्नण्	डाहुमो 2715

इरक्कमुम् पाऴ्पट-दया को व्यर्थ बनाते हुए; ऍम्पि ईऱु कण्टु-अपने छोटे भाई की मृत्यु देखकर; अरक्करै वॆन्ऱु-राक्षसों को जीतकर; निन्ऱु-रह कर; आण्मै आऴ्वॆतॆल्-वीरता दिखाऊँ तो; मरम् कण्-काठ की आँखों का; कळ्वतॆन्-चोर रहूँगा; वञ्चतॆन्-वंचक भी रहूँगा; इनि-अब; करक्कुम् अतु अल्लतु-जीवन अन्त करने के सिवा; ओर्-एक; कटन् उण्टाकुमो-कर्तव्य रहेगा क्या। २७१५

मेरी दया व्यर्थ गयी। मेरा भाई मर गया। अब मैं राक्षसों को जीतकर वीरता दिखाने चलूँ, तो मेरी आँखें काठ की होंगी और मैं चोर रह जाऊँगा ! अब प्राणत्याग छोड़ कोई कर्तव्य है क्या ? । २७१५

तादैयै इऴन्दपिन् शडायु विऱ्ऱपिन्
कादलिन् ऱुणैवरु मुडियक् कात्तुळल्
कोदऱु तम्बियुम् विळियक् कोळिलन्
शीदैयै युवन्दुळा नॆन्बर् शीरियोर् 2716

तातैयै इऴन्त पिन्-पिता को खोने के बाद; चटायु इऱ्ऱपिन्-जटायु के मरने के बाद; कातलिन् तुणैवरुम्-सभी प्यारों के; मुटिय-अन्त होने पर; कात्तु उऴल्-मेरे रक्षण में कष्ट जो उठाता रहा; कोतु अऱु तम्पियुम्-अनिंद्य भाई के भी; विळिय-मरने के बाद; चीतैयै उवन्तुळान्-सीता को चाहता है; कोळ् इलन्-सिद्धान्तरहित है; ऍन्पर्-कहेंगे; चीरियोर्-साधू लोग। २७१६

उत्तम साधू लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे ? राम ने पिता को खोया, जटायु को खोया। प्यारे मित्र चल बसे। उसके रक्षण में संकट उठाता जो रहा, वह प्यारा सहोदर मर गया। तो भी सीता के प्रेम के कारण प्राण रख रहा है। उसका कोई अच्छा सिद्धांत नहीं है ! । २७१६

वॆन्ऱन ऩरक्करै वेरुम् वीय्न्दऱक्
कॊन्ऱन ऩयोत्तियैक् कुऱुहिनॆन् कुणत्
तिन्ऱुणैत् तम्बियै यिन्ऱि यानुळेन्
नन्ऱर शाळुमो शाल नन्ऱरो 2717

वॆन्ऱनन्-जीतकर; अरक्करै वेरुम् वीय्न्तु अऱ-राक्षसों का उन्मूलन करके; कॊन्ऱनन्-मारकर; अयोत्तियै कुऱुकिनॆन्-अयोध्या जाकर; कुणत्तु-गुणी; इन् तुणै-अच्छे साथी; तम्पियै-छोटे भाई के; इन्ऱि-विना; यान् उळेन्-मैं रहूँगा (तो); अरचु आळुमा-राज्य करना; नन्ऱु-अच्छा होगा; चाल नन्ऱु-बहुत अच्छा होगा। २७१७

विजय पाऊँ, राक्षस को निर्मूल करूँ, फिर अयोध्या जाऊँ तो भी प्रिय साथी सहोदर को मरने देने के बाद राज्य का शासन करने लगूँ तो अच्छा होगा ! बड़ा अच्छा होगा ! । २७१७

पडियिऩ्ऩ दादलि ऩियादुम् बार्क्किलऩ्
मुडिहुव ऩुडऩ्ऩ मुड्क्किक् कूऱलुम्
अडियिणै वणङ्गियच् चाम्बव ऩाऴियाय्
नॉडिहुव दुळदॆऩ नुवल्व दायिऩाऩ् 2718

पटियिऩ्ऩवु आतलिऩ्–मेरी स्थिति यह है, इसलिए; यातुम् पार्क्किलऩ्–कुछ भी नहीं सोचूँगा; उटऩ् मुटिकुवऩ्–झट मर जाऊँगा; ऍऩ–ऐसा; मुटुक्कि कूऱलुम्–त्वरा से कहते ही; अ चाम्पऩ्–उस जाम्बवान ने; अटि इणै वणङ्कि–चरणद्वय में नमन करके; आऴियाय्–चक्रधारी; नॉटिकुवतु उळतु–कहने के लिए कुछ है; ऍऩ–कहकर; नुवल्वतु आयिऩाऩ्–कहने लगा। २७१८

मेरी स्थिति यह है। फिर क्या सोचूँ? न आगे देखूँगा, न पीछे; पर अपने प्राण त्याग दूँगा। श्रीराम ने जब ऐसा ज़ोर के साथ कहा, तब जाम्बवान ने उनके चरणद्वय में नमस्कार करके निवेदन किया कि हे चक्रधारी! एक बात कहनी है। सुनने की कृपा करें। जाम्बवान बताने लगा। २७१८

उऩ्ऩैनी युणर्हिलै यडिय ऩेऩुऩै
मुऩ्ऩमे युणर्हुवऩ् मॉऴिद ऱीदु
ऍऩ्ऩॆऩि लिमैयव रॆण्णुक् कीऩमाम्
पिऩ्ऩरे तॆरिहुदि तरिविल् पॆऱ्ऱियाय् 2719

तॆरिविल् पॆऱ्ऱियाय्–अग्राह्य गुण वाले; उऩ्ऩै नी उणर्किलै–आपने अपने को नहीं पहचाना; अटियऩेऩ्–दास मैं; उऩै–आपको; मुऩ्ऩमे–पहले ही से; उणर्कुवऩ्–जानता हूँ; अतु मॊऴितल्–उसको कहना; तीतु–ग़लत है; ऍऩ् ऍऩिऩ्–क्योंकि; इमैयवर् ऍण्णुक्कु–देवों के विचार की; ईऩम् आम्–हानि होगी; पिऩ्ऩरे तॆरिकुति–बाद आप ही जान लेंगे। २७१९

हे अज्ञेय! आप (अज्ञेय होकर भी) अपना ज्ञान नहीं रखते! मैं आपको पहले से ही पहचानता हूँ। पर उसको प्रगट करना ग़लत होगा। क्योंकि देवों की बात बिगड़ जायगी। पीछे आप स्वयं पहचान लेंगे। २७१९

अम्बुयत् तवऩ्पडै याद ऱॆऱिमऩ्
उम्बियै युलप्परु मुरुवै मूऩ्ऱिड
वॆम्बुवॆङ् गळत्तिडै विळुत्त वॆऩ्ऱियाऩ्
ऍम्बॆरुन् दलैववी ऱॆण्ण मुण्मैयाऩ् 2720

ऍम् पॆरुम् तलैव–हमारे श्रेष्ठ स्वामी; वॆम्पु–वीरों को संताप देनेवाले; वॆम् कळत्तु इटै–भयानक युद्ध के मैदान में; उम्पियै–आपके छोटे भाई को; उलप्पु अरु–अवध्य; उरुवै–वानरों के शरीर में; ऊऩ्ऱिट–खूब धँसकर; विळुत्त–जो मरवाया;

वॆंत्रियान्–ऐसी विजय वाला था, अतः; अम्पुयत्तवन् पटै आतल्–कमलासन का शर है यह; तेरिन्तन्–जाना मैंने; ईतु–यह; उण्मै–सच है। २७२०

हमारे महान स्वामी ! वीरों को संतप्त करनेवाले भयंकर युद्धस्थल में आपके भाई को और अप्रतिहत वानरों के शरीरों में लगकर उनको इन्द्रजित् का अस्त्र मारने में सफल हो सका। तभी मैंने समझ लिया कि वह अंबुजासन का अस्त्र है। यह बात सच है। २७२०

अन्नवन् पडैक्कल ममरर् तानवर्
तन्नैयुम् विडिनुयिर् कुडिक्कुन् दऱ्पर
उन्नैयोन् ऱिळैत्तिल दॊळिन्दु नीङ्गियदु
इन्नमु मुवमैयोन् ऱॆण्ण वेण्डुमो 2721

अन्नवन् पटै कलम्–उनका अस्त्र; विटिन्–प्रेरित हो तो; अमरर् तानवर् तन्नैयुम्–देवों और दानवों को; उयिर् कुटिक्कुम्–प्राणहीन कर देगा; तत्पर–परात्पर; उन्नै ओन्ऱु इळैत्तिलतु–आपका कुछ (अहित) नहीं किया; ओळिन्तु नीङ्कियतु–छोड़कर अलग हो गया; इन्नमुम्–और भी; उवमै ओन्ऱु–कोई उपमा; ऎण्ण वेण्टुमो–सोचना चाहिए क्या। २७२१

ब्रह्मास्त्र देवों और दानवों का भी अंत कर देगा। परात्पर ! उसने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। वह छोड़कर अलग चला गया। फिर क्या प्रमाण चाहिए ? । २७२१

पॆरुन्दिऱ लनुमनीण् डुणर्वु पॆऱ्ऱुत्तान्
अरुन्दुयर् मुडिक्कुऱु मळवि लाऱ्ऱलान्
मरुन्दिरैप् पॊऴुदिनिऱ् कॊणर्हु वायॆनप्
पॊरुन्दितन् वडतिशैक् कडिदु पोयिनान् 2722

पॆरु तिऱल् अनुमन्–महाबली हनुमान; ईण्टु–अब; उणर्वु पॆऱ्ऱु–प्रज्ञा पाकर; अरु तुयर्–अवार्य दुःख को; मुटिक्कुऱुम्–निवारण करने को; अळवु इल् आऱ्ऱलान्–अपार शक्ति रखनेवाले (उस) से; यान्–मैंने; मरुन्तु–संजीवनी औषध को; इरै पॊऴुतिनिल्–बहुत कम समय में; कॊणर्कुवाय्–लाओ; ऎन–कहा तो; पॊरुन्तितन्–सम्मत होकर; तान्–वह; वट तिचै–उत्तर दिशा में; कटितु पोयिनन्–तुरन्त गया। २७२२

महावीर हनुमान होश में आ गया। उस अपार बली को यह संकट दूर करने के निमित्त मैंने संजीवनी को एक पल में लाने भेजा। वह भी सम्मत हो उत्तर में गया है। २७२२

पनिवरै कडन्दनन् परुप्प दङ्गळिन्
तनियर शिन्पुरन् दविरच् चाऱ्ऱुळन्

इऩियॊरु कणत्तिऩ्वन् वॆय्दु मीण्डुरुन्
दुनिवरु तुन्बनी तुऱत्ति तॊल्लैयोय् 2723

पत्ति वरै कटन्ततन्–हिमगिरि पार कर; परुप्पतक्कळित्–पर्वतों के; तत्ति अरचित् पुरम् तविर–अकेले राजा (मेरु पर्वत) को पीछे छोड़; चाऱ्न्तुळत्–गया है; ईण्टु–यहाँ; ओरु कणत्तिन्–एक पल में; वन्तु ऍय्तुम्–आ जायगा; तॊल्लैयोय्–पुरुष पुरातन; उरुम्–होनेवाला; तुऩि वरु–चित्तविलोडनकारी; तुन्पम्–दुःख; नी–आप; तुऱत्ति–छोड़ दें। २७२३

वह हिमालय के उस पार, गिरिराज मेरु के भी आगे गया है। अभी एक पल में आ जायगा। पुरुष पुरातन! चित्ताक्रांतकारी दुःख को छोड़ दीजिएगा। २७२३

यानला लन्दैया युलहै यीन्ऱुळान्
दानलाऱ् चिवनला नेमि ताङ्गिय
कोनला लियावरु मुणरुङ् गोळिलर्
वेनिलात् मेनिया मरुन्दै मॅय्युऱ् 2724

वेनिलात् मेनिया–वसंतराज मन्मथ (निभ); यान् अलाल्–मेरे सिवा; ऍन्तैयाय्–मेरे पिता जो; उलकै ईन्ऱुळात्–लोकजनक; तान् अलाल्–(ब्रह्मा) के सिवा; चिवन् अलाल्–शिव के सिवा; नेमि ताङ्किय–चक्रधर; कोन् अलाल्–अधिपति श्रीविष्णु के सिवा; यावरुम्–कोई भी; मरुन्तै–उस औषध को; मॅय् उऱ् उणरुम्–यथार्थ रूप से जानने की; कोळ् इलर्–बुद्धि नहीं रखते। २७२४

वसंतऋतु के देवता मन्मथ के जैसे मनोरम रूपवाले! मुझे, मेरे पिता ब्रह्मा को, शिव और चक्रधारी को छोड़ अन्य उस संजीवनी औषधों के सम्बन्ध में यथार्थ नहीं जानते। २७२४

आऱ्हलि कडैन्दना ळमिर्दिन् वन्दन
कार्निऱत् तण्णऱ् नेमि काप्पन
मेरुवि नुत्तर कुरुविन् मेलुळ
यारुमुऱ् ऱुणर्हिला वरण मॅय्दिन 2725

आर् कलि–समुद्र को; कटैन्त नाळ्–जिस दिन मथा गया; अमिर्तिन् वन्तन–अमृत के साथ प्रकट हुए; कार् निऱत्तु अण्णल् तन्–मेघश्याम के; नेमि–चक्र द्वारा; काप्पन–रक्षित हैं; मेरुवित्–मेरु के उस तरफ़; उत्तर कुरुविन् मेल् उळ–उत्तर कुरु प्रदेश में हैं; यारुम्–कोई भी; उऱ्ऱु उणर्किला–पास जा समझ न सकें; अरणम् ऍय्तिन–ऐसी सुरक्षा-प्रबन्ध के अन्दर हैं। २७२५

वे ओषधियाँ समुद्रमथन के दिन अमृत के साथ प्रगट हुई थीं। मेघश्याम श्रीविष्णु के चक्र के संरक्षण में हैं। मेरु के उत्तर के उत्तर-कुरुप्रदेश के उस पार हैं। उनका सुरक्षाप्रबंन्ध ऐसा है कि कोई उनके पास पहुँच उन्हें जान न सके। २७२५

तोन्ऱिय नाळ्मुद लियारुम् दीट्टिल
आन्ऱपे रण्णले यवर्ऱिऩ् ऩाऱ्ऱल्हेळ्
मून्ऱॆन वॊन्ऱिय वुलहु मुऩ्ऩैनाळ्
ईन्ऱव निऱप्पिनु मावि यीयुमाल् 2726

तोन्ऱिय नाळ् मुतल्–जन्म से लेकर; यारुम् तीट्टिल–(ये) किसी से छुई नहीं गयीं; आन्ऱ पेर् अण्णले–बड़े यशस्वी प्रभु; अवर्ऱिऩ् आऱ्ऱल् केळ्–उनकी शक्ति सुनिए; मून्ऱु ऎंत ऒन्ऱिय–तीन का समूह; उलकम्–जो है उन लोकों को; मुऩ्ऩै नाळ्–प्राचीन दिन में; ईन्ऱवन्–जिन्होंने बनाया वे ब्रह्मा; इऱप्पिनुम्–मर जायें तो भी; आवि ईयुम्–उन्हें जिला देंगे। २७२६

प्रगट होने के दिन से आज तक वे किसी से भी छुई नहीं गयीं। महान यशस्वी! उनकी शक्ति सुनिए। त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा भी मर जायँ उनको भी वे प्राणवंत कर सकती हैं। २७२६

शल्लिय महऱ्ऱुव दॊन्ऱु शन्दुहळ्
पुल्लुऱप् पॊरुत्तुव दॊन्ऱु पोयिऩ
नल्लुयिर् नल्हुव दॊन्ऱु नन्निऱन्
दॊल्लैय दाक्कुव दॊन्ऱु तॊल्लैयोय् 2727

तॊल्लैयोय्–पुरुष पुरातन; ऒन्ऱु–एक; चल्लियम् अकऱ्ऱुवतु–शल्य-निवारक है; ऒन्ऱु–एक; चन्तुकळ्–जोड़ों को; पुल् उऱ–खूब; पॊरुत्तुवतु–जोड़नेवाला है; ऒन्ऱु–एक; पोयिऩ नल् उयिर्–गये हुए अच्छे प्राणों को; नल्कुवतु–लौटाने वाला है; ऒन्ऱु–और एक; नल् निऱम्–श्रेष्ठ शरीर को; तॊल्लैयतु आक्कुवतु–पुराना रूप देनेवाला है। २७२७

पुरुष पुरातन! उनमें एक शल्य-निवारक है। दूसरी टूटे जोड़ों को जोड़नेवाली है। तीसरी प्राण दिलाने में समर्थ है। चौथी विकृत शरीर को यथावत् रूप दिला सकती है। (वाल्मीकी में इनके नाम विशल्यकरणी, संतानकरणी, मृतसंजीवनी और सावर्ण्यकरणी दिये गये हैं।)। २७२७

वरुवदु तिण्णनी वरुन्दऩ् मारुदि
तरुनॆऱि तरुममे काट्टत् ताऴ्हलऩ्
अरुमैय दन्ऱॆना वडिव णङ्गिनाऩ्
इरुमैयुन् दुडैप्पव ऩेम्ब लॆय्दिनाऩ् 2728

वरुवतु तिण्णम्–(औषध का) आना निश्चित है; नी वरुन्तल्–आप दुःख न करें; मारुति–मारुति; तरुममे–धर्मदेवता के ही; तरु नॆऱि काट्ट–आने का मार्ग दिखाते; ताऴ्कलऩ्–विलम्ब न करके (आ जायगा); अरुमैयतु अन्ऱु–दुस्साध्य नहीं; ऎंना–कहकर; अटि वणक्किनाऩ्–चरणों में नमन किया; इरुमैयुम् तुटैप्पवन्–कर्मद्वयमेटक; एम्पल् ऎय्तिनाऩ्–खुश हुए। २७२८

वह आ जायगा, यह निश्चित है। मारुति धर्मदेवता के ही

पथप्रदर्शन में अविलम्ब ले आ जायगा। उसके लिए कोई असाध्य नहीं। यह कहकर जाम्बवान ने उनके चरणों में नमस्कार किया। यह सुनकर कर्मद्वयमेटक श्रीराम मुदित हुए। २७२८

पॊन्मलै मीदुपोय्प् पोह् बूमियित्
नन्मरुन् दुदवुमॆन् ऱुरैत्त नल्लुरैक्
कन्वय मिल्लैयॆन् ऱयिर्क्किन् ऱेन्लेन्
ऎन्तलुम् वडदिशै यॆऴुन्द दङ्गॊलि 2729

पॊन् मलै मीतु पोय्–स्वर्ण-पर्वत पर जाकर; पोकम् पूमियित्–भोगभूमि से; नन् मरुन्तु–श्रेष्ठ संजीवनी औषध; उतवुम्–(लाकर) उपकार करेगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैत्त नल् उरैक्कु–जो (शब्द) कहे (तुमने) उन शब्दों के लिए; अन्वयम् इल्लै–अर्थ नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्किन्ऱेन् अलेन्–सन्देह नहीं करता; ऎन्तलुम्–(ऐसा श्रीराम के) कहते-कहते; अङ्कु–वहाँ; वट तिचै–उत्तर दिशा में; ऒलि–शब्द; ऎऴुन्ततु–उठा। २७२९

उन्होंने कहा कि तुमने जो कहा कि हनुमान स्वर्णगिरि के भी उस पार भोग (स्वर्ग) भूमि भी पार कर श्रेष्ठ संजीवनी औषधों को ला देगा, उसमें मैं संशय ही नहीं करता। ज्योंही उन्होंने यह कहा, त्योंही उत्तर में कोई शब्द सुनायी दिया। २७२९

कडल्हिळर्न् दॆऴुन्दुमेऱ् पडरक् कार्वरै
इडैयिडै परिन्दुविण् णेऱ विऱ्ऱिडै
तडैयिला दुडऱ्ऱुरु चण्ड मारुदम्
वडदिशै तोन्ऱिय मरुक्क मुऱ्ऱदाल् 2730

कटल्–समुद्र; किळर्न्तु ऎऴुन्तु–उमँग उठकर; मेल् पटर–तीरों पर बहा; कार् वरै–मेघाश्रित पर्वत; इटै इटै परिन्तु–बीच-बीच में टूटकर; विण् एऱ–आकाश में गये; इटै इऱ्ऱु–बीच में टूटकर; तटै इलातु–अबाध रूप से; उटऱ्ऱुरु–बहने वाला; चण्ट मारुतम्–प्रचंड मारुत; वट तिचै तोन्ऱिय–उत्तर दिशा में जो प्रकट हुआ वह; मरुक्कम् उऱ्ऱ–अस्त-व्यस्त हुआ। २७३०

समुद्र उमग उठा और तीर पर बहा। मेघाश्रित पर्वत टूटकर आकाश में उछल उठे। उत्तर से अवाध तथा निरंतर बहनेवाले प्रचण्ड-मारुत से सब स्थानों में अव्यवस्था हुई। २७३०

मीन्गुलङ् गुलैन्दुह वॆयिलिन् मण्डिलन्
दान्गुलैन् दुयर्मदि तळुवत् तन्तुळै
मान्गुलम् वॆरुक्कॊळ मयङ्गि मण्डिवान्
तेन्गुलङ् गलङ्गिय नऱविऱ् चॆन्ऱवाल् 2731

मीन् कुलम्–उडुगण; कुलैन्तु उक–अव्यवस्थित होकर च गये; वॆयिलिन्

मण्टिलम्तान्–सूर्यमण्डल; कुलैन्तु–लटफर; उयर् मति तऴुय–ऊपर चन्द्र से लग गया; तन् उऴै–(चन्द्र के) अपने मध्य रहनेवाले मृग से; मान् कुलम् वॅरु कॊळ–मृगकुल भयभीत हुए; तेन् कुलम् कलङ्किय–भ्रमरकुल तितर-बितर हुए जैसे; वान् मेकम् मण्टि–आकाश के मेघ मिले और; मयङ्कि चॅन्ऱ–मिश्रित होकर चले। २७३१

उडुगण अस्त-व्यस्त हो गिर गये। सूर्यमण्डल गड़बड़ाकर चन्द्र से मिल गया। चन्द्र के मध्य जो हिरन था, उससे मृगकुल डरे। आकाश के मेघ छत्ते पर भ्रमरकुल अस्त-व्यस्त हो गये हों जैसे आपस में मिल मिश्रित हो संचार करने लगे। २७३१

वेर्त्तुणर् तूरॊडु विशुम्बॅ मीच्चॅलप्
पोर्त्तन मलैयॊडु मरनु मुन्बुपोल्
तूर्त्तन वेलैयैक् कालिन् ट्रोन्ऱलुम्
आर्त्तन नत्तैयव ररनदं यार्ऱुवान् 2732

वेर् तुणर् तूरॊडु–जड़, गुच्छों और शाखाओं के साथ; मी चॅल–आकाश में गये, इसलिए; पोर्त्तन–ढाँपकर; मलै यॊडु मरनुम्–पर्वत और तरु; मुन्पु पोल्–पहले (सेतुबन्धन के समय में) जैसे; वेलैयै तूर्त्तन–समुद्र को सुखा गये; कालिन् तोन्ऱलुम्–वायुपुत्र ने भी; अत्तैयवर् अरनुत्तं आर्ऱुवान्–उनके दुःख को दूर करता हुआ; आर्त्तनन–उच्च घोष किया। २७३२

पर्वत और तरु अपने मूलों, गुच्छों और शाखाओं के साथ ऊपर जाकर आच्छादित करते हुए समुद्र पर गिरे और उन्होने पहले बने सेतु के समान समुद्र को जलहीन कर दिया। मारुति ने भी श्रीराम आदि के दुःख को दूर करने के विचार से बड़ा नाद उठाया। २७३२

मऴैहळुङ् गडल्हळु मऱ्ऱु मुऱ्ऱुमण्
णुऴैयवुम् विशुम्बवू मॊलित्तङ् कॊत्तुळ
कुऴीइयिन् कुमुऱिन कॊळ्है कॊण्डवाल्
उऴुवैयिन् शिन्नत्तव नार्त्त वोशैये 2733

उऴुवैयिन् चिन्नत्तवन्–व्याघ्र की तरह क्रुद्ध हनुमान का; आर्त्त ओचै–उठाया हुआ नाद; मण् उऴैयवुम्–पृथ्वीवासी; विचुम्पवुम्–आकाशवासी; ऒलित्तङ्कु ऒत्तु उळ–शब्द कर सकनेवाले; मऴैकळुम् कटल्कळुम्–मेघ और सागर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुम्–अन्य सभी; कुऴीइयन्–इकट्ठे होकर; कुमुऱिन कॊळ्कै कॊण्ट–शब्द करें तो जो होगा वही रहा। २७३३

व्याघ्र के समान रोषपूर्ण हनुमान का नाद भूलोक और आकाश के गर्जन करने के स्वभाव वाले मेघों, सागरों और अन्य सभी चीज़ों के सम्मिलित नाद के समान था। २७३३

ऍऱ्ऱितिरैप् पॆरुङ्गडल् कडैय वॆऱ्ऱनाळ्
शॆऱ्ऱिशुडर् मन्दरन् दरुदि शॆन्ऱन
वॆऱ्ऱिदुहॊ लॆन्ऩक्कॊडु विशुम्बिन् मीच्चॆलुम्
उरुवलिक् कलुळऩे यॊत्तुत् तोन्ऱिऩान् 2734

ऍऱ्ऱि तिरै–उछलती तरंगों के; पॆरु कटल्–बड़े (क्षीर-) सागर को; कटैय–मथने के लिए; एऱ्ऱ नाळ्–(जिस दिन देव और असुर) सम्मत हुए उस दिन; चॆऱ्ऱि चुटर्–घने प्रकाश वाले; मन्तरम् चॆन्ऱु तरुति–मन्दर पर्वत लाकर दो; ऍन्ऩ–कहने पर; वॆऱ्ऱितु कॊल्–(हमेशा यह स्थान) रिक्त ही रहा क्या; ऍन्ऩ–ऐसा लोग कहें इस रीति से; कॊट्टु–लेकर; विचुम्पिऩ् मी चॆलुम्–आकाश में ऊपर चलनेवाले; उरु वलि–महाबली; कलुळऩे ऒत्तु तोन्ऱिऩान्–गरुड़ के समान ही दिखा। २७३४

जब उछलती तरंगों के क्षीरसागर को मथने के काम में देव और दानव प्रवृत्त हुए, तब गरुड़ से कहा गया कि घने प्रकाश से शोभनेवाले मन्दर पर्वत को ला दो। गरुड़ ने उसके स्थान को रिक्त करते हुए उस पर्वत को उखाड़ा। तब महाबली वह गरुड़ आकाश में जाते हुए जैसे लग रहा था, वैसे ही हनुमान अब लगा। २७३४

पूदलत् तरवॊडु मलैन्दु पोऩनाळ्, ओदिय वॆन्ऱिय नुडऱ्ऱु मूऱ्ऱत्तन्
एदमि लिलङ्गैयङ् गिरिहॊ डॆय्दिय, तादैयु मॊत्तन नुवमै तऱ्किलान् 2735

पूतलत्तु–भूलोक में; अरवॊटु मलैन्तु पोऩ नाळ्–जब आदिशेष नाग से युद्ध करने गया उस दिन; ओतिय वॆन्ऱियन्–प्रशंसित विजयी; उटऱ्ऱुम् ऊऱ्ऱत्तन्–बहने की शक्ति रखनेवाले; एतम् इल् इलङ्कै–निर्दोष लंका में; अम् किरि कॊटु–और जो सुन्दर त्रिकूट पर्वत को ले; ऍय्तिय–आया था; तातैयुम् ऒत्तनन्–उस अपने पिता के समान भी रहा; उवमै तऱ्कु इलान्–अपनी सानी न रखनेवाला हनुमान। २७३५

आदिशेष का एक दिन वायु से टक्कर हो गया था। उस दिन वायुदेव प्रकीर्तित विजयी हो गया। वायु समरसमर्थ बली भी था। वही निर्दोष लका में त्रिकूट पर्वत लाया था। अप्रतिम हनुमान अपने पिता, उसी वायुदेव के समान लगा। २७३५

तोन्ऱिन ऍन्ऩुमच् चॊल्लिन् मुन्ऩम्वन्
दून्ऱिऩ निलत्तडि कडवु ळोङ्गलान्
वान्ऱनि निन्ऱदु वञ्ज रूर्वर
एन्ऱिल दादलि ऩनुम ऩॆय्दिऩान् 2736

तोन्ऱिनन्–आ गया; ऍन्ऩुम्–ऐसे; अ चॊल्लिन्–उस शब्द के; मुन्ऩम् वन्तु–पहले ही आकर; निलत्तु अटि ऊन्ऱिऩन्–भूमि पर पैर रखा; अनुमन् ऍय्तिऩन्–हनुमान आ गया; वञ्चर् ऊर् वर–वंचकों की बस्ती में आना; एन्ऱिलतु आतलिन्–पसंद नहीं था, इसलिए; कटवुळ् ओङ्कल्–दिव्य (ओषधि-) पर्वत; वान् तनिल्–आकाश में; निन्ऱतु–खड़ा रह गया। २७३६

'आ गया' —जाम्बवान के यह शब्द कह चुकने से पूर्व ही हनुमान ने ज़मीन पर पैर रख लिया। वह ओषधिपर्वत वंचकों के नगर में आना पसन्द न करके ऊपर आकाश में ही रह गया। २७३६

कार्रुवन् दशैत्तलुङ् गडवु णाट्टवर्
पोर्र्रित्तर् विरुन्दुवन् दिरुन्द पुण्णियर्
एर्र्रमुम् बॅरुवलि यळ्हॉ डॅय्दित्तार्
कूर्र्रित्तै वॅत्र्रुद मुरुवुङ् गूडित्तार् 2737

कटवुळ् नाट्टवर्–देवलोकवासियों से; पोर्र्रित्तर्–शंसित; विरुन्तु वन्तिरुन्त–अतिथि के रूप में आगत; पुण्णियर्–पुण्यात्मा; कार्रु वन्तु–पवन के आकर; अचैत्तलुम्–हिलाते ही; एर्र्रमुम्–उत्कृष्टता और; पॅरु वलि–बड़ा बल और; अळकॉटु–सुन्दरता इनको; अॅय्तित्तार्–प्राप्त करके; कूर्र्रिनै वॅन्र्रु–मृत्यु को जीतकर; तम् उरुवुम् कूटित्तार्–अपने शरीरो से मिल गये। २७३७

देवलोक में उनसे प्रशंसित मेहमान होकर जो गये थे, वे सुकृत वानर पवन के हिलाते ही यम को हराकर उत्कृष्टता और सुन्दरता के साथ अपने पूर्व रूप में जाग पड़े। २७३७

अरक्करद माक्कैह ळऴिवि लाऴियिर्
करक्कमर् रॊऴिन्दत्त वॊऴियक् कण्डत्त
मरक्कल मुदलवु मुय्न्दु वाऴ्न्दत्त
कुरक्कित्त मुय्न्ददु कूर वेण्डुमो 2738

अरक्कर् तम् आक्कैकळ्–राक्षसों के शरीर; अऴिविल् आऴियिल्–अक्षय समुद्र में; करक्क–छिपे रहे (इसलिए); ऑऴिन्तत्त–मिट गये; ऑऴिय कण्टत्त–उनके सिवा दिखनेवाले; मरक्कलम् मुतलवुम्–नावें आदि भी; उय्न्तु वाऴ्न्तत्त–बचकर जीवित हुए; कुरङ्कु इत्तम्–वानरगण; उय्न्ततु–जीवित हो गये; कूर वेण्टुमो–कहना भी है क्या। २७३८

राक्षसों के शरीर अक्षय सागर में छिपे पड़े थे। इसलिए वे प्राणवंत नहीं हो सके। उधर रहे काठ के पोत भी जीवित हो गये; तो यह भी कहना चाहिए कि वानरों का दल जीवित हो गया ? । २७३८

कळन्र्रत्त नॅडुङ्गणै कळन्र्र पुण्गडुत्
तळन्र्रत्त कुळिर्न्दत्त वङ्गञ् जॅङ्गणगळ्
शुळन्र्रत्त वुलहॅलान् दॊळुद तॊङ्गलित्
कुळन्र्रळुङ् गुञ्जिया नुणर्वु कूडित्तान् 2739

नॅटुकणै कळन्र्रत्त–(लक्ष्मण के शरीर से) लम्बे अस्त्र निकल आये; कळन्र्र–निकलने से; पुण्कळ्–व्रण; कटुत्तु अळन्र्रत्त–जो ज़ोर से जलन देते रहे; कुळिर्न्तत्त–शीतल हो गये; अङ्कम्–शरीर में; चॅम् कण्कळ्–लाल आँखें; चुळन्र्रत्त–घूमने

लगीं; उलकु ऍलाम्–सारे लोकों ने; तॉळ्ळुत–स्तुति की; तॉङ्कलिऩ्–माला के समान; कुळ्ळ्ऱु ऍळ्ळुम्–घूर्णन के साथ दिखनेवाले; कुञ्चियाऩ्–केश से शोभायमान लक्ष्मण; उणर्वु कूटिऩऩ्–होश में आये । २७३९

लक्ष्मण के शरीर से लम्बे शर स्वतः निकल आये । व्रण, जो अपार दर्द दे रहे थे, अब शीतल बन गये । लाल आँखें घूमने लगीं । सारे लोकों ने उनकी स्तुति की । माला के समान घूर्णन-सहित केश वाले लक्ष्मण प्रज्ञासहित हो गये । २७३९

यावरु मॅळ्ळुन्दऩ रार्त्त वेळ्हडल्
ताळ्वरुम् बेरॉलि शॅवियिऱ् चार्दलुम्
तेवर्हळ् वाळ्त्तॉलि केट्ट शॅङ्गणाऩ्
एवनीङ् गिनत्तॅन विळव लोङ्गिताऩ् 2740

एळ् कटल्–सातों समुद्रों को; ताळ् वरुम्–अपने सामने नीचा दिखानेवाले; यावरुम्–सभी (वानर वीर); ॲळुन्तऩर्–जाग उठे; आर्त्त पेर् ऑलि–उन्होंने जो नर्दन किया वह बड़ा शोर; चॅवियिल् चार्तलुम्–कानों में पड़ा तो तुरन्त; तेवर्कळ् वाळ्त्तॉलि–देवों का जयघोष; केट्ट–जिन्होंने सुना वे; चॅम् कणाऩ्–अरुणाक्ष श्रीराम; एवम् नीङ्कित्तऩ् ॲॅत–दुःख से मुक्त हो गये, यह सम्भव करते हुए; इळवल् ओङ्किताऩ्–लघुराज उठे । २७४०

सभी वानर जाग उठे । उन्होंने जो जय-घोष किया, उसके सामने सागर-गर्जन भी हार गया । उनका स्वर सुनकर देवों ने भी घोष किया । इसको सुनकर अरुणाक्ष श्रीराम को दुःखविमुक्त करते हुए लक्ष्मण उठे । २७४०

ओङ्गिय तम्बियै युयिर्वन् दुळ्ळुऱ
वीङ्गिय तोळ्हळाऱ् ऱळुवि वॅन्दुयर्
नीङ्गिऩ ऩिरामऩु मुलहि निन्ऱिल
तोङ्गुळ तेवरु मरुक्कञ् जिन्दिऩार् 2741

उयिर् वन्तु उळ् उऱ–प्राणों के अन्दर आ लगने से; ओङ्किय तम्पियै–जो उठ खड़े हुए उन अपने लघु सहोदर को; वीङ्किय–फूली; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तळुवि–आलिंगन करके; इरामऩुम्–श्रीराम भी; वॅन्तुयर् नीङ्कितऩ्–संतापक दुःख से छटे; उळ तेवरुम्–अमर देवताओं ने भी; मरुक्कम् चिन्तिऩर्–व्यथा छोड़ी; तीङ्कु–बुराइयाँ; उलकिल् निन्ऱिल–लोक में न रहे । २७४१

श्रीराम ने प्राणवान हुए अपने लघु सहोदर को अपनी फूली हुई भुजाओं से बाँध लिया । उनका कठोर दुःख दूर हो गया । अमर देवों की बेचैनी भी दूर हुई । संसार भर में कहीं बुराई नहीं ठहरी । २७४१

अरम्बैय राडिन रमुद वेळ्ळिशै, नरम्बियल् किन्नर मुदल नन्मैये
निरम्बिन वुलहॅला मुवहै नॅय्विळाप्, परम्बिन मुनिवरर् वेदम् बाडिऩार् 2742

अरम्पैयर् आटिऩर्–अप्सराएँ नाच उठीं; नरम्पु इयल्–तन्त्रियों से युक्त; किऩ्ऩरम् मुतल–'किन्नर' आदि वाद्य; नऩ्मैये–सुखद; अमुतम्–अमृत के समान; एऴु इचै निरम्पिऩ–सप्त स्वरों से भर गये; उलकु ऎलाम्–लोक भर में; उवकै–आनन्द-प्रदर्शक; नॆय्विऴा–घी के स्नान का उत्सव; परम्पिऩ–फैला; मुऩिवरर्–मुनिवरों ने; वेतम् पाटिऩार्–वेदगान किये। २७४२

अप्सराएँ नाचीं। तंत्री-वाद्य, किन्नर आदि से सुखद अमृत-सम सप्तस्वर आने लगे। सारे लोक में आनन्द के कारण घृत-स्नान का उत्सव मनाया जाने लगा। मुनिवरों ने वेद गाये। २७४२

वेदनिऩ् ऱार्त्तऩ वेद वेदियर्, पोदनिऩ् ऱार्त्तऩ पुहऴ् मार्त्तऩ
ओदनिऩ् ऱार्त्तऩ वोद वेलैयिऩ्, चीदनिऩ् ऱार्त्तऩ तेवर् शिन्दऩै 2743

वेतम्–वेदों ने; निऩ्ऱु आर्त्तऩ–स्थायी रहकर उद्घोष किया; वेतम् वेतियर्–वेदपाठी विप्रों के; पोतम् निऩ्ऱु आर्त्तऩ–ज्ञान ने स्थिर रहकर घोष किया; पुकऴ्म् आर्त्तऩ–यश ने भी नाद उठाया; ओतम् निऩ्ऱु आर्त्तऩ–समुद्रों ने उच्च गर्जन किया; तेवर् चिन्तऩै–देवों का मन भी; ओतम् वेलैयिल्–जलसागर के समान; चीतम् निऩ्ऱु आर्त्तऩ–शीतल (खुश) रहकर कुतूहल से भर गया। २७४३

चारों वेदों ने जयघोष किया। वेदविप्रों का ज्ञान शब्द कर उठा। सागर उमग उठे और गरजने लगे। देवों का मन भी सागर के समान शीतलता (सुख) से भरकर नाद कर उठा। २७४३

उऩ्दिऩ पिऩ्गोलै यॊऴिवि लुण्मैयुम्
दऩ्दऩै नीयदु निऩ्कुच् चाऩ्ऱॆऩाच्
चुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु शूऴ्वन्
दऩ्दणऩ् पडैयुनिऩ् ऱहऩ्ऱु पोऩदाल् 2744

कोलै उन्तिऩ पिऩ्–मरण से छूटने पर; अन्तणऩ् पटैयुम्–ब्रह्मास्त्र भी; चुन्तरम् विल्लियै–सुन्दर कोदण्डपाणी को; चूऴ् वन्तु तॊऴुतु–परिक्रमा करके नमस्कार करके; निऩ्ऱु–सामने सविनय खड़ा रहकर; नी–आपने; ऒऴिविल्–अमर; उण्मैयुम् तन्तऩै–सत्य को भी दिया; अतु–वह; निऩक्कु चाऩ्ऱु–आपका गौरव है; ऎऩा–कहकर; अकऩ्ऱु पोऩतु–दूर चला गया। २७४४

सबके मृत्यु से छूटने के बाद ब्रह्मास्त्र ने सुंदर कोदंडपाणी की परिक्रमा तथा विनय की। सामने खड़े होकर निवेदन किया कि आपने अमर सत्य संस्थापित कर दिया। यह आपका गौरव है! फिर वह हट गया। २७४४

❀आय कालैयि ऩमर रार्त्तॆऴत्, तायि ऩऩ्बऩैत् तऴुवि ऩाऩ्ऱऩि
नाय हऩ्पॆरुन् दुयर नामऱत्, तूय कादऩीर् तुळङ्गु कण्णिनान् 2745

आय कालैयिल्–उस समय; तऩि नायकऩ्–अद्वितीय जगन्नायक ने; पॆरु तुयरम् नाम् अऱ–बड़े दुःख के नाम के मिटते; तूय कातल्–पवित्र प्रेम से; नीर् तुळङ्कु कण्णिताऩ्–अश्रुशोभित आँखों वाले हो; तायिऩ् अऩ्पऩै–माता से भी अधिक प्यारे

हनुमान को; अमरर् आर्त्तु अॅळ–देव घोष कर उठें ऐसा; तळुवितान्–गले से लगा लिया। २७४५

तब अद्वितीय नायक श्रीराम का अपार दुःख नाम-निशान-हीन हो गया। प्रेम से अश्रु-बहाती आँखों के साथ उन्होंने माता से भी प्यारे मारुति को गले लगा लिया जिस पर देव लोग नर्दन कर उठे। २७४५

❀ ॲळुवु कुङ्गुमत् तिरुवि नेन्दुको, डुळुद मार्बिना तुरुहि युळ्ळुरत्
तळुवि निऱ्ऱलुन् दाळ्न्दु ताळुऱत्, तॉळुद मारुदिक् कितैय शॉल्लुवान् 2746

ॲळुतु–चित्रकारी के रूप में लगे; कुङ्कुमम्–कुंकुमलेप से अलंकृत; तिरुविन्–देवी सीता के; एन्तु कोटु–और उन्नत स्तनों के अग्रभाग से; उळुत मार्पितान्–जोते वक्षवाले श्रीराम के; उळ् उऱ उरुकि–अन्दर से द्रवीभूत होकर; तळुवि निऱ्ऱलुम्–खूब आलिंगन करते; ताळ् उऱ–चरणों से लगकर; तॉळुत–जिसने नमन किया उस; मारुतिक्कु–हनुमान से; इतैय चॉल्लुवान्–ये बातें कहीं (श्रीराम ने)। २७४६

श्रीराम, जिनका श्रीवक्ष सीताजी के कुंकुम की चित्रकारी से अलंकृत मनोरम स्तनाग्रों से दबाया गया था, स्नेहार्द्र होकर जब हनुमान का आलिंगन कर रहे थे, तब हनुमान ने उनके चरणों में विनत हो नमस्कार किया। श्रीराम उससे यों बोले। २७४६

❀ मुन्निऱ् ऱोन्ऱि नोर् मुऱैयि नीङ्गला
ॲन्निऱ् ऱोन्ऱिय तुयरि नीरुशेर्
मन्निऱ् ऱोन्ऱिनो मुन्न माण्डुळोम्
निन्निऱ् ऱोन्ऱिनो नॅऱियिऱ् ऱोन्ऱिनाय् 2747

मुन्निल् तोन्ऱिनोर्–(मेरे कुल में) जो पहले पैदा हुए वे; मुऱैयिन् नीङ्कलातु–नीति से न हटकर (जो पालन करते थे उन); ॲन्निल् तोन्ऱिय–मेरे कारण उत्पन्न; तुयरिन्–दुःख से; ईऱु चेर्–मृत्यु को प्राप्त; मन्निन् तोन्ऱिनोम्–राजा से जनमे; मुन्नम् माण्टुळोम्–हम पहले (ब्रह्मास्त्र से) मर गये; नॅऱियिल् तोन्ऱिनाय्–नयरत; निन्निल् तोन्ऱिनोम्–तुमसे हम प्रगट हुए (तुम्हारे उपकार से हम जी उठे)। २७४७

अपने पूर्वजों के निर्दिष्ट मार्ग में पालन जो करते रहे उन दशरथ के, जो मेरे कारण उत्पन्न दुःख से स्वर्गवासी हो गये थे, पुत्र हम पहले मर गये। फिर, सन्मार्गगामी हनुमान! तुमसे हम फिर से उद्भूत हुए! २७४७

अळियुङ् गाऱ्ऱरु मुदवि यैयने
मॊळियुङ् गाऱ्ऱरु मुयिरिन् मुऱ्ऱुमे
पळियुङ् गात्तरुम् वहैयुङ् गात्तनै
वळियुङ् गात्तनै मऱयुङ् गात्तनै 2748

ऐयत्ते–बाबा; मौळियुम् काल्–कहना हो तो; अळियुम् काल् तरुम् उतवि–मरते समय का उपकार; तरुम् उयिरिन्–जो प्राण देता है उससे; मुऱ्ऱुमे–प्रतिकार करने योग्य है क्या; पळियुम् कात्तु–हमको निंदा से बचाकर; अरुम् पकैयुम्–कठोर शत्रु को; कात्तु–दबाकर; ॲमै वळियुम् कात्तनै–हमको कुलसहित बचा दिया; मऱैयुम् कात्तनै–वेदों को भी रक्षित कर दिया। २७४८

तात ! सोचा जाय तो मरण के अवसर पर तुमने उपकार किया और हमें जीवन मिला। उसके बदले में कुछ देकर ऋण चुकाया जा सकेगा क्या ? तुमने हमें लोकनिन्दा से बचाया। शत्रुओं को दबोच दिया और हमको हमारे कुल के साथ बचाया। वेदों का भी संरक्षण हो गया। २७४८

ताळ्वु मीङ्गिऱैप् पौळ्दु तक्कदे
वाळि ॲम्बिमे लन्बु माट्टलाल्
एळुम् वीयुमेन् पहर्व ॲल्लैवाय्
ऊळि काणुनी युदवि नायरो 2749

ॲम्पिमेल्–मेरे सहोदर पर; अन्पु माट्टलाल्–प्रेम को स्थिर करने से; ईङ्कु–अब; इऱैप्पौळ्तु–कुछ देर; ताळ्वुम्–संकटग्रस्त रहना भी; तक्कते–चाहिए था; वाळि–जीते रहो; ऊळि काणुम् नी–युगान्त भी देखनेवाले तुमने; ॲल्लै वाय्–ऐन मौक़े पर; उतवित्ताय्–उपकार किया; ॲन् पकर्वतु–(नहीं तो) क्या कहना; एळुम् वीयुम्–सातों लोक नष्ट हो जाते। २७४९

अब जो कुछ संकट हुआ वह भी चाहिए था, क्योंकि तभी मेरा भायपा स्थिरीकृत हुआ ! तुम जुग-जुग जिओ ! हे चिरंजीव ! तुमने ऐन मौक़े पर उपकार किया। नहीं तो क्या कहा जाय ! सातों लोक मिट गये होते। २७४९

इन्ऱु वीहला तॅमरु मॅम्मुडन्, निन्ऱु वाळ्मा नॅडिदु नल्हिनाय्
ऑन्ऱु मिन्ऩलो युरुहि लावुनी, ॲन्ऱुम् वाळ्विया लिनिदॆ नेवलाल् 2750

इन्ऱु–आज; वीकलातु–बिना मरे; ॲम्मुटन् निन्ऱु–हमारे साथ रहकर; नॅटितु वाळ्मा नल्कित्ताय्–बहुत समय के जीवन का दान किया; नी–तुम; इन्नल् नोय् ऑन्ऱुम् उऱुकिलातु–कोई संकट या रोग का शिकार मत बनो; इनितु–सुख से; ॲन् एवलाल्–मेरी आज्ञा से; ॲन्ऱुम् वाळ्ति–सदा रहो। २७५०

आज (जब मेघनाद ने अस्त्र चलाया) तुम जीवित हुए, हमारे साथ रहे और हमें लम्बी आयु दिला दी ! ऐसे उपकारी तुम मेरी आज्ञा से रोग, दुःख आदि से छूटकर सदा सुखी रहो। २७५०

मऱ्ऱै योर्हळु मनुमन् वण्मैयाल्, पॅऱ्ऱ वायुळार् पिऱन्द कादलार्
शुऱ्ऱ मॆयिनार् तॊळुदु वाळ्त्तिनार्, उऱ्ऱ वाऱॆला मुणरक् कूऱिनान् 2751

मऱ्ऱैयोर्कळुम्–अन्य भी; अनुमन् वण्मैयाल्–हनुमान की उदारता से; पॅऱ्ऱ

आयुळार–जीवंत होकर; पिऱन्त कातलार्–हनुमान पर उत्पन्न प्रेम के हो; चुऱ्ऱम् मेयिनार्–उसे घेर गये; तॊऴुतु, वाऴ्त्तिनार्–नमस्कार किया, स्तुति की; उऱ्ऱ आऱु ॲलाम्–जो हुआ वह सब; उणर कूऱिनान्–(हनुमान ने) समझाकर कहा। २७५१

अन्य भी, जो हनुमान की उदारता से जीवित हुए, हनुमान पर उत्पन्न स्नेह के साथ उसे घेर आये। उसको नमस्कार किया। उसकी स्तुति की। हनुमान ने उनसे बीता हाल सारा बताया। २७५१

उयत्त मामरुन् दुदव वॊन्नलार्, पॊय्त्त शिन्दॆया रिऱुदल् पॊय्क्कुमाल्
मॊय्त्त कुन्ऱ्यम् मूल मूळॆवाय्, वैत्तु मीडियाल् वरम्बि लाऱ्ऱलाय् 2752

वरम्पिल् आऱ्ऱलाय–अपार शक्तिमंत; मा मरुन्तु–श्रेष्ठ ओषधि के; उतव–उपकार से; पॊय्त्त चिन्तैयार्–वंचकमन राक्षस; ऒन्नलार्–शत्रुओं का; इऱतल्–मरना; पॊय्क्कुम्–असत्य हो जायगा (अगर यह पर्वत यहाँ रहे तो); मॊय्त्त कुन्ऱ्–ओषधिपूर्ण इस पर्वत को; मूल मूळै वाय्–उसके मूल स्थान में; वैत्तु मीटि–रखकर आओ (यह जाम्बवान ने कहा)। २७५२

जाम्बवान ने कहा— हे अपार बलवान हनुमान! तुम जो ओषधि लाये हो, वह राक्षसों का भी उपकार कर देगी और उन शत्रुओं की मृत्यु झूठी हो जायगी। इसलिए इस ओषधि-पर्वत को ले जाकर अपने यथास्थान में रख आओ। २७५२

ॲन्ऱु शाम्बव नियम्ब वीदरो, नन्ऱु शालवॆन् ऱॊन्ऱु नाऴिहैच्
चॆन्ऱु मोळवनॆन् ऱुणर्न्दु दॆय्वमाक्, कुन्ऱु ताङ्गियक् कुरिशिल् पोयिनान् 2753

ॲन्ऱु चाम्पवन् इयम्प–ऐसा जाम्बवान के कहने पर; ईतु चाल नन्ऱु–यह बहुत ही अच्छा है; ॲन्ऱु–कहकर; ऒन्ऱु नाऴिकै–एक घड़ी में; चॆन्ऱु मीळ्वन्–हो आऊँगा; ॲन्ऱु उणर्न्तु–ऐसा समझकर; मा–बड़े; तॆय्वम् कुन्ऱु तङ्कि–दैवी पर्वत उठाकर; अ कुरिचिल्–वह महावीर; पोयिनान्–गया। २७५३

जाम्बवान के यों कहने पर हनुमान ने भी सोचा कि यह बहुत अच्छा है। एक घड़ी में हो आऊँगा। वह महापुरुष उस दिव्य पर्वत को उठा ले चला। २७५३

24. कळियाट्टुप् पडलम् (विनोद-उत्सव पटल)

इन्नविन् तलैय वाह विरावण नॆंळुन्दु पॊङ्गित्
तन्नैयुङ् गडन्दु नीण्ड वुवहैयन् शमैत्त कीदङ्
गिन्नरर् मुदलोर् पाड मुहत्तिडैक् किडन्द कॊण्डैक्
कन्निनन् मयिलन् नारै नॆंडुङ्गळि याट्टङ् गण्डान् 2754

इ तलै–यहाँ; इन्नतु आक–ऐसा जब रहा; इरावणन्–(उधर) रावण ने; पॊङ्कि ॲळुन्तु–उमंग से उठकर; तन्नैयुम् कटन्तु–अपने को भी पार कर जो;

नीणट–बढ़ा था वैसे; उवकैयन्–मोदवाला वनकर; चमैतुत कीतम्–सुगठित गीत; किन्नरर् मुतलोर् पाट–किन्नर आदि लोगों के गाते; मुकत्तिटै किटन्त–मुख में रहो; कॅण्टै–"कॅण्डै" मछली के समान आँखों वाली; कन्नि–तरुणी; नल् मयिल् अन्नारै–श्रेष्ठ कलापी-सी स्त्रियों की; नॅटु कळि आट्टम्–ज़ोरदार मदिरा से मस्त केलि को; कण्टान्–देखा। २७५४

इधर यह सब होता रहा। उधर रावण मोद के साथ उमँग उठा। उसका उमंग अपार था (कवि कहता है कि वह आप से भी बढ़ा था)। उसने 'कॅण्डै' नामक मछली-सी आँखों वाली तरुण और कलापी-सी सुन्दर स्त्रियों की अठखेलियाँ देखीं। जब वह देखने गया, तब किन्नर लोग संगीत-व्याकरण-सम्मत गीत गाते गये। २७५४

अरम्बैयर् विज्जै माद ररक्किय रवुण मावर्
कुरुम्बैयङ् गॉङ्गै नाहर् कोदैय रियक्कर् कोदिल्
करुम्बिन् मिन्निय शॉल्लार् शित्तर्दङ् गन्नि मार्हळ्
वरम्बरु शुम्मै योर्हण् मयिर्कुल मरुळ वन्दार् 2755

अरम्पैयर्–अप्सराएँ और; विज्चैमातर्–विद्याधररियाँ; अरक्कियर्–और राक्षस-नारियाँ; अवुणर् मातर्–दानवदयिताएँ; कुरुम्पै अम् कॉङ्कै–कच्चे नारियल के समान स्तनों वाली; नाकर् कोतैयर्–नागकन्याएँ; इयक्कर् कोतैयर्–यक्षसुन्दरियाँ; कोतु इल्–निर्दोष; करुम्पिनुम् इनिय चॉल्लार्–इक्षु से भी मधुर वाणी वाली; चित्तर् कन्निमार्कळ्–सिद्धिनियाँ; वरम्पु अरु–(आदि स्त्रियाँ) अपार; चुम्मैयोर्कळ्–भीड़ में; मयिल् कुलम्–मयूरवृन्द को; मरुळ–भ्रम में डालते हुए; वन्तार्–आयीं। २७५५

अप्सराएँ, विद्याधररियाँ, राक्षसरमणियाँ, दानवदयिताएँ और कच्चे नारियल के बाल फलों-जैसे स्तनों की नागकन्याएँ, यक्षबालाएँ, अमल इक्षुरस से भी मधुर वाणी की सिद्धस्त्रियाँ —आदि बड़े-बड़े समूहों में मयूरवृन्दों को भी लजाती हुई आयीं। २७५५

मेनहै यिलङ्गु वाट्कट् टिलोत्तमै यरम्बै मॅल्लॅन्
तेनहु मळले यिन्शॉ लुरुप्पशि मुदल दॅय्व
वानह महळिर् वन्दार् शिल्लरिच् चदङ्गै पम्ब
आनह मुरशञ् जङ्ग मुरुट्टॊडु मिरट्ट वाडि 2756

मेनकै–मेनका; इलङ्कु–शोभायमान; वाळ् कण्–तलवार-सम आँखों की; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा; अरम्पै–रम्भा; तेन् नकु–मधु-सम; मॅल् ॲन्–मृदु; मळलै इन् चॊल्–तोतली-सी मधुरभाषिणी; उरुप्पचि–उर्वशी; मुतल–आदि; तॅय्वम् वान् अकम्–दिव्य व्योमलोक की; मकळिर्–अंगनाएँ; आनकम् मुरचम् चङ्कम्–आनकों, भेरियों और शंखों के साथ; मुरुट्टॊटुम्–'मुरुडु' नाम के ढोल के; इरट्ट–बजते रहते; चिल् अरि–छोटी गुरियों से भरे; चतङ्कै पम्प–घुंघुरुओं के क्वणित होते; आटि वन्तनर्–नाचती आयीं। २७५६

मेनका, सुन्दर तलवार-सी आँखों वाली तिलोत्तमा, रम्भा, अस्पष्ट-मधु-मधुर-मृदुभाषिणी उर्वशी आदि देवलोक की अप्सराएँ नाचती आयीं। भेरियाँ, शंख, मुरुडु नामक बाजे और पटहे साथ-साथ बजते आये और उनस्त्रियों की झाँझरें भी कंकड़ियों के कारण क्वणित हो रही थीं। २७५६

तोडुण्ड शुरुळुन् दूङ्गुङ् गुळ्हळुञ् जुरुळिङ् ड्रोन्रुम्
एडुण्ड पशुम्बोङ् पूवुन् दिलदमु मिलवच् चॆव्वाय्
मूडुण्ड मुरुवन् मुत्तु मुळ्ळुण्ड मुळरिच् चॆङ्गट्
काडुण्डु पुहुन्द दॆन्न मुनिन्ददु करॆवॆण् डिङ्गळ् 2757

तोटुण्ट–ताड़ के घुमावदार पत्ते के समान; चुरुळुम्–स्वर्ण-निर्मित 'शुरुळ्' नामक जेवर; तूङ्कुम्–लटकनेवाले; कुळैकळुम्–कुण्डल और; चुरुळिल् तोन्रुम्–घुमाकर बँधे केश में दिखनेवाले; एट उण्ट–दल-सहित; पचु पोन् पूवम्–चोखे स्वर्ण के फूल और; तिलतमुम्–तिलक; इलवम् चॆव्वाय्–सेमर-से लाल अधर; मूटुण्ट–आच्छादित; मुरुवल्–मंदहासयुक्त; मुत्तुम्–मोती के समान दाँत; मुळ् उण्ट–कोमल काँटों-सहित; मुळरि चॆम् कण्–कमल-सी आँखें; काट–इनके वन को; उण्टु पुकुन्ततु अॆन्न–खाकर प्रवेश किया हो, ऐसा मानकर; करै वॆण् तिङ्कळ्–कलंक-युक्त श्वेत चन्द्र; मुनिन्ततु–नाराज हुआ। २७५७

ताड़ के पत्ते के बने जैसे स्वर्ण के शुरुळ नामक कर्णाभूषण, लटकते कुंडल, केशालंकार विशेष में शोभनेवाले स्वर्णनिर्मित सदल पुष्प, तिलक, सेमर-जैसे लाल अधर; मुस्कुराते मोती-जैसे दाँत, मृदु काँटों-सहित कमल के समान लाल आँखें —इनका वन मुझे छिपाने आ घुसा है —यह सोचकर सकलंक श्वेतचन्द्र नाराज़ हुआ। २७५७

मुळैक्कोळुङ् गदिरिन् करॆ मुरुवल्वॆण् णिलवु मूरि
ऑळिप्पिळम् बॊळ्हुम् बूणि नुमिळिळ वॆयिलु मॊण्बॊन्
विळक्कैयुम् विळक्कु मेनि मिळिर्हदिर्प् परप्पुम् वीश
वळैत्तपे रिरुळुम् गण्डो रऱिवॆन मरुळु मादो 2758

मुळै–उगनेवाली; कोळु कतिरिन् करै–पुष्ट किरणों की लटों का; मुरुवल्–हँसी रूपी; वॆळ् निलवुम्–श्वेत चन्द्र और; मूरि–अधिक; ऑळि पिळम्पु ऑळुकुम्–ज्योति निकालनेवाले; पूणिन्–आभरणों से; उमिळ्–निःसृत; इळ वॆयिलुम्–बाल धूप; ऑण् पोन्–प्रकाशमय स्वर्ण के समान; विळक्कैयुम् विळक्कुम्–दीप को भी दीप्त करनेवाले; मेनि–शरीर से; मिळिर् कतिर्–निकलकर फैलनेवाली छवि-किरणों के; परप्पुम् वीच–विस्तार के फैलते; वळैत्त पेर् इरुळुम्–घेर आनेवाला बड़ा अन्धकार; कण्टोर् अऱिवु ॲॆन–दर्शकों की बुद्धि के समान; मरुळुम्–घुल-मिल जाते (भ्रमित करते) हैं। २७५८

मुस्कुराहट की पुष्कल रोशनी वाली चाँदनी छिटक रही थी। अधिक छविमान आभरणों से बाल धूप निकल रही थी। उज्ज्वल स्वर्ण के समान

दीप को भी दीप्ति देनेवाली देहों की कांति की किरणें छूट रही थीं। चारों ओर अन्धकार घेरे था। यह दृश्य देखनेवाले का मन जैसे चक्रित होता था, वैसे ही वह विविध रोशनियाँ भी मिश्रित हो रही थीं। २७५८

नऱ्पॆरुङ् गल्विच् चॆल्व नवैयऱु नॆऱियै नण्णि
मुऱ्पय नुणर्न्द तूयोर् मॊऴियॊडुम् वऴहि मुऱ्ऱिप्
पिऱ्पय नुणर्द रेऱ्ऱाप् पेदैपाल् वञ्जन् शॆय्द
कऱ्पनै यॆन्न वोडिक् कलन्ददु कळ्ळिन् वेहम् 2759

नल् पॆरु कल्वि चॆल्वम्–श्रेष्ठ बड़े विद्या-धन से; नवै अऱु–दोषहीन; नॆऱियै नण्णि–मार्ग में जाकर; मुन् पयन् उणर्न्त–आगे का नतीजा जो जानते हैं; तूयोर् मॊऴियोडुम्–पवित्र लोगों के (उपदेश) वचनों के साथ; पऴकि–अभ्यस्त हो; मुऱ्ऱि–पक्व होकर; पिन् पयन्–पीछे का फल; उणर्तल् तेऱ्ऱा–जो न जान सके; पेतै पाल्–उस जड़मति के प्रति; वञ्चन् चॆय्त–वंचककृत; कऱ्पनै ऎन्न–कल्पित कार्य के समान; कळ्ळिन् वेकम् कलन्ततु–ताड़ी का उग्र प्रभाव मिल गया। २७५९

श्रेष्ठ विद्याश्री से प्राप्त निर्दोष न्यायमार्ग पर जो चलते है और जिन्हें भावी का फलकार्य विदित है, ऐसे पवित्र साधुओं के उपदेश-वचनों से अभ्यस्त रहना आवश्यक है। पर इसके विपरीत जो अज्ञ हैं, उनके पास वचक की कल्पना मिली हो —ऐसा उन स्त्रियों में ताड़ी का नशा मिल गया था। २७५९

पलपड मुऱुवल् वन्दु परन्दन पनित्त मॆय्वेर्
इलविदऴ् तुडित्त मुल्लै यॆयिऱुवॆण् णिलवै यीन्ऱ
कॊलैपयि नयन वेलिन् कॊऴुङ्गडै शिवन्द कॊऱ्ऱप्
चिलैनहर् पुरुव नॆऱ्ऱिक् कुनित्तन विळर्त्त शॆव्वाय् 2760

मुऱुवल्–मंदहास; पल पट–विविध प्रकार का; वन्तु–आकर; परन्तन–फैला; मॆय् वेर् पनित्त–शरीर पर स्वेदकण झलक आये; इलवु इतऴ्–सेमर (सम लाल) अधर; तुटित्त–फड़के; मुल्लै ऎयिऱु–'मुल्लै' कली-से दाँतों ने; वॆण् निलवै ईन्ऱ–श्वेत चाँदनी को जन्म दिया; कॊलै पयिल्–मारक काम में अभ्यस्त; नयनम् वेलिन्–नयन रूपी भालों के; कॊऴु कटैकळ्–मनोरम कोरों में; चिवन्त–लाली उठी; चिलै निकर्–धनु-सी; पुरुवम्–भौंहें; नॆऱ्ऱि कुनित्तन–ललाट में कुंचित हुईं; चॆव्वाय्–लाल अधर; विळर्त्तन–पांडुर हो गये। २७६०

तरह-तरह के मंदहास उदित हुए और फैले। शरीर पर स्वेदकण उग आये। सेमर के फूलों-से अधर फड़के। 'मुल्लै' नाम के (श्वेत) फूल के समान दाँतों ने श्वेत प्रकाश छिटकाया। संहारदक्ष आँखों रूपी भालाओं के पुष्ट कोरों में लाली उदित हो आयी। धनु-सी भौंहें भाल पर कुंचित हो चढ़ीं। लाल मुख पांडुर बन गये। २७६०

कून्दलम् बारक् कट्टैक् कोन्दळक् कोलक् कोण्डल्
एन्दह ललहुर् ट्टेरै यिहन्दुपो यिरङ्ग याणर्प्
पून्दुहि लोडुम् बूशल् मेहलै शिलम्बु पूण्ड
मान्दळि रॅय्द नोय्दिन् मयङ्गितर् मळलैच् चॉल्लार् 2761

कून्तल् अम्पारम् कट्टै-केश की लटों के संभार रूपी; कोन्तळम् कोलम् कोण्टल्-चक्रों के आकार में रहे मनोरम मेघ; एन्तु अकल्-उन्नत विशाल; अल्कुल् तेरै-जवन-रथ को; इकन्तु पोय्-पारकर जाकर; इरङ्क-लटके रहे; याणर्-नये; पून्तुकिलोटुम्-महीन वस्त्रों के साथ; पूचल्-क्वणनशील; मेकलै-मेखला; चिलम्पु पूण्ट-नूपुर से अलंकृत; मान्तळिर् ऍय्त-आम्रपल्लव से जाकर लगी थी; मळलैच् चॉल्लार्-(मनोरम) अस्पष्ट-वाणी स्त्रियाँ; नोय्तिन्-आसानी से; मयङ्कितर्-(कौन पैर को छूता है ? यह सोच) भ्रमित होती हैं। २७६१

अंवार के केशों की लटें रूपी घुमावदार व सुन्दर मेघ उन्नत और चौड़े नितंब प्रदेश को पार कर नीचे लटक रहे थे। नये और क्वणनशील मेखला के साथ शोभ रहे वस्त्र नूपुर से अलंकृत आम्रपल्लव-से पैरों से जा लग रहे थे। तो तुतलाती मधुर बोली वाली स्त्रियाँ ("कौन है पैरों पर पड़ा" —ऐसा) संशय-विचलित हो रहीं। २७६१

कोत्तमे हलैयि नोडुन् दुहिन्मणिक् कुरङ्गैक् कूडक्
कात्तन कून्दर् कट्टै यट्रमत् तन्मै कण्डु
वेत्तवै कीळ् ळोर्हळ् कोळ्मैये विळैत्तार् मेलाम्
जीर्त्तवर् शॅय्यत् तक्क करुममे शॅय्दा रॅन्न 2762

वेन्तु अवै-राजसभा में; कीळ् उळोर्कळ्-नीची श्रेणी में काम करनेवालों ने; कीळ्मैये विळैत्तार्-अल्प काम ही किये; मेलाम् चीर्त्तवर्-उच्च श्रेष्ठ लोगों ने; चॅय्यत्तक्क करुममे चॅय्तार्-करने योग्य कार्य ही किये; ऍन्न-जैसे; कोत्त मेकलैयिनोटुम्-गुँथी मेखला के साथ; तुकिल्-वस्त्र के; मणि कुरङ्कै कूट-(कमर छोड़) सुन्दर ऊरु से जा लगने पर (जो लज्जाजनक काम हो गया तब); अ तन्मै कण्टु-वह प्रकार देख; कून्तल् कट्टै-केशराशि ने; अट्रम् कात्तन-लाज रखी। २७६२

राजसभा के क्षुद्र सभासद नीच काम ही करते हैं और उच्च सभासद उत्कृष्ट काम। वैसे ही मेखला के साथ वस्त्र खिसक गये और ऊरु तक पहुँच गये। तब उसे देखकर केशों की लटों ने नितंब प्रदेश पर फैलकर लाज बचा ली। २७६२

पाणियिऱ् ऱळ्ळिक् काल मात्तिरैप् पडादु पट्ट
नाणियिन् मुरैयिऱ् कूडा दॊरुवळि नडैयिऱ् चॅल्लुम्
आणियि नळिन्द पाड लोतुरन रनङ्ग वेडन्
तूणियि नडैत्त वम्बिऱ् कॊडुन्दॊळि ऱुरन्द कण्णार् 2763

अनङ्कन् वेटन्-अनंग रूपी शिकारी के; तूणियिन्-तूणीर में; अटैत्त अम्पिल्-

बन्द रखे शरों के समान; कोट्टु तॉऴिल् तुऱन्त-क्रूर-कर्म-त्यक्त; कण्णार्-आँखों वाली स्त्रियों ने; पाणियिऩ् तऴि-ताललय छोड़कर; कालम् मात्तिरै-काल की मात्रा से; पट्टातु-बद्ध न रहकर; पट्ट नाणियिऩ्-वाद्य में की तन्त्री के; मुऱैयिल् कूटातु-बजने के क्रम से अबद्ध; ऑरु वऴि नटैयिल्-अपने अलग मार्ग में; चॅल्लुम्-जानेवाले; आणियिऩ् अऴिन्त पाटल-क्रम-भग्न गीत; ईन्ऱ़तर्-पैदा किये (गाये)। २७६३

मन्मथ के तूणीर में सुरक्षित शरों के समान उनकी आँखें घातक काम से निवृत्त थीं। वे गाना गाती थीं, जिनका ताल-मेल कुछ ठीक नहीं बैठता था; न उनका तंत्रियों से उठे स्वर से कोई लय मिलता था; न उनका काल-प्रमाण से कोई बन्धन दिखता था। २७६३

वङ्गियम् वहुत्त कान माऱुहॉण् मऴलै वायर्
शङ्गैयिल् पॅरुम्ब णुऱ्ऱ निऱत्तुऱै निरम्बित् तऴ्ळच्
चिङ्गलि ऩमुदि ऩोडुम् बुळियळान् देऱ लॅऩ्ऩ
वॅङ्गुर लॅडुत्त पाडल् विळित्तऩर् मयक्कम् वीङ्ग 2764

वङ्कियम् वकुत्त कानम्-'नादस्वर' के संगीत से; माऱुकॉळ-विपरीत; मऴलै वायर्-अस्पष्ट मीठी वाणी की स्त्रियों ने; मयक्कम् वीङ्क-(मद्य-) मस्ती के बढ़ने से; चङ्कै इल्-निर्दोष; पॅरु पण् उऱ्ऱ-श्रेष्ठ तान में बने; निऱम् तुऱै-पूर्ण प्रकार से; निरम्पि तऴ्ळ-बिलकुल अलग हुए; चिङ्कल् इल्-अभय; अमुतिऩोटुम्-अमृत के साथ; पुळि अळाम्-खटाई से युक्त; तेऱल् ॲऩ्ऩ-मद्य के समान; वॅम् कुरल् ॲटुत्त पाटल्-कठोर कर्कश स्वर में गीत; विळित्तऩर्-गाये। २७६४

'नागस्वर' (शहनाई-सा वाद्य) से जो संगीत होता है, उसकी टक्कर की मधुरता से युक्त अस्पष्ट बोली वाली स्त्रियों का ताड़ी का नशा अत्यधिक चढ़ गया था। तब वे जो गाती थीं, वह अमृत से मिली खट्टी ताड़ी के समान लगी। उनका स्वर बड़ा कर्कश और कठोर था और तानें ठीक नहीं बन पाती थीं। २७६४

एऩैय पिऱवुङ् गण्डार्क् किन्दिर शाल मॅऩ्ऩत्
तानवै युरुविऱ् ऱोऩ्ऱुम् बावऩैत् तहैमै शान्ऱोर्
मानमर् नोक्कि ऩारै मैन्दरैक् काट्टि वायाल्
आऩैये विळम्बित् तेरै यबिनयत् तियऱ्ऱि युऱ्ऱार् 2765

अवै-अनुभाव; उरुविल् तोऩ्ऱुम्-उनके शरीर पर दिखनेवाली; पावऩै तकैमै चान्ऱोर्-नृत्य की मुद्राओं में अभ्यस्त; एऩैय पिऱवुम्-अन्य अभिनय; कण्टारक्कु-देखनेवालों को; इन्तिर चालम् ॲऩ्ऩ-इन्द्रजाल के समान लगे; मान् अमर् नोक्किऩारै-मृगनयनाओं के लिए; मैन्तरै-तरुण पुरुषों को; काट्टि-दिखाकर; वायिऩाल्-मुख से; आऩैयै विळम्पि-गजों को कहकर; अपिनयत्तु-अभिनय में; तेरै इयऱ्ऱि उऱ्ऱार्-दादुरों को दिखातीं। २७६५

अभिनय की कला में दक्ष वे स्त्रियाँ साधरण रूप से जब किसी पात्र का अभिनय करतीं, तब वे ही मानो इन्द्रजाल-सा रच देतीं और दर्शकों के सामने अभिनय के पात्र मानो जीवित हो उठते। पर अब वे मृगनयना स्त्रियाँ इशारे से पुरुषों को दिखातीं और कहतीं 'गज' और दादुर के रूप का अभिनय करतीं। २७६५

अऴुहुवार् नहुवार् पाडि याडुवा रयनिन् ऱारैत्
तॊऴुहुवार् तुयिल्वार् तुळ्ळित् तूङ्गुवार् तुवर्वा यिन्ऱेन्
ऒऴुहुवा रॊल्हि यॊल्हि यॊरुवर्मे लॊरुवर् पुक्कु
मुऴुहुवार् कुरुदि वाट्कण् मुहिऴ्त्तिड मूरि पोवार् 2766

अऴुकुवार्–(कुछ) रोतीं; नकुवार्–हँसतीं; पाटि आटुवार्–गातीं-नाचतीं; अयल् निन्ऱारै–पास जो खड़े थे उन्हें; तॊऴुकुवार्–प्रणाम करतीं; तुयिल्वार्–सोतीं; तुळ्ळि–उछल-उछलकर; तूङ्कुवार्–थकित हो जातीं; तुवर् वाय्–प्रवालाधरों से; इन् तेन्–मधुर मधु को; ऒऴुकुवार्–गिरातीं; ऒल्कि ऒल्कि–लचक-लचककर; ऒरुवर् मेल् ऒरुवर्–एक-दूसरे पर; पुक्कु मुऴुकुवार्–लगकर चिपक जातीं; कुरुति वाळ् कण्–रक्तरंजित तलवार-सी आँखों को; मुकिऴ्त्तिट–बन्द करके; मूरि पोवार्–अँगड़ाई लेतीं। २७६६

(मस्ती के कारण) वे रोतीं, हँसतीं और नाचती-गाती थीं। कुछ स्त्रियाँ प्रणाम करतीं; कुछ सो जातीं। कुछ स्त्रियाँ उछल-कूद मचाकर थक जातीं। प्रवालाधरों से कुछ के मुख में मद्य टपकता। कुछ लचक-लचक जातीं और एक-दूसरे से लिपटकर गाढ़ालिंगन में डूब जातीं। रक्तवर्ण तथा तलवार-सम आँखें मूँदकर वे अँगड़ाई लेतीं। २७६६

उयिर्प्पुरत् तुऱ्ऱ तन्मै युणर्त्तिना रुळ्ळत् तुळ्ळ
दयिर्प्पिलि लऱिदि रॆन्ऱे यदुकळि याट्ट माहच्
चॆयिर्प्पऱ् दॆय्वच् चिन्दैत् तिरुमऱै मुनिवर्क् केयुम्
मयिर्प्पुऱन् दोऱुम् वन्दु पॊडित्तन मदन वाळि 2767

उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मेरे मन की रहनी (बात); अयिर्प्पिलिल्–विना सन्देह के; अऱितिर्–जान लेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; उयिर् पुऱत्तु उऱ्ऱ–जान से लगा (आंतरिक); तन्मै उणर्त्तिनार्–हाल बतलाया (स्त्रियों ने); अतु कळियाट्टम् आक–जब वह केलि होती रही; चॆयिर्प्पु अऱ–त्रुटिहीन; तॆय्वम् चिन्तै–देवलग्न चित्त वाले; तिरु मऱै मुनिवर्क्केयुम्–श्रीवेदों के ज्ञाता विप्रों के लिए भी; मतनन् वाळि–मदनशर; मयिर् पुऱम् तोऱुम्–रोमकूपों में; वन्तु पॊटित्तन–आ भर गये। २७६७

उन नारियों ने अपने मन का भाव विना संशय को मौक़ा दिये ही जता दिया। उनके हावभाव तथा लीला को देखनेवाले चाहे निर्दोष देव-चिंतन में लगे उत्कृष्ट वेदज्ञ विप्र ही क्यों न हों, उनके भी रोमकूपों में मन्मथ-शर आ भरे। २७६७

मापुपिरऴ् नोक्कि नार्तम् मणिनॆडुङ् गुवळै वाट्कण्
चेप्पुर वरत्तच् चॆव्वायच् चॆङ्गिडै वॆण्मै शेरक्
काप्पुरु पडैक्कैक् कळ्व निरुदर्क्को रिरुदि काट्टिप्
पूप्पिरऴ्न् दुरुवम् वेरायप् पॊलिन्ददोर् तन्मै पोन्र 2768

मा पिरऴ् नोक्किनार् तम्–हरिण के समान चंचल दृष्टि वाली (राक्षस) रमणियों की; मणि नॆट्टु–सुंदर आयत; कुवळै–नीलोत्पल-सम; वाळ् कण्–प्रकाशमय आँखें; चेप्पु उर–लाल वर्नीं; चॆम् किटै–लाल 'किडै' (खुखरी) नाम की लता तथा; अरत्तम्–लाल कमल-से; चॆव्वाय्–लाल अधरों पर; वॆण्मै चेर–पांडुरता के छा जाते; उरु–वलय-सह; काप्पु उरु पटै कै–रक्षण-कार्य के योग्य हथियारों से लैस हाथों वाले; कळ्व निरुतर्क्कु–चोर राक्षसों को; ओर् इरुति काट्टि–एक अन्त दिखाकर; पू पिरऴ्न्तु–फूल अपना स्वभाव बदलकर; उरुवम् वेराय् पॊलिन्ततु ओर् तन्मै–दूसरा बन गया है ऐसी स्थिति; पोन्र–से हो गये, (ऐसा) लगा। २७६८

मृगनयनी राक्षस-रमणियों के सुंदर उत्पल-सी (नीली) तेज़ आँखें लाल हो गयीं। रक्तकुमुद-से अधर श्वेत हो गये। यह (फूलों का रंग बदलना) दुश्शकुन था और बाहुवलय तथा रक्षक हथियारधारी राक्षसों के अन्त को सूचित करता-सा लगा। २७६८

कयल्वरु कालन् वैवेल् कामवेळ् कणैयॆन् रालुम्
इयल्वरु हिर्किलाद नॆडुङ्गणा रिणैमॆन् कॊङ्गैत्
तुयल्वरु कन्नह नाणुङ् गाञ्जियुन् दुहिलुम् वाङ्गिप्
पुयल्वरु कून्दर् पारक् कर्रैयिर् पुनैय लुर्रार् 2769

कयल्–मछली; वरु कालन्–आगंतुक यम का; वै वेल्–तीक्ष्ण भाला; कामन् वेळ् कणै–मनोज का शर; ऎन्रालुम्–आदि उपमान कहें तो भी; इयल् वरुकिर्किलात–उपमा नहीं बनेगी ऐसी; नॆट्टु कणार्–आयत आँखों वाली राक्षस-रमणियों ने; इणै मॆल् कॊङ्कै–जोड़े के मृदुल स्तनों पर; तुयल् वरु–लोटनेवाले; कन्नकम् नाणुम्–कनक-दाम को; कान्चियुम्–और मेखला को; तुकिलुम्–वस्त्र को; वाङ्कि–हाथ में लेकर; पुयल् वरु–मेघ-सम; कून्तल् पारम् कर्रैयिल्–केशभार-राशि पर; पुनैयल् उर्रार्–पहनने लगीं। २७६९

राक्षस-नारियों के नेत्र ऐसे थे कि मछली, प्राणहर यम के हाथ का भाला, या कामशर उनके उपमान नहीं बन सकें। वे अब मस्ती में थीं। उन्होंने पीन स्तनद्वय पर लोटनेवाले कनक-दाम को, मेखला को और वस्त्र को उतारकर उनसे अपने केश का शृंगार करने लगीं। २७६९

मुत्तन्मै मौऴिय लाहा मुहिऴिन्न मुरुव लल्लार्
इत्तन्मै यॆय्द नोक्कि यरशुवीर् रिरुन्द वॆल्लै
यत्तन्मै यरियिन् शेनै यार्हलि यार्त्त वोशै
अत्तन्मैय् मयङ्ग वन्दु शॆविदॊरु मडुत्त दन्रे 2770

मुत्तु अत्मै–मोती नहीं ऐसा; मोऴियल् आका–जो नहीं कहा जा सकता; मुकिऴ् इळ मुरुवल्–ऐसे मंदहास से; नल्लार्–शोभनेवाली स्त्रियाँ; इ तन्मै ॲय्तल्–इस (नशे की) स्थिति में पहुँची हैं, यह हालत; नोक्कि–देखकर; अरचु–राजा (रावण); वीऱ्ऱिरुन्त ॲल्लै–जब विराजमान रहा तब; अ तन्मै–उधर जीवित स्थिति में आये; अरियिन् चेन्ऩै आर्कलि–वानर-सेना-सागर का; आर्त्त ओचै–घोषित नाद; अत्तत्–उसके; मॅय् मयङ्क–शरीर को थकाते हुए; चॅवि तोऱुम् वन्तु अट्टुत्तटु–(रावण के) कान-कान में आ लगा। २७७०

मोती ही सम मृदु हास वाली स्त्रियाँ ऐसी स्थिति में आ रही थीं। राक्षसराज यह देखते हुए आनंद के साथ विराज रहा था। तभी वानर-सेना-सागर ने उच्च नाद उठाया। वह उसके शरीर को थकाते हुए हर कान में जा पहुँचा। २७७०

आडलुङ् गळिप्पिन् वन्द वमलैयु ममुदि नान्ऱ
पाडलु मुऴविन् ऱॅय्वप् पाणियुम् बवळ वायार्
ऊडलुङ् गडैक्कण् णोक्कु मऴलैवॅव् वुरैयु मॅल्लाम्
वाडन्मॅन् मलरे यॊत्त वार्प्पॊलि वरुद लोडुम् 2771

पवळ वायार्–मूँगे के समान मुख वाली राक्षसियों के; आटलुम्–नाच और; कळिप्पिन् वन्त–मत्तता से उठे; अमलैयुम्–शोर और; अमुतिन् आन्ऱ–अमृत से भी श्रेष्ठ; पाटलुम्–गान और; मुऴविन्–मृदंग आदि वाद्यों के; तॅय्वम् पाणियुम्–दिव्य ताल-स्वर; ऊटलुम्–रूठन; कटै कण् नोक्कुम्–कटाक्ष; मऴलै–तोतली; वॅम्मै उरैयुम्–प्यारी बोलियाँ; ॲल्लाम्–सब; आर्प्पु ऑलि–मर्दन का स्वर; वरुतलोटुम्–ज्योंही आया, त्योंही; वाटल्–मुरझाये; मॅल् मलरे ऑत्त–मृदु फूल के ही समान हो गये। २७७१

प्रवालमुखी राक्षसियों के नाच और मद्यमस्ती में उत्पन्न शोर अमृत के समान गान और मृदंग आदि बाजों के दैवी नाद और ताल, रूठन, कटाक्ष, तुतली प्यारी बोलियाँ —सभी वानर-सेना के नर्दन के उठते ही मुरझाये मृदु सुमन-से हो गये। २७७१

तऱिपॊरु कळिनल् यानै शेवहन् दळ्ऴि येङ्गल्
तुरुशुवर् पुरवि तूङ्गिल् तुणुक्कुऱ वरक्क रुट्कच्
चॅऱिहऴ लिरुवर् ऱॅय्वच् चिलैयॊलि पिऱन्द दन्ऱे
ऑऱिकडल् कडैन्द मेना ळॆऴुन्द पेराशै यॆन्न 2772

चॅऱि कऴल् इरुवर्–ठोस पायलधारी दोनों (राम-लक्ष्मण) के; तॅय्वम् चिलै ऑलि–दैवी धनु की टंकार; तऱि पॊरु–खूँटे से टकरानेवाले; कळि नल् यानै–मदमत्त तथा श्रेष्ठ गज; चेवकम् तळ्ऴि एङ्क–अपने सोने के स्थान में पड़े म्लान हुए; तुरु चुवल् पुरवि–घने अयालवाले अश्व; तूङ्कि–काँपकर; तुणुक्कु उऱ–भयभीत हुए; अरक्कर् उट्क–राक्षस डरे (ऐसा); ऑऱि–तरंग फेंकते; कटल् कटैन्त–सागर को (जिस दिन) मथा गया; मेनाळ्–उस प्राचीन दिन में; ॲऴुन्त पेर् ओचै–जो बड़ा शोर उठा; ॲन्न–उसके समान; पिऱन्ततु–उठी। २७७२

घनी-वीर-पायल-धारी श्रीराम और लक्ष्मण के धनु की टंकार उठी, तो मदमत्त हाथी अपने सोने के स्थानों में पड़े म्लान हो गये। घने अयालवाले अश्व भय-चकित हो गये। राक्षस डर गये। और वह ध्वनि उस दिन तरंगविक्षुब्ध समुद्रमथन के अवसर पर उठे नादके समान थी। २७७२

मुत्तम्वा णहैक्कुत् तोऱ्कु मुहत्तियर् मुऴुक्कण् वेलाऱ्
कुत्तुवार् कूट्ट मॅल्लाम् वानरक् कुऴविऱ् ऱोनुऱ
मत्तुवाऴ् कडलि नुळ्ळ मऱुहुऱ वदन्न मॅन्नुम्
पत्तुवाण् मदिक्कु मन्नाट् पहलॊत्त दिरवु पण्बाल् 2773

मुऴु कण् वेलाल्–पूर्ण आँख रूपी शक्ति को; कुत्तुवार्–भोंकती; मुत्तम्–मोती; वाळ् नकैक्कु–जिनके प्रकाशमय हास के सामने; तोऱ्कुम्–हार जाते ऐसे; मुकत्तियर्–मुख वाली नारियाँ; ऍल्लाम्–सभी; वानरम् कुऴुविल् तोन्ऱ–वानर-समूह-सी लगीं; मत्तु वाऴ् कटलिन्–तव मथानी-सहित समुद्र के समान; उळ्ळम् मऱुकुऱ–चित्त के व्यग्र होते; अ नाळ्–उस दिन; इरवु–रात; पण्पाल्–अपनी स्थिति से; वतनम् ऍन्नुम्–वदन रूपी; वाळ्–प्रकाशमय; पत्तु मतिक्कुम्–दसों चन्द्रों के लिए; पकल् ऒत्ततु–दिन-सा लगा। २७७३

अपनी पूर्ण बड़ी आँखों के साँग से सालनेवाली, मोतियों को हराने वाले हँसी के मुखों की रमणियाँ अब रावण को वानर-सेना-सी (अप्रिय) लगीं। उसका मन मन्दर-मथानी से विलोडित क्षीरसागर-सा विक्षुब्ध हो गया। उस रात की स्थिति ही बदल गयी। इसलिए वह रात उसके चंद्र-सम दसों मुखों के लिए दिन बन गयी। २७७३

ईदिडै याह वन्दा रलङ्गन्मी देऱि ऩार्पोय्
ऊदिनार् वेय्हळ् वण्डि नुरुविना रुऱ्ऱ वॆल्लान्
तीदिलर् पहैञ रॆन्नत् तिक्कॆन्ऱ मनत्तन् ऱॆय्वम्
पोदुहु पन्दर् निन्ऱ मन्दिरत् तिरुक्कै पुक्कान् 2774

ईतु इडैयाक–एतन्मध्य; वन्तार् वेय्कळ्–आगत चर; वण्टिन् उरुविनार्–भ्रमर-रूप-धारी बन; अलङ्कल् मीतु–माला पर; पोय् एऱिनार्–जा चढ़े; ऊतिनार्–(कान में) फूंके; उऱ्ऱ ऍल्लाम्–जो बीता वह सब; इरावणन् पकैञर्–रावणशत्रु; तीतिलर्–हानि-रहित हैं; ऍन्न–जानकर; तिक् ऍन्ऱ मनत्तन्–ठिठक-भरे मन का होकर; तॆय्वम् पोतु उकु–देवी पुष्प जहाँ चूते थे उस; पन्तर् निन्ऱु–मण्डप को छोड़कर; मन्तिरत्तु–मंत्रणा-मण्डप में; पुक्कान्–पहुँचा। २७७४

जब यह हो रहा था तब चर आये। भ्रमरों के रूप में रावण की माला पर से चढ़कर उन्होंने बीता सारा हाल रावण के कानों में फूंका। रावण ने जब जाना कि उसके शत्रुओं पर कोई आँच नहीं आयी है, तो उसके मन में ठिठक भर गयी। वह उस मण्डप से, जिसमें

दैवी फूल (कलप-सुमन) चू रहे थे, निकलकर अपने मन्त्रणागृह में पहुँच गया। २७७४

25. माया शीदैप् पडलम् (माया-सीता पटल)

मैन्दनु मट्रु ळोरु महोदरन् मुदलो राय
तन्दिरत् तलैमै ग्योरु मुदियरुन् दळ्वत् तक्क
मन्दिर रॅवरुम् वन्दु मरुङ्गुट्रप् पडर्न्दार् पट्ट
अन्दर मुळ्ळुदुन् दाने यनैयवर्क् कडियच् चॊन्नान् 2775

मैन्तनुम्-पुत्र (इन्द्रजित्) और; मट्रुळोरुम्-अन्य; मकोतरन् मुतलोराय-महोदर आदि; तन्तिरम् तलैवरुम्-सेनापति; मुतियरुम्-वृद्ध लोग और; तळ्व तक्क-मंत्रणा-समर्थ; मन्तिरर् ऍवरुम्-सभी मन्त्री; वन्तु-आये; मरुङ्कु उट्र-पार्श्वस्थ हो; पटर्न्तार्-घेरकर बैठे; पट्ट-आप बीता; अन्तरम् मुळ्तुम्-दुःख का सारा हाल; अनैयवर्क्कु-उनसे; ताने-खुद; अरिय-समझाकर; चॊन्नान्-(रावण ने) कहा। २७७५

मंत्रणागृह में उसका पुत्र इन्द्रजित्, महोदर आदि सेनापति, वयोवृद्ध लोग और मंत्रणा देने की योग्यता रखनेवाले नेता लोग आये और घेरकर बैठ गये। तब रावण ने अपना सारा दुःख अपने ही मुख से पूर्ण रूप से कह सुनाया। २७७५

इलङ्गैयि निन्रु मेरुप् पिन्पड विमैप्पिन् पायन्दु
वलङ्गिळर् मरुन्दु निन्र मलैयॊडुङ् गॊणर वल्लान्
अलङ्गलन् दडन्दो ळण्ण लनुमने यादल् वेण्डुम्
कलङ्गलि लुलहुक् कॆल्लाङ् गारणङ् गण्ड वान्राल् 2776

(माल्यवान) उलकुक्कु ऍल्लाम्-सारे लोकों के; कलङ्कलिल्-अप्रमत्त; कारणम्-कारण को; कण्ट आन्रल्-देखा है उस शक्ति से; इलङ्कैयिन् निन्रु-लंका से; इमैप्पिन्-एक पल में; मेरु पिन्पट-मेरु को पीछे छोड़कर; पायन्तु-लपक चलकर; वलम् किळर् मरुन्तु-प्रभावमय 'मृतसंजीवनी' औषध को; निन्र मलैयॊटुम्-वह जिसमें रहा उस पर्वत के साथ; कॊणर वल्लान्-ला सकनेवाला; अलङ्कल्-माला से अलंकृत; अम् तटम् तोळ्-सुन्दर विशाल कन्धों वाला; अण्णल्-महिमावान; अनुमने आतल् वेण्टुम्-हनुमान ही होगा। २७७६

(तब माल्यवान ने कहना आरम्भ किया—) जो अशेष तथा अचल लोककारण का ज्ञान रखता है और जिसे अपूर्व बल प्राप्त है; जो लंका से निकलकर मेरु के भी आगे एक पल में गया और शक्तिसंयुक्त औषधों को उनके पर्वत के साथ ला सका, वह सुंदर माला से अलंकृत विशाल कंधों वाला महावीर हनुमान ही हो सकता है। २७७६

नीरिनैक् कडक्क वाङ्गि यिलङ्गैया निन्ऱ कुन्ऱैप्
पारिलिट् किऴिय वीशि नारुळर् पिऴैक्कर् पालार्
पोरिनिप् पॉरुव दॅङ्गे पोयिन वनुमन् पॉन्मा
मेरुवैक् कॉणर्न्दिव् वूर्मे लिडुमॅलिन् विलक्क लामो 2777

इलङ्कैया निन्ऱ–लंका के रूप में स्थित; कुन्ऱै–पर्वत को; नीरिनै कटक्क–जल से अलग करके; वाङ्कि–उठाकर; पारितिल्–भूमि पर; किऴिय वीचिन्–चीरते हुए कोई पटके तो; पिऴैक्कल् पालार्–बच सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं; पोयिन अनुमन्–जो गया वह हनुमान; पॊन् मा मेरुवै–स्वर्ण के बड़े मेरु को; कॊणर्न्तु–लाकर; इ ऊर् मेल्–इस नगर पर; इटुम् ऎनिन्–डाले तो; विलक्कल् आमो–रोका जा सकेगा क्या; इनि–अब; पोर् पॊरुवतु ऎङ्के–लड़ना कहाँ। २७७७

लंका के पर्वत को समुद्र से अलग करके उठाकर कोई भूमि पर उसको चीरते हुए डाल दे तो बचनेवाला कौन होगा? ओषधि-पर्वत जो लाने गया, वह स्वर्ण-मंदर पर्वत को लाकर इस नगर पर डाल गया होता तो कोई उसे रोक सकता था क्या? इस हालत में युद्ध कहाँ होगा? । २७७७

मुऱैहॆड वॆन्ऱु वेण्डिन् निनैत्तदै मुडिप्पन् मुन्बिन्
कुऱैविलाक् कुणङ्गट् काङ्गोर् कोदिलर् वेदङ् गूऱुम्
इऱैवर्कण् मूव रॆन्ब दॆण्णिला रॆण्ण मेदान्
अऱैहऴ लनुम नोडुम् नाल्वरे मुदल्व रम्मा 2778

मुऱै कॆट–(सृष्टि-) क्रम बदलूँ; ऎन्ऱु वेण्टिन्–ऐसा इच्छा करे तो; निनैत्तते–सोचा ही; मुन्पिन्–बल से; मुटिप्पन्–पूरा कर देगा; कुऱैवु–त्रुटि; इला–हीन; कुणङ्कट्कु–गुणकथन के लिए; ओर् कोतिलर्–कोई दोष जो नहीं रखते; वेतम् कूऱुम्–वेदशंसित; इऱैवर्कळ्–देवता; मुवर्–तीन; ऎन्पतु–कहना; ऎण्णिलार्–विवेकहीनों का; ऎण्णमे तान्–विचार है; मुतल्वर्–प्रथम; अऱै कऴल् अनुमनोटुम्–क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर; नाल्वरे–चार ही हैं; अम्मा–आश्चर्य री मैया। २७७८

अगर हनुमान चाहे कि 'उलट-फेर मचा दूँगा' तो वह अपने बल से वह काम पूरा कर सकेगा। 'निर्दोष गुणपूर्ण आदिदेव तीन हैं'—यह अविवेकियों का विचार है। असल में आदिदेव क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर चार हैं! यह विस्मयकारी बात है, री मैया! । २७७८

नङ्गिळै युलन्द दॆल्ला मुयन्दिड नणुहु मन्ऱे
वॆङ्गोडुन् दीमै तन्नाल् वेलैयि निट्टि लोमेल्
इङ्गुळ वॆल्ला माडङ् किन्निवरु मिडैयू ऱिल्लै
पङ्गयत् तण्णन् मीळाप् पडैपऴु दुऱ्ऱ पण्बाल् 2779

उलन्ततु–जो मरे; नम् किळै ऎल्लाम्–उन हमारे सारे बांधवों को; वॆम्

कोट्टम् तीमै तन्नाल्–भयंकर नाशकारी बुराई से; वेलैयिन्–समुद्र में; इट्टिलोमेल्–नहीं डालते तो; उय्न्तिट नणुकुम् अन्रे–बच सकते न; पङ्कयत्तु अण्णल्–कमलासन भगवान का; मीळा पट्टै–अवार्य अस्त्र; पळुतु उट्रु–असफल हुआ उस; पण्पाल्–हालत में; इनि–अब; इङ्कु उळ ऍल्लाम्–यहाँ का सभी; माळ्तऱ्कु–मिट जाय इसमें; वरुम्–होनेवाली; इटैयूरु इल्लै–कोई बाधा नहीं। २७७९

हमारे लोग जितने मरे हैं, उन सबको अगर क्रूरता के साथ समुद्र में तुम न डाल गये होते तो उनके बचने का मौक़ा होता न? कमलासन भगवान ब्रह्मा का अस्त्र, जो कभी असफल नहीं होता, अब व्यर्थ हो गया है। इस स्थिति में अब यहाँ के लोगों के मरने में कोई बाधा नहीं होगी। २७७९

इऱन्दव रिऱन्दु तीर विनियॊरु पिऱवि वन्दु
पिऱन्दन माहि युळ्ळो मुय्न्दनम् बिळैक्कुम् बॅट्रि
मऱन्दन मॅनिनु मिन्नन् जनहियै मरबि नीन्दे
अऱन्दरु शिन्दै योरै यडैक्कलम् बुहुदु मैय 2780

ऐय–तात; इऱन्तवर् इऱन्तु तीर–मरे सो मरे, उन्हें छोड़ो; इनि–अब; ऒरु पिऱवि वन्तु–और एक जन्म प्राप्त कर; पिऱन्तनम् आकि–जनमे; उळ्ळोम्–जो हैं वे हम; उय्न्तनम्–बचे; पिळैक्कुम् पॅट्रि–जीवित रहने का उपाय; मऱन्तनम्–भूल गये; ऍनिनुम्–तो भी; इन्नम्–अब ही सही; जनकियै–जानकी को; मरपिन् ईन्ते–आदरपूर्वक दे देकर; अऱम् तरु चिन्तैयोरै–धर्ममन (राम और लक्ष्मण) को; अटैक्कलम् पुकुतुम्–शरण में जायँ। २७८०

तात! जो मरे, वे मरे। हम जो बचे हैं, हमें मानो नया जन्म ही बख्शा गया है। जीवित रहने का मार्ग भी हम भूल गये हैं। तो भी हम देवी जानकी को आदर के साथ लौटा दें और धर्मचित्त श्रीराम और लक्ष्मण की शरण पड़ें। २७८०

वालियै वाळि यॊन्ऱाल् वानिडै वैत्तु वारि
वेलैयै वॅन्ऱु कुम्ब करुणनै वीट्टि नानै
आलियिन् मॊक्कु ळन्न वरक्करो वमरिन् वॅल्वार्
शूलियैप् पॊरुप्पि नोडुन् दूक्किय विशयत् तोळाय् 2781

चूलियै–शूली को; पॊरुप्पिनोटुम्–पर्वत के साथ; तूक्किय–उठानेवाले; बिचय–विजयी; तोळाय्–कंधों वाले; वाळि ऒन्ऱाल्–एक बाण से; वालियै–वाली को; वानिटै वैत्तु–आकाश में पहुँचाकर; वारि वेलैयै–जल-सागर को; वॅन्ऱु–अधीन करके; कुम्पकरुणनै–कुंभकर्ण को; वीट्टिनानै–जिसने मारा उसे; आलियिन् मॊक्कुळ् अन्न–ओले के बुलबुले के समान; अरक्करो–राक्षस क्या; अमरिन्–युद्ध में; वॅल्वार्–मारेंगे। २७८१

शूली शिव को कैलास पर्वत के साथ उठानेवाले विजयस्कन्ध! जिसने एक ही बाण से वाली को मारा, समुद्र को अधीन कर लिया और

कुम्भकर्ण को भी मारा, क्या उसे जल के बुलबुले के समान राक्षस युद्ध में हरा सकेंगे ? । २७८१

मऱिकडल् कुडित्तु वाऩै मण्णॊडुम् बऱिक्क वल्ल
ऎऱिपडै यरक्क रॆल्ला मिऱन्दऩ रिलङ्गै यूरुम्
जिऱुवनु नीयु मल्लाल् यारुळ रॊरुवर् तीर्न्दार्
वॆऱिदुनम् वॆन्ऱि यॆऩ्ऱाऩ् मालिमेल् विळैव दोर्वाऩ् 2782

मेल् विळैवतु–भविष्य में जो होगा उसे; ओर्वाऩ्–सोचनेवाले; मालि–माली ने; मऱि कटल् कुटित्तु–उमगते सागर को पीकर; वाऩै–आकाश को; मण्णोटुम् पऱिक्क वल्ल–भूमि के साथ उखाड़ सकनेवाले; ऎऱि.पटै–फेंके जा सकें, ऐसे हथियारों वाले; अरक्कर् ऎल्लाम्–सारे राक्षस; इऱन्तऩर्–मर ही गये; तीर्न्तार्–(मरने से) जो रहे; इलङ्कै ऊरुम्–लंका नगर और; चिऱुवतुम्–पुत्र; नीयुम् अल्लाल्–और तुम्हें छोड़; ऒरुवर् यार् उळर्–और कोई क्या है; नम् वॆन्ऱि–हमारी विजय; वॆऱितु–व्यर्थ है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २७८२

भविष्यवेत्ता माल्यवान ने आगे कहा कि उमँगनेवाले समुद्र को पीकर, आकाश और भूमि को उखाड़ सकनेवाले सारे वीर मर गये। बचे तो तुम हो और तुम्हारा पुत्र बचा है ! लंकानगर है। और कौन है ? विजयकामना व्यर्थ है। २७८२

कट्टुरै यदऩैक् केळाक् कण्णॆरि कवुव नोक्किप्
पट्टऩ ररक्क रॆऩ्ऩिऱ् पडैक्कलम् बडैत्त वॆल्लाङ्
गॆट्टऩ वॆऩिनुम् वाऴ्क्कै कॆडादुनऱ् किळिय ऩाळै
विट्टिड वॆण्णि योनाऩ् पिडित्तदु वेट्कै वीय 2783

कट्टुरै अतऩै–निर्णय के उन वचनों को; केळा–सुनकर; कण् ऎरि–आँख की आग; कवुव–(माल्यवान को) जला दे ऐसा; नोक्कि–देखकर; अरक्कर् पट्टऩर् ऎऩ्ऩिऩ्–राक्षस हत हो गये तो भी; पटैत्त–प्राप्त; पटैक्कलम् ऎल्लाम्–हथियार सभी; कॆट्टऩ ऎऩिनुम्–बेकार गये तो भी; नल् किळि अऩाळै–सुन्दर शुक-सदृश सीता को; नाऩ् पिटित्ततु–जो मैं पकड़ लाया वह; वेट्कै वीय–इच्छा को नष्ट करके; वाऴ्क्कै कॆटातु–जीवन नष्ट न करके; विट्टिट ऎण्णियो–छोड़ना सोचकर क्या। २७८३

रावण की आँखों से यह सुनकर अंगारे फूट निकले और माल्यवान पर लगे। रावण ने कहा कि क्या हुआ अगर वीर मरे और हथियार व्यर्थ हो गये ? शुक-समाना सीता को क्या मैं इसलिए पकड़ लाया कि जीवन व्यर्थ किये विना अपनी कामना और उसे त्याग दूं ? । २७८३

मेन्दऩॆऩ् मऱ्ऱै योर्ग ळिऩ्ऩुयिर् वाऴ्क्कै वेट्टोर्
उयन्दुनोर् पोवीर् नाळै यूऴिवॆन् दीयि ऩोङ्गिच्

चिन्दित्तन् मतिद रोडु कुरङ्गिलैत् तीर्प्पन् ॅन्ऱान्
वॅन्दिऱ लरक्कर् वेन्दन् मह्नि‌वै विळम्ब लुऱ्ऱान् 2784

वॅम् तिऱल्–कठोर बली; अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराज; मैन्तन् ॲन्–पुत्र क्या; मऱ्ऱैयोर् ॲन्–अन्यों से क्या; अन्चितिर्–तुम सब डर गये; वाऴ्क्कै वेट्टीर्–जीवन का मोह करते हो; नीर्–तुम लोग; उयनुदु पोवीर्–बच जाओ; नाळै–कल ही; ऊऴि वॅम् तीयित्–युगान्त की भयंकर आग के समान; ओङ्कि–उठकर; मत्तिरोडु–नरों के साथ; कुरङ्कितै–वानरों को; चिन्तित्तैन्–तितर-बितर करके; तीर्प्पॅन्–मिटा दूँगा; ॲन्ऱान्–बोला; मकन्–पुत्र; इवै–ये; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। २७८४

क्रूर बली राक्षसराज (रावण) ने सभासदों से निष्ठुरता से कहा कि अब मेरे पुत्र से क्या होगा ? अन्यों से भी क्या फ़ायदा ? तुम सब डर गये हो। जीवन के मोह में पड़े हो ! चलो सब ! जान बचाते चले जाओ। कल ही मैं युगांत की अग्नि के समान उठूँगा और नरों और वानरों का खातमा कर दूँगा। तब पुत्र इन्द्रजित् ने निम्नोक्त बातें कहीं। २७८४

उळदुना नुणर्त्तऱ् पाल वुणर्न्दतै कोड लुण्डेल्
तळमलर् किळवन् ऱन्द पडैक्कलन् दळलिऱ् चेर्त्ति
अळविल दमैय विट्ट दिरामनै नीक्कि यन्ऱाल्
विळैविल दनैयन् मेनित् तीण्डिन्ऱि मीण्ड दम्मा 2785

उणर्न्ततै–समझकर; कोटल् उण्टेल्–लेना होगा तो; नान् उणर्त्तल् पाल–मेरे समझाने योग्य; उळतु–(वचन) हैं; तळम् मलर् किळवन्–सदल कमल का भगवान; तन्त–(ब्रह्मा द्वारा) दत्त; पटैक्कलम्–अस्त्र; तळलिऱ् चेर्त्ति–अग्नि में रखकर; अळविलतु–(शक्ति में) अपार बनाकर; अमैय–ठीक बने, ऐसा; विट्टतु–मुझसे चलाया गया वह; इरामनै नीक्कि अन्ऱु–राम को छोड़कर नहीं; विळैविलतु–बेकार हो; अनैयन् मेनि–उसके शरीर को; तीण्टिन्ऱि–स्पर्श किये विना ही; मीण्टतु–वापस आ गया; अम्मा–क्या ही आश्चर्य माँ। २७८५

अगर आप समझ लेने के लिए तैयार हों तो कुछ कहने को मेरे पास है। सदल कमल-भव के अस्त्र को मैंने अग्नि में रखकर जो चलाया था, वह राम को अलग करके नहीं। पर वह अस्त्र बेकार हो गया। उसके शरीर को स्पर्श किये विना ही लौट आ गया। यह आश्चर्य है माँ ! । २७८५

मानिड नल्लन् ऱॊल्लै वानव नल्लन् मऱ्ऱुम्
मेनिवर् मुनिव नल्लन् वीडणन् मॅय्यिर् चॊन्न
यानैत दंण्ण ऱीर्न्दा रॅण्णुरु मॊरुव नॅन्ऱे
तेनहु तॅरियल् मन्ना शेहऱत् तॅरिन्द दन्ऱे 2786

तेऩ् नकु–शहद-भरी; तॅरियल् मऩ्ऩा–मालाधारी राजा; मातिटऩ् अल्लऩ्–(वह) नर नहीं; तॉल्लै–पुरातन; वाऩवऩ् अल्लऩ्–देव नहीं; मट्रुम्–और; मेल् निवर्–उत्कृष्ट; मुतिवऩ् अल्लऩ्–मुनि नहीं; वीटणऩ्–विभीषण ने; मॅय्यिल्–सच ही; चॊऩ्ऩ–जिसके बारे में कहा वह; याऩ् ऍऩ्ऩु ऍण्णल् तीर्न्तार्–अहंकार, ममकार-रहित लोग; ऍण्णुरुम्–जिसका स्मरण करते हैं; ऑरुवऩ् ऍऩ्ड्रे–अद्वितीय है यही; चेक्कु अऱ–विना संशय के; तॅरिन्ततु–जाना गया। २७८६

मधुमिश्रित सुमनमालाधारी राजा ! अब निस्संदेह समझ में आ गया कि वह नर नहीं; पुरातन देवता नहीं; और उत्कृष्ट मुनि भी नहीं। पर विभीषण ने सच जो कहा है, उसके अनुसार वह अहंकार, ममकार-रहित साधुओं का आराध्य देव परमेश्वर है। २७८६

अतैयदु वेरु निऱ्क वऩ्ऩदु पहर्द लाण्मै
वित्तॅऩ्ऩि नऩ्ड्रु नित्तु वीऴ्न्ददु वीऴ्ह वीर
इत्तैयनी मूण्डि याऩ्बोय् निहुम्बिलै विरैवि नॅय्दित्
तुत्तियरु वेळ्वि वल्लै यियऱ्ट्रिऩाऩ् मुडियुन् दुऩ्बम् 2787

अतैयतु–वह तथ्य; वेरु–अलग एक ओर; निऱ्क–रहे; अऩ्ऩतु पकर्तल्–वह कहना; आण्मै वित्तै–वीर कार्य है; ऍऩ्ऩिऩ्–तो; अऩ्ड्रु–नहीं; नित्तु–रहकर; वीऴ्न्ततु वीऴ्क–जो नष्ट हुआ वह हो गया रहे; वीर–वीर; नी इळैयल्–आप म्लान मत हों; याऩ्–मैं; विरैविऩ्–जल्दी; निकुम्पिलै मूण्टु पोय्–निकुंभिला (लंका के बाहर एक मन्दिर का स्थान) में त्वरा से जा; ऍय्ति–पहुँचकर; वल्लै–शीघ्र; तुत्ति अरु–दोषहीन; वेळ्वि–यज्ञ; इयऱ्ट्रिऩाल्–संपन्न करूँ तो; तुऩ्पम् मुटियुम्–दुःखों का अन्त हो जायगा। २७८७

वह तथ्य रहे एक ओर। उसको मानना वीरता का लक्षण नहीं होगा। जो मिट गया सो मिट गया। वीर ! आप दुःखी मत हों। मैं निकुंभिला जाऊँगा, शीघ्र विधिवत यज्ञ करूँगा। वह संपन्न हो जायगा तो सारे दुःख दूर हो जायँगे। २७८७

अऩ्ऩदु नल्ल देया लमैत्तियॅऩ् ऱरक्कऩ् शॊऩ्ऩाऩ्
नऩ्मह ऩुम्बि कूऱ नण्णलार् कण्डु नण्णि
मुऩ्ऩिय वेळ्वि मुऱ्ट्रा वहैशॆरु मुयल्व रॆऩ्ऩा
अॆऩ्ऩव रॆय्दा वण्ण मियऱ्ट्रला मुरुदि यॆऩ्ड्राऩ् 2788

अरक्कऩ्–राक्षस (रावण) ने; अऩ्ऩतु नल्लते–वही अच्छा है; अमैत्ति–करो; ऍऩ्ड्रु चॊऩ्ऩाऩ्–ऐसा कहा; नल् मकऩ्–अच्छे लड़के के; उम्पि कूऱ–आपके छोटे भाई के कथन से; नण्णलार्–शत्रु; कण्टु–जानकर; नण्णि–मेरे पास आकर; मुऩ्ऩिय–आरब्ध; वेळ्वि–याग; मुऱ्ट्रा वकै–पूरा न हो ऐसा; चॆरु मुयल्वर्–युद्ध का प्रयत्न करेंगे; ऍऩ्ऩा–ऐसा कहने पर; अवर् ऍय्ता वण्णम्–वे न आएँ उस प्रकार; ऍऩ् उरुति–कौन सा उपाय; इयऱ्ट्रलाम्–कर सकते हैं; ऍऩ्ड्राऩ्–पूछा (रावण ने)। २७८८

राक्षस ने कहा कि ठीक है वही करो। तब सुपुत्र ने प्रश्न किया कि अगर आपके भाई के बतलाने पर शत्रु लोग आकर मेरे यज्ञ को पूरा न होने देते हुए युद्ध करें तो? रावण ने पूछा, वे न आएँ, इसका क्या उपाय किया जाय? । २७८८

शानहि युरुव माहच् चमैत्तव उन्मै कण्ड
वानुय रनुमन् मुन्ने वाळिनाऱ् कॊन्ऱु माऱ्ऱि
यानॆडुज् जेनै योडु मयोत्तिमे लॆळुन्दे नॆन्ऱप्
पोनबिन् पुरिव दॊन्ऱुन् दॆरिहिलर् तुन्बम् बूण्बार् 2789

चानकि उरुवमाक–जानकी के रूप में; चमैत्तु–कोई (प्रतिमा) बनाकर; अवळ् तन्मै कण्ट–उसके स्वभाव के ज्ञाता; वान् उयर् अनुमन् मुन्ने–आकाश तक चढ़े यश वाले हनुमान के सामने; वाळिनाल् कॊन्ऱु–तलवार से काटकर; माऱ्ऱि–जान लेकर; यान्–मैं; नॆटुम् चेनैयोटुम्–बड़ी सेना के साथ; अयोत्ति मेल् ऍळुन्तेन् ऍन्ऱ–अयोध्या पर चढ़ने गया जैसा (भ्रम पैदा करके); पोन पिन्–जाऊँगा, उसके बाद; तुन्पम् पूण्पार्–(राम-लक्ष्मण) दुःखी होंगे; पुरिवतु ऑन्ऱुम् तॆरिकिलर्–क्या करना यह नहीं जानेंगे। २७८९

इन्द्रजित् ने कहा कि स्वर्ण की माया-सीता रचूँगा। उसको खूब जानता है वह श्रेष्ठ हनुमान। उसके सामने अपनी तलवार से उसकी जान ले लूँगा। फिर अयोध्या पर अपनी सेना के साथ चढ़ जाने का भ्रम पैदा करके चला जाऊँगा। बाद वे दुःखी होंगे और नहीं जानेंगे कि क्या करना है? । २७८९

इत्तलैच् चीदै माण्डाळ् पयनिव णिल्ल यॆन्बार्
अत्तलैत् तम्बि मारुन् दायरु मडुत्तु ळोरुम्
उत्तम नहरु माळु मॆन्बदो रच्च मून्ऱप्
पॊत्तिय तुन्बत् तोडुज् जेनैयुन् दामुम् बोवार् 2790

इ तलै–यहाँ; चीतै माण्टाळ्–सीता मर गयी; इवण् पयन् इल्लै–अब यहाँ कोई काम नहीं; ऍन्पार्–कहकर; अ तलै–वहाँ; तम्पिमारुम्–भाई लोग और; तायरुम्–माता लोग और; अटुत्तुळोरुम्–रिश्तेदार लोग; उत्तम नकरुम्–और उत्तम नगर (अयोध्या); माळुम्–मिट जायँगे; ऍन्पतु ओर् अच्चम्–ऐसा एक भय; ऊन्ऱ–स्थिर हो जाय तो; पॊत्तिय तुन्पत्तोटुम्–भरपूर दुःख के साथ; चेनैयुम् तामुम्–सेना और वे; पोवार्–लौट चलेंगे। २७९०

इधर सीता मर गयी। अब यहाँ कोई काम नहीं। वहाँ तो भाई, माताएँ और अन्य परिवार के लोग मर जायँगे। नगर का भी नाश होगा। यह भय उनके मन में घर कर लेगा। तो वे दुःख से भरकर सेना-सहित लौट जायँगे। २७९०

पोहिल रॅन्ऱ पोदु मनुमनै याण्डुप् पोक्कि
आहिय दऱिन्दा लन्ऱि यरुन्दुय राऱ्ऱ लाऱ्ऱार्
एहिय करुम मुऱ्ऱिया लिवण् विरैवि नॆय्दि
वेहवॆम् बडैयिऱ् कॊन्ऱु तरुहुवन् वॆन्ऱि यॆन्ऱान् 2791

पोकिलर् ॲन्ऱ पोतुम्–न जाएँ तब भी; अनुमनै आण्टु पोक्कि–हनुमान को वहाँ भिजवाकर; आकियतु–(वहाँ) जो हुआ वह; अरिन्ताल् अन्ऱि–बिना जाने; अरुम् तुयर्–अपार दुःख; आऱ्ऱल् आऱ्ऱार्–नहीं सह सकेंगे; यान्–मैं; एकिय करुमम्–जिस पर गया वह कर्म; मुऱ्ऱि–पूरा करके; इवण्–यहाँ; विरैविन् ॲय्ति–जल्दी आकर; वेक–तेज; वॆम् पटैयिल्–भयंकर हथियारों से; कॊन्ऱु–उन्हें हत करके; वॆन्ऱि तरुकुवन्–विजय दिला दूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। २७९१

अगर वे नहीं जाएँ तो भी वे हनुमान को उधर भिजवाकर समाचार जान लेंगे। नहीं तो उनको कल नहीं पड़ेगी; अपार दुःख झेल नहीं सकेंगे। इतने मे तब मैं अपना काम संपन्न करके शीघ्र लौटूँगा। लौट कर तेज तथा घातक अस्त्रों से उन्हें मार दूँगा और आपको विजय दिला दूँगा। २७९१

अन्नदु पुरिद नन्ऱॆन्ऱ् ऱरक्कनु ममैय वञ्जप्
पॊन्नुरु वमैक्कु माय मियऱ्ऱुवान् मैन्दन् पोनान्
इन्नदिन् तलैय दाह विरामनुक् किरवि शॆम्मल्
तॊन्नह रदनै वल्लैक् कडिहॆडच् चुडुदु मॆन्ऱान् 2792

अन्नतु पुरितल्–वैसा करना; नन्ऱु ॲन्ऱु–ठीक कहकर; अरक्कनुम् अमैय–राक्षस (रावण) के सम्मत होते; मैन्तन्–कुमार; पॊन् उरु अमैक्कुम्–स्वर्ण-प्रतिमा बनाने का; वञ्च मायम् इयऱ्ऱुवान्–वंचक मायाकार्य करने; पोनान्–गया; इ तलै–यहाँ; इन्नतु आक–यह होता रहा, तब; इरामनुक्कु–श्रीराम से; इरवि चॆम्मल्–रवि के पुत्र सुग्रीव ने; तॊल् नकर् अतनै–प्राचीन नगर को; कटि कॆट–रक्षण-शून्य करके; वल्लै–शीघ्र; चुटुतुम्–जला देंगे; ॲन्ऱान्–ऐसा कहा। २७९२

रावण ने भी सम्मति दी कि वही अच्छा काम है। तब कुँअर इन्द्रजित् स्वर्ण-प्रतिमा का मायारूप निर्मित कराने चला गया। इधर जब यह हो रहा था, तब रविपुत्र ने श्रीराम को सुझाया कि हम पुरातन लंका नगरी को अरक्षित कर जला दें और मिटा दें। २७९२

अत्तॊऴिल् पुरिद नन्ऱॆन्ऱ् ऱण्णलु मरैय वॆण्णित्
तत्तित्त् तिलङ्गै मूदूर्क् कोबुरत् तुम्बर्च् चार्न्दान्
पत्तुडै थेऴ शान्ऱ वानर कुऴुवुम् बऱ्ऱिक्
कैत्तलत् तोरोर् कॊळ्ळि यॆडुत्तदॆव् वुलहुङ् गाण 2793

अण्णलुम्–प्रभु श्रीराम ने भी; अ तॊऴिल् पुरितल्–वह काम करना; नन्ऱु–अच्छा है; ॲन्ऱु–ऐसा; अरैय–कहा तो; ॲण्णि–(सुग्रीव) सोचकर; तत्तितम्–लपककर; इलङ्कै मूतूर्–पुरातन लंका नगर के; कोपुरत्तु उम्पर्–गोपुर के ऊपर;

चार्न्तात्–पहुँचा; पत्तु उटै एळु चातुर्–दस के सात (सत्तर) संख्या के वृहत्; वानर कुळुवुम्–वानरदल ने; ॲ उलकुम् काण–मारे लोक देखें ऐसा; कै तलत्तु–अपने-अपने हाथ में; ओरोर् कौळ्ळि–एक-एक जलती लकड़ी; पट्रि ॲट्टुत्तु–पकड़कर उठायी। २७९३

प्रभु श्रीराम ने कहा कि वह कार्य उचित ही है। सुग्रीव लपक कर लंका के गोपुर के ऊपर पहुँचा। सत्तर 'वॅळ्ळम्' वानर वीरों ने भी हाथ में जलती लकड़ियाँ ले लीं। दुनिया इसे देख रही थी। २७९३

ॲण्णिल कोडिप् पल्हवि यावुम्, मण्णुरु कावर् ट्रिण्मदिल् तावि
वॅण्णिर मेह मित्तिनै वीशि, नण्णिन पोलुव तॊन्नहर् नाण 2794

ॲण् इल–असंख्य; पल् कोटि–अनेक करोड़; कवि यावुम्–सभी वानर; मण् उरु–मिट्टी के बने; कावल्–सुरक्षित; तिण् मतिल्–सुदृढ़ प्राचीर; तावि–लाँघकर; तॊल् नकर् नाण–प्राचीन नगर लजा जाए ऐसा; वॅण्णिर मेकम्–सफ़ेद मेघ; मिन्नितै वीचि–बिजली फेंकते हुए; नण्णित पोलुव–आये जैसे रहे। २७९४

सारे असंख्यक अनेक करोड़ वानर मिट्टी के बने, सुदृढ़ और सुरक्षित प्राचीर पर चढ़े। लंका नगर ही लजा गया। मेघ बिजली फेंकते आते हों —ऐसे वे वानर दिखायी दिये। २७९४

आशैह डोरु मळ्ळित कौळ्ळि, माशरु तानै मर्क्कड वॅळ्ळम्
नाशमिव् वूरुक् कुण्डॆन नळ्ळित्, वीशित वानित् मीन्विळ लॅन्न 2795

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' की संख्या के; मर्क्कट–मरकटों की; माचु अरु तानै–निर्दोष सेना ने; आचैकळ् तोरुम्–दिशा-दिशा में; कौळ्ळि अळ्ळित्त–जलती लकड़ियाँ उठाकर; नळ्ळित्–अर्धरात्रि में; इ ऊरुक्कु नाचम् उण्टु–इस नगर का नाश होगा; ॲत–यह संकेत देते हुए; वानित् मीत्–आकाश के नक्षत्र; विळल् ॲन्त–गिरे जैसे; वीचित–(जलती लकड़ियाँ) फेंकीं। २७९५

'वॅळ्ळमों' की अनिंद्य वानर-सेना ने जलती लकड़ियाँ ले फेंकीं और वह ऐसा लगा, मानो आकाश के नक्षत्र लंका के नाश का संकेत देते हुए गिर रहे हों। २७९५

वञ्जनै मन्नन् वाळ् मिलङ्गैक्, कुञ्जर मन्नार् वीशिय कौळ्ळि
अञ्जन वण्ण नाळियि लेवुञ्, जॆञ्जर मॆन्नच् चॆन्रुदु मेन्मेल् 2796

कुञ्चरम् अन्नार्–हाथी-सरीखे वानरों ने; वञ्चनै मन्नन्–वंचक राजा; वाळुम्–जहाँ रहता था उस; इलङ्कै–लंका में; वीचिय–जो फेंकीं; कौळ्ळि–जलती लकड़ियाँ; अञ्चन वण्णन्–अंजनवर्ण श्रीराम के; आळियिल्–समुद्र में; एवुम्–प्रेरित; वॆम् चरम् ॲन्त–भयंकर शर के समान; मेन् मेल् चॆन्रतु–उत्तरोत्तर चलीं। २७९६

गजनिभ वानरों द्वारा वंचक राजा रावण के वासस्थान लंका नगर

पर फेंकी गयी जलती लकड़ियाँ अंजनवर्ण श्रीराम द्वारा समुद्र पर चलाये गये अस्त्र के समान उत्तरोत्तर बढ़ती गयीं। २७९६

कैयह लिन्ऱिजिक् कावल् कलङ्गच्, चॅय्य कॊऴुन्दीच् चॅन्ऱु नॆरुङ्ग
ऐय नॆडुङ्गा राऴियै यम्बाल्, अॅय्य वॆरिन्दा लॊत्त दिलङ्गै 2797

कै अकल्–सुविशाल; इञ्चि–प्राचीर के; कावल्–रक्षकों को; कलङ्क–भयभीत करते हुए; चॅय्य–लाल; कॊऴु ती–घनी आग; चॅन्ऱु नॆरुङ्ग–जा लगी; इलङ्कै–लंका; ऐयन्–प्रभु के; नॆडु कार् आऴियै–लम्बे काले सागर पर; अम्पाल् अॅय्य–अस्त्र चलाने पर; ऍरिन्ताल् ऑत्ततु–(समुद्र) जल गया जैसे लगी। २७९७

लाल घनी आग जब लंका में लगी, तब विशाल प्राचीरों के रक्षक दहल उठे। तब का दृश्य उस समय के समुद्र का-सा था, जब श्रीराम ने काले लम्बे सागर पर अस्त्र चलाया और वह जल उठा। २७९७

परऱ्ऱुऱु पल्पऴु वत्तॆरि पऱ्ऱ, निरऱ्ऱुऱु पल्पऱ वैक्कुलम् यावुम्
उरऱ्ऱित विण्णि नॊलित्तॆऴुम् वण्णम्, अरऱ्ऱि यॆऴुन्द दडङ्ग विलङ्गै 2798

परल् तुऱु–कंकड़ों से भरे; पल् पऴुवत्तु–अनेक जंगलों में; ऍरि पऱ्ऱ–आग लगने पर; निरल् तुऱु–समूहों में रहनेवाले; पल् पऱवै कुलम्–अनेक पक्षीगण; यावुम् अऱ्ऱित–सभी चहचहा उठे; विण्णिल्–आकाश में; ऑलित्तु ऍऴुम् वण्णम्–शोर करते उठे, वैसे ही; इलङ्कै–लंकावासी; अटङ्क–सभी; अरऱ्ऱि–चिल्लाते हुए; ऍऴुन्त–उठे। २७९८

अनेक कंकड़ीले जंगलों में जब आग लग जाती है, तब पेड़ों पर रहनेवाले पक्षी चीखते-चिल्लाते आकाश में उड़ते हैं। उसी तरह सभी लंका-वासी हो-हल्ला मचाते हुए उठे और चले। २७९८

मूवुल हत्तव रुम्मुद लोरुम्, एवल् वलत्तॊऴिल् वीर निरामन्
दीव मॆनच्चिल वाळि शॆलुत्तक्, कोवुर मुऱ्ऱुम् विऴुन्दडु कुन्ऱिन् 2799

मू उलकत्तवरुम्–तीनों लोकों के लोगों को; मुतलोरुम्–आदिदेवों को; एवल्–आज्ञा दे सकनेवाले; वल तॊऴिल्–सबल कार्यकारी; वीरन् इरामन्–वीर श्रीराम के; तीवम् ऍन–दीप के समान; चिल वाळि चॆलुत्त–कुछ बाण चलाते; कोवुरम् मुऱ्ऱुम्–सारे गोपुर; कुन्ऱिन् विऴुन्ततु–(टूटकर) पर्वत पर गिरे। २७९९

तब श्रीराम ने, त्रिलोकवासी तथा त्रिदेव जिनकी आज्ञा के वल के अधीन हैं, दीप के समान अस्त्र चलाये और उनसे आहत होकर सारे गोपुर (मीनारें) पर्वत पर गिर गये। २७९९

इत्तलै यिन्न निहऴ्न्दिडु मॆल्लैक्, कैत्तलै यिऱ्कॊडु कालि नॆऴुन्दान्
उय्त्त पॆरुङ्गिरि मेरुवि नुप्पाल्, वैत्त नॆडुन्दहै मारुदि वन्दान् 2800

इ तलै–यहाँ; इन्न–ऐसे कार्य; निकऴ्न्तिडुम् ऍल्लै–जब हो रहे थे तब;

उयत्त पॅरुम् किरि–लाये गये बड़े पर्वत को; कै तलैयित् कोंडु–हाथ में ले; कालित्–पवन के समान; ॲंळुन्ताऩ्–जो उठा था और; मेरुवित् उप्पाल्–मेरु के उस पार; वैत्त–रख आया था; नेंटु तकै मारुति–वह सुयोग्य मारुति; वन्ताऩ्–लौट आया। २८००

इधर यह सब हो रहा था। तभी सुयोग्य हनुमान, जो आनीत ओषधि-पर्वत को उसके स्थान पर छोड़ने गया था, मेरु के भी आगे उसे स्थापित करके लौट आया। २८००

अर्रैयर वक्कळऩ् मारुदि यार्त्ताऩ्, उर्रैयर वज्जिरै युर्रुळ दव्वूर्
शिर्रैयर वक्कलु ळत्गोंडु शीरुम्, इर्रैयर वक्कुल मोत्त दिलङ्गै 2801

अर्रै अरवम्–शब्द करनेवाली; कळल् मारुति–पायलधारी मारुति ने; आर्त्ताऩ्–उत्साह का नाद उठाया; अ ऊर्–उस नगर ने; उर्रै अरवम्–घने नर्दन को; चिर्रै उर्रुळवु–अपने में समा लिया; इलङ्कै–लंका; चिर्रै–अपने पंखों से; कोंटु–पकड़ा जाकर; चीरुम्–जो अरवम् कलुळत्–शब्द करनेवाले गरुड़ द्वारा; अरवम् कुलम् ओत्तदु–सर्पवृन्द के समान फूत्कार करता है उस; इर्रै–अस्त-व्यस्त; लगी। २८०१

शब्द करनेवाली पायलधारी मारुति ने लंका के पास आते ही ज़ोर से नर्दन किया। लंका ने उस शब्द को अपने में समा लिया। तब लंका नगरी पंखों से शब्द उठानेवाले गरुड़ से पकड़े जाकर फूत्कार करते हुए अस्त-व्यस्त रहनेवाले सर्प-वृंद के समान थी। २८०१

मेर्रिशै वायिलै मेविय वॅङ्गट्, कार्रिऩ् महऩैत् वन्दु कलन्दाऩ्
मार्रलिऩ् मायै वहुक्कुम् वलत्ताऩ्, कूर्रैयुम् वॅल्लुयर् वट्टणै कोंण्डाऩ् 2802

मेल् तिचै वायिलै–पश्चिमी द्वार पर; मेविय–जो आया; कार्रिऩ् मकऩ् तऩै–उस वायुपुत्र को; मार्रल् इल्–दुर्धर्ष; मायै वकुक्कुम् वलत्ताऩ्–मायाकार्य-समर्थ; कूर्रैयुम् वॅन्र–यम को भी जीतकर; उयर् वट्टणै कोंण्टाऩ्–ऊँचा जो घूम आया वह इन्द्रजित्; वन्तु कलन्ताऩ्–आ मिला। २८०२

वायुपुत्र पश्चिमी द्वार पर आया। तब दुर्धर्ष माया-समर्थ इन्द्रजित् आकर मिला, जो यम को भी जीतकर घूम आया था। २८०२

शानहि यामवहै कोंण्डु शमैत्तोर्, माऩै याळै वडिक्कुळल् पर्र्रि
ऊऩहु वाळोरु कैक्कों डुरुत्ताऩ्, आऩव ऩन्निलै यित्ऩ दरैन्दाऩ् 2803

चाऩकि आम् पकै कोंण्टु–जानकी बने ऐसा एक प्रकार बनाकर; चमैत्तु–निर्मित कर; ओर् माऩ् अऩैयाळै–अपूर्व उस हरिणी-सी स्त्री को; वटि कुळल् पर्र्रि–शहद चूनेवाले केश से पकड़कर; ऊऩ् नकु–मांसलिप्त; वाळ्–तलवार; ओरु कै कोंटु–एक हाथ में लेकर; उरुत्ताऩ् आऩवऩ्–क्रुद्ध उसने; अ निलै–उस स्थिति में; इऩ्ऩतु–यह; अरैन्ताऩ्–कहा। २८०३

इन्द्रजित् ने माया से जानकी का-सा रूप रखनेवाली एक स्त्री का

निर्माण किया था। एक हाथ से मृगी-सी उसके केश को पकड़कर दूसरे हाथ में मांसलिप्त तलवार लिये हुए वह क्रोधी बनकर यों बोला। २८०३

वन्दिवळ् कारण माह् मलैन्दीर्, ऍन्दै यिहळ्न्दन नियातिव ळावि
शिन्दुव लॅन्रु शॅऱ्ऱुत्तुरै शॅय्दान्, अन्दमिल् मारुदि यञ्जि ययर्न्दान् 2804

इवळ् कारणमाक–इसके कारण; **वन्तु**–यहाँ आकर; **मलैन्तीर्**–युद्ध किया (तुम लोगों ने); **ऍन्तै इकळ्न्ततन्**–मेरे पिता असावधान रह गये; **इवळ् आवि**–इसके प्राण; **यान् चिन्तुवन्**–मैं निकाल दूँगा; **ऍन्रु**–ऐसा; **चॅऱ्ऱुत्तु**–क्रोध करके; **उरै चॅय्तान्**–वचन कहा; **अन्तम् इल् मारुति**–अमर मारुति; **अञ्चि**–डरकर; **अयर्न्तान्**–निर्बल हो गया। २८०४

(उसने हनुमान से कहा—) इसी के निमित्त तुम लोग आये और लड़े। मेरे पिता उदासीन रह गये। मैं इसके प्राण निकाल दूँगा। यह इन्द्रजित् का क्रुद्ध वचन सुनकर चिरंजीव हनुमान दहल गया, निर्बल हो गया। २८०४

कण्डव ळेयिव ळॅन्बदु कण्डान्, विण्डदु पोलुनम् वाळ्वॅन वॅन्दान्
कॊण्डिडत् तीर्वदोर् कोळऱि हिल्लान्, उण्डु यिरोवॅन वायु मुलर्न्दान् 2805

इवळ्–यह; **कण्टवळे**–वही है जिसे मैंने पहले देखा था; **ऍन्पतु कण्टान्**–यह जाना; **नम् वाळ्वु**–हमारा जीवन; **विण्टतु पोलुम्**–अन्त को आ गया शायद; **ऍन**–सोचकर; **वॅन्तान्**–उत्तप्त हो गया; **इटै कॊण्टु तीर्वतु**–यह मध्य में आयी बाधा ले चलने का; **ओर् कोळ्**–कोई उपाय; **अऱिकिल्लान्**–न जान सका; **उयिर् उण्टो ऍन**–जान भी है क्या ऐसा संशय पैदा हुआ और; **वायुम् उलर्न्तान्**–मुख-सूखा हो गया। २८०५

हनुमान ने यह सोच लिया कि यही सीता हैं, जिनसे मैं अशोक वन में मिला था। उसे अपार दुःख हुआ कि हमारे जीवन का अंत हो गया। इस बाधा का कैसे निवारण हो? कोई उपाय नहीं सूझा। उसका मुख सूख गया। यह संशय भी हो गया कि क्या वह जीवित है?। २८०५

यादु मिनिच्चॅयल् वेऱिलै यन्नाल्, नीदि युरैप्पदु नेरॅन वोराक्
कोदिल् कुलत्तोरु नीकुण मिक्काय्, मादै यॊऱुत्तल् वशैत्तिऱ मन्ऱो 2806

इति–अब; **ऍन्नाल् चॅयल्**–मुझसे काम; **वेऱु यातुम् इल्लै**–दूसरा कोई नहीं; **नीति उरैप्पतु**–न्याय-वाद करना; **नेर्**–उचित है; **ऍन**–ऐसा; **ओरा**–विवेक करके; **कोतु इल् कुलत्तु**–अकलंक कुल के; **ऒरु नी**–अनुपम तुम; **कुणम् मिक्काय्**–गुण में बढ़े हो; **मातै ऒऱुत्तल्**–स्त्री की हत्या करना; **वचै तिऱम् अन्ऱो**–निंद्य होगा नहीं क्या। २८०६

(हनुमान ने सोचा—) अब मुझसे हो, ऐसा कोई कार्य नहीं। उसे न्याय समझाऊँगा। यह सोचकर उसने इन्द्रजित् से कहा कि तुम अकलंक

ब्राह्मण-कुल में जनमे हो ! उत्तम हो ! गुणी हो ! स्त्री-वध क्या पाप नहीं होगा ? । २८०६

नान्मुह नुक्कोरु नाल्वरिन् वन्दाय्, नून्मुह मुऱ्ऱु नुणङ्ग वुणर्न्दाय्
पान्मुह मुऱ्ऱ पॅरुम्बऴि यन्ऱो, मान्मुह मुऱ्ऱोरु मादै वदैत्ताल् 2807

नान् मुकत्तुक्कु–चतुर्मुख के; ऑरु नाल्वरिन् वन्ताय्–चौथी पीढ़ी में आये हो; नूल्मुकम् मुऱ्ऱन्–शास्त्र-विशेष सब; नुणङ्क उणर्न्ताय्–सूक्ष्म रीति से जानते हो; मान् मुकम् उऱ्ऱ–मृगमुखी (नयना); ऑरु मातै–एक स्त्री को; वतैत्ताल्–मारो तो; पाल् मुकम् उऱ्ऱ–बुरी श्रेणी में रखे; पॅरुम् पऴि अन्ऱो–बड़े कलंकों में एक नहीं होगा क्या । २८०७

चतुर्मुख से चौथी पीढ़ी में हो । श्रेष्ठ शास्त्रों के प्रमुख अंशों के सूक्ष्म ज्ञाता हो ! मृगनयना को मारो तो बुरे से बुरे पापों में बड़ा पाप लगेगा नहीं क्या ? । २८०७

ऍन्वयि नल्हित्तै येहित्तै यॅन्ऱाल्, निन्वय मामुल हियावैयु नीनिन्
अन्वय मेदु मऱिन्दिलै यैया, पुन्मै तॉडङ्गल् पुहऴ्क्कऴि वॅन्ऱान् 2808

ऐया–बाबा; ऍन् वयिन् नल्कित्तै–मेरे पास देकर; एकित्तै ऍन्ऱाल्–जाओ तो; उलकु यावैयुम्–सारे लोक; निन् वयम् आम्–तुम्हारे वश में हो जायँगे; नी–तुम; निन् अन्वयम्–अपना वंशक्रम; एतुम् अऱिन्तिलै–कुछ नहीं जानते; पुन्मै तॉटक्कल्–क्षुद्रता आरम्भ करना; पुकऴ्क्कु अऴिवु–यश का नाश है; ऍन्ऱात्–कहा (हनुमान ने) । २८०८

बाबा ! मेरे पास दो और चले जाओ, तो सारे लोक तुम्हारे अधीन हो जायँगे । तुम अपने वंश का गौरव नहीं समझते ! यह क्षुद्र काम का आरम्भ करो तो अपने यश को मिटाना होगा । हनुमान यों बोला । २८०८

मण्गुलै हिन्ऱदु वान नडुङ्गिक्, कण्गुलै हिन्ऱदु काणुदि कण्णाल्
ऍण्गुलै हिन्ऱ दिरङ्ग तुऱन्दाय्, पॅण्गॉलै शॅय्दल् पॅरुम्बऴि यन्ऱो 2809

मण् कुलैकिन्ऱतु–पृथ्वी काँपती है; वानम्–देवलोक; नडुङ्कि–दहलकर; कण् कुलैकिन्ऱतु–आँखें फड़काता है; कण्णाल्–अपनी आँखों से; काणुति–देख लो; ऍण्–मेरा चिन्तन भी; कुलैकिन्ऱतु–काँपता है; इरक्कल् तुऱन्ताय्–दया छोड़ चुके हो; पॅण् कॉलै चॅय्तल्–स्त्री-हत्या करना; पॅरु पऴि अन्ऱो–बड़ा पाप होगा न । २८०९

(वह आगे बोला—) पृथ्वी काँपती है । व्योमलोकवासी डरते हैं और उनकी आँखें भयचंचल हैं । देखो अपनी आँखों से । मेरा भी मन काँपता है । दया छोड़ चुके हो । स्त्री-हत्या परम पाप नहीं है क्या ? । २८०९

ऍन्दैयु मिन्द विलङ्गैयु ळोरुम्, उय्न्दिड वानव रियावरु मोडच्
चिन्दुवॅन् वाळिनि लॅन्ऱु शॅयिर्त्तान्, इन्दिर शित्तव निन्न विशैत्तान् 2810

इन्तिरचित्तु अवन्–इन्द्रजित् ने; ऍन्तैयुम्–मेरे पिता और; इन्त इलङ्कै युळोरुम्–और यह लंकावासी; उय्न्तिट–पनपें; वानवर् यावरुम्–सभी देव; ओट–भाग जायें; वाळिनिल्–ऐसा अपनी तलवार से; चिन्तुवेन्–मार डालूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; चॅयिर्त्तान्–कोप करके; इन्न इचैत्तान्–ये बातें कहीं। २८१०

इन्द्रजित् ने उत्तर यों दिया— अपने पिता तथा लंकावासियों को सुखी जीवन दिलाने और देवों को भगाने के लिए मैं तलवार से इसका वध करूँगा ही। क्रुद्ध हो वह आगे यों बोला। २८१०

पोमि नडाविवळ् पोयिनळ् पोलाम्, आमॅनि लिन्नु मयोत्तियै यण्मिक्
कामिन दितुरु कनऱ्करि याह, वेमवु शॅय्दिनि मीळ्हुवॅ नॆन्ऱान् 2811

अटा–रे बन्दरो; इघळ् पोयिनळ् पोलाम्–यह मरी ही समझो; आम् ऍनिल्–हो सके तो; इन्नुम्–अब भी; अयोत्तियै अण्मि–अयोध्या में जाकर; कामिन्–रक्षा कर लो; अतु–वह; इन्ऱु–आज; कनल् करि आक–जलकर राख बनें ऐसा; वेम् अतु–जलाने का काम; चॅय्तु–करके; इनि–अभी; मीळ्कुवॅन्–लौट आऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। २८११

इन्द्रजित् ने वानरों से कहा कि रे वानरो! इसे मरा ही समझो! हो सके तो जाकर अयोध्या की रक्षा का प्रयत्न करो। मैं अभी जाकर उसे जलाकर राख बना आनेवाला हूँ। २८११

तम्बियर् तम्मॊडु तायरु मायोर्, उम्बर् विलक्किडु नुम्मिनि युय्यार्
वॅम्बु शुडुङ्गनल् वीशिडु मॆन्गै, अम्बुह ळोडु मविन्दन रम्मा 2812

तम्पियर् तम्मॊटु–छोटे भाइयों के साथ; तायरुम् आयोर्–और माताएँ जो हैं; उम्पर् विलक्किटिनुम्–देवता लोग रोकें तो भी; इनि–अब; उय्यार्–जीवित नहीं बचेंगे; वॅम्पु चुटु कनल्–भयंकर, जलानेवाली आग को; वीचिटुम्–फेंकनेवाले; ऍन् कै अम्पुकळोटुम्–मेरे हाथ के शरों से; अविन्तनर्–मरे जान लो। २८१२

राम के छोटे भाई, उसकी माताएँ, इनमें कोई भी देवों के दखल देने पर भी जीवित नहीं रहेगा। वे मेरे हाथ के संतापक क्रूर अग्निवर्षक बाणों से निश्चय मरेंगे। २८१२

इप्पॊळु देकडि देहुव नियानिप्, पुट्पह मान मदिऱ्पुह निन्ऱेन्
तप्पुव रेयवर् तामिनि यॆन्गै, वॆप्पुरु वाळिह ळिन्ऱु विरैन्दाल् 2813

इप्पॊळुते–अभी; यान्–मैं; इ पुट्पक मानम् अतिल्–इस पुष्पकयान में; पुक निन्ऱेन्–चढ़ने को तैयार हूँ; कटितु–जल्दी; एकुवन्–चलूँगा; ऍन् कै–मेरे हाथ से; वॆप्पु उरु वाळिकळ्–गरम बाण; इन्ऱु विरैन्ताल्–आज तेज जायेंगे तो; इनि–फिर; अवर् ताम्–वे क्या; तप्पुवरे–बचेंगे क्या। २८१३

इसी क्षण मैं इस पुष्पक यान पर सवार होनेवाला हूँ। जल्दी

जाऊँगा। मेरे हाथ से जब गरम बाण उनकी ओर शीघ्र जायँगे, तो वे क्या बच सकेंगे ? । २८१३

आळुडै यायरु ळायरु ळायॅन्, ऱॆळै वळङ्गुरु शॊल्लि तिरङ्गात्
वाळि तॆरिन्दतन् माहडल् पोलुम्, नीळुरु शेनैयि नॊडु निमिर्न्दान् 2814

आळुडैयाय्–स्वामीत्व रखनेवाले (स्वामी); अरुळाय्–दया करो; ऍन्ऱु–ऐसा; एळै–अबला; वळङ्कु उरु–जो कह रही थी; चॊल्लिन्–उन शब्दों से भी; इरङ्कात्–आर्द्र न हुआ; वाळिन्–तलवार से; ऍरिन्तनन्–वार करके; मा कटल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; नीळ् उरु चेनैयिनॊटुम्–बड़ी सेना के साथ; निमिर्न्तान्–यान पर चढ़ गया। २८१४

तब अबला (माया-) सीता ने विलापा। मेरे स्वामी ! मुझ पर दया करो। पर उसने सीता के विलापवचन पर दया न दिखाकर तलवार से उसे काट दिया। फिर वह काले सागर-सम अपनी विशाल सेना के साथ यान पर चढ़ गया। २८१४

तॆन्ऱिशै निन्ऱु वडादु तिशैक्कण्, पॊन्ऱिहळ् पुट्पह मेल्कॊडु पोनान्
ऑन्ऱु मुणर्न्दिलन् मारुदि युक्कान्, वॆन्ऱि नॆडुङ्गिरि पोल विळुन्दान् 2815

तॆन् तिचै निन्ऱु–दक्षिणी दिशा से; वटातु तिचैक्कण्–उत्तरी दिशा की ओर; पॊन् तिकळ्–स्वर्णशोभित; पुट्पकम् मेल् कॊटु–पुष्पकयान पर सवार होकर; पोतान्–गया; मारुति–मारुति; ऑन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–कुछ समझ नहीं सका; उक्कान्–घुलकर; वॆन्ऱि नॆटु किरि पोल्–विजय की बड़ी गिरि के समान; विळुन्तान्–गिरा। २८१५

स्वर्णशोभित वह यान दक्षिण से उत्तर की ओर चलने लग गया, तो मारुति कुछ नहीं समझ सका। वह जर्जर हो गया। बड़ी विजयगिरि के समान नीचे गिर गया। २८१५

पोयवन् माऱि निहुम्बिलै पुक्कान्, तूयव नॆञ्जु तुयर्न्दु शुरुण्डान्
ओय्वॊडु नॆञ्ज मॊडुङ्ग वुलर्न्दान्, आयिन नित्तन पन्नि यळिन्दान् 2816

पोयवन्–जो गया; माऱि–बदलकर; निकुम्पिलै पुक्कान्–निकुंभिला गया; तूयवन्–पवित्रमन; नॆञ्चु तुयर्न्तु–चिन्ताग्रस्त हो; चुरुण्टान्–विगत-बल हो गया; नॆञ्चम्–मन; ओय्वॊटु ऑटुक्क–थक गया, क्षीण हो गया; उलर्न्तान् आयितन्–सूख-सा गया; इत्तन–(निम्नोक्त) ऐसा-ऐसा; पन्नि–कहकर; अळिन्तान्–श्लथ हुआ। २८१६

उधर इन्द्रजित् मार्ग बदलकर निकुंभिला गया। इधर पवित्रमन हनुमान चिन्ताग्रस्त होकर श्लथ हो गया। मन थकित हुआ, संकुचित हुआ और वह सूख-सा गया। तब वह ऐसा-ऐसा कहकर विलाप करने लगा। २८१६

अन्नमे यॅन्नुम् बॅण्णि नरुङ्गुलक् कलमे यॅन्नुम्
ॲन्नमे यॅन्नुन् दॅय्व मिल्लैयो याबु मॅन्नुम्
शिन्नमे शॅय्यक् कण्डुन् दीविनै नॅञ्ज मावि
पिन्नमे याव दिल्लै यॅन्नुम्बे राट्रल् पेरन्दान् 2817

पेर् आट्रल्–बड़ा धैर्य; पेरन्दान्–खोकर जो रहा वह हनुमान; अन्नमे–हंस; ॲन्नुम्–पुकारता; ॲन् अम्मे–मेरी माता; ॲन्नुम्–बुलाता; पॅण्णिन् अरु कुल कलमे–स्त्री-जाति के हे अमूल्य आभरण; ॲन्नुम्–कहता; तॅय्वम्–देव; यावुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ॲन्नुम्–कहता; चिन्नमे चॅय्य कण्टुम्–छिन्न करते देखकर भी; तीविनै नॅञ्चम्–पापी (मेरा) मन; आवि–और प्राण; पिन्नमे आयतु इल्लै–टूटे ही नहीं; ॲन्नुम्–कहता। २८१७

अपना गंभीर धैर्य खो चुका हनुमान कभी 'हे हंस !' सम्बोधित करता; कभी 'मेरी माँ' चिल्लाता। हे स्त्रीकुलभूषण! पुकारता। क्या कोई देव नहीं रहा ? हाय मैंने आपको छिन्न होते देखा, तो भी पापी मेरा मन और मेरे प्राण टूटे नहीं। ऐसा शोक-वचन कहता। २८१७

ॲऴुन्दवन् मेले पाय वॅण्णुम्बे रिडरिर् रळ्ळि
विऴुन्दुवॅय् दुयिर्त्तु विम्मि वीङ्गुम्बोय् मॅलियुम् वॅन्दीक्
कॉऴुन्दुह वुयिर्क्कु मियाक्कै कुलैवुरुन् दलैये कॉण्डुर्
रुऴुन्दरै तन्नैप् पित्तु मित्तैयन वुरैप्प दानान् 2818

अवन्–वह; ॲऴुन्तु–उठकर; मेले पाय–ऊपर झपटने को; ॲण्णुम्–सोचता; पेर् इटरिल्–बड़े संकट में; तळ्ळि–ढकेला जाकर; विऴुन्तु–गिरकर; वॅय्तु उयिर्त्तु–गरम निःश्वास छोड़कर; विम्मि–सिसकता; वीङ्कुम्–फूल जाता; पोय् मॅलियुम्–जाकर कृश बनता; वॅम् ती कॉऴुन्तु–गरम अग्नि-ज्वाला; उक–निकले ऐसा; उयिर्क्कुम्–साँसें छोड़ता; याक्कै–शरीर; कुलैवु उरुम्–कंपायमान होता; तरै तन्नै–भूमि को; तलैये कॉण्टु–अपने सिर से ही; उऴ्ऴ्ऴुम्–जोत देता; पित्तुम्–फिर; इत्तैयन–ये वचन; उरैप्पतानान्–कहने लगा। २८१८

वह उठकर ऊपर झपटना चाहता! बड़े ही दुःख के साथ गिरकर गरम साँसें छोड़ता। सिसकता, फूलता, कृश होता। श्वास छोड़ता तो आग की ज्वाला भभकती। उसका शरीर काँप गया। भूमि को अपने सिर से जोतता। और यों कहता :। २८१८

मुडिन्ददु नन्द मॅण्ण मूवुल हिर्कुङ् गङ्गुल्
विडिन्ददॅन् रिरुन्दैन् मीळ वॅन्दुय रिरुळिन् वॅळ्ळम्
पडिन्ददु विन्नैयच् चॅय्है पयन्ददु पावि वाळाल्
तडिन्ददन् रिरुवै यन्दो तविर्न्ददु तरुम मम्मा 2819

नम्तम् ॲण्णम्–हमारा मंशा; मुटिन्ततु–पूरा हुआ; मूवुलकिर्कुम्–तीनों लोकों के लिए; कङ्कुल्–रात; विटिन्ततु–प्रभात में आ गयी; ॲन्रु इरुन्तेन्–

ऐसा सोचता रहा; वॅम् तुयर्–कठोर दुःख के; इरुळित् वॅळ्ळम्–अन्धकार की बाढ़; मीळ पटिन्ततु–फिर छा गयी; वित्तैय चॅय्कै–मायाकृत्य; पयन्ततु–सफल हो गया; अन्तो–हाय; पावि–पापी इन्द्रजित्ने; तिरुवै–लक्ष्मी को; वाळाल्–अपनी तलवार से; तटिन्ततन्–काट दिया; तरुमम् तविर्न्ततु–धर्म च्युत हो गया; अम्मा–आश्चर्य। २८१९

मैंने सोचा था कि मंशा सफल हो गयी और लोकों को प्रभात हो गया। पर गरम दुःख का अंधकार फिर छा गया। माया सफल हो गयी। हाय! पापी ने लक्ष्मी को अपनी तलवार से काट दिया। धर्म टल गया। आश्चर्य माँ! । २८१९

पॅरुञ्जिरैक् कऱ्पि ऩाळैप् पॅण्णिऩैक् कण्मुऩ् कॊल्ल
इरुञ्जिऱ हऱ्ऱ पुट्पो लियादुमॊन् ऱियऱ्ऱ लाऱ्ऱेऩ्
परुञ्जिरै यळुन्दु हिऩ्ऱे नॅम्बिराऩ् ऱेवि पट्ट
अरुञ्जिरै मीट्ट वण्ण मऴहिदु पोलु मम्मा 2820

पॅरु चिरै कऱ्पिताळै–आत्मरक्षा के बड़े साधन रूपी पातिव्रत्यशीला को; पॅण्णितै–स्त्रीलक्षणवती को; कण् मुऩ्–मेरी आँखों के सामने; कॊल्ल–मारते; इरु चिऱकु अऱ्ऱ–दोनों पक्षों से रहित; पुट् पोल्–पक्षी की तरह; यातुम् ऒन्ऱुम्–कोई एक (काम) भी; इयऱ्ऱल् आऱ्ऱेऩ्–कर नहीं सका; परु चिरै–कठोर कारा में; अऴुन्तुकिऩ्ऱेऩ्–फँस रहा हूँ; ऍम्पिराऩ् तेवि–हमारे प्रभु की पत्नी; पट्ट–जिसमें फँसीं; अरु चिरै–उस बन्दीगृह से; मीट्ट वण्णम्–छुड़ाने का यह प्रकार भी; अऴकितु पोलुम्–सुन्दर रहा शायद; अम्मा–माँ, आश्चर्य। २८२०

वह अपने पातिव्रत्य के पहरे में बन्द थीं। वह स्त्रियोचित गुण रखती थीं। इन्द्रजित् ने उन्हें मेरे ही समक्ष मारा और मैं पक्षहीन पक्षी के समान कुछ करने में असमर्थ रह गया। यही हमारे प्रभु की देवी को कठोर कारा से मुक्त कराने की सुन्दर रीति है शायद! । २८२०

पादह वरक्कऩ् ऱॅय्वप् पत्तिऩि तवत्तु ळाळैप्
पेदैयैक् कुलत्तिऩ् वन्द पिऴैप्पिला दाळैप् पॅण्णैच्
चीदैयैत् तिरुवैत् तीण्डिच् चिऱैवैत्त तीयोऩ् ऱेये
कादवुङ् गण्डु निऩ्ऱ करुममे करुणैत् तम्मा 2821

तॅय्व पत्तिऩि–दिव्य पत्नी; तवत्तुळाळै–(पातिव्रत्य-) तपस्विनी को; पेतैयै–अबोध को; कुलत्तिऩ् वन्त–उच्चकुलजाता; पिऴैप्पु इलाताळै–अनिंद्या को; पॅण्णै–नारी को; चीतैयै–सीता को; तिरुवै–श्रीलक्ष्मी को; तीण्टि–स्पर्श करके; चिऱै वैत्त–बन्दीगृह में जिसने रखा था; तीयोऩ्–उस खल के; पातक अरक्कऩ्–पातक राक्षस के; चेये–पुत्र को ही; कातवुम्–मारते; कण्टु–देखकर; निऩ्ऱ–जो चुप खड़ा रहा; करुममे–वही कार्य; करुणैत्तु–करुणायोग्य है; अम्मा–आश्चर्य। २८२१

दिव्यपत्नी, पातिव्रत्य तपस्या में रत, अबोध देवी, उच्चकुलजाता अनिंद्य सीताजी को, श्रीलक्ष्मी को पकड़कर जिसने बंदीगृह में रखा था, उस पातक क्रूर राक्षस के पुत्र ने उन्हें मारा। मैं देखता ही रह गया। वह भी बड़ा करुणाप्रदर्शक कार्य रहा! री मैया! । २८२१

कल्विक्कु निमिर्न्द कीर्त्तिक् काहुत्तन् टूद ताहिच्
चॊल्विक्क वन्दु पोऩ्ऩे ऩोय्विलित् तुयर्शॆय् दारै
वॆल्विक्क वन्ऱु निन्नै मीट्पिक्क वन्ऱु वॆय्दिऱ्
कॊल्विक्क वन्दे ऩन्ऱे कॊडुम्बऴि कूट्टिक् कॊण्डेऩ् 2822

कल्विक्कु निमिर्न्त–(सभी) विद्याओं से परे; कीर्त्ति–यशस्वी; काकुत्तऩ् तूतऩाकि–काकुत्स्थ का दूत बनकर; चॊल्विक्क–वैसा कहलाने के लिए; वन्तु पोऩेऩ्–आया था; ओय्विल्–निरन्तर; इ तुयर् चॆय्तारै–यह दुःख जिन्होंने दिया है; वॆल्विक्क अऩ्ऱु–हराने नहीं; निऩ्ऩै–आपको; मीट्पिक्क अऩ्ऱु–छुड़ाने के लिए भी नहीं; वॆय्तिल्–क्रूरता से; कॊल्विक्क वन्तेऩ् अऩ्ऱे–मरवाने आया था न; कॊटुम् पऴि–भयंकर अपयश; कूट्टिक् कॊण्टेऩ्–अपने लिए बना लिया मैंने। २८२२

सभी विद्याओं से अज्ञेय काकुत्स्थ का दूत कहा गया—यही मेरे इधर आ जाने का प्रयोजन रहा। अब अमिट दुःखदायी राक्षस को जिताने नहीं; आपको (सीताजी को) छुड़ाने नहीं; पर अब बहुत ही निर्मम रूप से आपको मरवाने आया न! बड़ा अपयश कमा लिया। २८२२

वञ्जियै यॆङ्गुङ् गाणा तुयरिऩै मऱन्दा ऩॆन्ऩच्
चॆञ्जिलै युरवोऩ् ऱेडित् तिरिहिन्ऱा ऩुळ्ळन् देऱ
अञ्जॊला ळिरुन्दाळ् कण्डे ऩॆन्ऱया ऩरक्कऩ् कॊल्लत्
तुञ्जिऩा ळॆन्ऱुञ् जॊल्लत् तोऩ्ऱिऩेऩ् ऱोऱ्ऱ मीदाल् 2823

चॆम् चिलै उरवोऩ्–श्रेष्ठ धनुर्धर वीर; वञ्चियै–'वञ्जि' लता-सी आपको; ऎङ्कुम् काणातु–कहीं नहीं देखकर; उयिरिऩै मऱन्तात् ऎऩ्ऩ–प्राणों को ही भूल गये जैसे; तेटि तिरिकिऩ्ऱाऩ्–जो खोजते फिरते थे; उळ्ळम् तेऱ–उनके मन को धैर्य देते हुए; अम् चॊलाळ्–मधुरभाषिणी; इरुन्ताळ्–थीं; कण्टेऩ्–देखा; ऎऩ्ऱ याऩ्–जो कहा था वही मैं; अरक्कऩ् कॊल्ल–राक्षस के मारने से; तुञ्चिताळ्–मर गयीं; ऎऩ्ऱुम् चॊल्ल–यह भी कहूं उसके लिए; तोऩ्ऱिऩेऩ्–पैदा हुआ हूं; तोऱ्ऱम् ईतु–जन्म (का फल) यह है। २८२३

श्रेष्ठ विक्रमी कोदंडपाणी श्रीराम 'वंजी' लता-सी आपको कहीं न देख पाकर अपने ही प्राणों को मानो खोकर खोजते रहे। उनको धीरज देते हुए मैंने कहा था कि देवी जीवित हैं। मैंने अपनी आँखों देखा था। उसी मुझे अब जाकर उनसे कहना पड़ गया कि इन्द्रजित् के मारे वे मर गयीं। इसी को मेरा जन्म हुआ था क्या? । २८२३

अरुङ्गडल् कडन्दिव् वूर यळ्ळॅरि मडुत्तु वॆळ्ळक्
करुङ्गडल् कट्टि मेरुक् कडन्दोरु मरुन्दु काट्टि
कुरङ्गिनि युन्नो डॊप्पा रिल्लॆन्नक् कळिप्पुक् कॊण्डेन्
पॆरुङ्गडऱ् कोट्टत् तेय्वै यॊत्तदॆन् नडिमैप् पॆऱ्ऱि 2824

अरु कटल कटन्तु–अगम सागर पार करके; इ ऊरै–इस नगर में; अळ् ऍरि–घनी आग; मटुत्तु–लगाकर; वॆळ्ळ–जल-भरे; करु कटल्–काले सागर को; कट्टि–(सेतु) बाँधकर; मेरु कटन्तु–मेरु पर्वत पार करके; ओरु मरुन्तु काट्टि–अपूर्व औषध दिखाकर; उन्नोटु ऑप्पार्–तुम्हारी समानता करनेवाले; कुरङ्कु इति इल्–वानर अब नहीं है; ऍन्न–ऐसा लोग कहें, ऐसा; कळिप्पु कॊण्टेन्–मुदित हुआ; ऍन् अटिमै पॆऱ्ऱि–मेरी दासता का गौरव; पॆरु कटल–बड़े सागर में; कोट्टम् तेय्वै ऑत्तत्तु–'कोष्ट' (सुगन्ध पदार्थ) घिसना जैसा हो गया। २८२४

मैंने अलंघ्य सागर लाँघा; इस नगर में आग लगायी। गहरे सागर पर सेतुबंधन करने में सहायता दिलायी। संजीवनी ओषधि लाया। लोगों ने कहा कि तुम-सा कोई दूसरा बंदर नहीं है। मैं उसको सुनकर इतराया। अब स्थिति ऐसी आ गयी कि मेरी दासता का महत्त्व सागर में घिसे 'कोष्ट' (सुगन्ध द्रव्य) की महक के समान हो गया। २८२४

विण्डुनिन् ऱाक्कै शिन्दप् पुल्लुयिर् विट्टि लादेन्
कॊण्डुनिन् ऱानैक् कॊल्लक् कूशिने नॆदिरे कॊल्लक्
कण्डुनिन् ऱेन्मऱ् ऱिन्नुङ् गैहळाऱ् कनिहळ् वॆव्वे
युण्डुनिन् ऱुय्य वल्ले नॆळियनो वोरुव नुळ्ळेन् 2825

विण्टु निन्ऱु–शत्रुता करके; आक्कै उटलै–(देवी के) शरीर को; चिन्त–काटते; पुल् उयिर्–(देखकर) अल्प प्राण; विट्टिलातेन्–जो नहीं छोड़ा वह मैं; कॊण्टु निन्ऱानै–उन्हें जो पकड़े रहा उसे; कॊल्ल कूचिनेन्–मारने से संकोच करता रह गया; ऍतिरे कॊल्ल कण्टुम्–समक्ष मारते देखकर भी; निन्ऱेन्–चुप खड़ा रहा; इन्नुम्–अब भी; कैकळाल्–हाथों से; वॆव् वेऱु कनिकळ् उण्टु–विविध फल (तोड़) खाकर; निन्ऱु–(चिरंजीव) रहकर; उय्य वल्लेन्–जीवित रहनेवाला; ऑरुवन् उळ्ळेन्–एक रहूँगा; ऍळियनो–मैं दीन हूँ क्या। २८२५

शत्रुता दिखाकर इन्द्रजित् ने देवी के शरीर को काटा और मैं देखता रहा। मैंने अपने क्षुद्र प्राणों को छोड़ा नहीं। उन्हें पकड़े जो खड़ा रहा, उसे मारने से भी संकोच करता रहा। मेरे ही समक्ष उसने उन्हें मारा। देखता चुप खड़ा रहा मैं। अब मैं जीवित रहता हूँ। इन अपने हाथों से विविध फल तोड़ खाऊँ और खुशी से बहुत दिन रहूँ! फिर मैं दीन हूँ क्या? । २८२५

ऍन्ननिन् ऱिरङ्गिक् कळ्व नयोत्तिमे लॆळुवॆ नॆन्नुऱ्
ऱोन्नदु मुण्डु पोन शुवडुण्डु तॊडर्न्दु शॆल्लिन्

मऩ्ऩऩिङ् गुऱ्ऱ दऩ्मै युणर्हिलऩ् वरुव दोरेऩ्
पिऩ्ऩिऩि मुडिप्प दियादॆऩ् ऱिरङ्गिऩा ऩुणर्वु पॆऱ्ऱाऩ् 2826

ऎऩ्ऩ–कहकर; निऩ्ऱु इरङ्कि–खड़ा हो दुःखी; कळ्वऩ्–चोर ने; अयोत्ति मेल् ऎऴुवऩ्–अयोध्या पर चढ़ूँगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; चॊऩ्ऩतुम् उण्टु–कहा भी था; पोल चुवटु उण्टु–जाने का आसरा भी है; तॊटर्ऩ्तु चॆल्लिऩ्–पीछा कर जाऊँ तो; इङ्कु उऱ्ऱ तऩ्मै–यहाँ हुए हाल; मऩ्ऩऩ् उणर्किलऩ्–राजाराम नहीं जानेंगे; वरुवतु ओरेऩ्–भविष्य न जान पाता; इऩि–अब; मुटिप्पतु यातु–करना क्या; ऎऩ्ऱु ऎण्णि–ऐसा सोचकर; इरङ्किऩाऩ्–दुःखी हुआ; पिऩ्–बाद; उणर्वु पॆऱ्ऱाऩ्–सुधि पायी। २८२६

हनुमान ऐसी बातें कहते हुए दुःखी हो रहा था। "चोर इन्द्रजित् ने 'यह कहा था कि अयोध्या पर चढ़ जाऊँगा'। फिर गया भी; उसका सबूत है। अगर मैं उसका पीछा करके जाऊँ तो यहाँ की घटना को श्रीराजाराम जान नहीं पायेंगे। अब क्या होगा —यह नहीं समझ पाता। और मैं क्या करूँ?" यह सोचकर वह अधिक क्षुब्ध हुआ। फिर धैर्य का अवलम्बन किया। २८२६

उऱ्ऱदै युणर्त्तिप् पिऩ्ऩै युलहुडै यॊरुव ऩोडुम्
इऱ्ऱुऱि ऩिऱ्ऱु माळ्व ऩऩ्ऱॆऩि ऩॆण्ण मॆण्णिच्
चॊऱ्ऱदु शॆय्वऩ् वेऱोर् पिऱिदिलॆऩ् ऱुणिवि दॆऩ्ऩाप्
पॊऱ्ऱडन् दोळाऩ् वीरऩ् पॊऩ्ऩडि मरुङ्गिऱ् पोऩाऩ् 2827

पॊऩ् तटम् तोळाऩ्–विशाल-स्वर्ण-स्कन्ध; उऱ्ऱतै–जो हुआ उसे; उलकुटै ऒरुवऩ्ऩोटुम्–लोकों के स्वामी एक नायक से; उणर्त्ति–कहकर; पिऩ्ऩै–बाद; यातुम्–मैं भी; इऱ्ऱुऱिऩ्–मर सकूँ तो; इऱ्ऱु माळ्वऩ्–प्राणों का अन्त करके मरूँगा; अऩ्ऱु ऎऩिऩ्–नहीं तो; ऎण्णम् ऎण्णि–सोचकर; ऒरु करुत्तै करुति–जो एक बात सोचकर; चॊऱ्ऱतु–कहें उसे; चॆय्वऩ्–करूँगा; वेऱु ओर् पिऱितु इल्–कोई दूसरा करना नहीं; ऎऩ् तुणिवु इतु–मेरा निश्चय यह है; ऎऩ्ऩा–निश्चय करके; वीरऩ्–वीर (श्रीराम) के; पॊऩ्ऩटि मरुङ्किऩ्–श्रीचरण के पास; पोऩाऩ्–गया। २८२७

स्वर्ण-विशाल-स्कंध मारुति ने यह सोचा कि मैं लोकस्वामी श्रीराम के पास जाकर यहाँ जो हुई वह बात बता दूँगा। फिर मर सकूँगा तो मर जाऊँगा। नही तो वे कुछ सोचकर आज्ञा दें तो उसको बजा लाऊँगा। इसके सिवा कुछ नहीं करने को है। यही मेरा निर्णय है। यही संकल्प लेकर वह वीर श्रीराम की शरण में गया। २८२७

शिङ्गवे ऱऩैय वीरऩ् शॆऱिहऴऱ् पादम् जेर्न्दाऩ्
अङ्गमु मऩमुङ् गण्णु मावियु मलक्क ऩुऱ्ऱाऩ्
पॊङ्गिय पॊरुमल् वीङ्गि युयिर्प्पॊडु पुरत्तैप् पोर्प्प
वॆङ्गणी ररुवि शोर मालवरै यॆऩ्ऩ वीऴ्न्दाऩ् 2828

चिङ्क एऱु अत्तैय–नर केसरी-तुल्य; वीरऩ्–वीर के; कळ्ळ् चेरि–पायल से अलंकृत; पातम् चेर्न्तात्–चरणों में जाकर; अङ्कमुम् मतमुम्–अंग, मन; कण्णुम् आवियुम्–आँखें और प्राण; अलक्कण् उऱ्ऱात्–विह्वल होकर; पोङ्किय पोरुमल्–उमगते दुःख के; उयिर्प्पोटु–निःश्वास के साथ; वीङ्कि–बढ़कर; पुरत्तै–शरीर को; पोर्प्प–वश में कर लेते; वॆम् कण् नीर् अरुवि–गरम अश्रुनदी के; चोर–बहते; माल् वरै ॲत्त–बड़े पर्वत के समान; वीऴ्न्तात्–गिरा। २८२८

नरसिंह-तुल्य श्रीवीरराघव के पायलधारी चरणों पर जाकर मारुति बड़े पर्वत के समान गिरा। उसके अंग-अंग, मन, आँखें और प्राण सभी दुःख से भरे रहे। उमगता दुःख निःश्वास के साथ बढ़ता गया, और सारे शरीर को आक्रांत कर गया। उसकी आँखों से गरम अश्रुनदी बह रही थी। २८२८

वीऴ्न्दवऩ् ऱन्नै वीरऩ् विळैन्ददु विळम्बु हॆन्ऩात्
ताऴ्न्दिरु दडक्कै पऱ्ऱि यॆडुक्कवुम् दरिक्क लादात्
आऴ्न्दॆऴु दुऩ्बत् ताळै यरक्कऩ्शे यियिल्हॊळ् वाळाल्
पोऴ्न्दऩ ऩॆऩ्ऩक् कूऱिप् पुरण्डऩऩ् पॊरुमु हिऩ्ऱात् 2829

वीरऩ्–वीर श्रीराम ने; ताऴ्न्तु–झुककर; वीऴ्न्तवऩ् तऩ्ऩै–गिरे हुए हनुमान को; इरु तट कै पऱ्ऱि–दोनों बड़े हाथों को पकड़कर; विळैन्तु विळम्पुक–जो हुआ वह कहो; ॲन्ऩा–पूछा तो; ॲटुक्कवुम्–उठाने पर; तरिक्कलातात्–अधीर (हनुमान); आऴ्न्तु ॲऴु–गहरे हो उठे; तुऩ्पत्ताळै–दुःख में मग्न सीताजी को; अरक्कऩ् चेय्–राक्षसपुत्र ने; अयिल् कॊळ् वाळाल्–धारवार तलवार से; पोऴ्न्तऩऩ्–काट दिया; ॲन्ऩ–ऐसा; कूऱि–कहकर; पुरण्टऩऩ्–लोटने लगा; पॊरुमुकिऩ्ऱात्–बिलखता रहा। २८२९

श्रीराम ने झुककर भूमि पर पड़े रहे उसके दोनों हाथ पकड़कर पूछा कि क्या हुआ? बतलाओ। उठाने पर असह्य वेदना से पीड़ित हनुमान ने निवेदन किया कि गम्भीर-दुःख-मग्न देवी को रावण-पुत्र ने तीक्ष्ण तलवार से काट दिया। यह कहकर वह भूमि पर दुःख से विह्वल होकर लोटा। २८२९

तुडित्तिल नुयिर्प्पु मिल्ल निमैत्तिलऩ् ऱुळ्ळिक् कण्णीर्
पॊडित्तिल ऩियादु मॊऩ्ऱुम् बुहऩ्ऱिलऩ् पॊरुमि युळ्ळम्
वॆडित्तिलऩ् विम्मिप् पारिऩ् वीऴ्न्दिलऩ् वियर्त्तलऩ् ऩल्लऩ्
अडत्तुळ दुऩ्ब मियावु मऱिन्दिल रमर रेयुम् 2830

तुटित्तिलऩ्–(श्रीराम) छटपटाये नहीं; उयिर्प्पुम् इल्लऩ्–श्वासहीन हो गये; इमैत्तिलऩ्–पलक न मारी; कण्णीर् तुळ्ळि पॊटित्तिलऩ्–आँसू की बूँदें न निकालीं; यातुम् ऑऩ्ऱुम्–कुछ भी; पुकऩ्ऱिलऩ्–नहीं बोले; उळ्ळम् पॊरुमि–मन दुःख से भरकर; वॆटित्तिलऩ्–फूटे नहीं; विम्मि–सिसककर; पारिऩ् वीऴ्न्तिलऩ्–भूमि पर गिरे नहीं; वियर्त्ताऩ् अल्लऩ्–स्वेदयुक्त हुए नहीं; अटत्तु उळ तुऩ्पम् यावुम्–

उन पर जो बीते वे सारे दुःख; अमररेयुम्–देव भी; अऱिन्तिलर्–नहीं जान पाये। २८३०

यह सुनते ही श्रीराम की विचित्र हालत हो गयी। वे नहीं छटपटाये। साँस बन्द-सी हो गयी। पलकें नहीं गिरीं। अश्रु झलक नहीं आये। बोल नहीं फूटे। मन दुःख से भरकर फूटा नहीं। सिसक कर भूमि पर नहीं गिरे। शरीर पर पसीना भी नहीं आया। उनके दुःख को पूर्ण रूप से देव भी नहीं जान सके। २८३०

शॊऱ्ऱदु केट्ट लोडुन् दुणुक्कुऱ वुणर्वु शोर
नऱ्पॆरु वाडै युऱ्ऱ मरङ्गळि तडुक्क मॆय्दाक्
कऱ्पह मतैय वळ्ळल् कऴुङ्गऴऱ् कमलक् कान्मेल्
वॆऱ्पिन मॆन्न वीऴ्न्दार् वातर वीर रॆल्लाम् 2831

वातर वीरर् ऎल्लाम्–सभी वानर वीर; चॊऱ्ऱतु–कहा; केट्टलोटुम्–सुनते ही; तुणुक्कु उऱ–ठिठक गये; उणर्वु चोर–सुधि खो गयी; नल् पॆरु वाटै उऱ्ऱ–अच्छी उत्र उदीची हवा के झोंके में; मरक्कळित्–तरुओं की तरह; नटुक्कम् ऎय्ता–कंपन पाकर; कऱ्पकम् अत्तैय वळ्ळल्–कल्पतरु के समान उदार प्रभु के; कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी; कमल काल् मेल्–कमल-चरणों में; वॆऱ्पु इतम् ऎन्त–पर्वत-समूह के समान; वीऴ्न्तार्–गिरे। २८३१

वानर वीरों ने ज्योंही श्रीराम से कही हुई बात सुनी, त्योंही वे भौचक हो गये। उनकी सुधि खो गयी। प्रवल उदीची हवा के झोंकों से जैसे तरु हिल जाते है, वैसे ही वे भी काँप उठे और सुदृढ़ पायलधारी श्रीराम के कमल-चरण में पर्वतसमूहवत् गिरे। २८३१

चित्तिरत् तन्मै युऱ्ऱ शेवह तुणर्वु तीर्न्दान्
वित्तहर् वदन नोक्का निळैयवन् विनवप् पेशान्
पित्तरु मिऱैपॊऱा दाद पेरबि मान मॆन्नुम्
शत्तिर मार्बिऱ् ऱैक्क वुयिरिल नॆन्नच् चाय्न्दान् 2832

चित्तिरम् तन्मै उऱ्ऱ–चित्र की-सी (निस्पन्द) हालत में जो आये; चेवकन्–वे वीर श्रीराम; उणर्वु तीर्न्तान्–बेहोश हुए; वित्तकर्–बुद्धिमानों का; वततम् नोक्कान्–मुख नहीं देखते; इळैयवन् वितव–छोटे भाई के पूछने पर; पेचान्–कुछ नहीं बोलते; पित्तरम्–पागल भी; इऱै–थोड़ा ही सही; पॊऱात–जो सह नहीं सकें; पेर् अपिमानम् ऎन्नुम्–बड़ा ममत्व रूपी; चत्तिरम्–अस्त्र; मार्पिल् तैक्क–छाती में लगा इसलिए; उयिरिलन् ऎन्न–निष्प्राण हुए जैसे; चाय्न्तान्–गिर गये। २८३२

तब श्रीराम निस्पन्द तथा प्रज्ञाहीन हुए। विद्वान मित्रों का वदन नहीं देखते; लक्ष्मण के पूछने पर भी उत्तर नहीं देते। पागल भी जिसे

कुछ देर भी नहीं सह सकते, वैसा मान का अस्त्र उनकी छाती में गड़ गया था। अतः प्राणहीन के समान गिरे थे। २८३२

नायहन् इन्नुमै कण्डुन् दमक्कुर्ड़ नाणम् बार्त्तुलुम्
आयिन करुम मीळ वळिवुर्ड़ वदनैप् पार्त्तुलुम्
वायोंडु मननुङ् गण्णु मियाक्कैयु मयर्न्दु शाम्बित्
तायिनै यिळन्द कन्रिड़ इम्बियुन् दलत्त लातान् 2833

तम्पियुम्–छोटे भाई भी; नायकन् तन्नमै कण्टुम्–नायक का हाल देखकर और; तमक्कु उर्ड़–अपने पर लगी; नाणम् पार्त्तुम्–लज्जा का हाल देखकर; आयिन करुमम्–जो अच्छा होने को आया था वह काम; मीळ–फिर; अळिवुर्ड़–बिगड़ गया; अततै पार्त्तुम्–वह हाल देखकर; वायोंटु–मुख और; मननुम्–मन और; कण्णुम्–आँखें; याक्कैयुम्–और शरीर; अयर्न्तु–थक गये; चाम्पि–मुरझा गये; तायिनै इळन्त कन्रिन्–माता को जिसने खो दिया उस बछड़े के समान; तलत्तन् आतान्–भूमि पर गिरे हो गये। २८३३

छोटे भाई पर भी नायक के हाल का प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने पर जो शरमाने की हालत आ गयी उसको सोचा। सिद्ध होता-सा रहा कार्य फिर से बिगड़ गया था। इन सबके प्रभाव से उनका मुख, मन, आँखें और शरीर सभी जर्जर हो गये। वे भी धैर्य खोकर मृत माता गाय के बछड़े के समान भूमि पर पड़े रह गये। २८३३

तॉल्लैय दुणरत् तक्क वीडणन् ऱुळक्क मुर्ड़ान्
ॲल्लॅयि ऱुन्ब मून्ऱ विडैयॊन्ऱुन् दॅरिहि लादान्
वॅल्लवु मरिदु नाश मिवडन्नाल् विळैन्द वॅन्नाक्
कॊल्वदु मडुक्कु मॅन्ऱु मनत्तिनो रैयङ् गॊण्डान् 2834

तॉल्लैयतु–दूर तक; उणर तक्क–जान सकनेवाले; वीटणन्–विभीषण तुळक्कम् उर्ड़ान्–दहल उठा; ॲल्लै इल्–अपार; तुन्पम् ऊन्ऱ–दुःख के होते; इटै ऒन्ऱुम्–कारण कुछ; तॅरिकिलातान्–जो न जानता था; वॅल्लवुम् अरितु–जीतना भी असाध्य है; इवळ् तन्नाल्–इस (सीता) से; नाचम् विळैन्ततु–नाश हुआ; ॲन्ना–सोचकर; कॊल्वतुम्–(सीता को) मारना भी; अटुक्कुम्–सम्भव भी था; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; मनत्तिन्–मन में; ओर् ऐयम् कॊण्टान्–एक संशय-ग्रस्त हुआ। २८३४

तब दूरदर्शी विभीषण व्यग्र हो उठा। अपार दुःख ने उसके मन को आक्रांत किया। कोई कारण नहीं जान सका। उसके मन में एक संशय उठा कि सीताजी को, इस बात पर झल्लाकर कि श्रीराम-लक्ष्मण को हराना दुस्साध्य है और इसी के कारण राक्षसकुल का नाश हो गया, राक्षस ने मारा हो —यह सम्भव है। २८३४

शीदनीर् मुहत्ति ऩप्पिच् चेवहऩ् मेऩि तीण्डिप्
पोदमुवन् दॅय्दऱ् पाल यावॆयुम् बुरिन्दु पौऩ्ऱ्पूम्
बादमुङ् गैयु मॅय्युम् बऱ्ऱिऩऩ् वरुड लोट्टुम्
वेदमुङ् गाणा वळ्ळल् विऴित्तऩऩ् कण्णै मॅल्ल 2835

चेवकऩ् मुकत्तिऩ्–पराक्रमी (श्रीराम) के मुख पर; चीत नीर् अप्पि–शीतल जल डालकर; मेऩि तीण्टि–शरीर स्पर्श करके; पोतम् वन्तु ऍय्तल् पाल–सुध आये इसके लिए आवश्यक; यावैयुम् पुरिन्तु–सभी (उपचार) करके; पॊऩ्–मनोरम; पूम् पातमुम्–मृदु चरणों; कैयुम् मॅय्युम्–हाथ और शरीर; पऱ्ऱिऩऩ्–दबाकर; वरुटलोट्टुम्–सहलाया तो; वेतमुम् काणा वळ्ळल्–वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु ने; कण्णै–आँखों को; मॅल्ल–धीरे-धीरे; विऴित्तऩऩ्–खोला। २८३५

विभीषण ने विक्रमी श्रीराम के मुख पर शीतल जल छिड़का। शरीर को स्पर्श करके होश लाने के लिए आवश्यक तथा योग्य उपचार किये। सुन्दर मृदु श्रीचरणों, हाथों और शरीर को सहलाया। तो तुरन्त वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु सचेत हुए और उन्होंने धीरे से आँखें खोलीं। २८३५

ऊऱ्ऱुवार् कण्णी रोडु मुळ्ळऴिन् दुऱ्ऱ दॅण्णि
आऱ्ऱुवा ऩल्ल ऩाहि ययर्हिऩ्ऱा ऩॅऩ्ऩुम् मैयऩ्
माऱ्ऱुवा ऩल्लऩ् माऩ मुयिरुह वरुन्दु मॅऩ्ऩात्
तेऱ्ऱुवा निऩैन्दु तम्बि यिवैयिवै शॅप्प लुऱ्ऱाऩ् 2836

ऊऱ्ऱु–बहनेवाली; वार्–लंबी; कण्णीरोटुम्–अश्रुधारा के साथ; उळ् अऴिन्तु–मन नष्ट करके; उऱ्ऱतु ऍण्णि–जो हो गया उसे सोचकर; आऱ्ऱुवाऩ् अल्लऩ् आकि–धीरज न धर सककर; अयर्किऩ्ऱाऩ्–(लक्ष्मण) शिथिल रहे; ऍऩ्ऩुम्–तो भी; ऐयऩ्–श्रीराम; माऩम् माऱ्ऱुवाऩ् अल्लऩ्–अपना मान नहीं छोड़ेंगे; उयिर् उक–प्राण निकल जायँ ऐसा; वरुन्तुम्–दुःखी होंगे; ऍऩ्ऩा–सोचकर; तेऱ्ऱुवाऩ् निऩैन्तु–धीरज बँधाना चाहकर; तम्पि–लघु भ्राता; इवै इवै–ऐसे-ऐसे (वचन); चॅप्पल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगे। २८३६

लक्ष्मण की स्थिति भी विकट थी। उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। बीती बातें सोचकर उन्हें असह्य दुःख हो रहा था। वे स्वयं शिथिल थे तो भी उन्होंने सोचा कि प्रभु अपना मान नहीं छोड़ेंगे। रोते-रोते प्राण छोड़ देंगे। उन्होंने उन्हें सांत्वना देना चाहा। इसलिए लघुभ्राता ने निम्नोक्त बातें कहीं। २८३६

मुडियुनाट् टाऩे वन्दु मुऱ्ऱिऩाऱ् ऱुऩ्ब मुन्नीर्
पडियुमाऱ् जिऱियोर् तम्मै निऩक्किदु पऴियिऱ् ऱामाल्
कुडियुमा शुण्ड दॆऩ्ऩि ऩऱत्तॊडु मुलहैक् कॊऩ्ऱु
कडियुमा ऱऩ्ऱिच् चोर्न्दु कऴिदियो करुत्ति लार्बोल् 2837

मुटियुम् नाळ्–विनाशकाल; ताऩे वन्तु मुऱ्ऱिऩाल्–स्वयं आकर पक्व होता है;

तुन्पम् मुन्नीर् पट्टियुमाम्–तो दुःख (रूपी) सागर में मग्न हो जाना; चिरियोर् तन्मै–छोटों का स्वभाव है; इतु–यह; नित्तक्कु पळियिरुरु आम्–आपके लिए अपयश है; कुटियुम्–कुल भी; माचु उण्टतु–कलंकित हो गया; अन्तिन्–तो; अरत्तोटुम् उलकै–धर्म और संसार को; कोन्रु कटियुमारु अन्रि–नाश कर मिटाने के सिवा; करुत्तिलार् पोल्–विवेकहीनों के समान; चोर्न्तु कळितियो–थके रह जायँगे क्या। २८३७

अंत (कष्ट) काल स्वयं आ जाए तो दुःख-सागर में मग्न रहना छोटों का स्वभाव है। पर आपके लिए यह अपयश होगा। कुल पर भी जब धब्बा लग गया, तब धर्म के साथ संसार का भी नाश करना छोड़कर विचार-हीन के समान शिथिल पड़े समय काटेंगे क्या ? । २८३७

तैयलैत् तुणैयि लाळैत् तवत्तियैत् तरुमक् कर्पिन्
तॅय्वदन् दन्नै मर्रुन् रेवियैत् तिरुवैत् तीण्डि
वॅय्यवन् कोन्रा नॅन्राल् वेदनै युळप्प दिन्नम्
उय्यवो करुणै यालो तरुमत्तो डुरवु मुण्डो 2838

तैयलै–अबला को; तुणै इलाळै–निस्सहाय रही देवी को; तवत्तियै–तपस्विनी को; तरुम कर्पिन्–पतिव्रता-धर्म की; तॅय्वतम् तन्नै–देवी को; मर्रु–और; उन् तेवियै–आपकी पत्नी को; तिरुवै–लक्ष्मीदेवी को; तीण्टि–छूकर; वॅय्यवन्–दुष्ट ने; कोन्रान् ॲन्राल्–मारा तो; वेतनै उळप्पतु–(यह सुनकर) दुःख में यंत्रणा पाना; इन्नम् उय्यवो–आगे भी जीने के लिए क्या; करुणैयालो–दया के कारण; तरुमत्तोटु–धर्म से; उरवु उण्टो–अब भी नाता होगा; क्या। २८३८

दुष्ट, क्रूर राक्षस ने एक अबला को, निस्सहाय स्त्री को, तपस्विनी को, धार्मिक पतिव्रता देवी को, और आपकी देवी को, श्री को हाथ से स्पर्श करके मार डाला। यह सुनकर रोते रहें—यह और जीवित रहने के निमित्त है क्या ? या दया के कारण ? या धर्म से अब भी नाता है ? । २८३८

अरक्करॅन् नमरर् तामॅ नन्दणर् तामॅ नन्दक्
कुरुक्कळॅन् मुनिवर् तामॅन् वेदत्तिन् कोळ्है तानॅन्
शॅरुक्किनर् वलिय राहि नॅरिनिन्रार् शिदैव राहिन्
इरुक्कुमि दॅन्ना मिम्मून् रुलहैयु मॅरिम डादे 2839

अरक्कर् ॲन्–राक्षस हुए तो क्या; अमरर् ताम् ॲन्–देव हों तो भी क्या; अन्तणर् ताम् ॲन्–ब्राह्मण हुए तो क्या; अन्त कुरुक्कळ्–वे (मान्य) गुरु; ॲन्–क्या; मुनिवर् ताम् ॲन्–मुनि लोग भी क्या; वेतत्तिन् कोळ्कै तान् ॲन्–वेद-सिद्धान्त क्या; चॅरुक्किनर्–दंभी; वलियर् आकि–बल-प्रदर्शक बने; नॅरि निन्रार्–और धर्मावलम्बी; चितैवार् आकिल्–विनाश पायें तो; इ मून्रु उलकैयुम्–इन तीनों लोकों को; ॲरि मटाते–आग लगाये विना; इरुक्कुम् इतु–रहने की यह प्रवृत्ति; ॲन् आम्–क्या होगी। २८३९

राक्षस क्या, देव भी क्या? ब्राह्मण क्या, मान्य गुरु लोग हों तो क्या? वेदशासन भी रहा तो क्या? शत्रु दम्भी होकर बल पाकर रहें और फलस्वरूप धर्मावलंबी संकटग्रस्त हों तो इन तीनों लोकों में आग लगाए विना चुप_रहना क्या है? । २८३९

मुळुवदे ळुलह मिन्नुम् मुऱैमुऱै शॅय्है मेऱ्ऱूण्
ॲॅळुवदे यमर रिन्नु मिरुप्पदे यऱमुण् डॅन्ऱु
तॊळुवदे मेह मारि शॊरिवदे शोर्न्दु नाम्वीळ्न्
दळुवदे नन्ऱु नन्दम् विऱ्ऱॊळि लाऱ्ऱ लम्मा 2840

एळ् उलकम् मुळुवतुम्–सातों लोक सारे; इन्नुम्–अब भी; मुऱै मुऱै–क्रम से; चॅय्कै मेल्–अपने-अपने कृत्य पर; मीण्टुम्–फिर; ऍळुवते–उठें (शाश्वत रहें); इन्नुम् अमरर् इरुप्पते–अब भी देव रहें; अऱन् उण्टु ऍन्ऱु–धर्म है यह सोचकर; तॊळुवते–वंदना हो; मेकम् मारि चॊरिवते–मेघ-वर्षा हो; नाम्–हम; चोर्न्तु–निर्वल हो; वीळ्न्तु अळुवते–गिरकर रोयें; नम् तम्–हमारे; विल् तॊळिल् आऱ्ऱल्–धनु-कर्म का वल; नन्ऱु–वड़ा अच्छा रहा; अम्मा–शावाश । २८४०

क्या ये सातों लोक अब भी अपने-अपने यथाक्रम कार्य करते रहें? देवों को भी जीने दिया जाय? धर्म का अस्तित्व मानकर उसकी वन्दना हो? मेघ भी वर्षा करते रहें? और हम निर्वल होकर गिरें और रोते रहें? अहा! हमारे धनुकर्म का प्रभाव भी वड़ा अच्छा रहा! मैया । २८४०

पुक्किव्वू रिमैप्पिन् मुन्नम् पॊडिपडुत् तरक्कन् पोन
तिक्कॅलाञ् जुट्टु वानो रुलहॅलाम् दीय्त्तुत् तीर्क्कत्
तक्कनाङ् गण्णी राऱ्ऱित् तलैशुमन् दिरुकै नाऱ्ऱित्
तुक्कमे युळप्प मॅन्ऱाऱ् चिऱुमैयाय्त् तोन्ऱु मन्ऱे 2841

इ ऊर् पुक्कु–इस (लंका) नगर में घुसकर; इमैप्पिन् मुन्नम्–पलक भर की देरी के अन्दर; पॊटि पटुत्तु–खाक वनाकर; अरक्कन् पोन–जिनमें राक्षस गया; तिक्कु ऎलाम्–उन सारी दिशाओं को; चुट्टु–जलाकर; वानोर् उलकॅलाम्–देवों के सभी लोकों को; तीय्त्तु–जलाकर; तीर्क्कत् तक्क–समाप्त करने में शक्य हम; कण्णीर् आऱ्ऱि–आँसू बहाकर; इरु कै–दोनों हाथों को; तलै चुमन्तु–सिर पर ढोकर; नाऱ्ऱि–(सिर) लटकाकर; तुक्कमे उळप्पम्–दुःख ही भोगेंगे; ऍन्ऱाल्–तो; चिऱुमैयाय् तोन्ऱुम् अन्ऱे–लघुता न दिखेगी । २८४१

इस नगर में प्रवेश करके पल भर में खाक बना देंगे। इन्द्रजित् जिन दिशाओं में गया हो उन सभी दिशाओं को जला देंगे। देवलोकों को राख वना देंगे। ऐसा कर सकनेवाले हम आँसू वहाते हुए सिर पर हाथ धरकर सिर को लटकाते हुए दुःख भोगते रहें तो छुटपन नहीं होगा क्या? । २८४१

अङ्गुमिव् वऱमे नोक्कि यरशिळन् दडवि यॅय्दि
मङ्गैये वञ्जन् पऱ्ऱ वरम्बळि यादु वाळ्न्देम्

इङ्गुमित् तुऩ्ब मॆय्दि यिरुत्तुमे लॆळिमै नोक्किप्
पॊङ्गुवत् ऱळैयिर् पूट्टि याट्चॆयप् पुहल्व रन्ऱे 2842

अङ्कुम्–वहाँ (अयोध्या में) भी; इ अऱमे नोक्कि–यही धर्म देखकर; अरचु इऴन्तु–राज्य खोकर; अटवि ऍय्ति–अटवी आकर; नङ्कैयै–देवी को; वञ्चन्–वंचक; पऱ्ऱ–पकड़ ले गया और; वरम्पु अऴियातु–धर्म का उल्लंघन किये विना; वाऴ्न्तेम्–रहे; इङ्कुम्–यहाँ भी; इ तुन्पम् ऍय्ति–यह दुःख पाकर; इरुत्तुमेल्–रह जायँगे तो; ऍळिमै नोक्कि–दैन्य देखकर; पॊङ्कु वन् तळैयिल्–साफ़ दिखनेवाली कठोर हथकड़ियों से; पूट्टि–बाँधकर; आळ् चॆय–दासता करने को; पुकल्वर् अन्ऱे–कहेंगे न। २८४२

अयोध्या में क्या हुआ ? इसी धर्म का विचार करके राज्य खोया। जंगल गये। रावण देवी को ग्रस ले गया। पर हम धर्म का उल्लंघन किये विना रहते रहे ! यहाँ भी वही बात ! दुःख भोगते रहें तो हमारी दीनता देखकर शत्रु लोग हथकड़ी-बेड़ी बनाकर हमें गुलाम नहीं बना लेंगे क्या ? । २८४२

मऩ्ऱलङ् गोदै याळैत् तम्मॆदिर् कॊणर्न्दु वाळिऩ्
कॊऩ्ऱवर् तम्मैक् कॊल्लुङ् गोळिला नाणङ् गूरप्
पॊऩ्ऱिऩ रॆऩ्ब रावि पोक्किनाऱ् पॊदुमै पार्क्किऩ्
अऩ्ऱिदु करुम मॆऩ्ऩो ययर्हिऩ्ऱ दऱिवि लार्पोल् 2843

आवि पोक्किताल्–प्राण छोड़ दें तो; मन्ऱल् अम् कोतैयाळै–सुगन्धपूर्ण केश वाली को; तम् ऍतिर् कॊणर्न्तु–उनके ही समक्ष लाकर; वाळिऩ् कॊऩ्ऱवर् तम्मै–तलवार से काटनेवालों को; कॊल्लुम् कोळ् इला–मारने की शक्ति उनमें जो नहीं थी; नाणम्–उस शरम के; कूर–बढ़ने से; पॊऩ्ऱिऩर्–मरे; ऍऩ्पर्–ऐसा लोक कहेंगे; पॊतुमै पार्क्किऩ्–साधारण धर्म देखें तो; इतु करुमम् अन्ऱु–यह करणीय नहीं; अऱिविलार् पोल्–बुद्धिहीनों के समान; नी–आप; अयर्किन्ऱतु–श्लथ पड़ते हैं; ऍऩ्–क्यों। २८४३

समझिए कि मर गये। तो लोग क्या कहेंगे ? सुगन्धपूर्ण केश वाली पत्नी को उनके ही सामने लाकर जिसने तलवार से काटकर मारा, उस राक्षस के मारने की शक्ति नहीं थी। शरम बढ़ गयी; इसलिए वे मर गये। यही कहेंगे। साधारण रीति से देखें तो यह करणीय नहीं ! बुद्धिहीनों के समान आप दुःख-शिथिल क्यों होते हैं ? । २८४३

अऩैयऩ विळवल् कूऱ वरुक्कऩ्शे ययर्हिऩ् ऱाऩोर्
कऩवकण् डऩऩे यॆऩ्ऩक् कदुमॆऩ वॆऴुन्दु काणुम्
विऩैयिलि युण्डे वल्लै विळक्किऩ्वॊळ् ळिट्टि लॆऩ्ऩ
मऩैयिडै यरक्कऩ् माऱ्बिऱ् कुदित्तुम्नास् वम्मि नॆऩ्ऱान् 2844

इळवल्–लघुराज के; अन्नैयत्त–वैसी बातें; कूड्–कहने पर; अयर्किन्ड्रान्–जो शिथिल था; अरुक्कन् चेय्–अर्कपुत्र; ओर् कनवु–एक स्वप्न; कण्टवर्नै अॅन्न–देखनेवाले के ही समान; कतुम् अॅन–झटिति; अॅळुन्तु–उठकर; वल्लै–जल्दी; विळक्किन् वीळ्–दीप में गिरे; विट्टिल् अॅन्न–पतंग के समान; मन्नै–पत्नी देवी को; इटै–त्रास देनेवाले; अरक्कन्–राक्षस (रावण के); मार्पिल्–वक्ष में; नाम् कुतित्तुम्–हम कूदेंगे; वम्मिन्–आओ; काणुम् वित्तै–सोचने का कार्य; इनि उण्टो–अब होगा क्या; अॅन्ड्रान्–बोला। २८४४

लक्ष्मण की बातों को सुग्रीव ने, जो अशक्त हो पड़ा हुआ था, सुना। तो स्वप्न से जागनेवाले के समान वह झट उठा और बोला। दीप में पतंग के समान हम राक्षस की छाती पर कूदेंगे जिसने हमारे प्रभु की पत्नी को संकट दिया है! आओ सब। फिर कोई अन्य काम है जो हम करें? । २८४४

इलङ्गैयै यिडन्दु वॅङ्ग णिराक्कद रॅन्गिन् ड्रारैप्
पॅलङ्गुळै महळि रोडुम् पालुहर् पुदल्व रोडुम्
कुलङ्गळो डडङ्गक् कौन्ड्र कॉडुन्दॉळिल् कुरित्तु नम्मेल्
विलङ्गुवा रॅन्निन्ड्र् ड्रेवर् विण्णैयु निलत्तु वीळ्त्तुम् 2845

इलङ्कैयै इटन्तु–लंका को उखाड़ लेकर; वॅम् कण्–क्रूर आँखों वाले; इराक्कतर् अॅन्किन्ड्रारै–राक्षस नामधारी सभी को; पॅलम् कुळै–सुन्दर कुंडलधारिणी; मकळिरोटुम्–स्त्रियों के साथ; पाल् नुकर्–दूध-पीते; पुतलवरोटुम्–बच्चों के साथ; कुलङ्कळोटु–कुल के साथ; अटङ्क कॉन्ड्र–पूरा मारकर; कॉटु तॉळिल् कुरित्तु–हमारा क्रूर काम देख; नम् मेल्–हमारे; तेवर् विलक्कुवार् अॅन्निल्–आड़े आयेंगे तो; विण्णैयुम्–आकाश को भी; निलत्तु–भूमि पर; वीळ्त्तुम्–गिरा देंगे। २८४५

वह आगे बोला— लंका को उखाड़ देंगे। क्रूराक्ष राक्षसों को, उनकी सुन्दर कुंडलधारिणी स्त्रियों को और उनके दूध-पीते बच्चों को कुल-सहित मार डालेंगे। हमारा यह क्रूर काम देखकर देवलोग आड़े आयेंगे तो उनके लोकों को भी भूमि पर गिरा देंगे। २८४५

अऱङ्गॅडच् चॅय्दु मॅन्नुव दमैन्दन्न माहि नैय
पुऱङ्गिडन् दुळप्प दॅन्ने पॉरुदिनिप् पुवन मून्ड्रुम्
कऱङ्गॅन्नत् तिरिन्दु तेवर् कुलङ्गळैक् कट्टु मॅन्ना
मऱङ्गिळर् वयिरत् तोळा निलङ्गैमेल् वाव लुऱ्ड्रान् 2846

मऱम् किळर्–वीरता-दर्शक; वयिरम् तोळान्–वज्र-सम कंधों वाले; ऐय–प्रभु; अऱम् कॅट–धर्म बिगाड़ने (का काम); चॅय्तुम् अॅन्पतु–करना जो है उसमें; अमैन्ततम् आकिन्–लग जायँ तो; पुऱम् किटन्तु–(लंका के) बाहर रहकर; उळप्पतु अॅन्ने–दुःख क्यों करते रहें; इनि–आगे; पुवनम् मून्ड्रुम् पॉरुतु–तीनों भुवनों

से लड़कर; कड़क्कु अॅत–पतंग के समान; तिरिन्तु–घूमकर; तेवर् कुलङ्कळै–देववर्गों को; कट्टुम्–छिन्न-भिन्न कर देंगे; अॅन्ना–कहते हुए; इलङ्कै मेल्–लंका पर; वावल् उड़्रान्–झपटने लगा। २८४६

विक्रम-शोभित वज्रस्कंध सुग्रीव ने श्रीराम से कहा कि प्रभु ! धर्म बिगाड़ने पर तुले ही है तो (लंका के) बाहर पड़े रहकर क्षुब्ध रहें क्यों ? अभी तीनों लोकों पर आक्रमण करेंगे, पतंग के समान घूमेंगे और देव वर्गों को मिटा-हटा देंगे। यह कहते हुए वह लंका पर झपटने लगा। २८४६

मऱ्ऱैय वीर रॅल्ला मन्ननिन् मुन्नन् दावि
अॅऱ्ऱुदु मरक्कर् तम्मै यिल्लोडु मडुत्तॅन् ऱेहल्
उऱ्ऱन रुऱ्द लोडु मुणर्त्तुव दुळदॅन् ऱुन्नाच्
चॊऱ्ऱन नुनुमन् वञ्ज नयोत्तिमेऱ् पोन शूळ्च्चि 2847

मऱ्ऱैय–अन्य; वीरर् अॅल्लाम्–सभी वीर; मन्ननित् मुन्नम् तावि–राजा के पहले लपककर; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; इल्लॊडुम् अॅटुत्तु–घरों के साथ उठाकर; अॅऱ्ऱुतुम्–फेंक देंगे; अॅन्ऱु–कहते हुए; एकल् उऱ्ऱनर्–चलने लगे; उऱुतलोटुम्–जब चलने लगे तब; अनुमन्–हनुमान (ने); उणर्त्तुवतु उळतु–समझाने को है; अॅन्ऱु उन्ना–ऐसा सोचकर; वञ्चन्–वंचक का; अयोत्ति मेल्–अयोध्या की ओर; पोन चूळ्च्चि–जाने की दुष्ट योजना; चॊऱ्ऱनन्–बताया। २८४७

तब अन्य वीर भी यह कहते हुए उछलने लगे कि हम अपने राजा के पूर्व ही झपटेंगे और राक्षसों को उनके घरों के साथ उठाकर फेंक देंगे। जब वे झपटने लगे तव हनुमान ने कहा कि अब समझने की एक बात है। उसने वंचक इन्द्रजित् के अयोध्या की ओर जाने का बुरा संकल्प बताया। २८४७

तायरुन् दम्बि मारुन् दवम्बुरि नहरञ् जारप्
पोयिन नॅन्ऱ माऱ्ऱञ् जॅवित्तुळै पुहुद लोडुम्
मेयिन वडुवि निन्ऱ वेंदनै कनैय वॅन्ऱ
तीयिडैत् तणिन्द दॆन्नच् चीदैपाऱ् ऱुयरन् दीर्न्दान् 2848

तायरुम् तम्पि मारुम्–माताएँ और भाई लोग; तवम् पुरि–जहाँ तपस्या करते हैं; नकरम्–उस नगर की ओर; चार–जाने (की इच्छा से); पोयिनन्–गया; अॅन्ऱ माऱ्ऱम्–इस कथन के; चॅवि तुळै पुकुतलोटुम्–कर्णरन्ध्र में घुसते ही; मेयिन वटुवित् निन्ऱ–हुए व्रण के कारण रही; वेतनै–पीड़ा; कनैय वॅन्ऱ–बहुत ही तपी; तीयिटै–आग में; तणिन्ततु–शान्त हो गयी; अॅन्न–जैसे; चीतै पाल्–सीता के कारण उठे; तुयरम् तीर्न्तान्–दुःख से निवृत्त हुए। २८४८

"माताएँ, भाई आदि जहाँ तपस्या कर रहे हैं, उस नगर की ओर गया है इन्द्रजित्" —यह कथन ज्योंही श्रीराम के कर्णरंध्र में घुसा, त्योंही उनका सीता-सम्बन्धी दुःख इस प्रकार उन्हें छोड़ गया जैसे व्रण की पीड़ा गम्भीर आग की पीड़ा में अदृश्य हो जाती है ! । २८४८

अऴन्दिय पालिन् वॆळ्ळत् ताऴिनिन् ऱऩन्दर् नीङ्गि
अॆऴन्दन ऩॆन्नत् तुन्बक् कडलिनिन् ऱेऱि याऱाक्
कॊऴुन्दुरु कोबत् तीयु नडुक्कमु मऩत्तॆक् कूड
उऴुन्दुरुळ् पॊऴुदुन् दाऴा विरॆविनान् मऱुक्क मुऱ्ऱान् 2849

पालिन् अऴुन्तिय-क्षीर के बने गहरे; वॆळ्ळत्तु-जल के; आऴि निन्ऱु-समुद्र से; अऩन्तर् नीङ्कि-निद्रा त्यागकर; अॆऴन्तनन् अॆन्न-(श्रीविष्णु) उठे, वैसे; तुन्पक् कटलिन् निन्ऱु एऱि-दुःख-सागर से ऊपर चढ़कर; आऱा-अदम्य; कॊऴुन्तु उरु-ज्वालायुक्त; कोपम् तीयुम्-कोपाग्नि और; नटुक्कमुम्-कंपन; मऩत्तॆ कूट-मन में मिल उठे, इसलिए; उऴुन्तु उरुळ् पॊऴुतुम्-उड़द के लुढ़कने की देर भी; ताऴा विरॆविनान्-विलम्ब न करके वेगवान श्रीराम; मऱुक्कम् उऱ्ऱान्-क्षुब्ध हुए। २८४९

श्रीराम ऐसे ही दुःख-सागर से बाहर आये जैसे क्षीरसागरशय्या से श्रीविष्णु निद्रा त्यागकर आते हों। उनमें अदम्य ज्वालासहित कोपाग्नि उठी और कंपन हुआ। उड़द की लुढ़कती जितनी देर भी विलंब न करने-वाले गतिमान श्रीराम दुःखभ्रमित हो गये। २८४९

तीरुमिच् चीदॆ योडु मॆन्गिल दॆन्ऱन् ऱीमै
वेरॊडु मुडिपप् दाह विळैन्ददु वेऱु मिन्नुम्
आरॊडुन् दॊडरु मॆन्ब दऱिहिले निदऩै यॆय
पेरिड ववदि युण्डो वॆम्बियर् पिऴैक्किन् ऱारो 2850

ऐय-बाबा; अॆन्ऱन् तीमै-मेरा पाप; इ चीतॆयोटु-इस सीता के साथ; तीरुम् अॆन्किलतु-रह जायगा नहीं दिखता; वेरॊटुम् मुटिप्पताक-निर्मूल कर देगा; विळैन्ततु-ऐसा बना है; इन्नुम्-और; वेऱु यारॊटु-अन्य किसको लेकर; तॊटरुम्-आगे बढ़ेगा; अॆन्पतु-यह; अऱिकिलेन्-नहीं जानता; इतनै पेरिट-इसको दूर करने की; अवति उण्टो-अवधि है क्या; अॆम्पियर्-मेरे छोटे भाई; पिऴैक्किन्ऱारो-जी सकेंगे क्या। २८५०

उन्होंने विभीषण से कहा कि बाबा! मेरा पाप इस सीता को लेकर पूरा होता नहीं दीखता, मुझे निर्मूल करने पर तुला लगता है। और किस पर लगा आयगा ? —यह नहीं जानता। क्या इस आफ़त को दूर करने के लिए अवधि भी बची है ? मेरे भाई लोग बच सकेंगे ? । २८५०

निनॆवदन् मुन्नम् जॆल्लु मानत्ति नॆडिदु पोनान्
विनैयॊरु कणत्तिन् मुऱ्ऱि मीळ्हिन्ऱान् विनैयेन् वन्द
मनॆपॊडि पट्ट दङ्गु माण्डदु तार मीण्डुम्
अॆनैयन तॊडरु हिन्ऱ दुणर्हिले निऱप्पुङ् गाणेन् 2851

निनॆवतन् मुन्नम्-(मन की गति से भी अधिक वेग से) सोचने के पहले ही; नॆटितु चल्लुम्-वेग से जानेवाले; मानत्तिन्-यान पर; पोनान्-जो गया वह;

और कणत्तिन्–एक क्षण में; विनै मुड्रि–कार्य साधकर; मीळ्किन्ड्रान्–लौट आता है; अङ्कु–वहाँ; विनैयेन्–पापी मैं; वन्त–जिसमें पैदा हुआ वह; मनै–घर; पोंटि पट्टतु–धूल बना; ईण्टुम्–यहाँ भी; तारम्–पत्नी; माण्टतु–मर गयी; ऍत्तैयन–क्या-क्या; तोटरुकिन्ड्र–लगे आयेंगे; उणर्किलेन्–जान नहीं पाता; इड्प्पुम् काणेन्–मृत्यु भी नहीं देखता। २८५१

इन्द्रजित् चित्त की तेज़ी से भी अधिक तेज़ी से जानेवाले यान पर गया है। वह क्षण में अपना कार्य साधकर लौट आयगा। वहाँ अयोध्या में मुझ पापी का जन्म का घर ख़ाक बन गया। यहाँ भी सीता मर गयी। आगे क्या-क्या लगे आयँगे ? —यह मैं नहीं जानता। मरण भी तो आता नहीं दिखता। २८५१

तादैक्कुज् जडायु वान् तन्दैक्कुन् दमिय ळाय
शीदैक्कुङ् गूड्रङ् गाट्टित् तीर्न्दिल दॊरुवन् ड्रीमै
पेदैप्पॆण् पिड्न्दु पॆड्र तायर्क्कुम् बिळैप्पिल् लाद
कादर्रम् बियर्क्कु मूर्क्कु नाट्टिर्कुङ् गाट्टिड्र् इन्ड्रे 2852

ऑरुवन् तीमै–अप्रतिम एक मेरा पाप; तातैक्कुम्–मेरे पिता का और; चटायुवान् तन्तैककुम्–पिता-सम जटायु का; तमियळाय–अकेली रही; चीतैक्कुम्–सीता का; कूड्रम् काट्टि–यम बनकर; तीर्न्तिलतु–विरत नहीं हुआ; पेतैप् पॆण् पिड्न्तु–अबोध स्त्री के रूप में प्रकट होकर; पॆड्र तायर्क्कुम्–जननी माताओं का; पिळैप्पु इल्लात–दोषहीन; कातल् तम्पियर्क्कुम्–प्यारे भाइयों का; ऊर्क्कुम्–नगर का; नाट्टिर्कुम्–और देश का भी; काट्टिड्र–(यम दिखा) गया। २८५२

अपूर्व मेरे पाप ने मेरे पिताजी को, मेरे पिता-तुल्य जटायु को और निस्सहाय सीता को मृत्यु दिलायी। वहाँ तक वह नहीं रुका। स्त्री के रूप में प्रगट होकर वह मेरी जननी माताओं को, अनिंद्य प्यारे लघु सहोदरों को और मेरे नगर पर मौत ला चुका है। २८५२

उड्रदॊन् ड्रुणर हिल्ला रुणर्न्दुवन् दुरुत्ता रेनुम्
वॆड्रिवॆम् बाशम् वीशि विशित्तवन् कॊन्ड्रु वीळ्त्ताल्
मड्रवॆम् बुळ्ळिन् वेन्दन् वरुहिलन् मरुन्तु नल्हक्
कॊड्रमा रुदियङ् गिल्लै यारुयिर् कॊडुक्कर् पालार् 2853

उड्रतु ऑन्ड्रु–जो हुआ वह कुछ; उणरकिल्लार्–जो नहीं समझ सके वे (भरत-शत्रुघ्न); उणर्न्तु वन्तु–समझकर आकर; उरुत्तारेनुम्–(इन्द्रजित् पर) क्रोध करें तो भी; अवन्–वह; वॆड्रि–विजयदायी; वॆम्–भयंकर; पाचम्–पाश (नागास्त्र) को; वीचि–फेककर; विचित्तु–बाँधकर; कॊन्ड्रु–मारकर; वीळ्त्ताल्–गिरा दे तब; वॆम् पुळ्ळिन् वेन्तन्–भयंकर पक्षीराज (गरुड़); वरुकिलन्–न आयगा; मरुन्तु नल्क–औषध देने; कॊड्र मारुति–विजयी मारुति; अङ्कु इल्लै–वहाँ नहीं; उयिर् कॊटुक्कर् पालार्–उन्हें जीवन दिला देंगे; यार्–कौन। २८५३

बीती बातें जो न जानते हैं वे भरत और शत्रुघ्न बातें अब जान लें और आकर लड़ें भी, तो वह इन्द्रजित् विजयदायी नागपाश चलाकर मार गिरा देगा। उस हालत में परंतप पक्षीराज गरुड़ नहीं आयगा! न मारुति ही वहाँ है जो ओषधि ला दे। उन्हें जीवन दिलाएगा कौन? । २८५३

माहमा नहरञ् जार वल्लैयिन् वयिरत् तोळाय्
एहुवा नुवाय मुण्डे लियम्बुदि निन्र वॅल्लाम्
शाहमर् ड्रिलङ्गैप् पोरुन् दविर्हवच् चळक्कन् कण्गळ्
काहमुण् डदर्पिन् मोण्डु मुडिप्पन्नॅन् करुत्तॆ यॆन्ड्रान् 2854

वयिरम् तोळाय्–वज्रस्कंध; माक मा–बहुत बड़े; नकरम्–नगर (अयोध्या) को; वल्लैयिन् चार–जल्दी पहुँचने के लिए; एकुवान्–जाने का; उपायम् उण्टेल्–उपाय हो तो; इयम्पुति–कहो; निन्र ॲल्लाम्–बाक़ी जो है वह सब; चाक–मिट जाय; इलङ्कै पोरुम्–लंका का युद्ध भी; तविर्क–रुक जाय; अ चळक्कन्–उस दुष्ट की; कण्कळ्–आँखों को; काकम् उण्टतर् पिन्–कौओं के खाने के बाद; मीण्टु–लौट आकर; ॲन् करुत्तॆ ॲल्लाम्–अपना सारा सोचा; मुटिप्पन्–पूरा कर दूँगा। २८५४

वज्रस्कंध! उस बड़े नगर अयोध्या जल्दी जाने का कोई उपाय हो तो कहो। इधर जो बचा है वह मर जाय तो जाय! लंका का युद्ध भी टले! वहाँ उस दुष्ट की आँखों को कौए खा जायँ, फिर इधर लौट आऊँगा और अपना मनोरथ पूरा कर दूँगा। २८५४

अव्विडत् तिळव लैय परदन्नै यमरिर् ड्राक्क
ॲव्विडड् कुरियान् पोन विन्दिर शित्ते यन्रु
तॅव्विडत् तमैयिन् मुम्मै युलहमुन् दीन्द ड्रावो
वॅव्विडर्क् कडलिन् वेहल् केळॆन्न विळम्ब लुर्ड्रान् 2855

अव् विटत्तु–तब; इळवल्–लक्ष्मण; ऐय–स्वामी; परतनै अमरिल् ताक्क–भरत का युद्ध में सामना करने; पोन इन्तिरचित्तु–जो गया वह इन्द्रजित्; ॲव्विटर्कु–बाण चलाने के लिए; उरियान् अन्रु–योग्य (समर्थ) है ही नहीं; तॅव् इटत्तु–(वह भारत) लड़ने में; अमैयिन्–लग जाय तो; मुम्मै उलकमुम्–तीनों विध लोक; तीन्तु–जलकर; अऱावो–मिटेंगे नहीं क्या; वॅम्मै–संतापक; इटर् कटलिल् वेकल्–संकट-सागर में मत पड़ें; केळ्–सुनें; ॲन–कहकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। २८५५

तब लघुराज ने श्रीराम से कहा कि प्रभु! भरत को मारने जो अयोध्या गया है, वह उन पर बाण चलाने योग्य है ही नहीं। भरत लड़ने लगें तो क्या तीनों लोक जलकर नहीं मिटेंगे? आप कठोर दुःख-सागर में मग्न न हों। मेरी बातें सुनिए। वह आगे यों बोला। २८५५

तीक्कॊण्ड वञ्जन् वीशत् तिशैमुहन् पाशन् दीण्डि
वीक्कुण्डु वीऴ यानो परदनुम् वॆय्य कूट्रैक्
कूय्क्कॊण्डु कुत्तुण् डन्नान् कुलत्तॊडु निलत्त नादल्
पोय्क्कण्डु कोडि यन्ड्रे यंन्ड्रनन् पुळुङ्गु हिन्ड्रान् 2856

पुळुङ्कुकिन्ड्रान्–विक्षुब्ध (लक्ष्मण) ने; ती कॊण्ट–बुराई से भरे; वञ्चन्–वंचक के; तिचै मुकन् पाचम्–ब्रह्मास्त्र (पाश); वीच–चलाने पर; तीण्टि–मुझे ग्रसकर; वीक्कुण्टु वीऴ–बाँधने पर गिरने के लिए; परततुम् यानो–क्या भरत भी मैं (लक्ष्मण) हैं; वॆय्य कूट्रै–भयंकर मृत्यु को; कूय्क्कॊण्टु–बुला लेकर; कुत्तुण्टु–उससे आहत होकर; अन्नान्–वह (इन्द्रजित्); कुलत्तॊटु–परिवार के साथ; निलत्तन् आतल्–धराशायी बना रहेगा वह; पोय्–आप ही जाकर; कण्टु कोटि–देख लें; ऎन्ड्रनन्–कहा। २८५६

व्याकुलमन लक्ष्मण ने कहा कि क्या भरत भी 'मैं' (लक्ष्मण) हैं कि नृशंस वंचक राक्षस ब्रह्मास्त्र चलाए और वे बद्ध होकर गिर जायँ ? इसके विपरीत उनसे आहत होकर इन्द्रजित् यम की दुहाई देता हुआ अपने परिवारों के साथ धराशायी होगा और आप स्वयं जाकर उसे देखेंगे। २८५६

अक्कणत् तनुम निन्ड्रा नैयवॆन् ड्रोळि नाहक्
कैत्तुणैत् तलत्ते याह वेरुदिर् काट्रुन् दाऴ
विक्कणत् तयोत्तिमूदू रॆयदुवॆ निडमुण् डॆन्निल्
तिक्कनैत् तिनिलुञ्जॆल्वॆ नियाने पोय्प् पहैयुन् दीर्वॆन् 2857

अ कणत्तु–उस क्षण; निन्ड्रान्–वहाँ स्थित; अनुमन्–हनुमान; ऐय–स्वामी; ऎन् तोळिन् आक–मेरे कंधे पर या; कै तलत्तिन् आक–करतल पर; एरुतिर्–चढ़ जायँ; काट्रुम् ताऴ–पवन भी पिछड़ जाय ऐसा; अयोत्ति मूतूर्–अयोध्या की पुरानी नगरी; इ कणत्तु–इसी क्षण में; ऎय्तुवॆन्–पहुँचूँगा; इटम् उण्टु ऎन्निल्–मौका रहा तो; तिक्कु अनैत्तिनिलुम्–सारी दिशाओं में; चॆल्वॆन्–जाऊँगा; याने पोय्–मैं खुद जाकर; पकैयुम् तीर्वॆन्–शत्रु को मिटा दूंगा। २८५७

तब हनुमान ने, जो वहाँ खड़ा रहा, कहा कि प्रभु ! आप दोनों चाहें तो मेरे दोनों कंधों पर या करतलों पर चढ़ बैठिए। मैं पवन से भी तेज़ी से इसी क्षण अयोध्या ले चलूँगा। आवश्यकता पड़े तो सारी दिशाओं में जाऊँगा। मैं अकेले जाकर शत्रु का संहार कर मिटा दूँगा। २८५७

कॊल्लवन् दानै नीदि कूरिनॆन् विलक्किक् कॊळ्वान्
शॊल्लवुञ् जॊल्लि निन्ड्रेन् कॊन्ड्रपिन् रुन्ब मॆन्नै
वॆल्लवुन् दरैयिन् वीळ्वुर् ड्रुणर्न्दिलॆन् विरैन्दु पोनान्
इल्लैयॆन् ड्रुळदेर् ड्रीयोन् पिळैक्कुमो विळ्क्क मुट्रेन् 2858

कॊल्ल वन्तानै–मारने आये उसे; विलक्कि–रोककर; कॊळ्वान्–अपने पक्ष

में करने के लिए; नीति कूऱिर्त्तेन्–न्याय-वाद किया; चॉल्लवुम्–कहने योग्य बातें; चॉल्लि निन्ऱेन्–कहता रहा; कॉन्ऱपिन्–उसके मारने के बाद; तुन्पम् ऍन्नै वॅल्लवुम्–संताप के मुझे अपने वश में कर लेने से; तरैयिन् वीऴ्वुऱ्ऱु–धरती पर गिरकर; उणर्न्तिलेन्–कुछ समझ नहीं पाया; विरैन्तु पोनान्–सवेग चला गया; इऴुक्कम् उऱ्ऱेन्–चूक गया; इल्लै ऍन्ऱु उळतेल्–ऐसा नहीं रहा तो; तीयोन् पिऴैक्कुमो–दुष्ट जिएगा क्या। २८५८

मैंने सीताजी का वध करने जो आया उसे अपनी ओर कर लेने के विचार से उसे नीति की बातें बतायीं। हितोपदेश करता खड़ा रह गया। सीताजी के वध के बाद मैं दुःख से अभिभूत हो गया और भूमि पर गिरकर बेसुध हो गया। तब तक वह तेज़ चला गया। मैं चूक गया। नहीं तो दुष्ट बच पायगा क्या ? । २८५८

मनत्तिन्मुन् शॅल्लु मानत् पोयदु वऴियि दाह
निनैप्पिन्मु नयोत्यि यॅय्दि वरुनॅऱि पार्त्तु निऱ्पॅन्
इनिच्चिल ताऴ्प्प दॅन्ने येऱुदि रिरण्डु तोळुम्
बुनत्तुळाय् माले मार्वीर् पुट्पहम् बोदन् मुन्नन् 2859

पुनम् तुळाय्–बाग़ में उत्पन्न तुलसी की; मालै मार्पीर्–माला से अलंकृत वक्ष वाले; मनत्तिन् मुन्–मन से भी तीव्रगति से; चॅल्लुम् मानम्–जानेवाले पुष्पकयान के; पोयतु–जाने के; वऴियतु आऱ–मार्ग से; निनैप्पिन् मुन्–सोचने के पहले; अयोत्ति अय्ति–अयोध्या पहुँचकर; वरुम् नॅऱि–उसके आने की राह; पार्त्तु–देखता; निऱ्पॅन्–खड़ा रहूँगा; इनि–अब; चिल–कुछ; ताऴ्प्पतु ऍन्ने–विलम्ब करना क्यों; पुट्पकम् पोतल् मुन्नम्–पुष्पक के जाने से पहले; इरण्डु तोळुम्–दोनों कंधों पर (दोनों); एऱुतिर्–चढ़ जायें। २८५९

बाग़ में उत्पन्न तुलसी की माला-धारी ! मैं उसी मार्ग में सोचने के पहले ही अयोध्या जाऊँगा, जिससे मन की गति से भी तेज़ पुष्पक में इन्द्रजित् गया है और उसके ताक में खड़ा रहूँ। फिर कुछ विलम्ब क्यों ? पुष्पक के जाने से पहले (जाने हेतु) आप दोनों मेरे कंधों पर चढ़ जाइए। २८५९

एऱुदि रॅन्न वीर रॅऴुदलु मिऱैञ्जि योण्डुक्
कूऱुव दुळदु तुन्बङ् गोळुऱ्ऱ् कुलुङ्गि युळ्ळम्
तेऱुव दरिदु शॅय्है मयङ्गिनन् ड्रिहैत्तु निन्ऱेन्
आऱ्ऱिन नदनै यॅय मायमॅन् ऱुयिर्क्किन् ड्रेनाल् 2860

एऱुतिर् ऍन्न–सवार हों, कहने पर; वीरर् ऍऴुतलुम्–जब (दोनों) वीर उठे तब; इऱैञ्चि–विनय करके; ईण्डु–अब; कूऱुवतु उळतु–कहना है; तुन्पम् कोळ् उऱ–दुःख के ग्रसने से; कुलुङ्कि–व्यथित होकर; उळ्ळम् तेऱुवतु–सुलझना; अरितु–कठिन है; चॅय्कै मयङ्कित्तन्–कर्तव्यविमूढ़ हो; तिकैत्तु निन्ऱेन्–भ्रमित खड़ा

रह गया; ऐय–नाथ; अतत्तै आऱ्‌ऱितत्–उस स्थिति से शान्त हुआ; मायम् अॆन्ऱु–माया कहकर; अयिर्क्किन्ऱेन्–संशय करता हूँ। २८६०

जब हनुमान ने कहा कि चढ़िए, तो दोनों तैयार हो गये। तब विभीषण ने विनय के साथ निवेदन किया कि यहाँ कुछ कहना है! दुःख हावी आ गया था। उसके बुरे प्रभाव में सुलझा विचार रखना कठिन हो गया इसलिए भ्रमित खड़ा रह गया। अब उस स्थिति से स्वस्थिति में आ गया हूँ। अब मुझे संशय हो रहा है कि इन्द्रजित् का वह काम माया है। २८६०

पत्तिनि तन्नैत् तीण्डिप् पादहन् पडुत्त पोदु
मुत्तिऱत् तुलहुम् वॆन्दु शाम्बराय् मुडियु मन्ऱे
अत्तिऱ मान देनु मयोत्तिमेऱ् पोन तन्मै
शित्तिर मिदनै यॆल्लान् दॆरियलाञ् जिऱिदु पोऴ्दिन् 2861

पत्तिनि तन्नै–पतिव्रता पत्नी को; तीण्टि–(हाथ से) स्पर्श करके; पातकन्–पापी इन्द्रजित् ने; पटुत्त पोतु–जब मारा तब; मु तिऱत्तु उलकुम्–तीनों विध लोक; वॆन्तु चाम्पराय् मुटियुम् अन्ऱे–जलकर राख बन जायँगे न; अ तिऱम् आनतेनुम्–अगर वही हुआ तो भी; अयोत्ति मेल् पोन तन्मै–अयोध्या पर जाने का हाल; चित्तिरम्–चित्र (कल्पना, झूठ) है; इतनै अॆल्लाम्–यह सब; चिऱितु पोऴ्तिन्–कुछ ही देर में; तॆरियल् आम्–जानना हो सकेगा। २८६१

सीताजी पतिव्रता पत्नी हैं। उनको पातक इन्द्रजित् मारता तो तीनों लोक जलकर राख बनता। उसे संभव भी माना जाय पर अयोध्या जाने की बात बिलकुल माया है! यह सब हम कुछ ही देर में परखकर जान लेंगे। २८६१

इमैयिडै याह यान्पो येन्दिऴै यिरुक्कै यॆय्दि
अमैवुऱ नोक्कि युऱ्ऱ दऱिन्दुवन् दऱैन्द पिन्नर्च्
चमैवदु शॆय्व दॆन्ऱु वीडणन् विळम्बत् तक्क
दमैहवॆन् ऱिरामन् शॊन्ना नन्दरत् तवनुम् शॆन्ऱान् 2862

इमै इटै आक–क्षण भर में; यान्–मैं; एन्तिऴै–उत्कृष्ट आभरणधारिणी (सीता) के; इरुक्कै पोय् अॆय्ति–स्थान जा पहुँचकर; अमैवु उऱ–सावधानी से; नोक्कि–देखकर; उऱ्ऱतु–घटी बात; अऱिन्तु वन्तु–जान आकर; अऱैन्त पिन्नर्–कहने के बाद; चमैवतु–उचित जो होगा वह; चॆय्वतु अॆन्ऱु–करें, ऐसा; वीटणन् विळम्प–विभीषण के कहने पर; इरामन्–श्रीराम ने; तक्कतु–योग्य है; अमैक–करो; अॆन्ऱान्–कहा; अवनुम्–वह भी; अन्तरत्तु चॆन्ऱान्–आकाश में गया। २८६२

क्षण भर में मैं उत्कृष्ट आभरणालंकृता सीताजी के स्थान पर जाकर सावधानी से देख-परख आऊँगा। मेरे लौटने के बाद निर्णय हो कि क्या

करना है। विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने कहा कि ठीक है; वही हो। विभीषण अंतरिक्ष में उठकर चला। २८६२

वण्डिऩ्ऩ दुरुवङ् गॊण्डाऩ् माऩवऩ् मऩत्तिऩ् पोऩाऩ्
तण्डलै यिरुक्कै तऩ्ऩैप् पॊरुक्कॆऩच् चार्न्दु ताऩे
कण्डऩ ऩॆऩ्ऩ मऩ्ऩो कण्गळाऱ् करुत्ता लावि
उण्डिलै यॆऩ्ऩच् चॆय्द वोविय मॊक्किऩ् ऱाळै 2863

वण्टिऩतु उरुवम् कॊण्टाऩ्–भ्रमर का रूप लिया; माऩवऩ्–सम्मानित श्रीराम के; मऩत्तिऩ्–मन की भांति; पोऩाऩ्–गया; तण्टलै–अशोक वन में; इरुक्कै तऩ्ऩै–(सीताजी के) रहने के स्थान को; पॊरुक्कॆऩ–झट; चार्न्तु–पहुँचकर; आवि उण्टु–प्राण हैं; इलै ऎऩ्ऩ–नहीं ऐसा; चॆय्त–रचित; ओवियम् ऒक्किऩ्ऱाळै–चित्र-सम रहनेवाली को; कण्कळाल्–अपनी आंखों से; करुत्ताल्–मन से भी; ताऩे–स्वयं; कण्टऩऩ्–देखा; ऎऩ्प–कहते हैं। २८६३

भ्रमर के रूप में विभीषण श्रीराम के मन की उतनी तेज गति से अशोक वन में झट गया। उसने अपनी आंखों से सीताजी को देखा जिनकी स्थिति यह संशय पैदा कर रही थी कि वह जीवित हैं या प्राण नहीं हैं? और मन से भी परखा। ऐसा विद्वान कहते हैं। २८६३

तीर्प्पदु तुऩ्ऩम् याऩॆऩ् ऩुयिरॊडॆऩ् ऱुणर्न्द शिन्दै
पेर्प्पऩ विऩ्शॊ लाळत् तिरिशडै पेशप् पेर्न्दाळ्
कार्प्पॆरु मेहम् वन्दु कडैयुहङ् गलन्द दऩ्ऩ
आर्प्पॊलि यमुद माह वारुयि राऱ्ऱि ताळै 2864

याऩ्–मेरा; ऎऩ् तुऩ्पम् तीर्प्पतु–अपना दुःख मिटाना; उयिरॊटु–अपनी जान के साथ ही; ऎऩ्ऱु उणर्न्त–ऐसा समझनेवाले; चिन्तै–मन को; पेर्प्पऩ–बदल सकनेवाले; इऩ् चॊलाळ्–मधुर वचन की भाषिणी; अ तिरिचटै–उस त्रिजटा के; पेच–कहने से; पेर्न्ताळ्–अपना दुःख छोड़कर; कटै युकम्–युगान्त में; कार् पॆरु मेकम् वन्तु–काला बड़ा मेघ आकर; कलन्तततु अऩ्ऩ–मिल गया हो ऐसा; आर्प्पु ऒलि–नर्दन-स्वर के; अमुतमाक–अमृत बनते; आर् उयिर् आऱ्ऱिताळै–अपने प्राणों को शांति देनेवाली को (देखा विभीषण ने)। २८६४

वे यही सोचकर दुःखी हो रही थीं कि मैं अपने दुःख से निवृत्ति अपनी मृत्यु के साथ ही पाऊँगी। उनके दुःख को मधुरभाषिणी त्रिजटा ने अपने हित-वचनों से बदल दिया। जब सीताजी उनके वचन से आश्वासन पाकर थोड़ा संभलीं तो युगांतकालीन बड़े मेघों के गर्जन के समान वानरों का घोष सुना। वह नर्दन उन्हें अमृत ही-सा बना। तभी वह अपने मन को शांत कर पायी। उन्हें उस स्थिति में विभीषण ने देखा। २८६४

वञ्जतै यॆऩ्ऩ्ब दुऩ्ऩि वाऩुय रुवहै वॆहुम्
नॆञ्जिऩ ऩाहि युळ्ळऩ् दळ्ळुऱ लॊळिन्दु निऩ्ऱाऩ्
वॆञ्जिलै मैन्दऩ् पोऩा निहुम्बिलै वेळ्वि यानॆऩ्
ऱॆञ्जलि लरक्कर् शेऩै यॆळ्नुदॆळुन् देहक् कण्डान् 2865

वॆम् चिलै मैन्तऩ्–भयंकर धनुर्धर वीर इन्द्रजित्; निकुम्पिलै वेळ्वियाऩ्–निकुंभिला यज्ञ-कार्य पर; पोऩाऩ्–गया; ऎऩ्ऱु–ऐसा अनुमान कर; ऎञ्चल् इल् अरक्कर् चेऩै–अक्षय राक्षस-सेना; ऎळुन्तु ऎळुन्तु–उठ-उठकर; एक–जाती; कण्टाऩ्–देखा; वञ्चऩै ऎऩ्पतु–वंचक काम ऐसा; उऩ्ऩि–सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱल्–चित्त का डांवा-डोल होना; ऒळिन्तु–त्यागकर; वाऩ् उयर्–आकाश तक ऊँचा; उवकै–आनन्द; वॆकुम्–पूरित; नॆञ्चिऩऩ् आकि–मन वाला बनकर; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। २८६५

विभीषण ताड़ गया कि भयंकर धनुर्धर इन्द्रजित् निकुंभिला में याग करने गया है। (निकुंभिला एक पवित्र स्थान है। जहाँ एक मंदिर भी था।) उसने देखा कि अक्षय सेना के भाग भी उस तरफ़ जा रहे हैं। तब निश्चय हो गया कि सब माया था। उसका मन संशयरहित हो गया और "आकाश-जितने ऊँचे" संतोष से भर गया। वह उसी मुदित स्थिति में खड़ा रहा। २८६५

वेळ्विक्कु वेण्डर् पाल कलप्पैयुम् विऱहु नॆय्युम्
आळ्विक्कुन् दाळ्वि लॆऩ्ऩुम् वाऩवर् मऱुक्कङ् गण्डाऩ्
शूळ्वित्त वण्ण मीदो नऩ्ऱॆऩ्ऩ् तुणिवु कॊण्डाऩ्
दाळ्वित्त मुडियऩ् वीरऩ् ऱामरैच् चरणन् दाळ्न्दाऩ् 2866

वेळ्विक्कु–यज्ञ के लिए; वेण्टल् पाल–आवश्यक सामग्री; कलप्पैयुम्–हल; विऱकु–इंधन; नॆय्युम्–और घी; ताळ्विल्–हमको दुर्गति में; आळ्विक्कुम्–डालेगी; ऎऩ्ऩुम्–कहनेवाले; वाऩवर्–देवों की; मऱुक्कम्–बेचैनी; कण्टाऩ्–(विभीषण ने) देखी; चूळ्वित्त–वंचना से सम्पन्न; वण्णम्–हाल; ईतो–यही; नऩ्ऱु–अच्छा; ऎऩ–ऐसा; तुणिवु कॊण्टाऩ्–मन में निर्णय कर लिया; वीरऩ्–श्रीवीरराघव के; तामरै चरणम्–कमल-चरणों में; ताळ्वित्त–झुके; मुटियऩ्–सिरवाला होकर; ताळ्न्ताऩ्–प्रणाम किया। २८६६

देवलोग यह कहते हुए अति व्याकुलता दिखा रहे थे कि ये याग के लिए आवश्यक हल, ईंधन, घी आदि सामग्रियाँ हमें गर्त में मग्न करा देंगी। विभीषण ने आप ही आप कहा कि इन्द्रजित् की माया का हाल बड़ा अच्छा रहा। वह मन में कोई निर्णय करके वीर श्रीराम के चरण-कमलों में जाकर विनत हुआ। २८६६

इरुन्दऩ डेवि याऩै यॆदिर्न्दऩ नॆन्ग णार
अरुन्ददि कऱ्पि नाळुक् कळिवुण्डो वरक्क ऩम्मै

वरुन्दिड मायम् जॅय्दु निहुम्बिलै मरुङ्गु पुक्कान्
मुरुङ्गऴल् वेळ्वि मुट्रि मुदलर मुडिक्क मूण्डान् 2867

तेवि इरुन्ततळ्–देवी विद्यमान थीं; यानें–मैंने ही; ॲन् कण् आर–अपनी आँखों से भरपूर; ॲतिर्न्तनन्–देखा; अरुन्तति–अरुन्धती-सी; कट्पिताळ्क्कु–पातिव्रत्य वाली को; अऴिवु उण्टो–नाश होगा क्या; अरक्कन्–राक्षस; नम्मै वरुन्तिट–हमें दुःखी करने; मायम् चॅय्तु–वंचना करके; मुरुङ्कु अऴल्–घनी आग में; वेळ्वि मुट्रि–यज्ञ सम्पन्न करके; मुतल् अर मुटिक्क–हमें समूल समाप्त करने पर; मूण्टान्–तुला है; निकुम्पिलै मरुङ्कु–निकुंभिला के पास; पुक्कान्–गया। २८६७

विभीषण ने श्रीराम से निवेदन किया कि मैंने अपनी आँखों को भरपूर तृप्ति देते हुए देख लिया कि देवी हैं। अरुन्धती-सी पतिव्रता का भी अंत हो सकता है क्या? राक्षस इन्द्रजित् माया में हमें दुःखी वनाकर पक्की आग में याग संपन्न करके हमें निर्मूल करने का निर्णय लेकर निकुंभिला के पास गया है। २८६७

ॲन्ट्रलु मुलह मेऴु मेऴ्मान् तीवु मॅल्लै
ऑन्ट्रिय कडल्ह ळेऴु मोरुङ्गॅऴुन् दार्क् कुमोवै
अन्ट्रॅन वाहु मॅन्न वमररु मयिर्क्क वार्त्तुक्
कुन्ट्रिन मिडियत् तुळ्ळि याडिन कुरक्किन् कूट्टम् 2868

ॲन्ट्रलुम्–कहते ही; कुरक्किन् कूट्टम्–वानर-दल; उलकम् एऴुम्–सातों लोक; एऴु मा तीवुम्–सातों बड़े द्वीप; ॲल्लै ऑन्ट्रिय–जिनकी सीमाएँ एक-दूसरी से मिली हैं वे; कटल्कळ् एऴुम्–सातों समुद्र; ऑरुङ्कु ॲऴुन्तु–एक साथ उठकर; आर्क्कुम्–जो शोर मचाये; अन्ऱु आकुम् ॲन्न–उस दिन का है, यह कहकर; अमररुम् अयिर्क्क–देव भी भ्रम करें ऐसा; आर्त्तु–घोष उठाकर; कुन्ऱु इनम्–पर्वतकुल; इटिय–टूट जायें ऐसा; तुळ्ळि आटिन–उछले, कूदे और नाचे। २८६८

विभीषण के यह कहते ही वानरों ने ऐसा नर्दन किया कि देव भी यह संशय करने लगे कि सातों लोक, सातों द्वीप और सातों समुद्र, जिनकी सीमाएँ परस्पर मिली हुई थीं, एक साथ मिल उठकर जव गर्जन करते हैं, उस दिन का यह शोर है! वे शोर मचाते हुए उछले-कूदे और नाचे जिससे पर्वत-कुल ही टूट गये। २८६८

26. निहुम्बिलै याहप् पडलम् (निकुंभिला-याग पटल)

वीरनु मॅयन् वीर्न्दान् वीडणन् ट्रन्नै मॅय्यो
डार्वमु मुयिरु मॊन्ट्र वळ्न्दुट्रत् तळ्वि यॅय
तीर्वदु पॊरुळो तुन्बम् नीयुळै तॅय्व मुण्डु
मारुदि युळनाम् जॅय्द तवमुण्डु वलियु मुण्डाल् 2869

वीरतुम्–वीर श्रीराघव भी; ऐयम् तीर्न्तान्–संशयमुक्त हुए; वीटणन् तन्नै–विभीषण को; मॅय्योटु–अपने शरीर के साथ; आर्वमुम् उयिरुम् ओन्ऱ–प्रेम और प्राण मिल जायँ, ऐसा; अळुन्तुर तळुवि–गाढ़ालिंगन करके; ऐय–पुरुष-श्रेष्ठ; नी उळ–तुम हो; तॅय्वम् उण्टु–ईश्वर है; मारुति उळन्–मारुति है; नाम् चॅय्त–हमारा किया हुआ; तवम् उण्टु–तप है; वलियुम् उण्टु–और बल भी है; तुन्पम् तीर्वतु–दुःख निवारना; पॉरुळो–कोई (कठिन) चीज है क्या। २८६९

पराक्रमी श्रीराम संशयमुक्त हुए। विभीषण को अपने शरीर के साथ प्रेम और प्राणों को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके श्रीराम ने कहा कि हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम हो; ईश्वर हैं। मारुति है और हमारी की हुई तपस्या है। फिर दुःख का दूर होना कोई बड़ी चीज़ है क्या ? । २८६९

ॲन्ऱलु मिऱैञ्जि याह मुडियुमे लियारुम् वॅल्लार्
वॅन्ऱियु मरक्कर् माडे विडैयरु ळिळव लोडुम्
शॅन्ऱव नावियुण्डु वेळ्वियुञ् जिदैप्पॅ नॅन्ऱान्
नन्ऱदु पुरिदि यॅन्ऱ नायहन् नविल्व दानान् 2870

ॲन्ऱलुम्–कहने पर; इऱैञ्चि–विनय करके; याकम् मुटियुमेल्–याग पूरा होगा तो; यारुम्–और कोई भी; वॅल्लार्–नहीं जीतेंगे; अरक्कर् माटे–राक्षसों के पक्ष में ही; वॅन्ऱियुम्–विजय होगी; इळवलोटुम् चॅन्ऱु–लघुराज के साथ जाकर; अवन् आवि उण्टु–उसके प्राण हरकर; वेळ्वियुम् चितैप्पॅन्–यज्ञ का भी नाश करा दूंगा; विटै अरुळ्–आज्ञा दें; ॲन्ऱान्–निवेदन किया; नायकन्–नायक ने भी; नन्ऱु–अच्छा; अतु पुरितिर्–वह करो; ॲन्ऱु–ऐसा; नविल्वतु आनान्–कहा। २८७०

श्रीराम का वचन सुनकर विभीषण ने निवेदन किया कि अगर इन्द्रजित् यज्ञ पूरा कर देगा तो कोई भी उसे जीत नहीं सकेंगे। फिर विजय राक्षसों की ही होगी। इसलिए लघुराज को लेकर जाऊँ; उसके प्राण निकाल दूँ और उसके यज्ञ को नष्ट कर दूँ। आज्ञा दें। नायक ने कृपा-वचन कहा कि अच्छा है। जाओ वही कर आओ। २८७०

तम्बियैत् तळुवि यैयन् तामरैत् तविशिन् मेलान्
वॅम्बडै तॉडुक्कु मायिन् विलक्कुम दन्ऱि वीर
अम्बुनी तुरप्पा यल्लै यतैयदु तुरन्द कालै
उम्बरु मुलहु मॅल्लाम् विळियुमः(ह्) दॉळिदि यॅन्ऱान् 2871

ऐयन्–आर्य श्रीराम ने; तम्पियै तळुवि–छोटे भाई का आलिंगन करके; वीर–वीर; तामरै तविचिन् मेलान्–कमलासन ब्रह्मा का; वॅम् पटै–भयंकर अस्त्र; तॉटुक्कुमायिन्–अगर वह चलायगा तो; विलक्कुम् अतु अन्ऱि–निवारण करना, उसको छोड़; अम्पु–वह अस्त्र; नी–तुम; तुरप्पाय् अल्लै–मत छोड़ो; अतैयतु–वह अस्त्र; तुरन्त कालै–छोड़ते समय; उम्परुम्–देव; उलकुम् ॲल्लाम्–और

सारे लोक; विळियुम्–विनष्ट हो जायँगे; अ.'.तु–वह काम; ऑऴिति–छोड़ दो (मत करो)। २८७१

फिर श्रीराम ने अपने भाई को गले लगाकर समझाया कि हे वीर! कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र बहुत ही प्रतापी अस्त्र है। वह छोड़े तो उसको रोकने के अर्थ तुम चलाओ। नहीं तो तुम स्वयं मत चलाओ। क्योंकि वह छूटेगा तो देव, लोक सभी मिट जायँगे। वह कार्य रहने दो। २८७१

मुक्कणान् पडैयु माऴि मुदलवन् पडैयु मुन्निन्
ऱॊक्कवे विडुमे विट्टा लवऱ्ऱैयुम् मवऱ्ऱि ऩोयत्
तक्कवा ऱियऱ्ऱि मऱ्ऱुन् शिलैवलित् तरुक्कि ऩाले
पुक्कव ऩावि कॊण्डु पोदुदि पुहऴिन् मिक्कोय् 2872

पुकऴिन् मिक्कोय्–यशश्रेष्ठ; मुक्कणात् पटैयुम्–त्रिनेत्र का पाशुपतास्त्र भी; आऴि मुतलवन्–चक्रधारी आदिदेव; पटैयुम्–नारायण का अस्त्र भी; मुन् निन्ऱु–तुम्हारे सामने खड़ा होकर; ऑक्कवे विटुमे–एक साथ चलायगा; विट्टाल्–चलाए तो; अवऱ्ऱैयुम्–उन्हें भी; ओय तक्कवाऱु–शान्त करने; अवऱ्ऱिन् इयऱ्ऱि–उनका प्रयोग करो; मऱ्ऱु–और; उन् चिलै वलि–तुम्हारे धनु के बल के; तरुक्किनाले–गौरव से; पुक्कु–(युद्ध में) प्रवेश करके; अवन् आवि कॊण्टु–उसके प्राण (हर) लेकर; पोतुति–लौट आओ। २८७२

वह त्रिनेत्र-पाशुपतास्त्र और चक्रधारी-नारायणास्त्र एक साथ छोड़ेगा। तब तुम भी उन्हें विफल करने के लिए उन्हें चलाओ। फिर भी तुम भी अपना बल-पराक्रम दिखाकर युद्ध करो और उसको मारकर लौट आओ। २८७२

वल्लन माय विञ्जै वहुत्तन वऱिन्दु माळक्
कल्लुदि तरुम मॆन्नुङ् गण्णहन् करुत्तैक् कण्डु
पल्पॆरुम् बोरुम् जॆय्दु वरुन्दिन वऱ्ऱम् बार्त्तुक्
कॊल्लुदि यमरर् तङ्गळ् कूऱ्ऱिनैक् कूऱ्ऱ मॊप्पाय् 2873

कूऱ्ऱम् ऑप्पाय्–यम-तुल्य; अमरर् तङ्कळ्–देवों के; कूऱ्ऱिनै–यम (रूपी इन्द्रजित्) को; माय विञ्चै वल्लन वकुत्तन–उसके माया के बल से रचित; अऱिन्तु–(कार्य) जानकर; माळ–उन्हें मिटाने के लिए; कल्लुति–उन्हें उखाड़ दो; तरुमम् ऍन्नुम्–धर्म के; कण् अकन्–विशाल (गम्भीर); करुत्तै कण्टु–तथ्यों को जानकर; पल् पॆरुम् पोरुम्–अनेक बड़े युद्ध भी; चॆय्तु–करके; वरुन्तिन–अऱ्ऱम्–जब वह थका है, वह मौक़ा; पार्त्तु–देखकर; कॊल्लुति–मार दो। २८७३

हे यमतुल्य वीर! देवमारक इन्द्रजित् माया के बल से कृत कार्यों के प्रति सावधानी से व्यवहार करो। उनको मिटाते हुए उखाड़ दो। धर्म

विस्तृत क्षेत्र को ध्यान में रखो और तदनुसार अनेक विविध बड़े युद्ध करो। जब वह थका हो रहता है, तब मौक़ा पाकर उसका हनन कर दो। २८७३

पवैत्तवन् वॆम्मै योडिप् पल्पॆरुम् बहळि मारि
विदैप्पन विदैया नित्रु विलक्कित्तु मॆलिवु मिक्काल्
उदैप्पन शिलैयिन् वाळि मरुमत्तैक् करुदि योट्टि
वदैत्तॊऴिल् पुरिदि शाब नूत्तॆरि मऱप्पि लादाय् 2874

चापनूल् नॆऱि–धनुशास्त्र-मार्ग; मऱप्पिलाताय्–अविस्मरणकारी; अवन्–उसके; पतैत्तु–उतावली करके; वॆम्मै ओटि–क्रोध में बढ़कर; पल् पॆरुम्–अनेक अधिक; पकळि मारि–शर-वर्षा; वितैप्पन–जो प्रेरित होंगे उन्हें; वितैया–तुम्हारे ऊपर न लगे, ऐसा; नित्रु विलक्कित्तुम्–रहकर निवारण करोगे तो भी; मॆलिवु मिक्काल्–निर्बलता अधिक हो तो; चिलैयिन् उतैप्पन–तुम्हारे धनु (जिनको) निकालें; वाळि–उन शरों को; मरुमत्तै करुति–मर्मस्थल देखकर; ओट्टि–चलाकर; वतै तॊऴिल् पुरिति–वध-कार्य करो। २८७४

हे धनुशास्त्र के अविस्मरणकारी! इन्द्रजित् गड़बड़ाकर व क्रुद्ध होकर तुम्हारे चलाये शरों की वर्षा से बचने का प्रयास करेगा। तो भी मौक़े की ताक में रहो और जब उसकी थकावट अधिक हो रहती हो, तब तुम अपने अस्त्रों को उसके मर्म में चलाओ और वधकार्य करो। २८७४

तॊडुप्पदन् मुन्नम् वाळि तॊडुत्तवै तुरैह डोरुम्
तडुप्पन तडुत्ति यॆण्णङ् गुऱिप्पिना लुणर्न्दु तक्क
कडुप्पितु मळवि लाद कदियिनुङ् गणैहळ् काऱ्ऱिन्
विडुप्पन ववऱ्ऱै नोक्कि विडुदियाल् विरहिन् मिक्काय् 2875

विरकिन् मिक्काय्–उपायचतुर; वाळि तॊटुप्पतन् मुन्नम्–(उसके) शर लगाने से पहले; तॊटुत्तु–संधान करके; अवै–उन्हें; तुऱैकळ् तोऱुम्–हर मार्ग से; तटुप्पन तटुत्ति–रोकना रोक दो; अळविलात कटुप्पितुम्–अपार वेग के साथ; काऱ्ऱिन् कतियितुम्–पवनगति से; विटुप्पन कणैकळ्–प्रेरित शरों को; ऍण्णम् कुऱिप्पिताल्–चित्त-संकेत से; उणर्न्तु–जानकर; अवऱ्ऱै नोक्कि–उन्हें देखकर; तक्क–योग्य शर; विटुति–चलाओ। २८७५

हे उपायचतुर! वह संधान करे, उसके पूर्व ही तुम अपने धनु पर शर संधान करके उसके शरों को आवश्यक सभी मार्गों में रोक दो। वह अपार वेग के साथ पवन से भी तेज़ गति में शर चलायगा। उनको उसके मन का भाव ताड़कर देख लो और उनको रोकते हुए अपने शर प्रेरित करो। २८७५

ऍन्बन मुदलु बाय मियावैयु मियम्बि येऱ्ऱ
मुन्बनै नोक्कि यैय मूवहै युलहुन् दानायत्

तऩ्पॆरुन् दऩ्मै तानु मऱिहिला वोरुवऩ् ताङ्गुम्
वऩ्पॆरुञ् जिलैयो दाहुम् वाङ्गुदि वलमुङ् गॊळ्वाय् 2876

ऑऩ्पत मुतल्–ऐसे अन्य; उपायम् यावैयुम्–सभी उपाय; इयम्पि–बतलाकर; एऱ्ऱ–जिन्होंने स्वीकारा उन; मुऩ्पऩ्–बलशाली को; नोक्कि–देखकर; ऐय–तात; ईतु–यह (धनु); मूवर्क उलकुम् ताऩाय्–स्वयं तीनों लोक बनकर; तऩ् पॆरुम् तऩ्मै–अपने बड़प्पन का हाल; तानुम् अऱिकिला–स्वयं जो नहीं जानते; ऑरुवऩ्–वे अनुपम; तिरुमाल्–विष्णु; ताङ्कुम्–जिसे धारण करते हैं; वऩ् पॆरुम् चिलै आकुम्–कठोर और बड़ा धनु है; वाङ्कुति–पकड़ो; वलमुम् कॊळ्वाय्–विजय भी पा लो। २८७६

श्रीराम ने ऐसे उपाय आदि कहे। लक्ष्मण ने उन्हें हृदयस्थ कर लिया। फिर बलवान लक्ष्मण से उन्होंने कहा कि तात! देखो यह वह बड़ा और सारयुक्त धनु है, जो विष्णु स्वयं अपने हाथ में धारण करते थे, वे विष्णु जो स्वयं तीन लोक बने रहते हैं और जो स्वयं अपना बड़प्पन नहीं जानते। लो इसे तुम। जाओ और विजयी बनकर आओ। २८७६

इच्चिलै यियऱ्कै मेऩाळ् तमिळ्मुऩि यियम्बिऱ् ऱॆल्लाम्
अच्चॆऩक् केट्टा यऩ्ऱे यायिर मौलि यण्णल्
मॆय्च्चिलै विरिञ्जऩ् मूट्टुम् वेळ्वियिऩ् वेट्टुप् पॆऱ्ऱ
कैच्चिलै यॆऩ्ऱु ताऩे कॊडुत्तऩऩ् कवशत् तोडुम् 2877

इ चिलै इयऱ्कै–इस धनु का गुण; मेल् नाळ्–पहले; तमिळ् मुऩि–'तमिळ-मुनि' (अगस्त्य) ने; इयम्पिऱ्ऱु ऍल्लाम्–जो विवरण दिया था वह सब; अच्चु ऍऩ–सच ही; केट्टाय्–तुमने सुना; अऩ्ऱे–न; आयिरम् मौलि अण्णल्–सहस्रशीर्ष भगवान का; मॆय् चिलै–सच्चा धनु है; विरिञ्चऩ् मूट्टुम् वेळ्वियिऩ्–ब्रह्मा द्वारा कृत यज्ञ में; वेट्टु–होम आदि करके; पॆऱ्ऱ–प्राप्त; कै चिलै–हस्तयोग्य धनु है; ऍऩ्ऱु–कहकर; कवचत्तोटुम्–कवच के साथ; ताऩे कॊटुत्तऩऩ्–खुद दिया। २८७७

इस धनु के सम्बन्ध में 'तमिळ ऋषि' अगस्त्य ने पहले जब सारा विवरण दिया था, तब तुमने भी सुना था न? यह सहस्रशीर्ष श्रीविष्णु का सच्चा धनु है। यह विरंचि-रचित यज्ञ में उत्पन्न हुआ, हस्त-धारण-योग्य धनु है। यह बताकर श्रीराम ने अपने हाथ से वह धनु देकर कवच भी दिया। २८७७

आणियिव् वुलहुक काऩ वाळियाऩ् पुऱत्ति ऩाऱ्ऱत
तूणियुङ् गॊडुत्तु मऱ्ऱु मुऱुदिहळ् पलवुञ् जोल्लित्
ताणुविऩ् ऱोऱ्ऱत् ताऩैत् तळुविऩऩ् तळुव लोडुम्
शेणुयर् विशुम्बिऱ् ऱेवर् तीर्न्दवॆञ् जिऱुमै यॆऩ्ऱार् 2878

इव् उलकुक्कु आणि आऩ–इस संसार की धुरी की कील के रूप में जो हैं;

आळियान्–चक्रधारी; पुऱत्तिल् आर्त्त–पीठ पर बँधा; तूणियुम् कॉट्टुत्तु–तूणीर भी देकर; मऱ्ऱुम्–और; उऱुतिकळ् पलवुम्–अनेक हितकारी उपदेश; चॉल्लि–कहकर; ताणुविन् तोऱ्ऱत्तानै–स्थाणु-सदृश रूपवान को; तऴुवित्तन्–गले लगा लिया; तऴुवलोटुम्–आलिंगन करते ही; चेण् उयर्–बहुत ऊँचे; विचुम्पिल्–आकाश में; तेवर्–देव; ॲम् चिऱुमै–हमारी हीनता; तीर्न्ततु–दूर हुई; ॲन्ऱार्–बोले। २८७८

फिर संसार की धुरी की कील के समान विद्यमान चक्रधारी (के अवतार) श्रीराम ने अपनी पीठ से तूणीर उतारकर उसे भी दिया। फिर अनेक हितोपदेश देकर उन्होंने स्थाणुसदृश आकार वाले लक्ष्मण को गले से लगा लिया। उनको आलिंगन करता देखकर देवों ने कह लिया कि हमारी लघुता दूर हो गयी। २८७८

मङ्गलन् देवर् कूऱ वानव महळिर् वाऴ्त्तिप्
पङ्गमि लाशि कूऱिप् पलाण्डिशै परवप् पाहत्
तिङ्गळिन् मौलि यण्ण ऱिरिबुरन् दीक्कच् चीऱिप्
पॉङ्गिन ॲन्नत् तोन्ऱिप् पॉलिन्दनन् पोर्मेऱ् पोवान् 2879

पोर् मेल् पोवान्–युद्ध पर जानेवाले; तेवर् मङ्कलम् कूऱ–देवों के मंगल-वचन कहते; वानव मकळिर्–देवस्त्रियों के; पङ्कम् इल्–निर्दोष; आचि–आशीर्वचन; कूऱि वाऴ्त्ति–कहकर विजयकामना करके; पलाण्टियै परव–'जुग-जुग जिओ' का गान गाते; पाक तिङ्कळिन् मौलि–अर्धचन्द्रशेखर; अण्णल्–भगवान शिव; तिरपुरम् तीक्क–त्रिपुर मिटाने; चीऱि–क्रोध करके; पॉङ्किनन् ॲन्न–तेजी से उठे जैसे; तोन्ऱि–झाँकी देकर; पॉलिन्तनन्–शोभे। २८७९

युद्ध पर लक्ष्मण जाने लगे। देवों ने मंगल-शब्द कहे। देवस्त्रियों ने अमोघ आशीर्वाद के वचन कहकर 'जुग-जुग जिओ' का गान किया। तब लक्ष्मण अर्धचन्द्रशेखर शिवजी के समान शोभे जो त्रिपुरदहन के लिए ससंभ्रम उठे हों। २८७९

मारुदि मुदल्व राय वानरत् तलैव रोडुम्
वीरनी शेऱि यॅन्ऱु विडहॉडुत् तरुळुम् वेलै
आरियन् कमल पाद महत्तिनुम् बुऱत्तु माहच्
चीरिय शॅन्नि शेर्त्तुच् चॅन्ऱनन् तरुमच् चॅल्वन् 2880

वीर–वीर; मारुति मुतल्वर् आय–मारुति आदि; वानर तलैवरोटुम्–वानर-यूथपों के साथ; नी चेऱि–तुम चलकर पहुँचो; ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; विटै कॉटुत्तु–विदा देने की; अरुळुम् वेलै–जब कृपा की तब; तरुमच् चॅल्वन्–धर्मधनी; आरियन् कमल पातम्–आर्य के कमल-चरणों में; अकत्तिनुम् पुऱत्तुमाक–भीतर-बाहर दोनों (करणों) से; चीरिय चॅन्नि–श्रेष्ठ सिर; चेर्त्तु–लगाकर (बाद); चॅन्ऱनन्–निकले। २८८०

जब श्रीराम ने कृपा की आज्ञा सुनायी कि तुम मारुति आदि वानरयूथपों को साथ ले युद्धभूमि की ओर कूच करो, तब धर्मधनी लक्ष्मण ने मन और शरीर से आर्य श्रीराम के कमल-चरणों में सिर नवाया। फिर रवाना हो गये। २८८०

पॉलङ्गॉण्ड लत्तैय मेनिप् पुरवलऩ् पॉरुमिक् कण्णीर्
निलङ्गॉण्डु पडर निऩ्ऱु नॅञ्जऴि वात्तत् तम्बि
वलङ्गॉण्डु वयिर वल्वि लिडङ्गॉण्डु वञ्जऩ् मेले
शलङ्गॉण्डु कडिदु शॅऩ्ऱाऩ् ऱलैहॉण्डु वरुवॅ ऩॆऩ्ऱे 2881

पॉलम् कॉण्टल् अत्तैय–सुन्दर मेघ-सम; मेति पुरवलऩ्–शरीर वाले प्रभु श्रीराम; पॉरुमि–दुःख से भरकर; कण्णीर्–आँसू को; निलम् कॉण्टु पटर–भूमि पर लगे फैलने देते हुए; निऩ्ऱु–खड़े रहे और; नॅञ्चु अऴिवात्त–जो मन को घोल रहे थे, उनको; तम्पि–छोटे भाई; वलम् कॉण्टु–परिक्रमा करके; वयिर वल् विल्–वज्र-कठोर धनु; इटम् कॉण्टु–बायें हाथ में लेकर; वञ्चऩ मेले–वंचक इन्द्रजित् पर; चलम् कॉण्टु–गुस्सा ले; तलै कॉण्टु वरुवॆऩ्–सिर काट लाऊँगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; कटितु–शीघ्र; चॆऩ्ऱाऩ्–गये। २८८१

सुन्दर श्याम-मेघ-वर्ण श्रीराम ने विदा तो दे दी। पर वियोगपीड़ा को सह नहीं सके। उनकी आँखों से आँसू बह निकला और भूमि पर गिरकर फैला। घुलते हुए खड़े रहनेवाले उनकी छोटे भाई ने परिक्रमा की। वज्रधनु को बायें हाथ में धर लिया। वंचक पर क्रोध ले वे यह सौगंद करके निकले कि मैं उसका सिर काट लाऊँगा। २८८१

ताऩ्पिरि हिऩ्ऱि लाद तम्बियॆङ् गडुप्पिऩ् चॅल्ला
ऊऩ्पिरि हिऩ्ऱि लाद वुयिरॆऩ्ऩ मऱैद लोडुम्
वाऩ्पॅरु वेळ्वि काक्क वळर्हिऩ्ऱ परुव नाळिल्
ताऩ्पिरिन् देहक् कण्ड तयरदऩ् ऱऩ्ऩै यॊत्ताऩ् 2882

ताऩ् पिरिकिऩ्ऱिलात–अपने से जो कभी अलग नहीं हुआ; तम्पि–वह भाई; ऊऩ् पिरिकिऩ्ऱिलात–शरीर से अवियुक्त; उयिर् ऎऩ्ऩ–प्राणों के समान; ऎम् कटुप्पिऩ्–अति वेग के साथ; चॆल्ला–जाकर; मऱैतलोटुम्–ओझल हो गया तो; वळर्किऩ्ऱ परुव नाळिल्–जब वे बढ़ रहे थे उन दिनों; वाऩ् पॆरु वेळ्वि–बहुत बड़ा यज्ञ; काक्क–रक्षित करने; ताऩ् पिरिन्तु एक–स्वयं जब बिछुड़ गये; कण्ट–उसका अनुभव जिन्होंने किया; तयरतऩ् तऩ्ऩै–उन दशरथ के; ऒत्ताऩ्–समान हुए। २८८२

श्रीराम से लक्ष्मण कभी अलग नहीं हुए थे। अब शरीर से अवियुक्त रहनेवाले प्राणों के समान जो रहे वे तेज़ी से अलग हो रहे हैं और ओझल हो गये। तब श्रीराम दशरथ की स्थिति में रहे, जिनसे

श्रीराम स्वयं अपनी बढ़ती आयु के पर्व में याग संरक्षणार्थ अलग गये थे। २८८२

शेनापदि येमुदल् शेवहर्ताम्, आन्नार्निमिर् कॊळ्ळिहो ळङ्गैयिनार्
कानार्नॆरि युम्मलै युङ्गळियप्, पोन्नार्ह णिहुम्बिलै पुक्कनराल् 2883

चेन्नापतिये मुतल् चेवकर्–सेनापति (नील) आदि वीर; ताम्–खुद; निमिर् कॊळ्ळि–अधिक जलनेवाली उल्का; कोळ्–रखनेवाली; अङ्कैयिनार् आयिनार्–हथेली वाले बने; कान् आर्–जंगल-भरे; नॆऱियुम्–मार्ग; मलैयुम्–और पर्वत; कळिय–पीछे छोड़कर; पोनार्कळ्–जाकर; निकुम्पिलै पुक्कनर्–निकुंभिला पहुँचे। २८८३

सेनापति नील आदि वीरों ने हाथ में उल्काएँ ले लीं। वे उस मार्ग से गये जिसमें जंगल और पर्वत भरे थे और निकुंभिला पहुँचे। २८८३

उण्डायदोर् आलुल हुळ्ळॊरुवन्, कॊण्डानुरै हिन्ऱदु पोर्कुलवि
विण्डानुम् विळुङ्ग विरिन्ददनैक्, कण्डार वरक्कर् करुङ्गडले 2884

उलकु–लोक को; ऒरुवन्–अद्वितीय श्रीमन्नारायण; उळ् कॊण्टान्–अपना उदरस्थ करके; उऱैकिन्ऱतु पोल्–जैसे रहते हैं; ओर् आल् उण्टु आयतु–वैसे वहाँ एक बरगद का पेड़ था; अ अरक्कर् करुम् कटल्–उन राक्षसों का काला-सागर; कुलवि–शोभकर; विण् तानुम् विळुङ्क–आकाश को निगलते हुए; विरिन्ततनै–विस्तृत रहा उसे; कण्टार्–देखा। २८८४

वहाँ एक बरगद का पेड़, सारे लोकों को उदरस्थ करके रहनेवाले विष्णु-सम रहा। वानरों ने वहाँ राक्षसों का काला सेना-सागर देखा, जो इतना विस्तृत था कि आकाश भी उसके अन्दर छिप जाए। २८८४

नेमिप्पॆयर् यूह निरैत्तुनॆडुञ्, जेमत्तदु निन्ऱदु तीविनैयोन्
ओमत्तनल् वॆव्वड वैक्कुडने, पामक्कड निन्ऱदोर् पान्मैयदे 2885

नेमि पॆयर् यूकम् निरैत्तु–चक्रव्यूह रचकर; नॆटुम् चेमत्तु–दीर्घ रक्षण-कार्य में; अतु निन्ऱतु–वह (सेना) जो खड़ी रही वह; ती विनैयोन्–पापी की; ओमत्तु अनल्–होमाग्नि; वॆव् वटवैक्कुटन्–भयंकर बड़वा के साथ; पाम कटल्–विशाल सागर; निन्ऱतोर् पान्मैयतै–जैसे रहता हो उस प्रकार को। २८८५

चक्रव्यूह में उसका दृश्य बड़े सागर का-सा था, जो नृशंसकारी की यागाग्नि रूपी बड़वा के साथ रहे। २८८५

कारायिन कायहरि तेर्परिमात्, तारायिर कोडि तळीइयदुदान्
नीराळियॊ डाळि निऱीइयदुपोल्, ओरायिर मियोशनै युळ्ळदनै 2886

कार् आयिन–मेघ-सम; काय्–क्रोधी स्वभाव के; करि–हाथी और; तेर्–रथ; परिमा–अश्व; तार्–पदाति वीर; आयिर कोटि तळीइयतु–हज़ार करोड़

जो (खड़े) थे वह रीति; नीर् आऴियॊट्टु—जल-समुद्रों के साथ; आऴि निऱ़ैइयतु पोल्—अन्य समुद्र मिले रहते हों जैसे; ओरायिरम् योचनै—एक हज़ार योजन; उळ्ळतनै—विस्तार जो था उसको (लक्ष्मण आदि ने देखा)। २८८६

हज़ार करोड़ मेघ-सम क्रोधशील हाथी, रथ, अश्व और पदातिक मिले खड़े थे। वह दृश्य जल-समुद्र के साथ अन्य समुद्र भी मिलकर एक हज़ार योजन तक फैले पड़े हों —यह भ्रम पैदा करता था। २८८६

पॊऱ्ऱेर्परि माकरि मार्पॊरुतार्, ऍऱ्ऱॆपडै वीररै यॆण्णिलमाल्
उऱ्ऱेविय यूह मुलोहमुडैच्, चुऱ्ऱायिर मूडु शुलायदनै 2887

पॊरु तार्—युद्ध करनेवाली आगे की सेना में; पॊन् तेर्—स्वर्ण-रथ और; परिमा—अश्व; करि मा—हाथी; ऍऱ्ऱे—कितने ही; पटै वीररै—सेना के वीरों को; ऍण्णिलम्—गिना नहीं; उऱ्ऱु—रचित होने; एविय यूकम्—इन्द्रजित् ने जिसकी आज्ञा दी थी वह व्यूह; उलोकम् चुऱ्ऱु उटै—पृथ्वी को वलयित रहनेवाले; आयिरम् ऊटु—समुद्रों से; चुलायतनै—मिश्रित थे (उन्हें देखा)। २८८७

युद्धसन्नद्ध सेना के अगले भाग में कितने ही रथ थे? कितने ही अश्व और कितने ही हाथी थे? पदाति वीरों को तो हमने गिना ही नहीं। इन्द्रजित् द्वारा की हुई इनकी व्यूह-रचना लोक और उसको वलयित कर रहनेवाले समुद्रों की स्थिति का स्मरण दिला रही थी। २८८७

वण्णक्करु मेनियिऩ् मेऩ्मऴैवाऴ्, विण्णैत्तॊडु शॆम्मयिर् वीशुदलाल्
अण्णऱ्करि यान्न लम्बडॆवॆम्, वण्णक्कडल् पोल्वदॊर् पाऩ्मैयदै 2888

करु वण्ण—नीलवर्ण; मेनियिऩ् मेल्—शरीरों पर; मऴै वाऴ्—मेघावास; विण्णै तॊटु—आकाशस्पर्शी; चॆम्मयिर् वीचुतलाल्—लाल बाल हिलते, इसलिए; करियाऩ् अण्णल्—श्यामल भगवान द्वारा प्रेषित; अऩल् अम् पटै—आग्नेयास्त्र-बाध; वॆम् पण्णै कटल् पोल्वतु—भयंकर और राशिकृत समुद्र के समान रहने की; ओर् पाऩ्मैयतै—एक रीति को (देखा)। २८८८

नीलवर्ण राक्षसों के शरीरों पर मेघाश्रय-आकाशस्पर्शी लाल केश हिल रहे थे। तब वह दृश्य तब की भयानक समुद्र-राशि के दृश्य के समान लगता था, जब श्यामवर्ण श्रीराम ने आग्नेयास्त्र को उस पर छोड़ा था। २८८८

वऴङ्गाशिलै नाणॊलि वाऩिल्वरुम्, वऴङ्गार्मुह मॊत्तऩ पणैक्कुलमुम्
तऴङ्गाकडल् वाऴ्वऩ पोल्तहैशाल्, मुऴङ्गामुहि लॊत्तऩ मामुरशे 2889

चिलै—(राक्षसों के) धनुष; नाण् ऒलि—डोरे का स्वन; वऴङ्का—नहीं उठाते; वाऩिल् वरुम्—और आकाश में आनेवाले; पऴम् कार्मुकम्—प्राचीन (इन्द्र-) धनुष; ऒत्तऩ—के समान रहते; पणै कुलमुम्—वाद्यवृन्द भी; कटल् वाऴ्वऩ पोल्—समुद्रमग्न रहे-से; तऴङ्का—नहीं बजते; तकै चाल्—सुयोग्य; मा मुरचु—बड़ी भेरियाँ; मुऴङ्का मुकिल् ऒत्तऩ—न गरजते मेघ के समान रहीं। २८८९

राक्षसों के हाथों के धनु ज्यास्वन नहीं निकालकर आकाश में प्रकट होनेवाले पुरातन इन्द्रधनुष के समान लगे। 'पणै' नामक बाजे भी समुद्रमग्न-से चुप रहे। सुघड़ भेरियाँ भी मौन मेघों के समान चुप रहीं। २८८९

वलियात्त विराहवऩ् वाय्मॊऴियाल्, शलियाद नॆडुङ्गडल् तानॆऩलाय्
ऒलियादुरु शेऩैयै युऱ्ऱॊरुनाळ्, मॆलियादव राऱ्ऱऩर् विण्गिऴिय 2890

वलियात्त–बलवान; इराकवऩ् वाय् मॊऴियाल्–श्रीराघव की आज्ञा से; चलियात–अचंचल; नॆटुम् कटल् ताऩ् ऎऩल् आय्–बड़े समुद्र के ही समान जो रहे; ऒरु नाळ् मॆलियातवर्–और जो एक दिन भी निर्बल नहीं हुए वे वानर वीर; ऒलियातु–विना किसी शब्द के; उरु चेऩैयै–जो थी उस राक्षस-सेना के; उऱ्ऱु–पास जाकर; विण् किऴिय–आकाश को फाड़ते हुए; आऱ्ऱऩर्–शोर मचा उठे। २८९०

श्रीराम की आज्ञा पाकर जो अचंचल रहा उस लम्बे समुद्र के ही समान जो रही, उस वानर-सेना के अथक वीरों ने मौन रही राक्षस-सेना के पास पहुँचकर आकाश को फाड़ते-से उच्च नाद किया। २८९०

आऱ्ऱारॆदि राऱ्ऱल वरक्कर्कुलम्, पोऱ्ऱार् मुरशङ्गळ् पुडैत्तपुहत्
तूऱ्ऱारिवर् कऱ्पडै शूऩ्मुहिलिऩ्, नीऱ्ऱारैयि ऩम्बवर् नीट्टिऩराल् 2891

आऱ्ऱार्–(वानर वीरों ने) घोष किया; अरक्कर् कुलम्–राक्षस-वर्गों ने; ऎतिर् आऱ्ऱल–बदले में नर्दन किया; तार् पोर् मुरचङ्कळ्–मालाओं से अलंकृत भेरियाँ; पुटैत्त–ठनक उठीं; इवर्–ये; कल् पटै–पत्थरों रूपी हथियारों को; पुक–(राक्षस-सेना-मध्य) चलें ऐसा; तूऱ्ऱार्–फेंककर भर दिया; अवर्–उन्होंने; चूल्–जल-गर्भ; मुकिलिऩ्–मेघों की; नीर् तारैयिऩ्–जल-वर्षा के समान; अम्पु नीट्टिऩर्–बाण चलाये। २८९१

वानर वीरों का घोष सुनकर राक्षस-सेनाओं ने भी नर्दन किया। माला से अलंकृत भेरियाँ ठनक उठीं। वानरों ने पत्थरों को सेना के मध्य खूब फेंका। उधर राक्षसों ने जलगर्भित मेघ की धाराओं के समान अस्त्र चलाये। २८९१

मिऩ्ऩुम्बडै वीशलिऩ् वॆम्बडैमेल्, पऩ्ऩुङ्गवि शेऩै पडिन्दुळदाल्
तुऩ्ऩुन्दुऱै नीर्निऱै वाविर्तॊडर्न्, दऩ्ऩङ्गळ् पडिन्दऩ वामॆऩलाय् 2892

वॆम् पटै–(राक्षसों की) क्रूर सेना के; मिऩ्ऩुम्–चमकदार; पटै–हथियारों को; वीचलिऩ्–फेंकने से; पऩ्ऩुम्–कथित; कवि चेऩै मेल्–वानर-सेना पर; तुऩ्ऩुम्–पास-पास रहे; तुऱै–घाटों के; नीर् निऱै वावि–जल-भरे तडाग में; तॊटर्न्तु–लगातार; अऩ्ऩङ्कळ् पटिन्तऩ आम्–हंस ठहरे हैं, ऐसा कहने की रीति से; पटिन्तुळतु–लगे रहे। २८९२

भयंकर राक्षस-सेना ने चमकदार हथियार फेंके तो वे वानर वीरों पर

जा लगे और उन हंसों के समान दिखायी दिये, जो पास-पास के घाटों वाले जलाशय में आ ठहरे हों। २८९२

विल्लुम्मऴु वुम्ऍऴु वुम्मिडलोर्, पल्लुन्दलै युम्मुड लुम्वडियिल्
शॅल्लुम्बडि शिन्दिन शॅन्ऱनवाल्, कल्लुम्मर मुङ्गर मुङ्गदुव 2893

कल्लुम् मरमुम्–(वानर-प्रेषित) पत्थर और तरु; करमुम्–और उनके हाथ; कतुव चॅन्ऱन–राक्षसों पर लगते गये; मिटलोर्–बलवान राक्षसों के; विल्लुम् मऴुवुम् ऍऴुवुम्–धनु, फरसे और वक्रदण्ड; पल्लुम्–दाँत; तलैयुम्–सिर और; उटलुम्–शरीर; पटियिल् चॅल्लुम्पटि–भूमि पर गिरें ऐसा; चिन्तिन–गिरे। २८९३

वानरों के हाथों द्वारा चलाये गये पत्थर और तरु ही नहीं, उनके हाथ भी राक्षसों को पकड़ने गये और उन्होंने सबल राक्षसों के धनु, फरसे और वक्रदंड आदि हथियारों को ही नहीं, बल्कि उनके दाँतों, सिरों और शरीरों को भी भूमि पर गिरा दिया। २८९३

वालुन्दलै युम्मुड लुम्वयिऱुम्, कालुङ्गर मुन्दरै कण्डनवाल्
कोलुम्मऴु वुम्ऍऴु वुङ्गॊऴुवुम्, वेलुङ्गणै युम्वळै युम्विशिऱ 2894

कोलुम्–दण्डायुध; मऴुवुम्–और फरसे; ऍऴुवुम्–वक्रदण्ड; कॊऴुवुम्–'कॊऴु' नाम के हथियार; वेलुम्–साँग; कणैयुम्–बाण; वळैयुम्–वलय; विचिऱ–(इनको) चलाने से; वालुम्–(वानरों की) पूंछें; तलैयुम्–सिर; उटलुम्–और शरीर; वयिऱुम्–पेट; कालुम्–पैर; करमुम्–और हाथ; तरै कण्टन–भूमि पर गिरे। २८९४

राक्षसों ने दंडों, फरसों, वक्रदंडों, 'कॊऴु' नाम के हथियारों, शरों और वलयों का प्रयोग किया, तो वानरों की पूंछें, सिर, शरीर, पेट, पैर और हाथ अलग-अलग होकर भूमि पर गिरे। २८९४

वॅन्ऱिप्पडै वीरनै वीडणन्नी, निन्ऱिक्कडै ताऴ्दल् नीदियदो
शॅन्ऱिक्कडि वेळ्वि शिदैत्तिलैयेल्, ऍन्ऱिक्कडल् वॅल्हुदु मियामॅन्नलुम् 2895

वीटणन्–विभीषण के; वॅन्ऱि पटै वीरनै–विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से; इ कटै–यहाँ; नी–आप; निन्ऱु ताऴ्तल्–खड़े रहकर विलंब करें यह; नीतियतो–नीति होगा क्या; कटि–रक्षण में चलनेवाले; इ वेळ्वि–इस यज्ञ को; चॅन्ऱु–जाकर; चितैत्तिलैयेल्–नष्ट न करियेगा तो; याम्–हम; ऍन्ऱु–कब; इ कटल्–इस सागर- (सी सेना) को; वॅल्कुतुम्–जीतेंगे; ऍन्नलुम्–ऐसा कहने पर। २८९५

तब विभीषण ने विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से कहा कि यहाँ आप खड़े-खड़े देरी लगा दें —क्या यह नीतिसम्मत होगा? रक्षण में चलने वाले याग को आप नष्ट नहीं करेंगे तो हम कब इस सेना-सागर को जीत सकेंगे? । २८९५

तेवादिय रुन्दिशै नान्मुहत्तुम्, मूवामुद लीशनु मूवुलहिन्
कोवाहिय कोंर्ड्रव नुम्मुदलोर्, मेवादव रिल्लै विशुम्बुरैवोर् 2896

तेवातियरुम्–देवादि (१८ वर्ग के) सुर लोग; नाल् तिचै मुकत्तुम्–चतुर्दिशामुख; मूवा मुतल् ईचत्तुम्–जो वृद्ध नहीं होते वे परमेश्वर; मू उलकिन् कोवाकिय–त्रिलोकाधिपति; कोंर्ड्रवत्तुम्–विजयी श्रीमन्नारायण; मुतलोर्–आदि; विचुम्पु उर्रैवोर्–आकाशवासी; मेवातवर् इल्लै–जो नहीं आये वे कोई नहीं थे। २८९६

अठारह वर्गों के देव, चतुर्दिशामुख ब्रह्मा, शिव, त्रिलोकीनाथ श्रीविष्णु, जो अजर हैं आदि आकाशवासियों में कोई नहीं बचे थे, जो उधर आकर एकत्र नहीं हुए हों। २८९६

पल्लार्पडै निन्ड्रदु पल्लणियाय्, पल्लार्पडै निन्ड्रदु पल्पिर्रैवॅण्
पल्लार्पडै निन्ड्रदु पल्लियमुम्, बल्लार्पडै निन्ड्रदु पल्पडैये 2897

पल्लार् पटै–अनेकों की (वानर-) सेना; निन्ड्रतु–सन्नद्ध खड़ी रही; वॅण् पिर्रै पल्–अर्धचन्द्र-सम; पल्लार् पटै–दंतोरों की सेना; निन्ड्रतु–खड़ी रही; पल्लार् पटै–अनेकों की सेना के; पल्लियमुम् निन्ड्रतु–अनेक (मारू) बाजे भी तैयार थे; पल् पटैये–अनेक (वानरों) की सेना; पल् आर् पटै–जिसके हथियार दांत ही थे; निन्ड्रतु–खड़ी रही। २८९७

संख्या में अनेक वीरों की वानर-सेना युद्धसन्नद्ध खड़ी थी। श्वेत अर्धचन्द्र-सम दाँतों वाले राक्षसों की सेना भी तैयार खड़ी थी। अनेक राक्षसों की सेनाओं के मारू बाजे भी बज रहे थे। उनके आगे अनेक भागों में बँटी वानर-सेना दाँतों को ही हथियार मानकर खड़ी थी। (इसमें यमकालंकार है।)। २८९७

अक्कालै यिलक्कुव नप्पडैयुळ्, पुक्कानयि लम्बु पॊळिन्दननाल्
उक्कार वरक्कर्त मूरॊळियप्, पुक्कार्नम नारुरै तॆन्पुलमे 2898

अक्कालै–उस समय; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; अ पटैयुळ् पुक्कान्–उस सेना में घुसे; अयिल् अम्पु पॊळिन्ततन्–तीक्ष्ण शर छोड़े; अव् अरक्कर् उक्कार्–वे राक्षस मरे; तम् ऊर् ऒळिय–अपना गाँव छोड़कर; नमनार् उरै–यम का वासस्थान; तॆन् पुलम्–दक्षिणी लोक; पुक्कार्–पहुँचे। २८९८

तब लक्ष्मण ने उस सेना में प्रवेश किया और तीक्ष्ण शर चलाये। तब उन राक्षसों के प्राण निकल (गिर) गये। वे अपना स्थान, लंका छोड़कर यम के दक्षिणी लोक में पहुँचे। २८९८

तेऱामद माकरि तेर्परिमा, नूऱायिर कोडियिन् नूळिल्पडच्
चेऱार्कुरु दिक्कड लिल्तिडरिल्, कूऱायुह वावि कुरैत्तननाल् 2899

तेऱा–नशे से जो बाहर नहीं आये; मतम् मा करि–(वे) मदमत्त बड़े गज; तेर्–

रथ; परि मा-घोड़े; नूऱायिर कोटियिऩ्-सौ सहस्र करोड़ों की संख्या में; नूऴिल् पट्टुत होकर ढेर लगाये गये; चेऱ्ऱु आर्-पंक-भरे; कुरुति कटलिल्-रक्त-समुद्र में; तिटरिल् कूऱाय् उक-टीलों के समान खण्डों के हो गिरें ऐसा; आवि-राक्षसों के प्राणों को; कुऱैत्तुताऩ्-नष्ट किया। २८९९

नशे में चूर बड़े मदमत्त हाथी, रथ, अश्व आदि सौ हज़ार करोड़ की संख्या में मारे जाकर ढेर बन गये। पंकसहित रक्त-सागर में टीलों के समान राक्षसों के शरीरों के टूकड़े गिरें —ऐसा लक्षमण ने राक्षसों का हनन किया। २८९९

वामक्करि ताळऴि वार्कुऴिवऩ्, तीमॊय्त्त वरक्कर्हळ् शॅम्मयिरिऩ्
तामत्तलै पुक्क तऴङ्गॅरियिऩ्, ओमत्तै निहर्त्त वुलप्पिलवाल् 2900

वामम्-मनोहर; करि-गजों ने; ताळ्-अगले पैरों से; अऴि-जो खोवा; वार्-(उन) लम्बे; कुऴि-गड्ढों में; वऩ्-सुदृढ़; अरक्कर्कळ्-राक्षसों के; तीमॊय्त्त-आग के समान आवृत कर रहनेवाले; चॅम् मयिरिऩ्-लाल केशों के; उलप्पु इल-असंख्य; ताम-माला से अलंकृत; तलै-सिर; पुक्क-घुसे वे; तऴक्कु ॲरियिऩ्-जलती आग के; ओमत्तै निकर्त्त-होमकुण्ड के समान लगे। २९००

मनोहर गजों ने अपने अगले पैरों से जो गड्ढे बनाये, उनमें बलवान राक्षसों के अग्नि-सम लाल केशों से आवृत व माला से अलंकृत असंख्यक सिर गिरे। तब वे गड्ढे प्रज्वलित अग्नि-सहित होमकुंडों के समान लगे। २९००

शिलैयिऩ्कणै यूडु तिऱन्दततिण्, गॊलैवॆङ् गळिमाल्हरि शॆम्बुनल्हॊण्
डुलैविऩ्ऱि किडन्दऩ वॊत्तुळवाल्, मलैयुञ्जुनै युम्वयि ऱुम्मुडलुम् 2901

चिलैयिऩ् कणै-कमान के तीरों के; तिण्-कठोर; कॊलै-संहारक; वॆम्-क्रूर; कळि-मत्त; माल् करि-वड़े हाथियों को; ऊटु तिऱन्तत-बीच से फाड़ने से; चॆम् पुऩल् कॊण्टु-लाल रक्त बहाते हुए; उलैविऩ्ऱि-विना हिले; किटन्तत-पड़े रहे; उटलुम् वयिऱुम्-शरीर और पेट; मलैयुम् चुऩैयुम्-(क्रमशः) गिरि और स्रोत के; ऒत्तुळ-समान दिखे। २९०१

लक्ष्मण के शरों से कठोर, खूनी, भयंकर रूप से मस्त व बड़े-बड़े हाथी विद्ध हुए और खून बह निकला। वे हाथी ढेर बने हिले-डुले विना पड़े रहे। उनके शरीर और पेट क्रमशः पर्वतों और स्रोतों के समान लगे। २९०१

विऱ्ऱॊत्तिय वॆङ्गणै यॆण्गिऩ्वियऩ्, पऱ्ऱॊत्तिय पोऱ्पडि यपपलवुम्
मुऱ्ऱच्चुडर् मिऩ्मिऩि मॊय्त्तुळवऩ्, पुऱ्ऱॊत्त मुडित्तलै पूऴियऩ 2902

पूऴियत-धलि में पड़े रहे; मुटि तलै-किरीट-मंडित सिर; विल् तॊत्तिय-(लक्ष्मण-) धनु से निकले; वॆम् कणै पलवुम्-क्रूर अस्त्र अनेक; ऍण्किऩ्-रीछ के;

वियत्–बड़े; पल् तोत्तिय पोल्–दाँत गड़े हों जैसे; पटिय–लगे इसलिए; चुटर् मिन्मिनि–चमकदार खद्योतों के; मुट्ट–पूर्ण रूप से; मोय्त्तु उळ–जिस पर मँड़राते हों उस; वन् पुट्रु–बड़े (सर्प-) बिल के समान; ओत्त–लगे। २९०२

राक्षसों के किरीटमंडित सिर धूल में पड़े रहे और उनमें लक्ष्मण के धनुप्रेषित कठोर शर रीछों के बड़े दाँतों के समान गड़े रहे। तो वे उन सर्प-बिलों के समान दिखे, जिन पर पूर्ण रूप से खद्योत मँड़रा रहे हों। २९०२

पडुमारि नॅडुङ्गणै पाय्दलिनाल्, विडुमारुदि रप्पुनल् वीऴ्वननवाल्
तडुमाऱॅ डुङ्गॊडि ताऴ्हडल्वाय्, नॅडुमामुहिल् वीऴ्व निहर्त्तननवाल् 2903

नॅटुम् कणै–लक्ष्मण के बड़े शरों की; पटु मारि–बरसनेवाली वर्षा; पाय्तलिनाल्–चली, इसलिए; विटुम्–बहनेवाले; उतिरम् पुनल्–रक्तवारि की; आरु–नदियाँ; वीऴ्वन–(भूमि पर) गिरीं; तटुमाऱुम् नॅटु कॊटि–डगमगानेवाली पताकाएं; ताऴ् कटल् वाय्–गहरे समुद्र में; नॅटु मा मुकिल् वीऴ्व–बड़े काले मेघ गिरते; निकर्त्तन–जैसे लगे। २९०३

लक्ष्मण के शर वर्षा की लम्बी धारों के समान उनके शरीरों में घुसे। तो उनके शरीरों से रक्त नदियों के रूप में बह निकला। उसमें पताकाएँ लड़खड़ाने लगीं और जाकर बड़े मेघों के समान गंभीर समुद्र में मग्न हो गयीं। २९०३

मिन्नार्कणै ताळर वीशविऴुन्, दन्नारुदि रत्तु ळऴुन्दुवदाल्
ऑन्नार्मुऴ वॅण्गुडै यॊत्तननवाल्, शॅन्नाहम् विऴुङ्गिय तिङ्गळिनै 2904

मिन् आर् कणै–चमकदार (लक्ष्मण-) शर; वीच–लगे; ऑन्नार्–शत्रुओं के; मुऴु वॅण् कुटै–पूर्ण श्वेत छत्र; ताळ् अऱ–कटकर; विऴुन्तु–गिरे; अन्नार्–उनके; उतिरत्तुळ्–रक्त में; अऴुन्तुवताल्–मग्न हो गये, इसलिए; चॅम् नाकम्–लाल (केतु) सर्प द्वारा; विऴुङ्किय–निगले गये; तिङ्कळिनै ऑत्तन–चन्द्र के समान रहे। २९०४

(लक्ष्मण के) ज्वलंत शर चले तो शत्रुओं के पूर्ण-श्वेत-छत्रों के मूठ कटे और छत्र गिरे और उनके रक्त के प्रवाह में धँसे। तब वे लाल (केतु) सर्प-ग्रस्त चन्द्र के समान लगे। २९०४

कॊडुनीळ्करि कैयॊडु ताळ्कुरैयप्, पडुनीळ्कुरु दिप्पडर् हिन्ऱननवाल्
अडुनीळुयि रिन्मैयि लाऴ्हिलवाल्, नॅडुनीरिडै वड्गम् निहर्त्तननवाल् 2905

कॊटु–क्रूर; नीळ्–लम्बे; करि–गज; कैयॊटु ताळ् कुरैय–सूँड़ों और पैरों के कट जाने से; पटु नीळ् कुरुति–निकलनेवाले अधिक रुधिर के बहाव में; पटर्किन्ऱन–जो जाते हैं; अटु–मारने; नीळ् उयिर्–प्राण; इन्मैयिन्–नहीं रहे, इसलिए;

आऴ्किल–डूबे नहीं; नॆट्टु नीर् इटै–बड़े जल (समुद्र) में; वङ्कम्–पोतों को; निकर्त्तन–समानता करते थे। २९०५

क्रूर और वड़े हाथियों के पैर और सूँड़ें कटीं। वे रक्त के प्रवाह में तिर चले। उनमें प्राण नहीं थे, इस कारण वे डूबे नहीं और विशाल समुद्र के ऊपर पोतों के समान लगे। २९०५

करियुण्ड कळत्तिडै युऱ्ऱनकाऩ्, नरियुण्डि युहप्पऩ नट्टनवाल्
इरियुण्डव रित्तिय मिट्टिडलाल्, मरियुण्ड वुडऱ्पॊऱै माऩ्ऩवाल् 2906

करि उण्ट–राख जो बने; कळत्तिटै–(युद्ध के) आँगन में; काऩ नरि–जंगली सियार; उण्टि उकप्पऩ–आहार चाहकर; उऱ्ऱऩ–आकर; नट्टऩ–बीच में खड़े रहे; इरि उण्टवर्–जो भागे उनके; इत्तियम्–अपने मधुर बाजों को; इट्टिटलाल्–नीचे गिराने से; मरि उण्ट–मृत; उटऱ्पॊऱै–शरीर-भार को; माऩ्ऩ–(वे बाजे) समानता करते थे। २९०६

जंगली सियार युद्ध के मैदान के मध्यस्थान में आ गये, जो राख बना पड़ा था। भागनेवाले मधुर बाजों को गिराते हुए भागे और वे लाशों के समान दिखे। २९०६

वायिऱ्कऩल् वॆङ्गडु वाळियित्तम्, पायप्परु मक्कुलम् वेवऩवाल्
वेयुऱ्ऱ नॆडुङ्गिरि मोवॆयिलाम्, दीयुऱ्ऱऩ पोऩ्ऱ शिऩक्करिये 2907

वायिल्–मुख में; वॆम् कटु कऩल्–अति क्रूर अग्नि रखनेवाले; वाळि इत्तम्–(आग्नेय) अस्त्र-समूह; चिऩ करि–क्रुद्ध हाथियों पर; पाय–चले तो; परुमम् कुलम्–(हाथियों के हौदों के) गद्दों का समूह; वेवऩ–जले; वेय् उऱ्ऱ–बाँस-सहित; नॆट्टु किरि मी–बड़ी गिरि पर; वॆयिल् आम् ती–गरम आग की लपटें; उऱ्ऱऩ–लगी हों; पोऩ्ऱ–जैसे दिखे। २९०७

निपट क्रूर अग्निमुखी आग्नेयास्त्रसमूह क्रुद्ध गजों पर चले। तो उनके गलों के गद्दे, जो जले, वंशवनसंयुक्त गिरि पर लगी गरम आग के समान लगे। २९०७

अलैवेल यरक्करै यॆण्गिऩुहिर्, तलैमेऩ्मुडि यॆत्तरै तळ्ळुदलाल्
मलैमेलुयर् पुऱ्ऱिऩै वळ्ळुहिराल्, निलैपेर मऱिप्प निहर्त्तऩवाल् 2908

अलै वेलै अरक्करै–तरंगसहित समुद्र के समान राक्षसों के; तलै मेल् मुटियै–सिरों पर के किरीटों को; ऍण्किऩ् उकिर्–रीछों के नाखून; तरै तळ्ळुतलाल्–नोचकर नीचे गिराते हैं इसलिए; मलै मेल् उयर्–पर्वतों पर ऊँचे; पुऱ्ऱिऩै–बिलों को; वळ् उकिराल्–कठोर नखों से; निलै पेर–स्थिति बदलते हुए; मऱिप्पु–उखाड़ते; निकर्त्तऩ–जैसे लगे। २९०८

तरंगसंकुल सागर-सम (सेना के) राक्षसों के सिरों पर से किरीटों को रीछों के नखों ने नोचकर नीचे गिरा दिया। तब ऐसा लगा मानो

रीछ पर्वतों पर उगे हुए सर्प-बिलों को अपने नखों से नोचकर उखाड़ रहे हों। २९०८

मावाळिहण् मामळै पोल्वरलाल् मावाळिहळ् पोर्त्तॆरु माम्ऱवोर्
मावाळिहळ् वन्ऱलै यिन्ऱलैवाळ् मावाळिह ळोडु मरिन्दनराल् 2909

मा वाळिकळ्–बड़े शरों के; मा मळै पोल्–काले मेघों के समान; वरलाल्–आने से; मा–बड़े; आळिकळ्–याळियों (शरभों) को; पोर्–युद्ध में; तॆरुम्–मारनेवाले; मा–श्रेष्ठ; मऱवोर्–(राक्षस) वीर; मा आळिकळ्–बड़े जानवरों (हाथियों व अश्वों) को चलानेवालों के; वन् तलैयिन् तलै वाळ्–कठोर सिरों पर रहनेवाले; मा–काले; अळिकळोटु–भ्रमरों के साथ; मरिन्तनर्–मर गये। २९०९

बड़े-बड़े शर काले मेघों के समान आये। तो वड़े-बड़े 'याळि' यों (शरभों) को युद्ध में मारनेवाले वीर और बड़े जानवरों (हाथियों और अश्वों) को चलानेवाले वीर मरे और उनके साथ उनके कठोर सिरों पर मँड़रानेवाले भ्रमर भी मर मिटे। (यमकालंकार का पद्य है। अतः भाव की विशेषता नगण्य है, यद्यपि अर्थ सुन्दर है।)। २९०९

अङ्गङ्गिळि यत्तुणि पट्टदनाल्, अङ्गङ्गिळि कुऱ्ऱ वमर्त्तलैवर्
अङ्गङ्गिळि शॆम्बुनल् पम्बवलैन्, दङ्गङ्ग णिरम्बि यलम्बियवाल् 2910

अङ्कु अङ्कु–वहाँ-वहाँ; इळि कुऱ्ऱ–जो हारे थे वे; अमर् तलैवर्–युद्ध-नायक; अङ्कम्–अंगों के; किळिय–चिर जायं, ऐसा; तुणि पट्टतनाल्–कट जाने से; अम् कङ्कु–सुन्दर कंकों ने; इळि चॆम्पुनल्–बहनेवाले रक्त को; पम्प–(सब जगह) फैलाते हुए; अलैन्तु–घूमकर; कम् कळ् निरम्पि–अपने सिरों में मलकर; अलम्पिय–धो लिया (अपने शरीरों को)। २९१०

यहाँ-वहाँ जो यूथप हारे उनके अंग विद्ध हुए और कट गये। तब सुन्दर कंक पक्षी रक्त को इधर-उधर फैलाते हुए घूमे और अपने सिरों पर खूब मलकर अपने को धो लिया। २९१०

वन्ऱानैयै वार्कणै मारियिनाल्, मुन्ऱादैयोर् तेर्कॊडु मॊय्पलतेर्प्
पिन्ऱावॆदिर् तानवर् पेरणियैक्, कॊन्ऱानॆन वॆय्दु कुऱैत्तननाल् 2911

तातै–पिता दशरथ ने; मुन्–प्राचीनकाल में; ओर् तेर् कॊटु–एक रथ ले जाकर; मॊय् पल तेर्–घने रूप से रहे अनेक रथों को ले; पिन्ऱा ऎतिर्–बिना पैर उखड़े रहे; तानवर् पेरणियै–उन राक्षसों की बड़ी सेना को; कॊन्ऱान् ऎन्–मारा था, उसी प्रकार; वन् तानैयै–कठोर सेना को; वार् कणै मारियिनाल्–लम्बे शरों की वर्षा से; ऎय्तु–चलाकर; कुऱैत्तनन्–नष्ट किया। २९११

लक्ष्मण वैसे ही कठोर शर चलाकर राक्षसों की सशक्त सेना का

क्षय कर रहे थे, जैसे उनके पिता दशरथ ने, एक रथ पर जाकर अनेक रथों में आये दुर्धर्ष दानवों की सेनाओं को मारा था। २९११

मलैहळु मळैहळुम् वान मीन्गळुम्, अलैयवॅङ् गाल्पॉर वळिन्द वामॅन्न
उलैयवॅङ् गनल्पॉदि योम मुट्रवाल्, तलैहळु मुडल्हळुम् जरङ्ग डाविन 2912

वॅम् काल् पॉर—प्रचण्ड पवन के झोंके से; मलैकळुम्—पर्वत और; मळैकळुम्—मेघ और; वान मीन्कळुम्—आकाश के नक्षत्र; अलैय—अपने स्थान से हटकर; अळिन्तवाम् अॅन—जैसे नष्ट हो जाते हों वैसे; चरङ्कळ् तावित्त—जिन पर (लक्ष्मण-) शर चलकर आये; तलैकळुम् उटल्कळुम्—सिर और शरीर; उलैय—कष्ट पाने; वॅम् कनल् पॉति—भयंकर अग्नि-भरे; ओमम् उट्र—होमकुंड में गये (जा गिरे)। २९१२

(युगक्षय के अवसर पर बहनेवाले) प्रचंड पवन के झोंकों से जैसे पर्वत, मेघ और नक्षत्र विस्थापित होते है और विनष्ट होते हैं, वैसे ही शरों के चलने से राक्षसों के शरीर भयंकर आग से भरे होमकुंड में झुलसने के लिए पहुँचे। २९१२

वारण मत्तैयवन् ऱुणिप्प वान्पडर्
तारणि मुडिप्पॅरुन् दलैह डाक्कलाल्
आरण मन्दिर ममैय वोदिय
पूरण मणिक्कुड मुडैन्दु पोयदाल् 2913

वारणम् अन्नैयवन्—गज (सदृश लक्ष्मण) के; तुणिप्प—काटने से; वान् पटर्—आकाश में उड़नेवाले; तार् अणि—माला पहने हुए; मुटि पॅरुम् तलैकळ्—किरीट-मंडित बड़े सिर; ताक्कलाल्—जा टकराये इसलिए; आरण मन्तिरम् अमैय ओतिय—वेद-मन्त्र जहाँ युक्त रीति से पठन होता रहा; मणि पूरण कुटम्—रत्नमय पूर्ण कुम्भ; उटैन्तु पोयतु—टूट गया। २९१३

कुंजरसन्निभ कुँअर सुमित्रापुत्र ने जिन सिरों को काटा वे माला से अलंकृत किरीट-मंडित सिर आकाश में उड़े। उनके जाकर टकराने से पूर्णकुंभ, जो युक्त वेदमंत्राभिमंत्रित था, टूट गया। २९१३

तारुकॉण् मदकरि शुमन्दु तामरै
शोड्रिय मुहत्तलै युरुट्टिच् चॅन्निड्रत्
तूरुहळ् शॉरिन्दपे रुदिरत् तोङ्गलै
यारुहळ् मुरुङ्गन लवियच् चॅन्ड्रवाल् 2914

तारु कॉळ्—अंकुश का प्रहार पाकर; मत करि—मत्त गज; चुमन्तु—ढोकर और; तामरै चोट्रिय—कमल से बिगड़े; मुकम् तलै—मुखों और सिरों को; उरुट्टि—लुढ़काते हुए; ऊरुकळ् चॉरिन्त—व्रणों से बहनेवाले; चॅम् निरत्तु—लाल रंग के; उतिरत्तु—रक्त की; ओङ्कु अलै—उन्नत लहरों वाली; पेर् आरुकळ्—बड़ी नदियाँ; मुरुङ्कु—खूब जलती हुई; अनल् अविय—आग को बुझाते हुए; चॅन्ट्र—गयीं। २९१४

अंकुश से उकसाये गये गजों और कमल-वैरी (असुंदर) मुखों को और सिरों को बहा ले जानेवाली व्रणनिःसृत तथा तरंगपूर्ण रक्त की बड़ी नदियाँ होमकुण्ड की सर्वभक्षी आग को बुझाती हुई चलीं। २९१४

तॅरिहण विशुम्बिडैत् तुमिप्पच् चॅम्मयिर्
वरिहळ लरक्करदन् दडक्कै वाळॊडुम्
उरुमॅन्न वीऴ्दलु मनलुक् कोक्किय
अॅरुमैहण् मड्रिन्दन मड्रियु मीर्न्दवाल् 2915

तॅरि कणै–(लक्ष्मण के) चुने हुए बाणों के; विशुम्बु इटै–आकाश में; चॅम्मयिर् वरि चुळल्–लाल केशों और बँधी पायलों वाले; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; तम् तटक्कै–विशाल हाथों को; वाळॊटुम्–तलवारों के साथ; तुमिप्प–काटने से; उरुम् ॲन्न–(वे हाथ) अशनि के समान; वीऴ्तलुम्–गिरे तो; अनलुक्कु ओक्किय–अग्नि (में बलि) के लिए तैयार रखे हुए; अॅरुमैकळ् मड्रिन्तन–भैंसे मरे; मड्रियुम् ईर्न्त–अज भी मरे। २९१५

लक्ष्मण द्वारा चुनकर प्रेरित अस्त्र आकाश-मार्ग में लाल केशों और बँधी पायलों वाले राक्षसों के विशाल हाथों को काट दिया तो वे अशनि के समान गिरे जिससे बलि के लिए निश्चित भैंसे मर गये और अज भी विद्ध हो गये। २९१५

अङ्गडङ् गळिन्दपे रुविक् कुन्ड्रिनिन्
अङ्गडङ् गिळिन्दुह वळिन्द वाडवर्
अङ्गडङ् गलुम्बडर् कुरुदि याळियिन्
अङ्गडङ् गिनर्तॊडर् पहळि यञ्जिनार् 2916

अम्–सुन्दर; कटम्–गंडस्थलों से; कळिन्त–निकल बहनेवाली; पेर् अरुविक्–बड़ी सरिताओं वाले; कुन्ड्रिनिन्–पर्वतों (गजों) के समान; अळिन्त आटवर्–हतोत्साह वीर; अम् कटम्–उनके गालों को भी; किळिन्तु उक–चिरकर गिरने देकर; तॊटर् पकळि–लगे आनेवाले शरों से; अञ्चिनार्–डरकर; अङ्कु अटङ्कलुम्–उस मैदान भर में; पटर् कुरुति आळियिन्–फैले रहे रक्त-सागर में; अङ्कण्–वहीं; तङ्किनर्–ठहरे। २९१६

सुन्दर गंडस्थलों से निकल बहनेवाले रक्त की नदियों के साथ रहने वाले पर्वत-से गजों के समान जो वीर थे, वे अब शिथिलमन रहे। उनके गाल भी चिरकर गिर गये। वे अपने पीछे आनेवाले शरों से डरकर युद्ध के मैदान में फैले रहे रक्त-सागर में घुसकर वहीं छिपे बैठे रहे। २९१६

काररैक् करत्तॊडुन् दुणियक् काय्हदिरक्
कोररैत् तलैयुर मरुक्कङ् गूडिनार्

वेऱलत् तूऩ्ऱिऩार् तुळङ्गु मॅय्यिऩार्
नाऱलैक् कुडलिऩर् पलरु नण्णिऩार् 2917

काय् कतिर् कोल्–जलानेवाले प्रकाशमय शर; तलै तलै उऱ–सिर-सिर पर धँसे; काल्–पैर; तलै–सिर; करत्तोडुम्–हाथों के साथ; तुणिय–कटे; मऱुक्कम् कटिऩार्–(इसलिए) मूच्छित होकर; वेल् तलत्तु ऊऩ्ऱिऩार्–साँगों को भूमि पर टेककर; तुळङ्कुम् मॅय्यिऩार्–काँपते शरीर वाले बनकर; नाऱु अलै कुटलिऩर्–लटककर हिलनेवाली आँतों के होकर; पलरुम्–अनेक; नण्णिऩार्–(एक ओर) एकत्रित हुए। २६१७

जलानेवाले उज्ज्वल शर राक्षसों के सिर-सिर पर आ चुभे। इसलिए पैर, सिर और हाथ कटे। राक्षसों पर बेहोशी-सी छा गयी। वे साँगों को भूमि पर टेककर, काँपते शरीरों और बाहर लटककर हिलनेवाली आँतों को लेकर आये और एकत्रित हुए। २९१७

पोङ्गुडऱ् ऱुणिन्दतम् बुदल्वर्प् पोक्किलार्
तोङ्गुडऱ् ऱोण्मिशै यिरुन्दु शोर्वुऱ
अङ्गुडऱ् ऱम्बियैत् तऴुवि यण्मिनार्
तङ्गुडर् मुदुहिडैच् चरियत् तळ्ळुवार् 2918

पोङ्कु उटल् तुणिन्त–मोटे शरीर जिनके कट गये उन; तम् पुतल्वर्–अपने पुत्रों को; पोक्किलार्–जो नहीं छोड़ सके वे राक्षस; तोळ् मिचै–कंधों पर; तोङ्कु उटल् इरुन्तु–लटकनेवाले शरीरों के रहकर; चोर्वु उऱ–लटते; तम् कुटर्–अपनी आँतों के; मुतुकिटै चरिय–पीठ की तरफ़ गिरते; तळ्ळुवार्–उनको (भीतर) धकेलते हुए; अङ्कु–वहाँ; उटल्–लड़नेवाले; तम्पियै अण्मि–छोटे भाई लक्ष्मण के पास जाकर; तऴुविऩार्–घेर गये। २६१८

पिता वहाँ थे, जिनके पुत्रों के मोटे शरीर कट गये। वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए कंधों पर उठाये जाने लगे, तो वे लाशें कंधों पर से लटकती रहीं। स्वयं वे पिता थक गये और उनकी आँतें बाहर निकली थीं। उनको भीतर धकेलते हुए वे गये और श्रीराम के लघुभ्राता को घेरकर खड़े हो गये। २९१८

मूडिय नॅय्यॊडु नऱव मुऱ्ऱिय
शाडिहळ् पॊरियॊडु तहर्न्दु तळ्ळुऱक्
कोडिहळ् पलपल कुऴाङ्गु ऴाङ्गळाय्
आडिऩ वऱुहुऱै यरक्क राक्कैये 2919

नॅय्यॊटु–घी के साथ; नऱवम्–ताड़ी; पॊरियॊटु–लाजे से; मुऱ्ऱिय–भरे; मूटिय–आच्छादनयुक्त; चाटिकळ्–घड़े; तकर्न्तु तळ्ळुऱ–टूटकर गिरें ऐसा; अऱ अरक्कर्–कटनेवाले राक्षसों के; कुऱै आक्कै–कबन्ध; पल पल कोटिकळ्–अनेक कोटि संख्या में; कुऴाम् कुऴाङ्कळाय्–दल बाँधकर; आटिऩ–नाचे। २६१९

घी, ताड़ी, लाजे आदि के भरे, आच्छादनयुक्त घड़ों को तोड़ गिराते हुए शरविद्ध राक्षसों के कोटि-कोटि कबन्ध दल बाँधकर नाचे। २९१९

कालॅन्नक्	कडुवॅन्नक्	कलिङ्गक्	कम्मियर्
नूलॅन्न	वुडऱ्पोरै	तॊडर्न्द	नोयॅन्नप्
पालुरु	पिरैयॅन्नक्	कलन्दु	पन्मुरै
मेलुरु	शेनैयैत्	तुणित्तु	वीऴ्त्तिनान् 2920

काल् अॅन्न–पवन के समान और; कटु अॅन्न–विष के समान; कलिङ्कम् कम्मियर्–साड़ियाँ बुननेवाले बुनकरों के; नूल् अॅन्न–सूत के समान; उटल् पोरै तॊटर्न्त–शरीर में लगे; नोय् अॅन्न–रोग के समान; पाल् उरु पिरै अॅन्न–दूध में पड़े जामन के समान; पल् मुरै–बार-बार; मेल् उरु–अपने पर चढ़ आनेवाली; चेनैयै–सेना को; कलन्तु–उसमें घुसकर; तुणित्तु वीऴ्त्तिनान्–काट गिराया (लक्ष्मण ने)। २६२०

लक्ष्मण ने (इस भाँति) पवन, विष, बुनकर के सूत, शरीर के रोग और दूध के जामन के समान अपने पर बार-बार चढ़ आनेवाली सेना में घुसकर वीरों को काट गिराया। २९२०

कण्डनन्	दिशैतोरुम्	नोक्किक्	कण्णहन्
मण्डल	मरिकड	लन्न	माप्पडै
विण्डॅरि	काल्पॊर	मरिन्दु	वीऴ्रुरुम्
तण्डलै	यामॅनक्	किडन्द	तन्मैयै 2921

तिचै तोरुम्–हर दिशा में; नोक्कि–दृष्टि दौड़ाकर; कण् अकन्–विशाल; मण् तलम्–पृथ्वीतल में; मरि कटल् अन्न–मुड़-मुड़कर चलनेवाली लहरों के समुद्र के समान; मा पटै–बड़ी सेना (के); विण्टु अॅरि–शत्रुता करके जलनेवाली; काल् पोर–हवा के प्रचंड झोंकों से; मरिन्तु वीऴ्रु उरुम्–ऊपर-नीचे कटकर उजड़नेवाले; तण्टलै आम् अॅन–शीतल बगीचे के समान; किटन्त तन्मैयै–पड़े रहने का हाल; कण्टनन्–देखा। २६२१

इन्द्रजित् ने देखा कि विशाल पृथ्वीतल में, मुड़-मुड़कर आनेवाली तरंगों से भरे सागर-सम उसकी सेना के वीर छिन्न-भिन्न हो गिर गये हैं और मैदान प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से उजड़े शीतल उपवन का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा है। २९२१

मिडलित्वॅङ्	गडहरिप्	पिणत्तिन्	विण्डोडुम्
तिडलुम्वॅम्	बुरवियुन्	देरुञ्	जिन्दिय
उडलुम्वन्	डलैहळ्	मुदिरत्	तोङ्गलैक्
कडलुमल्	लादिडॅ	यॊन्रुङ्	गण्डिलन् 2922

मिटलित्–बलवान; कटम् वॅम् करि–मत्त भयंकर हाथियों की; पिणत्तिऩ्–लाशों के; विण् तोंटुम्–गगनस्पर्शी; तिटलुम्–टीले; वॅम् पुरवियुम्–और भयंकर अश्व; तेरुम्–और रथ; चिऩ्तिय उटलुम्–छितरे बड़े शरीर; वऩ् तलैकळुम्–और कठोर सिर; ओङ्कु अलै–उन्नत लहरों के; उतिरत्तु कटलुम् अल्लातु–रक्त-सागर (इन) के अलावा; इटै–मैदान में; ऑऩ्ऱुम् कण्टिलऩ्–कुछ नहीं देखा (इन्द्रजित् ने)। २६२२

उसने, सबल, मत्त और संतापक रीति से क्रुद्ध गजों की लाशों के गगन-स्पर्शी ढेरों, भीमकाय अश्वों, रथों, कटे शरीरों और कठोर सिरों तथा चलायमान लहरों के रुधिर-सागरों के अलावा कुछ नहीं देखा। २९२२

नूऱुनू ऱायिर कोडि नोऩ्गऴल्
माऱुपो ररक्कर यॊरुवऩ् वाट्कणै
कूऱुकू ऱाक्किय कुवैयुम् जोरियिऩ्
आऱुमे यऩ्ऱियो राक्कै कण्डिलऩ् 2923

नूऱु नूऱु आयिर कोटि–सौ-सौ हजार करोड़ (अत्यधिक संख्या में); नोऩ् कऴल्–कठिन पायलधारी; माऱु पोर्–वैरी लड़ाकू; अरक्करै–राक्षसों को; ऑरुवऩ्–अद्वितीय लक्ष्मण के; वाळ् कणै–तीक्ष्ण शरों ने; कूऱु कूऱु आक्किय–जो छिन्न-भिन्न कर दिया वे; कुवैयुम्–उन ढेरों के; चोरियिऩ् आऱुमे अऩ्ऱि–और रक्त की नदियों के अलावा; ओर् याक्कै कण्टिलऩ्–एक शरीर को भी नहीं देखा। २६२३

उसने सहस्र-सहस्र कोटि के कठिन पायल-धारी तथा योद्धा राक्षस वीरों को अनुपम लक्ष्मण के शरों से क्षत-विक्षत होकर टुकड़ों के ढेरों में पड़ा हुआ ही देखा; एक शरीर को भी पूर्ण रूप में नहीं देखा। २९२३

नञ्जिऩुम् वॅय्यवर् नडुङ्गि नावुलर्न्
दञ्जिऩर् शिलर्शिल रडैहिऩ् ऱार्शिलर्
वॅञ्जिऩ वीरर्हळ् मीण्डि लादवर्
तुञ्जिऩर् तुणैयिल रॅऩ्ऱु ळङ्गिऩार् 2924

चिलर्–कुछ लोग; नञ्चिऩुम् वॅय्यवर्–विष से भी क्रूर; नटुङ्कि–डर से काँपकर; ना उलर्न्तु–जीभ सूखकर; अञ्चिऩर्–डरे; चिलर्–और कुछ; अटैकिऩ्ऱार्–इन्द्रजित् के पास पहुँचे; चिलर् वॅञ्चिऩ वीरर्कळ्–कुछ भयंकर क्रोधशील वीर; मीण्टिलातवर्–जो लौट नहीं सके; तुणै इलर् ऍऩ्–असहाय हो गये यह सोचकर; तुळङ्किऩार्–दहले; तुञ्चिऩर्–मरे। २६२४

उसने देखा कि कुछ विष से भी क्रूर वीर लक्ष्मण के सामने भयातुर हो काँप रहे हैं। उनकी जीभ सूख गयी है। कुछ हैं, जो इन्द्रजित् की छाया में पनाह पाने दौड़े आते हैं। कुछ क्रुद्ध वीर देखे गये जो अपने

स्थान से लौट नहीं आ पाये और केवल भय के कारण वहीं प्राण छोड़ चुके हैं। २९२४

ओमवॅङ् गतलविन् वुळॅक्क लप्पॅयुम्
कामर्वण् डरुप्पॅयुम् बिऱवुङ् गट्टऱ
नाममन् दिरत्तॊळिन् मऱन्दु नन्दुरु
तूमवॅङ् गतलॅत्तप् पॊलिन्दु तोन्ऱिनान् 2925

ओम–होमकुण्ड की; वॅम् कतल्–क्रूर आग; अविन्तु–बुझी; उळै–पास की; कलप्पॅयुम्–सामग्रियाँ; कामर्–सुन्दर; वण् तरुप्पॅयुम्–समृद्ध दर्भ; पिऱवुम्–और अन्य; कट्टु अऱ–अस्थिर हुए; नामम्–भयदायी; मन्तिरत् तॊळिल्–मंत्रोच्चारण का कार्य; मऱन्तु–भूलकर; नन्तु उरु–वर्धनशील; तूम–धूम्रसहित; वॅम् कतल् ऎंत–गरम आग के समान; पॊलिन्तु–शोभा के साथ; तोन्ऱिनान्–दिखा। २९२५

(याग की स्थिति देखिए।) होमकुंड की संदाहक आग बुझ गयी। पास की सामग्रियाँ, पनपे कुश सब अस्त-व्यस्त हो छितर गये। मंत्रोच्चारण का काम भूलने से रुक गया। यह देखकर स्वयं इन्द्रजित् तपती व धूम्रसहित आग के समान शोभा। २९२५

अक्कणत् तडुहळत् तप्पु मारियाल्
उक्कव रॊळितर वुयिरु ळोरॅलाम्
तॊक्कन ररक्कनैच् चूळ्न्दु शुऱ्ऱुऱप्
पुक्कदु कविप्पॅरुञ् जेनैप् पोर्क्कडल् 2926

अ कणत्तु–उस क्षण; अट्टकळत्तु–मैदान-जंग में; अम्पु मारियाल्–शर-वर्षा से; उक्कवर् ऒळि तर–मरे हुओं को छोड़कर; उयिर् उळोर् ऎलाम्–जीवित रहे सभी; अरक्कनै चुऱ्ऱुऱ–राक्षस (इन्द्रजित्) को चारों ओर से; चूळ्न्तु तॊक्कनर्–घेरकर एकत्रित हुए; कवि–वानरों की; पोर्–युद्धरत; पॅरुम् चेनै कटल्–बड़ी सेना का सागर; पुक्कतु–घुस आया। २९२६

तब युद्ध के मैदान में शर-वर्षा से जो मरे उनको छोड़ अन्य जो जीवित रहे, वे सब इन्द्रजित् को चारों ओर से घेर गये। इसको देखकर वानर-सेना का बड़ा सागर युद्ध करने मैदान में घुस गया। २९२६

आयिर कोडियि नळवि लप्पडै
एयॅनु मात्तिरत् तिऱ्ऱ दॅन्बदुम्
तूयवत् शिलैवलित् तॊळिलुन् दुन्बमुम्
मेयिन वॅहुळियुङ् गिळर वॅम्बिनान् 2927

आयिरम् कोटियिन्–सहस्र कोटि; अळविल्–संख्या की; अप् पटै–वह सेना; ए ऎंतुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की बेरी में; इऱ्ऱतु ऎंत्पतुम्–नष्ट हो गयी, यह

बात; तूयवन् चिलै वलि तॉऴिलुम्–पवित्र (श्रीलक्ष्मण) का धनुर्बलपराक्रम (दोनों) ने; तुन्पमुम्–दुःख और; एयिन–उचित; वॅकुऴियुम्–कोप; किळर–उकसाये; वॅम्पिनान्–तो वह संतप्त हुआ। २६२७

हज़ार करोड़ की संख्या की थी इन्द्रजित् की सेना। वह 'ए' कहने की देरी के अंदर मिट गयी। इस बात ने और पवित्र लक्ष्मण के धनुर्युद्ध-समर्थ कार्य ने इन्द्रजित् के मन में दुःख और उचित ही कोप को पैदा किया तो वह संतप्त हुआ। २९२७

मॅय्हुलैन् दिरुनिल मडन्दै विम्मुऱच्
चॅय्हॉलैत् तॉऴिलैयुञ् जॅन्ऱ तीयवर्
मॉय्हुलत् तिऱुदियु मुनिवर् कण्डवर्
कैहुलॅक् किन्ऱदुङ् गण्णि नोक्किनान् 2928

इरु निल मटन्तै–बड़ी पृथ्वीदेवी; मॅय् कुलैन्तु–शरीर-स्थिति बिगड़कर; विम्मुऱ–दुःखी हो ऐसा; कॉलै चॅय् तॉऴिलैयुम्–वध-कार्यों को; चॅन्ऱ–जो गये थे; तीयवर्–उन खलों के; मॉय् कुलत्तु–भरपूर कुलों का; इऱुतियुम्–नाश; कण्टवर् मुनिवर्–(जिन्होंने) देखा वे मुनि; कै कुलैक्किन्ऱतुम्–हाथों को हिलाते हैं, उसे; कण्णिन्–अपनी आँखों से; नोक्किनान्–देखा (इन्द्रजित् ने)। २६२८

लक्ष्मण उत्तम पृथ्वीमाता को विक्षत और दुःखी करते हुए राक्षस-हनन का काम करते थे। युद्ध में गये खल लोग अपने भरपूर कुल-सहित मर गये। दोनों बातों को देखकर मुनि लोगों के हाथ हिल उठे। इसको इन्द्रजित् ने देखा। २९२८

मानमुम् बाऴ्बड वहुत्त वेळ्वियिन्
मोनमुम् बाऴ्बड मुडिवि लामुरण्
शेनैयुम् बाऴ्बडच् चिऱन्द मन्दिरत्
तेनैयुम् बाऴ्बड विनैय शॅप्पिनान् 2929

मानमुम् पाऴ् पट–मान नष्ट हुआ; वकुत्त–प्रबन्ध जिसका हुआ उस; वेळ्वियिल्–यज्ञ में; मोनमुम्–मौनव्रत; पाऴ् पट–भंग हुआ; मुरण् मुटिविला–बल में असीम; चेनैयुम्–सेना भी; पाऴ् पट–नष्ट हुई; चिऱन्त मन्तिरत्तु–श्रेष्ठ योजना के; एनैयुम् पाऴ् पट–सबके नष्ट होते (देखकर); इनैय चॅप्पिनान्–ये बातें कहीं (इन्द्रजित् ने)। २६२९

अब इन्द्रजित् का गौरव, यज्ञ का आवश्यक मौनव्रत, असीम बलवान सेना और चिंतित अन्य सभी कार्य —सभी नष्ट हो गये तो वह यों कहने लगा। २९२९

वॅळ्ळमै यैन्दुडन् विरिन्द शेनैयिन्
उळ्ळदक् कुरोणियी रैन्दो डोयुमाल्

अॅळ्ळरुम् वेळ्वियित् रिर्तिदि यऱ्ऱुदल्
पिळ्ळैमै यत्तैयदु शिदैन्दु पेर्न्ददाल् 2930

ऐ ऐन्तु वॅळ्ळम् उटत्-पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या में; विरिन्त-विस्तृत; चेत्तैयित्-सेना में; उळ्ळतु-बची रही; ईरैन्तु अक्कुरोणि ओटु ओयुम्-दस अक्षौहिणी तक ही है; अॅळ् अरुम् वेळ्वि-अनिंद्य यज्ञ; चितैन्तु पोन्ततु-टूट गया; इन्ऱु-आज; इत्तितु-तृप्तिदायक रीति से; इयऱ्ऱुतल्-करना (सोचना); पिळ्ळैमै-बचकाना; अत्तैयतु-सा होगा। २९३०

"पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या की सेना में अब बची केवल दस अक्षौहिणियों की ही! अनिंद्य यज्ञ बीच में ही नष्ट हो गया। अब इस यज्ञ को अच्छी रीति से संपन्न करने का प्रयास बचकाना-सा होगा।"। २९३०

तॊडङ्गिय वेळ्वियित् तूम वॅङ्गतल्
अडङ्गिय दविन्दुळ दमैयु मामत्ऱे
इडङ्गॊडु वॅञ्जॆरु वॆन्ऱि यित्ऱॆत्तक्
कडङ्गिय दॆन्बदऱ् केदु वाहुमाल् 2931

तॊटङ्किय-आरब्ध; वेळ्वियित्-यज्ञ में; तूम वॅम् कत्तल्-धूम्रसहित भयंकर आग; अटङ्कियतु-थम गयी; अवित्तुळतु-बुझ गयी; अमैयुम् आम्-यह बात निश्चित हो गयी; अत्ऱे-न; इटङ्कॊटु-विस्तृत; वॅम् चॆरु-भयंकर युद्ध में; वॆन्ऱि-विजय; ॲतक्कु इन्ऱु अटङ्कियतु-मेरी आज अंत हो गयी; ॲन्पतऱ्कु-इसका; एतु आकुम्-हेतु है। २९३१

"आरब्ध यज्ञ की धुआँ-सह कठोर अग्नि थक गयी, बुझ गयी। यह निश्चित हो गया न? अब यह इसी बात का द्योतक है कि बड़े युद्ध में विजय अब अंत हो गयी; मेरी न रहेगी।"। २९३१

आङ्गदु किडक्कनात् मत्तिशर्क् काऱ्ऱलॆत्
नीङ्गित्तॆ त्तॆन्बदो रिऴिवु नेरुर
वीङ्गुनित् ऱियावरु मियम्ब वॆन्गुलत्
तोङ्गुपे राऱ्ऱलु मॊळियु मॊल्हुमाल् 2932

आङ्कु अतु किटक्क-वहाँ वह रहे; नात्-मैं; मत्तिचर्क्कु-नरों से; आऱ्ऱलॆत्-लड़ नहीं सका; नीङ्कित्तॆत्-इसलिए भागा; ॲन्पतु-ऐसा; ओर्-एक; इऴिवु नेर् उऱ-अपयश हो गया; यावरुम्-ऐसा सभी; ईङ्कु नित्ऱु इयम्प-यहीं रहकर कहते हैं; ॲत् कुलत्तु-मेरे कुल का; ओङ्कु-ऊँचा; पेर् आऱ्ऱलुम्-बड़ा बल और; ऑळियुम्-प्रकाश (यश); ऑल्कुम्-मंद पड़ जायगा। २९३२

"वह वहाँ रहे। अब सब यही कहेंगे कि मैं नरों के सामने ठहर नहीं सका और इसलिए भाग आया। यह अपयश मुझ पर लग गया है। मेरे कुल का बल और यश भी मंद पड़ जायगा।"। २९३२

मन्दिर वेळ्विपोय् मडिन्द दामॆन्नच्
चिन्दॆयि निन्ऱॆन्दुनॊन् दिरुन्दु तेय्वुऱल्
अन्दरत् तमरर्दा मन्दिरक् काऱ्ऱलन्
इन्दिरर्क् कॆयिवन् वलियॆन् ऱेशवो 2933

मन्तिर वेळ्वि–मन्त्रयुक्त यज्ञ; पोय् मटिन्ततु आम्–मिट गया है; ऎन–ऐसा; चिन्तैयिन् निन्ऱु–मन में सोचकर; नॊन्तु–दुःख करके; इरुन्तु–रहकर; तेय्वु उऱल्–क्षीण होना; अन्तरत्तु अमरर् ताम्–व्योम के देवों के; इवन् मन्तिरर्क्कु आऱ्ऱलन्–यह नरों के आगे ठहर नहीं सकता; इवन् वलि–इसका बल; इन्तिरर्क्के–इन्द्र के सम्बन्ध में ही (कारगर) है; ऎन्ऱु–ऐसा; एचवो–निन्दा करने के लिए ही है क्या। २६३३

"यह सोचकर कि मंत्रपुष्ट यज्ञ मिट गया, रोता-घुलता बैठा रहना क्यों? इसलिए कि देव मेरी यह निंदा करें कि यह नर का सामना नहीं कर सकता। इसका बल क्या इन्द्र को हराने में ही समर्थ है?"। २९३३

ऎन्ऱवन् पहर्हिन्ऱ वॆल्लॆ यिन्निरुम्
कुन्ऱॊडु मरङ्गळुम् पिणत्तिन् कूट्टमुम्
पॊन्ऱिन करिहळुङ् गविहळ् पोक्किन
शॆन्ऱ पॆरुम्पड यिरिन्दु शिन्दिन 2934

ऎन्ऱु–ऐसा; अवन्–उसके; पकर्किन्ऱ ऎल्लैयिल्–कहने के अवसर पर; कविकळ्–वानरों ने; इरुम् कुन्ऱॊटु–बड़े पर्वतों को और; मरङ्कळुम्–तरुओं; पिणत्तिन् कूट्टमुम्–लाशों के ढेरों और; पॊन्ऱिन करिकळुम्–मरे हाथियों को; पोक्किन–उठा फेंका; पॆरुम् पटै–राक्षसों की बड़ी सेना; इरिन्तु–हटकर; चिन्तिन–बिखर गयी। २६३४

जब इन्द्रजित् ऐसा सोचकर दुःख कर रहा था, तब वानरों ने बड़े पर्वतों, तरुओं, लाशों के ढेरों और मरे हुए गजों को राक्षसों पर फेंका। इससे राक्षस-सेना अस्त-व्यस्त हुई और बिखर गयी। २९३४

ऒदुङ्गिन रॊरुवर्ही ऴॊरुवर् पुक्कुऱप्
पदुङ्गिनर् नडुङ्गिनर् पहळि पाय्वलिन्
पिदुङ्गिनर् कुडरुडल् पिळवु पट्टनर्
मदम्बुलर् कळिऱॆन्नच् चीऱ्ऱ माऱ्ऱिनार् 2935

ऒरुवर् कीऴ्–एक के नीचे; ऒरुवर्–दूसरा; ऒतुङ्किनर्–छिपा; पुक्कुऱ पतुङ्किनर्–अपने को छिपाकर दुबके; पकळि पाय्तलिन्–शरों के आने से; नटुङ्किनर्–डरे; कुटर् पितुङ्किनर्–बाहर निकली आँतों वाले हो गये; उटल् पिळवु पट्टनर्–छिन्न-शरीर हो गये; मतम् पुलर्–मदहीन; कळिऱु ऎन–गज के समान; चीऱ्ऱम् माऱ्ऱिनार्–शान्तक्रोध हो गये। २६३५

कुछ राक्षस एक-दूसरे के नीचे छिपे दुबके रहे। कुछ चलते आते

लक्ष्मण-शरों से भयविकंपित हुए। कुछ लोगों की आँतें बाहर निकल आयीं। मदशुष्क हाथियों के समान राक्षस शांतकोप हो रहे। २९३५

वीरत्वॅङ् गणैयॊडुङ् गविहळ् वीशिय
कार्वरै यरक्करदङ् गडलिन् वीऴ्न्दन
पोर्नॅडुङ् गाल्पॊरप् पॊऴियु मामळैत्
तारयु मेहमुम् पडिन्द तन्मैय 2936

वीरन्–वीर लक्ष्मण के; वॅम् कणैयॊटुम्–क्रूर शरों के साथ; कविकळ्–वानरों ने; वीचिय–जो फेंके; कार् वरै–वे काले पर्वत; अरक्कर् तम् कटलिल्–राक्षस-सागर में; वीऴ्न्तन–जो गिरे; पोर् नॅटुम्–ढकेलनेवाले उग्र; काल् पॊर–पवन के झोंके में; पॊऴियुम्–बरसनेवाले; मा मऴै तारैयुम्–काली मेघ की धारें; मेकमुम्–और मेघ; पटिन्त तन्मैय–(सागर में) गिरे पड़े हों, उस प्रकार दिखे। २९३६

वीर लक्ष्मण के शर और वानर-प्रेषित काले पर्वत, जो राक्षससेना-सागर-मध्य गिरे, वे प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से समुद्र में मग्न होती काली वर्षा की धारों और मग्न होते पर्वतों के समान लगे। २९३६

तिरैक्कडर् पॆरुम्बडै यिरिन्दु शिन्दिड
मरत्तिनिर् पुडैत्तडर्त् तुरुत्त मारुदि
अरक्कनक् कणित्तॆन वणुहि यन्नवन्
उरक्कदम् जिरप्पन मार्रङ् गूरुवान् 2937

तिरै कटल् पॆरुम् पटै–तरंगाकीर्ण सागर-तुल्य बड़ी सेना; इरिन्तु चिन्तिट–अस्त-व्यस्त हो भाग गयी; मरत्तिनिल्–पेड़ों से; पुटैत्तु–पीटकर; अटर्त्तु–त्रस्त करके; उरुत्त मारुति–जो बड़ा क्रुद्ध हुआ उस मारुति ने; अरक्कनुक्कु अणित्तु ऎन–राक्षस के समीप; अणुकि–जाकर; अन्नवन्–उसके; उरम् कतम्–सबल क्रोध; चिऱप्पन–बढ़ानेवाले; मार्रम् कूरुवान्–शब्द कहे। २९३७

तब तरंगपूर्ण सागर-सदृश राक्षस-सेना को अस्त-व्यस्त हो भगाते हुए हनुमान ने तरुओं से पीटा। क्रुद्ध हनुमान फिर इन्द्रजित् के पास गया और उसके क्रोध को उभाड़नेवाले ये वचन कहे। २९३७

तडन्दिरैप् परवै यत्त शक्कर यूहम् बुक्कुक्
किडन्ददु कण्ड डुण्डे नाणॊलि केट्टि लायो
तॊडर्न्दुपो ययोत्ति तन्नैक् किळॆयॊडुन् दुणिय नूरि
नडन्दवॆप् पॊळुदु वॆळ्वि मुडिन्ददे करुम नन्रे 2938

तटम्–विशाल; तिरै–तरंग-सहित; परवै अन्न–समुद्र के समान; चक्कर यूकम्–चक्रव्यूह में; पुक्कु किटन्ततु–(तुम्हारा) प्रवेश कर (छिपा) रहना; कण्टतु उण्टे–हमने देख लिया; नाण् ऒलि–डोरे का नाद; केट्टिलायो–सुना नहीं क्या;

लौटर्न्तु पोय्–लगा जाकर; अयोत्ति तन्नै–अयोध्या को; किळैयोटुम्–परिवारों के साथ; तुणिय–काटकर; मुरि–मिटाकर; मटन्ततु–वापस आना; ऍप्पोऴुतु–कब; वेळ्वि करुमम्–यज्ञकर्म; नन्रे मुटिन्तते–अच्छा पूरा हुआ न। २९३८

अब हमने तुम्हारा विशाल तरंग-सहित सागर-सदृश चक्रव्यूह के मध्य छिपा रहना देख लिया न ? तुमने धनुष की टंकार नहीं सुनी ? तुम तभी अयोध्या में जाकर श्रीरामजी के परिवार को मार आने की बात कहते थे ! वह काम करके तुम लौटे कब ? क्या यज्ञकर्म सुसम्पन्न हो गया ? । २९३८

एन्दहत् ञाल मॅल्ला मित्तिरैदुन् दिवरत् ताङ्गुम्
बान्दळिऱ् पॅरिय तिण्डोट् परदनैप् पळियिऱ् ऱीर्न्द
वेन्दनैक् कण्डु नीनित् विल्वलङ् गाट्टि मीण्डु
पोन्ददो वुयिरुङ् गॉण्डे पोवदॆ पॉरुन्दिऱ् ऱम्मा 2939

इतितु उऱैन्तु–सुख से रहकर; एन्तु अकल् ञालम् ऍल्लाम्–बहुत विस्तृत सारी भूमि को; इवर–ठीक; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; पान्तळिन्–(आदिशेष-) नाग से अधिक; पॅरिय–बड़े; तिण् तोळ्–व सुदृढ़ कन्धों वाले; परतनै–भरत को; पळियित् तीर्न्त–अपयशविमुक्त; वेन्तनै–राजा को; नी कण्टु–तुम देखकर; नित्–अपना; विल् वलम्–धनु का बल; काट्टि–प्रदर्शन करके; मीण्टु–फिर; उयिरुम् कॉण्टे–प्राण बचाकर; पोन्ततो–आये क्या; पोवतॆ–जाना; पॉरुन्तिऱ्ऱु–उचित रहा; अम्मा–आश्चर्य। २९३९

सुदृढ़ तथा सुस्थिर रूप से भूभार वहन करनेवाले आदिशेषनाग के फन से भी बड़े तथा कठोर कंधों के स्वामी, अपयश-विमुक्त भरत को देखो, उन्हें अपना धनुबल दिखाओ; फिर जीवित लौट आओ —क्या यह सम्भव रहा ? क्या ही खूब रहा तुम्हारा यह कहना कि मैं उधर जा रहा हूँ ? । २९३९

अम्बरत् तमैन्द वल्विऱ् चम्बर नावि वाङ्गि
उम्बरुक् कुदवि शॅय्द वॉरुवनुक् कुदयञ् जॅय्द
नम्बियर् मुदल्व रान मूवर्क्कु नाल्व नान
तम्बियैक् कण्डु नित्ऱन् ऱनुवलङ् गाट्टिऱ् ऱुण्डो 2940

अम्परत्तु अमैन्त–आकाश में जो लड़ाई में लगा उस; वल् विल् चम्परन्–सबल धनुर्धर शंबर के; आवि–प्राणों को; वाङ्कि–दूर कर; उम्परुक्कु–देवों को; उतवि चॅय्त–सहायता जिन्होंने की; ऑरुवनुक्कु–उन अनुपम दशरथ के; उतयम् चॅय्त–पुत्रों के रूप में उदित; नम्पियर्–गुणपूर्ण; मुतल्वराम्–अग्रज; मूवर्क्कु–तीन के बाद; नाल्वतात–चतुर्थ; तम्पियै–लघु सहोदर को; कण्टु–देखकर; नित्तन्–तुमने अपना; तत्तु वलम्–धनु का बल; काट्टिऱ्ऱु उण्टो–दिखाया गया। २९४०

सबल धनुर्वीर शंबरासुर को मारकर जिन्होंने देवों की सहायता की थी, उन अनुपम दशरथ जी के पुत्रों के रूप में अवतरित चार भाइयों में जो चौथे हैं, उन शत्रुघ्न से भी भेंट की थी क्या तुमने? उन्हें अपना धनुसामर्थ्य-प्रदर्शन किया था क्या ? । २९४०

तीयॊत्त वयिर वाळि युडलुरच् चिवन्द शोरि
कायत्तित् शॆवियि नूडुम् वायिनुङ् गणग ळूडुम्
पायप्पो यिलङ्गै बुक्कु वञ्जतै परप्पच् चॆय्युम्
मायप्पो राड्र लॆल्ला मिन्ड्रोडु माळु मन्ड्रे 2941

ती ऑत्त–अग्नि-सदृश; वयिर वाळि–वज्र-बाण; उटल् उड–तुम्हारे शरीर पर लगें; कायत्तित्–(तज्जनित) व्रणों के; चिवन्त चोरि–लाल रक्त; चॆवियित् ऊटुम्–कानों से और; वायितुम्–मुख से; कण्कळ् ऊटुम्–और आँखों से होकर; पाय–बहे; इलङ्कै पोय् पुक्कु–इस स्थिति में लंका में प्रवेश करके; वञ्चतै परप्प–माया फैलाने के निमित्त; चॆय्युम् माय–जो तुम करोगे उस; पोर् आट्रल् ऍल्लाम्–युद्ध का सारा सामर्थ्य; इन्ड्रोटु माळुम्–आज के साथ समाप्त हो जायगा । २९४१

लक्ष्मणजी के अग्नि-सम वज्रनिभ बाण तुम्हारे शरीर में लगेंगे; व्रण होंगे; लाल रक्त तुम्हारे कानों, मुख और आँखों से होकर बाहर निकलेंगे। इसलिए लंका में जा घुसकर माया रचने का तुम्हारा सारा सामर्थ्य आज ही समाप्त हो जायगा । २९४१

पाशमो मलरित् मेलात् पॆरुम्बडैक् कलमो पण्डै
ईशनार् पडैयो मायो नेमियो यादो विन्नुम्
वीशनीर् विरुम्बु हिन्ड्री रदड्कुनाम् वॆरुविच् चालक्
कूशितेम् बोदुम् नुम्मै कूड्ड्रिनार् कुरुह वन्दार् 2942

पाचमो–नागपाश; मलरित् मेलात्–कमलासन का; पॆरुम् पटै कलमो–बड़ा अस्त्र; ईचनार् पण्टै पटैयो–परमेश्वर का पुराना अस्त्र; मायोत्–मायावी श्रीविष्णु का; नेमियो–चक्र; इन्नुम्–और; नीर्–तुम; यातो वीच विरुम्पुकिन्ड्रीर्–हम पर क्या चलाना चाहते हो; अतड्कु–उससे; नाम्–हम; चाल वॆरुवि–बहुत डरकर; कूचितेम्–संकोच करते हैं; पोतुम्–बस; नुम्मै–तुम्हारे; कूड्ड्रितार्–यम; कुरुक वन्तार्–पास आया है । २९४२

अब तुम क्या अस्त्र चलाओगे ? नागपाश, कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र ? परमेश्वर का पाशुपतास्त्र ? या मायावी नारायण का चक्र ? या दूसरा कौन सा अस्त्र ? ओह ! हम बहुत भयभीत हैं ! (व्यंग्य) । बस ! (तुम्हारा माया कुछ नहीं रहा ।) तुम सबको
लिए यम आ चुका है

वरङ्गणी रुडैय वाऱु मायङ्गळ् वलूल वाऱुम्
बरङ्गोळ्वा तवरिर् ऱैयवप् पडैक्कलम् बडैत्त वाऱुम्
उरङ्गळु नित्ऱ वत्ऱे युमृनैना मुयिरि नोडुम्
जिरङ्गोळत् तुणिन्द दनृन्त डुण्डडु तिरुम्बि नोमो 2943

नीर् वरङ्कळ् उटैय आऱुम्–तुम वर पा चुके हो, वह स्थिति और; मायङ्कळ्–मायाओं में; वलूल आऱुम्–समर्थ हो वह बात; परम् कोळ्–श्रेष्ठता रखनेवाले; बातवरिल्–देवों से; तैयव पटै कलम्–दिव्यास्त्र; पटैत्त आऱुम्–तुम्हारे ग्रहण किये रहने का भाव; उरङ्कळुम्–तुम्हारे बल; नित्ऱ अत्ऱे–स्थिर रहनेवाले हैं न; नाम्–हमने; उम्मै–तुमको; उयिरिनोटुम्–प्राणों के साथ; चिरम् कोळ–सिर ले लेना; तुणिन्तत्तु अन्ऱवु–ठाना था वह निश्चय; उण्टतु–था; अतु तिरुम्पिनोमो–उससे चूके क्या। २९४३

तुम्हारे प्राप्त वरों की महिमा, माया का बल, श्रेष्ठ देवों से प्राप्त हथियारों की स्थिति, तुम्हारे सामर्थ्य —यह सभी स्थायी हैं न ? तो भी हमने तुम्हारे प्राणों के साथ (या प्राणों के रहते) सिरों को चुन लेने का निश्चय किया था ! क्या हम उसमें चूके ? । २९४३

विडन्दुडिक् कित्ऱ कण्डत् तण्णलुम् विरिञ्जत् ऱानुम्
पडन्दुडिक् कित्ऱ नाहप् पार्कडऱ् पळ्ळि यानुम्
जडन्दुडिक् किलराय् वन्दु ताङ्गिनुञ् जाद ऱिण्णम्
इडन्दुडिक् कित्ऱ दुण्डे यिरुत्तिरो वियम्बु वीरे 2944

विटम् तुटिक्कित्ऱ–जिसमें विष शोभता है ऐसे; कण्टत्तु अण्णलुम्–कण्ठ के प्रभु और; विरिञ्चन् तानुम्–विरंचि और; पाल् कटल्–क्षीरसागर में; पटम् तुटिक्कित्ऱ–फन फैलाये; नाक–सर्प की; पळ्ळियानुम्–शय्याशायी; चटम् तुटिक्किलराय्–शरीर को कंपित न होने देते हुए; वन्तु ताङ्किनुम्–आकर सहायता दें तो भी; चातल् तिण्णम्–मरना ध्रुव है; इटम् तुटिक्कित्ऱतु–बायां (अंग) फड़कता; उण्टे–है न; इरुत्तिरो–(जीवित) रहोगे क्या; इयम्पुवीर्–कहो । २९४४

चाहे विषशोभित कंठवाले शिवजी, विरंचि, क्षीरसागर-फणी-शेषशायी नारायण आदि विना किसी शरीरकंपन के आकर तुम्हें अवलंब दें— पर तुम्हारी मृत्यु ध्रुव है । तुम्हारे बायें अंग फड़कते हैं कि नहीं । क्या तुम जीवित रहोगे ? बताओ ! । २९४४

कोल्वन्ऩेन् ऱुन्नैत् तान्ने कुरित्तीरु शूळुङ् गोण्ड
विल्लिवन् दरुहु शार्न्दुन् शेनैये मुळुदुम् वीट्टि
वल्लैनी पोरुवा यॆन्ऱु विळिक्कित्ऱान् वरिवि ऩाणित्
ऑल्लॊलि यैय शॆय्यु मोमत्तुक् कुरुप्पोन् ऱामो 2945

कुरित्तु–तुम्हारे सम्बन्ध में; उन्नै तान्ने कोल्वन्–तुम्हें मैं स्वयं मारूँगा;

ऍंन्ऱ-ऐसी; ओरु मूळम् कौणट-एक प्रतिज्ञा जिन्होंने की; विल्लि-वे धनुर्धर; वन्तु-आकर; अरुकु चारन्तु-नियराकर; उन् चेत्तंयं मुळ्ळुतुम् वीट्टि-तुम्हारी सारी सेना को मिटाकर; वल्लै नी-प्रतापी तुम; पौरुवाय्-युद्ध करो; ऍन्ऱ-ऐसा; विळिक्कित्तृरान्-बुलाते हैं; ऐय-इन्द्रजित्; विल् नाणिन्-धनु के डोरे की; ओल् ओलि-'ओल' की ध्वनि; चॅय्युम् ओमत्तुम्-जो करते हो उस याग का; उऱुप्पु ऒन्ऱ आमो-एक अंग बन सकेगी क्या। २६४५

तुम्हारे सम्बन्ध में लक्ष्मण ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं ही उसका वध करूँगा। वे धनुर्धर यहाँ आकर तुम्हारी सारी सेना को मिटा चुके। अब ललकार रहे हैं कि 'आओ लड़ने' बाबा! उनके धनु की टंकार-ध्वनि भी तुम्हारे यज्ञहोम का एक अंग है क्या ? । २९४५

मूवहै युलहुङ् गाक्कु मुदलवन् तम्बि पूशल्
तेवर्हण् मुनिवर् मऱ्ऱुन् दिऱत्तिऱत् तुलहत् जेर्न्दार्
यावरुङ् गाण निन्ऱा रिनियिऱै ताळ्प्प वॅन्नो
शावदु शरद मन्ऱो वॅन्ऱनन् ऱरुमङ् गाप्पान् 2946

तरुमम् काप्पान्-धर्मसंरक्षक हनुमान; मूवकै उलकुम् काक्कुम्-त्रिलोकपालन-कर्ता; मुतलवन्-आदिनाथ के; तम्पि-छोटे भाई; पूचल् काण-जो युद्ध (करेंगे) उसको देखने; तेवर्कळ-सुर; मुनिवर्-मुनि; मऱ्ऱुम्-अन्य; तिऱत्तिऱत्तु-विध विध; उलकम् चेर्न्तार्-लोकवासी; यावरुम्-सभी; निन्ऱार्-आ खड़े हैं; इनि-अब; इऱै-थोड़ा भी; ताळ्प्पतु-विलंब करना; ऍन्नो-क्यों; चावतु-मरना; चरतम् अन्ऱो-ध्रुव है न; ऍन्ऱनन्-कहा। २६४६

धर्मसंरक्षक हनुमान ने आगे जारी किया— त्रिलोकपालक आदिभगवान के भाई के युद्ध को देखने के निमित्त देव, मुनि और अन्य सभी लोकों के सभी वासी आ जुटे हैं। अब थोड़ा भी विलंब क्यों ? मरना तो निश्चित है न ? । २९४६

अन्नवा शहङ्गळ् केळा वनलुयिर्त् तलङ्गर् ऱोळान्
मिन्नहु पहुवा यूड वॅयिलुह नहैपोय् वीङ्ग
मुन्नरे वन्दिम् माऱ्ऱ माऱ्ऱलिन् मौळिन्द वाऱे
ऱॅन्नदो नीयिरॅन्नै यिहळ्न्दवॅन् ऱिनैय शौन्नान् 2947

अलङ्कल् तोळान्-मालाभुज; अन्न वाचकङ्कळ-वे वचन; केळा-सुनकर; अनल् उयिर्त्तु-अग्नि की साँस निकालकर; मिन् नकु-बिजली के-से प्रकाश वाले; पकु वाय् ऊट-फटे मुँह से; वॅयिल् उक-धूप-सा निकालते हुए; नकै-हँसी के; पोय् वीङ्क-उठकर वर्धित होते; मुन्नर् वन्तु-सामने आकर; इ माऱ्ऱम्-ये वचन; आऱ्ऱलिन् मौळिन्त-ज़ोर के साथ बोलने का; आऱु एतु-हेतु क्या है; नीयिर्-तुम्हारा; ऍन्नै इकळ्न्ततु-मेरा अपमान करना; ऍन्नतो-क्यों; ऍन्ऱु-कहकर; इनैय चौन्नान्-यह बोला। २६४७

मालाधारी कंधों वाले इन्द्रजित् ने उन वचनों को सुना तो उसे अपार क्रोध हुआ। साँसें आग-सी गरम निकलीं। बिजली का-सा प्रकाश छिटकानेवाले फटे-से मुख के अन्दर से भी लू-सा हवा निकली। हँसी उठी जो अट्टहास में बदली। उसने हनुमान से पूछा कि तुम्हारे मेरे सामने आकर ऐसी बातें कहने के साहस का आधार क्या है? मेरा उपहास कैसे करते हो। उसने आगे कहा। २९४७

मूण्डपोर् तोऱुम् बट्टु मुडिन्दनीर् मुऱैयिऱ् ऱीर्न्दु
मीण्डपो ददऩै यॅल्लाम् मऱत्तिरो विळिदल् वेण्डि
ईण्डवा वॅऩ्ऩा निऩ्ऱी रित्तऩ पेरुम् बट्टु
माण्डपो डुयिर्तन् दीयु मरुन्दु वैत्तऩिरो माऩ 2948

मूण्ट पोर् तोऱुम्–जो हुए उन सभी युद्धों में; पट्टु मुटिन्त नीर्–मरे सो तुम; मुऱैयिल् तीर्न्तु–स्वाभाविक रीति के विपरीत; मीण्ट पोतु–जीवित जब हुए तब; अतऩै ऎल्लाम्–उस सबको; मऱत्तिरो–भूल गये क्या; इत्तऩै पेरुम्–इतने सारे; पट्टु–आहत होकर; माण्ट पोतु–जब मरे तब; उयिर् तन्तु ईयुम्–जीवन प्रदान करनेवाली; मरुन्तु–ओषधि; वैत्तऩिर् माऩ–जैसे रखते थे वैसे; विळितल् वेण्टि–मरना चाहकर; ईण्ट वा–नियरा आओ; ऎऩ्ऩा निऩ्ऱीर्–कहते खड़े हो। २९४८

जितने भी युद्ध हुए उन सब में तुम मरे थे। पर प्रकृति के नियमों के प्रतिकूल प्राण पा गये! क्या वह सब भूल गये? जब इतने वानर मेरे प्रहार पाकर मरे तब उन्हें जिलाने की ओषधि तुम रखते थे। वैसे ही अब उन्हें मौत के पास भिजवाने की ओषधि ढूँढ़ते हुए मेरे पास आ गये क्या? । २९४८

इलक्कुव ऩाह मऱ्ऱै यिरामऩ याह वीण्डु
विलक्कुव रॅल्लाम् वन्दु विलक्कुह कुरङ्गु वॅळ्ळम्
गुलक्कुल माह माळङ् गॊऱ्ऱमु मऩिदर् कॊळ्ळुम्
अलक्कणु मुऩिवर् तामु ममरुङ् गाण्ब रऩ्ऱे 2949

इलक्कुवऩ् आक–लक्ष्मण हो; मऱ्ऱै–चाहे; इरामऩे आक–स्वयं राम हो; ईण्टु–यहाँ; विलक्कुवर् ऎल्लाम्–रोकनेवाले सभी; वन्तु–आकर; विलक्कुक–रोकें; कुलम् कुलमाक–दल बाँधकर; कुरङ्कु वॅळ्ळम्–वानर की बाढ़; माळम्–मर मिटें इसमें; कॊऱ्ऱमुम्–मेरी वीरता और; मऩितर् कॊळ्ळुम्–नरों का जो मिलेगा वह; अलक्कणुम्–दुःख भी; अमररुम्–देव और; मुऩिवर् तामुम्–मुनि; काण्पर्–देखेंगे। २९४९

चाहे लक्ष्मण हो चाहे स्वयं राम! सब यहाँ आकर मुझे रोकने का प्रयास भले ही करें। पर यह वानरों की बाढ़ झुण्ड के झुण्ड मर जायगी। उसको साधनेवाली मेरी वीरता को और इससे होनेवाले नर के दुःख को देव और मुनिवृन्द देखेंगे न? । २९४९

यानुडै विल्लु मॅन्बोर् ट्रोळ्हळु मिरुक्क विन्तुम्
ऊनुडै युयिर्ह ळियावु मुय्युमो वॊळिप्पि लामल्
कूनुडैक् कुरङ्गि तोडु मनिदरैक् कॊन्ऱु शॆन्ऱव्
वानिडैत् तॊडर्न्दुङ् गॊल्वॆन् मरुन्दिनु मुय्य माट्टीर् 2950

यानुटै विल्लुम्–मेरा धनुष और; ॲन् पोन् तोळ्कळुम्–मेरे मनोरम कन्धे; इन्नुम् इरुक्क–अब भी रहते हैं इस हालत में; ऊन् उटै उयिर्कळ् यावुम्–शरीरधारी सभी जीव; ऑळिप्पु इलामल्–विना मिटे; उय्युमो–बचेंगे क्या; कून् उटै कुरङ्कितोटु–कुबड़े वानरों के साथ; मनितरै–नरों को; कॊन्ऱु–मारकर; अ वानिटै ॲन्ऱुम्–उस व्योमलोक में (जायें तब भी) जाकर; तॊटर्न्तुम्–पीछा करके भी; कॊल्वॆन्–मारूंगा; मरुन्तिनुम्–ओषधि से भी; उय्य माट्टीर्–बचोगे नहीं। २९५०

जहाँ मेरा धनु और मेरे मनोरम कंधे हैं, वहाँ शरीरधारी सभी जीव विना मरे जीते रहेंगे क्या ? इन कुवड़े वानरों को और नरों को, वे देव बनकर स्वर्ग जायँ तो भी पीछा करके मार दूंगा। ओषधि से ही बचाये नहीं जा सकोगे। २९५०

वेट्किन्ऱ वेळ्वि यिन्ऱु पिऴैत्तदु वन्ऱो मॆन्ऱु
केट्किन्ऱ वीर मॆल्लाङ् गिळत्तुवीर् किळत्तल् वेण्डा
ताऴ्क्किन्ऱ दिल्लै युम्मैत् तनित्तनित् तलैहळ् पाऱच्
चूऴ्क्किन्ऱ वीर मॆन्गैच् चरङ्गळायत् तोन्ऱु मन्ऱे 2951

इन्ऱु–आज; वेट्किन्ऱ वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; पिऴैत्तनु–व्यर्थ हो गया; वॆन्ऱोम्–हम जीत गये; ॲन्ऱु–ऐसा; केट्किन्ऱ–सुनायी देनेवाले; वीरम् ॲल्लाम्–वीरता की सब बातें; किळत्तुवीर्–कह रहे हो; किळत्तल् वेण्टा–मत कहो; उम्मै–तुम्हें; तनि तनि–अलग-अलग; तलैकळ् पाऱ–सिर आधारहीन करने; चूऴ्क्किन्ऱ वीरम्–जो सोच रहा हूँ वह वीरता का काम; ॲन् कै चरङ्कळाय्–मेरे हाथ के बाणों के रूप में; तोन्ऱुम्–प्रगट होगा; ताऴ्क्किन्ऱतु इल्लै–अब विलंब करना नहीं। २९५१

तुम लोग जो वीरता के वचन कह रहे हो कि आज इसका किया गया यज्ञ बेकार हो गया और हम जीत गये, उसको बन्द करो। तुम वैसा बोलना छोड़ दो। मेरी वीरता, जो तुम्हारे हर एक के सिर को अलग-अलग तोड़ देने को सोच रही है, मेरे हाथों के शरों के रूप में प्रकट होगी। अब कोई विलंब नहीं होगा। २९५१

मऱ्ऱॆला मुम्मैप् पोल वायिनार् चॊल्ल माट्टेन्
वॆऱ्ऱिदान् मुन्नन् दन्दीर् विरैवदु वॆल्लर् कॊल्ला
उऱ्ऱुना नुऱुत्त कालत् तॊरुमुऱै यॆदिरे निऱ्कक्
किऱ्ऱिरो वित्तु माण्डु किडत्तिरो नडत्ति रोदान् 2952

उन्ऩै पोल–तुम्हारी भाँति; ऍल्लाम्–सब; वायिऩाल्–मुख खोलकर; चॊल्ल माट्टेऩ्–नहीं कहूँगा; मुऩ्ऩुम्–पूर्व भी; वॆऩ्ऱि ताऩ् तन्तीर्–मुझे विजय ही दिलायी थी; विरैवतु–जल्दी करना; वॆल्लऱ्कु ऒल्ला–जीतने के लिए उपयोगी नहीं होगा; नाऩ् उऱ्ऱु ऒरु मुऱै–मैंने खूब एक बार; उऱ्ऱत कालत्तु–गुस्सा किया, उस समय; ऎतिरे निऱ्क किऱ्ऱिरो–सामने खड़े रह सको क्या; इऩ्ऩुम् माण्टु किटत्तिरो–फिर एक बार मरा पड़ा रहना चाहोगे; नटत्तिरो–या चले जाओगे। २९५२

तुम्हारी भाँति मैं बातों में शेखी न बघारूँगा। पहले भी तुमने विजय ही दिला दी थी। किसी बात में उतावली विजय नहीं दिलाती। एक बार मैं लाल आँखें दिखाऊँ तो तुम ठहर भी सकोगे क्या? अब फिर मरकर पड़ा रहना चाहते हो या बचकर चलोगे?। २९५२

निऩ्मिऩ्ग णिऩ्मि ऎऩ्ऩा ऎरुप्पॆऴ विऴित्तु नीण्ड
विऩ्मिऩ्गॊळ् कवश मिट्टाऩ् वीक्किऩाऩ् तूणि वीरप्
पॊऩ्मिऩ्गॊळ् कोदै कैयिऱ् पूट्टिऩाऩ् पॊऱुत्ताऩ् पोर्विल्
ऎऩ्मिऩ्गॊळ् वयिरत् तिण्डे रेऱिऩा ऩॆऱिन्दा ऩाणि 2953

निऩ्मिऩ्कळ्–खड़े रहो; निऩ्मिऩ्–खड़े रहो; ऎऩ्ऩा–कहकर; ऎरुप्पु ऎऴ–आग-सी निकालते हुए; विऴित्तु–तरेरकर; नीण्ट–बहुत; विल् मिऩ् कॊळ्–चमकवार; कवचम् इट्टाऩ्–कवच पहन लिया; तूणि वीक्किऩाऩ्–तूणीर बाँध लिया; वीर–वीरतायुक्त; पॊऩ् मिऩ् कॊळ्–मनोरम और उज्ज्वल; कोतै–अंगुलित्राण; कैयिल् पूट्टिऩाऩ्–उँगलियों में पहने; पोर् विल्–युद्ध-धनु; पॊऱुत्ताऩ्–धारण करके; ऎल्–सूर्य के; मिऩ् कॊळ्–(समान) प्रकाश-युक्त; वयिरम् तिण्–वज्रदृढ़; तेर् एऱिऩाऩ्–रथ पर चढ़ा; नाणि ऎऱिन्ताऩ्–डोरा टंकोरा। २९५३

इन्द्रजित् ने आगे जारी रखा। ठहरो, ठहरो। फिर आग-सी उगलती आँखों से तरेरा। बहुत उज्ज्वल कवच पहना। तूणीर बाँध लिया। फिर वीरता-द्योतक मनोहर तथा उज्ज्वल अंगुलित्राण पहन लिये। अन्त में युद्ध-चाप हाथ में ले रथ पर आरूढ़ हुआ और डोरा टंकोरा। २९५३

ऊदिऩाऩ् शङ्गम् वाऩत् तॊण्डॊडि महळि रॊण्गण्
मोदिऩार् कणत्तिऩ् मुऩ्ऩे मुऴुवदु मुरुक्कि मुऱ्ऱक्
कादिऩा ऩॆऩ्ऩ वाऩोर् कलङ्गिऩार् कयिलै याऩुम्
पोदिऩाऩ् ऱाऩु मिऩ्ऱु पुहुन्ददु पॆरुम्बो रॆऩ्ऱार् 2954

शङ्कम् ऊतिऩाऩ्–शंख बजाया; वाऩत्तु–देवलोक की; ऒण् तॊटि मकळिर्–उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियों ने; ऒण् कण–उज्ज्वल आँखों को; मोतिऩार्–पीट लिया; वाऩोर्–देव; कणत्तिऩ् मुऩ्ऩे–एक क्षण (बीतने) के पहले; मुऴुवतुम् मुरुक्कि–सबको मिटाकर; मुऱ्ऱ कातिऩाऩ्–पूर्ण रूप से मार दिया; ऎऩ्ऩ–ऐसा समझकर; कलङ्किऩार्–बेचैन हुए; कयिलैयाऩुम्–कैलासपति; पोतिऩाऩ् ताऩुम्–और कमलासन; इऩ्ऱु–आज; पॆरुम् पोर् पुकुन्ततु–बड़ा युद्ध हो गया; ऎऩ्ऱार्–बोले। २९५४

इन्द्रजित् ने शंख ले बजाया। उसका नाद सुनकर देवलोक की छविमय कंकणधारिणी अंगनाओं ने अपनी आँखें पीट लीं। देवों ने सोच लिया कि ग़ज़ब हो गया। एक क्षण बीतने के पहले ही सारी वस्तुओं को वह अवश्य तहस-नहस कर देगा। वे बहुत उद्विग्न हुए। स्वयं कैलासपति और कमलासन ने भी कहा कि आज बड़ा युद्ध आरंभ हो गया है। २९५४

इळैत्तपे रियाहन् दाने यान्जॅय्द तवत्ति नाले
पिळैत्तदु पिळैत्तत लाले यिवनिनिप् पिळैक्क लाऱ्ऱान्
अळैत्तदु विदियॆ याहु मिलक्कुव नम्बि नाले
उळैत्तदु काण्गित् ऱोमॅन् ऱोङ्गिना रुम्ब रॅल्लाम् 2955

उम्पर् ॲल्लाम्–सभी देव; याम् चॅय्त तवत्तिनाले–हमारी की हुई तपस्या से; इळैत्त–(इन्द्रजित्) कृत; पेर् याकम्–बड़ा यज्ञ; पिळैत्ततु–अधरा रह गया; पिळैत्तलाले–उस चूक से; इनि–अब; इवन्–वह; पिळैक्कल् आऱ्ऱान्–नहीं बच सकेगा; अळैत्ततु–(लक्ष्मण को) बुला लाया; वितिये आकुम्–प्रारब्ध ही; इलक्कुवन् अम्पिनाले–लक्ष्मण के शर से; उळैत्ततु–दुःखी होगा; काण्किन्ऱोम्–देखनेवाले हैं; ॲन्ऱु–ऐसा; ओङ्किनार्–सन्तोष में बढ़े। २९५५

सभी देवों ने आपस में कहा कि हमारी की हुई तपस्या का फल था कि इन्द्रजित्-कृत बड़ा यज्ञ निरर्थक हो गया। चूँकि यज्ञ में दोष आ गया, अब वह जीवित रह नहीं सकेगा। इसका प्रारब्ध ही लक्ष्मण को इधर बुला लाया है। अब यह लक्ष्मण के अस्त्रों से त्रस्त होगा—हम देखेंगे। इस विचार से उनके मोद का पारा चढ़ा। २९५५

नाण्डॊळि लोशै वीशिच् चॅविदॊरु नडत्त लोडुम्
आण्डॊळिन् मऱन्दु कैयि नडुक्किय मरनुङ् गल्लुम्
मीण्डन मरिन्दु शोर विळुन्दन विळुन्द मॅय्ये
माण्डन मॅन्ऱे युन्नि यिरिन्दन कुरङ्गिन् माले 2956

नाण् तॊळिल् ओचै–डोरे के (टंकार के) काम से उठी ध्वनि; वीचि–फैलकर; चॅवि तॊऱुम्–कान-कान में; नटत्तलोटुम्–ज्योंही लगी त्योंही; कुरङ्किन् माले–वानर-पंक्तियाँ; आण तॊळिल् मऱन्तु–पौरुष-कृत्य भूलकर; कैयिन् अटुक्किय–हाथ में रखे हुए; मरनुम् कल्लुम्–तरुओं और पर्वतों को; मीण्टन–फिर से; मरिन्तु चोर–(भूमि की ओर) लोट के गिरने देते हुए; विळुन्तन–खुद गिर गयीं; विळुन्त–जो ऐसे गिरे उन्होंने; मॅय्ये माण्टनम्–हम सचमुच मर गये; ॲन्ऱे उन्नि–वही समझकर; इरिन्तन–उठ भागे। २९५६

ज्योंही धनुष की टंकार-ध्वनि वानरों के कानों में पड़ी, त्योंही दल-दल के वानर अपना पौरुष ही भूल गये। उनके हाथ में रहे पर्वत और तरु नीचे खिसक गये और वे स्वयं भी गिर गये। वे यही समझ गये कि हम सचमुच मरे हैं। फिर किसी विध उठकर भागे। २९५६

पडैप्पॅरुन् दलैवर् निन्ऱा रल्लव रिऱुदि पऱ्ऱुम्
अडैप्परुङ् गालक् काऱ्ऱा लाऱ्ऱल दाहिक् कीऱिप्
पुडैत्तिरिन् दोडुम् वेलैप् पुनलॅन विरिय लुऱ्ऱार्
किडैत्तपे रनुम नाण्डोर् नॅडुङ्गिरि किळित्तुक् कॉण्डान् 2957

पॅरुम्पडै तलैवर् निन्ऱार्–बड़े-बड़े सेनापति खड़े रहे; अल्लवर्–इतर; इऱुति पऱ्ऱुम्–अन्तकारी; अटैप्पु अरुम्–अवार्य; काल काऱ्ऱाल्–युगांत के पवन से; आऱ्ऱलतु आकि–निर्बल बनकर; कारि–चीरते हुए; पुटैत्तु–टकराते हुए; इरिन्तु ओटम्–अस्त-व्यस्त बहनेवाले; वेलै पुनल् ॲन–समुद्र-जल के समान; इरियलुऱ्ऱार्–अस्त-व्यस्त हुए; किटैत्त–पास जो रहा; पेर् अनुमन्–बड़े हनुमान ने; आण्टु–तब; ओर् नॅटु किरि–एक बड़े पर्वत को; किळित्तु कॉण्टान्–उखाड़ लिया। २९५७

बड़े-बड़े वानर सेनापति खड़े रहे; पर अन्य वानर लोकांतकारी तथा अप्रतिहर युगपवन के कारण चीरते, टकराते हुए बहनेवाले समुद्र-प्रवाह के समान अस्त-व्यस्त हो भागे। तब पास जो रहा उस बड़े हनुमान ने एक बड़े पर्वत को उखाड़कर हाथ में ले लिया। २९५७

निल्लडा निल्लु निल्लु नीयडा वाशि पेशिक्
कल्लॅडा निन्ऱ दॅन्ने पोर्क्कळत् तमरर् काणक्
कॉल्लला मॅन्ऱो नन्ऱु कुरङ्गॅन्ऱाऱ् कूडु मन्ऱे
नल्लैपोर् वावा वॅन्ऱान् नमनुक्कुम् नमनाय् निन्ऱान् 2958

नमनुक्कुम् नमनाय् निन्ऱान्–यम का भी जो यम बना रहा. उस इन्द्रजित् ने; निल्लटा निल्लु निल्लु–खड़ा रह रे, खड़ा रह, खड़ा रह; अटा–रे; नी वाचि पेचि–तुम खूब बोलकर; कल् ॲटा निन्ऱतु–पत्थर उठा के खड़े हो; ॲन्ने–यह क्या; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; अमरर् काण–देवों के देखते; कॉल्ललाम् ॲन्ऱो–(मुझे) मारना चाहकर क्या; नन्ऱु–अच्छा-अच्छा; कुरङ्कु ॲन्ऱाल्–बन्दर कहना तो; कूटुम् अन्ऱे–हो सकता है न; पोर् नल्लै–युद्ध में अच्छे हो; वा वा–आओ, आओ; ॲन्ऱान्–कहा। २९५८

उसे देखकर यम के भी यम इन्द्रजित् ने कहा— रे रुको! रुको! बातें खूब करके तुमने पर्वत उठा लिया, क्यों? देवों के देखते मुझे मारने का विचार है क्या? शाबाश! तुम सचमुच वानर कहने योग्य हो! युद्ध में भी चतुर हो! आ, आ!। २९५८

विल्लॅडुत् तुरुत्तु निन्ऱ वीररुळ् वीरन् नेरे
कल्लॅडुत् तॅऱिय निन्ऱ वनुमनैक् कण्णि नोक्कि
मल्लॅडुत् तुयर्न्द तोळाऱ् कॅन्नॅलाम् वरुव दॅन्नाच्
चॉल्लॅडुत् तमरर् शॊन्नार् तादैयुन् दुणुक्क मुऱ्ऱान् 2959

विल् ॲटुत्तु–धनु लेकर; उरुत्तु निन्ऱ–जो क्रुद्ध खड़ा रहा; वीररुळ् वीरन्–

उस वीरों में वीर के; नेरे–सामने; कल् ऍट्टुतुु–पत्थर उठाये; ऍऱिय निन्ऱ–फेंकने के विचार से जो खड़ा रहा; अनुमनै–उस हनुमान को; अमरर्–देवों ने; कण्णिन् नोक्कि–आँखों से देखकर; मल् ऍट्टुतुु–बलसंयुक्त; उयर्न्त तोळाऱ्कु–उन्नत कन्धों वाले पर; ऍन् कोल् वरुवतु आम्–क्या ही बीतेगा; ऍन्ऩा–ऐसा; चोल् ऍट्टुतुु–शब्दों में ले; चोन्नार्–कहा; तातैयुम्–(हनुमान का) पिता भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱान्–भयकातर हुआ। २९५९

वीरों में श्रेष्ठ वीर इन्द्रजित् के सामने उस पर फेंकने के लिए पर्वत उठाए हुए खड़े रहनेवाले हनुमान को देवों ने अपनी आँखों से देखकर भय का अनुभव किया और कहा कि अति बलवान तथा उन्नतभुज हनुमान पर क्या ही बीतेगा ? हनुमान के पिता वायु भी दहल उठे। २९५९

वीशिनन् वयिरक् कुन्ऱम् वॆम्बॊऱिक् कुलङ्गळ् विण्णिन्
आशैयि निमिर्न्दु शॆल्ल वायिर मुरुमॊन् ऱाहप्
पूशिन पिळम्बि दॆन्ऩा वरुमदन् पुरिवै नोक्किक्
कूशिन वुलह मॆल्लाङ् गुलैन्ददव् वरक्कर् कूट्टम् 2960

विण्णिन्–आकाश में और; आचैयिन्–दिशाओं में; वॆम् पॊऱि कुलङ्कळ्–गरम अंगारों की राशियाँ; निमिर्न्तु चॆल्ल–उठकर जायें ऐसा; वयिरम् कुन्ऱम्–वज्र गिरि को; वीचिनन्–फेंका; आयिरम् उरुम्–हज़ार वज्रों का; ऒन्ऱाक–एक साथ; पूचित–मिलकर बना; पिळम्पु इतु–पुंज यह; ऍन्ऩा–ऐसा कहने योग्य रीति से; वरुम् अतन् पुरिवै नोक्कि–आते उसका कृत्य देखकर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; कूचित–संकुचित हुए; अरक्कर् कूट्टम्–राक्षसों की भीड़ भी; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २९६०

तब हनुमान ने वज्रदृढ़ पर्वत को फेंक दिया और वह आकाश और दिशाओं में अंगारे छितराते हुए चला। सहस्रवज्रों के सम्मिलित पिंड के समान आते हुए उसकी गति को देखकर सारे लोक ठिठुर गये। राक्षस-सेना भी तितर-बितर हो गयी। २९६०

कुण्डल नॆडुविल् वीश मेरुविऱ् कुविन्द तोळान्
अण्डमुङ् गुलुङ्ग वार्त्तु मारुदि यशनि यञ्ज
विण्डलत् तॆऱिन्द कुन्ऱम् वॆऱुन्दुह ळाहि वीळक्
कण्डन नॆय्द तन्मै कण्डिल रिमैप्पिल् कण्णार् 2961

मारुति–मारुति ने; अचनि अञ्च–अशनि को भयभीत करते हुए; विण् तलत्तु–आकाश में; ऍऱिन्त कुन्ऱम्–जो पर्वत फेंका, उस पर्वत को; मेरुविल्–मेरु से अधिक; कुविन्त तोळान्–पुष्ट कन्धों वाले इन्द्रजित् ने; कुण्टलम्–कुण्डलों के; नॆट्टु विल् वीच–लम्बी रोशनी को बिखेरते; अण्टमुम् कुलुङ्क–अण्डों को कँपाते हुए; आर्त्तु–बड़ा शोर मचाकर; वॆऱुम् तुकळाकि–केवल धूल बनकर; वीळ कण्टतन्–गिरते देखा (गिराया); इमैप्पिल् कण्णार्–अपलकनेत्र देवों ने; ऍय्त तन्मै–उसके बाण चलाने की बात; कण्टिलर्–नहीं देखी। २९६१

मेरु-तुल्य पुष्ट कंधों वाले इन्द्रजित् ने मारुति द्वारा आकाश में फेंके गये वज्र-भीकर पर्वत को, अपने कुंडलों को हिलाते हुए और अंडों को कँपाते हुए गर्जन करके धूलि में बदलकर गिरा दिया। अपलक देव उसका अस्त्र चलाना नहीं देख पाये। (देवों ने गर्जन सुना, कुंडलों का हिलना देखा और पर्वत को चूर होकर गिरते देखा पर अस्त्र चलाना उनकी दृष्टि में नहीं पड़ा।)। २९६१

मार्‍ऱॊरु कुन्ऱम् वाङ्गि मरुहुवान् मार्विऱ् ऱोळिल्
कार्‍ऱरु कालिऱ् कैयिऱ् कळ्ळत्तिऩ् नुदलिऱ् कण्णिऩ्
एरिन्न वॆन्ब मन्नो वॆरिमुहक् कडवुळ् वॆम्मै
शीऱिय पहळि मारि तीक्कडु विडत्तिऱ् ऱोयन्द 2962

माऱु ऑरु–दूसरे एक; कुन्ऱम्–गिरि को; वाङ्कि–लेकर; मरुकुवान्–घूमते हुए मारुति के; मार्पिल् तोळिल्–वक्ष और कन्धों पर; काल् तरु कालिल्–पवन को चालित करनेवाले पैरों पर; कैयिल्–हाथ में; कळ्ळत्तिऩिल्–कंठ में; नुतलिल्–भाल पर; कण्णिऩ्–आँखों पर; ती कटु विटत्तिल्–अग्नि के समान क्रूर विष में; तोय्न्त–सने; मुक–जिनके मुख में; ऍरि कटवुळ्–जलानेवाले अग्नि देवता की; वॆम्मै–गर्मी; चीऱिय–फूत्कार रही थी; पकळि मारि–वैसे शरों की वर्षा; एऱिऩ–चढ़ी; ऍऩ्प–लोग कहते हैं। २९६२

मारुति ने दूसरा पर्वत लिया और उसे फेंकने में जोर लगाने के विचार से घूम रहा था। तभी उसके अंग-अंग पर, कंधों, पवन-जनक पैरों, हाथों, कंठ, भाल और आँखों पर अग्नि-सम विष में सने और अग्नि की-सी गरमी वेग से छुड़ानेवाले शरों की वर्षा-सी हो गयी। ऐसा लोग कहते हैं। २९६२

वॆदिरॊत्त शिहरक् कुन्ऱिऩ् मरुङ्गुऱ विळङ्ग लानुम्
ऍदिरॊत्त विरुळैच् चीऱि यॆळुहिन्ऱ वियर्कै यानुम्
कदिरॊत्त पहळिक् कट्टै कदिरॊळि काट्ट लानुम्
उदिरत्तिन् शॆम्मै यानु मुदिक्किन्ऱ कदिरो नॊत्तान् 2963

वॆतिर्–बाँस के वन; ऑत्त–जिसमें सम रूप से उगे थे, उस; चिकर कुन्ऱिऩ्–शिखर-सहित पर्वत को; मरुङ्कु उऱ–पास में ले; विळङ्कलानुम्–रहता है इसलिए; ऍतिर् ऑत्त इरुळै–आगे के अन्धकार (राक्षसदल) पर; चीऱि ऍळुकिन्ऱ–गुस्सा करके उठता है; इयर्कैयानुम्–उस भाव से; कतिर् ऑत्त–किरणों के समान; पकळि कट्टै–शरों का समूह; कतिर् ऑळि–सूर्य प्रकाश-सा; काट्टलानुम्–दिखा रहा है, इसलिए; उतिरत्तिन् चॆम्मैयानुम्–बहते रक्त की लालिमा से; उतिक्किन्ऱ कतिरोन् ऑत्तान्–उदीयमान सूर्य की समानता करता था (हनुमान)। २९६३

तब हनुमान निम्नलिखित साम्यों के कारण उदीयमान सूर्य के समान दिखा। पास शिखरयुक्त पर्वत था। सामने अंधकार-सम राक्षसों का वैरी बना खड़ा था। शरों की राशियाँ धूप के समान प्रकाश दे रही थीं। बहनेवाले रक्त की लाली सूर्य की लाली का साम्य कर रही थी। २९६३

आयव ऩयर्द लोड्डु मङ्गदऩ् मुदल्व राऩोर्
काय्शिऩत्तऩ् दिरुहि वन्दु कलन्दुळार् तम्मैक् काणा
नीयिर्हळ् निऩ्मिऩ् निऩ्मि ऩिरुमुऱै नॅडिय वाऩिल्
पोयव नॅङ्गे निऩ्ऱा ऩॅऩ्ऱऩऩ् पॊरुट् चॆयादाऩ् 2964

आयवऩ्–वैसा हनुमान; अयर्त्तलोड्डुम्–जब शिथिल हुआ तभी; अङ्कतऩ् मुतल्वराऩोर्–अंगदादि; काय् चिऩम्–जला सकने वाले क्रोध के; तिरुकि–ऐंठते; वन्दु कलन्तुळार् तम्मै–जो (लड़ने) आ मिले थे उन्हें; काणा–देखकर; पॊरुळ् चॆयातान्–जो लापरवाह रहा, उस इन्द्रजित् ने; नीयिर्कळ्–तुम लोग; निऩ्मिऩ्–खड़े रहो; निऩ्मिऩ्–खड़े रहो; इरुमुऱै–दो बार; नॅटिय वाऩिल् पोयवऩ्–दूर स्वर्गलोक जो गया था; ऍङ्के निऩ्ऱाऩ्–वह लक्ष्मण कहाँ खड़ा है; ऍऩ्ऱऩऩ्–पूछा। २९६४

जब ऐसी स्थिति में हनुमान निर्बल हो गया, तब अंगदादि वीर जला सकनेवाले क्रोध के ऐंठते सामने आये। अपने से लड़ने के लिए मिलने आये उनको देखकर इन्द्रजित् ने कोई परवाह नहीं की। उसने उनसे कहा कि तुम खड़े रहो, खड़े रहो। और पूछा कि वह कहाँ है, जो दो बार मेरे अस्त्रों से लम्बे आकाश में (स्वर्ग में) पहुँचा था ? । २९६४

वॆम्बिऩर् पिऩ्ऩु मेऩ्मेऱ् चॆऱलुम् वॆहुण्डु शीयम्
तुम्बियैत् तॊडर्व वल्लाऱ् कुरङ्गिऩैत् तॊडर्ग वुण्डो
अम्बिऩै माट्टि यॆऩ्ऩे शिऱिदुपो राऱ्ऱ वल्लाऩ्
तम्बियैक् काट्टित् तारीर् शादिरो शलत्ति ऩॆऩ्ऱाऩ् 2965

वॆम्पिऩर्–और गरम होकर अंगदादि वानरों के; पिऩ्ऩुम्–और भी; मेऩ् मेल् चॆऱलुम्–उत्तरोत्तर बढ़ने पर; वॆकुण्टु–गुस्सा करके (इन्द्रजित् ने); चीयम्–सिंह का; तुम्पियै तॊटर्वतु अल्लाल्–गज का पीछा (सामना) करना छोड़कर; कुरङ्किऩै तॊटर्वतु उण्टो–वानर का पीछा करना होता है क्या; अम्पिऩै–(तुम लोगों पर) शरों को; माट्टि ऍऩ्ऩे–लगाने से क्या होगा; चलत्तिल्–गुस्से में; चातिरो–मरोगे क्या; चिऱितु–थोड़ा ही सही; पोर् आऱ्ऱ वल्लाऩ्–युद्ध कर सकनेवाले के; तम्पियै–छोटे भाई को; काट्टि तारीर्–दिखा दो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २९६५

यह अपमानद्योतक वचन सुनकर अंगद आदि वीरों के क्रोध का पारा और चढ़ा। वे और भी पास जाने लगे। उसने गुस्से के साथ कहा कि

सिंह लड़ने के लिए हाथी के पीछे पड़ेगा न कि वानरों के। तुम लोगों का निशाना बनाकर अस्त्र संधानने से क्या लाभ ? तुम क्या कोप के वश में होकर मरना चाहते हो ? थोड़ा ही सही युद्ध कर सकनेवाला एक ही है। उस राम के भाई को मुझे दिखा दो। इन्द्रजित् ने यों कहा। २९६५

अनुमत्तैक् कण्डि लीरो ववतिलुम् वलियि रोवॆंन्
तन्वुळ दन्ऱो तोळि न्वलि तविर्न्द दुण्डो
इन्निमुन्नै नीर लीरो वॆव्वलि योट्टि वन्दीर्
मन्दिरैक् काट्टि नुन्द मलैतोऱुम् वळिक्कॊ ळीरे 2966

अनुमत्तै कण्टिलीरो–हनुमान को देखते नहीं क्या; अवत्तिलुम् वलियिरो–उससे बलवान हो क्या; ऍन् तन्–मेरा धनु; उळतु अन्ऱो–नहीं है क्या; तोळित् अ वलि–कन्धों का वह बल; तविर्न्ततु उण्टो–हट गया क्या; इन्ऩि–अब; नीर्–तुम; मुन्नै नीर् अलिरो–पहले के तुम नहीं हो; ऍ वलि–कौन सा बल; ईट्टि वन्तीर्–बटोर लाये हो; मन्तिरै काट्टि–नरों को दिखाकर; नुम् तम्–अपने-अपने; मलै तोऱुम्–पर्वतों का; वळि कॊळ्ळीर्–रास्ता लो। २९६६

(उसने आगे पूछा—) क्या तुम (मूर्च्छित) हनुमान को नहीं देखते ? क्या तुम उससे अधिक बलवान हो ? क्या अब मेरा धनु मेरे पास नहीं रहा ? या मेरा भुजबल चला गया ? या तुम लोग पुराने तुम नहीं हो ? क्या नया बल कमा लाये हो ? चलो। उन नरों को दिखा देकर तुम अपने-अपने पर्वत-स्थान की राह लो। २९६६

ऍन्ऱव निळव रन्मे लॆंळुहिन्ऱ वियर्कै नोक्किक्
कुन्ऱमु मरमुम् वीशिक् कुऱुहिनार् कुळाङ्ग डोऱुम्
शॆन्ऱन पहळि मारि मेरुवै युरुवित् तीर्व
ऒन्ऱल कोडि कोडि युळैन्दनर् वलियु मोय्न्दार् 2967

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–उसका; इळवल् तन् मेल्–लघुराज पर; ऍळुकिन्ऱ–आक्रमण करने का; इयर्कै–हाल; नोक्कि–देखकर; कुन्ऱमुम् मरमुम्–पर्वतों और पेड़ों को; वीचि–फेंकते हुए; कुऱुकिनार्–जो नियराये; कुळाङ्कळ् तोऱुम्–उन बृन्दों में; मेरुवै उरुवि तीर्व–मेरु को भेदकर जा सकनेवाले; पकळि मारि–वर्षा के रूप में शर; ओन्ऱु अल–एक नहीं; कोटि कोटि–करोड़ों; चॆन्ऱन–गये; उळैन्तनर्–थके; वलियुम् ओय्न्तार्–निर्बल हुए। २९६७

इन्द्रजित् यह कहते हुए लघुराज लक्ष्मण पर आक्रमण करने जो गया वह हालत देखकर अंगदादि वीर पत्थरों और तरुओं को फेंकते हुए उसके पास गये। झुण्ड के झुण्ड आनेवाले उन पर इन्द्रजित् ने मेरुभेदक शरों की वर्षा-सी करा दी। शर, एक-दो नहीं कोटि-कोटि, उन पर लगे। वे बेचारे पीड़ित हुए और निर्बल हो गये। २९६७

पडुहिन्ऱ दन्ऱो वुन्ऱन् पॅरुम्बडै पहळि मारि
विडुहिन्ऱ दन्ऱो वॅन्ऱि यरक्कताङ् गाळ मेहम्
इडुहिन्ऱ वेळ्वि माण्ड दित्तियिवन् पिळैप्पु ऱामे
मुडुहॅन्ऱा ऩरक्कन् तम्बि नम्बियुञ् जॅन्ऱु मूण्डान् 2968

अरक्कन् तम्पि–राक्षस (रावण) के भाई (ने); उन् तन् पॅरुम् पडै–आपकी बड़ी सेना; पडुकिन्ऱतु अन्ऱो–मिटती है न; वॅन्ऱि अरक्कन् आम्–विजयी राक्षस रूपी; काळ मेकम्–काला मेघ; पकळि मारि विडुकिन्ऱतु–शरवर्षा करता है; अन्ऱो–न; इडुकिन्ऱ वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; माण्डतु–मिट गया; इत्ति–अब; इवन् पिळैप्पु उऱामे–यह जीवित न रहे ऐसा; मुडुक्कु–संकट दें; ऍन्ऱान्–कहा; नम्पियुम्–पुरुषश्रेष्ठ भी; चॅन्ऱु–जाकर; मूण्टान्–लग गये। २९६८

यह हालत देखकर राक्षस (रावण) के भाई विभीषण ने लक्ष्मणजी से कहा कि हे लक्ष्मणजी, आपकी सेना मिटती है। विजयी इन्द्रजित् के रूप में मानो काला मेघ ही शर-वर्षा कर रहा है! उसका आरब्ध यज्ञ आधे में ही बेकार हो गया। अब उसको जीवित छोड़े बिना त्रस्त करें। पुरुषश्रेष्ठ भी युद्ध में लगे। २९६८

वन्दानॅडुन् दहैमारुदि मयङ्गामुह मलर्न्दान्
ऍन्दायकडि देऱायॅन दिरुतोण्मिशै यॅन्ऱान्
अन्दाहवॅन् ऱुवन्दयनु मसैवायिन निमैयोर्
शिन्दाकुलङ् गळैन्दारवन् नॅडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2969

नॅटु तकै मारुति –सुयोग्य मारुति; मयङ्का मुकम–चकित मुख; मलर्न्तान्–प्रफुल्लित करके; वन्तान्–आया; ऍन्ताय्–तात; ऍन्तु–मेरे; इरु तोळ् मिचै–दोनों कन्धों पर; कटितु एऱाय्–शीघ्र सवार हो; ऍन्ऱान्–बोला; ऐयनुम् प्रभु ने भी; अन्ताक–वही हो; ऍन्ऱु–कहा और; उवन्तु–खुश होकर; अमैव् आयिनन्–स्वीकार किया; इमैयोर्–देवों ने; चिन्ताकुलम्–चित्त की व्याकुलता; कळैन्तार्–छोड़ी; अवन्–हनुमान; नॅटुम् चारिकै तिरिन्तान्–लंबा संचार करने लगा। २९६९

तब सुयोग्य मारुति, जो पहले मूर्च्छित हो गया था, अब हरा और प्रसन्नमुख होकर लक्ष्मणजी के पास आया और बोला कि तात! मेरे कंधों पर शीघ्र चढ़ जाइए। लक्ष्मण ने भी 'वैसा ही हो' कहकर स्वीकार कर लिया। तब देवताओं की चित्त की आकुलता दूर हुई। वह हनुमान लक्ष्मण को धारण करते हुए खूब सब जगह संचार करने लगा। २९६९

कारायिर मुडन्ताहिय वॅन्नलाहिय करियोन्
ओरायिरम् बरिपूण्डदॉ रुयर्तेर्मिशै युयर्न्दान्

नेरायिऩ रिरुवोर्हळ्ळु नॆडुमारुदि निमिर्न्दान्
पेरायिर मुडॆयानॆन्नत् तिशैयॆङ्गणुम् वॆयर्न्दान् 2970

आयिरम् कार् उठन् आकियतु–हज़ार मेघ एकत्रित हुए; अॆन्नल् आकिय–जैसे बना; करियोन्–काला इन्द्रजित्; ओर् आयिरम् परि–एक हज़ार अश्वों के; पूण्टतु–जुते; ओर् उयर् तेर् मिचै–एक ऊँचे रथ पर; उयर्न्तान्–चढ़ा; इरुवोर्कळुम्–दोनों; नेर् आयिनर्–आमने-सामने हो गये; नॆटु मारुति–ऊँचा मारुति; निमिर्न्तान्–तनकर खड़ा हुआ; आयिरम् पेर् उटैयान् अॆन–सहस्रनामी (त्रिविक्रम) के समान; तिचै अॆङ्कणुम्–सारी दिशाओं में; पॆयर्न्तान्–संचार किया। २९७०

एकत्रित सहस्र घन-सम काला इन्द्रजित् सहस्र अश्वों के जुते रथ पर चढ़ा। दोनों समान हो गये। आमने-सामने हुए लम्बे क़द का मारुति और तनकर खड़ा हो गया और सहस्रनामी त्रिविक्रम के समान सर्व सभी दिशाओं में डग भरने लगा। २९७०

तीयॊप्पऩ वुरुमॊप्पऩ वुयिर्वॆट्टऩ तिरियुम्
पेयॊप्पऩ पशियॊप्पन पिणियॊप्पऩ पिऴैया
मायक्कॊटु विऩैयॊप्पऩ मऴुवॊप्पऩ कऴुदिऩ्
तायॊप्पऩ शिलवाळिहळ् तुरन्दाऩुयिल् तुरन्दान् 2971

तुयिल् तुरन्तान्–निद्रात्यागी ने; ती ऒप्पन–अग्नि-सम; उरुम् ऒप्पन–अशनि-सम; उयिर् वॆट्टन–जीवों को चाहकर; तिरियुम्–घूमनेवाले; पेय् ऒप्पन–पिशाचों से तुल्य; पचि ऒप्पन–भूख के समान; पिणि ऒप्पन–रोग-सरीखे; पिऴैया–अचूक; कॊटु–क्रूर; माय विनै–माया-कार्य के; ऒप्पन–समान रहनेवाले; मऴु ऒप्पन–परशु-सम; कऴुतिन् ताय्–'कऴुतु' जाति के भूतों की माता के; ऒप्पन–समान रहनेवाले; चिल वाळिकळ्–कुछ शर; तुरन्तान्–चलाये। २९७१

निद्रात्यागी सुमित्रानन्दन ने इन्द्रजित् पर कुछ ऐसे शर चलाये जो अग्नि, अशनि, जीव-लालची पिशाच, भूख, रोग, अचूक माया-कृत्य, परशु और "कऴुतु" भूत की माता के समान गुण वाले थे। २९७१

अव्वम्बिनै यव्वम्बिनि नऱुत्तानिह लरक्कन्
अॆव्वम्बिनि युलहत्तुळ वॆन्नुम्बडि यॆय्दान्
अॆव्वम्बर मॆव्वॆण्डिशै यॆव्वेलैहळ् पिऱवुम्
वव्वुङ्गडै युहमामऴै पॊऴिहिन्ऱदु मान 2972

इकल् अरक्कन्–बलवान राक्षस ने; अ अम्पिनै–उस-उस अस्त्र को; अ अम्पिनिल्–उसी (के योग्य) अस्त्र से; अऱुत्तान्–काट गिराया; अॆ अम्परम्–सारे आकाश को; अॆ अॆण्तिचै–सारी आठों दिशाओं को; अॆ वेलैकळ्–सारे समुद्रों को; पिऱवुम्–और अन्यों को; वव्वुम्–ग्रसकर मिटानेवाली; कटै युकम्–

युगांत की; मा मळै–प्रचण्ड वर्षा; पॊऴिकित्तु–बरसती; मान–जैसे; उलकत्तु–संसार में; ऎं अम्पु–कौन सा अस्त्र; इति उळतु–अब (इससे बढ़कर) है; ऎन्नुम् पटि–ऐसा कहने योग्य प्रकार से; ऎय्तान्–चलाया। २९७२

इन्द्रजित् ने उस-उस अस्त्र को उसके योग्य शर से काट गिराया। सारे आकाश, सभी दिशाओं और समुद्रों को ग्रस लेनेवाले युगक्षय के मेघ धारें गिरा रहे हों, ऐसा उसने शर चलाये। यही नहीं लोग यह कहें कि संसार में इनके समान कौन सा अस्त्र है? —ऐसे अस्त्र चलाये। २९७२

आयोनॆंडुङ् गुरुविक्कुल मॆन्नुञ्जिल वम्बाल्
पोयोडिडत् तुरन्दानवै पॊड्रियोवॆन मड्रियत्
तूयोन्मत् तुणैवाळिहळ् तॊडुत्तानवै तड्त्तान्
तीयोनुमक् कणत्तायिरम् नॆडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2973

आयोन्–उस (इन्द्रजित्) ने; कुरुविक्कुलम् ऎन्नुम्–'पक्षीदल' नाम के; चिल नॆटु अम्पाल्–कुछ लंबे शरों को; पोय् ओटिट–जाकर लगें ऐसा; तुरन्तान्–चलाया; अवै–उन्हें; तूयोनुम्–पवित्र मूर्ति ने भी; पॊड्रियो ऎन–चूर्ण हैं क्या ऐसा; मड्रिय–काटने के लिए; अ–श्रेष्ठ; तुणै वाळिकळ्–शरद्वय; तॊटुत्तान्–चलाकर; अवै तटुत्तान्–उन्हें रोका; तीयोनुम्–दुष्ट भी; अ कणत्तु–उस क्षण में; आयिरम्–हज़ार; नॆटुम् चारिकै–लंबा संचार; तिरिन्तान्–घूमा। २९७३

और भी उसने 'पक्षीवृन्द' समझने योग्य अनेक अस्त्र लक्ष्मण पर छोड़े। उन्हें पवित्रमूर्ति ने 'पहले ही चूर्ण थे क्या?' —यह संदेह उत्पन्न करते हुए श्रेष्ठ दो अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। दुष्ट इन्द्रजित् भी तब हज़ारों तरह से घूम गया। २९७३

कल्लुन्नॆडु मलैयुम्बल मरमुङ् गडैहाणुम्
पुल्लुञ्जिऱु कॊडियुम् मिडैतॆरिया वहैपुरियच्
चॆल्लुन्नॆड्रि तॊऱुञ्जॆन्ड्रन तॆऱुङ्गाल्पुरै मऱवोन्
शिल्लिन्मुदिर् तेरुञ्जित्त वयमारुदि ताळुम् 2974

तॆऱुम्–मारक; काल् पुरै–(चण्ड-) मारुत-सम; मऱवोन्–वीर; मुतिर् चिल्लिन्–पक्के पहियों का; तेरुम्–रथ और; चित्त–क्रोधी; वयम्–विजयी; मारुति ताळुम्–मारुति के पैर; कल्लुम्–चट्टानों; नॆटु मलैयुम्–बड़े पर्वतों को; पल मरमुम्–अनेक तरु; कटै काणुम् पुल्लुम्–जीव-धारियों में सबसे नीचे रहनेवाली घास को; चिऱु कॊटियुम्–छोटी लताओं को; इटै तॆरिया वकै–अन्तर न दिखे ऐसा; पुरिय–नष्ट करते हुए; चॆल्लुम् नॆड्रि तॊऱुम्–गम्य सभी स्थलों में; चॆन्ड्रन–गये। २९७४

प्राणघातक चंडमारुत-तुल्य वीर रावणि के पक्के पहियों का रथ और क्रोध-भरे और विजयी वीर हनुमान के पैर चट्टानों, पर्वतों, तरुओं,

जीवकोटि में अंतिम घासों और छोटी लताओं में कोई भेद न करते हुए, सबको एक-सम मिटाते हुए, गम्य सभी मार्गों में गये। २९७४

इरुवीररु मिवन्निन्नव निवन्निन्नव नॆन्नच्
चॆरुवीररु मऱियावहै तिरिन्दार्कणै शॊरिन्दार्
ऒरुवीररु मिवरॊक्किल रॆन्नवानव रुवन्दार्
पॊरुवीरॆयुम् वॊरुवीरॆयुम् बॊरुदालॆनप् पॊरुदार् 2975

इरु वीररुम्–दोनों वीर; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; ऍन्न–पहचान कर कहना; चॆरु वीररुम्–(पास रहे) युद्धवीर भी; अऱिया वकै–न जान पाएँ ऐसा; तिरिन्दार्–घूमे; कणै चॊरिन्दार्–शर बरसाये; पॊरु वीरॆयुम्–लड़ाकू समुद्र और; पॊरु वीरॆयुम्–लड़ाकू समुद्र; पॊरुदाल् ऍन–लड़ते हों वैसे; पॊरुदार्–टकराये; वानवरुम्–देवों ने भी; ऒरु वीररुम्–कोई भी वीर; इवर् ऒक्कु इलर्–इनके समान नहीं; ऍन–कहकर; उवन्दार्–मोद पाया। २९७५

पास रहनेवाले वीर भी पहचान नहीं सके कि यह इन्द्रजित् है या लक्ष्मण? इस भाँति वे घूमे। एक-दूसरे पर शर बरसाये। युद्ध-रत दो सागर टकराते हों, ऐसा दोनों लड़े। देव भी यह कहते हुए आनंद कर रहे थे कि ऐसे वीर संसार में कोई और नहीं हैं। २९७५

विण्शॆल्हिल शॆल्हिन्ऱन विशिहम्मॆन्न विमैयोर्
कण्शॆल्हिल मनञ्जॆल्हिल कणिदमुरु मॆन्निनोर्
ऒण्शॆल्हिल नॆडुङ्गालवन् इडैशॆल्हिल् नुडल्मेऱ्
पुण्शॆय्वन वल्लालॊरु पॊरुळ्शॆय्वन तॆरिया 2976

विशिकम्–विशिख; चॆल्किन्ऱन–जो चलते हैं; विण् चॆल्किल–आकाश में नहीं जाते; ऍन–कहकर; इमैयोर्–देवों की; कण् चॆल्किल–दृष्टि नहीं जाती; मनम् चॆल्किल–मन नहीं जाता; कणित मुऱम् ऍन्निन्–गिनती में लाना चाहो तो; ऒर् ऍण् चॆल्किल्–कोई संख्या नहीं; इडै–उनके मध्य; नॆट्टम् कालवन्–लंबा वायुदेव भी; चॆल्किलन्–जा नहीं सका; उडल् मेल्–शरीर पर; पुण् चॆय्वन–व्रण बनाना छोड़कर; ऒरु पॊरुळ् चॆय्वन–कोई दूसरा काम करते; तॆरिया–न जाने जाते। २९७६

उनके द्वारा प्रेरित शर इतनी तेज़ी से गये कि देवों की दृष्टि या मन नहीं समझ सके। वे तो यह कहने लगे कि वे शर आकाश में नहीं चले। वे किसी गिनती में न आये। उनके मध्य पवन भी चल नहीं सका। शरीरों पर व्रण लगाते थे, इसको छोड़ उनकी और कोई प्रवृत्ति दृष्टि में पड़ती ही नहीं थी। २९७६

ऍरिन्देऱ्ऱ तिशैयावैयुम् मिडियामॅत्तप् पॊडियाय्
नॅरिन्देऱ्ऱ नॆडुनाणॊलि पडर्वानिऱ् उरुमित्
शॊरिन्देऱ्ऱ शुडुवॆङ्गणै तॊडुन्दारहै मुळ्ळुम्
करिन्देऱ्ऱ वलहियावैयुङ् गनल्वॆम्बुहै कदुव 2977

नॆट्टु–लंबे; नाण् ऑलि–डोरों की टंकार-ध्वनि; इडि आम् अॅत–वज्र के समान थी; तिचै यावेयुम्–सभी दिशाएँ; पॊटियाय् नॆरिन्तु–चूर्ण के रूप में; एऱ्ऱ–बनीं; ऍरिन्तु एऱ्ऱ–जल गयीं; चुट्टु–तापक; वॆम् कणै–गरम अस्त्र; पटर् वान्–विशाल आकाश में; निरै उरुमित्–भरे वज्र के समान; चॊरिन्तु एऱ्ऱ–गिरे और फटे; उलकु यावैयुम–सारे लोकों को; कनल्–आग का; वॆम् पुकै–गरम धुआँ; कतुव–ढक गया; तॊट्टुम् तारकै–पास-पास रहे सभी तारे; मुळ्ळुतुम् करिन्तु एऱ्ऱ–सब जल गये। २९७७

लम्बे डोरों की ध्वनि अशनि के समान हुई तो सारी दिशाएँ चूर-चूर होकर जल गयीं। अग्निमय क्रूर बाण विशाल आकाश-मध्य अशनि के समान सर्वत्र गिरे। सारे संसार में आग का धुआँ फैल गया और संकुलित रहे तारे सारे झुलस गये। [तमिऴ में संयुक्त क्रिया के रूप में 'पो' का प्रयोग होता है जैसे हिन्दी में 'जा'। इधर "एऱ्ऱिन" (चढ़े) उसी 'जा' के अतितीव्र अर्थ में प्रयुक्त है।]। २९७७

वॆडिक्किन्ऱन तिशैयावैयुम् विऴुहिन्ऱॆन विडिवन्
दिडिक्किन्ऱन शिलैनाणॊलि यिरुवाय्हळु मॆदिराक्
कडिक्किन्ऱन कनल्वॆङ्गणै कलिवानुऱ विशैमेल्
पॊडिक्किन्ऱन पॊऱिवॆङ्गन लिवैहण्डनर् पुलवोर् 2978

इडि वन्तु विऴुकिन्ऱॆन–वज्र आकर गिरते जैसे; चिलै नाण् ऑलि–धनुष के डोरों की ध्वनि; इडिक्किन्ऱन–कड़कती है; तिचै यावैयुम्–सारी दिशाएँ; वॆडिक्किन्ऱन–फटती हैं; इरु वाय्कळुम्–दोनों के (अस्त्रों के) मुख; ऍतिरा–आमने-सामने रहकर; कडिक्किन्ऱन–काटते हैं; कनल् वॆम् कणै–अग्निसम गरम अस्त्र; कलिवान् उऱ–बड़े आकाश में जाते हैं; विचै मेल्–तेजी के कारण; वॆम्कनल् पॊऱि–गरम अंगारे; पॊटिक्किन्ऱन–बिखरते हैं; इवै–इनको; पुलवोर्–देवों ने; कण्टनर्–देखा। २९७८

डोरों के टंकार अशनि-सम कानों में गिरते हैं (इससे) दिशाएँ फटती हैं। दोनों के बाणों के मुख (अग्रभाग) आपस में काटते हैं (टकराते है)। अग्निवर्षी बाण आकाश में चढ़ते हैं और उनकी तेज़ी से भयानक अंगारे बिखरते हैं। देवों ने यह सब देखा। २९७८

कडल्वऱ्ऱिन मलैयुक्कन परुदिक्कनल् कदुवुऱ्
ऱुडल्पऱ्ऱिन मरमुऱ्ऱन कनल्पऱ्ऱिन वुदिरम्

शुडर्पर्ट्रिन शुरुमिक्कदु तुणिपट्टुदिर् कणैयिन्
तिडर्पट्टदु परवैक्कुऴि तिरियुर्रदु पुवनम् 2979

कटल् वर्ट्रिन–समुद्र सूखे; मलै उक्कन–पर्वत टूटे; परुति उटल्–सूर्य का शरीर; कनल् कतुवुर्रु–आग लगकर; पर्ट्रिन–जला; कनल् पर्ट्रिन–आग लगे; मरम् उर्रन–तरु जले; उतिरम्–रक्त; चुटर् पर्ट्रिन–दमक के साथ; चुरु मिक्कतु–जलने की गन्ध अधिक देने लगा; तुणि पट्टु–कटकर; उतिर्–नीचे गिरनेवाले; कणैयिन्–शरों से; परवै कुऴि–समुद्र का गड्ढा; तिटर् पट्टतु–टीला बना; पुवनम्–भुवन; तिरियुर्रतु–हिल गया। २९७९

इन बाणों के कारण समुद्र सूखे। सूर्य के शरीर आग लगकर जले। आग लगकर तरु झुलसे। रक्त चमका और आग में जलने की गन्ध अधिक हो गयी। कटे बाणों के गिरने से समुद्र का गड्ढा टीला बन गया। भूमि हिल गयी (या विकृत हो गयी)। २९७९

ऍरिहिन्रन वयिल्वॅङ्गणै यिरुशेनैयु मिरियत्
तिरिहिन्रन पुडैनिन्रिल तिशैशॅन्रन शिदरिक्
करिपॉन्रिन परिमङ्गिन कविशिन्दिन कडल्पोल्
शॉरिहिन्रन पॉरुशॅम्बुनल् तॉलैहिन्रन कॉलैयाल् 2980

ऍरिकिन्रन–आग बिखेरनेवाले; अयिल्–तीक्ष्ण; वॅम् कणै–गरम अस्त्रों से; इरु चेनैयुम् इरिय–दोनों सेनाएँ हटीं; तिरिकिन्रन–और घूमती हैं; पुटै निन्रिल–पास खड़ी भी नहीं रहतीं; चितरि–बिखरकर; तिचै चॅन्रन–दिशा-दिशा में चली जाती हैं; करि पॉन्रिन–हाथी मरे; परि मङ्किन–अश्व मिटे; कवि–वानर; चिन्तिन–भागे; पॉरु–युद्ध के कारण निकलनेवाला; चॅम् पुनल्–लाल रक्त; कटल् पोल्–समुद्र के समान; चॉरिकिन्रन–गिरता है; कॉलैयाल्–वध होकर; तॉलैकिन्रनर्–मिटते हैं। २९८०

आग-सी बिखेरनेवाले तीक्ष्ण तापक शरों के कारण दोनों सेनाएँ अस्त-व्यस्त हो घूमती हैं। वे पास ही नहीं भटकतीं। बिखरकर दिशा-दिशा में भाग गयीं। हाथी मरे। अश्व मिटे। वानर भागे। युद्ध के फलस्वरूप निकला रक्त समुद्र के समान गिरता है। वधकार्य से जीव मटियामेट हो जाते हैं। २९८०

पुरिन्दोडिन पुहैन्दोडिन पॉरिन्दोडिन पुहैपोय्
ऍरिन्दोडिन करिन्दोडिन इडमोडिन वलमे
तिरिन्दोडिन शॅरिन्दोडिन विरिन्दोडिन तिशैमेल्
शरिन्दोडिन करुङ्गोळरिक् किळैयान्विडु शरमे 2981

करुम् कोळरिक्कु–श्यामवर्ण केसरी श्रीराम के; इळैयान्–कनिष्ठ सहोदर द्वारा; विटु चरम्–प्रेरित शरों में; पुरिन्तु ओटिन–(कुछ) ऐंठते चले; पुकैन्तु ओटिन–धुआँ फैलाते चले; पॉरिन्तु ओटिन–अंगारे छितराते चले; पुकै पोय्–धुआँ-रहित;

ऍरिन्तु ओटित्त–जलते चले; करिन्तु ओटित्त–कोयला बनकर चले; इटम् ओटित्त–बायें चले; वलमे तिरिन्तु ओटित्त–दायें घूम चले; चॆरिन्तु ओटित्त–सटे चले; विरिन्तु ओटित्त–अलग-अलग चले; तिचै मेल्–दिशा पर; वरिन्तु ओटित्त–तिरछे चले। २६८१

श्यामकेसरी श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण ने जो शर चलाये, वे कुछ ऐंठते चले; कुछ धुआँ उगलते हुए चले। कुछ अंगारे छितराते हुए चले। कुछ धूम्ररहित होकर धधकती ज्वाला के साथ गये। कुछ कोयला बनकर गये। कुछ बायें गये। कुछ दायें गये। कुछ सटे हुए चले और कुछ अलग-अलग चले। कुछ दिशाओं में तिरछे चले। २९८१

नीरोत्तन्न नॆरुप्पॊत्तन्न पॊरुप्पॊत्तन्न निमिरुम्
कारोत्तन्न वुरुमोत्तन्न कडलॊत्तन्न कदिरोन्
तेरॊत्तन्न विडैमेलवन् शिरमॊत्तन्न वुलहिन्
वेरॊत्तन्न शॆरुवॊत्तिह लरक्कन्विडु विशिहम् 2982

इकल् अरक्कन्–सशक्त राक्षस; चॆरु ऒत्तु–युद्ध में सम रहकर; विट्टु विचिकम्–जो विशिख छोड़ता था वे; नीर् ऒत्तन–प्रवाह-सम लगे; नॆरुप्पु ऒत्तन–अग्नि-सम थे; पॊरुप्पु ऒत्तन–पर्वत-सरीखे थे; निमिरुम् कार् ऒत्तन–उठकर चलते मेघों के सदृश थे; उरुम् ऒत्तन–वज्रतुल्य थे; कटल् ऒत्तन–समुद्र-सम थे; कतिरोन्–किरणमाली के; तेरॊत्तन–रथ के समान थे; विटै मेलवन्–ऋषभारूढ़ (शिव) के; चिरम् ऒत्तन–सिर के समान थे; उलकिन् वेर् ऒत्तन–लोक की जड़ (मेरु) के समान थे। २६८२

बलवान इंद्रजित् ने भी लक्ष्मण के सम रहकर विशिख चलाये। उनमें कुछ जलप्रलय के समान रहे; कुछ युगांत की अग्नि के समान रहे। कुछ पर्वतों के समान रहे। कुछ आकाश में उठे चलनेवाले मेघों के समान रहे। कुछ वज्र के समान रहे। कुछ समुद्र के समान रहे। कुछ किरणमाली के रथ के समान रहे। कुछ ऋषभवाहन के (पाँच) सिरों के समान रहे। कुछ लोकमूल मेरु के समान रहे। २९८२

एमत्तडङ् गवशत्तिह लहलत्तन्न विरुवोर्
वामप्पॆरुन् दोण्मेलन्न वदन्नत्तन्न वयिरत्
तामत्तुणै कुरङ्गोडिरु शरणत्तन्न तत्तम्
कामक्कुल मडमङ्गैयर् कडैक्कण्णॆन्नक् कणैहळ् 2983

काम–काम्य; कुल मट मङ्कैयर्–कुलीन बाललननाओं की; कटैक्कण् ऍन्न–तिरछी नजर के समान (भेद चलनेवाले); तम् तम् कणैकळ्–उन-उनके अस्त्र; एमम्–रक्षणार्थ; तटम् कवचत्तु–विशाल कवच-रक्षित; इकल् अकलत्तन–कठोर वक्ष में लगे; वामम्–मनोहर; पॆरुम् तोळ् मेलन–कंधों पर के हुए; वतनत्तन–

वदन पर लगे; वयिरम्–वज्र-दृढ़; ताम्–सुन्दर; तुणै कुऱङ्कोटु–ऊरुद्वय और; चरणत्तन–पैरों पर लगे। २६८३

परस्पर जो बाण उन दोनों ने चलाये वे काम्य वाल-ललनाओं की तिरछी दृष्टि के समान भेद चले और दोनों के रक्षणार्थ पहने कवचावृत वक्षों में लगे। मनोरम व विशाल भुजाओं में लगे। उनके वदनों पर लगे। वज्र-सम मनोहारी ऊरुद्वयों और पैरों में चुभे। २९८३

ऍन्नाळिनि नॆत्तेवर्ह ळॆत्तानव रॆवरे
अन्नाऱ्शरु वॊत्तारॆन विमैयोरॆडुत् तार्त्तार्
पॊन्नाऱ्शिलै यिरुकाल्हळु मॊरुकाल्पॊऱै युयिरा
मुन्नाळिनि लिरण्डाम्बिऱै मुळैत्तालॆन वळैत्तार् 2984

पॊन् आर् चिलै–स्वर्णमय धनुओं को; पॊऱै उयिरा–भार दूर करने; मुन् नाळिनिल्–कृष्णपक्ष के; इरण्टाम् पिऱै–दूज का चाँद; मुळैत्ताल् ऍन–उगा हो जैसे; इरु काल्कळुम्–दोनों (धनुषों के) छोरों को; ऒरु काल्–एक ही समय में; वळैत्तार्–(दोनों ने) झुकाया; इमैयोर्–देव; ऍ नाळिनिल्–किस दिन; ऍ तेवर्कळ्–कौन से देवों; ऍ तानवर्–कौन दानवों ने; ऍवरे–किसने; अन्नार् शॆरु–उनके युद्ध के; ऒत्तार्–समान युद्ध किया था; ऍन–ऐसा; ऍटुत्तु उरैत्तार्–खोलकर बोले। २६८४

दोनों ने स्वर्णिम चापों को भार-निवारणार्थ दोनों छोरों को झुकाया और वे पूर्वपक्ष के दूज के चाँद के समान बने। देवों ने मुख खोल कर विस्मय किया कि ऐसा युद्ध कहाँ, कब और किन देवों ने या दानवों ने या और किन्होंने किया था? । २९८४

वेहिन्ऱन वुलहिङ्गिवर् विडुहिन्ऱ विशिहम्
वोहिन्ऱन कडल्वॆन्दन विमैयोर्हळुम् बुलर्न्दार्
आहिन्ऱदॊ रळिहालमि दामन्ऱॆन वयिर्त्तार्
नोहिन्ऱन तिशैयानैहळ् शॆविनाणॊलि नुळैय 2985

इङ्कु–यहाँ (इस युद्ध में); इवर्–ये (दोनों); विटुकिन्ऱ–(जो) छोड़ते हैं; विचिकम्–विशिख; पोकिन्ऱन–चलते हैं; उलकु वेकिन्ऱन–लोक पक जाते हैं; कटल् वॆन्तन–समुद्र झुलसे; इमैयोर्कळुम्–देव भी; पुलर्न्तार्–(मुख में) सूख गये; अन्ऱु–तब; ओर् अळिकालम्–एक अपूर्व नाशकाल; इतु आकिन्ऱतु–यह आ गया; आम् ऍन–है, ऐसा; अयिर्त्तार्–भ्रमित हो गये; नाण् ऒलि–ज्यास्वन; चॆवि नुळैय–कान में घुसा; तिचै यानैकळ्–दिग्गज; नोकिन्ऱन–वेदना का अनुभव करते हैं। २६८५

अब इनके प्रेरित शर चलते हैं तो लोक जलते हैं। समुद्र झुलसते हैं। देवों के मुख सूख जाते हैं। तब सब संशय करने लगे कि यह

नाशकाल हो रहा है! ज्यास्वन कानों में घुसा तो दिग्गज पीड़ित हुए। २९८५

मीनुक्कदु नॅडुवानहम् वॅयिलुक्कदु शुडरुम्
मानुक्कदु मुळुवॅण्मदि मळैयुक्कदु वानम्
तानुक्कदु कुलमाल्वरै तरैयुक्कदु तहैशाल्
ऊनुक्कवॅव् वुलहत्तिनु मुळदाहिय वुयिरे 2986

नॅडु वानकम्–विशाल आकाशतल ने; मीन्–नक्षत्रों को; उक्कतु–चुवा दिया; शुडरुम्–किरणदेव भी; वॅयिल् उक्कतु–धूप गिरा गया; वॅण्–श्वेत; मुळु मति–पूर्णचन्द्र ने भी; मान् उक्कतु–हिरण को खो दिया; वानम्–आकाश ने; मळै उक्कतु–मेघों को डाल दिया; कुल माल् वरै–श्रेष्ठ बड़ा पर्वत (मेरु); तान् उक्कतु–स्वयं चूर-चूर हो गया; तकै चाल् तरै–मान्य भूमि; उक्कतु–बिखर गयी; अॅ उलकत्तिनुम्–सभी लोकों में; उळताकिय–रहनेवाले; उयिरे–जीवों ने; ऊन् उक्कतु–शरीर त्याग दिये। २९८६

इनके अस्त्रों से त्रस्त होकर दीर्घ आकाश ने नक्षत्रों को चुवा दिया। सूरज ने गर्मी त्याग दी। श्वेत पूर्णचन्द्र ने अपना 'हिरण' त्याग दिया। आकाश ने मेघ गिरा दिये। श्रेष्ठ मेरु पर्वत स्वयं चूर-चूर हो गया। माननीय भूमि बिखर गयी। सभी लोकों के सारे जीवों ने अपने शरीर डाल दिये। २९८६

अक्कालैयि नयिलॅङ्गणै यैयॅन्दुबुक् कळुन्दत्
तिक्काशऱ वॅन्ऱान्मह निळङ्गोवुडऱ् चॅरित्तान्
गेक्कार्मुहम् वळैयच्चिल कनल्वॅङ्गणै कवशम्
बुक्काहमुङ् गळन्ऱोडिड विळङ्गोळरि पॉळिन्दान् 2987

अक्कालैयिल्–तब; तिक्कु–(आठों) दिशाओं को; आचु अऱ–विना कसूर के; वॅन्ऱान्–जिसने जीता था उस (रावण) के; मकन्–पुत्र ने; अयिल्–तीक्ष्ण; ऐ ऐन्तु वॅम् कणै–पचीस भयंकर अस्त्रों को; इळङ्को–लघुराज के; उटल् पुक्कु–शरीर में घुसकर; अळुन्त–धँस जायँ ऐसा; चॅरित्तान्–लगवा दिया; इळम् कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण) ने भी; आकमुम् पुक्कु–शरीर में घुसकर; कवचम् कळन्ऱु–कवच भी खुलकर; ओटिट–चला जाय ऐसा; कै कार् मुकम् वळैय–हाथ के चाप को झुकाकर; चिल–कुछ; कनल्–आग के समान; वॅम् कणै–भयंकर अस्त्र; पॉळिन्तान्–लगातार छोड़े। २९८७

तब अष्टदिग्विजयी रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने पचीस तीक्ष्ण और गरम अस्त्र चलाये जो लघुराज लक्ष्मण के शरीर के अंदर चले गये। लघुराज ने भी अपने हाथ के धनु को झुकाकर कुछ आग्नेय अस्त्र चलाये और वे इन्द्रजित् के शरीर में घुसे और कवच भी खुलकर अलग हो गया। २९८७

तॅरिन्दान्शिल चुडर्वॅङ्गणै तेवेन्दिरन् शिन्नमा
इरिन्दोडिडत् तुरन्दोडिन्न विमैयोरैयु मुन्नाळ्
अरिन्दोडिन वॅरिन्दोडिन्न यवैहोत्तड लरक्कन्
शॉरिन्दानुयर् नॅडुमारुदि तोण्मेलिन्दिऱ् ऱोन्ऱ 2988

अटल् अरक्कन्–वलवान राक्षस ने; मुन् नाळ्–पहले किसी दिन; तेवेन्तिरन्–देवेन्द्र के; चिनमा–क्रुद्ध गज को; इरिन्तु ओटिट–अस्त-व्यस्त भागने को मजबूर करके; तुरन्तु–(चाप) छोड़कर; ओटिन–जो गये और; इमैयोरैयुम्–देवों को; अरिन्तु–काटकर; ओटिन–जो गये और; ऍरिन्तु ओटिन–जो आग उगलते गये; चिल–(ऐसे) कुछ; चुटर्–तेजोमय; वॅम्–भयंकर; कणै अवै–शरों को; कोत्तु लगाकर; उयर्–ऊँचे क़द के; नॅटु–बड़े; मारुति तोळ् मेलितिल्–मारुति के कंधों पर; तोन्ऱ–वे शोभे ऐसा; तॅरिन्तान्–जान-बूझकर; चॉरिन्तान्–चलाये। २९८८

सवल इन्द्रजित् ने ऊँचे क़द के वड़े मारुति के कन्धे पर जान-बूझकर वे उज्ज्वल तथा भयंकर अस्त्र चलाये, जिनके लगने से देवेंद्र का क्रोधी गज ऐरावत अस्त-व्यस्त भागा, जो देवों को काट चले थे और जो आग उगलते चले थे। वे जाकर हनुमान के कंधों पर शोभे। २९८८

कुरुदिप्पुनल् शॉरियुम्मुयर् कुन्ऱॅन्नुम वनुमन्
परुदित्तिऱ निऱमॊत्तत यिळङ्गोळरि पार्त्तान्
ऑरुतिक्किनुम् बॅयरावहै यवन्ऱेरिनै युदिर्त्तान्
वॊरुदिक्कणम् वॅन्ऱेनॆन्नच् चरमारिहळ् पॊऴिन्दान् 2989

कुरुति पुनल् चॊरियुम्–रक्त वहानेवाले; उयर्–ऊँचे; कुन्ऱु–पर्वत; ऍन्नुम्–के समान; अ अनुमन्–उस हनुमान के; निऱम्–रंग के; परुति ऑत्त–सूर्य के समान रहने का; तिऱम्–ढंग; इळम्–लघुराज ने; पार्त्तान्–देखा; अवन् तेरिनै–उस (इन्द्रजित्) के रथ को; ऑरु तिक्किनुम् पॅयरा वकै–किसी भी दिशा में न जाने देकर; उतिर्त्तान्–गिराकर; इ कणम्–इसी क्षण; पॊरुतु–लड़कर; वॅन्ऱेन्–जीत लिया; ऍन्न–कहते हुए; चरमारिकळ्–शरवर्षाएँ; पॊऴिन्तान्–कीं। २९८९

रक्तस्रावी उन्नत पर्वत-सम हनुमान का शरीर बाल-सूर्य के समान लाल रंग का हो गया। वालकेसरी लक्ष्मण ने उसकी स्थिति देखी। उन्होंने उसके रथ को किसी दिशा में जाने न देकर गिरा दिया और यह कहते हुए शर-वर्षा करायी कि अभी, इसी क्षण में युद्ध करके उसे हरा दूंगा। २९८९

अत्तेरऴिन् ददुनोक्किय विमैयोरॅडुत् तार्त्तार्
मुत्तेवरु मुवन्दारव नुरुमेऱॅन मुनिन्दान्
तत्तावॊरु तडन्देरिनैत् तॊडर्न्दान्शरन् दलमेल्
पत्तेविन नवपायदलि निऴङ्गोळरि पदैत्तान् 2990

अ तेर्–उस रथ का; अऴिन्ददु–नष्ट होना; नोक्किय–देखनेवाले; इमैयोर्–देवों ने; अँटुत्तु आर्त्तार्–स्वर ऊँचा करके हर्षनाद किया; मु तेवरुम्–त्रिदेव; उवन्तार्–खुश हुए; अवऩ्–वह (इन्द्रजित्); उरुम् एऩ्ऩ अँत–अशनिराज के समान; मुत्तिऩ्ताऩ्–गुस्सा करके; ओरु तटम् तेरिऩ्–एक विशाल रथ पर; तत्ता तोटर्न्ताऩ्–छलांग मारकर चढ़ा और गया; तलै मेल्–(लक्ष्मण के) सिर पर; पत्तु चरम्–दस शर; एविऩ्ऩ्–चलाये; अवै–उनके; पाय्तलिऩ्–लगने से; इळङ्कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण); पतैत्ताऩ्–छटपटाये। २९९०

उसके रथ को नष्ट हुआ देख देवों ने ज़ोर से हर्षनाद किया। त्रिदेव भी मुदित हुए। यह देखकर इन्द्रजित् अशनि के समान क्रोध से कड़क उठा। एक बड़े रथ पर उछलकर चढ़ा। लक्ष्मण का पीछा करके गया और उनके सिर पर दस शर चलाये। उनके लगने पर बालकेसरी-से लक्ष्मण छटपटाये। २९९०

पदैत्तानुड निलैत्तान्शिल पहुवाययिर् पहऴि
विदैत्तानवै विलक्कादमुऩ् विडैमेल्वरु विमलऩ्
मदत्तालॆदिर् वरुहालऩै यॊरुहालुऱ मरुमत्
तुदैत्तानॆनत् तनित्तोर्कणै यवऩ्मार्बिऩि लुदैत्ताऩ् 2991

उटल् पतैत्ताऩ्–जिनका शरीर कंपित हुआ वे; निलैत्ताऩ्–स्थिर हुए; पकुवाय्–फटे मुख के; अयिल्–तीक्ष्ण; चिल पकऴि–कुछ अस्त्र; वितैत्ताऩ्–बो दिये; अवै विलक्कात मुऩ्–उनको रोकने से पहले; विटैमेल्–ऋषभ पर; वरु बिमलऩ्–आनेवाले विमल मूर्ति ने; मतत्ताल्–मद से; ऎतिर् वरु कालऩै–सामना करके आनेवाले यम को; ओरु काल्–एक पैर से; मरुमत्तु उऱ–मर्म पर लगाकर; उतैत्ताऩ् ऎऩ्ऩ–जैसे लात मारी वैसे; अवऩ् मार्पितिल्–उस (इन्द्रजित्) के वक्ष पर; तऩित्तु ओर् कणै–अलग एक अस्त्र; उतैत्ताऩ्–छोड़ा। २९९१

अधीर जो हुए वे लक्ष्मण थोड़ी देर के बाद स्थिर हुए। और उन्होंने कुछ फटे मुँह वाले व तीक्ष्ण शर बो-से दिये। उनको इन्द्रजित् रोके उसके पहले ही उन्होंने इन्द्रजित् के वक्ष पर एक शर चलाया, जो ऋषभवाहन की दम्भी यम की छाती पर लगायी गयी लात के समान लगा। २९९१

कवशत्तैयुम् नॆडुमार्बैयुङ् गडन्दक्कणै कऴिय
अवशत्तॊऴि लडैन्दानदऩ् किमैयोरॆडत् तार्त्तार्
तिवशत्तॆऴु कदिरोऩॆऩत् तॆरिहिऩ्ऱदोर् कणैयाल्
तुवशत्तैयुम् तुणित्तेयवऩ् मणित्तोळैयुन् दुळैत्ताऩ् 2992

अ कणै–वह अस्त्र; कवचत्तैयुम्–कवच को और; नॆटु मार्पैयुम्–विशाल वक्ष को; कटन्तु कऴिय–भेदकर निकल गया तो; अवच तॊऴिल् अटैन्ताऩ्–अवश स्थिति को प्राप्त हुआ; अतऩ्कु–उसको लेकर; इमैयोर्–देवों ने; ऎँटुत्तु–ज़ोर से; आर्त्तार्–हर्षघोष किया; तिवचत्तु ऎऴु–दिन (मध्याह्न) में उठे; कतिरोऩ्

ऒँत्त–किरणमाली के समान; तॆरिकित्तु–दिखनेवाले; ओर्–एक; कणैयाल्–शर से; अवन् तुवचत्तैयुम्–उसकी ध्वजा को; तुणित्तु–काटकर; मणि तोळैयुम्–मनोरम कंधों को भी; तुळैत्तान्–छिन्न कर दिया। २६६२

वह शर इन्द्रजित् के कवच तथा विशाल वक्ष को भेदकर निकल गया। वह अवश हो गया। तब देवों ने आनंद-रव किया। लक्ष्मण ने मध्याह्न के सूर्य के समान एक प्रखर बाण चलाकर उसकी ध्वजा को काट गिराया और उसके नीलवर्ण रत्न-सम कंधों को भी छिन्न कर दिया। २९९२

उळ्ळाडिय वुदिरप्पुनल् कॊळ्ळुन्दीयॆन्न वॊळ्हुत्
तळ्ळाडिय वडमेरुविऱ् चलित्तानुड ऱरित्तान्
पुळ्ळाडिय कडुम्बोर्क्कणै तुरन्दानवै शुडर्पोय्
विळ्ळानॆडुङ् गवशत्तिडै नुळैयादुह वॆहुण्डान् 2993

(इन्द्रजित् के) उळ् आटिय–अन्दर बहता रहा; उतिरम् पुनल्–रुधिर-जल; कॊळ्ळु ती ऒँत्त–पुष्ट आग के समान; ऒँळ्कुक–स्रवित हुआ; तळ्ळाटिय–लड़खड़ाने वाले; वट मेरुविन्–उत्तरी मेरु के समान; उटल् चलित्तान्–थकित-शरीर हुआ; तरित्तान्–फिर सँभला; पुळ् आटिय–(मांसखोजी) पक्षी के समान; कटुम्–तेज; पोर् कणै–युद्ध शर; तुरन्तान्–छोड़े; अवै–वे; चुटर् पोय् विळ्ळा–प्रकाश-किरणों से अवियुक्त; नॆटु कवचत्तु इटै–(लक्ष्मण के) बड़े कवच के मध्य; नुळैयातु–प्रवेश न कर सके; उक–गिरे; वॆकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। २६६३

इन्द्रजित् के अंदर बहता रहा रक्त पुष्ट आग के समान बहने लगा। वह चल मेरु के समान चलित हो गया। फिर थोड़ा सँभलकर उसने आहार खोजनेवाले पक्षियों के समान अस्त्र चलाये। वे लक्ष्मण के अमुक्त छवि कवच-मध्य प्रवेश नहीं कर सके और गिर गये। तब इन्द्रजित् बहुत क्रुद्ध हुआ। २९९३

मऱित्तायिरम् वडिवॆङ्गणै मरुमत्तिनै मदियाक्
कुऱित्तायिरम् बरित्तेरवन् विडुत्तानवै कुऱिपार्त्
तिऱुत्तानॆडुञ् जरत्तालोरु तनिनायहऱ् किळैयोन्
शॆऱित्तानुडल् शिलपॊऱ्कणै शिलैनाणऱत् तॆरित्तान् 2994

आयिरम् परि–सहस्र अश्वों के; तेरवन्–रथवाला; मऱित्तु–फिर; मतिया–सोचकर; आयिरम्–हजार; वटि वॆम् कणै–तीक्ष्ण और भयंकर अस्त्र; मरुमत्तिनै कुऱित्तु–मर्मस्थल देखकर; विटुत्तान्–चलाये; तनि नायकऱ्कु–अकेले नायक के; इळैयोन्–लघुभ्राता ने; अवै–उनका; कुऱि पार्त्तु–निशाना लगाकर; ऒरु नॆटुम् चरत्ताल्–एक लम्बे अस्त्र से; इऱुत्तान्–कटवा दिया; चिलै नाण् अऱ–धनुष का डोरा काटा; पॊन्–स्वर्ण-सम; चिल–कुछ; कणै–अस्त्रों को; तॆरित्तान्–चुन लेकर; उटल् चॆऱित्तान्–उसके शरीर में चुभो दिया। २६६४

सहस्र अश्वयुक्त रथ पर आरूढ़ होकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के मर्म पर हज़ार तीक्ष्ण संदाहक शर चलाये। अप्रतिम नायक श्रीराम के कनिष्ठ ने निशाना साधकर एक लंबे शर से उनको काटा, कुछ स्वर्ण-सम शर चलाकर उसके धनु का डोरा भी तोड़ दिया। फिर कुछ अस्त्र शरीरों पर गड़ा दिये। २९९४

विल्लिङ्गिदु नॆडुमाल्शिव नॆतुमेलवर् तनुवे
कॊल्लॆन्ऱुहॊण् डयिर्त्तानॆडुङ् गवशत्तॆयुङ् गुलैयाच्
चॆल्लुङ्गॊडुङ् गणैयावैयुञ् जिदैयामैयुन् दॆरिन्दान्
वॆल्लुन्दर मिल्लामैयु मऱिन्दानह मॆलिन्दान् 2995

इङ्कु इतु विल्–यहाँ यह (लक्ष्मण का) धनुष; नॆटु माल् चिवन् ऎन्नुम्–श्रीविष्णु, शिव आदि; मेलवर्–श्रेष्ठ देवों का; तनुवे कॊल्–धनु ही है क्या; ऎन्ऱु कॊण्टु–ऐसा सोच करके; अयिर्त्तान्–संशयचित्त हुआ; नॆटुम् कवचत्तैयुम्–और बड़े कवच को भी; कुलैया–छिन्न-भिन्न करके; चॆल्लुम्–जो आगे जाते हैं; कॊटुम् कणै यावैयुम्–क्रूर सभी शरों के; चितैयामैयुम्–छिन्न न होने की बात; तॆरिन्तान्–जान ली; वॆल्लुम् तरम् इल्लामैयुम्–अपनी जीत की कोई संभावना न रहना; अऱिन्तान्–जान लिया; अकम् मॆलिन्तान्–मन में खिन्न हुआ। २९९५

इन्द्रजित् को संशय हो गया कि क्या लक्ष्मण के हाथ का वह धनुष श्रीविष्णु, शिव आदि अतिश्रेष्ठ देवों का चाप है। और उसने देखा कि उसके शर अपने कवच को छिन्न करते हुए जानेवाले लक्ष्मण के शरों का कुछ नहीं कर पा रहे हैं। उसे इसका भी भान हुआ कि वह जीत नहीं सकेगा। इसलिए वह बहुत खिन्नमन हो गया। २९९५

अत्तन्मैयै यऱिन्दानवन् शिऱ्ऱादैयु मणुहा
मुत्तन्मुह नोक्कावॊरु मॊऴिकेळॆन्न मॊऴिवान्
ऎत्तन्मैयु मिमैयोर्हळै वॆन्ऱानिहल् वॆन्ऱाय्
पित्तन्महन् ऱळर्न्दानिनिप् पिऴैयानॆनप् पहर्न्दान् 2996

अवन्–उसके; चिऱ्ऱ तातैयुम्–चाचा ने भी; अ तन्मैयै–उस स्थिति को; अऱिन्तु–जानकर; मुत्तन्–मुक्त लक्ष्मण; अणुका–के पास जाकर; मुकम् नोक्का–उनका मुख देखकर; ऒरु मॊऴि केळ्–एक बात सुनो; ऎन्न–कहकर; मॊऴिवान्–बोलने लगा; ऎ तन्मैयुम्–सभी प्रकार के; इमैयोर्कळै–देवों को; वॆन्ऱान्–जिसने जीता था उसे; इकल्–युद्ध में; वॆन्ऱाय्–जीत लिया; पित्तन् मकन्–दीवाने (रावण) का पुत्र यह; तळर्न्तान्–शिथिल पड़ गया; इनि–अब; पिऴैयान्–जीता नहीं रहेगा; ऎन–ऐसा; पकर्न्तान्–कहा। २९९६

उस इन्द्रजित् के चाचा विभीषण ने इन्द्रजित् की क्षीण हालत देखी तो मोक्षदाता लक्ष्मण के पास जाकर उनका मुख देखा और कहा कि एक बात सुनें। आपने सब प्रकार के देवों के विजेता इसको युद्ध में हराया

है। (प्रेम-) पागल रावण का पुत्र यह बहुत जर्जर हो गया है। जीवित बचेगा नहीं। २९९६

कूड्ऱिऩ्पडि कॉदिक्किऩ्ऱवक् कॉलैवाळॅयिऱ् ऱरक्कऩ्
एऱ्ऱुम्जिलै नॅडुनाणॊलि युलहेऴिनु मॅय्दच्
चीऱ्ऱऩ्दलैत् तलैशॅऩ्ऱुऱ विदुतीरॅऩत् तॅरियाक्
काऱ्ऱिऩ्पड तॊडुत्ताऩव ऩदुवेकॊडु कात्ताऩ् 2997

कूड्ऱिऩ् पटि–यम के समान; कॉतिक्किऩ्ऱ–खौलनेवाला; अ–वह; वाळ् ऍयिऱ–तीक्ष्ण (घोर) दांतों वाला; कॉलै अरक्कऩ्–वधकारी राक्षस; चिलै–अपने चाप पर; एऱ्ऱुम्–जो चढ़ाया; नॅट्टु नाण् ऑलि–लम्बे डोरे की ध्वनि; एऴु उलकिऩुम् ऍय्त–सातों लोकों में पहुँची तो; चीऱ्ऱम्–कोप; तलै तलै चॅऩ्ऱु उऱ–सिर पर जा लगा; इतु तीर्–इसको बुझाओ; ऍऩ–कहकर; काऱ्ऱिऩ् पटै–वायवास्त्र को; तॅरिया–चुन लेकर; तॊट्टुत्ताऩ्–लगाकर चलाया; अवऩ्–उस (लक्ष्मण) ने; अतुवे कॊट्टु–उसी अस्त्र से; कात्ताऩ्–उसे रोका। २९९७

यम-तुल्य, खौलनेवाले, तीक्ष्ण दंतोरे व घातक इन्द्रजित् ने धनु के डोरे को टंकृत किया। वह ज्यास्वन सातों लोकों में जाकर भरा। क्रोध उसके सिर पर चढ़ गया। उसने वायवास्त्र डोरे से लगाया और कहा कि इसे मिटाओ (तो देखें)। उसने उसे चलाया तो लक्ष्मण ने उसी अस्त्र से उसको रोक दिया। २९९७

अऩलिऩ्पडै तॊडुत्ताऩव ऩदुवेकॊडु तडुत्ताऩ्
पुऩलिऩ्पडै तॊडुत्ताऩव ऩदुवेकॊडु पॊरुत्ताऩ्
कऩवॅङ्गदि रवऩ्वॅम्बडै तुरन्दाऩ् मऩङ्गरियाऩ्
शिऩवॅन्दिऱ विळङ्गोळरि यदुवेकॊडु तीर्त्ताऩ् 2998

अवऩ्–उस (इन्द्रजित्) ने; अऩलिऩ् पटै–आग्नेयास्त्र; तॊट्टुत्ताऩ्–चलाया; अतुवे कॊट्टु तट्टुत्ताऩ्–उसी से रोका (लक्ष्मण ने); अवऩ्–उसने; पुऩलिऩ् पटै–वरुणास्त्र; तॊट्टुत्ताऩ्–चलाया; अतुवे कॊट्टु–उसी से; पॊरुत्ताऩ्–रोका; मऩम् करियाऩ्–काले मन वाले ने; कऩ वॅम् कतिरवऩ्–अधिक गरम किरणमाली का; वॅम् पटै–प्रखर अस्त्र; तुरन्ताऩ्–छोड़ा; चिऩ–क्रुद्ध; वॅम् तिऱल्–वहुत सबल; इळम् कोळरि–वालकेसरी ने; अतुवे कॊट्टु–उसी से; तीर्त्ताऩ्–उसे मिटाया। २९९८

फिर उसने आग्नेयास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने आग्नेयास्त्र ही से उसे रोक दिया। उसने वरुणास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने वरुणास्त्र से ही उसे निवार दिया। काले मन वाले इन्द्रजित् ने वहुत गरम तथा कठोर सूर्यास्त्र छोड़ा। क्रुद्ध और सवल लक्ष्मण ने सूर्यास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। २९९८

इदुकात्तिहीं ॲन्नावॅडुत् तिशिहप्पडै यॅय्दान्
अदुकाप्पदऱ्कदुवेयळ वॆन्नात्तॊडुत् तमैन्दान्
शॆंदुहाप्पडै तॊडुप्पेॅन्न निनैन्दान् तिशैमुहत्तान्
मुदुमाप्पडै तुरन्देतिनि मुडिन्दायॆन्न मॊऴिन्दान् 2999

इदु कात्ति कोल्–इसे रोक भी सकते हो; ॲन्ना–कहकर; इचिकप्पटै–इषीकास्त्र; ॲट्टुत्तु ॲय्तान्–ले छोड़ा; अतु काप्पतऱ्कु–उसके निवारण के लिए; अतुवे अळवु–वही पर्याप्त है; ॲन्ना–सोचकर; अम्पिल् तॊट्टत्तु–अस्त्र चलाकर; अमैन्तान्–रहे; चॆंतुका पटै–अचूक अस्त्र; तॊटुप्पेन्–चलाऊँगा; ॲन्न–ऐसा; निनैन्तान्–सोचकर; तिचै मुकत्तान्–दिशामुख ब्रह्मा का; मुतु मा पटै–पुराना बड़ा अस्त्र; तुरन्तेन्–चलाया है; इनि मुटिन्ताय्–अब मिटे; ॲन्न मॊऴिन्तान्–ऐसा कहा। २८९९

"इसको भी रोक सकोगे शायद !" यह कहते हुए इन्द्रजित् ने इषीकास्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा कि वही अस्त्र उसे रोकने के लिए पर्याप्त है। वे इषीकास्त्र चलाकर शांत रहे। फिर इन्द्रजित् ने निश्चय किया कि अचूक अस्त्र कोई प्रयोग करूँगा। उसने बड़े ब्रह्मास्त्र को छोड़ा और कहा कि अब तुम गये। २९९९

वानिन्ऱलै निलैनिन्ऱवर् मऴुवाळियुम् मलरोन्
तानुम्मुनि वररुम्बिऱ तवत्तोर्हळु मऱत्तोर्
कोनुम्बिऱ पिऱतेवर्हळ् कुऴुवुम्मनङ् गुलैन्दार्
ऊनम्मिनि यिलदाहुह विळङ्गोक्कॆन्न वुरैत्तार् 3000

वानिन् तलै–आकाश में; निलै निन्ऱवर्–जो स्थायी हैं; मऴु आळियुम्–परशु के धारक शिव; मलरोन् तानुम्–और कमलभव; मुनिवररुम्–और मुनिवर; पिऱ तवत्तोर्कळुम्–अन्य तपस्वीगण; अऱत्तोर् कोनुम्–धर्मश्रेष्ठों के राजा देवेन्द्र; पिऱ पिऱ–अलग-अलग; तेवर्कळ् कुऴुवुम्–देववृन्द; मनम् कुलैन्तार्–चिन्ताक्रांत हुए; इळम् कोक्कु–युवराज को; इनि–अब; ऊनम् इलतु–हानि नहीं; आकुक–हो; ॲन्न–ऐसा; उरैत्तार्–मंगलकामना कही। ३०००

इसको देखकर व्योमलोक के स्थिर वासी देवगण, परशुधर शिव, कमलभव ब्रह्मा, मुनिवर, अन्य तपस्वी, धर्मावलम्बियों के राजा देवेंद्र और अन्य देववृन्द सभी व्यग्र हुए। मंगल-कामना की कि लघुराज पर कोई आँच न आवे। ३०००

ऊऴिक्कडै यिरुमत्तलै युलहियावैयु मुण्णुम्
आऴिप्पॆरुङ् गनऱन्नॊरु शुडरॆन्नवु माहाप्
पाऴिच्चिहै परप्पित्तनि पडर्हिन्ऱदु पार्त्तान्
आऴित्तनि मुदनायहऱ् किळैयानदु मदित्तान् 3001

कट्टै ऊऴि–अन्तिम युग; इऱुम् अ तलै–जब अन्त होगा तब; उलकु यावैयुम् उण्णुम्–सारे लोकों के भक्षक; आऴि पॅरुम् कतल्–समुद्र-मध्य की बड़ी आग; तन् ओर चुटर्–उस अस्त्र की एक किरण है; ऍन्ऩतवुम्–ऐसा कहने भी योग्य; आका–नहीं ऐसा (तेजोमय); पाऴि चिकै–अपनी बड़ी ज्वालाओं को; परप्पि–फैलाते हुए; तनि–अनुपम; पटर्किन्ऱतु–आता है उसे; अऴि–चक्रधारी; तनि–अद्वितीय; मुतल्–आदि; नायकऱ्कु–नायक के; इळैयान्–छोटे भाई ने; पार्त्तान्–देखा; अतु मतित्तान्–उसका महत्त्व जाना। ३००१

युगक्षय के दिन सारे लोकों को उदरस्थ कर लेनेवाली समुद्र की बड़ी बड़वाग्नि उसकी एक किरण के भी समान नहीं होगी —इतने अधिक तेज के साथ अपनी विपुल ज्वालाओं को निःसृत करता हुआ, निपट अनुपम रीति से वह अस्त्र आता रहा और चक्रधर परमदेव जगन्नायक के भाई लक्ष्मण ने उसे देखा और उसकी शक्ति पहचान ली। ३००१

माट्टातिवन् मलरोन्पडै मुवऱ्पोदुतन् वलत्ताल्
मीट्टानलन् दडुत्तानलन् मुडिन्दानॅन विट्टान्
काट्टादिनिक् करन्दालदु करुमम्मल वॅन्नात्
ताट्टामरै मलरोन्बडै तॊडुप्पेऩॅनच् चमैन्दान् 3002

इवन् मलरोन् पडै माट्टान्–यह ब्रह्मास्त्र झेल नहीं सकेगा; मुतऱ्पोतु–पहली बार; तन् वलत्ताल्–अपने बल से; मीट्टान् अलन्–न लौटा सका; तडुत्तान् अलन्–रोक भी नहीं सका; मुटिन्तान्–अब गया; ऍन–सोचकर; विट्टान्–छोड़ा (इन्द्रजित् ने); काट्टातु–बल-प्रदर्शन किये बिना; इति करन्ताल्–अब उसे छिपाये रखें तो; अतु करुमम् अलतु–वह (उचित) कार्य नहीं होगा; ऍन्ना–सोचकर; ताळ् तामरै मलरोन्–लम्बे नाल के कमल के स्वामी (ब्रह्मा) के; पडै–अस्त्र को; तॊटुप्पेन्–लगाकर चलाऊँगा; ऍन चमैन्तान्–ऐसा निश्चय किया। ३००२

"यह ब्रह्मास्त्र के सामने नहीं ठहर सकेगा। पहली बार हमने जब चलाया था उसने इसको अपनी शक्ति से न फिराया, न रोक पाया। अबकी बार यह, बस, गया।" ऐसा सोचकर इन्द्रजित् ने वह अस्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा, अब हम अपना बलप्रदर्शन न करके छिपाये रहें, तो वह बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। मैं अभी कमलासनास्त्र ही छोड़ूँगा। लक्ष्मण ने ऐसा निर्णय किया। ३००२

नन्ऱाहुह वुलहुक्कॅन मुदलोन्मौऴि नविन्ऱान्
बिन्ऱादव तुयिर्मेऱ्चॅल वौऴिहॅन्बदु पिडित्तान्
ऑन्ऱादविम् मलरोन्पडै तन्मायक्कवॅन् ऱुरैत्तान्
निन्ऱानदु तुरन्दानवन् नलम्वानवर् नितैन्दार् 3003

उलकुक्कु नन्ऱाकुक–लोक का क्षेम हो; ऍन–कहकर; मुतलोन् मौऴि–भगवान के शब्द (वेद); नविन्ऱान्–कहे; पिन्ऱातवन्–जो कभी पीछे नहीं हटता;

उयिर् मेल्–उसके प्राणों पर; चॅलवु ऑळ्रिक–जाना भी न रहे; ॲन्पतु पिटित्तान्–यह संकल्प भी किया; ऑन्ऱात–(लोक-कल्याण के लिए) अनुचित; इ मलरोन् पटै तन्नै–उस ब्रह्मास्त्र को; मायक्क–मिटा दे; ॲन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा (अपने ब्रह्मास्त्र से) कहा; निन्ऱान्–खड़े होकर; अतु तुरन्तान्–उसको छोड़ा; वानवर्–देवों ने; अवन् नलम्–उनका सद्भाव; निनैन्तार्–स्मरण किया। ३००३

लक्ष्मण ने लोकक्षेम का मंगल चाहकर आदिभगवान विष्णु के स्वर वेदों के मंत्र कहे। फिर "जो कभी पीछे नहीं हटता है, उस इन्द्रजित् के प्राणों पर नहीं चले" यह विचार करके लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र को आज्ञा दी कि केवल वही अस्त्र मिटाओ। फिर खड़े होकर उन्होंने वह अस्त्र छुड़ाया। देव उनके सद्गुण पर मुदित हुए। ३००३

तान्विट्टदु मलरोन्पडै यॅनिन्मऱ्ऱिडै तरुमो
वान्विट्टदु मण्विट्टदु मऱवोन्उड लिरुमो
तेन्विट्टुहु मलरोन्पडै तीर्प्पायॅनत् तीर्न्दान्
ऊन्विट्टव नऱम्विट्टिल नॅनवानव रुवन्दार् 3004

तेन् विट्टु उकु–मधु निकालकर गिरानेवाले; मलरोन् पटै–कमल के स्वामी ब्रह्मा का अस्त्र; तीर्प्पाय्–मेटो; ॲन–कहकर; तीर्न्तान् तान्–जिसने छोड़ा उस लक्ष्मण का; विट्टतुम्–प्रेरित; मलरोन् पटै–ब्रह्मास्त्र; ॲनिन्–है तो; इटै तरुमो–पीछे हटेगा क्या; वान् विट्टतुम्–आकाश छोड़कर भी; मण् विट्टतुम्–पृथ्वी छोड़कर भी; मऱवोन् उटल्–दुष्ट के शरीर को; इरुमो–मिटा देगा क्या; ऊन् विट्टवन्–जिसने नीच कर्म छोड़ दिया है वह; अऱम् विट्टिलन्–धर्म नहीं छोड़ चुका है; ॲन–ऐसा; वानवर् उवन्तार्–देव मुदित हुए। ३००४

देवों ने यह कहकर मोद जताया कि मधुस्रावी कमल के देवता ब्रह्मास्त्र को केवल इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र को मिटाने की आज्ञा देकर लक्ष्मण ने छुड़ाया है। वह भी ब्रह्मास्त्र ही है तो भी वह क्या आज्ञा से पीछे हटेगा? (नहीं।) क्या वह, जिसने व्योमलोक को और भूलोक को अछूता छोड़ दिया है, क्रूर इन्द्रजित् के शरीर का नाश करेगा? लक्ष्मण नीच भावों से विमुक्त हैं। उन्होंने धर्म नही छोड़ा है। ३००४

उरुमेऱुवन् दॅदिर्त्तालद नॅदिरेनॅरुप् पुयत्ताल्
वरुमाङ्गदु तविर्न्दालॅन मऱवोन्पडै मायत्
तिरुमाल्तनक् किळैयान्पडै युलहेळ्ळैयुन् दीय्क्कुम्
अरुमाहन लॅननिन्ऱदु विशुम्बॅङ्गणु माहि 3005

उरुम् एऱु–अशनिश्रेष्ठ; वन्तु ॲतिर्न्ताल्–आकर आक्रमण करे तब; अतन् ॲतिरे–उसके आगे; नॅरुप्पु उयत्ताल्–आग चला दे; आङ्कु वरुम्–वहाँ आता; अतु–वह वज्र; तविर्न्ताल् ॲन–दूर हो गया हो; ॲन–जैसे; मऱवोन् पटै–(इन्द्रजित्) दुष्ट का अस्त्र; माय–मिट गया; तिरुमाल् तनक्कु इळैयान्–श्रीविष्णु

के छोटे भाई का; पटै–अस्त्र; विचुम्पु अँङ्कणुम् आकि–आकाश भर में व्यापकर; उलकु एऴैयुम् तीय्क्कुम्–सातों लोकों को जला देगा; अश मा कतल्–अपूर्व बड़ी आग; अँन्न–ऐसा; नितृरतु–रहा। ३००५

अशनि के सामने कोई आग आयी हो और उससे वज्र हट गया हो, ऐसा दुष्ट इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र मिट गया। श्रीविष्णु के भाई का अस्त्र आकाश भर में व्याप गया और सातों लोकों की नाशकारी बड़े अग्निपुंज के समान स्थिर रहता रहा। ३००५

पडैयङ्गदु पडरावहै पहलोन्कुल मरुमान्
इडैयीत्ऱदु तडुक्कुम्बडि शॅन्दीयुह वॅय्दान्
तॊडैयॊन्ऱिनैक् कणैमीमिशैत् तुरुवायिनि यॅन्ऱान्
विडमॊन्ऱुहॊण् डॊन्ऱीरन्ददु पोऱीरन्ददु वेहम् 3006

पकलोन् कुल मरुमान्–सूर्य (कुल) वंशज ने; अङ्कु–वहाँ; अतु पटै–वह अस्त्र; पटरा वकै–(आगे) न बढ़े ऐसा; तॊटै ऑन्ऱिनै–और एक अस्त्र को; कणै मी मिचै–आकाश में अस्त्र पर; इनि–अब; तुरुवाय्–हावी आओ; अँन्ऱान्–कहा; अतु ऑन्ऱु–उस पहले को; इटै तटुक्कुम्पटि–बीच में रोकने; चॅम् ती उक–लाल आग निकालते हुए; अँय्तान्–चलाया; ऑन्ऱु विटम् कॊण्टु–एक विष से; ऑन्ऱु ईर्न्ततु पोल्–दूसरा हर दिया जैसे; वेकम् तीर्न्ततु–वेग-विमुक्त हुआ। ३००६

दिनकुलभूत लक्ष्मण ने उसे बढ़ने से रोकने के विचार से दूसरे अस्त्र को यह कहकर छोड़ा कि जाकर उसे दबा दो। वह लाल अग्नि उगलता गया। उससे एक विष से दूसरा विष हर गया हो, ऐसा पहले अस्त्र की शक्ति क्षीण हो गयी। ३००६

विण्णोरदु कण्डार्वय वीरर्क्किनि मेन्मेल्
ऑण्णादन वुळवोवॅन मनन्देऱिन रुवन्दार्
कण्णार्नुदऱ् पॅरुमानिवर्क् करिदोवॅनक् कडॆपार्त्
तॅण्णादिवै पहर्न्दीर्पॊरुळ् केळीरॅन विशैत्तान् 3007

अतु–उसे; विण्णोर् कण्टार्–देवों ने देखा; वय वीरर्क्कु–विजयी वीर (लक्ष्मण) के लिए; इनि–अब; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; ऑण्णातन–आ मिलनेवाले (हित, सामर्थ्य आदि); उळवो–हैं क्या; अँन–सोचकर; मनम् तेऱिनर्–मन में धैर्य धरकर; उवन्तार्–खुश हुए; नुतल् कण् आर्–जिनके भाल में नेत्र है वे; पॅरुमान्–भगवान; इवर्क्कु अरितो अँन–इनके लिए कठिन क्या ऐसा; कटै पार्त्तु अँण्णातु–अन्त तक आजमाये बगैर; इवै पकर्न्तीर्–ये वचन कहे; पॊरुळ् केळीर्–तथ्य सुनिए; अँन–कहकर; इचैत्तान्–आगे बोले। ३००७

उसको देवों ने देखा। "विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण के लिए अब उत्तरोत्तर आ नहीं लगें ऐसे कुछ हैं क्या ?" यह सोचकर देव धीर

और बहुत आनंदित हुए। भालनेत्र शिवजी ने कहा कि तुम लोगों ने जो कहा है, वह उनका सारा पराक्रम और रहस्य आद्योपांत न जानकर कहा है। यथार्थ सुनो। ३००७

नारायण नररॆन्ऱिव रुळरायॆनमक् कॆल्लाम्
वेराय्मुळ् मुदर्कारणप् पॊरुळाय्विनै कडन्दोर्
आरायिनुन् दॆरियाददोर् नॆडुमायैयि नहत्तार्
पारायण मऱैनान्गैयुङ् गडन्दारिवर् पऴैयोर् 3008

इवर्–ये; नारायण नरर् ऎन्ऱु–नारायण और नर ऐसे; उळराय्–नामधारी रहकर; नमक्कु ऎल्लाम्–हम सबके; वेराय्–मूल हैं; मुळु मुतल् कारण पॊरुळाय्–अशेष, सर्व आदि कारण तत्त्व हैं; विनै कटन्तोर्–कर्मपारण; आरायिनुम्–जो भी हों उन सभी के लिए भी; तॆरियातत्तु ओर्–अज्ञात एक; नॆटु मायैयिन् अकत्तार्–गम्भीर माया-मध्य हैं; पारायण–अध्ययन के; मऱै नान्कैयुम्–चारों वेदों के; कटन्तार्–पार हैं; इवर् पऴैयोर्–ये प्राचीनतम है। ३००८

ये नरनारायण हैं। हमारे मूल हैं। अशेष आदिकारण हैं। कर्ममुक्तों के लिए भी अज्ञात है और बड़ी माया के मध्य हैं। पारायण के चतुर्वेद के भी परे हैं। वे पुरातन पुरुष हैं। ३००८

अऱत्तारऴि वुळदामॆन मऱिवुन्दॊडरन् दणहाप्
पुऱत्तार्पुहुन् दहत्तारॆनप् पिऱन्दन्नदु पुरप्पार्
मऱत्तार्कुल मुदल्वेरऱ मायप्पानिवण् वन्दार्
तिऱत्तालदु तॆरिन्दियावरुन् दॆरियावहै तिरिवार् 3009

अऱिवुम् तॊटर्न्तु अणुका–ज्ञान भी जिनको पीछे जाकर छू नहीं सकता; पुऱत्तार्–ऐसे दूर के है; अऱत्तु आऱु–धर्ममार्ग; अऴिवु उळतु आम् ऎन–नष्ट हो रहा है, सोचकर; पुकुन्तु–संसार में प्रवेश करके; अकत्तार् ऎन–संसार-बद्ध के समान; पिऱन्तु–जन्म लेकर; अन्नतु–उस धर्म के; पुरप्पार्–संरक्षक बने; मऱत्तार्–पापियों का; कुलम्–समूह; मुतल् वेर् अऱ–निर्मूल; मायप्पान्–करके नाश करने; इवण्–इस लोक में; वन्तार्–आये है; यावरुन्–सभी; तिऱत्ताल्–अपने बुद्धिबल से; अतु–वह रहस्य; तॆरिन्तु तॆरिया वकै–जानकर भी न जानें इस तरह; तिरिवार्–संचार करते हैं। ३००९

बुद्धि इनका अन्वेषण करके पा नहीं सकती। धर्म की ग्लानि होती जानकर वे मानो इस जगत के अन्तर्गत हों, ऐसा अवतार लेकर उस धर्म का संरक्षण करनेवाले हैं। दुष्टों को निर्मूल करने यहाँ, इस भूमि में वे आये है। कोई यह रहस्य अपनी बुद्धि के सामर्थ्य से अनुमान करके भी जान नहीं पायें, इस प्रकार वे व्यवहार करते फिरते हैं। ३००९

उयिर्दोऱुमुऱ् ऱुळन्दोत्तिरत् तोरुवनॆन्न वुरैक्कुम्
अयिरानिलै युडैयानिव नवनिव्वुल हत्तुम्
तयिर्दोय्पिरै यॆन्नलाम्वहै कलन्देऱिय् तलैवन्
पयिराददोर् पॊरुळिन्नवॆन् ऱुणर्वीरिदु परमाल् 3010

इवन्–यह; उयिर् तोऱुम्–जीव-जीव में; उऱ्ऱु–लगकर; उळन्–रहते हैं; तोत्तिरत्तु ओरुवन्–स्तुत्य हैं; ऎन्न–ऐसा; उरैक्कुम्–कथित; अयिरा निलै–असंदिग्ध स्थिति; उडैयान्–के हैं; अवन्–वे; तयिर् तोय्–दही जमानेवाले; पिरै ऎन्नल् आम् वकै–जामन के समान मान्य प्रकार से; इ उलकु अत्तनैयुम्–इस सारे लोक में; कलन्तु एऱिय–मिले रहनेवाले हैं; तलैवन्–नाथ है; इन्नतु इतु–ऐसा यया; पयिरातत्तु–अविमर्शनीय; ओर् पॊरुळ्–एक तत्त्व है; ऎन्ऱु उणर्वीर्–ऐसा जान लीजिए; इतु परम्–यह परतत्त्व है । ३०१०

ये सभी जीवों के अन्तर्यामी हैं। स्तुत्य हैं, अद्वितीय हैं। वे ऐसे मान्य असंदिग्ध स्थिति के हैं। वे दही जमानेवाले जामन के समान सारे लोकों में मिश्रित रहते हैं। वे ऐसे तत्त्व हैं, जिसे यह कहकर निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता कि यह अमुक है! यह तुम लोग जान लो। ये परमतत्त्व है। ३०१०

नॆडुम्बाऱ्कडऱ् किडन्दारुम्वण् डिवर्नीर्हुऱै नेर
विडुम्बाक्किय मुडैयार्हळैक् कुलत्तोडऱ वीट्टि
इडुम्बाक्कियत् तऱङ्गाप्पदऱ् कियन्दारॆन विर्दैलाम्
अडुम्बाक्किय दॊडॆच्चॆञ्जडै मुदलोन् पणित्तमैत्तात् 3011

पण्टु–पहले; नीर् कुऱै नेर–आप अपने कष्ट-निवेदन (जिनसे) करें; नॆटुम् पाल् कटल् किटन्तारुम्–विशाल क्षीरसागर में शयन करते रहनेवाले भी; इवर्–ये ही; विटुम् पाक्कियम् उटैयार्कळै–त्यक्त-भाग्य राक्षसों को; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अऱ वीट्टि–मिटाते हुए मारकर; पाक्कियम् इटुम्–सौभाग्यदायी; अऱम्–धर्म को; काप्पतऱ्कु–रक्षित करने के लिए; इयन्तार्–सम्मत हुए; ऎन–ऐसा; अटुम्पु आक्किय–'अडुंबु' नाम के फूलों की गुंथी; तॊटै–माला को; चॆम् चटै मुतलोन्–जो अपनी लाल जटा पर पहनते हैं, उन उत्तम देव ने; इतु ऎलाम् पणित्तु–यह सब कहके; अमैत्तान्–समाप्त किया। ३०११

प्राचीन काल में तुम लोग रक्षा की प्रार्थना करने क्षीरसागर जब गये थे, तब उस विशाल क्षीरसागर में शयनमुद्रा में तुम लोगों का निवेदन जिन्होंने सुना था, वे ये ही हैं। भाग्यमुक्त पापियों को कुल के साथ मिटाकर भाग्यदायी धर्म के संरक्षण के लिए ये सम्मत हुए हैं। —ऐसा कहकर 'अडुम्बु' नाम की लता के फूलों की मालाधारी, लाल जटायुक्त शिवजी ने अपनी बात समाप्त की। ३०११

अऱिन्देयिरुन् दऱियेमव नॆंडुमायैयि नयर्न्देम्
पिऱिन्देमिनि मुळुदैयमुम् बॆरुमानुरै पिडित्तेम्
ऎऱिन्देम्बहै मुळ्ळुम्मिनि दिरुन्देमिडर् कडन्देम्
शॆऱिन्दोर्विनैप् पहैवावॆनत् तॊळुदार्नॆडुन् देवर् 3012

नॆंडु तेवर्–बड़े देवों ने; विनै चॆऱिन्तोर् पकैवा–नीचकर्मों के शत्रु; अऱिन्ते इरुन्तु–जानते हुए भी; नॆंडु मायैयिन्–दीर्घ माया से; अऱियेम्–अज्ञानी बनकर; अयर्न्तेम्–थकित हुए; इनि–आगे; मुळुतु ऐयमुम्–संशय पूरा; पिऱिन्तेम्–छोड़ दिया; पॆरुमान् उरै–भगवान आपका वचन; पिटित्तेम्–ग्रहण किया; पकै मुळ्ळुम्–सारी शत्रुता; ऎऱिन्तेम्–दूर की; इनितु इरुन्तेम्–सुख से रहे; इटर् कटन्तेम्–संकट पार किया; ऎन–कहकर; तॊळुतार्–प्रणाम किया। ३०१२

शिवजी की बात सुनकर श्रेष्ठ देवों ने उत्तर में कहा कि हे दुष्कृतों के शत्रु ! हम यह जानते हुए भी गम्भीर माया के वश होकर भूल-से गये थे और भ्रमित हो गये थे। अब हमारा सारा संदेह दूर हो गया। आपकी बातों को स्थिर रूप से ग्रहण कर चुके। हमें विश्वास हो गया कि हम शत्रु-हीन हो गये। अब सुख से रहे और संकट को पार कर गये। यह कहकर उन्होंने शिवजी की पूजा की। ३०१२

मायोनॆंडुम् बडैवाङ्गिय वळैवाळॆयिऱ् ऱरक्कन्
नीयेयिदु तडुप्पायॆनि निऩ्क्कारॆदिर् निऱ्पार्
पोयेविशुम् बडैवायिदु पिळैयादॆनप् पुहलात्
तूयोन्मिशै युलहियावैयुन् दडुमारिडत् तुरन्दान् 3013

मायोन् नॆंटुम् पटै–श्रीविष्णु का बड़ा अस्त्र; वाङ्किय–लेकर; वळै–वक्र; वाळ् ऎयिऱु–उज्ज्वल दाँतों के; अरक्कन्–राक्षस ने; नीये–तुम ही; इतु–यह; तटुप्पाय् ऎनिन्–रोकोगे तो; निनक्कु ऎतिर् निऱ्पार् आर्–तुम्हारे सामने कौन टिका रह सकेगा; विचुम्पु पोये अटैवाय्–आकाश जा पहुँचोगे; इतु पिळैयातु–यह नहीं चूकेगा; ऎन पुकला–ऐसा कहकर; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; तटुमाऱिट–अस्त-व्यस्त करते हुए; तूयोन् मिचै–पवित्रमूर्ति पर; तुरन्तान्–चलाया। ३०१३

नारायणास्त्र हाथ में लेकर वक्रतीक्ष्णदंतुले, इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि अगर तुम इसे रोक सकोगे तो तुम्हारा सामना करनेवाला कौन होगा ? (कोई नहीं हो सकेगा)। पर निश्चित है कि तुम आकाश (स्वर्ग) पहुँच जाओ। यह अस्त्र चूकेगा नहीं। फिर उसने पवित्रमूर्ति पर सारे लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए उस अस्त्र को प्रेरित कर दिया। ३०१३

शेमित्तन रिमैयोर्तमैच् चिरत्तेन्दिय करत्तार्
आमित्तॊळिल् पिऱरियावरु मडैन्दार्पळु दडैयाक्

कामिप्पदु मुडिविप्पदु पडर्हिऩ्ऱदु कण्डाऩ्
नेमित्तऩि यरिदाऩॆऩ निऩैन्दाऩॆदिर् नडन्दाऩ् 3014

इमैयोर्–अपलक देवों ने; चिरत्तु–सिर पर; एन्तिय करत्तार्–उठाये हुए हाथों वाले; तमै चेमित्तऩर्–अपने को बचा लिया; पिऱर् यावरुम्–अन्य सभी ने; आम् इ तॊऴिल्–कारगर यह कार्य; अटैन्तार्–करके बचा लिया; पऴुतु अटैया–अमोघ; कामिप्पतु मुटिविप्पतु–इच्छा को पूरा करनेवाला वह अस्त्र; पटर्किऩ्ऱतु–बढ़ता आता; कण्टाऩ्–(लक्ष्मण ने) देखा; नेमि–चक्रधर; तऩि अरि ताऩ्–अप्रतिम हरि ही है; ऍऩ–ऐसा; निऩैन्ताऩ्–सोचा; ऍतिर् नटन्ताऩ्–सामने चले। ३०१४

देवों ने अपने सिरों पर हाथ रखकर अपने को बचा लिया। अन्य लोगों ने भी उसी कार्य को सफल जानकर वही अंजलि का काम करके अपने को बचा लिया। अचूक तथा इच्छित कार्य सिद्ध करनेवाले उस अस्त्र को बढ़ता आता देख लक्ष्मण अपने को चक्रधर विष्णु मानकर उसके सामने चले। ३०१४

तीक्कुमिऩ्ऩि युलहेऴैयु मॆऩच्चेऱलुन् दॆरिन्दाऩ्
नीक्कुन्दर मल्लामुऴ् मुदऱ्ऱाऩॆऩ निऩैन्दाऩ्
मीच्चॆऩ्ऱिल दयल्शॆऩ्ऱदु विलङ्गावलङ् गॊंडुमेल्
पोय्त्तङ्गदु कऩऩ्माण्डदु पुहैवीय्न्ददु पॊदुवे 3015

इऩ्ऩि–अब; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; तीक्कुम्–जला दे; ऍऩ–ऐसा; चेऱलुम्–उसका आना भी; तॆरिन्ताऩ्–जान लिया; ताऩ्–मैं; नीक्कुम्–दूर करूँ; तरम् अल्ला–ऐसी जिनकी गति नहीं; मुऴु मुतऱ्ऱाऩ्–वह आदितत्त्व हूँ; ऍऩ–ऐसा; निऩैन्ताऩ्–ध्यान किया; मी चॆऩ्ऱिलतु–उन पर नहीं गया; विलङ्का–हटकर; अयल् चॆऩ्ऱतु–दूर गया; अङ्कु–वहाँ; अतु–वह बाण; वलम् कॊंटु–दायें घूमकर; मेल् पोय्त्तु–ऊपर चला गया; पॊतुवे–समान रूप से (हित करके); कऩल् माण्टतु–अग्नि शान्त हुई; पुकै वीय्न्ततु–धुआँ भी हट गया। ३०१५

उन्होंने जान लिया कि वह सातों लोकों को जलाता-सा आ रहा है। उन्होंने अपने को अमर तथा अप्रतिहत आदिदेव के रूप में ध्यान कर लिया। तब वह उन पर न चला, पर हटकर दायीं ओर घूमकर ऊपर चला गया। सबका समान रूप से हित करते हुए उसकी आग बुझ गयी। धुआँ भी दूर हो गया। ३०१५

एत्ताडिऩ रिमैयोर्हऴुम् कवियिऩ्कुल मॆल्लाम्
कूत्ताडिऩ ररमङ्गैयर् कुनिन्दाडिऩर् तवत्तोर्
कात्तायुल कऩैत्तुमॆऩक् कऴित्ताडिऩर् कमलम्
पूत्ताऩुमम् मऴवाऴियुम् मुऴुवाय्हॊडु पुहऴ्न्दार् 3016

इमैयोर्कऴुम्–अपलक देव भी; एत्ताटिऩर्–स्तुति करते हुए नाचे; कवियिऩ् कुलम् ऍल्लाम्–और वानरवर्ग सभी; कूत्ताटिऩर्–नाचे; अर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ;

कुतित्तु आटितर्–झुकीं और नाचीं; तवत्तोर्–तपस्वी ऋषियों ने; उलकु अतैत्तुम्–सारे लोकों को; कात्ताय्–रक्षित किया; ऍन्–कहकर; कळित्तु–मुदित होकर; आटितर्–नृत्य किया; कमलम् पूत्तातुम्–कमलभव और; अम् मऴु आळियुम्–परशुधर शिव दोनों ने; मुळु वाय् कोंटु–अपने मुख भर (भूरि-भूरि); पुकऴ्न्तार्–प्रशंसा की। ३०१६

यह देखकर देवों ने उनकी स्तुति की और नृत्य किया। वानर सब नाचे। देवांगनाएँ झुक-झुककर नाचीं। मुनिगण मुदित हुए और लक्ष्मण से कहा कि आपने सारे लोकों को बचा दिया और नाचे। कमलभव और परशुधर ने जी खोलकर तारीफ़ की। ३०१६

अवनन्नतु कण्डातिव तारोवॆन वयिर्त्तान्
इवनन्नतु मुदलेयुडै यिरैयोनॆन वियवा
ऍवनॆन्निनु ननुराहुह विनियॆण्णल नॆन्नाच्
चिवनिन्पडै तॊडुत्तारुयिर् मुडिप्पेनॆनत् तॆरिन्दान् 3017

अवन्–वह (इन्द्रजित्); अन्नतु कण्टान्–को देखकर; इवन् आरो–यह कौन है; ऍन–ऐसा; अयिर्त्तान्–संशय करने लगा; इवन्–यह; अन्नतु–उस अस्त्र के; मुतलै उटै इऱैयोन्–मूलस्वामी भगवान नारायण है क्या; ऍन वियवा–ऐसा विस्मय करके; ऍवन् ऍन्निनुम्–कोई भी हो; नन्ऱु आकुक–भले ही हो; इनि–अब; ऍण्णलन्–विमर्श नहीं करूँगा; ऍन्ना–कहकर; चिवनिन् पटै–पाशुपतास्त्र; तॊटुत्तु–चलाकर; आर् उयिर्–उसके प्यारे प्राण; मुटिप्पेन्–समाप्त करूँगा; ऍन तॆरिन्तान्–ऐसा सोचा। ३०१७

इन्द्रजित् ने नारायणास्त्र को विफल होते देखा तो उसे संशय हो गया कि क्या यह नारायणस्त्र का मूलदेवता स्वयं नारायण तो नहीं! फिर विचारा कि जो भी हो उसका विचार अब नहीं करूँगा। और निर्णय किया कि पाशुपतास्त्र चलाकर उसके प्यारे प्राणों का अंत कर दूँगा। ३०१७

पार्प्पान्तरु मुलहियावैयु मोरुनाळोरु पहले
तोर्प्पान्पडै तॊडुप्पेनॆनत् तॆरिन्दानदु तॆरिया
मीप्पाविय विमैयोर्हुलम् वॆरुवुऱ्ऱदिप् पोऴ्दे
माय्प्पानॆन वुलहियावैयु मरुहुऱ्ऱन मयङ्गा 3018

पार्प्पान् तरुम्–ब्राह्मण ब्रह्मा द्वारा रचित; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; ओरु नाळ् ओरु पकले–अहर्निश के एक अह्न में; तीर्प्पान्–संहार करनेवाले शिव का; पटै–अस्त्र; तॊटुप्पेन्–प्रयोग करूँगा; ऍन तॆरिन्तान्–ऐसा विचारा; अतु तॆरिया–वह जानकर; मी पाविय–ऊपर एकत्रित रहे; इमैयोर् कुलम्–देववर्ग; वॆरुवुऱ्ऱु–डर गये; उलकु यावैयुम्–सारे लोकों को; इप्पोऴुते माय्प्पान्–अभी मिटा देगा; ऍन–ऐसा सोचकर; मयङ्का–भ्रमित हो; मरुकुऱ्ऱन–व्यथित हुए। ३०१८

ब्रह्मा-रचित सारे लोकों के अहर्निश के एक अह्न में नाश करनेवाले

शिवजी का अस्त्र चलाना जब इन्द्रजित् ने ठाना, तब वह जानकर आकाश में भरे रहे देववर्ग डर गये। 'सारे लोकों को अभी मिटा देगा'—यह सोचकर वे भ्रमित हुए और व्यथित हुए। ३०१८

तानेशिवन् तरप्पॅट्रदु तवनाळ्पल वुळन्देन्
नानेपिऱ रऱियाददु तन्देनॅन नविन्ऱान्
आनालिव नुयिर्होडलुक् कैयमिलै यॅन्ना
एनाळुमि दानालॅदिर् तडैयिल्लदै यॅडुत्तान् 3019

चिवन् ताने तरप् पॅट्रदु–शिव द्वारा स्वयं दिया गया; पल नाळ्–अनेक दिन; तवम् उळन्तेन्–तपस्या की; पिऱर् अऱियाततु–दूसरों द्वारा न जाना गया; नाने तन्तेन्–मैं ही देता हूँ; ॲन–ऐसा; नविन्ऱान्–(शिवजी) बोले; आनाल्–तो; इवन् उयिर् कोटलुक्कु–इसके प्राण हर लेगा उसमें; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; ॲन्ना–कहकर; एल् नाळुम्–योग्य दिन भी; इतु आनाल्–यह है इसलिए; ॲतिर् तडै इल्लतै–दुर्धर्ष उसे; ॲडुत्तान्–अपने हाथ में लिया। ३०१९

इन्द्रजित् ने सोचा— 'यह अस्त्र स्वयं शिवजी का दिया हुआ है। बहुत समय तपस्या की। तभी शिवजी ने यह कहकर मुझे दिया कि इसकी महत्ता और लोग नहीं जानते। मैं अपनी ओर से स्वयं दे रहा हूँ। तब तो इसके प्राणों का अंत होना असंदिग्ध है। और दिन भी आज अनुकूल बना है।' इतना सोचकर उसने उस दुर्दम अस्त्र को हाथ में लिया। ३०१९

मनत्तान्मलर् पुनल्शान्दमो डविदूवमुम् वहुत्तान्
निनैत्तानिव नुयिर्हॉण्डिव णिमिर्वायॅन निमिर्त्तान्
शिनत्तालॅडुज् जिलैनाण्डडन् दोण्मेलुऱच् चॅलुत्ता
ॲनैत्तायदोर् पोरुळालिडै तडैयिल्लदै विट्टान् 3020

मलर्–पुष्प; पुनल्–जल; चान्तमोटु–चन्दन के साथ; अवि–हवि; तूपमुम्–धूप; मनत्ताल् निनैत्तान् वकुत्तान्–मानसिक रूप से रचा; इवन् उयिर् कॉण्टु–इसके प्राण लेकर; इवण् निमिर्वाय्–यहाँ लौट आओ; ॲन–कहकर; निमिर्त्तान्–सीधा पकड़कर; नॆटु चिलै नाण्–बड़े धनु की प्रत्यंचा को; चिनत्ताल्–क्रोध के साथ; तटन् तोळ् मेल्–विशाल कंधे पर; उऱ चॅलुत्ता–खूब लगाकर; ॲनैत्तु आयतु ओर् पोरुळाल्–किसी की बनी किसी भी वस्तु से; इटै तडै इल्लतै–बीच में जो रोका नहीं जा सके उसको; विट्टान्–छोड़ा। ३०२०

फिर उसने मानसिक रीति से पुष्प, जल, चन्दन, हवि, धूप आदि से उसकी पूजा की। 'जाओ, इसके प्राण हर ले आओ' कहकर उसे सीधा किया। फिर डोरे से लगाकर अपने कंधे तक खींचा और किसी भी वस्तु से अवार्य उस अस्त्र को छुड़ाया। ३०२०

शूल्ङ्गळु मळुवुञ्जुडु कणैयुड्गनऱ् चुडरुम्
आलङ्गळु मरवङ्गळु मशनिक्कुल मॅवैयुम्
कालन्ऱन्न दुरुवङ्गळुङ् गरुम्बूदमुम् बॅरुम्बेय्च्
चालङ्गळुम् निमिर्हिन्ऱन्न वुलहॅङ्गणुन् दामाय् 3021

उलकु ॲङ्कणम्–लोकों में सर्वत्र; चूलङ्कळुम्–अनेक शूल; मळुवुम्–परशु; चुट्टु कणैयुम्–संदाहक अस्त्र; कतल् चुटरुम्–अग्निज्वालाएँ; आलङ्कळुम्–और विष; अरवङ्कळुम्–सर्प; अचति कुलम् ॲवैयुम्–सारे अशनिकुल; कालन् तन्तु उरुवङ्कळुम्–यम के रूप; करुम् पूतमुम्–काले भूत; पॅरु पेय् चालङ्कळुम्–बड़े-बड़े पिशाचगण; तान् आय्–खुद प्रकट होकर; निमिर्कित्ऱन–बढ़ते हैं। ३०२१

वह अनेक शूल, परशु, दाहक अस्त्र, आग और विष, सर्प, अशनिकुल, यम के अनेक रूप, काले भूत और बड़े पिशाचवृन्द सभी बना। वे बढ़ते आये। ३०२१

ऊळिक्कनल् लॊरुपालद नुडनेतॊडर्न् दुडऱ्ऱुम्
शूळिक्कॊडुङ् गडुङ्गाऱ्ऱद नुडन्वरत् तूऱ्क्कुम्
एळिऱ्कुमप् पुऱत्तायुळ पॅरुम्बोर्क्कड लिळिन्दाङ्
गाळित्तलैक् किडन्दालॅन्न नॅडुन्दूङ्गिरु ळडैय 3022

ऑरु पाल्–एक ओर; ऊळि कनल्–युगान्त की अग्नि; उटने तॊटर्न्तु–साथ लगे; उटऱ्ऱुम्–दुःख देगी; एळिऱ्कुम् अप्पुऱत्ताय्–सातों (समुद्रों) के उस पार; उळ–जो हैं; पॅरुम् पोर् कटल्–टकरानेवाला बड़ा सागर; इळिन्त आङ्कु–गिरा हो जैसे; आळि तलै–समुद्र के तीर पर; किटन्ताल् ॲन्न–पड़ा हो ऐसा जो रहा; नॅटु तूङ्कु इरुळ्–विशाल तथा लटकनेवाला अन्धकार; अटैय–रहे ऐसा; चूळि कॊटुम् कटुम् काऱ्ऱु–भयंकर तेज बवण्डर; अतन् उटने वर–उसके साथ आयगा; तूऱ्क्कुम्–(इस भांति आकर वह) नाश करेगा। ३०२२

एक ओर युगांत की अग्नि उसके साथ-साथ लगी आती और लोक को त्रस्त करती। दूसरी ओर घना और लटकता-सा अंधकार रहता जो सातों समुद्रों के उस पार रहनेवाले प्रहारशील समुद्र के समान रहा और जो समुद्र तीर पर पड़ा रहता हो। तीसरी ओर बवण्डर उसके साथ आता और लोकों को त्रस्त करता। ३०२२

इरिन्दार्कुल नॅडुन्देवर्ह ळिरुडिक्कुलत् तॅवरुम्
परिन्दारिदु पळुदाहिल दिरुवान्ॅनुम् बयत्ताल्
नॅरिन्दाङ्गळि कुरङ्गुऱ्ऱु पहरुन्दुणै नॅडिदे
तिरिन्दारिरु शुडरोडुल हॊरुमून्ऱुडन् तिरिय 3023

इतु–यह; पळुतु आकिलतु–व्यर्थ नहीं होगा; इरुवान्–(लक्ष्मण) नष्ट होगा; ॲन्नुम् पयत्ताल्–इस डर से; कुलम् नॅटु तेवर्कळ्–श्रेष्ठ कुल के देव; इरिन्तार्–

भाग गये; इरुटि कुलत्तु—ऋषिकुल के; अँवरुम्—सभी; परिन्तार्—दुःखी हुए; कुरङ्कु—मरकट; आङ्कु—वहाँ; नॅरिन्तु—सटकर; अळ्ि उर्ड्तु—जो निर्बल हुए वह; पकरुम् तुणै नॅटितु—कहने योग्य से बड़ा है; इरु चुटरोटु—दो तेजपुंजों (सूर्य-चन्द्र) के साथ; ऒरु मूनृ उलकु—तीनों लोक; उटन् तिरिय—साथ-साथ घूमे; तिरिन्तार्—सब भटके। ३०२३

श्रेष्ठ कुलों के देवों ने सोच लिया कि यह अचूक है और लक्ष्मण नहीं बचेगा। वे भागे। सभी ऋषि, मुनि दुःखी हुए। एकत्र वानरों की जो बदहालत हुई उसका वर्णन कथा-शक्ति से बड़ा है। दोनों तेजपुंज सूर्य-चन्द्र और पृथ्वी घूम गयी। लोकवासी भी भटकने लगे। ३०२३

पार्त्तानॅडुन् दहैवीडण नुयिर्हालुरप् पयत्ताल्
वेर्त्तानिदु विलक्कुन्दर मुळदोमुदल् वीरा
तीर्त्तावॅन वळैत्तानदर् किळङ्गोळरि शिरित्तान्
पोर्त्तारडर् कविवीररु मवन्दाणिळल् पुहुन्दार् 3024

नॅटु तकै वीटणन्—सुयोग्य विभीषण ने; पार्त्तान्—देखा; पयत्ताल्—डर से; उयिर् काल् उऱ—निःश्वास छोड़ते हुए; वेर्त्तान्—पसीने से भर गया; मुतल् वीरा—आदितत्त्व वीर; तीर्त्ता—पवित्रमूर्ति; इतु—यह; विलक्कुम् तरम् उळतो—रोका जाय ऐसा है क्या; ॲन—ऐसा; अळैत्तान्—(लक्ष्मण को) बुलाया (प्रश्न किया); अतऱ्कु—उसके उत्तर में; इळम् कोळरि—बालकेसरी; चिरित्तान्—हँसा; पोर्तार्—युद्ध-चिह्न के रूप में मालाओं के धारक; अटर्—भीड़ के; कवि वीररुम्—वानर वीर; अवन्—उनके; ताळ् निळल्—चरण की छाया में; पुकुन्तार्—प्रविष्ट हुए। ३०२४

सुयोग्य विभीषण की भी बुरी स्थिति हो गयी। डर से निःश्वास छोड़े। पसीना-पसीना हो गया। उसने लक्ष्मण से पूछा कि मूलभूत तत्त्व! वीर! क्या इसको रोकने का उपाय भी है? बालकेसरी यह सुनकर हँसा। युद्धचिह्न के रूप में माला से अलंकृत वानर वीर उनकी शरण-छाया में आ गये। ३०२४

अवयम्मुनक् कवयम्मॅनु मनैवोरैयु मञ्जल्
कवयम्मुमक् कॅन्ड्रोळिणै यॅनक्कैत्तलङ् गवित्तान्
उवयम्मुरु मुलहिऩ्पय मुणर्न्देनिनि यॊळ्ियेन्
शिवनैम्मुह मुडैयान्पडै तॊडुप्पेनॅनत् तॆळिन्दान् 3025

उमक्कु अवयम् अवयम्—आपके अभयशरण हैं, आपका ही अभय है; ॲनुम्—कहनेवाले; अनैवोरैयुम्—सभी को; अञ्चल्—मत डरो; उमक्कु—तुम लोगों के लिए; ॲन् तोळ् इणै—मेरे दो कंधों का जोड़ा; कवयम्—कवच है; ॲन—कहकर; कै तलम् कवित्तान्—(अभयमुद्रा में) हाथ औंधा किया; उवयम् उरुम्—दो बनकर रहे; उलकिन्—लोकों के; पयम्—भय को; उणर्न्तेन्—जाना; इनि ऒळ्ियेन्—

अब पीछे नहीं हटूँगा; ऐ मुकम् उटैयान्-पंचमुख; चिवन् पटै-शिव का अस्त्र; तॊंटुप्पेन-लगाऊँगा; ॲन्न तॆळिन्तान्-ऐसा निर्णय किया। ३०२५

'आपका अभय है, अभय-दान करें' —यह कहनेवाले सभी को लक्ष्मण ने धीरज दिलाया और कहा कि मत डरो। मेरे दोनों कंधों का जोड़ा तुम्हारा कवच बनेगा। उन्होंने अभय-मुद्रा में हथेली औंधी की। "आकाश तथा भूतल दो रहे लोकों के वासियों का भय मैं जानता हूँ। अब पीछे नहीं हटूंगा। पंचमुख शिव का अस्त्र चलाऊँगा।" यह लक्ष्मण ने साफ़ रूप से निर्णय किया। ३०२५

अप्पॊऱ्पडै मत्तत्ताल्निनैन् दर्च्चित्तदै यळिप्पाय्
इप्पॊऱ्पडै तनैमऱ्ऱॊरु तॊऴिल्शॆय्हिलै यॆन्नात्
तुप्पॊप्पदॊर् कणैकूट्टिनल् ऱुरन्दानिडै तॊंडरा
ॲप्पॊऱ्पॆरुम् बडैयुम्बुह विऴुङ्गुऱ्ऱदॊ रिमैप्पिन् 3026

अ पॊन् पटै-उस ज्वलन्त अस्त्र को; मत्तत्ताल् निनैन्तु-मन से स्मरण करके; अर्च्चित्तु-पूजा करके; अतै अऴिप्पाय्-उसे मिटाओ; मऱ्ऱु ऑरु तॊऴिल्-दूसरा कोई काम; चॆय्किलै-मत करो; ॲन्ना-कहकर; इ पॊन् पटै तनै-इस ज्वलन्त (पाशुपत-) अस्त्र को; तुप्पु ऑप्पतु-(शत्रु के अस्त्र की) समानता करनेवाले; ओर् कणै कूट्टिनन्-एक अस्त्र से लगाकर; तुरन्तान्-छोड़ा; इटै-(इन्द्रजित् का अस्त्र जहाँ रहा उस) स्थान में; तॊंटरा-जाकर; ॲ पॆरुम् पॊन् पटैयुम्-किसी भी बड़े ज्वलन्त अस्त्र को; पुक-अपने में समा लेने की स्थिति में रहकर; ओर् इमैप्पिन्-एक पल में; विऴुङ्कुऱ्ऱतु-निगल लिया। ३०२६

लक्ष्मण ने उस स्वर्ण-प्रकाशमय अस्त्र की मानसिक पूजा की। उसे हिदायत दी कि (इन्द्रजित् के) उस अस्त्र का नाश करो। पर आगे कोई कार्य मत करो। फिर उस उज्ज्वल अस्त्र को उसी के समान महत्त्व के और एक अस्त्र के साथ मिलाकर छोड़ा। वह उस अस्त्र के पास गया। किसी भी उज्ज्वल अस्त्र को आत्मसात् करने की शक्ति के साथ उसने पल भर में उस अस्त्र को निगल लिया। ३०२६

विण्णार्त्तदु मण्णार्त्तदु मेलोर्मणि मुरशिन्
कण्णार्त्तदु कडलार्त्तदु मळैयार्त्तदु कलैयोर्
ॲण्णार्त्तदु मऱैयार्त्तदु विशयम्मॆन्न वियम्बुम्
पॆण्णार्त्तन ळऱमार्त्तदु पिऱरार्त्तदु पॆरिदो 3027

विण् आर्त्ततु-व्योमलोक घहर उठा; मण् आर्त्ततु-पृथ्वी ने हो-हल्ला मचाया; मेलोर्-देवों की; मणि-सुन्दर; मुरचिन्-दुन्दुभी की; कण् आर्त्ततु-'आँख' ठनक उठी; कटल् आर्त्ततु-समुद्र गरजे; मऴै आर्त्ततु-मेघगर्जन हुआ; कलैयोर् ॲण्-ज्योतिषियों की संख्याएँ; आर्त्ततु-आनन्दरव करने लगीं; मऱै आर्त्ततु-वेदों ने नर्दन किया; विचयम् ॲन्न इयम्पुम् पॆण्-विजय कहलानेवाली देवी

ने; आर्त्तनळ्–शोर मचाया; अऱम् आर्त्ततु–धर्मदेवता ने मोदशब्द किया; पिऱर् आर्त्ततु–अन्यों ने नर्दन किया; पॅरितो–बड़ी बात है क्या। ३०२७

इन्द्रजित् के अस्त्र को विफल हुआ देखकर देवों और भूलोकवासियों ने जयघोष किया। देवों की दुन्दुभी बजायी गयी। समुद्र गरजे। मेघ-गर्जन हुआ। ज्योतिषी की गिनतियों ने आनंद मनाया। चारों वेदों और विजयश्री ने जयघोष किया। स्वयं धर्मदेवता ने नर्दन किया, तो दूसरों का नर्दन करना कौन सी बड़ी बात है? । ३०२७

इऱुकालैयि लुलहियावैयु मविप्पानिहऱ् पडैयै
मऱुहावहै पुरिन्दानदु वाङ्गुम्बडि वल्लान्
तॅऱुकालनिऱ् कॉडियोनुमऱ् ऱदुहण्डहन् दिहैत्तान्
अऱुहावयक् कविवीररु मरियॅन्नवदे यऱिन्दार् 3028

इऱु कालैयिन्–युगक्षय के समय; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; अविप्पान्–मिटानेवाले शिवजी के; इकल् पटैयै–सशक्त अस्त्र को; वल्लान्–बलवान लक्ष्मण ने; अतु वाङ्कुम्पटि–उसको मिटाने का; मऱुका वकै–अप्रमत्त उपाय; पुरिन्तान्–किया; अतु कण्टु–उसको देखकर; तॅऱु–संहारक; कालनिन्–यम से भी; कॉटियोनुम्–क्रूर इन्द्रजित्; अकम् तिकैत्तान्–मन में भ्रांत हुआ; अऱुका–अक्षय; वय कवि वीररुम्–विजयशील वानर वीर; अरि ॲन्पतै–हरि होने की बात; अऱिन्तार्–जान गये। ३०२८

युगक्षय के सर्वलोकसंहारक शिव के बलवान अस्त्र का हरण लक्ष्मण ने अप्रमत्त रीति से करा दिया। वह देखकर यमराज से भी क्रूर इन्द्रजित् भ्रमित हो गया। अक्षय वानर वीरों ने भी जान लिया कि लक्ष्मण हरि (का अंश) है। ३०२८

तॅय्वप्पडै पऴुदुऱ्ऱदु वॅन्तक्कूशुदल् शिदैवाल्
ॲय्वित्तह मुळदन्नदु पिऴैयादॅन्न विशैयाक्
कैवित्तह मदनाऱ्चिल कणैवित्तन नवैयुम्
मॊय्वित्तहन् तडन्दोळिनुम् नुदऱ्चूट्टिनु मूऴ्ह 3029

तॅय्वप् पटै–दिव्य अस्त्र (पाशुपतास्त्र); पऴुतुऱ्ऱतु–व्यर्थ गया; ॲन्न–कहकर; कूचुतल्–हिचकना; चितैवु–हीनता है; ॲय्–शर चलाने की; वित्तकम्–विद्या; उळतु–मेरे पास है; अन्नतु–वह ज्ञान; पिऴैयातु–चूकेगा नहीं; ॲन्न इचैया–ऐसा कहकर; कै वित्तकम् अतनाल्–हस्तलाघव से; चिल कणै–कुछ शर; वित्तिनन्–चलाये; अवैयुम्–वे भी; मॊय् वित्तकन्–गम्भीर ज्ञानी के; तटम् तोळिनुम्–विशाल कंधों पर और; नुतल् चूट्टिनुम्–भालपट्ट पर; मूऴ्क–चुभे तब। ३०२९

इन्द्रजित् ने विचारा— दिव्यास्त्र व्यर्थ हुआ। इस पर हिचकता रहना हीनता होगा। मेरे पास अस्त्रचालन की विद्या है। वह अचूक है।

ऐसा सोचकर उसने हस्तलाघव के साथ कुछ शर चलाये। वे भी बड़े ज्ञानी लक्ष्मण के विशाल कंधों और भाल के पट्ट पर चुभे। ३०२९

वॆय्योऩ्महऩ् मुदलाहिय विऱलोर्मिहु तिऱलोर्
कैयोय्विलर् मलैमारियि निरुदक्कडल् कडप्पार्
उय्यारॆऩ वडिवाळिहळ् शदकोडिह ळुय्त्ताऩ्
शॆय्योऩयल् तऩिनिऩ्ऱदऩ् शिऱुतादैयैच् चॆऱुत्ताऩ् 3030

वॆय्योऩ् मकऩ्–सूर्यपुत्र; मुतलाकिय–आदि; विऱलोर्–वीर; मिकु तिऱलोर्–अति बलवान; कै ओय्विलर्–हाथ को रोके बिना; मलै–पर्वतों को; मारियिऩ्–वर्षा के समान (फेंककर); निरुत कटल्–राक्षस-सागर को; कटप्पार्–पार करने लगे; उय्यार् ऍऩ–नहीं बचेंगे कहकर; चत कोटिकळ्–शत कोटि; वाळिकळ्–बाण; उय्त्तात्–चलाकर; चॆय्योऩ्–गोरे वर्ण के लक्ष्मण के; अयल्–पार्श्व में; तऩि निऩ्ऱ–अलग जो खड़ा रहा; तऩ् चिऱु तातैयै–अपने चाचा को; चॆऱुत्ताऩ्–घृणा से देखा (इन्द्रजित् ने)। ३०३०

सूर्यपुत्र सुग्रीव आदि वानर वीर बल में बढ़कर, हाथ रोके बिना पर्वतों की वर्षा-सी करते हुए राक्षस-सेना-सागर पार कर रहे थे। वे बचें नहीं, ऐसा संकल्प करके इन्द्रजित् ने सौ-सौ करोड़ों की संख्या में तीक्ष्ण शर चलाये। फिर गोरे रंग के लक्ष्मण के पास जो खड़ा रहा, उस विभीषण को देखकर उसने (शब्दों द्वारा) घृणा दिखायी। ३०३०

मुरट्टडन् दण्डु मेन्दि मत्तिदरै मुऱैमै कुऩ्ऱप्
पिरट्टरिऩ् पुहळ्न्दु पेदै यडियरिऩ् ऱॊऴुदु पिऩ्शॆऩ्
ऱिरट्टुरु मुरश मॆऩ्ऩ विशॆत्तदे यिशैक्किऩ् ऱायैप्
पुरट्टुवऩ् तलैयै यिऩ्ऱु पऴियॆऩ वॊऴिवऩ् बोलाम् 3031

मुरण्–कठिन; तटम् तण्टम्–बड़ा दण्ड; एन्ति–लेकर; मुऱैमै कुऩ्ऱ–योग्यता खोकर; पिरट्टरिऩ्–धोखेबाज के समान; मत्तिरै पुकऴ्न्तु–नरों की स्तुति करके; पेतै अटियरिऩ्–जड़मति गुलामों के समान; तॊऴुतु–वंदना करके; पिऩ् चॆऩ्ऱु–अनुगमन करके; इरट्टुरुम्–बारी-बारी से बजायी जानेवाली; मुरचम् ऍऩ्ऩ–भेरी के समान; इचैत्तते–जो कहते हो; इचैक्किऩ्ऱायै–उसी को दुहरानेवाले तुम्हें; तलैयै इऩ्ऱु पुरट्टुवऩ्–तुम्हारे सिर को लुढ़का दूंगा; पऴि ऍऩ–पर यह कलंक है, ऐसा सोचकर; ऒऴिवऩ्–त्याग देता हूँ। ३०३१

(इन्द्रजित् ने कहा—) आप सशक्त दंड हाथ में लिये हुए फिरते हैं। अपनी योग्यता को गिराकर मार्गच्युत लोगों के समान नरों की तारीफ़ करते हैं। फिर मूर्ख दासों के समान उनकी दासता करते हैं। बारी-बारी से कही हुई बात को भेरीनाद के समान दुहराते रहते हैं। ऐसे आपका

सिर कटवाकर मैं भूमि पर लुढ़का दूँगा। पर उससे अपयश होगा। इसी विचार से मैं पीछे हटता हूँ। ३०३१

विऴिपड मुदल्व रॅल्लाम् वॅदुम्बिन रोंदुङ्गि वोऴ्न्दु
वऴिपड वुलह मून्ऱु मडिप्पड वन्द देनुम्
अऴिपडै ताङ्ग लाट्रु माडव रियाण्डुम् वॅ.'.(ह्)हाप्
पऴिपड वन्द वाऴ्वै यावरे नयक्कर् पालार् 3032

मुतल्वर् ॲल्लाम्–सभी प्रमुख देव; विऴि पट–दृष्टि के पड़ने पर; वॅतुम्पितर्–तप्तचित्त हुए; ऑतुङ्कि–हटकर; वीऴ्न्तु–गिरे; वऴि पट–वंदना की; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; अटिप्पट–चरणतल में रहें; वन्ततेनुम्–ऐसी स्थिति आने पर भी; याण्टुम्–कहीं भी; वॅ.'.का–अनिच्छित; पऴि पट–कलंकसहित; वन्त वाऴ्वै–रहते जीवन को; अऴि पटै–मिटाने आनेवाली सेना का; ताङ्कल्–सामना करने की; आट्रम्–शक्ति रखनेवाले; आटवर् यावर्–कौन पुरुष; नयक्कल् पालार्–चाहेंगे। ३०३२

प्रमुख देव दृष्टि पड़ते ही थर्रायें; हटकर चलें, फिर चरणों पर गिर कर वंदना करें। तीनों लोक नमन करें। ऐसा ऐश्वर्य मिले तो भी अपयश के साथ मिले वैभव को, जिसकी कोई साधारण मनुष्य भी इच्छा नहीं कर सकता, कौन ऐसा पुरुष चाहेगा जो घातक सेना का सामना करने की ताक़त रखते हैं। ३०३२

नीरुळ दत्तैयु मुळ्ळ मीनॅन्न निरुद रॅल्लाम्
वेरुळ दत्तैयुम् वीव रिरावण ऩोडु मीळार्
ऊरुळ दॉरुव निन्ऱाय् नीयुळै युरैय निन्ऩो
डारुळ ररक्कर् निऱ्पा ररशुवीर् ड्रिरुक्क वैया 3033

नीर् उळ तत्तैयुम्–जब तक जल है तब तक; मीन् उळ्ळ–मछलियाँ रहती हैं; ॲन्न–ऐसा; निरुतर् ॲल्लाम्–सभी राक्षस; वेर् उळ तत्तैयुम्–मूल (रावण) के रहते तक (रहेंगे); इरावणऩोटु–रावण के साथ; वीवर्–मरेंगे; मीळार्–बाद नहीं रहेंगे; ऐया–तात; ऊर् उळतु–नगर है; उरैय–रहने के लिए; नी उळै–तुम हो; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–राजा बनने; ऑरुवन् निन्ऱाय्–अकेले तुम रहते हो; निन्ऩोटु–तुम्हारे साथ; निऱ्पार्–रहें ऐसे; अरक्कर्–राक्षस; आर् उळर्–कौन हैं। ३०३३

जब तक जल रहेगा, तब तक ही मछलियाँ जीवित रहेंगी। वैसे ही जब तक मूल पुरुष रावण रहेंगे, तब तक राक्षस रहेंगे। और रावण मरें तो ये भी मर जायँगे। बचेंगे नहीं। तो हे तात! लंका रहेगी इसी पर राज्य करने के लिए आप बचे हैं। आपका साथ देने कौन (क्या) रहेगा? । ३०३३

मुन्दैना ळुलहन् दन्द मूत्तवा नोर्हट् कॅल्लाम्
तन्दैयार् तन्दै यारैच् चॅरुविडैच् चायत् तळ्ळिक्
कन्दनार् तन्दै यारैक् कयिलैयो डॊरुहैक् कॊण्ड
ॲन्दैया ररशु शॅय्व दिप्पॅरुम् बलङ्गॊण् डेयो 3034

मुन्तैनाळ्–प्राचीन काल में; उलकम् तन्त–विश्व जिन्होंने रचा; मूत्त–वृद्ध; वानोर्कट्कु ॲल्लाम्–सभी देवों के; तन्तैयार्–पिता के; तन्तैयारै–पिता (विष्णु) को; चॅरुविटै–युद्ध में; चाय तळ्ळि–हराकर; कन्तनार् तन्तैयारै–स्कंद के पिता को; कयिलैयोटु–कैलास के साथ; ऒरु कै कॊण्ट–एक हाथ में जिन्होंने उठा लिया था; ॲन्तैयार्–वे मेरे पिता; अरचु चॅय्वतु–राज्य करते हैं; इ पॅरु पलम् कॊण्टेयो–क्या इस (नरों की सहायता) का बल लेकर ही क्या। ३०३४

जिन्होंने पुरातन प्रपंचकर्ता, देवों के पिता वयोवृद्ध ब्रह्मा के पिता श्रीविष्णु को युद्ध में हराया था; जिन्होंने स्कंददेव के पिता शिवजी को कैलास के साथ हाथ में उठा लिया था, वे मेरे पिता अब राज करते हैं —क्या इनके बड़े बल की सहायता से ? । ३०३४

पतिमलर्त् तविशिन् मेलोन् पार्प्पनक् कुलत्तुक् कॅल्लाम्
तनिमुदल् तलैव नान वुन्नैवन् दमरर् ताळ्वार्
मनिदरुक् कडिमै याय्नी यिरावणन् शॅल्व माळ्वाय्
इनियुनक् कॅन्नो मान मॅङ्गळो डडङ्गिट् रन्रे 3035

पति मलर् तविचित्तु मेलोन्–शीतल कमलासनस्थ ब्रह्मा के; पार्प्पन कुलत्तुक्कु ॲल्लाम्–सारे ब्राह्मण-कुल के; तनि–अकेले; मुतल्–प्रथम; तलैवनान उन्नै–नायक आपके सामने; अमरर् वन्तु–देव आकर; ताळ्वार्–सिर नवाते; नी–आप; मनितरुक्कु अटिमैयाय्–नरों का दास बनकर; इरावणन् चॅल्वम्–रावण का राज; आळ्वाय्–शासन करेंगे; इनि–आगे; उनक्कु मानम् ॲन्नो–आपका मान क्या रहा; ॲङ्कळोटु अटङ्किट्रु–हमारे साथ वह चला गया; अन्रे–न। ३०३५

(आप हमारे साथ ही रहते तो) शीतल कमल पर आसीन ब्रह्मा के सारे ब्राह्मण कुलों के अकेले आदिपुरुष आपकी देवता लोग स्तुति करते। पर आप नरों के दास बनकर रावण की संपत्ति पर शासन करेंगे ! अब आपका क्या मान रहा ? कुलगौरव हमारे साथ नष्ट हो गया न ? । ३०३५

शॊल्वित्तुम् बळित्तु नुङ्गै मूक्किनैत् तुणित्तो राले
वॅल्वित्तुम् बडैक्कै युङ्ग डमैयनै यॅङ्ग ळोडुम्
कॊल्वित्तुन् दोट्रु निन्र कूट्रिनार् कुलत्तै यॅल्लाम्
वॅल्वित्तुम् वाळुम् वाळ्विन् वॅरुमैये विळुमि दन्रे 3036

नुङ्कै–आपकी छोटी बहिन को; मूक्किनै–नाक को; तुणित्तोराले–काटनेवालों से; चॊल्वित्तुम्–कहलाकर; पळित्तुम्–निंदा कराकर; वॅल्वित्तुम्–हराकर;

उङ्कळ्–आप लोगों के; पटैक्कै–अस्त्र-हस्त; तमैयत्तै–ज्येष्ठ भ्राता (कुंभकर्ण) को; ऍङ्कळोटु कॉल्वित्तुम्–हमारे लोगों के साथ मरवाकर; तोऱ्ऱु नित्ऱ–हमारे हाथ जो हारे रहे उन; कूऱ्ऱितार् कुलत्तै ऍल्लाम्–यम के कुल के सारे लोगों को; वॅल्वित्तुम्–जिताकर; वाऴुम् वाऴ्विल्–जीने के जीवन से; वॅऱुमैये–अभाव ही; विऴुमितन्ऱे–श्रेष्ठ है न। ३०३६

आपने अपनी ही बहिन की नाक को काटनेवालों द्वारा हमारे प्रति कठोर शब्द कहलवाये; अपमान करवाया, हराया और हथियारधारी अपने बड़े भाई कुंभकर्ण को हमारे लोगों के साथ मरवा भी दिया। यम हमारे हाथ हारा था। उसके वर्ग के सभी लोगों को आपने जिता दिया। छिः ऐसे जीवन से अभाव में रहना श्रेष्ठ होगा न ? । ३०३६

ऍऴुदिये रणिन्द दिण्डो ळिरावण निराम नम्बाल्
पुऴुदिये पाय लाहप् पुरण्डनाळ् पुरण्ड मेल्वीऴ्न्
दळुदियो नीयुङ् गूड वार्त्तियो यवनै वाऴ्त्तित्
तॊऴुदियो वॅन्नो शॅय्यल् तुणिन्दनै विशयत् तोळाय् 3037

विचय तोळाय्–विजयी भुजावाले; ऍऴुति–चित्रकारी से युक्त; एर् अणिन्त–सुन्दर बने; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों के; इरावणन्–रावण; इरामन् अम्पाल्–राम-बाण से; पुऴुतिये–धूल को ही; पायलाक–शय्या बनाकर; पुरण्ट नाळ्–जिस दिन लोटेंगे उस दिन; मेल् वीऴ्न्तु–उन पर गिरकर; पुरण्टु अऴुतियो–लोट कर रोयेंगे क्या; नीयुम् कूट–आप भी साथ; आर्त्तियो–चिल्लायेंगे; अवनै–उन (श्रीराम) को; वाऴ्त्ति–तारीफ़ करके; तॊऴुतियो–पूजा करेंगे; ऍन्नो–क्या ही; शॅय्य तुणिन्तनै–करना ठाना है। ३०३७

विजयस्कंध ! जिस दिन चित्रकारी के साथ शोभित भुजावाले रावण राम के बाण से हत होकर धूलि पर लोटेंगे, क्या आप उन पर गिरकर रोयेंगे ? उनके साथ चिल्लायेंगे ? या राम की स्तुति करके उसके आगे नमन करेंगे ? क्या करने का निश्चय किया है ? । ३०३७

ऊनुडै युडम्बि नीङ्गि मरुन्दिना लुयिर्वन् दॅय्दुम्
मानिड रिलङ्गै वेन्दैक् कॉल्वरे नीयु मन्नान्
तानुडैच् चॅल्वन् दुय्क्कत् तहुदिये शरत्ति नोडुम्
वानिडैप् पुहुदि यन्ऱे यान्पऴि मऱक्कि लेनाल् 3038

यान्–मैं; पऴि–अपयश; मऱक्किलेन्–भूला नहीं हूँ; ऊन् उटै उटम्पिन्–मांसल शरीर से; उयिर् नीङ्कि–प्राण दूर होने पर; मरुन्तिनाल्–(संजीवनी) ओषधि से; वन्तु ऍय्तुम्–जीवन-प्राप्त; मानिटर्–नर; इलङ्कै वेन्तै–लंका के राजा को; कॉल्वरे–मार सकेंगे क्या; अन्नान् तान् उटै–उनकी; चॅल्वम् तुय्क्क–संपत्ति भोगने; नीयुम् तकुतिये–आप भी योग्य है क्या; चरत्तिनोटुम्–(अंदर घुसे) बाणों के साथ; वान् इटै–आकाश में; पुकुति अन्ऱे–चलेंगे न; ऍन्ऱान्–कहा इन्द्रजित् ने। ३०३८

मैं आपके कारण कुल पर लगे बड़े कलंक को भूल नहीं पाता। मांसल शरीर से जिनके प्राण चले गये थे और जो संजीवनी औषध से पुनः जीवन पा गये वे नर क्या रावण को मार सकेंगे? रावण की संपत्ति भोगने की योग्यता भी आपमें है क्या? मेरे बाण के साथ स्वर्ग न चले जायँगे? । ३०३८

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वीडण तलङ्गल् मौलि
शॅव्विदिल् तुळक्कित् तन्पाल् मुरुवलुन् दॅरिव दाक्कि
वॅव्विदु पावम् जालत् तरुममे विळ्मि दैय
इव्वुरै केट्टि यॅन्ना विनैयन विळम्व लुर्रान् 3039

अ उरै–वह कथन; अमैय–मन में लगे ऐसा; केट्ट–जिसने सुना वह; वीटणन्–विभीषण; अलङ्कल् मौलि–माला से अलंकृत सिर को; चॅव्वितिल् तुळक्कि–खूब हिलाकर; तन् पाल्–अपने पास; मुरुवलुम्–मंदहास भी; तॅरिवतु आक्कि–प्रगट कराकर; ऐय–तात; पावम्–पाप; वॅव्वितु–हानिकारक है; तरुममे–धर्म ही; चाल–बहुत; विळुमितु–श्रेष्ठ है; इ उरै केट्टि–यह वचन सुनो; ॲन्ना–कहकर; इनैयन–ऐसा; विळम्पल् उर्रान्–कहने लगा। ३०३९

विभीषण ने ये वचन सुनकर हारालंकृत अपना सिर खूब हिलाया और मुस्कुराते हुए कहा कि तात! पाप नाशक है! धर्म ही बहुत श्रेष्ठ है। सुनो यह। वह आगे यों बोला। ३०३९

अरन्दुणै याव दल्ला लरुनर हमैय नल्हुम्
मरन्दुणै याह मायाप् पळियॉडुम् वाळ माट्टेन्
तुरन्दिलेन् मॅय्म्मै येदुम् बॊय्म्मैये तुरप्प दल्लाल्
पिरन्दिले निलङ्गै वेन्दन् पिन्नवन् पिळैत्त पोदे 3040

अरम्–धर्म ही; तुणै आवतु अल्लाल्–सहायक होगा उसे छोड़कर; अरु नरकु–असह्य नरक; अमैय नल्कुम्–मुझे जो अवश्य दिला देगा; मरम्–पाप को; तुणै आक–सहायक बनाकर; माया–अमिट; पळियॊटुम्–कलंक के साथ; वाळ माट्टेन्–जीवन धारण नहीं करूंगा; पॊय्मैये तुरप्पतु अल्लाल्–असत्य त्यागूँगा उसे छोड़; मॅय्मै एतुम्–कोई सत्यमार्ग; तुरन्तिलेन्–नहीं छोड़ा; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा; पिळैत्त पोतु–जब अपचार करते थे; पिन्नवन्–कनिष्ठ में; पिरन्तिलेन्–जनमा नहीं हो गया। ३०४०

धर्म को सहायक न बनाकर नरक पहुँचानेवाले पाप के साथ, अमिट कलंक लेकर मैं जीना नहीं चाहूँगा। असत्य को त्यागूँगा। उसके सिवा सत्य को छोड़ूँगा नहीं। ज्योंही रावण ने वह अपराध किया, त्योंही मेरा उसके भ्राता के रूप में जन्म "नहीं" हो गया। ३०४०

उण्डिल नरवम् बॊय्म्मै युरैत्तिलन् वलिया लॊन्रुम्
कॊण्डिलन् माय वञ्जङ् गुरित्तिल नियारुङ् गुर्रम्

कण्डिल रॅन्बा लुण्डे नीयिरुङ् गाण्डि रन्ऱे
पॅण्डिरिऱ् ऱिऱम्बि नारैत् तुऱन्दडु पिऴैयिऱ् ऱामो 3041

नऱवम्–मद्य; उण्टिलन्–पान नहीं करता; पॉय्मै उरैत्तिलन्–असत्य नहीं बोलता; वलियाल्–बलात्कार से; ऑन्ऱुम्–कुछ भी; कॉण्टिलन्–ग्रहण नहीं करता; माय वञ्चम्–माया तथा वंचक कार्य; कुऱित्तिलन्–नहीं सोचता; ॲन् पाल्–मेरे सम्बन्ध में; यारुम् कुऱ्ऱम् कण्टिलर्–किसी ने कुछ अपराध नहीं देखा है; उण्टे–है क्या; नीयिरुम्–तुम लोगों ने भी; काण्टिर् अन्ऱे–देखा है न; पॅण्टिरिन्–स्त्री को लेकर; तिऱम्पिनारै–जो अनुचित कार्य करता है उसे; तुऱन्ततु–छोड़ना; पिऴैयिऱ्ऱु आमो–अपराध होगा क्या। ३०४१

मैं ताड़ी नहीं पीता, झूठ नहीं बोलता। ज़ोर-ज़बरदस्ती कुछ नहीं छीन लेता। माया, वंचना आदि से दूर रहता हूँ। कोई मुझमें कुछ दोष नहीं देखता। है क्या ? तुम लोगों ने यह जाना है न ? स्त्री के प्रति अपराधी को छोड़ आना अपराध होगा क्या ?। ३०४१

मूवहै युलहु मेत्तु मुदलव नॅवर्क्कु मूत्त
तेवर्दन् देवन् ऱेवि कऱ्पिनिऱ् चिऱन्दु ळाळै
नोवन चॅय्दल् तीदॅन् ऱुरैप्पनुन् ऱादै शीऱिप्
पोवॅन्न वुरैक्कप् पोन्दे नरहदिऱ् पॉरुन्दु वेनो 3042

मूवकै उलकुम्–(ऊपर, मध्य, नीचे) तीनों विध लोक; एत्तुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; मुतलवन्–वे आदिदेवता; ॲवर्क्कुम्–सभी; मूत्त–वृद्ध; तेवर् तम् तेवन्–देवाधिदेव श्रीराम को; तेवि–पत्नी; कऱ्पिनिल्–पातिव्रत्य में; चिऱन्तुळाळै–श्रेष्ठ देवी को; नोवन चॅय्तल्–दुःख देना; तीतु–बुरा है; ॲन्ऱु–ऐसा; उरैप्प–कहने पर; नुन् तातै–तुम्हारे पिता के; चीऱि–गुस्सा करके; पो–जाओ; ॲन–ऐसा; उरैक्क–कहने पर; पोन्तेन्–मैं चला आया; नरकु अतिल्–नरक में; पॉरुन्तुवेनो–जाऊँगा क्या। ३०४२

"सभी त्रिलोकवासियों द्वारा स्तुत, आदिदेव, सबसे पुरातन तथा देवाधिदेव श्रीराम की पत्नी, पातिव्रत्य में श्रेष्ठ देवी सीताजी को दुःख देना बुरा है।" मैंने यही कहा। उस पर तुम्हारे पिता ने क्रुद्ध होकर मुझसे कहा कि 'चलो, हटो।' मैं आ गया। फिर नरक में जाऊँ (क्या) ?। ३०४२

वॅम्मैयिऱ् ऱरुम नोक्का वेट्टदे वेट्टु वीयुम्
उम्मैये पुहऴम् बूण तुऱक्कमु मुमक्के याह
शॅम्मैयिऱ् पॉरुन्दि मेलो रॅऴ्क्किनो डऱत्तैत् तेऱुम्
ॲम्मैये पऴियुम् बूण नरहमु मॅमक् याहके 3043

वॅम्मैयिल्–(तुम लोगों के) क्रूरता (के कार्यों) से; तरुम नोक्का–धर्म का विचार न करके; वेट्टते वेट्टु–मनमाना चाहकर; वीयुम्–मरनेवाले; उम्मैये–

तुम्हें ही; पुकऴुस् पूण–यश प्राप्त हो; तुरक्कमुम्–स्वर्ग भी; उमक्के आक–तुम्हें प्राप्त हो; चॅम्मैयिन् पॉरुनृति–उत्तम गुणों में रहकर; मेलोर् ऑऴुक्कित्तोट्–साधुओं के योग्य चरित्र के साथ; अऱत्तै–धर्म को; तेऱुम्–जो मानकर चलता है; ऍम्मैये–मुझ जैसे लोगों पर; पऴियुम् पूण–कलंक लगे; ऍमक्के–हमें ही; नरकममु आक–नरक मिले। ३०४३

यश मिले तुम्हीं को जो नृशंस हो, धर्म नहीं देखते, मनमाना करते हो और मर जाओगे ! सद्गुणी रहकर साधुचरित्र तथा धर्म पर विश्वास रखनेवाले हमें अपयश मिले ! नरक भी हमें ही मिले ! । ३०४३

अऱित्तिऩैप् पावम् वॅल्ला दॅऩ्ऩुम दऱिन्दु नाऩ्
तिऱत्तिऩ् मुऱुमॅन् ऱॅण्णित् तेवर्क्कुन् देवैच् चेर्न्देऩ्
पुऱत्तिनिऱ् पुहऴे याह पऴियॉडुम् बुणर्ह पोदच्
चिऱप्पिऩैप् पॅऱुह तीर्ह वॅऩ्ऱऩन् शीऱ्ऱ मिल्लाऩ् 3044

चीऱ्ऱम् इल्लाऩ्–जो क्रोध नहीं करता था, उस विभीषण ने; अऱत्तिऩै–धर्म को; पावम् वॅल्लातु–पाप जीत नहीं सकेगा; ऍऩ्ऩुम्–जो है; अतु–वह; अऱिन्तु–जानकर भी; तिऱत्तिऩुम् उऱुम्–सिधाई से सम्बद्ध है; ऍऩ्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; तेवर्क्कुम् तेवै–देवाधिदेव से; नाऩ् चेर्न्तेऩ्–मैं ही जा मिला; पुऱत्तितिल्–बाहर (लोक में); पुकऴे आक–यश मिले; पऴियॉटुम् पुणर्क–(या) अपयश ही मिले; इति–अब; पोत चिऱप्पु–अधिक श्रेष्ठता; पॅऱुक–मिले; तीर्क–या मिटे; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा। ३०४४

विभीषण ने आगे कहा कि मैं यह जानकर कि धर्म को पाप जीत नहीं सकता, और यह सोचकर कि यही सीधा कार्य है, देवाधिदेव श्रीराम के पक्ष में स्वयं आया। यह चाहे संसार में यश लाये या अपयश ! इससे मुझे गौरव अधिक मिले या नष्ट हो। ३०४४

पॅऱुञ्जिऱप् पॅल्ला मॅऩ्गैप् पिऱैमुहप् पहऴि पॅऱ्ऱाल्
इऱुञ्जिऱप् पल्ला लप्पा लॅङ्गिऩैप् पोव दॅऩ्ऩात्
तॅऱुञ्जिऱैक् कलुऴ ऩऩ्ऩ वॅारुहणै तॅरिन्दु शॅम्बॉऩ्
उऱुञ्जुडर्क् कऴुत्तै नोक्कि नूक्किऩा ऩुरुमिऩ् वॅय्योऩ् 3045

उरुमिऩ् वॅय्योऩ्–वज्र से भी कठोर इन्द्रजित्; पॅऱुम् चिऱप्पु ऍल्लाम्–मिलने वाले गौरव सब; ऍऩ् कै–मेरे हाथ के; पिऱैमुक–अर्धचन्द्र से नोक वाले; पकऴि–बाण; पॅऱ्ऱाल्–पाओगे तो; चिऱप्पु इऱुम्–गौरव नष्ट होंगे; अल्लाल्–नहीं तो; इति–अब; अप्पाल्–दूर; ऍङ्कु पोवतु–कहाँ जाओ; ऍऩ्ऩा–कहकर; चॅम् पॉऩ् उऱुम्–लाल स्वर्ण-सम; चुटर् कऴुत्तै–शोभते गले का; नोक्कि–निशाना बनाकर; तॅऱुम्–घातक; चिऱै कलुऴऩ् अऩ्ऩ–पक्षी गरुड़ के समान; ऑरु कणै–एक अस्त्र को; तॅरिन्तु–चुन लेकर; नूक्किऩाऩ्–चलाया। ३०४५

यह सुनकर अशनि से भी दारुण इन्द्रजित् ने विभीषण से कहा कि आपको जो गौरव मिलेगा, वह मेरे हाथों के अर्धचन्द्र बाणों का लगना ही

होगा। आपको जब वह मिले तब आपके सारे गौरव मिट जायेंगे। नहीं तो आप जायेंगे कहाँ? यह कहकर उसने विभीषण के लाल स्वर्ण-सम कंठ का निशाना बनाकर गरुड़ पक्षी के समान रहनेवाले एक दाहक बाण चुनकर चलाया। ३०४५

अक्कणै यशनि यॅन्न वन्नलॅन्न वाल मुण्ड
मुक्कणात् शूल मॅन्न मुडुहिय तिऱत्तै नोक्कि
इक्कणत् तिऱ्ऱा निऱ्ऱा ळॅन्ऱिन्ऱ विमैयोर् काणक्
कैक्कणै यॉन्ऱाल् वळ्ळ लक्कणै कण्डङ् गण्डान् 3046

अ कणै–वह बाण; अचनि ऍन्न–वज्र के समान; अनल् ऍन्न–आग के समान; आलम् उण्ट–विष जिन्होंने खाया उन; मुक्कणान्–त्रिनेत्र शिवजी के; शूलम् ऍन्न–त्रिशूल के समान; मुटुकिय–वेग से जो आया; तिऱत्तै नोक्कि–उस वेग को देखकर; इ कणत्तिल् तान्–इसी क्षण; इऱ्ऱान्–(विभीषण) मर गया; ऍन्ऱिन्ऱ–ऐसा जो कहते रहे; इमैयोर् काण–उन देवों के देखते; वळ्ळल्–उदार प्रभु लक्ष्मण ने; कै कणै ऑन्ऱाल्–हाथ के एक अस्त्र से; अ कणै–उस अस्त्र को; कण्टम् कण्टान्–खण्डित कर दिया। ३०४६

वह शर अशनि, आग और हलाहलभोगी त्रिनेत्र शिव के त्रिशूल के समान आ रहा था। उसकी गतिविधि देखकर जो देव यह कह रहे थे कि विभीषण मर गया, उनके ही समक्ष उदार प्रभु लक्ष्मण ने अपने हाथ के एक अस्त्र से उसे खण्ड-खण्ड कर दिया। ३०४६

कोलॉन्ऱु तुणिद लोडुङ् गूऱ्ऱुक्कुङ् गूऱ्ऱ मन्नान्
वेलॉन्ऱु वाङ्गि विट्टान् वॅयिलॉन्ऱु विऴुव दॅन्न
नालॉन्ऱु मून्ऱु मान पुवनङ्गळ् नडुङ्ग लोडुम्
नूलॉन्ऱु वरिवि लानु मदनैयुम् नुऱुक्कि वीऴ्त्तान् 3047

ऑन्ऱु कोल्–अतिश्रेष्ठ उसका बाण; तुणितलोटुम्–खंडित हुआ तो; कूऱ्ऱुक्कुम्–यम का भी; कूऱ्ऱम् अन्नान्–यम जो था उस (इन्द्रजित्) ने; वेल् ऑन्ऱु–एक शक्ति; वाङ्कि–ले; विट्टान्–चलाया; वॅयिल् ऑन्ऱु–एक सूर्य; विऴुवतु ऍन्न–गिरता जैसे (गिरा तो); नाल् ऑन्ऱुम्–चार और; मून्ऱुम्–तीन; आन–जो है वे सात; पुवनङ्कळ्–भुवन; नटुङ्कलोटुम्–काँपे और; नूल् ऑन्ऱु–धनुष-शास्त्रोक्त रीति से बने; वरि–सबन्ध; विलानुम्–धनु रखनेवाले (लक्ष्मण) ने; अतनैयुम्–उसको भी; नुऱुक्कि–चूर करके; वीऴ्त्तान्–गिरा दिया। ३०४७

अपने श्रेष्ठ बाण को खण्डित हुआ देखकर यम के यम इन्द्रजित् ने विभीषण पर एक शक्ति ले चलायी। वह सूर्य के समान गिर रही थी और सातों भुवन काँप रहे थे। तब धनुषशास्त्रोक्त रीति से बने, सबन्ध धनु के धारक वीर लक्ष्मण ने उसे भी चूर्ण कर गिरा दिया। ३०४७

वेल्कॉडु नम्मे लॅय्दा ऍन्नुरॉरु वॅहुळि पॉङ्गक्
काल्हॉडु कालिऱ् कूडिक् कैतॉडर् कनहत् तण्डाल्
कोल्हॉळु सॉरुव नोडुङ् गॉडितृतडन् देरिऱ् पूण्ड
पाल्हॉळुम् बुरवि यॅल्लाम् बडुत्तिनान् पडियिन् मेले 3048

नम्मे-हम पर; वेल् कॉटु-शक्ति का; ऍय्तान्-प्रहार किया; ऍन्ऱु-ऐसा; ऑरु वॅकुळि पॉङ्क-क्रोध के उभरते; काल् कॉटु-पैर से; कालिन्-पवन के समान; कूटि-उसके पास जाकर; कै तॉटर्-हाथ में रहे; कनक तण्टाल्-कनक-दण्ड से; कॉटि-ध्वजा से अलंकृत; तटम् तेरिल्-विशाल रथ पर; कोल् कॉळुम्-वेत्रपाणी; ऑरुवनोटुम्-एक सारथी के साथ; पूण्ट-रथ से जुते; पाल् कॉळुम्-दुग्धश्वेत; पुरवि ऍल्लाम्-सभी अश्वों को; पटियिन् मेले-भूमि पर; पटुत्तिनान्-गिरा दिया (विभीषण ने)। ३०४८

विभीषण इस पर नाराज हुआ कि इन्द्रजित् ने उस पर शक्ति का प्रयोग किया। इसलिए वह कनक-दण्ड लेकर पवन-गति में पैदल इन्द्रजित् के पास गया। उसने ध्वजासहित रथ पर रहनेवाले वेत्रधारी सारथी को और रथ से जुते अश्वों को मार भूमि पर गिरा दिया। ३०४८

अळिन्दतेर् मीदु निन्ऱा नायिर कोडि यम्बु
पॉळिन्दवन् ऱोळिन् मेलु मिलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्
ऑळिन्दव रुरत्तिन् मेलु मुदिरनीर् वारि याह
अळिन्दिळिन् दोड नोक्कि यण्डमु मिरिय वार्त्तान् 3049

अळिन्त तेर् मीतु-टूटे रथ पर; निन्ऱान्-खड़ा रहकर; आयिर कोटि अम्पु-सहस्र कोटि शर; पॉळिन्तु-चलाकर; अवन् तोळिन् मेलुम्-उस (विभीषण) के कन्धों पर और; इलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्-लक्ष्मण की भुजाओं पर; ऑळिन्तवर्-अन्यों के; उरत्तिन् मेलुम्-वक्षों पर; उतिर नीर्-रक्तजल; वारियाक-समुद्र के रूप में; अळिन्तु-निकलकर; इळिन्तु-गिरकर; ओट-बहा; नोक्कि-देखकर; अण्टमुम् इरिय-अण्ड फाड़ते हुए; आर्त्तान्-नर्दन किया (इन्द्रजित् ने)। ३०४९

टूटे रथ पर रहते हुए इन्द्रजित् ने सहस्र कोटि शरों की वर्षा-सी करा दी। वे विभीषण के कंधों, लक्ष्मण की भुजाओं और अन्यों के वक्षों पर जा लगे। सबके शरीरों से रक्त-वारि सागर के समान बह निकला। यह देखकर इन्द्रजित् ने ऐसा भीषण नाद किया कि अंड ही फट जाय। ३०४९

आर्त्तव नन्नैय पोदि लळिविलात् तेर्हॉण् डन्नरिप्
पोर्त्तॉळिल् पुरिय लाहा दॅन्बदोर् पॉरुळै युन्निप्
पार्त्तव रिमैया मुन्नम् विसुम्बिडैप् पाय्न्दा नॅन्नुम्
वार्त्तैयै निरुत्तिप् पोना निरावणन् मरुङ्गु सॅन्ऱान् 3050

आर्त्तवत्–जिसने नाद उठाया वह इन्द्रजित्; अतैप पोतिन्–तब; अळिविला–नाशहीन; तेर् कॊण्टन्ऱि–रथ लिये विना; पोर् तॊळिल्–युद्धकार्य; पुरियल् आकातु–कर नहीं सकते; ॲन्ऩपतु ओर् पॊरुळै–ऐसी एक बात; उन्ऩि–सोचकर; पार्त्तवर्–दर्शक; इमैया मुत्तम्–पलक मारें इसके पूर्व ही; विचुम्पु इटै पायन्तान्–आकाश में उछला; अन्तुम् वार्त्तैये निऱुत्ति–यही कथन पीछे छोड़कर; पोतान्–गया; इरावणन् मरुङ्कु–रावण के पास; चॆन्ऱान्–पहुँचा । ३०५०

गर्जन करने के बाद इन्द्रजित् ने सोचा कि ऐसे रथ के विना, जो नहीं टूटे, युद्धकार्य असंभव है। यह विचार करके वह एक दम आकाश में इतनी तेजी से उछल गया कि देखनेवाले पलक न झप पायें। उछलने का समाचार सर्वत्र रह गया पर वह कहीं दिखायी नहीं दिया। वह सीधे रावण के पास जा पहुँचा। ३०५०

27. इन्दिरशित्तु वदैप् पडलम् (इन्द्रजित्-वध पटल)

विण्णिडैक् करन्दा ऩॆन्बार् वञ्जनै विळैक्कु मॆन्बार्
कण्णिडैक् कलक्क नोक्कि यैयुऱ वुळक्कुङ् गालै
पुण्णुडै याक्कैच् चॆन्नी रिऴिदरप् पुक्कु निन्ऱ
ऎण्णुडै महनै नोक्कि यिरावण ऩिनैय शॊन्ऩान् 3051

विण् इटै–आकाश में; करन्तान्–अदृश्य हो गया; ऎन्पार्–जो कहते; वञ्चनै विळैक्कुम्–वंचना करेगा; ऎन्पार्–जो कहते; कण्णिटै–आँखों में; कलक्कम्–भ्रांति दिखाकर; नोक्कि–देखते हुए; ऐयुऱवु कॊण्टु–संशय करते हुए; उळक्कुम् कालै–जब व्याकुल हो रहे थे; पुण् उटै याक्कै–व्रण-सहित शरीर से; चॆन् नीर् इऴि तर–लाल रक्त के बहते; पुक्कु निन्ऱ–प्रवेश कर जो खड़ा रहा; ऎण् उटै मकनै–चिन्ताकुल पुत्र को; नोक्कि–देखकर; इनैय–ये बातें; इरावणन्–रावण ने; चॊन्ऩान्–कहीं। ३०५१

कुछ वानरों ने कहा कि आकाश में ओझल हो गया इन्द्रजित्। कुछ अन्य वानरों का विचार था कि वह अवश्य वंचक कार्य करेगा। सभी वानरों की आँखों में भ्रांति थी। संशयग्रस्त हो वे संकट उठा रहे थे। तब शरीर से बहते लाल रक्त के साथ प्रवेश कर खड़े रहे चिंताकुल अपने पुत्र को देखकर रावण ने यों कहा। ३०५१

तॊडङ्गिय वेळ्वि मुऱ्ऱुप् पॆऱ्ऱिलात् तॊऴिल् निन्ऱोण्मेल्
अडङ्गिय वम्बे यॆन्ऩै यऴिवित्त दऴिवि लियाक्कै
नडुङ्गिनै पोलच् चालत् तळर्न्दनै कलुऴ् ऩण्णप्
पडङ्गुऱै यरव मॊत्ता युऱ्ऱदु पहर्दि यॆन्ऱान् 3052

तॊटङ्किय वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ; मुऱ्ऱुप् पॆऱ्ऱिला तॊऴिल्–पूरा नहीं हुआ सो काम; निन् तोळ् मेल्–तुम्हारे कंधे पर; अटङ्किय अम्पे–चुभे अस्त्रों ही ने;

ॲन्ऱु अऱिवित्ततु–मुझे समझा दिया; नडुङ्गिनै पोल–भयातुर-से; अऴिवु इल् याक्कै–अमर तुम्हारा शरीर; चाल तळर्न्ततु–खूब थका है; कलुळन् नण्ण–गरुड़ के पास आने पर; पटम् कुऱै–झुके फन वाले; अरवम् ऒत्ताय्–सर्पतुल्य हो; उऱ्ऱतु–जो हुआ; पकर्ति–बताओ; ॲन्ऱान्–कहा। ३०५२

तुम्हारे कंधों में चुभे रहे अस्त्र देखता हूँ और जान लेता हूँ कि आरब्ध यज्ञ पूरा नहीं हुआ है। तुम बहुत काँप गये —यह तुम्हारे अमिट शरीर की शिथिल स्थिति से जान पड़ता है! गरुड़ के पास आने पर फन संकुचित कर रहनेवाले साँप के समान दिखते हो। जो हुआ सो बतलाओ। ३०५२

शूऴ्वितै माय मॆल्ला मुम्बिये तुडैक्कच् चुऱ्ऱि
वेळ्वियैच् चिदैय नूऱ वॆहुळिया लॆऴुन्दु पॊङ्गि
आळ्वितै याऱ्ऱ ऱ्ऱ्ऱा लमर्त्तॊऴि ऱॊडङ्गि यानुम्
दाळ्विलाप् पडैहण् मून्ऱुन् दॊडुत्ततन् ऱडुत्तु विट्टान् 3053

चूऴ्–साजिश के; मायम् वितै ॲल्लाम्–मायापूर्ण सभी कृत्यों को; उम्पियै–आपके कनिष्ठ भ्राता ने ही; तुटैक्क–मिटा दिया और; चुऱ्ऱि–घेराव डालकर; वेळ्वियै–यज्ञ को; चितैय नूऱ–(लक्ष्मण के) व्यर्थ करके मिटाने पर; यानुम्–मैंने भी; वॆकुळियाल्–क्रोध से; ॲऴुन्तु–उठकर; पॊङ्कि–उफनकर; आळ्वितै आऱ्ऱल् तन्नाल्–पौरुषपूर्ण अपनी शक्ति से; अमर् तॊऴिल् तॊटङ्कि–युद्धकार्य आरम्भ करके; ताऴ्वु इला–जो कम नहीं उन; पटैकळ् मून्ऱुम्–(त्रिदेवों के) तीनों अस्त्र; तॊटुत्ततन्–छोड़े; तटुत्तु विट्टान्–लक्ष्मण ने उन्हें विफल कर दिया। ३०५३

इन्द्रजित् ने उत्तर दिया— साजिश में भ्रम पैदा करने के लिए मैंने जो भी कार्य किये, उन सबको आपके छोटे भाई ने बेकार कर दिया। लक्ष्मण ने घेरा डालकर यज्ञ को तहस-नहस कर दिया। मैं कोप करके उठा और अपने पौरुषयुक्त वल दिखाकर युद्ध करने लगा। जो किसी विध कम नहीं, उन तीनों दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। पर लक्ष्मण ने उन (पाशुपत, ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र) तीनों को रोक दिया। ३०५३

निलञ्जॆय्दु विशुम्बुञ् जॆय्द नॆडियवन् पडैनिन् ऱानै
वलञ्जॆय्दु पोयिऱ् ऱॆन्ऱाल् मऱ्ऱिनि वलिय दुण्डो
कुलञ्जॆय्द पावत् ताले कॊडुम्बहै तेडिक् कॊण्डाय्
शलञ्जॆयि नुलह मून्ऱु मिलक्कुवन् मुडिप्पन् ऱानै 3054

निलम् चॆय्तु–भूलोक रचकर; विचुम्पुम् चॆय्त–जिसने आकाश भी रचा; नॆटियवन् पटै–उस लम्बोतरे (श्रीविष्णु) का अस्त्र; निन्ऱानै–स्थित उसको; वलम् चॆय्तु–परिक्रमा करके; पोयिऱ्ऱु ॲन्ऱाल्–गया कहो तो; इनि–इससे बढ़कर; वलियतु–बलवान; मऱ्ऱु उण्टो–अन्य है क्या; कुलम् चॆय्त–हमारे कुल ने जो

किया; पावत्ताले–उस पाप से; कॊडुम् पकै–भयंकर शत्रु; तेटि कॊण्टाय्–आपने ढूंढ़ लिया है; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; चलम् चॆयिन्–क्रोध करे तो; तान्ते–अकेले ही; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; मुटिप्पन्–अन्त करा देगा। ३०५४

पृथ्वी और आकाश के रचयिता त्रिविक्रम नारायण का अस्त्र उस लक्ष्मण की परिक्रमा करके हट गया —कहें तो इससे बढ़कर पुष्टता क्या चाहिए ? कुल का प्रभूत पाप है— आपने बहुत ही दारुण शत्रु ढूंढ़ लिया है ! लक्ष्मण क्रोध करेगा तो अकेले ही तीनों लोकों का अंत कर देगा। ३०५४

मुट्टिय शॆरुविन् मुन्न मुदलवन् पडैयै यॆन्मेल्
विट्टिल नुलहै यञ्जि यादलाल् वॆन्ऱु मीण्डेन्
किट्टिय पोदुङ् गात्ता नित्तमुङ् गिळर वल्लान्
शुट्टिय वलियि नाले कॊऱ्ऱलैत् तुणिन्दु निन्ऱान् 3055

मुन्तम्–पहले; मुट्टिय चॆरुविल्–घमासान युद्ध में; मुतलवन् पटैयै–ब्रह्मास्त्र को; उलकै अञ्चि–लोक (-नाश) से डरकर; ऎन् मेल्–मुझ पर; विट्टिलन्–नहीं चलाया था; आतलाल्–तभी तो; वॆन्ऱु मीण्टेन्–जीतकर लौटा; किट्टिय पोतुम्–(अबकी वार जब वह) उसके पास गया; कात्तान्–अपने को बचा भर लिया; इन्तमुम् किळर वल्लान्–और भी खिल सकता है; चुट्टिय वलियिन्ताले–लोकशंसित बल से; कॊऱ्ऱलै–मारना; तुणिन्तु निन्ऱान्–निश्चय करके खड़ा है। ३०५५

पहले जो घोर युद्ध चला उसमें उन्होंने लोकनाश से डरकर मुझ पर ब्रह्मास्त्र प्रयुक्त नहीं किया था। उसी कारण मैं विजय पाकर लौट सका। फिर अब जब ब्रह्मास्त्र उसके सामने गया, उसने अपने को बचा भर लिया। वह और भी अपने बल में खिल सकेगा। प्रकीर्तित बल के आधार पर वह मेरी हत्या ठानकर स्थित है। ३०५५

❀ आदला लञ्जि नॆनॆन् ऱुरुळलै याशै तान्च्
चीदैबाल् विडुदि यायि नन्नैयवर् शीऱ्ऱन् दीर्वर्
पोदलुम् बुरिवर् शॆय्द तीमैयुम् बॊऱुप्प रुन्मेऱ्
कादला लुरैत्ते नॆन्ऱा नुलहॆलाङ् गलक्कि वॆन्ऱान् 3056

उलकॆलाम् कलक्कि–सभी लोकों को क्षुब्ध करके; वॆन्ऱान्–जिसने जीता था उस (इन्द्रजित्) ने; आतलाल्–इसलिए; अ चीतै पाल्–उस सीता पर; आचै विटुति आयिन्–मोह को छोड़ दें तो; अन्नैयवर्–वे; चीऱ्ऱम् तीर्वर्–क्रोध छोड़ देंगे; पोतलुम् पुरिवर्–पुनर्गमन भी करेंगे; चॆय्त तीमैयुम्–हमने जो की वह बुराई भी; पॊऱुप्पर्–क्षमा कर देंगे; अञ्चिनॆन् ऎन्ऱु–डर गया ऐसा; उरुळलै–सोचने की कृपा न करें; कातलाल्–प्रेम के कारण; उरैत्तेन्–कहा; ऎन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। ३०५६

लोकों को विक्षुब्ध करनेवाले इन्द्रजित् ने रावण से कहा कि इसलिए

आप सीता पर मोह को छोड़ दें तो वे कोप शांत कर लेंगे। लौट जायँगे भी। हमारे दुष्कृत्यों को भी माफ़ कर देंगे। यह मत सोचिए कि मैं भय खा गया। आप पर स्नेह के कारण ही मैं यह बता रहा हूँ। ३०५६

इयम्बलु मिलङ्गै वेन्द तॆयिऱ्ऱिळ निलवु तोऱ्ऱप्
पुयङ्गळुङ् गुलुङ्ग नक्कुप् पोर्क्किनि यॊळिदि पोलाम्
मयङ्गिनै मननमु मञ्जि वरुन्दिनै वरुन्द लैय
शयङ्गॊडु तरुवॆ निन्ऱे मनिदरैत् तनुवॊन् ऱाले 3057

इयम्पलुम्–कहने पर; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; ऎयिऱु इळ निलवु–दाँतों की बालचन्द्रिका को; तोऱ्ऱ–प्रकट करते; पुयङ्कळुम् कुलुङ्क–भुजाओं को हिलाते हुए; नक्कु–हँसकर; इनि पोर्क्कु–अब युद्ध से; ऒळिति पोल् आम्–हट जाओगे शायद क्या; मननमुम् मयङ्किनै–भ्रमितमन हो गये; अञ्चि वरुन्तिनै–डरे तथा दुःखी हो; ऐय–तात; वरुन्तल्–दुःखी मत हो; मनितरै–नरों को; तनु ऒन्ऱाले–एक धनु से; इन्ऱे–आज ही; चयम् कॊटु–विजय लाकर; तरुवॆन्–दूंगा। ३०५७

इन्द्रजित् के ऐसा कहने पर लंका के राजा ने दाँतों से बालचंद्रिका-सा प्रकाश छिटकाते हुए और भुजाओं को हिलाते हुए मुस्कुराकर कहा कि तुमने अब युद्ध में जाने का विचार छोड़ दिया है क्या? तुम्हारा मन भ्रमित है। डरते और संकट पाते हो! तात! तुम दुःखी न हो। उन नरों पर मैं आज ही अपने अकेले धनु से तुम्हें विजय दिलाऊँगा। ३०५७

❀ मुन्नैयो रिऱन्दो रॆल्ला मिप्पहै मुडिप्प रॆन्ऱुम्
पिन्नैयोर् निन्ऱो रॆल्लाम् वॆन्ऱवर्प् पॆयर्व रॆन्ऱुम्
उन्नैनी यवरै वॆन्ऱु तरुदियॆन् ऱुणर्न्दु मन्ऱाल्
ऎन्नैये नोक्कि यानिन् नॆडुम्बहै तेडिक् कॊण्डेन् 3058

मुन्नैयोर्–पहले के; इऱन्तोर् ऎल्लाम्–जो मरे वे सभी; इ पकै मुटिप्पर्–इस शत्रु का नाश करेंगे; ऎन्ऱुम्–ऐसा और; पिन्नैयोर्–बाद के; निन्ऱोर् ऎल्लाम्–जो बचे हैं वे सब; अवर् वॆन्ऱु–उनको जीतकर; पॆयर्वर् ऎन्ऱुम्–लौटेंगे ऐसा; उन्नै–तुम्हें; नी–तुम; अवरै वॆन्ऱु तरुति–उन्हें जीतकर (विजय) दिलाओगे; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तुम् अन्ऱु–समझकर नहीं; ऎन्नैये नोक्कि–अपने को ही देखकर; इ–इन; नॆटु पकै–बड़े शत्रुओं को; तेटिक् कॊण्टेन्–ढूंढ़कर बना लिया। ३०५८

"जो पहले मर गये वे इन शत्रुओं को मारेंगे; या जो अभी बचे हैं, वे इन्हें हराकर लौटेंगे; या तुम उन्हें हराकर विजय दिलाओगे।" —ऐसा सोचकर नहीं; पर अपने को देखकर ही मैंने यह बड़ी शत्रुता बना ली थी। ३०५८

❀ पेदैमै युरैत्ताय् पिळ्ळा युलहॆल्लाम् वॆयरप् पेराक्
कादॆयॆऩ् पुहऴि ऩोडु निलॆपॆऱ वमरर् काण
मीदॆऴु मॊक्कु ळऩ्ऩ याक्कैयै विडुव दल्लाल्
शीदैयै विडुव दुण्डो विरुपदु तिण्डो ळुण्डाल् 3059

पिळ्ळाय्–पुत्र; पेतैमै उरैत्ताय्–अज्ञान की बातें कहीं; उलकॆलाम् पॆयर–सारे लोकों के नष्ट होते भी; ऍऩ् पुकऴिऩोटु–मेरे यश के साथ; पेरा कातै–मेरी अमर गाथा; निलै पॆऱ–स्थिर हो ऐसा; अमरर् काण–देवों के देखते; मीतु ऍऴु–(जल) पर उठनेवाले; मॊक्कुळ् अऩ्ऩ–बुलबुले के समान; याक्कैयै–शरीर को; विटुवतु अल्लाल्–त्यागना छोड़कर; इरुपतु तोळ् उण्टु–बीस कंधों के रहते; चीतैयै विटुवतु–सीता को त्यागना; उण्टो–होगा क्या। ३०५९

पुत्र ! तुमने अज्ञानता की बात कही। जब लोक अपनी स्थिति से बिगड़ जायँगे, तब भी मैं अपने यश और अपनी अमर गाथा को देवों के देखते स्थिर बनाकर अपना जल के बुलबुले के समान शरीर छोड़ूँगा। उसके सिवा बीसों भुजाओं के रहते सीता को छोड़ना भी कहीं होगा क्या। ३०५९

❀ वॆऩ्ऱिलॆ ऩॆऩ्ऱ पोदुम् वेदमुळ् ळळवु मियाऩुम्
निऩ्ऱुळॆ ऩऩ्ऱो मऱ्ऱव् विरामऩ्पेर् निऱ्कु मायिऩ्
पॊऩ्ऱुद लॊरुहा लत्तुत् तविरुमो पॊदुमैत् तऩ्ऱो
इऩ्ऱुळार् नाळै माळ्वर् पुहऴुक्कु मिऱुदि युण्डो 3060

वॆऩ्ऱिलॆऩ् ऍऩ्ऱ पोतुम्–न जीतूँगा तो भी; वेतम् उळ्ळळवुम्–जब तक वेद रहेंगे, तब तक; इरामऩ् पेर् निऱ्कुम् आयिऩ्–राम का नाम रहेगा तो; याऩुम्–मैं भी; निऩ्ऱुळॆऩ् अऩ्ऱो–रह गया न; ऒरु कालत्तु–कभी एक बार; पॊऩ्ऱुतल्–मरना; तविरुमो–चूक सकता है क्या; पॊतुमैत्तु अऩ्ऱो–(मरना) सर्वसामान्य बात है न; इऩ्ऱु उळार्–आज के जीवित; नाळै माळ्वर्–कल मर जायँगे; पुकऴुक्कुम्–(पर) यश का भी; इऱुति उण्टो–अंत होता है क्या। ३०६०

मैं जीतूँ नहीं तो भी वेदों के रहते तक राम का नाम रहेगा तो मैं भी रह गया न ? आखिर एक न एक दिन मरना अवार्य है क्या ? मरण सर्वसामान्य है न ! आज के रहनेवाले कल मरनेवाले ही हैं ? लेकिन यश का अंत होगा क्या ? । ३०६०

❀ विट्टॆऩ् शऩहि तऩ्ऩै यॆऩ्ऱलुम् विण्णोर् नण्णिक्
कट्टुव दल्ला लॆऩ्ऩैप् पॊरुळॆऩक् करुदु वारो
पट्टऩॆ ऩॆऩ्ऱ पोदु मॊऴिमैयिऱ् पडुहि लॆऩ्याऩ्
ऒट्टिऩो डिरण्डु माऱ तिशैहळै यॆट्टिऩुम् वॆऩ्ऱेऩ् 3061

चऩकि तऩ्ऩै–जानकी को; विट्टॆऩ् ऍऩ्ऱलुम्–छोड़ दिया, यह सुनते ही; विण्णोर्–देव; नण्णि–मेरे पास आकर; ऍऩ्ऩै कट्टुवतु अल्लाल्–मुझे बाँधना

छोड़कर; पौरुळ् अँत-कोई पदार्थ; करुतुवारो-सोचेंगे क्या; यान् पट्टतॅन्-मैं मर गया; अँन्ऱ् पोतुम्-ऐसे समय में भी; अँळिमैयिऱ् पट्टकिलेन्-आसानी से नहीं मरूँगा; अँट्टिनोडु इरण्डुम् आन-आठ और दो से बनी; तिचैकळ्-दिशाओं को; अँऱिन्तु वॅन्ऱेन्-मिटाकर जीतूँगा। ३०६१

जानकी को छोड़ दूँ तो देव आकर मुझे बाँध देंगे। मुझे अपदार्थ मानेंगे। इसके सिवा कुछ गौरव देंगे क्या? मरना ही पड़े तो भी आसानी से नहीं मरूँगा; दसों दिशाओं को मिटाकर विजयी बनूँगा। ३०६१

ॐ शॉल्लियॅन् पलवुम् नीनिन् निरुक्कैयॅल् तॉडर्न्दु तोळिल्
पुल्लिय पहळि वाङ्गिप् पोर्त्तॊळिऱ् चिरमम् बोक्कि
अॅल्लियुङ् गळित्ति यॅन्ना वॅळुन्दन नॅळुन्दु पेळ्वाय्
वल्लिय मुनिन्दा लन्नान् वरुहतेऱ् विरैवि नॅन्ऱान् 3062

पलवुम् चॉल्लि अँन्-किंबहुना कथनेन; नी-तुम; निन्-अपने; इरुक्कैयॅ-वासस्थान को; तॉटर्न्तु-जाकर; तोळिल् पुल्लिय-कंधों पर चुभे; पकळि-शरों को; वाङ्कि-निकालकर; पोर् तॉळिल्-युद्ध-कृत्य से उत्पन्न; चिरमम् पोक्कि-श्रम दूर करके; अॅल्लियुम्-रात को भी; कळित्ति-बिताओ; अँन्ना-कहकर; अॅळुन्तनन्-उठा; अॅळुन्तु-उठकर; पेळ् वाय्-फटे-से मुँह वाला; वल्लियम्-व्याघ्र; मुनिन्ताल्-कुपित हुआ; अन्नान्-जैसा उसने; वरुक तेर्-आये रथ; विरैविन्-जल्दी; अँन्ऱान्-कहा। ३०६२

बहुत सी बातें कहने से क्या लाभ? तुम जाओ। अपने महल में जाकर कंधों पर चुभे अस्त्रों को निकाल दो। युद्ध-श्रम का परिहार कर लो और रात को आराम से काट दो। रावण यह कहकर उठा और विवृत मुख व्याघ्र कुपित हुआ जैसे क्रोध करके बोला कि आये मेरा रथ शीघ्र। ३०६२

अॅळुन्दवन् ऱन्नै नोक्कि यिणैयडि यिऱैञ्जि यॅन्दाय्
ऑळिन्दरुळ् शीऱ्ऱम् शॊन्न वुऱुदियैप् पॊऱुत्ति यान्पोय्क्
कळिन्दनॅ नॅन्ऱ पिन्नर् नल्लवा काण्डि यॅन्ना
मॊळिन्दनन् दॆय्वत् तेर्मे लेऱिनन् मुडिय लुऱ्ऱान् 3063

अॅळुन्तवन् तन्नै-जो उठा उसे; मुटियलुऱ्ऱान्-अन्त को जो आ गया था उस इन्द्रजित् ने; नोक्कि-देखकर; इणै अटि-चरणद्वय को; इऱैञ्चि-वंदना करके; अँन्ताय्-मेरे पिता; चीऱ्ऱम्-कोप; ऑळिन्तु अरुळ्-दूर करने की कृपा करें; चॊन्न उऱुतियै-मेरा कहा हित-वचन; पॊऱुत्ति-क्षमा कर लें; यान् पोय्-मैं जाकर; कळिन्तनॅन्-मरा; अँन्ऱ पिन्नर्-यह होने के बाद; नल्लवा काण्टि-अच्छा देखेंगे; अँन्ना मॊळिन्तनन्-ऐसा कहा; तॆय्व तेर् मेल्-दिव्य रथ पर; एऱिनन्-सवार हुआ। ३०६३

आसन्न-मृत्यु इन्द्रजित् ने उठे अपने पिता से नमस्कार करके विनय की। मेरे पिताजी ! आप क्रोध छोड़ देने की कृपा करें। मैंने जो हितवचन कहा उसके लिए क्षमा कर दें। मेरी युद्ध में मृत्यु होने के बाद आप सत्य को अच्छी तरह से देख लेंगे। यह कहकर वह दिव्य रथ पर सवार हुआ। ३०६३

पडैक्कल विज़्जै मऱ्ऱुम् पडैत्तन पलवुन् दन्बाल्
अडैक्कल माहत् तेव रळित्तन वॅल्लाम् वाङ्गिक्
कॊडैत्तॊऴिल् वेट्टोर्क् कॅल्लाङ् गॊडुत्तनन् कॊडियोन् ऱनैक्
कडैक्कणाल् नोक्कि नोक्कि यिरुहणीर् कलुऴप् पोनान् 3064

तेवर्–देवों ने; तन् पाल्–उसके पास; अटैक्कलमाक–धरोहर के रूप में; अळित्तन–जो दे रखी थी; पटैक्कल विन्चै–अस्त्रविद्या को; मऱ्ऱुम्–और अन्य; पटैत्तन पलवुम्–रचित अनेक; ॲल्लाम् वाङ्कि–सब लेकर; कॊटै तॊऴिल्–दान-कर्म में; वेट्टोर्क्कॆल्लाम्–सभी माँगनेवालों को; कॊटुत्तनन्–दान किया; कॊटियोन् तन्नै–क्रूर रावण को; कटै कण्णाल्–आँखों की कोर से; नोक्कि नोक्कि–बार-बार देखकर; इरु कण्–दोनों आँखों से; नीर्–आँसू; कलुऴ–बहने देकर; पोनान्–गया। ३०६४

उसने देवों के धरोहर के रूप में अपने पास रखे हुए अस्त्र-शस्त्रों की विद्या और हथियार सब ले लिये। बाद याचकों को उनको तृप्त करते हुए खूब दान किया। अपने पिता को आँखों के कोर से बार-बार देखते हुए और आँखों से आँसू बहाते हुए चला। ३०६४

इलङ्गैयि ऩिरुद रॅल्ला मॅऴुन्दनर् विरैवि ऩॆय्दि
विलङ्गलन् दोळ निन्नैप् पिरिहलम् विळिदु मॆन्न
वलङ्गॊडु तॊडर्न्दार् दम्मै मन्नऩैक् कामित् यादुम्
कलङ्गलि रिन्ऱे शॆन्ऱु मनिदरैक् कडप्प लॆन्ऱान् 3065

इलङ्कैयिन् निरुतर् ॲल्लाम्–लंकावासी सभी राक्षस; ॲऴुन्ततर्–उठे; विरैविन् ॲय्ति–जल्दी जाकर; विलङ्कल् अम् तोळ–पर्वतोपम मनोरम कन्धों वाले; निन्नै पिरिकलम्–आपसे अलग नहीं होंगे; विळितुम्–मरेंगे; ॲन्न–कहते हुए; वलङ्कॊटु–दायीं ओर से; तॊटर्न्तार् तम्मै–जो पीछा करते थे उनसे; मन्ननै कामित्–राजा की रक्षा करें; यातुम् कलङ्कलिर्–कुछ क्षुब्ध न हों; इन्ऱे चॆन्ऱु–आज ही जाकर; मनितरै कटप्पल्–नरों को जीतूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३०६५

तब लंका के सारे राक्षस जल्दी आ जुट गये। उन्होंने कहा कि हे पर्वतस्कंध ! आपसे अलग नहीं रह सकेंगे। हम भी आपके साथ मरेंगे। वे प्रदक्षिणा करके उसके साथ-साथ जाने लगे। इन्द्रजित् ने उनसे कहा कि आप अपने राजा की सेवा करें। कुछ व्यग्र न हों। अभी जाकर मैं उन नरों को जीत लूंगा। ३०६५

वणङ्गुवार् वाऴ्त्तु वार्हळ् वडिवितै नोक्कित् तम्वाय्
उणङ्गुवा रुयिर्प्पा रुळ्ळ मुरुहुवार् वॅरुव लुर्र्
कणङ्गुऴै महळि रीण्डि यिरैत्तवर् कडैक्क णॅन्नुम्
अणङ्गुरै नंडुवेल् पायु ममर्हडन् दरिदिर् पोनान् 3066

वॅरुवल् उर्र्–भयभीत; कणम् कुऴै–पृथुल कुंडलधारिणी; मकळिर्–स्त्रियाँ; ईण्टि–एकत्रित होकर; इरैत्तवर्–हो-हल्ला मचाती हुई; वणङ्कुवार्–नमन करतीं; वाऴ्त्तुवार्कळ्–(कुछ स्त्रियाँ) आशीर्वाद करतीं; वटिवितै नोक्कि–(उसका) रूप देखकर; तम् वाय् उणङ्कुवार्–कुछ के मुख सूख जाते; उयिर्प्पार्–निःश्वास छोड़ती; उळ्ळम् उरुकुवार्–कुछ का दिल पिघल जाता; कटैक्कण् ऍन्नुम्–तिरछी नज़र रूपी; अणङ्कु उरै–भयकारी व; पायुम्–वेग से जानेवाले; नॅटु वेल्–लम्बे भालों से; अमर् कटन्तु–युद्ध करके विजय पाकर; अरितिल्–कठिनता से; पोनान्–गया। ३०६६

भयातुर पृथुलकुंडलधारिणी राक्षस-नारियाँ शोर मचाते हुए एकत्र हो गयीं। कुछ स्त्रियों ने नमस्कार किया। कुछ ने शुभकामना प्रगट की। उसका रूप देखकर कुछ स्त्रियों का मुख सूख गया। कुछ लोगों ने लम्बे निःश्वास छोड़े। कुछ का मन पिघल गया। इस भाँति रही स्त्रियों की तिरछी नज़र रूपी धमकी-भरी तथा चुभनेवाली लम्बी शक्तियों से टक्कर लेते हुए इन्द्रजित् कठिनाई से आगे जा पाया। ३०६६

एयिन्न न्नित्त न्नाह् विलक्कुव नॅडुत्त विल्लान्
शेयिरु विशुम्बै नोक्कि वीडणा तीयो न्नप्पाल्
पोयिन्न न्नादल् वेण्डुम् पुरिन्दिल नॊन्रु मॅन्नान्
आयिरम् पुरवि पूण्ड तेरिन्पे ररवङ् गेट्टान् 3067

इन्नतन्–ऐसा; एयितन् आक–गया तो; ऍटुत्त विल्लान्–उठे हुए धनुर्धर; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने; चेय्–दूर तक; इरु–बड़े; विशुम्पै नोक्कि–आकाश को देखकर; वीटणा–विभीषण; तीयोन्–दुष्ट ने; ऑन्रुम् पुरिन्तिलन्–कुछ नहीं किया है; अप्पाल् पोयिनन्–अलग गया; आतल् वेण्टुम्–होना चाहिए; ऍन्पान्–कहा तो; आयिरम् पुरवि पूण्ट–हज़ार घोड़ों के जुते; तेरिन्–रथ की; पेर् अरवम्–उच्च ध्वनि; केट्टान्–सुनी। ३०६७

वह इस भाँति आ रहा था। उधर सन्नद्धधनु लक्ष्मण ने आकाश को देखकर विभीषण से कहा कि विभीषण! दुष्ट इन्द्रजित् ने कुछ नहीं किया। उस तरफ़ चला गया होना चाहिए। तभी उन्हें हज़ार अश्वों के जुते रथ का उच्च नाद सुनायी दिया। ३०६७

कुन्रिडै नॅरिदर वडवरैयिन् कुवडुरुळ् हुवदॅन्न मुडुहुतॊरुम्
पॊन्रिणि कॊडियिन्न दिडियुरुमि न्नदिर्हुरन् मुरल्वदु पुलॅमणियिन्
मिन्रिरळ् शुडरदु कडल्परुहुम् वडवत्तल् वॅळियुरु वरुवदॅन्नच्
चॅन्रुरदु तिशॅतिशॅ युलहिरियत् तिरिबुव न्नमुमुरु तन्नियिरदम् 3068

तिरि पुवनमुम्–तीनों भुवनों में; उऱु–जा सकनेवाला; तनि इरतम्–विशिष्ट रथ; इटै–मार्गमध्यस्थित; कुन्ऱु–पर्वतों को; नॅरि तर–चूर करते हुए; पॊन् तिणि–स्वर्णपूर्ण; कॊटियिनतु–ध्वजा वाला; वटवरैयिन् कुवटु–उत्तरी (मेरु) पर्वत का शिखर; उरुळ्कुवतॆन–लुढ़कता आता जैसे; मुट्कु तोऱुम्–जल्दी जाते हर समय; इटि उरुमिन्–घोर अशनि का; अतिर्कुरल्–थर्रानेवाला नाद; मुरल्वतु–उठाता; पुतै मणियिन्–अलंकृतकारी रत्नों की; मिन् तिरळ्–विजली-समूह की-सी; चुटरतु–कांति बिखेरनेवाला; उलकु इरिय–संसार को अस्त-व्यस्त करते हुए; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; कटल् परुकुम्–समुद्र को पीनेवाली; वट अनल्–वड़वाग्नि; वॆळियुऱ–बाहर निकलकर; वरुवतु अॅन–आती हो जैसे; चॆन्ऱतु–गया। ३०६८

वह रथ तीनों लोकों में जा सकता था। मार्ग के पर्वतों को चूर करता हुआ वह स्वर्णपूर्ण ध्वजाओं से अलंकृत रथ उत्तरी मेरु लुढ़कता हो ऐसा लुढ़कता हुआ आ रहा था। जब वह सवेग जाता तब वज्र का-सा नाद उठता था। जड़े हुए रत्नों के समूह से कांति छूटती थी। बड़वानल आता हो, ऐसा वह सारे लोकों को भय से तितर-बितर भगाते हुए आ रहा था। ३०६८

कडल्मरु हिडवुल हुलैयनॆडुङ् गदिरिरि दरवॆदिर् कविकुलमुम्
कुडर्मरु हिडमलै कुलैयनिलङ् गुऴियॊडु किऴिपड वऴिपडरुम्
इडमरु हियपॊडि मुडुहिडलु मिरुळुळ दॆनवॆळु मिहलरविन्
पडमरु हिडवॆदिर् बिरविवियदव् विरुळ्पह लुरवरु पहैयिरदम् 3069

कटल्–समुद्र; मऱुकिट–घूम उठें; उलकु उलैय–लोक अस्त-व्यस्त हों; नॆटुम् कतिर्–बड़े तेजपुंज, सूर्य और चन्द्र; इरि तर–स्थान बदलकर भागें; अॅतिर्–सामने रहे; कवि कुलमुम्–कपिकुल की; कुटर् मऱुकिट–आँतें छिन्न हों; मलै कुलैय–कुलगिरियाँ अस्थिर हों; निलम्–पृथ्वी; कुऴियॊटु–गड्ढों-सहित; किऴि पट–फट जाय ऐसा; वऴि पटरुम्–मार्ग में जहाँ रथ जाता रहा; इटम्–उन स्थानों में; मरुकिय पॊटि–घूमनेवाली धूल; मुटुकिटलुम्–जल्दी गयी (और) उन गड्ढों को भरती रही; इरुळ् उळतु–अँधेरा है; अॅन–ऐसा; अॅऴुम्–उठनेवाले; इकल् अरविन्–शत्रु सर्प का; पटम् मऱुकिट–फन पिस जाय ऐसा; अ इरुळ्–यह अंधकार; पकल् उऱ–दिन बन जाय ऐसा; वरु–आनेवाला; पकै इरतम्–वैरी रथ; अॅतिर् बिरवियतु–सामने आया। ३०६९

समुद्र क्षुब्ध हुए। लोक काँपे। बड़े तेजपुंज सूर्य और चन्द्र स्थिति बदल गये। वानरों की आँतें छिन्न हुई। भूमि गड्ढों-सहित फट गयी। उसके मार्ग में उठी धूल ने गड्ढों को भर दिया। अंधकार को आया समझकर जो साँप भूमि के ऊपर आये उनके फनों को कुचलता हुआ, उस अंधकार को दिन में बदलता हुआ वह वैरी-रथ सामने प्रकट हुआ। ३०६९

आर्त्तदु निरुदर्द मनिहमुड नमररुम् वॆरुविनर् कविकुलमुम्
वेर्त्तदु वॆरुवलॊ डुलम्वरलाल् विडुहणै शिदरिन नडुतॊऴिलोन्

तीर्त्तन् मवन्नदिर् मुडुहिनँडुन् दिशैशॆवि डॆड्रितर विशैहॆळ्तिण्
पोर्त्तॊळिल् पुरिदलु मुलहुकडुम् बुहैयॊडु शिहैयन्नल् पॊदुळियदाल् 3070

निरुतर् तम् अनिकम्–राक्षसों की सेना ने; उटत्तु आर्त्तवु–एक साथ घोष किया; अमररुम् वॆरुवितर्–देव डरे; कवि कुलमुम्–वानर-यूथ; वॆरुवलोडु–डर के साथ; अलम् वरलाल्–मन दुःखी होने से; वेर्त्ततु–स्वेद से भर गये; अट्टु तॊळिलोन्–युद्धकर्मा (इन्द्रजित्) ने; विट्ट कणै–धनु से निकले शरों को; चितद्रितन्–सर्वत्र चलाया; तीरत्तनुम्–पवित्रमूर्ति; अवन् ऎतिर्–उसके सामने; मुटुकि–जल्दी जाकर; नेंटु तिचै–लम्बी दिशाएँ; चॆविटु ऎड्रितर–उच्च नाद से पीड़ित हुईं; विचै कॊळु–जोरदार; तिण् पोर् तॊळिल्–कठोर युद्ध-कार्य; पुरितलुम्–करते समय; उलकु–लोक भर में; कटुम् पुकैयोटु–घने धुएँ के साथ; चिकै अनल्–अग्नि-ज्वालाएँ; पॊतुळियतु–भर उठीं। ३०७०

राक्षस-सेना ने एकदम बड़ा गर्जन किया। देव डरे। कपिकुल भी डर और भ्रम से पसीने से तर हो गये। युयुत्सु इन्द्रजित् ने अपने धनु से बाण छोड़े। पवित्रमूर्ति ने भी उसके सामने तेजी से जाकर तीव्र तथा प्रचंड युद्ध किया, जिससे लम्बी दिशाएँ काँप गयीं। धुएँ और ज्वालाओं के साथ आग सर्वत्र फैली। ३०७०

वीडण नमलनै विड्रलुहॆळ्पोर् विडलैयॆ यिनियिडै विडलुळदेल्
शूडलै तुरुमलर् वाहैयॆनत् तॊळुदन नवळवि लळहनुमक्
कोडणै वरिशिलै युलहुलैयक् कुलवरै पिदिर्पड निलवरैयिल्
शेडनुम् वॆरुवुर वुरुमुरळ्तिण् तॆऴुकणै मुरैमुरै शिदड्रिनताल् 3071

वीटणन्–विभीषण ने; पोर्–युद्ध में; विड्रल् कॊळु–विजयशील; विटलैयै–छोकरे को; इति–अब; इटै विटल्–मध्य में छोड़ना; उळतेल्–होगा तो; तुड–घने; वाकै मलर्–'वाहै' पुष्प की माला (जयमाला); चूटलै–नहीं पहनोगे; अन–ऐसा कहकर; अमलनै–पवित्रमूर्ति को; तॊळुततन्–नमस्कार किया; अ–उस; अळविल्–तब; अऴकनुम्–सुन्दरमूर्ति ने भी; कोटणै–घोषयुक्त; वरि चिलैयै–सबन्ध धनु पर; उलकु उलैय–लोकों को विक्षुब्ध करते हुए; कुलवरै–कुलगिरियों को; पितिर् पट–चूर करके; निलवरैयिल्–पृथ्वी में; चेटनुम् वॆरुवुर–आदिशेषनाग को भय से भरकर; उरुम् उऴ्ऴ–वज्र-सम; तिण् तॆऴु–शब्दहंता; कणै–शर; मुरै मुरै–बारी-बारी से; चितद्रितन्–लगातार चलाये। ३०७१

विभीषण ने लक्ष्मण को समझाया कि युद्धविजयी वीर छोकरे को अबकी बार बचने देंगे तो 'वाहै' (जय-) माला पहन नहीं पायेंगे। यह कहकर विभीषण ने पवित्रमूर्ति को नमस्कार किया। तब सुन्दरमूर्ति लक्ष्मण ने भी शोर करनेवाले सबन्ध धनु से वज्र-सम कठोर निपातक शर संधानकर लोकों को क्षुब्ध करते हुए, कुलगिरियों को चूर करते हुए और भूमि ढोनेवाले शेषनाग को भय में डालते हुए छोड़े। ३०७१

आयिर वळविन्न वयिन्मुहवा यड्हणै यवन्विड विवन्विडवत्
तीयिनु मॅरिवन्न वुयिर्परुहच् चिदरिन्न कविहळो डिन्ननिरुदर्
पोयिन्न पोयिन्न तिशैनिरैयप् पुरळ्बवर् मुडिविलर् पॊरुतिऱलोर्
एयिन रॅरुवरै यॊरुवर्कुऱित् तॅरिहणै यिरुमळै पॊऴिवन्नपोल् 3072

आयिरम् अळविन्न–हज़ार के परिमाण के; अयिन् मुक–तीक्ष्णमुखी; वाय् अट्टु कणै–घातक अस्त्र; अवन् विट–इन्द्रजित् के चलाने पर; इवन् विट–इनके भी छोड़ने पर; अ तीयिनुम्–(युगान्त की) उस अग्नि से भी; ऍरिवन्न–अधिक जलने वाले; उयिर् परुक–प्राण पीने लगे; कविकळ्–वानर; चितऱिन्न–बिखरकर; ओटिन्न–भागे; निरुतर्–राक्षस; पोयिन्न पोयिन्न तिचै–जहाँ-जहाँ भागे उन दिशाओं में; निऱैय–भरकर; पुरळ्पवर्–जो लोटे; मुटिविलर्–उनकी संख्या का अन्त नहीं; पॊरु तिऱलोर्–युद्धवीर (दोनों) ने; ऒरुवरै ऒरुवर् कुऱित्तु–एक-दूसरे का निशाना बनाकर; इरु मऴै–दो मेघ; पॊऴिवन्न पोल्–बरसते जैसे; ऍरि कणै–ज्वालायुक्त शरों को; एयिनर्–चलाया। ३०७२

सहस्र की संख्या के तीक्ष्णमुखी व संहारक शर इन्द्रजित् ने चलाये और लक्ष्मण ने भी प्रयोग किये। युगांत की अग्नि से भी दाहक वे दोनों ओर रहनेवाले वानरों के प्राणों को पीने (हरने) लगे तो वे बिखरकर भागे। राक्षस भी जहाँ गये, उस दिशा में भर गये। जो आग में फँसकर लोटे, वे असंख्यक थे। युद्धसमर्थ दोनों ने परस्पर लक्ष्य बनाकर बड़ी वर्षा के समान अपने ज्वाला-सहित शरों को चलाया। ३०७२

अऱ्ऱन वन्नल्विऴि निरुदन्वळङ् गडुहणै यिडैयिडै यडलरियित्
कॊऱ्ऱवन् विडुहणै मुडुहियव नुडल्पॊदि कुरुदिहळ् परुहिन्नकॊण्
डुऱ्ऱन वॊळिकिळर् कवशनुळैन् दुऱुहिल तॅऱुहिल वनुमनुडल्
पुऱ्ऱिडै यरवॆन नुळैयनॆडुम् बॊरुशर मवनवै युणर्हिलनाल् 3073

अनल् विऴि–अग्नि बरसानेवाली आँखों का; निरुतन्–राक्षस; वळङ्कु–जो चला रहा था; अट्टु कणै–वे घातक बाण; इटै इटै–बीच-बीच में; अऱ्ऱन–कट गये; अटल् अरियिन्–ताक़तवर सिंह-सदृश; कॊऱ्ऱवन्–विजयी; विट्टु कणै–जो शर चला रहे थे वे; मुटुकि–तेज़ जाकर; अवन् उटल् पॊति–उसके शरीर में भरे रहे; कुरुतिकळ् परुकि–रक्त पीकर; कॊण्टु उऱ्ऱन–पीते घुसे रहे; नॆटुम्–लम्बे; पॊरु चरम्–युद्ध-शर; ऒळि किळर्–कांतियुत; कवचम् नुऴैन्तु–(लक्ष्मण के) कवच में प्रवेश करके; उऱुकिल–कुछ घुसे नहीं; तॆऱुकिल–हानि नहीं की; अनुमन् उटल्–हनुमान के शरीर में; पुऱ्ऱिटै अरवु ऍन–बाँबी में सर्प के समान; नुऴैय–घुसे; अवन्–वह; अवै उणर्किलन्–उन्हें अनुभव ही नहीं करता था। ३०७३

अग्नि-दृष्टि इन्द्रजित् द्वारा प्रेरित संहारक शर बीच-बीच में कट गये। बलवान केसरी-तुल्य लक्ष्मण के शर तेज़ जाकर इन्द्रजित् के शरीर पर रक्त को पीते हुए लगे रहे। इन्द्रजित् के लम्बे युद्धशर उज्ज्वल कवच में घुसकर कुछ हानि नहीं कर सके। न उनके शरीर को छेद सके। पर

हनुमान के शरीर पर बिल में साँप जैसे घुसे; तो भी हनुमान ने कुछ अनुभव ही नहीं किया कि शर चुभे हैं। ३०७३

आयिडै यिळैयवन् विडमतैया नवनिड् कवशमु मळिवुपडत्
तूयिन नयिन्मुह विशिहनेंडुन् दुळैपड विळिकनल् शॉरियमुनिन्
देयिन निरुदन तॅरिहणैता मिडनिल पडुवन विडैयिडैवन्
दोय्वुरु वनलदु तॅरिवुरला लुरड्रिन रिमैयव रुवहैयिनाल् 3074

आयिटै–तब; इळैयवन्–लघुराज ने; विटम् अनैयात् अवन्–विषतुल्य उस (इन्द्रजित्) के; इटु कवचमुम्–पहने कवच को; अळिवु पट–नष्ट करके; अयिन् मुक विचिकम्–तीक्ष्णमुखी वाण; नॅटु तुळै पट–बड़े छेद बनाते हुए; वीचितन्–चलाये; विळि–आँखों से; कनल् चॉरिय–आग उगलते हुए; मुनिन्तु–गुस्सा करके; निरुतन्–राक्षस के; तॅरि कणै–चुने बाण; एयिनताम्–जो चलाये गये वे; इटन् पटुवन इल–निशाने के स्थानों पर नहीं लगते; वन्तु–आकर; इटै इटै–बीच-बीच में; ओय्वु उरुवन–रुक जाते; अतु–वह; तॅरिवुरलाल्–जानकर; इमैयवर्–देवों ने; उवकैयिनाल्–संतोष से; उरड्रिनर्–नारे लगाये। ३०७४

तब लघुराज लक्ष्मण ने तीक्ष्णमुखी शर चलाकर इन्द्रजित् का कवच भेदकर उसके शरीर में छेद भी बना दिये। इन्द्रजित् नाराज हुआ, जिससे उसकी आँखों से आग-सी निकली। उसने सावधानी से चुनकर अस्त्र प्रयुक्त किये, पर वे निशाने पर नहीं लगे; बल्कि बीच ही बीच रुक गये। यह देखकर देव लोग आनंदातिरेक से चिल्ला उठे। ३०७४

विल्लिनिन् वलितर लरिदॆनलाल् वॅयिलिनु मनलुमि ळयिल्विरैविल्
शॅल्लॆन मिडल्कॊडु कडविननुमर् रदुतिशै मुहनुमह नुदवियदाल्
अल्लिनुम् वॆळिपड वॅदिर्वदुहण् डिळैयव नॆळुवहै मुनिवरर्दम्
शॊल्लिनुम् वलियदोर् शुडुहणैयाल् नडुविरु तुणिपड वुडड्रिननाल् 3075

विल्लितिन्–धनुष से; वलि तरल्–जीतना; अरितु ॲनलाल्–कठिन है, इसलिए; वॅयिलिनुम्–धूप से; अनल् उमिळ्–आग निकालनेवाले; अयिल्–शक्ति को; विरैविल् चॅल्–जल्दी चल; ॲन–कहकर; मिटल् कॊटु–ज़ोर से; कटविनन्–चलाया; अतु–वह; तिचैमुकन् मकन्–ब्रह्मा का पुत्र (पुलस्त्य) द्वारा; उतवियताल्–दिया गया था, इसलिए; ॲल्लिनुम्–सूर्य से; वॆळि पट–प्रकाश देते हुए; ॲतिर्वतु–जो सामने आ रहा था उसे; इळैयवन् कण्टु–कनिष्ठ ने देखकर; ॲळु वकै मुनिवरर् तम्–सप्तविध ऋषियों के; चॊल्लिनुम्–शाप-वचन से भी; वलियतु–असरदार; ओर् चुटु कणैयाल्–एक दाहक शर को; नटु–बीच में; इरु तुणि पट–दो भागों में तोड़ते हुए; उटड्रिनन्–चलाया। ३०७५

इन्द्रजित् ने सोचा कि धनु के बल से लक्ष्मण को परास्त करना असंभव है। अतः उसने धूप से भी अधिक ज्वलंत एक शूल लिया और उसे 'चलो जल्दी' कहकर ज़ोर के साथ चलाया। वह चतुर्मुखपुत्र पुलस्त्य का दिया हुआ था। वह सूर्य से भी अधिक प्रकाश छिटकाता हुआ आ

रहा था। लक्ष्मण ने देखा और सप्तऋषियों के शाप से भी अचूक एक अस्त्र चलाकर उसे बीच से काट दिया। ३०७५

आणियि त्तिळैयवन् विशिहनुळैन् दायिर मुडलूपुह वळिपडुशॅम्
शोणिद निलमुर वुलरिडवुन् दॊडुहणै विडुवन मिडलॅह्ळुतिण्
पाणिहळ् कडुहिन मुडुहिडलुम् पहलवन् मरुमह नडुकणैयिन्
तूणियै युरुमुरुळ् पहळिहळाल् तुणिपड मुरैमुरै शिदरित्तनाल् 3076

आणियिन्–प्रपंच की धुरी के समान श्रीराम के; इळैयवन्–कनिष्ठ के; आयिरम् विचिकम्–हजार शर; उटल्–(इन्द्रजित् के) शरीर में; नुळैन्तु पुक–अन्दर घुसे; मळि पटु–निकल बहनेवाला; चेम् चोणितम्–लाल रक्त; निलम् उर–भूमि पर गिरा; उलरिटवुम्–उनका शरीर सूख-सा गया; तॊटु कणै–लगाये गये शर; विटुवन–छोड़नेवाले; मिटल् कॊळ्–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; विटुवन–छोड़नेवाले; मिटल् कॊळ्–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; मुटुकिटलुम्–ज़ोर लगाते रहे तो; उरुम् उरुळ्–अशनि-सम; कटुकिन–तीव्रगामी; पकळिकळाल्–शरों को; पकलवन् मरुमकन्–सूर्यवंशोद्भव लक्ष्मण के; अटु कणैयिन्–घातक शरों के; तूणियै–तूणीर को; तुणि पट–छिन्न करते हुए; मुरै मुरै–कई बार; चितरित्तन्–छितरा दिया (निरंतर, अधिक संख्या में चलाया)। ३०७६

लोक की धुरी से तुल्य श्रीराम के भाई ने सहस्र विशिख चलाये, जो राक्षस के शरीर के अन्दर घुसे। उससे लाल रक्त बहा और भूमि पर गिरा। इन्द्रजित् का शरीर सूख गया। उसके अस्त्रप्रेरक हाथ त्वरा से काम करने लगे तो उसने अशनि-सम तेज़ अस्त्रों को सूर्यवंशज के घातक अस्त्रों वालेतूणीर को बार-बार काटते हुए मानो छितरा दिया। ३०७६

तेरुळ दॆनित्तिवन् वलितॊलैया तॆन्नुमदु तॆरिवुर वुणरुरुवान्
पोरुरु पुरविहळ् पडुहिलवाल् पुत्तैपिणि तुणिहिल पॊरुहणैयाल्
शीरिदु पॆरिदिद निलैमैयॆनत् तॆरिवव नॊरुशुडु तॆरुकणैयाल्
शारदि मलैपुरै तलैयैनॆडुन् दरैयिडै यिडुदलुम् निलैतिरिय 3077

तेर् उळतु ॲनिन्–रथ रहेगा तो; इवन् वलि तॊलैयात्–यह निर्बल नहीं होगा; ॲन्नुम् अतु–जो था वह (तथ्य); तॆरिवुर–साफ़; उणर्वु उरुवान्–समझनेवाले (लक्ष्मण) के; पॊरु कणैयाल्–युद्ध-शर से; पोर् उरु–युद्धरत; पुरविकळ्–अश्व; पटुकिल–नहीं मरते; पुत्तै–बद्ध; पिणि–बंधन; तुणिकिल–नहीं फटते; इतु चीरितु–यह विशेष बात है; इतन् निलैमै पॆरितु–इसकी स्थिति गुरु है; ॲन तॆरिपवन्–यह जानकर; चुटु–जलानेवाले; ऒरु तॆरु कणैयाल्–एक घातक अस्त्र से; चारति–सारथी के; मलै पुरै तलैयै–पर्वतोपम सिर को; निलै तिरिय–स्थिति बदलते हुए; नॆटुम् तरैयिटै–लम्बी पृथ्वी पर; इटुतलुम्–गिराते समय। ३०७७

इन्द्रजित् का रथ जब तक रहेगा तब तक वह निर्बल नहीं होगा। यह बात लक्ष्मण ने समझ ली। "मेरे अस्त्रों से इसके अश्व नहीं मरते; बल्कि उसके ऊपर बँधी रस्सियाँ आदि कटती भी नहीं। यह विशेष बात

लगती है। इसका अर्थ भी बड़ा गंभीर है।" उन्होंने ऐसा सोचकर एक बहुत ही प्रभावशाली अस्त्र से सारथी के पर्वत-सम सिर को अपने स्थान से अलग करके लम्बी भूमि पर गिरा दिया। ३०७७

उय्वित्तै यौरुवन् तूण्डा दुलत्तलिऱ् ऱवत्तै नण्णि
ऐवित्तै नलिय नैवा न्ऱिविऱ्कु मुवमै याहि
मॅय्वित्तै यमैन्द कामम् विऱ्किन्ऱ विरहिऱ् ऱोराम्
पॉय्वित्तै महळिर् कऱ्पुम् बोन्ऱदप् पॉलम्बॉऱ् ऱिण्तेर् 3078

अ पॉलम् पॉन् तिण् तेर्—वह सुन्दर स्वर्ण-रथ; तवत्तै नण्णि—तपस्या में लगकर; ऐवित्तै नलिय—पंचेंद्रिय-कर्म के क्षय होने को; उय्वित्तै—उचित कर्म करवानेवाले (आचार्य); ऑरुवत्—एक के; तूण्टातु—प्रेरित न करते; उलत्तलिल्—मर जाने पर; अऱिविऱ्कुम्—बुद्धि के लिए; उवमै आकि—दृष्टान्त बनकर; मॅय्वित्तै अमैन्त काममृ—शरीर-कर्म पर अवलंबित काम को; विऱ्किलुऱ—बेचने का; विरकिऱ्ऱोर् आम्—उपाय जिनके पास है उन; पॉय्वित्तै मकळिर्—झूठे काम करनेवाली स्त्रियों के; कऱ्पुम् पोन्ऱतु—चरित्र के समान रहा। ३०७८

तब वह सुदृढ़ स्वर्ण-रथ उस शिष्य की बुद्धि की-सी स्थिति में आ गया, जिसके गुरु तपस्या करके पंचेंद्रिय-निग्रह करने के मार्ग में चलाये विना मर गये हों। और भी शरीर पर अवलंबित काम को बेचने के उपाय को अपनाकर असत्य कार्य करनेवाली वेश्या की-सी स्थिति उसकी रह गयी। ३०७८

तुळ्ळुपाय् पुरवित् तेरुम् मुऱैमुऱै तानें तूण्डि
अळ्ळित्तन् परिक्कुन् दन्बे राहमे याव माह
वळ्ळन्मे लनुमन् ऱन्मेऱ् मऱ्ऱैयोर् मऱ्ऱिण् डोण्मेल्
उळ्ळुऱप् पहळि तूवि यार्त्तनन् ऱॅवरु मुट्क 3079

तुळ्ळु—छलाँग मारकर; पाय्—सरपट दौड़नेवाले; पुरवि—अश्वों से जुते; तेरुम्—रथ को; तानें—स्वयं; मुऱै मुऱै तूण्टि—बारी-बारी से प्रेरित करके; तन् पेर् आकमे—अपने बड़े शरीर को ही; अळ्ळित्तन्—उठाकर; परिक्कुम्—नोच जिससे अस्त्र लिये जाते हैं; आवमाक—तूणीर बनाकर; ऍवरुम् उट्क—सबको भयभीत करते हुए; वळ्ळल् मेल्—उदार प्रभु पर और; अनुमन् तन् मेल्—हनुमान पर; मऱ्ऱै योर्—अन्यों के; मल् तिण् तोळ् मेल्—सशक्त कठोर कंधों पर; उळ् उऱ—अन्दर घुस भी जायँ ऐसा; पकळि तूवि—शर चलाकर; आर्त्तनन्—उच्च घोष किया। ३०७९

इन्द्रजित् ने स्वयं उस रथ को, जिसे छलाँग मारनेवाले और सरपट दौड़नेवाले अश्व खींच रहे थे, बार-बार प्रेरित करता और अपने ही शरीर को तूणीर बनाकर उससे उठाकर शरों को चलाता हुआ प्रभु लक्ष्मण पर, हनुमान पर और अन्य वीरों के कंधों पर शर चलाये। वे उनके शरीर में घुसे। सभी इसे देखकर भयभीत हुए। तब इन्द्रजित् ने उच्च हर्ष-नाद किया। ३०७९

वीररॅऩ् वाऱ्हट् कॅल्लाम् मुऩ्ऩिऱ्कुम् वीरर् वीरऩ्
पेररॅऩ् वाऱ्ह ळाहुम् वॆऱ्ऱियिऱ् पॆऱ्ऱित् तामे
शूररॅऩ् ऱुरैक्कऱ् पालार् तुञ्जुम्बो तुणर्विऱ् चोरात्
तीररॅऩ् ऱमरर् पेशिच् चिऩ्दिऩर् दॆय्वप् पॊऱ्पू 3080

वीरऩ् ऍऩ्पाऱ्कट्कु ऍल्लाम्–वीर कहलानेवाले सभी लोगों में; मुऩ् निऱ्कुम् वीरर् वीरऩ्–अग्रस्थ वीर; पेरर् ऍऩ्पार्कळ्–नामी कहलानेवालों के; आकुम् पॆऱ्ऱियिऩ्–पास जो है उस रीति के; पॆऱ्ऱित्तु आमो–गुण का है क्या; तुञ्चुम् पोतु–मरते समय भी; उणर्विल् चोरा–वीरता के भाव में अप्रमत्त; तीरर्–धीर; चूरर्–शूर; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उरैक्कऱ्पालर्–कहलाने योग्य हैं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अमरर् पेचि–देवों ने बोलते हुए; तॆय्वम् पॊऩ् पू–दिव्य स्वर्ण-सुमन; चिऩ्तिऩार्–बरसाये। ३०८०

"वीरों में अग्रगण्य वीर है। नामी वीरों की वीरता भी इसकी वीरता (सी) हो सकती है क्या? मरते दम भी वीरता में न घटनेवाला धीर और शूर है।" ऐसा बोलते हुए देवों ने उस पर दिव्य तथा स्वर्णपुष्प बरसाये। ३०८०

ऍय्दवऩ् पहळि यॆल्लाम् वऱ्ऱित्तिव ऩॆऩ्मे लॆय्युम्
कैतडु माऱा दुळ्ळ मुयिरिऩुङ् गलङ्गा ड्रियाक्कै
मॊय्हणै कोडि कोडि मॊय्क्कवु मिळैप्पॊऩ् ड्रिल्लाऩ्
ऐयऩु मिवऩो डॊञ्जु माण्डॊऴि लाऱ्ऱ लॆऩ्ऱाऩ् 3081

ऐयऩुम्–प्रभु लक्ष्मण ने भी; ऍय्त–मैंने जो चलाये; वल् पकऴि ऍल्लाम्–उन सारे कठोर शरों को; इवऩ्–यह; पऱ्ऱित्तु–खींच लेकर; ऍऩ् मेल्–मुझ पर; ऍय्युम्–प्रयोग करता है; कै तट्माऱातु–हाथ नहीं लड़खड़ाता; उळ्ळम्–मन; उयिरिऩुम्–जीव के ही समान; कलङ्कातु–व्यग्र नहीं होता; याक्कै–शरीर पर; मॊय् कणै–भरे शर; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; मॊय्क्कवुम्–चुभे रहते हैं; इळैप्पु ऍऩ्ऱु इल्लाऩ्–थकावट नाम की भी नहीं रखता; आण् तॊऴिल्–पौरुष की; आऱ्ऱल्–वीरता; इवऩोटु ऍञ्चुम्–इसके साथ समाप्त हो जायगी; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३०८१

प्रभु लक्ष्मण को विस्मय हुआ। "मैं जो कठोर अस्त्र चलाता हूँ, उन्हीं को अपने शरीर से छीन लेकर यह मुझ पर चला देता है। उसके हाथ विचलित नहीं होते; मन में बेचैनी नहीं। जीव में अस्थिरता नहीं। शरीर पर कोटि-कोटि अस्त्र चभे हुए लगे रहते हैं। तो भी थकावट का नाम नहीं। पुरुषोचित वीरता की हस्ती आज इसके साथ समाप्त हो जायगी।"। ३०८१

तेरिऩैक् कडावि विण्मेऱ् चॆल्लिऩुञ् जॆल्लुञ् जॆय्युम्
वोरिऩैक् कडऩ्दु मायम् पुणर्क्किऩुम् बुणर्क्कुम् बोयक्

कारितॅक् कडन्दु वञ्जङ् गरुदिनुङ् गरुदुम् गाण्डि
वीरमॅय्प् पहलि नल्लाल् विळिहिल निरुळिन् वॅय्योन् 3082

वीर–वीर; तेरितॆ कटावि–रथ को चलाकर; विण् मेल्–आकाश में; चॆल्लिनुम्–जाए भी; चॆल्लुम्–जायगा; चॆय्युम् पोरितॆ–जो कर रहा है उस युद्ध को; कटन्तु–छोड़कर; मायम् पुणर्क्किनुम्–माया-कार्य करे तो; पोय् पुणर्क्कुम्–जाकर कर सकता है; अ कारितॆ कटन्तु–उन मेघों को पार कर; वञ्चम् करुतिनुम्–वंचना करने का विचार करे तो; करुतुम्–विचार कर सकता है; काण्टि–देखें; वॆय्योन्–क्रूर; पकलिन् अल्लाल्–दिन में नहीं तो; इरुळिन्–अन्धकार मे; विळिकिलन्–नहीं मरेगा; मॆय्–यह सच है। ३०८२

विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर! रथ को प्रेरित करके यह आकाश में चला भी जायगा, या युद्ध छोड़कर माया में लग भी सकता है। मेघों के पार जाकर वंचना करने की भी संभावना है। देखें। क्रूर वह दिन में ही मारा जा सकता है। अन्धकार में वह नहीं मरेगा। यह सत्य है। ३०८२

ऎन्रॆडुत् तिलङ्गै वेन्द निळैयवऱ् कियम्ब विन्ऱे
पॊन्रुव दल्ला लप्पा लिनियॊरु पोक्कु मुण्डो
शॆन्रुळिच् चॆल्लु मन्ऱे तॆऱुकणै वलियिल् तीर्न्दान्
वॆन्ऱियिप् पोदे कोडुङ् गाणॆन विळम्बु मॆल्लै 3083

इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा विभीषण के; इळैयवर्कु–लघुराज के पास; ऎन्ऱु–ऐसा; ऎटुत्तु इयम्प–समक्ष कर कहने पर; इन्ऱे–आज ही; पॊन्ऱुवतु अल्लाल्–मरना छोड़; अप्पाल्–बाद; इति ऒरु पोक्कुम् उण्टो–अब कोई गति है क्या; तॆऱु कणै–संहारक शर; वलियिल् तीर्न्तान्–कमजोर(हुआ) इन्द्रजित्; चॆन्ऱुऴि–जहाँ-जहाँ जाय वहाँ; चॆल्लुम् अन्ऱे–जायगा न; इप्पोते–अभी; वॆन्ऱि कोटुम्–विजय पायेंगे; काण्–देखो; ऎन–ऐसा; विळम्पुम् ऎल्लै–जब कहा तब। ३०८३

लंका के राजा विभीषण के लघुराज लक्ष्मण से यह कहने पर लक्ष्मण ने आश्वासन दिया "कि आज ही मरेगा। उसे छोड़ दूसरी कोई गति नहीं। मेरा सहारक बाण, वह जहाँ भी जाए, वहाँ जायगा न? आज ही हम जीत पायेंगे। देख लो।" वे यह कह ही रहे थे कि—। ३०८३

शॆम्बुनर् चोरिच् चॆक्कर् तिशैयुऱच् चेऱ लालुम्
अम्बॆन वुऱ्ऱ कॊऱ्ऱत् तायिरङ् गदिर्ह ळालुम्
वॆम्बुपोर् ऱेरिर् ऱोन्ऱुञ् जिऱप्पिन् मरक्कन् वॆय्योन्
उम्बरिऱ् चॆन्ऱा नोडोत् तुदित्तन नरुक्क नुप्पाल् 3084

उप्पाल्–उधर; अरुक्कन्–सूर्य; चॆम् पुतल् चोरि–लाल रक्त के समान; चॆक्कर् तिचै उऱ–लाल गगन में; चेऱलालुम्–गया, इसलिए और; अम्पॆन उऱ्ऱ–शर-समान बनी; कॊऱ्ऱम्–विजयी; आयिरम् कतिर्कळालुम्–हज़ार किरणों से;

वॅम्पु–तपते; पॊन् तेरिल्–स्वर्ण-रथ पर; तोन्ऱम् चिऱप्पिनुम्–प्रगट होने की विशिष्टता से; अरक्कन् वॅय्योन्–राक्षस दुष्ट; उम्परिन् चॆन्ऱानोडु ऑत्तु–आकाश में जो गया उससे तुल्य होकर; उतित्ततन्–उदित हुआ। ३०८४

उधर सूर्य इन्द्रजित् के शरीर से निकल बहनेवाले लाल रक्त की तरह लाली-सी भरे (पूर्वी) आकाश में निम्नोक्त समानता से दुष्ट इन्द्रजित् के ही समान उदित हुआ। उसकी हर किरण इन्द्रजित् पर लगे अस्त्र की समानता करती थी। इन्द्रजित् स्वर्णरथ पर सवार था और सूर्य भी गरम अपने रथ पर सवार था। ३०८४

विडिन्ददु पॊऴुदुम् वॅय्योन् विळङ्गिन नुलह मीदा
विडुञ्जुडर् विळक्क मॆन्न वरक्करि निरुळुम् वीयक्
कॊडुन्जिन मायच् चॆय्है वलियॊडुङ् गुऱैन्दु कुन्ऱ
मुडिन्दन रक्क रॆन्ना मुळङ्गिन रुम्बर् मुऱ्ऱुम् 3085

उम्पर् मुऱ्ऱुम्–सभी देव; पॊऴुतुम् विटिन्ततु–सवेरा हो गया; चुटर् विटुम् विळक्कम् ऍन्न–प्रकाश देनेवाले दीप के समान; अरक्करिन् इरुळुम्–राक्षस रूपी अन्धकार को भी; वीय–मिटाने; वॅय्योन्–उष्णकिरण; उलकम् मीता–संसार के ऊपर; विळङ्किनन्–शोभता है; कॊटुन् चिन–निर्मम क्रोध से बनी; माय चॆय्कै–माया के कृत्य; वलियॊटुम्–उनके बल के साथ; कुऱैन्तु कुन्ऱ–कम होकर छीज जायँगे; अरक्कर्–और राक्षस; मुटिन्ततर्–मिटे; ऍन्ना–ऐसा; मुळङ्कितर्–उच्च स्वर में बोले। ३०८५

आकाश भर में देव मुदित हो गये। "सवेरा हो गया। प्रकाश-प्रसारक दीप के समान, राक्षस रूपी अन्धकार को दूर करने के निमित्त उष्ण-किरण पृथ्वी के ऊपर प्रकट हुआ है। अत्यन्त क्रोधी मायाकारी राक्षसों के मायाकृत्य उनके ही बल के साथ छीज जायँगे। राक्षस भी मर गये, समझो।" यह कहकर उन्होंने आनंदनाद किया। ३०८५

आरऴि याद शूलत् तण्णलुदन् नरुळि नीन्द
तेरऴि याद पोदुञ् जिलैकरत् तिरुन्द पोदुम्
पोरऴि यानिव् वॅय्योन् पुहऴऴि याद पॊऱ्ऱोळ्
वीरवि दाणै यॆन्ऱान् वीडणन् विळैव दोर्वान् 3086

पुकऴ् अऴियात–अयशमुक्त; पॊन् तोळ् वीर–मनोरम भुजा वाले वीर; इ वॅय्योन्–यह निर्मम; आर् अऴियात–जिसके नोक की तीक्ष्णता कभी दूर नहीं हो; चूलत्तु अण्णल्–उस शूल के रखनेवाले भगवान ने; तन् अरुळिन् ईन्त–अपनी कृपा से जो दिया; तेर्–वह रथ; अऴियात पोतुम्–जब नष्ट न होगा तब; करत्तु–हाथ में; चिलै–धनु; इरुन्त पोतुम्–जब रहता तब; पोर् अऴियान्–युद्ध में नहीं मरेगा; इतु आणै–यह विधि है; विळैवतु ओर्वान्–भावी को समझनेवाले; वीटणन्–विभीषण ने; ऍन्ऱान्–कहा। ३०८६

तब भविष्यदर्शी विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि अक्षय यश के मनोरम भुजावाले वीर ! इन्द्रजित् का रथ अमिट तीक्ष्णता से युक्त शूल के धारक शिवजी का कृपा के साथ दिया हुआ है। जब तक वह नहीं टटता और जब तक इसके हाथ में धनु है, तब तक युद्ध में वह नहीं मरेगा। यह विधि है ! । ३०८६

पच्चैंरुम् बुरवि वीया पल्लियच् चिल्लि पारित्
निच्चय मर्रु नीङ्गा वॆंत्रवु निलैन्दु विल्लित्
विच्चैयित् कणव नातात् विल्मैयाल् वयिर मिट्ट
अच्चित्तो डाळि वॆंव्वे ड्राक्किना ताणि नीक्कि 3087

विल्लित् विच्चैयित्–धनुर्विद्या के; कणवनातात्–जो नायक थे वे; पच्चै–हरे; वॆंम् पुरवि–क्रूर अश्व; वीया–नहीं मरेंगे; पल्लियच् चिल्लि–अनेक विध शब्द करनेवाले चक्र; पारित्–भूमि पर; अर्रु–मिटकर; निच्चयम् नीङ्का–जरूर ही दूर नहीं होंगे; ऍंत्रुपतु नितैन्तु–यह सोचकर; विल्मैयाल्–धनुसामर्थ्य से; आणि नीक्कि–कीलों को अलग करके; वयिरम् इट्ट–हीरे वाले काठ की बनी; अच्चित्तोटु–धुरी के साथ; आळि–चक्रों को; वॆंव्वेरु आक्किनात्–अलग-अलग कर दिया। ३०८७

धनुर्विद्या के नायक लक्ष्मण ने विचार किया। इसके रथ के हरे रंग के भयानक अश्व नहीं मरेंगे। विविध स्वरकारी पहिये भूमि पर निश्चय ही नहीं मिटेंगे। इसलिए उन्होंने अपनी धनुर्विद्याविदग्धता से कीलों को अलग किया। फिर हीरे के (बहुत पक्के) काठ की बनी धुरी से पहियों को अलग कर दिया। ३०८७

मणिनॆंडुन् देरित् गट्टु विट्टवु मरिद लोडुम्
अणिनॆंडुम् बुरवि यॆल्ला मार्रल वात वन्रे
तिणिनॆंडु मरमॊन् ड्राळि वाण्मळुत् ताक्कच् चिन्दिप्
पणैनॆंडु मुदलु नीङ्गप् पाङ्गुरुम् बरवै पोल 3088

मणि–रत्नजड़ित; नॆंटु तेरित्–ऊँचे रथ के; कट्टु विट्टु–सन्धि-बन्धन टूटे; अतु–वह; मरितलोटुम्–ऊपर-नीचा हो गया; अणि नॆंटुम्–सुन्दर बड़े; पुरवि–अश्व; ऍल्लाम्–सारे; तिणि–सारयुक्त; नॆंटुम् मरम् ऑन्रु–लम्बा एक पेड़; आळि–चक्र; वाळ्–तलवार; मळु–परशु; ताक्क–(इनके) प्रहार से; चिन्ति–टूटकर; नॆंटु पणै–लम्बी शाखाएँ; मुतलुम्–तना; नीङ्क–अलग-अलग हो जाने पर; पाङ्कु उरुम्–बाहर जानेवाले; परवै पोल–पक्षियों के समान; आर्रल आत–शक्तिहीन बन गये। ३०८८

रत्नजड़ित रथ के संधिबंधन टूट गये। वह औंधा गिर गया। उससे जुते मनोहर अश्व उन पक्षियों के समान बलहीन हो गये जो किसी पेड़ के चक्र-सम तीक्ष्ण परशु के द्वारा तने और लम्बी शाखाओं के काटे जाने पर इधर-उधर उड़ जाते हैं। ३०८८

अऴिन्दतेर्त् तट्टि निऩ्ऱु मङ्गुळ्ळ पडैहळ् ळऴिप्
पॊऴिन्दऩ ऩिळैय वीरन् कणैहळाल् तुणित्तुप् पोक्क
मॊऴिन्ददो रळविल् विण्णै मुट्टिना नुलह मूऩ्ऱुम्
किऴिन्दऩ वऩ्ऩ वार्त्तान् कण्डिल रोशै केट्टार् 3089

अऴिन्त तेर्–टूटे रथ के; तट्टितिऩ्ऱुम्–पीठ से; अङ्कु उळ्ळ पटैकळ्–वहाँ रहे हथियारों को; अऴि–उठाकर; पॊऴिन्ततऩ्–बरसाया; इळैय वीरऩ्–छोटे वीर ने; कणैकळाल्–अपने शरों से; तुणित्तु पोक्क–काटकर मिटाया; मॊऴिन्ततु–कहने भर की; ओर् अळविल्–देरी में; विण्णै मुट्टिऩात्–(इन्द्रजित्) आकाश को पहुँच गया; उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोक; किऴिन्तऩ अॅऩ्ऩ–दरार खा गये हों, ऐसा; आर्त्ताऩ्–नाद उठाया; कण्टिलर्–कोई देख नहीं पाये; ओचै केट्टार्–ध्वनि सुनी। ३०८९

टूटे रथ के आसन पर ही से इन्द्रजित् ने वहाँ रहे सभी हथियारों को लेकर प्रेरित किया। लघुराज लक्ष्मण ने उन्हें काटकर दूर कर दिया। तब एक शब्द कहने की देर के अंदर इन्द्रजित् आकाश में उड़ गया। वहाँ से ऐसा उच्च नाद किया, जिससे मानो तीनों लोक चिर गये। किसी ने यह नहीं देखा कि वह था कहाँ? पर सबने उसका स्वन सुना। ३०८९

मल्लिऩ्मा मारि यन्ऩ तोळिऩाऩ् मऴैयिऩ् वाय्न्द
कल्लिऩ्मा मारि पॆऱ्ऱ वरत्तिऩाऱ् चॊरियुङ् गालैच्
चॆल्लुवाऩ् ऱिशैह ळोरार् शिरत्तिऩो डुडल्हळ् शिन्दप्
पुल्लिनार् निलत्तै निऩ्ऱ वाऩर वीरर् पोहार् 3090

मा मारि अऩ्ऩ–काले मेघ के समान; मल्लिऩ् तोळिऩाऩ्–सशक्त कंधों वाले ने; पॆऱ्ऱ वरत्तिऩाल्–प्राप्त वर से; मऴैयिऩ् वाय्न्त–वर्षा के समान बनी; कल्लिऩ् मा मारि–पत्थर की वर्षा; चॊरियुम् कालै–जब करायी तब; निऩ्ऱ वानर वीरर्–जो खड़े रहे वे वानर वीर; पोकार्–नहीं हटे; चॆल्लुवाऩ्–भागने के विचार से; तिचैकळ् ओरार्–दिशाएँ नहीं जानते; चिरत्तिऩोटु–सिरों के साथ; उटल्कळ् चिन्त–शरीरों के छिन्न होते; निलत्तै पुल्लिऩार्–भूमि से लगे। ३०९०

बड़े काले मेघ के समान सशक्त भुजा वाले इन्द्रजित् ने वरमहिमा से पत्थर की महा वर्षा करा दी। तब वानर कहीं भाग नहीं पाये। भागने को दिशा की ओर देख भी नहीं सके। उनके सिर और शरीर कटे और वे भूमि के क्रोड में आ गये। ३०९०

काण्गिलत् कल्लिन् मारि यल्लदु काळै वीरन्
शेण्गलन् दॊळित्तु निऩ्ऱ शॆयलिऩैत् तॆळिन्दु नोक्कि
माण्गलन् दळन्द मायन् वडिवॆऩ्ऩ मुळ्ळुदुम् वौव
एण्गलन् दमैन्द वाळि येविऩा निडै विडामल् 3091

काळै वीरऩ्–ऋषभ-सम वीर; कल्लिऩ् मारि अल्लतु–प्रस्तर-वर्षा के अलावा;

काण्किलन्-नहीं देखते; चेण् कलनृतु-आकाश में मिलकर; ऑळितृतु नितृड़-ओझल रहने का; चॅयलितै-काम; तॅळिनृतु नोक्कि-साफ़ देखकर; माण् कलनृतु-गौरव के साथ; अळनृत मायन्-अनंत मायावी (विष्णु) के; वडिवु ॲंत-श्रीशरीर के समान; मुळुतुम् वौव-प्रपञ्च भर को ग्रसने; ॲण् कलनृतु-बल से युक्त; भमैनृत वाळि-बने बाणों को; इटै विटामल्-निरन्तर; एविनान्-चलाया। ३०९१

ऋषभ-सम वीर लक्ष्मण ने प्रस्तरवर्षा देखी और कुछ नहीं देखा। आकाश में इन्द्रजित् छिपा रहता है, वह बात उन्हें विदित थी। तब महान त्रिविक्रम भगवान के शरीर के समान प्रपंच भर को ग्रस सकनेवाले सशक्त शरों को लक्ष्मण निरंतर चलाने लगे। ३०९१

मऱैनृदन तिशैह ळॆङ्गुम् मायम्बोय् मलैयु माऱ्ऱल्
कुऱैनृदन इरुण्ड मेहक् कुळात्तिडैक् कुरुदिक् कॊण्मू
उऱैनृदुळ दॆनृन निनृऱा नुरुविनै युलह मॆल्लाम्
निऱैनृदवन् कण्डान् काणा विनैयदोर् निनैव दानान् 3092

तिचैकळ् ॲङ्कुम्-सारी दिशाएँ; मऱैनृतन-छिप गयीं; मायम् पोय्-माया में जाकर; मलैयुम् आऱ्ऱल्-(छिपकर) लड़ने की शक्ति में; कुऱैनृतनन्-कम हो गया; इरुण्ट मेकम् कुळात्तिटै-काले मेघसमूहमध्य; कुरुतिक् कॊण्मू-एक रक्त का मेघ; उऱैनृतुळतु ॲनृन-रहता हो जैसे; निनृऱान्-जो रहा उस (इन्द्रजित्) को; उलकम् ॲल्लाम् निऱैनृतवन्-लोकव्यापी लक्ष्मण ने; उरुविनै कण्टान्-उसके रूप को देखा; काणा-देखकर; इनैयतु-यों; ओर् निनैवतु आनान्-एक (बात) सोचने लगे। ३०९२

उन शरों से सारी दिशाएँ छिप गयीं। मायागुप्त इन्द्रजित् की युद्ध-शक्ति क्षीण हुई। वह काले मेघसमूहमध्य रक्त के मेघ के समान खड़ा रहा। उसे सर्वव्यापी भगवान (के रूप) लक्ष्मण ने देखकर यों सोचा। ३०९२

शिलैयऱा दॆनिनु मऱ्ऱत् तिण्णियोन् ऱिरण्ड तोळाम्
मलैयऱा दॊळिया दॆनृना वरिशिलै यॊनृरु वाङ्गिक्
कलैयरात् तिङ्ग ळनृन वाळियाऱ् कैयैक् कॊय्दान्
विलैयऱा मणिप्पू णोडुम् विल्लॊडुम् निलत्तु वीळ 3093

चिलै अऱातु ॲनिनुम्-धनु कटेगा नहीं तो भी; अ तिण्णियोन्-उस बलशाली के; तिरण्ट तोळ् आम् मलै-पुष्ट कंधों रूपी पर्वत; अऱातु ऑळियातु-विना टूटे नहीं बचेंगे; ॲनृना-सोचकर; वरि चिलै-सबन्ध धनु; ऒनृरु-अनुपम; वाङ्कि-झुकाकर; कलै अऱा-कला जिसकी नहीं कटी हो उस; तिङ्कळ् अनृन-अर्ध-चन्द्र-सम; वाळियाल्-अस्त्र से; विलै अऱा-अमूल्य; मणि पूणोटुम्-रत्नाभरणों के साथ; विल्लॊटुम्-धनु के साथ; निलत्तु वीळ-भूमि पर गिराकर; कैयै कॊय्तान्-हाथ को काट दिया। ३०९३

धनु कटे नहीं तो भी इन्द्रजित् के पुष्ट कंधे विना कटे नहीं रहेंगे।

यह कहते हुए उन्होंने अपने अनुपम धनु को झुकाकर अर्धचन्द्र अस्त्र चलाया और अनमोल रत्नाभरणों और धनु के साथ हाथ को काटकर गिरा दिया। ३०९३

पाहवान् पिरैपोल् वॅव्वायच्च् चुडुहणै पडुद लोडुम्
वेहवान् कडुङ्गा लॅऱ्ऱ मुऱ्ऱुम्बोय् विळिन्द नाळिल्
माहवान् ड्डक्कै मण्मेल् विळुन्ददु मणिप्पूण् मिन्न
मेहमा हायत् तिट्ट विल्लोडुम् वीळ्न्द वॅन्न 3094

मुऱ्ऱुम्–लोक सभी; पोय् विळिन्त नाळिल्–जब मिट जावें उस दिन; वान्–आकाश में; वेकम्–सवेग; कटुम् काल्–प्रचण्ड पवन के; ऍऱ्ऱ–झोंके देने पर; मेकम्–एक मेघ; आकायत्तु इट्ट–आकाश में बने; विल्लोटुम्–(इन्द्र-) धनुष के साथ; वीळ्न्ततु ॲन्न–गिरा हो जैसे; वान्–गौरवपूर्ण; पाक–अर्ध; पिऱै पोल्–चन्द्र के समान; वॅम् वाय्–क्रूर नोक से; चुटु कणै–संतापक बाण; पट्टलोटुम्–लगा तो तुरंत; माकम्–आकाश से; वान्–बड़ा; तटम् कै–विशाल हाथ; मणि पूण् मिन्न–रत्नाभरणों की चमक के साथ; मण् मेल्–भूमि पर; विळुन्ततु–गिरा। ३०९४

युगांतकालीन प्रखर प्रभंजन के झोंके से मेघ इन्द्रधनुष के साथ कटकर गिरता हो जैसे इन्द्रजित् का हाथ मान्य तथा दाहक अर्धचन्द्र बाण के लगने से आकाश से रत्नाभरणों की चमक के साथ धरती पर गिर गया। ३०९४

पडित्तलम् जुमन्द नाहम् पाहवान् पिऱैयैप् पऱ्ऱिक्
कडित्तदु पोलक् कोल विरल्हळा लिऱुहक् कट्टिप्
पिडित्तवॅञ् जिलैयि लोडुम् पेरॅळिल् वीरन् पॊऱ्ऱोळ्
तुडित्तदु मरमुङ् गल्लुन् दुहळ्पडक् कुरङ्गुन् दुञ्ज 3095

पटि तलम्–भूतल को; चुमन्त नाकम्–ढोनेवाले नाग ने; वान्–आकाश के; पाक–अर्ध; पिऱैयै पऱ्ऱि–चन्द्र को पकड़कर; कटित्ततु पोल–काटा हो जैसे; कोल विरल्कळाल्–सुन्दर हाथों से; इऱुक कट्टिप् पिटित्त–खूब कसकर पकड़े गये; वॅञ् चिलैयिलोटुम्–भयंकर धनु के साथ; पेर् ॲळिल् वीरन्–बहुत ही सुन्दर वीर; पॊन् तोळ्–मनोरम कंधे; मरमुम् कल्लुम्–तरुओं और पत्थरों को; तुकळ् पट–चूर करते हुए; कुरङ्कुम् तुञ्च–वानरों को भी मारते हुए; तुटित्ततु–तड़पे। ३०९५

भूभारवाही नाग अर्धचंद्र को ग्रस रहा हो, ऐसा इन्द्रजित् का हाथ अपनी सुन्दर उँगलियों से जिस भयंकर धनु को पकड़ रहा था, उसके साथ नीचे गिरा और तड़पने लगा, तो तरु और पत्थर चूर हुए और वानर मरे। ३०९५

अन्दर मदनि निन्ऱ वानव रुरुक्कन् वीळ्च्
चन्दिरन् वीळ मेरु माल्वरै तहर्न्दु वीळ

इन्दिर शित्तिन् पोंऱ्ऱो ळिऱ्ऱिडै विळुन्द वॆन्ऱाल्
ॲन्दिर मनैय वाळ्क्क यिनिच्चिल रुहन्दॆ तॆन्ऱार् 3096

अन्तरम् अतनिन् निन्ऱ–आकाश में स्थित; वानवर्–व्योमलोकवासी; अरुक्कन् वीळ–सूर्य गिरे; चन्तिरन् वीळ–चन्द्र गिरे; मेरु माल् वरै–मेरु का बड़ा पर्वत; तकर्न्तु वीळ–टूटकर गिरे; इन्तिरचित्तिन्–(ऐसा) इन्द्रजित् की; पोंन् तोळ्–सुन्दर भुजा; इडै इऱ्ऱु–बीच से कटकर; विळुन्ततु ॲन्ऱाल्–गिर गया तो; इनि–अब; चिलर्–कुछ लोग; ॲन्तिरम् अनैय वाळ्क्कै–यन्त्र-सम जीवन; उकन्ततु–चाहें; ॲन्–क्यों; ॲन्ऱार्–कहा। ३०९६

आकाश में स्थित व्योमवासियों ने कहा कि सूर्य, चन्द्र व मेरुपर्वत को भी गिराते हुए इन्द्रजित् की मनोरम भुजा बीच से कटकर गिर गयी! इसके बाद भी कुछ लोग यंत्रचालित-सा जीवन जीना चाहें क्यों ? । ३०९६

मॊय्यऱ मूर्त्ति यन्न मॊय्म्बिना नम्बि नालप्
पॊय्यऱच् चिऱिदॆन् ऱॆण्णुम् बॆरुमैयान् पुदल्वन् पूत्त
मैयऱक् करिदॆन् ऱॆण्ण मनत्तिनान् वयिर मन्न
कैयऱत् तलैयऱ् ऱार्पोऱ् कलङ्गिनार् निरुदर् कण्डार् 3097

मॊय्–साकार; अऱमूर्त्ति अन्न–धर्मदेवता-सम; मॊय्म्पिनान्–बलवान (लक्ष्मण) के; अम्पिनाल्–अस्त्र से; पॊय्–असत्य को; अऱ चिऱितु–अतिनिर्बल; ॲन्ऱु ॲण्णुम्–ऐसा समझनेवाले; अ पॆरुमैयान् पुतल्वन्–उस महिमावान का पुत्र; पूत्त–सुन्दर; मै–अंजन; अऱ करितु–बहुत कम काला है; ॲन्ऱु ॲण्णुम्–ऐसा सोचने देनेवाले काले; मनत्तिनान्–मन वाला; वयिरम् अन्न–वज्र-सम; कै अऱ–कटे हाथ का हुआ तो; कण्टार् निरुतर्–देखा तो राक्षस; तलै अऱ्ऱार् पोल्–स्वयं कटे सिर के हो गये हों, ऐसा; कलङ्किनार्–व्याकुल हुए। ३०९७

साकार धर्मदेवता के समान बलवान लक्ष्मण के अस्त्र से असत्य को क्षुद्र बली समझनेवाले महिमावान रावण के पुत्र, अंजन को भी रंग में हरानेवाले काले मन के इन्द्रजित् की वज्र-सम भुजा कटी तो राक्षस देखकर ऐसा क्षुब्ध हुए मानो उनके सिर ही कट गये हों। ३०९७

अन्नदु निहऴुम् वेलै यार्त्तॆऴुन् दरियिन् वॆळ्ळम्
मिन्नॆयिऱ् ऱरक्कर् शेनै यावरुम् मीळा वण्णम्
कॊन्नहक् करत्ताऱ् पल्लाल् मरङ्गळाल् मानक् कुन्ऱाल्
पॊन्नॆडु नाट्टै यॆल्लाम् पुडैक्कुडि येऱ्ऱिऱ् ऱन्ऱे 3098

अन्नतु निकऴुम् वेलै–जब यह हो रहा था; अरियिन् वॆळ्ळम्–तब वानरों के प्रवाह ने; आर्त्तु ॲऴुन्तु–शोर मचा उठकर; मिन् ॲयिऱु–चमकदार दाँतों की; अरक्कर् चेनै यावरुम्–राक्षस-सेना के सभी; मीळा वण्णम्–लौट न जायें ऐसा; कॊल् नकम्–घातक नाखूनों के; करत्ताल्–हाथों से और; पल्लाल्–दाँतों से; मरङ्कळाल्–पेड़ों से; मान–बड़े; कुन्ऱाल्–पर्वतों से; नॆटु–विशाल; पॊन् नाट्टै–स्वर्ण-नगरी

(व्योमपुरी); ॲल्लाम्–भर में; पुदु कुडि एट्रिट्रु–नये वासियों को बसा दिया। ३०६८

इतने में वानर-सेना ने घोष के साथ चमकदार दंतोरे राक्षसों को नगर में लौटने से रोककर उन्हें घातक नखों, दाँतों, तरुओं और बड़े पर्वतों से व्योमस्वर्णनगरी में नये वासियों के रूप में बसा दिया। ३०९८

कालङ् गॊण्डॆ ळुन्द मेहक् करुमैयान् शॆम्मै काट्टुम्
आलङ्गॊण् डिरुण्ड कण्डत् तमरर्हो नरुळिऱ् पॆट्र
शूलङ्गॊण् डॆऱिव लॆन्नात् तोन्ड्रिनान् पहैयिऱ् ड्रोन्ड्र
मूलङ्गॊण् डुणरा निन्नै मुडित्तन्ड्रि मुडिये नॆन्ड्रान् 3099

कालम् कॊण्टु–पर्वकाल में; ॲळुन्त–उठे; मेक करुमैयान्–मेघ-सम (काला इन्द्रजित्); चॆम्मै काट्टुम्–लाल दिखनेवाले; आलम् कॊण्टु–विष खाकर; इरुण्ट–काला बने; कण्टत्तु–कण्ठ वाले; अमरर् कोन्–देवों के पति परमेश्वर की; अरुळिऱ् पॆट्र–कृपा से प्राप्त; चूलम् कॊण्टु–शूल को लेकर; ॲऱिवल्–चलाऊँगा; ॲन्ना–कहकर; तोन्ड्रिनान्–प्रगट हुआ; पकैयिन् तोन्ड्र–शत्रुता के साथ प्रकट हो; मूलम् कॊण्टु उणरा–हेतु नहीं जान पाता ऐसे; निन्नै–तुम्हें; मुटित्तन्ड्रि–विना मारे; मुटियेन्–नहीं मरूँगा; ॲन्ड्रान्–ऐसा बोला। ३०६६

पर्वतकालीन मेघ के समान काले इन्द्रजित् ने सोचा कि रक्तवर्ण विषकंठ देवदेव शिवजी द्वारा कृपादत्त शूल फेंकूँ। उसने प्रकट होकर लक्ष्मण से कहा कि शत्रुता ले आये हो। हेतु नहीं जानता। ऐसे तुम्हारा अंत किये विना मैं नहीं मरूँगा। ३०९९

काट्रॆन्न वुरुमे ऱॆन्नक् कनलॆन्नक् कडैना ळुट्र
कूट्रमोर् शूलङ् गॊण्डु कुरुहिय दॆन्नक् कॊल्वान्
तोट्रिना नदनैक् काणा विनित्तलै तुणिक्कुङ् गालम्
एट्रदॆन् ड्रयोत्ति वेन्दर् किळैयव निदनैच् चॆय्दान् 3100

कटै नाळ् उट्र–युगान्त में उठे; काट्रु ॲन्न–बवंडर के समान; उरुम् एऱु ॲन्न–अशनिराज के समान; कनल् ॲन्न–आग के समान और; कूट्रम्–मृत्यु; ओर् चूलम् कॊण्टु–एक शूल लेकर; कॊल्वान्–हनन करने; कुरुकियतु–पास आती हो; ॲन्न–ऐसा; तोट्रिनन्–अपने को प्रकट करा लिया (इन्द्रजित् ने); अतनै–उसे; अयोत्ति वेन्तर्कु–अयोध्याधिपति के; इळैयवन्–कनिष्ठ ने; काणा–देखकर; इनि–अब; तलै तुणिक्कुम्–सिर कटवा देने का; कालम् एट्रतु–काल आ गया; ॲन्ड्रु–यह सोचकर; इतनै चॆय्तान्–यह कार्य किया। ३१००

उसने युगक्षय के बवण्डर के समान, अशनिराज के समान, आग के समान और लक्ष्मण को मारने हेतु पास आनेवाले मृत्युदेव के समान अपने को प्रकट करा लिया। अयोध्याधिपति के अनुज ने उसे देखकर निश्चय मान लिया कि अब इसके सिर को काटने का समय आ गया। उन्होंने (निम्नोक्त) यह कार्य किया। ३१००

मऱैहळे तेऱत् तक्क वेदियर् वणङ्गऱ् पाल
इऱैयव निराम नॆन्नुम् नल्लऱ मूर्त्ति यॆन्निल्
पिऱैयॆयिऱ् ऱिवनैक् कोऱि यॆन्ऱॊरु पिऱैवाय् वाळि
निऱैयुऱ वाङ्गि विट्टा नुलहॆला निऱुत्ति निन्ऱान् 3101

इरामन् ऎन्नुम्–श्रीराम नाम के; नल् अऱ मूर्त्ति–श्रेष्ठ धर्मविग्रह; मऱैकळे तेऱ तक्क–वेदों से ही प्रतिपाद्य; वेतियर् वणङ्कऱ्पाल–विप्रपूज्य; इऱैयवन् ऎन्निल्–भगवान हैं तो; पिऱै ऎयिऱ् इवनै–अर्धचन्द्रदन्त इसे; कोऱि–निहत कर दे; ऎन्ऱु–कहकर; निऱैयुऱ वाङ्कि–पूर्णरूप से खींचकर; ओर पिऱै वाय् वाळि–एक अर्धचन्द्रमुखी बाण को; विट्टान्–चलाया; उलकॆलाम् निऱुत्ति–सारे लोकों की संस्थापना करके; निन्ऱान्–जो सदा रहते है (उन शेषावतार लक्ष्मण ने)। ३१०१

अगर यह सत्य है कि धर्मविग्रह श्रीराम वेदप्रतिपाद्य विप्रवंद्य परमेश्वर हैं, तो हे अस्त्र ! तू इस वक्रदंतुले का हनन कर दे। यह कहकर लक्ष्मण ने खूब डोरा खींचकर एक अर्धचंद्रमुखी अस्त्र को चलाया। उसी के फलस्वरूप सारे लोक सुस्थिर हुए और उनका नाम भी स्थायी रह गया। ३१०१

नेमियुङ् गुलिश वेलुम् नॆऱ्ऱियि नॆरुप्पुक् कण्णान्
नामवे लानु मऱ्ऱै नान्मुहन् पडैयु नाणत्
तीमुहङ् गडुव वोडिच् चॆन्ऱवन् शिरत्तैत् तळ्ळिप्
पूमऴै वानोर् शिन्दप् पॊलिन्ददप् पहऴिप् पुत्तेळ् 3102

अ पकऴि पुत्तेळ्–वह शर रूपी देवता; नेमियुम्–(विष्णु-) चक्र; कुलिश वेलुम्–(इन्द्र का) कुलिश; नॆऱ्ऱियिल्–भाल के; नॆरुप्पु कण्णान्–आग्नेय नेत्र वाले; नाम वेल् तानुम्–(शिवजी का) भयानक त्रिशूल; मऱ्ऱै–और; नान्मुकन् पटैयुम्–चतुर्मुख का अस्त्र; नाण–शरम खाने देते हुए; ती मुकम्–उसका अग्निमुख; कतुव–पकड़ ले ऐसा; ओटि चॆन्ऱु–दौड़ जाकर; अवन् शिरत्तै तळ्ळि–उसके सिर को काट गिराकर; वानोर् पू मऴै चिन्त–देवों के फूलों की वर्षा करते; पॊलिन्ततु–शोभता रहा। ३१०२

वह अग्निमुखी अस्त्र रूपी देवता श्रीविष्णु-चक्र, इन्द्र-कुलिश, भालाग्निनेत्र शिव का भयानक शूल और ब्रह्मास्त्र —इन सबको शरम में डालते हुए शत्रु को ग्रसने के लिए तेज़ी से गया और इन्द्रजित् के सिर को काटकर गिरा दिया। देवों ने पुष्पवर्षा की और वह शोभायमान रहा। ३१०२

अऱ्ऱवन् ऱलैमी दोङ्गि यण्डमुऱ् ऱणुहा मुन्नम्
पऱ्ऱिय शूलत् तोडु मुडलुऱै पहऴि योडुम्
ऎऱ्ऱिय कालक् काऱ्ऱान् मिन्नॊडु मिडियि नोडुम्
इऱ्ऱॊरु काळ मेहम् वीऴ्न्दॆन वीऴ्न्द दियाक्कै 3103

अवन् तलै–उसका सिर; अऱ्ऱु–अलग कटकर; मीतु ओङ्कि–ऊपर जाकर;

अणुटम् उड्रु–भूमि पर आकर; अणुका मुत्तम्–पहुँचे इसके पहले; याक्कै–शरीर; पड्रिय चूलत्तोटुम्–गृहीत शूल के साथ; उटल् उर्रै–शरीर पर चुभे; पकळियोटुम्–शरों के साथ; अँड्रिय–बहनेवाले; काल फाड्रान्–युगांतपवन से; और काळ मेकम्–एक काला मेघ; मिन्नोंटुम् इटियित्तोटुम्–बिजली और वज्र के साथ; इड्रु वीळ्न्तु अँत्र–कटकर गिरा-जैसे; वीळ्न्ततु–गिरा। ३१०३

इसके पहले कि इन्द्रजित् का सिर कटकर ऊपर उछलकर भूमि पर जा लगे, उसका शरीर हाथ में पकड़े हुए शूल, और शरीर पर चुभे बाणों के साथ युगांत के चण्डमारुत के झोंके से काला मेघ विद्युत् और वज्र-सहित कटकर गिरा जैसे भूमि पर गिरा। ३१०२

विण्डलत् तिलङ्गु तिङ्ग ळिरण्डॊडु मित्तु वीशुङ्
गुण्डलत् तुणैह ळॊडुङ् गॊन्दळक् कुन्जिच् चॆङ्गेळ्च्
चण्डवॆङ् गदिरोन् शॆक्करल् तळलॊडु मरुवित् ताम
मण्डलम् विळुन्द दॆन्न विळुन्ददु तलैयुम् मण्मेल् 3104

विण् तलत्तु–आकाशतल में; इलङ्कु–विद्यमान, तिङ्कळ् इरण्टोडु–चन्द्रद्वय-समान; मित्तु वीचुम्–प्रकाश छिटकानेवाले; कुण्टलम् तुणैकळोटुम्–कुंडलों के जोड़े के साथ; कॊन्तळ कुन्चि–घुंघराले बाल के; चॆम् केळ्–लाल रंग की; चण्ट वॆम्–प्रखर, गरम; चॆक्कर् तळलोटुम्–लाल आग के साथ; मरुवि–मिलकर; कतिरोन् ताम मण्टलम्–सूर्य का प्रकाशमण्डल; मण् मेल्–भूमि पर; विळुन्ततु अॆन्न–गिरा हो जैसे; तलैयुम्–इन्द्रजित् का सिर भी; विळुन्ततु–गिरा। ३१०४

आकाश में रहनेवाले चन्द्रद्वय के समान प्रमाशमान कुंडलों के जोड़े और घुंघराले बालों की प्रचंड अग्नि के साथ इन्द्रजित् का सिर सूर्यमंडल अग्नि के साथ नीचे गिरा हो जैसे भूमि पर गिरा। ३१०४

उयिर्पुरत् तुड्र कालै युण्णिन्र वुणर्वि नोडुम्
शॆयिरुरु पॊरियु मन्दक् करणमुम् जिन्दु मापोल्
अयिलॆयिर् ररक्क रुळ्ळा राड्रल राहि यान्र
ॲयिलुडै यिलङ्गै नोक्कि यिरिन्दनर् पडैयुम् विट्टार् 3105

उयिर्–जीव (प्राण); पुरत्तु उड्र कालै–जब बाहर निकल जाते हैं तब; उळ् निन्र–भीतर स्थित; उणर्विनोटुम्–प्रज्ञा के साथ; चॆयिर् अऱ्र–निर्दोष; पॊरियुम्–इन्द्रिय और; अन्तक्करणमुम्–अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि); चिन्तुमा पोल्–जैसे अलग हो जाते हैं वैसे; अयिल् ॲयिरु अरक्कर् तीक्ष्णदंतुले राक्षस; उळ्ळार्–जो थे वे; आड्रलर् आकि–निर्बल होकर; पटैयुम् विट्टार्–हथियार डालकर; आन्र ॲयिल् उटै–विशाल प्राचीरों के अन्दर रहनेवाली; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; इरिन्तनर्–भागे। ३१०५

प्राणवियोग के अवसर पर जैसे प्रज्ञा, इन्द्रिय और अन्तःकरण अलग हो जाते हैं, वैसे ही इन्द्रजित् के मरने पर तीक्ष्ण दंतुले राक्षस शक्तिहीन

हुए अपने हथियारों को नीचे डालकर बड़े प्राचीरों की लंका की तरफ़ भाग गये। ३१०५

विल्लाळ रातार्क् कॅल्ला मेलवत् विळिड़ लोडुम्
शॅल्लादव् विलङ्गै वेन्दर् करशॅनक् कळित्त तेवर्
ॲल्लारुन् दूशु वीशि येट्रिड वार्त्त पोदु
कॉल्लाद विरदत् तार्दङ् गडवुळर् कूट्ट मॊत्तार् 3106

विल्लाळर् आतार्क्कु ॲल्लाम्–धनुष पर शासन करनेवाले सभी लोगों में; मेलवन्–श्रेष्ठ इन्द्रजित् के; विळितलोटुम्–मरते ही; अ–उस; इलङ्कै वेन्तर्कु–लंकाधिपति का; अरचु चॅल्लातु–राज्य नहीं चलेगा; ॲन–ऐसा; कळित्त–मुदित; तेवर् ॲल्लारुन्–सभी देवों ने; तूचु वीचि–वस्त्र उछालकर; एट्रिट–बहुत; आर्त्त पोतु–जब नारे लगाये; कॉल्लात विरतत्तार्तम्–श्रमणों के; कटवुळर् कूट्टम् ऑत्तार्–देवताओं के समूह के समान दिखे। ३१०६

धनुर्वीरों में सर्वश्रेष्ठ जो था उस इन्द्रजित् के मरते ही देव बहुत आनंदित हुए और यह कहते हुए कि 'आगे लंकाधिपति का राज्य नहीं चलेगा', अपने वस्त्र उतारकर उछालने लगे। तब वे श्रमण देवताओं के समान (अवस्त्र) दिखायी दिये। ३१०६

वरन्दर मुदल्वन् मऱ्ऱै मान्मऱिक् करत्तु वळ्ळल्
पुरन्दरन् मुदल्व राय नान्मऱैप् पुलवर् पारिल्
निरन्दरम् दोन्ऱि निन्ऱा ररुळिना निऱैन्द नॅञ्जर्
करन्दिल रवरै याक्कै कण्डन कुरङ्गुङ् गण्णाल् 3107

वरम् तर–वरदायी; मुतल्वन्–आदिदेव (विष्णु); मान् मऱि करत्तु–बालहिरणहस्त; वळ्ळल्–भगवान शिव; पुरन्तरन्–इन्द्र; मुतल्वराय–जिनके प्रमुख हैं; नान् मऱै–उन चतुर्वेदज्ञ; पुलवर्–देव; पारिल्–भूमि पर; निरन्तरम्–लगातार; तोन्ऱि निन्ऱार–प्रकट खड़े रहे; अरुळिनाल् निऱैन्त नॅञ्चर्–करुणा-भरे मन वाले; करन्तिलर्–अपने को छिपाया नहीं; अवरै–उनके; कुरङ्कुम्–वानरों ने भी; कण्णाल्–अपनी आँखों से; याक्कै कण्टनर्–शरीरों को देखा। ३१०७

वरद श्रीविष्णु, बालहिरणहस्त शिव, पुरंदर आदि जिनके प्रमुख हैं, वे चतुर्वेदज्ञ देव आकर भीड़ लगाये प्रगट रूप से खड़े हो गये। और विना अपना रूप छिपाये खड़े रहे। दयापूर्ण, उन्हें वानरों ने अपने पार्थिव आँखों से देखा। ३१०७

अड़न्दलै निन्ऱार्क् किल्लै यळिवॆन् मऱिञर् वार्त्तै
शिड़न्दवु शरङ्गळ् पायच् चिन्दिय शिरत्त वाहिप्
पड़न्दलै यदनिन् मऱ्ऱप् पावह वरक्कन् कॉल्ल
इड़न्दन कविह ळॅल्ला मॅळुन्दन विमैयो रेत्त 3108

वरक्कळ् पाय-बाणों के लगने से; कविकळ् ऍल्लाम्-सारे कपि; चिमृतिय विरत्त आकि-कटे सिरों के होकर; पड़नूतलै अततिल्-युद्धभूमि पर; अ पातक अरक्कन्-उस पातक राक्षस के; कॉलुल-मारने से; इऱन्तन-जो मरे, वे; इमैयोर् एतुल-देवों के प्रशंसा करते; ऍऴुन्तन-जी उठे; अऱम् तलै निऩ्ऱार्क्कु-धर्म में स्थिर रहनेवालों का; अऴिवु इलुलै-नाश नहीं; ऍनुम्-यह; अऱिञर् चार्तुतै-पंडितों का वचन; चिऱन्ततु-अर्थ-भरा हो गया। ३१०८

वे वानर जो उस पातक के बाणों के लगने से सिरों के कटने पर युद्ध-स्थल में मरे गिरे थे, अब देवों के आशीर्वाद से जी उठे। इससे यह विद्वानों का कथन अर्थवान हो गया कि धर्मवान का नाश नहीं होता। ३१०८

आक्कैयि ऩिऩ्ऱु वीऴ्न्द वरक्कऩ्ऱऩ् तलैयै यङ्गै
तूक्किऩऩ् तुळ्ळुङ् गूत्तऩ् वालिशेय् तूशु शॅल्ल
मेक्कुयर्न्दु दमरर् वॅळ्ळ मळ्ळिये तॊडर्न्दु वीशुम्
पूक्किळर् पन्दर् नीळ लनुमऩ्मे लिळवल् पोऩाऩ् 3109

आक्कैयिऩिऩ्ऱु-शरीर से; वीऴ्न्त-(कटकर) जो गिरा था; अरक्कन् तन् तलैयै-उस राक्षस-सिर को; तुळ्ळुम् कूत्तन्-उछल-कूद मचाते हुए; बालि चेय्-वालीपुत्र ने; अङ्कै तूक्किनन्-अपने सुन्दर हाथों से उठाया; तूचु चॅलुल-आगे की पंक्ति में गया; मेक्कु उयर्न्तु-उच्च स्थान में रहकर; अमरर् वॅळ्ळम्-देवों की भीड़ ने; अळ्ळिये-उठाकर; तॊटर्न्तु वीचुम्-जो निरंतर बरसाये; पू किळर्-उन फूलों के बने; पन्तर् नीळल्-उस वितान की छाँह में; अनुमन् मेल्-हनुमान पर; इळवल्-लघुराज; पोनान्-गये। ३१०९

इन्द्रजित् के शरीर से अलग होकर जो सिर गिरा उसको वालीपुत्र ने आनंद-नृत्य के साथ सुन्दर हाथ में उठा लिया। वह आगे की पंक्ति में जाने लगा। पीछे देवों के द्वारा बरसाये गये फूलों के वितान की छाँह में, हनुमान के कंधों पर आरूढ़ होकर लक्ष्मण गये। ३१०९

वीङ्गिय तोळऩ् तेय्न्दु मॅलिहिऩ्ऱ पऴियऩ् मीदुऱ्
ऱोङ्गिय मुडियऩ् तिङ्ग ळॊळिपॅऱु मुहत्त ऩुळ्ळाल्
वाङ्गिय तुयरऩ् मीप्पोय् वळर्हिऩ्ऱ पुहऴऩ् वऩ्दुऱ्
ऱोङ्गिय वुवहै याळ ऩिम्दिर ऩिऩैय शॊल्वाऩ् 3110

इन्तिरन्-इन्द्र; वीङ्किय तोळन्-फूले हुए कंधों वाला; तेय्न्तु-घिसकर; मॅलिकिन्ऱ-क्षीण होनेवाले; पऴियन्-अपयश का; मीतुऱ्ऱु ओङ्किय-उन्नत; मुटियन्-सिर वाला; तिङ्कळ् ऑळि-चन्द्रप्रभा; पॅऱु मुकत्तन्-भरे मुख वाला; उळ्ळाल् वाङ्किय-अन्दर दबे; तुयरन्-दुःख वाला; मी पोय्-ऊँचा बने; वळर्किन्ऱ पुकऴन्-यश वाला; वन्तुऱ्ऱु-आकर; ओङ्किय-बढ़े हुए; उवकैयाळन्-मोदवाला; इनैय-ऐसी बातें; चॉल्वान्-कहने लगा। ३११०

इन्द्र ने देखा तो उसके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। कंधे फूल

गये। अपयश क्षीण हो गया। उन्नत-सिर बने उसका मुख चंद्रप्रभा-से खिल गया। दुःख अन्दर ही अन्दर दब गया। यश बढ़ गया। उसने बढ़ते उत्साह के साथ आकर ये बातें कहीं। ३११०

ऍल्लिवान् मदियि नुऱ्ऱ करैयॅन्न याण्डु मॅन्ऱोळ्
पुल्लिय वडुवुम् बोहा दॅन्ऱहम् बुळुङ्गि नैन्दॅन्
विल्लियर् तिलहन् वन्दु तुडैत्तुऱ वॅम्मै तीर्न्दॅन्
शॅल्वमुम् बॅऱुदऱ् कुण्डो कुऱैयिनिच् चिऱुमै यादो 3111

ऍल्लि-रात में; वान् मतियिन्-आकाश के चन्द्र में; उऱ्ऱ-लगे; करै अन्न-कलंक के समान; याण्डुम्-हमेशा; ऍन् तोळ् पुल्लिय-मेरे कंधों पर लगे; वडुवुम्-दाग़; पोकादु-दूर नहीं होगा; ऍन्ऱु-ऐसा सोचकर; अकम् पुळुङ्कि-भीतर से क्षुब्ध होकर; नैन्तेन्-घुल रहा था; विल्लियर् तिलकन्-धनुर्धरतिलक के; वन्तु-आकर; तुटैत्तुऱ-पोंछने से; वॅम्मै तीर्न्तेन्-गरम दुःख से छूटा; शॅल्वमुम्-धन; पॅऱुतऱ्कु उण्टो-पाने (दूसरा) है क्या; इनि-आगे; कुऱै चिऱुमै-अभाव की क्षुद्रता; यातु-क्या। ३१११

'मेरे कंधों में रात में प्रकट चंद्र के कलंक के समान दाग़ जो लगे थे, वे नहीं मिटेंगे' —यह सोचकर मैं घुल रहा था। धनुर्धरतिलक लक्ष्मण ने उसे पोंछ दिया। अब मेरा संताप दूर हो गया। आगे पाने के लिए कौन सा श्रेष्ठ धन है? अब कौन दीनता व अल्पता है? । ३१११

तॅन्ऱलै याळि तॊट्टोन् शेयरुळ् शिऱुवन् शॅम्मल्
वॅन्ऱलैत् तॅन्नै यार्त्तुप् पोर्त्तॊळिल् कडन्द वॅय्योन्
तन्ऱलै यॅडुप्पक् कण्डु तानवर् तलैहळ् शाय
ऍन्ऱलै यॅडुक्क लानेन् ऩिनिक्कुडै यॅडुप्पे ऩॆन्ऱान् 3112

ऍन्नै वॅन्ऱु-मुझे जीतकर; अलैत्तु-त्रस्त करके; आर्त्तु-नारे लगाकर; पोर्त्तॊळिल् कटन्त-युद्ध में जो जीता; वॅय्योन् तन्-उस क्रूर के; तलै-सिर को; तॅन् तलै-मनोरम तल वाले; आळि-समुद्र को; तॊट्टोन् चेय्-जिन्होंने खोदा, उन सगरपुत्रों के वंशज; अरुळ्-उन श्रीराम की कृपा-प्राप्त; चिऱुवन्-युवा; शॅम्मल्-उत्कृष्ट गुणों वाला (अंगद); ऍटुप्प-उठाये रखा है, यह; कण्टु-देखकर; तानवर् तलैकळ्-दानवों के सिरों के; चाय-झुके होते; ऍन् तलै-अपने सिर को; ऍटुक्कलानेन्-उठाने लगा; इनि-आगे; कुटै ऍटुप्पेन्-विजयछत्र तान लूंगा। ३११२

"उसने मुझे परास्त किया और बहुत सताया। कोलाहल मचाकर युद्ध में जो जीता उस क्रूर के सिर को मनोहर तल वाले समुद्र के खननकारी सगरपुत्रवंशज श्रीराम की कृपा के पात्र युवा, श्रेष्ठ अंगद हाथ में ले आ रहा है। उसे देखकर दानवों के सिर अवनत होते हैं। मेरा सिर उन्नत हो रहा है। आगे विजयछत्र भी तान लूंगा।" देवेन्द्र यों बोला। ३११२

वरदत्पोय् मऴुहा नित्र मनत्तिनन् मायत् तोनैच्
चरदप्पोर् वॅन्ऱु मीळुन् दरुममे ताङ्ग वॅन्पान्
विरदम्बूण् डुयिरि नोडुन् दन्तुडै मीट्चि नोक्कुम्
वरदन्बोन् ड्रिरुन्दान् ऱम्बि वरुहिन्ऱ परिशॆप् पार्त्तान् 3113

वरतन्–वरद (लक्ष्मण) के; पोय्–जाने के बाद; मऴुका नित्र–दुःखी रहे; मनत्तिनन्–मन वाले; तरुममे ताङ्क–धर्म के धारण करने से; वरतम्–निश्चय; मायत्तोनै–मायावी को; पोर् वॅन्ऱु–युद्ध में जीतकर; मीळुम्–लौटेगा; ऍन्पान्–कहते हुए जो रहे; विरतम् पूण्टु–(वे श्रीराम) व्रत पालन करते हुए; उयिरिनोडुम्–जीवन धारण करके; तन्तुटैय–उनके; मीट्चि–(नगर-) प्रत्यागमन की; नोक्कुम्–प्रतीक्षा करनेवाले; परतन् पोन्ऱु–भरत के समान; इरुन्तान्–रहे; तम्पि–अनुज के; वरुकिन्ऱ परिचै–लौट आने का हाल; पार्त्तान्–देखा। ३११३

इधर वरद लक्ष्मण के युद्ध में जाने के बाद श्रीराम बहुत व्याकुलमन हो गये थे। 'धर्म के बल से लक्ष्मण अवश्य मायावी इन्द्रजित् को मारकर लौट आयगा' —ऐसा कहते हुए व्रतरत होकर श्रीराम किसी विध जीवन धारण कर उनके प्रत्यागमन की प्रतीक्षा में, अयोध्या में रहनेवाले भरत की-सी स्थिति में रह रहे थे। अब उन्होंने अपने भाई को विजयी होकर लौटते हुए देखा। ३११३

वन्बुलङ् गडन्दु मीळुन् दम्बिमेल् वैत्त मालैत्
तन्बुल नयन मॅत्तुम् दामरै शोरियुन् दारै
अन्बुहॊ लळुह णीर्हॊ लानन्द वारि येहॊल्
ऍन्बुह ळुरुहिच् चोरुङ् गरुणैहॊ लियार दोर्वार् 3114

वन् पुलम्–शत्रुस्थान में; कटन्तु–जीतकर; मीळुम्–लौट आनेवाले; तम्पि मेल्–अनुज पर; वैत्त–रखे; तन् पुलन्–अपने इन्द्रिय; नयनम् ऍत्तुम् तामरै–नेत्र-कमल; मालै चोरियुम् तारै–माला के रूप में जो धारें बहा रहे थे; अन्पु कॊल्–वे प्रेम (के प्रतीक) हैं; अऴु कणीर् कॊल्–रुदनाश्रु हैं; आनन्त वारिये–आनंद-बाष्प ही; कॊल्–क्या; ऍन्पुकळ्–हड्डियाँ; उरुकि–पिघलकर; चोरुम्–तब जो बहती है; करुणै कॊल्–वह करुणा है क्या; अतु–वह; यार् ओर्वार्–कौन जाने। ३११४

अब युद्धस्थल में विजय पाकर जो लौट रहे थे, उन अपने अनुज पर रखे प्रेम के कारण उनके नेत्रकमलों से माला के रूप में अश्रुधारा बहने लगी। वह क्या प्रेम का ही फल थी? या वे रुदन के आँसू हैं? या आनन्दवाष्प ही हैं? या करुणा है जो हड्डियों को पिघलाकर बह रही है? वह कौन जाने? । ३११४

विळुन्दळि कण्णि नीरु मुवहैयुङ् गळिप्पुम् वीङ्ग
ऍळुन्दॅदिर् वन्द वीर नॆणैयडि मुन्न रिट्टान्
कॊळुन्दॅळुज् जॅक्कर् कर्रै वॅयिल्विड वॅयिऱ्ऱिन् कूट्टम्
अळुन्दुरक् कडित्त पेळ्वाय्त् तलैयडि युऱ्ऱोन् ऱाह 3115

विऴुन्तु अऴि–गिरकर बहनेवाले; **कण्णिऩ् नीरम्**–नेत्राश्रु व; **उवकैयुम्**–और आनन्द; **कळिप्पुम्**–उत्साह; **वीङ्क**–के बढ़ते; **ऍऴुन्तु**–उठकर; **ऍतिर्वन्त वीरऩ्**–सामने (जो) आये (उन) वीर के; **इणै अटि मुन्ऩर्**–चरणद्वय के सामने; **कॊऴुन्तु ऍऴुम्**–ज्वाला जिनसे उठती हो, उन; **चॅक्कर् कुऴ्ऱै**–लाल लटों के; **वॅयिल् विट**–धूप-से छिटकाते; **ऍयिऱ्ऱिऩ् कूट्टम्**–दंतपंक्ति; **अऴुन्तुऱ कटित्तल**–जिसमें गहरे काट रही थी; **पेऴ् वाय्**–उस विवृत मुख वाले; **तलै**–सिर को; **अटियुऱै ऑत्ऱु आक**–चरण में भेंट के रूप में; **इट्टाऩ्**–(अंगद ने) समर्पित किया। ३११५

बहते अश्रुजल बढ़े; आनंद बढ़ा और उत्साह प्रवृद्ध हुआ। श्रीराम उठे और भाई के समक्ष आये। उनके दोनों चरणों के सामने अंगद ने इन्द्रजित् के सिर को चरण-भेंट के रूप में समर्पित किया। उस सिर के लाल केश की लटें अग्नि-ज्वालाओं के समान लाल प्रकाश छोड़ रही थीं। दाँत खूब सटे हुए थे मानो काट रहे हों। मुख विवृत था। ३११५

तलैयिऩै नोक्कुन् दम्बि कॊऱ्ऱवॆ तऴीइय पॊऱ्ऱोण्
मलैयिऩै नोक्कुम् निऩ्ऱ मारुदि वलियै नोक्कुम्
शिलैयिऩै नोक्कुन् देवर् शॅय्हैयै नोक्कुम् शॅय्द
कॊलैयिऩै नोक्कु मॊऩ्ऱु मुरैत्तिलऩ् कळिप्पुक् कॊण्डान् 3116

तलैयिऩै नोक्कुम्–सिर को देखते; **तम्पि**–अनुज के; **कॊऱ्ऱवॆ तऴीइय**–विजयश्री से आलिंगित; **पॊन् तोळ् मलैयिऩै**–सुन्दर कंधों रूपी पर्वत को; **नोक्कुम्**–निहारते; **निऩ्ऱ**–सामने स्थित; **मारुति**–हनुमान के; **वलियै**–शरीर-बल को; **नोक्कुम्**–देखते; **चिलैयिऩै नोक्कुम्**–(लक्ष्मण के) धनु पर दृष्टि डालते; **तेवर् चॅय्कैयै नोक्कुम्**–देवों के कार्य पर नजर चलाते; **चॅय्त कॊलियिऩै**–कृत वधकार्य पर; **नोक्कुम्**–सोचते; **ऑऩ्ऱुम् उरैत्तिलऩ्**–कुछ नहीं बोले; **कळिप्पु कॊण्टाऩ्**–मुदित हुए। ३११६

(श्रीराम भावविमग्न हो गये।) इन्द्रजित् के सिर को देखते और अपने अनुज के विजयश्री से आलिंगित कंधों के पर्वतों को देखते। सामने स्थित मारुति के सुघटित शरीर को देखते; फिर लक्ष्मण के धनु को देखते। देवों के कार्यों के बारे में सोचते और लक्ष्मण के वध-कार्य पर विचार करते। पर वे कुछ नहीं बोले और बहुत ही मुदित रहे। ३११६

काळमे हत्तैच् चॅक्कर् कलन्दॆऩक् करिय कुऩ्ऱम्
नाळवॅयिऱ् परन्द दॆऩ्ऩ नम्बितऩ् तम्बि मार्बिल्
तोळिऩ्मे लुदिरच् चॅङ्गेऴ्च् चुडुवदऩ् ऩुरुविल् तोऩ्ऱत्
ताळिऩ्मेल् वणङ्गि ऩाऩैत् तऴुविऩऩ् तनित्तॊऩ् ऱिल्लाऩ् 3117

तनित्तु ऑऩ्ऱु–(लक्ष्मण के अलावा) अलग कुछ; **इल्लाऩ्**–जिनके कुछ नहीं था; **नम्पि**–उन भगवान ने; **काळ मेकत्तै**–काले मेघ से; **चॅक्कर् कलन्तॆऩ**–लाल गगन मिला जैसे; **करिय कुऩ्ऱम्**–काले पर्वत पर; **नाळ् वॅयिल्**–उदयकालीन धूप; **परन्ततु**–फैली जैसे; **तऩ् तम्पि**–अपने अनुज के; **मार्पिलुम्**–वक्ष पर;

तोळिन् मेल्–और कंधों पर के; उतिर–रुधिर-सह; चॅम् केळ्–लाल व्रणों के; चुवडु–चिह्न; तन् उरुविल् तोत्तूड़–अपने शरीर पर लगवाते हुए; ताळिन् मेल् वणङ्कितात्तै–अपने चरणों में नमस्कार करनेवाले को; तऴुवितन्–गले लगा लिया। ३११७

तब लक्ष्मण ने श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया और लक्ष्मण के अनन्यप्रेमी भगवान श्रीराम ने अपने अनुज का आलिंगन कर लिया। वह दृश्य कैसा था ? काले मेघ से लाल गगन मिला हो ऐसा था; काले पर्वत पर उदयकालीन धूप फैली हो, ऐसा था। आलिंगन से श्रीराम के वक्ष पर और कंधों पर लक्ष्मण के रुधिर-सहित व्रण के निशान लग गये। ३११७

तूक्किय तूणि वाङ्गित् तोळॊडु मार्बैच् चुऱ्ऱि
वीक्किय कवश पाश मॊळित्तदु विरैवि नीक्कित्
ताक्किय पहळिक् कूर्वाय् तडिन्दपुण् तऴुम्बु मिन्ऱिप्
पोक्किनन् तऴुविप् पल्हाल् पॊऱ्ऱडन् दोळि नॊऱ्ऱि 3118

तूक्किय–जो धारण कर रहे थे; तूणि वाङ्कि–उस तूणीर को हटाकर; तोळॊडु मार्पै–गले और वक्ष को; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर जो बाँधा गया था उस; कवच पाचम् ऒऴित्तु–कवच-पाश को खोलकर; अतु–उस कवच को; विरैवित् नीक्कि–जल्दी-जल्दी हटाकर; ताक्किय–शरीर पर लगे; पकळि–बाणों के; कूर् वाय्–तीक्ष्ण नोकों ने; तटिन्त–जो बनाये थे; पुण् तऴुम्पुम् इन्ऱि–व्रणों के निशान को भी दूर करते हुए; पल् काल् तऴुवि–अनेक बार आलिंगन करके; पॊन् तटम् तोळिन्–मनोरम विशाल भुजाओं से; ऒऱ्ऱि–सेंककर; पोक्किनन्–दूर किया। ३११८

फिर उन्होंने अपने भाई के शरीर से उनसे धृत तूणीर को उतारा। कंधों पर और छाती पर लपेटकर बाँधे गये कवच के बंधन खोलकर कवच को अलग किया। शरीर पर लगे अस्त्रों की नोकों से बने व्रणों के दाग भी दूर करते हुए बार-बार आलिंगन क्या किया, मानो अपने विशाल मनोरम भुजाओं से सेंककर व्रण और दर्द को दूर किया। ३११८

आडवर् तिलह निन्ना लन्ऱिह लनुम नॆन्नुम्
शेडना लन्ऱु वेऱोर् दॆय्वत्तिन् शिऱप्पु मन्ऱु
वीडणन् तन्द वॆन्ऱि यीदॆन्न विळम्बि मॆय्म्मै
एडवि ऴलङ्गल् मार्ब निरुन्दन निन्दि निप्पाल् 3119

एडु अविऴ्–जिसमें पुष्पदल विकसित हैं; मार्पन्–ऐसे वक्ष वाले श्रीराम ने; आटवर् तिलक–पुरुषतिलक; निन्ताल् अन्ऱु–तुम्हारे कारण नहीं; इकल्–पराक्रमी; अनुमन् ऎन्नुम्–हनुमान नाम के; चेटनाल् अन्ऱु–श्रेष्ठ से भी नहीं; वेऱु ओर्–अन्य किसी; तॆय्वत्तिन् चिऱप्पुम् अन्ऱु–देवता की विशेषता से नहीं; ईतु–यह; वीटणन् मॆय्म्मै–विभीषण की ईमानदारी की; तन्त वॆन्ऱि–दी हुई विजय है; ऎन

विळम्पि–ऐसा कहकर; इतितिन् इरुन्ततन्–सुख से रहा; इप्पाल्–इधर यह हालत रही। ३११९

श्रीराम ने विभीषण की यों प्रशंसा की। लक्ष्मण! हे पुरुषतिलक! इस विजय का गौरव तुम्हें नहीं मिलेगा। बलवान हनुमान नामक उत्तम व्यक्ति का भी इसमें भाग नहीं। किसी और देवता की विशेषता भी इसका हेतु नहीं रह सकती। असल में यह विभीषण की ईमानदारी के कारण मिली विजय है। श्रीराम बड़े सुखी रहे। इधर का यह वृत्तांत है। ३११९

28. इरावणन् शोहप् पडलम् (रावण-शोक पटल)

ओद रोदन वेलै कडन्दुळार्, पूद रोदरम् बुक्कॅनप् पोर्त्तिळि
शीद रोदक् कुरुदित् तिरैयॊरीइत्, तूद रोडिनर् तादैयिड् चॊल्लुवान् 3120

तूतर्–(रावण के) दूत; तातैयिन्–धाता के पास; चॊल्लुवान्–कहने हेतु; ओत–समुद्रगर्जन-सम; रोतन वेलै–रुदन-सागर को; कटन्तुळार्–पार कर; पोर्त्तु–आवृत करके; इऴि–बहनेवाले; चीत–शीतल; रोतम्–तीरों वाले; कुरुति तिरै–रक्त की लहरों को; ऒरीइ–लाँघकर; पूतर् उतरम्–भूधर (मेरु) के उदर में; पुक्कॆन–घुसे जैसे; ओटितर्–लंका के अंदर दौड़े। ३१२०

उधर रावण के दूत अपने धाता से वृत्तांत कहने के वास्ते समुद्रगर्जन-सदृश रुदनस्वर-सागर, और भूमि को आवृत रहनेवाले शीतल अवरोधन-सहित रहे रक्त-सागर को पार कर भूधर मेरु के उदर में घुसते-से गोद्वार में घुसकर लंका में भागे। ३१२०

अन्ऱि लङ्गरुम् बेडैह ळामॆन, मुन्ऱि लॆङ्गु मरक्कियर् मॊय्त्तळ
इन्ऱि लङ्गै यऴिन्ददॆन् ऱेङ्गुवार्, शॆन्ऱि लङ्गैयिड् ऱादयैच् चेर्न्दुळार् 3121

अरक्कियर्–राक्षसरमणियाँ; अन्ऱिल्–'अन्ऱिल्' नाम के पक्षी की; अम्–सुन्दर; करुम् पेटैकळ् आम् ऎन–काली मादाओं के समान; मुन्ऱिल् ऎङ्कुम्–सभी आँगनों में; मॊय्त्तु–भीड़ लगाकर; अऴ–रोयीं; इन्ऱु–आज; इलङ्कै अऴिन्ततु–लंका मिट गयी; ऎन्ऱु ऐङ्कुवार्–ऐसा जो दुःखी हुए वे दूत; अयिल् इलङ्कु–शक्ति जिसके हाथ में थी उस; तातैयै–धाता रावण के पास; चॆन्ऱु चेर्न्तुळार्–जा पहुँचे। ३१२१

राक्षसियाँ 'अन्ऱिल्' की काली मादा पक्षियों की तरह यत्र-तत्र आँगनों में भीड़ लगाकर बैठीं और रुदन करने लगीं, तो दूत दुःखी हो गये कि आज लंका मिटेगी। वे शक्तिधारी धाता रावण के पास जा पहुँचे। ३१२१

पल्लुम् वायु मतमुन्दम् बादमुम्, नल्लु यिर्प्पॊरै योडु नडुङ्गुवार्
इल्लै यायिन नुन्महन् निन्ऱॆनच्, चॊल्लि नार्बयन् जुऱ्ऱत् तुळङ्गुवार् 3122

पयम् चुट्र्-डर के घरे; तुळक्कुवार्-काँपते हुए; तम् पल्लुम्-अपने दाँतों; वायुम्-मुख; मनमुम्-मन; पातमुम्-पैरों के; नल्-अच्छे; उयिर्प्पोर्रैयोडु-जीवधारी शरीरों के साथ; नडुक्कुवार्-काँपनेवाले दूतों ने; इन्रु-आज; उन् मकन् इल्लै-आपका पुत्र (जीवित) नहीं है; ॲन-ऐसा; चॊल्लिनार्-कहा। ३१२२

वे पूर्णरूप से भयावृत थे। उनके दाँत, मन, पैर और शरीर सब काँप रहे थे। उन्होंने रावण से जाकर निवेदन किया कि आज आपका पुत्र नहीं रह गया है। ३१२२

माडि रुन्दवर् वानवर् मादरार्, आडल् नुण्णिडै यार्मट्रु मियावरुम्
वीडु मिन्रिव् वुलहॆन्न विम्मुवार्, ओडि यॆङ्गणुञ् जिन्दि यॊळित्तनर् 3123

माटिरुन्तवर्-पास जो रहीं; वानवर् मातरार्-उन देवस्त्रियों ने; आटल् नुण्णिटैयार्-नाचनेवाली क्षीण कमर वालियों ने; मट्रुम् यावरुम्-अन्य सभी ने; इ उलकु-इस लोक को; इन्रु वीटुम्-आज छोड़ देंगे; ॲन-सोचकर; विम्मुवार्-सिसककर; ॲङ्कणुम् ओटि-सर्वत्र दौड़कर; चिन्ति-तितर-बितर हो; ऒळित्तनर्-अपने को छिपा लिया। ३१२३

(उसके कोप से संभाव्य नतीजे से डरकर) पतली कमर वाली नर्तकी अप्सराओं और अन्यों ने भी 'आज जीवन त्यागना पड़ेगा' इस विचार से सिसकते हुए सर्वत्र तितर-बितर भागकर अपने को छिपा लिया। ३१२३

शुडर्क्कॊ ळुम्बुहै तीविळि तूण्डिडत्, तडट्रु वाळुरु वित्तरु तूदरै
मिडट्रु वीश लुट्राविळुन् दानरो, कडर्पॆ रुन्दिरै पोर्करञ् जोरवे 3124

विळि-आँखों ने; चुटर्-प्रकाश के साथ; कॊळुम् पुकै-घने धुएँ के साथ; ती-आग; तूण्टिट-निकाली; वाळ्-तलवार; तटरु-म्यान से; उरुवि-निकालकर; तरु तूतरै-समाचार देने आये दूतों को; कटल् पॊरु-समुद्र में टकराने वाली; तिरै पोल्-तरंगों के समान; करम् चोरवे-हाथों के थकित होते; मिडट्रु-उनके कण्ठों पर; वीचल् उट्रा-वार कर; विळुन्तान्-(स्वयं नीचे) गिरा। ३१२४

रावण की आँखों से धुएँ के साथ आग निकल आयी। उसने म्यान से तलवार निकाली। दूतों के गले काट दिये। उसके समुद्रतरंगों के समान हाथ थक गये और वह नीचे गिर गया। ३१२४

वाय्प्पि रन्दु मुयिर्प्पिन् वळर्न्दुम्वान्
काय्प्पु रुन्दोरुङ् गण्णिडैक् कान्दियुम्
पोय्प् पिरङ्गिव् वुलहैप् पॊदियुम्वॆन्
दीप्पि रन्दुळ विन्रॆन्न चॆय्ददाल् 3125

पिरङ्कु-विद्यमान; इ उलकै-इस लोक को; पॊतियुम्-ग्रसनेवाली; वॆम् ती-दारुण अग्नि; वाय् पिरन्तुम्-मुख में पैदा हुई; उयिर्प्पिन्-और श्वास से; वळर्न्तुम्-बढ़ी; वान्-बड़ी; काय्प्पु उरुम् तोरुम्-प्रकट होती हर बार; कण्

इडै–आँखों में; कानृतियुम्–धधकीं; इनृरु पोय् पिऱनृतुळतु–आग जाकर पैदा हुई; ॲंत–ऐसा; चॅय्ततु–(उसने) कार्य किया। ३१२५

लोकग्राही क्रूर आग उसके मुख से पैदा हुई, श्वास में पली घृणा के प्रकट होते-होते आँखों में बढ़ी और इस तरह आज ही जन्म ले चुकी हो, ऐसा काम करने लगी। ३१२५

पडम्बि रङ्गिय पान्दळुम् वारुम्बेर्न्
दिडम्बि रङ्गि वलम्बॅयर्न् दीडुर
उडम्बि रङ्गिक् किडन्दुळैत् तोङ्गुती
विडम्बि रन्द कडलॅन वॅम्बिनान् 3126

पटम् पिऱङ्किय–फनों से शोभित; पानृतळुम्–आदिशेषनाग और; पारुम्–भूमि; पेर्नृतु–विस्थापित हो; इटम् पॅयर्नृतु–बायीं तरफ़ बिगड़कर; वलम् पॅयर्नृतु–दायीं तरफ़ अस्त-व्यस्त होकर; ईटु उऱ–संकट में पड़े; उटम्पु–शरीर भी; इऱङ्कि–आसन से नीचे खिसककर; किटनृतु–पड़ा रहकर; उळैतृतु–कष्ट सह कर; ओङ्कु ती–बढ़ती आग-सा; विटम् पिऱनृत–विष का जन्मस्थान; कटल् ॲंत–समुद्र के समान; वॅम्पितान्–उत्पन्न हुआ। ३१२६

फनों से शोभित अनंतनाग तथा भूमि की भी स्थिति बिगड़ी। भूमि की बायी ओर बिगड़ी; फिर दायीं ओर बिगड़ी। वह संकटमें पड़ गयी। रावण भी आसन से नीचे खिसका, भूमि पर गिरा और कष्ट पाने लगा। तब वह वर्धनशील अग्नि-तुल्य विष के जन्मस्थान समुद्र के समान संतप्त हुआ। ३१२६

तिरुहु वॅञ्जिनत् तीनिहर् शीऱ्ऱमुम्
पॅरुहु कादलुन् दुन्पुम् बिऱङ्गिड
इरुब दॅन्नु मॅरिपुरै कण्गळुम्
उरुहु शॅम्बॅन वोडिय वूऱ्ऱुनीर् 3127

तिरुकु वॅम् चितम्–ऐंठे हुए और तापक क्रोध रूपी; ती निकर्–अग्नितुल्य; चीऱ्ऱमुम्–कोप और; पॅरुकु कातलुम्–(पुत्र पर) बढ़नेवाला स्नेह; तुन्पुम्–(उसकी मृत्यु से उत्पन्न) दुःख, इनके; पिऱङ्किट–बढ़ने से; इरुपतु–बीस; ॲंतृनुम्–कहलानेवाले; ॲरि पुरै–आग के समान; कण्कळुम्–नेत्रों से; उरुकु चॅम्पु ॲंत–पिघलते ताँबे के समान; ऊऱ्ऱु नीर्–स्रवनेवाला जल; ओटियतु–बहा। ३१२७

तब उसके मन में आग-सम क्रोध ऐंठ उठा। साथ-साथ पुत्र का प्रेम, और पुत्रवियोगजनित दुःख भी भर उठे। इसलिए बीसों अग्नि-सदृश नेत्रों से पिघले ताँबे के समान आँसू निकलकर बहा। ३१२७

कडितृत पऱ्कुलङ् गऱ्कुलङ् गण्णुऱ
इडितृत कालत् तुरुमॅन वॅङ्गणुम्

अडित्त कैत्तलत् ताऱ्ऱरै याळिनीर्
वॆडित्त वाय्दॊऱुम् पॊङ्गिन मीच्चॆल 3128

कऱ्कुलम्–पर्वतराशियों को; कण् अऱ–गाँठें तोड़ते हुए; इटित्त–जो फटता; कालत्तु उरुम् अॆन–उस वर्षाकाल के वज्रों के समान; पऱ्कुलम्–दाँतों की पंक्तियाँ; कटित्त–काटी गयीं; तरै अटित्त–धरती पर पीटते; कै तलत्ताल्–करतलों से; ऍङ्कणुम् वॆटित्त–सर्वत्र हो उठे; वाय् तॊऱुम्–गड्ढों में; आळि नीर्–समुद्रजल; मी चॆल–ऊपर जाय ऐसा; पॊङ्किन–उभर उठा। ३१२८

उसने दाँत पीसे तो पर्वतकुलों को चूर करते हुए गिरनेवाले वर्षाकाल के वज्रों के समान शब्द हुआ। धरती को उसने अपने हाथों से पीटा, जिससे सर्वत्र गड्ढे बन गये और उनसे समुद्रजल उभर आया। ३१२८

✽ मैन्द वॊवॆन्नुम् मामह नॆयॆनुम्, ऍन्दै योवॆन् मॆन्नुयि रॆयॆनुम्
उन्दि लेनै नानुळॆ नॆयॆनुम्, वॆन्द पुण्णिडै वेल्पट्ट वॆम्मैयान् 3129

वॆन्त पुण्णिटै–पके व्रण में; वेल् पटट–भाला घुसा जैसे; वॆम्मैयान्–दुःख में रहनेवाले ने; मैन्त वो–हे पुत्र; ऍन्नुम्–चिल्लाया; मा मकते–महान पुत्र; ऍन्नुम्–पुकारता; ऍन्तैयो ऍन्नुम्–मेरे तात कहता; ऍन् उयिरे ऍन्नुम्–मेरे प्राण चिल्लाता; उन्नै–तुम्हें; उन्तिनेन्–भेजकर; नान् उळॆन्–मैं रह गया ओफ़; ऍन्नुम्–कहता। ३१२९

पके व्रण में भाला घुसे तो जैसी स्थिति होगी, उस स्थिति में रहा रावण चिल्लाने लगा। वह पुकारता— हे मेरे पुत्र! महान पुत्र! मेरे तात! मेरे प्राण! तुम्हें भिजवाकर मैं रह गया, हाय! वह रो उठा। ३१२९

अरन्दै वानव रार्त्तन रोवॆन्नुम्, बुरन्द रन्पहै पोयिऱ्ऱन् ऱोवॆन्नुम्
करन्दै शूडियुम् वाऱ्कडऱ् कळ्वनुम्, निरन्द रम्बहै नीङ्गिन रोवॆन्नुम् 3130

अरन्तै वानवर्–दुःखी देव; आर्त्तनरो–अब आनन्द मनाते हैं क्या; ऍन्नुम्–कहता; पुरन्तरन्–पुरंदर का; पकै–शत्रु; पोयिऱ्ऱु अन्ऱो–दूर हो गया न; ऍन्नुम्–कहता; करन्तै चूटियुम्–'करंदै' (नामक) पुष्पधारी (शिव) भी; पाल् कटल्–क्षीरसागरवासी; कळ्वनुम्–चोर (श्रीविष्णु) भी; निरन्तरम्–सदा के लिए; पकै नीङ्किनरो–शत्रुविहीन हो गये न; ऍन्नुम्–कहता। ३१३०

रावण आगे विलाप करने लगा। दुःखी जो रहे वे देव अब आनंद का शोर करते है न? पुरंदर का शत्रु चला गया न! 'करंदै' पुष्पधारी शिव और क्षीरसागरवासी चोर विष्णु अरि-विमुक्त हो गये न?। ३१३०

नीऱु पूशियुम् नेमियुम् नीङ्गिन्नार्, माऱ्ऱिल् कुन्ऱॊडु वेलै मऱैन्दुळार्
ऊऱु नीङ्गिन रायुव णत्तिनो, डेऱु मेऱि युलावुव रॆन्नुमाल् 3131

नीऱु पूचियुम्–भभूतधारी और; नेमियुम्–चक्रधारी; माऱ्ऱिल्–अचल; कुन्ऱॊडु–पर्वत और; वेलै–समुद्र में; मऱैन्तुळार्–छिपे हैं; नीङ्किनार्–दूर रहे; ऊऱु

नीङ्कित्तराय्–(अब) संकट से मुक्त होकर; एरुम्–ऋषभ पर और; उवणत्तित्तोटु–गरुड़ पर; एरि उलावुवार्–सवार हो सैर करेंगे; ऍन्ऱुन्–यह कहता। ३१३१

"भस्मधारी (शिव) और चक्रधर (विष्णु) क्रमशः अचल कैलास पर्वत और (क्षीर-) सागर में छिपे रहे। अब संकट से मुक्त होकर वे क्रमशः ऋषभ और गरुड़ पर सवार होकर बेधड़क सैर करेंगे न!" रावण ऐसा कहता। ३१३१

वान मानमुम् वानव रीट्टमुम्, पोन पोन तिशैयिडम् बुक्कन
तान मानवै शार्हिल शार्हुव, ऊन मानिडर वॅन्ऱिकोण् डोवॅनुम् 3132

वान मानमुम्–आकाशचारी यान और; वानवर् ईट्टमुम्–देवों के समूह; पोन पोन तिचैयिटम्–जहाँ-जहाँ गये उन दिशाओं में; पुक्कन–घुसे; तानम् आनवै–अपने-अपने स्थान जो हैं उनमें; चार्किल–न पहुँचे; ऊनम्–हीन दीन; मानिटर्–नर; वॅन्ऱि कॊण्टोम् ऍन–विजय पा गये, कहकर; चार्कुव–अपने-अपने स्थान पहुँचनेवाले बन गये। ३१३२

हे इन्द्रजित्! तुमसे डरकर जो आकाशचारी यानों और देवों के समूह जहाँ कहीं दिशाओं में भागे और अब तक अपने स्थानों में जा नहीं पाये। पर अब स्थिति यह हो गयी है कि नर विजयगाथा लेकर अपने स्थानों में पहुँच जायँगे! । ३१३२

कॅट्ट तूदर् किळत्तिन वारॉरु, कट्ट मानिडन् कॊल्लवॅन् कादलन्
पट्टॊ ळिन्दन ॲयॅनुम् बन्मुरै, विट्ट ळैक्कु मुळैक्कुम् बॅदुम्बुमाल् 3133

कॅट्ट तूतर्–इन बुरे दूतों ने; किळत्तिनवारु–जो बतलाया, उसके अनुसार; कट्ट–कष्टदायी; ऒरु मानिटन् कॊल्ल–एक नर के मारे; ऍन् कातलन्–मेरा प्यारा पुत्र; पट्टु ऒळिन्तनने–मर मिटा, हे; ऍनुम्–कहता; पन् मुरै–बार-बार; विट्टु–मुख खोलकर; अळैक्कुम्–नाम लेकर पुकारता; उळैक्कुम्–वेदना का अनुभव करता; वॅतुम्पुम्–संतप्त होता। ३१३३

दूतों के कथन के अनुसार कष्टदायी नर के मारे मेरा प्यारा पुत्र मर गया—हाय! रावण यों कहता और बार-बार नाम ले पुकारता! पीड़ा का अनुभव करता और संतप्त होता। ३१३३

***ऍळुमि रुक्कुम् नडक्कु मिरक्कमुर्**
उळुम रऱ्ऱु मयर्क्कुम् वियर्क्कुम्बोय्
विळुम्वि ळिक्कु मुहिळ्क्कुन्दन् सेनियाल्
उळुनि लत्तै युरुळुम् बुरळुमाल् 3134

ऍळुम्–उठता; इरुक्कुम्–(धरती पर) बैठता; नटक्कुम्–चलता; इरक्कम् उऱ्ऱु–तरसकर; अळुम्–रोता; अरऱ्ऱुम्–विलाप करता; अयर्क्कुम्–थक जाता; वियर्क्कुम्–स्वेद निकलता; पोय् विळुम्–जाकर गिरता; विळिक्कुम्–आँखें

खोलता; मुकिळ्क्कुम्–बन्द करता; तन् मेऩियाल्–अपने शरीर से; निलत्तै उळुम्–भूमि को जोतता; उरुळुम्–लोटता; पुरळुम्–लुढ़कता। ३१३४

रावण कभी उठता, फिर बैठ जाता। कुछ दूर चलता और तरस कर रोता। विलाप करता और थक जाता। कुछ दूर चलकर नीचे भूमि पर गिर जाता। कभी आँखों को खोलता, कभी उन्हें बन्द कर लेता। अपने शरीर को ऐसा पटकता कि लगता कि वह भूमि को जोत रहा हो! लोटता और लुढ़कता। ३१३४

ऐय नॆऩ्ऩु मोर्शिरम् याऩिऩ्ऩम्
शॆय्व नॆयर शॆऩ्ऩुमङ् गोर्शिरम्
कैयने तुऩ्ऩैक् काट्टिक् कॊडुत्तनाऩ्
उय्व नॆऩ्ऩ् ऱुरैक्कुमङ् गोर्शिरम् 3135

ओर् चिरम्–एक सिर; ऐयने ऎंनुम्–तात पुकारता; अङ्कु–वहाँ; ओर् चिरम्–एक सिर; याऩ् इऩ्ऩम्–मैं अब भी; अरचु चॆय्वत्ते–राज्य करूँगा क्या; ऎंऩ्ऩुम्–कहता; अङ्कु ओर् चिरम्–वहाँ एक सिर; कैयत्तेऩ्–नीच; उऩ्ऩै काट्टि कॊट्टुत्त–(जिसने) तुम्हें (शत्रु को) दिखा दिया; नाऩ्–वह मैं; उय्वत्ते–बचूँगा क्या; ऎंऩ्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा वेदना के साथ कहता। ३१३५

रावण के दस सिरों में एक सिर 'तात!' बुलाता। वहाँ दूसरा सिर यह कहकर रोता कि क्या मैं अब भी राज करूँगा? तीसरा सिर कलपता कि मैं नीच हूँ! तुम्हें शत्रु को मारने के लिए दिखा दिया। क्या मैं बच सकूँगा?। ३१३५

ऎ़ळुविऩ् कोल मॆ़ळुदिय तोळ्हळाल्
तळुविक् कॊळ्हलै यॆऩ्ऩुमङ् गोर्तलै
उळुवैप् पोत्तै युळैयुयि रुण्बदे
शॊ़ळुविऱ् चेवह नॆऩ्ऩु मोर्शिरम् 3136

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; कोलम् ऎळुतिय–चित्रकारी-सहित ऎंळुविन्–खंभे के समान; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तळुवि कॊळ्कलै–आलिंगन नहीं करते; ऎंऩ्ऩुम्–कहता; ओर् चिरम्–अन्य एक सिर; उळुवै पोत्तै–व्याघ्र-शिशु को (या पुरुष व्याघ्र को); उळै–हरिण; उयिर् उण्पते–जीवन खा ले क्या; वॆळु विल्–सबल धनुर्धर; चेवकऩे–वीर; ऎंनुम्–कहता। ३१३६

उधर एक सिर पछताता कि चित्रकारीयुक्त लोहे के खंभे के समान अपनी भुजाओं से तुम मेरा आलिंगन नहीं करते! और एक सिर कहता— पुरुष व्याघ्र के प्राणों को क्या एक हरिण खा ले? हे सबल धनुर्धर वीर! यह क्या अन्याय है?। ३१३६

नीलङ् गाट्टिय कण्डनुम् नेमियुम्
एलुङ् गाट्टि ॲंरिन्द पडैक्कॅलाम्
तोलुङ् गाट्टित् तुरन्दनै मीण्डुनिन्
ओलङ् गाट्टिलै योॅवॅन्नु मोर्शिरम् 3137

ओर् चिरम्–एक सिर; नीलम् काट्टिय–नील रंग दिखानेवाले; कण्टनुम्–कंठ वाले शिव और; नेमियुम्–चक्रधर विष्णु; एलुम्–जहाँ युद्ध हुए; काट्टिल्–उन जंगलों में; ॲंरिन्त पटैक्कु ॲंलाम्–तुम पर चलाये गये अस्त्रों को; मीण्टुम्–बार-बार; तोलुम् काट्टि–हार दिखाकर; तुरन्ततै–(अस्त्र) चलाये; निन् ओलम्–अपना वीरगर्जन (अब); काट्टिलैयो–तुमने सुनाया नहीं क्या; ॲंन्नुम्–कहता। ३१३७

फिर एक सिर कलपता कि पहले नीलकंठ और चक्रधर के विरुद्ध जंगलों में हुए युद्धों में तुमने उनके चलाये सारे हथियारों को परास्त करते हुए अपने अस्त्र चलाये थे, अब क्या तुमने वीर-गर्जन की शक्ति दिखायी नहीं ? । ३१३७

तुञ्जि नायहोल् तुणैपिरिन् देनॅनुम्, वञ्ज मोवॅनुम् वारलै योवॅनुम्
नॅञ्जु नोव नॅडुन्दनि येकिडन्दु, अञ्जि नेनॅन् ऱरट्रुमङ् गोर्दलै 3138

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; तुञ्चिनाय् कोल्–क्या मर गये; तुणै पिरिन्तेन्–सहायक से अलग हो गया; वञ्चमो–क्या यह वंचना है; ॲंन्नुम्–कहता; वारलैयो–तुम नहीं आओगे क्या; नॅञ्चु नोव–मन व्याकुल करके; नॅटुम् तनिये किटन्तु–बहुत दिन अकेले रहकर; अञ्चिनेन्–डर जाता हूँ; ॲंन्ऱु अरट्रुम्–ऐसा कलपता। ३१३८

उधर एक सिर संशय के साथ पूछता कि तुम क्या सचमुच मर गये ? हाय ! अपने सहायक से छूट गया मैं। क्या यह छल है ? पूछता कि क्या तुम नहीं आओगे ? मेरा मन व्याकुल है ! बहुत देर से अकेले रहकर भयातुर हो गया। ३१३८

काह माडु कळत्तिडैक् काण्बनो, पाह शादन् मौलियौ डुम्बरित्
तोहै मेवुर वैत्तवुन् नुच्चियिल्, वाहै नाण्मल रॅन्नुमर् ड्रोर्दलै 3139

मट्ट्रोर् तलै–और एक सिर; मौलियोटुम् परित्तु–जिसके किरीट को अलग करके; ओकै मेवुर–संतोष के बढ़ते; उन् उच्चियिल् वैत्त–तुमने अपने सिर पर रखा था उस; पाकचातन्–पाकशासन पर (विजयचिह्न रूपी); नाण् वाकै मलर्–ताजे 'वाहै' फूलों की माला को; काकम् आटु–कौए जहाँ खेलते हैं उस; कळत्तिटै–समराजिर में; काण्पेनो–देखूँगा क्या; ॲंन्नुम्–कहता। ३१३९

और एक सिर रोता कि तुमने इन्द्र के किरीट को छीन लेकर बढ़ते आनंद के साथ अपने सिर पर रख लिया था। पाकशासन पर

विजय पाने पर जो तुमने ताज़े "वाहै" के फूलों की माला पहनी थी, उसे आज उस युद्धांगन में देखूँ जहाँ कौए क्रीड़ा करते हैं ? । ३१३९

शेलि यऱ्‌क णियक्कर् तन्देविमार्, मेलि त्तित्तविर् हिऱ्पर्हौल् वीरनित्
कोल विऱ्कुरल् केट्टुक् कुलुङ्गित्तम्, तालि यॆत्तौड लॆन्नुमर् ऱोर्दलै 3140

मऱ्‌ऱु ओर् तलै–अन्य एक सिर; वीर–वीर; नित्–तुम्हारे; कोल–सुन्दर; विल् कुरल्–धनु का स्वर; केट्टु–सुनकर; कुलुङ्कि–काँपकर; तम् तालियै तॊटल्–अपने (अहिवात के) मंगलसूत्र को छूने का काम; इयक्कर् तम्–यक्षों की; चेल् इयल्कण्–'शेल' मछली-सी आँखों वाली; तेविमार–पत्नियाँ; इत्ति मेल्–आगे; तविर्किऱ्पर् कौल्–छोड़ देंगी न; ऍन्नुम्–कहता । ३१४०

और एक सिर पछताता कि हे पुत्र ! तुम्हारे धनु की टंकार सुन कर यक्षस्त्रियाँ अपने मंगल-सूत्रों का स्पर्श (इस प्रार्थना के साथ कि मेरा अहिवात न जाए) कर रही थीं। अब शेल मछली-सी चंचल आँखों वाली वे यह (बार-बार मंगलसूत्र स्पर्श करने का) काम छोड़ देंगी न ? । ३१४०

कूऱ्‌ऱ मुन्नॆदिर् वन्दुयिर् कौळ्वदोर्, ऊऱ्‌ऱन् दानुडैत् तन्ऱॆनै युम्मौळित्
तेऱ्‌ऱ वॆव्वुल हुऱ्‌ऱनै यॆल्लैयिल्, आऱ्‌ऱ लायॆन् ऱुरैक्कुमङ् गोर्दलै 3141

ऍल्लैयिल् आऱ्‌ऱलाय्–निस्सीम बलशाली; कूऱ्‌ऱम्–यम; उन् ऍतिर् वन्तु–तुम्हारे सामने आकर; उयिर् कौळ्वतु–जान लेने का; ओर् ऊऱ्‌ऱम् तान्–एक साहस; उटैत्तन्ऱु–नहीं रखता; ऍनैयुम् ऒळित्तु–मुझसे छिपकर; एऱ्‌ऱ–योग्य; ऍ उलकु–किस लोक में; उऱ्‌ऱनै–गये; ऍन्ऱु–ऐसा; अङ्कु–उधर; ओर् तलै उरैक्कुम्–एक सिर कहता । ३१४१

हे अपार बलवान ! यम में इतना साहस नहीं कि वह तुम्हारे समक्ष आकर तुम्हारे प्राण हर ले। (इसलिए साफ़ है, तुम यमलोक नहीं गये।) फिर मेरी भी आँख बचाकर अपने योग्य तुमने किस लोक को चुन लिया है ? । ३१४१

इन्न वाऱळैत् तेङ्गुहिन् ऱानॆऴुन्, दुन्नु मात्तिरत् तोडिन्न ऊऴिनाळ्
पॊन्नित् वानन्न पोर्क्कळम् बुक्कनन्, नन्म हन्ऱन दाक्कैयै नाडुवान् 3142

इन्नवाऱु–इस भाँति; अऴैत्तु–पुकारकर; एङ्कुकिन्ऱान्–शोक करता रावण; ऍऴुन्तु–उठा; नन् मकन् तन्तु–अपने अच्छे पुत्र के; आक्कैयै–शरीर को; नाटवान्–खोजने के लिए; ऊऴि नाळ्–युगक्षय के काल के; पॊन्नित् वान् अन्न–स्वर्ण-देव-नगर के समान जो रही; पोर्क्कळम्–उस युद्धभूमि में; उन्नुम् मात्तिरत्तु–सोचने की देरी के अंदर; ओटिनन् पुक्कनन्–दौड़ पहुँचा । ३१४२

रावण इस भाँति विलापता रहा। फिर उठा। अपने अच्छे पुत्र की लाश को ढूँढ़ लेने के विचार से वह दौड़ कर युगांतकालीन स्वर्णदेवनगरी के समान रहे समरांगन में सोचने मात्र की देरी के अन्दर पहुँचा । ३१४२

तेव रेमुद लाहिय शेवहर्, एव रुम्मुड नेतॊडर्न् देहिनार्
मूव हैप्पे रुलहत्ति मुऱैमैयुम्, याव दाहुमिन् ऱॆन्न विरङ्गुवार् 3143

तेवरे मुतलाकिय–देव ही आदि; चेवकर् एवरुम्–वीर सभी; मूवकै पेरु लकित्तु त्रिविध लोकों का; मुऱैमैयुम्–क्रम; इन्ऱु–आज; यावतु आकुम्–क्या होगा; ऎन्न–ऐसा; इरङ्कुवार्–शोक करते; उटने–तभी; तॊटर्न्तु–उसका पीछा करके; एकिनार्–गये। ३१४३

देव आदि सभी वर्गों के वीरों को भय हो गया कि अब इन तीनों लोकों के क्रम में क्या ही परिवर्तन होनेवाला होगा? वे भी अनुताप करके उसका पीछा करके गये। ३१४३

अऴुद वाऱ्चिल वन्बिल पोऩ्ऱडि
तॊऴुद वाऱ्चिल तुङ्गिन वाऱ्चिल
उऴद यानैप् पिणम्बुक् कॊळित्तवाल्
कऴुदुम् बुळ्ळु मरक्कनैक् काण्डलुम् 3144

कऴुतुम् पुळ्ळुम्–पिशाच और पक्षी; अरक्कनै काण्टलुम्–राक्षस को देखते ही; चिल अऴुत–कुछ रोये; चिल–कुछ; अन्पिन् पोन्ऱु–कुछ सौहार्द्र दिखाकर; अटि तॊऴुत–चरणों में झुके; चिल–कुछ; तूङ्किन–सोते (-से) रहे; उऴुत–(जिन्होंने युद्ध में प्रयत्न के साथ लड़कर) प्राण दिये थे; यानै पिणम् पुक्कु–उन हाथियों की लाशों में घुसकर; ऒळित्त–छिपे। ३१४४

जब रावण युद्धस्थल में पहुँचा तो भूत-पिशाच आदि और पक्षीगण हड़बड़ा गये। कुछ रोये। कुछ स्नेह का प्रदर्शन करते हुए उसके चरणों में झुके। कुछ सोते (-से) रहे। और कुछ खूब लड़कर मरे हाथियों की लाशों के मध्य जा छिपे। ३१४४

कोडि कोडिक् कुदिरैयिन् कूट्टमुम्
आडल् वॆन्ऱि यरक्कर्द माक्कैयुम्
ओडै यानैयुन् देरु मुऴक्किनान्
नाडि नान्ऱन् महन्उडल् नाळॆलाम् 3145

तन् मकन् उटल्–अपने पुत्र के शरीर को; नाळ् ऎलाम्–दिन भर; नाटिनान्–खोजा; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; कुतिरैयिन् कूट्टमुम्–अश्वों की भीड़ों; आटल्–युद्ध में; वॆन्ऱि–विजयी; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; आक्कैयुम्–शरीरों को; ओटै यानैयुम्–मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों को; तेरुम्–और रथों को; उऴक्किनान्–रौंदकर कीच बना दी। ३१४५

रावण ने दिन भर अपने पुत्र के शरीर को ढूँढ़ा। उसके पैरों-तले कोटि-कोटि अश्व, युद्धविजयी राक्षस वीरों के शरीर, मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों की लाशें, रथ —ये सब रौंदकर कीच बने। ३१४५

पॉय्हि डन्द विऴिवऴि नीरुह, नॅय्हि डन्द कऩलुपुरै नॅञ्जिऩान्
मॅय्हि डन्द शिलैयॉडु मूरिमाक्, कैहि डन्ददु कण्डऩऩ् कण्गळाल् 3146

नॅय् किटन्त–घी-मिश्रित; कऩल् पुरै–आग के समान; नॅञ्चिऩाऩ्–मन वाले ने; पॉय् किटन्त विऴि वऴि–असत्य जिनमें वास करता था, उन आँखों से; नीर् उक–आँसू बहाते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; मूरि–बलवान; मा–बड़े; कै–(इन्द्रजित् के) हाथ को; मॅय् किटन्त–सुदृढ़ता से युक्त; चिलैयॉटु–धनु के साथ; किटन्ततु–पड़ा; कण्टऩऩ्–देखा। ३१४६

उसका मन घी के साथ जलती आग के समान था। उसने अपनी असत्य-भरी आँखों से इन्द्रजित् के बलयुक्त हाथ को बड़े और सशक्त धनु को पकड़ा हुआ पड़ा देखा। ३१४६

पॉङ्गु तोळ्वळै युङ्गणैप् पुट्टिलो
डङ्ग दङ्गळु मम्बु मिलङ्गिड
वॅङ्ग णाह मॅऩ्नप्पॉलि हिऩ्ऱदैच्
चॅङ्गै यालॅडुत् ताऩ्शिरञ् जेर्त्तिऩाऩ् 3147

पॉङ्कु–फूले हुए; तोळ्–बाहुओं के; वळैयुम्–वलय और; कणै पुट्टिलोटु–तूणीर; अङ्कतङ्कळुम्–बाजूबंद; अम्पुम्–शर; इलङ्किट–शोभते रहे; वॅम् कण् नाकम्–भीषण आँखों वाले नाग; अॅऩ्ऩ–के समान; पॉलिकिऩ्ऱतै–शोभनेवाले (हाथ) को; चॅम् कैयाल्–पुष्ट हाथ से; अॅटुत्ताऩ्–उठाकर; चिरम् चेर्त्तिऩाऩ्–सिर पर रख लिया। ३१४७

पुष्ट कंधों पर लगे कंकण, तूणीर, बाजूबंद, शर —ये सब शोभ रहे थे। रावण ने इनके साथ शोभित और क्रूर आँखों वाले सर्प के समान पड़े रहे हाथ को अपने पुष्ट हाथ में लेकर अपने सिर पर धारण कर लिया। ३१४७

कऱ्ऱिण् मार्बिऱ् ऱऴुवुङ् गळुत्तिऩिल्
शुऱ्ऱुञ् जॅऩ्ऩियिऱ् चूट्टुञ् जुऴल्कणो
डॉऱ्ऱुम् मोन्दिट् टुरुह मुळैक्कुमाल्
मुऱ्ऱु नाळिऩ् विडुनॅडु मूच्चिनाऩ् 3148

मुऱ्ऱुम् नाळिऩ्–आयु के अन्त के समय में; विटुम्–छोड़े जानेवाले-से; नॅटु मूच्चिऩाऩ्–लम्बे निःश्वास वाला; कल् तिण् मार्पिल्–चट्टान के समान कठोर वक्ष से; तऴुवुम्–लगा लेता; कळुत्तिऩिल्–कण्ठ में; चुऱ्ऱुम्–लपेट लेता; चॅऩ्ऩियिल् चूट्टुम्–सिर पर धारण कर लेता; चुऴल् कणोटु–चंचल आँखों पर; ऑऱ्ऱुम्–रख लेता; मोन्तिट्टु–सूँघकर; उरुकुम्–द्रवीभूत होता; उळैक्कुम्–दुःखी होता। ३१४८

वह ऐसा निःश्वास छोड़ने लगा, मानो आयु के अंतिम समय की साँस हो! वह उस हाथ को ले अपने चट्टान-सम कठोर छाती से लगा लेता। फिर कंठ में लपेट लेता। सिर पर रख लेता। चंचल आँखों पर रख

लेता। सूँघता और द्रवीभूत हो जाता। बहुत ही शोकातुर बन गया। ३१४८

कैहण् डानृपिन् करुङ्गडल् कण्डॅन्न
मॅय्हण् डाननृ मेल्विळुन् दान्रो
पॅय्हण् डारै यरुविप् पॅरुन्दिरै
मॉय्हण् डार्दिरै वेलैयै मूडवे 3149

कै कण्टान्–(पहले) हाथ को देखा; पिन्–बाद; करुङ् कडल्–काला सागर; कण्टु अॅन्न–देखा जैसे; मॅय् कण्टान्–शरीर को देखा; कण् पॅय्–आँखों से बहनेवाली; तारै–धाराओं को; पॅरु अरुवि तिरै–बड़ी नदी की तरंगों को; मॉय् कण्टार्–बलवान वीरों के; तिरै वेलैयै–तरंगपूर्ण सागर को; मूटवे–आवृत करने देते हुए; अतन् मेल् विळुन्तान्–उस (शरीर) पर गिरा। ३१४९

उसने पहले इन्द्रजित् के हाथ को देखा। फिर शरीर को देखा, जो काले सागर के समान पड़ा हुआ था। उसकी आँखों से इतनी अश्रुधारा बही कि लगा उस नदी की तरंगें सशक्त राक्षस वीरों के तरंगपूर्ण सागर को डुबा दे! ऐसा रोते हुए वह उस शरीर पर धड़ाम से गिरा। ३१४९

अप्पु मारि यळुन्दिय मार्वैत्तन्
अप्पु मारि यळुदिळि याक्कैयिन्
अप्पु मारि तणैक्कुम् मरऱ्कुमाल्
अप्पु मानुऱ्ऱ दियावरुऱ् ड्राररो 3150

अप्पु–शरों की; मारि–वर्षा; अळुन्तिय मार्पै–जिसमें घुसी थी उस छाती को; अळुतु–रोकर; तन्–अपने; अप्पु मारि–अश्रु की वर्षा; इळि याक्कैयिन्–जिस पर गिरती थी उस शरीर को; अप्पुम्–मल लेता; मारिन्–अपनी छाती से; अणैक्कुम्–लगा लेता; मरऱ्कुम्–कलपता; अ पुमान्–उस श्रेष्ठ पुरुष का; उऱ्ऱतु–जो हाल हुआ; यावर् उऱ्ऱार्–किसका हुआ। ३१५०

उसने शरविद्ध पुत्र-वक्ष पर आँसू बहाये और उस शरीर को ले अपने शरीर से लगा लिया। छाती से लगा लिया। फिर वह विलाप करने लगा। तब उसका जो हाल हुआ, वह किसे हुआ था? । ३१५०

पऱिक्कु मार्बिऱ् पहळियैप् पन्मुऱै
मुऱिक्कुम् मूर्च्चिक्कुम् मोक्कु मुयङ्गुमाल्
अॅऱिक्कुम् वॅङ्गदि रोडुल हेळैयुम्
कऱिक्कुम् वायिलिट् टिन्ऱॅन्नक् कान्दुमाल् 3151

मार्पिल्–छाती में से; पकळियै–शरों को; पल् मुऱै पऱिक्कुम्–अनेक बार छीन लेता; मुऱिक्कुम्–तोड़ देता; मूर्च्चिक्कुम्–मूर्च्छित होता; मोक्कुम्–सूँघता;

मुयङ्कुम्–आलिंगन कर लेता; ऍरिक्कुम्–धूप बिखेरनेवाले; वॆम् कतिरोडु–भीषण सूर्य को और; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; इतुऱ्–आज; वायिल् इट्टु–अपने मुख में डालकर; फरिक्कुम्–खा लूँगा; ॲन–कहकर; कान्तुम्–कोप दिखाता। ३१५१

रावण इन्द्रजित् की छाती में चुभे शरों को निकालता और उन्हें तोड़ता। वह बेहोश हो जाता। उठकर सूँघता। "आज धूप फैलानेवाले क्रूर सूर्य और सातों लोकों को मुख में डालकर खा लूँगा" कहकर वह अपनी नाराज़गी दिखाता। ३१५१

तेव रोडु मुनिवरुम् जीरियोर्, एव रोडु मुडन्ऱिरि हिन्ऱिलर्
मूव रोडु मुलहॊरु मून्ऱुडन्, पोव देहॊल् मुनिवॆंनुम् बीम्मलान् 3152

मुनिवु–कोप; मूवरोटुम्–तीनों (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ओरु मून्ऱुटन्–त्रिलोक के साथ; पोवते कॊल्–पूरा होगा क्या; ऍंनुम् पॊम्मलान्–ऐसे भय से; तेवरोटु मुनिवरुम्–देव और मुनिवर; चीरियोर् ऍवरोटुम्–शिष्ट सभी; उटन् तिरिकिन्ऱिलर्–साथ (प्रकट) नहीं घूमते। ३१५२

देवों और मुनियों ने रावण का गुस्सा देखा तो डरने लगे कि क्या इसका कोप त्रिलोक, त्रिदेवों का अंत करने के बाद भी रुकेगा? वे और अन्य कोई भी शिष्ट साथ-साथ खुले रूप से नहीं घूमे (सब छिप गये)। ३१५२

कण्डि लन्ऱलै कान्दिय मानिडन्
कॊण्डि ऱन्दन ॲन्बदु कॊण्डवन्
पुण्डि ऱन्दन नॆञ्जन् पॊरुमलन्
विण्डि ऱन्दिड विम्मि यरऱ्ऱिनान् 3153

तलै कण्टिलन्–सिर नहीं देखा; कान्ति–जल-भुनकर; अ–वह; मानिटन् कॊण्टु इऱन्तनन्–नर ले गया; ऍन्पतु–यह; कॊण्टवन्–धारणा करके; पुण् तिऱन्तन–व्रण (जिसके) ताज़े खुल गये; नॆञ्चन्–ऐसे मन वाला; पॊरुमलन्–दुःख से भरकर; विम्मि–सिसककर; विण् तिऱन्तिट–आकाश को फाड़ते हुए; अरऱ्ऱिनान्–चिल्लाया। ३१५३

रावण ने इन्द्रजित् का सिर नहीं देखा। उसने जल-भुनकर समझ लिया कि वही नर इसके सिर को ले गया है। उसके मन के व्रण ताज़े खुल गये। दु.ख से भरकर सिसकते हुए वह इतने ज़ोर से चिल्लाया कि आकाश भी फट जाय!। ३१५३

निलैयुमा दिरत्तु नित्ऱ यालैयुम् नॆऱ्ऱिक् कण्णन्
मलैयुमे वॆळ्ळियॆ वोनान् पऱित्तरऱ्कु मरुविन् मैन्दन्
तलैयुमा रुयिरुङ् गॊण्डा रवरुड लोढुन् दङ्गप्
पुलैयने लिन्नु सावि शुमक्किन्ऱेन् पोलुम् बोलुम् 3154

निलैयुम् मातिरत्तु–अचल दिशाओं में; निऩ्ऱ यात्तैयुम्–स्थित गज और; नॆट्रि कण्णऩ्–भालनेत्र शिव का; मलैयुमे–पर्वत ही; नाऩ् पऱित्तऱ्कु–मेरे द्वारा उखाड़ने के लिए; ऎळियवो–सुलभ रहे क्या; मऱु इल् मैन्दऩ्–निर्दोष पुत्र के; तलैयुम्–सिर और; आर् उयिरम्–प्यारे प्राण; कॊण्टार्–ले लिये हाय; अवर्–वे; उडलोटुम् तङ्क–सशरीर रहते; पुलैयतेऩ्–चांडाल मैं; इऩ्ऩुम्–अब भी; आवि चुमक्किऩ्ऱेऩ्–प्राण ढो रहा हूँ। ३१५४

(वह विलापा—) स्थायी दिग्गज और भालनेत्र शिव का कैलास पर्वत —क्या ये ही मेरे तोड़ने के लिए सुलभ रह गये? वे नर, जिन्होंने मेरे निर्दोष पुत्र का सिर और उसके प्यारे प्राण हर लिये, सशरीर रहते हैं। उनको देखता हुआ चाण्डाल मैं अब भी प्राण ढो रहा हूँ! हाय! कैसी दुर्गति! । ३१५४

ऎरियुण वळहै मूदू रिन्दिर ऩिरुक्कै यॆल्लाम्
पॊरियुण वुलह मूऩ्ऱुम् बॊदुवऱप् पुरन्देऩ् पोलाम्
अरियुणु मलङ्गल् मौलि यिऴन्दवॆऩ् मदलै याक्कै
नरियुणक् कण्डे ऩूणि ऩायुणु मुणवु नऩ्ऱाल् 3155

अळकै मूदूर्–अलकापुरी का प्राचीन नगर; इन्तिरऩ् इरुक्कै–इन्द्र का वासस्थान (अमरावती); ऎल्लाम्–(आदि) सभी नगरों को; ऎरि उण–आग जला दे; पॊरि उण–अंगारे जला दें; उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों का; पॊतु अऱ–साझे के विना; पुरन्तेऩ्–पालन करता रहा; अरि–भ्रमरों से; उणुम्–भोग्य; अलङ्कल् मौलि–पुष्पों से अलंकृत सिर को; इऴन्त–खोकर जो है; ऎऩ् मतलै–ऐसे मेरे पुत्र के; याक्कै–शरीर को; नरि उण–सियारों को खाता; कण्टेऩ्–देखा; ऊणिऩ्–अपने भोजन से; नाय् उणवुम् उणवु–कुत्ते का (जूठा) खाना; नऩ्ऱु–बेहतर; पोल् आम्–हो गया, शायद वही सच है। ३१५५

अलकापुरी, अमरावती आदि नगरों को अग्निदग्ध कराकर मैंने त्रिभुवन का असपत्न रूप से पालन किया था। पर आज देख रहा हूँ कि अलिकुलभोग्य पुष्पालंकृत सिर से हीन मेरे पुत्र के शरीर को सियार खा रहे हैं! मेरे भोजन से कुत्ते का भोजन श्रेष्ठ होगा शायद! । ३१५५

पूण्डॊरु पहैमेऱ् कॊण्डॆऩ् पुत्तिर ऩॊडुम् बोऩार्
मीण्डिलर् विऴिन्दु वीऴ्न्दार् विरदिय रिरुव रोडुम्
आण्डुळ कुरङ्गु मॊऩ्ऱु ममर्क्कळत् तारु मिऩ्ऩुम्
माण्डिल रिनिवे ऱुण्डो विरावणऩ् वीर वाऴ्क्कै 3156

ऒरु पकै मेल् कॊण्टु–एक शत्रु पर आक्रमण करके; ऎऩ् पुत्तिरऩोटुम्–मेरे पुत्र के साथ; पोऩार्–जो गये वे; मीण्टिलर्–नहीं लौटे; विऴिन्तु वीऴ्न्तार्–मरकर गिरे; आण्टु उळ–वहाँ रहते; विरतियर्–व्रती (तपस्वी); इरुवरोटुम्–दोनों के साथ; कुरङ्कुम्–वानर; आरुम् ऒऩ्ऱुम्–कोई एक; इऩ्ऩुम् माण्टिलर्–अभी

नहीं मरे; इरावणऩ् वीर वाऴ्क्कै–रावण का वीर का जीवन; इति वेऱु उण्टो–अब कुछ अन्य है क्या। ३१५६

वैर साधकर जो मेरे पुत्र के साथ गये वे सभी बिना लौटे मर मिट गये। वहाँ तपस्वी, वानर इनमें कोई भी नहीं मरा! रावण का वीरता के जीवन का और कुछ प्रमाण चाहिए क्या? । ३१५६

कऩ्दर्प्प रियक्कर् शित्त ररक्कर्दङ् गऩ्ऩि माऱ्हळ्
शॅऩ्दॊक्कुम् जॊल्लिऩा रुऩ् तेवियर् तिरुवि ऩल्लार्
वऩ्दुऱ्ऱॆङ् गणवऩ् ऱऩ्ऩैक् काट्टॆऩ्ऱु मरुङ्गिल् वीऴ्ऩ्दाल्
अऩ्दॊक्क वरऱ्ऱ वोनाऩ् कूऱ्ऱैयु माडल् कॊण्डेऩ् 3157

कन्तर्प्पर–गन्धर्व; इयक्कर्–यक्ष; चित्तर्–सिद्ध; अरक्कर्–राक्षस; तम्–इनकी; कऩ्ऩिमारकळ्–कन्याएँ; चॆन्तु ऑक्कुम्–'सिंदु' नाम के तान के समान; चॊल्लिऩार्–बोली वालियाँ; उऩ् तेवियर्–तुम्हारी पत्नियाँ; तिरुविऩ् मल्लार्–लक्ष्मी से भी सुन्दर; वन्तु उऱ्ऱु–आ पहुँचकर; ऍम् कणवन् तऩ्ऩै–हमारे पति को; काट्टु–दिखाओ; ऍऩ्ऱु–कहकर; मरुङ्किल्–पास में; वीऴ्न्ताल्–गिरें तो; कऱ्ऱैयुम् आटल् कॊण्टेऩ्–यमविजेता मैं; ऑक्क अरऱ्ऱवो–एक साथ कलपूँ; अन्त–हन्त। ३१५७

गंधर्व, यक्ष, सिद्ध और राक्षसनारियाँ, 'सिंदु' तान की-सी मधुरभाषिणी लक्ष्मी से भी सुन्दरी तुम्हारी पत्नियाँ, आ पहुँचकर मुझसे यह माँग करते हुए कि हमारे पति को दरसा दो, मेरे पार्श्व में गिरें, तो यमविजेता मैं क्या साथ मिलकर (अपने दसों मुखों से) कलपूँ? हाय! । ३१५७

शिऩत्तॊडुङ् गॊऱ्ऱ मुऱ्ऱ विऩ्दिरऩ् शॅल्वम् मेव
निऩैत्तदु मुडित्तु निऩ्ऱेऩ् नेरिऴै यॊरुत्ति तऩ्ऩाल्
ऍऩक्कुनी शॅय्यत् तक्क कडऩ्ऩेला मिरङ्गि येङ्गि
उऩक्कुनाऩ् शॅय्व दाऩे ऩॆऩ्ऩिऩ्या रुलहत् तुळ्ळार् 3158

चिऩत्तॊटुम्–कोप के साथ; कॊऱ्ऱम्–विजय; मुऱ्ऱ–जब बढ़ी तब; इन्तिरन् चॆल्वम् मेव–इन्द्रसंपत्ति मेरे पास आयी; निऩैत्ततु–जो सोचा वह; मुटित्तु निऩ्ऱेऩ्–पूरा किये रहा; नेरिऴै ऑरुत्ति तऩ्ताल्–सीधी आभरणभूषिता एक के कारण; ऍऩक्कु–मेरे प्रति; नी चॆय्यत्तक्क–तुम्हारे द्वारा कर्तव्य; कटऩॆलाम्–अपर कर्म आदि; इरङ्कि–शोक के साथ; एङ्कि–रोकर; नाऩ्–मैं; उऩक्कु चॆय्वतु आऩेऩ्–करनेवाला बन गया; ऍऩ्ऩिऩ् यार्–मुझसे बढ़कर (हीन) कौन; उलकत्तु उळ्ळार्–लोक में है। ३१५८

मेरा क्रोध, मेरी विजयशीलता सब वर्धनशील थे। इन्द्र की संपत्ति मेरे वश में आयी। जो मैं सोचता वह पूरा कर लेता था। पर एक सीधी और आभरणभूषिता के कारण मैं तुमको वह सारा अपर कर्म

रोते-कलपते करनेवाला हो गया, जो तुम्हारे द्वारा मेरे प्रति कर्तव्य है। मुझसे अन्य ऐसा कौन है इस दुनिया में ? । ३१५८

ऍऩ्बत्त पलवुम् बत्ऩि यॅडुत्तळैत् तिरङ्गि येङ्गि
अऩ्बिऩाल् महत्तैत् ताङ्गि यरक्किय ररऱ्ऱि वीऴप्
पॊऩ्बुत्तै नहरम् बुक्काऩ् कण्डवर् पुलम्बुम् बूशल्
ऒऩ्बदु तिक्कु मऱ्ऱै यॊरुतिक्कु मुऱ्ऱ दऩ्ऱे 3159

ऍऩ्पत्त–सो; पलवुम्–अनेक बातें; पत्ऩि–कहकर; ऍटुत्तु अऴैत्तु–स्वर उठा पुकारकर; इरङ्कि एङ्कि–शोक करके व्याकुल होकर; अऩ्पिऩाल्–स्नेह के साथ; मकत्तै ताङ्कि–पुत्र को ढोकर; अरक्कियर्–राक्षसियों के; अरऱ्ऱि वीऴ–कलपकर गिरते; पॊऩ् पुत्तै नकरम्–स्वर्णनिर्मित नगर में; पुक्काऩ्–घुसा; कण्टवर्–दर्शक; पुलम्पुम् पूचल्–जो रोते-कलपते थे वह शोर; ऒऩ्पतु तिक्कुम्–नवों दिशाओं में; मऱ्ऱै–और; ऒरु तिक्कुम्–एक दिशा में; उऱ्ऱतु–पहुँचा। ३१५९

रावण ऐसी अनेक बाते कहकर विलाप करता, उच्च स्वर में पुत्र का नाम ले पुकारता, शोकाकुल और संतप्त होकर प्रेम के साथ अपने पुत्र (के शरीर) को उठा लेता हुआ अपने स्वर्णनिर्मित नगर में पहुँचा। उसको देखकर राक्षसियाँ रोती-कलपती भूमि पर गिर पड़ीं। उसको देखकर लोगों ने जो विलाप के स्वर निकाले वे दसों दिशाओं में जा व्याप्त हुए। ३१५९

कण्गळैच् चूल्हिऩ् ऱारुङ् कळुत्तिऩैत् तडिहिऩ् ऱारुम्
पुण्गॊळत् तिऱन्दु मार्बि नीरुळैप् पोक्कु वारुम्
पण्गळ्पुक् कलम्बु नावै युयिरॊडु पऱिक्किऩ् ऱारुम्
ऍण्गळिऱ् पॆरिय रिन्द विरुन्दुयर् पॊरुक्क लाऱ्ऱार् 3160

कण्कळै–आँखों को; चूल्किऩ्ऱारुम्–नोचनेवालियाँ और; कळुत्तिऩै–गलों को; तटिकिऩ्ऱारुम्–काट लेनेवालियाँ; मार्पिऩ्–छातियों को; पुण् कॊळ–व्रण बनाते हुए; तिऱन्तु–खोलकर; ईरुळै–फेफड़ों को; पोक्कुवारुम्–दूर फेंकनेवालियाँ और; पण्कळ् पुक्कु–(संगीत के) राग जिनमें घुसकर; अलम्पुम्–पवित्र करते थे; नावै–उन जीभों को; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; पऱिक्किऩ्ऱारुम्–खींच लेनेवालियाँ; इन्त–यह; इरुम् तुयर्–घोर दुःख; पॊऱुक्कल् आऱ्ऱार्–न सह सकनेवालियाँ; ऍण्कळिल् पॆरियर्–संख्या में बड़ी हैं। ३१६०

इन्द्रजित् की लाश को देखकर स्त्रियों ने विविध रूप से अपना असह्य दुःख प्रदर्शन किया। जिन्होंने अपनी आँखें खुद नोच लीं; जिन्होंने अपना कण्ठ काट लिया; जिन्होंने अपनी छाती चीरकर फेफड़े निकाल लिये, जिन्होंने अपनी संगीत-धौत जीभों को प्राणों के साथ निकाल लिया

—ऐसी स्त्रियों की संख्या, जो अपना घोर दुःख सह नहीं सकीं, अधिक होती गयी। ३१६०

मादिरङ् गडन्द तिण्डोळ् मैन्दन्ऱन् महुडच् चॅन्नि
पोदलैप् पुरिन्द याक्कै पॉरुत्तनन् पुहुदक् कण्डार्
ओदनीर् वेलै यन्न कण्गळा लुहुत्त वॅळ्ळक्
कादलनी रोडि याडर् करुङ्गडन् मडुत्त दन्ऱे 3161

मातिरम् कटन्त–दिग्विजयी; तिण् तोळ्–सबलस्कन्ध; मैन्तन् तन्–(अपने) पुत्र के; मकुटम् चॅन्नि–मुकुटमंडित सिर से; पोतलै पुरिन्त याक्कै–हीन शरीर को; पॉरुत्तनन्–ढोता हुआ; पुकुत कण्टार्–(रावण) आ रहा था उसे देखा (जिन्होंने); ओतम् नीर् वेलै अन्न–(उन्होंने) शब्दित सागर के समान; कण्कळाल् उकुत्त–अपनी आँखों से जो बरसाया; कातल् नीर् वॅळ्ळम्–स्नेह-जल की बाढ़; ओटि–बहकर; आटल्–लहराते; करुम् कटल्–काले-सागर में; मटुत्तदु–पहुँची। ३१६१

उन लोगों के, जिन्होंने रावण को दिग्विजयी सबल-स्कन्ध पुत्र इन्द्रजित् के मुकुट-मंडित सिर से हीन शरीर को ढोते हुए जाता देखा, शब्दायमान सागर-सम निःसृत स्नेहाश्रु की बाढ़ जाकर दोलायमान व काले सागर में मिली। ३१६१

आवियि निनिय काद लरक्कियर् मुदल्व राय
तेवियर् कुळाङ्गळ् शुऱ्ऱच् चिरत्तिन्मेल् तळिर्क्कै शेर्त्ति
ऑवियि मळुदु वीऴ्न्दु पुरळ्वन वॉप्प वॊल्लैक्
कोवियल् कोयिर् पुक्कान् कुरुदिनीर्क् कुमिळिक् कण्णान् 3162

ओवियम्–चित्र; चिरत्तिन् मेल्–सिरों पर; तळिर् कै चेर्त्ति–पल्लवहस्त रखकर; अऴुतु–रोते; वीऴ्न्तु पुरळ्वन–गिरते लोटते; ऑप्प–जैसे; आवियिन् इनिय कातल्–प्राणों से मधुर प्रेम की; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतल्वराय तेवियर्–आदि पत्नियों के; कुळाङ्कळ्–झुंडों के; चुऱ्ऱ–घेरे आते; कुरुति नीर् कुमुळि–रक्ताश्रुओं के बुलबुले जिनसे निकलते थे; कण्णान्–ऐसी आँखों वाला; ऑल्लै–शीघ्र; को इयल्–राजयोग्य; कोयिल्–महल में; पुक्कान्–घुसा। ३१६२

उसे इन्द्रजित् की प्राणप्यारी राक्षसादि पत्नियाँ घेरे आ रही थीं। वे सिरधृतपल्लव-हस्त व उन चित्रों के समान थी, जो रोते-कलपते, गिरते-लोटते रहते हों। उसकी आँखों से मानो रक्त के बुलबुले उठ रहे थे। वह जल्दी-जल्दी अपने राज-महल में प्रविष्ट हुआ। ३१६२

करुङ्गुळर् कऱ्ऱैप् पारङ् गाल्तॊडक् कमलप् पूवाल्
कुरुम्बैयैप् पुडैक्किन् ऱाळ्पोर् कैकळाल् मुलैमेर् कॊट्टि

अरुङ्गलच् चुम्मै ताङ्ग वहललुह्हु लत्तृरिच् चट्रे
मरुङ्गुलु मुण्डो वॅन्नृ मयन्महळ् मरुहि वन्दाळ् 3163

मयन् मकळ्–मयसुता; करुङ्कुळल् पारम् कट्रै–काले केशभार की लटों को; काल् तोट–पैरों को छूने देते हुए; कमल पूवाल्–कमल के फूल से; कुरुम्पैयै–छोटे कच्चे नारियल को; पुटैक्कित्राळ् पोल्–पीटती-जैसे; कैकळाल्–हाथों से; मुलै मेल् कोट्टि–स्तनों पर पीटती हुई; अरुम् कलम् चुम्मै–श्रेष्ठ आभरणों का भार; ताङ्क–ढोने; अकल् अल्कुल् अत्रि–विशाल भग के सिवा; चट्रे–थोड़ा; मरुङ्कुलुम्–कमर भी; उण्टो–है क्या; अॅन्त–लोग कहें ऐसा; मरुकि–शोकसंतप्त होकर; वन्ताळ्–आयी। ३१६३

तब मयसुता मंदोदरी भी उधर आयी। उसके काले केशभार की लटें उसके पैरों को स्पर्श कर रही थीं। वह अपने छोटे कच्चे नारियल-जैसे स्तनों पर कमल-सम हस्तों से पीटती आयी। 'क्या उसके आभरणभार को धारण करने के लिए भग के अलावा थोड़ा कमर भी है ?' ऐसा लोग कहें, इस भाँति वह चक्रित हो आयी। ३१६३

तलैयिन्मेर् चुमन्द कैयळ् तळलिन्मेन् मिदिक्किन् ड्राळ्पोल्
निलैयिन्मेन् मिदिक्कुन् दाळा ळेक्कत्ताल् निरैन्द नॅञ्जाळ्
कॉलैयिन्मेर् कुरित्त वेडन् कूर्ङ्गणै युयिरैक् कॉळ्ळ
मलैयिन्मेन् मयिल्वीळ्न् दॅन्न मैन्दन्मेन् मरुहि वीळ्न्दाळ् 3164

तलैयिन् मेल्–सिर पर; चुमन्त कैयाळ्–धृत हाथों वाली; तळलिन् मेल्–आग पर; मितिक्कित्राळ् पोल्–पग धरती जैसे; निलैयिन् मेल्–भूमि पर; मितिक्कुम् ताळाळ्–डग भरनेवाले पैरों की; एक्कत्ताल्–शोक से; निरैन्त नॅञ्याळ्–भरे मन वाली; कॉलैयिन् मेल् कुरित्त–हत्या पर तुले; वेटन्–व्याध के; कूर् कणै–तीक्ष्ण बाण के; उयिरै कॉळ्ळ–प्राण हरने पर; मयिल–एक मोर; मलैयिन् मेल् वीळ्न्तॅन्न–पर्वत पर गिरा जैसे; मैन्तन् मेल्–पुत्र पर; मरुकि वीळ्न्ताळ्–चक्कर खाकर गिरी। ३१६४

उसके हाथ सिर पर धरे थे। वह भूमि पर ऐसा डग भरती मानो अंगारों पर पैर रख रही हो। दुःखपूरितमना वह अपने उत्कृष्ट पुत्र की लाश पर उस मोर के समान गिरी, जो वधोद्यत व्याध का शर खाकर प्राण खो पर्वत पर गिरा हो। ३१६४

उयिर्त्तिल ळुणर्वु मिल्लळ् उयिरिलळ् कॉल्लो वॅन्नप्
पॅयर्त्तिल ळियाक्कै यॉन्नुम् बेशलळ् विम्मि यादुम्
वियर्त्तिलळ् नॅडिदु पोदु विम्मलळ् मॅल्ल मॅल्ल
अयर्त्तिलळ् अरिदिर् रेरि वाय्तिरन् दरट्र लुट्राळ् 3165

उयिर्त्तिलळ्–साँसें नहीं छोड़तीं; उणर्वुम् इल्लळ्–प्रज्ञाहीन है; उयिरिलळ् कॉल्लो–प्राणहीन है क्या; अॅन्न–यह संशय पैदा करते हुए; याक्कै–शरीर को;

पॅयर्त्तिलळ्–नहीं हिलाती; विम्मि–सिसकती; यातुम् ऑन्ड्रुम् पेचलळ्–कुछ भी, एक भी नहीं कहती; नॅट्टितु पोतु–लम्बी देर तक; वियर्त्तिलळ्–स्वेद नहीं निकालती; अयर्त्तिलळ्–भूली-बिसरी भी नहीं; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; अरितिल्–कष्ट से; तेर्रि–सँभलकर; वाय् तिरन्तु–मुख खोलकर; अरट्रल् उर्राळ्–विलाप करने लगी। ३१६५

वह श्वास-हीन, प्रज्ञा-हीन रही। शरीर निस्पंद रहकर यह संशय पैदा कर रहा था कि क्या वह जीवित भी है ? वह सिसकी पर कुछ नहीं बोली। लंबी देर तक शरीर पर स्वेद भी नहीं झलका। पर वह कुछ भूली नहीं थी। फिर धीरे-धीरे कष्ट के साथ स्वस्थ हुई और मुख खोलकर विलाप करने लगी। ३१६५

कलैयिऩाल् तिङ्गळ् पोल वळर्हिऩ्ऱ कालत् तेयुन्
शिलैयिऩा लरियै वॆल्लक् काण्वदोर् तवमुऩ् शॆय्देन्
तलैयिला वाक्कै काण वॆत्तवञ् जॆय्दे ऩ्ऩदो
निलैयिला वाऴ्वै यिऩ्ऩुम् निऩैवऩो निऩैवि लादेऩ् 3166

कलैयिऩाल्–कला में; तिङ्कळ् पोल–चन्द्र के समान; वळर्किऩ्ऱ कालत्ते–जब बढ़ते थे तब; उन् चिलैयिऩाल्–अपने धनु से; अरियै–इन्द्र को; वॆल्ल काण्पतु–जीतना देखने का; ओर् तवम्–एक तप; मुऩ् चॆय्तेऩ्–पहले किया था; अऩ्तो–हाय; तलै इला–सिर-रहित; आक्कै काण–शरीर देखने को; ॲ तवम् चॆय्तेऩ्–कौन-सी तपस्या की थी; निऩैवु इलातेऩ्–स्मरणशक्ति से हीन मैं; निलैयिला वाऴ्वै–मर्त्य जीवन को; इऩ्ऩुम्–अब भी; निऩैवऩो–परवाह करूँगी क्या। ३१६६

जब कलाधर चन्द्र के समान कला पर कला के साथ तुम बढ़ रहे थे, तब मेरा भाग्य रहा कि मैंने तुम्हें अपने धनु से इन्द्र को हराता देखा। पर हाय ! अब मस्तकहीन तुम्हारे शरीर को देखने के लिए मैंने क्या ही तपस्या की है ? स्मरणहीन होकर क्या मैं अब भी मर्त्य जीवन को चाहूँगी ? । ३१६६

ऐयऩे यळह ऩॆऩ्ऩॆ ऩ्ऱरुम्बॆर् लमिऴ्दे याऴिक्
कैयऩे मऴुव ऩॆऩ्ऩॆ ऱ्ऱिवर्वलि कडन्द काल
मॊय्यऩे मुळरि यऩ्ऩ निऩ्मुहङ् गण्डि लादेऩ्
उय्वऩो उलह मूऩ्ऱुक् कॊरुवऩे शॆरुव लोऩे 3167

ऐयऩे–तात; अऴकऩे–सुन्दर; ॲऩ्–मेरे; पॆर्ऱल् अरुम्–अप्राप्य; अमिऴ्ते–अमृत; आऴिक् कैयऩे–चक्रहस्त और; मऴुवऩे–परशुधर (शिव); ॲऩ्ऱ इवर्–आदि इनके; वलि कटन्त–बल-परास्त-कारी; कालम् मॊय्यऩे–यम के समान पराक्रमी; उलकम् मूऩ्ऱुक्कु ऑरुवऩे–तीनों लोकों में अद्वितीय; चॆरु वलोऩे–युद्ध-दक्ष; मुळरि अऩ्ऩ–कमल-सम; निऩ् मुकम् कण्टिलातेऩ्–तुम्हारा मुख न देखती; उय्वऩो–जीवित रहूँगी क्या। ३१६७

मेरे तात ! सुन्दर ! दुष्प्राप्य अमृत ! चक्रधर-व-परशुधर-बल-परास्तकारी यम-सम पराक्रमी ! तीनों लोकों में अद्वितीय ! युद्ध-दक्ष ! कमलमुख तुम्हारा मुख नहीं देखती हुई मैं जीवित रहूँगी क्या ? । ३१६७

ताळरिच् चदङ्गै यार्प्पत् तवळ्हित्तूर परुवन् दत्तिनिल्
कोळरि यिरण्डु पट्रिक् कॉणर्न्दत्त कॉणर्न्दु कोबम्
मूळुरप् पॉरुत्ति माड मुन्ट्रिलिन् मुरैयि नोडु
मीळरु विळैयाट् टिन्नङ् गाण्बॅने विदियि लादेन् 3168

ताळ्–तुम्हारे पैरों में; अरि चतङ्कै–कंकड़-भरी पैंजनियाँ; आर्प्प–क्वणन जय करें; तवळ्कित्तूर–घुटनों चलने की उस; परुवम् तन्निल्–वय में; इरण्डु कोळरि–दो सिंहों को; पट्रि–पकड़कर; कॉणर्न्तत्त–लाये; कॉणर्न्तु–लाकर; कोपम् मूळुर–कुपित हों, ऐसा; पॉरुत्ति–युद्ध में लगवाकर; माट मुन्ट्रिलिन्–माढ़े के आँगन में; मुरैयिनोटु–योग्य रीति से; मीळ अरुम् विळैयाट्टु–फिर न देखी जाय ऐसी क्रीडा को; वितियिलातेन्–भाग्यहीना मैं; इन्नम् काण्पॅने–और कभी देखूँगी क्या । ३१६८

जब तुम पैरों की कंकड़ियों से भरी पैंजनियों को क्वणित कराते हुए घुटनों के बल चलते थे, उस वय में तुम दो सिंहों को पकड़ लाये थे । दोनों में युद्ध छिड़वाया । माढ़े के आँगन में अपने योग्य यह खेल, जो फिर से नहीं हो सकता, खेलते रहे । अब भाग्यहीना मैं फिर एक बार देख सकूँगी क्या ? । ३१६८

अम्बुलि यम्म वावॅन् ड्रळैत्तलु मविर्वॅण् डिङ्गळ्
इम्बर्वन् दानै यञ्ज लॅन्नविरु करत्ति नेन्दि
वम्बुरु मरुवैप् पट्रि मुयलॅन्न वाङ्गुम् वण्णम्
ऍम्बॅरुङ् गळिरे काण वेशट्रे ऍळुन्दि राये 3169

ऍम्–हमारे; पॅरुम् कळिऱे–बड़े (महत्त्व के) गज; अम्पुलि–चन्द्र को; अम्म वा–माँ आ; ऍन्ऱु–कहकर; अळैत्तलुम्–बुलाने पर; अविर्–छविपूर्ण; वॅण् तिङ्कळ्–श्वेतचन्द्र; इम्पर् उलकुक्कु–इस लोक में; वन्तानै–जो आया उसे; अञ्चल् ऍन्न–मत डरो कहकर; इरु करत्तिन् एन्ति–दोनों हाथों में उठाकर; वम्पु उरु–विशिष्ट; मरुवै–कलंक को; पट्रि–पकड़कर; मुयल् ऍन्न–खरगोश कहकर; वाङ्कुम् वण्णम्–पोंछ लेने की लीला; काण एचट्रेन्–देखना चाहती; ऍळुन्तिराय् ए–उठोगे नहीं क्या । ३१६९

हमारे बहुमूल्य गज ! तुमने चाँद को माँ ! आ, कह बुलाया और वह छविमय श्वेत चाँद इस भूमि पर उतर आया । तुमने उसे दोनों हाथों में लिया और 'मत डरो' का आश्वासन दिया । फिर उसके विशिष्ट कलक को खरगोश कहकर पोंछने लगा । वह लीला फिर से देखना चाहती हूँ ! क्या नहीं उठोगे तुम ? । ३१६९

इयक्किय ररक्कि मार्हळ् विज्जैय रेळै मार्हळ्
मुयर्कर् पयिलात् तिङ्गण् मुहत्तियर् मुळ्दु नित्तै
मयक्किय मुयक्कन् दत्तात् मलरण यमळि मीदे
अयर्त्तनै युरङ्गु वायो वमर्पॊरु दलशि नायो 3170

इयक्कियर्–यक्षियाँ; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; विज्चैयर एळैमार्कळ्–विद्याधरवनिताएँ; मुयल् कर् पयिला–शशांकहीन; तिङ्कळ् मुकत्तियर्–चन्द्रमुखियाँ; नित्तै–तुम्हें; मुळ्तुम्–पूर्ण रूप से; मयक्किय–बेहोश करा दें, ऐसे; मुयक्कम् तत्ताल्–आलिंगन से; मलर् अणै अमळि मीतु–पुष्पों के तकियों-सह शय्या पर; अयर्त्तत्तै–थके; उरङ्कुवायो–सोते हो क्या; अमर् पॊरुतु–युद्ध करके; अलचित्तायो–थक गये क्या। ३१७०

क्या तुम यक्ष, राक्षस, विद्याधर आदि शशांकहीन मुखवाली रमणियों के मूर्च्छाकारी आलिंगन से पुष्प-शय्या पर थके सो रहे हो? या युद्ध से शिथिल पड़ गये? । ३१७०

मुक्कणान् मुदलि नोरै युलहॊरु मून्रि नोडुम्
पुक्कपो रॆल्लाम् वॆन्रु निन्रवॆन् पुदल्वन् पोलाम्
मक्कळि लॊरुवन् कॊल्ल माळ्बवन् वान मेरु
उक्कमॆन् कालाल् वेरो डोडिवदु मुळदे यम्मा 3171

मुक्कणान्–त्रिनेत्र; मुतलित्तोरै–आदि (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ऒरु मून्रित्तोटुम्–त्रिभुवन के साथ; पुक्क–छिड़े; पोर् ऎल्लाम्–सभी युद्ध; वॆन्रु निन्र–जीतकर जो खड़ा था; ऎत् पुतल्वत्–मेरा पुत्र; मक्कळिल् ऒरुवत्–मानवों में एक के; कॊल्ल माळ्पवन्–मारते मर जानेवाला बन गया; अम्मा–आश्चर्य; वात मेरु–बड़ा मेरु पर्वत; उक्कम् मॆत् कालाल्–पंखे के नरम पवन से; वेरोटु–जड़ के साथ; ऒटिवतुम् उळते–टूटे वह भी हो; पोल् आम्–जैसे है। ३१७१

तुमने त्रिनेत्र आदि त्रिदेवों और त्रिभुवनों के विरुद्ध हुए सारे युद्ध जीते थे। अब नरों में एक के मारे मर गये! क्या आश्चर्य! यह ऐसा है जैसा पंखे के नरम पवन से बड़ा मेरु हरहराकर जड़ से खुदकर गिर जाय! । ३१७१

पज्जॆरि युऱ्ऱ दॆन्न वरक्कर्दम् बरवै यॆल्लाम्
वॆज्जिन मनिदर् कॊल्ल विळिन्ददे मीण्ड दिल्लै
अज्जित्ते नज्जितॆनच् चीदॆयॆन् ऱमिळ्दिर् ऱोय्न्द
नज्जिना लिलङ्गै वेन्दन् नाळैयित् तहैय नन्ऱो 3172

पञ्चु ऎरि उऱ्ऱतु ऎन्न–रूई जल गयी जैसे; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; ऎल्लाम् परवै–सारा सागर; वॆम् चित्त मनितर्–दारुण क्रोधयुक्त मनुष्यों के; कॊल्ल–मारने से; विळिन्तते–मर गये तो; मीण्टतिल्लै–लौटे नहीं; अ चीतै ऎन्ऱ–उस सीता नाम के; अमिळ्तिल् तोय्न्त–अमृत में सने; नज्चिताल्–विष से; नाळै–

कल; इलङ्कै वेन्तन्-लंका का राजा; इ तकैयन् अन्ऱो-इस स्थिति का नहीं होगा क्या; अञ्चितेन्-डरी; अञ्चितेन्-डरी। ३१७२

रूई जल गयी जैसे राक्षस-सेना-सागर सब दारुण क्रोधी नरों के मारे मर मिटा, हाय ! लौटा नहीं। अमृत-सना विष जो है वैसी सीता के कारण कल लंकाधिपति की स्थिति भी यही हो रहेगी न ! हाय ! बड़ा भय लगता है ! डरती हूँ। ३१७२

ऍन्ऱऴैत् तिरङ्गि येङ्ग विन्तुय रॅमरॅल्लाम्
पॊन्ऱऴैत् तनैय वल्हुल् चीदैयाल् पुहुन्द दॅन्न
वन्ऱऴैक् कल्लिन् नॅञ्जिन् वञ्जहत् ताऴै वाळाल्
कॊन्ऱिऴैत् तिडुवॆ नॅन्ना वोडिन नरक्कर् कोमान् 3173

ऍन्ऱु-ऐसा; अऴैत्तु-आह्वान करके; इरङ्कि-व्यग्र होकर; एङ्क-तरसी तब; ऍमर्कट्कु ऍल्लाम्-सारे हमें; इ तुयर्-यह दुःख; पॊन् तऴैत्त अनैय-स्वर्णबहुल-से; अल्कुल् चीतैयाल्-नितंब वाली सीता से; पुकुन्तु-आया; ऍन्न-सोचकर; वन् तऴै-बहुत कठोर; कल्लिन् नॅञ्चिन्-प्रस्तरमन; वञ्चकत्ताऴै-वंचकी को; वाळाल् कॊन्ऱु-तलवार से हत करके; इऴैत्तिटुवॆन्-काम तमाम कर दूँगा; ऍन्ना-कहते हुए; अरक्कर् कोमान्-राक्षसराज; ओटिनान्-दौड़ा। ३१७३

ऐसी करुणा के वचन कहते हुए मंदोदरी रोती-बिललाती, व्यग्र होती रही। तब रावण ने सोचा कि हमारा यह हाल स्वर्णसुन्दर नितंबों वाली सीता के कारण ही हुआ ! 'उस प्रस्तरमना वंचकी को अपनी तलवार से मारकर काम तमाम कर दूँगा।' यह कहते हुए राक्षसराज दौड़ने लगा। ३१७३

ओडुहिन् ऱानै नोक्कि युयर्पॅरुम् बऴियै युच्चिच्
चूडुहिन् ऱानॆन् ऱञ्जि महोदरन् तुणिन्द नॅञ्जन्
माडुशॅन् ऱडियिन् वीऴ्न्दु वणङ्गिनिन् पुहऴ्क्कु मन्ना
केडुवन् दडुत्त दॅन्ना विनैयन किळत्त लुऱ्ऱान् 3174

ओटुकिन्ऱानै-दौड़नेवाले को; नोक्कि-देखकर; तुणिन्त नॅञ्चन्-धीरमन; मकोतरन्-महोदर; उयर् पॅरुम् पऴियै-बहुत बड़ी और गहरी निन्दा को; उच्चि-सिर पर; चूटुकिन्ऱान्-धारण करने चलता है; ऍन्ऱु अञ्चि-ऐसा डरकर; माटु चॅन्ऱु-पास जाकर; अटियिन् वीऴ्न्तु-चरणों पर गिरकर; वणङ्कि-नमन करके; मन्ना-राजा; निन् पुकऴ्क्कु-तुम्हारे यश पर; केटु वन्तु अटुत्ततु-हानि आ लगी है; ऍन्ना-कहकर; इनैयन-ऐसी बातें; किळत्तल् उऱ्ऱान्-कहने लगा। ३१७४

दौड़ते उसे धीरमन महोदर ने देखा। 'बहुत बड़े प्रचंड कलंक को सिर पर धारण करने जा रहा है।' इस डर से वह रावण के पास जाकर उसके चरणों में गिरा। नमन करके उसने कहा— राजा !

तुम्हारे यश की हानि हो जायगी ! ऐसा आरंभ करके उसने आगे निम्नोक्त बातें कहीं । ३१७४

मङ्गैयैक् कुलत्तु ळाळैत् तवत्तियै मुनिन्दु वाळाल्
शङ्गै यॊन्ऱिन्ऱिक् कॊन्ऱाऱ् कुलत्तुक्के तक्का नॆन्ऱु
कङ्गैयञ् जॆन्नि यानुङ् गण्णनुङ् गमलत् तोनुम्
शॆङ्गैयुङ् गॊट्टि युन्नैच् चिरिप्पराल् शिऱिय नॆन्ना 3175

मङ्कैयै–स्त्री को; कुलत्तुळाळै–कुलीना को; तवत्तियै–तपस्विनी को; मुनिन्तु–क्रोध करके; चङ्कै ऑन्ऱु इन्ऱि–विना किसी हिचक के; वाळाल् कॊन्ऱाल्–तलवार से मारोगे तो; कङ्कै अम् चॆन्नियानुम्–गंगा को अपने सुन्दर सिर पर धारण करनेवाला और; कण्णनुम्–श्रीविष्णु; कमलत्तोनुम्–कमलासन भी; कुलत्तुक्के तक्कान्–(यह राक्षस) कुल के ही योग्य है; ऎन्ऱुम्–ऐसा और; चिऱियन्–क्षुद्र; ऎन्ना–ऐसा कहकर; चॆम् कैयुम् कॊट्टि–लाल हाथ पीटकर; उन्नै चिरिप्पर्–तुम पर हँसेंगे । ३१७५

एक स्त्री को, कुलीना, तपस्विनी, साध्वी को गुस्सा करके विना हिचक के तलवार से काट दो तो क्या सिर पर गंगा को धारण करनेवाला शिव, विष्णु और कमलासन तुम्हारी हँसी नहीं करेंगे ? "यह अवश्य राक्षसकुल योग्य है, अल्प है" कहते हुए तालियाँ न पीटेंगे ? । ३१७५

※ नीरुळ दन्नैयुञ् जूऴ्न्द नॆरुप्पुळ दन्नैयुम् नीण्ड
पारुळ दन्नैयुम् वानप् परप्पुळ दन्नैयुम् कालिन्
पेरुळ दन्नैयुम् बेराप् पॆरुम्बऴि पिडित्ति पोलाम्
पोरुळ दन्नैयुम् वॆन्ऱु पुहऴुळ दन्नैयु मुळ्ळाय् 3176

पोर् उळ तन्नैयुम् वॆन्ऱु–युद्ध जब तक थे तब तक; वॆन्ऱु–जीतकर; पुकऴ् उळ तन्नैयुम् उळ्ळाय्–यशजितने हैं सभी के पात्र; नीर् उळ तन्नैयुम्–जल के रहते तक; चूऴ्न्त नॆरुप्पु उळ तन्नैयुम्–आवृत करनेवाली आग के रहते तक; नीण्ट पार् उळ तन्नैयुम्–विशाल भूमि के रहते तक; वानम् परप्पु उळ तन्नैयुम्–आकाश के विस्तार के रहते तक; कालिन् पेर्–पवन का नाम; उळ तन्नैयुम्–जब तक चलन में रहेगा तब तक; पेरा–अचल; पॆरुम् पऴि–बड़ा अपयश; पिटित्ति पोल् आम्–पकड़ लोगे शायद । ३१७६

युद्ध जितने थे सबमें तुमने जीत पायी । यश जो भी है उस सबके स्वामी ! जल, अनल, विशाल पृथ्वी, आकाश का विस्तार, पवन का नाम —ये जब तक होंगे, तब तक अक्षय रहनेवाली बड़ी निंदा को ग्रहण करोगे शायद ! । ३१७६

तॆळ्ळरुङ् काल कैयर् शिरत्तॊडुन् दिशैक्कण् यानै
वॆळ्ळिय मरुप्पुच् चिन्द वीशिय विशयत् तोळ्वाळ्

वळ्ळिय मरुङ्गुल् शॆव्वाय् मादर्मेल् वॆत्त पोदु
कॊळ्ळुमो दानव् वावि नाणत्ताऱ् कुऱैव दल्लाल् 3177

तॆळ् अरु–परखने में असाध्य; काल केयर् चिरत्तॊटुम्–कालकेयों के सिरों के साथ; तिचैक् कण् यानै–दिशाओं में स्थित गजों के; वॆळ्ळिय–श्वेत; मरुप्पु–दाँतों को; चिन्त–बिखेरते हुए; वीचिय–जो तुमने चलायी; विजयत्तु–विजयदायिनी; ऑळ् वाळ–प्रकाशमय तलवार को; वळ्ळि–लता-सी; अम्–सुन्दर; मरुङ्कुल्–कमर; चॆम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; मातर् मेल्–स्त्रियों पर; वॆत्त पोतु–जब चलाओगे तब; नाणत्ताल्–लाज से; कुऱैवतु अल्लाल्–हीन बनने के सिवा; तान्–वह; अ आवि–उन (स्त्रियों) की जानों को; कॊळ्ळुमो–हर लेगी क्या। ३१७७

तुम्हारी विजयदायी तलवार की वार से परखने में कठिन कालकेयों के सिर और दिग्गजों के श्वेत दाँत टूटकर बिखरे थे। अब उसी को तुम लता-सी सुन्दर कमर और लाल अधरों वाली स्त्री पर चलाओ तो वह शरम से अपने काम में हीन होना (चूकना) छोड़कर क्या उस स्त्री की जान हरेगी ? । ३१७७

निलत्तियल् बन्ऱु वानिन् नॆऱियन्ऱु नीदि यन्ऱु
तलत्तियल् पन्ऱु मेलोर् तरुममे लदुवु मन्ऱु
पुलत्तियन् मरबिन् वन्दु पुण्णिय मरबु पूण्डाय्
वलत्तियल् पन्ऱु मायाप् पळिहॊंडु मरुहु वायो 3178

निलत्तु इयल्पु अन्ऱु–भूमि का स्वभाव नहीं; वानिन् नॆऱि अन्ऱु–स्वर्गधर्म भी नहीं; नीति अन्ऱु–नीति-सम्मत नहीं; तलत्तु–(लंका के) प्रदेश के योग्य; इयल्पु अन्ऱु–स्वभाव नहीं; मेलोर् तरुममेल्–शिष्टों का धर्म कहो तो; अतुवुम् अन्ऱु–वह भी नहीं; पुलत्तियन् मरपिन् वन्तु–पुलस्त्य-कुल में जन्म ले; पुण्णिय मरपु पूण्टाय्–पुण्य-मार्ग अवलंबन किया; वलत्तु इयल्पु अन्ऱु–पराक्रम की पहचान नहीं; माया–अक्षय; पळि कॊंटु–अपयश ग्रहण कर; मरुकुवायो–शोकसंतप्त रहोगे क्या। ३१७८

ऐसा काम न पृथ्वीवासी के योग्य स्वभाव का है, न व्योमलोकवासी के शिष्टों का धर्म मानो तो वह भी नहीं। पुलस्त्यकुल में जन्म लेकर पुण्य मार्ग का अवलंबन तुमने किया है। यह बलवान के लिए योग्य काम नहीं। अमिट अपयश लेकर सदा बेचैन रहोगे क्या ? । ३१७८

इन्ऱुनी यिवळै वाळा लॆऱिन्दुपो यिरामन् ऱन्नै
वॆन्ऱुमीण् डिलङ्गै सूद्द रॆय्दिनै वॆदुम्बु वायो
पॊन्ऱिनळ् शीदै यॆन्ऱे पोवर्ह ळवर्दा मल्लाल्
वॆन्ऱिड मुडिया दॆन्तुम् वीरमो विळम्ब लॆन्ऱान् 3179

नी–तुम; इन्ऱु–आज; इवळै वाळाल् ऎऱिन्तु–तलवार से काटकर; पोय्–

(युद्धरंग) जाकर; इरामन् तन्नै वॅन्ड्र–श्रीराम को परास्त करके; इलङ्कै मूतूर–लंका की प्राचीन नगरी; मीण्ड्म् ॲय्तिनै–लौट आकर; चीतै पोॅन्ड्रिनळ् ॲन्ड्रे–सीता मर गयी कहकर; वॅतुम्पुवायो–संतप्तमन रहोगे; ताम् पोवर्–वे खुद चले जायेंगे; अवर्–वे; वॅन्ड्रिट मुटियातु–जीत नहीं सकेंगे; ॲन्नुम् वीरमो–ऐसा वीरता का उपाय है क्या; विळम्पल्–कहो; ॲन्ड्रान्–कहा। ३१७९

तुम सीता को तलवार से काटो; फिर युद्ध में जाकर राम को जीतकर लंका आओ तो क्या करोगे ? 'सीता मर गयी' इसी विचार को लेकर चिंताकुल रहोगे ? या यह विचार करते हो कि सीता को मारने पर राम-लक्ष्मण स्वयं वापस चले जायँगे। नही तो उनको परास्त करना असंभव है ! क्या यह भी वीरोचित मार्ग है ? बनाओ तो। महोदर ने इतना कहा। ३१७९

ॲन्नलु मॅड्त्त कूर्वा ळिरुनिलत् तिट्टु मीण्डु
मन्नवन् मैन्दन् ऱन्नै माऱ्ऱलर् वलिदिन् कॉण्ड
शिन्नमु मवर्हळ् तङ्गळ् शिरमुङ् गॉण्डन्ऱिच् चेर्हेन्
तॊन्नॅऱित् तयिलत् तोणि वळर्त्तुमि ॲन्ऩच् चोॅन्नान् 3180

ॲन्नलुम्–कहते ही; मन्नवन्–राजा ने; ॲट्टत्त कूर् वाळ्–ली हुई तलवार को; इरु निलत्तु इट्टु–विपुला पृथ्वी पर डालकर; मैन्तन् तन्नै–मेरे पुत्र को (मार); माऱ्ऱलर्–शत्रुओं के; वलिनिन् कॉण्ट–बलात् प्राप्त; चिन्नमुम्–विजयचिह्न (उसके सिर) को; अवर्कळ् तङ्कळ् चिरमुम्–और उनके सिरों को; कॉण्टु अन्ड्रि–विना हरण किये; मीण्टुम् चेर्केन्–वापस नहीं आऊँगा; तोॅल् नॅरि–प्राचीन प्रथा के अनुसार; तयिलत् तोणि वळर्त्तुमिन्–तैल पात्र में रखो; ॲन्न–ऐसा; चोॅन्नान्–कहा। ३१८०

महोदर के यों कहने पर राजा रावण ने हाथ की ली हुई तलवार को नीचे पटक दिया। मेरे पुत्र का वध कर विजय के चिह्न के रूप में उसका सिर बलात् ले अपने पास रखते है शत्रु। उसको और उनके सिरों को लेकर वापस आऊँगा तो आऊँगा। नहीं तो लौट नहीं आऊँगा। इस लाश को पुरानी प्रथा के अनुसार तैलद्रोण में डाल रखो। ३१८०

29. पडैक् काट्चिप् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

अत्तोॅऴि लवरुञ् जॅय्दा रायिडै यन्नैत्तुत् तिक्कुम्
पोॅत्तिय निरुदर् तानै कॉणरिय पोय तूदर्
ऑत्तन रणुहि वन्दु वणङ्गिन रिलङ्गै युन्नूरप्
पत्तियि नमैन्द तानैक् किडमिलै पणियॅन् ड्रार् 3181

अ तोॅऴिल्–वह काम; अवरुम् चॅय्तार्–उन्होंने किया भी; अव् इटै–तब;

अतॅत्तु तिक्कुम्–सभी दिशाओं में; पोंत्तिय–भरी रही; निरुतर् तानै–राक्षस-सेना; कोणरिय पोय तूतर्–लाने जो गये थे, उन दूतों ने; ओंत्तनर् अणुकि वन्तु–एक साथ पास आकर; वणङ्कितर्–नमस्कार करके; इलङ्कै उन् ऊर्–तुम्हारी लंका नगरी में; पत्तियिन्–श्रेणियों में; अमैन्त–रचित; तानैक्कु इटम् इलै–सेना के लिए स्थान नहीं; ॲन् पणि यातु–हमारी सेवा क्या है; ॲन्ड्रार्–पूछा। ३१८१

उन्होंने (नौकरों ने) वह काम किया। तब वे दूत एक साथ आये, जो सभी दिशाओं में भरी रही सेना को लाने गये थे। नमस्कार करके उन्होंने निवेदन किया कि आपकी लंका नगरी में श्रेणी-बद्ध रूप में जो सेना खड़ी है, उसके लिए स्थान ही पर्याप्त नहीं। अब हमारे लिए क्या आज्ञा है ? । ३१८१

एम्बलुर् ॲळुन्द मन्नॅ नॅव्वळि यॅय्दिऱ् ॲन्ऱान्
कूम्बलुऱ् ऱुयर्न्द कैय रॊरुवळि कूऱ लामो
वाम्बुनऱ् परवै येळु मिऱुदियिऩ् वळर्न्द दॅन्नाल्
ताम्बॊडित् तॅळुन्द तानैक् कुलहिड मिल्लै यॅन्ऱार् 3182

एम्पल् उऱ्ऱु–मुदित होकर; ॲळुन्त–जो उठा; मन्नन्–उस राजा ने; ॲव्वळि ॲय्तिऱ्ऱु–कहाँ रहती है; ॲन्ऱान्–पूछा; कूम्पल् उऱ्ऱु–जुड़कर; उयर्न्त कैयर्–जो उठे वैसे हाथों वालों ने; ओरु वळि कूऱल् आमो–एक स्थान निर्धारित किया जा सकता है क्या; वाम् पुनल्–लहरें जिस पर लपक चलती है उस जल के; परवै एळुम्–सातों समुद्र; इऱुतियिल्–युगांत में; वळर्न्तत्तु–उमँग उठे; ॲन्ना–जैसे; ॲळुन्त तानैक्कु–जो सेना उठ आयी है, उसके लिए; उलकु इटम् इल्लै–लोक में स्थान नहीं; ॲन्ऱार्–कहा। ३१८२

मुदित हो राजा उठा। उसने पूछा कि कहाँ आयी है सेना ? हाथ जोड़े सिर पर धरकर दूतों ने कहा, कैसे कहा जाय कि अमुक एक स्थान में है ? तरंगें जिस पर लपकती चलतीं ऐसे जल के सातों सागर युगांत में एक साथ उमँग आये हों; ऐसा निकल आयी इस सेना के लिए इस भू पर स्थान पर्याप्त नहीं है। ३१८२

मण्णुऱ नडन्द तानै वळर्न्दमात् तूळि मण्ड
विण्णुऱ नडक्किन् ऱारु मिदित्तन रेह मेन्मेऱ्
कण्णुऱ लरुमै काणाक् कऱ्पत्तिन् मुडिविऱ् कार्वोल्
ॲण्णुऱ लरिय शेनै यॅय्दिय दिलङ्गै नोक्कि 3183

मण् उऱ–भूमि पर लगी; नटन्त तानै–जो चली उस सेना से; वळर्न्त–उठकर फैली; मा तूळि मण्ट–बड़ा धूलि-पटल भरा, इसलिए; विण् उऱ नटक्किन्ऱारुम्–आकाशचारी भी [illegible] त्तनर्–पैर टेककर; एक–चले; [illegible] मुटिविल्–कल्पांत के; कार् [illegible] मेघों के समान; ॲण्णुऱल् अ

में असंभव; चेत्तै–वह सेना; कण् उऱल् अरुमै काणा–कठिनाई से देखी जाकर; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; मेल् मेल् ऍय्तियतु–उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। ३१८३

भूमि पर पैर रखकर चली वह सेना। पर उससे जो धूलि उठी, वह धूलि-राशियाँ आकाश में भी व्याप्त हो गयीं, तो वहाँ चलनेवालों को भी पैर टेककर चलना पड़ा। कल्पांतकाल के मेघों के समान अपार वह सेना आँखों से देखी न जा सकी। इस स्थिति में वह लंका की तरफ़ उत्तरोत्तर बढ़ती आयी। ३१८३

वाट्टनिन् वयङ्ग मिन्ना मळैयदि तिरुळ माट्टा
ईट्टिय मुरशि नार्प्पै यिडिप्पॆदिर् मुळङ्ग माट्टा
मीट्टिनि युवमै यिल्लै वेलैमीच् चॆन्रु वॆन्निल्
तीट्टिय पडैयु मावु मियानैयुन् देरुञ् जॆल्ल 3184

वाळ् तनित्–तलवार के समान; वयङ्क–शोभने; मळै मिन्ना–मेघों के विद्युत् नहीं; ईट्टिय–एकत्रित; मुरचित् आर्प्पै–भेरियों के नाद के; इटिप्पु–अशनि; ऍतिर् मुळङ्क माट्टा–मुक़ाबले में शब्द नहीं करती; अतिन्–उसके समान; मळै–मेघ; इरुळ माट्टा–काले नहीं रहते; तीट्टिय–पैनाये गये हथियारों वाले; पटैयुम्–पदाति वीर; मावुम्–और अश्व; यानैयुम्–गज; तेरुम्–रथ; चॆल्ल–चलने; वेलै मी चॆन्रु ऍन्निल्–समुद्र पर चले तो; इनि मीट्टु उवमै इल्लै–अब कोई और उपमा नहीं। ३१८४

वीरों की तलवारें चमक उठीं। उसके मुक़ाबले में मेघों की बिजलियाँ कुछ नहीं रह गयीं। एकत्रित भेरियों के नर्दन के आगे वज्र फट नहीं सके। मेघ भी उनके समान काले नहीं रह सके। तीक्ष्ण हथियारों के साथ पदाति वीर अश्व, गज, रथ सभी समुद्र पर चलते आये तो (सेना-सागर की उपमा क्या दी जाय?) अन्य कोई उपमा कहाँ मिले? । ३१८४

उलहिनुक् कुलहु पोय्प्पो यॊन्ऱिनॊन् ऱॊडुङ्ग लुऱ्ऱ
तॊलैवरुन् दानै मेन्मे लॆळुन्ददु तॊडर्न्दु शुऱ्ऱ
निलवित्तुक् किऱैयु मीनु नीङ्गिन निमिर्न्दु निन्ऱान्
अलरियु मुन्दु शॆल्लु माऱुनीत् तञ्जि यप्पाल् 3185

तॊलैवु अरु–अनगिनत; तानै–(वीरों की) सेना के; मेल् मेल् ऍळुन्तु–उत्तरोत्तर बढ़कर; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱ–साथ लगे घेरे आते; उलकिनुक्कु उलकु पोय्–लोक से लोक जा; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु–एक में एक; ऑटुङ्कल् उऱ्ऱ–जा छिप गया; निलवित्तुक्कु इऱैयुम्–राकापति व; मीनुम्–नक्षत्र; निमिर्न्तु–ऊपर उठकर; नीङ्किन–हट गये; अलरियुम्–सूर्य भी; अञ्चि–डरकर; मुन्तु चॆल्लुम्–आगे बढ़ने का; आऱु नीत्तु–मार्ग छोड़कर; अप्पाल् निन्ऱान्–दूर खड़ा रहा। ३१८५

वह अपार सेना उत्तरोत्तर बढ़ती आयी तो एक के ऊपर एक रहने वाले लोक भय से अपना-अपना स्थान छोड़कर दूसरे में छिपने लगे। राकापति और नक्षत्र भी ऊपर चलकर दूर हुए। सूर्य भी भय खाकर अपने मार्ग में आगे जाना छोड़कर एक ओर हट गया। ३१८५

मेऱ्पड विशुम्बै मुट्टि मेरुवित्त् विळङ्गि विण्ड
नाऱ्पॆरु वायि लूडु मिलङ्गैयूर् नडक्कुन् दानै
कार्क्करुङ् गडलै मऱ्ऱोर् कडत्तिडैक् कालन् ऱानै
शोर्प्पदु पोन्ऱदि याण्डुज् जुमैपॊऱा दुलह मॆन्न 3186

मेल् पट–ऊपर छूते हुए; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मेरुवित्त् विळङ्कि–मेरु के समान रहकर; विण्ट–खुले; नाल्–चारों; पॆरु वायिल् ऊटुम्–बड़े द्वारों से; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर की तरफ़; नटक्कुम् तानै–चलती वह सेना; कालन् ताने–यम स्वयं; कार् करु कटलै–काले बड़े सागर को; उलकम् याण्टुम्–लोक कहीं भी; चुमै पॊऱातु–भार वहन नहीं कर सकता; ऍन्न–इस कारण से; मऱ्ऱोर् कटत्तिटै–दूसरे एक घड़े में; चोर्प्पतु–ढाल रहा हो; पोन्ऱतु–ऐसा लगा। ३१८६

ऊपर आकाश को स्पर्श करनेवाले और मेरुसदृश रहनेवाले चारों खुले द्वारों से लंका की तरफ़ जब सेना आयी, तब ऐसा लगा मानो यम काले बड़े सागर को, लोक की कहीं रख लेने में असमर्थता जानकर दूसरे घड़े में उड़ेल रहा हो। ३१८६

नॆरुक्कुडै वायि लूडु पुहुमॆनि नॆडिदु कालम्
इरुक्कुमित् तन्मै यॆन्ना मदिलिनुक् कुम्ब रॆय्दि
अरक्कन्न दिलङ्गै युऱ्ऱ वण्डङ्ग ळनैत्ति नुळ्ळ
करुक्कुल मेह मॆल्ला मॊरुवळिक् कलन्द दॆन्न 3187

नॆरुक्कु उटै–सँकरे; वायिल् ऊटु–द्वार से; पुकुम् ऍनिल्–घुसेंगे कहें तो; इ तन्मै–यह कार्य; नॆटितु कालम् इरुक्कुम्–बहुत काल तक होगा; ऍन्ना–सोचकर; अण्टङ्कळ् अनैत्तिन् उळ्ळ–सारे अण्डों में रहनेवाले; करुमेकम् कुलम् ऍल्लाम्–काले मेघकुल सभी; ऑरु वऴि कलन्ततु ऍन्न–एक स्थान पर एकत्र हों ऐसा; मतिलिनुक्कु–प्राचीर के; उम्पर् ऍय्ति–ऊपर जाकर; अरक्कनतु–राक्षस की; इलङ्कै उऱ्ऱ–लंका में पहुँचे। ३१८७

सँकरे द्वार से घुस जाने में बहुत समय लगेगा—ऐसा सोचकर वह सेना सारे अंडों के सभी काले मेघ एकत्र हुए हों, ऐसा प्राचीरों के ऊपर से राक्षस की लंका में पहुँची। ३१८७

अडुपॊऱ् दरक्कर् कोनु मणिहॊळ्को बुरत्ति नॆय्दिप्
पोदुवुऱ् नोक्क लुऱ्ऱा नॊरुनॆऱि पोहप् पोह

विदिमुऱ् काण्बॆ ऩॆऩ्ऩुम् वेट्कैयाऩ् वेलै येऴुङ्
गदुमॆऩ वॊरुङ्गु नोक्कुम् पेदैयिऩ् कादल् कॊण्डाऩ् 3188

अतु पॊऴुतु–उस समय; अरक्कर् कोऩुम्–राक्षसराज भी; अणिकॊळ्–सौंदर्य-युक्त; कोपुरत्तिऩ् ऎय्ति–गोपुर (मीनार) पर जाकर; वेलै एऴुम्–सातों समुद्रों को; ऒरुङ्कु–एक साथ; कतुमॆऩ–शीघ्र; नोक्कुम्–देखना चाहनेवाले; पेतैयिऩ्–मूर्ख के समान; कातल् कॊण्टाऩ्–इच्छा करके; पॊतु उऱ–आम रीति से; नोक्कल् उऱ्ऱाऩ्–देखने लगा; ऒरु नॆऱि–(दृष्टि) एक मार्ग में; पोक पोक–ज्यों-ज्यों गयी; विति मुऱै–यथाक्रम; काण्पॆऩ्–देखूँगा; ऎऩ्ऩुम्–ऐसी; वेट्कैयाऩ्–इच्छा करने लगा। ३१८८

तब राक्षसराज भी गोपुर (मीनार) के ऊपर गया। उसने सातों समुद्रों को एक साथ जल्दी देखना चाहनेवाले मूर्ख के समान सबको एक साथ देखना चाहा। आम तौर से आँख दौड़ाई। जब दृष्टि एक मार्ग से जा रही थी, तब उसने इच्छा की कि क्रम से देख लूँ। ३१८८

मादिर मॊऩ्ऱि ऩिऩ्ऱु माऱॊरु तिशैमेल् मण्डि
ओदनीर् शॆल्व दऩ्ऩ ताऩैयै युणर्वु कूड
वेदवे दान्दङ् गूऱुम् पॊरुळिऩै विरिक्किऩ् ऱार्पोल्
तूदुव रणिह ळोऱुन् वरऩ्मुऱै काट्टिच् चॊऩ्ऩार् 3189

मातिरम् ऒऩ्ऱिल् निऩ्ऱु–एक दिशा से; माऱु ऒरु तिचै मेल्–दूसरी एक दिशा में; मण्टि–बहुलता से; ओतम् नीर्–समुद्रजल; चॆल्वतु अऩ्ऩ–जाता जैसी; ताऩैयै–सेना को; तूतुवर्–दूतों ने; अणिकळ् तोऱुम्–हर श्रेणी में; उणर्वु कूट–रावण की समझ में आये ऐसा; काट्टि–दिखाकर; वेतम्–वेद; वेतान्तम्–और वेदांत (उपनिषद्); कूऱुम् पॊरुळिऩै–(जिस तत्त्व का) प्रतिपादन करते हैं उस तत्त्व को; विरिक्किऩ्ऱार् पोल–विवृत करते जैसे; वरऩ् मुऱै–यथाक्रम; चॊऩ्ऩार्–कहा। ३१८९

बहते समुद्रजल के समान एक दिशा से दूसरी दिशा को जा रही उस सेना को दूतों ने श्रेणी-श्रेणी रावण को दिखाकर खूब समझाया। वेद-वेदांत-प्रतिपादित तत्त्व का विवरण देते जैसे उन्होंने विस्तार से विवृत किया। ३१८९

शाहत् तीविऩि ऩुऱैबवर् ताऩवर् शमैत्त
याहत् तिऱ्पिऱन् दियैन्दवर् तेवरै यॆल्लाम्
मोहत् तिऱ्पड मुडित्तवर् मायैयिऩ् मुदल्वर्
मेहत् तैत्तॊडु मॆय्यिऩ रिवरॆऩ विरित्तार् 3190

इवर्–ये; चाकत् तीविऩिल्–शाकद्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले हैं; ताऩवर् चमैत्त–दानव-रचित; याकत्तिल् पिऱन्तु–यज्ञ में जन्म लेकर; इयैन्तवर्–बने हैं; तेवरै ऎल्लाम्–सारे देवों को; मोकत्तिल् पट–मोहवश कराकर; मुटित्तवर्–

समाप्त करनेवाले; मायैयिन् मुतल्वर्–माया में अगुए हैं; मेकत्तै तोय्म्–मेघस्पर्शी; मॅय्यिनर्–शरीर वाले; अंन–ऐसा; विरित्तार्–विस्तार किया। ३१९०

"ये शाकद्वीपवासी हैं। दानवकृत यज्ञ से उत्पन्न इन्होंने सभी देवों को मोहमग्न करके उनका नाश किया था। माया रचने में अव्वल हैं। मेघस्पर्शी शरीर वाले हैं।" ऐसा उन्होंने एक पलटन को दिखाकर विवृत किया। ३१९०

कुशैयिन् ऱोविनि नुऱैबवर् कूऱ्ऱुक्कुम् विदिक्कुम्
वशैयुम् वनमैयुम् वळर्प्पवर् वाननाट् टुऱैवार्
इशैयुम् जॅल्वमु मिरुक्कैयु मिळन्ददिङ् गिवराल्
विशेयन् दामॅन निऱ्पन रिवर्नॅडु विऱलोय् 3191

नॅटु विऱलोय्–अति बलवान; इवर्–ये; कुचैयिन् तीवितिल्–कुशद्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले; कूऱ्ऱुक्कुम् वितिक्कुम्–यम और विधि के; वचैयुम् वलुमैयुम्–अपमान और बल को (क्रमशः); वळर्प्पवर्–बढ़ानेवाले; विचयम् ताम् अंन–विजय की मूर्ति जैसे; निऱ्पवर्–रहनेवाले; इवराल्–इनसे ही; वानम् नाटु उऱैवार्–व्योमलोकवासी (देव); इचैयुम्–यश; चॅल्वमुम्–संपत्ति और; इरुक्कैयुम्–वासस्थान; इङ्कु–यहाँ; इळन्ततु–खो चुके। ३१९१

हे अतिबली! ये कुशद्वीपवासी हैं। ये यम का अपयश और विधि का बल बढ़ानेवाले हैं। साक्षात् विजयमूर्ति हैं। इन्हीं के कारण व्योमलोकवासी देवों के यश, धन और वासस्थान उनसे दूर हुए। ३१९१

इलवत् तीविनि नुऱैबव रिवर्हळ् पण्डिमैयाप्
पुलवर्क् किन्दिरन् पॉन्नह रळिदरप् पॉरुदार्
निलवैच् चॅञ्जडै वैत्तवन् वरन्दर निमिर्न्दार्
उलवैक् काडुरु तीयॅन वॅहुळिपॅर् ऱुडयार् 3192

इवर्कळ्–ये; इलवम् तीवितिल्–शाल्मली द्वीप के; उऱैपवर्–वासी; इमैया–अपलक; पुलवर्क्कु इन्तिरन्–देवों के राजा की; पॉन् नकर्–स्वर्णनगरी (अमरावती) को; अळितर–नष्ट करके; पण्टु–पहले; पॉरुतार्–लड़े; निलवै–कलाचन्द्र को; चॅम् चटै–लाल जटा में; वैत्तवन्–जिन्होंने रखा है; वरम् तर–उन शिव के वर देने से; निमिर्न्तार्–उन्नतसिर हुए; उलवै काटु–सूखे तरुओं के जंगल में; उऱु–लगी; ती अंन–आग के समान; वॅकुळि पॅऱ्ऱु उटैयार्–क्रोध बहुत रखनेवाले। ३१९२

ये शाल्मली द्वीप के है। अपलक देवों के राजा की अमरावती को युद्ध में इन्होंने मिटाया था। चंद्रशेखर शिवजी के दिये वरों से उन्नत-सिर हैं। वे सूखे तरुओं के जंगल में लगी आग के समान दारुण कोप करनेवाले हैं। ३१९२

अन्ऱिऱ् ऱीविनि नुऱैबव रिवर् पण्डै यमरर्क्
कॉन्ऱैक् कुम्मिरुन् दुऱैविड माम्बड मेरुक्

कुऩ्ऱैक् कॊण्डु पोय्क् कुरैकड लिडवऱ्क् कुलैन्दोर्
शॆऩ्ऱिऩ् तऩ्मैयॆऩ् तविरु मॆऩ् ऱिरन्दिडत् तीर्न्दोर् 3193

इवर्–ये; अऩ्ऱिल् तीविऩिल्–क्रौंच द्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले; पण्टै अमरर्क्कु–प्राचीन देवों का; ऎऩ्ऱैक्कुम् इरुन्तु–हमेशा से; उऱैविटम् आम्–जो वासस्थान है; वट मेरु कुऩ्ऱै–उस उत्तरी मेरु पर्वत को; कॊण्टु पोय्–ले जाकर; कुरै कटल्–शब्दायमान सागर में; इट–डालने लगे तो; अऱ कुलैन्तोर्–बहुत अस्त-व्यस्त हो; चॆऩ्ऱु–जाकर; इ तऩ्मैयै–इस कार्य को; तविरुम्–दूर करें; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इरन्तिट–प्रार्थना करने पर; तीर्न्तोर्–उसे छोड़ गये। ३१९३

ये क्रौंचद्वीपवासी हैं। प्राचीन देवों के सदा के वासस्थान, उत्तरी मेरु पर्वत को वे उखाड़ लेकर शब्दायमान समुद्र में डालने का उपक्रम कर चुके थे। तब देवों ने अस्त-व्यस्त होकर इनसे प्रार्थना की कि यह कार्य छोड़ दीजिए—तभी जाकर उन्होंने वह कार्य छोड़ा। ३१९३

पवळक् कुऩ्ऱिऩि नुऱैबवर् वॆळ्ळिपण् बऴिन्दोर्
कुवळैक् कण्णियङ् गिराक्कदक् कऩ्ऩियैक् कूड
अवऴिऱ् ऱोऩ्ऱिऩ ऱैयिरु कोडियर् नॊय्दिन्
तिवळप् पाऱ्कडल् वऱळपडत् तेक्किऩर् शिलनाळ् 3194

पवळ कुऩ्ऱिऩिल्–प्रवालपर्वत पर; उऱैपवर्–वास करनेवाले; वॆळ्ळि–शुक्र ने; पण्पु अऴिन्तु–गुण खोकर (कामुक बनकर); ओर्–एक; कुवळै कण्णि–उत्पलाक्षी; इराक्कतर् कऩ्ऩियै–राक्षस-कन्या से; अङ्कु कूट–वहाँ संगम किया; अवऴिल् तोऩ्ऱिऩर्–तब उससे उत्पन्न; ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; तिवळ्–दोलायमान; अ पाल् कटल्–उस क्षीरसागर को; वऱळ् पट–सुखाकर; नॊय्तिऩ्–आसानी से; चिल नाळ् तेक्किऩर्–कुछ दिनों में पी चुके। ३१९४

ये प्रवालपर्वतवासी हैं। शुक्र ने अपना चरित्र खोकर एक राक्षस-कन्या से संगम किया। तब उस स्त्री से ये जनमे। वे दस करोड़ की संख्या के हैं। उन्होंने कुछ ही दिनों में लहरानेवाले क्षीरसागर को पीकर सोख दिया था। ३१९४

कन्द मादऩ मॆऩ्वदिक् करुङ्गडऱ् कप्पान्
मन्द मारुद मूर्वदोर् गिरियदिल् वाऴ्वोर्
अन्दहा रत्तॊडुम् आलहा लत्तॊडुम् बिऱन्दोर्
इन्द वाळॆयिऱ् ऱरक्करॆण् णऱिन्दिल मिऱैव 3195

इऱैव–राजा; इन्त–ये; वाळ् ऎयिऱु–तीक्ष्ण-दंतुले; अरक्कर्–राक्षस; इ करु कटऱ्कु अप्पाल्–इस काले सागर के उस पार; कन्त मातऩम् ऎऩ्पतु–गंधमादन नामक; मन्त मारुतम्–मन्द-मारुत; ऊर्वतु–जिस पर बहता है; ओर् किरि अतिल् वाऴ्वार्–उस गिरि पर रहनेवाले; अन्तकारत्तॊटुम्–अन्धकार और;

आलकालत्तॊट्टुम्-हलाहल (के रंग) के साथ; पिऱन्तोर्-पैदा हुए; ऎण् अरिन्तिलम्-(कितने है) संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

हे राजन्! ये खड्गदंत राक्षस सातों काले समुद्रों के उस पार के मंदमारुत (मलयपवन) युक्त गंधमादन पर्वत पर वास करनेवाले हैं। उनके रंग की दृष्टि से वे अन्धकार व हलाहल के सहोदर है। उनकी संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

मलय मॆन्बदु पॊदियमा मलैयदिऩ् मऱवोर्
निलय मत्तदु शाहरत् तीविडै निऱ्कुङ्
गुलैयु मिव्वुल हॆन्नक्कॊण्डु नाऩ्मुहऩ् कूऱि
उलैवि लीरिदि लुऱैयुमॆन् ऱिरन्दिड वुऱैन्दार् 3196

मलैयम् ऎन्पतु-मलय जो है वह; पॊतिय मा मलै-'पॊदिय' का बड़ा पर्वत है; अतिल्-उस पर के; मऱवोर्-वीर; निलयम्-(इनका) वासस्थान; अत्ततु-वह; चाकरम् तीवु इटै निऱ्कुम्-सागर-मध्य द्वीपों में रहता है; इव् उलकु-यह लोक; कुलैयुम्-मिट जायगा; ऎन्न कॊण्टु-ऐसा सोचकर; नाऩ्मुकऩ्-चतुर्मुख ने; उलैवु इलीर्-अमर लोगो; इतिल् उऱैयुम्-इसमें रहो; ऎन्ऱु कूऱि-ऐसा कहकर; इरन्तिट-प्रार्थना की; उऱैन्तार्-वे वहाँ रहने लगे। ३१९६

इन वीरों का जो 'पॊदिय' नाम के मलयपर्वत में पैदा हुए थे, वासस्थान सागरमध्य द्वीप है। 'इनके वास से भूमि नष्ट हो जायगी', ऐसा सोचकर ब्रह्मा ने उनसे प्रार्थना की थी कि हे अमर लोगो! तुम यहाँ रहो। उनकी प्रार्थना मानकर ये वहाँ रहने लगे थे। ३१९६

मुऱ्क रक्कैयर् सूविलै वेलिऩर् मुशुण्डि
शक्क रत्तिऩर् शाबत्त रॆन्निऩ्ऱ तलैवर्
नक्क रक्कड नालॊरु मूऩ्ऱुक्कु नादर्
पुक्क रप्पॆरुन् दीविडै युऱैबवर् पुहऴोय् 3197

पुकऴोय्-यशस्वी; मुऱ्करम् कैयर्-मुद्गरहस्त हैं; सू इलै वेलिऩर्-त्रिशूली हैं; मुचुण्टि चक्करत्तिऩर्-'मुशुण्डी' और चक्र रखनेवाले है; चापत्तर्-धनु के धारक है; ऎन्ऩ निऩ्ऱ-ऐसे जो हैं; तलैवर्-सरदार हैं; नक्करम् कटल्-नक्र जिनमें रहते है ऐसे समुद्र; नाल् ऒरु मूऩ्ऱुक्कु-चार और तीन (सात) के; नातर्-स्वामी हैं; पुक्करम् पॆरुम् तीवु-पुष्कर नामक द्वीप में; इटै उऱैपवर्-वास करने वाले। ३१९७

हे यशस्वी! ये मुद्गरहस्त हैं! त्रिशूलधारी हैं। 'मुशुंडी' और चक्र के रखनेवाले है। धनुर्हस्त हैं। नक्रों के वासस्थान सातों सागरों के स्वामी है। पुष्करद्वीपवासी हैं। ३१९७

मऱलि यॆप्पण्डु तम्बॆरुन् दाय्शॊल वलियाऱ्
पुऱनि लॆप्पॆरुञ् जक्कर माल्वरैप् पॊरुप्पिऩ्

विऱ्ल्हे उच्चिरै यिट्टय निरन्दिड विट्टोर्
इऱ्लि यप्पॆरुन् दोविडै युऱैबव रिवर्हळ् 3198

इवर्कळ्–ये; इऱ्लि अ पॆरु तीविटै–'इऱ्लि' नामक उस बड़े द्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले हैं; पण्टु–पहले; तम्–अपनी; पॆरु ताय् चॊल–आदरणीय माता के कहने से; पुऱम् निलै–(सातों लोकों के) उस पार रहनेवाली; पॆरु चक्करम् माल् वरै पॊरुप्पिन्–बड़ी चक्रवालगिरि पर; वलियाल्–बल से; मऱलियै–यम को; विऱल् कॆट–निर्बल बनाकर; चिऱै इट्टु–कारा में बन्द करके; अयऩ् इरन्तिट–ब्रह्मा के प्रार्थना करने पर; विट्टोर्–छोड़नेवाले हैं ये। ३१९८

ये 'इऱ्लि' (प्लक्ष !) नाम के बड़े द्वीप के वासी हैं। पहले अपनी मान्य माता की आज्ञा से इन्होंने यम को निर्बल बनाकर लोकों के उस पार के चक्रवाल पर्वत पर बंदी बनाकर रखा था। फिर ब्रह्मा के याचना करने पर उसे छुटकारा दिया। ३१९८

वेदा ळक्करत् तिवर्पण्डु पुवियिडम् विरिवु
पोदा दुन्दमक् कॆळुवहै यायनिन्ऱ पुवऩम्
पादा ळत्तुऱै वीरॆन नान्मुहऩ् पणिप्प
नादा पुक्किरुन् दुऩक्कऩ् बिनालिव णडैन्दार् 3199

नाता–नाथ; वेताळम् करत्तु–'वेताल', पिशाच के-से हाथों वाले; इवर्–ये; पण्टु–पहले; पुवि इटम्–भूलोक; उन् तमक्कु विरिव पोतातु–तुम्हारे (रहने के) लिए विस्तार में पर्याप्त नहीं; एऴु वकैयाय् निन्ऱ पुवऩम्–सप्तविध (अधो) लोकों में एक; पाताळत्तु उऱैवीर्–पाताल में रहो; ऎऩ–ऐसा; नान्मुकऩ्–चतुर्मुख के; पणिप्प–आज्ञा देने पर; पुक्किरुन्तु–प्रवेश करके; उऩक्कु अऩ्पिऩाल्–आप पर प्रेम के कारण; इवण् नटन्तार्–यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

ये, जिनके हाथ वेताल, पिशाच के हाथों के समान हैं, पाताल में रहनेवाले हैं। वहाँ वे इसलिए रहते हैं कि ब्रह्मा ने उनसे कहा था कि तुम लोग सातों (अधो-)लोकों में एक पाताल में रहो, क्योंकि उन्हें डर था कि यह भूमि उनके रहने योग्य विस्तार नहीं रखती। अब वे आपके प्रति प्रेम के कारण यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

निरुदि तन्कुलप् पुदल्वर्निन् कुलत्तुक्कु नेरे
परुदि तेवर्हट् कॆन्नत्तक्क पण्विनर् पानक्
कुरुदि पॆऱ्ऱिल रेऱ्कड लेळ्युङ् गुडिप्पार्
इरुणि रत्तव रॊरुत्तरेळ् मलैयैयु मॆडप्पार् 3200

निरुति तन् कुलम् पुतल्वर्–(ये) 'निर्ऋति' के कुल में आयी संतान हैं; निन् कुलत्तुक्कु नेर्–तुम्हारे कुल के मुक़ाबले के हैं; तेवर्कट्कु–देवों में; परुति ऎन्न तक्क–सूर्य कहने योग्य; पण्पिनर्–गुण वाले है; पानम्–पेय; कुरुति–रक्त; पॆऱ्ऱिलरेल्–न पा सकें तो; कटल् एऴैयुम्–सातों समुद्रों को; कुटिप्पार्–पी लेंगे;

इरुळ् निऱत्तवर्–अन्धकारवर्ण हैं; ओरुत्तर्–एक ही; एळ् मलैयैयुम्–सातों पर्वतों को; ॲट्टप्पार्–उठा देगा। ३२००

ये निर्ऋति के वंश में उत्पन्न वीर हैं। वे आपके कुल का मुक़ाबला करनेवाले हैं। देवों में सूर्य जैसे गुणों वाले हैं। पीने योग्य रक्त न मिले तो सातों समुद्रों को पी लेंगे। काले रंग के इनमें एक एक सात गिरियों को उठा सकेंगे ३२००

पार णैत्तवॅम् बन्ऱियै यन्बिनाऱ् पारत्त
कार णत्तिनि नादियान् पयन्दपैङ् गळ्ळलोर्
पूर णत्तडन् दिशैतोऱु म्निन्दिरन् पुलरा
वार णत्तिनै निऱुत्तियै शूडिनर् वाहै 3201

पार् अणैत्त–भूमि को जिन्होंने गले लगा लिया था उन; वॅम् पन्ऱियै–आकर्षक वराह को; अन्पिनाल्–प्रेम से; पारत्त कारणत्तिनिन्–(भूदेवी ने) देखा, उस कारण से; आतियान् पयन्त–आदिदेव से जनित; पचुमै कळ्ळलोर्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलधारी है; पूरणम्–पूर्ण; तटम् तिचै तोऱुम्–विशाल दिशाओं में; पुलरा–मद जिनका सूखा नहीं है (ताजा है); वारणत्तिनै–अपने उन गजों को; निऱुत्ति–रोककर; वाकै चूटिनर्–विजयमाला पहन लेनेवाले; इन्तिरन् वाकै चूटिनर्–इन्द्र को भी जीतकर विजयमाला पहन ली थी। ३२०१

श्रीमन्नारायण ने वराहावतार लेकर भूदेवी का रक्षण किया था। तब उन्होंने देवी का आलिंगन किया। भूदेवी ने उस सुन्दर रूप को प्रेम की दृष्टि से देखा। उसके फलस्वरूप ये वीर पैदा हुए। इन वीर घंटे-धारी वीरों ने सारी विशाल दिशाओं को जीता था, वहाँ अपने सदा बहनेवाले मदनीरयुक्त गजों को स्थापित किया था और इन्द्र को भी जीत कर 'वाहै' (जयमाला) पहन ली थी। ३२०१

मऱक्कण् वॅञ्जिन मलैयॅन निन्ऱनर् वयवर्
इऱक्कङ् गीळिलाप् पादलत् तुऱैहिन्ऱ विहलोर्
अऱक्कण् तुञ्जिल नायिरम् बणन्दलै यनन्दन्
उऱक्कन् दीर्न्दन तुऱैहिन्ऱ दिवर्नडन् दोऱुक्क 3202

मऱम् कण्–क्रूर आँखों और; वॅम् चिनत्–भयंकर क्रोध के साथ; मलै ॲन निन्ऱ–पर्वत के समान जो रहते है; इ वयवर्–ये वीर; इऱक्कम् कीळ् इला–जिससे नीचे कुछ नहीं ऐसे; पातलत्तु उऱैकिन्ऱ–पाताल में रहनेवाले; इकलोर्–वैरी हैं; इवर्–ये; उऱैकिन्ऱतु–जहाँ रहते हैं वहाँ; नटन्तु ओऱुक्क–चल-फिर कर कष्ट देते हैं, इसलिए; आयिरम् पणम् तलै–सहस्रफणी; अनन्तन्–अनंतनाग को; उऱक्कम् तीर्न्तनन्–निद्रा छोड़नी पड़ी; अऱ–बिलकुल; कण् तुञ्चिलन्–आँखें मूँदी ही नहीं। ३२०२

ये, जो खड़े हैं, क्रूर आँखों और भयानक क्रोध के साथ पर्वतों के समान, पाताल में रहनेवाले द्वेषपूर्ण वीर हैं। इनके आने-जाने से सहस्रफणी

अनंत को निद्रा त्यागना पड़ा और उसकी आँखें बिलकुल झपती ही नहीं। ३२०२

काऴि यैप्पण्डु कण्णुदल् काट्टिय कालै
मूळ मुऱ्ऱिय शिनक्कॉडुन् दीयिडै मुळैत्तोर्
कूऴि हट्कुनल् लुडन्पिऱन् दार्पॅरुङ् गुऴुवाय्
वाऴि मैक्कवुम् वाळॅयि ऱिमैक्कवुम् वरुवार् 3203

पण्टु–पहले; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी ने; काऴियै–कालीदेवी को; काट्टिय कालै–(ऊर्ध्व-तांडव नृत्य) दिखाया तब; मूळ मुऱ्ऱिय–उठाकर जो बढ़ा; चिऩम्–उस क्रोध रूपी; कॊट्टु ती इटै–भयानक अग्नि से; मुळैत्तोर्–आविर्भूत हुए; कूऴिकट्कु–पिशाचों के; नल्–अच्छे; उटऩ् पिऱन्दार्–सहोदर (-सम) हैं; वाळ् इमैक्कवुम्–तलवार चमकाते हुए; वाळ् ऍयिऱु–खड्गदंत; इमैक्कवुम्–चमकाते हुए; पॅरुकुऴुवाय्–बड़ी भीड़ में; वरुवार्–आनेवाले हैं। ३२०३

एक बार भालनेत्र शिवजी ने कालिकादेवी को अपने ऊर्ध्वतांडव-नृत्य दिखाया था। तब उनकी प्रवृद्ध क्रोधाग्नि से उत्पन्न थे ये वीर! पिशाचों के सहोदर! तलवारें और अपने खड्ग-सम वक्र दाँत चमकाते हुए वे बड़ी भीड़ बाँधकर आनेवाले हैं। ३२०३

पावन् दोऩ्ऱिय कालमे तोऩ्ऱिय पऴैयोर्
तीवन् दोऩ्ऱिय मुऴैत्तुणै यॅऩ्ऩत्तॆऱु कण्णर्
कोवन् दोऩ्ऱिडिल् तायैयु मुयिरुणुङ् गॊडियोर्
शावन् दोऩ्ऱिड वडतिशै मेल्वन्दु शार्वार् 3204

चावम् तोऩ्ऱिट–चाप का प्रदर्शन करते हुए; वट तिचै मेल् वन्तु–उत्तरी दिशा में आकर; चार्वार्–जो रहते हैं ये; पावम् तोऩ्ऱिय कालमे–पाप के जन्म के काल में ही; तोऩ्ऱिय–उदित; पऴैयोर्–प्राचीन लोग हैं; तीवम् तोऩ्ऱिय–दीप जिनमें दिखें; तुणै मुऴै ऍऩ्ऩ–ऐसी गुहा के जोड़े के समान; तॆऱु कण्णर्–भयोत्पादक आँखों वाले हैं; कोवम् तोऩ्ऱिटिल्–कोप आया तो; तायैयुम् उयिर् उणुम्–माँ के भी प्राण अशन करनेवाले; कॊटियोर्–क्रूर लोग हैं। ३२०४

ये जो चापहस्त वीर उत्तर दिशा में आ ठहरे हैं, तभी पैदा हुए प्राचीन लोग हैं जब पाप पैदा हुआ था। आँखें देखिए, दीपसहित गुफाओं के जोड़े के समान लगती है। कोप उठा तो माता के भी प्राण पीनेवाले निर्दय हैं ये वीर!। ३२०४

शोऱ्ऱ माहिय वॆम्मुह नुलहॅलान् दोप्पान्
एऱ्ऱ मानुदल् विऴियिडैत् तोऩ्ऱिऩ रिवराल्
कूऱ्ऱ माहिय कॊम्बिऩम् वालुडैक् कॊडुमै
ऊऱ्ऱ माहप्पण् डुदित्तव रॅऩ्ऩवॆ रुवराल् 3205

इवर्–ये; चीऱ्ऱम् आकिय–क्रुद्ध; ऐमुकऩ्–पंचमुख शिव की; उलकु ऍलाम् तीप्पाऩ्–तीनों लोकों को जलाने हेतु; एऱ्ऱ–अपनायी; मा नुतल् विऴि इटै–बड़ी, भाल की आँख से; तोऩ्ऱितर्–उदित हैं; उवर्–उधर जो हैं; ऐम्पाल् उटै–केश वाली; कूऱ्ऱम् आकिय–यम-सी; कोम्पिऩ्–एक स्त्री से; कोटुमै ऊऱ्ऱम् आक–निर्दयता की (आधार) लकड़ी के रूप में; पण्टु उतित्तवर्–पहले पैदा हुए; ऍऩ्पवर्–कहे जाते हैं। ३२०५

ये, जो इधर हैं, पंचमुख शिवजी की भाल की बड़ी आँख से प्रगट हुए जिसको कि उन्होंने त्रिपुर जलाने के लिए क्रुद्ध होकर रच लिया था। उधर वे एक ऐसी स्त्री के उदर से पैदा हुए जो केशवाले यम-सी थी। ३२०५

कालऩ् मार्बुऴैच् चिवऩ्कऴल् पडवऩ्ऱु काऩ्ऱ
वेलै येयऩ्ऩ कुरुदियिल् तोऩ्ऱिय वीरर्
शूल मेऩ्दिमुऩ् निऩ्ऱव रिऩ्निऩ्ऱ तॊहैयार्
आल कालत्ति ऩमिऴ्दिऩ्मुऩ् पिऱन्दपो ररक्कर् 3206

शूलम् एन्ति–शूल ले; मुऩ् निऩ्ऱवर्–सामने जो खड़े हैं वे; कालऩ् मार्पु उऴै–यम की छाती पर; चिवऩ् कऴल् पट–शिव के चरण के प्रहार करसे वक्त; अऩ्ऱु–तब; काऩ्ऱ–(उस छाती ने) जो वमन किया; वेलै अऩ्ऩ–उस समुद्र के समान; कुरुतियिल्–रक्त में; तोऩ्ऱिय वीरर्–उदित वीर हैं; इ निऩ्ऱ तॊकैयार्–यहाँ जो खड़े हैं वह समूह; आल कालत्तिऩ्–हलाहल से; अमिऴ्तिऩ् मुऩ्–और अमृत से पहले; पिऱन्त–जनमे; पोर् अरक्कर्–योद्धा राक्षस है। ३२०६

उधर जो शूल लिये खड़े हैं, वे यम के उस समुद्र-सम रक्त से पैदा हुए जो उसने तब वमन किया था, जब शिवजी ने मार्कण्डेय को बचाने के लिए उसके वक्ष पर लात मारी थी। इधर जो बड़ी भीड़ बाँधे खड़े है, वे हलाहल और अमृत से पहले पैदा हुए योद्धा राक्षस हैं। ३२०६

वडवैत् तीयिऩिल् वाशुहि काऩ्ऱमा कडुवै
इडवत् तीयिडै यॆऴुन्दव रिवर्हण् मऴैयैत्
तडवत् तीयॆऩ निमिर्न्दकुञ् जियरुवर् तऩित्तेर्
कडवत् तीन्दवॆम् बुरत्तिडैत् तोऩ्ऱिय कऴलोर् 3207

इवर्–ये; वाचुकि काऩ्ऱ–वासुकी ने जो उगला; मा कटुवै–उस भीषण विष को; वटवै तीयिऩिल् इट–बड़वाग्नि में डाला गया तब; अ ती इटै–उस अग्नि में; ऍऴुन्तवर्–प्रकट हुए; कणम् मऴैयै–समूहगत मेघों को; तटव–स्पर्श करते हुए; ती ऍऩ–अग्नि के समान; निमिर्न्त–उन्नत; कुञ्चियर्–केश वाले; उवर्–वे; तऩि तेर्–अनुपम रथ को; कटव–(ब्रह्मा के सारथी के रूप में) चलाते; तीन्त–(शिव द्वारा) जलाये गये; वॆम् पुरत्तिटै–भयंकर त्रिपुर में; तोऩ्ऱिय–प्रगट; कऴलोर्–पायलधारी है। ३२०७

जब समुद्रमंथन हुआ तब वासुकी ने बड़ा भयंकर विष वमन किया

था न ! उसको जब वड़वाग्नि में डाला गया, तब जो उस विष से पैदा हुए वे हैं ये ! जब शिवजी ने ब्रह्मा द्वारा चालित रथ पर जाकर त्रिपुर जलाया, तब उस जलते त्रिपुर से जो पैदा हुए वे मेघस्पर्शी केशों वाले वीर उधर खड़े हैं, देखें । ३२०७

इत्तैय रिन्नव रॅत्बदो रळविल रय
निनैय वुङ्गुरित् तुरैक्कवु मरिदिवर् निरैन्द
विनैय मुम्बॅरु वरङ्गळुन् दवङ्गळुम् विळम्बिन्
अत्तैय पेरुह मायिरत् तळविन् मडङ्गा 3208

ऐय–प्रभु; इत्तैयवर्–इतने; इन्नार्–कौन; ऍन्नुपतु ओर् अळवु इलर्–कहें इसकी कोई गिनती नहीं; इवर्–इनके सम्बन्ध में; निनैयवुम्–सोचना; कुरित्तु उरैक्कवुम्–और स्पष्ट कहना; अरितु–कठिन है; इवर्–इनमें; निरैन्त वित्तैयमुम्–भरी वंचनाएँ; पॅरु वरङ्कळुम्–महान वर और; तवङ्कळुम्–तप; विळम्पिन्–कहना हो तो; अत्तैय–वैसे; पेर् उकम् आयिरत्तु–हजार बड़े युगों के; अळविनुम्–परिमाण में भी; अटङ्का–पूरा नहीं हो सकेंगे । ३२०८

प्रभु ! ऐसे वीर कितने, कैसे, कौन —इन सबका कोई हिसाब ही नहीं ! इनके संबंध में सोचना या स्पष्ट विवरण देना कठिन है । इनकी वंचनाएँ, इनसे प्राप्त महान वर, इनके तप आदि कहना चाहें तो हजार बड़े युग भी पर्याप्त नहीं हो सकेंगे । ३२०८

ऑरुवरे शॅन्ररवु वुरुदिरर् कुरङ्गैयु मुरवोर्
इरुव रॅन्ऱवर् दम्मैयु मौरुहैक्कॊण् डॅऱ्ऱि
वरुवर् मऱ्ऱिनिप् पहर्वदॆन् वानवर्क् करिय
तिरुव वॅन्ऱनर् तूदुव रिरावणन् शॅप्पुम् 3209

वानवर्क्कु अरिय–देवदुर्लभ; तिरुव–श्रीमान; ऑरुवरे–एक ही; चॅन्ऱु–जाकर; अव्–उस; उऱु तिऱल् कुरङ्कैयुम्–अति शक्तिमान वानर को और; उरवोर् ऍन्ऱवर्–प्रतापी कहलानेवाले; इरुवर् तम्मैयुम्–दोनों को; ऑरु कै कॊण्टु–एक हाथ में पकड़कर; ऍऱ्ऱि वरुवर्–पीटता आयगा; मऱ्ऱु इनि–और कुछ; पकर्वतु–कहना; ऍन्–क्या; ऍन्ऱनर् तूतुवर्–कहा दूतों ने; इरावणन् चॅप्पुम्–रावण कहने लगा । ३२०९

हे देवदुर्लभ श्री के स्वामी ! इस सेना में एक, एक ऐसे हैं, जो अकेले जाकर उस अति बलवान वानर को और प्रतापी मान्य दोनो नरों को एक हाथ से पकड़कर पीटते हुए ले आ सकता है ! फिर क्या कहना ? दूतों ने यह कहा । तब रावण कहने लगा । ३२०९

ऍत्ति रत्तिदर् कॊण्णॆनत् तोहैवहुत् तियन्ऱ
अत्ति रत्तिनै यऱैदिरॆन् ऱुरैशॆय ववर्हळ्

ऑत्त वॆळ्ळमो रायिर मुळदॆन वुरैत्तार्
पित्तर् इप्पडैक् कॆण्शिऱि दॆन्ऱनर् पॆयर्न्दार् 3210

इतऱ्कु–इस सेना की; ऍण् ऍत्तिऱत्तु–संख्या कितनी; ऍन–ऐसा; तॊकै वकुत्तु इयत्तऱ–संग्रह करके; अ तिऱत्तितै–उस संख्या को; अऱैतिर्–कहो; ऍन्ऱु–ऐसा; उरै चॆय–कहने पर; अवर्कळ्–उन दूतों ने; ऑत्त वॆळ्ळम्–बराबर 'वॆळ्ळम्'; ओर् आयिरम् उळतु–एक हजार की है; ऍन उरैत्तार्–ऐसा कहनेवाले; पित्तर्–पागल हैं; इ पटैक्कु–इस सेना के लिए; ऍण् चिऱितु–संख्या की उच्चतम गिनती जो अब है वह छोटी है; ऍन्ऱनर्–कहकर; पॆयर्न्तार्–हटकर खड़े हो गये। ३२१०

रावण ने पूछा कि इस सेना की संख्या को संग्रह करके कहो। दूतों ने कहा कि पूरे 'वॆळ्ळम्' के हजार हैं, ऐसा कहनेवाले पागल समझे जायँगे, क्योंकि संख्या में उच्चतम गिनती जो है वह इसके लिए कम है, अपर्याप्त है। कहकर वे अलग जा खड़े हुए। ३२१०

पडैप्पॆ रुङ्गुलत् तलैवरैक् कॊणरुदि रॆन्बाल्
किडैत्तु नानवर्क् कुऱ्ऱुळ पॊरुळॆलाङ् गिळत्ति
अडैत्त नल्लुरै विळम्बिन ऩळवळा यमैवुऱ्
ऱुडैत्त पूशनै वरऩ्मुऱै यियऱ्ऱवॆन् ऱुरैत्तान् 3211

नान् किटैत्तु–मैं पास रहकर; अवर्क्कु उऱ्ऱु उळ–उन्हें मिले; पॊरुळ् ऍलाम्–विषय सब; किळत्ति–बताकर; अटैत्त–युक्त; नल् उरै–शिष्ट वचन; विळम्पिन्–कहकर; अमैवुऱ्ऱु–निश्चितता के साथ; अळवळाय्–संभाषण करके; उटैत्त पूचतै–योग्य सत्कार; वरन् मुऱै इयऱ्ऱ–यथाक्रम करने; पटै पॆरु कुलम् तलैवरै–बड़ी संख्या में रहनेवाले सेनापतियों को; ऍन् पाल्–मेरे पास; कॊणरुतिर्–लाओ; ऍन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा कहा। ३२११

रावण ने उनसे कहा। मैं उन्हें अपने पास रखकर उनको होनेवाली सभी बातें बताना चाहता हूँ। निश्चितता के साथ शिष्ट वचन कहकर उनसे संभाषण करने की मेरी इच्छा होती है। और भी यथोचित सत्कार यथाक्रम करने की कामना रखता हूँ। इसलिए तुम लोग जाकर बड़े सेनानायकों के समूह को मेरे पास ले आओ। ३२११

तूदर् कूऱिडत् तिशैतॊऱुन् दिशैतॊऱुन् दॊडर्न्दार्
ओद वेलैयि ऩायह रॆवरुम्वन् दुऱ्ऱार्
पोदु तूविऩर् वणङ्गिऩ रिरावणऩ् पॊलन्ऱाळ्
मोदु मोलियिऩ् पॆरॊलि वाऩ्तै मुट्ट 3212

तूतर्–दूतों के; कूऱिट–कहने पर; ओतम् वेलैयिन्–उमगते सागर-सम विशाल; नायकर् ऍवरुम्–सेनानायक सभी; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; तॊटर्न्तार्–श्रेणीबद्ध हो; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे; इरावणन् पॊलम् ताळ्–रावण के मनोरम चरणों पर; पोतु तूविनर्–पुष्प बिखेरकर; मोतुम् मोलियिन्–टकराने

वाले किरीटों का; पेर् ऑलि–बड़ा शब्द; वातित्तै मुट्ट–आकाश से टकराए, ऐसा; वणङ्कित्तर्–विनत हुए। ३२१२

दूतों ने जाकर सेनानायकों से रावण की इच्छा बतायी। उमगते सागर के समान विशाल सेनानायकों के समूह पंक्तियों में सभी दिशाओं से आये और रावण के पास पहुँचे। उन्होंने रावण के आकर्षक चरणों में पुष्प बरसाये और नमस्कार किया। तब मुकुटों की टकराहट से जो बड़ी ध्वनि उठी, वह आकाश से जा टकरायी। ३२१२

अत्तैय रियावरु मरुहुर्शॅन् ऱडिमुऱै वणङ्गि
विनैय मेवित्त रिनिदिनङ् गिरुन्दोर् वेलै
नित्तैयुम् नल्वर वाहनुम् वरवॅन्न निरम्बि
मनैयु मक्कळुम् वलियरे यॅन्ऱनन् मऱवोन् 3213

अत्तैयर् यावरुम्–वे सभी; अरुकु चॅन्ऱु–पास जाकर; अटि मुऱै वणङ्कि–चरणों में अपनी-अपनी बारी में नमस्कार करके; वित्तैयम् मेवित्तर्–विनय के साथ रहकर; अङ्कु–वहाँ; इनितिन् इरुन्ततु–सुख से रहे; ओर् वेलै–तब; मऱवोन्–पराक्रमी रावण ने; नुम् वरवु–तुम्हारा आगमन; नित्तैयुम्–मेरा हित सोचनेवाला; नल् वरवु आक–शुभ आगमन हो; ॲन्न–कहकर; निरम्पि–मन तृप्ति से भरकर; मनैयुम् मक्कळुम्–पत्नियाँ और संतानें; वलियरे–सकुशल हैं क्या; ॲन्ऱनन्–पूछा। ३२१३

वे सब जब रावण के पास जाकर चरणों में एक-एक करके क्रम से नमस्कार करके सुख से रहे, तब रावण ने स्वागत के वचन कहे। हे वीरो! मेरे हितैषी तुम लोगों का आगमन शुभ हो! फिर सच्चे तृप्त मन के साथ प्रश्न किया कि क्या तुम लोगों की पत्नियाँ और संतानें स्वस्थ हैं?। ३२१३

पॅरिय तिण्बुय नीयुळै तववरम् बॅरिदाल्
उरिय वेण्डिय पॉरुळॅला मुडिप्पदऱ् कॉन्ऱो
इरियल् तेवरैक् कण्डनम् वहैपिऱि दिल्लै
अरिय दॅन्नॅमक् कॅन्ऱन रवन्करुत् तऱिवार् 3214

अवन् करुत्तु–उसका आशय; अऱिवार्–समझनेवाले उन्होंने; पॅरिय–बड़े; तिण् पुयन्–सुदृढ़ कन्धों वाले आप; उळै–हैं; तवम् वरम्–तपस्या से प्राप्त वर; पॅरितु–बड़े हैं; उरिय–युक्त; वेण्टिय पॉरुळ् ॲलाम्–इच्छित मनोरथ सभी; मुटिप्पतऱ्कु–पूरा कर लेना; ऑन्ऱो–कोई (कठिन) बात है क्या; तेवरै–देवों को; इरियल् कण्टनम्–भागते देखा; पकै पिऱितु इल्लै–शत्रु दूसरा नहीं; ॲमक्कु अरियतु ॲन्–हमारे लिए कठिन क्या है; ॲन्ऱनर्–कहा। ३२१४

उसका सच्चा आशय जानकर उन्होंने उत्तर में कहा कि बड़े तथा सशक्त कंधोंवाले आप हैं! आपके तपप्राप्त महान वर हैं! फिर युक्त

और इच्छित मनोरथ पूरा कर लेना कोई कठिन काम है क्या ? हमने देवों को भागते देखा है। फिर शत्रु कोई नहीं है। हमारे लिए असाध्य क्या है ? । ३२१४

माद रार्हळु मैन्दरु नित्मरुङ् गिरुन्दार्
पेदु ऱादव रिल्लैनी वरुन्दिन्नै पॅरिदुम्
यादु कारण मरुळॅन वनैयव रिशैत्तार्
शीदै कादलिऱ् पिऱन्दुळ परिशॅलान् दॅरित्तान् 3215

नित् मरुङ्कु इरुन्तार्–आपके पास रही; मातरार्कळुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तरुम्–पुत्र; पेतुऱातवर् इल्लै–व्यग्र न होनेवाले नहीं है; नी–आप; पॅरितुम्–बहुत ही; वरुन्तिनै–दुःखी हुए; कारणम् यातु–कौन-सा कारण है; अरुळ्–कहने की कृपा करें; ऍन्न–ऐसा; अनैयवर् इचैत्तार्–उन्होंने कहा; चीतै कातलिल्–सीता के प्रेम के कारण; पिऱन्तुळ परिचु ऍलाम्–जो बीता वह सब हाल; तॅरित्तान्–बताया (रावण ने)। ३२१५

हम देखते हैं, आपके पास रही स्त्रियों और पुरुषों (पुत्र आदि) में कोई नही दिखता जो अशान्त नहीं हो ! आप भी बेचैन हैं ! क्या कारण है ? बताने की कृपा करें। —उन्होने ऐसा पूछा। तब रावण ने सीता-प्रेम के फलस्वरूप जो हुआ था वह सारा हाल बता दिया। ३२१५

कुम्ब कन्ननो डिन्दिर शित्तैयुङ् गुलत्तिन्
वॅम्बु वॅञ्जिनत् तरक्कर्दङ् कुळुवैयुम् वॅन्ऱार्
अम्बि नाऱ्चिऱु मनिदरे नत्तुनम् माऱ्ऱल्
नम्ब शेनैयुम् वानर मॅयॅन्न नक्कार् 3216

नम्प–नायक; कुम्पकन्ननोटु–कुंभकर्ण के साथ; इन्तिरचित्तैयुम्–इन्द्रजित् को; कुलत्तिन्–वीरों के कुल में जनमे; वॅम्पुम्–जलनेवाले; वॅम् चिनत्तु अरक्कर् तम्–अति क्रुद्ध राक्षसों के; कुळुवैयुम्–दलों को; अम्पिनाल् वॅन्ऱार्–बाणों से जीतनेवाले; चिऱु मनितरे–छोटे मानव है क्या; नम् आऱ्ऱल् नन्ऱु–हमारा बल भी अच्छा है; चेनैयुम् वानरमो–सेना भी वानर की है क्या; ऍन्न नक्कार्–कहकर हँसे। ३२१६

तब वे हँसने लगे। नायक ! कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् और राक्षसकुल के श्रेष्ठतम भयानक क्रोधी वीर —इन सबको बाणों से मारनेवाले क्या अल्प नर ही हैं ? हमारा बल भी खूब रहा ! सेना भी वानरों की है क्या ? उन्होंने हँसी की। ३२१६

उलहैच् चेडऩ्ऱ तुच्चिनिन् ऱॅडुक्कवन् ऱोरेळ्
मलैयै वेरोडुम् वाङ्गवन् ऱुङ्गैयाल् वारि
अलैहोळ् वेलैयैक् कुडित्तवन् ऱळैत्तदु मलरो
डिलैहळ् कोदुमक् कुरङ्गिऩ्मे लेवक्कॊ लॅम्मै 3217

अऴैत्ततु–हमें बुलाना; उलकै–पृथ्वी को; चेटत् तन्–शेषनाग के; उचत्ति निन्ऱु–सिर पर से; ऍट्कक अन्ऱु–निकालने के लिए नहीं; ओर्–अनुपम; एऴ् मलैयै–सप्तगिरि को; अकम् कैयाल्–हथेली से; वेरोटुम् वाङ्क अन्ऱु–जड़ से उखाड़ लेने नहीं; अलै कोऴ्–तरंग-सहित; वेलैयै–सागर को; वारि कुटिक्क–उठाकर पीने के लिए; अन्ऱु–नहीं; मलरोटु इलैकळ्–पुष्प और पत्र; कोटुम्–खानेवाले; अ–उन; कुरङ्कित् मेल्–वानरों पर; ऍम्मै–हमें; एवक् कोल्–भेजने के लिए क्या। ३२१७

उन्होंने आगे पूछा कि क्या आपने इसलिए नहीं बुलाया कि हम पृथ्वी को आदिशेषनाग के सिर से उठा फेंकें? इसलिए नहीं कि हम अपनी हथेलियों से सप्तगिरि को उखाड़ लें? इसलिए भी नहीं कि हम समुद्र के जल को चुल्लू में भरकर पी लें? पर क्या इसीलिए बुलाया है कि पुष्पपत्राहारी वानरों पर चढ़ जाने को प्रेरित करें? । ३२१७

ऍन्नक् कैयॅऱिन् दिडियुरु मॆऱॆन नक्कु
मिन्नुम् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरक्करै यङ्गैयाल् विलक्कि
वन्नि यॆन्बवन् पुट्करत् तीवुक्कु मन्नन्
अन्न मानिडर् तम्वलि यादॆन वऱॆन्ऱान् 3218

ऍन्न–कहकर; कै ऍऱिन्तु–ताली पीटकर; इटि उरुम् एऩ्ऱु ऍन–अशनिराज के समान; नक्कु–हँसकर; पुट्करम् तीवुक्कु मन्नन्–पुष्कर द्वीप के राजा; वन्नि ऍन्पवन्–वह्नि नाम के (राजा) ने; मिन्नुम्–चमकनेवाले; वॆळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों वाले; अरक्करै–राक्षसों को; अम् कैयाल्–सुन्दर हाथों (के इशारे) से; विलक्कि–चुप कराके; अन्न–वैसे; मानिटर् तम् वलि–नरों का प्रताप; यातु–कैसा; ऍन्न अऱैन्तान्–ऐसा पूछा। ३२१८

ऐसा कहकर ताली पीटकर वे ठठाकर हँसने लगे, तो पुष्कर द्वीप के राजा 'वह्नि' ने उन श्वेतदंतुले राक्षसों को अपने सुन्दर हाथों के इशारे से रोका और रावण से पूछा कि ऐसे उन नरों का वल ही कैसा है?। ३२१८

मऱ्ऱ वाशहङ् गेट्टलुम् मालिय वान्वन्
दुऱ्ऱ तन्मैयुम् मनिदर दूऱ्ऱमु मुडनाम्
कोऱ्ऱ वानरत् तलैवर्दन् दहैमैयुम् कूऱक्
किऱ्ऱुम् केट्टिरा ऍन्ऱवन् किळत्तुवान् किळर्न्दान् 3219

मऱ्ऱु–फिर; अ वाचकम् वेट्टलुम्–वह कथन सुनते ही; मालियवान्–माल्यवान; वन्तु–आकर; उऱ्ऱ तन्मैयुम्–हुआ हाल और; मनितरतु–नरों का; ऊऱ्ऱमुम्–साहस; उटन् आम्–साथ रहनेवाले; कोऱ्ऱम्–विजयी; वानरर् तलैवर्तम्–वानर नायकों की; तकैमैयुम्–योग्यता; कूऱकिऱ्ऱम्–वता सकते हैं; केट्टिर्–सुनिए; ऍन्ऱु–कहकर; अवन्–वह; किळर्त्तुवान्–कहने के लिए; किळर्न्तान्–उठा। ३२१९

उसका प्रश्न सुनकर माल्यवान आगे आया। उसने कहा कि हम यहाँ घटा वृत्तांत, नरों का पराक्रम, साथ रहती वानर-सेना के विजयी नायकों की योग्यता आदि समझा सकेंगे। यह कहकर वह विस्तार से कहने के लिए तैयार हो उठा। ३२१९

परिय तोळुडै विरादन्मा रीशन्नुम् बट्टार्
करिय माल्वरै निहर्कर तूडणर् कदिर्वेल्
तिरिशि रावबर् तिरैक्कड लन्नपॆरुञ् जेनै
ऒरुवि लालॊरु नाळिहैप् पॊऴुदिनि नुलन्दार् 3220

ऒरु विलाल्–एक ही धनु से; परिय–स्थूल; तोळ् उटै–कन्धों वाले; विरातन् मारीचन्तुम्–विराध और मारीच; पट्टार्–मरे; करिय–काले; माल् वरै–बड़े पर्वत; निकर्–के समान; कर तूटणर्–खर और दूषण; कतिर् वेल्–तेजोमय भाले के धारक; तिरिचिरा अवर्–त्रिशिरा नामक वे; तिरै कटल्–तरंग-सहित सागर; अन्न–के सदृश; पॆरु चेनै–बड़ी सेना; ऒरु नाळिकै पॊऴुतिनिल्–एक घड़ी के समय में; उलर्न्तार्–मिटे। ३२२०

राम के एक ही धनु के प्रताप से स्थूलस्कन्ध विराध और मारीच मरे। काले पर्वत के समान खर और दूषण और तेजोमय भालाधारी त्रिशिरा— वे और तरंगसकुल सागर-सम अपनी सेना के साथ एक ही घड़ी की देर में मर मिटे। ३२२०

आऴि यन्ननी रऱितिरन् ऱेकड लनैत्तुम्
ऊऴिक् कालॆनक् कडप्पवन् वालियॆन् बोनै
एऴु कुन्ऱमु मॆड्क्कुरु मिड्क्कनै यिन्नाळ्
पाऴि मार्बहम् बिळन्दुयिर् कुडित्तदोर् पहऴि 3221

आऴि अन्न–समुद्र के समान विशाल; नीर्–तुम लोग; कटल् अनैत्तुम्–सारे सागरों को; ऊऴि काल् ॲन–युगांत पवन के समान; कटप्पवन्–लाँघनेवाले; वालि ॲन्पोनै–वाली जो था उसे; अऱितिर् अन्ऱे–जानते न; एऴु कुन्ऱमुम्–सातों गिरियों को; ॲटुक्कुरुम्–उठा ले सकनेवाला था; मिटुक्कनै–ऐसे उस बलवान को; इनाळ्–इस समय; ओर् पकऴि–एक बाण ने; पाऴि मार्पुअकम्–कठोर वक्ष प्रदेश को; पिळन्तु–चीरकर; उयिर् कुटित्ततु–प्राण पी लिये। ३२२१

तुम लोग, जिनका समूह सागर-सम बड़ा विशाल है, वाली को जानते ही हो, जो सातों समुद्रों को युगांतपवन के समान लाँघ सकता था। सातों गिरियों को उत्पाटित करने की शक्ति रखनेवाले उसके वक्ष को राम के एक बाण ने विदीर्ण करके उसके प्राण पी लिये। यह हाल का समाचार है। ३२२१

इङ्गु वन्दुनीर् विनायदॆ नॆऱितिरैप् परवै
अङ्गु वॆन्दिल दोशिऱि दऱिन्दद्दु मिलिरो

कङ्गै शूडितन् कडुञ्जिलै यॉडित्तवक् कालम्
उङ्गळ् वान्शॅवि पुहुन्दिल दोमुळङ् गोदै 3222

नीर्–तुम लोग; इङ्कु वन्तु–यहाँ आकर; वितायतु एन्–पूछते क्यों; तिरै ऑरि–जिस पर तरंगे टकराती चलती है वह; परवै–समुद्र; अङ्कु वॅन्तिलतो–वहाँ (रामबाण से) जल नहीं उठा क्या; चिऱ्‌ितु अरिन्ततुम् इलिरो–कुछ जाना नहीं क्या; कङ्कै चूटि तन्–गंगाधर के; कटु चिलै–भीषण धनु को; ऑटित्त अ कालम्–(जिस दिन) तोड़ा गया उस दिन; मुळङ्कु ओतै–जो उठा वह शोर; उङ्कळ् वान् चॅवि–तुम्हारे बड़े कानों में; पुकुन्तिलतो–घुसा नहीं था क्या। ३२२२

तुम लोग इधर आकर क्या पूछते हो ? राम ने अपने बाण से समुद्र को जलाया था। तब क्या वहाँ भी समुद्र नही जला ? या तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया था ? गंगाधर के धनु को जिस दिन उसने तोड़ा था, उस दिन जो तुमुल ध्वनि उठी, वह तुम्हारे बड़े कानों में नही घुसी क्या ? । ३२२२

आयि रम्बॅरु वॅळ्ळमुण् डिलङ्गैयि नळविल्
तीयिन् वॅय्यपो ररक्करदम् जेनैअच् चेनै
पोय दन्दहन् पुरम्बुह निऱैन्ददु पोलाम्
एयु मुम्मैनूल् मार्बिन रॅय्दविल् लिरण्डाल् 3223

इलङ्कैयिन् अळविल्–लंका की सीमा में; तीयिन् वॅय्य–अग्नि के समान दारुण; पोर् अरक्कर् तम्–योद्धा राक्षसों की; चेनै–सेना; आयिरम् पॅरु वॅळ्ळम्–हजार बड़े 'वॅळ्ळम्' की; उण्टु–रही; अ चेनै–वह सेना; एयुम्–योग्य; मुम्मै नूल् मार्पिनर्–त्रिसूत्री यज्ञोपवीतवक्ष (राम और लक्ष्मण) द्वारा; ऍय्त–बाण चलाने के लिये प्रयुक्त; इरण्टु विल्लाल्–दो चापों से; अन्तकन् पुरम्–यमपुर; पुक पोयतु–घुस चली; निऱैन्ततु पोलाम्–वहीं भर गयी शायद। ३२२३

लंका की सीमा पर अग्नि से भी भीषण योद्धा राक्षसों की सेना, एक हजार 'वॅळ्ळम्' की, रहती थी। वह बड़ी सेना त्रिसूत्री यज्ञोपवीतधारी राम और लक्ष्मण के शरप्रेरक दो धनुओ के प्रताप से यमपुर में गयी और वहीं समा गयी शायद ! । ३२२३

कॉऱ्‌ऱ वॅञ्जिलैक् कुम्बहन् नलुनुङ्गळ् कोमान्
पॅऱ्‌ऱ मक्कळुम् बिरहत्तन् मुदलिय पिऱरुम्
मऱ्‌ऱै वीररु मिन्दिर शित्तॉडु मडिन्दार्
इऱ्‌ऱै नाळ्वरै यानमऱ् ऱिवरुमे यिरुन्दोम् 3224

कॉऱ्‌ऱम्–विजयी; वॅम् चिलै–भयंकर धनुर्धर; कुम्पकन्तनुम्–कुंभकर्ण और; नुङ्कळ् कोमान्–तुम लोगों के राजा के; पॅऱ्‌ऱ मक्कळुम्–जनित पुत्र (अतिकाय आदि) और; पिरकत्तन् मुतलिय पिऱरुम्–प्रहस्त आदि अन्य; मऱ्‌ऱै वीररुम्–अन्य

वीर; इन्तिर चित्तॉटुम्–इन्द्रजित् के साथ; मटिन्तार्–मर गये; इड्रै नाळ् वरै–आज दिन तक; यानुम् इरु वरुमे–मैं और दो ही; इरुन्तोम्–रह गये है। ३२२४

विजयी व भयंकर धनु रखनेवाला कुंभकर्ण, तुम्हारे राजा के पुत्र (अतिकाय आदि), प्रहस्त आदि, और अन्य वीर सभी इन्द्रजित् के साथ मर गये। आज तक मैं और अन्य दो ही बचे रहे हैं। ३२२४

मूलत् तानैयॅन् ऱुण्डु मुम्मैनू ऱमैन्द
कलच् चेत्तैयिन् वॅळ्ळम्मद् इदऱ्किन्ऱु कुऱित्त
कालच् चॅय्हैयाल् नीर्वन्दु ळीरिनित् तक्क
शीलच् चेत्तैयुज् जेत्तैयिन् शॅय्हैयुन् दॅरिक्किल् 3225

मूलम् तानै–मूलबल; ऑन्ऱु उण्टु–ऐसा एक है; अतु–वह; मुम्मै नूऱु अमैन्त–तीन सौ के; कूलम् चेत्तैयित्–समूहों की सेना; वॅळ्ळम्–का विस्तार है; अतऱ्कु–उस सेना के लिए; इन्ऱु–आज; कुऱित्त–(युद्ध करना) निर्णीत था; कालम् चॅय्कैयाल्–काल के प्रभाव से; नीर् वन्तुळीर–तुम लोग आये हो; इनि–अब; तक्क चीलम् चेत्तैयुम्–योग्य वीरस्वभाव की सेना और; चेत्तैयित् चॅय्कैयुम्–सेना का कार्य; तॅरिक्किल्–कहना हो। ३२२५

मूलवल की सेना है जिसकी संख्या तीन सौ समूहों के 'वॅळ्ळम्' की है। आज का दिन उसके युद्ध के लिए नियत था। समय का कृत्य है कि तुम लोग आ गये हो। अब योग्य वीरों की (शत्रु) सेना तथा उसका कार्य बताना हो— । ३२२५

ऑरुकु रङ्गुवन् दिलङ्गैयै मलङ्गॅरि यूट्टित्
तिरुहु वॅञ्जिनत् तक्कतै निलत्तॉडुन् देय्त्तुप्
पॉरुदु तूदुरैत् तेहिय दरक्कियर् पुलम्बक्
करुदु शेत्तैयाङ् गडलुमाक् कडलैयुङ् गडन्दु 3226

ऑरु कुरङ्कु वन्तु–एक वानर आकर; इलङ्कैयै–लंका को; मलङ्कु ऍरि ऊट्टि–क्षुब्ध करनेवाली आग लगाकर; अरक्कियर् पुलम्प–राक्षसियों के रोते-कलपते; तिरुकु–ऐंठे; वॅम्–भयंकर; चित्तत्तु–क्रोध के; अक्कतै–अक्षयकुमार को; निलत्तॉटुम्–भूमि से; तेय्त्तु–रौंदकर; पॉरुतु–युद्ध करके; करुतु–गण्य; चेत्तै आम् कटलुम्–सेना रूपी सागर को (मिटाकर); तूतु उरैत्तु–संदेश का समाचार देकर; मा कटलैयुम्–बड़े सागर को भी; कटन्तु एकियतु–लाँघ कर चला गया। ३२२६

तो एक वानर लंका में आया। लंका को क्षुब्ध करते हुए आग लगायी। राक्षसियों को रुलाया। बहुत ही क्रोधी अक्षकुमार को भूमि पर डालकर रौंदा। युद्ध किया। गण्य सेना-सागर को नष्ट किया, फिर बड़े समुद्र को लाँघकर चला गया। ३२२६

कण्डिलीर् कॉलाङ् गडलितै मलैहॉण्डु कट्टि
मण्डु पोर्शॅय वानर रियर्ड़िय मार्क्कम्
उण्डु वॅळ्ळमो रॅळुबदु मरुन्दीरु नॉडियिऱ्
कॉण्डु वन्ददु मेरुविऱ् कप्पुरङ् गुदित्तु 3227

कटलितै–समुद्र को; मलै कॉण्टु–पर्वतों से; कट्टि–(सेतु) बाँधकर; मण्टु पोर् चॅय्य–बड़ा युद्ध करने; वातरर् इयर्ड़िय–वानरों द्वारा बनाया गया; मार्क्कम् कण्टिलीर् कॉलाम्–मार्ग (सेतु) नहीं देखा क्या तुमने शायद; वॅळ्ळम् ओर् ॲळुपतु–सत्तर 'वॅळ्ळम्' सेना; उण्टु–उधर है; मेरुविऱ्कु अप्पुरम्–मेरु के उस तरफ़; कुतित्तु–झपटकर; ओरु नॉटियिल्–एक चुटकी की देर में; मरुन्तु–औषध; कॉण्टु वन्ततु–लाया था। ३२२७

क्या तुमने उस सेतु को नहीं देखा, जिसे बड़ा युद्ध करने के लिए वानरों ने पर्वत रखकर वनाया है ? उनके पास सत्तर 'वॅळ्ळम्' की सेना है। एक वानर मेरु के उस तरफ़ उछल गया और एक चुटकी की देर में ओषधि लाया। ३२२७

इडुवि यर्ड़्कैयोर् शीदैयॆन् ड्रिरुन्दवत् तियैन्दाळ्
पॉदुवि यर्ड़्कैदीर् कर्ड़्पुडैप् पत्तिनिप् पॉरुट्टाल्
विदिवि ळैत्तदव् विल्लियर् वॅल्हनीर् वॅल्ह
मुदुमॉ ळिप्पदम् जॉल्लिनॅ नॅन्ड्रुरै मुडित्तान् 3228

इतु–इस युद्ध का; इयर्ड़्कै–होना; ओर् चीतै ॲन्ड्रु–अनुपम सीता नाम की; इरु तवत्तु इयैन्ताळ्–बड़ी तपस्या में लीन रही; पॉतु इयर्ड़्कै तीर्–असाधारण; कर्ड़्पुटै–पातिव्रत्यशीला; पत्तिनि–सती; पॉरुट्टाल्–के निमित्त; विति विळैत्ततु–विधि ने रचा है; अ विल्लियर् वॅल्क–(चाहे) वे धनुर्हस्त वीर जीतें; नीर् वॅल्क–(चाहे) तुम जीतो; मुतु मॉळि–वृद्ध की भाषा में; पतम् चॉल्लिनॅन्–जो हुआ वह बताया मैंने; ॲन्ड्रु–ऐसा; उरै मुटित्तान्–अपनी बात समाप्त की (माल्यवान ने)। ३२२८

यह युद्ध क्योंकर हुआ ? सीता नाम की बड़ी तपस्विनी, असाधारण पतिव्रता सती है। उसी को लेकर विधि ने यह युद्ध रच दिया है ! चाहे वे धनुर्धर जीतें या तुम लोग ही जीतो ! यह है असली हाल जिसका मैं, वृद्ध ने अपनी वाणी में वर्णन किया है ! । ३२२८

वन्नि मन्ननै नोक्किनी यिवरॅला मडिय
ॲन्न कारण मिहल्शॅया दिरुन्ददॆन् ड्रिशैत्तान्
पुन्मै नोक्किनन् नाणिनाऱ् पॉरुविले नॅन्ड्रान्
अन्न देलिनि यमैयुमॅङ् गडनः(ह्) दॅन्ड्रान् 3229

वन्नि–वह्नि ने; मन्ननै नोक्कि–राजा को देखकर; नी–आप; इवर्

ॲलाम् मटिय–इन सबके मरते; इकल् चॅयातु–विना युद्ध किये; इरुन्ततु–रहे; ॲन्न कारणम्–क्या कारण है; ॲन्ड्र–ऐसा; इचॅत्तान्–पूछा; पुन्मै नोक्कितन्–अल्पता का विचार किया; नाणिनाल्–शरम से; पोरुतिलेन्–युद्ध नहीं किया; ॲन्ड्रान्–कहा रावण ने; अन्नतेल्–वैसा है तो; इनि–अब; ॲम् कटन्–हमारा कर्तव्य; अ.'.तु अमैयुम्–वह युद्ध होगा; ॲन्ड्रान्–कहा। ३२२९

यह सुनकर वह्नि ने रावण से पूछा कि इतने लोग मर गये हैं। यह देखते हुए आपके विना युद्ध किये चुप रह जाने का कारण क्या है? रावण ने उत्तर दिया कि शत्रु की क्षुद्रता देखी और लड़ाई की बात सोचते शरम लगी। इसलिए युद्ध करने नहीं गया। तब वह्नि ने कहा कि बात वैसी है तो अब लड़ना हमारा कर्तव्य है! । ३२२९

मूदु णर्न्द विम् मुदुमहन् कूरिय मुयऱ्चि
शीदै यॅन्बवळ् दनैविट्टम् मनिदरैच् चेर्दल्
आदि यिन्ड्रलै शॅय्दक्क दिनिच्चॅय लिळिवाल्
काद लिन्दिर शित्तैया मियाण्डिनिक् काण्डुम् 3230

मूतुणर्न्त–पुरानी बातों के ज्ञाता; इ मुतु मकन्–इस वृद्ध पुरुष से; कूरिय मुयऱ्चि–इंगित प्रयत्न; चीतै ॲन्पवळ् तनै–सीता जो है उसको; विट्टु–छुड़ाकर; अ मनितरै–उन नरों से; चेर्तल्–मिलना; आतियिन् तलै–प्रारंभ में; चॅय् तक्कतु–करणीय था; इनि–अब; चॅयल्–करना; इळिवु–अपमानजनक होगा; कातल् इन्तिरचित्तै–प्रेम के पात्र इन्द्रजित् को; याम्–हम; याण्टु–कहाँ; इनि–आगे; काण्टुम्–देख सकेंगे। ३२३०

पुराने वृत्तांत के ज्ञाता इस वृद्ध के कहे अनुसार प्रयत्न यह होना चाहिए था कि सीता को छुड़ाकर उन नरों से संधि की जाय। पर यह आदि में ही होना चाहिए था। अब करना अपमानजनक होगा। अब हमें इंद्रजित् देखने को कहाँ मिलेगा? । ३२३०

विट्ट मायिनु मादिनै वॅञ्जमम् विरुम्बिप्
पट्ट वीररैप् पॅऱुहिलम् बॅऱुवदु पळियाल्
मुट्टि मऱ्ऱवर् कुलत्तोडु मुडिक्कुव दल्लाल्
कट्ट मत्तोळिल् शॅरुत्तोळि लिनिच्चॅयुङ् गडमै 3231

मातिनै–स्त्री को; विट्टम् आयिनुम्–छोड़ भी देंगे तो; वॅम् चमम्–तुमुल युद्ध; विरुम्पि–चाहकर; पट्ट वीररै–जो मरे उन वीरों को; पॅऱुकिलम्–फिर प्राप्त नहीं करेंगे; पॅऱुवतु पळि–मिलेगा अपयश; मुट्टि–प्रयत्न करके; मऱ्ऱवर्–शत्रुओं को; कुलत्तोटु–सकुल; मुटिक्कुवतु अल्लाल्–समाप्त करने के सिवा; अ तोळिल्–(संधि का) वह काम; कट्टम्–कठिन है; इनि चॅयुम् कटमै–अब करने का कर्तव्य काम; चॅरु तोळिल्–युद्ध का काम है। ३२३१

अब उस स्त्री को छोड़ भी दें तो चाव से युद्ध करके जो मरे उन

वीरों को हम पुनः पा नहीं सकेंगे। जो पायँगे वह अनावश्यक अपयश ही होगा। हाँ कुछ यत्न करें और शत्रुओं को सकुल समाप्त कर दें। इसको छोड़कर संधि करना कठिन काम है। अब कर्तव्य कार्य युद्ध करना ही है! । ३२३१

अॅन्ड्रॅ ऴुन्दन्न रिराक्कद रिरुक्कनी यामे
शॅन्ड्रु मऱ्ऱवर् शिऱ्ऱुडऱ् कुरुदिनीर् तेक्कि
वॅन्ड्रु मीळुदुम् वॅळ्हुदु मेन्मिड लिल्लाप्
पुन्ड्रॊ ऴिऱ्कुल मादुमॅन् ड्रुरैत्तनर् पोनार् 3232

अॅन्ड्रु अॅऴुन्तनन्–कहकर उठा; इराक्कतर्–राक्षस (जो साथ रहे); इ इरुक्क–यहीं रहिए; यामे चॅन्ड्रु–हमीं जाकर; मऱ्ऱवर्–उन नरों के; चिऱ् उडल्–छोटे शरीरों के; कुरुति नीर् तेक्कि–रक्तजल पीकर; वॅन्ड्रु–जीतकर; मीळुतुम्–लौट आयेंगे; वॅळ्कुतुमेल्–लज्जा करके पीछा दिखायेंगे तो; मिटल् इल्ला–बलहीनता का; पुन् तॊऴिल्–अल्प काम करनेवाले; कुलम् आतुम्–कुल के माने जायेंगे; अॅन्ड्रु उरैत्तनर्–ऐसा कहकर; पोनार्–गये। ३२३२

ऐसा कहकर वह्नि उठा। साथ रहे राक्षसों ने उससे कहा कि रहिए आप! हम जायँगे। शत्रु नरों के छोटे शरीरों का रक्त पीकर विजय के साथ वापस आयँगे। अब शरम करके लौटेंगे तो क्षुद्रकर्मी कुल के जात माने जायँगे। ऐसा कहकर वे चले गये। ३२३२

30. मूलबल वदैप् पडलम् (मूलबल-वध पटल)

वान रप्पॅरुञ् जेनैयै यानॊरु वऴिशॅन्
ऱून रक्कुरैत् तुयिरुणॅ नीयिर्पो यॊरुङ्गे
आन मऱ्ऱव रिरुवरक् कोऱ्ऱिरॅन् ऱुरैन्दान्
तान वप्पॅरुङ् गरिहळै वाट्कॊण्डु तडिन्दान् 3233

तानवर् पॅरु करिकळै–दानव रूपी बड़े गजों को; वाळ् कॊण्टु तटिन्तान्–तलवार से जिसने काटा था उस रावण ने; यान् ऑरु वऴि चॅन्ड्रु–मैं एक मार्ग से जाकर; पॅरु–बड़ी; वानरर् चेनैयै–वानरों की सेना को; ऊन् अऱ कुरैत्तु–शरीर काटकर; उयिर् उण्पॅन्–प्राण खा लूंगा; नीयिर्–तुम लोग; ऑरुङ्के पोय्–मिल जाकर; मऱ्ऱवर् आन–शत्रु जो हैं; इरुवरै–उन दोनों को; कोऱ्ऱिर्–मारो; अॅन्ड्रु अऱैन्तान्–ऐसा कहा। ३२३३

दानव रूपी हाथियों का तलवार से विध्वंस जो कर चुका था, उस रावण ने सेनानायकों से कहा कि मैं एक मार्ग से जाकर बड़ी वानर-सेना के शरीर काटकर प्राण पी लूँगा। तुम एक साथ जाओ और दोनों शत्रु नरों को मार दो। ३२३३

ऍऩ्ऩवु रैत्तलु मॅऴुन्दुतम् मिरदमे लेऱिक्
कऩ्ऩदि रैक्कडऱ् चेऩैयैक् कलन्दवु काणा
विऩैय मऱ्ऱिलै मूलमाल् ताऩैयै विरैवो
डिऩैयर् मुऩ्चॅल वेवुहॅऩ् ऱिरावण ऩिशैत्ताऩ् 3234

ऍऩ उरैत्तलुम्–ऐसा कहते ही; ऍऴुन्दु–(सेना नायक) उठे और; तम् इरतम् मेल् एऱि–अपने-अपने रथों पर सवार होकर; कऩै तिरै–शब्दायमान तरंगोंवाले; कडल् चेऩैयै–सागर-सी सेना को; कलन्दतु काणा–एकत्रित देखकर; मऱ्ऱु विऩैयम् इल्लै–अन्य कार्य नहीं; मा मूलम् ताऩैयै–बड़े मूल-बल की सेना को; विरैवोडु–शीघ्र; इऩैयर्–इनके; मुऩ् चॅल्–आगे जाय ऐसा; एवुक–कहो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इचैत्ताऩ्–कहा (रावण ने)। ३२३४

लंकेश के ऐसा कहते ही वे उठे और अपने-अपने रथ पर बैठे। शब्द-तरंग-संकुल सागर-सम सेना को एकत्रित देखकर रावण ने कहा कि अब और कोई काम नहीं। हमारे मूल-बल की बड़ी सेना को इनके आगे जाने को कहो। ३२३४

एवि यप्पॅरुन् दाऩैयैत् ताऩुम्वॆट् टॅऴुन्दाऩ्
तेवर् मॅय्प्पुहऴ् तेय्त्तवन् शिल्लियन् देर्मेऱ्
कावऩ् मूवहै युलहमु मुऩिवरुङ् गलङ्गप्
पूवै वण्णत्तऩ् शेऩैमे लॊरुपुऱम् बोऩाऩ् 3235

तेवर्–देवों के; मॅय् पुकऴ्–सच्चे यश का; तेय्त्तवऩ्–मेटक; अ पॅरु ताऩैयै–उस बड़ी सेना को; एवि–भिजवाकर; ताऩुम्–खुद; वॆट्टु–(युद्ध) चाहकर; ऍऴुन्दाऩ्–उठा; कावऩ्–अपनी रक्षा के अन्तर्गत रहनेवाले; मूवकै उलकमुम्–त्रिविध लोकों और; मुऩिवरुम्–मुनियों के; कलङ्क–डरते; चिल्लि–पहियोंदार; अम् तेर् मेल्–सुन्दर रथ पर (चढ़कर); पूवै वण्णत्तऩ्–(अतसि-) पुष्पवर्ण श्रीराम की; चेऩै मेल्–सेना पर; ऒरु पुऱम्–एक तरफ़ से; पोऩाऩ्–(आक्रमण करने) गया। ३२३५

देवयशमेटक रावण मूलबल को भिजवाकर स्वयं युद्ध की कामना करके उठा और सुंदर पहियोंदार रथ पर आरूढ़ होकर वानर-सेना पर आक्रमण करने गया। तब उसकी रक्षा में रहे तीनों लोक और मुनिगण भयविकंपित हुए। ३२३५

ऍऴुह शेऩैयॆऩ् ऱियाऩैमेल् मणिमुर शॅऱ्ऱि
वऴुविल् वळ्ळुवर् तुऱैतॊऱुम् विळित्तलुम् वल्लैक्
कुऴुवि यीण्डिय दॆऩ्बराऱ् कुवलय मुऴुदुम्
वऴुवि विण्णैयुम् दिशैयैयुम् दडवुमाल् ताऩै 3236

वऴुविल्–त्रुटिहीन; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर्' (ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के)

लोगों ने; चेतं ॲळुक-सेना उठे; ॲन्रु-कहकर; यातं मेल्-हाथी पर; मणि मुरचु-सुन्दर ढिंढोरा; ॲऱ्ऱि-पीटकर; तुऱै तॉऱुम्-सभी स्थानों में; विळित्तलुम्-संदेश फैलाया तब; वल्लै-शीघ्र; कुवलयम् मुळुतुम्-संसार भर; तळुवि-फैलकर; विण्णैयुम्-आकाश को; तिचैयैयुम्-दिशाओं को; तटवुम्-स्पर्श करते हुए जानेवाली; मा तातं-बड़ी सेना; कुळुवि ईण्टियतु-भीड़ लगाकर एकत्रित हुई; ॲन्पर्-लोग कहते थे। ३२३६

ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के निर्दोष कार्यपटु वळ्ळुवर् लोगों ने हाथी पर ढिंढोरा चढ़ाया और 'सेना उठ चले' का संदेशा सर्वत्र फैला दिया। वह सुनकर बड़ी सेना भूमि भर व्याप्त होती हुई आकाश और दिगन्तों से लगती हुई एकत्रित हुई। ऐसा लोग कहते थे। ३२३६

अडङ्गुम् वेलैह ळण्डत्ति ऩहत्तहऩ् मलैयुम्
अडङ्गु मऩ्ऩुयि रत्तुमव् वरैप्पिडै यवैबोल्
अडङ्गुमे मऱ्ऱप् पॆरुम्बडै यरक्कर्द मियाक्कै
अडङ्गु मायवऩ् कुऱळुरुत् तऩ्मैयि ऩल्लाल् 3237

अटङ्कुम्-अंतर्निहित; वेलैकळ्-समुद्रों-सह; अण्टत्तिऩ् अकत्तु-इस अण्ड के अन्दर; अकत् मलैयुम्-विशाल पर्वत और; मऩ्ऩुयिर् अत्तत्तुम्-सभी नित्य जीव; अटङ्कुम्-समाये रहते हैं; मऱ्ऱुम्-और तो; अवै पोल्-उनके समान; अ वरैप्पु इटै-उस प्राचीरवलयित लंका में; पॆरुम् पटै-बड़ी सेना के; अरक्कर् तम् याक्कै-राक्षसों के शरीर; अटङ्कुम्-(तीनों लोक) जिसके अन्दर समाये रहते हैं उस; मायवऩ् कुऱळ् उरु-श्रीविष्णु के वामन रूप के; तऩ्मैयिल् अल्लाल्-प्रकार से नहीं तो; अटङ्कुमे-समाये रह सकेंगे क्या। ३२३७

समुद्र-समाविष्ट ब्रह्मांड के अंदर सभी विशाल पर्वत और नित्यजीव भी समाये रहते हैं। उसी प्रकार उस लंका के अंदर बड़ी राक्षस-सेना के सारे राक्षसों के शरीर समाये रहे! उस छोटी लंका में यह कैसे साध्य हुआ? वह विष्णु के वामन-रूप के अंदर सारे अण्ड के समाविष्ट रहने के प्रकार से हुआ होगा —नहीं तो कैसे? । ३२३७

अऱत्तैत् तिऩ्ऱरुङ् गरुणैयैप् परुहिवे ऱमैन्द
मऱत्तैप् पूण्डुवॆम् बावत्तै मणमबुणर् मणाळर्
निऱत्तुक् कारऩ्ऩ नॆञ्जिऩर् नॆरुप्पुक्कु नॆरुप्पायप्
पुऱत्तुम् बॊङ्गिय पङ्गियर् कालऩुम् बुहळ्वार् 3238

अऱत्तै-धर्म को; तिऩ्ऱु-भोजन बनाकर; अरु करुणैयै-उत्कृष्ट करुणा को; परुकि-पीकर; वेऱु अमैन्त-(धर्म के) विरोध में रहनेवाली; मऱत्तै-क्रूरता को; पूण्टु-(आभरण के रूप में) धारण करके; वॆम् पावत्तै-भयानक पाप से; मणम् पुणर् मणाळर्-विवाह करनेवाले वरपुरुष हैं; कार् अऩ्ऩ-मेघ के समान; निऱत्तु-रंग के; नॆञ्चिऩर्-मन वाले; नॆरुप्पुक्कु नॆरुप्पाय्-आग की आग बनकर;

पुरत्तुम् पोङ्किय–जो बाहर भी उभर आयी हो; पङ्कियर्–ऐसे केशवाले; कालनुम् पुकळ्वार्–यम से भी प्रशंसित (क्रूर) हैं। ३२३८

उस सेना के वीर धर्म के भक्षण करनेवाले श्रेष्ठ थे, करुणा का पान करनेवाले थे। धर्मविरोधी क्रूरता के आभरण से भूषित, वे नृशंस पाप से विवाहित वर थे! काले मेघ-सम काले मनवाले थे। आग की आग बाहर भी प्रकट हो ऐसे केश वाले थे। स्वयं यम भी उसकी प्रशंसा करे, ऐसे (खूनी) थे। ३२३८

नीण्ड तोळ्हळाल् वेलैयैप् पुरञ्जॅल नीक्कि
वेण्डु मीनॊडु महरङ्गळ् वायिट्टु विळुङ्गित्
तूण्डु वानुरु मेर्रिनैच् चॆविदोरुन् दूक्कि
मूण्ड वान्मळै युरित्तुडुत् तुलावरु मूर्क्कर् 3239

नीण्ट तोळ्कळाल्–लम्बे हाथों से; वेलैयै–समुद्र को; पुरम् चॅल–दूर जाय, ऐसा; नीक्कि–हटाकर; वेण्टुम् मीनॊटु–चाही हुई मछलियों के साथ; मकरङ्कळ् मकरों को; वाय् इट्टु–मुख में डालकर; विळुङ्कि–निगलकर; तूण्टु–(मेघ द्वारा) प्रेरित; वान्–आकाश के; उरुम् एर्रिनै–अशनिराज को; चॆवि तोरुम्–कानों में; तूक्कि–(आभरण के रूप में) लटकाकर; वान् मूण्ट–आकाश में उठे; मळै उरित्तु–मेघों को उधेड़कर; उटुत्तु–वस्त्र के रूप में पहनकर; उला वरुम्–सैर करनेवाले; मूर्क्कर्–मूर्ख हैं। ३२३९

वे मूर्ख अपने लंबे हाथों से समुद्र को हटाकर इच्छा भर मछलियों के साथ मकरों को मुख में डालकर निगल लेते। मेघ से निकले अशनिराज को कर्णभूषण के रूप में लटकाकर आकाश के मेघों को उधेड़कर वस्त्र के रूप में पहनकर सैर करनेवाले क्रूर थे। ३२३९

मालव रैक्कुलम् बरलैन मळैक्कुलञ् जिलम्बाक्
कालव रैप्पॆरुम् बाम्बुहॊण् डशैत्तपैङ् गळलार्
मेलव रैप्पडर् कलुळन्वन् कार्रॆनुम् विशैयोर्
नालव रैक्कॊणर्न् दुडन्बिणित् तालन्न नडैयार् 3240

माल् कुलम् वरै–बड़े कुलपर्वत; परल् अॆन–कंकड़ों के सदृश; मळै कुलम्–मेघसमूह; चिलम्पा–पायल-सम; काल् वरै–पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले; पॆरु पाम्पु कॊण्टु–बड़े सर्पों से; अचैत्त–बँधी हुई; पचुमै कळलार्–विचित्र पायल-धारी हैं; मेल् वरै–आकाश की सीमा में; पटर्–उड़नेवाले; कलुळन्–गरुड़ और; वल् कार्रु–सशक्त पवन; अॆनुम्–कहने योग्य; विचैयोर्–वेगवान हैं; नाल् वरै–लटकनेवाले पर्वत को; कॊणर्न्तु–लाकर; उटन् पिणित्ताल् अन्न–साथ बाँधा गया हो; अन्न नटैयार्–ऐसी चाल वाले हैं। ३२४०

उनकी पायलें बड़े कुलपर्वतों को कंकड़ों के रूप में अंदर रखकर मेघकुल के बने हुए नूपुर हैं, जो पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले सर्पों

को रस्सी बनाकर बँधे हुए हैं। उनका वेग गरुड़ और सशक्त पवन का-सा कहा जा सकता है। लटकते मुख वाले पर्वतों के समान गजों को साथ बाँधा गया हो, ऐसी (गंभीर गज की-सी) चाल वाले हैं। ३२४०

उण्णुन् दन्मैय वून्मुऱ्ऱै तप्पिडि नुडऩे
पण्णि निऩ्ऱमा लियानैयै वायिडुम् बशियार्
तण्णि नीर्मुऱ्ऱै तप्पिडिऩ् ऱडक्कैयाऱ् ऱडवि
विण्णिऩ् मेहत्तै वारिवाय्प् पिऴिन्दिडुम् विडायर् 3241

उण्णुम् तऩ्मैय–खाने योग्य; ऊन्–मांसाहार; मुऱ्ऱै तप्पिटिऩ्–समय पर नहीं मिला तो; उटऩे–तुरन्त; पण्णिऩ् निऩ्ऱ–सजे-सजाये जो खड़े हैं; मालि यानैय–बड़े-बड़े हाथियों को; वाय् इटुम्–मुख में डाल लें; पचियार्–ऐसी भूख वाले हैं; तण् इऩ् नीर्–शीतल मधुर जल; मुऱ्ऱै तप्पिटिऩ्–(मिलने का) समय चूक गया तो; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; तटवि–टटोलकर; विण्णिऩ् मेकत्तै–आकाश के मेघों को; वारि–उठाकर; वाय् पिऴिन्तिटुम्–अपने मुखों में निचोड़ लें; विटायर्–ऐसी प्यास वाले हैं। ३२४१

और भी वे ऐसी भूख वाले हैं, जो समय पर मांस न मिलने पर सजे-सजाये खड़े रहनेवाले हाथियों को ही खा लेते; ऐसे प्यासे कि अगर समय पर शीतल तथा मधुर जल नहीं मिले तो हाथों से बड़े मेघों को पकड़कर अपने मुख में निचोड़ लेते। ३२४१

उऱैन्द मन्दर मुदलिय किरिहळै युरुव
ऎऱिन्दु वेनिलै काण्बव रिन्दुवा लियाक्कै
शॊऱिन्दु तीर्वुऱ तिऩविनर् मलैहळैच् चुऱ्ऱि
अऱैन्दु कट्ऱमात् तण्डिन रशऩियि ऩार्प्पार् 3242

उऱैन्त–(भूमि पर) स्थिर रहनेवाले; मन्तरम् मुतलिय–मंदर आदि; किरिकळै–गिरियों को; उरुव ऎऱिन्तु–भेदकर चलें ऐसा चलाकर; वेल् निलै–भालों की (तीक्ष्णता की) स्थिति को; काण्पवर्–परखनेवाले हैं; इन्तुवाल्–चन्द्र से; याक्कै–शरीर को; चॊऱिन्तु–खुजलाकर; तीर्वुऱ तिऩविनर्–खुजलाहट शांत करनेवाले हैं; मलैकळै–पर्वतों पर; चुऱ्ऱि अऱैन्तु–घुमा-पटकाकर; कट्ऱ–जो सीखी गयी; मा तण्टिनर्–ऐसी गदा विद्या वाले हैं; अचनियिऩ् आर्प्पार्–अशनि के समान गरजनेवाले। ३२४२

वे अपने भालों की तीक्ष्णता को भूधरों को भेदकर चले, ऐसा फेंककर परखनेवाले हैं। खुजलाहट हो तो चंद्र द्वारा खुजलाकर उसे शांत कर लेते। गदा का अभ्यास घुमाकर पर्वतों पर पीटकर करनेवाले हैं। ३२४२

शूलम् वाङ्गिडिऱ् चुडर्मऴु वॆऱिन्दिडिऱ् चुडर्वाळ्
कोल वॆञ्जिलै पिडित्तिडिऱ् कॊऱ्ऱवेल् कॊळ्ळिन्

शाल वाऩ्तण्डु तरित्तिडिर् चक्करन् दाङ्गिन्
कालन् मालृशिवन् कुमरन्तन् इवरैयुङ् गडुप्पार् 3243

चूलम् वाङ्किटिल्–शूल हाथ में लें; चुटर् मऴु–(चाहे) प्रकाशमय परशु; ऎऱिन्तिटिल्–चलायें; चुटर् वाळ्–या चमचमाती तलवार; कोलम्–आकर्षक; वॆम् चिलै–भयंकर धनु; पिटित्तिटिल्–धारण करें; कॊऱ्ऱम् वेल् कॊळ्ळिऩ्–या विजयी भाला लें; चालवाऩ्–बहुत बड़ा; तण्टु तरित्तिटिल्–दण्ड लें; चक्करम् ताङ्किऩ्–या चक्रायुध को धारण करें; कालऩ्–यम; माल्–श्रीविष्णु; चिवऩ्–शिव; कुमरऩ्–कार्तिकेय (मुरुगन); ऎऩ्ऱ इवरैयुम्–आदि इनको भी; कटुप्पार्–समानता करेंगे। ३२४३

वे चाहे शूल को लें, या तेजोमय परशु; चाहे चमचमाती तलवार लें या सुन्दर भयंकर धनु का व्यवहार; विजयी भाला धारण करें या बड़ी गदा; या चाहे चक्रायुध हाथ में लें —तब वे यम, विष्णु, शिव और मुरुगन (षण्मुख या कार्तिकेय का तमिऴ नाम) की भी बराबरी कर सकेंगे। ३२४३

ऑरुव रेवल्ल रोरुल हत्तिनै वॆल्ल
इरुवर् वेण्डुव रेऴुल हत्तैयु मिरुक्कत्
तिरिव रेलुडन् तिरितरु नॆडुनिलञ् जंव्वे
वरुव रेलुडन् कडल्हळुन् दॊडर्न्दुपिन् वरुमाल् 3244

ओर् उलकत्तित्तै–एक लोक को; वॆल्ल–जीतने; ऑरुवरे वल्लर्–(उनमें) एक (एक) ही समर्थ हैं; एऴ् उलकत्तैयुम्–सातों लोकों को; इरुक्क–मिटाने के लिए; इरुवर् वेण्टुवर्–दो ही पर्याप्त है; तिरिवरेल्–घूमें तो; नॆटु निलम्–बड़ी भूमि; उटऩ् तिरि तरुम्–उनके साथ घूमेगी; चॆव्वे वरुवरेल्–सीधे आयें तो; उटऩ्–साथ; कटल्कळुम्–समुद्र भी; तॊटर्न्तु–साथ लगे; पिऩ्वरुम्–पीछा करते आयेंगे। ३२४४

एक लोक को जीतने के लिए एक ही पर्याप्त है। सातों लोकों को मिटाना हो तो दो ही चाहिए! वे जब घूमते है, तव विशाल भूमि भी घूम जाय! सीधे आवें तो समुद्र साथ लगे पीछा करके आये। ३२४४

मेह मॆत्तनै विरिञ्जन्ऱ ण्डत्तु विरिन्द
नाह मॆत्तनै यत्तनै नळिर्मणित् तेर्हळ
पोह मॆत्तनै यत्तनै पुरवियि ऩीट्टम्
आह मॆत्तनै यत्तनै यवऩ्पडै यवदि 3245

विरिञ्चन् तऩ्–विरंचि के; अण्टत्तु–अण्ड में; विरिन्त मेकम् ऎत्तनै–विवृत मेघ जितने; अत्तनै नाकम्–उतने हाथी; अत्तनै–उतने; नळिर् मणि–शब्द करनेवाली घंटियों वाले; तेर्कळुम्–रथ; पोकम् ऎत्तनै–भोग जितने प्रकार के; अत्तनै–उतने; पुरवियिऩ् ईट्टम्–अश्वों के झुण्ड; आकम्–शरीर; ऎत्तनै–जितने; अत्तनै–उतना; अवऩ् पटै अवति–उसके पदाति वीरों का परिमाण। ३२४५

विशाल ब्रह्माण्ड में फैले हुए जितने मेघ हैं उतने हाथी थे। उतने ही क्वणनशील घंटियों-सहित रथ थे। जितने भोग के प्रकार हैं, उतने अश्व थे। शरीर जितने है, उतने पदातिक वीरों का परिमाण था। ३२४५

इन्न तन्मैय यानैते रिवुळियॅन् ऱिवऱ्ऱिन्
पन्नु पल्लणम् मरुममऱ् ऱुरुप्पॉडु पलवुम्
पॉन्नु नन्नॅडु मणियुङ्गॉण् डल्लदु पुनैन्द
शिन्न मुळ्ळन विल्लन मॅय्म्मुऱ्ऱुन् दॅरिन्दाल् 3246

इन्न तन्मैय–ऐसे; यानै–हाथी; तेर्–रथ; इवुळि–अश्व; ॲन्ऱ इवऱ्ऱिन्–आदि इनके; मॅय् मुऱ्ऱुम् तॅरिन्ताल्–शरीरों को पूर्ण रूप से जानना चाहें तो; पन्नुम्–उल्लेखनीय; पल्लणम्–ऊपर के आसन; पल उऱुप्पोटु–अनेक अंगों के साथ; मरुमम्–मर्मस्थान; पॉन्नुम्–स्वर्ण और; नल् नॅटु मणियुम् कॉण्टु–श्रेष्ठ और बड़े-बड़े नगों को; अल्लतु–छोड़; चिन्नम् उळ्ळन इल्लन–चिह्न-चिह्नों के सहित नहीं थे। ३२४६

ऐसे गजों, रथों और अश्वों के शरीरों पर खूब दृष्टि डालेंगे तो आसन क्या, अन्य अंग क्या और मर्मस्थान क्या— सर्वत्र स्वर्ण और रत्नों का अलंकार था। उससे हीन कोई भाग नहीं दिखायी दिया। ३२४६

इप्पॅ रुम्बडै यॅळुन्दिरैत् तेऴमे लॅऴुन्द
तुप्पु नीर्त्तन तूळियिन् पडलमोत् तूर्प्पत्
तप्पिल् कार्निऱन् दविर्न्दद्रु करिमदन् दळुव
उप्पु नीङ्गिय दोङ्गुनीर् वीङ्गॉलि युवरि 3247

इ पॅरु पटै–यह विशाल सेना; ॲळुन्तु इरैत्तु–उठकर शोर मचाती हुई; एक–गयी तो; ॲळुन्त–जो उठी; तुप्पु नीर्त्तन–प्रवाल-सी; तूळियिन्–लाल धूलि का; पटलम्–पटल; मी तूर्प्प–ऊपर ढँक गया, इसलिए; तप्पु इल्–अमोघ; कार्–मेघ भी; निऱम् तविर्न्तनु–अपना रंग खो गये; करि–हाथियों के; मतम् तळुव–मदनीर के फैलने से; ओङ्कु नीर्–अधिक जल-पूर्ण; वीङ्कु ऑलि–और अधिक ध्वनियुक्त; उवरि–समुद्र; उप्पु नीङ्कियतु–नमक से हीन हो गया। ३२४७

इस सेना के कोलाहल के साथ उठकर चलने पर प्रवालवर्ण धूल उठी। उसका पटल सबको ढँक गया। इसलिए अमोघ काले मेघों का असली रंग दूर हो गया। गजों का मदनीर समुद्र में भर गया। इसलिए अधिक जल और शब्द से युक्त समुद्र नमकीन नहीं रह गया। ३२४७

मलैयुम् वेलैयु मऱ्ऱुळ पॉरुळ्हळुम् वानोर्
निलैयु मप्पुरत् तुलहङ्गळ् यावैयु निरम्ब

उलैवु ऱावहै युण्डुपण् डुमिळ्न्दपे रॊरुमैत्
तलैवऩ् वायॊत्त विलङ्गैयिऩ् वायिल्हळ् तरुव 3248

तरुव–(मूलबल) निकालनेवाले; इलङ्कैयिऩ् वायिल्कळ्–लंका के द्वार; मलैयुम्–पर्वत और; वेलैयुम्–समुद्र और; मऱ्ऱु उळ पॊरुळ्कळुम्–अन्य जो हैं वे पदार्थ; वाऩोर् निलैयुम्–देवों का वासस्थान और; अप्पुऱत्तु उलकङ्कळ्–दूर रहनेवाले लोक; यावैयुम्–सभी; उलैवु उऱा वकै–नष्ट न हो जायँ, ऐसे; निरम्प–अपने पेट में भरकर; पण्डु उण्टु–पहले निगल लेकर; उमिळ्न्त–बाद जो उगले; पेर्–बड़े; ऒरुमै तलैवऩ्–अद्वितीय भगवान के; वाय् ऒत्त–मुख के समान रहे। ३२४८

जिससे यह सेना निकल आती वह लंका का द्वार उन अद्वितीय ईश्वर के मुख के समान था, जिन्होंने पर्वत, समुद्र, अन्य पदार्थ, देवों का वासस्थान, दूर के लोक —इन सभी को अक्षय रखने के विचार से पहले निगलकर बाद को उगला था। ३२४८

कडम्बॊ ऱामदक् कळिऱुतेर् परिमिडै कालाळ्
पडम्बॊ ऱामैयि ऩऩ्दलै यऩन्दनुम् बदैत्ताऩ्
विडम्बॊ ऱादिरि यमरर्पोऱ् कुरङ्गिऩ मिदिक्कुम्
इडम्बॊ ऱामैयुऱ् ड्रिरिन्दुपोय् वडकरै यिरुत्त 3249

कटम् पॊऱा–गालों से न रुककर निरन्तर बहनेवाले; मतम्–मदनीरस्रावी; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–(और) अश्व; मिटै–सटे हुए; कालाळ्–पदाति वीर (इनका भार); ततम् तलै–बड़े सिर का; अनन्तऩुम्–अनन्तनाग भी; पटम् पॊऱामैयिऩ्–फनों पर वहन न कर सकने के कारण; पतैत्ताऩ्–छटपटाया; विटम् पॊऱातु–विष न सह सककर; इरि–भागनेवाले; अमरर् पोल्–देवों के समान; कुरङ्कु इतम्–वानर-सेना; मितिक्कुम् इटम्–पैर जहाँ रखे खड़े थे, वहाँ; पॊऱामै उऱ्ऱु–वहाँ खड़ा न रह सककर; इरिन्तु पोय्–अलग जाकर; वट करै इरुत्त–उत्तरी किनारे पर ठहर गये। ३२४९

अनवरुद्ध मदनीरस्रावी गज, रथ, अश्व, सटे रहे पदातिक वीर —इन सबके भार को अनन्तनाग अपने बड़े सिरों के फनों पर ढो नहीं सका; अतः छटपटाया। हलाहल को (देखना भी) न सह सककर जैसे देव उस दिन भागे थे, वैसे ही वानर वीरों की भीड़ अपने-अपने स्थान में स्थिर खड़ी नहीं रह सकी। वे भागे और समुद्र के उत्तरी किनारे पर जा रह गये। ३२४९

आऴि माल्वरै वेलिसुऱ् ऱिडवहुत् तमैत्त
एऴ् वेलैयु मिडुवलै यरक्करे यिऩ्मा
वाऴि कालऩुम् विदियुम्वॆव् विऩैयुमे मळ्ळर
तोऴ मामदि लिलङ्गैमाल् वेट्टमेऱ् ऱॊडर्न्दार् 3250

आऴि माल् वरै–चक्रवालगिरियाँ; वेलि चुऱ्ऱिट–चहारदीवारी के समान घेरे रहें; वकुत्तु अमैत्त–ऐसे बने; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्रों में; वलै इटु–जाल डालने का स्थान है; अरक्करे इऩम् मा–राक्षस ही समूहों में प्राणी हैं; कालऩुम् वितियुम्–यम और विधि; वॆन्मै वितैयुम्–निर्दय प्रारब्ध; मऴ्ऴर्–आखेटक वीर हैं; मा मतिल् तोऴम्–ऊँचे प्राचीरों के अन्दर रहे (लंका के) बाड़े में; मेल् वेट्टम् तॊटर्न्ततार्–उत्कृष्ट शिकार का काम करते थे। ३२५०

चक्रवाल-गिरियों की चहारदीवारी के अन्दर बने सातों समुद्र ही जाल डालने का स्थान हैं। राक्षस ही शिकार के प्राणी हैं। यम, विधि और भयंकर प्रारब्ध ही आखेटक हैं। इन्होंने ऊँची दीवारों से घिरी लंका के बाड़े के अन्दर शिकार का कार्य बराबर किया। ३२५०

आर्त्त वोशैयो वलङ्गुते राऴियि ऩदिर्प्पो
कार्त्तिण् माल्करि मुऴक्कमो वाशियिऩ् कलिप्पो
पोर्त्त पल्लियत् तरवमो नॆरुक्किऩाऱ् पुऴुङ्गि
वेर्त्त वण्डत्तै वॆडित्तिडप् पॊलिन्दवु मेन्मेल् 3251

नॆरुक्किऩाल्–भीड़ के कारण; पुऴुङ्कि–जलन का अनुभव करके; वेर्त्त–पसीने से तर होनेवाले; अण्टत्तै वॆटित्तिट–अण्डगोल को फाड़ते हुए; मेल् मेल् पॊलिन्ततु–उत्तरोत्तर बढ़ा; आर्त्त ओचैयो–(वीरों की) गर्जन ध्वनि क्या; अलङ्कु–हिल-डलकर चलनेवाले; तेर् आऴियिऩ्–रथों के चक्रों की; अतिर्प्पो–गड़गड़ाहट क्या; कार्–काले; तिण्–तगड़े; माल् करि–बड़े गजों की; मुऴक्कमो–चिंघाड़ थी क्या; वाचियिऩ्–अश्वों की; कलिप्पो–हिनहिनाहट क्या; पोर्त्त–इन सबको दबाकर निकला; पल् इयत्तु–विविध बाजों का; अरवमो–शब्द था क्या। ३२५१

भीड़ में तपकर स्वेद से भरकर अंड फट जाय, ऐसा मजबूर किया पदातिकों के उत्तरोत्तर बढ़नेवाले गर्जन ने? या हिल-डुलकर चलनेवाले रथों के पहियों की गड़गड़ाहट की ध्वनि ने? या काले तगड़े बड़े गजों की चिंघाड़ ने? या अश्वों की हिनहिनाहट ने? या इन सब शब्दों को दबाकर जो उठा, उस विविध वाद्यों के सम्मिलित स्वर ने? । ३२५१

वऴङ्गु पल्पडै मीऩदु मदकरि महरम्
मुऴङ्गु हिऩ्ऱदु मुरितिरैप् परियदु मुरशम्
तऴङ्गु पेरॊलि कलिपपदु तऱुकण्मा निरुदप्
पुऴुङ्गु वॆञ्जिऩच् चुरवदु निऱैपुडैप् पुणरि 3252

निऱैपु उटै–भरपूर; पुणरि–वह सेना-सागर; वऴङ्कु–प्रयोग योग्य; पल् पटै मीऩतु–विविध हथियार रूपी मीनों का था; मत करि–मत्त गजों के; मकरम् मुऴङ्कु किऩ्ऱतु–मकरों की ध्वनि का; मुरि–टूटनेवाली; तिरै परियतु–तरंगों रूपी अश्वों का; मुरचम् तऴङ्कु–भेरियाँ जो उठाती हैं; पेर् ऑलि–वह तुमुल स्वर; कलिप्पतु–स्वरित करनेवाला है; तऱुकण्–निडर; मा निरुतर्–बड़े राक्षसों के;

पुळुङ्कुम् वॆञ्चित्तम्–संतापक कठोर क्रोध रूपी; चुऱावतु–'शुऱा' नामक बड़े प्राणियों का है। ३२५२

भरपूर उस सेना-सागर की मछलियाँ विविध हथियार थीं, जो प्रयोग योग्य थे। मत्तगज मकर थे, जो शब्द कर रहे थे। तीर से टकराकर टूटनेवाली लहरें ही अश्व थीं। भेरियों की ध्वनि उसका गर्जन था। बड़े निडर राक्षस वीरों का कुढ़न-सहित क्रोध ही 'शुऱा' नामक (खूनी) मछलियों का समूह था। ३२५२

तशुम्बिऱ् पॊङ्गिय तिरळ्पुयत् तरक्कर्दन् दातै
पशुम्बुऱ् ऱण्डल मिदित्तलिऱ् करिपडु मदत्तिन्
अशुम्बिऱ् चेऱ्पट् टळऱ्पट् टमिऴ्मा लडङ्ग
विशुम्बिऱ् चेऱ्लिऱ् किडन्ददव् विलङ्गत्मे लिलङ्गै 3253

अव् विलङ्कल् मेल् इलङ्कै–उस (त्रिकोण) पर्वत पर रही लंका; पचुम् पुल्–हरी घास की; तण् तलम्–शीतल भूमि को; तचुम्पिल् पॊङ्किय–घड़ों के समान खिले; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धोंवाले; अरक्कर् तम् तानै–राक्षसों की सेना; मितित्तलिन्–पैरों से रौंदती है, इसलिए और; करि पट्–गजों से बह निकलते; मतत्तिन्–मदनीर से; अचुम्पिन् चॆऱ् पट्टु–फिसलती भूमि की मिट्टी के समान; अळऱ् पट्टु–पंक बनकर; अटङ्क अमिऴुम्–सभी को डुबो देती है; विचुम्पिल्–आकाश में; चेऱ्लिन्–चले गये, इसलिए; किटन्ततु–यों पड़ी रही। ३२५३

उस त्रिकोण पर्वत की लंका के हरी घासों से भरे शीतल स्थानों को घड़ों के समान पुष्ट कंधोंवाले राक्षस अपने पैरों से रौंद रहे थे। उस पर गजों का मदनीर बह रहा था। अतः वहाँ इतना पंक बन गया कि सारी लंका एक साथ मग्न हो जाय। पर सब आकाश में पहुँच गये थे, अतः वह सुरक्षित रह गयी। ३२५३

पडियैप् पार्त्तनर् परवैयैप् पार्त्तनर् पडर्वान्
मुडियैप् पार्त्तनर् पार्त्तनर् नॆडुन्दिशै मुऴुदुम्
विडियप् पार्प्पदोर् वॆळ्ळिडै कण्डिलर् मिडैन्द
कॊडियैप् पार्त्तनर् वेर्त्तनर् वानवर् कुलैन्दार् 3254

वानवर्–देवों ने; पटियै पार्त्तनर्–भूमि को देखा; परवैयै पार्त्तनर्–समुद्र को देखा; पटर्–विस्तृत; वान् मुटियै–आकाश की चोटी को; पार्त्तनर्–देखा; नॆटु तिचै मुऴुतुम्–लम्बी सारी दिशाओं को; पार्त्तनर्–देखा; मिटैन्त–सटी रहनेवाली; कॊटियै पार्त्तनर्–ध्वजाओं को देखा; विटिय पार्प्पतु–सेना से हीन देखने योग्य; ओर् वॆळ् इटै–एक खाली स्थान; कण्टिलर्–नहीं देखा; वेर्त्तनर्–पसीने से भर गये; कुलैन्तार्–काँप गये। ३२५४

देवों ने वहाँ दृष्टि डाली। भूमि, सेना, विस्तृत आकाश की चोटी,

लम्बी दिशाएँ, सटी रहनेवाली ध्वजाएँ —सभी पर दृष्टिपात किया। सब जगह सेना ही सेना थी। कोई सेना से रिक्त स्थान नहीं देख सके। ३२५४

उलहिऩ् नामला वुरुवॆला मिराक्कद वुरुवा
अलहिल् पल्पडॆ पिडित्तमर्क् कॆऴुन्दवो अऩ्ऱेल्
विलहु नीर्त्तिरै वेलॆयो रेऴुम्बोय् विदियाल्
अलहिल् पल्लुरुप् पडॆत्तऩ वोवॆऩ वयिर्त्तार् 3255

उलकिऩ्–संसार में; नाम् अला–हमारे अलावा; उरु ऎलाम्–रूप सब; इराक्कतर् उरुवा–राक्षस बनकर; अलकु इल्–असंख्य; पल् पटै पिटित्तु–विविध हथियार धारण करके; अमर्क्कु ऎऴुन्तवो–युद्धसन्नद्ध हो उठे क्या; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; विलकुम्–हटनेवाले; नीर् तिरै वेलै–जलतरंगसागर; ओर् एऴुम् पोय्–सातों जाकर; वितियाल्–क्रम से; अलकु इल्–अपार; पल् उरु–विविध रूप; पटैत्तऩवो–धर गये क्या; ऎऩ–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय में पड़ गये। ३२५५

इन्हें यह संशय हो गया कि क्या हमारे सिवा सभी जीव राक्षस बनकर अपार और विविध हथियार लेकर लड़ने आ गये? या नहीं तो क्या विच्छिन्न होनेवाले स्वभाव के जल और लहरों से भरे सातों समुद्र एक साथ क्रम से अनेक रूप धर गये? । ३२५५

नडुङ्गि नञ्जडै कण्डत्तै वाऩवर् नम्ब
ऒडुङ्गि याङ्गरन् दुऱ्ऱ्विड मऱिहिल मुयिरैप्
पिडुङ्गि युण्गुव रियारिवर् पॆरुमैपण् डऱिन्दार्
मुडिन्द दॆम्वलि यॆऩ्ऱऩ रोडुवान् मुयल्वार् 3256

वाऩवर्–देवता लोग; नञ्चु अटै कण्टत्तै–विषकंठ से; नटुङ्कि–भय से काँपकर; नम्प–नायक; याम्–हम; ऒटुङ्कि–दबकर; करन्तु–छिपकर; उऱ्ऱु इटम्–रहने का स्थान; अऱिकिलम्–नहीं जानते; उयिरै पिटुङ्कि–प्राण हथिया लेकर; उण्कुवर्–खा लेंगे; इवर् पॆरुमै–इनका बड़प्पन; पण्टु–पहले से; अऱिन्तार् यार्–कौन जानता है; ऎम् वलि–हमारी शक्ति; मुटिन्तत्तु–समाप्त हो गयी; ऎऩ्ऱऩर्–कहते हुए; ओटुवाऩ् मुयल्वार्–भागने का यत्न करने लगे। ३२५६

देव डर गये। उन्होने विषकंठ के पास जाकर निवेदन किया कि हे नाथ! हम डर से जा छिपे रहें, ऐसा स्थान भी कहीं नहीं दिखता। वे हमारे प्राण नोचकर खा लेंगे। इनका बड़ा बल पहले से कौन जानता है? हमारी शक्ति समाप्त हो गयी। यह कहते हुए वे भागने भी लग गये। ३२५६

ऒरुव रैक्कॊल्ल वायिर मिरामर्वन् दॊरुङ्गे
इरुव दिऱ्ऱिरण् डाण्डुनिऩ् ऱमर्शॆय्दा लॆऩ्ऩाम्
निरुद रैक्कॊल्व दिडम्बॆऱ्ऱो रिडैयिनिऩ् ऱऩ्ऱो
पॊरुव दिप्पडै कण्डतम् मुयिर्पॊऱुत् तऩ्ऱो 3257

ऑरुवर् कॉल्ल–(इनमें) एक को मारना हो; आयिरम् इरामर्–एक सहस्र राम; ऑरुङ्के वन्तु—एक साथ आकर; इरु पतिऩ्ऩ् इरण्टु आण्टु–चौबीस साल; निऩ्ऱु–रहकर; अमर् चॅय्ताल्–युद्ध करें तो भी; ॲन् आम्–क्या होगा; निरुतरै कॉल्वतु–राक्षसों को मारना हो; इटम् पॅऱ्ऱु–स्थान पाकर; ओर् इटॅयिल्–एक ओर; निऩ्ऱु अऩ्ऱो–खड़ा रहकर न; पॉरुवतु–युद्ध करना; इ पटै कण्टु–यह बड़ी सेना देखकर; तम् उयिर्–अपने प्राण; पॉऱुत्तऩ्ऱो–रखने पर न। ३२५७

उन्होंने आगे कहा— हज़ार राम आयें और चौबीस वर्ष युद्ध करें तो भी क्या कर सकेंगे ? इनमें एक को भी मार सकेंगे क्या ? हम निशाचरों की मारने की बात सोचें भी तो खड़ा रहने के लिए स्थान मिले तभी न सोचा जा सके ? स्थान भी मिल जाय तो भी इतनी बड़ी सेना को देखने के बाद प्राण स्थिर रखने की शक्ति हो तभी न युद्ध किया जाय ? । ३२५७

ॲऩ्ऱि रैञ्जलु मणिमिडऱ् ऱिऱैवऩु मिऩ्ऩिनीर्
ऑऩ्ऱु मञ्जलिर् वञ्जतै यरक्करै यॉरुङ्गे
कॉऩ्ऱु नीक्कुमक् कॉऱ्ऱव निक्कुल मॅल्लाम्
पॉऩ्ऱु विप्पदोर् विदितन्द दामॅऩप् पुहऩ्ऱान् 3258

ॲऩ्ऱु इऱैञ्चलुम्–ऐसा (निवेदन करके) विनय दिखाने पर; मणि मिटऱु–रत्नकण्ठ; इऱैवऩुम्–ईश्वर ने भी; इऩि–आगे; नीर् ऑऩ्ऱुम् अञ्चलिर्–तुम लोग कुछ मत डरो; अ कॉऱ्ऱवऩ्–वह विजय वीर; वञ्चतै अरक्करै–वंचक राक्षसों को; ऑरुङ्के–एक साथ; कॉऩ्ऱु नीक्कुम्–मारकर मिटा देंगे; इ कुलम् ॲल्लाम्–इस सारे कुल को; पॉऩ्ऱुविप्पतु–मरवाने; ओर् विति–एक विधि का; तन्ततु आम्–इधर लाने का विधान था; ॲऩ पुकऩ्ऱाऩ्–ऐसा कहा। ३२५८

इस भाँति जब उन्होंने कहकर विनय की, तब नीलमणिकंठ ने आश्वासन दिया। तुम लोग आगे कुछ मत डरो ! वह विजय वीर इन वंचक राक्षसों को एक ही क़िस्त में मार देंगे। राक्षसकुल के सारे लोगों को विधि ने ही एक दम मरवाने के लिए इधर एकत्रित लाकर छोड़ा है ! । ३२५८

पुऱ्ऱि निऩ्ऱुवल् लरविनम् बुऱप्पडप् पॉरुमि
इऱ्ऱ दॅम्वलि यॅऩ्ऩविरैन् दिरिदरु मॅलिपोल्
मऱ्ऱै वानरप् पॅरुङ्गडल् पयङ्गॉण्डु मऩ्ऱिक्
कॉऱ्ऱै वीरर्प् पार्त्तिल दिरिन्दवु कुलैवाल् 3259

पुऱ्ऱिऩ् निऩ्ऱु–बिल से; वल् अरवु इऩम्–सबल सर्पों का झुण्ड; पुऱप्पट–जब निकला तब; पॉरुमि–व्यग्र होकर; ॲम् वलि इऱ्ऱतु–हमारी शक्ति छूट गयी; ॲऩ्ऩ–कहकर; विरैन्तु–शीघ्र; इरि तरुम्–अस्त-व्यस्त भागनेवाले; ॲलि पोल्–चूहों के समान; मऱ्ऱै वानरम्–अन्य वानरों का; पॅरु कटल्–बड़ा सागर; पयम् कॉण्टु–भय खाकर; मऱुकि–भ्रमित होकर; कॉऱ्ऱम् वीरर्–विजयी वीरों (श्रीराम-लक्ष्मण)

की; पार्त्तिलतु–परवाह न करके; कुलैवाल्–भयकम्पन के साथ; इरिन्ततु–भाग गया। ३२५९

जब बिल से सर्पकुल निकलते हैं, तब चूहों के दल भय से व्यग्र होकर यह सोचते हुए जल्दी भाग जाते हैं कि अब हमारा बल छूट गया। उसी भाँति वानरों की वह बड़ी सेना भयातुर और विक्षुब्ध होकर विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण की हस्ती का खयाल भी किये विना अस्त-व्यस्त हो भाग गयी। ३२५९

अणैयिन् मेऱ्चॆन्ऱ शिलशिल वाऴियै नीन्दप्
पुणैहळ् तेडिन शिलशिल नीन्दिन पोन
तुणैह ळोडुम्बुक् कऴुन्दिन शिलशिल तोन्ऱाप्
पणैह ळेऱिन मलैमुऴैप् पुक्कन पलवाल् 3260

चिल–कुछ; अणैयिन् मेल्–सेतु के ऊपर; चॆन्ऱ–गये; चिल–कुछ; आऴियै नीन्त–समुद्र तरने; पुणैकळ् तेटिन–डोंगी खोजने लगे; चिल चिल–कुछ-कुछ; नीन्तिन पोन–तैरते गये; चिल–कुछ; तुणैकळोटुम्–साथियों के साथ; पुक्कु अऴुन्तिन–घुसकर डूब गये; चिल–कुछ; तोन्ऱा–अदृश्य; पणैकळ् एऱिन–डालियों पर चढ़ गये; पल–अनेक; मलै मुऴै–पर्वत की गुफाओं में; पुक्क–घुसे। ३२६०

कुछ वानर वीर सेतु पर भागे। कुछ समुद्र पार करने डोंगी खोजने लगे। कुछ-कुछ तैरते गये। कुछ साथियों के साथ डूब गये। कुछ छिपे-छिपे शाखाओं पर चढ़ बैठे। अनेक वानर पर्वत-गुहाओं में घुस गये। ३२६०

अडैत्त पेरणै यळित्तदु नमक्कुयि रडैय
उडैत्तुप् पोदुमा लवर्तॊड रामलॆन् ऱुरैत्त
पुडैत्तुच् चॆल्हुवर् विशुम्बिनु मॆन्ऱन पोदोन्
पडैत्त तिक्कॆलाम् बरन्दन रॆन्ऱन पयत्ताल् 3261

अटैत्त पेर् अणै–समुद्र बाँधने के लिए रचे गये बड़े सेतु ने; नमक्कु उयिर् अळित्ततु–हमें प्राण दिये; अवर् तॊटरामल्–वे (राक्षस) पीछा न कर पायें ऐसा; अटैय उटैत्तु–पूरा तोड़कर; पोतुम्–जायेंगे; ऍन्ऱु उरैत्त–ऐसा कुछ वानरों ने कहा; विचुम्पितुम्–आकाश में; पुटैत्तु चॆल्कुवर्–पीटकर जायेंगे; ऍन्ऱन–ऐसा कहा; पोतोन् पटैत्त–ब्रह्मा-सर्जित; तिक्कु ऍलाम्–सभी दिशाओं में; परन्तनर्–राक्षस फैले हैं; ऍन्ऱन–कहा कुछ वानरों ने। ३२६१

"हमने जो रचा था, उस बड़े सेतु ने हमें प्राण दिलाये, इस पर से राक्षस हमारा पीछा करने आ सकते हैं। इसलिए हम इसे पूर्ण रूप से तोड़ दें।" ऐसा कुछ मर्कटों ने कहा। कुछ वानर डरे कि वे हमें आकाश में भी पीट चलेंगे। कुछ रोये कि ब्रह्मा-रचित सभी दिशाओं में राक्षस व्याप्त हैं। ३२६१

अरियिन्   वेन्दनु   मनुमनु   मङ्गद   नवनुम्
पिरिय   हिड्रिल   रिड्रैवनै   निन्ड्रलर्   पिन्ड्रार्
इरिय   लुड्रडार्   मड्रैयो   रियावरु   मॅड्रिनीर्
विरियुम्   वेलैयुङ्   गडन्दडु   नोक्किनन्   वीरन् 3262

अरियिन् वेन्तनुम्–वानराधिपति; अनुमनुम्–और हनुमान; अङ्कतनु अवनुम्–और अंगद; इड्रैवनै–भगवान श्रीराम से; पिरियकिड्रिलर्–अलग नहीं हुए; पिन्ड्रार् निन्ड्रलर्–बिना छोड़ जाए खड़े रहे; मड्रैयोर् यावरुम्–अन्य सभी; इरियल् उड्रनर्–तितर-बितर हो गये; ऍड्रि नीर्–तरंग फेंकनेवाला जल; विरियुम् वेलैयुम्–जिसमें भरा था वह समुद्र भी; कडन्ततु–विस्थापित हुआ; वीरन् नोक्किनन्–वीर श्रीराम ने देखा। ३२६२

वानरराज सुग्रीव, हनुमान और अंगद श्रीराम से अलग नहीं हुए। बिना पीठ दिखाकर भागे वे स्थित थे। अन्य सभी तितर-बितर हो गये। तरंगताडित जल का समुद्र भी अपनी स्थिति में अस्थिर हुआ। श्रीराम ने यह सब देखा। ३२६२

इक्कॉ   डुम्बडै   यॅङ्गुळ   दियम्बुदि   यॅन्ड्रान्
मॅय्क्कॉ   डुन्दिडल्   वीडणन्   विळम्बुवान्   वीर
तिक्कु   नैत्तिलु   मेळुमाल्   तीविनुन्   दीयोर्
पुक्क   ळैत्तिडप्   पुहुन्दुळ   दिराक्कदप्   पुणरि 3263

इ कॉटुम् पटै–यह भीषण सेना; ऍङ्कु उळतु–(अब तक) कहाँ रही; इयम्पुति–कहो; ऍन्ड्रान्–पूछा श्रीराम ने; मॅय्–सच्चा; कॉटुम् तिड्रल्–भयंकर बली; वीटणन्–विभीषण; विळम्पुवान्–बोला; वीर–वीर; तिक्कु अनैत्तिनुम्–सारी दिशाओं में; एळु मा तीविनुम्–सातों द्वीपों में; तीयोर्–दुष्ट; पुक्कु अळैत्तिट–प्रवेश कर बुला लाये; इराक्कतर् पुणरि–राक्षस-सेना-सागर; पुकुन्तु उळतु–आ पहुँचा है। ३२६३

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि विभीषण! यह सेना रही कहाँ? बताओ। तब सच्चे और क्रूर बलवान ने कहा कि हे वीर! दुष्ट राक्षस सभी दिशाओं और सात द्वीपों में जाकर इस सेना-सागर को बुला लाये हैं। ३२६३

एळॅ   नप्पडुङ्   गीळुळ   तलत्तिनिन्   ड्रेड्रि
ऊळि   युड्रिय   कडलॅनप्   पुहुन्दडु   मुळदाल्
वाळि   मड्रवन्   मूलमात्   तानैयुन्   दवव
आळि   वेड्रिनि   यप्पुड्रत्   तिल्लैवा   ळरक्कर् 3264

एळ् ऍन पटुम्–सात कहलानेवाले; कीळ् उळ–नीचे के; तलत्तिनिन्ड्रु–(पाताल) तल से; एड्रि ऊपर आकर; ऊळि उड्रिय–युगान्त के; कटल् ऍन–

समुद्र के समान; पुकुन्ततुम्–जो प्रवेश कर गयी, वह सेना भी; उळतु–इसमें मिली है; मुन् वरुव–सामने आती हुई (सेना); मऱ्ऱवन्–और उसकी; मूलम् मा तानै–मूलवल की बड़ी सेना है; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों की; आऴि–सागर-सी सेना; इत्ति–अब; अ पुऱत्तु–उधर; वेऱु इल्लै–कुछ अन्य (बाक़ी) नहीं है; वाऴि–जय हो। ३२६४

इसमें नीचे के सात लोकों में पाताल से युगांत के समुद्र के समान जो सेना आयी है, वह भी शामिल है। सामने जो आती है, वह लंकेश की मूलवल की सेना है! क्रूर राक्षसों की, सागर-सी इस सेना के अलावा उधर कुछ बाक़ी नहीं है। जयजीव! । ३२६४

ईण्डिव् वण्डत्ति लिराक्कद रॆन्नुम्बॆय रॆल्लाम्
मूण्डु वन्ददु तीविनै मुन्निन्ऱु मुडुक्क
माण्डु वीऴ्मिन् ऱॆन्गिन्ऱ दॆन्मदि वलियूऴ्
तूण्डु हिन्ऱदॆन् ऱडिमलर् तॊऴुदवन् शॊन्नान् 3265

तीविनै–बुरे कर्म (-फल) के; निन्ऱु–स्थित रहकर; मुन् मुडुक्क–आगे ठेलने से; इव् अण्टत्तिल–इस अण्डगोल में; इराक्कतर् ऎन्नुम्–राक्षस के; पॆयर् ऎल्लाम्–नामधारी सभी; ईण्टु मूण्टु वन्ततु–यहाँ मिल आये हैं; वलि ऊऴ्–प्रतापी प्रारब्ध; तूण्टुकिन्ऱतु–प्रेरित करता है; इन्ऱु–(इसलिए) अभी; माण्टु वीऴ्म्–मर जायेंगे; ऎन्किन्ऱतु–ऐसा कहता है; ऎन् मति–मेरा मन; ऎन्ऱु–कहकर; अटि मलर् तॊऴुतु–चरण-कमल की वंदना करके; अवन्–उस विभीषण ने; चॊन्नान्–कहा। ३२६५

बुरे कर्मफल के स्थित होकर आगे ठेलने से इस अंडगोल में रहनेवाले राक्षसनामधारी सभी यहाँ मिलकर उत्साह के साथ उठ आये हैं। प्रतापी प्रारब्ध प्रेरित करता है। इसलिए वीरों की यह सेना मर मिटेगी। ऐसा मेरा मन कहता है। विभीषण ने श्रीराम के चरण-कमलों की वन्दना करके यों कहा। ३२६५

केट्ट वण्णलु मुऱुवलुञ् जीऱ्ऱमुङ् गिळरक्
काट्टु हिन्ऱनन् काणुदि यॊरुकणत् तॆन्ना
ओट्टिन् मेऱ्कॊण्ड तानैयैप् पयन्दुडैत् तुरवोय्
मीट्टि कॊल्लॆन वङ्गद नोडिनन् विरैन्दान् 3266

केट्ट अण्णलुम्–यह सुनकर महिमामय श्रीराम के; मुऱुवलुम्–मंदहास और चीऱ्ऱमुम्–क्रोध; किळर–प्रकट करके; ऒरु कणत्तु–एक ही क्षण में; काट्टुकिन्ऱनन्–दिखा दूंगा; काणुति–देखो; ऎन्ना–कहकर; उरवोय्–ताक़तवर; ओट्टिन् मेल् कॊण्ट–भगदड़ पर उतारू; तानैयै–सेना को; पयम् तुटैत्तु–भय दूर करके; मीट्टि कॊल्–लौटा लाओ; ऎन–कहने पर; अङ्कतन् विरैन्तान्–अंगद शीघ्र; ओटिनन्–दौड़ा। ३२६६

महिमावान श्रीराम ने जो यह सुना तो उनका एक ओर मंदहास

प्रगट हुआ और दूसरी ओर क्रोध उठा। उन्होंने कहा कि खैर ! एक क्षण में इसकी स्थिति जो होगी दिखा दूँगा। देखोगे। फिर अंगद को आज्ञा दी कि हे बलवान ! जो भागने पर उतारू है उस सेना को भय दूर करके लौटा लाओ। अंगद शीघ्र दौड़ा। ३२६६

शॅन्ऱु शेत्तैयै युऱ्ऱनन् शिऱैशिऱै कॅडुवीर्
निन्ऱु केट्टपि नीङ्गुमि नॅन्ऱच्चॉल्लि नेर्वान्
ऑन्ऱुङ् गेट्किल मॆन्ऱदक् कुरक्किन मुरैयाल्
वॆन्ऱि वॆन्दिऱऱ् पडैप्पॆरुन् दलैवर्हळ् मीण्डार् 3267

चॆन्ऱु–जाकर; चेत्तैयै उऱ्ऱनन्–सेना के पास पहुँचा; चिऱै चिऱै–इधर-उधर; कॅट्टवीर्–धैर्य खोकर भागनेवाले; निन्ऱु केटट पिन्–स्थित होकर सुनने के बाद; नीङ्कुमिन्–(भागना हो तो) भागो; ऍन्ऱ चॉल्लि–ऐसा कहकर; नेर्वान्–आगे भी बोला; अ कुरक्कितम्–उस वानरदल ने; ऑन्ऱुम् केट्किलम्–कुछ नहीं सुनेंगे; ऍन्ऱतु–कहा; उरैयाल्–वचनकुशलता से; वॆन्ऱि–विजय और; वॆम् तिऱल्–अधिक बल के साथ रहे; पटै पॆरुम् तलैवर्कळ्–बड़े सेनानायक; मीण्टार्–लौट आये। ३२६७

अंगद ने सेना के पास जाकर कहा कि हे अधीर होकर इधर-उधर भागनेवाले ! सुनो मेरी बात ! यदि भागना हो तो भागो ! उसने धैर्य के वचन कहे। पर वानर-सेना ने साफ़ कह दिया कि हम कुछ न सुनने के। पर अंगद ने अपनी वचनपटुता का प्रयोग किया तो बड़े विजयी या ताक़तवर सेनानायक उसके साथ लौट आये। ३२६७

मीण्डु वेलैयिन् वडहरै याण्डॉरु वॆऱ्पिन्
ईण्डि तार्हळै यॆन्कुऱित् तिरिवुऱ्ऱ दॆन्ऱान्
आण्ड नायह कण्डिलै पोलुनी यवरै
माण्डु शॆय्वदॆ नॆन्ऱुरै कूऱिनर् मऱुप्पार् 3268

मीण्टु–लौटकर; वेलैयिन्–समुद्र के; वट करै–उत्तरी कूल पर; आण्टु–वहाँ; ओरु वॆऱ्पिल्–एक पर्वत पर; ईण्टितार्कळै–जो एकत्र हुए उनसे; ऍन् कुऱित्तु–किस निमित्त; इरिवु उऱ्ऱतु–भागना हुआ; ऍन्ऱान्–पूछा (अंगद ने); आण्ट नायक–शासक नाथ; नी–आपने; अवरै कण्टिलै पोलुम्–उन्हें नहीं देखा शायद; माण्टु चॆय्वतु ऍन्–मरकर करना क्या होगा; ऍन्ऱु–कहकर; मऱुप्पार्–इन्कार करके; उरै कूऱितर्–वचन कहे (वानरों ने)। ३२६८

लौटकर वे समुद्र के उत्तरी किनारे पर एक स्थान में एकत्रित हुए। उनसे अंगद ने पूछा कि यह भगदड़ क्यों ? उन्होंने उत्तर में कहा कि हे हमारे शासक राजा ! क्या आपने उन राक्षसों को देखा नहीं था ? व्यर्थ मरने से होगा क्या ? वे युद्ध में जाने से इन्कार करके आगे बोले। ३२६८

ऑरुव त्तिन्दिर शित्तॅन्न वुळ्ळव नुळनाळ्
शॅरुवि लुड्ड्रवै कॉड्ड्रव मड्त्तियो तॅरियिड्
पॉरुविन् मड्ड्रव रिड्ड्रिल रियारॉडुम् बॊरुवार्
इरुवर् विड्पिडित् तियावरैत् तडुत्तुनिन्न् ड्रॅय्वार् 3269

इन्तिरचित्तु ॲॅन्त–इन्द्रजित् नाम का; उळ्ळवन्–जो था; ऑरुवन् उळ नाळ्–जब रहा तब; चॅरुविन् उड्ड्रवै–युद्ध में जो हुआ; कॉड्ड्रव–विजयी वीर; मड्त्तियो–भूल गये क्या; तॅरियिल्–विचारें तो; पॉरुवु इल्–अनुपम; मड्ड्रवर्–वे शत्रु (राक्षस); इड्ड्रिलर्–बिना हारे; यारॉटुम् पॉरुवार्–किसी से भी लड़ेंगे; इरुवर्–दो; विल् पिटित्तु–धनु धारण कर; यावरै–किसको; तटुत्तु निन्ड्र–रोककर; ॲॅय्वार्–चला सकनेवाले; आवर्–हों। ३२६९

विजयी वीर! इन्द्रजित् जब जीता रहा तब युद्ध में जो हुआ वह आपने भुला दिया क्या? विचारें तो ये अप्रतिम वीर इन्द्रजित् से कम नहीं होंगे और किसी से भी लड़ेंगे। फिर ये दोनों श्रीराम और लक्ष्मण धनु लेकर किसको रोकेंगे और क्या बाण चलायेंगे? । ३२६९

पुरङ्ग डन्दवप् पुत्तिदन्ने मुदलिय पुलवोर्
वरङ्गळ् तन्दुल हळिप्पव रियावरु माट्टार्
करन्द डङ्गिन्न रिन्निमड्ड्रव् वरक्करैक् कडप्पार्
कुरङ्गु कॉण्डुवन् दमरॅय्यु मानुडर् कॉल्लाम् 3270

वरङ्कळ् तन्तु–वर देकर; उलकु अळिप्पवर्–लोक का पालन करनेवाले; पुरम् कटन्त–त्रिपुरांतक; अ पुत्तितन्ने–वे पवित्र ईश्वर; मुतलिय–आदि; पुलवोर्–देव; यावरुम्–सभी; माट्टार्–न सककर; करन्तु अटङ्कितर्–छिप दब गये; इन्ति–फिर; अव् अरक्करै–उन राक्षसों को; कटप्पार्–परास्त करनेवाले; कुरङ्कु कॉण्टु वन्तु–वानर लाकर; अमर् चॅय्युम्–युद्ध करनेवाले; मानुटर् कॉल् आम्–मनुष्य होंगे क्या। ३२७०

वरदायी व लोकपालक त्रिपुरांतक पवित्र परमशिव आदि देवता भी इनसे भिड़ नहीं सके और छिपे तथा दुबके पड़े हैं। फिर इनको परास्त कर सके कौन? वानरों को सहायक बना लाकर जो युद्ध करना चाहते हैं, क्या ये मानव वीर परास्त कर सकेंगे? । ३२७०

ऊऴि यायिर कोडिनिन् ड्रुरुत्तिर न्नोडुम्
आऴि यानुमड् ड्रयन्नोडु पुरन्दर नवन्नुम्
शूऴ वोडिन्न रॉरुवन्नैक् कॊन्ड्रुतन् दोळाल्
वीऴ्ु मार्शॅय्य वल्लरेल् वॅन्ड्रियि नन्ड्रे 3271

उरुत्तिरन्नोटुम्–रुद्र के साथ; आऴियानुम्–क्षीर-सागरशायी और; मड्ड्रुम्–अन्य; अयन्नोटु–ब्रह्मा के साथ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; अवन्नुम्–वह; आयिरम् कोटि ऊऴि–हजार करोड़ युग; निन्ड्र–सामने खड़े होकर; चूऴ ओटिन्नर्–चारों ओर

दौड़कर; ऑरुवत्तै–एक को; तम् तोळाल्–अपने भुज (-बल) से; कॉन्ऱु–मारकर; वॅत्ऱियिऩ्–विजय के साथ; वीळ्मा–गिरा; चॅय्य वल्लरेल्–दे सकेंगे तो; नन्ऱे–अच्छा होगा। ३२७१

रुद्र, सागरशायी, ब्रह्मा और पुरंदर ये सब मिलकर हज़ार करोड़ युग तक समक्ष रहकर, चारों ओर दौड़कर अपना भुजबल दिखा दें तो भी वे इनमें एक को गिरा सकें और विजय पा सकें तो अच्छा होगा! । ३२७१

अॅन्ऩप् पामऱ्ऱिव् वॅळुबदु वॅळ्ळमु मॉरुवन्
तिन्ऩप् पोदुमो तेवरिऩ् वलियमो शिऱियेम्
मुन्ऩिप् पारॅलाम् बडैत्तव ऩाळॅला मुऱैनिऩ्
ऱुन्ऩिप् पार्त्तुनिऩ् ऱुऱैयिडक् कुऱैयुमो यूहम् 3272

अॅन् अप्पा–क्या, बाप रे बाप; इव् अॅळुपतु वॅळ्ळमुम्–यह सत्तर 'वॅळ्ळम्'; ऑरुवन् तिन्ऩ–एक के खाने के लिए; पोतुमो–पर्याप्त होगा क्या; चिऱियेम्–अल्प है हम; तेवरिऩ् वलियमो–देवों से बलवान हैं क्या; यूकम्–यह सेना; मुऱै निन्ऱु–क्रम से; मुन्ऩि–सोचकर; इ पार् अॅलाम्–इन लोकों को; मुन् पटैत्तवन्–जिन्होंने रचा थे; नाळ् अॅलाम्–अनेक दिन; पार्त्तु निन्ऱु–देखकर; उऱै इट–'उऱै' रखें (गिनें) उतनी; कुऱैयुमो–कम रहेगी क्या। ३२७२

बाप रे बाप! यह (हमारी) सत्तर हज़ार 'वॅळ्ळम्' की सेना क्या उस सेना के एक वीर के खाने के लिए पर्याप्त होगी? हम देवों से बलवान हैं क्या? हम अल्पबल हैं! विधिवत् जिसने सोच-सोचकर इन सारे लोकों को रचा, वह ब्रह्मा दिन भर ध्यान से गिन ले और 'उऱै' रखे इतनी कम है क्या (राक्षसों की) वह सेना? (उऱै— उस प्रतिनिधि संख्या को कहते हैं जो जब अत्यंत बड़ी संख्या के पदार्थों को गिनना पड़ता है, तब 'हज़ार' के लिए या सौ के लिए एक-एक के हिसाब से लगायी जाती है।) । ३२७२

नाय हऩ्ऩलै पत्तुळ कैयुना लैन्दॅन्
ऱोयु नॅञ्जिन मॉरुवन्मऱ् ऱिवण्वन् दिङ्गुऱ्ऱार्
आयि रन्दलै यदऱ्किरट् टिक्कैय रैया
पायुम् वेलैयिऩ् कूलत्तु मणलिऩम् बलराल् 3273

नायकन् ऑरुवन्–नायक एक के; तलै पत्तु उळ–दस सिर हैं; कैयुम् नालैन्तु–हाथ भी बीस; अॅन्ऱु–वह सोचकर ही; ओयुम् नॅञ्चिनम्–शिथिलमन हैं; इङ्कु–यहाँ; इवण् वन्तु उऱ्ऱार्–अब जो आ पहुँचे हैं; आयिरम् तलै–हज़ार सिरों; अतऱ्कु इरट्टि–उनके दुगुने; कैयर्–हाथों वाले हैं; ऐया–स्वामी; पायुम्–(जिस पर तरंगें) उछलती हैं उस; वेलैयिन्–समुद्र के; कूलत्तु मणलिऩम्–तल के बालुओं से; पलर्–अनेक हैं। ३२७३

एक नायक है जिसके दस सिर और बीस हाथ हैं! उसको सोचकर ही हम अधीर हुए हैं! अब ये जो आये है वे हज़ार हाथों और दो हज़ार

सिरों वाले हैं ! और वे, हे स्वामी ! तरंगसंचरित समुद्र के तल के वालुओं से भी संख्या में अधिक हैं । ३२७३

कुम्ब कऩ्ऩॅऩ्ऩ् ऱुळऩ्मऱ्ऱिङ् गोरुवऩ्कैक् कॊण्ड
अम्बु ताङ्गवु मिडुक्किल मवऩ्शॅय्द दऱिदि
उम्ब रऩ्ऱियॆ युणर्वुडै यार्पिऱ् ऱुळरो
नम्बि नीयुमुऩ् ऱऩिमैयॆ यऱिऩ्दिलै नडऩ्दाय् 3274

कुम्पकऩ्ऩऩ् ऍऩ्ऱु–कुंभकर्ण नाम का; इङ्कु उळऩ् ऑरुवऩ्–जो यहाँ था एक; कै कॊण्ट–उसने हाथ में जो लिया था; अम्पु–उस बाण को; ताङ्कवुम्–झेलने को; मिट्क्कु इलम्–हमारे पास शक्ति नहीं थी; अवऩ् चॅय्ततु–उसने जो किया; अऱिति–आप जानते हैं; उम्पर् अऩ्ऱियॆ–देवों के बिना; उणर्वु उटैयार् पिऱर्–साहस का भाव रखनेवाले अन्य कोई; उळरो–हैं क्या; नम्पि–नायक; अऱिऩ्तिलै–आप अबोध हैं; नीयुम् तऩिमैयॆ–आप अकेले; मुऩ् नटऩ्ताय्–चलकर आये । ३२७४

हम कुंभकर्ण के हाथ का बाण झेलने में भी असमर्थ थे । उसका कृत्य आप जान चुके हैं । देवों के सिवा साहस का भाव रखनेवाले कौन हैं ! (वे भी तो भयभीत हैं ।) नाथ ! आप अबोध हैं । और अकेले चलकर आये हैं । ३२७४

अऩुम ऩाऱ्ऱलु मरशऩ्ऱ ऩाऱ्ऱलु मिरुवर्
तऩुवि ऩाऱ्ऱलुन् दम्मुयिर् ताङ्गवुञ् जाला
कऩियुङ् गाय्हळु मुणवुळ मुळैयुळ करक्क
मऩिद राळिऩ्ऩॆ ऩिराक्कद राळिऩॆऩ् वैयम् 3275

अऩुमऩ् आऱ्ऱलुम्–हनुमान का पराक्रम; अरचऩतु आऱ्ऱलुम्–राजा (सुग्रीव) का बल; इरुवर्–और दोनों के; तऩुविऩ् आऱ्ऱलुम्–धनुओं का प्रताप; तम् उयिर् ताङ्कवुम्–उनके प्राणों को सुरक्षित रखने के लिए; चाला–पर्याप्त नहीं; कऩियुम् काय्कळुम्–फल और तरकारी के; उणवु उळ–भोजन है; करक्क मुऴै उळ–छिपने के लिए गुहाएँ हैं; वैयम्–भूमि पर; मऩितर् आळिऩ् ऍऩ्–मानव राज करें तो क्या; इराक्कतर् आळिऩ् ऍऩ्–राक्षस राज करें तो क्या । ३२७५

हनुमान का पराक्रम, राजा सुग्रीव का भुजबल, दोनों वीरों का धनुर्बल स्वयं उनके प्राणों की रक्षा करने में अपर्याप्त हैं । देखिए ! हमारे भोजन के लिए फल और तरकारियाँ हैं । अन्य खाद्य पदार्थ है । छिपे रहने के लिए पर्वतकंदराएँ हैं । फिर संसार पर मानव राज करें तो क्या, राक्षस करें तो क्या ? । ३२७५

तामुळा रॆऩ्ऱे पुहऴिऩैत् तिरुवोडुन् दरिप्पार्
यामु ळोमॆऩ्ऩि नॆङ्गिळै युळ्ळदॆम् बॆरुम

पोमि नीरॆन्ऱु विडैदरत् तक्कलै पुरप्पोय्
शामि नीरॆन्ऱल् तरुममन्ऱ् ऎन्ऱरर् तळर्न्दार् 3276

ताम् उळार् अन्ऱे–खुद जीवित रहें तभी न कोई; पुकऴितै–यश को; तिरुवॊटुम् तरिप्पार्–श्री के साथ धारण कर सकेंगे; याम् उळोम् ऎन्निन्–हम जीवित रहें तभी; ऎम् पॆरुम्–हमारे नाथ; ऎम् किळै उळळतु–हमारे परिवार रहेंगे; पुरप्पोय्–पालक; नीर् पोमिन्–तुम जाओ; ऎन्ऱु–ऐसा; विटै तर तक्कलै–विदा देने अर्ह हैं; नीर् चामिन्–तुम मरो; ऎन्ऱल्–कहना; तरुमम् अन्ऱु–धर्म नहीं होगा; ऎन्ऱरर्–कहा; तळर्न्तार्–साहसहीन हो रहे। ३२७६

कोई जिन्दा रहें तभी न उसके यश और श्री के धारण करने की बात उठेगी! हे नाथ! हम बचे रहें तभी न हमारे परिवार रह सकेंगे। हे रक्षक! आपको यही कहना और विदा देना शोभा देगा कि 'तुम लोग चले जाओ!' पर 'तुम मरो' कहना धर्मसम्मत बात नहीं है! यह कहकर वे धैर्य खोये रहे। ३२७६

शाम्बनै वदन नोक्कि वालिशे यरिवु शालुऱोय्
पाम्बणै यमल नेमऱ् ऱिरामनॆन् ऱॆमक्कुप् पण्डे
एम्बल् वन् दॆय्दच् चॊल्लित् तेऱ्ऱिना यल्लैयोनी
आम्बलम् बहैजन् ऱन्नो डयिन्दिर मऱैन्दो नन्नाय् 3277

वालि चेय्–वाली के पुत्र ने; चाम्पनै–जाम्बवान से; वतनम् नोक्कि–उसका वदन देखकर; अऱिवु चालुऱोय्–हे बुद्धिमान और योग्य, अम्–सुन्दर; आम्पल् पकैजन् तन्नोटु–कुवलय-शत्रु से; अयिन्तिरम् अमैन्तोन्–ऐंद्र-व्याकरण जिसने सीखा उस; अन्नाय्–हनुमान के सदृश रहनेवाले; नी–आपने; पाम्पु अणै अमलनै–शेषशायी पवित्र भगवान ही; इरामन् ऎन्ऱु–श्रीराम हैं, ऐसा; ऎमक्कु–हमें; पण्टे–पहले ही; एम्पल् वन्तु ऎय्त–संतोष दिलाकर; चॊल्लि–कहकर; तेऱ्ऱिनाय् अल्लैयो–आश्वासन दिलाया न। ३२७७

तब वाली के पुत्र ने जाम्बवान से बात की। बुद्धिमान और श्रेष्ठ पुरुष! हे उस हनुमान के तुल्य, जिसने कुवलय-शत्रु (सूर्य) से ऐंद्र-व्याकरण का अध्ययन किया था! आप ही ने हमें समझाया था कि श्रीराम स्वयं क्षीरसागरशायी पवित्रमूर्ति श्रीविष्णु हैं। आपने क्या हमें धीरज नही दिलाया था? । ३२७७

तेऱ्ऱुवाय् तॆरिन्द शॊल्लाऱ् ऱॆरुट्टियित् तॆरुळि लोरै
आऱ्ऱुवा यल्लै नीयु मञ्जिनै पोलु माकि
पोऱ्ऱुवा यॆन्ऱ पोदु पुहऴॆन्ऩाम् बुलमै यॆन्नाम्
तूऱ्ऱिन्वा युऱ्ऱाल् वीरङ् गुऱैवरे यिऱैमै कॊण्डार् 3278

तॆरिन्त–चुने हुए; चॊल्लाल्–शब्दों से; इ तॆरुळ् इलोरै–इन अज्ञ वानरों को; तॆरुट्टि–समझाकर; तेऱ्ऱुवाय्–धीरज दिला दे सकनेवाले; नीयुम्–आप भी;

आऱ्ऱवाय् अल्लै–अधीर बन गये; अञ्चिनै पोलुम्–डर गये शायद; आवि पोऱ्ऱुवाय्–प्राणों की रक्षा करो; ऎन्ऱु पोतु–ऐसा हो गये तो; पुकऴ् ऎन्नाम्–यश का क्या (अर्थ); पुलमै ऎन्ताम्–विद्वत्ता का क्या अर्थ; इऱैमै कोण्टार्–नेतृत्व रखनेवाले; कूऱ्ऱिन् वाय् उऱ्ऱाल्–यम के मुख में पड़ जायँ तो भी; वीरम् कुऱैवरो–वीरता छोड़ देंगे क्या। ३२७८

आप इस योग्य हैं कि भ्रमित इन्हें चुने हुए और अर्थपूर्ण वचनों से समझायें और धीरज दिलायें। पर आप स्वयं साहस खोकर भय खा गये! प्राणों का ही रक्षक बन जाय कोई तो यश, विद्वत्ता आदि का क्या अर्थ होगा? नेता लोग, यम के मुख में जाना पड़े तो भी क्या अपने साहस को क्षीण होने दे सकेंगे? । ३२७८

अञ्जिनाम् वऴियुम् बूण्डा मम्बुवि याण्डु मावि
तुञ्जुमा ऱनूऱि वाऴ वोण्णुमो नाण्मेऱ् ऱोन्ऱिन्
नञ्जुवा यिट्टा लन्न वमुदत्ऱो नम्मै यम्मा
तञ्जमॆन् ऱणैन्द वीरर् तनिमैयिऱ् चादल् नन्ऱे 3279

अञ्चिताम्–डर गये (हम); अम् पुवि–सुन्दर भूमि पर; पऴियुम् पूण्टाम्–अपयश अर्जित कर लिया; याण्टुम्–कहीं भी; नाळ् मेल् तोन्ऱिन्–आयु पर यम दिखायी देगा तो; आवि तुञ्चम् आऱु अनूऱि–जीव चला जायगा, उसके सिवा; वाऴ ऒण्णुमो–जीते रह सकते क्या; नञ्चु वाय् इट्टाल् अन्न–विष मुख में लिये रहे; अमुतु अन्ऱो–अमृत (-से) रहेंगे न; तञ्चम् ऎन्ऱु–अभय चाहकर; अणैन्त वीरर्–आये वीरों को; तनिमैयिल्–अकेले छोड़ने से; चातल् नन्ऱु–मरना बेहतर है। ३२७९

हम कायर हो गये। अपयश अर्जन कर गये! जहाँ भी जायँ आयु क्षीण होकर मृत्यु आयगी, तो प्राण छोड़ने के सिवा जीवित भी रह सकेंगे क्या? फिर विषमिलित अमृत के समान न हो जायँगे? हमारी सहायता चाहकर जो आये है, उनको अकेले छोड़ जाने से मरना अधिक श्लाघ्य है! हाँ, भैया! । ३२७९

तानव रोडु मऱ्ऱैच् चक्करत् तलैव नोडुम्
वानवर् कडैय माट्टा मऱिकडल् कडैन्द वालि
यानव नम्बॊन् ऱाले ययर्न्दमै ययर्त्त वॆन्नी
मीनलर् वेलै पट्ट दुणर्न्दिलै पोलु मेलोय् 3280

तानवरोटुम्–दानवों और; मऱ्ऱै–और; चक्करम् तलैवनोटुम्–और चक्रधर नायक (श्रीविष्णु) और; वानवर् कटैय माट्टा–देव जिसे मथ नहीं सके; मऱि कटल्–(तीर से टकराकर) मुड़नेवाली (तरंगों वाले) समुद्र को; कटैन्त वालि आनवन्–जिसने मथा वह वाली जो था वह; अम्पु ऒन्ऱाले–एक बाण से; अयर्न्तमै–शिथिल पड़ गया, उसे; नी अयर्त्ततु ऎन्–आप भूले क्यों; मेलोय्–श्रेष्ठ; मीन् अलर् वेलै–मछलियों से शोभित समुद्र; पट्टतु–जिस गति को पहुँचा उसे; उणर्न्तिलै पोलुम्–नहीं समझे क्या। ३२८०

दानव, चक्रधारी श्रीविष्णु और देव भी जिस सागर को मथ नहीं सके उसे वाली ने मथा था। वह वाली एक ही बाण से निष्क्रिय हो गया! उस बात को आप भूले क्यों? हे श्रेष्ठ पुरुष! मछलियों से शोभित इस समुद्र का जो हाल हुआ वह आप नहीं सोचते शायद! । ३२८०

अॅत्तनै यरक्क रेनुन् दरुममाण् डिल्लै यन्ऱे
अत्तनै यऱत्तै वॅल्लुम् बावमॅन् ऱऱिन्द दुण्डो
पित्तरैप् पोल नीयु मिवरुडन् पॅयर्न्द तन्मै
ऑत्तिल दॅन्नच् चॊन्ना नवनिवै युरैप्प दानान् 3281

अरक्कर् ॲत्तनै एनुम्–राक्षस कितने भी क्यों न हों; तरुमम्–धर्म; आण्टु–वहाँ; इल्लै अन्ऱे–नहीं है न; अत्तनै–उतने (अधिक); अऱत्तै–धर्म को; वॅल्लुम् पावम्–पाप परास्त करेगा; ॲन्ऱु–ऐसा; अऱिन्ततु उण्टो–कहीं जाना है क्या; पित्तरै पोल–पागलों के समान; नीयुम्–तुम भी; इवरुटन्–इन वीरों के साथ; पॅयर्न्त तन्मै–जो भाग आये वह कार्य; ऑत्तिलतु–युक्त नहीं लगता; ॲन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा; अवन्–वह (जाम्बवान); इवै–यह; उरैप्पतु आनान्–कहने लगा। ३२८१

राक्षसों की संख्या चाहे जितनी हो, वहाँ धर्म नहीं है न? अधिक धर्म को पाप परास्त करे —यह आपने कहीं जाना है? पागलों के समान इनके साथ मिलकर आपका भी भागना युक्त नहीं लगता! अंगद ने यह सब कहा, तो जाम्बवान उत्तर में यों कहने लगा। ३२८१

नाणत्ताऱ् चिऱिदु पोदु नलङ्गिन् निरुन्दु पिन्नर्
तूणॊत्त तिरळ्तोळ् वीर तोन्ऱिय वरक्कर् तोऱ्ऱम्
काणत्ता निऱ्कत् तानक् कऱैमिडऱ् ऱवर्क्कु मामे
कोणऱ्पू वुण्णुम् वाळ्क्कैक् कुरङ्गिन्मेऱ् कुऱ्ऱ मुण्डो 3282

नाणत्ताल्–लज्जा से; चिऱितु पोतु–कुछ देर; नलङ्कितन्–क्षुब्ध रहा; इरुन्तु–रहकर; पिन्नर्–बाद; तूण् ऑत्त–स्तंभ-सम; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों वाले; वीर–वीर; तोन्ऱिय–जो आ गये उन; अरक्कर् तोऱ्ऱम्–राक्षसों का दृश्य; काण तान्–देखना सही; निऱ्क तान्–या सामना करना ही हो; करै मिटऱ्ऱु अवर्क्कुम्–विषकण्ठ शिव के लिए भी; आमे–साध्य है क्या; कोणल्–वक्र; पू उण्णुम् वाळ्क्कै–पुष्प खानेवाला जीवन बितानेवाले; कुरङ्किन् मेल्–वानरों पर; कुऱ्ऱम् उण्टो–(जब वे भागते हैं तब) दोष लगेगा क्या। ३२८२

जाम्बवान लज्जा से कुछ देर क्षुब्ध रहा। बाद बोला। स्तंभ-सम कंधों वाले वीर! अब जो राक्षस आये हैं उनको देखना या उनके सामने खड़ा रहना विषकंठ के लिए भी साध्य है क्या? फिर वक्रशरीरी पुष्पजीवी वानर भागें तो उन पर दोष भी लगेगा क्या? । ३२८२

तेवरु मवुणर् तामुम् जॅरुप्पण्डु शॅय्द कालम्
एवरे यॅन्नुताऱ् काणप् पट्टिल रिरुक्कै यात्त
मूवहै युलहि नुळ्ळा रिवर्तुणै याऱ्ऱन् मुऱ्ऱुम्
पावह रुळरे कूऱ्ऱु मिवरुडन् पहैक्क वऱ्ऱो 3283

तेवरुम्–देवों और; अवुणर् तामुम्–दानवों ने; पण्टु–पहले; चॅरु चॅय्त–जब युद्ध किया; कालम्–तब; ॲन्नुताल्–मुझसे; काणप्पट्टु इलर्–जो नहीं देखे गये; एवर्–कौन है; इरुक्कैयात्त–वास योग्य; मूवकै उलकित् उळ्ळार्–त्रिलोक में रहनेवालों में; इवर् तुणै–इनके जितने; आऱ्ऱल् मुऱ्ऱुम्–बल में बढ़े हुए; पावकर्–पातक; उळरे–है क्या; कूऱ्ऱुम्–यम भी; इवर् उटन्–इनसे; पकैक्कवऱ्ऱो–शत्रुता कर सकेगा क्या। ३२८३

जब देवों और दानवों ने पहले आपस में युद्ध किया था, तब कौन ऐसा था जिसको मैंने नहीं देखा हो ? वासयोग्य इन तीनों लोकों में इनके जितने बलशाली पातक हैं भी क्या ? यम भी इनसे वैर ठान सकेगा क्या ? । ३२८३

मालियैक् कण्डेन् पिन्नै मालिय वात्तैक् कण्डेन्
कालने मियैयुङ् गण्डे तिरणियत् ऱनैयुङ् गण्डेन्
आलमा विडमुङ् गण्डेन् मदुवित्तै यनुश तोडुम्
वेलैयैक् कलक्कक् कण्डे निवर्क्कुळ मिडुक्कु मुण्डो 3284

मालियै कण्टेन्–माली को देखा (मैंने); पिन्नै–बाद; मालियवात्तै कण्टेन्–माल्यवान को देखा; काल नेमियैयुम् कण्टेन्–कालनेमी को भी देखा; इरणियत् तत्तैयुम् कण्टेन्–हिरण्य को भी देखा; आलम् मा विटमुम्–हलाहल विष को भी; कण्टेन्–देखा; अनुचत्तोटुम्–छोटे भाई (कैटभ) के साथ; मतुवित्तै–मधु को; वेलैयै कलक्क–समुद्र को क्षुब्ध करता; कण्टेन्–देखा; इवर्क्कु उळ–(उनका) इनका-सा; मिटुक्कुम् उण्टो–बल है क्या। ३२८४

मैंने माली को देखा है; माल्यवान को देखा है। कालनेमी और हिरण्य को देखा है। हलाहल भी मेरा देखा हुआ है ! लघुसहोदर कैटभ सहित मधु को सागर को विलोडित करता देखा था। क्या उनमें इनका-सा बल था ? । ३२८४

वलियिदन् मेले पॅऱ्ऱ वरत्तिनर् मायम् वल्लोर्
ऑलिकडत् मणलित् मिक्क कणक्किन रुळ्ळ नोक्किर्
कलियिनुङ् गॊडियर् कऱ्ऱ पडैक्कलक् करत्त रॅन्ऱाल्
मॅलिहुव दन्ऱि युण्डो विण्णवर् वंरुवल् कण्डाल् 3285

वलि इतन् मेले–वल है तिस पर; पॅऱ्ऱ वरत्तित्तर्–प्राप्त वर वाले हैं; मायम् वल्लोर्–माया में चतुर है; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्र के; मणलित् मिक्क–बालुओं से अधिक; कणक्कित्तर्–संख्या के हैं; उळ्ळम् नोक्किल्–इनका मन देखो

तो; कलियिनुम् कॉटियर्–कलिपुरुष से भी निर्मम हैं; पटैक्कलम् कट्र–हथियारों से अभ्यस्त; करत्तर्–हाथों वाले हैं; ऍन्ड्राल्–तो; विण्णोर्–देव भी; वॅरुवल् कण्टाल्–भयातुर है, इसे देखें तो; मॅलिकुवतु अन्ड्रि–हमारे अशक्त होने के सिवा; उण्टो–कुछ कर सकते हैं क्या। ३२८५

ये इतने बलवान हैं ही! तिस पर उन्हें अपार वर प्राप्त हैं! वे माया में भी दक्ष हैं। उनकी संख्या गर्जनशील समुद्र के बालुओं से अधिक है! इनके मन के बारे में सोचें तो वे कलिपुरुष से भी क्रूर हैं। ये विविध हथियारों से अभ्यस्त हाथों वाले हैं। व्योमवासी देव भी इन्हें देखकर डर जाते हैं। इस स्थिति में वानर अधीर हो शिथिल पड़ जाने के सिवा क्या कर सकेंगे ? । ३२८५

आहितु मैयम् वेण्डा वळ्हिदन् ड्रमरि तञ्जिच्
चाहितुम् बॅयर्न्द तन्मै पळितरु नरहिड् ड्ळ्ळुम्
एहुदु मीळ विन्नु मियम्बुव दुळदा लैय
मेहमे यनैयान् कण्णि लॅङ्ङनम् विळित्तु निड्रुम् 3286

आकितुम्–तो भी; चाकितुम्–मरना पड़े तो भी; असरिन् अञ्चि–युद्ध से डरकर; पॅयर्न्त तन्मै–भागने का कार्य; अऴकितु अन्ड्र–सुन्दर काम नहीं; पऴि तरुम्–अपयश दिला देगा; नरकिल् तळ्ळुम्–नरक में गिरा देगा; ऐयम् वेण्टा–संशय न हो; मीळ एकुतुम्–लौट जायँगे; ऐय–तात; इन्नुम्–और भी; इयम्पुवतु उळतु–कहना है; मेकमे अनैयान्–मेघ-सदृश; कण्णिन्–(श्रीराम के) समक्ष; ऍङ्ङनम्–कैसे; विळित्तु निड्रुम्–आँखें खोले खड़े रहें। ३२८६

इतना होने पर भी, मरने की नौबत आ जाय तो भी, युद्ध से डरकर भाग आना सुन्दर काम नहीं था! यह अवश्य अपयश दिलायगा। और नरक में डाल देगा। इसमें संशय नहीं! लौट जायँगे। तात! और एक बात है जो कहनी है। अब हम मेघश्याम श्रीराम के समक्ष आकर अपनी आँखों से उनका श्रीमुख कैसे देख सकेंगे ? । ३२८६

ऍन्ड्रॅडुत् तॅण्गिन् ड्रानैक् किऱैयव नियम्ब लोडुम्
वन्ड्रिऱड् कुलिश मोच्चि वरैशिऱ हरिन्दु वॅळ्ळिक्
कुन्ड्रिडै नीलक् कॉण्मू वमर्न्दॅन्न मदत्तिण् कुन्ड्रिन्
निन्ड्रव नळित्त मैन्दन् महनिवै निहळ्त्त लुड्रान् 3287

ऍन्ड्र–ऐसा; ऍण्किन् तानैक्कु–रीछों की सेना के; इऱैयवन्–नायक के; ऍटुत्तु इयम्पलोटुम्–कहने पर; वल् तिऱल्–अतिशय शक्तिसंपन्न; कुलिचम् ओच्चि–वज्र को उठाकर; वरै चिऱकु–पर्वतों के पक्षों को; अरिन्तु–काटकर; वॅळ्ळि कुन्ड्र इटै–श्वेत पर्वत पर; नीलम् कॉण्मू–नीला मेघ; अमर्न्तॅन्न–रहता हो जैसे; मतम्–मदयुक्त; तिण्–कठोर; कुन्ड्रिल्–पर्वत (गज) पर; निन्ड्रवन्–जो रहा उस इन्द्र का; अळित्त मैन्तन्–जनाया पुत्र; मकन्–उसके पुत्र ने; इवै निकऴ्त्तल् उड्रान्–ये बातें कहना आरम्भ किया। ३२८७

ऐसा जब रीछों के राजा जाम्बवान ने दिल खोलकर कहा तब उस इन्द्र के, जिसने अतिशय शक्तिवाले वज्रायुध का प्रयोग करके पर्वतों के पक्ष काटे थे और जो श्वेत पर्वत पर विलसनेवाले नीले मेघ के समान मदमत्त पर्वत-सम ऐरावत पर आरूढ़ है, पुत्र (वाली) का पुत्र (अंगद) निम्नोक्त बातें कहने लगा। ३२८७

ऍडुत्तलुम् जाय्दल् तानु मॅदिर्त्तलु मॅदिर्न्दोर् तम्मैप्
पडुत्तलुम् वीर वाऴ्क्कै पऴ्रिनर्क् कुऱ्ऱ मेताऴ्
अडुत्तदे यः(ह्)दु निऱ्क वन्ऱियु मॊन्ऱु कूऱ्ऱ्
कॅडुत्तदु केट्टीर् नीरुङ् गरुत्तुळीर् एदु नोक्किन् 3288

ऍट्टुत्तलुम्–(शत्रुओं पर) हावी आना; चायतल् तानुम्–और (उनसे) परास्त होना; ऍतिर्त्तलुम्–सामना करना; ऍतिर्न्तोर् तम्मै–सामना करनेवालों को; पट्टुत्तलुम्–मारना; वीरम् वाऴ्क्कै–वीरों का जीवन; पऱ्ऱितर्क्कु–जो अपना चुके उनके लिए; मेताऴ् उऱ्ऱ–प्राचीन काल से; अट्टुत्तते–सहज ही है; अ·तु निऱ्क–वह एक ओर रहे; अन्ऱियुम्–अलावा; ऑन्ऱु कूऱ्ऱ्कु–एक कहने के लिए; ऍट्टुत्ततु–जो उचित है; केट्टीर्–उसको सुना; नोक्किन्–विचार करने पर; नीरुम्–आप भी; करुत्तुळीर्–विवेकी हैं। ३२८८

शत्रुओं पर विजय पाना या उनसे हार जाना, शत्रु का सामना करना या उसे मारना —यह सब वीर-जीवियों के लिए प्राचीन दिनों से सहज ही बना है! और भी एक बात है। आपने मेरी बात सुनी जिसको मैंने सुनाना उचित समझा। आप विवेकी हैं। ३२८८

ऑन्ऱु नीरञ्ज लैय यामॅला मॊरुङ्गे शॅन्ऱु
निन्ऱुमॊन् ऱियऱ्ऱ लाऱ्ऱेम् नेमियान् ऱाने नेर्न्दु
कॊन्ऱुपोर् कडक्कु मायिऱ् कॊळ्ळुदुम् वॅन्ऱि यन्ऱेल्
पॊन्ऱुदु मवनो डॅन्ऱान् पोदले यळ्हिर् ऱॅन्ऱान् 3289

ऐय–तात; नीर् ऑन्ऱुम् अञ्चल्–आप कुछ न डरें; याम् ऍलाम्–हम सब; ऑरुङ्के चॅन्ऱु–एक साथ जाकर; निन्ऱुम्–खड़े रहें तो भी; ऑन्ऱु इयऱ्ऱल्–कुछ करने में; आऱ्ऱेम्–समर्थ नहीं रह सकेंगे; नेमियान् ताने–चक्रधारी श्रीराम स्वयं; नेर्न्तु–लड़कर; कॊन्ऱु–मारकर; पोर् कटक्कुम् आयिन्–युद्ध जीतेंगे तो; वॅन्ऱि कॊळ्ळुतुम्–विजय प्राप्त करेंगे; अन्ऱेल्–नहीं तो; अवनोटु–उनके साथ; पॊन्ऱुतुम्–मरेंगे; ऍन्ऱान्–कहा और; पोतले–क्या मागना; अऴकिऱ्ऱु–सुन्दर (श्लाघनीय) होगा; ऍन्ऱान्–कहा (अपनी बात समाप्त की)। ३२८९

तात! आप कुछ न डरें। हम सब मिलकर जायँ और डटे रहें तो भी कुछ नहीं होगा। पर अगर चक्रधारी विष्णु के अवतार श्रीराम स्वयं शत्रु से युद्ध करके उनका संहार करके युद्ध समाप्त करें तो हम

विजयी बनेंगे। नहीं तो उनके साथ प्राण त्याग देंगे। इसे छोड़कर भाग जाना अच्छा होगा क्या ? । ३२८९

ईण्डिय ताऩै नीङ्ग निऱ्पदॆऩ् यामे शॆऩ्ऱु
पूण्डवॆम् पऴियि ऩोडुम् बोऩ्दऩम् बोदु मॆऩ्ऩा
मीण्डऩर् तलैव रॆल्ला मङ्गद ऩोडुम् वीरऩ्
मूण्डवॆम् बडैयै नोक्कित् तम्बिक्कु मॊऴिव दाऩाऩ् 3290

ईण्टिय ताऩै–एकत्रित सेना; नीङ्क निऱ्पतु–भाग खड़ी हुई; ऍऩ्–सो क्या बात; यामे–हम खुद; चॆऩ्ऱु–जाकर; पूण्ट–मिले; वॆम् पऴियिऩोटुम्–दुःखदायी अपयश के साथ; पोऩ्तऩम्–लौट आये हैं; पोतुम्–चलें; ऍऩ्ऩा–कहने पर; तलैवर् ऍल्लाम्–सारे यूथप; अङ्कतऩोटुम् मीण्टऩर्–अंगद के साथ लौटे; वीरऩ्–वीर श्रीराम; मूण्ट–क्रुद्ध; वॆम्–भयानक; पटैयै नोक्कि–सेना को देखकर; तम्पिक्कु–कनिष्ठ भ्राता से; मॊऴिवतु आऩाऩ्–कहने लगे। ३२९०

एकत्रित वानर-सेना के भाग खड़ा होने के सम्बन्ध में क्या कहा जाय ? स्वयं हम मैदान छोड़कर भागे और अपयश लेकर लौटे हैं ! छोड़ो। हम सब जायँ ! इस पर सभी वानरयूथप अंगद के साथ-साथ लौट आये। उधर श्रीवीरराघव ने क्रुद्ध राक्षस-सेना को देखा और वे अपने छोटे भाई से यों कहने लगे। ३२९०

अत्तनी युणर्दि यऩ्ऱे यरक्करदा नवुण रेदाऩ्
ऎत्तऩै युळरॆऩ् ऱालु मियाऩ्शिलै यॆडुत्त पोदु
तॊत्तुरु कऩलिऩ् वीऴ्न्द पञ्जॆऩत् तॊलैयुन् दऩ्मै
ऒत्तदो रिडैयू ऱुण्डॆऩ् ऱुणर्विडै युदिप्प दऩ्ऱाल् 3291

अत्त–तात; अरक्कर् ताऩ्–राक्षस हों या; अवुणरे ताऩ्–दानव ही क्यों न हों; ऍत्तऩै उळर् ऍऩ्ऱालुम्–कितने भी क्यों न हों; याऩ्–मैं; चिलै ऍटुत्त पोतु–धनु उठा लूँ तो; तॊत्तु उऱु–पुंजीकृत; कऩलिऩ्–आग में; वीऴ्न्त पञ्चु ऍऩ–पड़ी रूई के समान; तॊलैयुम् तऩ्मै–(सभी) मिट जायँगे वह गति; नी उणर्ति अऩ्ऱे–तुम जानते हो न; ऒत्ततु–(मेरे बल के) योग्य; ओर् इटैयूऱु–एक बाधा; उण्टु ऍऩ्ऱु–है, ऐसा; ऍऩ् उणर्वु इटै–मेरी समझ में; उतिप्पतु–जो आयगा; अऩ्ऱु–वह कुछ नहीं है। ३२९१

तात ! दानव हों चाहे राक्षस ! वे कितने ही क्यों न हों। तुम जानते हो कि मेरे धनुष धारण करने पर वे सब किस प्रकार अग्निपुंज में पड़ी रूई के समान मिट जायँगे ! मेरी शक्ति के सदृश कोई बाधा भी हो सकती है, ऐसा मेरी बुद्धि नहीं मानती। ३२९१

काक्कुन रिऩ्मै कण्ड कलक्कत्ताऱ् कवियिऩ् शेऩै
पोक्कऱप् पोहित् तत्त मुऱैविडम् बुहुद लुण्डाल्

ताक्किथिप् पडयै मुऱ्ऱुन् दलैतुमिप् पळवुन् दाङ्गि
नीक्कुदि निरुद राङ्गु नॅरुङ्गुवार् नॅरुक्का वण्णम् 3292

काक्कुनर्–रक्षक का; इन्मै कण्ट–अभाव देखकर; फलक्कत्ताल्–उस भ्रांति से; कवियिन् चेनै–कपि-सेना; पोक्कु अऱ–युद्ध में जाना छोड़कर; पोकि–भाग जाकर; तम् तम् उऱैवु इटम्–अपने-अपने रहने के स्थान में; पुकुतल् उण्टु–घुस जाते हैं; आल्–इसलिए; इ पटैयै ताक्कि–इस सेना पर आक्रमण करके; मुऱ्ऱुम्–पूरा; तलै तुमिप्पु अळवुम्–सिर काट न लूँ तब तक; ताङ्कि–तुम सेना को सँभालकर; आङ्कु–वहाँ; नॅरुङ्कुवार्–नियरानेवाले; निरुतर्–राक्षस; नॅरुङ्का वण्णम्–पास न जायँ ऐसा; नीक्कुति–रोको। ३२६२

कपि-सेना अपने रक्षक का अभाव समझकर युद्ध पर जाना छोड़कर भाग गयी है और अपने-अपने आश्रय-स्थान में घुसे हुए हैं। इसलिए जब तक मैं इस सेना पर आक्रमण करके पूर्ण रूप से इन वीरों के सिर नहीं काट डालूँ, तब तक तुम इस वानर-सेना का रक्षण करो। उसकी तरफ़ राक्षस जायेंगे तो उनको वहाँ जाने से रोक दो। ३२९२

इप्पुऱत् तिलैय शेनै येवियाण् डिरुन्द तीयोन्
अप्पुऱत् तमैन्द शूळ्च्चि यऱिन्दव नयले वन्दु
तप्पऱक् कॊन्ऱु नीक्कि लवनैयार् तडुक्क वल्लार्
वॆप्पुऱ हिन्ऱ दुळ्ळम् वीरनी यलॣऱि विल्लोर् 3293

इ पुऱत्तु–इस तरफ़; इत्तैय चेनै–इस तरह की सेना को; एवि–भिजवाकर; आण्टु इरुन्त–वहाँ जो रहा; तीयोन्–दुष्ट; अमैन्त चूळ्च्चि–युक्त तन्त्र का; अऱिन्तवन्–ज्ञाता रावण; अ पुऱत्तु–उस तरफ़; अयले वन्तु–पास आकर; तप्पु अऱ–अचूक रीति से; कॊन्ऱु नीक्किल्–मार मिटाये तो; वीर–वीर; अवनै–उसे; नी अन्ऱि–तुम्हारे सिवा; तटुक्क वल्लोर्–रोक सकनेवाले; विल्लोर्–धनुर्धर; यार्–कौन हैं; उळ्ळम्–(यह सोचने पर) मन; वॆप्पु उऱुकिन्ऱतु–तप्त होता है। ३२६३

इस तरफ़ ऐसी सेना को भेजकर दुष्ट तथा तंत्रज्ञ रावण उस तरफ़ आकर वानरों का खातमा करना सोचेगा तो हे वीर! तुम्हारे सिवा उसे रोक सकनेवाले धनुर्धर कौन हैं? यह सोचकर मेरा मन संतप्त होता है। ३२९३

मारुदि योडु नीयुम् वानरक् कोनुम् वल्ले
पेरुदिर् शेनै काक्क वॆन्नुडैत् तनिमै पेणिच्
चोरुदि रॆन्निन् वॆम्बोर् तोऱ्ऱना मॆन्नच् चॊन्नान्
वीरनुमऱ् ऱदनैक् केट्ट विळैयवन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 3294

मारुतियोटु–मारुति के साथ; नीयुम्–तुम भी; वानरर् कोनुम्–वानरेश भी; वॊल्ले–शीघ्र; चेनै काक्क–सेना की रक्षा करने; पेरुतिर्–चलो; ॲन् उटै तनिमै–

मेरी तन्हाई; पेणि-सोचकर; चोरुतिर् अँतुतिन्-निर्बल हो जाओ तो; नाम्-हम; वेम् पोर्-इस भयंकर युद्ध में; तोऱ्ऱुम्-हार जायेंगे; अतत्तै केट्ट-(जिन्होंने) उसे सुना वे; इळैयवन्-कनिष्ठ लक्ष्मण; विळम्पल् उऱ्ऱान्-कहने लगे। ३२९४

मारुति, वानरेश और तुम शीघ्र जाओ सेना का संरक्षण करने। मेरी तन्हाई सोचकर अगर तुम मन मारे रह जाओगे तो हम इस भयंकर युद्ध में हार जायँगे। —श्रीराघव ने कहा। यह सुनकर लघुराज बोलने लगे। ३२९४

अन्ऩदे करुम मैय वन्ऩियु मरुहे निन्ऱाल्
ॲन्ऩुनक् कुदवि शॅय्व दिदुपडै यॅन्ऱ पोदु
शॅन्ऩियिऱ् चुमन्द कैयर् तेवरे पोल यामुम्
पॊन्ऩडै वरिवि लाऱ्ऱल् पुऱनिन्ऱु काण्डल् पोक्कि 3295

ऐय-प्रभु; अन्ऩते करुमम्-वही करणीय है; अन्ऱियुम्-और भी; पडै-राक्षस-सेना; इतु ॲन्ऱ पोतु-ऐसी जब है; तेवरे पोल-देवों के ही समान; यामुम्-हम भी; चॅन्ऩियिल्-सिर पर; चुमन्त-धृत; कैयर्-हाथों वाले होकर; पॊन् उडै-स्वर्णनिर्मित; वरि विल्-सबन्ध धनु के; आऱ्ऱल्-बल को; पुऱत् निन्ऱु-अलग खड़े रहकर; काण्टल् पोक्कि-देखना छोड़कर; अरुके निन्ऱाल्-पास खड़े रहने से; उनक्कु चॅय्वतु-आपके प्रति किया गया; उतवि ॲन्-उपकार क्या है। ३२९५

लक्ष्मण ने श्रीराम से उत्तर में कहा कि प्रभु! वही करणीय काम है! और भी जब राक्षस-सेना का ऐसा बल है, तब मैं भी अगर देवों के समान सिर पर हाथ रखके और अलग रहकर विना स्वर्णनिर्मित धनु के बल का प्रयोग किये आपके पास खड़ा रहूँ तो आपका क्या उपकार होगा? । ३२९५

ॲन्ऱव नेह लुऱ्ऱ कालैयि लनुम नॅन्दाय्
पुन्ऱॊऴिऱ् कुरङ्गॅ नादॅन् ऱोळिन्मे लेऱिप् पुक्काल्
नन्ऱॅनक् करुदा निन्ऱेन् अल्लदु नायि नेनुन्
पिन्ऱनि निन्ऱ पोदु मडिमैयिऱ् पिऴैप्पि लॅन्ऱान् 3296

ॲन्ऱु-ऐसा कहकर; अवन्-उनके; एकल् उऱ्ऱ कालैयिल्-जाने का उपक्रम करते समय; अनुमन्-मारुति ने; ॲन्ताय्-मेरे प्रभु; पुन् तॊऴिल्-क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु-वानर; ॲन्ऩातु-न मानकर (ऐसी उपेक्षा न करके); ॲन् तोळिन् मेल् एऱि-मेरे कन्धों पर चढ़कर; पुक्काल्-(युद्ध में) प्रवेश करें तो; नन्ऱु-भला होगा; ॲन-ऐसा; करुता निन्ऱेन्-सोचता हूँ; अल्लतु-नहीं तो; नायिन् नेन्-कुत्ते से नीच मैं; उन् पिन्-आपके बाद; तनि निन्ऱ पोतुम्-अकेला रह जाऊँ तो भी; अटिमैयिल् पिऴैप्पिल्-दासता में कमी नहीं रहेगी; ॲन्ऱान्-कहा। ३२९६

लक्ष्मण यह कहकर जब जाने लगे, तब हनुमान ने निवेदन किया कि

हे हमारे प्रभु ! मेरी अल्पकर्म वानर कहकर उपेक्षा किये विना मेरे कंधे पर चढ़कर लघुराज युद्धभूमि में प्रवेश करें तो अच्छा होगा। मैं ऐसा ही सोचता हूँ। और कुत्ते से भी नीच मैं आपके पास रह पाऊँ, तब मुझे यह तृप्ति होगी कि दासता में कमी नहीं रही। ३२९६

ऐयनिऱ् कियला दुण्डो विरावण नयले वन्दुऱ्
ऍय्युम्विऱ् करत्तु वीर निलक्कुवन् ऱन्नो डेऱ्ऱाल्
मॊय्यमर्क् कळत्ति नुन्नैत् तुणैपॆऱा तॆन्नित् मुन्नब
शॆय्युमा वॆऱ्ऱि युण्डो शेनैयुञ् जिदैयु मन्ऱे 3297

ऐय–तात; निऱ्कु–तुम्हें; इयलातु–असाध्य; उण्टो–कुछ है क्या; इरावणन्–रावण; अयले वन्तु उऱ्ऱु–पास ही में आ पहुँचकर; ऍय्युम्–(बाण) चलानेवाले; विल् करत्तु वीरन्–धनुर्हस्त वीर; इलक्कुवन् तन्नोटु–लक्ष्मण के साथ; एऱ्ऱाल्–युद्ध आरम्भ करे तो; मॊय् अमर् कळत्तिन्–व्यस्त उस युद्ध के मैदान में; उन्नै तुणै पॆऱात् ऍन्निल्–तुम्हें सहायक के रूप में न प्राप्त करे तो; मुन्नप–बली; चॆय्युमा वॆऱ्ऱि उण्टो–की जाय ऐसी विजय-प्राप्ति भी होगी क्या; चेनैयुम्–सेना भी; चितैयुम् अन्ऱे–छितर जायगी न। ३२९७

श्रीराम ने हनुमान से कहा— तात ! तुम्हारे लिए असाध्य कुछ है क्या ? जब रावण पास आकर धनुर्हस्त लक्ष्मण से युद्ध करेगा, तब उस व्यस्त युद्धभूमि में लक्ष्मण के साथ साथी के रूप में नहीं रहोगे, तो हे बली ! विजय मिल सकेगी क्या ? और सेना भी छितर जायगी। ३२९७

एरैक्कॊण् डमैन्द कुञ्जि यिन्दिर शित्तॆन् बान्ऱन्
पोरैक्कॊण् डिरुन्द मुन्ना ळिळैयवन् ऱन्नैप् पोक्किऱ्
ऱारैक्कॊण् डुन्ना लन्ऱे वॆन्ऱदङ् गवनै यिन्नम्
वीरर्क्कुम् वीर निन्नैप् पिरिहलम् वॆल्लु मॆन्बेन् 3298

एरैक् कॊण्टु–सौंदर्य ले; अमैन्त कुञ्चि–जिसका केश बना था उस; इन्तिरचित्तु ऍन्पान् तन्–इन्द्रजित् नाम का वह; पोरै कॊण्टु–युद्ध में लगा; इरुन्त मुन्नाळ्–जब रहा उस पूर्व के दिन में; इळैयवन् तन्नै–लघुभ्राता को; पोक्किऱ्ऱु–भेजा था (मैंने); आरै कॊण्टु–किसको मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवनै वॆन्ऱतु–उसको जीतना; उन्नाल् अन्ऱे–तुम्हारे निमित्त नहीं क्या; वीरर्क्कुम् वीर–वीरों में श्रेष्ठ वीर; निन्नै पिरिकलन्–तुमसे अलग न होकर; वॆल्लुम्–जीतेगा; ऍन् पेन्–यही सोचता हूँ। ३२९८

जिस दिन सुन्दरकेशी इन्द्रजित् से युद्ध करना था, तब मैंने लघुराज को भेजा था किसकी सहायता के बल पर ? वहाँ लक्ष्मण से विजय पायी भी तुम्हारी सहायता से न ? हे वीरों में श्रेष्ठ ! लक्ष्मण तुमसे अलग नहीं हो तभी वह जीतेगा। यही मैं कहूँगा। ३२९८

शेनैयैक् कात्तॅन् बिन्नॆ तिरुनहर् तीर्न्दु पोन्द
यानैयैक् कात्तु मर्रिङ् यिरैवनैक् कात्तॅण् तीर्न्द
वानैयित् तलत्ति नोडु मरैयोडुम् वळर्त्ति यॆन्द्रान्
एतैमर् रुरैक्कि लादा निळवल्पिन् नॆळुन्दु शॆन्द्रान् 3299

चेनैयै कात्तु–सेना का पालन करके; ऍन् पिन्ने–मेरे पीछे; तिरु नकर् तीर्न्तु पोन्त–श्रीनगर (अयोध्या) छोड़कर जो आया; यानैयै–उस गज (लक्ष्मण) को; कात्तु–रक्षित करके; मर्रिङ्–और; इरैवनै कात्तु–राजा सुग्रीव की रक्षा करके; ऍण् तीर्न्त–संख्या या विचार को पार कर रहे; वानै–आकाश को; इ तलत्तिनोटुम्–इस भूमि के साथ; मरैयोटुम्–और वेदों के साथ; वळर्त्ति–पनपने दो; ऍन्द्रान्–कहा; एतै मर्रु–उत्तर में कुछ; उरैक्किलातान्–न कह सककर; इळवल् पिन्–लघुराज के पीछे; ऍळुन्तु चॅन्द्रान्–उठ चला (हनुमान)। ३२९९

तुम जाओ। सेना की, मेरे साथ श्रीसंपन्न अयोध्या छोड़कर जो आया है उस हाथी-सम लक्ष्मण की, तुम्हारे वानरेश सुग्रीव की रक्षा करो और कल्पना से परे देवलोक के साथ इस भूतल को और वेदों को पनपने दो। हनुमान क्या उत्तर दे? विना कुछ कहे लक्ष्मण के पीछे उठ चला। ३२९९

वीडण नीयु मर्रुन् तम्बियो डेहि वॅम्मै
कूडिनर् शॅय्यु मायन् दॅरिन्दनै कूरिक् कॊर्रम्
नीडुरु तानै तन्नैत् ताङ्गितै निल्ला यॆन्निल्
केडुळ दाहु मॆन्द्रा नवनदु केट्प दानान् 3300

वीटण–विभीषण; नीयुम्–तुम भी; उन् तम्पियोटु–तुम्हारे छोटे भाई के साथ; एकि–जाकर; वॅम्मै कूटितर्–बुरे गुणों के साथ रहनेवाले राक्षस; चॅय्युम् मायम्–जो माया रचेंगे; तॅरिन्तनै–वह जानकर; कूरि–कहकर; कॊर्रम् नीटु उरु–विजय लम्बी करनेवाली; तानै तन्नै–सेना को; ताङ्किनै–आधार देकर; निल्लाय्–न रहोगे; ऍन्निल्–तो; केटु उळतु आकुम्–हानि हो रहेगी; ऍन्द्रान्–बोले (श्रीराम); अवन्–विभीषण; अतु केट्पतु आनान्–उसको मानने लगा। ३३००

श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण! तुम भी अपने भाई लक्ष्मण के साथ जाओ। क्रूर राक्षस जो भी माया करें उसको पहले ही जानकर लक्ष्मण को सावधान करो। अगर तुम विजय के लिए बहुत समय लड़नेवाली सेना का रक्षक बनकर नहीं रहोगे, तो हानि होने की संभावना है! विभीषण वह बात मानकर तदनुसार चलने लगा। ३३००

शूरियन् शेयुन् जॅल्वन् शॊर्रदे यॆण्णन् जॊल्लन्
आरियन् पिन्बु पोना नन्नवरु मदुवे नल्ल
कारिय मॆन्नक् कॊण्डार् कडर्पडै कात्तु निन्द्रार्
वीरियन् बिन्नर्च् चॅय्द शॅयलॆलाम् विरिक्क लुर्राम् 3301

चूरियत् चेयुम्–सूर्य का पुत्र भी; चॅल्वन्–धनी श्रीराम का; चॊऱ्ऱते–कहना; ॲण्णुम् चॊल्लन्–मानकर बात करनेवाले; आरियन् पिन्पु–आर्य लक्ष्मण के पीछे-पीछे; पोनान्–गया; अनैवरुम्–सभी; अतुवे नल्ल कारियम्–वही अच्छा कार्य है; ॲन्न कॊण्टार्–ऐसा मानकर; कटल् पटै–सागर (विशाल) सेना का; कात्तु निन्ऱार्–रक्षा करते रहे; वीरियन्–वीर श्रीराम ने; पिन्नर्–बाद; चॅय्त चॅयल् ॲल्लाम्–जो किया वह काम सारा; विळम्पल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे (हम, कवि)। ३३०१

सूर्यसूनु सुग्रीव भी लक्ष्मण के पीछे जाने लगा जो कि धनी श्रीराम की बात समझकर बोलनेवाले हैं। सभी उसी को उत्तम कार्य मानकर सागर (विशाल) सेना की रक्षा में लगे रहे। अब हम आगे श्रीवीरराघवकृत कार्य का वर्णन करेंगे। ३३०१

विल्लिनैत् तॊऴुदु वाङ्गि येऱ्ऱिनान् विन्नाण् मेरुक्
कल्लॅनच् चिऱन्द देयुङ् गरुणैयङ् गडले यन्न
ॲल्लॊळि मार्बिल् वीरक् कवशमिट् टिळैया वेदच्
चॊल्लॅनत् तॊलैया वाळित् तूणियुम् बुऱत्तुत् तूक्कि 3302

अम् करुणै कटले–सुन्दर करुणा-सागर श्रीराम ने ही; तॊऴुतु–नमन करके; विल्लिनै वाङ्कि–धनु को लेकर; विल् नाण् एऱ्ऱिनान्–धनु की प्रत्यंचा चढ़ायी; मेरु कल् ॲन–मेरु पर्वत के समान; चिऱन्ततेयुम्–श्रेष्ठ हो तो भी; अन्न–वैसे; ॲल् ऒळि मार्पिल्–प्रकाशमय वक्ष में; वीरम् कवचम् इट्टु–वीर कवच धारण करके; इळैया वेतम् चॊल्–अपौरुषेय वेद-वचन; ॲन–के समान; तॊलैया–अक्षय; वाळि–बाणों-सह; तूणियुम्–तूणीर; पुऱत्तु तूक्कि–पीठ से बाँधकर। ३३०२

मनोरम करुणासागर श्रीराम ने नमन करके धनु को हाथ में लिया और प्रत्यंचा चढ़ायी। फिर मेरुपर्वत-समान श्रेष्ठ अपने छविमय वक्ष में कवच पहन लिया और अपौरुषेय वेदवाक्यों के समान अक्षय तूणीर पीठ से बाँध लिया। ३३०२

ओशनै नूऱ्ऱिन् वट्ट मिडैविडा दुऱैन्द शेनैत्
तूशिवन् दण्णल् दन्नैप् पोक्कऱ वळैन्दु शुऱ्ऱि
वीशिन पडैयु मम्बु मिडैदलुम् विण्णो राक्कै
कूशिन पॊडिया लॅङ्गुङ् गुमिऴ्त्तन वियोम कूडम् 3303

नूऱ्ऱिन् ओचनै वट्टम्–हज़ार योजन तक वर्तुलाकार फैली; इटै विटातु–निरन्तर; उऱैन्त–जो रही; चेनै–उस (शत्रु) सेना का; तूचि वन्तु–अग्र भाग आकर; अण्णल् तन्नै–प्रभु को; पोक्कु अऱ–जाने का मार्ग न छोड़कर; वळैन्तु–चारों ओर आकर; चुऱ्ऱि–घेरकर; वीचिन पटैयुम्–जो फेंकता रहा वे हथियार और; अम्पुम्–बाण; मिटैतलुम्–पास आये तो; विण्णोर् आक्कै–देवों के शरीर; कूचिन–संकुचित हुए; पॊटियाल्–धूल से; वियोम कूटम् ॲङ्कुम्–व्योम-भाग में सर्वत्र; कुमिऴ्त्तन–भर उठा। ३३०३

सौ योजन दूर तक गोलाकार राक्षस-सेना खचाखच भरी थी। उसका अग्रभाग आकर श्रीराम को ऐसा घेर गया कि निकलने का कोई मार्ग नही रहा। फिर उन्होंने जो चलाये वे युद्ध के आयुध और बाण विपुल परिमाण में आने लगे तो देवों के भी शरीर संकुचित हो गये। तब जो धूलि उठी उससे व्योमलोक में सब स्थान भरकर फूल गये। ३३०३

कण्णने यॅळियॆ मिट्ट कवशमे कडले यत्न
वण्णने यऱत्तित् वाळ्वे मऱैयवर् वलियॆ माऱा
दॉण्णुमे नीय लादो रॊरुवर्क्किप् पडैमे लूऩ्ऱ
ॲण्णमे मुडित्ति यॅन्ना वेत्तिन रिमैयो रॆल्लाम् 3304

इमैयोर् ॲल्लाम्–सभी देव; कण्णने–दयादृष्टि रखनेवाले; ॲळियेम् इट्ट–हम दीनों के पहने; कवचमे–कवच; कडले अन्न–समुद्र के समान; वण्णने–वर्ण वाले; अऱत्तित् वाळ्वे–धर्म के जीवन; मऱैयवर् वलियॆ–वेदज्ञों के बल; नी अलातोर्–आपके सिवा; ऑरुवर्क्कु–किसी के लिए भी; माऱातु–बिना पीछे आये; इ पडै मेल् ऊन्ऱ–इस सेना पर आक्रमण करने को; ऑण्णुमे–शक्ति रहेगी क्या; ॲण्णमे मुटित्ति–हमारा मंशा पूरा करे; ॲन्ना–कहकर; एत्तिनर्–स्तुति की। ३३०४

तब सभी देवों ने श्रीराम से प्रार्थना की, हे दयादृष्टि रखनेवाले! हमारे रक्षक कवच! सागरश्याम! धर्म के आश्रय! वेदज्ञ विप्रों के बल! आपको छोड़ कौन इस सेना का सामना कर सकता है? आप हमारी इच्छा पूरी करें (यानी इनका नाश कर दें)। ३३०४

मुनिवरे मुदल्व राय वऱत्तुऱै मुऱ्ऱि नोर्हळ
तनिमैयु मरक्कर् तानैप् पॆरुमैयुन् दरिक्क लादार्
पनिवरु कण्णर् विम्मिप् पदैक्किन्ऱ नॆञ्जर् पावत्
तनैवरुन् दोऱ्क वण्णल् वॆल्हवॆन् ऱाशि शॊन्नार् 3305

मुनिवरे मुतल्वर् आय–मुनि आदि; अऱम् तुऱै मुऱ्ऱिनोर्कळ्–धर्ममार्गनिष्ठ; तनिमैयुम्–श्रीराम का एकाकीपन और; अरक्कर् तानै–राक्षसों की सेना की; पॆरुमैयुम्–बड़ाई; तरिक्कलातार्–देखकर अधीर जो बने; पनि वरुकण्णर्–अश्रु-भरे नेत्रों वाले; विम्मि–दुःखी हो; पतैक्किन्ऱ–धड़कनेवाले; नॆञ्चर्–मनों के; पावत्तु अनैवरुम्–सभी पापी; तोऱ्क–हार जायँ; अण्णल् वॆल्क–महान श्रीराम जीते; ॲन्ऱु आचि चॊन्नार्–ऐसे आशीर्वचन बोले। ३३०५

मुनि और धर्मनिष्ठ लोगों ने श्रीराम की तन्हाई देखी और राक्षस-सेना की बड़ाई तो वे अधीर हो गये। उनकी आखें अश्रुपूर्ण हो गयीं और उनका हृदय दुःख से धड़कने लगा। उन्होने शुभकामना प्रगट की कि पापी सब हार जायँ। महान् श्रीराम जीतें। ३३०५

मऱ्ऱुम् वेऱ् ऱत्तुळ् निन्ऱ वान नाड नैत्तुळोर्
कोऱ्ऱ विल्लि वॆल्ह वञ्ज मायर् वीह कुवलयत्
तुऱ्ऱ तीमै तीर्ह विन्ऱॊ डॆन्ऱु कूऱि नार्निलम्
तुऱ्ऱ वॆम्ब डक्कै नीश रिन्न विन्न शॊल्लिनार् 3306

मऱ्ऱुम्–और भी; वेऱु अऱत्तुळ् निन्ऱ–अलग धर्मरत; वानम् नाडु–व्योम-लोक के; अनैत्तुळोर्–सब स्थानों के वासी देवों ने; कोऱ्ऱम् विल्लि–विजयकोदण्ड-पाणी; वॆल्क–जीतें; वञ्चम् मायर्–वंचक मायावी; वीक–मरें; कुवलयत्तु उऱ्ऱ तीमै–भूमि पर आया संकट; इन्ऱोटु तीर्क–आज से मिट जाय; ऍन्ऱु कूऱिनार्–ऐसा मंगल-कामना की; निलम् तुऱ्ऱ–भूमि में जो भरे रहे; वॆम् पटै कै–भयंकर हथियारों को धारण करनेवाले हाथों के; नीचर्–नीच; इन्न इन्न–ऐसी-ऐसी बातें; चॊल्लिनार्–बोले। ३३०६

और भी इनसे अलग सभी व्योमवासियों ने शुभकामना की कि विजय-कोदंडपाणी विजयी हों! भूमि पर आया संकट आज ही (के साथ) समाप्त हो! तब भूमि पर जो भरे आये उन भयंकर आयुधहस्त राक्षसों ने ये (निम्नोक्त) बातें कहीं। ३३०६

इरिन्द शेनै शिन्दि यारु मिन्ऱि येह निन्ऱुनम्
विरिन्द शेनै कण्डि यादु मञ्ज लिन्ऱि वॆञ्जरम्
तॆरिन्दु शेव हन्ऱि ऱम्ब लिन्ऱि यॆय्दु शॆय्हैयान्
पुरिन्द तन्मै वॆऱ्ऱि मेलु नन्ऱु मालि पॊय्क्कुमो 3307

नम्–हमारी; विरिन्त चेनै कण्टु–विस्तृत सेना देखकर; इरिन्त चेनै–जो भागी थी वह सेना; चिन्ति–अस्त-व्यस्त होकर; यारुम् इन्ऱि एक–कोई भी बाक़ी न छोड़कर चली गयी तो भी; यातुम् अञ्चल् इन्ऱि–बिना किसी डर के; निन्ऱु–स्थित रहकर; वॆम् चरम्–भयंकर अस्त्र; तॆरिन्तु–चुन लेकर; चेवकन्–वीर; तिऱम्पल् इन्ऱि–बिना किसी विकार के; ऍय्तु–बाण चलाने के; चॆय्कैयान्–कार्य में; पुरिन्त तन्मै–जो दिखाता है वह गुण; वॆऱ्ऱि मेलुम् नन्ऱु–विजय से भी बढ़कर (श्लाघ्य) है; माली पॊय्क्कुमो–माल्यवान झूठ कहेगा क्या। ३३०७

हमारी बड़ी सेना को देखकर वानर-सेना अस्त-व्यस्त हो अलग-अलग भाग गयी और कोई भी वहाँ नही रहा। तो भी बिना किसी डर के राम खड़ा रहता है, भयंकर अस्त्र चुन-चुनकर अप्रमत्त रूप से चलाता है। उसका यह कार्य विजय से भी अधिक प्रशंसनीय है! हाँ माल्यवान ने सच ही कहा था! उसका कथन झूठा हो सकता है क्या? । ३३०७

पुरङ्ग ळॆय्द पुङ्ग वऩ्कु मुण्डु तेर्पॊ रुन्दिनार्
परन्द तेवर् माय नम्मै वेर ऱुत्त पण्डैनाळ्
विरैन्दु पुळ्ळिन् मीदु विण्णु ळोर्ह ळोडु मेविनान्
करन्दि लन्त नित्तॊ रुत्त नेरुम् वन्दु कालिनान् 3308

पुरङ्कळ् ॲय्त–त्रिपुर पर बाण चलाया जिसने; पुङ्कवर्कुम्–उस पुंगव के पास भी; तेर् उण्डु–रथ (भूमि रूपी) है; परन्त तेवर्–बड़ी संख्या में आये देव; पोरुन्तिनार्–साथ लगे रहे; मायन्–विष्णु ने; नम्मै–हमें; वेर् अऱुत्त–(जिस दिन) निर्मूल किया था; पण्टै नाळ्–उस पुराने दिन में; पुळ्ळिन् मीतु–पक्षी (राज गरुड़) पर; विरैन्तु–सवेग; विण्णुळोर्कळोटुम्–देवों के साथ; मेवितान्–आया; तनित्तु ओरुत्तन्–अकेला एक; करन्तिलन्–नहीं छिपता; कालितान्–पैदल ही; वन्तु–आकर; नेरुम्–युद्ध करता है। ३३०८

त्रिपुरारी (भूमि को) रथ के रूप में ले आया, उसके साथ भी देव बड़ी संख्या में आये थे। विष्णु ने जिस दिन हमें निर्मूल किया, उस समय वह भी पक्षीराज गरुड़ पर देवों को साथ लेकर ही आया था। पर इसे देखो ! यह अकेला है, छिपता नहीं ! और पैदल आया युद्ध करता है ! । ३३०८

तेरु मावु मियानै योडु शीय मियाळि यादिया
मेरु मानु मॅय्यर् निऩ्ऱ वेलै येऴिऩ् मेलवाल्
वारुम् वारु मॅऩ्ऱ ऴैक्कु मानि डऱ्किम् मण्णिडैप्
पेरु माऱु नम्मि डॅप्पि ऴैक्कु माऱु मॅङ्ङऩे 3309

तेरुम्–रथ और; मावुम्–अश्व; यानैयोटु–हाथी और; चीयम्–सिंह; याळि–शरभ; आतिया–आदि; मेरु मानुम्–मेरु-तुल्य; मॅय्यर्–शरीर वाले; एऴिन् वेलै मेल् निन्ऱ–सातों समुद्रों से भी अधिक हैं; वारुम् वारुम्–आओ, आओ; ॲन्ऱु–ऐसा; अऴैक्कुम्–आमंत्रित करनेवाले; मानिटऱ्कु–मानव के लिए; इ मण् इटै–इस भूमि में; पेरुम् आऱुम्–बचकर जाने का प्रकार; नम् इटै–हमारे पक्ष में रहनेवालों के; पिऴैक्कुम् आऱुम्–बचने का मार्ग; ॲङ्ङने–कैसा। ३३०९

इधर रथ, अश्व, हाथी, सिंह, शरभ आदि सेना के वीरों के साथ मेरु-सदृश शरीर वाले हैं— सब मिलकर सातों समुद्रों से भी अधिक विस्तार में हैं। तो भी वह मानव 'आओ-आओ' कहकर आमंत्रित कर रहा है ! अब भूमि में इसके बचने का मार्ग कहाँ और हम भी बचें कैसे ? । ३३०९

ॲन्ऱु शॅन्ऱि रैत्तॅ ऴुन्दोर् शीय मेऱ डर्त्तदैक्
कुन्ऱु शूऴ्व ळैत्त पोऱ्ऱॊ डर्न्द शेनै कूडलुम्
नन्ऱि दॅन्ऱु ञाल मेऴु नाह मेऴु मानन्दत्
तॅन्ऱि विल्लै वेद नाद ञाणॊ ऱिन्द वेलैवाय् 3310

ॲन्ऱु–ऐसा कहते हुए; चॅन्ऱु–(राक्षस) जाकर; इरैत्तु ॲऴुन्तु–आरव मचा उठकर; ओर् चीयम् एऱु–एक नर केसरी को; अटर्त्ततै–जिसने आक्रमण किया; कुन्ऱु–पर्वत (हाथी); चूऴ् वळैत्त पोल्–चारों ओर से घेर गये जैसे; तॊटर्न्त चेनै–पीछे लगी सेना के; कूटलुम्–मिलते ही; वेतम् नातन्–वेदनाथ ने; इतु नन्ऱु–यह अच्छा है; ॲन्ऱु–कहकर; ञालम् एऴुम्–(ऊपर के) सातों लोक;

नाकम् एळुम्–नीचे के सातों लोक; मानुम्–सदृश; तन् वॅन्ऱि विल्लै–अपने विजयी धनु का; नाण् ऍऱिन्त–जब ज्यास्वन निकाला; वेलै वाय्–उस समय। ३३१०

ऐसा कहते हुए राक्षस लोग नारों के साथ श्रीराम को चारों ओर से ऐसा घेर गये जैसे एक नर केसरी को पर्वतोपम हाथी घेर लेते हों। तब वेदनायक श्रीराम ने ऊपर के और नीचे के चौदहों भुवन-सदृश अपने विजयकोदंड के डोरे को टंकृत किया। तब। ३३१०

कदम्बु लऱ्न्द शिन्दै वन्द कावल् यानै मालोडु
मदम्बु लऱ्न्द निन्ऱ वीरर् वाय्पु लऱ्न्द मावॅलाम्
पदम्बु लऱ्न्द वेह · माह वाळ रक्कर् पण्बुशाल्
विदम्बु लऱ्न्द वॅन्ऱिन् वॅन्ऱ वॅन्ऱि शॊल्ल वेणुमो 3311

कावल् वन्त यानै–रक्षा देने आये हाथी; मालोटु–नशे के साथ; मतम् पुलर्न्त–मद से हीन हो गये; चिन्तै वन्त–मन में उठे; कतम् पुलर्न्त–कोप से हीन हो गये; निन्ऱ वीरर् वाय्–वहाँ जो रहे उन वीरों के मुख; पुलर्न्त–सूख गये; मा ऍलाम्–सभी अश्व; पतम् वेकम्–पैरों के वेग में; पुलर्न्त–कम हो गये; माकम्–आकाश के समान विस्तृत; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों के; पण्पु–सामर्थ्य की; चाल् वितम्–उच्च स्थिति; पुलर्न्तनु–बिगड़ गयी; ऍन्ऱिन्–तो; वॅन्ऱ–(श्रीराम ने) जो विजय पायी; वॅन्ऱि–उस विजय का हाल; चॊल्ल वेणुमो–कहना चाहिए क्या। ३३११

सेना की रक्षा के लिए जो हाथी आये उनका नशा दूर हुआ। मद भी सूख गया। उनके मन में उठा क्रोध भी ग़ायब हो गया। वहाँ जो स्थित रहे उन वीरों का मुख सूख गया। अश्वों की पदगति कम हो गयी। आकाश के समान विस्तृत सेना के क्रूर राक्षसों का युद्धसामर्थ्य भी कम हो गया। तो श्रीराम की विजय का हाल कहना भी है क्या? । ३३११

वॅऱित्ति रिन्द वाशि योडु शीय मावु मीळियुम्
शॅऱित्त मैन्द शिल्लि यॆन्नु माळि कूडु तेरॅलाम्
मुऱित्तॆ ऱिन्दु मुन्द यानै वीशु सूशु पाहरैप्
पिऱित्ति रिन्दु शिन्द वन्दॊ राहु लम्बि ऱन्ददाल् 3312

चीयम् मावुम्–सिंह जानवर और; मीळियुम्–पिशाच; वॅऱित्तु–पागल बनकर; इरिन्त वाचियोटु–भागते अश्वों के साथ; चॅऱित्तु अमैन्त–जिनसे बाँधे गये थे; चिल्लि ऍन्नुम्–'चक्री' कहलानेवाले; आळिकूटु–पहियोंदार; तेर् ऍलाम्–सभी रथों को; मुऱित्तु ऍऱिन्तु मुन्त–तोड़ डालकर आगे बढ़े; यानै–और हाथी; वीचुम्–(अंकुश का) प्रयोग करनेवाले; सूचु पाकरै–मिले रहे पीलवानों को; पिऱित्तु–प्राणों से अलग करके; इरिन्तु चिन्त–तितर-बितर भागे; ओर् आकुलम्–एक हलचल; वन्तु पिऱन्ततु–मच गयी। ३३१२

सिंह और पिशाच भ्रांत हो गये और अश्व भड़क उठे। सबने पहियोंदार रथों को तोड़ा और आगे भागे। हाथी भी अंकुशप्रयोक्ता महावतों को मारकर तितर-बितर हो गये। तब राक्षसों की सेना में एक भारी हलचल पैदा हो गयी। ३३१२

इन्नि मित्त मिप्प डैक्कि डैन्दु वन्द डुत्तदोर्
तुन्नि मित्त मॅन्ऱु कॉण्डु वानु ळोर्ह डुळ्ळिनार्
अन्नि मित्त मुड्ऱ पोद रक्कर् कण्ण रङ्गमेल्
मिन्नि मिर्त्त वन्न वाळि वेद नादन् वीशिनान् 3313

इ निमित्तम्–ये शकुन; इ पटैक्कु–इस सेना पर; इटैन्तु वन्तु–कष्ट आकर; अटुत्ततु–पहुँचा है, ऐसा; ओर्–अपूर्व; तुन् निमित्तम्–दुश्शकुन हैं; ऍन्ऱु कॉण्डु–ऐसा मानकर; वानुळोर्कळ्–व्योमवासी; तुळ्ळितार्–उछले; अ निमित्तम्–वे शकुन; उड्ऱ पोतु–जब हुए तब; अरक्कर् कण् अरङ्क–राक्षस व्यग्र हुए और; मेल्–उन पर; मिन् निमिर्त्त अन्न–उस बिजली के समान जो कि सीधी बनायी गयी हो; वाळि–शरों को; वेतनातन् वीचिनान्–श्रीराम ने चलाये। ३३१३

देवों ने सोचा कि ये सब शकुन राक्षस-सेना पर आनेवाले बड़े संकट के सूचक दुश्शकुन हैं। इसलिए वे संतोष से उछले। तब राक्षसों को बेचैन करते हुए वेदनायक श्रीराम ने उन पर अवक्र विद्युत्-तुल्य बाण चलाये। ३३१३

आळि मेलु माळिन् मेलु मातै मेलु माडन्मा
मीळि मेलुम् वीरर् मेलुम् वीरर् तेरिन् मीदिनुम्
वाळि मेलुम् विल्लिन् मेलु मण्णिन् मेल्व ळर्न्दमात्
तूळि मेलु मेऱ वेऱ वीरन् वाळि तूविनान् 3314

वीरन्–श्रीवीरराघव; मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वळर्न्त मा तूळि–जो उठ बढ़ी वह धूल; मेलुम् एऱ एऱ–और ऊपर-ऊपर चढ़ी तो; आळि मेलुम्–शरभों पर; आळिन् मेलुम्–सारथियों पर; आतै मेलुम्–गजों पर; आटल् मा–ताक़तवर अश्वों पर; मीळि मेलुम्–पिशाचों पर; वीरर् मेलुम्–वीरों पर; वीरर् तेरिन् मीतिनुम्–वीरों के रथों पर; वाळि मेलुम्–उनके प्रेरित शरों पर; विल्लिन् मेलुम्–चापों पर; वाळि तूविनान्–बाण बरसाये। ३३१४

भूमि पर उठी धूलि उत्तरोतर बढ़ी और ऊपर चली। तब श्रीराम के बाणों की, रथ के शरभों, सारथियों, गजों, सशक्त अश्वों, भूतों और वीरों, वीरों के रथों, उनसे प्रेरित शरों और उनके हाथ के धनुओं पर विपुल वर्षा-सी हुई। ३३१४

मलैवि ळुन्द वावि ळुन्द मान यानै मळ्ळर्शॅन्
दलैवि ळुन्द वावि ळुन्द दाय वाशि ताळऱ्ऱुम्

शिलैवि ऴुन्द वावि ऴुन्द तिण्ब दाहै तिङ्गळिन्
कलैवि ऴुन्द वावि ऴुन्द वॅळ्ळॅ यिऱ्ऱु काडॅलाम् 3315

मातम् यातै–श्रेष्ठ गज; मलै विऴुन्तवा–पर्वत गिरे जैसे; विऴुन्त–गिरे; ताय वाचि–लपक चलनेवाले घोड़े; मळ्ळर् चॅम् तलै–वीरों के लाल सिर; विऴुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; विऴुन्त–गिरे; ताळ् अरुम् चिलै–जिनके बाजू कटे वे धनु; विऴुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; तिण् पताकै–सुदृढ़ पताकाएँ; विऴुन्त–कटकर गिरीं; वॅळ् ऍयिऱ् काटु ॲलाम्–श्वेत दाँतों के सभी समूह; तिङ्कळिन् कलै–चन्द्रकलाएँ; विऴुन्तवा–जैसे गिरे; विऴुन्त–वैसे गिरीं। ३३१५

श्रीराम के बाणों से आहत होकर शानदार हाथी गिरते पर्वतों के समान गिरे। लपक चलनेवाले अश्व कटकर गिरते राक्षसों के लाल सिरों के समान गिरे। धनु बाजू कटकर ऐसे गिरे जैसे सुदृढ़ पताकाएँ कटकर गिरीं। राक्षसों के सफ़ेद वक्र दाँतों के समूह चन्द्र की कलाओं के समान गिरे। ३३१५

वाडै नालु पालुम् वीश माह मेह मालैवॅङ्
गोडै मारि पोल वाळि कूड वोडै यानैयुम्
आडल् मावुम् वीरर् तेरु माळु माळ्व दानवाल्
पाडु पेरु माऱु कण्डु कण्शॅल् पण्बु मिल्लैयाल् 3316

नालु पालुम्–चारों तरफ़; वाटै वीच–जब उदीची हवा बहती है; माकम्–तब आकाश की; मेकम् मालै–मेघमालाएँ; वॅम् कोटै मारि पोल–जो बरसाती हैं उस गरम ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान; वाळि कूट–बाणों के मिलने से; ओटै यानैयुम्–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी और; आटल् मावुम्–ताक़तवर अश्व; वीरर् तेरुम्–वीरों के रथ और; आळुम्–पदातिक वीर; माळ्वतान–मरते बने; आल्–इसलिए; पाटु–पास; पेरुम्–बहनेवाली; आऱु कण्टु–रक्त-नदी को देखकर; कण्–दृष्टि का; चॅल् पण्पुम्–दौड़ने का गुण; इल्लैयाल्–नहीं रहा। ३३१६

चारों ओर उदीची हवा के बहते वक़्त आकाश की मेघमाला से निकलनेवाली ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान श्रीराम की शर-वर्षा होने लगी। तो मुखपट्ट से अलंकृत हाथी, ताक़तवर घोड़े, वीरों के रथ और पदाति वीर मिटे। तब पार्श्व में जो रक्त की नदी बही वह आँखों की दृष्टि के गुण को बेकार करती बही (यानी दृष्टि उसका अंत नहीं देख सकी)। ३३१६

विऴित्त कण्गळ् कैहण् मॅय्हळ् वेऱ लैक्क ऴुत्तिनिल्
तॅऴित्त वाय्हळ् शॅल्ल लुऱ्ऱ ताळ्ह डोळ्हळ् शॅल्लिनैप्
पऴित्त वाळि शिन्द निऩ्ऱु पट्ट पन्नरि विट्टकोल्
कऴित्त वायु तङ्ग ळॊन्ऱु शॅय्व दिल्लै कण्डदे 3317

वॅल्लित्तै पऴित्तुत्त–मेघ की निंदा करनेवाले; वाळि–शरों को; चिनृत–श्रीराम ने चलाया तो; विऴित्तत कण्कळ्–खुली आँखें; कैकळ्–हाथ; मॅय्कळ्–और शरीर; कळुत्तितिल्–कण्ठ पर से; वॅल्त्तलै–जीतने की; तॅऴित्त्त वाय्कळ्–निंदा करनेवाले मुख; चॅल्लल् उऱ्ऱ–गमनशील; ताळ्कळ्–पैर और; तोळ्कळ्–कंधे; नित्ऱ पट्ट अत्ऱि–बेकार रहे इसके अलावा; विट्ट कोल्–(राक्षसों से) प्रयुक्त शरों और; कऴित्त आयुतङ्कळ्– (म्यानों से) बाहर निकाले गये हथियारों को; ऑत्ऱु चॅय्ततु–श्रीराम की कुछ हानि करता; कण्टतु इल्लै–नहीं देखा गया। ३३१७

श्रीराम ने मेघों की वर्षा से भी अधिक शर चलाये। तब राक्षसों की खुली आँखें, हाथ, शरीर, कंठ पर रहकर डींग मारते रहे मुख, गमनशील पैर और कंधे सब बेकार रहे! इसको छोड़कर राक्षसों से प्रेरित बाणों और उठाये गये हथियारों ने श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ा। ३३१७

तॊडुत्त वाळि योडु विऱ्ऱु णिनृदु वीऴु मुनृऱुणिन्
दॆडुत्त वाळ्ह ळोडु तोळ्ह ळिऱ्ऱु वीऴ मऱ्ऱुडन्
कडुत्त ताळ्हळ् कण्ड माहु मॆङ्ङ नेह लनृदुनेर्
तडुत्तु वीरर् तामु मॊत्ऱु शॆय्यु माश लत्तिताल् 3318

तॊट्टत्त–चलाये गये; वाळियोट्टु–(राक्षसों के) शरों के साथ; विल्–धनुओं के; तुणिनृतु वीऴुम् मुन्–कटकर गिरने से पहले; तुणिनृतु ऍट्टुत्त–साहस के साथ ली गयी; वाळ्कळोट्टु–तलवारों के साथ; तोळ्कळ्–कंधे; इऱ्ऱु वीऴुम्–कटकर गिर जाते; मऱ्ऱु–और भी; उटन्–तुरन्त; कट्टत्त ताळ्कळ्–वेगवान पैर; कण्टम् आकुम्–टुकड़े बनते; वीरर्–(राक्षस) वीर; नेर् कलनृतु–सीधे सामना करके; तट्टुत्तु–(श्रीराम के शरों को) रोककर; तामुम्–स्वयं; चलत्तिताल्–कोप से; ऑत्ऱु चॅय्युमा–कुछ कर सकें, यह बात; ऍङ्ङनॆ–हो कैसे। ३३१८

राक्षसों के चलाये गये शर धनुषों के साथ कटकर गिरें, इसके पहले ही साहस के साथ जो तलवारें उन्होंने लीं उनके साथ उनके कंधे कटकर गिर जाते। और साथ-साथ गतिशील पैर छिन्न-भिन्न हो जाते। फिर वीर सामने आकर श्रीराम के शरों को रोकें और कोप दिखाकर कुछ करें सो कैसे हो सकता था? । ३३१८

कुरनृदु णिनृदु कण्शि दैनृदु पल्ल णङ्गु लैनृदुपेर्
उरनृदु णिनृदु वीऴ्व दत्ऱि यावि योड वॊण्णुमो
शरनृदु णिनृद वॊत्ऱै नूऱु शॆत्ऱु शॆत्ऱु तळ्ळलाल्
वरनृदु णिनृद वीरर् पोरिन् मुनृद वुनृदु वाशिये 3319

तुणिनृत ऑत्ऱै–(श्रीराम ने जिसका निशाना बनाने का) निश्चय किया उस पर; चरम्–चलाया गया शर; नूऱु चॅत्ऱु–सौ बनकर जाता; तळ्ळलाल्–और गिराता, इसलिए; वरम्–वर-बल से; तुणिनृत वीरर्–साहस करनेवाले वीर; पोरिन्–युद्ध में; मुनृत–आगे; उनृतु–जिन्हें चलाते हैं वे; वाचि–अश्व; कुरम् तुणिनृतु–खुर कटवाकर; कण् चितैनृतु–आँखें नष्ट करा लेकर; पल्–दाँतों के साथ; अणम्

कुलैन्तु–ओंठ खोकर; पेर् उरम् तुणिन्तु–बड़ी छाती कटवाकर; वीऴ्वतु अन्ऱि–गिरना छोड़कर; आवि–प्राणों के साथ; ओट ऑण्णुमो–दौड़ सकेंगे क्या। ३३१९

श्रीराम जिसका निशाना बाँधते उस पर उनके शर एक के सौ-सौ बनकर जाते और मार गिराते। इसलिए वर के बल से साहस के साथ जिन अश्वों को राक्षसों ने युद्ध में आगे भेजा उनके खुर कटे, आँखें छिन्न हुईं। दाँतो के साथ मुख का ऊपरी भाग कुचल गया। और बड़ी छातियाँ कट गयीं। और वे मरकर गिरे। इसके सिवा बेचारे क्या प्राण बचाकर भाग सकते थे ? । ३३१९

ऊर वुन्ऱिऩ् मुन्बु पट्टु यर्न्द वॅम्बि णङ्गळाल्
पेर वॉल्व दन्ऱु पेरि ऩायि रप्पॅरु ञ्जरम्
तूर वॊन्ऱु नूऱु कूऱु पट्टु हुन्दु यक्कलाल्
तेर्ह ळॅन्ऱु वन्द पावि यॅन्ऩ शॅय्है शॅय्युमे 3320

ऊर उन्ऱिऩ्–(रथ) धीरे-धीरे चलना आरम्भ करें तो; मुन्पु पट्टु–पहले युद्ध में मरकर; उयर्न्त–उससे संख्या में बढ़ी; वॅम् पिणङ्कळाल्–गरम लाशों के कारण; पेर ऑल्वतु अन्ऱु–चल सकनेवाले नहीं हैं; पेरिऩ्–चलते तो; आयिरम्–हज़ार; पॅरु चरम्–बड़े शर; तूर–लग जाते हैं, इसलिए; ऑन्ऱु–एक-एक के; नूऱु कूऱुपट्टु–सौ-सौ टुकड़े बनकर; उकुम्–चू जाते; तुयक्कु अलाल्–बेकार होने के सिवा; परवि–बड़े विस्तार में; तेर्कळ् ऍन्ऱु वन्त–रथों का नाम ले आये वे; ऍन्ऩ चॅय्युम्–क्या करते। ३३२०

रथ जाने लगते तो सामने पहले मरे वीरों की लाशों के ढेरों के रहने के कारण वे जा नहीं पाते। कुछ चलते भी तो श्रीराम के हज़ारों शर उन पर लगते और वे सौ-सौ खण्डों में कटकर चू जाते। इसलिए रह बेकार जाने के अलावा रथ का नाम धारण करके आये वे क्या काम करते ? । ३३२०

ऍट्टु वन्ऱि शैक्क णिन्ऱ यावुम् वल्ल यावरुम्
किट्टि नुय्न्दु पोहि लार्ह ळॅन्न निन्ऱ केळ्वियाल्
मुट्टुम् वॅङ्गण् मान यानै यम्बु राय मुन्नमे
पट्टु वन्द पोल्वि ऴुन्द वॅन्न तन्मै पण्णुमे 3321

मुट्टुम्–चुभनेवाली; वॅम् कण्–भयंकर आँखें; मानम्–और अभिमान रखने वाले; यानै–हाथी; अम्पु उराय्–शरों के लगने से; मुन्नमे–पहले ही; पट्टु वन्त पोल्–मरे आये के समान; विऴुन्त–गिरे; ऍन्ऩ तन्मै पण्णुमे–क्या काम कर सकते; वल् तिचै–सुदृढ़ दिशाओं; ऍट्टुक् कण् निन्ऱ–आठों में जो खड़े रहे; यावुम्–सभी (सेना-विभाग); वल्ल यावरुम्–सभी बलवान वीर; किट्टिऩ्–पास आयें तो; उय्न्तु पोकिलार्कळ्–बचकर नहीं जा सकेंगे; ऍन्ऩ–इसलिए; केळ्वियाल् निन्ऱ–प्रश्न के साथ खड़े रहे। ३३२१

चुभती-सी आँखों वाले और शानदार गज शरों के लगने से ऐसे गिरते मानो वे पहले ही मरकर किसी विध चल आये हों। फिर वे क्या करते ? वे इतना ही कर सकते थे कि लोगों के मन में यह प्रश्न उठा दें कि सबल आठो दिशाओं में रही सब सेनाएँ और वीर समर्थ वीर श्रीराम के पास जायँ तो बचकर जा नहीं सकेंगे। अतः क्या करें ? । ३३२१

वावि कॉण्ड पुण्ड रीह मन्न कण्णन् वाळियॉन्
ड्रेवि नुण्डे नूरु कोडि कॉल्लु मॅन्न वॅण्णुवान्
पूवि नण्डर् कोन् मॅण्म यङ्गु मन्न पोरिन्वन्
दावि कॉण्ड काल नार्ह ड्रप्पु मॅन्न दाहुमे 3322

वावि कॉण्ट–सरोवर में उगे; पुण्टरीकम् अन्न–कमलों के समान; कण्णन्–नेत्रोंवाले; वाळि ऑन्रु एविन्–शर एक चलावें तो; उण्टै–वह मिट्टी का गोला; नूरु कोटि कॉल्लुम्–शतकोटि का हनन करता; ॲन्न–इस कारण से; ॲण्णुवान्–(मृतकों की) गिनती रखनेवाला; पूविन्–कमलवासी; अण्टर् कोनुम्–देवपति भी; ॲण् मयङ्कुम्–गिनती में भ्रमित हो जाता; अन्न पोरिल्–उस तरह के युद्ध में; वन्तु–आकर; आवि कॉण्ट–जिसने जीवों का ग्रहण किया; कालनार्–उस यमदेव का; कट्टप्पुम्–कार्य-वेग भी; ॲन्नतु आकुम्–कैसा होगा। ३३२२

सरसिजाक्ष श्रीराम जब एक बाण चलावें वह मिट्टी का गोला (शर) शतकोटि का संहार करता। इसलिए कमलवासी अजदेव जो मृतकों की गिनती रखते थे, अब गिनती मे चूक गये। तो, वैसे के युद्ध में जीवग्राही यमदेव की कार्य-गति का क्या होगा ? । ३३२२

कॉडिक्कु लङ्गळ् तेरिन् मेल यानै मेल कोडैनाळ्
इडिक्कु लङ्गळ् वीळ वॅन्द काडु पोलॅ रिन्दवाल्
मुडिक्कु लङ्गळ् कोडि कोडि शिन्द वेह मुट्रुरा
वडिक्कु लङ्गळ् वाळि योड वायि नूडु तीयिनाल् 3323

वटि वाळि कुलङ्कळ्–तीक्ष्ण बाणों के समूह; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; मुटि कुलङ्कळ्–सिरों के ढेरों को; चिन्त–छिन्न करते हुए; वेकम् मुट्रु उरा–पूर्ण वेगवान बनकर; ओट–दौड़े तो; वायिन् ऊटु–उनके मुख पर को; तीयिताल्–आग के कारण; तेरिन् मेल–रथ पर के और; यानै मेल–गजों पर के; कॉटि कुलङ्कळ्–झण्डों के समूह; कोटै नाळ्–ग्रीष्मकाल में; इटि कुलङ्कळ् वीळ–वज्र-वृन्दों के गिरने से; वॅन्त–जलनेवाले; काटु पोल्–जंगल के समान; ॲरिन्त–जले। ३३२३

तीक्ष्ण बाणों की पक्तियाँ कोटि-कोटि राक्षस-सिरों को छिन्न करते हुए पूर्ण वेगवान बनकर चले। तब उनके फलों में रही आग रथों पर और हाथियों पर रही पताकाओं में लगी। वे ग्रीष्मवज्र-दग्ध जंगल के समान जल उठीं। ३३२३

अऱ्ऱ वेलुम् वाळु मादि यायु दङ्गळ् मीदॆळुन्
दुऱ्ऱ वेह मुनद वोडि योद वेलै यूडुऱत्
तुऱ्ऱ वॆम्मै कैम्मि हच्चु ऱुक्कॊ ळच्चु वैत्तदाल्
मऱ्ऱ नीरव ऱन्दु मीन्म ऱिन्दु मण्शॆ ऱिन्दवाल् 3324

अऱ्ऱ–रामबाण-छिन्न; वेलुम् वाळुम् आति–भाले, तलवारें आदि; आयुतङ्कळ्–हथियार; उऱ्ऱ वेकम्–लगाये गये ज़ोर के; उन्त–उकसाने से; मीतु ऍळुन्तु–ऊपर उठकर; ओतम् वेलै ऊटु–जल-सागर में; उऱ–लगे तो; तुऱ्ऱ–बढ़ी; वॆम्मै कै मिक–गर्मी के अधिक हो जाने से; चुऱु कॊळ–"शुऱ्" शब्द के साथ; चुवैत्ततान्–पीने (सोखने) लगे, इसलिए; अ नीर्–वह जल; वऱन्तु–सूखकर; मीन्–मछलियाँ; मऱिन्तु–मरकर; मण् चॆऱिन्त–मिट्टी में ठस भर गयीं। ३३२४

भाले और तलवारें कट तो गयीं पर जो ज़ोर उनको चलाते समय उनमें लगाया गया था वह बाक़ी रहा। अतः वे ऊपर उठे और जलसागर पर वेग के साथ गिरे। तब गर्मी अधिक हुई और वे जल को 'शुऱ्' शब्द के साथ पीने लगे। जल सूख गया और मछलियाँ मिट्टी में घने रूप से दब गयीं। ३३२४

पोर रिन्द मन्ऱ रन्द पुङ्ग वाळि पॊङ्गिन्ऩार्
ऊरॆ रिन्द नाट्टु रन्द वॆन्न मिन्ऩि योडलाल्
नीरॆ रिन्द वण्ण मेनॆ ऱुप्पॆ रिन्द नीणॆडुम्
तेरॆ रिन्द वीरर् तञ्जि रम्बॊ डिन्दु शिन्दवे 3325

पोर् अरिन्तमन्–युद्धारिंदम्; तुरन्त–(द्वारा) प्रेरित; पुङ्कम् वाळि–तीक्ष्ण बाण; पॊङ्किन्ऩार्–क्रुद्ध राक्षसों के; ऊर् ऍरिन्त नाळ्–त्रिपुर जब जले; तुरन्ततु–(शिव द्वारा) प्रेरित शर; ऍन्ऩ–के समान; मिन्ऩि–चमकते; ओटलाल्–चले इसलिए; नीर् ऍरिन्त वण्णमे–जैसे पहले जल जला वैसे ही; वीरर् तम् चिरम्–वीरों के सिर; पॊटिन्तु चिन्त–चूर होकर चुए, ऐसा; नॆरुप्पु ऍरिन्त–आग जली; नीळ् नॆटु–बहुत ऊँचे; तेर् ऍरिन्त–रथ जले। ३३२५

युद्धारिंदम श्रीराम-प्रेरित शर त्रिपुरदाहक शिव के शर के समान चमक के साथ गये। तब वीरों के सिरों को चूर कर चुआते हुए आग वैसे ही जली जैसे पहले समुद्र-जल जलाते समय जली थी। तब ऊँचे-ऊँचे रथ भी जल गये। ३३२५

पिडित्त वाळ्हळ् वेल्ह ळोडु तोळ्हळ् पेर रावॆन्ऩत्
तुडित्त यात्तै मीदि रुन्दु पोर्दॊ डङ्गु शूरर्तम्
मडित्त वायच्चॆ ळुन्द लैक्कु लम्बु रण्ड वान्ऩिमिन्
इडित्त वायि निऱ्ऱ माम लैक्कु लङ्ग ळॊन्ऩवे 3326

यात्तै मीतु इरुन्तु–हाथियों पर रहकर; पोर् तॊटङ्कु–युद्ध आरम्भ करनेवाले; शूरर् तम् तोळ्कळ्–शूरों के कन्धे; पिटित्त–गृहीत; वाळ्कळ्–तलवारों और;

वेल्कळोटु–बर्छियों के साथ; पेर् अरा–बड़े सर्पों; अँत्न–के समान; तुटित्त–तड़पे; मटित्त वाय्–मुड़े हुए अधरों के; चॅल्ळु तलै कुलम्–बड़े सिरों के दल; वानित्तु मित्नु–आकाश की बिजली; इटित्त वायित्–जहाँ गिरी वहाँ; इर्र्–टूटे; मा मलै कुलक्कळ् अँत्न–बड़े पर्वतदलों के समान; पुरण्ट–लोटे। ३३२६

हाथी पर सवार होकर जिन सूरों ने लड़ना आरम्भ किया था, उनकी भुजाएँ अपनी गृहीत तलवारों और बर्छियों-सहित बड़े सर्पों के समान तड़पे। मुड़े हुए अधरों के साथ बड़े सिरों के दल वज्राहत पर्वत जैसे उस स्थान पर टूटकर लोटते हैं वैसे टूटकर लोटे। ३३२६

कोर वाळि शीय मीळि कूळि योडु ञाळियुम्
पोर वाळि त्तोडु तेर्हळ् नूरु होडि पोॅत्रुमाल्
नार वाळि ञाल वाळि ञान वाळि नान्दहप्
पार वाळि वीर वाळि वेह वाळि पायवे 3327

नारम् आळि–जीवों के शासक; ञालम् आळि–भूमि के शासक; ञानम् आळि–ज्ञान के स्वामी; नान्तकम् पारम् आळि–'नन्दक' नाम की तलवार के रखनेवाले; वीरम् आळि–वीरता के स्वामी श्रीराम के; वेकम् वाळि–तेज शर; पाय–चले, इसलिए; कोरम् आळि–भयंकर शरभ; चीयम्–और सिंह; मीळि कूळियोटु–बलवान भूतों के साथ; ञाळियुम्–भेड़िये; आळित्तोटु–सारथियों-सहित; पोर–मरे तो; नूरु कोटि तेर्कळ्–सौ करोड़ रथ; पोॅन्रुम्–मिट जाते। ३३२७

जीवों, भूमि, ज्ञान, नंदक तलवार, और वीरता के स्वामी श्रीराम के वेगवान बाण चले तो घोर शरभ, सिंह, बलवान भूत, और सारथी सब मिट गये। फलस्वरूप उनके शतकोटि स्यंदन भी नाश को प्राप्त हो गये। ३३२७

आळि पॅर्र् तेर ळुन्दु माळ ळुन्दु माळॉडच्
चूळि पॅर्र् माव ळुन्दुम् वाशि युञ्जु रिक्कुमाल्
पूळि पॅर्र् वॅङ्ग ळङ्गु ळिप्प डप्पॉ ळिन्दबेर्
ऊळि पॅर्र् वाळि यॅन्न शोरि नीरि नुळ्ळरो 3328

पूळि पॅर्र्–धूल-भरा; वॅम् कळम्–घोर युद्धभूमि; कुळि पट–गड्ढे से भर जाय ऐसा; पोॅळिन्त–बरसात से पूरित; पेर् ऊळि पॅर्र्–महायुगान्त में प्रगट; आळि यॅन्न–समुद्र के समान; चोरि नीरित् उळ्–रक्त-जल में; आळि पॅर्र् तेर्–पहियों-सहित रथ; अळुन्तुम्–मग्न हो जाते; आळ् अळुन्तुम्–पदातिक धँस जाते; आळोटु–महावतों के साथ; अ–वे; चूळि पॅर्र्–मुखपट्टयुक्त; मा–गज; अळुन्तुम्–मग्न हो जाते; वाचियुम्–अश्व भी; चुरियुम्–डूब जाते। ३३२८

भयंकर युद्धभूमि धूलि से भरी थी। वह महायुगसंधि के समुद्र के समान लगी, जिसमें कि मेघ ऐसे बरसे हों कि गड्ढे बन जायँ! उस रक्त-प्रवाह में पहियोंदार रथ डूब जाते; पदातिक मग्न हो जाते।

महावतों के साथ मुखपट्ट-सहित गज ग़र्क़ हो जाते। घोड़े भी डूब जाते। ३३२८

अऱ्ऱु मेलॅ ऴुन्द वन्ऱिशि रङ्गळ् तम्मै यण्मिमेल्
ऑऱ्ऱु मॅन्न वङ्गु मिङ्गुम् विण्णु ळोरो दुङ्गुवार्
शुऱ्ऱुम् वीऴ्द लॅक्कु लङ्गळ् शॊल्लु कल्लिन् मारिपोल्
ऍऱ्ऱु मॅन्ऱु पारु ळोरु मॆङ्गु वारि रङ्गुवार् 3329

अऱ्ऱु–कटकर; मेल् ऍऴुन्त–ऊपर उठे; वल् चिरक्कळ्–मोटे सिर; तम्मै अण्मि–हमारे पास आकर; मेल् ऑऱ्ऱुम्–हम पर आघात करेंगे; ऍन्न–सोचकर; विण् उळोर्–व्योमवासी; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; ऑतुङ्कुवार्–हट जाते; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; वीऴ्–गिरनेवाले; तलै कुलक्कळ्–सिरों के समूह; चॊल्लु–कथित; कल् मारि पोल्–प्रस्तर-वर्षा के समान; ऍऱ्ऱुम्–ज़ोर से लगेंगे; ऍन्ऱु–सोचकर; पार् उळोरुम्–भूलोकवासी भी; एङ्कुवार्–भय खाकर; इरङ्कुवार्–दुःखी होते। ३३२९

'जो सिर कटकर ऊपर उठे हैं वे हम पर आकर आघात करेंगे।' ऐसा डरकर व्योमलोकवासी इधर-उधर हट गये। 'चारों ओर से गिरनेवाले ये सिरों के दल कथित प्रस्तरवर्षा के समान हमको पीट देंगे।' ऐसा सोचकर भूलोकवासी भी डरे और अधीर हुए। ३३२९

मऴैत्त मेहम् वीऴ्व वॅन्न वान मानम् वाडैयिल्
कऴित्तु वन्दु वीऴ्व वॅन्न मण्णिन् मीदु तुन्नुमाल्
अऴित्तॊ डुङ्गु काल मारि यन्न वाळि योळियाल्
विऴित्तॆ ऴुन्दु वानि नूडु मॊय्त्त पॊय्यर् मॅय्यॅलाम् 3330

अऴित्तु–नाश करने से; ऑटुङ्कु–लोक जिससे मिट जाते हैं; कालम् मारि अन्न–उस युगांत की वर्षा के समान; वाळि ओळियाल्–वाणों की पंक्तियों से; विऴित्तु ऍऴुन्तु–विस्फारित आँखों के साथ ऊपर उठकर; वानिन् ऊटु–आकाश में; मॊय्त्त–जो ठस भरे; पॊय्यर् मॅय् ऍलाम्–वे सभी वंचकों के शरीर; मऴैत्त मेकम्–वर्षण योग्य मेघ; वीऴ्व ऍन्न–गिरते जैसे और; वानम् मानम्–आकाशचारी यान; वाटैयिल्–उदीची हवा से; चुऴित्तु वन्तु–घूमते आकर; वीऴ्व ऍन्न–गिरते जैसे; मण्णिन् मीतु–धरती पर; वन्तु तुन्नुम्–आ लगते। ३३३०

पृथ्वी के नाशक युगांतकालीन वर्षा के समान जो चलती रही, उस (श्रीराम की) बाण-वर्षा से वंचक राक्षसों के शरीर ऊपर जा भर गये और जो शरीर खुली आँखों से युक्त थे। वे वर्षाकालीन मेघों और उदीची हवा से प्रताड़ित आकाशचारी यानों के समान पृथ्वी पर गिरे। ३३३०

तॅय्वनॅङ्गुम् वडैक्कलङ्गळ् विडुवर्शिलर् शुडुकणैहळ् शिलैयिऱ् कॊलि
ऍय्वर्शिल रॅऱिवर्शिल रॅऱ्ऱुवर्शुऱ् ऱुवर्मलैहळ् पलवु मॆन्दिप

पॅय्वर्शिलर् पिडित्तुमॆनक् कडुत्तुरुवर् पडैक्कलङ्गळ् पॆरादु वायाल्
वैवर्शिलर् तॆव्ळिप्पर्शिलर् वरुवर्शिलर् तिरिवर्शिलर् वयवर् मत्तो 3331

चिलर्–कुछ वीर; तॆय्वम्–दिव्य; नॆट्टुम् पटै कलङ्कळ्–लम्बे हथियारों को चलाते; चिलर्–कुछ; चुट्टु कणैकळ्–जलानेवाले शरों को; चिलैयिल् कोलि–धनु पर संधान कर; ऍय्वर्–चलाते; चिलर्–कुछ वीर; मलैकळ् पलवुम्–अनेक पर्वतों को; एन्ति–उठाकर; चुऱ्ऱुवर्–दायें और बायें घूमकर; पॅय्वर्–चलाकर; ऍऱ्ऱुवर्–प्रहार करते; पिटित्तुम् ऍन्न–पकड़ेंगे कहकर; कटुत्तु–सवेग; उऱुवर्–आते; चिलर्–कुछ; पटै कलङ्कळ् पॆरातु–हथियार न पाकर; वायाल्–मुख से; वैवर्–गाली देते; चिलर् तॆव्ळिप्पर्–कुछ डांटते; चिलर्–कुछ वीर; वरुवर्–आते; तिरिवर्–घूमते। ३३३१

कुछ वीर दिव्य और लम्बे हथियारों को ले फेंकते। कुछ धनुष से लगाकर जलानेवाले शरों को चलाते। कुछ लोग ऐसे हथियारों का प्रयोग करते जिनको दूर से फेंकना पड़ता है। कुछ वीर अनेक पर्वतों को उठाते हुए दायें-बायें पैंतरे बदलते और पीटते। कुछ यह कहते शीघ्र झपटते कि पकड़ लेंगे। कुछ हथियार न पाकर मुख से गाली देते। कुछ वीर डाँटते। कुछ जवान आते और कुछ वीर घूमते थे। ३३३१

आर्प्पर्पल रडर्प्पर्पल रडुत्तडुत्ते पडैक्कलङ्ग ळळ्ळि यळ्ळित्
तूर्प्पर्पलर् मूविलैवेल् तुरप्पर्पलर् करप्पर्पलर् शुडुदीत् तोन्ऱप्
पार्प्पर्पलर् नॆडुवरैयैप् परिप्पर्पलर् पहलोनैप् पऱ्ऱिच् चुऱ्ऱुम्
कार्प्परुव मेहमॆन्न वेहनॆडुम् बडैयरक्कर् कणिप्पि लादार् 3332

पकलोनै–दिनकर को; पऱ्ऱि चुऱ्ऱुकिन्ऱ–घेरकर घूमनेवाले; कार् परुवम्–वर्षाकालीन; मेकम् ऍन्न–मेघ के समान; वेकम् नॆटुम् पटै–वेगवान लम्बे हथियारों वाले; कणिप्पिला–अनगिनत; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेक; आर्प्पर्–नारे उठाते; पलर्–अनेक; अटर्प्पर्–भिड़ते; पलर्–अनेक; अटुत्तु अटुत्तु–लगातार; पटै कलङ्कळ्–हथियार; अळ्ळि अळ्ळि–उठा-उठाकर; तूर्प्पर्–बरसाते; पलर्–अनेक; मू इलै वेल्–त्रिपत्री शक्तियाँ; तुरप्पर्–छोड़ते; पलर्–अनेक; करप्पर्–छिप जाते; पलर्–अनेक; चुट्टु ती–गरम आग; तोन्ऱ–प्रगट करते हुए; पार्प्पर्–तरेरते; पलर्–अनेक; नॆटुवरैयै–बड़े पर्वतों को; परिप्पर्–उखाड़ लेते। ३३३२

दिनकर को घेरकर घूमनेवाले मेघों के समान ज़ोरदार हथियारों के चलानेवाले अनगिनत राक्षसों में अनेकों ने बड़ा कोलाहल मचाया। अनेक भिड़े। अनेकों ने हथियार निरंतर और बड़े परिमाण में चलाये। अनेकों ने शक्तियाँ (त्रिशूल) चलायीं। अनेक छिप गये। अनेक आग-भरी आँखों से तरेर रहे थे। अनेकों ने बड़े पर्वतों को उखाड़ लिया। ३३३२

ऍऱिन्दनवु मॆय्दनवु मॆडुत्तनवुम् विडित्तनवुम् बडैह ळॆल्लाम्
मुऱिन्दनवॆङ् गणैहळ्पड मुऱ्ऱिन्शुऱ् ऱित्तेरु मूरि मावुम्

नॆरिन्दत्तकुऩ् जिहळोडु नॆडुनूदलैह ळुरुणुडतपे रिरुळि तीङ्गिप्
पिरिन्दतत्वॆय् यवऩॆत्तप् पॆयर्न्दत्तऩ्मी दुयर्न्दतडम् बॆरिय तोळाऩ् 3333

ऍऱिन्ततवुम्–जो फेंके गये वे; ऍय्ततवुम्–जो चलाये गये वे; ऍडुत्ततवुम्–और जो उठाये गये वे; पिटित्तनवुम्–जो पकड़े गये वे; पटैकळ् ऍल्लाम्–सारे हथियार; वॆम् कणैकळ्–भीषण अस्त्रों के; पट–लगने से; मुऱिन्तत–टूट गये; चुऱ्ऱित–जो (श्रीराम के) चारों ओर घेरे रहे; तेरुम्–रथ; मुऱ्ऱित–समाप्ति पर आये; मूरि मावुम्–बलवान गजों के भी; नॆऱिन्तत कुञ्चिकळोटु–कुंचित वालों के साथ; नॆटु तलैकळ् उरुण्टत–बड़े सिर लोट गये; मीतु उयर्न्त–ऊपर की तरफ़ उन्नत; तट पॆरिय तोळाऩ्–विशाल बड़े कंधों वाले श्रीराम; पेर् इरुळित् नीङ्कि–बड़े अन्धकार से छूटकर; पिरिन्तु अत–मुक्त; वॆय्यवऩ् ऍऩ्त–सूर्य के समान; पॆयर्न्ततऩ्–बाहर आ प्रगट हुए। ३३३३

राक्षसों ने जो चलाये, फेंके या प्रेरित किये वे सव, श्रीराम के घातक शरों के लगने से टूट गये। श्रीराम को जो घेरे थे वे रथ मिटे। गजों एवं बलवानों के सिर अपने कुंचित बालों के साथ कटकर लोटे। तब उन्नत कंधों वाले श्रीराम अंधकार-विमुक्त दिनकर के समान बाहर प्रगट हुए। ३३३३

शॊल्लरुक्कुम् वलियरक्कर् तॊडुकवशन् दुहळ्पडुक्कुन् दुणिक्कुम् याक्कै
विल्लरुक्कुन् दलैयरुक्कु मिडलरुक्कु मडलरुक्कु मेऩ्मेल् वीशुम्
कल्लरुक्कु मरमरुक्कुङ् गैयरुक्कुम् जॆय्यमळ्ळर् कमलत् तोडु
नॆल्लरुक्कुन् दिरुनाड नॆडुञ्जरमॆऩ् ड्रालॆवर्क्कु निऱ्क लामो 3334

चॆय्य मळ्ळर्–खेतों में कृषक; नॆल्लोटु–धान के साथ; कमलम् अऱुक्कुम्–कमल काटते हैं जहाँ; तिरु नाटऩ्–उस श्रीसंपन्न देश के श्रीराम; नॆटु चरम्–लम्बे शर; चॊल् अऱुक्कुम्–(विवरण) वचन काट (पंगु कर) देंगे; वलि अरक्कर्–बलवान राक्षस; तॊटु कवचम्–जो पहनते हैं उन कवचों को; तुकळ् पटुक्कुम्–चूर-चूर कर देंगे; याक्कै तुणिक्कुम्–शरीरों को छिन्न करते; विल् अऱुक्कुम्–धनु काट देंगे; तलै अऱुक्कुम्–सिर काट देंगे; मिटल् अऱुक्कुम्–बल मिटा देंगे; मटल् अऱुक्कुम्–युद्धकौशल को मिटा देंगे; मेल् मेल् वीचुम्–बराबर जो फेंकते हैं; कल् अऱुक्कुम्–उन गिरियों को फोड़ देते; मरम् अऱुक्कुम्–तरुओं को काट देते; कै अऱुक्कुम्–हाथों को काटते; ऍऩ्ऱाल्–तो; ऍवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; निऱ्कलामो–सामने खड़ा रहना संभव होगा क्या। ३३३४

जिस देश के कृषक लोग खेतों में धानों के साथ कमल को भी काटते थे, उस देश के वासी श्रीराम के लम्बे बाण, वर्णन-शक्ति को बेकार करते; बली राक्षसों के पहने कवचों को चूर करते। शरीरों, धनुषों, सिरों, बल, युद्धकौशल, निरंतर फेंके जानेवाले पर्वतों, तरुओं और हाथों को नष्ट कर मिटा देते। तो अब उनके सामने कौन टिक सकते हैं ? । ३३३४

कालिऴन्वुम् वालिऴन्दुङ् गैयिऴन्दुङ् गळुत्तिऴन्दुम् बरुमक् कट्टित्
मेलिऴन्दु मरुप्पिऴन्दुम् यिऴुन्दनवॆन् ऱुरनल्लाल् वेलै यन्न
मालिऴन्दु मऴैयनैय मदमिऴन्दु कदमिऴन्दु मलैपोल् वन्द
तोलिऴन्द तॊऴिलॊन्ऱुञ् जॊन्नाऱ्ह ळिल्लॆनॆंडुञ् जुरर्ह ळॆल्लाम् 3335

नॆट् चुरर्कळ् ऍल्लाम्–मान्य सभी देव; काल् इऴन्तुम्–पैर खोकर और; वाल् इऴन्तुम्–दुम खोकर; कै इऴन्तुम्–हाथ खोकर; कऴुत्तु इऴन्तुम्–कण्ठ खोकर; परुमम् कट्टित्–पीठ पर बँधे; मेल् इऴन्तुम्–हौदे खोकर; मरुप्पु–दाँत; इऴन्तुम्–खोकर; मलै पोल्–पर्वत के समान; वन्त तोल्–आये हाथी; विऴुन्तन–गिरे; ऍन्ऱुरर् अल्लाल्–यह कहने के सिवा; वेलै अन्न–सागर के समान विस्तृत (वे हाथी); माल् इऴन्तुम्–(विजय की) चाह खोकर; मऴै अनैय–बरसात के समान (बहनेवाला); मतम् इऴन्तुम्–मदनीर खोकर; कतम् इऴन्तुम्–क्रोध खोकर; इऴन्त–खोये; तॊऴिल् ऑन्ऱुम्–किसी कार्य की; चॊन्नार्कळ् इल्लै–चर्चा नहीं की। ३३३५

मान्य देवों ने यह कहा कि पैर, दुम, सूँड़, कंठ, पीठ के हौदे और दाँत, इनको खोकर आये पर्वतोपम हाथी गिरे। पर वे नहीं कहते थे कि सागर-समान विस्तृत घेरे में आये बड़ी संख्या के हाथी अपने युद्ध को चाहने की, मेघ के समान मदनीर बहने की, और कोप करने की क्रियाएँ भी खो चुके थे (क्यों कि— उन्होंने देखा नहीं)। ३३३५

वेल्शॆल्वन शदकोडिहळ् विण्मेन्निमिर् बिशिहक्
कोल्शॆल्वन शदकोडिहळ् कॊलैशॆय्वन मलैपोल्
तोल्शॆल्वन शदकोडिहळ् तुरहन्दॊड रिरदक्
काल्शॆल्वन शदकोडिह ळॊरुवन्नवै कडिवान् 3336

चॆल्वन वेल्–जानेवाली शक्तियाँ; चत कोटि कळ्–सौ करोड़; विण् मेल्–आकाश में; चॆल्वन–जानेवाले; निमिर् विचिकम् कोल्–सीधे विशिख नाम के अस्त्र; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; कॊलै चॆय्वन–वधिक; मलै पोल् चॆल्वन–पर्वत के समान जानेवाले; तोल्–हाथी; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; तुरकम् तॊटर् इरतम्–अश्व-जुते रथ; काल् चॆल्वन–पहियों से चलनेवाले; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; अवै कटिवान्–उनको गुस्सा करके मेटते; ऑरुवन्–एकाकी श्रीराम। ३३३६

श्रीराम की ओर जानेवाले सौ करोड़ शक्तियाँ, सीधे जानेवाले विशिख, घातक व गमनशील पर्वत के समान हाथी, और अश्व-जुते पहियोंदार रथ सौ-सौ करोड़ थे। पर उनके मेटक थे एकाकी श्रीराम। ३३३६

ऑरुविल्लियै यॊरुकालॆयि नुलहेऴॆयु मुडऱ्ऱुम्
पॆरुविल्लिहण् मुडिविल्लवर् शरमामऴै पॆय्वार्
पॊरुविल्लवर् कणैमारिहळ् पॊडियाम्वहै पॊऴियत्
तिरुविल्लिहळ् तलैपोय्नॆडु मलैपोलुडल् शिदैवार् 3337

उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; उटऱ्ऱुम्–त्रस्त करनेवाले; पॅरु विल्लिकळ्–बड़ धनुर्धरों ने; मुटिवु इल्लवर्–असंख्यक; ऒरु विल्लियै–एक धनुर्धर पर; ऒरु कालैयिल्–एक साथ; मा चर मऴै–बड़ी शर-वर्षा; पॅय्वार्–करते बने; पोरु इल्लवर्–अनुपम उनके; कणै मारिकळ्–शरों की वर्षा; पॊटियाम् वकै–चूर्ण बने ऐसा; पॊऴिय–श्रीराम बाण चलाते हैं, इसलिए; तिरु इल्लिकळ्–भाग्यहीन वे; तलै पोय्–सिर खोकर; नॆटु मलै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उटल् चितैवार्–छिन्न-शरीर हो गये। ३३३७

सप्तभुवन-त्रासक असंख्यक राक्षस एकाकी धनुर्धर पर बड़ी शरवर्षा करते। श्रीराम अनुपम उनके शरों को चूर्ण करते हुए बाणों की वर्षा करते। तो भाग्यहीनों के सिर कट जाते और शरीर छिन्न हो जाते। ३३३७

नूऱायिर मदयानैयिऩ् वलियोरॆऩ नुवल्वोर्
माऱायिऩ रॊरुकोल्पड मलैपोलुडल् मऱिवार्
आऱायिर मुळवाहुद लऴिशॆम्बुन लवैपुक्
केऱादॆरि कडल्पाय्वऩ शिऩमाल्करि यिऩमाल् 3338

नूऱु आयिरम्–लाख; मतम् यानैयिन्–मत्त गजों के-से; वलियोर् ऍन–बल से युक्त ऐसा; नुवल्वोर्–प्रशंसित राक्षस; ऒरु कोल् पट–एक बाण के लगते ही; माऱु आयिनर्–बदल गये; मलै पोल् उटल्–पर्वतोपम शरीर; मऱिवार्–मिट जाते; अऴि–मिटने से उत्पन्न; चॆम् पुनल्–रक्त की; आयिरम् आऱु उळ आकुतल्–हज़ार नदियाँ उत्पन्न हुईं, इसलिए; अवै पुक्कु–उनमें घुसकर; एऱातु–किनारे पर न चढ़ (सक) कर; चिनम् माल् करि इनम्–क्रुद्ध तथा मत्तगज; ऎऱि कटल् पाय्वन–तरंग-सागर में चले गये। ३३३८

लाख हाथियों के-से बल से युक्त कहलानेवाले वे, श्रीराम के एक बाण के लगते ही उस प्रशंसा के अयोग्य बनकर छिन्न-शरीर हो गये। उनके शरीरों से जो रक्त निकला, उसकी हज़ार नदियाँ बनीं। उनमें फँस गये हाथी। वे तीर पर चढ़ नहीं सके। क्रुद्ध और मत्त उन हाथियों के समूह तरंगसागर में तेज़ी से जा डूबे। ३३३८

मऴुवऱ्ऱुहु मलैयऱ्ऱुहुम् वळैयऱ्ऱुहुम् वयिरत्
तॆऴुवऱ्ऱुहु सॆयिऱ्ऱुहु सिलैयऱ्ऱुहु मॆऴ्वेल्
पऴुवऱ्ऱुहु मदवॆङ्गरि परियऱ्ऱुहु मिरदक्
कुऴुवऱ्ऱुहु मॊरुवॆङ्गणै तॊडैपॆऱ्ऱदॊर् कुऱियाल् 3339

ऒरु वॆम् कणै–एक दारुण अस्त्र; तॊटै पॆऱ्ऱतु–संधान करते समय लगाये गये; ओर् कुऱियाल्–एक निशाने से; मऴु–परशु; अऱ्ऱु उकुम्–कटकर गिर जाते; मलै–पर्वत; अऱ्ऱु उकुम्–चूर होकर गिरते; वळै अऱ्ऱु उकुम्–'वळै' नाम के हथियार टूटकर गिरते; वयिरत्तु ऎऴु–कठिन 'ऎऴु' नाम के हथियार; अऱ्ऱु उकुम्–कटकर गिरते; ऎऴु वेल्–ऊपर उठी शक्ति का; इलै अऱ्ऱु उकुम्–फल

कटकर गिरते; ऍयिरु अऱ्ऱु उकुम्–दाँत अलग होकर चू जाते; मतम् वॅम्किर–मत्त और खूनी गजों की; पळु–पसलियाँ; अऱ्ऱु उकुम्–टूटकर गिरतीं; परि–अश्व; अऱ्ऱु–कटकर; उकुम्–गिरते; इरतम्–रथों के; कुळ्–दल; अऱ्ऱु उकुम्–छिन्न होकर गिर जाते। ३३३९

खूब निशाना साधकर चलाये गये थे इसलिए श्रीराम के भीषण अस्त्रों से शत्रुओं के परशु सुदृढ़ 'वलय' और 'अेळु' नाम के हथियार, पर्वत, ऊपर उठी शक्तियाँ, उनके दाँत, मत्त गजों की पसलियाँ, अश्व और रथों के समूह —सभी टूट-फूटकर गिर जाते और मिट जाते। ३३३९

ऑरुहालैयि नुलहत्तुरु मुयिर्यावैयु मुण्णुम्
वरुहालनु मवन्दूदरु नमन्दानुमव् वरॅप्पिन्
इरुहालुडै यवरियावरुन् दिरिन्दारिळैत् तिरुन्दार्
अरुहायिर मुयिर्कॉण्डुद मारेहल रयर्त्तार् 3340

ऑरु कालैयिन्—एक ही समय; उलकत्तु उऱुम्–संसार भर में रहनेवाले; उयिर् यावैयुम्–सभी जीवों को; उण्णुम्–खा सकनेवाले; अव् वरॅप्पित्–उस आँगन में; वरु कालनुम्–जो आया वह यम और; अवन् तूतरुम्–उसके दूत; नमन् तानुम्–(यम का नायब) नम; यावरुम्–सभी; इरु काल् उटैयवर्–दो पैरों वाले थे; तिरिन्ताय्–घूम-फिरकर; इळैत्तु इरुन्तार्–थकित रहकर; अरुकु–पास के; आयिरम् उयिर् कॉण्टु–हजारों जीवों को लेकर; तम् आऱु–अपना मार्ग; एकलर्–गये नहीं; अयर्त्तार्–भ्रांत रह गये। ३३४०

एक साथ लोक के सारे जीवों के खाने के लिए उस युद्धभूमि में यम, उसके दूत, उसका नायब (जिसका नाम था) 'नम', आदि सभी आये थे। बेचारे उनके दो-दो ही पैर थे। अतः वे थककर बैठ गये। और पास से ही मिले हजारों जीवों को लेकर अपने मार्ग पर जा नहीं सके, भ्रांत रह गये। ३३४०

अडुक्कुऱ्ऱन मदयानैयु मळितेर्हळुम् बरियुम्
तॉडुक्कुऱ्ऱन विशुम्बूडुऱच् चुमन्दोङ्गिन वॅन्निनुम्
मिडुक्कुऱ्ऱन कवन्दक्कुल मॅळुन्दाडलि नॅल्लाम्
नडुक्कुऱ्ऱन पिणक्कुन्ऱुह ळुयिर्नण्णिन वॅन्न 3341

अटुक्कु उऱ्ऱन–पंक्तियों में रहे; अळि मत–मदस्रावी; यानैयुम्–गज और; तेर्कळुम् परियुम्–रथ और अश्व; तॉटुक्कुऱ्ऱन–एक पर एक चुन गये; विचुम्पु ऊटु उऱ–आकाश तक पहुँचें, ऐसा; चुमन्तु ओङ्किन–ऊँचे हुए; ॲन्निनुम्–तो भी; मिटुक्कु उऱ्ऱन–बलयुक्त; कवन्तम् कुलम्–कबन्धवृन्द; ॲळुन्तु आटलिन्–उठकर नाचे इसलिए; पिणम् कुन्ऱुकळ्–लाशों की गिरियाँ; उयिर् नण्णिन ॲन्न–जीवित हो गयीं समझकर; ॲल्लाम् नटुक्कुऱ्ऱन–सभी भयभीत हो गये। ३३४१

मत्तगज, रथ और अश्व जो पंक्तियों में रहे अब एक के ऊपर एक

चुन गये, और उनकी बनी यह अनोखी दीवार आकाश को छू गयी। तो भी सशक्त कबंधवृन्द उठकर नाचने लगे तो लोगों ने सोचा कि लाशें जीवित हो गयीं। अत: वे भय से काँपे। ३३४१

पट्टारुडऱ् पडुशॅम्बुनल् तिरुमेनियिऱ् पडलाल्
कट्टार्शिलैक् करुञायिऱु पुरैवान्गडै युहनाळ्
शुट्टाशऱुत् तुलहुण्णुमच् चुडरोनॅनप् पॊलिन्दान्
ऑट्टारुडऱ् कुरुदिक्कुळित् तॅऴुन्दानॅयु मॊत्तान् 3342

पट्टार्–मृतों के; उटल् पटु–शरीरों से निकले; चॅम् पुनल्–रक्त (के); तिरु मेनियिल् पटलाल्–श्रीशरीर पर लगने से; कट्टु आर् चिलै–बन्धनयुक्त धनु के धारक; करु ञायिऱु पुरैवान्–काले सूर्य-सम श्रीराम; युकम् कटै नाळ्–युगान्त के दिन; उलकु–लोकों को; चुट्टु–जलाकर; आचऱुत्तु–पूर्ण रूप से मिटाकर; उण्णुम्–खानेवाले; अ चुटरोन् ॲन–उस किरणमाली के समान; पॊलिन्तान्–शोभे; ऑट्टार् उटल्–शत्रुओं की शरीरों के; कुरुति कुळित्तु–रक्त में स्नान करके; ॲऴुन्तानॅयुम्–उठे; ऑत्तान्–जैसे भी लगे। ३३४२

मरे हुए राक्षसों के शरीरों से निकला रक्त श्रीराम के श्रीशरीर पर खूब लग गया। उस स्थिति में सबंध धनुर्धर तथा असित सूर्य-सम श्रीराम युगांत के सर्वनाशक किरणमाली के समान दिखे। और ऐसा भी लगे मानो शत्रुरक्त में स्नान कर उठे हों। ३३४२

तीयॊत्तन वुरुमॊत्तन शरञ्जिन्दिडच् चिरम्बोय्
मायत्तमर् मडिहिन्ऱ्रन रॅन्वुम्मरङ् गुऱैया
कायत्तिडै युयिरुण्डिड वुडन्मॊय्त्तॅऴु कळियाल्
ईयॊत्तन निरुदक्कुल नऱवॊत्तन निऱैवन् 3343

ती ऑत्तन–अग्नि-सम; उरुम् ऑत्तन–वज्र-सम; चरम्–बाणों को; चिन्तिट–अधिक संख्या में लगातार चलाने से; चिरम् पोय्–सिर गये; मायम् तमर्–मायावी हमारे लोग; मटिकिन्ऱ्रनर्–मरते हैं; ॲन्वुम्–इसलिए और; मऱम् कुऱैया–वीरता में कम न होकर; कायत्तु इटै–शरीर में; उयिर्–प्राणों को; उण्टिट–(बाण) खायें ऐसा; कळियाल्–मस्ती के साथ; उटन् मॊय्त्तु ॲऴु–साथ लगे जो उठे; निरुतर् कुलम्–उन राक्षसों के दल; ई ऑत्तन–मक्खियों के समान लगे; इऱैवन्–भगवान श्रीराम; नऱवु ऑत्तनन्–मधु के समान रहे। ३३४३

'श्रीराम ने जो शर चलाये वे अग्नि और वज्र के समान हैं। उनके लगने से हमारे लोगों के सिर कट जाते हैं और वे मर जाते हैं' यह देखकर भी वीरता में न घटकर अपने प्राणों को भी उन शरों को पीने देने के लिए जो राक्षस उन्हें घेरे थे, वे मधुमक्खियों के समान लगे और श्रीराम मधु रहे। ३३४३

मॊय्त्तारैयॊ रिमैप्पिनुळ्ळे मुडुहत्तॊडु शिलैयाल्
तैत्तानवर् कळ्ळरिणपशुङ् गायॊत्तनर् शरत्ताल्
कैत्तार्कडु कळिऱुङ्गतत् तेरुङ्गळत् तळ्ळुन्दक्
कुत्तानळि कुळम्बाम्वहै वळुवाच्चरक् कुळुवाल् 3344

मॊय्त्तारै–ऐसे जो मँड़राये उन राक्षसों को; और् इमैप्पिन् तलै–एक बार पलक मारती देर के अन्दर; मुडुक–तेजी से; तॊटु चिलैयाल्–जिससे बाण चलाये जाते हैं उस धनु से; तैत्तान्–ढँक दिया; अवर्–वे; चरत्ताल्–(आवृत) शरों से; तिण् पचुमै–सारयुक्त व ताजे; कळ्ळल् काय्–'कळ्ळल' नामक लता के फलों के; ऒत्तनर्–सदृश हो गये; कैत्तार्–शत्रुओं के; कटु कळिऱुम्–तेज हाथियों; कतम् तेरुम्–और बड़े रथों को; वळुवा चरम् कुळुवाल्–अचूक शरों की पंक्तियों से; अळि–द्रवणशील; कुळम्पाम् वकै–पंक बनाकर; कळत्तु अळुन्त–मैदान में डूब जायें, ऐसा; कुत्तान्–मसल दिया। ३३४४

उस भाँति जो मँड़राये उन राक्षसों को श्रीराम ने पल भर में अपने शरों से आवृत कर दिया। वे शरों के अन्दर 'कळ्ळल्' लता के सारयुक्त तथा ताजे फलों के समान लगे। श्रीराम ने शत्रुओं के वेगवान हाथियों, और पक्के रथों को अपने अचूक शरों से द्रवणशील पंक बना दिया। ३३४४

पिरिन्दार्पल रिरिन्दार्पलर् पिळैत्तार्पल रुळैन्दार्
पुरिन्दार्पलर् नॆरिन्दार्पलर् पुरण्डार्पल रुरुण्डार्
ऎरिन्दार्पलर् करिन्दार्पल रॆळुन्दार्पलर् विळुन्दार्
शॊरिन्दार्कुडल् तुरन्दार्दलै तॊलैन्दारॆदिर् तॊडर्न्दार् 3345

पिरिन्तार् पलर्–अनेक प्राणहीन हुए; इरिन्तार् पलर्–अस्त-व्यस्त भागे कई; पिळैत्तार् पलर्–बचा गये कई; उळैत्तार् पलर्–त्रस्त हुए अनेक; पुरिन्तार् पलर्–लड़े कई; नॆरिन्तार् पलर्–पिचके कई; पुरण्टार् पलर्–लोटे अनेक; पलर् उरुण्टार्–अनेक लुढ़के; ऎरिन्तार् पलर्–जले अनेक; करिन्तार् पलर्–राख हुए कई; पलर् ऎळुन्तार्–कई उठे; पलर् विळुन्तार्–कई गिरे; कुटल् तुरन्तार्–आँतें जिनके बाहर निकल आयीं ऐसे बहुत से थे; चॊरिन्तार्–उन्हें बाहर निकाल दिया; ऎतिर् तॊटर्न्तार्–सामने जाकर; तलै तॊलैन्तार्–सिरों से हीन हुए। ३३४५

उस युद्ध में अनेकों के प्राण छूट गये। कई अस्त-व्यस्त हो भाग गये। कई बचा गये। अनेक त्रस्त हुए। अनेकों ने चाव के साथ युद्ध किया। कइयों के शरीर पिचक गये। कई लोटे, कई लुढ़के। अनेक राख हो गये। कई उठे, कई गिरे। कइयों की आँतें भी कटीं और बाहर निकल आयीं। कइयों ने आगे जाकर अपने सिरों को कटवा लिया। ३३४५

मणिकुण्डलम् वलयङ्गुळै महरज्जुडर् महुडम्
अणिहण्डिहै कवशङ्गळल् तिलहम्मुद लहलम्

तुणियुण्डव रुडलुशिन्दिन तौंडर्हिन्नुरन शुडरुम्
तिणिहौंण्डलि निडेमिन्नुगुल मिळिर्हिन्नुरन शिवण 3346

तिणि–घने; कौण्टलिन् इटै–मेघमध्य; मिन् कुलम्–विजली की पंक्तियाँ; मिळिर्किन्नुरन–चमकतीं; चिवण–जैसे; तुणि उण्टवर्–छिन्न होकर जो मरे उनके; उटल्–शरीरों पर; तौटर्किन्नुरन–लगातार; चुटरुम्–चमकनेवाले; मणि कुण्टलम्–रत्नकुंडल; वलयम्–बाहुवलय; मकरम् कुळै–मकरकुंडल;- चुटर् मकुटम्–प्रकाशमय मुकुट; अणि कण्टिकै–सुन्दर कण्ठमाला; कवचम्–कवच; कळल्–पायलें; तिलकम्–तिलक; मुतल–आदि; कलम्–आभरण; चिन्तिन–अलग होकर छितरे। ३३४६

काली घटा के मध्य चमकती बिजली की पंक्तियों के समान छिन्न हुए राक्षसों के शरीरों पर रहे प्रकाशमय रत्नकुंडल, बाहुवलय, मकरकुंडल कांतिमय मुकुट, सुन्दर कंठहार, कवच, पैरों के कड़े, तिलक आदि आभरण अलग हो बिखर गये। ३३४६

मुन्नेयुळन् पिन्नेयुळन् मुहत्तेयुळ नहत्तिन्
तन्नेयुळन् मरुङ्गेयुळन् दलैमेलुळन् मलैमेल्
कौन्नेयुळ निलत्तेयुळन् विशुम्बेयुळन् गौडियोर्
ऍन्नेयौरु कडुप्पॅन्नुडि विरुज्जारिहै तिरिन्दान् 3347

कौन्नै–भय भरते हुए; मुन्नै उळन्–सामने स्थित है; पिन्नै उळन्–पीछे है; मुकत्ते उळन्–सेना के अग्र भाग में है; अकत्तिन् तन्नै उळन्–मध्य भाग में है; मरुङ्के उळन्–पार्श्व में है; तलै मेल् उळन्–सिर पर है; मलै मेल् उळन्–पर्वत पर रहता है; निलत्ते उळन्–भूमि पर है; विचुम्पे उळन्–आकाश में है; ऑरु कटुप्पु ऍन्नै–यह अद्वितीय वेग भी कैसा; ऍन्नु–कहकर; कौटियोर्–दुष्टों के; इट–कहते; इरु चारिकै तिरिन्तान्–बड़े चक्कर लगाये श्रीराम ने। ३३४७

श्रीराम (क्षण इधर, क्षण उधर) ऐसा चक्कर लगाते कि दुष्ट राक्षस लोग विस्मय के साथ कहते कि भय उत्पन्न करते हुए वह हमारे सामने है, नहीं पीछे है। सेना के अग्रभाग में है, नहीं मध्य भाग में! दोनों बाजुओं में, सिर पर, गिरि पर, भूमि पर, नहीं आकाश में है! उसका असाधारण वेग भी कैसा? । ३३४७

ऍन्नेरिन तॅन्नेरिन ऍन्ड्रियावरु मॅण्णप्
पौन्नेर्वरु वरिविर्करत् तौरुकोळरि पोल्वान्
ऑन्नार्पॅरुम् वंडॅप्पोर्क्कड लुडैक्किन्नुरन तॅन्निनुम्
अन्नेरल रुडलेलिरि निळलेयॅन लानान् 3348

यावरुम्–सभी; ऍन् नेरितन्–मेरे सामने है; ऍन् नेरितन्–मेरे समक्ष है; ऍन्नु ऍण्ण–ऐसा सोचने देते हुए; पौन् नेर् वरु–स्वर्ण-सम; वरि विल् करत्तु–सबन्ध धनु के धारण करनेवाले हाथ वाले; ऑरु–असाधारण; कोळ् अरि पोल्वान्–

बलवान सिंह के समान जो रहे वे श्रीराम; ऑत्तार्-शत्रुओं को; वेंदम् पटै-बड़ी सेना रूपी; पोर्-आवरणकारी; कटल्-सागर को; उदैक्किन्ऱनन् ॲनितुम्-तोड़ते तो भी; अल्-अन्धकार-सम; नेरलर् उटलै-शत्रुओं के साथ; तिरिकिन्ऱ-घूमनेवाली; निऴले ॲनल् आत्ताम्-(अग्राह्य) छाया ही सम रहे। ३३४८

सेना में एक-एक यही कहता कि राम मेरे ही समक्ष हैं, मेरे ही समक्ष है! इस भाँति चक्कर काटते हुए स्वर्ण-सम और सबंध धनु के धारण करनेवाले श्रीराम शत्रुओं के बड़ी सेना रूपी सागर को, जो उन्हें आवृत कर रहा था, तोड़ रहे थे। तो भी वे अंधकार-वर्ण राक्षसों की छाया की तरह (उनसे अग्राह्य हो) रहे। ३३४८

पळ्ळम्बडु कडलेऴिनुम् बडियेऴिनुम् वहैयिन्
वॅळ्ळम्बल वुळवॅन्ऩिनुम् विन्ऩैयम्बल तॅरियाक्
कळ्ळम्बडर् पॅरुमायैयिड् करन्दारुरुप् पिऱन्दार्
उळ्ळन्ऱियुम् बुऱत्तेयुमुऱ् ऱुळतामॅन्न वुऱ्ऱान् 3349

पळ्ळम् पटु-गहरे; कटल् एऴिनुम्-सातों समुद्रों में; पटि एऴिनुम्-सातों लोकों में; पकैयिन्-शत्रुओं के; पल वॅळ्ळम् उळ-अनेक 'वॅळ्ळम्' थे; ॲन्ऩिनुम्-तो भी; पल विन्ऩैयम्-अनेक वंचक काम; तॅरिया-जानकर; कळ्ळम् पटर्-धोखे से भरी; पॅरु मायैयिल्-बड़ी माया में; उरु करन्तार्-रूप छिपाये हुए; पिऱन्तार्-जो जनमे थे उन राक्षसों के; उळ् अन्ऱियुम्-अन्दर के अलावा; पुऱत्तेयुम्-बाहर भी; उऱ्ऱु उळन्-लगे रहनेवाले; आम्-हैं; ॲन्न-इस भाँति सोचा जाय ऐसा; उऱ्ऱान्-लगे रहे। ३३४९

गहरे सप्तसमुद्रों और सप्तलोकों में अनेक 'वॅळ्ळम्' (राक्षस) शत्रु थे। तो भी श्रीराम ऐसे युद्ध में लगे थे कि सब यही कहें कि वंचक कार्य करने वाले माया में दबे और जन्म से ही रूप छिपाकर रहनेवाले उनके अंदर ही नहीं बाहर भी विद्यमान थे। ३३४९

नानाविदप् पॅरुञ्जारिहै तिरिहिन्ऱदु नविलार्
पोनानिडै पुहुन्दानॅनप् पुलन्गॊळ्हिलर् मऱन्दार्
तानावदु मुणर्न्दानुणर्न् दुलहॅङ्गणुन् दानॆ
आनान्विनै तुऱन्दानॅन विमैयोर्हळ् मयिर्त्तार् 3350

पोनान्-गया; इटै पुकुन्तान्-मध्य घुस गया; ॲन-यह; पुलन् कॊळ्किलर्-समझ में न लाकर; नाना वितम्-नाना रूप से; पॅरु चारिकै-बड़े चक्करों में; तिरिकिन्ऱतु-घूमना जो था उसे; नविलार्-नहीं कहते; मऱन्तार्-भूल गये; उणर्न्तु-भावना रूप में; उलकु ॲङ्कणुम्-लोक में सर्वत्र; ताने आनान्-स्वयं जो हैं; तान् आवतुम्-वे स्वयं खुद हैं; उणर्न्तान्-यह समझकर; विनै-कार्य को; तविर्न्तान् पोलुम्-छोड़ गये शायद; ॲन-ऐसा; इमैयोर्कळुम् अयिर्त्तार्-देव भी संदेह में पड़ गये। ३३५०

श्रीराम इस तरह बायें और दायें बड़े वेग से चक्कर काट रहे थे। कि यह किसी की समझ में नहीं आता था कि वे चले गये या आ गये। देव भी यह संशय करने लगे कि ये अपने को भावना रूप में सब जीवों के मन में रहनेवाले सर्वान्तर्यामी समझ गये। अतः अपना राक्षस-संहार का काम छोड़ बैठे हैं। ३३५०

शण्डक्कडु नॆडुङ्गाऱ्ऱिडै तुणिन्दॆऱ्ऱिडत् तरैमेल्
कण्डप्पडु मलैपोलॆडु मरम्बोऱ्कडुन् दॊऴिलोर्
तुण्डप्पडक् कडुञ्जारिहै तिरिन्दाऩ्शरञ् जॊरिन्दाऩ्
अण्डत्तिनै यळन्दाऩॆऩक् किळर्न्दाऩिमिर्न्दहन्ऱाऩ् 3351

चण्टम् कटु नॆटु काऱ्ऱु–प्रचंड, तेज और प्रबल प्रभंजन; इटै तुणिन्तु ऍऱ्ऱिट–बीच में काटता-सा जोर से लगता है, इसलिए; तरै मेल्–धरती पर; कण्टम् पटुम्–खण्ड बनते; मलै पोल्–पर्वत की तरह और; नॆटु मरम् पोल्–ऊँचे पेड़ के समान; कटुम् तॊऴिलोर्–क्रूरकर्मी (राक्षस); तुण्टम् पट–खण्ड-खण्ड हो जायँ, ऐसा; कटुम् चारिकै तिरिन्तान्–बहुत वेग से चक्कर काटते हुए; निमिर्न्तु अकन्ऱान्–ऊँचे और बड़े बनकर; अण्टत्तिनै अळन्तान् ऍन–(जिन त्रिविक्रम ने) अण्डों को मापा था उनके समान; किळर्न्तान्–उमँगकर; चरम् चॊरिन्तान्–(श्रीराम ने) शर-वर्षा की। ३३५१

प्रचंड, प्रखर तथा प्रबल प्रभंजन के काटते हुए जोर से बहने पर जैसे भूमि पर पर्वत और तरु टूटकर गिरते हैं, वैसे ही क्रूरकर्मी राक्षस छिन्न हो जायँ, ऐसा श्रीराम चक्कर काटते हुए फिरे। त्रिलोकनायक श्रीत्रिविक्रम के समान श्रीराम ने बढ़कर शर-वर्षा की। ३३५१

कळियानैयु नॆडुन्देर्हळुङ् गडुम्बाय्बरिक् कणनुम्
तॆळियाळियु मुरट्चीयमुञ् जिनवीरर्दन् तिरळुम्
वॆळिवानह मिलदाम्वहै विऴुन्दोङ्गिय पिऴम्बाल्
नळिमामलै मलैताविन नडन्दान्कडर् किडन्दान् 3352

कटल् किटन्तान्–सागरशायी; कळि यानैयुम्–मत्तगज और; नॆटु तेर्कळुम्–ऊँचे रथ; कटुम् पाय् परि–सवेग दौड़नेवाले अश्वों के; कणनुम्–समूह; तॆळि याळियुम्–उत्कृष्ट बलयुक्त शरभ; मुरण् चीयमुम्–सशक्त सिंह; चिनम्–क्रुद्ध; वीरर् तम्–वीरों की; तिरळुम्–पलटने; विऴुन्तु–नीचे गिरकर; वान् अकम्–आकाश में भी; वॆळि इलताम् वकै–रिक्तस्थान नहीं रहे ऐसा; ओङ्किय–ऊँचे; पिऴम्पाल्–ढेरों के कारण; नळि मा मलै–बड़े पर्वत से; मलै ताविनन्–अन्य पर्वत पर उछलकर; नटन्तान्–चले (श्रीराम)। ३३५२

मत्तगज, ऊँचे रथ, वेगवान अश्वगण, साफ़ ताक़तवर शरभ, सशक्त केसरी, क्रुद्ध पदातिकों के दल आदि गिर पड़े थे और उनके अलग-अलग ढेर पड़े थे आकाश को भी पूर्ण रूप से भर कर। तब श्रीराम

उन पर ज्योतिपुंज के समान एक पर्वत से जैसे दूसरे पर्वत पर उछलते हों वैसे एक से एक पर उछलते हुए गये। ३३५२

अम्ब रङ्गळ् तॉडुङ्गोडि याडैयुम्
अम्ब रङ्ग ळॉडुङ्गळि यानैयुम्
अम्ब रङ्ग वळ्ळन्दिन शोरियिन्
अम्ब रङ्ग मरुङ्गल माळ्न्दन 3353

अम्परम् कम्–समुद्र-जल में; अरु कलम् आळ्न्तु अॅन्त–श्रेष्ठ पोत डूबे जैसे; अम्पु–शर; अरङ्क–घुसे इसलिए; अम्परङ्कळ् तॉट्टु–आकाश छूनेवाली; कोटि आटैयुम्–ध्वजा-वस्त्र; अम्परङ्कळॊट्टुम्–और हौदों के साथ; कळि यानैयुम्–मत्त गज; चोरियिन्–रक्त (प्रवाह) में; अळुन्तिन–गर्क हुए। (इसमें यमकालंकार है।)। ३३५३

श्रीराम के शरों के लगने से मत्तगज आकाशस्पर्शी ध्वजा-वस्त्रों के साथ रक्त-प्रवाह में जो डूबे वह समुद्र-जल में पोतों के मग्न होने का दृश्य उपस्थित कर रहा था। ३३५३

तम्म नत्तिऱ् चलत्तर् मलैत्तलै
वॅम्मै युऱ्ऱॅळुन् देऱुव मीळुव
तॅम्मु नैच्चॅरु मङ्गैदन् शॅङ्गैयाल्
अम्म नैक्कुल माडुव पोन्ऱवे 3354

तम् मनत्तिल्–अपने मन में; चलत्तर्–वंचना रखनेवाले राक्षसों के; मलैतलै–पर्वतोपम सिर; वॅम्मै उऱ्ऱु–(शरों के) घातक कर्म के निशाने बनकर (कटकर); ॲळुन्तु एऱुव–जो ऊपर उठे; मीळुव–और लौटे; तॅव् मुनै–युद्ध के मैदान में; चॅरु मङ्कै–युद्ध रूपी स्त्री; तन् चॅम् कैयाल्–अपने लाल हाथों से; आटुव–जो खेलती है; अम्मनै कुलम्–'अम्मानै' के समूह ले; आटुव–खेलती; पोन्ऱ–जैसी लगी। ३३५४

कपटमन राक्षसों के पर्वतोपम शिर श्रीरामबाण के नाशक कर्म के पात्र बने और कटकर ऊपर गये। फिर वे जब लौटकर गिरे तब वे 'अम्मानै'यों (काठ की गेंदें जो स्त्रियाँ अपने हाथों में लेकर उछालती है —यह एक खेल है) की तरह दिखे जिन्हें मानो युद्धभूमि रूपी रमणी अपने लाल हाथों से उछाल रही हो। ३३५४

केड हङ्गण वङ्गैयॊ डुङ्गिळर्
केड हङ्गळ् तुणिन्दु किडन्दन
केड हङ्गिळर् हिन्ऱक ळत्तनन्
केड हङ्गळ् मरिन्दु किडन्दवे 3355

केटकम्–आखेट के योग्य; कङ्कणम् अम् कैयोटुम्–सुन्दर कंकण-हस्तों के साथ; किळर्–प्रकाशमय; केटकङ्कळ्–ढालें; तुणिन्तु किटन्तन–छिन्न होकर पड़ी थीं; केट्टु–बुराई; अकम् किळर्कित्तर–जिनके मन में खिली रहती हैं; कळत्त–मैदान में पड़े रहनेवाले; नन्कु एट–श्रेष्ठ दलों वाले (तुम्बै) फूलों की माला से अलंकृत; कम्कळ्–सिर; मरिन्तु किटन्त–लुढ़कते पड़े रहे। ३३५५

आखेटक योग्य ढालों के रखनेवाले कंकणधारी हाथों के साथ छविमय ढालें भी छिन्न होकर गिरी पड़ी थीं। और युद्ध के मैदान में वंचक मन वाले और सुन्दर पंखुड़ियों के 'तुम्बै' के फूलों की माला धारण किये रहनेवाले (राक्षसों के) सिर नीचे लुढ़के पड़े थे। ३३५५

अङ्ग दङ्गळत् तर्र्ऴि तारोडुम्
अङ्ग दङ्गळत् तर्र्ऴि वुर्र्वाल्
पुङ्ग वन्कणैप् पुट्टिल् पोरुन्दिय
पुङ्ग वन्कणैप् पुर्र्र वम्बोर 3356

पुङ्कवन्–नरपुंगव के; कणै पुट्टिल्–तूणीर में; पोरुन्तिय–रहे; पुङ्कम्–तीक्ष्णमुखी; वल् कणै–कठोर बाण रूपी; पुर्रु अरवम्–बिल के सर्प के; पोर–प्रहार से; अङ्कतम्–बाहुवलय; कळत्तु अर्रु–कंठ के समान (कटे) रहे; अळि तारोटुम्–मधु बहानेवाली मालाओं के साथ; अम् कतम्–सुन्दर क्रोध भी; कळत्तु–(युद्ध के) मैदान में; अर्रु अळिवु उर्रन–मिटकर नाश को प्राप्त हो गये। ३३५६

नरपुंगव श्रीराम के तूणीरों के तीक्ष्ण बाण बिल के सर्पों के समान जाकर लगे तो राक्षसों के बाहुवलयों की भी स्थिति कंठों की-सी हो गयी। (यानी दोनों कट गये।) साथ-साथ मधु-भरी सुन्दर मालाएँ और क्रोध भी मिट गया। ३३५६

कयिरु शेर्हळर् कार्निरक् कण्डहर्
ऎयिरु वाळि पडत्तुणिन् दियात्तैयिन्
वयिरु तोरु मरैवन वान्निडैप्
पुयल्दो रुम्बुहु वॆण्बिरै पोन्रवे 3357

कयिरु चेर्–रस्सी से बँधी; कळल्–पायलधारी; कार् निरम् कण्टकर्–काले रंग के लोककंटकों के; ऎयिरु–दाँत; वाळि पट–शरों के लगने से; तुणिन्तु–छिन्न होकर; यात्तैयिन् वयिरु तोरुम्–हाथियों के पेटों में; मरैवन–जो छिपे; वान् इटै–आकाश में; पुयल् तोरुम्–मेघों में; पुकु–घुसनेवाले; वॆण् पिरै–श्वेत चन्द्र-कला; पोन्र–के समान रहे। ३३५७

रस्सी से बँधी पायलोंवाले नीलवर्ण राक्षसों के वक्र दाँत श्रीराम के शरों के काटने से अलग होकर गजों के पेटों में भिदकर जो ओझल हो गये वे आकाश में मेघ-मध्य घुसनेवाले श्वेत बालचन्द्र के समान लगे। ३३५७

वॆन्ऱि वीर रॆयिऱुम् विडामदक्
कुन्ऱिन् वॆळ्ळ मरुप्पुङ् गुविन्दन
ऑन्ऱु मॆन्ऱु मॆळुन्द विळम्बिऱै
ऑन्ऱि मानिलत् तुक्कवु मॊत्तवाल् 3358

वॆन्ऱि वीरर्–विजयी वीरों के; ऎयिऱुम्–(वक्र) दाँत और; विडा मतम्–निरंतर मद बहानेवाले; कुन्ऱिन्–पर्वतों (गजों) के; वॆळ्ळै मरुप्पुम्–सफ़ेद दाँत; कुविन्तत–ढेर बने; ऒन्ऱुम् ऒन्ऱुम्–अनेक दिनों में; ऎळुन्त–उगे; इळम्पिऱै–बालचन्द्र; ऒन्ऱि–इकट्ठे होकर; मा निलत्तु–बड़ी भूमि पर; उक्कवुम् ऒत्त–गिरे हों ऐसे लगे। ३३५८

विजयी राक्षस वीरों के श्वेत वक्र दाँतों और पर्वत-सम हाथियों के श्वेत दाँतों के ढेर जो बने थे, वे अनेक दिनों के उदित बालचन्द्र मिलकर मानो भूमि पर गिरे पड़े हों ऐसे लगे। ३३५८

ओवि लारुड लुन्दुदि रप्पुनल्
पावि वेलै युलहु परत्तलाल्
तीवु दोऱु मिनिदुऱै शॆय्हैयर्
ईवि लाद नॆडुमलै येऱिनार् 3359

ओविलार्–लगातार जो पड़े रहे; उटल्–उन राक्षसों के शरीर; उन्तु–जो निकालते रहे; उतिरम् पुनल्–रक्त-जल; पावि–फैलकर; वेलै उलकु–समुद्रावृत भूमि पर; परत्तलाल्–व्याप्त हुआ, इसलिए; तीवु तोऱुम्–सभी द्वीपों में; इनितु उऱै–सुख से रहने के; चॆय्कैयर्–स्वभाव वाले; ईवु इलात–अमिट; नॆटु मलै एऱिनार्–ऊँचे पर्वत पर चढ़े। ३३५९

राक्षस के सिर भूमि पर बराबर पड़े हुए थे। उनसे निकला रक्त संसार भर में व्याप्त हुआ। समुद्र में भी बहा तो सुखमय द्वीपवासी ऊँचे पर्वतों पर चढ़ गये ताकि बढ़ते जल में डूब न जायँ। ३३५९

विण्णि ऱैन्दन मॆय्युयिर् वेलैयुम्
पुण्णि ऱैन्द पुनलि निऱैन्दन
मण्णि ऱैन्दन पेरुडल् वानवर्
कण्णि ऱैन्दन विऱ्ऱॊळिऱ् कल्विये 3360

मॆय् उयिर्–शरीर के जीवों से; विण् निऱैन्तन–आकाश भर गया; वेलैयुम्–समुद्र भी; पुण् निऱैन्त–व्रण से निकलकर बहे; पुनलिन् निऱैन्तन–रक्त से भर गया; मण्–भूमि; पेर् उटल्–भर गयी; विल् तॊळिल् कल्वि–धनुकर्मविद्या से; वानवर् कण्–देवों की आँखें; निऱैन्तन–भर गयीं। ३३६०

शरीरों के अन्दर के जीवों से आकाश भर गया। समुद्र भी व्रणनिर्गत रक्त से भर गया। भूमि बेहद लाशों से भर गयी। देवों की आँखें धनुर्विद्या (प्रदर्शन) से भर (खुश हो) गयीं। ३३६०

शॆरुत्त वीरर् पॆरुम्बडै शिन्दिन
पॊरुत्त शोरि पुहक्कडल् पुक्कन
इरुत्त नीरिड् चॆरिन्दन वॆङ्गणुम्
अरुत्तु मीन मुलन्द वन्नन्दमे 3361

चॆरुत्त वीरर्–क्रुद्ध वीरों के; पॆरु पटै–बड़े-बड़े हथियार; चिन्तिन–बिखर गये; पॊरुत्त चोरि–उन्हें धारण करते हुए रक्त; पुक–समुद्र में बहा इसलिए वे भी; कटल् पुक्कन–समुद्र में प्रविष्ट हो गये; इरुत्त नीरिल्–वहाँ रहते जल में; चॆरिन्तन–संकुलित होकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; अरुत्तु–काटने लगे तो; उलन्त–उससे मरी; मीनम्–मछलियाँ; अनन्तमे–अनंत थीं। ३३६१

क्रोधी वीरों के हथियार बिखरे, रक्त में तिरकर उसके साथ समुद्र में पहुँच गये। संकुलित रहे उनके काटने से सर्वत्र जो (जलचर) मछलियाँ मरी वे अनंत थी। ३३६१

ऑल्व देयिव् वॊरुवन्निव् वूहत्तॆक्
कॊल्व देनिन्रु कुन्ऱुन यामॆलाम्
वॆल्व देदु मिलामैयिन् वॆण्बलै
मॆल्व देॆन वन्नि विळम्बिनान् 3362

इव् ऑरुवन्–यह एकाकी का; इव् ऊकत्तै–इस (राक्षस-) सेना का; निन्ऱु–सामना करके; कॊल्वतु–मारना; ऑल्वते–साध्य है क्या; कुन्ऱन–पर्वत-सम; याम् ऍलाम्–हम सब; वॆल्वतु–जीतें इसका; एतुम् इलामैयिन्–कुछ संकेत नहीं मिलता, इसलिए; वॆळ् पलै–श्वेत दाँतों को; मॆल्वते–चबाते रहें; ऍन–ऐसा; वन्नि विळम्पिनान्–वह्नि ने पूछा। ३३६२

वह्नि ने यह देखकर पूछा कि क्या एकाकी ही यह इस राक्षस-सेना का सामना करके बिलकुल नाश कर देगा? उसके हाथों यह साध्य हो जायगा क्या? पर्वतोपम हमारे जीतने का कोई आसरा नहीं दीखता। फिर क्या अपने सफ़ेद दाँतों को चबाते रह जायँ? । ३३६२

कोल्वि ळुन्दळुन् दामुनङ् गूडियाम्
मेल्वि ळुन्दिडि नुम्मिवन् वीयुमाल्
काल्वि ळुन्द मळैयन्न काट्चियीर्
माल्वि ळुन्दुळिर् पोलु मयङ्गिनोर् 3363

कोल्–(राम का या रावण का) शर; विळुन्तु–गिरकर; अळुन्ता मुनम्–(हम पर) धँसे इसके पहले; याम् कूटि–हम मिलकर; मेल् विळुन्तिटिनुम्–उस पर गिरें उस हालत हो मे; इवन् वीयुम्–यह मरेगा; काल् विळुन्त–बरसती; मळै अन्न–धारवार मेघ के समान; काट्चियीर्–दृश्यमान; नीर् मयङ्कि–तुम लोग भ्रांत होकर; माल् विळुन्तुळिर् पोलुम्–मोह में फँस गये हो शायद क्या। ३३६३

उसने आगे कहा— रावण का (या राम का) शर हम पर गिरकर धँस जाय इसके पहले हम उन पर एक साथ गिर जायँ, इतना काफ़ी है, वह मर जायगा। हे जलवर्षी मेघ-वर्ण वीरो ! तुम क्या भ्रांत हो मोह में फँस गये शायद ? । ३३६३

आयि रम्बॅरु वॅळ्ळ मरैपडत्, तेय निऱ्पदु पिऩ्ऩिऩि यॅऩ्ऩॅयप्
पायु मुऱ्ऱुड तॅयॅऩप् पऩ्ऩिऩाऩ्, नाय हऱ्कॉ रुदवियॅ नल्हुवान् 3364

आयिरम् पॅरु वॅळ्ळम्–हज़ार महा 'वॅळ्ळम्' की सेना; अरै पट–पिस जाती है; तेय निऱ्पतु–मिटने की दशा में है; इऩि पिऩ्–अब आगे; ॲऩ् चॅय–क्या करना रहेगा; उटऩे–तुरंत; उऱ्ऱु–धैर्य करके; पायुम्–(श्रीराम पर) झपटो; ॲऩ–ऐसा; नायकऱ्कु–अपने राजा को; ओर् उतवियॅ–एक सहायता; नल्कुवान् करने के लिए; पऩ्ऩिऩाऩ्–कहा (वह्नि ने)। ३३६४

हज़ार महा वॅळ्ळम् की सेना पिसती जाती है। लगता है एक दम मिटने की दशा में है ! उसके मिटने के बाद करने के लिए क्या रह जायगा ? इसलिए तुरंत धैर्य अपनाकर राम पर झपट पड़ो। —ऐसा अपने राजा की सेवा करना चाहकर उसने कहा। ३३६४

उऱ्ऱु रुत्तॅऴु वॅळ्ळ मुडऩ्ऱॅऴाच्, चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् वळैऩ्दऩ तूविऩ
ऑऱ्ऱै माल्वरै मेलुयर् तारैहळ्, पऱ्ऱि मेहम् बॉऴिऩ्दॅऩप् पल्पडै 3365

उऱ्ऱु–उतारू होकर; उरुत्तु ॲऴु–रुष्ट हो उठी; वॅळ्ळम्–बड़ी सेना; उटऩ्ऱु ॲऴा–भड़क उठ; चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम्–चारों ओर से बिलकुल; वळैऩ्तऩ–घेर गये; ऑऱ्ऱै माल् वरै मेल्–एकाकी बड़े पर्वत पर; मेकम् पऱ्ऱि–मेघ उमड़कर; उयर् तारैकळ्–लम्बी धारें; पॉऴिऩ्दॅऩ–बरसाते जैसे; पल् पटै–अनेक हथियार; तूविऩ–बरसाये। ३३६५

बड़ी सेना रुष्ट होकर उठी। सारे वीर भड़ककर उठे और श्रीराम को घेर गये। फिर वे एकाकी पर्वत पर उमड़कर धार गिराते काले मेघों के समान अपने हथियारों को बरसाने लगे। ३३६५

कुऱित्तॅ ऱिऩ्दऩ वॅय्दऩ कूऱ्ऱुरत्
तऱित्तुत् तेरुङ् गळिऱुन् दरैप्पड
मऱित्त वाशि तुणित्तवर् माप्पडै
तॅऱित्तुच् चिन्दच् चरमऴै शिऩ्दिऩाऩ् 3366

कुऱित्तु–निशाना बाँधकर; ॲऱिऩ्तऩ–फेंके जो गये उन्हें; ॲय्तऩ–जो चलाये गये उन्हें; कूऱु उऱ–कई टुकड़ों में; तऱित्तु–छेदकर; तेरुम् कळिऱुम्–रथों और हाथियों को; तरै पट–धराशायी करते हुए; मऱित्त–रोके हुए; वाचि–अश्वों को; तुणित्तु–छेदकर; अवर् मा पटै–उनकी अश्व-सेना को; तॅऱित्तु चिन्त–तोड़-छितराकर; चर मऴै–शर-वर्षा; चिन्तिऩाऩ्–श्रीराम ने की। ३३६६

राक्षसों ने जो निशाना बाँधकर हथियार चलाये उन्हें, और जो चलाये गये उन हथियारों को श्रीराम ने खण्डित करके हटा दिया। रथों और गजों को धराशायी कर दिया। रुके हुए अश्वों को छिन्न कर दिया। और अश्वारोही वीरों को छितरा दिया। ऐसा श्रीराम ने शरवर्षा की। ३३६६

वाय्वि ळित्तॅऴु पः(ह्)रलै वाळियिल्
पोय्वि ळित्त कुरुदिहळ् पॉङ्गुव
पेय्क ळिप्प नाडिप्पन्न पॅट्पुरुम्
तीवि ळित्तिडु तीब निहर्त्तवाल् 3367

वाय् विळित्तु–मुख से शब्द करते हुए; ॲऴु–झपटनेवाले; पल् तलै वाळियिल्–अनेक सिरों वाले बाणों के कारण; विळित्त–बड़े शोर के साथ मरनेवालों का; कुरुतिकळ्–रक्त; पॉङ्कुव–उफ़न उठा; पेय् कळिप्प–भूत जो अदित होकर; नटिप्पन–नाचते (उनकी); विळितुतिटुम् ती–निमन्त्रण देनेवाली (मुख की) आग; पॅट्पु उरुम्–उपयोगी; तीपम् निकर्त्त–समुद्रकूल के दीपस्तम्भ के दीप के समान रही। ३३६७

मुखरित हो चलनेवाले बहुसिर शरों के लगने से राक्षस मरे। उनसे शब्द करते हुए रक्त के अनेक प्रवाह उफन उठे। उनके किनारों पर अग्निमुख भूत आनंद के साथ नाचे। वे अपने मुख की आग के कारण समुद्र के किनारे रहकर यात्रियों को सहायता देनेवाले दीपस्तम्भ के समान दिखे। ३३६७

नॅय्हॉळ् शोरि निऱैन्द नॅडुङ्गडल्
शॅय्य वाडैय ळत्तशॅज् जान्दिन्नळ्
वैय मङ्गै पॉलिन्दन्नण् मङ्गलच्
चॅय्य कोलम् बुनैन्दन्न शॅय्हैयाळ् 3368

नॅय् कॉळ्–चर्बी से युक्त; चोरि–रक्त से; निऱैन्त–भरे; नॅटु कटल्–बड़े समुद्र रूपी; चॅय्य आटैयळ्–रक्त (वर्ण) वसना (स्त्री); अत्त–उसी रंग के; चॅम् चान्तिनळ्–लाल चन्दन से चर्चित; वैयम् मङ्कै–भूदेवी; मङ्कलम् चॅय्य–शुभ कार्य करने; कोलम् पुनैन्तन्न–वेष धारण कर चुकी हो; चॅय्कैयाळ्–ऐसा कार्य करनेवाली के रूप में; पॉलिन्तनळ्–शोभी। ३३६८

चर्बी-सहित रक्त से भर गया समुद्र। अतः भूमि रक्त (-वर्ण-) वसना हो गयी। उसी रंग के चंदन से भी चर्चित हुई भी लगी। तब वह उस स्त्री के समान लगी जो शुभ कार्य के अवसर पर लाल रंग के अलंकार के कार्य में लगी हो। ३३६८

उप्पुत् तेन्नॅय् यॉण्डयिर् पाल्करुम्
बप्पुत् तालॅन् ऱुरैत्तन वाळिहळ्

दिप्पुनल् शुर्र्लाल्
तुप्पुप् पोर्कुरु यित्रोर् तनुविनाल् 3369
तप्पिड़् रुव्वुरै

उप्पु–लवण; तेन्–मधु; नेय्–घृत; ऑण तयिर–श्वेत दधि; पाल्–दुग्ध; करुम्पु–इक्षु; अप्पु–शुद्ध जल के; ऍन्ऱु उरैत्तत आऴिकळ्–ऐसे कहे जानेवाले समुद्र; तुप्पु पोल् कुरुति–प्रवालवर्ण रक्त का; पुनल्–जल; चुर्र्लाल्–घेरने से; इन्ऱु–आज; ऑर् तनुविताल्–एक धनु के कारण; अव् उरै–(सप्त-समुद्र के) उस नाम से; तप्पिऩ्ऱु–वंचित हो गये। ३३६९

समुद्र सात हैं। वे लवण, घृत, दधि, मधु, दुग्ध, इक्षु और शुद्धजल के हैं। अब सभी में रक्त भर गया। इसलिए एक धनु के कारण सप्त (-पदार्थ-) समुद्र का नाम गुम हो गया! । ३३६९

ऑन्ऱु मेतॊडै कोलॊरु कोडिहळ्
शॆन्ऱु पाय्वत तिङ्ग ळिळम्बिरै
अन्ऱु पोलॆत लाहिय दच्चिलै
ऍन्ऱु माळ्व रॆदिर्त्त विराक्कदर् 3370

तॊटै ऑन्ऱुमे–संधानकर चलाना एक ही बार; कोल्–बाण तो; ऑरु कोटिकळ्–एक करोड़; चॆन्ऱु पाय्वत–जा लगते हैं; अ चिलै–वह धनु; अन्ऱु इळम् पिरै तिङ्कळ् ॲत–बालचन्द्र के समान; आकियतु–पोल्–उसी दिन के; इराक्कतर्–राक्षस; ऍन्ऱु माळ्वर्–(वक्र) है; ऍतिर्त्त–सामना करनेवाले; कब तक मरेंगे। ३३७०

एक ही खेप में करोड़ों अस्त्र चलते थे। वह धनु भी चन्द्रकला के समान श्रीराम के झुकाने से वक्र हो गया था। तो भी न जाने लड़नेवाले राक्षस कब तक समाप्त होंगे? । ३३७०

ऍडुत्तव रिरैत्तव रॆरिन्दवर् शॆरिन्दवर् मरङ्गॊ डॆदिरे
तडुत्तवर् शलित्तवर् शरिन्दवर् पिरिन्दवर् तनिक्क ळिरुपोल्
कडुत्तवर् कलित्तवर् करुत्तवर् शॆरुत्तवर् कलन्दु शरमेल्
तॊडुत्तवर् तुणिन्दवर् तॊडर्न्दतर् किडन्दतर् तुरन्द कणैयाल् 3371

ऍटुत्तवर्–जिन्होंने हथियार उठाये वे; इरैत्तवर्–और नारे लगानेवाले; ऍरिन्तवर्–हथियार चलानेवाले; चॆरिन्तवर्–(श्रीराम के) बहुत पास आये; ऍतिरे–सामने से; तटुत्तवर्–(श्रीरामास्त्र को) रोकनेवाले; मरम् कॊटु–वीरता के साथ; चरिन्तवर् पिरिन्तवर्–हारकर अलग हुए; तनि कळिऱु पोल्–और अकेले हाथी के समान; चलित्तवर्–ऊबे हुए; कटुत्तवर्–जोर लगानेवाले; कलित्तवर्–घमंडी; करुत्तवर्–क्रुद्ध; चॆरुत्तवर्–फूत्कार करनेवाले; कलन्तु–मिल आकर; चरम् मेल् तॊटुत्तवर्–शर प्रेरित करनेवाले सभी; तुरन्त कणैयाल्–श्रीराम के प्रेरित अस्त्रों से; तुणिन्तवर्–छिन्न होकर; तॊटर्न्ततर् किटन्ततर्–बराबर पड़े रहे। ३३७१

हथियार उठानेवाले, नारे लगानेवाले, श्रीराम के पास आये हुए, हथियार फेंकनेवाले, वीरता दिखाकर श्रीराम के अस्त्र को रोकनेवाले, ऊबे हुए वीर, हारकर भागनेवाले अकेले मदमत्त के समान ज़ोर लगानेवाले, घमंडी, क्रुद्ध, फूत्कार करनेवाले और पास आकर श्रीराम पर बाण चलाने वाले सभी श्रीराम के चलाये गये अस्त्रों से छिन्न होकर बराबर मरे और भूमि पर गिरे पड़े रहे। ३३७१

तॊड्डुप्पदु शुडर्प्पहऴि यायिर निरैत्तवै तुरन्द तुरैपोय्प्
पड्डुप्पदु वयप्पहऴि यायिररै यन्ऱुपदि नायि रवरैक्
कड्डुप्पदु करुत्तुमदु कट्पुलन् मनङ्गरुदल् कल्वि यिलवेल्
ऒंड्डुप्पदु पडप्पॊरुव दन्ऱियिवर् शॆंय्वदॊरु नन्ऱि युळवो 3372

तॊट्टुप्पतु–चलाये गये; चुटर् पकऴि–तेजोमय शर; आयिरम्–हज़ार; निरैत्तवै–पंक्तियों में जाते वे; तुरन्त तुरै पोय्–प्रेरित मार्ग में जाकर; पट्टुप्पतु–मारते; वयप्पकऴि–विजयदायी शरों वाले; आयिररै अन्ऱु–हज़ार को नहीं; पतितायिरवरै–दसों हज़ार वीरों को; अतु कट्टुप्पु–वही तीव्रता (उनकी) थी; अतु करुत्तुम्–वही (प्रेरक का) मनोरथ भी; कण् पुलन् मनम्–आँख की इन्द्रिय और मन; करुतल् कल्वि–सोचने (जानने) की शक्ति से युक्त; इल–नहीं; वेल् ऎंट्टुप्पतु–शक्ति उठाना (राक्षसों का); पट पॊरुवतु अन्ऱि–मरने के लिए लड़ना छोड़; इवर् चॆय्वतु–इनका कार्य; ऒरु नन्ऱि उळतो–एक अच्छा काम भी है क्या। ३३७२

श्रीराम चलाते एक ही हज़ार अस्त्र, पर वे पंक्तियों में जाकर मारते केवल एक हज़ार विजयशरधारक वीरों को नहीं! पर मारते दस हज़ार वीरों को! वह उनकी तेजी है और श्रीराम का मनोरथ भी। उन्हें आँखें या मन देख जान ही नहीं सकता! राक्षस शक्तियाँ उठाते अवश्य थे, पर वह मरने के लिए ही! उसे छोड़ वे क्या उपयोगी अच्छा कार्य कर सकते थे? । ३३७२

तूशियॊड्डु नॆर्ऱियिरु कैयिनॊड्डु पेरणि कडैक्कुऴै तॊहुत्तु
ऊशिनुऴै यावहै शरत्तणि वहुक्कुमवै युण्णु मुयिरै
आशैहळै युऱ्ऱुरुवु मप्पुऱमु मोड्डुम दनिप्पु ऱमुळार्
ईशनॆदि ऱुऱ्ऱुहव दल्लदिहन् मुऱ्ऱुवदॊर् कॊऱ्ऱ मॆवनो 3373

तूचियोट्टु नॆर्ऱि–अग्रभाग तथा भाल का भाग; इरु कैयितोट्टु–दोनों बाजुओं के साथ; पेर् अणि–प्रधान भाग और; कटै कुऴै–अंतिम भाग; तॊकुत्तु–इनको मिलाकर; ऊचि नुऴैया वकै–सूई भी न घुस पाये ऐसा; चरत्तु अणि–शरपंक्ति; वकुक्कुम्–रचनेवाले बने श्रीराम; अवै–वे; उयिरै उण्णुम्–राक्षसों की जान खा लेते; आचैकळै उऱ्ऱु–दिशाओं में जाकर; उरुवुम्–भेद जाते; अप्पुऱमुम् ओट्टुम्–उन्हें पार कर भी आगे जाते; अतन्–निशाने के; इ पुऱम् उळार्–इस तरफ़ रहनेवाले; ईचन्–भगवान के; ऎतिर् उऱ्ऱु–समक्ष जाकर; उकुवतु अल्लतु–मर जाने के

सिवा; इकल् मुड्डवतु–वीरता की चरम सीमा की; ओर् कॊंड्म्–विजय पाना; ॲवत्–कहाँ। ३३७३

श्रीराम ने ऐसे अस्त्र चलाये कि राक्षस-सेना के अग्रभाग, उसके पीछे का (भाल का) भाग, प्रधान अंश, पीछे का भाग, दोनों बाजू-सब ऐसे मिल गये कि सूई के घुसने का स्थान भी नहीं मिल सका। वे शर राक्षसों के प्राणों को खाते। दिशाओं में जाकर उन्हें भेदते। दिगंत के पार भी चलते। उनके निशाने के इस तरफ़ जो राक्षस थे उनका श्रीराम के सम्मुख जाकर प्राण छोड़ने के सिवा वीरता की सीमा में मिलनेवाली विजय पाना कैसे हो सकता था ? । ३३७३

ऊन्नहु वडिक्कणैह ळूळियन्न लौत्तन्न वुलन्द वुलवैक्
कान्नह निहर्त्तन्न रक्कर्मलै यौत्तन्न कळित्त मदमा
मान्नवन् वयप्पहळि वीशुवलै यौत्तन्न वळैप्पुन्न लुळ्वाळ्
मीन्नहु लमौत्तन्न कडर्पडै यिनत्तौडुम् विळिन्दु ऱुदलाल् 3374

ऊन् नकु–मांस के साथ शोभनेवाले; वटि कणैकळ्–तीक्ष्ण शर; ऊळि अनल् औत्तन–युगान्त की अग्नि के समान हैं; अरक्कर्–राक्षस; उलन्त–सूखे; उलवै कानकम्–ठूँठों के जंगल; निकर्त्तनर्–के समान थे; कळित्त मत मा–मदमत्त हाथी; मलै औत्तन–पर्वतों की समानता करते थे; मानवन्–मनुकुल-पुत्र श्रीराम के; वयम् पकळि–बलवान शर; वीचु वलै औत्तन–फेंके जानेवाले जाल के समान थे; कटल पटै–सागर-सी सेना; इनत्तौटुम्–समूहों के साथ; विळिन्तुरुतलाल्–मिट गयी, इसलिए; वळै पुनलुळ्–(धरती के) आवरणकारी समुद्र में; वाळ्–वास करनेवाले; मीनम् कुलम् औत्तन–मत्स्यकुल के समान थी। ३३७४

मांस के साथ शोभनेवाले तीक्ष्ण शर युगांत की अग्नि के समान लगे; तो राक्षस सूखे ठूँठों के जंगल के सदृश रहे और मदमत्त हाथी पर्वतों के समान। मनुकुलपुत्र श्रीराम के बाण मछुए के जाल के समान लगे। सागर-सी सेना स-समूह मिटती, इसलिए राक्षसदल पृथ्वी के आवरणकारी समुद्र के अन्दर रहनेवाला मत्स्यकुल बना। ३३७४

ऊळियिऱ् दिक्कडुहु मारुदमु मौत्तन्न निराम नुडन्ने
पूळियॆन्न वुक्कुदिर मालवरैह ळौत्तन्न रक्कर् पॊरुवार्
एळुलहु मुऱ्ऱुयिर्हळ् यावैयु मुरुक्कियिऱ् दिक्क णित्वरुम्
आळियैयु मौत्तननम् मन्नुयिरु मौत्तन्न रलैक्कु निरुदर् 3375

इरामन्–श्रीराम; ऊळि इऱुति–युगान्त में; कटुकु मारुतमुम्–प्रचण्ड बहने वाले मारुत; औत्तनन्–के समान रहे; उटने–तुरंत; पूळि ॲन–धूल के समान; उक्कु उतिरुम्–टूटकर गिरनेवाले; माल् वरैकळ् औत्तनर्–बड़े पर्वतों के सदृश थे; पॊरुवार् अरक्कर्–लड़नेवाले राक्षस; एळ् उलकुम् उऱ्ऱु–सातों लोकों में जाकर; उयिर्कळ् यावैयुम्–सभी जीवों को; मुरुक्कि–मारकर; इऱुतिकणित्–आखिरकार;

वरुम्–उमगनेवाले; आऴियैयुम् ऑत्तनन्–समुद्र के समान भी रहे (श्रीराम); अलैक्कुम् निरुतर्–त्रस्त राक्षस; अ मन् उयिरुम्–उन नित्यजीवों; ऑत्तनर्–के सदृश भी रहे। ३३७५

श्रीराम युगांत के प्रचंड मारुत-सम थे। लड़नेवाले राक्षस तुरन्त धूल बनकर गिरनेवाले पर्वतों के सदृश रहे। श्रीराम युगांत में उमड़ आनेवाले सागर के समान थे जो कि सातों लोकों में पहुँचकर जीवों का अंत कर देता। त्रस्त राक्षस उन नित्यजीवों से तुल्य रहे। ३३७५

मूलमुद लायिडैयु मायिरुदि यायॅवैयु मुरुरु मुयलुङ्
गालमॅन लायिननि रामनवव ररक्कर्कडै नाळिल् विळियुङ्
गूलमिल् शराशर मनैत्तिनैयु मौत्तनर् कुरैह डलॅळुम्
आलमॅन लायिननि रामनवर् मीनमॅन लायि नर्हळाल् 3376

इरामन्–श्रीराम; मूलम् मुतलाय्–मूल कारण बनकर; इडैयुमाय्–और मध्य रहकर और; इरुति आय्–अन्त रहकर; ऍवैयुम्–सभी प्रपंच के; मुरुरुम्–लीन होने का स्थान बनकर; मुयलुम्–यत्नशील; कालम् ऍनल् आयिनन्–युगान्तकाल के सदृश बने; अव् अरक्कर्–वे राक्षस; कडै नाळिल्–युगान्त में; विळियुम्–मरनेवाले; कूलम् इल्–असीम; चर अचरम्–चराचर; अनैत्तिनैयुम् ऑत्तनर्–सभी के समान बने; कुरै कटल् ऍळुम्–गर्जनशील सागर से उदित; आलम् ऍनल् आयिनन् इरामन्–हलाहल-सम रहे श्रीराम; अवर्–वे; मीनम् ऍनल् आयिनर्–मछलियों के सदृश रहे। ३३७६

श्रीराम आदि, मध्य और अंत में रहनेवाले और सब प्रपंच के लय के आश्रय, यत्नशील काल के समान रहे। तो राक्षस युगांत में विनष्ट होनेवाले चराचर सबके सदृश रहे। गर्जनशील समुद्र से उत्पन्न हलाहल के सदृश रहे श्रीराम, तो वे राक्षस (उसमें जल) मरनेवाली मछलियों के समान रहे। ३३७६

वञ्जविनै शॅय्दुनॅडु मन्ऱिल्वळ मुण्डुहरि पॉय्क्कु मऱमार्
नॅञ्जमुडै योर्हळ्कुल मौत्तनर रक्करऱ मौक्कु नॅडियोन्
नञ्जनॅडु नीरिनैयु मौत्तन नडुत्तदनै नक्कि नरैयुम्
बञ्जमुरु नाळिल्वरि योर्हळैयु मौत्तन ररक्कर् पडुवार् 3377

वञ्चम् विनै–वंचक कार्य; चॅय्तु–करके; नॅटु मन्ऱिल्–न्यायसभा में; वळम् उण्टु–अधार्मिक रीति से धन लेकर (घूँस पाकर); करि पॉय्क्कुम्–झूठी गवाही देनेवाले; मऱम् आर्–पापपूर्ण; नॅञ्चम् उटैयोर्कळ्–मन वालों के; कुलम् ऑत्तनर्–कुल के समान थे; अरक्कर्–राक्षस; नॅटियोन्–महिमामय श्रीराम; अऱम् ऑक्कुम्–(उस कुल के नाशक) धर्मदेवता के समान थे; नञ्चम्–विषमिश्रित; नॅटु नीरिनैयुम्–अधिक जल के भी; ऑत्तनन्–सदृश रहे श्रीराम; अतनै अटुत्तु–उसके पास जाकर; नक्किनरैयुम्–चाटनेवालों के; पञ्चम् उऱु नाळिल्–अकाल के

समय के; वरियोर्कळैयुम्–दरिद्रों के भी; ऑत्ततर् अरक्कर्–समान रहे निशाचर; पट्वार्–मिटते। ३३७७

छल-फ़रेब करके घूँस लेकर जो न्यायसभा में झूठी गवाही देता है, उस पाप-मन पुरुष के कुल के समान राक्षस बने। तो महिमावान श्रीराम धर्मदेवता के समान रहे, जोकि उस कुल का नाश कर देता है। श्रीराम विषमिश्रित जल के समान रहे तो वे राक्षस उसे चाटनेवालों के समान बने। और भी अकाल में दरिद्रों के समान भी लगे। और वे मरे। ३३७७

वॆळ्ळमीरु नूऱुपडुम् वेलैयिन्व् वेलैयुमि लङ्गै वॆळियुम्
पळ्ळमॆाडु मेडुतॆरि यादवहै शोर्कुरुदि पम्बि यॆळ्ळुम्
उळ्ळुमदि लुम्बुऱमु मॊन्ऱुमरि यादलऱि योडि न्ऱहळार्
कळ्ळनॆडु मान्विळिय रक्कियर्क लक्कमॊडु काल्हळ् कुलैवार् 3378

वॆळ्ळम् और नूऱु–एक सौ 'वॆळ्ळम्'; पटु वेलैयिन्–जब सेना मरती तब; अ वेलैयुम्–वह सागर; इलङ्कै वॆळियुम्–और लंका का ख़ाली स्थान; पळ्ळमॊटु मेटु–नीची भूमि और ऊँची भूमि; तॆरियात वकै–न जानी जायँ ऐसा; चोर् कुरुति–बढ़नेवाला रक्त; पम्पि ऍळ्ळुम्–फैल उठा तो; कळ्ळम् नॆटु–वंचकता-भरी; मान् विऴि–हरिणाक्षी; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मतिल्–प्राचीरों के; उळ्ळुम् पुऱमुम्–अन्दर और बाहर; ऒन्ऱुम् अऱियातु–विना कुछ जाने ही; काल्कळ् कुलैवार्–पैरों की शक्ति खोकर; कलक्कमॊटु–क्षोभ के साथ; अलऱि ओटिनर्–चिल्लाती भागीं। ३३७८

एक सौ वॆळ्ळम् की सेना जब हत हुई तब जो रक्त बहा वह ऐसा फैला कि समुद्र में और लंका के रिक्त स्थानों में यह पहचाना नहीं जा सकता था कि ऊँची भूमि कहाँ है और नीची भूमि कहाँ। तब वंचकता से भरी तथा हरिणाक्षी राक्षसियाँ कुछ जाने विना ही प्राचीरों के अन्दर और बाहर लड़खड़ाते और क्षीणशक्ति हुए पैरों के बल चिल्लाती हुई भागीं। ३३७८

नीङ्गिनर् नॆरुङ्गिनर् मुरुङ्गिन रुलैन्दुलहि नीळु मलैपोल्
वीङ्गिन पॆरुम्बिणम् विशुम्बुऱ वशुम्बुपडु शोरि विरिवुऱ्
ऱोङ्गिन नॆडुम्बरवै यॊत्तुयर वॆत्तिशैयु मुऱ्ऱॆ दिरुऱत्
ताङ्गिनर् पडैत्तलैवर् नूऱुशद कोडियर् तडुत्त लरियार् 3379

नॆरुङ्कितर्–पास जाकर लड़ाई करते; मुरुङ्कितर्–मिटकर; उलैन्तु–विकृत होकर; नीङ्कितर्–दुनिया से कूच कर गये; उलकिल्–संसार में; नीळुम् मलै पोल्–लम्बे बनते बड़े पर्वत के समान; पॆरुम् पिणम्–शवों के बड़े ढेर; विचुम्पु उऱ–आकाश स्पर्श करते हुए; वीङ्कित–ऊँचे बने; अचुम्पु पटु चोरि–बहनेवाला रक्त; विरिवुऱ्ऱु–विस्तृत बना; नॆटु परवै ऒत्तु–विशाल सागर के समान बनकर; उयर–उभरने; ऍ तिचैयुम् उऱ्ऱु–सभी दिशाओं में जाकर; ऍतिर् उऱ–सामने जाने; ओङ्कित–बढ़ा; तटुत्तल् अरियार्–दुर्निवार; नूऱु चत कोटियर्–सौ शतकोटि के; पटै तलैवर्–सेनापति; ताङ्कितर्–रोके रहे। ३३७९

राक्षस वीरों ने पास रहकर युद्ध किया। वे मरे, विकृत-रूप हुए और दुनिया से कूच कर गये। इसलिए भूमि पर लम्बी पर्वतश्रेणी के समान लाशों के ढेर बने और आकाश को छूते हुए ऊँचे बने रहे। उन लाशों से रक्त जो वह निकला वह सागर के समान सब दिशाओं में बहा और अपने में टकराकर ऊँचा बढ़ा। तब सौ शतकोटि के दुर्निवार वीर सेनापति श्रीराम को रोके खड़े रहे। ३३७९

तेरुमद मावुम्वरै याळियॊडु वाशिमिहु शीय मुदला
ऊरुमवै यावैयु नडायिनरुह डायिनर् हळुन्दि नरहळाड्
कारुमुरु मेरुमॆरि येरुनिहर् वॆम्बडयॊ डम्बु कडिदिन्
तूरुम्वहै तूयिनर् तुरन्दनरुह ळॆय्दनर् तॊडर्न्द नरहळाल् 3380

तेरुम्–रथ और; मतम् मावुम्–मत्तगज; वरै–पर्वतीय; याळियॊटु–शरभों के साथ; वाचि–अश्व; मिकु चीयम्–बलवान सिंह; मुतला–आदि; ऊरुम्–वाहन; अवै यावैयुम्–उन सभी को; कटायिनर्–चलाते हुए; नटायिनर्–चले; कारुम्–मेघ; उरुम् एऱुम्–और अशनिराज; ऎरि एऱुम्–बड़ा अनल; निकर्–सदृश; वॆम् पटैयॊटु–भयंकर हथियारों के साथ; कटितिन्– तेज; तूरुम् वकै तूयिनर्–(युद्ध का मैदान) पट जाय ऐसा बरसाये; तुरन्तनर्कळ्–शीघ्र; ऎय्तनर्–छोड़ते हुए; तॊटर्न्तनर्कळ्–पीछा किया। ३३८०

वे लोग रथ, मत्तगज, पार्वत्य शरभ, वाजी, सशक्त सिंह आदि वाहनों को चलाते हुए आये और उन्होंने मेघ, अशनिराज और वृहत् अनल —इनके समान भयानक हथियारों को मैदान को पाटते हुए बरसाया। बरसाते हुए वे पीछा करने लगे। ३३८०

वम्मिनड वम्मिनॆदिर् वन्दुनुम दारुयिर् वरङ्गळ् पिऱवुन्
दम्मिनॆन विन्नमॊऴि तन्दॆदिर् पॊऴिन्दन तडुप्प रियवाम्
वॆम्मिनॆन वॆम्बहऴि वेलैयॆन वेयिननव् वॆय्य विनैयोर्
तम्मिन मनैत्तैयु मुनैन्दॆदिर् तडुत्तनर् तनित्त नियरो 3381

वम्मिन्–आओ; अट वम्मिन्–मैं मारूँ तदर्थ आओ; ऎतिर् वन्तु–सीधे आकर; नुमतु अरुमै उयिर्–अपने प्यारे प्राणों; वरङ्कळ्–और वरों; पिऱवुम्–और अन्य सभी को; तम्मिन्–दे दो; ऎन–यह और; इन्न मॊऴि तन्तु–ऐसी बातें कहते हुए; ऎतिर् पॊऴिन्तन–सामने से चलाये गये और; तटुप्पु अरिय आम्–दुर्निवार; वॆम् पकऴि–भीषण अस्त्रों को; वॆम् मिन् ऎन–भयंकर बिजली के समान और; वेलै ऎन–समुद्र के समान; एयिनन्–(अस्त्र) छोड़े; अ वॆय्य विनैयोर्–उन क्रूर-कर्म राक्षसों ने; तनि तनि–अलग-अलग; ऎतिर्–समक्ष रहकर; तम् इनम् अनैत्तैयुम्–सभी शरसमूह को; मुनैन्तु तटुत्तनर्–अधिक प्रयत्न के साथ रोका। ३३८१

श्रीराम ने उनको आमंत्रित किया— आओ; मेरे हाथों मरने के लिए आओ! सीधे आओ और अपने प्यारे प्राणों और वरों को और अन्य जो

भी हैं तुम लोगों के पास उन सभी को दे दो ! यह कहते हुए उन्होंने सीधे जानेवाले दुर्द्धर्ष और भीषण विद्युत्-से शरों को सागर के समान चलाया। उन क्रूरकर्म राक्षसों ने भी अलग-अलग रहकर बड़े प्रयत्न के साथ उन बाणों को रोका। ३३८१

अक्कणैयै यक्कण मऱुत्तत्तर् शॅऱुत्तिह लरक्क रडैयप्
पुक्कणय लुऱ्ऱत्तर् मऱैत्तत्तर् पुयऱ्कदिहम् वाळि पॊळिवार्
तिक्कणै वहुत्तत्त रॆत्तच्चल नॆरुक्कित्तर् शॆरुक्कित् मिहैयाल्
मुक्कणत्तै युऱ्ऱडि वणङ्गियिमै योरिवै मॊळिन्द तर्हळाल् 3382

इकल् अरक्कर् अटैय-सभी वैरी राक्षसों ने; पुक्कु-घुसकर; अणैयल् उऱ्ऱत्तर्-मिले; अ कणैयै-उन शरों को; चॆऱुत्तु-रोष दिखाकर; अ कणम्-उसी क्षण में; अऱ्ऱत्तत्तर्-काट देकर; पुयऱ्कु अतिकम्-मेघ से अधिक; वाळि-अस्त्रों को; पॊळिवार्-बरसाकर; मऱैत्तत्तर्-(श्रीराम को) ओझल कर दिया; तिक्कु-दिशाओं के लिए; अणै वकुत्तत्तर्-सेतु (या पुल) बना दिया; ऎन्न-जैसे; मिकै चॆरुक्किताल्-अधिक अभिमान के साथ; चॆल नॆरुक्कित्तर्-बहुत पास से त्रस्त किया; इमैयोर्-देवों ने; मुक्कणत्तै-त्रिनेत्र के; उऱ्ऱु-पास जाकर; अटि वणङ्कि-चरणों में नमस्कार करके; इवै मॊळिन्तत्तर्कळ्-ये वचन कहे। ३३८२

वैरी राक्षसों ने बहुत पास जाकर उन शरों को उसी क्षण काट दिया। फिर वे खुद मेघों से भी अधिक परिमाण में शर बरसाते हुए श्रीराम को ओझल करके घेर गये। दिशाओं पर पुल बाँध दिया हो, ऐसा वे दर्प के साथ घेरकर खड़े हो गये। तब देवों ने त्रिनेत्र शिवजी के पास जाकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। फिर वे यों कहने लगे। ३३८२

पडैत्तलैव रुऱ्ऱॊरुवर् मुम्मडि यिरावण नॆत्नुम्ब डिसैयोर्
किडैत्तत रवर्क्कॊर कणक्किलै वळैत्तत्तर् किळर्न्दु लहॆलाम्
अडैत्तत्तर् तॆळित्तन रळित्तत्तर् तत्तित्तुळ तिराम त्तवरो
तुडैत्तत्तरॆम् वॆऱ्ऱियॆत्त वुऱ्ऱत्त रिनिच्चॆयल् पणित्ति शुडरोय् 3383

पटै तलैवर् उऱ्ऱु-सेनानायकों में रहे; ऒरुवर्-एक-एक; मुम्मटि इरावणन्-तिगुना रावण; ऎन्नुम् पटिमैयोर्-कह सकते हैं, ऐसे है; किटैत्तत्तर्-(युद्ध में) आये; अवर्क्कु-उनका; ऒर कणक्कु इलै-कोई हिसाब नहीं; वळैत्तत्तर्-घेरकर; किळर्न्तु-उमगकर; उलकु ऎलाम्-सारे लोकों में; अटैत्तत्तर्-व्यापकर; तॆळित्तत्तर्-डाँटते हुए; अळित्तत्तर्-नष्ट करने लगे; इरामन्-श्रीराम; तत्तित्तु उळन्-अकेला है; अवरो-व (वानर) तो; ऎम् वॆऱ्ऱि तुटैत्तत्तर्-हमारी विजय को पोंछ दिया; ऎन्न-मानो यह सोचकर; उऱ्ऱत्तर्-चुप रहे; चुटरोय्-अनलवर्ण; इति-अब; चॆयल्-कार्य; पणित्ति-कहने की करें। ३३८३

जो लड़ने आये हैं उनमें एक-एक 'तिगुना रावण' कहने योग्य हैं।

उनकी संख्या का कोई हिसाब नहीं। वे श्रीराम को घेर गये हैं। उमँग कर वे सारे लोकों पर छा गये हैं। डाँटते-डपटते नाश करने लगे हैं। श्रीराम एकाकी रह गये। वानरों ने सोच लिया कि हमारी विजय को राक्षसों ने पोंछ दिया है। इसलिए वे चुप रह गये। अनलवर्ण! कहिए क्या होना है? । ३३८३

ऍय्दकणै यॅय्दुवदन् मुऩ्बिडै यऱुत्तिवर्ह ळॅऴु लहमुम्
मॉय्हॉळ्कणै मामुहि लॅन्ऩम्बडि वळैत्तऩर् मुऩिन्द ऩर्हळाल्
वैदुहॉलि नल्लदु मऱप्पडै कॉडिप्पडै कडक्कुम् वलिताऩ्
सॅय्यतिरु मालिनॉ डुऩक्कुमरि दॅऩ्ऱऩर् तिहैत्तु विऴुवार् 3384

ऍय्त कणै–(श्रीराम द्वारा) प्रेषित शर; ऍय्तुवतन् मुऩ्पु–आ लगे उसके पहले ही; इटै–बीच में ही; अऱुत्तु–उसे काटकर; इवर्कळ्–ये राक्षस; एऴु उलकमुम्–सातों लोकों पर; मॉय् कॉळ्–मँडरानेवाले; कणै–एकत्रित; मा मुकिल् ऍऩ्ऩम् पटि–बड़े मेघों के समान; वळैत्तऩर्–घेरकर; मुऩिन्तऩर्कळ्–क्रुद्ध हैं; वैतु कॉलिऩ् अल्लतु–शाप देकर मारने के सिवा; मऱम् पटै–वीरतायुक्त; कॉटि पटै–पदातिक वीरों की सेना लेकर; कटक्कुम् वलि–हराने का बलवान कार्य; चॅय्य तिरुमालिनॉटु–श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ; उऩक्कुम् अरितु–आप के लिए भी कठिन है; ऍऩ्ऱऩर्–कहकर; तिकैत्तु विऴुवार्–भयातुर हो गिर पड़े। ३३८४

श्रीराम जो शर चलाते हैं, वे आ लगें, इसके पहले ही उन्होंने उन्हें काट दिया है। सातों लोकों को आच्छादित करनेवाले एकत्रित मेघों के समान वे घेरे रहते हैं और बहुत ही रुष्ट रहते हैं! शाप देकर मारा जाय तभी मरेंगे। नहीं तो वीरों की सहायता उन्हें जीतने का बलापेक्षी कार्य श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ आपके लिए भी असाध्य है! यों कहते हुए वे भयभ्रांत होकर गिरने लग गये। ३३८४

अञ्जलिऩि याङ्गवर्ह ळॅत्तऩैव रायिडिऩु मत्त ऩैवरुम्
पञ्जियॅरि युऱ्ऱदॅऩ वॅन्दऴिव रिन्दवुरै पण्डु मुळदाल्
नञ्जमिऴ् दत्तऩऩि वॅऩ्ऱिडिऩु नल्लऱ नडक्कु मदऩै
वञ्जविऩै पॉय्क्करुमम् वॅल्लिऩुमि रामऩैयम् मायर् कडवार् 3385

इऩि अञ्चल्–अब मत डरो; अवर्कळ्–वे; आङ्कु–वहाँ; ऍत्तऩैवर् आयिटिऩुम्–कितने ही क्यों न हों; अत्तऩैवरुम्–वे सभी; पञ्चि ऍरि उऱ्ऱतु ऍऩ–रूई में आग लगी हो जैसे; वॅन्तु अऴिवर्–जलकर मरेंगे; इन्त उरै–यह कथन; पण्टुम् उळतु–पहले से है; नञ्चम्–विष; अमिऴ्तत्तै–अमृत को; वॅऩ्ऱिटिऩुम्–जीते तो भी; नटक्कुम् नल् अऱम् अतऩै–वर्तमान श्रेष्ठ धर्म को; वञ्चम् विऩै–वंचक कर्म; पॉय् करुमम्–असत्य कार्य; वॅल्लिऩुम्–जीत जाय तो भी; अम् मायर्–वे मायावी राक्षस; इरामऩै–श्रीराम को; कटवार्–जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

तब शिवजी ने आश्वासन दिया। देवो! अब डरना छोड़ दो। वे,

कितने ही क्यों न हों, सभी आग-लगी रूई के समान जलकर मिट जायँगे। यह बात पहले ही से स्थिर है! चाहे अमृत को विष खूब हरा दे; माया तथा झूठा कार्य चाहे वर्तमान धर्म को परास्त कर दे, पर वे मायावी राक्षस श्रीराम को जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

अरक्करुळ रार्शिलरव् वीडण ललादुलहि लावि युडैयार्
इरक्कमुळ दाहिलदु नल्लर्र मॅळ्नुदुवळर् हिन्र्र दितिनीर्
करक्कमुळे तेडियुळल् हिन्रिलिर्ह ळिन्रॉरु कडुमब हलिले
कुरक्किन्मुद नायहनै याळुडैय कोळुळुवै कॉल्लु मिवरै 3386

अ वीटणन् अलातु–उस विभीषण के सिवा; उलकिन्–पृथ्वी में; आवि उटैयार्–जीवंत; अरक्कर्–राक्षसों में; यार् चिलर् उळर्–कौन (जो हैं वे भी) कम हैं; इरक्कम् उळतु आकिन्–दया हो तो; अतु–उससे; नल् अऱम्–अच्छा धर्म; ॲळ्नतु वळर्कितृरतु–उठकर बढ़ता है; इनि–अब; नीर्–तुम लोग; करक्क–छिपने के लिए; मुळै तेटि–गुहाएँ खोजते; उळल्कितृरिलिर्कळ्–मत फिरो; इन्ऱु–आज; ऑरु–एक; कटुम पकलिले–मध्याह्न में; कुरक्किन् मुतल् नायकतै–वानरों के राजा को; आळुटैय–जो सेवक के रूप में रखते हैं वे; कोळ्–सबल; उळुवै–व्याघ्र- (श्रीराम); इवरै कॉल्लुम्–इन्हें अन्त कर देंगे। ३३८६

उस विभीषण को छोड़कर जीवंत राक्षसों में कितने रहते हैं? बहुत कम ही रहते हैं। संसार में करुणा रहे तो धर्म बढ़ता है। अब तुम लोगों को छिपने के लिए गुहाओं की खोज में कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा। आज मध्याह्न के अन्दर वानरेंद्र के स्वामी बलवान व्याघ्र श्रीराम उन सबका अंत कर देंगे। ३३८६

ॲन्रुपर मनबहर नान्मुहनु मन्नपॉरु ळेयि शैदलुम्
निन्रुनिलै यारिन्र्हळ् वानवरु मानवनु नेमि यॅन्नलास्
तुन्रुनॅडु वाळिमळै मारियिनु मेलन तुरन्दु विरैविऱ्
कॉन्रुकुल माल्वरैहण् मानुदलै मामलैहु वित्त नन्रो 3387

ॲन्ऱु–ऐसा; परमन् पकर–परमेश्वर के कहने पर; नान्मुकनुम्–चतुर्मुख के भी; अन्न पॉरुळे–उसी बात से; इचैतलुम्–सम्मत होने पर; वानवरुम्–देव भी; निन्ऱु–स्थिर होकर; निलै आरिनर्कळ्–धीर हुए; मानवनुम्–श्रीराम ने भी; नेमि ॲन्नलाम्–चक्रायुध-सम भयंकर; तुन्ऱु–घनी; नॅटु वाळि मळै–लम्बी शर-वर्षा; मारियिनुम् मेलन–वर्षा से अधिक; तुरन्तु–छुड़ा के; विरैविल् कॉन्ऱु–शीघ्र हत करके; कुल माल् वरैकळ् मानुम्–बड़ी कुलगिरियों-सदृश; मा तलै मलै–बड़े सिरों के पर्वतों के; कुवित्तनन्–ढेर बना दिये। ३३८७

परमेश्वर ने ऐसा कहा। तब चतुर्मुख ने भी उसी को सही बताया। उससे देव आश्वस्त हो धीर बने। श्रीराम ने चक्रायुध-सम अस्त्रों की,

मेघों से अधिक परिमाण में वर्षा करायी और शीघ्र राक्षसों को निहत करके कुल-गिरियों के-से बड़े सिरों के ढेर लगा दिये। ३३८७

महर मऱिकडलिऩ् वळैयुम् वयनिरुदर्
शिहर मत्तैयवुडल् शिदऱि इऱुवरुयिर्
पहर वरियपदम् विरव वमरर्पऴ
नहर मिडमरुह नवैयर् नलिवुएड 3388

मकरम्–मकर-भरे; मऱि–टकरानेवाली लहरों से भरे; कटलिऩ्–समुद्र के समान; वळैयुम्–(श्रीराम को) घेरे रहनेवाले; वयम्–बलवान; नवैयर् निरुतर्–दोषपूर्ण राक्षसों की; उयिर्–आत्माएँ; पकर अरिय–अवर्ण्य; पतम्–स्वर्ग-पद को; विरव–पहुँचीं; अमरर्–देवों का; पऴ नकरम्–प्राचीन नगर में; इटम् अरुक–स्थान नहीं रह गया; चिकरम् अत्तैय उटल्–(पर्वत-) शिखर-सम शरीर; चितऱि–छिन्न-भिन्न हो; नलिवु पट–संकटग्रस्त हो गये, इस रीति से; इऱुवर्–मिटे। ३३८८

मकरों और प्रत्यावर्तनशील तरंगों से युक्त समुद्र के समान जो दोषपूर्ण राक्षस श्रीराम को घेर गये थे उनकी आत्माएँ अवर्णनीय स्वर्ग में पहुँच गयीं और देवों का प्राचीन नगर ठस भर गया जिससे कि कहीं रिक्त स्थान ही प्राप्त नहीं रहा। उनके पर्वतशिखर-सम शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। तड़पकर वे राक्षस मर मिटे। ३३८८

उहळ मिवुळितलै तुमिय वुरुकऴल्हळ्
अहऴि यऱ्ऱविलिय तलैह ळुटलैवर्
तुहळि ऩुडल्हळ्विऴ वुयिर्हळ् शुररुलहिऩ्
महळिर् वऩ्ऩमुलैहळ् तऴुवि यहमहिऴ 3389

उरु कऴल्कळ्–सारयुक्त पैरों से; अकऴि अऱ–परिखा पटी; तलैकळ् अऱ–सिर-कटे; तलैवर् उटल्कळ्–नायकों के शरीर; तुकळिऩ् विऴ–धूल बनकर गिरे; उयिर्कळ्–उनके जीव; सुरर् उलकिऩ्–देवलोक की; मकळिर्–स्त्रियों के; वऩ्ऩम् मुलैकळ् तऴुवि–सुन्दर स्तनों (छातियों) का आलिंगन करके; अकम् मकिऴ–आनंदित-मन हुए; इवुळि–उनके अश्व; तलै तुमिय–सिर के कट जाने से; उकळुम्–तड़पकर गिरते। ३३८९

राक्षसों के ताक़तवर पैरों से परिखा पटी। सबल सिरों से हीन नायकों के शरीर धूल बनकर भूमि पर गिरे। उनके जीवात्माओं ने सुरलोकबालाओं के स्तनों का आलिंगन करके आनंद लूटा। उनके अश्व सिरों के कट जाने से तड़पकर गिरे। ३३८९

मलैयु मऱिकडलुम् वऩ्ऩमु मरुनिलमुम्
उलैवि लमररुऱै युलहु मुयिर्हळोडु

तलैयु मुडलुलि‌ॅ तळुव तवळ्हुरुदि
अलैयु मरियदौरु तिशैयु मिलदणुह 3390

मलैयुम्–पर्वतों; मद्रि कटलुम्–और तीर से टकराती मुड़ आती तरंगों वाले सागरों; वन्नमुम्–पर्वतों; मरु निलमुम्–खेतों; उलैवु इल–अविनाशी; अमरर् उऱै उलकुम्–देवों के वास के लोक में; तलैयुम् उटलुम्–सिरों और शरीरों को; इटै तळुवुम्–मध्य में लेकर; तवळ् कुरुति–फैलनेवाली रक्त की; अलैयुम्–लहरें; उयिर्कळोटुम्–और जीव; अरियतु–जहाँ नहीं रहें; ओरु तिचैयुम्–ऐसी एक दिशा; अणुक इलतु–पास जाने योग्य कोई नहीं रही। ३३९०

पर्वतों में, या तीर से मुड़कर टकराती तरंगों वाले सागर में; चाहे वनों में या खेतों की भूमि में; चाहे अमर देवों के लोक में कहीं भी शरीर तथा सिरों को अपने मध्य लिये रहनेवाले रक्त-सागर और जीवों से हीन कोई भी दिशा नहीं रही जहाँ पहुँचा जा सके। ३३९०

इन्नैय शॅरुनिहळ्ळु मळवि नॅदिर्पॉरुद
वित्तैय मुडैमुदलव रॅवरु मुडन्विळिय
अन्नैय पडैनॅळिय वमरर् शॊरिमलर्हळ्
नन्नैय विशैयिनॅळ्ळु तुवलै मळैहलिय 3391

इन्नैय–ऐसा; चॅरु निकऴ्ऴुम् अळविल्–युद्ध जब चला तब; ऍतिर् पॊरुत–सामने जो लड़े; वित्तैयम् उटै–षड्यन्त्र-समर्थ; मुतलवर् ऍवरुम्–सभी नायक; उटऩ् विळिय–एक साथ मरे; अन्नैय पटै–वैसी सेना; नॅळिय–छटपटायी तो; अमरर् चॊरि–देवों द्वारा बरसाये गये; मलर्कळ्–फूलों की; नन्नैय–कलियों से; विचैयिन् ऍऴु–ज़ोर से जो उठे; तुवलै–उन मधुकणों की; मऴै–वर्षा; कलिय–(जब) बढ़ी। ३३९१

ऐसा युद्ध चला और षड्यंतकारी सभी राक्षससेनापति एक साथ मर गये। उनकी सेना छटपटायी। तब देवों ने इतने फूल बरसा दिये कि कलियों से मधु की वर्षा खूब हुई। ३३९१

इरिय लुरुपडैयै निरुद रिडैविलहि
ऍरिहळ् शॊरियुनॅडु विऴिय रिऴुदैयर्हळ्
तिरिह तिरिहवॅन वुरऱु तॆऴिकुरलर्
करिह ळरिहळ्परि कडिदि नॅदिर्कडव 3392

निरुतर्–राक्षस; इटै विलकि–बीच में अलग जाकर; इरियल् उरु–अस्त-व्यस्त भागनेवाली; पटैयै–सेना को; ऍरिकळ् चॊरियुम्–आग निकालती; नॅटु विऴियर्–लम्बी आँखों वाले और; इऴुतैयर्कळ्–मूर्खो; तिरिक तिरिक–लौटो, लौटो; ऍन–ऐसा; उरऱु–डाँटनेवाले; तॆऴि कुरलर्–कर्कश स्वर वाले (वीरों की सेना); करिकळ्–गजों; अरिकळ्–सिंहों; परि–और अश्वों को; कटितिन्–सत्वर; ऍतिर् कटव–समक्ष चलाते। ३३९२

जो राक्षस वीर अस्त-व्यस्त हो भागे थे वे अब आपस में 'मूर्खो,

लौटो' कहते हुए, आँखों से आग निकालते और डांटते कर्कश-स्वर वाले बनकर गजों, सिंहों और अश्वों को श्रीराम पर प्रेरित करते हुए (लौट आये)। ३३९२

उलहु शॅविडुपड मऴैह ऴुदिरवुयर्
अलहिन् मलैकुलैय वमरर् तलैयदिर
इलहु तींडुपडैह ळिडियो डुरुमनैय
विलहि यदुतिमिरस् वळैयुम् वहैविळैय 3393

उलकु चॅविटु पट–लोक को बहरा बनाकर; मऴैकऴ–मेघों को; उतिर–नीचे गिराते; उयर्–ऊँचे; अलकु इल्–अमाप; मलै कुलैय–पर्वतों को अस्थिर करते; अमरर्–देवों के; तलै अतिर–सिरों को कँपाते हुए; इलकु–प्रकाश देनेवाले; तींटु पटैकळ्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियारों को; इटियोटु–वज्र के साथ; उरुम् अनैय–बिजली के समान; तिमिरम् वळैयुम् वकै–तिमिरावृत हो, ऐसा; विळैय–कार्य करके; विलकियतु–लौट आयी। ३३९३

वे इतने धूमधाम से लौटे कि लोक बहरा हो गया; मेघ चू पड़े। ऊँचे अपार पर्वत ढह गये। देवों के सिर काँप उठे। जो हथियार हाथ में ले चलाते थे वे बिजली और वज्र के समान लगे। अंधकार घेरता हो, ऐसा वे आकर श्रीराम को घेर गये। ३३९३

अऴहि दऴहिदॅन वऴह नुवहैयोडु
पऴहु मतिदियरै यॅदिर्होळ् परिशुपड
विऴैवि नॅदिरवदि रॅरिकोळ् विरिपहऴि
मऴैहळ् मुडैशोरिय वमरर् मलर्शोरिय 3394

अऴकन्–सुन्दरमूर्ति; अऴकितु अऴकितु–सुन्दर है, सुन्दर; ॲन–ऐसा; उवकैयोटु–आनंद के साथ; पऴकुम् अतितियरै–परिचित अतिथियों की; ॲतिर् कोळ् परिचु–अगवानी करने की-सी रीति; पट–वरत कर; विऴैवुटन्–चाव के साथ; ॲतिर अतिर्–अगवानी के लिए शब्द करनेवाले; ॲरि कोळ्–अग्निमुखी; विरि पकऴि–विस्तृत शरों की; मऴैकळ्–वर्षाएँ; मुडै चोरिय–लगातार बरसायीं तो; अमरर्–देवों के; मलर् चोरिय–फूलों को बरसाते। ३३९४

सुन्दरमूर्ति श्रीराम ने भी विस्तृत रूप से शरों की वर्षा की। वे शर सुन्दर-सुन्दर कहते हुए परिचित अतिथियों के समान उनकी अगवानी में शब्द करते चलनेवाले अग्निमुखी बाण थे। तब देवों ने पुष्प बरसाये। ३३९४

तिननह रनैयणवु कोडिहळ् तिशैयडैय
शिननवु पोरुपरिहळ् शोरिव वणुहवुयर्

ऎंदिरवॆळ्
अत्तह तॊडुममरिऩ् मुडुहि मणियिरदम् 3395
कत्तह वरैपॊरुव कदिर्हॊळ्

तित्तकरत्तै–दिनकर को; अणवु–छूनेवाली; कॊडिकळ्–ध्वजाओं के; तिचै अटैय–दिशाओं में जा पहुँचते; चित्तवु पॊरु–क्रुद्ध, युद्धरत; परिकळ्–अश्वों के; अणुक वॆरिव–पास आकर लड़ते; कतिर् कॊळ्–छविमय; मणि इरतम्–रत्नजड़ित रथों ने; उयर् अनकत्तॊडु–उत्कृष्ट अनघ श्रीराम के साथ; अमरिऩ्–युद्ध में; मुट्कि–भिड़ते उठे हुए; कत्तकम् वरै–कतकगिरियों की; पॊरुव–तेजी से; ऎतिर ऎळ्–भिड़ते उठे हुए; समता की। ३३९५

तब दिनकरस्पर्शी ध्वजाएँ दिशाओं में व्यापीं। क्रुद्ध व युद्धरत अश्व युद्ध करने पास आये। दीप्तिमान व रत्नजड़ित रथ उन कनकगिरियों के समान चढ़ आये जो कि उत्कृष्ट अनघ श्रीराम से भिड़ने शीघ्र उठ आये हों। ३३९५

पाऱु पडुशिऱहु कळुहु पहऴिपड, नीऱु पडुमिरद निरैयि ऩुडल्दळुवि
वेऱु पडरपडर विर्वि शुडर्वलैयम्, माऱु पडवुलह निरैह ळळऱुपड 3396

पाऱु–बाज और; पट्टु–सुघड़ित; चिऱकु कळुकु–पक्षों के गीध; पकऴि पट–अस्त्रों के लगने से; नीऱु पटु–चूर हो गिरनेवाले; इरतम् निरैयिऩ्–रथ पंक्तियों में रहे; उटल् तऴुवि–शरीरों को लेकर; वेऱु पटर् पटर–दूसरी दिशा में जाने; विरवि–लगे; चुटर् वलैयम्–सूर्य का प्रकाशवलय; माऱु पट–बदला; उलकम् निरैकळ्–लोकपंक्तियाँ; अळऱु पट–कीच बन गयीं। (ऐसा)। ३३९६

श्रीराम-बाणों से रथों की पंक्तियाँ चूर हो जाती थीं। बाज़ और सुघड़ पंखोंवाले गीध उनसे राक्षस-शरीरों को ले उड़ जाते थे। उनकी तेज़ गति के कारण सूर्य का प्रकाशमंडल निष्प्रभ हो गया। लोकपंक्तियाँ कीच बन गयीं। ३३९६

अरुहु कडल्तिरिय वलहिऩ् मलैकुलैय, उरुहु शुडर्हळिडै तिरिय वुरनुडैय
इरुहै यॊरुकळिऱु तिरिय विडुहुयवर्, तिरिहै यॆन्नवुलह मुळुदु मुऱैतिरिय 3397

इरु कै–दो हाथों के; ऒरु–अनोखे; उरऩ् उटैय–सशक्त; कळिऱु–गज (श्रीराम) के; तिरिय–घूमने से; अरुकु कटल्–पास रहा सागर; तिरिय–विलोडित हुआ; अलकु इल्–अनगिनत; मलै–पर्वत; कुलैय–ढहे; उरुकु–पिघलानेवाले; इरु चुटर्कळ्–दो प्रकाशपुंज; इटै तिरिय–आकाश में मार्ग बदले; इटु कुयवर्–मिट्टी के काम करनेवाले कुम्हारों के; तिरिकै ऎऩ्ऩ–चक्र के समान; उलकु मुऴुतुम्–सारा लोक; मुऱै तिरिय–क्रम बदला, ऐसा। ३३९७

अनोखे द्विहस्त सबल गज (श्रीराम) के घूमने से पास का समुद्र क्षुब्ध हो गया। अनगिनत पर्वत ढह गये। पिघलानेवाले दो तेजपुंज स्थान बदल गये। कुम्हार के चाक के समान सारा लोक विचलित हुआ। ३३९७

शिवनु मयनुमॆंळ् तिहिरि यमररुपदि, यवनु ममररुकुल मॆंवरु मुनिवरॊडु
कवन मुरुकरण मिडुवर् कळुदिनमुम्, नमनुम् वरिशिलैयु मऱनु नडनविल 3398

कळुदु इननुम्–भूतगण भी; नमनुम्–और यम; वरि चिलैयुम्–(श्रीराम के) सबंध धनु और; अऱनुम्–धर्मदेवता के; नटम् नविल–आनन्दनृत्य करते; चिवनुम् अयनुम्–शिव और ब्रह्मा और; ॲळ–युद्धसन्नद्ध; तिकिरि–चक्र वाले; अमरर् पति–देवपति; अवनुम्–विष्णु और; अमरर् कुलम् ॲवरुम्–सारे देवगण; मुनिवरॊटु–मुनियों के साथ; कवनम् उऱु–(आनंदाधिक्य से) सत्वर; करणम् इटुवर्–सिर औंधा भूमि पर रखकर शरीर को चक्राकार करके पीठ की तरफ़ घुमाने और खड़ा हो जाने की क्रिया करने लगे। ३३६८

तब भूतगण, यम, श्रीराम का सवन्ध धनु और धर्मदेवता— इन सबने आनंदनृत्य किया। शिव, अज, चक्रधर देवदेव विष्णु, सभी देवगण और मुनि आनंदाधिक्य से जल्दी-जल्दी 'करण' करने लगे। ३३९८

तेवर् तिरिबुवन निलैयर् यॊरुविदनै, एव रऱिवुरुव रिरुदि मुदलऱिविन्
मूवर् तलैहळ्पॊदि यॆंऱिव रऱमुदल्व, पूवै निऱवर्वॆन वेद मुऱैपुहऴ् 3399

तिरिपुवनम् निलैयर्–तीनों भुवनों में वास करनेवाले; तेवर्–देवों में; यावर्–कौन; चॆरु इतनै–इस युद्ध का; इऱुति–अंत (क्या होगा, यह); अऱिवु उऱुवर्–जान सकते; मुतल् अऱिविन् मूवर्–आदि ज्ञेय तीन; तलैकळ् पॊतिर् ऎऱिवर्–सिर हिला देते; अऱम् मुतल्व–धर्म के नाथ; पुवै निऱव–अतसि-पुष्पवर्ण; ॲन–ऐसा; वेतम् मुऱै पुकऴ–वेदों ने यथाक्रम स्तुति की (ऐसा)। ३३६६

वेदपुरुष ने स्तुति की! हे धर्म के आदि आश्रय! अतसीवर्ण! तीनों भुवनों में रहनेवाले देवों में कौन ही यह जाने कि इस युद्ध का अंत कब होगा, क्या होगा? श्रेष्ठ ज्ञानी त्रिदेव भी सिर हिला देते हैं! । ३३९९

ॲय्यु मॊरुपहऴि येळु कडलुमिडु, वॆय्य कळिऱुपरि याळॊ डिरदम्विऴ
ऒय्य वॊरुहदियि नोड वुणरमरर्, कय्ह ळॆनववुणर् काल्हळ् कदिहुलैव 3400

ॲय्युम्–(श्रीराम से) प्रेषित; ऒरु पकऴि–अनुपम अस्त्र से; एऴ् कटलुम्–सातों समुद्रों में; इटु–अलंकृत; वॆय्य कळिऱु–भीषण हाथी; परि–अश्व; आळॊटु इरतम्–वीरों के साथ रथ की चतुरंगिनी सेना; वीऴ–जा गिरी; ऒय्य–वेग के साथ; ऒरु कतियिऩ्–एक गति में; ओट अवुणर्–जो दौड़े उन दानवों और; अमरर्–देवों के; कैकळ् ॲन–हाथों के समान; अवुणर् काल्कळ्–दानवों के पैर; कति कुलैव–क्षीणगति हुए। ३४००

श्रीराम-प्रेरित एक शर अलंकृत व भीषण गजों, अश्वों, वीरों और रथों की चतुरंगिनी सेना को सातों समुद्रों में गिरा देता! राक्षसों के पैर उन देवों और दानवों के हाथों के समान क्षीणवल पड़ गये जो एक तेज गति के साथ (क्षीरसागर मथने) दौड़े थे। ३४००

अण्णल् विडुपहऴि यानै यिरदमयल्, पण्णु पुरविपडै वोरर् तॊहुपहुदि
पण्णि नॊडुकुऱिहळ् पुळ्ळियॆन विरैविन्, ॲण्ण वननैय वॆल्ले यिलनुळैव 3401

अण्णल्–महिमामय श्रीराम से; विट्टु पकळि–छोड़े गये शर; अयल्–पास में रहे; यातै–गज; इरतम्–रथ; पण्णु पुरवि–कोतल घोड़े; पटै वीरर्–पदातिक वीर; तोंकु पकुति–ये जहाँ रहे उन भागों में; पुण्णितोंटु–व्रणों के साथ; कुट्रिकळ्–दाग़; पुळ्ळि ॲत–बिंदियों के समान दिखे; विरैंदित् ॲण्णुवत अतैय–शीघ्र गिनते से; अॅल्लै इल–अपार संख्या के; नुळैव–घुसे। ३४०१

महिमावान श्रीराम के शरों के लगने से पास रहे गजों, रथों, सज्जित घोड़ों और पदाति वीरों पर व्रण और दाग़ लगे थे। वे व्रण और दाग़ गिनते वक़्त स्मरण के लिए लगायी गयी बिंदियों के समान लगे और असंख्यक शर जल्दी-जल्दी गिनते हुए चलते जैसे लगे। ३४०१

शुरुक्कमुड्र् इदुपडै शुरुक्कत् तालितिक्
करक्कुमुड्र् ऑरुपुड्रत् तॅन्नुड् गण्णिताल्
अरक्करुक् कन्रुशॅल् वरिय दाम्वहै
शरक्कोंडु नॅडुमदिल् शमैत्तिट् टान्रो 3402

पटै–सेना; चुरुक्कम् उड्र्तु–घट गयी; चुरुक्कत्ताल्–घटने से; इति–अब आगे; ऑरु पुड्र्त्तु–एक तरफ़; उड्रु–जाकर; करक्कुम्–छिपेंगे; ॲन्नुम् कण्णिताल्–ऐसे विचार से; अन्रु–तब; अरक्करुक्कु–राक्षसों को; चॅलवु अरियतु आम् वकै–जाना कठिन हो जाय ऐसा; चरम् कोंटु–अस्त्रों से; नॅटु मतिल्–लम्बी चहारदीवारी; चमैत्तिट्टान्–रच ली। ३४०२

राक्षस-सेना घट गयी। "इस तरह घटती रहे तो राक्षस वीर एक ओर जाकर छिप जायँगे" यह सोचकर श्रीराम ने शरों की एक लम्बी चहारदीवारी रच ली ताकि उनका निकल जाना कठिन हो जाय। ३४०२

मालियै मालिय वातै माल्वरै
पोलुयर् कयिडतै मदुवैप् पोन्रुळार्
शालिहै याक्कैयर् तणिप्पिल् वॅञ्जर
वेलियैक् कडन्दिल रुलहै वॅन्रुळार् 3303

उलकै वॅन्रुळार्–लोकविजयी; मालियै–माली और; मालियवातै–माल्यवान के और; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयर्–ऊँचे; कयिटतै–कैटभ के; मतुवै–मधु के; पोन्रु उळार्–सदृश रहनेवाले; चालिकै याक्कैयर्–कवचरक्षित शरीर वाले; तणिप्पु इल–निरंतर चलनेवाले; वॅम् चरम्–भीषण शरों की; वेलियै–चहारदीवारी को; कटन्तिलर्–लाँघ नहीं सके। ३ ०३

लोकविजयी और माली, माल्यवान, पर्वतोन्नत कैटभ, मधु आदि राक्षसों के सदृश और कवचरक्षित शरीरवाले वे निरंतर चलते बाणों की बनी उस प्राचीर को लाँघ नहीं जा सके। ३४०३

माण्डवर् माण्डत्तर् मड्रु ळोरॅलाम्
मीण्डत रोरुतिशै येळु वेलैयुम्

मूण्डऴ़ मुरुक्किय वूऴिक् कालत्तिल्
तूण्डुऴ़ शुडर्शुडच् चुरुङ्गित् तोंक्कपोल् 3404

माण्टवर् माण्टऩर्–जो मरे सो मरे; मऱ्ऱुळोर् ॲलाम्–बचे जो रहे वे सभी; तूण्टुऱ़–उकसाये जाकर; चुटर्–प्रकाशमान बड़वाग्नि; मूण्टु–जल उठकर; अऱ़–बिलकुल; मुरुक्किय–जब नाश करती है; ऊऴि कालत्तिल्–उस युगांत के समय में; चुट–जलाने से; एऴु वेलॅयुम्–सातों समुद्र; चुरुङ्कि–घटकर; तोंक्क पोल्–छोटे हो मिल जायें जैसे; ओरु तिचॅ–एक दिशा में; मीण्टऩर्–लौट चले। ३४०४

जो मरे वे मरे। पर जो बचे वे भी युगांत की सर्वनाशक बड़वाग्निदग्ध सप्तसमुद्र जैसे सूखकर छोटे बनते हैं, वैसे घटकर एक ओर जाने लगे। ३४०४

पुरञ्जुडु कडवुळुम् बुळ्ळिऩ् पाहऩुम्
अरञ्जुडु कुलिशवे लमरर् वेन्दऩुम्
उरञ्जुडु हिऱ्किल रोरुव ऩामुडै
वरञ्जुडुम् वलिशुडुम् वाऴु नाळ्शुडुम् 3405

पुरम् चुट्टु कटवुळुम्–त्रिपुरदाहक परमेश्वर और; पुळ्ळिऩ् पाकऩुम्–गरुड़वाहन विष्णु; अरम् चुट्टु–तपाकर रेती से पैनाये गये; कुलिचम् वेल्–कुलिश भाला; अमर् अमरर् वेन्तऩुम्–(रखनेवाला) देवेंद्र; उरम् चुट्किऱ्किलर्–हमारा बल तोड़ नहीं सके; ओरुवऩ्–एकाकी; नाम् उटॅ–हमारे; वरम्–वर; चुटुम्–मिटाता है; वलि चुटुम्–बल का नाश करता है; वाऴ् नाळ् चुटुम्–आयु का अंत कर देता है। ३४०५

(राक्षसों ने आपस में कहा—) त्रिपुरदाहक, गरुड़वाहन, रेती से तेज़ किये हुए कुलिश के स्वामी देवेंद्र आदि भी हमारा बल नहीं तोड़ सकते थे। पर अब यह एकाकी राम, लगता है, हमारे वर, बल और आयु —इन सबका नाश कर देगा। ३४०५

आयिर वॅळ्ळमुण् डोरुव राऴिशूऴ्, मायिरु ञालत्तै मऱिक्कुम् वऩ्मैयोर्
एयिऩ पॅरुम्बडै यिदऩै योर्विलाल्, एयॅऩु मात्तिरत् तॅय्दु कोऩ्ऱऩऩ् 3406

ओरुवऱ्–एक ही; आऴि चूऴ्–सागरावृत; मा इरु ञालत्तै–बड़े विशाल संसार को; मऱिक्कुम्–रोक सकनेवाली; वऩ्मैयोर्–शक्ति से संपन्न हैं ऐसे; आयिरम् वॅळ्ळम् उण्टु–हज़ार 'वॅळ्ळम्' हैं; एयिऩ–ऐसों से युक्त; पॅरुम् पटै इतऩै–बड़ी सेना इसे; ओर् विलाल्–एक चाप लेकर; ए ऍऩुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देर में; ऍय्तु कोऩ्ऱऩऩ्–शर चलाकर निहत करा दिया (राम ने)। ३४०६

हमारी सेना में हज़ार 'वॅळ्ळम्' ऐसे वीर थे जिनमें एक-एक समुद्रावृत विपुला पृथ्वी को रोककर युद्ध कर सकता था। ऐसे वीरों से युक्त इस

सेना को राम ने एक ही चाप की सहायता से 'ए' कहने की देर में नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। ३४०६

इडैपडुम् बडादन विमैप्पि लोर्पडै
पुडैपड वलङ्गोंडु विलङ्गिप् पोहुमाल्
पडैपडु कोडियर् पह्ळि याड्पळिक्
कडैपडु मरक्कर्दम् बिड्वि कट्टमाल् 3407

इमैप्पु इलोर्–अपलक देवों की; पटै–सेना भी; इटै पटुम्–(इस राक्षस-सेना के सामने) हारकर मर जाती; पटातन–जो नहीं मरती; पुडै पट–पिट जाती; वलम् कोंटु–(राक्षस-सेना) विजय पाकर; विलङ्कि पोकुम्–हट जाती; पटै पटु–ऐसी सेना में लगे रहनेवाले; कोटियोर्–करोड़ों वीर; पकळियाल्–राम के एक ही शर से; कटै पटुम् पळि–बहुत ही निकृष्ट अपमान पाकर; अरक्कर् तम् पिड्वि–राक्षस-जन्म; कट्टम्–कष्टदायक हो गया। ३४०७

अपलक देवों की सेना भी हमारी सेना के हाथ मर जाती। नहीं मरती तो भी खूब पिट जाती और हमारी सेना विजय पाकर हट जाती। ऐसी इस सेना के करोड़ वीर राम के शर से नष्ट हो जायँ —यह बहुत ही निकृष्ट अपमान जिसे मिल गया है, वह राक्षस-जन्म अवश्य कष्टदायक है! । ३४०७

पण्डुल हुय्त्तव नोडुम् बण्णमै
कुण्डैयिन् पाहनुम् बिड्रुङ् गूडिनार्
अण्डर्हळ् विशुम्बिनिन् ड्रार्क्किन् ड्रारुळैक्
कण्डिल मिवनॆडु मायक् कळ्वनाल् 3408

पण्टु–पहले; उलकु उय्त्तवनोटुम्–लोक की सृष्टि जिन्होंने की उन (ब्रह्मा) के साथ; पण् अमै–जीन से युक्त; कुण्टैयिन् पाकनुम्–ऋषभ चलानेवाले; पिड्रुम्–और अन्य; कूटिनार्–मिले और; विचुम्पिन् निन्ड्–आकाश में खड़े होकर; आर्क्किन्ड्रार्–आनन्दारव जो करते हैं; अण्टर्कळ् उळ्–उन देवों के मध्य; कण्टिलम्–(श्रीविष्णु को) नहीं देखते; इवन्–यह; नॆटु मायम्–वही बड़ा मायावी; कळ्वन्–चोर होगा। ३४०८

पुरातन लोकसर्जक के साथ जीन-कसे ऋषभ पर आरूढ़ शिव और अन्य देवता आकाश में एकत्रित रहकर आनन्द का कोलाहल मचा रहे हैं। पर उनमें हम (विष्णु को) नहीं देख पाते। अतः यही राम वह बड़ा मायावी चोर विष्णु होगा। ३४०८

कॊन्ड्रन निन्ड्रियोरु कोडि कोडिमेर्
ड्रन्ड्रॆनिड् पडुममेर् ड्राहिल् [illegible]य्

निन्ऱदु नित्ऱिनि निलैव वॆन्पिऱ
ऑन्ऱॆन वुणर्हॆन वन्नि योदिनान् 3409

इनि–अब; ऑर कोटि कोटि मेऱ्ऱु–एक करोड़ करोड़ से अधिक; अन्ऱु ॲन्निल्–नहीं तो; पतुमम् मेऱ्ऱु–पद्म से अधिक; कॊन्ऱतन्–मारा है (इसने); आकिल्–इसलिए; वॆळ्ळमाय्–'वॆळ्ळम्' की संख्या में; निन्ऱतु–जो रही; पिऱ–अन्य किसी को; ऑन्ऱु ॲन–कोई चीज; इनि निन्ऱु–अब खड़े होकर; निलैवतु–मानना; ॲन्–क्या अर्थ (रखेगा); उणर्क–कहो; ॲन–ऐसा; वन्नि–वह्नि; ओतिनान्–बोला। ३४०९

अब एक करोड़ के ऊपर, न, पद्म के अधिक लोगों को श्रीराम ने मार दिया है! इसलिए हमारी सेना केवल वॆळ्ळमों की संख्या में आकर रह गयी है। अब फिर हमें कोई चीज मानने का क्या क्या अर्थ? विचार करो। (यों कहनेवाले राक्षसों का) वह्नि ने उत्तर दिया। ३४०९

विळित्तुमो विरावणन् मुहत्तु मीण्डियाम्
पळित्तुमो नम्मैनाम् बडुव दञ्जिनाल्
अळित्तुमोर् पिऱप्पुऱा नॆऱिशॆन् ऱुण्मयाम्
कळित्तुमिव् वाक्कैयैप् पुहऴैक् कण्णुऱ 3410

नाम् पडुवतु अन्चिनाल्–हम मरने से डरेंगे तो; याम्–हम; मीण्टु–लौट जाकर; इरावणन् मुकत्तु–रावण के मुख पर; विळित्तुमो–दृष्टि डाल सकेंगे क्या; नम्मै नाम्–हम अपनी; पळित्तुमो–निंदा करते रहें क्या; पुकऴैक् कण् उऱ–यश देखें; अळित्तुम्–अपने को मरवाकर भी; ओर् पिऱप्पु उऱा–दूसरा जन्म न लें, ऐसा; नॆऱि–मार्ग; याम् चॆन्ऱु चेर–हम जा पहुँचें; इव् याक्कैयै–(तदर्थ) इस शरीर को; कळित्तुम्–त्याग दें। ३४१०

मरने से डरकर हम रावण को मुँह दिखा सकेंगे क्या? हम अपनी ही निंदा करवा लें? नहीं। यशार्जनार्थ हम अपना नाश कराके ही सही पुनर्जन्म न हो, ऐसा मार्ग चुनें और अपने शरीर की बलि दे दें। ३४१०

इडुक्किनिप् पॅयर्न्दुरै यॆण्णु वेमॅनिन्
अडुत्तकूर् वाळियि नरण नीङ्गलोम्
अॅडुत्तॆरु मुहत्तिना लॅय्दि यामिनिक्
कॊडुत्तुनम् मुयिरॆन वीरमै कूऱिनान् 3411

इ इडुक्किन्–इस नाजुक हालत में; पॅयर्न्तु उऱै–हटकर रहने की बात; ॲण्णुवेम् ॲनिन्–सोचें तो; अडुत्त–पास रहती; कूर् वाळियिन्–तीक्ष्ण शरों की; अरणम्–चहारदीवारी से बाहर; नीङ्कलोम्–नहीं जा सकेंगे; याम् इनि–हम अभी ही सही; ओर मुकत्तिनाल् ॲय्ति–एक साथ जाकर; ॲडुत्तु–युद्ध आरम्भ करके; नम् उयिर् कॊडुत्तुम्–अपने प्राणों की बलि दे दें। ३४११

इस नाजुक स्थिति से बचकर अलग जा रहने की बात सोचें तो वह

भी साध्य नहीं है, क्योंकि हम तीक्ष्ण शरों की बनी चहारदीवारी से बाहर न जा पायेंगे। इसलिए एक साथ युद्ध आरम्भ करके प्राणों की बलि दे दें। वह्नि ने निश्चित एक बात कही। ३४११

इळक्करु नॆडुवरै यीर्क्कु माउलाम्
अळक्करिऱ् पायन्दॆन्नप् पदङ्ग मारळल्
विळक्किनिल् वीळ्न्दॆन्न विदिहॊ डुन्दलाल्
वळैत्तिरैत् तडर्त्तनर् मलैयिन् मेनियार् 3412

इळक्क अरु–कठोर; नॆटु वरै–लम्बे पर्वत को; ईर्क्कुम्–खींच ले जानेवाली; आऱु ऎलाम्–सभी नदियाँ; अळक्करिल् पायन्तु ऎन्न–समुद्र में जा गिरी हों ऐसे; पतङ्कम्–पतंग; आर् अळल्–अच्छी ज्वाला से युक्त; विळक्किनिल् वीळ्न्तु ऎन्न–दीप में गिरे जैसे; विति कॊटु उन्तलाल्–विधि के उकसाने से; मलैयिन् मेनियार्–पर्वत (या मेघ) के समान आकार वाले या रंग वाले; वळैत्तु–घेरकर; इरैत्तु–शब्द करते हुए; अटर्त्तनर्–आक्रमण करने लगे। ३४१२

कठोर पर्वतों को भी खींच ले जानेवाली नदियाँ जैसे समुद्र में जा मिलती हैं; पतंग जैसे ज्वालायुक्त दीप में गिरते हैं, वैसे ही विधि के उकसाने से पर्वतोपम (या मेघसदृश) शरीरी वे राक्षस हो-हल्ला मचाते हुए घेरकर लड़ने लगे। ३४१२

मळुवॆळुन् दण्डुकोल् वलयम् नाञ्जिल्वाळ्
ऎळुवयिऱ् कुन्दवे लीट्टि तोमरम्
कळुविहऱ् कप्पण मुदल कैप्पडै
तॊळुविनिऱ् पुलियना नुडलिऱ् तूविनार् 3413

मळुवुम्–परशु; ऎळुम्–प्रयोग में आनेवाले; तण्टु–दण्ड; कोल्–और शर; वलयम्–वलय; नाञ्चिल्–हल; वाळ्–तलवार; ऎळु–'ऎळु' नामक हथियार; अयिल्–तीक्ष्ण; कुन्तम्–कुंत; वेल्–'वेल्'; ईट्टि–प्रास; तोमरम्–तोमर; कळु–'कळु' नामक हथियार; इकल्–कठोर; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुतल–आदि; कै पटै–हथियारों को; तॊळु विनिल्–बाड़े के अंदर; पुलि अनान्–व्याघ्र-सम श्रीराम के; उटलिल्–शरीर पर; तूविनार्–बरसाये। ३४१३

बाड़े में रहे व्याघ्र के जैसे श्रीराम पर उन लोगों ने परशु, युद्धयोग्य दण्ड, बाण, वलय, हल, तलवार, ऎळु, तीक्ष्ण कुंत, 'वेल्', प्रास, तोमर, 'कळु', काँटेदार गदा आदि हथियारों को अधिकता से फेंका। ३४१३

कान्दरुप् पम्मॆनुङ् गडवुण् माप्पडै
वेन्दरुक् करशनुम् विल्लि नूक्किनान्
पान्दळुक् करशॆनप् पऱवैक् केऱ्‌ऱॆनप्
पोन्दुरुत् तदुनॆरुप् पन्नैय पोर्क्कणै 3414

कान्तरुप्पम् ॲन्नुम्–गांधर्व नाम के; कटवुळ् मा पटै–दिव्य महान अस्त्र; वेन्तरुक्कु अरचन्नुम्–राजाओं के राजा ने भी; विल्लिन् ऊक्कितान्–धनु से छोड़ा; पोर् नॅरुप्पु अन्नैय–युद्धाग्नि-सम; कणै–वह शर; पान्तळुक्कु अरचु ॲन्न–सर्प-राज के समान; पऱवैक्कु एऱु ॲन्नवुम्–पक्षीराज (गरुड़) के समान; पोन्तु–गया और; उरुत्तदु–क्रुद्ध हुआ। ३४१४

तब राजाधिराज श्रीराम ने गांधर्व नाम के महान व दिव्य अस्त्र को धनु से निकाला। युद्धाग्नि के समान वह शर सर्पराज आदिशेष (के समान फूत्कार के साथ) और पक्षीराज गरुड़ के समान (तेज़ी से) निकल चला। वह बड़ा क्रोधी (भीषण) बना रहा। ३४१४

मून्ऱुकण् णमैन्दन मुहमैन् दुळ्ळन, आन्ऱमॅय् तऴलन पुनलु माडुव
वान्तॉड निमिर्वन वाळि मामऴै, तोन्ऱिन पुरञ्जुडु मॊरुवन् तोऱ्ऱत्त 3415

मून्ऱु कण् अमैन्तन–तीन नेत्रों से युक्त; मुकम् ऐन्तु उळ्ळन–और पाँच मुखों वाले; आन्ऱ मॅय्–ऊँचे शरीर जिनके; तऴल् अन–अनल-सम थे; पुनलुम् आडुव–जल में गोते लगानेवाले; वान् तॊट–आकाश को छूते; निमिर्वन–ऊँचे बने; वाळि मा मऴै–उस शर से निकले वर्षा-समान शर; पुरम् चुटुम् ऑरुवन्–त्रिपुरदाहक एक ईश्वर के-से; तोऱ्ऱत्त–दृश्य के साथ; तोन्ऱिन–दिखे। ३४१५

उससे कितने शर निकले! त्रिनेत्र, पंचमुखी, अनलाकार, जलमग्न, गगनस्पर्शी —उन शरों का विपुल समूह बना और वे त्रिपुरदाहक अनुपम शिव के समान दृश्यमान हो चले। ३४१५

ऐयिरु कोडिय रक्कर् वेन्दर्हळ्, मॊय्वलि वीरर्ह ळॊऴिय मुऱ्ऱुऱ
ॲय्यॅन् मात्तिरत् तविन्द दॆन्बराल्, शॆय्दवत् तिरावणन् मूलच् चेनैये 3416

ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; अरक्कर् वेन्तर्कळ्–राक्षसराजा; मॊय्वलि–तगड़े शरीर वाले; वीरर्कळ्–वीर; मुऱ्ऱुऱ ऑऴिय–बिलकुल मिट जायँ ऐसा; चॅय्तवत्तु–पूर्वकृत तपस्या वाले; इरावणन् मूलम् चेनै–रावण के मूलबल की सेना; ॲ ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–'ॲ' कहने की देरी में; अविन्ततु–ख़ाक में मिल गयी; ॲन्पर्–कहते हैं। ३४१६

दस करोड़ राक्षसराजा, जो अतिशय तगड़े वीर थे, 'ॲ' कहने की देर में निश्शेष समाप्त हो गये। वे रावण के मूलबल के वीर थे, जिसे रावण ने तपस्या करके प्राप्त किया था। ३४१६

माप्पॅरुन् दीवुह ळेऴु मादिरम्, पाप्परुम् बादलत् तुळ्ळुम् पल्वहैक्
काप्परु मलैहळुम् बिऱवुङ् गाप्पवर्, याप्पुऱु कादल रिराव णर्कवर् 3417

मा पॅरु–बहुत बड़े; तीवुकळ् एऴुम्–सातों द्वीप; मातिरम्–(आठों) दिशाओं में; पाप्पु–नागों के; अरु–अपूर्व; पातलत्तु उळ्ळुम्–पाताल में; पल् वकै–विविध; काप्पु अरु–रक्षित करने में कठिन; मलैकळुम्–पर्वतों में; पिऱवुम्–अन्य

स्थानों में; काप्पवर्–रक्षण-कार्य में लगे; इरावणर्कु–रावण के; यापपु उड़–सुदृढ़; कातलर्–भक्त हैं; अवर्–वे। ३४१७

फिर और वीर आये। वे विपुल सप्तद्वीप, आठों दिशाओं, नागलोक, पाताल और अरक्षित पर्वतों और अन्य प्रदेशों से आये। वे रावण पर अकाट्य प्रेम रखनेवाले थे। ३४१७

मात्तड मेरुबै वळैन्द वान्शुडर्, कोत्तहत् मार्बिडै यणियुङ् गॊळ्हैयार्
पूत्तवि शुहन्दवत्'पुहन्नु पॊय्यरु, नात्तळुम् बॆड्रिय वरत्तर् नण्णिनार् 3418

मा तट मेरुवै–बहुत विशाल मेरु को; वळैन्त–घूम आनेवाले; वान् चुटर्–दो बड़े तेजपुंजों को; कोत्तु–गूँथकर; अकल् मार्पिट–विशाल वक्षःस्थल में; अणियुम् कॊळ्कैयार्–पहनने की प्रकृतिवाले; पू तविचु–कमल के आसन के; उकन्तवत्–प्रेमी ब्रह्मा के; पुकन्ऱ–कहे हुए; पॊय् अऱु–जो झूठे नहीं हो सकते ऐसे और; मा तळुम्पु एऱ्रिय–मन्त्रजाप से जीभ में गट्टे पड़ गये, ऐसा जपकर प्राप्त; वरत्तर्–वरों वाले; नण्णिनार्–आये। ३४१८

महामेरु की परिक्रमा करनेवाले दोनों तेजपुंजो, सूर्य और चन्द्र को गूँथकर विशाल वक्ष पर पहनने के स्वभाव वाले थे वे। मन्त्र का जप ऐसा करके कि जिह्वा में घट्ठा पड़ जाय, ब्रह्मा से उन्होंने बड़े-बड़े वर प्राप्त किये थे। वे आये। ३४१८

नम्मुळीण् डॊरुवत्तै वॆल्लु नन्ऱॆनिन्, वॆम्मुनै यिरावणन् तत्तैयुम् वॆल्लुमाल्
इम्मॆन वुडनॆडुत् तॆळुन्दु शेरुमो, शॆम्मैयिल् तनित्तनिच् चॆय्दु मोशॆरु 3419

ईण्टु–अब; नम्मुळ्–हममें; ऒरुवत्तै–एक को; नन्ऱु वॆल्लुम् ॲनिन्–खूब जीतेगा तो; वॆम् मुनै–दारुण युद्ध-भूमि में; इरावणन् तत्तैयुम्–रावण को भी; वॆल्लुम्–जीतेगा; इम्मॆन–'इम्' कहने की देर में; उटन् ऎळुन्तु–एक साथ उठकर; ऎट्टुत्तु चेरुमो–लड़ने जायँ क्या; चॆम्मैयिल्–योग्य रीति से; तनि तनि–एक-एक जाकर; चॆरु चॆय्तुमो–लड़ें क्या (पूछा उन लोगों ने वह्नि से)। ३४१६

उन्होंने वह्नि से पूछा कि हममें अब एक को राम जीते तो वह भयंकर युद्धभूमि में रावण को भी जीत लेगा। 'इम्' कहने की देरी में हम सब जाकर लड़ें? या उचित रीति से एक-एक करके लड़ें?। ३४१९

ॲल्लो मॆल्लो मिन्ऱु वळैन्दिन् नॆडियोनै
वल्ले वल्ल पोर्वलि कॊण्डु मलैयोमेल्
वॆल्लोम् वॆल्लो मॆन्ऱ्रतन् वन्नि मिडलोरुम्
तॊल्लोर् शॊल्ले नन्ऱॆन वः(ह्)वे तुणिवुऱ्ऱार् 3420

ॲल्लोम्–सभी; ऎल्लोम्–सारे; इन्ऱु वळैन्तु–आज घेरकर; इ नॆटियोनै–इस लम्बोतरे को; वल्ले–शीघ्र; वल्ल–कठोर; पोर् वलि कॊण्टु–युद्ध-बल से; मलैयोमेल्–नहीं लड़ें तो; वॆल्लोम् वॆल्लोम्–नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे; ॲन्ऱतन् वन्नि–

कहा वह्नि ने; मिटलोरुम्–बलवान राक्षसों ने भी; तोल्लोन् चोल्ले–वृद्ध का कथन हो; नन्ऱु–अच्छा है; ॲन्न–कहकर; अ.·.ते तुणिवुऱ्ऱार्–वही निश्चय किया। ३४२०

वह्नि ने कहा कि अगर हम सभी एक साथ मिलकर इस लंबोतरे को घेरकर अपना सारा युद्ध-बल लगाकर आक्रमण नहीं करेंगे, तो हम नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे। सबने सम्मत होकर कहा कि इस वृद्ध का कहना ही ठीक है! और उसी के अनुसार करने का निश्चय कर लिया। ३४२०

अन्नार् तामु मार्हलि येऴु मॅनवार्त्तार्
मिन्नार् वान मिऱ्ऱुरु ॲन्ऱे विळिशङ्गम्
कॊन्ने यूदित् तोळ्पुडै कॊट्टिक् कॊडुशार्न्दार्
ॲन्नाम् वैय मॅन्पडु मालित् तिशैयेताम् 3421

अन्नार् तामुम्–उन्होंने भी; आर् कलि एऴुम् ॲन्न–सातों समुद्रों के समान; आर्त्तार्–नर्दन किया; मिन् आर् वानम्–बिजली-सहित आकाश; इऱ्ऱु उरुम्–फटकर गिरेगा; ॲन्ऱे–ऐसा; विळि चङ्कम्–शब्द करनेवाले शंख को; कॊन्ने ऊति–भय से भरते हुए फूंककर; तोळ् पुटै कॊट्टि–कन्धों को ठोंककर; चार्न्तार्–आ पहुँचे; वैयम् ॲन् आम्–दुनिया का क्या हो; इ तिचै ताम्–इन दिशाओं का भी; ॲन् पटुम्–क्या हाल हो। ३४२१

उन्होंने सातों समुद्रों के समान नर्दन किया। सबने मन में भय भरकर शंख लेकर बजाया, जिससे यह भय व्याप्त हुआ कि विद्युत्-सहित आकाश फटकर गिर जाय! कंधे ठोंककर वे आ नियराये। इस दुनिया का क्या हाल हो? इन दिशाओं की भी क्या दशा होगी?। ३४२१

आर्त्ता रन्ना रन्न कणत्ते यवराऱ्ऱल्
तीर्त्ता नुन्दन् वॅञ्जिलै नाणैत् तॅऱिवुऱ्ऱान्
पेर्त्तान् पेर्त्तान् मुऱ्ऱु मळन्दान् पिऱऴ्शङ्गम्
आर्त्ता लॊत्त दव्वॊलि यॅल्ला वुलहुक्कुम् 3422

अन्नार्–उन्होंने; आर्त्तार्–घोष किया; अन्न कणत्ते–उसी क्षण में; अवर् आऱ्ऱल्–उनके बल को; तीर्त्तानुम्–मिटानेवाले (श्रीराम) भी; तन्–अपने; वॅम् चिलै–भयंकर कोदण्ड के; नाणै तॅऱिवुऱ्ऱान्–डोरे को टंकोरा; अव् ऒलि–वह ध्वनि; पेर्त्तान् पेर्त्तान्–डग भर-भरकर; मुऱ्ऱुम्–सारे लोकों को; अळन्तान्–जिन्होंने मापा था उनके; पिऱऴ् चङ्कम्–विशिष्ट (सुदर्शन) शंख के; ॲल्ला उलकुक्कुम्–सारे लोकों में; आर्त्तल्–नाद; ऒत्ततु–के समान रहा। ३४२२

उन राक्षसों ने नारे लगाये। उसी क्षण राक्षस-बल-नाशक श्रीराम ने अपने उग्र कोदंड के डोरे को टंकोरा। वह शब्द लोकों भर में डग भरकर मापनेवाले त्रिविक्रमदेव के विशिष्ट शंख की ध्वनि के समान सारे लोकों में व्याप्त हुआ। ३४२२

पल्लायिर कोडियर् पलहलैनूल्, वल्लारवर् मॅय्म्मै, वळङ्गवलार्
ॲल्लावुल हङ्गळु मेरियपोर्, विल्लाळ ररक्करित् मेदहैयार् 3423

पल् आयिरम् कोटियर्–अनेक हज़ार कोटियों के; पल् कलै–अनेक कलाओं के; नूल वल्लार्–शास्त्र-निपुण; अवर्–वे; मॅय्म्मै–सत्य-मार्ग में; वळङ्क वलार्–हथियार चलाने में निपुण; ॲल्ला उलकङ्कळुम्–सारे लोकों में; एरिय–अधिक प्रशंसा-प्राप्त; पोर् विल्लाळर्–युद्धधनुर्दक्ष; अरक्करित् मेतकैयार्–राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वे अनेक हज़ार करोड़ों की संख्या के थे। अनेक कलाओं के शास्त्रों में निपुण थे। सीधे मार्ग पर हथियार चलानेवाले, सर्वलोक-शंसित, युद्धधनुनिपुण और राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वॅन्ऱारुल हङ्गळै विण्णवरो, डॊन्ऱावुयर् तानव रोदमॅलाम्
कॊन्ऱार्निमिर् कूर्रॆन वॅव्वुयिरुम्, तिन्ऱारॅदिर् शॆन्ऱु शॆरिन्दनराल् 3424

उलकङ्कळै–लोकों को; वॅन्ऱार्–जीतनेवाले; विण्णवरोटु–देवों के साथ; ऑन्ऱा–एक साथ; उयर् तानवर्–बल में उत्कृष्ट दानवों के; ओतम् ॲलाम्–सागर-सम विशाल दलों को; कॊन्ऱार्–मारनेवाले; निमिर् कूर्रु ॲत–उद्यत यम के समान; ॲव् उयिरुम्–सभी जीवों को; तिन्ऱार–खानेवाले; चॅन्ऱु–जाकर; ॲतिर् चॅरिन्ततर्–सामने पहुँचे। ३४२४

लोकविजयी, देवों और बलविशिष्ट दानवों के संहारक और उद्योगशील यम के समान सर्वजीवभक्षक —वे राक्षस समक्ष जाकर जुटे। ३४२४

वळैत्तार् मदयानैयै वन्ऱॊळिविऱ्, ऱळैत्ता रॆनवन्दु तनित्तनिये
उळैत्ता रुरुमेऱॆन वॊन्ऱलपोर्, विळैत्ता रिमैयोर्हळ् वॆदुम्बिनराल् 3425

वन्तु–आकर; मत यानैयै–मत्त हाथी को; वल् तॊळुविल्–सुनिर्मित गजशाला में; तळैत्तार् ॲत्–बाँध दिया हो जैसे; वळैत्तार्–घेर गये; तनि तनिये–अलग-अलग; उरुम् एऱु ॲत–भयंकर अशनि के समान; उळैत्तार्–नर्दन किया; ऑन्ऱु अल–एक तरह का नहीं; पोर् विळैत्तार–युद्ध किया; इमैयोर्कळ्–देव; वॅतुम्पितर्–संतप्त हुए। ३४२५

उन्होंने मत्तगज को गजशाला के अन्दर करके (आलान से) बाँधनेवालों के समान श्रीराम को घेर लिया। अलग-अलग अशनिराज के समान नर्दन करते हुए अनेक प्रकार से युद्ध किया। यह देव संतप्तमन हो गये। ३४२५

विट्टीय वळङ्गिय वॅम्बडैयिऱ्, चुट्टीय निमिर्न्द चुडर्च्चुडरुम्
कट्टीयु मॊरुङ्गु कलन्दॅळलाल्, उट्टीयुऱ वॆन्दन वेळलहुम् 3426

विण् तीय–आकाश जल जाय ऐसा; वळङ्किय–(राक्षसों से) प्रयुक्त; वॅम्

पटैयिल्–भीषण हथियारों में; चुट्टीय निमिर्न्त–जलाती उठी; चुटर्–ज्वालामय; चुटरुम्–आग; कण् तीयुम्–और आँखों की आग; ऑरुक्कु कलन्तु–एक साथ मिलकर; ॲऴलाल्–उठी, इसलिए; एऴु उलकुम्–सातों लोक; ती उळ् उऱ्–आग में हो; वॅन्तत–झुलसे। ३४२६

स्वर्ण को भी जलानेवाले भीषण हथियारों से दाहक ज्वालामय अग्नि निकली। उनकी आँखों से कोपाग्नि छूटी। दोनों के मिलकर उठने से सातों लोक आग में फँसकर झुलसे। ३४२६

तेराऱ्प्पॊलि वीरर् तॅऴिप्पॊलियुम्
ताराऱ्प्पॊलि युङ्गऴल् ताक्कॊलियुम्
पोराऱ्शिलै नाणि पुडैप्पॊलियुम्
काराऱ्पॊलि युङ्गळि ऱाऱ्प्पॊलियुम् 3427

तेर् आर्प्पु ऑलि–रथों की घरघराहट की ध्वनि; वीरर्–और वीरों के; तॅऴिप्पु ऑलियुम्–डाँटने का शब्द; तार्–दामों की; आर्प्पु ऑलियुम्–बजने की ध्वनि और; कऴल् ताक्कु ऑलियुम्–कड़ों के टकराने की ध्वनि; पोर् आर् चिलै–युद्ध योग्य धनुओं के; नाणि पटैप्पु ऑलियुम्–डोरे से उठनेवाला शब्द; काराल् पोलियुम्–मेघ-सम शोभित; कळिऱु आर्प्पु ऑलियुम्–गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि। ३४२७

रथों की घरघराहट की ध्वनि, वीरों के डाँटने का शब्द, दामों की घंटियों का नाद, कड़ों के टकराने की ध्वनि, युद्ध योग्य धनुओं के डोरों की टंकार, मेघवर्ण हाथियों के चिंघाड़ने का स्वर (सब सुनायी दिये)। ३४२७

ॲल्लारु मिरावण नेयनैयार्, वॅल्लावुल हिल्लवर् मॅय्वलियार्
तॊल्लार् पडैवन्दु तॊडर्न्ददॆन्ना, नल्लानु मुरुत्तॆदिर् नण्णिनन्नाल् 3428

ॲल्लारुम्–सभी; इरावणनै अनैयार्–रावण ही सम; वॅल्ला उलकु–अजित लोक; इल्लवर्–नहीं, ऐसे हैं; मॅय् वलियार्–सच्चे बली हैं; तॊल्लार् पटै–प्राचीनों की सेना; वन्तु तॊटर्न्ततु–आ गयी; ॲन्ना–सोचकर; नल्लानुम्–उत्तम श्रीराम भी; उरुत्तु–रोष करके; ॲतिर् नण्णिनन्–सामने गया। ३४२८

सभी राक्षस रावण ही सम थे। कोई लोक नहीं था जिसे उन्होंने नहीं जीता हो। सच्चे ताक़तवर थे। श्रीराम समझ गये कि प्राचीन राक्षसों की सेना आ पहुँची है। वे सामने आये। ३४२८

ऊऴिक्कनल् पोल्बव रुन्दिन्नपोर्, आऴिप्पडै यम्बॊडु मऱ्ऱहलप्
पाऴिक्कडै नाळ्विडु पन्मऴैपोल्, वाऴिच्चुडर् वाऴि वऴङ्गिनन्नाल् 3429

ऊऴि कनल् पोल्पवर्–युगान्त की अग्नि के समान हैं; उन्तिन–उनसे प्रेषित; पोर्–युद्ध के; आऴि पटै–चक्रायुध; अम्पॊटुम्–बाणों के साथ; अऱ्ऱु अकल–

टूटकर दूर हो जायँ, ऐसा; पाळि-सशक्त; कट्टै नाळ् विट्टु-युगान्त में बरसनेवाली; पल् मळै पोल्-विपुल वर्षा के समान; चुटर् वाळि-प्रकाशमय शर; वळङ्कितनुम्-श्रीराम ने छोड़े। ३४२६

प्रलयाग्नि-सम उन राक्षसों ने जो युद्धयोग्य चक्रायुध, अस्त्र आदि चलाये उनको काटकर हटाने के निमित्त श्रीराम ने युगांत की वर्षा के समान प्रकाशमय बाणों को छोड़ा। ३४२९

शूरोडु तॉडर्न्द शुडर्क्कणैदान्, तारो डहलङ्गळ् तडिन्दिडलुम्
तेरोडु मडिन्दलर् शॅङ्गदिरोन्, ऊरोडु मडिन्दन वॊत्तुरवोर् 3430

चुरोटु तॊटर्न्त-बलसंयुक्त; चुटर्-तेजोमय; कणै तान्-बाणों के; तार् ओटु-विजयमाला-सहित; अकलङ्कळ्-विशाल वक्षों को; तटिन्तिटलुम्-भेदते ही; चॆम् कतिरोन्-लाल किरणमाली; ऊरोटुम्-परिवेश के साथ; मटिन्तनन् ऒत्तु-गिर गया जैसे; उरवोर्-बलवान वे; तेरोटुम्-रथों के साथ; मटिन्तनर्-मिट गये। ३४३०

बल-प्रकाश-संयुक्त श्रीराम-शरों के विजयमाला से अलंकृत राक्षसों के विशाल वक्षों पर लगते ही वे परिवेश के साथ गिरते किरणमाली के समान रथों के साथ गिरे और मिटे। ३४३०

कॊल्लोडु शुडर्क्कणै कूऱ्ऱिन्निणप्, पल्लोडु तॊडर्न्दन पायवलिनाल्
शॆल्लोडॆळु मामुहिल् शिन्दिनपोल्, विल्लोडुम् विळुन्द मिडर्करमे 3431

कॊल् ओटु-संहारक; चुटर् कणै-प्रकाशमय शर; कूऱ्ऱिन्-यम के-से; निणम्-चर्बी-लगे; पल्लोटु-दाँतों से; तॊटर्न्तन-अनुसृत; पाय्तलिनाल्-चलने से; विल्लोटुम्-चाप के साथ; विळुन्त मिटल् करम्-नीचे गिरे कठोर हाथ; चॆल्लोटु ऎळु-बिजली के साथ उठे; मा मुकिल्-बड़े मेघ; चिन्तिन पोल्-झर पड़े जैसे (दिखे)। ३४३१

श्रीराम के घातक, प्रकाशमय और मांसयुक्त यमदंत-से दाँतों से युक्त पिछले भाग के शर उनको काट चले तो राक्षसों के हाथ धनुओं के साथ कटकर गिरे, तब वे विद्युत्-सह झरते मेघों के समान लगे। ३४३१

शॆम्बो डुदिरत्तिरै शिन्दुविन्वाय्, वॆम्बो डरवक्कुल मेल्निमिरुम्
कॊम्बोडुम् विळुन्दन वॊत्तकुऱैन्, दम्बोडु विळुन्द वडर्करमे 3432

कुऱैन्तु-छिन्न होकर; अम्पोटु-बाण के साथ; चॆम्पोटु-लालीयुक्त; उतिरम् तिरै-रक्त-तरंग के; चिन्तुविन् वाय्-समुद्र में; विळुन्त-जो गिरे; अटल् करम्-वे तगड़े हाथ; वॆम्पु ओटु-भय खाकर भागनेवाले; अरवम् कुलम्-सर्पदल; मेल् निमिरुम्-ऊपर उठी; कॊम्पोटुम्-शाखाओं के साथ; विळुन्तन ऒत्त-गिरे-जैसे लगे। ३४३२

कटकर बाणों के साथ लाल रंग की रक्त-लहरों से भरे समुद्र में

गिरने जब वे तगड़े हाथ चले, तब वे डर से अपने वासाश्रय की उन्नत तरुशाखाओं के साथ भागकर गिरते सर्पदलों के समान लगे। ३४३२

मुऱ्ऱो डुदिरप्पुऩल् मूदुलहैप्, पिऩ्ऩोडि वळैन्द पॅरुङ्गडल्वाय्
मिऩ्ऩोडुम् विऴुन्दऩ मेहमॅऩप्, पॊऩ्ऩोडै नॅडुङ्गरि पुक्कऩवाल् 3433

पॊऩ् ओटै–स्वर्णपट से अलंकृत; नॅटु करि–ऊँचे हाथी; मुऩ् ओटु–सामने बहने वाले; उतिरम् पुऩल्–रक्तजल का; पिऩ् ओटि–पीछा करके दौड़कर; मुतुमै उलकै–प्राचीन दुनिया को; वळैन्त–जो घेरे रहता है, उस; पॅरु कटल् वाय्–बड़े समुद्र में; मिऩ्ऩोटुम्–बिजली के साथ; विऴुन्तऩ–जो गिरे हों; मेकम् ॲऩ–उन मेघों के समान; पुक्कऩ–घुसे। ३४३३

स्वर्णमुखपट्ट से अलंकृत गज सामने बहनेवाले रक्त का पीछा करते पुरातन पृथ्वी को घेरे रहनेवाले बड़े समुद्र में, विद्युत्सह गिरते बड़े मेघों के समान घुसे। ३४३३

मऱ्वॅऱ्ऱि यरक्कर् वलक्कैयॊडुम्, नऱवक्कुरु दिक्कडल् वीऴ्नहैवाळ्
शुऱवॊत्तऩ मीदु तुडित्तॆऴलाल्, इऱवॊत्तऩ वावु मिऩप्परिये 3434

नऱवम्–गंधयुक्त; कुरुति कटल्–रक्त-सागर में; मऱम् वॅऱ्ऱि–वीर और विजयी; अरक्कर्–राक्षसों के; वलम् कैयॊटुम्–दायें हाथों के साथ; वीऴ्–गिरे; नकै वाळ्–छविमय खड्ग; मीतु–ऊपर; तुटित्तु–तड़पकर; ॲऴलाल्–उठे इसलिए; चुऱवु ऒत्तऩ–'शुऱा' (समुद्र में रहनेवाला मत्स्यकुल का एक भयंकर प्राणी) के समान लगे; वावुम् इऩम्–सरपट चलनेवाले परिवार के; परि–अश्व; इऱवु–'इऱव' मत्स्य; ऒत्तऩ–के समान लगे। ३४३४

गंधयुक्त रक्त-सागर में वीरतापूर्ण तथा विजयी राक्षसों के दायें हाथों के साथ जो तेजोमय तलवारें गिरीं, वे तड़पकर ऊपर उठीं। तब वे 'शुऱा' मत्स्य के समान लगीं; और सरपट दौड़नेवाले अश्व 'इऱा' मत्स्य के समान दिखे। ३४३४

तामच्चुडर् वाळि तडिन्दहलप्, पामक्कुरु दिप्पडि हिऩ्ऱपडैच्
चेमप्पडर् केडह माल्हडल्शेर्, आमैक्कुल मॅत्तऩै यत्तऩयाल् 3435

तामम् चुटर् वाळि–अत्युज्ज्वल वाणों से; तटिन्तु अकल–छिन्न होकर गिरने से; पाम्–फैले; अ कुरुति–उस रक्त में; पटिकिऩ्ऱ–जो पड़े रहे; पटै पटर्–सेना के वीरों की; चेमम् केटकम्–रक्षा में प्रयुक्त ढालें; माल् कटल् चेर्–बड़े समुद्र के; आमै कुलम्–कछुओं के समूह; ॲत्तऩै–जितने; अत्तऩै–उतनी। ३४३५

अत्युज्वल शरों से कटकर राक्षसों की रक्षक ढालें उस विस्तृत रक्त-प्रवाह में गिरी थीं। उनकी संख्या बड़े समुद्र में रहे कच्छप दलों की उतनी थी। ३४३५

काम्बोडु पदाहैहळ् कारुदिरप्, पाम्बोडु कडऱ्पडि वुऱ्ऱनवाल्
वाम्बोर्नॅडु वाडै मलैन्दहलक्, कूम्बोडुयर् पाय्हळ् कुऱैन्दनपोल् 3436

वाम् पोर्–उछल-उछलकर किये जानेवाले युद्ध में; **नॅटु वाटै**–प्रखर उदीची हवा से; **मलैन्त**–चालित; **कलम् उयर्**–पोतों में के ऊँचे; **पाय्कळ्**–पाल; **कूम्पोटु**–मस्तूलों के साथ; **मूळ्कियन पोल्**–डूबे जैसे; **काम्पोटु**–(बाँस के) मूठों के साथ; **पताकैकळ्**–पताकाएँ; **कार् निऱम्**–काले रंग के; **उतिरम् पाम्पु**–रक्त के विस्तार के; **ओटु**–हिलते; **कटल्**–समुद्र में; **पटिवुऱ्ऱन**–डूबीं। ३४३६

उछल-उछलकर किये जानेवाले उस युद्ध में काले रंग से युक्त रक्त से मिले, हिलनेवाले सागर में बाँस की मूठों-सहित पताकाएँ डूबीं। वे प्रचंड उदीची हवा से चालित पोतों के मस्तूलों के साथ डूबनेवाले पालों के समान लगीं। ३४३६

मण्डप्पडु शोरियिन् वारियिन्वीळ्, कण्डत्त करत्तोहै कव्वियदाल्
मुण्डक्किळर् तण्डन मुट्टोहुवन्, तुण्डच्चुर वोत्त तुडित्तनवाल् 3437

मण्टप्पटु–बहुत बहनेवाले; **चोरियिन् वारियिन्**–रक्त-प्रवाह में; **वीऴ्**–गिरे; **कण्टत्तु**–छिन्न; **करम् तोकै**–हाथों के समूहों को; **कव्वियताल्**–बाण ग्रसते रहे अतः; **मुण्टम् किळर्**–कमल से शोभित; **तण्टु अन्न**–नाल के समान; **मुळ् तोकुवन**–काँटों से युक्त; **तुण्टम्**–'सूँड़' के; **चुऱवु ओत्त**–'शुरा' मत्स्य के समान; **तुटित्तन**–तड़पे। ३४३७

अत्यधिक विस्तार के रक्त-प्रवाह में छिन्न होकर गिरे राक्षसों के हाथों को शर ग्रस रहे थे। तब वे कमलनाल के समान काँटेदार 'सूँड़' से युक्त 'शुरा' मत्स्य के समान तड़प रहे थे। ३४३७

तॅळिवुऱ्ऱ पळिङ्गुऱ् शिल्लिहोॅळ्तेर्, विळिवुऱ्ऱुर वेऱुर वीळ्वनताम्
अळिमुऱ्ऱिय शोरिय वाऴियिलाऴ्, ऑळिमुऱ्ऱिय तिङ्गळै योत्तुळवाल् 3438

तॅळिवु उऱ्ऱ–शुद्ध; **पळिङ्कु उऱु**–स्फटिक के; **चिल्लि कॉळ् तेर्**–पहियोंदार रथ; **विळिवु उऱ्ऱु उऱ**–मिटे जब; **वेऱु उऱ**–अलग होकर; **वीऴ्वन ताम्**–गिरने वाले वे (पहिये); **अळि मुऱ्ऱिय**–बाणों के कारण खूब प्रगट; **चोरिय**–रक्त से मिलकर; **आऴियिल् आऴ्**–समुद्र में डूबनेवाले; **ऑळि मुऱ्ऱिय**–पूर्ण-प्रकाश; **तिङ्कळै**–चन्द्र के; **ऒत्तुळ**–समान दिखे। ३४३८

पारदर्शी स्फटिक के बने पहियोंदार रथ मिटे तो वे पहिये अलग हो गिरे। श्रीराम-बाणों के हत्याकार्य से उत्पन्न रक्त में मिलकर समुद्र में जाकर डूबे। तब वे पूर्णप्रकाश चंद्र के समान दिखे। ३४३८

निलै कोडलिल् वॅन्ऱि यरक्करैनेर्, कॉलै कोडलिन् मऱ्ऱुरि कोळुऱमेल्
शिलै कोडिय तोऱ शिरत्तिरळ्वन्, मलै कोडियिन् मेलु मऱिन्दिडुमाल् 3439

निलै कोटल् इल्–सद्धर्म के अग्राही; **वॅन्ऱि अरक्करै**–(अब तक जो) विजयी

(रहे) उन राक्षसों को; नेर् कॉलै कोटलिऩ्–सीधे हत करने को; मऩ्–श्रीराम ने; कुऱि कोळ्–लक्ष्य बनाना; उऩुमेल्–चाहा, इसलिए; चिलै–धनुष; कोटिय तोऱुम्–जब-जब झुका; चिरम् तिरळ्–सिरों के समूह; षल् मलै–कठोर पर्वत; कोटियिऩ्–मेलुम्–करोड़ों से भी ऊपर; मऱिन्तिटुम्–मरते बन गये। ३४३६

अब तक जो विजयी रहे उन अधर्मी राक्षसों को मारने का श्रीराम ने दृढ़ संकल्प कर लिया था। इसलिए जब-जब उनका धनु झुका (उन्होंने चाप झुकाकर शर छोड़े), तब कटे सिरों के करोड़ों कठोर पर्वतों से अधिक (ढेर) बन गये। ३४३९

**तिण्मार्बिऩ् मिशैच्चॅऱि शालिहैयिऩ्, कण्वाळि कडैच्चॅऱि कात्तनुळैन्
वॅण्वायुऱ मॉय्त्तत वित्तऱैयु, ऱुण्वाय्वरि वण्डिऩ मॊत्ततवाल् 3440**

तिण् मार्पिऩ् मिचै–सुदृढ़ छाती पर; चॅऱि–सटे लगे; चालिकैयिऩ् कण्–कवच में; वाळि–बाणों के; कटै–अन्तिम भाग के (नोक के); चॅऱि कात्तम्–घने समूह; नुळैन्तु–घुसकर; ऍण् वाय् उऱ–गिने जाने योग्य रीति से; मॉय्त्तत–जो रहे; इऩ् नऱै उऱु–मधुर मधु से भरकर; उण् वाय्–खानेवाले मुखों के; वरि वण्टिऩ्–धारीदार भ्रमरों के; इऩम् ऑत्तत–समूहों के समान लगे। ३४४०

सुदृढ़ वक्ष पर कसकर बँधे कवच पर शरों के अग्र भाग चुभे थे। गिनने योग्य रीति से चुभे रहे उनके समूह मधुर मधु पीनेवाले धारीदार भ्रमरों के झुंडों के समान लगते थे। ३४४०

**पाऱाडु कळत्तॊरु वऩ्पहलिऩ्, कूऱाहिय नालिलॊर् कूऱिडैये
नूऱायिन योशनै नूऴिल्हळ्शाल्, माऱादुऴल् शारिहै वन्दऩनाल् 3441**

पाऱु आटु–बाज जहाँ संचार करते हैं; नूऱु योचनै आयिन–सौ योजन के; कळत्तु–युद्ध के मैदान में; ऑरुवऩ्–एकाकी ने; पकलिऩ्–अह्न के; नालिल् ओर् कूऱु–चौथांश के; आकिय कूऱिटैये–समय-भाग में; नूऴिल्कळ् चाल्–संहारक कार्य-योग्य; माऱातु उऴल्–निरन्तर घूमते हुए; चारिकै वन्तऩऩ्–चक्कर काटे। ३४४१

बाज़ जहाँ संचार करते थे, उस सौ योजन विस्तार की युद्धभूमि में श्रीराम अकेले रहकर अह्न के चौथांश के समय के अन्दर सभी राक्षसों को मारते हुए चक्कर काट रहे थे। ३४४१

**निऩ्ऱारुड निऩ्ऱु निमिर्न्दयले, शॆऩ्ऱारॅदिर् शॆऩ्ऱु तिरिन्दिडलाल्
तऩ्दादैयै योर्वुऱु तऩ्महऩ्नेर्, हॊन्ऱाऩव नेयिव नॆऩ्ऱुकॊळ्वार् 3442**

निऩ्ऱार् उटऩे निऩ्ऱुम्–जो खड़े रहे उनके साथ खड़े रहकर; अयले–पास ही; निमिर्न्तु–पैर उठाकर; चॆऩ्ऱार्–गये तो; ऍतिर् चॆऩ्ऱुम्–सामने जाकर; तिरिन्तिटलाल्–घूमते रहे इसलिए; ओर्वु उऱु–विवेकशील; तऩ् मकऩ् नेर्–उसके ही पुत्र के समक्ष; तऩ् तातैयै–उसके पिता को; कॊऩ्ऱाऩ्–जिन्होंने मारा था; अवऩे–वे ही भगवान नरसिंह; इवऩ्–ये हैं; ऍऩ्ऱु कॊळ्वार्–ऐसा मानते हैं। ३४४२

वे स्थित लोगों के सामने खड़े रहते; पैर बढ़ाकर जानेवालों के सामने जाते; इस तरह घूमते रहे। अतः लोग यही कहने लगे कि ये राम वे ही नरसिंह-मूर्ति हैं, जिन्होंने उसके ही विवेकी पुत्र के सामने हिरण्य को मारा था। ३४४२

इङ्गेयुळ तिङ्गुळ तिङ्गुळन्ऩॆन्ऩ्, ऱङ्गेयुणर् हिन्ऱ वलन्दलैवाय्
वॆङ्गोब नॆडुम्बडै वॆञ्जरम्विट्, टॆङ्गेनुम् वळङ्गुव रेहुवराल् 3443

इङ्कु उळत्–यहाँ है; इङ्के उळन्–यहीं रहता है; इङ्कु उळत्–यहाँ है; ऍन्ऱ–ऐसा; अङ्के–वहाँ; उणर्कित्ऱ–सोचने की; अलम् तलैवाय्–भ्रान्त दशा में; वॆम् कोपम्–बहुत क्रोध के साथ; नॆट्टु पटै–लम्बे धनु से; वॆम् चरम्–भीषण बाणों को; विट्टु–चलाकर; ऍङ्केनुम् वळङ्कुवर्–कहीं भेज देते; एकुवार्–और स्वयं हत हो जाते। ३४४३

श्रीराम सर्वत्र दिखायी देते थे। अतः लोगों ने कहा कि यहीं है, यहीं है, यहीं है। इस तरह भ्रांत दशा में राक्षसों ने क्रुद्ध होकर भीषण शर चलाये तो वे शर श्रीराम के पास न जाकर अन्यत्र चले जाते थे। पर वे राक्षस हत हो जाते थे। ३४४३

ऒरुवन्ऩॆन्ऩ वुन्ऩुमु णर्च्चियिलार्, इरवन्ऱिदु वोर्पह लॆन्बर्हळाल्
करवन्ऱि दिरामर् कणक्किलराल्, परवैमण लिऱ्पल रॆन्बर्हळाल् 3444

इतु इरवु अन्ऱु–यह रात का समय नहीं; ओर् पकल्–एक अह्न है; ऍन्पर्कळ्–कहते; ऒरुवन्–अकेला एक; ऍन–ऐसा; उन्ऩुम्–सोच; उणर्च्चि इलार्–समझ नहीं; इतु करवु अन्ऱु–यह धोखा नहीं; इरामर्–राम; परवै मणलिल्–समुद्र के बालुओं के समान; पलर्–अनेक; कणक्किलर्–अनगिनत; ऍन्पर्कळ्–कहते। ३४४४

(श्रीराम के शरों से तेज़ प्रकाश फैला रहता। अतः) राक्षस कहते कि यह रात नहीं। दिन है! वे राम को एकाकी समझ नहीं सके। इसलिए विश्वास के साथ कहते कि यह धोखा नहीं; असल में रामों की संख्या सागर के बालुओं की संख्या से अधिक है। ३४४४

ऒरुवन्ऩॊरु वन्मलै पोलुयर्वोन्, ऒरुवन्पडै वॆळ्ळमो रायिरमे
ऒरुवन्ऩॊरु वन्ऩुयि रुण्डिलाल्, ऒरुवन्ऩुयि रुण्डदु मुळ्ळदुवो 3445

ऒरुवन् ऒरुवन्–हर एक; मलै पोल् उयर्वोन्–पर्वत के समान ऊँचा; ऒरु वल् पटै–अनुपम बलवान सेना; ओरायिरम् वॆळ्ळम्–एक हज़ार 'वॆळ्ळम्' की; ऒरुवन् ऒरुवन्–एक-दूसरे की; उयिर् उण्टतु अलाल्–जान पी गया, नहीं तो; ऒरुवन्–अद्वितीय श्रीराम ने; उयिर् उण्टतुवुम् उळ्ळतुवो–जान पी थी क्या। ३४४५

इस सेना का हर वीर पर्वत के समान बहुत ऊँचा था। ऐसे एक हज़ार वॆळ्ळम् वीरों की सेना थी वह। श्रीराम के धोखे में परस्पर मार

लेने से सब मरे। वही सच्ची बात थी। नहीं तो श्रीराम के द्वारा हत जीव भी थे क्या ? । ३४४५

तेर्मेलुळर् मार्वोडु शॅन्दरुहट्, कार्मेलुळर् माकडन् मेलुळरिप्
पार्मेलुळ रुम्बर् परन्दुळराल्, पोर्मेल विरामर् पुहुन्दिडुवार् 3446

पोर् मेल–युद्ध अपनाकर; पुकुन्तिटुवार्–घुसकर संहार करनेवाले; इरामर्–श्रीराम; तेर् मेल् उळर्–रथ पर हैं; मार्वोटु–अश्व के साथ; तऱु–घातक; चॅम् कण्–लाल आँखों के; कार् मेल्–मेघ (हाथी) पर; उळर्–हैं; मा कटल् मेल्–बड़े सागर पर; उळर्–हैं; इ पार् मेल् उळर्–इस भूमि पर हैं; उम्पर्–आकाश में; परन्तु उळर्–व्याप्त हैं। ३४४६

युद्धोद्यत हो घुसकर संहार करनेवाले श्रीराम के सम्बन्ध में राक्षस कहने लगे कि वे रथ पर हैं; अश्व पर हैं। घातक लाल आँखों वाले मेघ-सम मातंग पर हैं। वे इस भूमि पर हैं; नहीं, आकाश में व्याप्त हैं! । ३४४६

ॲन्नुम्बडि यॅङ्गणु मॅङ्गणुमायत्, तुन्नुन्ऩुळु लुन्दिरि युऩ्जुडरुम्
पिन्नुम्मरु हुम्मुड लुम्बिरियान्, मन्नन्महन् वञ्जर् मयङ्गिनराल् 3447

ॲन्नुम् पटि–ऐसा कहा जाय ऐसा; मन्नत् मकन्–राजा के पुत्र; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; ॲङ्कणुमाय्–सर्वव्यापी बन; पिन्नुम्–पीछे; अरुकुम्–समीप; उटलुम्–शरीर से; पिरियात्–अलग न होकर; तुन्नुम्–सट जाते; चुळलुम्–घूमते; तिरियुम्–इधर-उधर भटकते; चुटरुम्–तेजोमय रहते; वञ्चर्–वंचक (राक्षस); मयङ्किनर्–भ्रांत हुए। ३४४७

इस तरह उन्हें भ्रम में डालते हुए राजा के पुत्र श्रीराम सर्वत्र रहे। पीछे रहे। पास रहे। शरीर से भी अलग न होकर सटे रहे! घूमते, फिरते और तेजोमय स्थित रहते। ३४४७

पडुमद करिपरि शिन्दिन पत्तिवरै यिरदम विन्दन
विडुतिशै ऴॅविडुपि ळन्दन विरिहड लळरदॅ ळ्ऩ्दन
अडुपुलि यवुणर्द मङ्गैय रलर्विऴि यरुविहळ् शिन्दिन
कडुमणि नॅडियवॅ नुऩ्जिलै कणकण कणक णॅनुन्दोरुम् 3448

नॅटिय ॲनुम् चिलै–दीर्घ कथित धनु की; कटुमणि–कड़ी ध्वनिवाली घंटियाँ; कण कण कणकन्–क्वणन क्वणन क्वणन की; ॲनुम् तोरुम्–जब-जब ध्वनि निकालती थीं; मतम् पटु करि–मदनीरसहित मातंग; परि–अश्व; चिन्तिन–हत हुए; पत्ति वरै–हिमालय से; इरतम् अविन्तन–रथ नष्ट हुए; विटु तिचै–विशाल दिशाएँ; चॅविटु पिळन्तन–बहरी हुईं; विरि कटल्–विस्तृत सागर; अळऱु अऴुन्तन–पंकिल बने; अटु पुलि–खूनी व्याघ्र-सम; अवुणर् तम्–राक्षसों की; मङ्कैयर्–स्त्रियों की; अलर् विऴि–बड़ी आँखों से; अरुविकळ् चिन्तिन–अश्रु-नदियाँ बह निकलीं। ३४४८

उनके दीर्घ धनु की कठोर ध्वनिवाली घंटियों के क्वणन-क्वणन-क्वणन के स्वर के निकलते हर बार मदस्रावी मातंग मरे। अश्व मिटे! हिमालय-से रथ नष्ट हुए। विस्तृत दिशाएँ बहरी हुईं। विस्तृत सागर पंकिल बन गया। घातक व्याघ्र-सम दानवों की दयिताओं के विशाल नेत्रों से अश्रु-नदी उठकर बही। ३४४८

ऊऩेरु पडैक्कै वीर रॆदिरॆदि रुरुवन् दोरुम्
कूऩेरु शिलैयुन् दानुङ् गुदिक्किऩ्ऱ कडुप्पिऩ् कोट्पाल्
वाऩेऱि नाऱहळ् तेरु मलैहिऩ्ऱ वयवर् तेरुम्
ताऩेऱि वन्द तेरे याक्किनान् ऱऩियेऱ् ऱनान् 3449

तनि एऱु अन्नान्–अप्रतिम केसरी-तुल्य श्रीराम; ऊन् एऱु–मांसल; पटै कै वीरर्–आयुध-हस्त वीरों के; ऍतिर् ऍतिर्–आमने-सामने; उरुवम् तोऱुम्–हर एक के रूप में; कून् एऱु–झुके हुए; चिलैयुम्–धनु को; तानुम्–ले स्वयं; कुतिक्किन्ऱ–कूद पड़ते उस; कटुप्पिन्–तेजी के; कोट्पाल्–प्रकार से; वान् एऱिनार्कळ् तेरुम्–स्वर्गारोही वीरों के रथ; मलैकिन्ऱ–युद्ध करनेवाले; वयवर् तेरुम्–वीरों के रथों को; तान् एऱि वन्त–जिस पर वे स्वयं चढ़ आये थे; तेर् आक्किनान्–उस रथ में बदल दिया (यानी मिट्टी बना दिया)। ३४४९

नर केसरी-सम श्रीराम मांसलिप्त हथियार रखनेवाले राक्षसों में एक-एक के सामने उस-उसके आकार के अनुसार अपने झुके धनुष के साथ इस तेज़ी से कूदे कि स्वर्गारोही वीरों के रथ और युद्ध करनेवालों के रथ सारे वह रथ बन गये जिस पर वे स्वयं आये थे (यानी मिट्टी हो गये थे)। ३४४९

कायिरुञ् जिलैयॊऩ् ऱेनुङ् गणैप्पुट्टि लॊऩ्ऱे तेनुम्
तूयॆऴु पहळि मारि मऴैत्तुळित् तॊहैयिऩ् मेल
आयिरङ् गैहळ् शॆय्द शॆय्दन वमलऩ् शॆङ्गै
आयिरङ् गैयुङ् गूडि यिरण्डुकै याय वाऱे 3450

काय्–शत्रु-दाहक; इरु चिलै–बड़ा धनुष; ऒन्ऱे ऍत्तिनुम्–एक ही था तो भी; कणै पुट्टिल्–तूणीर; ऒन्ऱतेनुम्–एक रहा तो भी; तूय् ऍऴु–उनसे चलाये जाकर जो उठी; पकऴि मारि–शरों की वर्षा; मऴै तुळि तॊकैयिन्–वर्षा की बूंदों की संख्या से; मेल–अधिक हैं; अमलन्–विमल श्रीराम के; चॆम् कै–दो लाल हाथों ने; आयिरम् कैकळ् चॆय्त–जिसे हज़ार हाथों ने किया; चॆय्तन–वह किया; आयिरम् कैयुम् कूटि–हज़ार हाथ मिलकर; इरण्टु कै आय आऱु–दो हाथ बने, यह (विचित्र) बात। ३४५०

शत्रुतापक धनु एक ही था, तूणीर एक ही था। तो भी शर जो निकले वे वर्षा की बूंदों से भी अधिक संख्या के थे। अमल भगवान श्रीराम के दो लाल हाथों ने उतना काम किया जितना कि हज़ार हाथों ने किया। हज़ार हाथ कैसे दो हाथ हुए? । ३४५०

पॉय्यॉरु मुहत्त ताहि मतिदताम् बुणर्प्पि दन्राल्
मॅय्युड़ वुणर्न्दोम् वॅळ्ळ मायिर मिडॅन्द शेत्तै
शॅय्युरु वितैय मॅल्ला मॉरुमुहन् दॅरिव दुण्डे
ऐयिरु नूरु मल्ल वनन्दमा मुहङ्ग ळम्मा 3451

ओरु मुकत्तन् आकि–इकानन बनकर; मतित्ताम् पुणर्प्पु–मानव के रूप में रहने का; इतु–यह दृश्य; अन्रू–(सच) नहीं; पॉय्–झूठा है; मॅय् उऱ उणर्न्तोम्–सत्य ही जान लिया है हमने; आयिरम् वॅळ्ळम्–हजार 'वॅळ्ळम्' की; मिटैन्त चेत्तै–घनी सेना; चॅय्युरु–जो करती रही; वितैयम् ॲल्लाम्–वह युद्धकार्य सब; ओरु मुकम्–एक मुख; तॅरिवतु उण्टे–जान ले, यह संभव है क्या; ऐयिरु नूरुम् अल्ल–पांच के दो के सौ भी नहीं; मुकङ्कळ् अनन्तम् आम्–अनंत मुख हैं। ३४५१

इकानन मानव का यह दृश्य सच नहीं है। झूठा ही है। हमने सचमुच जान लिया। हज़ार वॅळ्ळम् की सेना जो युद्ध-कार्य करती रही, उस सबको एक मुख से जाना कैसे जा सकता है? इनके एक हज़ार मुख ही नहीं, अनंत मुख है। ३४५१

कण्णुदऱ् परमन् तानु नान्मुहक् कडवुळ् तानुम्
ॲण्णुदुन् दॉडर वॅय्द कोलॅन वॅण्ण लुऱ्ऱार्
पण्णैयाल् वहुक्क माट्टार् तनित्तनिप् पार्क्क लुऱ्ऱार्
ऑण्णुमो कणिक्क वॅन्बा रुवहैयि नुयर्न्द तोळार् 3452

कण् नुतल् परमन् तानुम्–भालनेत्र परमेश्वर और; नाल् मुकम्–चतुर्मुख; कटवुळ् तानुम्–भगवान और; ॲय्त कोल्–(श्रीराम द्वारा) चलाये गये अस्त्रों को; तॉटर ॲण्णुतुम्–बराबर गिन लेंगे; ॲन–कहकर; तनि तनि–अलग-अलग; पार्क्कल् उऱ्ऱार्–देखते; ॲण्णल् उऱ्ऱार्–गिनने लगे; पण्णैयाल्–समूह की विपुलता के कारण; वकुक्क माट्टार्–न गिन सके; उवकैयिन्–आनन्द से; उयर्न्त तोळार्–उन्नत कन्धों वाले बनकर; कणिक्क ऑण्णुमो–गिना जा सकता है क्या; ॲन्पार्–बोले। ३४५२

भालनेत्र परमेश्वर और चतुर्मुख देवता ने कहा कि हम श्रीराम-प्रेरित शरों को बराबर गिनकर संख्या बता देंगे। अलग-अलग रहकर खूब ध्यान लगाकर गिनने लगे। पर शरों की संख्या इतनी विपुल थी कि वे गिन नहीं सके। उनके कंधे आनंद से फूल उठे और उन्होंने गर्व के साथ कहा कि गिना भी जा सकता है? (नहीं)। ३४५२

वॅळ्ळ मीरैन्दु नूऱे विडुहणै यवऱ्ऱिन् मॅय्ये
उळ्ळवा ऱुळवा मॅन्ऱो रुरैकणक् कुरैत्तु मेनुम्
कॉळ्ळैयो रुरुवै नूऱु कॉण्डन पलवाऱ् कॉऱ्ऱ
वळ्ळले वळङ्गि नान्ो वॅन्ऱनर् मऱ्ऱै वानोर् 3453

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्'; ईरैन्तु नूऱे–हजार ही; अवऱ्ऱिन्–उन पर; विटु–

चलाये गये; कणै-शर; उळ्ळ आङ्-सेना जितनी थी उतने; उळवाम्-थे; ॲन्ऱु-ऐसा; ओर् उरै-कथन के लिए; उरैत्तु मेनुम्-कहें तो भी; मॅय्ये-वह सत्य होगा क्या; कॉळ्ळै-युद्ध में हत; ओर् उरुवै-एक शरीर के; नूऱु कॊण्टत-सौ (खण्ड) किये; पल-अनेकों ने; कॊऱ्ऱम्-विजयी; वळ्ळल्-उदार प्रभु ने ही; वळ्ळ्कितात्तो-(उन्हें) चलाया क्या; ॲन्ऱनर्-कहा; मऱ्ऱै वातोर्-अन्य देवों ने। ३४५३

राक्षस वीरों की संख्या एक हज़ार वॅळ्ळम् की ही थी। पर उन पर चलाये गये शरों की संख्या भी उतनी —ऐसा कहने के लिए कहा जाय तो वह क्या सच हो सकता है ? नहीं। क्यों ? युद्ध में अपार रीति से जो लड़ते रहे उनमें एक-एक शरीर के सौ-सौ टुकड़े बनानेवाले शर अवश्य अधिक रहे है ! क्या विजयी व उदार प्रभु ने ही वे सारे शर चलाये थे ? आश्चर्य ! । ३४५३

कुडैक्कॅलाङ् गॉडिहट् 'कॅल्लाङ् गॉण्डत्त कुविन्द कॊऱ्ऱप्
पडैक्कॅलाम् बहळिक् कॅल्लाम् यानैदेर् परिमा वादिक्
कडैक्कॅलात् दुरन्द वाळि कणित्तदऱ् कळवै काट्टि
अडैक्कला मऱिञर् यारे यॅन्ऱनर् मुनिव रप्पाल् 3454

अप्पाल्-दूसरी तरफ़; मुनिवर्-मननशील मुनियों ने; कुटैक्कु ॲलाम्-सारे छत्रों; कॊटिकट्कु ॲल्लाम्-सारे झंडों; कॊण्टत्त-युद्धभूमि में फैले; कुविन्त-एकत्रित; कॊऱ्ऱम् पटैक्कु ॲल्लाम्-विजयदायी सारे हथियारों; पकळिक्कु ॲल्लाम्-सारे बाणों; यातै-हाथी; तेर्-रथ; परि-अश्व से लेकर; कटैक्कु ॲलाम्-पदातिक वीरों तक के (मारने के) लिए; तुरन्त वाळि-श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनको; कणित्तु-गिनकर; अतऱ्कु अळवै काट्टि-उसके लिए एक संख्या कहकर; अटैक्कलाम् अऱिञर्-निर्धारित करनेवाले विद्वान्; यारे-कौन ही; ॲन्ऱनर्-कहा। ३४५४

उधर मननशील मुनियों ने कह दिया कि छत्र, ध्वजाएँ, युद्धभूमि में इकट्ठे पाये गये शर, गज, रथ, अश्व, पदाति वीर जितने थे उन सभी पर श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनकी संख्या निर्धारित कर बतानेवाले विद्वान् भी कौन हैं ? (कोई नहीं)। ३४५४

कण्डत्तुङ् गळुत्तु मीदाय्क् कबालत्तुङ् गडक्क लुऱ्ऱ
शण्डप्पो ररक्कर् तम्मैत् तॊडर्न्दुकॊन् ऱमैन्द तन्मै
पिण्डत्तिऱ् करुवान् दन्बे रुरुक्कळैप् पिरमन् दन्द
अण्डत्तै निरैयप् पॅय्दु कुलुक्किय दनैय दान्न 3455

चण्टम् पोर्-प्रचंड युद्ध करते रहे; अरक्कर् तम्मै-राक्षसों को; तॊटर्न्तु-पीछा करके; कण्टत्तुम्-कंठ में; कळुत्तु-गले में; मीताय्-ऊपर; कपालत्तुम्-कपाल में; कटक्कल् उऱ्ऱ-भेद जो चले उन शरों का; कॊन्ऱु अमैन्त तन्मै-मार डालने का प्रकार; पिण्टत्तिल् करुवाम्-गर्भाशय में रहे; तन् पेर् उरुक्कळै-बड़े

(अंगों के) रूपों को; पिरमन् तन्त-ब्रह्मा द्वारा रचित; अण्टत्तै-अण्ड में; निरैय पेय्तु-भरकर; कुलुक्कियतु अन्नैय-हिला दिया जैसे; आन-रहे। ३४५५

प्रचंड उस युद्ध में श्रीराम के शर राक्षसों का पीछा करके उनके कंठों, गलों, कपालों को भेद चले। वे राक्षस मरे पड़े थे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो ब्रह्मा-रचित गर्भस्थ सभी अंगों को अंड में डालकर हिला दिया गया हो! । ३४५५

कोडियै यिरण्डु तॊक्क पडैक्कल मळ्ळर् कूवि
ओडियोर् पक्क माह वुयिरिऴन् दुलत्त लोडुम्
वीडिनिन् ऱऴिव दॆन्ने विण्णवर् पडैहळ् वीशि
मूडुदु मिवनै यॆन्ऱि यावरु मुडुहि मॊय्त्तार् 3456

ऐयिरण्टु कोटि तॊक्क-दस करोड़ के घने; पटैक्कलम् मळ्ळर्-अस्त्रधारी वीर; कूवि-प्रलाप करते हुए; ओर् पक्कमाक ओटि-एक ओर भागे; उयिर् इऴन्तु-प्राण खोकर; उलत्तलोटुम्-मर गये तो; वीटि निन्ऱु-हत होकर; अऴिवतु ऎन्ने-मिटना क्यों; विण्णवर् पटैकळ् वीचि-देवताओं के अस्त्र चलाकर; इवनै मूटुतुम्-इसको ढँक दें; ऎन्ऱु-सोचकर; यावरुम्-सभी; मुटुकि-जल्दी; मॊय्त्तार्-सटे। ३४५६

दस करोड़ अस्त्रधारी वीर एक ओर प्रलाप करते हुए भागे, मरे और मिटे। तब दूसरों ने सोचा कि साधारण हथियार चलाकर क्या लाभ? मरेंगे, इतना ही! अतः देवों के अस्त्र चलाकर इसके शरीर को एक दम ढँक दें। यह कहते हुए वे सब चढ़ आये। ३४५६

विण्डुविन् पडैये यादि मेवयन् पडैयी ऱाहक्
कॊण्डॊरुङ् गुडने विट्टार् कुलुङ्गिय दमरर् कूट्टम्
अण्डमुङ् गीऴ् मेला वाहिय ददनै यण्णल्
कण्डॊरु मुऱुवल् काट्टि यवर्ऱिनै यवर्ऱार् कात्तान् 3457

विण्टुविन् पटैये आति-विष्णु के अस्त्र आदि; मेवु-श्रेष्ठ; अयन् पटै ईऱाक-ब्रह्मास्त्र तक; कॊण्टु-लेकर; उटने-तुरन्त; ऒरुङ्कु विट्टार्-एक साथ छोड़े; अमरर् कूट्टम्-देववृन्द; कुलुङ्कियतु-काँपे; अण्टमुम्-अंड भी; कीऴ् मेला आकियतु-निचला ऊपर का हो गया; अतनै-उसको; अण्णल्-प्रभु; कण्टु-देखकर; ऒरु मुऱुवल् काट्टि-एक हँसी प्रगट करके; अवर्ऱै-उनको; अवर्ऱाल्-उनसे; कात्तान्-रोका। ३४५७

नारायणास्त्र से लेकर ब्रह्मास्त्र तक के सभी अस्त्रों को लेकर राक्षसों ने तुरंत एक साथ छोड़ा। उसे देख देवगण काँप उठे। अंड का नीचे का भाग ऊपर का हो गया और ऊपर का नीचा! प्रभु श्रीराम ने उसे देखा। एक हँसी उनके अधरों पर दिखायी दी। उनको उन्हीं से रोका। ३४५७

तान्‌वै तॉडुत्त पोदु तडुप्परि दुलहन् वात
पूनत्ति वडवैत् तीयिड् पुक्कन्नप् पॉरिन्दु पोमॅन्
ड्रात्तदु तॅरिन्द वळ्ळ लळप्परुङ् गोडि यम्बाल्
एत्तैयर् तलैह ळॅल्ला मिडियुण्ड मलैयि त्तिट्टान् 3458

तान्–उन्होंने; अवै–उन्हें; तॉट्टुत्त पोतु–जब छोड़ा तब; तडुप्परितु–उनको रोकना कठिन है; पू उलकम् तानै–भूलोक खुद; वटवै तीयिल्–वड़वाग्नि में; नत्ति पुक्कु अॅन्न–खूब घुस गया हो ऐसा; पॉरिन्तु पोम्–भुन जायगा; अॅन्ऱु–ऐसा; आत्तु तॅरिन्त–जो था उसको जानते थे; वळ्ळल्–उन प्रभु ने; अळप्पु अरुम्–अपार; कोटि अम्पाल्–कोटि अस्त्रों से; एत्तैयर् तलैकळ् अॅल्लाम्–सभी राक्षसों के सिरों को; इटि उण्ट मलैयिन्–वज्र के शिकार बने पर्वतों के समान; इट्टान्–भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

अगर वे वही अस्त्र चलाते तो सारी पृथ्वी वड़वाग्नि में घुसी-सी भुन जाती। यह सोचकर प्रभु ने अनगिनत अन्य साधारण अस्त्र चलाकर उनके सिरों को वज्राहत पर्वत के समान काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

आयिर वॅळ्ळत् तोरु मडुहळत् तविन्दु वीळ्न्दार्
मायिरु ञालत् ताळ्दन् वन्बॊरैप् पार नीङ्गि
मीयुयर्न् दॅळुन्दा ळन्ऱे वीङ्गोलि वेलै नित्ऱुम्
पोयॊरुङ् गण्डत् तोडुङ् गोडियो शनैहळ् पॊङ्गि 3459

आयिरम् वॅळ्ळत्तोरुम्–हजार 'वॅळ्ळम्' के सभी; अट्कळत्तु–समरांगन में; अविन्तु वीळ्न्तार्–मरकर गिरे; मा इरु ञालत्ताळ्–मान्या भूदेवी; तन्–अपना; वन् पॊरै पारम्–कठोर भारी बोझ से; नीङ्कि–मुक्त होकर; वीङ्कु ऒलि–वर्धनशील गर्जन के; वेलै नित्ऱुम्–समुद्र से; ऒरुङ्कु पोय्–एक साथ जाकर; अण्टत्तोटुम्–अंड के साथ; कोटि योचनैकळ्–करोड़ योजन; पॊङ्कि–उफनकर; मी उयर्न्तु–ऊपर बढ़; अॅळुन्ताळ्–उठी। ३४५९

हज़ार वॅळ्ळम् के सभी वीर भुनकर मर गये! मान्या भूदेवी कठोर भार से मुक्त हुई। वर्धनशील गर्जन के सागर के और ब्रह्माण्ड के साथ फूली और करोड़ योजन ऊपर की ओर बढ़ उठी। ३४५९

आनै यायिरन् देर्पदि नायिर मडर्परि यॊरुकोडि
शेनै कावल रायिरम् बेर्बडिन् कवन्दमॊन् ड्रॅळुन्दाडुम्
कान मायिरङ् गवन्दनिन् ड्राडिडिन् कविन्मणि कणिलॅत्तुनुम्
एनै यम्मणि येळ्रै नाळिहै याडिय दित्तिदन्ऱे 3460

आनै आयिरम्–हज़ार हाथी; तेर् पतिनायिरम्–दस हज़ार रथ; अटर् परि–आक्रामक अश्व; ऒरु कोटि–एक करोड़; चेनै कावलर्–सेनारक्षक; आयिरम् पेर्–हज़ार; पटिन्–मर जायँ तो; कवन्तम् ऒन्ऱु–एक कबंध; अॅळुन्तु आटुम्–

उठकर नाचे; कातम्–जंगल के समान; आयिरम् कवन्तम्–हज़ार कबन्ध; नित्तु आटिटिल्–उठकर नाचे तो; कविन् मणि–(श्रीराम के कोदण्ड की) एक घंटी; कणिल् ॲन्तुम्–'कवण' की ध्वनि उठायगी; एन्नै–और; अ मणि–वह घण्टी; इत्तिु–आराम से; एऴरै नाऴिकै–साढ़े सात घड़ियों; आटियतु–हिलती रही। ३४६०

जब हज़ार हाथी, दस हज़ार रथ, करोड़ आक्रामक अश्व और हज़ार सेनारक्षक वीर नष्ट हों, तब एक कवंध उठ नाचे। जंगल के समान विपुल संख्या में हज़ार कवंध नाचे, तब एक बार श्रीराम के कोदंड की घंटी बजे। अब वह घंटी साढ़े सात घड़ियाँ हिलती (बजती) रही। ३४६०

नितैन्दन्न मुडित्ते मॅन्ना वानवर् तुयर नीत्तार्
पुतैन्दतॅन्न वाहै यॅन्ना विन्दिर नुवहै पूत्तान्
वतैन्दन्न वल्ला वेदम् वाऴ्वुपॅरू रुयर्न्द मादो
अनन्दनुन् दलैह ळेन्दि ययर्वुयिर्त् तवलन् दीर्न्दान् 3461

वानवर्–देवगण ने; नितैन्तन्न–जो सोचा; मुटित्तेम्–हमने पूरा हुआ देख लिया; ॲन्ना–जानकर; तुयरम् नीत्तार्–दुःख छोड़ दिया; वाकै पुतैन्तनॅन्–जयमाला पहन ली; ॲन्ना–सोचकर; इन्तिरन्–इन्द्र; उवकै पूत्तान्–खुश हुआ; वन्नैन्तन अल्ला–अपौरुषेय (जो किसी से न रचे गये); वेतम्–वे वेद; वाऴ्वु पॅरूरु–(सुरक्षित) जीवन पाकर; उयर्न्त–फूल उठे; अनन्तनुम्–आदि-शेषनाग भी; तलैकळ् एन्ति–(भारनिवृत्ति से) सिर उठाकर; अयर्वु उयिर्त्तु–साँसें छोड़ते हुए; अवलम् तीर्न्तान्–कष्ट से मुक्त हुआ। ३४६१

देवों को यह आनन्द हो गया कि जो उन्होंने चाहा था वह पूरा हो गया। देवेंद्र ने 'जयमाला पहन ली' कहकर आनंद मनाया। अपौरुषेय वेद सुरक्षितता पाकर फूल उठे। आदिशेष ने भी सिर उन्नत करके दुःखनिवृत्ति की सुखद साँस ली। ३४६१

तायवडैत् तुडैय शॅल्व मीहॅन्नत् तम्बिक् कीन्दु
वेयबडैत् तुडैय कानम् विण्णवर् तवत्तान् मेवित्
तोयवडैत् तॉऴिलाल् यार्क्कुन् दुयर्तुडैत् तानै नोक्कि
वायवडैत् तुडैया रॅल्लाम् वाऴ्त्तिनार् वणक्कम् जॅय्दार् 3462

ताय्–माता के; पटैत्तु उटैय–प्राप्त; चॅल्वम्–राजधन को; ईक–वे दो; ॲन्न–कहने पर; तम्पिक्कु ईन्तु–छोटे भाई को देकर; वेय् पटैत्तुटैय–बाँसों से पूरित; कानम्–वन में; विण्णवर् तवत्तान्–देवों की तपस्या के कारण; मेवि–आकर; तोय्–मन लगाकर; पटै तॉऴिलाल्–अस्त्र के कार्य से; यार्क्कुम्–सभी का; तुयर् तुटैत्तानै–दुःख मिटानेवाले को; नोक्कि–देखकर; वाय् पटैत्तु उटैयार् ॲल्लाम्–सभी ने जिनके मुख थे; वाऴ्त्तिनार्–साधुवाद दिया; वणक्कम् चॅय्तार्–स्तुति की। ३४६२

माता कैकेयी ने आज्ञा दी कि अपने प्राप्त राजधन को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दो। श्रीराम ने दे दिया; देवों के तप के कारण जंगल आये। अब मन लगाकर अस्त्र-कौशल दिखाकर सभी का कष्ट पोंछ दिया। ऐसे श्रीराम को, उन सभी जीवों ने जिनके मुख थे, साधुवाद दिया और उनकी स्तुति की। ३४६२

तीमॊय्त्त वन्नैय शॆंड्ग णरक्करै मुळ्दुम् जिन्निप्
पूमॊय्त्त करत्त राहि विण्णवर् पोऱ्ऱ निन्ऱान्
पेय्मॊय्त्तु नरिह ळीण्डिप् पॆरुम्बिणम् बिऱड्गित् तोन्ऱुम्
ईमत्तुळ् तमिय निन्ऱ कऱैमिडऱ् ऱिऱैव नॊत्तान् 3463

ती मॊय्त्त अन्नैय–आग मिली; अन्नैय–जैसे; चॆम् कण्–लाल नेत्रों वाले; अरक्करै–राक्षस; मुळ्दुम् चिन्ति–सभी का नाश करके; पू मॊय्त्त–पुष्प-भरे; करत्तर् आकि–हाथों वाले बनकर; विण्णवर् पोऱ्ऱ–देवों के साधुवाद देते (उसका पात्र बनकर); निन्ऱान्–जो रहे श्रीराम; पेय् मॊय्त्तु–भूतगणों से आवृत; नरिकळ् ईण्टि–सियारों की भीड़ के साथ; पॆरुम् पिणम्–बड़ी लाशें; पिऱक्कि–अधिक संख्या में; तोन्ऱुम्–जहाँ दिखीं; ईमत्तुळ्–उस श्मशान में; तमियन् निन्ऱ–अकेले जो खड़े रहते; कऱै मिटऱ्ऱु–गले में कलंक वाले; इऱैवन्–(नीलकंठ) ईश्वर; ऒत्तान्–के समान रहे। ३४६३

आग जलती-जैसे नेत्रों वाले सभी राक्षसों को श्रीराम ने निहत कर दिया। तो देवों ने हाथों में पुष्प भर लेकर उनकी स्तुति की। तब युद्ध-भूमि में खड़े रहे वे उस श्मशान में स्थित नीलकंठ देव के समान लगे, जहाँ भूतगण भरे रहते, सियारों का जमघट होता और बड़ी लाशें अधिक संख्या में विद्यमान रहतीं। ३४६३

अण्डमाक् कळमुम् वीन्द वरक्करे वुयिरु माहक्
कॊण्डदो रुरुवन् दन्ना लिरुदिनाळ् वन्दु कूड
मण्डुनाण् मऱित्तुङ् गाट्ट मन्नुयि रनैत्तुम् वारि
उण्डवन् तान्नै यान दन्नॊरु मूर्त्ति यॊत्तान् 3464

मा कळ–बड़ा समरांगन; अण्टमुम्–अण्ड हो और; वीन्त–मरे; अरक्करे–राक्षस ही; उयिरुम् आक–जीव बने; कॊण्टतु ओर् उरुवम् तन्नाल्–लिये हुए रूप से; इऱुति नाळ् वन्तु कूट–युगांत के दिन के आने पर; मण्टुम् नाळ्–सृष्टि के दिन में; मऱित्तुम्–फिर; काट्ट–सृष्ट करने के निमित्त; मन् उयिर्–नित्य जीव; अनैत्तुम् वारि–सबको उठाकर; उण्टवन् तानेयान–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया; तन् ऒरु मूर्त्ति ऒत्तान्–स्वयं उनके समान (श्रीराम) लगे। ३४६४

युगांत में महाविष्णु अंडों के सभी जीवों को उदरस्थ कर लेते हैं, फिर सृष्टिकाल में बाहर निकाल देते हैं। अब श्रीराम (अपने ही रूप के) उन विष्णु के समान रहे। युद्धस्थल अण्ड के समान था और मरे

वीर जीवों के समान। उन पर प्रलय आ गया और श्रीराम प्रलयमूर्ति बने रहे। ३४६४

आहुलन् दुऱ्ऱन्द तेव रळ्ळिऩर् शॊरिन्द वॆळ्ळच्
चेहरु मलरुम् जान्दुम् जॆरुत्तॊऴिल् वरुत्तन् दीर्क्क
माहॊलै शॆय्द वळ्ळल् वाळमर्क् कळत्तैक् कैविट्
टेहिऩ ऩिळव लोडु मिरावण नॆऱ्ऱ कैम्मेल् 3465

आकुलम् तुऱ्ऩ्त तेवर्–व्याकुलता से मुक्त देवों ने; अळ्ळिऩर्–उठाकर; चॊरिन्त–जो बरसाये; वॆळ्ळम्–विपुल परिमाण के; चेकु अऱ्ऱ मलरुम्–अनिंद्य फूलों के; चान्तुम्–और चंदन; चॆरु तॊऴिल् वरुत्तम्–युद्धकार्य में उत्पन्न श्रम को; तीर्क्क–दूर करते; मा कॊलै–बड़ा संहार-कार्य; चॆय्त–जिन्होंने किया वे; वळ्ळल्–करुणामय प्रभु; वाळ् अमर् कळत्तै–तलवार से युद्ध जहाँ किया जाता है, उस समरांगन को; विट्टु–छोड़कर; इळवलोटुम्–कनिष्ठ के साथ; इरावणन् एऱ्ऱ–जिस भाग पर रावण लड़ता रहा; कै मेल्–उस भाग में; एकिऩऩ्–गये। ३४६५

देवों ने व्याकुलता से मुक्त होकर आनन्द से प्रेरित होकर अपने दोनों हाथों में अनिंद्य फूल उठा-उठाकर श्रीराम पर बरसाये, जिससे उनका युद्धपरिश्रम दूर हुआ। तब बड़े संहार-कार्य में जो लगे रहे, वे समरांगण के उस भाग की तरफ़ गये जहाँ लघुराज लक्ष्मण से रावण ने युद्ध छेड़ा था। ३४६५

इव्वऴि यियन्ऱ वल्ला मियम्बिऩा मिरिन्दु पोऩ
वॆव्वऴि याऱ्ऱल् वॆऱ्ऱिच् चेऩैयिऩ् शॆयलुम् जॆऩ्ऱ
वॆव्वऴि यरक्कर् कोमाऩ् शॆय्हैयु मिळैय वीरऩ्
ऒव्वमि लाऱ्ऱऱ् पोरु मुऱ्ऱुना मियम्ब लुऱ्ऱाम् 3466

इ वऴि–यहाँ; इयऩ्ऱ ऎल्लाम्–जो हुआ, वह सब; इयम्पिऩाम्–वर्णन किया हमने; इरिन्तु पोऩ–अस्त-व्यस्त जो भागे; तॆऩ् अऴि–शत्रु को मिटाने में; आऱ्ऱल्–शक्त; वॆऱ्ऱि चेऩै–विजयवाहिनी का; चॆयलुम्–कृत्य और; चॆऩ्ऱ–सामने गये; वॆम्मै वऴि–नृशंस मार्गावलंबी; अरक्कर् कोमाऩ्–राक्षसराज का; चॆय्कैयुम्–कृत्य; इळैय वीरऩ्–लघुराज वीर (लक्ष्मण के); ऒव्वम् इल्–निर्दोष; आऱ्ऱल् पोरुम्–घमासान युद्ध। मुऱ्ऱुम्–पूरा; नाम्–हम; इयम्पल् उऱ्ऱोम्–कहने लगते हैं। ३४६६

अब तक (कवि) हमने यहाँ का हाल बताया। अब हम अस्त-व्यस्त भागे वानरविजयवाहिनी के कृत्य, नृशंसमार्गावलंबी रावण का कार्य और लघुराज का अनिंद्य बलप्रदर्शक युद्ध —इनका बखान करने लगते हैं। ३४६६

पॆरुम्बडैत् तलैवर् यारुम् बॆयर्न्दिलर् पॆयर्न्दु पोय्नाम्
विरुम्बिऩम् वाऴ्क्कै यॆन्ऱाल् यारिडै विलक्कऱ् पालार्

वरुम्बऴि तुडैत्तुम् माण्डु वेहुडुम् वाति तॆन्ऱा
इरुङ्गडल् पॆयर्न्द दॆन्नत् तानैयु मीण्ड दिप्पाल् 3467

पॆरुम् पटै तलैवर् यारुम्–बड़े सेनानायक सभी; पॆयर्न्तिलर्–युद्धस्थल से न जाकर; पॆयर्न्तु पोय्–हट जाकर; नाम्–हम; वाऴ्क्कै विरुम्पित्तम् ऎन्ऱाल्–जीना चाहें तो; इटै विलक्कल् पालार्–बीच में रोकनेवाले; यार्–कौन हैं; आयितुम्–तो भी; वरुम् पऴि तुटैत्तुम्–होनेवाली निन्दा को दूर करेंगे; माण्टु–मर कर; वातित् वेंकुतुम्–(वीर-) स्वर्ग में जायें; ऎन्ऱा–कहकर; इरु कटल्–बड़ा सागर; पॆयर्न्ततु–स्थान छोड़कर गया; ऎन्ऩ–ऐसा; तानैयुम्–सेना भी; इप्पाल् मीणटतु–इस ओर आयी। ३४६७

बड़े वानरसेना-नायकों ने, भागने से लौटते हुए आपस में धीरज के वचन कहे। "हम भाग जाकर जीना चाहें तो रोकनेवाला कौन है? पर निंदा होगी। उस अपयश से बचने के लिए हम जायँ; और लड़ाई में मरें तो हम भी वीर-स्वर्ग में स्थान पा लेंगे।" वे लौट आये, तब उस दल का आना सागर के स्थान बदलकर आने के समान लगा। ३४६७

31. वेलेऱ्ऱ पडलम् (शक्ति-सहन पटल)

शिल्लि यायिरज् जिल्लुळैप् परियॊडुञ् जेर्न्द
ऎल्ल वन्गदिर् मण्डिल माऱुकॊण् डिमैक्कुञ्
जॆल्लुन् देर्मिशैच् चॆन्ऱनन् तेवरैत् तॊलैत्त
विल्लुम् वॆङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गॊऱ्ऱमुम् विळङ्ग 3468

आयिरम् चिल्लि–हज़ार पहियों के साथ; चिल् उळै–छोटे अयालों वाले; आयिरम् परियॊटुम् चेर्न्त–हज़ार अश्वों के साथ जुता; ऎल्लवन्–सूर्य के; कतिर्मण्टिलम्–प्रभामण्डल से; माऱु कॊण्टु–होड़ लगाकर; इमैक्कुम्–जो प्रकाशमय हो; चॆल्लुम् तेर् मिचै–चलता था, उस रथ पर; तेवर् तॊलैत्त–देवमेटक; विल्लुम्–धनु के और; वॆम् कणै–भीषण शरों के; पुट्टिलुम्–तूणीर के; कॊऱ्ऱमुम्–और विजयश्री के; विळङ्क–विलसते; चॆन्ऱनन्–गया (रावण)। ३४६८

रावण सहस्रचक्र, छोटे अयाल वाले हजार अश्वों से युक्त तथा सूर्य के प्रभामंडल से होड़ लगानेवाले रथ पर देवसंहारक धनुष को और भीषण शरों के तूणीर को साथ लेकर युद्धभूमि में गया। ३४६८

नूऱु कोडित्तेर् नॊऱ्ऱिल्परि नूऱ्ऱिरु कोडि
याऱु पोन्मद माहरि यैयिरु कोडि
एऱु कोळुऱु पदादियु मिवऱ्ऱिवर् ऱिरट्टि
शीऱु कोळरि येऱ्ऱा लुडन्ऩूऱु शॆन्ऱ 3469

नूऱु कोटि तेर्–सौ करोड़ रथ और; नॊऱ्ऱिल्–तीव्रगति; नूऱु इरु कोटि–दो सौ करोड़; परि–अश्व; याऱु पोल्–नदी के समान; मतम्–मद बहानेवाले; ऐयिरु

कोटि मा करि–दस करोड़ बड़े गज; इवट्रू इवट्रू इरट्टि–इन इनका दुगुना; एळु कोळ् उरू–नर केसरी के समान बल से युक्त; पतातियुम्–पदाति; चीरु–कोपिष्ठ; कोळ् अरि एरु अन्नान्–बलवान, राजसिंह के समान; उटन्–(रावण) के साथ; अन्रु–उस दिन; चेन्रार्–गये। ३४६९

सौ करोड़ रथ, दो सौ करोड़ तीव्रगामी अश्व, नदी-सम मदस्रावी दस करोड़ बड़े-बड़े गज, इनके दुगुने नर केसरी-सम पदाति वीर आदि सशक्त राजसिंह के समान रावण के साथ गये। ३४६९

मून्रु वेप्पिनुम् अप्पुरत्तु उलहिनुम् मुनैयिन्
एन्रु कोळुरुम् वीररहळ् वम्मिनॅन्रु इशैक्कुम्
आन्र पेरियुम् अदिर्हुरल् चङ्गमुम् अशनि
ईन्र काळमुम् एळॊडेळ् उलहमुम् इशैप्प 3470

मून्रु वेप्पिनुम्–तीनों लोकों में; अ पुरत्तु उलकिनुम्–उनके बाहर के लोक में; मुनैयिन्–युद्धभूमि में; एन्रु–सामना करके; कोळ् उरुम्–प्राणहरण करनेवाले; वीररकळ्–राक्षस वीर; वम्मिन् ॲन्रु–'आओ' ऐसा; इचैक्कुम्–शब्द करनेवाली; आन्र पेरियुम्–उत्कृष्ट भेरियाँ; अतिर् कुरल्–उच्चनाद करनेवाले; चङ्कमुम्–शंख और; अचनि ईन्र–अशनि-से स्वर का जनक; काळमुम्–काहल; एळॊटु एळु उलकमुम्–चौदहों भुवनों में; इचैप्प–स्वर फैलाते गये। ३४७०

तीनों लोकों और बाह्यलोक में भी युद्ध में शत्रु-प्राणहारी राक्षस वीर साथ गये। 'आओ'-सी ध्वनि निकालनेवाली बड़ी भेरियाँ, उच्चनादी शंख, अशनि-सा स्वर निकालनेवाले काहल —ये सब बजते गये और उनका स्वर चौदहों भुवनों में गूँजता रहा। ३४७०

अन्नैय राहिय वरक्करक्कु अरक्कनै यवुणर्
विन्नैय वानवर् वॆव्विनैप् पयत्तिनै वीरर्
निन्नैयु नॆञ्जिनैच् चुडुमदोर् नॆरुप्पिनै निमिर्न्दु
कन्नैयु मॆण्णेयुङ् गडप्पदोर् कडलिनैक् कण्डार् 3471

अवुणर् विनैयम्–दानवों की वंचना में; वानवर्–फँसे देवों के; वॆम् विनैप्पयत्तिनै–दारुण दुर्भाग्य के समान; वीरर्–वीरों के; निनैयुम् नॆञ्चिनै–स्मरणकारी मन को; चुटुमतु–जलानेवाली; ओर् नॆरुप्पिनै–एक आग-सा जो था; अनैयर् आकिय–वैसे ही स्वभाव के; अरक्करक्कुम् अरक्कनै–राक्षसों में बड़े राक्षस (रावण) को; ऍण्णैयुम्–गिनती के भी; कटप्पतु ओर्–पार रहनेवाले; ओर्–एक; निमिर्न्तु कनैयुम्–ऊँचे शोर मचानेवाले; कटलिनै–(सेना-) सागर को; कण्टार्–(वानरों ने) देखा। ३४७१

वानरों ने दानवाक्रांत देवों के दुर्भाग्य-सम, वीरों के स्मरण-शक्ति-निलय मन को जलाती आग, और वैसे स्वभाव वाले राक्षसों में प्रबल राक्षस

रावण को और उसके साथ ऊँची आवाज में नर्दन करती आनेवाली अपार सेना को देखा। ३४७१

कण्डु कैह्ळो डणिवहुत् तुरुमुरळ् करकळ्
कॉण्डु कूऱ्ऱमु नडुक्कुऱत् तोळ्पुडै कॉट्टि
अण्ड कोळङ्ग ळडुक्कळिन् दुलैवुऱ वार्त्तार्
मण्डु पोरिडै मडिवदे नलमॅन मदित्तार् 3472

कैकळोटु कण्टु–पार्श्व के व्यूहों के साथ देखकर; अणि वकुत्तु–खुद व्यूहों में बँटकर; मण्टु पोरिटै–घोर युद्ध में; मटिवते–जान देना ही; नलम् ऍन–अच्छा, ऐसा; मतित्तार्–निश्चय करके; कूऱ्ऱमुम् नटुक्कु उऱ–यम को भी कँपाते हुए; तोळ् पुटै–कन्धों को; कॉट्टि–ठोंककर; उरुम् उऱळ्–अशनि-सम; कऱ्कळ् कॉण्टु–पर्वतों को उठा लेकर; अण्टम् कोळङ्कळ्–अण्डगोल; अटुक्कु अळिन्तु–तटों का क्रम खोकर; उलैवु उऱ–थर्रा जायँ, ऐसा; आर्त्तार्–गरज उठे। ३४७२

पार्श्व के व्यूहों के साथ आते राक्षस तथा उसकी सेना को देखकर वानर वीरों ने अपने में व्यूह रचा। घोर युद्ध में मरना ही उत्तम समझनेवाले उन्होंने यम को भयभीत करते हुए कंधे ठोंके; और अशनि-सम पर्वतों को हाथ में उठा लेते हुए ऐसा तुमुल नाद उठाया कि अंडों के तहों के क्रम में परिवर्तन हो गया और खलबली मच गयी। ३४७२

अरक्कन् शेलैयु मारुयिर् वळङ्गुवा नमैन्द
कुरक्कु वेलैयु मॉन्ऱॉडॊन् ऱॅदिरॅदिर् कोत्तु
नॅरुक्कि नेर्न्दन नॅरुप्पिमैप् पॊडित्तन नॅरुप्पिन्
उरुक्कु शॅम्बॅन वम्बरत् तोडिन दुदिरम् 3473

अरक्कन् चेलैयुम्–राक्षस (राज) की सेना और; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राणों की; वळङ्कुवान्–बलि देने; अमैन्त कुरक्कु वेलैयुम्–जो प्रस्तुत हुए थे, उन वानरों का सागर; ऑन्ऱोटु ऑन्ऱु–एक दूसरे के; ऍतिर् ऍतिर् कोत्तु–आमने-सामने आकर; नॅरुक्कि नेर्न्तन–भिड़कर लड़े; इमै–आँखों में; नॅरुप्पु पॊटित्तन–आग उठी; नॅरुप्पिन्–आग में; उरुक्कु चॅम्पु ऍन–पिघले ताम्र के समान; उतिरम्–रक्त; अम्परत्तु–समुद्र की तरफ़; ओटिन्न–बहा। ३४७३

राक्षस-सेना और प्यारे प्राणों की बलि देने को उद्यत वानर-सेना आमने-सामने आकर गुँथ गयी। उनकी आँखों में आग उठी और पिघले ताम्र के समान रक्त बहा और समुद्र की तरफ़ गया। ३४७३

अऱ्ऱ वत्तलै यऱुकुऱै यॅळुन्दॅळुन् दण्डत्
तॊऱ्ऱ वानह मुदयमण् डिलमॅन वॊळिरच्
चुऱ्ऱु मेहत्तैत् तॊत्तिय कुरुदिनीर् तुळिप्प
मुऱ्ऱुम् वेयहम् बोर्क्कळ मामॅन मुयन्ऱ 3474

अड़्डवन् तलै—फटे हुए कठोर सिर; अऱु कुऱै—फटे रुंडों से; ऍऴुन्तु मॆऴुन्तु—उछल-उछलकर; अण्टत्तु—आकाश से; ऒट्ट्र—लगे; वान् अकम्—(और) आकाश में; उतयम् मण्टिलम् ऍन—उदयमण्डल के समान; ऒळिर—प्रकाशमय रहे; चुट्रुम् मेकत्तै—चारों ओर रहे मेघों में; तोतुतिय—उनसे लटकनेवाले; कुरुति नीर्—रक्त-जल को; तुळिप्प—बूंदें टपकीं; वैयकम् मुट्रुम्—भू भर में; पोर् कळम् ऍन—युद्धभूमि बनाने की; मुयन्ड्र—कोशिश करती-सी; आम्—लगीं। ३४७४

कटे शरीर से अलग जो सिर चले वे उछल-उछलकर आकाश में जा लगे। वहाँ वे उदयमंडल के समान लगे। चारों ओर रहे मेघों में उनसे रक्त की बूंदें जा भर गयीं। वे बूंदें भूमंडल पर गिरीं तो ऐसा लगा कि वे बूंदें सारे भूमंडल को युद्धभूमि बनाने का प्रयास कर रही हों। ३४७४

तूवि यम्बॆड यरियिन मरिदरच् चूळि
तूवि यम्बॆडै शोर्न्दन शॊरियुडड् चुरिप्प
मेवि यम्बडै पडप्पडक् कुरुदियिन् वीऴ्न्द
मेवि यम्बडैक् कडलिडैक् कुडरोडु मिदन्द 3475

अम्—मनोहर; पटै कटल् इटै—सेना-सागर-मध्य; मेवि—रहकर; अम्पु ऍटै—शर निकालते समय (लक्ष्मण के); तूवि—कोमल परों को; अम् पॆटै अरि इनम्—सुन्दर भ्रमरियों-सह भ्रमरों का वृन्द; मरि तर—जब लौटे; चूळि—मुखपट्ट को; तूवि—फेंककर; चोर्न्तन—थककर; वियम्मे—मान्य; पटै—(लक्ष्मण के) अस्त्र; पट पट—ज्यों-ज्यों लगे; कुरुतियिल्—रक्त में; चॊरि उटल्—खूब सने शरीरों को; चुरिप्प—खूब मग्न करके; वीऴ्न्त—गिरकर; कुटरोटुम्—आँतों के साथ; मितन्त—तिरे। ३४७५

उस सेना-सागर-मध्य रहकर लक्ष्मण गजों पर बाण चला रहे थे। गजों पर जब वे बाण लगे, तब उनका मदनीर पीने कोमल परोंवाली भ्रमरियों के साथ जो आये थे वे भ्रमर हट गये। गज मुखपट्ट को फेंक कर थक गये। ज्यों-ज्यों लक्ष्मण के मान्य शर उन पर लगते, त्यों-त्यों उनके शरीर रक्त के प्रवाह में डूब जाते और वे आँतों के साथ तिरते। ३४७५

कण्डि ड्रन्दनर् णवर्तम् मुहत्तवा मुरुवल्
कण्डि ड्रन्दन्र् मडन्दैय रुयिरोडुङ् गलन्दार्
पण्डि ड्रन्दन पऴम्बुणर् वहम्बुहप् पन्निप्
पण्डि ड्रन्दल पुलम्बॊलि शिलम्बॊलि पनिप्प 3476

मटन्तैयर्—स्त्रियाँ; कण् तिऱन्तनर्—खुली आँखों वाले; कणवर् तम्—पतियों के; मुकत्त आम्—मुख पर प्रगट; मुऱुवल्—मुस्कुराहट को; कण्टु—देखकर; पण्टु इऱन्तन—पहले बीते; पऴम् पुणर्वु—पुराने संगम-स्मरण के; अकम् पुक—मन में

उठने पर; पऩ्ऩि–कहकर; पण् तिरऩ्ऩु–श्रेष्ठ रागों में; अत–(गाती)सी; पुलम्पु–प्रलाप के; ऑलि–स्वर के साथ; चिलम्पु–नूपुर की ध्वनि के; पतिप्प–उठते; इऱन्ततर्–मरीं; उयिरोटुम् कलन्तार्–(पतियों की) आत्माओं के साथ (स्वर्ग में जा) मिल गयीं। ३४७६

राक्षसियों ने अपने पतियों के मुखों पर, जिनकी आँखें थोड़ी देर के लिए खुलीं, हास देखा तो उन्हें पुराने संगम के स्मरण ताज़ा हुए। वे उनकी चर्चा करते हुए रोयीं और उनका प्रलाप सुन्दर रागों के गाने के समान रहा। अपने नूपुरों को क्वणित करते हुए वे दुःख के आधिक्य से मरीं और स्वर्ग में जाकर अपने पतियों की आत्माओं से मिल गयीं। ३४७६

एऴु मेऴुमॆऩ् ऱिशैक्किऩ्ऱ वुलहङ्गळ् यावुम्
ऊऴि पोवदे यॊप्पदो रुलैवुऱ वुडऱ्ऱुम्
नूऴिल् वॆञ्जम नोक्कियव् विरावण ऩुवऩ्ऱाऩ्
दाऴि लॆऩ्बडै तरुक्कऱु मॆऩ्बदोर् तऩ्मै 3477

एऴुम् एऴुम्–सात और सात; ऎऩ्ऱु इचैक्किऩ्ऱ–ऐसा कथित; उलकङ्कळ् यावुम्–सभी लोक; ऊऴि–युगांत में; पोवते ऒप्पतु–मिट जाते ही जैसे; ओर्–एक; उलैवु–नाश को; उऱ–लाते हुए; उटऱ्ऱुम्–जो किया जाता है; नूऴिल्–जहाँ मारने का काम होता है; वॆम् चमम्–वह भयानक समरांगन; नोक्कि–देखकर; अव् इरावणऩ्–उस रावण ने; ताऴ् इल्–जो निर्बल नहीं; ऎऩ् पटै–उस मेरी सेना का; तरुक्कु अऱुम्–गर्व चूर होगा; ऎऩ्पतु ओर् तऩ्मै–ऐसा एक विचार; नुवऩ्ऱाऩ्–प्रगट किया। ३४७७

रावण ने देखा कि चौदहों भुवनों के नाशक युगांतकाल के नाशकार्य के समान इस युद्धभूमि में संहारक काम हो रहा है! उसने यह विचार प्रकट किया कि अब मेरी सेना का घमंड चूर हो जायगा। ३४२७

मरमुङ् गल्लुमे विल्लॊडु वाण्मऴुच् चूलम्
अरमुङ् गल्लुम्वेल् मुदलिय वयिऱ्पडै यडक्किच्
चिरमुङ् गल्लॆऩच् चिन्दलिऱ् चिदैन्द शेऩै
उरमुङ् गल्वियु मुडयवऩ् ऱॊरुनिऩ्ऱ दॊरुबाल् 3478

मरमुम् कल्लुमे–तरुओं और पत्थरों ने ही; विल्लॊटु–धनु और; वाळ्–तलवारें; मऴु–परशु; चूलम्–शूल; अरमुम्–आरा; कल्लुम्–और पत्थर; वेल्–शक्ति; मुतलिय–आदि; अयिल् पटै–तीक्ष्ण हथियारों को; अटक्कि–बेकार करके; चिरमुम्–(राक्षसों के) सिरों को; कल् ऎऩ–'गल्' शब्द के साथ; चिन्तलिल्–गिरा दिया इसलिए; अ चेऩै–वह सेना; चितैन्ततु–छिन्न-भिन्न हो गयी; उरमुम्–शारीरिक बल; कल्वियुम्–युद्धविद्या (का ज्ञान); उटैयवऩ्–जिनके पास थे; ऎंद–उन (लक्ष्मण का) युद्ध; ऒरु पाल्–एक ओर; निऩ्ऱतु–चलता रहा। ३४७८

वानर केवल तरुओं और पत्थरों को फेंक रहे थे और उनसे राक्षसों के धनुष, तलवारें, परशु, शूल, आरे, शक्तियाँ आदि तीक्ष्ण हथियार बेकार हो जाते थे और राक्षसों के सिर 'गल्' की ध्वनि के साथ गिर जाते थे; और वह सेना तहस-नहस हो गयी। उधर लक्ष्मण का, जो शरीर-बल और युद्ध-विद्या दोनों के स्वामी थे, युद्ध भी चल रहा था। ३४७८

अऴ्लुङ् गट्कळिड़् ड़णियोडु तुणिपडु मावि
कऴ्लुम् बल्परित् तेरोडु पुरवियुम् जुऱ्ऱच्
चुऴ्लुव् जोरिनी राऱ्ऱोडुङ् गडलिडैक् कलक्कुम्
कुऴ्लु नूलुमबो लनुमनुन् दानुमक् कुमरन् 3479

अनुमनुम्–मारुति; अ कुमरन् तानुम्–और वह कुँअर; कुऴलुम् नूलुम् पोल्–नाली और सूत के समान; अऴलुम्–आग निकालती; कण्–आँखों के; कळिऱु अणियोडु–गजों की श्रेणियों से; तुणि पडुम्–कट जाने से; आवि चुऴलुम्–जिनके प्राण झूलते थे; पल् परि–अनेक अश्वों और; तेरोडु–रथों के साथ; पुरवियुम्–अकेले अश्व; कऴलुम्–बहते; चोरि नीर् आऱ्ऱोडुम्–रक्त की नदी के साथ; कटल् इटै कलक्कुम्–समुद्र में जा मिलते। ३४७९

हनुमान और वे कुँअर लक्ष्मण नाली और सूत्र के समान अपृथक् रूप से घूमते थे। और फलस्वरूप आग निकालती आँखों वाले गजों की श्रेणियाँ, कटकर जिनके प्राण झूलते थे, ऐसे रथों के जुते अश्व और अकेले अश्व सभी बहते रक्त-प्रवाह के साथ समुद्र में जा मिले। ३४७९

विल्लुङ् गूऱ्ऱुवड़् कुण्डेनत् तिरिहिन्ऱ वीरन्
कोल्लुङ् गूऱ्ऱेनक् कुऱैक्कुमिन् निऱैपेरुङ् गुऴुवै
ओल्लुङ् गोळरि युरुमनुन् कुरङ्गिन दुहिरुम्
पल्लुङ् गूर्क्किन्ऱ कूर्क्किला वरक्कर्दम् वडेहळ् 3480

कूऱ्ऱुवऱ्कु–यम के (हाथ में); विल्लुम् उण्टु ऍन–धनु भी है ऐसा; तिरिकिन्ऱ–जो घूमते हैं; वीरन्–वे वीर लक्ष्मण; इ निऱै–इस पूर्ण; पेरु कुऴुवै–बड़ी सेना का; कोल्लुम् कूऱ्ऱु ऍन–संहार करनेवाले यम के समान; कुऱैक्कुम्–मिटा देंगे; ओल्लुम्–खूनी; कोळ् अरि–सशक्त सिंह की; उरुम्–अशनि की; अनुन–समानता करनेवाले; कुरङ्किनतु–वानर के; उकिरुम् पल्लुम्–नख और दाँत; कूर्किन्ऱ–बढ़ते हैं; अरक्कर् तम् पटैकळ्–राक्षसों के हथियार; कूर्क्किला–नहीं बढ़ते। ३४८०

क्या यम हाथ में भी धनु है? ऐसा संदेह पैदा करते हुए लक्ष्मण घूम रहे थे। वे अवश्य इस पूर्ण तथा बड़ी सेना को संहारक यम के समान मारकर मिटा देंगे। खूनी सिंह-सम तथा अशनि के समान वानर हनुमान के नख और दाँत बढ़ते हैं। पर राक्षसों के हथियार कहाँ बढ़ते! नहीं बढ़ते। ३४८०

कण्डु नित्ऱिरैप् पॊऴुदितिक् कालत्तैक् कऴिप्पित्
उण्डु कॆविडुङ् गूऱ्ऱुव तिरुदर्बे रुयिरै
मण्डु वॆञ्जॆरु नान्नॊरु कणत्तिडै मडित्ते
कॊण्डु मीळ्हुवॆन् कॊऱ्ऱमॆन् ऱिरावणन् कॊदित्तान् 3481

इरै पॊऴुतित्–कुछ देर; कण्टु निन्ऱु–देखता खड़ा रहा; इनि–अब; कालत्तै कऴिप्पित्–समय काट दें तो; कूऱ्ऱुवन्–यम; निरुतर् पेर् उयिरै–राक्षसों के बड़े प्राणों को; उण्टु–खाकर; कै विटुम्–त्याग देगा; मण्टु वॆम् चॆरु–घमासान भयंकर युद्ध में; ऒरु कणत्तिटै–एक क्षण में; नान्–मैं; मटित्तु--(शत्रुओं को) मारकर; कॊऱ्ऱम् कॊण्टु–विजय लेकर; मीळ्कुवॆन्–लौटूँगा; ऎन्ऱु–यह विचार कर; इरावणन् कॊतित्तान्–रावण उबल पड़ा। ३४८१

रावण कुछ देर यह हाल देखता हुआ खड़ा रहा। फिर विचार किया कि अब समय बर्बाद करूँ तो यम सारे राक्षसों के प्राण लेकर युद्धभूमि छोड़ जायगा। इसलिए इस घोर युद्ध में मैं एक ही क्षण के अंदर शत्रुओं का संहार करूँगा और विजय लेकर लौटूँगा। रावण खौल उठा। ३४८१

ऊदै पोल्वन वुरुमुरऴ् तिऱलन वुरुविप्
पूद रङ्गळैप् पिळप्पन वण्डत्तैप् पॊदुप्प
मादि रङ्गळै यळप्पन माऱ्ऱरुङ् गूऱ्ऱिन्
दूदु पोल्वन चुडुहणै मुऱैमुऱै तुरन्दान् 3482

ऊतै पोल्वन–पवन-तुल्य; उरुम् उरऴ्–अशनि से होड़ लगाने की; तिऱलन–शक्ति रखनेवाले; पूतरङ्कळै–भूधरों को; उरुवि–भेदकर; पिळप्पन–फाड़नेवाले; अण्टत्तै–अण्ड में; पॊतुप्प–छेद लगानेवाले; मातिरङ्कळै अळप्पन–दिशाओं को नापनेवाले; माऱ्ऱरुम्–अवार्य; कूऱ्ऱिन्–यम के; तूतु पोल्वन–दूतों के समान रहनेवाले; चुटु कणै–तापक बाणों को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तुरन्तान्–(रावण ने) चलाये। ३४८२

उसने बारी-बारी से पवन-सम तेज, अशनि से होड़ लगानेवाले बलवान, भूधरभेदी, अण्डछेदक, दिशाओं के मापक और अवार्य यम के दूतों के समान अस्त्रों को छोड़ा। ३४८२

आळि पोन्ऱुळ नॆदिरन्दपो दमरक्कळत् तडैन्द
ञाळि पोन्ऱुळ नॆन्बदॆ नळ्ळिरु ळडैन्द
काळि पोन्ऱन निरावणन् वॆळ्ळिडैक् करन्द
पूळै पोन्ऱदप् पॊरुशिनत् तरिहळ्दम् बुणरि 3483

आळि पोन्ऱु उळन्–सिंह (या शरभ) तुल्य जो था; ऎतिरन्त पोतु–(वह रावण) जब लड़ा तब; अमर् कळत्तु–युद्धाजिर में; अटैन्त–आये (वानर); ञाळि पोन्ऱु–कुत्तों के समान; उळ ऎन्पतु–रहे, यह कहना; ऎन्–क्या; नळ् इरुळ्–

अर्धरात्रि में; अटैन्त–आयी; काळि पोन्ऱनन्–हवा के समान रहा; इरावणन्–रावण; वॅळ् इटै–खाली आकाश में; करन्त–छिपे; पूळै पोन्ऱतु–'पूळै' (नामक) पौधों के समान रहा; अ–वह; पॉर चितत्तु–युद्ध क्रोध का; अरिकळ् तम् पुणरि–वानरों का सेना-सागर। ३४८३

रावण लड़ाई करते समय सिंह (या शरभ) रहा और युद्धभूमि में आये वानर कुत्ते —ऐसा कहना क्या? अर्धरात्रि में प्रचंड पवन-सा रहा रावण और क्रुद्ध वानर-सागर उसके सामने उड़कर छिपनेवाले 'पूळै' नाम के पौधों के फूलों के समान रहा। ('पूळै' के फूल बहुत छोटे और हलके होते हैं।)। ३४८३

इरियल् पोहिन्ऱ शेनैयै यिलक्कुवन् विलक्कि
अरिह ळञ्जन्मि नञ्जन्मि नॅन्ऱरुळ् वळङ्गित्
तिरियु मारुदि तोळॅनुन् देर्मिशैच् चॅन्ऱान्
ॲरियुम् वॅञ्जिनत् तिरावण नॅदिर्पुहुन् देऱ्ऱान् 3484

इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इरियल् पोकिन्ऱ–अव्यवस्थित रूप से भागनेवाली; चेनैयै–सेना को; विलक्कि–रोककर; अरिकळ्–वानरो; अञ्चन्मिन् अञ्चन्मिन्–मत डरो, मत डरो; ऍन्ऱु अरुळ् वळङ्कि–ऐसा कृपावचन कहकर; तिरियुम् मारुति–संचार करनेवाले मारुति के; तोळ् ऍनुम्–कंधों रूपी; तेर् मिचै–रथ पर; चॅन्ऱान्–गये; ऍरियुम्–जलनेवाले; वॅम् चितत्तु–दारुण क्रोध के; इरावणन्–रावण से; ऍतिर् पुकुन्तु–समक्ष जाकर; एऱ्ऱान्–(और लक्ष्मण ने) रोका। ३४८४

लक्ष्मण ने अस्त-व्यस्त भागते वानरों को यह कृपा-बचन कहकर रोका कि हे वानरो! मत डरो। मत डरो। फिर वे संचार करनेवाले मारुति के कंधों रूपी रथ पर बैठे रावण के समक्ष आये और उसका सामना करने लगे। ३४८४

एऱ्ऱुक् कोडलु मिरावण नॅरिमुहप् पहळि
नूऱ्ऱुक् कोडियिन् मेऱ्चॅलच् चिलैकॊडु नूक्कक्
काऱ्ऱुक् कोडिय पञ्जॅनत् तिशैतॊरुङ् गरक्क
वेऱ्ऱुक् कोल्हॊडु विलक्किन निलक्कुवन् विशैयाल् 3485

एऱ्ऱु कोटलुम्–सामना करके लड़े जब; इरावणन्–रावण के; ऍरिमुकम्–अग्निमुखी; पकळि–शरों को; नूऱु कोटियिन् मेल् चॅल–सौ करोड़ से अधिक; चिलै कॊट्टु–धनु से; नूक्क–चलाने पर; काऱ्ऱुक्कु–हवा के आगे; ओटिय–उड़ी; पञ्चु ऍन–रूई के समान; तिचै तॊऱुम् करक्क–दिशा-दिशा में जा छिपें, ऐसा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने; विचैयाल्–तेजी के साथ; वेऱु कोल् कॊट्टु–अन्य वाणों से; विलक्किनन्–निवार दिया। ३४८५

जब लक्ष्मण ने युद्ध ठाना तब रावण ने सौ करोड़ से भी अधिक अग्निमुखी वाण चलाये। लक्ष्मण ने अन्य वाणों को छोड़कर उनको रोका,

तो वे पवन-चालित रूई के समान उड़ गये और दिशा-दिशा में जाकर अदृश्य हो गये। ३४८५

विलक्कि तान्दडन् दोळिनु मार्बिनुम् विशिहम्
उलक्क वुय्त्तन निरावण नैन्दोंडैन् दुरुवक्
कलक्क मुर्रिल तिळवलु मुळ्ळत्तिऱ् कतन्राऩ्
अलक्क णॅय्दुवित् तानड लरक्कनै यम्बाल् 3486

विलक्कितान्–जिन्होंने रोका उनके; तट तोळितुम्–विशाल कंधों पर; मार्पितुम्–वक्ष में; विचिकम्–विशिखों को; इरावणन्–रावण ने; उलक्क–चुभे ऐसा; उय्त्ततन्–चलाया; ऐन्तोंटु ऐन्तु उरुव–दस शर भेद चले; कलक्कम् उऱ्ऱिलन्–(तो भी) शिथिल न पड़े; इळवलुम्–लघुराज ने; उळ्ळत्तिल् कतन्राऩ्–मन में गुस्सा करके; अटल् अरक्कनै–ताक़तवर राक्षस को; अम्पाल्–बाण से; अलक्कण् ॲय्तुवित्तान्–त्रस्त कर दिया। ३४८६

अस्त्रनिवारक सुमित्रासुत के विशाल कंधों और वक्ष में रावण ने चुभाते हुए अस्त्र चलाये। दस अस्त्र भेद निकले भी। तो भी लक्ष्मण शिथिल नहीं हुए और क्रोध करके अपने अस्त्रों से रावण को खूब त्रस्त कर दिया। ३४८६

काक्क लाहलाक् कडुप्पिनिऱ् ऱोडुप्पन कणैहळ्
नूक्कि तान्गणै नुरुक्किना नरक्कनु नूळिल्
आक्कुम् वॅञ्जमत् तरिदिवन् ऱनैवॅल्व दम्मा
नीक्कि यॅन्निनिच् चॅय्वदॆन् ऱिरावण निनैन्दान् 3487

काक्कत् आकला–रोका न जा सके ऐसी; कटुप्पितिल्–तेज़ी से; तोंटुप्पन–चलाये गये; कणैकळ्–शरों को; नुरुक्कितान्–जिसने चूर किया; अरक्कनुम्–राक्षस; इरावणन्–रावण ने; नूळिल् आक्कुम्–शत्रु-संहार के; वॅम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; इवन् तनै–इसको; वॅल्वतु–जीतना; अरितु–कठिन है; नीक्कि–इसे छोड़कर; इति–अब; चॅय्वतु ॲन्–करना क्या है; ॲन्ऱु–ऐसा; इरावणन् निनैन्तान्–रावण ने विचार किया (अम्मा–आश्चर्य)। ३४८७

दुर्वार वेग से आनेवाले उन शरों को रावण ने चूर कर दिया। उसने एक बात सोची : संहारक युद्ध में इसको परास्त करना दुर्लभ है ! अब इसके लिए क्या किया जाय, री मैया ? । ३४८७

कडवुण् माप्पडै तॊडुक्कित्तमर् ऱवैमुर्ऱुङ् गडक्क
विडवु मार्रवुम् वल्लनन्ऱि यारैयुम् वॅल्लुम्
तडवु मार्रलैक् कूर्रैयुन् दमैयनैप् पोलच्
चुडवु मार्रुमॆव् वुलहैयु मॆन्नुक्कुन् दोलान् 3488

कटवुळ् मा पटै–देवताओं के नामधारी बड़े अस्त्रों को; तॊटुक्किन्–चलायें तो; अवै मुऱ्ऱुम्–उन सबको; कटक्क विटवुम्–भेद जाने देने में और; आऱ्ऱवुम्–सहने में; वल्लन् अन्ऱि–समर्थ है इसके अलावा; यारैयुम् वॆल्लुम्–सबको जीतेगा; कूऱ्ऱैयुम्–यम का भी; आऱ्ऱलै तटवुम्–बल परास्त कर देगा; तमैयन् पोल–बड़े भाई की तरह; ऎव् उलकैयुम्–किसी भी लोक को; चुटवुम् आऱ्ऱुम्–जला भी सकता है; ऎवन्ऩुक्कुम्–किसी से भी; तोलान्–नहीं हारेगा। ३४८८

देवों के नामधारी अस्त्र छोड़ता हूँ, तो वे भेद जाते हैं, पर यह उससे प्रभावित नहीं होता। यह उनको झेलने में भी समर्थ रहता है। यह सबको जीतेगा। यम के बल को भी बेकार कर देगा। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समान यह किसी भी लोक को जला सकता है! यह किसी से हारेगा भी नहीं। ३४८८

मोह मॊन्ऱुण्ड मुदलवन् वहुत्तदु मुन्ऩा
ळाह मऱ्ऱदु कॊऱ्ऱमुम् जिवन्दन्नै यऴिप्प
देह मुऱ्ऱिय विऩ्जैयै यिवन्वयि ऩेविक्
काह मुऱ्ऱुऴल् कळत्तितिऩ् किडत्तुवॆन् कडिदिन् 3489

मोकम् ऒन्ऱु उण्टु–मोहनास्त्र एक है; मुन्ऩाळ्–प्राचीन काल में; मुतल्वन् वकुत्ततु–आदिभगवान का रचित; आकम् अऱ्ऱतु–दृश्य रूप का नहीं; चिवन् तन्नै–शिव की भी; कॊऱ्ऱमुम् अऴिप्पतु–विजय को हरनेवाला; एकम्–अद्वितीय; विऩ्जैयै मुऱ्ऱिय–मंत्र-भरा; इवन् वयिन् एवि–(वह अस्त्र) इस पर चलाकर; काकम् उऱ्ऱु उऴल्–जहाँ कौए आकर मँडराते; कळत्तितिल्–इस युद्धभूमि में; कटितिन्–शीघ्र; किटत्तुवॆन्–लिटा दूंगा। ३४८९

आदिभगवान का प्राचीन काल में रचित मोहनास्त्र एक है! वह अरूप है। शिव की विजय को भी हर लेनेवाला है! मंत्रपूरित अद्वितीय उसे इस पर चलाऊँगा और उस समरांगन में जल्दी लिटा दूंगा, जिस पर कि कौए मँड़राते हैं। ३४८९

ऎन्ऩ दुन्ऩियव् विऩ्जैयै मनत्तिडै यॆण्णि
मुन्ऩवन् मेल्वरत् तुरन्दन ऩदुहण्डु मुडुहि
अन्बिन् वीडण ऩाऴियान् पडैयिनि ऩऱुत्ति
ऎन्ऩ वोदिन ऩिलक्कुव ऩदुतॊडुत् तॆय्दान् 3490

ऎन्ऩपतु उन्ऩि–यह सोचकर; अव् विऩ्जैयै–उस मोहन मन्त्र को; मनत्तिटै ऎण्णि–मन में स्मरण करके; मुन्ऩवन् मेल् वर–बलवान लक्ष्मण पर चलने; तुरन्ततन्–छोड़ा; अतु कण्टु–उसको देखकर; वीटणन्–विभीषण ने; अन्पिन्–प्रेम के कारण; मुटुकि–जल्दी आकर; आऴियान् पटैयिन्–चक्रधारी के अस्त्र से; अऱुत्ति–काटो; ऎन्ऩपतु–ऐसा; ओतिनन्–कहा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने भी; अतु तॊटुत्तु–वह लगाकर; ऎय्तान्–चलाया। ३४९०

ऐसा सोचकर रावण ने उस मोहनास्त्र का स्मरण किया और बलवान लक्ष्मण पर प्रेरित किया। विभीषण ने यह देखा तो प्रेम से प्रेरित हो लक्ष्मण के पास जल्दी जाकर समझाया कि इसे चक्रधारी के विष्णु-अस्त्र चलाकर काटिए। लक्ष्मण ने वही चलाया। ३४९०

वीड णन्शील विण्डुविन् पडक्कलस् विट्टान्
मूडु वॅञ्जिन मोहत्तै नीक्कलु मुतिन्दान्
माडु निन्रव नुबायङ्गण् मदित्तिड वन्द
केडु नन्दमक् कॅन्वदु मनङ्गॉण्डु किळर्न्दान् 3491

वीटणन् चौल–विभीषण के कहने पर; विण्टुविन्–विष्णु के; पटै कलम्–अस्त्र को; विट्टान्–चलाकर; मूटुम्–आच्छादक; वॅम् चितम्–कठोर क्रोधी; मोकत्तै–मोहनास्त्र को; नीक्कलुम्–दूर करते ही; मुनिन्तान्–क्रुद्ध होकर (रावण); माट् निन्रवन्–पार्श्वस्थित (विभीषण) के; उपायक्कळ् मतित्तिट–उपाय सोचने से; नन्तमक्कु वन्त केटु–हम पर आया उपद्रव; ऍन्पतु–यह; मनम् कॉण्टु–मन में लाकर; किळर्न्तान्–उग्र हो उठा। ३४९१

विभीषण के कहने से लक्ष्मण ने श्रीविष्णु का अस्त्र छोड़ा। उसने आच्छादक तथा क्रोध-भरे मोहनास्त्र को हटा दिया। तब क्रुद्ध रावण यह सोचकर उग्र हो गया कि पार्श्वस्थित मेरे भाई के सोचकर बताने से यह हानि हमारी हो गयी। ३४९१

मयन्गॉ डुत्तदु महळॊडु वयङ्गनल् वेळ्वि
अयन् पडैत्तुळ दाळियुङ् गुलिशमु मनैय
दुयर्न्द कॊऱ्ऱमु मूळियुङ् गडन्दुळ दुरुमिड्
चयन्द नैप्पोरुन् दम्बियै युयिर्गॊळच् चमैन्दान् 3492

मयन् मकळॊटु कॊटुत्ततुम्–जिसे मय ने अपनी सुता के साथ दिया था; वयङ्कु–तेजोमय; अनल् वेळ्वि–अग्नि के यज्ञ में; अयन् पटैत्तुळतु–ब्रह्मा द्वारा रचित; आळियुम्–चक्र; कुलिचमुम्–और कुलिश; अनैयतु–के सदृश; उयर्न्त कॊऱ्ऱमुम् उन्नत विजय को; ऊळियुम्–और युगांत की अग्नि को; कटन्तुळतु–पीछे छोड़ चुका (जो) उस शक्ति से; उरुविल्–रूप में; चयन्तनै–जयंत के; पॊरुवुम्–सदृश रहनेवाले; तम्पियै–छोटे भाई के; उयिर् कॊळ–प्राणों को हरने पर; चमैन्तान्–तुल गया। ३४९२

तब उसने उस शक्ति को चलाकर जयंत-सदृश अपने रूप वाले भाई का प्राणांत कर देने का विचार किया, जिसे मय ने सुता के विवाह के अवसर पर रावण को दिया था; जो ब्रह्मा द्वारा यज्ञ में रची गयी थी; जो चक्र और कुलिश से तुल्य थी; और जो किसी की भी विजय को और युगांत की अग्नि को भी परास्त कर चुकी थी। ३४९२

विट्ट पोदिनि नौरुवन वीट्टिये मीळुम्
पट्ट पोदव नान्मुह नायिनुम् वडुक्कुम्
वट्ट वेलदु वलङ्गॉडु वाङ्गिनन् वणङ्गि
ऑट्ट निऱ्कलात् तम्बिमेल् वल्विशैत् तॅऱिन्दान् 3493

विट्ट पोतिनिल्–जब उसे छोड़ा; ऑरुवर्न–वह किसी को भी; वीट्टिये–मारकर ही; मीळुम्–लौटता; पट्ट पोतु–जब लगता; अवन्–वह; नान् मुकन् आयिनुम्–चतुर्मुख हो तो भी; पट्टुक्कुम्–उसे मार देता; अतु वेल्–उस तरह की शक्ति को; वट्टम् वलम् कॉटु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाङ्कितन्–ग्रहण कर; ऑट्ट निऱ्कला–जो दूर नहीं खड़ा रहा उस; तम्पि मेल्–छोटे भाई पर; वल् विचैत्तु–खूब जोर लगाकर; ऍऱिन्तान्–प्रेरित किया। ३४९३

वह ऐसा आयुध था जो जब छोड़ा गया तो मारकर ही लौटता। चाहे पात्र चतुर्मुख ही क्यों न हो! उस शक्ति की परिक्रमा करके रावण ने उसको नमस्कार किया और जो दूर नहीं खड़ा था उस अपने छोटे भाई पर ज़ोर देकर चला दिया। ३४९३

ऍऱिन्द कालैयिल् वीडण नदनिलै यॅल्लाम्
अऱिन्द शिन्दैय नैयवी दॅन्नुयि रळिक्कुम्
पिऱिन्दु शॅय्यलाम् बॉरुळिलै यॅन्ऱलुम् बॅरियोन्
अऱिन्दु पोक्कुव लञ्जलॆन् ऱॅन्ऱिडै यणैन्दान् 3494

ऍऱिन्त कालैयिल्–जब चलाया तब; अतन् निलै ऍल्लाम्–उसकी सारी गति-विधि; अऱिन्त चिन्तैयन् वीटणन्–जो जानता था उस मन के विभीषण ने; ऐय–प्रभु; ईतु–यह; ऍन् उयिर्–मेरे प्राणों का; अळिक्कुम्–नाश कर देगा; पिऱिन्तु–रोकने के अर्थ; चॅय्यलाम् पॊरुळ्–करने का कार्य; पिऱितु इलै–अन्य कुछ नहीं; ऍन्ऱलुम्–कहा तो; पॅरियोन्–मान्य लक्ष्मण; अऱिन्तु–सोचकर; पोक्कुवल्–दूर करूँगा; नी अञ्चल्–तुम मत डरो; ऍन्ऱु–कहकर; इटै अणैन्तान्–उस स्थल पर गया। ३४९४

जब उसने उसे चलाया तब विभीषण ने, जिसे उसके सम्बन्ध में सारी बातें मालूम थीं, लक्ष्मण से कहा कि प्रभु! यह मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा। निवारण का कोई रास्ता नहीं। तब मान्य लक्ष्मण 'उपाय सोचकर निवारूँगा। तुम मत डरो' —कहते हुए उसके स्थान पर गया। ३४९४

ऍय्द वाळियु मेयिन पडैक्कलम् यावुम्
शॅय्द मादवत् तॊरुवनैच् चिऱुतॊऴिऱ् ऱीयोन्
वॅद वैविनै तॊऴिन्दन वीडणन् माण्डान्
उय्द लिल्लैयॆन् ऱुम्बरुम् बॅरुमन मुलैन्दार् 3495

ऍय्त वाळियुम्–प्रेरित शर और; एयिन पटै कलम्–चलाये गये हथियार; यावुम्–सभी; चॅय्त मातवत्तु–तपस्वी; ऑरुवनै–किसी को; चिऱु तॊऴिल्–

क्षुद्र कर्म करनेवाले; तीयोन्-बुरे मनुष्य के; वैत वैविविनिल्-दिये गये शाप-वचनों के समान; ओऴिन्तन-बेकार हुए; उम्परुम्-देव भी; वीटणन् माण्टान्-विभीषण मर गया; उयतल् इल्लै-बचाव नहीं; अँन्ऱु-कहकर; पॅरु मरुम् उलैन्तार्-बहुत व्यग्र हुए। ३४९५

लक्ष्मण ने उसके विरुद्ध अनेक अस्त्र प्रेरित किये। हथियार फेंके। पर वे सभी तपस्वी के प्रति नीच कर्म करनेवाले बुरे आदमी के दिये गये शाप के समान निरर्थक हो गये। तब देव यह सोचकर बहुत दुःखी हुए कि अब विभीषण मर गया! कोई बचाव का मार्ग नहीं। ३४९५

तोऱ्प नॆन्तिनुम् बुहऴ्निऱ्कुन् दरुममुन् दॊडरुम्
आर्प्पर् नल्लव रडैक्कलम् बुहुन्दव नऴियप्
पार्प्प दॆन्नॆडुम् बऴिवन्दु पडर्वदन् मुन्नम्
एऱ्प नॆन्तनि मार्बिनॆन् ऱिलक्कुव नॆदिर्न्दान् 3496

तोऱ्पन् ऍन्नुतिनुम्-(प्राण) हार जाऊँ तो भी; पुकऴ् निऱ्कुम्-यश रहेगा; तरुममुम् तॊटरुम्-धर्म लगा रहेगा; नल्लवर् आर्प्पर्-सज्जन हल्ला मचा देंगे; अटैक्कलम् पुकुन्तवन्-शरणागत को; अऴिय पार्प्पतु-नष्ट होता देखना; ऍन्-कैसा; नॆटु पऴि-लम्बा अपयश आकर; तॊटर्वतन् मुन्नम्-लग जाय, इसके पूर्व; ऍन् तनि मार्पिन्-अपने अनुपम वक्ष पर; एऱ्पन्-झेल लूंगा; ऍन्ऱु-कहकर; इलक्कुवन्-लक्ष्मण; ऍतिर्न्तान्-सामने गये। ३४९६

लक्ष्मण ने निश्चय किया कि प्राण हारना पड़े तो भी यश स्थायी रहेगा। धर्म लगा रहेगा। सज्जन खूब प्रशंसा करेंगे। शरणागत को मरता देखता रहना क्या बात है? दीर्घ कलंक आ लगे इसके पूर्व ही अपने अनुपम वक्ष में यह झेल लूंगा। वे 'वेल्' के समक्ष गये। ३४९६

इलक्कु वऱ्कुमुन् वीडणन् पुहुमिरु वरैयुम्
विलक्कि यङ्गदन् मेऱ्चॆलु मवनैयुम् विलक्किक्
कलक्कुम् वानरक् कावल ननुमन्मुन् कडुहुम्
अलक्क णन्नदै यिन्नदॆन् ऱुरैशॆय लामो 3497

इलक्कुवऱ्कु मुन्-लक्ष्मण के आगे; वीटणन् पुकुम्-विभीषण गया; इरुवरैयुम् विलक्कि-दोनों को रोककर; अङ्कतन् मेल् चॆलुम्-अंगद आगे गया; अवनैयुम् विलक्कि-उसे भी हटाकर; वानरर् कावलन्-वानर राजा; कलक्कुम्-मिल गया; अनुमन्-हनुमान; मुन् कटुकुम्-आगे जल्दी गया; अन्नतु अलक्कण्-वैसे दुःख का; इन्नतु ऍन्ऱु-कैसा यह; उरै चॆयल् आमो-कहा जा सकता है क्या। ३४९७

तब विभीषण उनके आगे गया। दोनों को रोककर अंगद गया। अंगद को पीछे छोड़कर वानरराज आगे गया। हनुमान उसके भी आगे जा

चूका ! तब जो दुःखपूर्ण वातावरण पैदा हुआ वह कैसा था ? क्या कहा जा सकता है ? । ३४९७

मुऩ्ऩिऩ् ड्रारॅलाम् बिऩ्ऩुरक् कालिऩिऩ् मुडुहि
निऩ्मिऩ् यातिदु विलक्कुवॅ ऩॅऩ्ऱुरै नेरा
मिऩ्ऩुम् वेलिऩै विण्णवर् कण्पुडैत् तिरङ्ग
पॊऩ्ऩिऩ् मार्बिडै येऱ्ऱऩऩ् मुदुहिडैप् पोह 3498

मुऩ् निऩ्ऱार् ऎलाम्–सामने स्थित सभी को; पिऩ् उऱ–पीछे छोड़कर; कालिऩिऩ्–पवन के समान; मुटुकि–जल्दी जाकर; निऩ्मिऩ्–खड़े रहो; याऩ्–मैं; इतु विलक्कुवऩ्–इसे रोक दूंगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरै नेरा–वचन कहकर; विण्णवर्–देवों को; कण् पुटैत्तु–आँख पीटकर; इरङ्क–रोने देकर; मुतुकिटै पोक–पीठ से होकर निकल जाय ऐसा; मिऩ्ऩुम् वेलिऩै–चमकती शक्ति को; पॊऩ्ऩिऩ् मार्पिटै एऱ्ऱऩऩ्–स्वर्ण-सम वक्ष पर झेल लिया। ३४९८

अपने सामने जो थे उन सभी के आगे पवनगति में लक्ष्मण जा पहुँचे। उनसे कहा कि रह जाओ ! मैं इसे रोक दूंगा। उन्होंने उस शक्ति को अपने वक्ष में घुसने दिया और वह पीठ से बाहर चली गयी। देव इसको देखकर अपनी आँखें पीटते हुए रोये। ३४९८

ऎङ्गु नीङ्गुदि नीयॆऩ वीडण ऩॆऴुन्दाऩ्
शिङ्ग वेरॆऩ्ऩ शीऱ्ऱत्ता ऩिरावणऩ् तेरिल्
पॊङ्गु पाय्परि शारदि यॊडुम्बडप् पुडैत्ताऩ्
शङ्ग वाऩवर् तलैयॆडुत् तिडनॆडुन् दण्डाल् 3499

वीटणऩ्–विभीषण ने; नी ऎङ्कु नीङ्कुति–तुम कहाँ जाओ; ऎऩ–कहते हुए; ऎऴुन्ताऩ्–उठा; चिङ्क एऱु अऩ्ऩ–नर केसरी के समान; चीऱ्ऱत्ताऩ्–क्रुद्ध; इरावणऩ्–रावण के; तेरिल्–रथ के; पॊङ्कु पाय् परि–उमगकर लपकनेवाले अश्व; चारति यॊटुम्–सारथी के साथ; पट–मरकर गिरें ऐसा; चङ्कम् वाऩवर्–दलबद्ध देव; तलै ऎटुत्तिट–सिर उन्नत कर लें, यह सम्भव करते हुए; नॆटु तण्टाल्–ल बे दण्ड से; पुटैत्ताऩ्–पीटा। ३४९९

विभीषण ने रावण को ललकारा— तुम कहाँ जाओगे ? नर केसरी के समान कुपित होकर उसने अपनी लंबी गदा से पीटा। तब रावण के रथ के लपकते चलनेवाले अश्व और सारथी मरकर गिर गये। ३४९९

शेय्वि शुम्बिऩि ऩिमिर्न्दुनिऩ् ड्रिरावणऩ् शॊड्रिप्
पायह डुङ्गणैप् पत्तव ऩुडल्पुहप् पाय्च्चि
आयि रञ्जर मऩुमऩुर ऩुडलिऩि ऩऴुत्तिप्
पोयि ऩऩ्ऩॆरु मुडिऩ्दर्दऩ् ड्रिलङ्गैयूर् पुहुवाऩ् 3500

इरावणऩ्–रावण; चेय् विचुम्पिऩिल्–दूर आकाश में; निमिर्न्तु निऩ्ऱु–

जा खड़े होकर; चीऱ्ऱि–गुस्सा करके; पाय्–लपक चलनेवाले; पत्तु कडुम् कणै–दस कठोर शरों को; अवऩ् उडल पुक–उसके शरीर को भेदते हुए; पाय्च्चि–चलाकर; अनुमऩ् तऩ् उडलितिल्–हनुमान के शरीर में; आयिरम् चरम् अऴुत्ति–हज़ार शर धँसाकर; वॆरु मुडिन्ततु–युद्ध पूरा हो गया; ॲऩ्ऱु–कहता हुआ; इलङ्कै ऊर् पुकुवाऩ्–लंका नगर में प्रविष्ट होने के लिए; पोयिऩऩ्–गया। ३५००

रावण आकाश में दूर गया। वहाँ से उसने विभीषण पर दस वेगवान बाण चलाये और वे उसके शरीर में चुभ गये। फिर हनुमान के शरीर में हज़ार शर चुभा दिये। 'बस ! युद्ध का अंत हो गया।' कहते हुए वह लंका में प्रवेश करने चला गया। ३५००

तेडिच् चेर्न्दवॆन् पॊरुट्टिना लुलहुडैच् चल्वन्
वाडिप् पोयिन नीयिनि वञ्जनै मदियाल्
ओडिप् पोहुव दॆङ्गडा वुन्नोडु मुडनॆ
वीडिप् पोवनॆन् ऱरक्कन्मेल् वीडणन् वॆहुण्डान् 3501

तेटि चेर्न्त–शरण माँगकर आये; ॲऩ् पॊरुट्टिताल्–मेरे ही निमित्त; उलकुडै चॆल्वऩ्–लोक के स्वामी; वाटि पोयिऩऩ्–मुरझा गये; इऩि–अब; नी–तुम; वञ्चऩै मतियाल्–वंचक मन ले; ॲङ्कु अटा–कहाँ रे; ओटि पोकुवतु–जा पहुँचो; उऩ्ऩोटुम् उटऩे–तुम्हारे ही साथ; वीटि पोवऩ्–मर जाऊँगा; ॲऩ्ऱु–कहकर; अरक्कऩ् मेल्–राक्षस से; वीटणऩ् वॆकुण्टाऩ्–विभीषण कुपित हुआ। ३५०१

"शरणागत मेरे कारण लोकस्वामी लक्ष्मण मुरझा गये हैं। अब वंचकमति तुम कहाँ जाओगे रे ? तुम्हें मार दूँगा और तुम्हारे साथ मैं भी मरूँगा" —यह कहते हुए विभीषण ने गुस्सा दिखाया। ३५०१

वॆन्ऱि यॆन्वय मानदु वीडणप् पशुवॆक्
कॊन्ऱि निप्पय सिल्लॆयॆन् ऱिरावणन् कॊण्डान्
निन्ऱि लन्नोन्ऱु नोक्किलन् मुनिवॆला नीत्तान्
पॊन् तिणिन्दन मदिलुडै यिलङ्गैयूर् पुक्कान् 3502

वॆऩ्ऱि–विजय; ॲऩ् वयम् आऩतु–मेरे वश की हो गयी; वीटणऩ् पचुवै–विभीषण रूपी गाय को; इऩि–अब; कॊऩ्ऱु–मारकर; पयम् इल्लै–(कोई) फल नहीं; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इरावणऩ् कॊण्टाऩ्–रावण विचार करके; निऩ्ऱिलऩ्–खड़ा नहीं रहा; ऒऩ्ऱुम् नोक्किलऩ्–कुछ देखा नहीं; मुऩिवु ॲलाम्–सारा क्रोध; नीत्ताऩ्–छोड़कर; पॊऩ् तिणिन्तऩ–स्वर्णमय; मतिल् उटै–प्राचीरों-सहित; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। ३५०२

रावण को संतोष हो गया कि विजय मेरी होकर रह गयी है ! फिर यह विभीषण गऊ है ! उसको मारने से क्या लाभ ? इसलिए रावण डटा नहीं रहा; न ही उसने उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा। सारा

कोप त्यागकर वह स्वर्णप्राचीर-वलयित लंका नगर में प्रविष्ट हो गया। ३५०२

अरक्क नेहिन्नन् वीडणन् वाय्दिऱन् दरऱ्ऱि
इरक्कन् दानॆन विलक्कुव निणॆयडित् तलत्तिल्
करक्क लाहलाक् कादलन् वीऴ्न्दनन् कलुऴ्न्दान्
कुरक्कु वॆळ्ळमुन् दलैवरुन् दुयरिडैक् कुळित्तार् 3503

अरक्कन् एकितन्–रावण चला गया; वीटणन्–विभीषण; करक्कल् आकला–जिसको छिपाया नहीं जा सकता, वैसे; कातलन्–प्रेम से अभिभूत हो; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱि–प्रलाप करके; इरक्कम् तान् ॲन–करुणा की साक्षात् मूर्ति-मान्य होकर; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; इणै अटि तलत्तिल्–चरणद्वय-तल में; वीऴ्न्ततन्–गिरकर; कलुऴ्न्तान्–रोया; कुरक्कु वॆळ्ळमुम्–वॆळ्ळम् की संख्या के वानर; तलैवरुम्–और नायक; तुयरिटै–दुःख में; कुळित्तार्–डूबे। ३५०३

राक्षस राजा चला गया। विभीषण अपने उमड़ते स्नेह को दबा नहीं सका। मुख खोलकर प्रलाप करके मूर्तिमान करुणा की तरह वह लक्ष्मण के चरणद्वय-तल पर गिरा और खूब रोया। विशाल वानरदल और वानर-यूथप भी दुःखमग्न हुए। ३५०३

पॊन्नि रुम्बुरु तार्प्पुयप् पॊरुप्पिनान् पॊन्ऱ
ॲन्नि रुन्दुना निऱप्पॆनिक् कणत्तॆनै याळुम्
मन्नि रुन्दिनि वाऴ्हिल नॆन्ऱनन् मऱुह
निन्नि लॆन्ऱनन् शाम्बव नुरैयॊन्ऱु निहऴ्त्तुम् 3504

पॊन् इरुम्पु–काले स्वर्ण लोहे के समान; उऱुम्–(सुदृढ़) रहनेवाले; तार्–माला से अलंकृत; पुयम् पॊरुप्पिनान्–भुजा रूपी कन्धोंवाले; पॊन्ऱ–जब मर गये तब; नान् इरुन्तु–मैं जीवित रहूँ उससे; ॲन्–क्या फ़ायदा; इ कणत्तु–इसी क्षण; इऱप्पॆन्–मरूँगा; इनि–अब; ॲनै आळुम्–मेरे शासक; मन्–राजा राम; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; इनि वाऴ्किलन्–आगे नहीं जियेंगे; ॲन्ऱनन्–कहकर; मऱुक–क्षुब्ध हुआ; निल् निल्–बस, बस; ॲन्ऱनन्–कहकर; चाम्पवन्–जाम्बवान ने; उरै ऒन्ऱु–एक वचन; निकऴ्त्तुम्–कहा। ३५०४

स्वर्ण-लोहे की तरह सुदृढ़ तथा माला से अलंकृत कंधोंवाले चल बसे। फिर मेरे जीवित रहने से क्या लाभ ? मैं भी इसी क्षण मरूँगा। और मेरे शासक श्री राजा राम भी जीवित नहीं रहेंगे। यह कहकर वह क्षुब्ध हुआ। तब जाम्बवान ने उसे रोका कि 'ठहरो, ठहरो।' जाम्बवान आगे बोला। ३५०४

अनुम निरुकना मारुयिर् किरङ्गुव वरिवो
नितैयु मत्तुणै मात्तिरत् तुलहैला निमिर्वान्
वितैयि नन्मरुन् दळिक्किन्ड्रा नुयिर्क्किन्ड्रान् वीरन्
तितैयु मल्ललुर् ड्रळुङ्गन्मि नॅन्ड्रिडर् तीर्त्तान् 3505

नितैयुम् अ तुणै मात्तिरत्तु–स्मरण करने मात्र की देरी में; उलकु ॲलाम्–सारे लोक में; निमिर्वान्–सिर ऊँचा करके चलनेवाला; वितैयिन्–यत्न से; नल् मरुन्तु–अच्छी ओषधि; अळिक्किन्ड्रान्–ला देनेवाला; अनुमन् निरुक–हनुमान जब है तब; नाम–हमारा; आर् उयिर्क्कु–प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्कुवतु–दुःखी होना; अरिवो–बुद्धिमत्ता है क्या; वीरन्–वीर (लक्ष्मण); उयिर्क्किन्ड्रान्–साँसें ले रहे हैं; तितैयुम्–जरा भी; अल्लल् उऱ्ऱु–दुःखी होकर; अळुङ्कन्मिन्–मत लटो; ॲन्ऱु–कहकर; इटर् तीर्त्तान्–संकट दूर किया। ३५०५

विभीषण ! स्मरण-मात्र से सारे लोकों में सिर उन्नत करके घूमकर आनेवाला हनुमान है। प्रयत्न करके औषध ला दे सकनेवाला है ! तब हम प्यारे (लक्ष्मण के) प्राणों के लिए रोयें क्यों ? यह बुद्धिमत्ता नहीं होगा। और भी देखो ! लक्ष्मण साँस ले रहे हैं ! रंच भी दुःखी होकर मत लटो। जाम्बवान ने उनका दुःख दूर किया। ३५०५

मरुत्तिन् कादलन् मार्बिडै यम्बॅलाम् वाङ्गि
इरुत्ति योकडि देहलै यिळवलै यित्तम्
वरुत्तङ् गाणुमो मन्नव नॅन्नलु मन्नान्
गरुत्तै युन्नियम् मारुदि युलहॅलाङ् गडन्दान् 3506

मरुत्तिन् कातलन्–मरुतनन्दन के; मार्पिटै अम्पु ॲलाम्–वक्ष के सारे अस्त्र; वाङ्कि–निकालकर; इळवलै–लक्ष्मण को; इन्नतम् वरुत्तम्–संकट में पड़ा; मन्नवन्–श्रीराजाराम; काणुमो–देख (सह) सकेंगे क्या; कटितु एकलै–जल्दी न जाते; इरुत्तियो–यहीं रहोगे क्या; ॲन्नलुम्–कहने पर; अन्नान् करुत्तै–उसका आशय; उन्नि–सोचकर; अ मारुति–वह मारुति; उलकु ॲलाम्–सारे लोक को; कटन्तान्–पार कर गया। ३५०६

जाम्बवान ने हनुमान की छाती से चुभे रहे सारे बाण निकाल दिये और कहा कि श्रीराम अपने छोटे भाई को इस संकट की स्थिति में देखकर सह नहीं सकेंगे। इसलिए तुम शीघ्र नहीं जाओगे क्या ? विलंब करते रह जाओगे ? हनुमान जाम्बवान का आशय समझा और तुरन्त लोक के सारे प्रदेशों को पार कर जाने लगा। ३५०६

उय्त्तोरु तिशैमे लोडि युलहॅलाङ् गडक्कप् पायन्दु
मॅय्त्तहु मरुन्दु तन्नै वॅर्पोडुङ् गॊणर्न्द वीरन्
पोय्त्तलिल् कुरिहळ् तान्ने पॊदुवर नोक्किप् पॊन्बोल्
वैत्तदु वाङ्गिक् कॊण्ड वरुदलिल् वरुत्त मुण्डो 3507

उय्त्तु–मन (औषध पर) लगाकर; ऑरु तिचै मेल् ओटि–विशिष्ट उत्तर दिशा में भागकर; उलकु ऍलाम् कटक्क–सारे लोक को पार करते; पाय्न्तु–लपककर; मॅय् तरु–सच्ची शक्ति से पूर्ण; मरुन्तु तन्नै–औषध को; वॅऱ्पॊटुम्–पर्वत के साथ; कॊणर्न्त–जो पहले लाया था वह; वीरन्–वीर; पॊय्त्तल् इल्–अचूक; कुऱिकळ्–निशानों को; ताने–स्वयं; पोतु अऱ–असाधारण रीति से; नोक्कि–देखकर; पॊन् पोल्–स्वर्ण के समान; वैत्ततु–(जिसको) सुरक्षित रखा था; वाङ्कि कॊण्टु–लेकर; वरुतलिल्–आने में; वरुत्तम् उण्टो–कष्ट है क्या। ३५०७

पहले वह उत्तम उत्तर दिशा में सारे प्रदेशों को पार कर उड़ चला था और अमोघ शक्तिशाली उस ओषधि को पर्वत-सहित लाया था। वे सब निशान मालूम थे जो झूठे नहीं हो सकते थे। वह गुप्तधन के समान उसे रख आया था। फिर उसे लाने में कष्ट हो सकता था क्या? । ३५०७

तन्दनन् मरुन्दु तन्नैत् ताक्कुदल् मुन्ने योहम्
वन्ददु माण्डार्क् कॆल्ला मुयिर्तरुम् वलत्त दॆन्ऱाल्
नॊन्दवर् नोय्वु तीर्क्कच् चिऱिदन्ऱो नॊडित्तन् मुन्ने
इन्दिर नुलह मार्क्क वॆऴुन्दन निळैय वीरन् 3508

मरुन्तु–ओषधि-पर्वत को; तन्तनन्–ला दिया; तन्नै ताक्कुतल् मुन्ने–अपने पर लगने से पहले; योकम् वन्ततु–जागरण आ गया; माण्टार्क्कु ऍल्लाम्–सभी मृतकों को; उयिर् तरुम् वलत्ततु–प्राण देने की शक्ति रखनेवाला था; ऍन्ऱाल्–तो; नॊन्तवर्–पीड़ित की; नोय्वु तीर्क्क–वेदना दूर करने में; चिऱितु अन्ऱो–अल्पता थी न; नॊटित्तल् मुन्ने–चुटकी बजाने की देर में; इन्तिरन् उलकम्–देवेंद्र के लोक के; आर्क्क–आनन्दनाद करते; इळैय वीरन्–छोटे वीर; ऍऴुन्तनन्–उठ गये। ३५०८

वह ओषधिपर्वत लाया। उसकी गंध के भूमि पर लगने से पहले ही जागरण आ गया। मृतकों को जीवन दे सकती थी वह ओषधि! फिर केवल पीड़ितों की पीड़ा का निवारण; उसके लिए सुगम काम था न? चुटकी बजाने की देर में वीर लक्ष्मण इन्द्रलोक के देवों को आनन्दनाद उठाने देते हुए जाग उठे। ३५०८

ऍऴुन्दुनिन् ऱनुमन् ऱन्नै यिरुहैयार् ऱऴुवि यॆन्दाय्
विऴुन्दिल नन्ऱो मऱ्ऱव् वीडण नॆन्ऱु विम्मित्
तॊऴुन्दुणै यवनै नोक्कित् तुणुक्कमुन् बुयरु नीक्किक्
कॊऴुन्दियु मीण्डाळ् पट्टा नरक्कनॆन् ऱुवहै कॊण्डान् 3509

ऍऴुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अनुमन् तन्नै–हनुमान को; इरु कैयाल्–दोनों हाथों से; तऴुवि–आलिंगन करके; ऍन्ताय्–मेरे पिता (तुल्य); अव् वीटणन्–वह विभीषण; विऴुन्तिलन् अन्ऱो–नहीं गिरा न; ऍन्ऱु–पूछकर जानकर; विम्मि–सिसककर; तॊऴुम्–नमस्कार करते; तुणैयवनै–भाई (विभीषण) को;

नोक्कि–देखकर; तुणुक्कमुम्–भय और; तुयरुम्–दुःख; नीङ्कि–त्यागकर; कॉळ्ळुन्तियुम्–भाभी भी; मीण्टाळ्–पुनः मिल गयीं; अरक्कन् पट्टान्–राक्षस मर गया; ॲन्ऱु–ऐसा; उवक्के कोण्टान्–संतुष्ट हुए। ३५०८

लक्ष्मण ने उठकर हनुमान को दोनों हाथों से आलिंगन में लिया और पूछा कि विभीषण नहीं मरा है न ! पास में विभीषण सिसकता खड़ा था। अपने बड़े भाई-सदृश उसे देखकर लक्ष्मण ने अपना भय और दुःख छोड़ दिया। उन्हें विश्वास हो गया कि अब भाभी के लौट आने में कोई संशय नहीं। राक्षस मर गया ! वे बहुत मुदित हुए। ३५०९

तरुमम्ॲन् ऱरिञर् शॉल्लुन् दत्तिप्पॉरुळ् तन्नै यित्तै
करुमम्ॲन् ऱनुम नाक्किक् काट्टिय तन्मै कण्डाल्
अरुमैयॅन् निरामऱ् कम्मा वऱम्वॅल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
इरुमैयु नोक्कि ॲन्ऩा विरामन्बा लॅळ्ळुन्दु शॅन्ऱार् 3510

तरुमम्–(विग्रहवान) धर्म; ॲन्ऱु–ऐसा; अऱिञर्–विद्वान् लोग; चॉल्लुम्–जिसे कहते; तत्ति पॉरुळ् तन्नै–उस पर वस्तु को; इत्त–अभी; करुमम् ॲन्ऱु–कर्तव्य कहकर; अनुमन् आक्कि काट्टिय–हनुमान ने जो बना के दिखाया; तन्मै कण्टाल्–उस कार्य-रीति को देखें तो; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; अरुमै ॲन्–कठिन क्या है; इरुमैयुम् नोक्कित्–दोनों (इह, पर) को देखते समय; अऱम् वॅल्लुम्–धर्म जीतेगा; पावम् तोऱ्कुम्–पाप हारेगा; ॲन्ऩा–कहकर; इरामन् पाल्–श्रीराम के पास; ॲळुन्तु–उठ; चॅन्ऱार्–चले। ३५१०

पंडित लोग श्रीराम को (विग्रहवान) धर्म ही मानते हैं। ऐसे उनके प्रति धर्म समझकर कर्तव्य का निश्चय करके हनुमान ने जो कर दिखाया, उसको लेकर सोचा जाय तो श्रीराम के लिए कठिन क्या रहेगा ? इह-पर की बात लेकर विचार करें तो धर्म विजयी होगा और पाप हार जायगा। यह कहते हुए सब उठे और श्रीराम के पास चले। ३५१०

ऑन्ऱल पलवॅन् ऱोङ्गु मुयर्पिणत् तुम्ब रॉन्ऱु
कुन्ऱुहळ् पलवुञ् जोरिक् कुरैहड लनैत्तुन् दाविच्
चॅन्ऱडैन् दिरामन् तन्नैत् तिरुवडि वणक्कन् जॅय्दार्
वॅन्ऱियिन् तलैवर् कण्ड विरामनॅन् विणैन्द दॅन्ऱान् 3511

ऑन्ऱु अल–एक नहीं; पल ॲन्ऱु–अनेक माम्य; ओङ्कुम् उयर्–बहुत ऊँचे; पिणत्तु–लाशों के; उम्पर् ऑन्ऱु–आकाश छूते हुए; कुन्ऱुकळ् पलवुम्–पर्वत अनेक; चोरि–रक्त के; कुरै कटल्–गरजते सागर; अनैत्तुम्–सारे; तावि चॅन्ऱु–लाँघ जा; अटन्तु–पहुँचकर; इरामन् तन्नै–श्रीराम के; तिरुवटि–चरणों में; वॅन्ऱियिन् तलैवर्–विजयी वीरों ने; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया; कण्ट इरामन्–देखकर श्रीराम ने; विळैन्ततु ॲन्–हुआ क्या; ॲन्ऱान्–ऐसा पूछा। ३५११

लाशों के ऊँचे गगनस्पर्शी पर्वतों और रक्त के गरजते सागरों को लाँघकर वे श्रीराम के पास पहुँचे। और वीरराघव के चरणों में नमस्कार किया। उनको देखकर श्रीराम ने पूछा कि क्या हुआ ? । ३५११

उऱ्ऱदु मुळ्ळदु नोक्कि यॊऴिवर् वुणरवु ळूऱच्
चॊऱ्ऱऩऩ् शाम्बन् वीर ऩऩुमऩैत् तॊडरप् पुल्लिप्
पॆऱ्ऱऩॆ तुऩ्ऩै यॆऩ्ऩै पॆऱादऩ पॆरियो यॊऩ्ऱुम्
मऱ्ऱिडै यूऱु शॆल्ला वायुळै यादि यॆऩ्ऱाऩ् 3512

उऱ्ऱतु मुळ्ळतुम्–बीता सारा; **नोक्कि**–मन में स्मरण करके; **ऒऴिवु अऱ**–बिना कुछ छोड़े; **उणरवु उळ् ऊऱ**–समझ में आवे ऐसा; **चाम्पऩ् चॊऱ्ऱऩऩ्**–जाम्बवान ने कहा; **वीरऩ्**–श्रीवीरराघव भी; **अनुमऩै तॊटर पुल्लि**–हनुमान का लगातार आलिंगन करके; **उऩ्ऩै पॆऱ्ऱऩॆऩ्**–तुमको पाया है; **पॆरियोय्**–बड़े; **पॆऱातऩ**–न पाया; **ऎऩ्ऩै**–क्या ही; **मऱ्ऱु**–फिर; **ऒऩ्ऱुम्**–कुछ भी; **इटैयूऱु चॆल्ला**–बाधा जिसमें न हो; **आयुळै**–जीवन वाले; **आति**–बने रहो; **ऎऩ्ऱाऩ्**–आशीर्वाद दिया। ३५१२

जाम्बवान ने सारी बीती बातें क़ायदे से सोचकर बिना किसी बात को छोड़े खूब समझाते हुए बतलायीं। तब श्रीवीरराघव ने हनुमान का लगातार आलिंगन किया और कहा कि सम्मान्य मारुति ! तुमको पाकर अब मुझे मिला क्या नहीं ? (सब प्राप्त हो गये।) फिर से कहता हूँ तुम अबाध जीवन के चिरंजीव बनो ! श्रीराम ने आशीर्वाद दिया। ३५१२

पुयल्पॊऴि यरुविक् कण्णऩ् पॊरुमलऩ् बॊङ्गु हिऩ्ऱाऩ्
उयिर्पुऱत् तॊऴिय निऩ्ऱ वुडलऩ्ऩ वुरुवत् तम्बि
तुयर्तमक् कुदवि मीळात् तुऱक्कम्बोय् वन्द तॊल्लैत्
तयरदऱ् कण्डा लॊत्ताऩ् तम्मुऩैत तॊऴुदु शार्वाऩ् 3513

पुयल् पॊऴि–मेघ-समान बरसानेवाली; **अरुवि कण्णऩ्**–अश्रुसरिता की आँखों वाले; **पॊरुमलऩ्**–भावातिरेक में जो रहे; **पॊङ्कुकिऩ्ऱाऩ्**–उमंग में आये हुए; **उयिर् पुऱत्तु ऒऴिय**–प्राणों के अलग रहते; **निऩ्ऱ**–अलग खड़े रहे; **उटल् अऩ्ऩ**–शरीर-सम जो रहे; **उरुवम्**–वे सुन्दर; **तम्पि**–कनिष्ठ भ्राता; **तुयर्**–दुःख; **तमक्कु उतवि**–उन्हें देकर; **मीळा तुऱक्कम् पोय्**–स्वर्ग जाकर; **वन्त**–जो लौटे; **तॊल्लै**–वृद्ध; **तयरतऩ् कण्टाल्**–दशरथ को देखा हो; **ऒत्ताऩ्**–जैसे बने; **तम् मुऩ्ऩै**–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; **तॊऴुतु**–नमस्कार करके; **चार्वाऩ्**–पास गये। ३५१३

सुन्दर लघु भ्राता लक्ष्मण की आँखों से मेघों-से जैसे अश्रुधारा बह रही थी। आनन्द-विभोर थे और उमंग-भरे थे। प्राणों से पृथक् रहे शरीर के समान रहे वे श्रीराम को पास देखकर ऐसा आनंदित हुए मानो

उन्हें दुःख देकर जो स्वर्ग सिधार गये थे, उन दशरथ को देख चुके हों। उन्होंने भाई के चरणों में नमस्कार किया। ३५१३

इळवलैत् तळुवि यैय विर्रवितन् कुलत्तुक् केट्र
वळवित्त मडैन् दोर्क्काहि मन्नुयिर् कॊडुत्त वण्मैत्
तुळवियल् तॊङ्ग लाय्नी यन्नदु तुणिन्दा यॆन्ऱाल्
अळविय लन्रु शॆय्दर् कडुप्पदे याहु मन्रे 3514

इळवलै–छोटे भाई को; तळुवि–गले से लगाकर; ऐय–तात; अटैन्तोर्क्कु आकि–शरणागत के लिए; मन् उयिर्–स्थायी जीव को; कॊटुत्त–दया उस; वण्मै–उदारता के कारण; इरवि तन्–रवि के; कुलत्तुक्कु–कुल के; एट्र–योग्य; वळवितम्–उदार-चरित्र बन गये; तुळबु इयल्–तुलसी की; तोङ्कलाय्–माला-धारी; नी–तुमने; अन्ततु–वह कार्य; तुणिन्ताय्–दृढ़चित्त से किया; ॲन्राल्–तो; अळवियल्–बड़ा काम; अन्रु–नहीं; चॆय्तर्कु अटुप्पते–करने के लिए आवश्यक; आकुम्–था। ३५१४

श्रीराम ने उन्हें गले से लगा लिया और कहा कि तात! शरणागत के लिए अपनी जान दी, इस उदार-कार्य से हम रविकुल के योग्य गुण वाले साबित हो गये! हे तुलसीमालाधारी! तुमने वह कार्य दृढ़ चित्त से किया तो इसको बड़ा अपार गौरव मत मानो! यह अवश्य कर्तव्य-काम ही था। ३५१४

पुऱवॊन्ऱिन् पॊरुट्टा याक्कै पुण्णुऱ वरिन्द पुत्तेळ्
अऱवन् मैय निन्नै निहर्क्किल नप्पाल् निन्ऱ
पिऱवित्तै युरैप्प दॆन्ने पेरु ळाळ रॆन्बार्
कऱवैयुङ् गन्ऱु मॊप्पार् तमर्क्किडर् हाण्गि लॆन्ऱान् 3515

ऒन्ऱु–एक; पुऱविन् पॊरुट्टा–कबूतर के निमित्त; याक्कै–शरीर को; पुण् उऱ–व्रण करते हुए; अरिन्त–जिन्होंने काटा; पुत्तेळ् अऱवन्म्–धर्मात्मा (शिबि) और; ऐय–तात; निन्नै–तुम्हारी; निकर्क्किलन्–समता नहीं करेंगे; अप्पाल् निन्ऱ–परे जो हैं; पिऱवित्तै उरैप्पतु–अन्य कार्यों का कहना; ॲन्ने–काहे के लिए; पेर् अरुळाळर् ॲन्पार्–कृपालु जो कहे जाते हैं; तमर्क्कु–अपने मनुष्यों का; इटर काण्किल्–दुःख देखें तो; कऱवैयुम् कन्ऱुम्–गाय और बछड़े; ऒप्पार्–के समान बन जायेंगे; ॲन्ऱान्–बोले। ३५१५

तो भी एक कबूतर की जान बचाने के लिए जिन शिवि ने अपने शरीर को व्रणपूर्ण करते हुए काटके दिया था, वे भी तुम्हारी समानता नहीं कर सकेंगे। फिर उससे किसी अन्य कार्य की बात क्यों उठायी जाय? बड़े कृपालु कहलानेवाले लोग जब अपनों पर कोई संकट आया देखते हैं तब बछड़े की माता गाय के समान बन जाते हैं। ३५१५

शालिहै मुदल वान पोर्प्परन् दाङ्गिर् ऱॆल्लाम्
नोल्निऱ नायि ऱत्तन नॆडियवन् मुऱैयि नीक्किक्

कोल्शोरि तनुवुङ् गोट्रर् वनुमन्कै कोडुत्तुक् कोण्डल्
मेल्निरै कुन्ऱ् मोन्ऱिऩ् मेय्म्मॅलि वाट्रर् लुट्रान् 3516

चालिकै मुतल आत्-कवच आदि; पोर्-युद्ध के लिए; परम् ताङ्किरुङ्कॅल्लाम्-जो भार ढोते रहे उन सबको; मुऱैयित् नीक्कि-क्रम से उतारकर; नील् निर नायिऱ अन्नत-नीलवर्ण के सूर्य के समान; नॅटियवन्-श्रीराम; कोल् चोरि-शरवर्षी; ततुवुम्-कोदण्ड को; कोट्रम्-और विजयी; अनुमन् कै कोटुत्तु-हनुमान के हाथ में देकर; कोण्टल् मेल्-मेघ जिस पर; निरै-आश्रय पा रहा था; कुन्रम् ओन्ऱिन्-एक पर्वत पर; मॅय् मॅलिवु-शरीर का श्रम; आट्रल् उट्रात्-दूर करने लगे। ३५१६

फिर श्रीराम ने कवच आदि युद्ध-भार-वस्तुएँ क्रम से उतारीं। नीलवर्ण सूर्य-सम उन्होंने शरवर्षी कोदण्ड को विजयी हनुमान के हाथ में दिया। फिर एक पर्वत पर विश्राम करने गये, जो मेघों का आश्रय बना रहता था। ३५१६

32. वानरर् कळङ्गाण् पडलम् (वानर-समरांगण-दर्शन पटल)

आयपिन् कवितन् वेनुडु सळप्परुन् दानै योडु
मेयिन्न न्रिरामन् पादम् विदिमुरै वणङ्गि वीन्द
तीयवर् पॅरुमै नोक्कि नडुक्कमुन दिहैप्पु मुट्रार्
ओय्वुरु मनत्ता रोन्रु मुणर्न्दिलर् नाण मुट्रार् 3517

आयपिन्-इस घटना के बाद; कवि तन् वेन्तुम्-कपिराज भी; अळप्पु अरु-अपार; तानैयोटुम्-सेना के साथ; इरामन् पातम्-श्रीराम के चरणों में; विति मुऱै-यथाविधि; वणङ्कि-प्रणमन करके; मेयितन्-पास आया; वीन्त-जो मरे उन; तीयवर् पॅरुमै-दुष्टों का गौरव; नोक्कि-देखकर; नटक्कमुम्-भय; तिकैप्पुम्-और चकितता; उट्रार्-पा गये; ओय्वु उरु मनत्तार् ओन्रुम् उणर्न्तिलर्-कुछ सोच नहीं सके; नाणम् उट्रार्-शर्मिन्दा हुए। ३५१७

इसके बाद कपिराज अपनी अपार सेना लेकर श्रीराम के पास आया और उनके चरणों में यथाविधि प्रणमन किया। मरे हुए दुष्ट राक्षसों की विपुलता देखकर उन्हें भय और विस्मय हुआ। शिथिलमन होकर वे लज्जित हुए। ३५१७

मूण्डॅळु शेनै वॅळ्ळ मुलहॊरु मून्ऱु मुट्रि
नीण्डुळ वदनै यैय वॅङ्ङन निमिर्न्द वॅन्ट्रान्
तूण्डिरण् डनैय दिण्डोट् चूरियन् शिऱुवन् शोल्लक्
काण्डिनी यरक्कर् वेन्दन् ऱन्नॊडुङ् गळत्ते यॅन्ट्रान् 3518

तूण् तिरण्टनैय-खम्भे के समान पृथुल; तिण् तोळ्-सुदृढ़ कंधों वाले; चूरियन् चिऱुवन्-सूर्य के पुत्र ने; मूण्टु ॲळु-तत्पर हो उठा; चेनै वॅळ्ळम्-सेना का प्रवाह; उलकु ओरु मून्ऱुम् तीनों लोकों में; मुट्रि-भरकर; नीण्टु उळ-उनसे

भी आगे फैला है; ऐय–प्रभु; अतर्तै–उसके; ॲङ्ङतम्–कैसे; निमिर्न्ततु–पार हुए; ॲन्ऱात्–पूछा; चॉन्ल–पूछने पर; अरक्कर् वेन्तत् तन्नॊडुम्–राक्षस राजा के साथ; नी कळत्तै काण्टि–तुम मैदान का संदर्शन करो; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ३५१८

खम्भे के समान पुष्ट स्थूल कंधों वाले सूर्यसूनु ने श्रीराम से पूछा कि हे प्रभु! युद्धतत्पर राक्षस-सेना तीनों लोकों में व्याप्त होकर बाहर भी चली थी। आपने उसे पार पाया सो कैसे? तब श्रीराम ने कहा कि चलो! राक्षसराज को साथ लेकर युद्धस्थल को देख आओ। ३५१८

तॊळुदनर् तलैव रॆल्लान् दोन्ऱिय काद लूण्ड
ॲळुहॆन विरैविर् चॆन्ऱा रिरावणऩ् किळव लोडुङ्
कळुहॊडु परुन्दुम् बाऱुम् बेय्हळुङ् गणङ्गण् मऱ्ऱुङ्
गुळुविय कळत्तैक् कण्णि नोक्किनर् दुणुक्कङ् गॊण्डार् 3519

तलैवर् ॲल्लाम्–सभी यूथपों ने; तॊळुतनर्–वन्दना की; तोन्ऱिय कातल्–उठी इच्छा की; तूण्ट–प्रेरणा से; इरावणऩ्कु इळवलोटुम्–रावण के कनिष्ठ भ्राता के साथ; ॲळुक ॲन–उठो कहकर; विरैविल्–जल्दी; चॆन्ऱार्–गये; कळुकॊटु–गीधों के साथ; परुन्तुम्–बाज और; पाऱुम्–चील; पेय्कळुम्–और भूत; मऱ्ऱुम्–और अन्य; कणङ्कळुम्–गण; कुळुविय कळत्तै–जहाँ भीड़ों में थे उस युद्धस्थल को; कण्णिन्–नोक्कितर्–आंखों से देखकर; तुणुक्कम् कॊण्टार्–भयभीत हुए। ३५१९

यूथपों ने श्रीराम का नमस्कार किया। इच्छा उकसाती रही तो उठो कहकर उठे और रावण के छोटे भाई विभीषण के साथ उस युद्धस्थल को जाकर देखा, जहाँ बाज, गीध, चील, भूत और अन्य जीव भीड़ लगाये घूम रहे थे। उन्हें भय लगा। ३५१९

एङ्गिनार् नडुक्क मुऱ्ऱा रिरैत्तिरैत् तुळ्ळ मेऱ
वीङ्गिनार् वॆरुव लुऱ्ऱार् विम्मिना रुळ्ळम् वॆम्ब
ओङ्गिनार् मॆळ्ळ मॆळ्ळ वुयिर्निलैत् तुवहै यूऩ्ऱ
आङ्गव रुऱ्ऱ तन्मै यार्हॊलो पहरऱ् पालार् 3520

एङ्कितार्–व्यग्र हुए; नटुक्कम्उऱ्ऱाम्–कांपे; इरैत्तु इरैत्तु–लगातार हल्ला मचाकर; उळ्ळम् एऱ–मन में भय के बढ़ने से; वीङ्कितार्–फूले; वॆरुवल् उऱ्ऱार्–(भय प्रकट करनेवाले शब्द) बकने लगे; उळ्ळम् वॆम्प–मन तप्त हुआ तो; विम्मितार्–सिसके; मॆळ्ळ मॆळ्ळ–धीरे-धीरे; उयिर् निलैत्तु–प्राण स्थिर हुए; उवकै ऊन्ऱ–संतोष स्थिर हुआ; ओङ्कितार्–सिर ऊँचा किया; आङ्कु–तब; अवर् उऱ्ऱ तन्मै–उनका जो हाल हुआ; यार् कॊलो–वह कौन हो; पकरऱ् पालार्–वर्णन कर सकेंगे। ३५२०

उनका विचित्र हाल हुआ। पहले व्यग्र हुए, काँपे। निरंतर

हल्ला मचाया। भय अधिक बढ़ा तो फूल गये। वकने लगे। मन तप्त हुआ तो सिसके। फिर धीरे-धीरे प्राण स्थिर हुए तो आनन्द उमँग आया। तब वे सिर उन्नत किये खड़े रहे। तब उनकी जो स्थिति हुई रही उसका वर्णन कौन ही कर सकता है? (कोई नहीं।)। ३५२०

आयिरम् परुवङ् गण्डुङ् गाट्चिक्कोर् करैयिऱ् ऱऩ्ऱाल्
मेयिऩ तुऱैह डॊऱुम् विम्मिनार् निऱ्प दल्लाल्
पाय्दिरैप् परवै येऴुङ् गाण्गुरुल् वदह रैऩ्ऩ
नीयिरुन् दुरैत्ति यॆऩ्ऱार् वीडण ऩॆऱियिऱ् चॊल्वान् 3521

पाय् तिरै–झपटनेवाली तरंगों के; परवै एऴुम् अॆऩ्ऩ–सात समुद्रों के समान; काण्कुरुम्–दिखनेवाले; पतकर्–पातक; मेयिऩ–जहाँ-जहाँ रहे उन; तुऱैकळ् तोऱुम्–सभी स्थलों में; विम्मिनार्–सिसकते; निऱ्पतु अल्लाल्–खड़े रहने के सिवा; आयिरम् परुवम् कण्टुम्–हजार साल देखें तो भी; काट्चिक्कु–देखने के लिए; ओर् करैयिऱ्ऱु अऩ्ऱु–कोई सीमा वाला नहीं; नी–तुम; इरुन्तु–सावधानी से; उरैत्ति–कहो; अॆऩ्ऱार्–कहा वानरों ने; वीटणऩ्–विभीषण ने; नॆऱियिल् चॊल्वान्–क्रम से बखाना। ३५२१

उछलकर चलनेवाली तरंगों से पूर्ण सातों समुद्र सम्मिलित हों, ऐसे दिखनेवाले पातक राक्षस जहाँ-जहाँ रहे उन स्थलों को देखने पर वानर सिसककर खड़े रह जाने के सिवाय पूर्ण रूप से देख लें, यह हजार साल में भी सम्भव नहीं लगता था। अतः वानरों ने विभीषण से कहा कि तुम ही इसका विवरण बता दो। विभीषण ने क्रम से कहना शुरू किया। ३५२१

काहप् पन्दर्च् चॆङ्गळ मॆङ्गुञ् जॆऱिकाल
वेहत् तम्बिऱ् पॊऩ्ऱिऩ वेनु मुडलॊन्ऱि
मेहच् चङ्गम् दॊक्कऩ वीऴुम् वॆऴियिऩ्ऱि
नाहक् कुऩ्ऱम् निऩ्ऱऩ काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3522

नमरङ्काळ्–हे हमारे लोगो; काकम् पन्तर्–कौओं के वितान के नीचे; चॆ कळम् मॆङ्कुम्–(रक्त से) लाल समरांगन में; चॆऱि–घने; कालम् वेकत्तु अम्पिल्–यम-सम वेगवान अस्त्र से; पॊन्ऱिऩ एऩुम्–मरे पड़े हैं तो भी; उटल् ऒन्ऱि–शरीरों के मिले रहने से; मेकम् चङ्कम्–मेघसमूह; तॊक्कऩ वीऴुम्–मिलकर जहाँ रहते हैं; नाकम् कुऩ्ऱम्–हाथियों से भरे पर्वत; वॆऴियिन्ऱि–बिना खाली स्थान के; निऩ्ऱऩ काण्मिन्–खड़े हैं, देखो। ३५२२

हे हमारे लोगो! कौओं के वितान के नीचे रक्त के कारण लाल दिखनेवाले युद्धस्थल में श्रीराम के यम के समान अस्त्रों से आहत होकर हाथी मरे पड़े हैं। उनके शरीर सटे रहते हैं। वे उन पर्वतों के समान दिखते हैं जिन पर मेघ आश्रय पाते हैं। देखो। ३५२२

वॆन्ऱिच् चॆङ्गण् वॆम्मै यरक्कर् विशैयूर्व
ऒन्ऱिऱ् कॊन्ऱुऱ् ऱम्बु तलैप्पट् टुयिर्नुङ्गप्
पॊन्ऱिच् चिङ्ग नाह वड्क्कल् पॊलिहिन्ऱ
कुन्ऱिऱ् ऱुञ्जुन् दन्मै निहर्क्कुङ् गऱिकाणीर् 3523

वॆन्ऱि-(पहले) विजयी; चॆं कण्-लाल आँखों वाले; वॆम्मै अरक्कर्-क्रूर राक्षस; विशै ऊर्व-सवेग जानेवाले; ऒन्ऱिऱ्कु ऒन्ऱु उऱ्ऱु-परस्पर आगे जानेवाले; अम्पु-रामबाणों ने; तलैप्पट्टु-उन पर लगकर; उयिर् नुङ्क-प्राण खाये, इसलिए; पॊन्ऱि-मरकर; नाकम् अट्क्कल्-सर्प-समेत पास की उपगिरियों के साथ; पॊलिकिन्ऱ-जो शोभायमान है; कुन्ऱिल्-उस पर्वत में; तुञ्चुम्-जो सोता है; चिङ्कम् तन्मै-उस सिंह के स्वभाव से तुल्य; निकर्क्कुम् कुऱि काणीर-स्वभाव देखो। ३५२३

उन अरुणाक्ष क्रूर राक्षसों को देखो जो पहले विजयी ही रहे हैं। श्रीराम के परस्पर होड़ लगाकर आगे चलनेवाले वेगवान अस्त्रों के उनके प्राणों को सोख देने से वे मरे पड़े हैं। वे ऐसे सोते हुए शेरों के समान दिखते हैं, जो नागों से पूर्ण उपगिरियों के साथ रहनेवाले पर्वत में सोते हों। वैसे लक्षणों से युक्त उन्हें देखो। ३५२३

अळियिऱ् पॊङ्गु मङ्गण ऩेवु मयिल्वाळिक्
कळियिऱ् पट्टार् वाण्मुह मिन्नुङ् गरैयिल्लाप्
पुळिनत् तिट्टिऱ् कण्णहन् वारिक् कडल्पूत्त
नळिनक् काडे यॊप्पन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3524

नमरङ्काळ्-हमारे लोगो; अळियिल् पॊङ्कुम्-दया-भरे; मम् कणन्-सुन्दराक्ष; एवुम्-द्वारा प्रेरित; अयिल् वाळि-तीक्ष्ण शर; कळियिल् पट्टार्-खुशी से जो मरे उनके; वाळ् मुकम्-उज्ज्वल मुख; मिन्नुम्-जहाँ चमकते हैं; करै इल्ला-उन अपार; पुळिनम् तिट्टिन्-बालू के टीलों से युक्त; कण् अकल्-विशाल; वारि-जल के; कटल् पूत्त-समुद्र में खिले; नळिनम् काटे ऒप्पन-कमलवन ही के समान दिखते; काण्मिन्-देखो। ३५२४

हे बंधुजनो ! दयालु श्रीराम द्वारा प्रेरित अस्त्रों से आहत होकर भी जो खुशी से मरे उनके उज्ज्वल मुख अपार चमकीले पुलिनों से युक्त जल-सागर पर खिले कमलों के समान दिखते हैं। देखो। ३५२४

पूवाय् वाळिच् चॆल्लॆऱि कालैप् परिपॊन्ऱक्
कोवार् विण्वाय् वॆण्गॊडि तिण्पा यॊडुकूड
मावार् तिण्डेर् मण्डुव लातीर् मऱिवेलै
नावाय् मानच् चॆल्वन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3525

नमरङ्काळ्-बंधुजनो; को आर्-अतिश्रेष्ठ; विण्वाय्-गगनस्पर्शी; वॆळ् कॊटि-श्वेत ध्वजा वाले; मा आर्-अश्व-जुते; तिण् तेर्-सुदृढ़ रथ; पू

वाय्–तीक्ष्णमुखी; वाळि–शर रूपी; चॆल् ऎऱि काले–अशनि जब फटी; परि पॊऩ्ऱ–(रस्सी से बँधे) अश्व मर गिरे; मण्टुतलाल्–विपुल परिमाण में बले; नीर् मऱि वेलै–(अतः) जलतरंगें जहाँ टकराकर मुड़ती हैं उस समुद्र में; तिण् पायॊटु कूट–मजबूत पाल के साथ; नावाय् माऩ–नौकाओं के समान; चॆल्वऩ–जाते; काण्मिऩ्–देखो। ३५२५

हे वंधुओ ! जब श्रेष्ठ, गगनस्पर्शी ध्वजाओं से अलंकृत व अश्वों से जुते रथों पर रामवाण अशनियों के समान गिरे, तब अश्व मरे। वे रथ रक्त में बहकर समुद्र में गये है। वे टकराती तरंगों के सागर पर पालों-सहित नौकाओं के समान दिखते हैं। देखो। ३५२५

ऒऴुहिप् पायु मुम्मद वेऴ मुयिरोडुम्
ऎऴुहिऱ् किल्लाच् चॆम्बुनल् वॆळ्ळत् तिडैयिऱ्ऱ
पऴहिऱ् ऱल्लाप् पः(ह्)ऱिरै तूङ्गुम् बडर्वेलै
मुऴुहित् तोऩ्ऱु मीऩर शॊक्कुम् मुऱैनोक्कीर् 3526

ऒऴुकि पायुम्–स्रव कर बहनेवाले; मुम्मतम् वेऴम्–त्रिमद के हाथी; उयिरोटुम्–जीवंत हैं तो भी; ऎऴुकिऱ्किल्ला–उठ नहीं पाते; चॆम् पुतल् वॆळ्ळत्तु इडै–लाल जल (रक्त) के प्रवाह-मध्य; इऱ्ऱ–फँसकर मरे; पऴकिऱ्ऱु अल्ला–अपरिचित; पल् तिरै तूङ्कुम्–अनेक तरंगें जिस पर उठती-गिरती उस; पटर् वेलै–विशाल सागर में; मुऴुकि तोऩ्ऱुम्–डूबते-उतराते; मीऩ् अरचु–मत्स्यराज के; ऒक्कुम् मुऱै–समान दिखने का प्रकार; नोक्कीर्–देखो। ३५२६

त्रिविध (कपाल, गाल और वीज का) मद बहानेवाले हाथी शिथिल पड़े, जीवित रहने पर भी उठ नहीं पाये। इसलिए रक्त-प्रवाह में फँस गये। वे अपरिचित, टकराती-मुड़ती तरंगों वाले विशाल सागर में डूबते-उतराते मत्स्यराज के समान लगते हैं। देखो। ३५२६

कडक्का रॆऩ्ऩप् पॊङ्गु कवन्दत् तॊडुकैहळ्
तॊडक्का निऱ्कुम् बेयिल यत्तिऩ् ऱॊऴिल्पण्णि
मडक्को विल्ला वार्कडि मक्कूत् तमैविप्पान्
नडक्काल् हाट्टुङ् गण्णुळ रॊक्कुन् नमरङ्गाळ् 3527

नमरङ्काळ्–वंधुजनो; कटम् कार् ऎऩ्ऩ–शरीर मेघ के समान हैं; पॊङ्कु–उमंग के साथ उठनेवाले; कवन्तत्तॊटु–कवंधों के साथ; कैकळ्–हाथ; तॊटक्का निऱ्कुम्–लगाये जो रहे; पेय्–वे भूत; इलयत्तिऩ् तॊऴिल् पण्णि–लयकार्य करके मटक्कु ओवु इल्ला–विना मोड़ के; वार् पटिमम् कूत्तु–लम्बी प्रतिमा-नाच को; अमैविप्पाऩ्–रचने को; नटम् काल् नाट्टुम्–नृत्य-चरण-मुद्रा बनानेवाले; कण्णुळर् ऒक्कुम्–नृत्याचार्य के समान दिखते। ३५२७

हे हमजनो ! मेघ-सम शरीरों के साथ कवंध उठते हैं। भूत उन पर हाथ डाले लयसहित नृत्य-मुद्रा में खड़े हैं। वे नृत्याचार्य के समान

लगते हैं, जो अपने शिष्यों को अभंग प्रतिमा नृत्य की मुद्रा दिखाने के लिए चरणभंगिमा दिखाते हों। ३५२७

मऴुविऱ् कूर्वाय् वन्ब लिडुक्कित् वयवीरर्
कुऴुविऱ् कॉण्डार् नाडि तॊडक्कप् पॊऱ्िकूट्टत्
तऴुविक् कॉळ्ळक् कळ्ळ मतप्पे यवैतऴि
नऴुविच् चॆल्लु मियल्बित्त काण्मित् तमरङ्गाळ् 3528

नमरङ्काळ्-बंधुजनो; वाय्-मुख में; मऴुविल् कूर् वत्-परशु से भी तीक्ष्ण; पल्-दाँतों के और; इटुक्कु इल्-सुदृढ़; वयस् वीरर्-विजयी वीर; कुऴुविल् कॊण्टार्-दलबद्ध (उनको); नाटि--नसें; तॊटक्कम्-बाँधनेवाले; पॊऱ्ि-यन्त्र के समान; कूट्ट-फँसाकर; तऴुवि कॊळ्ळ-लपेटे रहे तो; कळ्ळम् मतम् पेय्-वंचक-मन भूत; अवै तऴ्ि-उनको दूर ढकेलकर; नऴुवि चॆल्लुम्-फिसल जाने के; इयल्वित-स्वभाव वाले को; काण्मित्-देखो। ३५२८

बंधुजनो! उन विजयी वीरों को देखो, जिनके मुख में परशु के जैसे तीक्ष्ण दाँत हैं! भीड़ में पड़े रहते उनकी नसें निकली हैं और यंत्र के समान फँसाने के प्रयास में भूतों को लपेट लेती हैं। पर वे वंचक मन वाले भूत उनको हटाकर किसी विध पकड़ से फिसल जाते हैं। देखो। ३५२८

पॊन्तित् तोडै मित्पिऱऴ् नॆऱ्रिप् पुहर्वेऴम्
पित्तुम् मुत्तुम् माऱित्त वीऴ्विऱ् पिणैयुऱ्र
तन्नित् नेरा मॆय्यिरु पालुन् दलैपॆर्र्
अॆत्तुन् दत्मैक् केय्वत्त पल्वे ऱिवैकाणीर् 3529

पॊत्तित् ओटै-स्वर्णमुखपट्ट की; मित् पिऱऴ्-छवि से शोभित; नॆऱ्ऱि-भाल पर; पुकर्-लाल बिंदियों से युक्त; वेऴम्-दो हाथी; वीऴ्विल्-जब (मरकर) गिरे; पित्तुम् मुत्तुम् माऱित्त-आगे-पीछे मुड़कर; पिणै उऱ्ऱ-बद्ध हो गये; तत्तिल् नेरा-परस्पर सम; मॆय् इरु पालुम्-शरीर के दोनों तरफ़; तलै पॆऱ्ऱ-सिर प्राप्त (विचित्र जानवर); अॆत्तुम् तत्मैक्कु-कहलाने योग्य; ऐय्वत्त-जो रहते हैं; पल्वेऱु-विविध; इवै काणीर्-इनको देखो। ३५२९

मुखपट्टशोभित भाल पर लाल बिंदिया लिये हाथी जब गिरे तब आपस में गुँथकर बेतरह गिरे हैं। ऐसी विचित्र दशा में गिरे हैं कि लगता है शरीर के दोनों तरफ़ सिर लगे हों। ऐसे अनेक पड़े हैं। देखो। ३५२९

नामत् तिण्पोर् मुऱ्ऱिय कोबन् नहैनाऱुम्
पामत् तॊत्ती रत्त निऱत्तोर् पहुवायहऴ्
तूमत् तोडुम् वॆङ्गन लित्तुन् जुडर्हित्ऱ
ओमक् कुण्ड मॊप्पत्त पल्वे ऱिवैकाणीर् 3530

नामम्–डरावने; तिण् पोर्–कठोर युद्ध में; मुऱ्ऱिय कोपम्–बढ़ा-चढ़ा कोप; नकै नाऴम्–हँसी में प्रकट; पास्–विस्तृत; अ–उस; तोल् नीर् अऩ्ऩ–प्राचीन जल-भरे समुद्र के समान; निऱत्तु–रंग वाले; ओर्–अपूर्व; पकु वाय्कळ्–विभक्त मुख; तूमत्तोटुम्–धुएँ के साथ; वॆम् कऩल्–भयंकर आग; इऩ्ऩुम् चुटर्किऩ्ऱ–जिनमें अब भी जलती है उन; ओमम् कुण्टम् ऒप्पऩ–होमकुंडों के समान हैं; पल् वेऱु–विविध अनेक; इवै काणीर्–ये देखो। ३५३०

अतिभयंकर व कठोर युद्ध में निपट क्रोध और हास से भरे, पुरातन जलपूर्ण सागर के समान रंग के और फटे से खुले राक्षसों के मुखों को देखो जो धुएँ और जलती दारुण अग्नि के साथ रहते होमुकुंडों के समान दिखते हैं। ३५३०

मिऩ्ऩुम् मोडै याडल् वयप्पोर् मिडल्वेऴक्
कऩ्ऩम् मूलत् तऱ्ऱऩ वॆण्चा मरैकाणीर्
मऩ्ऩुम् मानीर्त् तामरै माऩुम् वदऩत्त
अऩ्ऩम् मॆल्लत् तुञ्जुव वॊक्कुम् मवैहाणीर् 3531

मिऩ्ऩुम्–ज्वलन्त; ओटै–मुखपट्ट; आटल्–और नृत्यशील; वयम् पोर्–विजयी युद्ध में; मिटल्–बल दिखाते जो रहे; वेऴम्–हाथियों के; कऩ्ऩम् मूलत्तु–कर्णमूल से; अऱ्ऱऩ–निकले दिखनेवाले; वॆण् चामरै–श्वेत चँवर; काणीर्–देखो; मऩ्ऩुम्–नित्य; मा नीर्–बहुत जल में; तामरै माऩुम्–कमलपुष्प-सदृश; वतऩत्तु–वदनों पर लगे; अवै–वे चँवर; अऩ्ऩम्–हंस; मॆल्ल–धीरे से; तुञ्चुव ऒक्कुम्–सोते जैसे लगते हैं। ३५३१

चमकदार मुखपट्ट से अलंकृत, नृत्यशील उन हाथियों के, जिन्होंने कठोर युद्ध में अपना बल दिखाया था, कनपटी से गिरे हुए चामरों को देखो। श्रेष्ठ जल में के खिले कमलों के समान लगनेवाले वीरों के मुखों पर पड़े रहते वे चामर धीरे से सोते हंसों के समान लगते है, देखो। ३५२१

ओऴिऩ् मुऱ्ऱा उऱ्ऱयर् वेऴत् तॊऴिर्वॆणगो
डाऴिऩ् मुऱ्ऱाच् चॆम्बुऩल् वॆळ्ळत् तवैहाणीर्
कोऴिऩ् मुऱ्ऱाच् चॆक्करिऩ् मेहक् कुऴुविऩ्गण्
नाऴिऩ् मुऱ्ऱा वॆण्बिऱै पोलुम् नमरङ्गाळ् 3532

नमरङ्काळ्–साथियो; ओऴिऩ्–श्रेणियों में; मुऱ्ऱातु–बिना घेरे; उऱ्ऱु उयर्–(अलग-अलग) आक्रमण करके जो बढ़े; वेऴत्तु–उन गजों के; ऒऴिर् वॆण् कोटु–सुन्दर श्वेत दाँत; आऴिऩ् मुऱ्ऱा–वीरों से न भरे; चॆम् पुऩल् वॆळ्ळत्तवै–रक्त-प्रवाह में जो देखे गये; कोऴिऩ्–जल से; मुऱ्ऱा–न भरा; चॆक्करिऩ्–लाल रंग के; मेकम् कुऴुविऩ् कण्–मेघ-समूह-मध्य; नाऴिऩ् मुऱ्ऱा–जिसके दिन नहीं बढ़े थे; वॆण् पिऱै पोलुम्–उस बालचन्द्र के समान थे। ३५३२

हे हमारे लोगो ! हाथी पंक्तियों में न घेरकर अलग-अलग लड़ते रहे। उनके श्वेत दाँत उस रक्त-प्रवाह में तिरते हैं, जिसमें वीरों की लाशें नहीं हैं। वे जल से हीन व लाल रंग के मेघसमूह-मध्य बालचन्द्र के समान दिखते हैं, देखो। ३५३२

कॊडियुम् विल्लुङ् गोलॊडु वेलुङ् गुविदेरुन्
दुडियित् पादक् कुन्ऱिन् मिशैत्तोल् विशियित्तगट्
टॊडियुम् वॆय्योर् कण्णॆरि शॆल्ल वुडत्वॆन्द
तडियुण् डाडिक् कूळि तडिक्किन्ऱ इन्नकाणीर् 3533

कॊटियुम्–ध्वजा और; विल्लुम्–धनु; कोलॊटु–और शर; वेलुम्–‘वेल्’; कुवि–जिसमें भरपूर थे; तेरुम्–उस रथ में; तुटियित् पातम्–‘तुडि’ नामक भेरी के समान चरण भाग वाले; कुन्ऱिन् मिचै–पर्वतों (गजों) पर; तोल् विचियित्त फट्टु–चमड़े के बने हौदे पर; ओटियुम्–(रामबाण से आहत हो) मरे; वॆय्योर्–दुष्टों (राक्षसों) की; कण् ऍरि–आंख से निकली अग्नि; चॆल्ल–लगी इसलिए; उटन् वॆन्त–जो एक साथ पक्का; तटि उण्टु–मांस खाकर; कूळि–भूत; आटि–नाचकर; तटिक्किन्ऱन–मोटे बनते हैं; काणीर्–देखो। ३५३३

ध्वजा, धनु, शर, शक्तियाँ —ये जिसमें भरी हैं, उस रथ पर और ‘तुडि’ नामक भेरी के समान पैरोंवाले गजों के चमड़े के बने हौदों पर रहकर जो राम-बाण से मरे, उन वीरों की आँखों से निकली आग से मांस एक साथ पका और उस मांस को खाकर भूतगण नाचते हैं ! वह हाल देखो। ३५३३

शहरम् मुन्नीर्च् चॆम्बुनल् वॆळ्ळन् दडुमाऱ
महरन् नन्मीन् वन्दन कण्डु मनमुट्किच्
चिहरम् मन्न यावैहॊ लॆन्नच् चिलनाणि
नहरम् नोक्किच् चॆल्वन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3534

नमरङ्काळ्–हमराहो; चकरम् मुन्नीर्–सगरपुत्रखनित सागर में; चॆम् पुनल् वॆळ्ळम्–रक्त का प्रवाह; तटुमाऱ–डोलायमान है, इसलिए; चिल मकरम्–कुछ मकर; नन् मीन्–और अच्छे मत्स्य; वन्तन–जो आये; कण्टु–उन्हें देखकर; चिकरम् अन्न–शिखर-सम; यावै कॊल्–ये कौन हैं; ऍन्न–सोचकर; मनम् उट्कि–मन में भय का अनुभव करके; नाणि–शरमाकर; नकरम् नोक्कि–नगर की तरफ़; चॆल्वन–जाते हैं (गज); काण्मिन्–देखो। ३५३४

हे बंधुओ ! सागर में रक्त-प्रवाह जाकर टकराता है और दोलायमान रहता है। उसमें लौटती धारा के साथ कुछ मकर और मत्स्य आ जाते हैं। उन्हें देखकर गज सोचते हैं कि ये शिखर-सम प्राणी क्या है ? उनसे डरते हैं और शरमाकर वे नगर की ओर जाते हैं। उनको देखो। ३५३४

विण्णिऱ् पट्टार् वॆऱ्पुरऴ् कायम् बलमॆऩ्मेल्
मण्णिऱ् चॆल्वार् मेऩियिऩ् वीऴ मडिवुऱ्ऱार्
ऎण्णिऱ् ऱीरा वत्तऩवै तीरु मिडलिल्लाक्
कण्णिऱ् ऱीयार् विम्मि युळैक्कुम् बडिकाणीर् 3535

विण्णिल् पट्टार्–आकाश में जो मरे उनके; वॆऱ्पु उरऴ्–पर्वतोपम; कायम्–शरीर; पल–अनेक; मॆऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; मण्णिल् चॆल्वार्–भूमि पर जानेवाले लोकों के; मेऩियिऩ् वीऴ–शरीरों पर गिरते, इसलिए; मटिवुऱ्ऱार्–मर जाते हैं; ऎण्णिल् तीरा–गिनती में नहीं आ सकते; अत्तऩवै–उनसे; तीरुम् मिटल् इल्ला–हटने की शक्ति न होने से; कण्णिल् तीयार–आँखों में अग्नि के साथ; विम्मि–रोते हुए; उळैक्कुम्पटि–दुःखी होते है वह हाल; काणीर्–देखो। ३५३५

आकाश में जो मरे उनके शरीर लगातार ऊपर से नीचे गिरते रहते हैं। तब नीचे भूमि पर जानेवाले वीरों पर वे गिरते हैं तो वे मर जाते हैं। उनकी संख्या गिनती में नहीं आती। और उन गिरती लाशों के नीचे दबकर अलग न हट सकने के कारण लोग आँखों में अंगारे भरकर रोते-सिसकते दुःखी होते हैं। उनका हाल देखो। ३५३५

अच्चिऩ् ऱिण्डे रात्तैयिऩ् मामे लहऩ्वाऩिऩ्
मॊय्च्चुच् चॆऩ्ऱार् मॊय्हुरु दित्ता रैहळ्मुट्ट
उच्चिच् चॆऩ्ऱा ऩायिऩुम् वॆय्यो ऩुदयत्तिऩ्
कुचचिच् चॆऩ्ऱा ऩॊत्तुळ नाहुङ् गुऱिकाणीर् 3536

अच्चिऩ् तिण् तेर्–धुरी-सहित सुदृढ़ रथ पर और; आत्तैयिऩ्–हाथियों पर; मा मेल्–अश्वों पर; अकल् वाऩित्–विशाल आकाश में; मॊय्च्चु–भीड़ लगाकर; चॆऩ्ऱार्–जो गये उनके; मॊय् कुरुति तारैकळ्–पुष्ट रक्त की धाराएँ; मुट्ट–उस पर वहाँ इससे; वॆय्योऩ्–किरणमाली; उच्चि–(आकाश-मध्य) ऊँचे स्थान में; चॆऩ्ऱाऩ् आयिऩुम्–पहुँच गया तो भी; उतयत्तिऩ् कुच्चि–उदयाचल की चोटी पर; चॆऩ्ऱाऩ् ऒत्तु–गया जैसा; उळऩ्–रहता है; आकुम् कुऱि काणीर्–वह दृश्य देखो। ३५३६

धुरी-सहित सुदृढ़ रथों पर और गजों और अश्वों पर जो वीर थे और जो आकाश में चलते थे वे मरे और उनका पुष्ट रक्त-प्रवाह सूर्य पर लगा तो किरणमाली मध्याह्न में आकाश की चोटी पर रहते हुए भी उदयाचलस्थ के समान लगता है। वह लक्षण देखो। ३५३६

काऱोय् मेनिक् कण्डहर् कण्डप् पडुकालै
आऱो वॆऩ्ऩ विण्पडर् शॊऩ्जो रियदाहि
वेऱोर् निऩ्ऱ वॆण्मदि शॆङ्गेळ् निऱम्विम्मि
माऱोर् वॆय्योऩ् मण्डिल मॊक्किऩ् ऱदुहाणीर् 3537

काल् तोय्–पवनगति वाले; मेऩि–शरीरों वाले; कण्टकर्–कंटक; कण्टम्

पट्टु काले–जब खण्डित हुए तब; विण् पटर्–आकाश में जो व्यापा; चॅ चोरि अतु–वह लाल रक्त; आरो ऍन्न आकि–नदी क्या, ऐसा बना, इससे; वेरु नितृर्–अलग जो रहा वह; ओर् वॅळ् मति–विशिष्ट श्वेत चन्द्र; चॅम् केळ् निरम्–लाल रंग से; विम्मि–खूब भरकर; माऱु–उससे भिन्न; ओर् वॅय्योन् मण्डिलम्–एक सूर्यमण्डल के; ऑक्कित्ऱतु–के समान; काणीर्–देखो। ३५३७

पवनगति कंटक जब छिन्न हुए तब रक्त आकाश में व्यापा। वह नदी का भ्रम पैदा करते हुए बह चला। तब वहाँ रहा चन्द्र रक्त में भीगकर लाल रंग से अधिक रंजित होकर विरुद्ध सूर्यमंडल के समान दिखता है, देखो। ३५३७

वान्नैय मण्णनैय वळर्न्दॅळुन्द पॅरुङ्गुरुदि महर वेलै
तान्नैय वुऱ्ऱळुम्बा रवैतॅळित्त पुदुमळैयिन् ऱुळ्ळि ताङ्गि
मीन्नैय नऱुम्बोदुम् विरैयरुन्दुञ् जिऱैवण्डु निऱम्वे ऱॅय्दिक्
कान्हमुङ् गडिपॉळिलु मुऱियीन्ऱ पोन्ऱॉळिर्व काण्मिन् काण्मिन् 3538

वान् नतैय–आकाश भिगोते हुए; मण् नतैय–भूमि भिगोते हुए; वळर्न्तु ऍळुन्त–भर जो उठा; पॅरु कुरुति–उस विपुल रक्त से; मकर वेलै तान्–मकरालय को भी; नतैय–भिगोते हुए; उऱ्ऱु ऍळुम्–लाशों से निकले; तॅळित्त–छिड़के हुए; पुतु मळैयिन् तुळ्ळि–नवीन वर्षा के कणों को; पारवै–भूमि के थल; ताङ्कि–धारण करते इसलिए; मीन् अतैय–नक्षत्र-सम; नऱु पोतुम्–सुगंधित फूल; विरै अरुन्तुम्–मधुपायी; चिऱै वण्टुम्–पंखों से युक्त भ्रमर; निऱम् वेऱु ऍय्ति–दूसरा रंग पा जाते हैं; कानकमुम्–वनस्थल; कटि पॉळिलुम्–सुगन्ध-भरे उपवन; मुऱि ईन्ऱ पोन्ऱु–कोपलें निकालते-से; ऑळिर्व–शोभायमान हैं; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५३८

आकाश और भूमि को भिगोते हुए रक्त उमड़ा और उसने समुद्र को भी रंजित कर दिया। लाशों के नव मेघों से छिड़की बूंदों को भूमि धारण करती रही। तब नक्षत्र-सम फूल, और फूलों का मधु पीनेवाले सपंख भ्रमर रंग बदल गये। तो वन और उपवन नयी कोंपलें निकालते-से लगते हैं, देखो। ३५३८

वरैबॉरुद मदयान वळैमरुप्पुङ् गिळर्मुत्तु मणियुम् वारित्
तिरैपॉरुदु पुरङ्गुविप्पत् तिरङ्गॉळ्पणै मरमुरुट्टिच् चिऱैप्पुळ् ळार्प्प
नुरैक्कॉडियुम् वॅण्कुडैयुञ् जामरैयु मॅन्नच्चुमन्दु पिणत्ति ऩोन्मैक्
करैपॉरुन्दुङ् गडन्मडुक्कुङ् गडुङ्गुरुदिप् पेराऱु काण्मिन् काण्मिन् 3539

वरै पॉरुत–पर्वतों से लड़ आये; मतम् यानै–मत्त हाथी के; वळै मरुप्पुम्–वक्र दाँत और; किळर् मुत्तुम्–छिटके हुए मोती; मणियुम्–रत्न; वारि–खींच लेकर; तिरै–तरंगें; पॉरुतु–टकराकर; पुरम् कुविप्प–एक ओर ढेरों में लगा देती हैं; तिऱम् कॉळ्–विभक्त; पणै–डालों-सहित; मरम्–तरु को; उरुट्टि–लुढ़काती हैं;

चिऱ्‍ पुळ् आर्प्प–(इसलिए) पक्षी कलरव करते; कॉटियुम्–ध्वजा; वॅण् कुटॅयुम्–और श्वेत छत्र; चामरॅयुम्–चामर इनको; नुरॅ ऑत्त–फेनों के समान; चुमन्तु–धारण कर; पिणत्तिन्–लाशों के; मोन्मॅ–सुदृढ़; करॅ पॉरुन्तुम्–किनारों के अंदर (बहकर); कटल् मट्कुम्–समुद्र में जो पहुँचाती हैं; कट्टु कुरुति पेर् आऱु–वेगवान रक्त की बड़ी नदी; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५३९

लहरें टकराती हैं और पर्वत से टकरानेवाले मत्त गजों के वक्र दाँतों, कांतिमय मुक्ताओं और रत्नों को बहा ले जाकर उनकी राशियाँ लगा रही हैं। टूटे और डालों-सहित पेड़ों को लुढ़काती हैं और पक्षीगण शोर मचाते हैं। रक्त की तरंग-सहित नदियाँ ध्वजाओं-श्वेतछत्रों और चामरों को फेनों के समान ले जा रही हैं। उनकी लाशों के सुदृढ़ किनारे बने हैं। वे वेग से जाकर समुद्र में मिलती हैं। उन बड़ी-बड़ी नदियों को देखो। ३५३९

कॅक्कुन्ऱप् पॅरुङ्गरॅय निरुदर्पुयक् कर्चॅऱिन्द कदलिक् कानम्
मॊय्क्किन्ऱ परित्तिरॅय मुरट्करिक्कॅक् कोण्माव मुळरिक् कानिन्
नॅय्क्किन्ऱ वाण्मुहत्त विळ्ङ्गुडरिन् पाशडॅय निणमेर् चेऱ्ऱ
उय्क्किन्ऱ वुदिरनिऱक् कळङ्गुळङ्ग ळुलप्पिऱन्द वुवॅयुङ् गाण्मिन् 3540

कॅ–हाथ (सूँड़) वाले; कुन्ऱम्–पर्वतों (गजों) को; पॅरु करॅय–बड़े किनारों के रूप में जो पाये हुए हैं; निरुतर् पुयम्–राक्षसों के हाथों के; कल् चॅऱिन्त–उपल-भरे; कतलि कानम् मॊय्क्किन्ऱ–ध्वजा-समूह-युक्त; परि तिरॅय–अश्व-तरंग भरे; मुरण्–परस्पर विरुद्ध; करि कॅ–गज सूँड़ के; कोळ् माव–नक्रों से भरे; मुळरि कानिन्–कमल-वन के समान; नॅय्क्किन्ऱ–स्निग्धता-भरे; वाळ् मुकत्त–उज्ज्वल-मुखी; विळुम्–ढलती; कुटरिन्–आँतों के रूप में; पचुमॅ अटॅय–सेवार से युक्त; निणम् मेल् चेऱ्ऱ–मज्जा रूपी तल के कीचड़ से भरे; उय्क्किन्ऱ–अन्दर खींच लेने वाले; निऱम्–लाल रंग के; कळम्–स्थलों रूपी; उतिरम् कुळङ्कळ्–रक्त के तालाव; उलप्पु इऱन्त–अनगिनत है; उवॅयुम् काण्मिन्–उनको भी देखो। ३५४०

इस युद्धभूमि के विविध थलों में विचित्र रक्त तालाव बने हैं, देखो। सूँड़वाले पर्वताकार गज उनके किनारे बने हैं। राक्षसों की भुजाएँ उपल है जिनसे वे भरे हैं। ध्वजासहित अश्व तरंगें है। हाथी की सूँड़ें बलवान नक्र हैं। कमल वन के समान, चिकने उज्ज्वल और ढलनेवाली आँते सेवार हैं। मज्जा ही तल का कीचड़ है! ऐसे, उनमें गिरनेवाले लोगों को अपने अंदर डुबो लेनेवाले तालाबों को देखो। ३५४०

नॅडुम्बडॅवा गान्जिलुळ् निणच्चेऱ्ऱि नुदिरनीर् निऱॅन्द काप्पिऱ्
कडुम्बहडु पडितोयन्द कडुम्बरम्बि तिन्नमळ्ळर् कलन्द कॅयिऱ्
पडुङ्गमल मलर्नाऱु मुडिपरन्द पॅरुङ्गिडक्कॅप् परन्द पण्णॅत्
तडम्पणॅयि नऱुम्बळ्ळन् दळ्वियदे यॅन्नप्पॊलियुन् दहॅयुङ् गाणमिन् 3541

नॅंटु वाळ् पटै–लम्बी तलवार हथियार रूपी; नाञ्चिल्–हल से; उळु–जोती जानेवाली; निणम् चेऱ्ऱिन्–मज्जा रूपी पंक में; उतिरम् नीर्–रक्त-जल के; निऱैन्त काप्पित्–भरे जलाशय और; कटु–तेज; पकटु–गज रूपी भैंसे; पटि–मग्न होकर; तोयुन्त–जिसमें रहते हैं; परन्त–व्यापनेवाले; इनम् मळ्ळर्–समूहबद्ध वीर रूपी; कटुम् परम्पित्–कठिन 'हेंगा' चलानेवाले; पण्णै–कृषकों का समूह; कलन्त–फैले रहे; कैयिल्–दोनों पार्श्वों में; पटुम्–प्रगट; कमलम् मलर्–कमल-पुष्प के; नाऱुम्–सुबास से मिले; मुटि–सिर रूपी अंकुरों की गाँठें; परन्त–जहाँ फैली रहीं; पॅरु किटक्कै–वह बड़ा युद्धस्थल; परन्त पण्णै–विशाल स्त्रीसमूह से भरे; तटम् पणैयिन्–बड़े खेतों की; नऱु पळनम्–सुरभित मरुदम प्रदेश की प्रकृति को; तळुवियते अॅन–प्राप्त कर चुका गया, ऐसा (संशय पैदा करते हुए); पॉलियुम् तकैयुम्–विद्यमान रहता है वह हाल भी; काण्मिन्–देखो। ३५४१

यह युद्धभूमि बड़े-बड़े खेतों से भरी 'मरुदम्' भूप्रदेश के समान है, देखो। (खेतों में हल चलाये जाते हैं, पंकिल जलाशय हैं, भैंसे या बैल पाये जाते हैं। हेंगा चलाया जाता है। अंकुरों की गाँठे पायी जाती हैं, जिनसे पौधे लेकर कृषक-स्त्रियाँ रोपती हैं। इधर—) लम्बी तलवार रूपी हल चलाये गये हैं। मज्जे रूपी पंकिल भूमि में रक्तजल के गड्ढे पाये जाते हैं, जिनमें वेगवान गज रूपी भैंसे पड़े हैं। दलबद्ध वीर ही समूहगत कृषक हैं, जिन्होंने हेंगा चलाया है। दोनों ओर सुबासित कमल के समान राक्षस वीरों के सिर रूपी अंकुर की गाँठे पड़ी रहती हैं। यह विचित्र 'मरुदम्' की भूमि को देखो। ३५४१

वॅळिऱीर्त्त वरैपुरैयु मिडलरक्कर् रुडल्विळवुम् वीरन् विल्लिन्
ऑळिऱीर्त्त मुळुनॅडुना णुरुमेऱु पलपडवु मुलहङ् गीण्डु
नळिऱीर्त्त नाहपुरम् बुक्किळिन्द पहळिवळि नदियि नोडिक्
कळिऱीर्त्तुप् पुहमण्डुङ् गरुङ्गुरुदित् तडञ्जुळिहळ् काण्मिन् काण्मिन् 3542

वॅळिल्–खूंटे को; तीर्त्त–जिसने तोड़ा उस; वरै पुरैयुम्–पर्वत (हाथी) सदृश; मिटल् अरक्कर्–बलवान राक्षसों के; उटल्–शरीर के; विळवुम्–गिरते ही; वीरन्–श्रीवीरराघव के; ऑळिरु ईर्त्त–शोभायमान और कान तक खींचे हुए; विल्लिन्–धनु के; मुळु नॅटु नाण्–पूर्ण दीर्घ डोरे से; पल–अनेक; उरुम् एऱु–वज्रराजों के; पटवुम्–(स्वन) निकलते ही; उलकम् कीण्टु–संसार को चीरकर; नळिल्–मध्य में; तीर्त्त–फटे; नाकपुरम्–पाताल में; पुक्कु इळिन्त–जो चला; पकळि वळि–उस बाण से बने मार्ग से; नतियिन् ओटि–नदी के समान बहकर; कळिऱु ईर्त्तु–गजों को खींचता हुआ; पुक मण्टुम्–अधिक जो बनीं; करु कुरुति तट चुळिकळ्–काले रक्त की बड़ी भौंरियों को; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५४२

आलान तोड़नेवाले मत्तगज-सदृश बलवान राक्षसों के शरीरों को गिराते हुए श्रीराम ने शर चलाये हैं। श्रीवीरराघव ने अपने कान तक कोदंड के लम्बे पूरे डोरे को खींचकर स्वन निकाले थे, जो अशनिराज

के समान फटे ! वे पृथ्वी को चीरकर विद्ध पाताल में पहुँचे थे। जिस रास्ते से उनका शर चला था, उस रास्ते से रक्त नदी के रूप में बहता है। उसमें गज तिरते हैं और उसमें काले रक्त की भौंरियाँ उठती हैं। उन्हें देखो। ३५४२

कैत्तलमुङ् गात्तिरमुङ् गरुङ्गळत्तु नॅडुम्बुयमु मुरमुङ् गण्डित्
तॅय्त्तिलपोय्त् तिशैहडोऱ् मिरुनिलत्तैक् किळित्तिळिन्द दॆन्ऩि ऩल्लाल्
मत्तकरि वयमावित् वाणिरुदर् पॅरुङ्गडलित् मऱ्ऱिव् वाळि
तैत्तुळदाय् निऩ्ऱदॆन्ऩ वॊन्ऱेयुङ् गाण्बरिय तहैयुङ् गाण्मिन् 3543

कैतलमुम्–हाथों को; कात्तिरमुम्–अगले पैरों को; करु कळुत्तुम्–काले कण्ठों को; नॅटु पुयमुम्–लम्बी भुजाओं को; उ`मुम्–और छातियों को; कण्डित्तु–छिन्न करके; ऍय्त्तिल–बाज न आकर; तिचैकळ् तोऱुम् पोय्–सारी दिशाओं में जाकर; इरु निलत्तै–बड़ी भूमि को; किळित्तु–फाड़कर; इळिन्ततु–नीचे चले; ऍन्ऩिन् अल्लाल्–ऐसा कहा जाय तो कहा जा सकता है नहीं तो; मत्त करि–मत्त गजों के; वयम् मावित्–विजयी अश्वों में; वाळ् निरुतर्–असिधारी राक्षसों के; पॅरु कटलित्–बड़े सागर में; इ वाळि ऑन्ऱेयुम्–यह शर एक ही; तैत्तु उळताय्–चुभा; निन्ऱतु–रहा; ऍन्ऩ–ऐसा; काण्परिय तकैयुम्–अदृष्टपूर्व हाल; काण्मित्–देखो। ३५४३

श्रीराम-बाण हाथों, अगले पैरों, काले कंठों और लम्बी भुजाओं को छेदकर भी बाज नहीं आये। फिर बड़ी भूमि को छेदकर चला। यही सच है। कहने का विषय रहा। इसे छोड़ यह नहीं कह पायँगे कि कोई शर मत्त गजों, विजयी अश्वों या असिधारी राक्षस वीरों के बड़े सागर में किसी में चुभा और वहीं रह गया ! ऐसा दृश्य अदृश्य है, देखो। ३५४३

कुमुद नाऱु मदत्तन कूऱ्ऱन, शमुद रोडु मडिन्दन शार्दरुम्
तिमिर मावन्ऩ शॅय्हैय वित्तिऱम्, अमिर्दिन् वन्दन वैयिरु कोडियाल् 3544

कुमुतम् नाऱुम्–कुमुद-सी गंधवाले; मतत्तन–मदनीर से युक्त; कूऱ्ऱन–यम-सदृश; चमुतरोटु मटिन्तन–महावतों के साथ मरे हुए; चार् तरुम्–ढँकते आनेवाले; तिमिरम् मा–अंधकारवर्ण सुअर के; अन्ऩ चॅय्कैय–सदृश काम करनेवाले; इ तिऱम्–इस प्रकार के; ऐयिरु कोटि–दस करोड़ (हाथी); अमिर्तिन् वन्तन–अमृत के साथ आये। ३५४४

उन दस करोड़ गजों को देखो। उनका मदनीर कुमुद-सुमन का-सा गंध लिये है। वे यम के समान है। वे अपने महावतों के साथ ही मर गये हैं। वे अंधकारवर्ण सुअरों का-सा कर्म करनेवाले हैं। ऐसे उन गजों पर दृष्टि डालो। ३५४४

एरु	नान्मुहन्	वेळ्वि	यॅळुन्दन
ऊरु	मारियु	मोङ्गलै	योदमुम्
माऱु	मायिनु	मामद	माय्वरुम्
आऱु	माऱिल	वाऱिरु	कोडियाल् 3545

ऊरुम्–स्रोत बनानेवाली; मारियुम्–वर्षा और; ओङ्कु अलै–उन्नत तरंगों का; ओतमुम्–सागर; माऱुम् आयिनुम्–बदल (जलहीन हो) जाय तो भी; मा मतमाय् वारुम्—मदनीर के रूप में आनेवाली; आऱु माऱिल–नदियाँ बदल नहीं सकतीं, ऐसी नदियों के; आऱिरु कोटि–बारह करोड़ हाथी; एरुम्–उत्कृष्ट; नान्मुकन् वेळ्वि–चतुर्मुख के यज्ञ में से; ऍळुन्तन–प्रकट हुए। ३५४५

उन बारह करोड़ हाथियों को देखो। चाहे सदापूर्ण मेघ सूख जायँ, चाहे बढ़ती तरंगों वाला सागर ! पर इनका मदनीर, जो नदी के रूप में बहता रहता है, कभी नहीं सूखता —ऐसे ये चतुर्मुखमखोत्पन्न गज हैं ! । ३५४५

उयिर्व	ऱन्दु	मुदिरम्	वऱन्दुतम्
मयर्व	ऱन्दु	मदमऱ	वादन
पुयल	वन्ऱिशैप्	पोर्मद	वानैयिन्
इयल्प	रम्बरै	येळिरु	कोडियाल् 3546

एळिरु कोटि–चौदह करोड़ (हाथी); उयिर् वऱन्तुम्–प्राण सूख जायँ तो भी; उतिरम् वऱन्तुम्–रक्त सूख जाय तो भी; तम् मयर् वऱन्तुम्—मस्ती सूख जाय तो भी; मतम् अऱवातन–मदनीर उनका नहीं सूखता; पुयलवन्–मेघपति (इन्द्र) की; तिचै–दिशा में; पोर्–योद्धा; मतम्–मत्त; यानैयिन् इयल्–गज की-सी प्रकृति वाली; परम्परै–परंपरा के हैं। ३५४६

(इधर देखो) चौदह करोड़ गज ! प्राण, रक्त या मस्ती भी चाहे सूख जाय, मदनीर उनका नहीं सूखता। देवेंद्र की (पूर्व) दिशा के मत्त योद्धा गज की-सी प्रकृति वाली परंपरा के हैं। ३५४६

कॉडादु	निऱ्ऱलिऱ्	कॉऱ्ऱ	नॅडुन्दिशै
ऑडादु	निऱ्पन	नाट्ट	मिमैप्पिल
वडादु	तिक्किन्	मदवरै	यिन्वळिक्
कडामु	हत्तन	मुळरिक्	कणक्कवाल् 3547

कॉटातु निऱ्ऱलिल्–(जिम्मा) नहीं दिया गया, इसीलिए; कॉऱ्ऱम् नॅटु तिचै–विजयी लम्बी दिशाओं को; ऑटातु निऱ्पन–नहीं ढोते रहते; नाट्टम् इमैप्पु इल–पलकें नहीं झपकते; वटातु तिक्किन्–उत्तरी दिशा के; मतम् वरैयिन् वळि–मत्त पर्वत (गज-सार्वभौम) के वंश के; कटाम् मुकत्त–मदनीरयुक्त मुख वाले; मुळरि कणक्क–'पद्म' की संख्या के हैं। ३५४७

(उधर देखो—) पद्म की संख्या में जो गज हैं वे दिशाओं को इसलिए

नहीं ढो रहे कि उन्हें वह काम सौंपा नहीं गया था ! अपलक व मदनीर-मुखी वे उत्तरी दिशा के सार्वभौम नाम के गज के वंश के हैं । ३५४७

वात	वर्क्किड़ै	वन्ड्रिड़ै	तन्दत्त
आन	वर्क्कमो	रायिर	कोडियुन्
दान	वर्क्किरै	वन्ड्रिड़ै	तन्दत्त
एन	वर्क्कङ्	गणक्किल	विच्वॅलाम् 3548

वातवर्क्कु इड़ैवन्–देवेंद्र (द्वारा); तिड़ै तन्तत–कर के रूप में दिये; आन–जो गये हैं; वर्क्कम्–गजवर्ग हैं; ओरायिरम् कोटि–एक हजार करोड़ हैं; इव् ऍलामुम्–ये सभी; तानवर्क्कु इड़ैवन्–दानव राजा द्वारा; तिड़ै तन्तत–कर के रूप में जो दिये गये; एन वर्क्कम्–गजवृन्द है; कणक्किल–असंख्यक हैं । ३५४८

ये (इधर) देवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। ये एक हजार करोड़ हैं। उधर जो हैं, वे दानवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। वे असंख्य हैं । ३५४८

पार्क डर्पण् डमिळ्दम् बयन्दनाळ्, आर्त्तॅ ळुन्दन वायिर मायिरम्
मार्क णप्परि यिङ्गिवै माऱुवै, मेर्कित् वेलै वरुणत्तै वॅन्ड्रवाल् 3549

पण्टु–पहले; पाल् कटल्–क्षीरसागर ने; अमिळ्तम् पयन्त नाळ्–(जिस दिन) अमृत दिया था, उस दिन; आर्त्तु ऍळुन्तत–घोष के साथ जो प्रगट हुए; आयिरम् आयिरम्–हज़ार-हज़ार; माल् कणप् परि–बड़े-बड़े झुण्डों के अश्व; इङ्कु इवै–इधर ये हैं; माऱु उवै–सामने वे; मेर्किन् वेलै–पश्चिमी सागर के; वरुणत्तै वॅन्ड्र–वरुण को जीतकर पाये गये । ३५४९

उन हज़ार-हज़ार झुंडों में रहते अश्वों को देखो। वे उस दिन घोष के साथ प्रगट हुए थे, जिस दिन क्षीरसागर ने अमृत निकाला था। ये जो उनके सामने हैं, पश्चिमी सागर में वरुण को युद्ध में हराकर प्राप्त किये हुए हैं । ३५४९

इरुनि दिक्किळ वत्तिळन् दैहित्त, अरिय वप्परि यायिर मायिरम्
विरिशि नत्तिहल् विज्जैयर् वेन्दनैप्, पौरुदु पट्रिय तामरै पोलुमाल् 3550

इरुनिति किळवन्–बड़ी निधि के देवता; इळन्तु–जिनसे हाथ धोकर; एकित्त–चला गया; अरिय–अपूर्व; अ परि–वे अश्व; आयिरम् आयिरम्–हज़ारों हैं; विरि–विस्तृत; चिनत्तु–क्रोध के साथ; इकल्–वीरता रखनेवाले; विज्चैयर् वेन्तनै–विद्याधर राजा को; पोरुतु–लड़ाई में हराकर; पट्रिय–ग्रहण किये गये; तामरै पोलुम्–पद्मों की संख्या में हैं शायद । ३५५०

वे हज़ारों-हज़ारों अश्व निधिनाथ कुवेर ने हारकर छोड़ दिये थे ! वे क्रोधी तथा वहादुर विद्याधर राजा को हराकर हथिया लिये गये थे और उनकी संख्या पद्मों की होगी अवश्य ! । ३५५०

ऍन्ऱु काणिनुङ् गाट्टिनु मीदिईक्, कुन्ऱु काणिनुङ् गोळिल दादलाल्
निन्ऱु काणुदु नेमियि लानुळैच्, चॆन्ऱु काण्डुमॆन्ऱ् ऱेहिनर् शॆव्वियोर् 3551

ऍन्ऱु–ऐसा; काणितुम्–हम स्वयं देखें या; काट्टितुम्–तुम दिखाओ तो भी; ईदु–यह (मूलबल); कुन्ऱु इऱै–नगाधिराज (हिमालय) को; काणितुम्–देखा जा सकता है; कोळ् इलतु–(देखने में) आ जाय ऐसा नहीं; आतलाल्–इसलिए; निन्ऱु काणुतुम्–रुककर (पीछे) देख लेंगे; नेमियिनान् उळै–चक्रधारी के पास; चॆन्ऱु–जाकर; काण्टुम्–उनके दर्शन कर लें; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; चॆव्वियोर्–सीधे-सादे वानर; एकिनर्–गये। ३५५१

वानरों ने कहा कि चाहे हम ही स्वयं देख लें या तुम्हारे दिखाते, नगाधिराज को देखा जा सके तो देखा जाय, पर, यह मूलबल पूर्ण रूप से देखा जाय ऐसा नहीं लगता। इसलिए पीछे सावधानी से देख लें। अब चक्रधर श्रीराम के पास जाकर उनसे मिलें। वे सीधे-सादे वीर चले। ३५५१

आरि यन्ऱ्ऱॊळु दाङ्गवन् बाङ्गरुम् पोरि यऱ्कै निनैन्दॆळु पॊम्मलार्
पेरु यिर्प्पॊ डिरुन्दनर् पिन्बुरु, कारि यत्ति निलैमै करुदुवार् 3552

आरियन्–आर्य श्रीराम को; तॊळुतु–वंदना करके; आङ्कु–वहाँ; अवन् पाङ्कु–उनके (पास); अरु–श्रेष्ठ; पोर् इयऱ्कै–युद्धतन्त्र; निनैन्तु–जानकर; ऍळु पॊम्मलार्–उठते अनुतापवाले; पेर् उयिर्प्पॊटु–बड़े निःश्वास छोड़ते; इरुन्तनर्–रहे; पिन्पु उरु–आगे होनेवाले; कारियत्तिन् निलैमै–कार्य की गति; करुतुवार्–सोचने लगे। ३५५२

वे आर्य श्रीराम के पास गये। उनको, श्रीराम के युद्ध-परिश्रम का ख़याल करके अपार दुःख हुआ। बड़े निःश्वास छोड़ते हुए आगे के कार्य की गतिविधि सोचते रहे। ३५५२

33. इरावणन् कळङ्गाण् पडलम् (रावण-युद्धस्थल-संदर्शन पटल)

अलक्क णॆय्दि यमर रळिन्दिड, उलक्क वानर वीररै योट्टियव्
विलक्कु वन्ऱनै वीट्टि यिरावणन्, तुलक्क मॆय्दिनन् दोमिल् कळिप्पिने 3553

अमरर्–देवों को; अलक्कण् ऍय्ति–दुःखी होकर; अळिन्तिट–क्षीण बनाकर; वानर वीररै–वानर वीरों को; उलक्क–निर्बल हो; ओट्टि–भाग जाने को मजबूर करके; अव् इलक्कुवन् तनै–उन लक्ष्मण को; वीट्टि–मारकर; तोम् इल्–अनिंद्य; कळिप्पिने–आनन्द से; इरावणन्–रावण; तुलक्कम् ऍय्तिनन्–प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

रावण देवों को दुःखी और अस्त-व्यस्त करके वानरों को बलहीन बनाकर भगा चुका था। फिर लक्ष्मण को मार चुका था। स्वाभाविक था कि वह एक अनिंद्य आनन्द से भर गया और वह प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

पॊरुन्दु पोर्प्पॆरुङ् गोलत्तिऱ् पोर्त्तॊऴिल्
वरुन्दि नऱ्कुत्त मन्विनिन् वन्दवर्
अरुन्दु दऱ्कमै वायित्त वाक्कुवान्
विरुन्द मैक्क मिहुहिन्ऱ वेट्कैयान् 3554

तम् अऩ्पिनिन् वन्तवर्क्कु—उस पर प्रेम के कारण आकर; पॊरुन्तु—युक्त; पॆरुम् पोर् कोलत्तिल्—बड़े युद्धवेश में; पोर् तॊऴिल्—युद्ध-कार्य में; वरुन्तिनर्क्कु—जो दुःखी हुए थे उन्हें; अरुन्तुतऱ्कु अमैवु आयित्त—भोज देने योग्य; आक्कुवान्—(पदार्थ) बनाकर; विरुन्तु अमैक्क—दावत देने की; मिकुकिन्ऱ—बढ़ती; वेट्कैयान्—इच्छा का हुआ। ३५५४

उसके मन में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि मैं अपने प्रति प्रेम के कारण युक्त योद्धावेश में जो आये थे और लड़ाई में संकट भोग चुके थे उन्हें एक दावत दूँ और भोग्य पदार्थ खिलाऊँ। ३५५४

वान नाट्टै वरुहॆन्न वल्विरैन्
देनै नाट्टव रोडुम्वन् दॆय्दिनार्
आन नाट्टन्द पोह ममैत्तीर्मऱ्
ऱून नाट्टि निऴत्ति रुयिरॆन्ऱान् 3555

वानम् नाट्टै—व्योमलोकवासियों को; वल् विरैन्तु—बहुत शीघ्र; वरुक ऎन—आओ कहने पर; एनै नाट्टवरोटुम्—अन्य लोकों के जनों के साथ; वन्तु ऎय्तिनार्—आ पहुँचे; अन्त नाट्टु आन पोकम्—उस लोक का भोज; अमैत्तीर्—बना लो; मऱ्ऱु—विपरीत; ऊनम् नाट्टिन्—कमी दिखाओ तो; उयिर् इऴत्तिर्—प्राण गँवाओगे; ऎन्ऱान्—कहा (रावण ने)। ३५५५

उसने देवलोकवासियों को 'आओ जल्दी' कहकर बुलाया। वे अन्य लोकों के लोगों के साथ आये। रावण ने आज्ञा दी कि आपके लोक में जैसा भोज बनता है, वैसा यहाँ भी प्रबंध करा दो। उसने चेतावनी दी कि अगर कुछ दोष रह गया तो सिर गँवाओगे। ३५५५

नऱवु मूनु नवैयऱ नल्लन, पिऱवु माडैयुञ् जान्दमुम् बॆय्म्मलर्त्
तिऱमु नानप् पुनलॊडु शेक्कैयुम्, पुऱमु मुऴ्ळुम् निऱैयप् पुहुन्दवाल् 3556

नल्लन—अच्छे; नऱवुम् ऊनुम्—मद्य और मांस; पिऱवुम्—और अन्य; आटैयुम्—और वस्त्र; चान्तमुम्—चंदन; पॆय् मलर् तिऱमुम्—बरसाये गये फूलों के प्रकार; नानम् पुनलॊटु—और स्नान योग्य जल के साथ; चेक्कैयुम्—शय्या सब; पुऱमुम् उऴ्ळुम्—बाहर और भीतर; निऱैय—भरपूर; नवैयऱ—बिना किसी त्रुटि के; पुकुन्त—आ पहुँचे। ३५५६

श्रेष्ठ मांस, मद्य, अन्य खाद्य पदार्थ, वस्त्र, चंदन, बरसाने को तरह तरह के फूल, स्नान योग्य जल, शय्या —सारे पदार्थ बाहर और भीतर, सर्वत्र भरपूर आ गये और कहीं कोई कमी नहीं पायी गयी। ३५५६

नाऩ्‌ नॆय्‌न्नत्‌ गुरॆत्तु नऱुम्बुतल्‌, आऩ्‌ कोदऱ्‌ वाट्टि यमुदॊडुम्
वाऩ्‌ मूट्टिच्‌ चयऩम्‌ बरप्पवुम्‌, वाऩ्‌ नाडिय रियावरुम्‌ वन्दऩर्‌ 3557

नाऩम्‌ नॆय्‌–स्नान-तेल को; नऩ्‌कु उरॆत्तु–खूब मलकर; नऱुम्‌ पुतल्‌–सुबासित जल से; आऩ्‌–शरीर पर लगे; कोतु अऱ्‌–मैल को दूर करके; आट्टि–नहलाकर; अमुतॊडुम्‌–भोज-पदार्थों के साथ; पाऩम्‌ ऊट्टि–पान कराकर; चयऩम्‌ परप्पवुम्‌–शय्या बिछाने; वाऩ्‌ नाटियर्‌ यावरुम्‌–व्योमवासिनियाँ, सभी; वन्तऩर्‌–आयीं। ३५५७

फिर व्योमवासिनी अप्सरायें आयीं— स्नान-तेल खूब मलकर सुबासित जल में शरीर के मैल को दूर करते हुए स्नान कराने, खाने के साथ पान कराने, और शय्या बिछाने के निमित्त। ३५५७

पाडु वार्हळ्‌ पयिल्‌नडम्‌ बावहत्‌, ताडु वार्ह ळमळियि लन्‌बुऱक्‌
कूडु वार्हण्‌ मुदलुङ्‌ गुऱैवऱन्‌, देडि ऩारॆऩप्‌ पण्णैयिऱ्‌ चेर्न्दवाल्‌ 3558

पाटुवार्कळ्‌–गातीं; पयिल्‌ नटम्‌–अभ्यस्त नृत्य; पावकत्तु आटुवार्कळ्‌–भावप्रदर्शन के साथ दिखातीं; अमळियिल्‌–पलंग पर; अऩ्‌पु उऱ्‌–राग के साथ; कूटुवार्कळ्‌–संगम करतीं; मुतलुम्‌ कुऱैवु अऱ्‌–पूँजी भी कम न हो ऐसा; तेटिऩार्‌ ऎऩ–संपत्ति जिन्होंने अर्जन की थी, उनको जैसे; पण्णैयिल्‌–उस रमणीवृन्द में; चेर्न्त–अनेक भोग मिले। ३५५८

कुछ अप्सरायें गातीं! कुछ अभ्यस्त नृत्य भावप्रदर्शन के साथ खूब करतीं। कुछ पलंग में राग के साथ सगम करतीं। उस रमणी-वृन्द में उन वीरों को वैसे भोग मिले, जो उन लोगों को मिलता है जिनके पास उतनी पूँजी जमा हो जितनी के लाभ से ही सारा भोग मिल सकता है और पूँजी को छूने की आवश्यकता नहीं पड़ती। (यानी बड़े भाग्यवानों को जो मिलता है वह आनंदभोग मिला)। ३५५८

अरश रादि यडियव रन्दमा, वरॆशॆय्‌ मेऩि यिराक्कदर्‌ वन्दुळार्‌
विरैवि ऩिन्दिर पोहम्‌ विळैवुऱक्‌, करैयि लाद पॆरुवळङ्‌ गण्णिऩार्‌ 3559

अरचर्‌ आति–राजा से लेकर; अटियवर्‌ अन्तमा–दासों तक; वन्तुळार्‌–जो आये थे; वरै चॆय्‌ मेऩि–वे पर्वतोपम शरीरी; इराक्कतर्‌–राक्षस; विरैविऩ्‌–अति शीघ्र; इन्तिर पोकम्‌–इन्द्रभोग; विळैवु उऱ्‌–प्राप्त होने से; करै इलात–अपार; पॆरु वळम्‌–उस बड़े भोग में; कण्णिऩार्‌–दत्तचित्त रहे। ३५५९

राजा से लेकर दास तक जितने आये थे, उन पर्वतोपम शरीरी राक्षसों को इन्द्रभोग बहुत शीघ्र प्राप्त हो गया और वे अपार रूप से खूब भोग में लग गये। ३५५९

इऩ्ऩ तऩ्मै यमैत्त विराक्कदर्‌
मऩ्ऩऩ्‌ माडुवन्‌ दॆय्दि वणङ्गिऩार्‌

अन्न शेनै कळप्पट्ट वाऱ्ंलाम्
तुन्नु तूदर् शॅविथिडॆच् चॊल्लुवार् 3560

इन्न तन्मै अमैत्त—इस प्रकार जिसने प्रबन्ध कराया था, उस; इराक्कतर् मन्नन् माट्टु—राक्षस राजा के पास; वन्तु ॲय्ति—आ पहुँचकर; वणक्कितार्—विनत होकर; अन्न चेनै—वह सेना; कळप्पट्ट आऱु ॲल्लाम्—खेत जैसे रही वह सारा हाल; चॅवि इटै—उसके कानों में; तुन्नु तूतर्—अंगरक्षक दूतों ने; चॊल्लुवार्—कहना आरम्भ किया। ३५६०

इस भाँति जिसने अच्छा प्रबंध कराया था, उस रावण के पास अंगरक्षक दूत आ पहुँचे और उन्होंने उसके कानों में मूलबल के पूर्ण रूप से खेत रहने का सारा हाल बताया। ३५६०

नडुङ्गु हिन्ऱ वुडलिनर् नावुलर्न्
दॊडुङ्गु हिन्ऱ वुयिर्प्पिन रुळ्ळऴिन्
दिडुङ्गु हिन्ऱ विऴियिन रॆङ्गिनार्
पिडुङ्गु हिन्ऱ वुरैयिनर् पेशुवार् 3561

नटुङ्कुकिन्ऱ—काँपते; उटलिनर्—शरीर वाले; ना उलर्न्तु—जीभ सूखकर; ऒटुङ्कुकिन्ऱ—क्षीण होनेवाली; उयिर्प्पिनर्—साँसों वाले; उळ् अऴिन्तु—मन के क्षय से; इटुङ्कुकिन्ऱ—सँकरी होती; विऴियिनर्—आँखों वाले; पिटुङ्कुकिन्ऱ—कष्ट के साथ जिन्हें खींच-से लेते; उरैयिनर्—ऐसे शब्दों के वक्ता; एङ्कितार्—तरसते हुए; पेचुवार्—कहने लगे। ३५६१

उनके शरीर काँप रहे थे। जीभ सूख गयी। श्वास क्षीण हो रहे थे। मन क्षीण था, जिसके फलस्वरूप आँखें सँकरी हो रही थीं। बहुत कठिनता से बात करते थे कि लगता था कि वे शब्दों को जबरदस्ती खींच ला रहे हों। वे तरस के साथ बोले। ३५६१

इन्ऱियार् विरुन्दिङ् गुण्बा रिहत्तुमुहत् तिमैयोर् तन्द
वॆन्ऱिया येवच् चॆन्ऱ वायिर वॆळ्ळच् चेनै
निन्ऱुळार् पुऱत्ता राह विरामत्तुकै निमिर्न्द शावम्
ऒन्ऱिनाल् नान्गु मून्ऱु कडिहैयि नुलन्द दॆन्ऱार् 3562

इकल् मुकत्तु—युद्ध में; इमैयोर् तन्त—देवों द्वारा दत्त; वॆन्ऱियाय्—विजयी; एव चॆन्ऱ—आपकी प्रेरणा से जो गयी; आयिरम् वॆळ्ळम् चेनै—वह हजार 'वॆळ्ळम्' की सेना; पुऱत्तार् आक—युद्ध-स्थल में रही; इरामन् कै—श्रीराम के हाथ के; निमिर्न्त चापम् ऒन्ऱिनाल्—एक उन्नत चाप से; नान्कु मून्ऱु—चार और तीन (सात); कटिकैयिन्—घड़ियों में; उलन्ततु—मिट गयी; इन्ऱु—आज; इङ्कु विरुन्तु उण्पार्—दावत खानेवाले; यार्—जो हैं; निन्ऱुळार्—वे ही बचे हैं; ॲन्ऱार्—ऐसा कहा (दूतों ने)। ३५६२

युद्ध में देवों की दी हुई विजय के स्वामी! आपकी आज्ञा ले जो

सेना गयी, वह युद्धस्थल में खड़ी ही हुई थी कि राम के एक ऊँचे चाप से सात घड़ियों में मिट गयी। अब इधर जो दावत खाते हैं वे ही बचे हैं। ३५६२

वलिक्कडन् वान् ळोरक् कॉण्डुनी वहुत्त पोहम्
कलिक्कड नळिप्प नॅन्ऩ निरुदर्क्कुक् करुदि नायेल्
पलिक्कड नळिक्कर् पाल यल्लदुन् कुलत्तिन् पालोर्
ऑलिक्कड लुलहत् तिल्लै यूरुळा रुळरे युळ्ळार् 3563

वलि कटन्–बल के क्रम से; वानुळोरै–व्योमवासियों को; कॉण्टु–काम में नियुक्त करके; वकुत्त पोकम्–विविध प्रकार के बने भोगों को; निरुतर्क्कु–राक्षसों को; कलि कटन्–संतोष का कर्तव्य मानकर; अळिप्पन्–दूँगा; ॲन्ऩ–ऐसा; नी करुलित्तायेल्–आप विचार करें तो; ऊर् उळार्–नगर में जो हैं; उळरे उळ्ळार्–वे ही रहे हैं; अल्लतु–उनके सिवा; उन्कुलत्तिन् पालोर्–आपके कुल के; ऑलि कटल्–शब्दायमान सागर-वलयित; उलकत्तु इल्लै–संसार में (कोई) नहीं हैं; पलि कटन्–बलि का कर्तव्य; अळिक्कल् पाल–देने अर्ह हैं। ३५६३

आप सोचते हैं कि अपने पराक्रम से व्योमवासियों के द्वारा इन राक्षसों को प्रीतिभोज का इंतिज़ाम करा दूं! तो इस नगर में जो रह गये हैं वे ही बाक़ी हैं। उनके अलावा आपके कुल का कोई भी इस ध्वनियुक्त समुद्रवलयित भू में कहीं नहीं रहता। अतः मृतबलि का प्रबंध कर सकते हैं (न कि भोज!)। ३५६३

ईट्टरु मुवहै यीट्टि यिरुन्दव निशैत्त मार्रम्
केट्टलुम् वॅहुळि योडु तुणुक्कमु मिळवुङ् गिट्टि
ऊट्टरक् कुण्ड शॅङ्गण् नॅरुप्पुह वुयिर्प्पु वीङ्गत्
तीट्टिय पडिव मॅन्नत् तोर्रिनन् तिहैत्त नॅञ्जन् 3564

ईट्ट अरुम्–सम्पादन-दुर्लभ; उवकै–संतोष; ईट्टियिरुन्तवन्–जिसने पा लिया था; इचैत्त मार्रम्–(उस रावण के) दूतों के कहे वचनों को सुनते ही; वॅकुळियोटु–क्रोध के साथ; तुणुक्कमुम्–भय और; इळवुम्–खोने का दुःख भी; किट्टि–पाकर; ऊट्टु अरक्कु–लगायी गयी लाख से; उण्ट चॅम् कण्–भरी-सी लाल आँखें; नॅरुप्पु उक–आग निकालने लगीं; उयिर्प्पु वीङ्क–श्वास बढ़ा; तिकैत्त नॅञ्चन्–(इन विभावों के साथ) ठिठके मनवाला बन; तीट्टिय पटिवम् ॲन्न–लिखित चित्र के समान; तोर्रिनन्–दिखा। ३५६४

रावण संपादन-दुर्लभ संतोष में इतरा रहा था। इसे सुनते ही उसे अपार क्रोध, भय और दुःख हुए। लाख के समान लाल आँखों से आग बरसने लगी। श्वास फूले। मन ठिठका। और वह लिखित चित्र के समान दिखा। ३५६४

ॲऩ्ऩिऩुम् वलिय राऩ विराक्कद रियारुम् वीयार्
उऩ्ऩिऩु मुलप्पि लादा रुवरियिऩ् मणलि ऩीळ्वार्
पिऩ्ऩॊरु पॆयरु मिऩ्ऱि माण्डऩ रॆऩ्ऱु शॊऩ्ऩ
इन्निलै यिदुवो पॊय्म्मै विळम्बिऩीर् पोलु मॆऩ्ऱाऩ् 3565

ॲऩ्ऩिलुम् बलियर् आऩ–मुझसे भी बलवान रहे; इराक्कतर् यारुम्–उन राक्षसों में कोई; वीयार्–नहीं मरेंगे; उऩ्ऩिऩुम्–अनुमान लगाने पर भी; उलप्पु इलातार्–जो गिने नहीं जा सके; उवरियिऩ् मणलिऩ् नीळ्वार्–ऐसा, समुद्र के बालुओं से भी अधिक रहे; पिऩ् ऑरु पॆयरुम् इऩ्ऱि–फिर कोई एक न रहा ऐसा; माण्टऩर्–सब मरे; ॲऩ्ऱु चॊऩ्ऩ–ऐसा जो कहा जाता है; इ निलै इतुवो–यह स्थिति यहीं है क्या; पॊय्म्मै–असत्य; विळम्पिऩीर् पोलुम्–बोले शायद; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा रावण ने। ३५६५

"मूलबल वीर मुझसे बलवान थे! वे नहीं मरेंगे। हिसाब, प्रयत्न करने पर भी नहीं लगाया जाय, ऐसा समुद्र के वालुओं से भी अधिक संख्या के थे। फिर कहते हो कि एक भी बचा नहीं; सभी हत हो गये! (यह) स्थिति सचमुच यही है? या शायद झूठ कह गये?" रावण ने पूछा। ३५६५

केट्टय लिरुन्द मालि यीदॊरु कॊळ्मैत् तामो
ओट्टरु तूदर् पॊय्ये युरॆप्परो वुलहम् यावुम्
वीट्टुव दिमैप्पि ऩऩ्ऱे वीङ्गॆरि विरिन्द वॆल्लाम्
माट्टुव ऩॊरुव ऩऩ्ऱे यिऱुदियिऩ् मऩत्ता लॆऩ्ऱाऩ् 3566

केट्टु–सुनकर; अयल् इरुन्त मालि–पास जो रहा उस माल्यवान ने; ईतु–यह समाचार; कॊळ्मैत्तु आमो–अविश्वास योग्य होगा क्या; ओट्टरु तूतर्–भागे जो आये वे दूत; पॊय्ये उरॆप्परो–झूठ ही कहेंगे क्या; उलकम् यावुम्–सभी लोकों में; विरिन्त ॲल्लाम्–विस्तृत रूप से रहनेवाले सभी को; इऱुतियिऩ्–युगांत में; मऩत्ताल्–संकल्प मात्र से; माट्टुवऩ्–मिटानेवाला; ऑरुवऩ् अऩ्ऱे–अद्वितीय अकेले ही न; वीङ्कु ॲरि–अधिक जलनेवाली आग द्वारा; इमैप्पिऩ्–पल भर में; अऩ्ऱे वीट्टुवतु–मिटा देता है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ३५६६

यह सुनता हुआ माल्यवान पास में रहा। उसने रावण को यों समझाया। क्या यह समाचार अविश्वास योग्य है? भागे हुए जो आये हैं वे भी असत्य बोलेंगे क्या? युगांत के विस्तृत-लोकसंहारक (रुद्र) तो अकेले ही युगांत की आग की सहायता से संकल्प मात्र से सारे लोकों को पल भर में मिटा देता है। ३५६६

अळप्परु मुलहम् यावु मळित्तुक्काத् तळिक्किऩ् ऱाऩ्तऩ्
उळप्पॆरुन् दहैमै तऩ्ऩा लॊरुवऩॆऩ् ऱुण्मै वेदम्
किळप्पदु केट्टु मऩ्ऱे यरविऩ्मेऱ् किडन्दु मेऩाळ्
मुळैत्तपे रिराम ऩॆऩ्ऱु वीडणऩ् मॊऴिपॊय्त् तामो 3567

तऩ् उळम्-अपने मन के; पॆरु तकैमै तऩ्ऩाल्-बड़े (संकल्प-) बल से; अळप्परुम् उलकम् यावुम्-सभी अगणित लोकों को; अळित्तु-सृष्ट करके; कात्तु-रक्षण कर; अळिक्किऩ्ऱाऩ्-संहार करता है; ऒरुवऩ्-अद्वितीय है; ऎऩ्ऱु-ऐसा; वेतम्-वेद; उण्मै-सत्य; किळप्पतु-बताते हैं यह; केट्टुम् अऩ्ऱे-सुनते हैं न; मेनाळ्-प्राचीन दिनों में; अरविऩ् मेल् किटन्तु-सर्प पर लेटकर; मुळैत्त-अब यहाँ जो प्रगट हुआ है; पेर् इरामऩ्-वह मान्य राम; ऎऩ्ऱ-ऐसा जिसने बताया; वीटणऩ् मॊऴि-विभीषण का वचन; पॊय्त्तु आमो-झूठा बनेगा क्या। ३५६७

सत्यवाक् वेद यह बताते हैं कि अपने मन के संकल्प के अपार बल से अद्वितीय एक (भगवान) ही अपार लोकों की सृष्टि करके उनको पालता है और उनका संहार करता है। क्या यह हमने नहीं सुना है ? वही देवदेव क्षीरसागर का शेषशायी अब श्रीराम के रूप में प्रकट मान्य श्रीराम है—यह जो विभीषण कह रहा था, झूठा हो सकता है क्या ? । ३५६७

ऒऩ्ऱिडि ऩदऩै युण्णु मुलहत्ति ऩुयिर्क्कॊऩ् ऱाद
निऩ्ऱऩ वॆल्लाम् बॆय्दा लुडऩ्ड्गु नॆरुप्पुङ् गाण्डुम्
कुऩ्ऱॊडु मरऩुम् बुल्लुम् बल्लुयिर्क् कुऴुवुङ् गॊल्लुम्
वऩ्ऱिऱऱ् काऱ्ऱुङ् गाण्डुम् वलिक्कॊरु वरम्बु मुण्डो 3568

ऒऩ्ऱु इटिऩ्-एक पदार्थ (मुख में) डाल दो तो; अतऩै उण्णुम्-उसे खानेवाले; उलकत्तिऩ् उयिर्क्कु-लोक के जीवों को; ऒऩ्ऱात-जो उचित नहीं; निऩ्ऱऩ-रहते; ऎल्लाम्-उन सभी को; पॆय्ताल्-डाला जाय तो; उटऩ् तुङ्कुम्-एक साथ कवलित करनेवाली; नॆरुप्पुम् काण्टुम्-आग हमने देखी है; कुऩ्ऱॊटु-पर्वत के साथ; मरऩुम् पुल्लुम्-तरु, घास और; पल् उयिर् कुऴुवुम्-अनेक जीवों के झुण्डों को; कॊल्लुम्-मारनेवाले; वल् तिऱल्-बहुत प्रबल; काऱ्ऱुम् काण्टुम्-पवन भी हमने देखा है; वलिक्कु-बल की; ऒरु वरम्पु उण्टो-कोई सीमा भी है क्या। ३५६८

जीव अपने योग्य आहार मिलने पर ही उसे खाते हैं। किन्तु, अग्नि ऐसी होती है, जो अखाद्य को भी डालें तो उसको भस्म कर देती है। उसे हमने देखा है। युगांत का पवन है, जो पर्वत, तरु, घास और विविध जीवों का नाश कर देता है। वैसा प्रबल पवन हमने देखा है। फिर बल की कोई सीमा भी है ? । ३५६८

पट्टदु मुण्डे युऩ्ऩै यिन्दिरच् चॆल्वम् बऱ्ऱु
विट्टदु मॆय्म्मै यैय मीण्डॊरु विऩैयु मिल्लैक्
कॆट्टदु ऩ् पॊरुट्टिनाले निऩ्ऩुडैक् केळि यॆल्लाऩ्
चिट्टदु शॆय्दि यॆऩ्ऱा ऩदऱ्कवऩ् ऱीऱ्ऱ्ऱ् जॆय्दाऩ् 3569

उऩ्ऩै-तुम्हारे साथ; इन्तिर चॆल्वम्-इन्द्रनिधि; पट्टतुम् उण्टु-लगी रही वह सही है; पऱ्ऱु विट्टतु-अब नाता तोड़ दिया (उसने); मॆय्म्मै-सच; ऐय-तात; मीण्टु-फिर अब; ऒरु विऩैयुम् इल्लै-एक भी काम न रहा; उऩ्

पॉरुट्टिताले–अपने ही कारण; निन् उर्ट–तुम्हारे; केळिर् ॲल्लाम्–बांधव सभी; कॅट्टतु–मिट गये; चिट्टतु–शिष्ट काम; चॅय्ति–करो; ॲन्ड्रान्–कहा (माल्यवान ने); अतर्कु–उससे; अवन्–रावण ने; चीर्रम् चॅय्तान्–क्रोध किया। ३५६९

तुम्हारे साथ इन्द्रनिधि लगी थी। अब उसने नाता तोड़ लिया। हे तात ! अब करणीय काम कुछ नहीं रहा। तुम्हारे ही कारण तुम्हारे सब बंधु-बांधव मिट गये। अब ही सही शिष्ट काम करो। माल्यवान ने यह कहा तो रावण ने गुस्सा किया। ३५६९

इलक्कुवन् तन्नै वेला लॅरिन्दुयिर् कूर्रुक् कीन्देन्
अलक्कणिर् रुलैव रॅल्ला मळुन्दिन रदनैक् कण्डाल्
उलक्कुमा लिरामन् पिन्न रुयिर्प्पॉरै युहवा नुर्र
मलक्कमुण् डाहि नाह वाहैयॅन् वयत्त दॅन्ड्रान् 3570

इलक्कुवन् तन्नै–लक्ष्मण को; वेलाल् ॲरिन्तु–शक्ति से मारकर; उयिर्–उसके प्राणों को; कूर्रुक्कु ईन्तेन्–यम को दे दिया था; तलैवर् ॲल्लाम्–सभी वानरयूथप; अलक्कणिल्–दुःख में; अळुन्तिनर्–डूबे; अतनै कण्टाल्–उसको देखे तो; पिन्नर् उयिर् पॉरै–प्राणभार-वहन; उकवान्–न चाहकर; इरामन् उलक्कुम्–राम मरेगा; उर्र–(मूलबलहत्या के कारण) मुझे प्राप्त; मलक्कम्–संकट; उण्टु आकिल्–हो तो; आक–हो; वाकै–विजय तो; ॲन् वयत्ततु–मेरी रही; ॲन्ड्रान्–कहा रावण ने। ३५७०

रावण ने कहा। मैंने लक्ष्मण पर शक्ति चलाकर उसको मौत का मेहमान बना दिया था। वानरयूथप सभी दुःख में मग्न हुए। उसे देखकर राम प्राणभार-वहन करना नहीं चाहेगा और आत्महत्या कर लेगा। फिर क्या मूलबल के नाश का दुःख अवश्य होगा पर जीत तो मेरी ही रही। ३५७०

आण्डदु कण्डु निन्र तूदुव रैय मॅय्ये
मीण्डदव् वळवि नावि मारुदि मरुन्दु मॅय्यिल्
तीण्डवुन् दाळ्त्त दिल्लै यारुमच् चॅङ्ग णानैप्
पूण्डनर् तळुविप् पुक्कार् काणुदि पोदि यॅन्ड्रार् 3571

आण्टु–वहाँ; अतु–(लक्ष्मण का जी उठना) वह; कण्टु निन्र–देखते जो रहे; तूतुवर्–उन दूतों ने; ऐय–स्वामी; मारुति–मारुति; मरुन्तु–(जो लाया था वह) संजीवनी; मॅय्यिल् तीण्टवुम्–शरीर पर लगे तब तक भी; ताळ्त्ततु इल्लै–विलम्ब नहीं हुआ; अव् अळविल्–उतने में ही; आवि मीण्टतु–जीवन लौट गया; मॅय्ये–सच; यारुम्–सभी; अ चॅम् कणानै–उस अरुणाक्ष को; पूण्टनर्–घेरकर; तळुवि–मिलकर; पुक्कार्–जा पहुँचे हैं; काणुति–देखें; पोति–जायें; ॲन्ड्रार्–कहा। ३५७१

तब दूत, जो कि तब वहाँ की घटना को देखते रहे थे, बोले।

स्वामी ! हनुमान की लायी संजीवनी की शरीर पर लगने की देर तक का भी विलंब नहीं हुआ। उतने में ही लक्ष्मण के गये प्राण लौट आये। यह सत्य बात है। सभी वीर लक्ष्मण को घेर उसे लेकर चले गये। आप देखें जाकर। ३५७१

तेऱ्ऱिल ताद लात्ते मरुहुरु शिन्दै तेऱु
एऱ्ऱिनन् कनहत् तारैक् कोबुरत् तुम्ब रयदि
ऊऱ्ऱिन शेनै वॆळ्ळ मुलन्दपे रुण्मै यॆल्लाम्
काऱ्ऱिन वुळ्ळ नोवक् कण्गळाऱ् ऱॆरियक् कण्डान् 3572

तेऱ्ऱिलन्–विश्वास न कर सका; आतलाल्–इसीलिए; मरुकुरु चिन्तै–घबड़ाया दिल; तेऱु–सँभले, इसलिए; कतकम् तारै–स्वर्णिम छटा बिखेरनेवाले; कोपुरत्तु उम्पर् ऍय्ति–गोपुर (मीनार) के पास जा; एऱ्ऱिनन्–उस पर चढ़ा; ऊऱ्ऱिन–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली; चेनै वॆळ्ळम्–सेना के प्रवाह के; उलन्त–सूखने का; पेर् उण्मै ऍल्लाम्–सच्चा वृत्त सारा; काऱ्ऱिन उळ्ळम्–वैरी मन को; नोव–वेदना देते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; तॆरिय कण्टान्–खूब देख लिया। ३५७२

रावण विश्वास नहीं कर सका। दिल घबड़ाया हुआ था। उसे धीरज देने के विचार से वह स्वर्णछटावाले गोपुर (मीनार) पर चढ़ा। उसने वहाँ से देखा कि उत्तरोत्तर प्रवाह के समान बढ़ आनेवाली सेना मरकर पड़ी है। उसका वरी मन पीड़ा से भर गया। उसने संदेह दूर करते हुए खूब देख लिया। ३५७२

कॊय्दलैप् पूशऱ् पट्टोर् कुलततियर् कुवळै तोऱ्ऱ
नॆय्दलै वॆन्ऱ वाट्कण् कुमुदत्ति नीरमै हाट्टक्
कैतलै वैत्त पूशल् कडलोडु निमिरुङ् गालैच्
चॆय्दलै युऱ्ऱ वोशैच् चॆयलदुञ् जॆवियिऱ् केट्टान् 3573

कॊय् तलै–भिन्नशीर्ष हो; पूचल् पट्टोर्–युद्ध में मरे वीरों की; कुलत्तियर्–गृहिणियाँ; कुवळै तोऱ्ऱ–कुवलय हराकर; नॆय्तलै वॆन्ऱ–उत्पलविजयी; वाळ् कण्–तलवार-सम आँखों में; कुमुतत्तिन् नीरमै काट्ट–कुमुद की-सी लालिमा दिखाते हुए; कै तलै वैत्त–हाथों को सिर पर रखकर; पूचल्–(जो मचा रही थी) वह चिल्लाहट; कडलोटु निमिरुम् काले–जब समुद्र से होड़ लगा रही थी; चॆय्तलै उऱ्ऱ ओवै–उनके वैसा करने से निकले नाद का; चॆयलतुम्–कृत्य भी; चॆवियिल् केट्टान्–कानों से सुना। ३५७३

वीरों के सिर कटे थे। उनकी गृहिणियाँ वहाँ आकर कुवलय-उत्पल विजयी अपनी तलवार-सी आँखों को रोने के कारण कुमुद (लाल) बनाते हुए, सिर पर हाथ रखे रोती कलपती रहती थीं। वह शोर समुद्र से होड़ लगा रहा था। रावण ने वह स्वर और उनके स्वर निकालने का वह काम देखा। ३५७३

ऍण्णुनीर् कडन्द यानैप् पॆरुम्बिण मॆन्दि याणर्
मण्णिन्नी रळवुङ् गल्लि नॆडुमलै परित्तु मण्डुम्
पुण्णिन्नी राऱुम् बल्पेय् पुदुप्पुन लाडुम् बोम्मल्
कण्णिन्नी राऱु माऱाक् करुङ्गडल् मडुप्पक् कण्डान् 3574

ऍण्णुम् नीर्–सोचने की शक्ति; कटन्त यानै–खोकर रहे गजों की; पॆरुम् पिणम् एन्ति–बड़ी लाशों को धारण करके; मण्णिन्–पृथ्वी के; नीर् अळवुम् कल्लि–जल के रहते भाग तक खोदकर; नॆटु मलै परित्तु–बड़े पहाड़ों को उखाड़ लेते हुए; मण्टुम्–विपुल परिमाण में बहनेवाले; याणर् पुण्णिन् नीर्–व्रणों के ताज़े रक्त की; आऱुम्–नदियों को; पल् पेय्–अनेक प्रेत; पुतु पुनल् आटुम्–ताज़े (रक्त-) जल में स्नान करते उनको; पोम्मल्–समूहों को; कण्णिन्–आँखों से; माऱा–निरन्तर बहनेवाली; नीर् आऱु–अश्रुजल की नदी को; करुङ्कटल् मटुप्प–काले सागर में पहुँचने देते हुए; कण्टान्–देखा। ३५७४

उसने यह भी देखा कि संज्ञाहीन गजों की लाशों को वहा लेती हुई, भूमि के भीगे भागों को निकालती हुई और पर्वतों को उखाड़ लेती हुई व्रणों के ताज़े रक्त की नदी वह रही है। अनेक प्रेत ताज़े (रक्त-) जल में स्नान कर रहे हैं। यह सब देखा तो उसकी आंखों से अश्रु की धारा बह चली और समुद्र से जा मिली। ३५७४

मुट्रियर् चिलैव लाळन् मॊय्क्कणै तुमिप्प वावि
पॆट्रियल् पॆट्रि पॆट्रा मॆन्नवा ळरक्कर् याक्कै
शिट्रियट् कुरुङ्गा लोरिक् कुरल्हॊळै यिशैयाप् पल्बेय्
कट्रियल् पाणि कॊट्टक् कळिनडम् बयिलक् कण्डान् 3575

चिऱ्ऱु इयल्–छोटी बनावट और; कुऱु काल्–नाटे पैर वाले; ओरि कुरल्–सियार का स्वर; कॊळै इचैया–गाने का राग बना; पल् पेय्–अनेक प्रेतों के; कऱ्ऱ इयल्–अपनी शिक्षा के अनुसार; पाणि कॊट्ट–करताल लगाते; मुऱ्ऱु इयल्–पूर्णता-प्राप्त; चिलै वलाळन्–धनुर्विद्यादक्ष श्रीराम के; मॊय् कणै–घने बाणों के; तुमिप्प–काटने से; आवि पॆऱ्ऱु–जीवन पाकर; इयल्–हिलाने की; पॆऱ्ऱि पॆऱ्ऱाम्–स्थिति पा गये; ऍन्न–कहकर; वाळ् अरक्कर् याक्कै–क्रूर राक्षसों के धड़; कळि नटम्–मस्ती से नृत्य; पयिल–कर रहे थे; कण्टान्–देखा। ३५७५

रावण ने देखा कि छोटे आकार और नाटे पैरों के सियारों के स्वर को गाना मानकर विविध प्रेतों के करताल के लय में राक्षस कबंध इस आनन्द के साथ नाच रहे हैं कि पूर्ण धनुकुशल श्रीराजाराम के अपूर्व धनु से कटने के कारण हम में यह नाचने की शक्ति आयी ! । ३५७५

विण्गळिर् चॆन्ऱ दन्ऱोट् कणवरै यलहै वॆय्य
पुण्गळिऱ् कैहळ् नीट्टिप् पुदुनिणङ् गवर्व नोक्कि

मण्गळिऱ् ऱोडरन्दु वाळिऱ् पिडित्तु वळ्ळुहिरिऩ् मात्तक्
कण्गळैच् चूऩ्ऱु नीक्कु मरक्कियर् हुळामुङ् गण्डाऩ् 3576

विण्कळिऱ् चॅऩ्ऱ–स्वर्गलोकों में जो गये; वल् तोळ् कणवर्–बलवान कन्धों वाले पतियों को; अलकै–प्रेत; वॅय्य पुण्कळिल्–कठोर व्रणों में; कैकळ् नीट्टि–हाथ डालकर; पुतु निणम्–ताजे मज्जे; कवर्व–ले रहे हैं, उसे; नोक्कि–देखकर; मण्कळिल् तॊटर्न्तु–भूमि पर पीछा करके; वाळिल्–तलवार से; वळ् उकिरिऩ्–और तेज नाखून से; पिटित्तु–पकड़कर; मात्तम् कण्कळै–बड़ी आँखों को; चूऩ्ऱु नीक्कुम्–खोद लेनेवाली; अरक्कियर् कुळामुम्–राक्षसियों के समूहों को भी; कण्टाऩ्–देखा रावण ने। ३५७६

राक्षस वीरों के जीव स्वर्ग चले गये। इधर युद्धभूमि पर पड़े उनके शरीर के ताज़े व्रणों में प्रेत हाथ डालकर मज्जे निकालने लगे। इसको उन वीरों की पत्नियों ने देखा तो उन्हें असत्य लगा। वे भूमि पर दौड़ती गयीं और अपनी-अपनी तलवारों से या अपने तेज़ नाखूनों से अपनी बड़ी आँखें नोच लेने लगीं। रावण ने ऐसी राक्षसियों के समूहों को देखा। ३५७६

कुमिळिनी रोडुज् जोरिक् कऩलॊडुङ् गॊळिक्कुङ् गण्णाऩ्
तमिळ्नॆऱि वळक्किऩ् मऩ्ऩऩ् दनिच्चिलै वळङ्गच् चायन्दार्
अमिळ्बॆरुङ् गुरुदि वॆळ्ळ माऱ्ऱुवाय् मुहत्तिऩ् ऱेक्कि
उमिळ्वदे यॊक्कुम् वेलै योदमुवन् दुडऱ्ऱक् कण्डाऩ् 3577

कुमिळि नीरॊटुम्–भँवरों-सह (अश्रु-) जल के साथ; कऩलॊटु–आग और; चोरि–रक्त; कॊळिक्कुम्–से भरी; कण्णाऩ्–आँखों वाले रावण ने; तमिळ् नॆऱि वळक्किल्–तमिळ-संप्रदाय के अनुसार; मऩ्ऩऩ् तऩि चिलै–श्री राजाराम के अतिशय धनु के कारण; वळङ्क चायन्तार्–जो मरे; अमिळ्–उनके डुबानेवाले; पॆरु–बड़े; कुरुति वॆळ्ळम्–रक्त के प्रवाह को; तेक्कि–पीकर; आऱ्ऱुवाय् मुकत्तिल्–नदी के मुख-द्वार से; उमिळ्वते ऒक्कुम्–उगल रहा हो ऐसा दिखनेवाले; वेलै ओतम्–समुद्र के प्रवाह को; वन्तु उटऱ्ऱ–आकर लहराता; कण्टाऩ्–देखा। ३५७७

रावण की आँखें भँवर-सहित अश्रुजल, अनल और रक्त से भर गयीं। उसने देखा कि तमिळवासियों की उदारता के समान श्रीराजाराम के अत्यंत उदारता के साथ प्रेरित शरों से आहत होकर जो मरे, उनका रक्त-प्रवाह इतना गहरा था कि वह किसी को भी अपने अन्दर मग्न कर ले सकता था। समुद्र ऐसा लहराता था मानो वह इस रक्त को पीकर नदीमुखद्वार के ज़रिए उगल रहा हो। ३५७७

विण्पिळन् दॊऩ्ऱ वाऱ्ऱल वाऩरर् वीक्कङ् गण्डाऩ्
मण्पिळन् दळुन्द वाडुङ् गवन्दत्तिऩ् वरुक्कङ् गण्डाऩ्
कण्पिळन् दॊक्क वाऱ्क्कुम् वाऩ्मुनि कणङ्गळ् कण्डाऩ्
पुण्पिळन् दनैय नॆञ्जऩ् कॊबुरत् तिऴिन्दु पोन्दाऩ् 3578

विण् पिळन्तु–आकाश फटकर; ऑलिक–हिल जाय ऐसा; आर्त्त–नाद उठानेवाले; वानरर् वीक्कम्–वानरों की भीड़; कण्टान्–देखी; मण् पिळन्तु–भूमि फटकर; अऴुन्त–नीचे जाय ऐसा; आटुम्–नाचनेवाले; कवन्तत्तिन् वक्कम्–कबन्ध का वर्ग; कण्टान्–देखा; कण् पिळन्तु–आँखें फाड़कर; ऑक्क आर्क्कुम्–एक साथ आनन्दरव मचानेवाले; यान् मुनि कणङ्कळ्–श्रेष्ठ मुनियों के वृन्दों को; कण्टान्–देखा; पुण् पिळन्तनैय नॅञ्चन्–खुले व्रण के समान मनवाला रावण; कोपुरत्तु–गोपुर से; इऴिन्तु पोन्तान्–उतरकर चला। ३५७८

उसने आकाश फाड़ते हुए चिल्लानेवाले वानर-झुंड देखे। भूमि को फाड़कर पाताल में पहुँचाते हुए नाचनेवाले कवंधवृन्दों को देखा। आँखें फाड़कर देखते हुए आनंदरव उठानेवाले श्रेष्ठ मुनियों के समूह देखे। उसका मन खुले व्रण के जैसा हो गया। वह गोपुर से उतरकर चला। ३५७८

नहैपिऱक् किन्ऱ वायन् नाक्कॊडु कडैवाय् नक्कप्
पुहैपिऱक् किन्ऱ मूक्कन् पॊऱिपिऱक् किन्ऱ कण्णन्
मिहैपिऱक् किन्ऱ नॅञ्जन् वॅञ्जिनत् तीमेल् वीङ्गिच्
चिहैपिऱक् किन्ऱ शॊल्लन् नरशिय लिरुक्कै शेर्न्दान् 3579

नकै पिऱक्किन्ऱ वायन्–हासमुख; ना कॊटु–जीभ से; कटैवाय् नक्क–मुख के कोनों को चाटते हुए; पुकै पिऱक्किन्ऱ–धुआँ जिससे निकले; मूक्कन्–ऐसी नाक वाला; पॊऱि पिऱक्किन्ऱ–अंगारे जिससे निकलें; कण्णन्–ऐसी आँखों वाला; मिकै पिऱक्किन्ऱ–अतिक्रमजनक; नॅञ्चन्–चित्त वाला; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध को; ती–अग्नि; मेल् वीङ्कि–ऊँची बढ़कर; चिकै पिऱक्किन्ऱ–ज्वालाएँ पैदा करे ऐसा; चॊल्लन्–वचन वाला; अरचियल् इरुक्कै–राज्यासन (मण्डप); चेर्न्तान्–पहुँचा। ३५७९

उसका मुख क्रोध की हँसी से युक्त हुआ। जीभ मुख के कोनों को चाट रही थी। नाक से धुआँ निकला और आँखों से अंगारे छूटे। मन में अतिक्रम के भाव उठ रहे थे। शब्द ऐसे लगे मानो कोपाग्नि के बढ़ने से उठी ज्वालायें हों। वह इस स्थिति में मंत्रणा-मण्डप में गया और राजासन पर बैठा। ३५७९

34. इरावणन् तेरेऱु पडलम् (रावण-रथारोहण पटल)

पूदर मनैय मेऩिप् पुहैनिऱप् पुरुवच् चॅङ्गण्
मोदर नॅन्नु नामत् तॊरुवनै मुऱैयि नोक्कि
एवुळ दिऱन्दि लाद दिलङ्गैयु ळिरुन्द शेनै
यावैयु मॅऴुहॆन् ऱानै यणिमुर शेऱ्ऱु हॆन्ऱान् 3580

पूतरम् अनैय मेनि–भूधर-सा शरीर; पुकै निऱ–धुएँ के-से रंग की; पुरुव–भौंहें; चॅम् कण्–लाल आँखें; मोतरन् ऎन्नुम् नामत्तु–(जिसकी थीं उस) महोदर नाम के;

ऑरुवतै–एक राक्षस को; मुऱैयिन् नोक्कि–क्रम से देखकर; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर में; इऱन्तिलातवु इऱन्त–जो मरी नहीं है; चेतै–सेनाएँ; एवु उळवु–जितनी हैं; यातैयुम्–उन सभी को; ऑळ्क ऎत्त्र–कूच करो ऐसा; आतै–हाथी पर; अणि मुरचु–सुन्दर भेरी; एऱ्ऱुक–चढ़ाओ; ऎत्ऱात्–कहा। ३५८०

रावण ने महोदर पर जो भूधर के-से आकार का था, जिसकी भौंहें धुएँ के रंग की थीं और जिसकी आँखें लाल थीं, ठीक प्रकार से देखकर आज्ञा सुनायी कि जो भी सेनाएँ बची हैं, वे सब युद्ध में जाएँ। हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और बजाकर यह संदेश फैला दो। ३५८०

ऎऱ्ऱिल मुरशि तोडु मेळ्रु नूऱु कोडि
कॊऱ्ऱवा णिरुवर् शेतै कुळ्रीइयदु कॊडित्तिण् डेरुम्
चुऱ्ऱुऱु तुळैक्कै मावुम् दुरहमुम् बिऱवुन् दॊक्क
वऱ्ऱित वेलै यॆन्न विलङ्गैयूर् वऱ्ळिऱ् ऱाह् 3581

मुरचु ऎऱ्ऱित ओट्टम्–नगाड़े के बजते ही; एळ् इरु नूऱु कोटि–सात के दो (चौदह) सौ करोड़; कॊऱ्ऱम् वाळ् निरुवर् चेतै–विजयी तलवारधारी वीरों की सेना; कुळ्रीइयतु–एकत्र हुई; वऱ्ऱित वेलै ऎत्त–शुष्क सागर के समान; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर; वऱ्ळिऱ्ऱु आक–खाली करते हुए; कॊटि तिण् तेरुम्–ध्वजायुक्त सबल रथ; चुऱ्ऱुऱु–उनको घेरकर; तुळै कै मावुम्–रंध्रसहित सूँड़ वाले हाथी; तुरकमुम्–तुरग; पिऱवुम्–और अन्य; तॊक्क–जमा हुए। ३५८१

मुनादी के पिटने पर चौदह सौ करोड़ विजयभूषित, तलवारधारी वीरों की राक्षस पदाति सेना इकट्ठी हुई। लंकानगर जलशुष्क सागर के समान रिक्त हो जाए, ऐसा ध्वजा से अलंकृत सुदृढ़ रथों के साथ नली से युक्त सूँड़वाले हाथी, घोड़े और अन्य इकट्ठे हुए। ३५८१

ईशतै यिमैया मुक्क णिऱैवतै यिरुमैक् केऱ्ऱ
पूशतै मुऱैयिऱ् चॆय्दु तिरुमऱै पुहन्ऱ दातम्
वीशित तियऱ्ऱि मऱ्ऱुम् वेट्टत वेट्टोर्क् कॆल्लाम्
आशऱ नल्हि यॊल्हाप् पोर्त्तॊळ्रिऱ् कमैव दातात् 3582

ईचतै–ईश्वर; इमैया–अपलक; मुक्कण् इऱैवतै–त्रिनेत्र देव को; इरुमैक्कु एऱ्ऱ–इह-पर के योग्य; पूचतै–पूजा को; मुऱैयित् चॆय्तु–यथाक्रम करके; तिरु मऱै पुकन्ऱ–उत्तम वेदोक्त; तातम्–दानों को; वीचितत् इयऱ्ऱि–लुटाते हुए करके; मऱ्ऱुम्–और; वेट्टोर्क्कु ऎल्लाम्–सभी चाहनेवालों को; वेट्टत–उनकी चाह की वस्तुओं को; आचु अऱ–निर्दोष रीति से; नल्कि–देकर; ऑल्का–अक्षय (दीर्घ); पोर् तॊळ्रिऱ्कु–युद्धकृत्य के लिए; अमैवतु आतात्–तैयार हुआ। ३५८२

रावण ने अपलक त्रिनेत्र शिव की इह-पर-हितार्थ आवश्यक पूजा की। वेदोक्त दान उदारता के साथ दिए। और भी जिन्होंने जो जो चाहा।

उन्हें वह सभी दिया। फिर वह दीर्घ युद्ध के लिए तैयारी करने लगा। ३५८२

अरुवि यन्जनक् कुन्ऱिडै यायिर मरुक्कर्
उरुवि नोडुम्वन् दुदित्तत रामॅन वौळिरक्
करुवि नान्मुहन् वेळ्वियिड् पडैत्तदुङ् गट्टिच्
चॅरुवि लिन्दिरन् ड्रन्दपॊड् कवशमुञ् जेर्त्तान् 3583

अरुवि–नदियों-सहित; अन्चन कुन्ऱिडै–काले पर्वत में; आयिरम् अरुक्कर्–सहस्र सूर्य; उरुविन्नोडुम्–अपने उज्ज्वल रूप में; वन्तु उतित्तत्तर् आम्–आ उदित हों; ॲन–जैसे; ऑळिर–प्रकाश फैलाकर; नान्मुकन्–चतुर्मुख; वेळ्वियिल्–यज्ञ में; पटैत्ततु–कृत; करुवि उम्–कवच; कट्टि–बाँधकर; चॅरुविल्–युद्ध में; इन्तिरन् तन्त–इन्द्रदत्त; पॊन् कवचमुम्–स्वर्ण-कवच भी; चेर्त्तान्–लगाकर बाँध लिया। ३५८३

स्वकृत यज्ञ में चतुर्मुख द्वारा सृष्ट एक कवच पहन लिया। वह कवच अपने उत्कृष्ट रूप में नदियों-सहित पर्वत पर उदित सहस्र सूर्यों का-सा प्रकाश छिटका रहा था। उस पर वह स्वर्ण कवच भी बाँध लिया जो कि (विजित) इन्द्र-दत्त था। ३५८३

वाळ्व लम्बड मन्दरज् जूळ्न्दमा शुणत्तिन्
ताळ्व लन्दौळिर् दमनियक् कच्चौडुज् जार्त्तिक्
कोळ्व लन्दन कुविन्दत वामॅनुङ् गौळ्है
मीळ्विल् किम्बुरि मणिक्कडि शूत्तिरम् वीक्कि 3584

मन्तरम् चूळ्न्त–मंदर पर लिपटे; मा चुणत्तिन्–(वासुकी) नाग के समान; ताळ्–रस्सी से; वलन्तु–लपेट बाँधकर; ऑळिर्–प्रकाश छिटकानेवाली; तमनियम् कच्चॊटुम्–स्वर्ण के कमरबन्द के साथ; वाळ्–तलवार को; वलम् पट–दाहिनी तरफ़; चार्त्ति–लगा लेकर; कोळ्–ग्रह; कुविन्तत–एकत्र हों; वलन्तत–चारों ओर लगे रहे; आम् ॲनुम् कौळ्कै–ऐसा मान्य रीति से; मीळ्वु इल्–अमिट; किम्पुरि–किंपुरी नामक आभरण और; मणि कटि चूत्तिरम्–रत्ननिर्मित कटि-सूत्र भी; वीक्कि–बाँधकर। ३५८४

फिर स्वर्ण का कमरबन्द पहन लिया, जो मंदरपर्वत को लपेटकर बाँधे गये वासुकी नाग के समान रस्सी से खूब बाँधा गया था। दायीं तरफ़ तलवार लटका ली। सभी ग्रह चारों तरफ़ से एकत्रित हों—ऐसा 'किंपुरी' नामक आभरण पहन लिया। उसके ऊपर कटिसूत्र बाँध लिया। ३५८४

मड़ैयि रित्तॅन्न वाडुरु मानमाक् कलुळन्
शिड़ैयि रित्तॅन कॊय्शह मरुङ्गुड़च् चेर्त्ति

मुऱैवि रित्तॆन्न मुऱुक्किय कोशिह मरुङ्गिऱ्
पिऱैवि रित्तन्न वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरवमुम् बिणित्तु 3585

मऱै विरित्तु ऎन्न–वेद को फैलाकर रखा हो जैसे; आटु उऱु–हिलनेवाले; मात मा कलुळन्–गुरु महा गरुड़ के; चिऱै विरित्तॆन्न–पंख फैले हों जैसे; कोय्चकम्–शिकनों को; मरुङ्कु उऱ–वस्त्र में पार्श्व में हों ऐसे; चेर्त्ति–पहनकर; मुऱै विरित्तॆन्न–क्रम माने गये हों जैसे; मुऱुक्किय–ऐंठन लगे; कोचिकम्–कौशेय को; मरुङ्किल्–कमर में (लपेटकर); पिऱै विरित्तॆन्न–अर्धचन्द्र फैला हो जैसे; वॆळ् ऎयिऱ्ऱु अरवम्–सफ़ेद दाँतों वाले सर्प को; पिणित्तु–लपेटकर। ३५८५

वेदविस्तार के समान (पक्ष फैलाकर) नाचनेवाले शालीन गरुड़ के पक्ष फैले हों, ऐसी वस्त्र की शिकनों से लगी नीवि को उचित रीति से बाँध लिया। क्रमबद्ध-रूप से ऐंठे हुए कौशेय वस्त्र को अनेक बार कमर से लपेट लिया। उसके ऊपर अर्द्धचंद्रों का फैलाव हो जैसा सफ़ेद दाँतोंवाले सर्प को बाँध लिया। ३५८५

मळैक्कु लत्तिडै वदियुमिऩ् ऩिऩङ्गळै वारि
इळैत्तॆ डुत्तॆऩ वऩैन्दिडु मुडैमणि यिशैत्तु
मुळैक्कि डऩ्दपल् लरियिऩ मुळङ्गु पोरार्प्पिऩ्
ऱळैक्कु मिऩ्ऩॊळिप् पॊऩ्मणिच् चदङ्गैयुञ् जात्ति 3586

मळै कुलत्तिडै–मेघसमूहमध्य; वतियुम्–रहनेवाली; मिऩ् इऩङ्कळै–बिजलियों के समूहों को; वारि–एक साथ मिलाकर; इळैत्तु ऎडुत्तु ऎऩ–बनाया गया हो जैसे; वऩैन्तिडुम्–निर्मित; उडै मणि–'कमरघण्टी'; इचैत्तु–बाँधकर; मुळै किडन्त–कंदराओं में पड़े रहे; पल् अरि इऩम्–अनेक सिंहवृन्द; मुळङ्कु पोर् आर्प्पिऩ्–एक साथ गरज रहे हों, ऐसा उठे नाद से; तळैक्कुम् मिऩ् ऒळि–समृद्ध बिजली के-से प्रकाशवाले; पॊऩ् मणि चतङ्कैयुम्–स्वर्णघुंघुरुओं की लड़ियाँ; चात्ति–साथ बाँधकर। ३५८६

मेघसमूहमध्य चमकनेवाली बिजली-समूहों को एक साथ मिलाकर बनायी गयी हो —ऐसी "वस्त्रघंटी" पहन ली। उस पर कंदरा-स्थित अनेक सिंहों के गर्जन के समान शब्द उठानेवाली और पुष्कल प्रकाशमय घुंघुरुओं की लड़ी पहन ली। ३५८६

उरुमि डित्तपो दरवुऱु मरुक्कमॆवा ऩुलहिऩ्
इरुनि लत्तिडै यॆव्वुल हत्तिडै यारुम्
पुरिद रप्पडुम् पॊलङ्गऴ लिलङ्गुरप् पूट्टिच्
चरियु डैच्चुडर् शायऩलज् जार्बुऱच् चात्ति 3587

उरुम् इडित्त पोतु–वज्र जब टूटता हो; अरवु उऱु मरुक्कम्–तब सर्प जो बेचैनी पाता है वह; वाऩ् उलकिऩ्–व्योमलोक में; इरु निलत्तिडै–और बड़े भूलोक में; ऎ उलकत्तिडै–किसी भी लोक में; यारुम्–सभी; पुरि तर–(व्याकुलता)

पा जाएँ ऐसा; पोलम् कऴल्–स्वर्ण-कड़ों को; इलङ्कु उऱ–शोभा दें, ऐसा; पूट्टि–पहनकर; चरि उडै–ढीले अधोवस्त्र की; चुडर्–छटा; चाय्–(पायल की) छवि के; नलम्–प्रभाव से; चार्वु उऱ–संयुक्त रहे ऐसा; चात्ति–बाँधकर। ३५८७

फिर उसने स्वर्ण-पायल पहन ली। वह ऐसी थी, जिसका नाद आकाश-लोक, भूलोक क्या सभी लोकों के वासियों को ऐसा त्रास दे सकता, जो वज्रनाद-सर्प को देता है! उसकी छवि अधोवस्त्र की छटा से मेल खाकर खूब रही थी। ३५८७

नालञ् जाहिय करङ्गळि नत्तन्दलै यनन्दन्
आलञ् जार्मिडऱ् ऱरुङ्गऱै किडन्दॆन्न विलङ्गुम्
कोलञ् जार्नॆडुङ् गोदैयुम् बुट्टिलुङ् गट्टित्
तालञ् जार्न्दमा शुणमॆन्नक् कङ्गणन् दऴुव 3588

नाल् अञ्चु आकिय–(४ × ५) बीस; करङ्कळिल्–हाथों में; नत्त तलै–बड़ सिरों के; अनन्तन्–आदिशेषनाग के; आलम् चार्–विष के स्थान; मिटऱु–गले का; अरुम् कऱै–अपूर्व कलंक; किटन्तु ऎन्न–रहता जैसा; इलङ्कुम्–विद्यमान; कोलम् चार्–सुन्दर; नॆटु कोतैयुम्–लम्बे चमड़े के हस्तत्राण; पुट्टिलुम्–और अंगुलीत्राण; कट्टि–लगा लेकर; तालम्–तालवृक्ष पर; चार्न्त–लिपटे; माचुणम् ऎन्न–सर्प के समान; कङ्कणम्–कंकण; तऴुव–बलयित रहे ऐसा। ३५८८

बीसों हाथों में चमड़े के हस्तत्राण लगा लिये। वे मोटे आदिशेषनाग के कंठ के विष के धब्बे के समान लगते थे। फिर अंगुलित्राण भी लगा लिये। ताल-तरु से लिपटे सर्प के समान कंकण भी पहन लिये। ३५८८

कटल्ह डैन्दमाल् वरैयित्तैच् चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्
अडल्ह डन्ददो ळलङ्गुपोर् वलयङ्ग ळिलङ्ग
उडल्ह डैन्दना ळॊळियव नुदिर्न्दपॊऱ् कदिरित्
तुडर्द यङ्गुऱक् कुण्डलञ् जॆवियिडैत् तूक्कि 3589

कटल् कटैन्त–समुद्रमथनकारी; माल् वरैयित्तै–बड़े पर्वत को; चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्–जो लिपटा रहा उस (वासुकी) नेति के; अटल् कटन्त–बल से अधिक बलवान; तोळ्–कंधों पर; अलङ्कु–हिलनेवाले; पोर् वलयङ्कळ्–युद्ध के समय पहने जानेवाले बाहुवलय; इलङ्क–शोभित रहे; उटल् कटैन्त नाळ्–(सूर्य का) शरीर जब मथा गया तब; ऒळियवन्–किरणमाली ने; उतिर्न्त–जो गिरायीं; पॊन् कतिरिन्–स्वर्णमय किरणों का-सा; चुटर्–प्रकाश; तयङ्कुऱ–आता रहे ऐसा; चॆवियिटै–कानों में; कुण्टलम् तूक्कि–कुंडल लटकाकर। ३५८९

भुजाओं पर बाहुवलय पहने जो समुद्रमथनकारी मंदर पर्वत के चारों ओर लिपटे वासुकी-नेति के समान लगे। कानों में कुंडल पहन लिये जिनसे उसी भाँति स्वर्णमय रोशनी छूटती थी जिस भाँति सूर्य से तब किरणें

छूटीं जब उसके शरीर को मथा (तराशा) गया था। [यह एक विचित्र कहानी है। उसका उल्लेख स्कंदपुराण, वेळूर् पुराण आदि में है। कहानी यों है। एक सुंदर मुनिपत्नी थी जिसके अति प्यारे पति जब कभी बाहर उसे छोड़कर जाते तब उसके प्राण अलग करके अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन इन्द्र और सूर्य उससे संभोग की कामना करके उसके पास आये और इंद्र उसका प्राण हुआ और सूर्य ने उसे भोग लिया। मुनि ने आकर समाचार जाना तो शाप दिया कि सूर्य प्रकाशहीन हो जाए। फिर विश्वकर्मा ने सूर्य को मथकर (तराशकर) प्रकाशमय बना दिया।]। ३५८९

उदयक् कुन्ऱत्तो डत्तत्ति नुलावुऱु कदिरिन्
तुदैयुङ् गुङ्गुमत् तोळोडु तोळिडैत् तॊडरप्
पुदैयि रुट्पहैक् कुण्डलम् जॆविदोऱुम् बॊलियच्
चिदैवि ड़िङ्गळु मीनुम्बोल् मुत्तिनन् दिहळ 3590

कुङ्कुमम् तोळोडु तोळिडै–कुंकुमचर्चित कंधों में; तॊडर–लगातार; पुदै इरुळ् पकै–संसार को ढँकनेवाले अन्धकार का शत्रु; कुण्डलम्–कुंडल; उतय कुन्ऱत्तोडु–उदयाचल से; अत्तत्तिन्–अस्ताचल तक; उलावुऱु–घूमनेवाले; कतिरिन्–सूर्य के समान; तुतैयुम्–घने बने; चॆवि तोऱुम्–हर-कान में; पॊलिय–शोभायमान रहे; चितैवु इल्–अक्षय; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; मीनुम् पोल्–नक्षत्र के समान; मुत्तु इनम्–मुक्ताहारों के; तिकळ–शोभायमान रहते। ३५९०

कुंकुमचर्चित कंधों पर उदयाचल और अस्ताचल के मध्य घूमने वाले किरणमाली के समान लोकाच्छादक अन्धकार के शत्रु लगे हिलने वाले कुंडल कान-कान में शोभ रहे थे। फिर मुक्ताहार पहन लिये जिनके मोती अक्षयदीप्तिराशि सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की-सी छटा से युक्त थे। ३५९०

वेलै वाय्वन्दु वॆय्यव रनैवरुम् विडियुङ्
गालै युऱ्ऱन रामॆनक् कदिर्मुडि कालुम्
मालै पत्तित्मेल् मदियमु ताळिडैप् पलवाय्
एल मुऱ्ऱिय वनैयमुत् तक्कुडै यिमैप्प 3591

वॆय्यवर् अनैवरुम्–सभी सूर्य; विटियुम् कालै–प्रातःकाल में; वेलै वाय् वन्तु उऱ्ऱनर्–सागर में आ पहुँचे; आम् ऎन–हों जैसे; कतिर् कालुम्–किरणजाल निःसृत करनेवाले; मालै मुटि पत्तिन् मेल्–पंक्ति में रहे दसों किरीटों पर; मुन् नाळ् इटै–पूर्व (शुक्ल) पक्ष-मध्य; पल आय्–विविध जो कलाएँ हैं उनके; एल–साथ; मुऱ्ऱिय मतियम्–पूर्णचन्द्र; अनैय–के समान; मुत्त कुटै–मोतियों के झालरों के साथ; इमैप्प–शोभायमान रहा (उसके ऐसा रहते)। ३५९१

उसके माला से अलंकृत दसों किरीटों से ऐसा प्रकाश छूट रहा था,

मानो सभी सूर्य एक साथ समुद्र पर उदित होकर किरणजाल फैला रहे हों। उनके ऊपर सभी कलाओं से युक्त पूर्णचंद्र जैसे मोतियों के झालरों के साथ श्वेत छत्र शोभायमान था। ३५९१

पहुतत्त पल्वळक् कुन्ऱिनिन् मुळैयत्तन पहुवाय्
वहुतत्त वान्कडत् तिशैतोऱुम् वळैयॅयिऱ् ऱीट्टम्
मिहुतत्त नीलवान् मेहम्जूळ् विशुम्बिडैत् तशुम्बू
ङुहुतत्त शॅक्करिर् पिऱैक्कुल मुळैत्तत्त वॊक्क 3592

पल् वळम् पकुत्त–विविध श्रेणियों में विभक्त; कुन्ऱितिन्–पर्वत में; मुळै अत्तन–कन्दराओं के समान; वकुत्त पकुवाय्–अलग-अलग फटे से मुँह के; वान्–बड़े; कटै–कोरों में; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में दिखनेवाले; वळै ऍयिऱु ईट्टम्–समूह के वक्र दाँत; मिकुत्त नीलम्–अति नीले; वान् मेकम् चूळ्–जल-भरे मेघों से आवृत; विचुम्पु इटै–आकाश में; तचुम्पु ऊट्टु उकुत्त चॅक्करिल्–एक घड़ा द्वारा ढाले गये लाल गगन में; पिऱै कुलम्–तीज के चाँद; मुळैत्तत्त ऑक्क–उग आये जैसे लगे (उनके ऐसा लगते)। ३५९२

उसके फटे-से मुख विविध श्रेणीबद्ध पर्वतों में की कंदराओं के समान थे। उनके कोनों में जो वक्रदाँत लगे थे वे सभी दिशाओं में फैले थे और वे ऐसे लगे मानो नीले रंग के मेघावृत आकाश में एक घड़े से ढाली गयी लाली के मध्य तीज के चाँदों की राशि उगी हो। ३५९२

ऑत्त तन्मैयि नॊळिर्वत्त तरळत्ति नॊक्कत्
तत्तु हिन्ऱत्त वीरपट् टत्तोहै तयङ्ग
मुत्त वोडैयिन् मुरट्टिशै मुम्मद यानै
पत्तु नॅऱ्ऱियुञ् जुऱ्ऱिय पेरॅळिल् पडैप्प 3593

पत्तु नॅऱ्ऱियुम्–दसों भालों पर; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बाँधी हुई; ऑत्त तन्मैयिन् ऑळिर्वत्त–और एक-सम छविमय; तरळत्तिन्–मोतियों की बनी; ऑक्क तयङ्कि तत्तुकिन्ऱत्त–एक साथ प्रकाश निःसृत करनेवाली; वीर पट्ट तोकै–वीर-पट्टियों की राशि; मुरण्–विलक्षण; मुम्मत–त्रिमद; तिचै यानै–दिग्गजों के; मुत्त ओडैयिन्–मोतियों के पट्टों की-सी; पेरॅळिल् पटैप्प–बड़ी छवि दरसाते रहे (ऐसे रहते)। ३५९३

उसके भालों पर पट्टियाँ बँधी थीं जो एक-सम चमक रही थीं। वे एक-सम उज्ज्वल मोतियों से निर्मित थीं। उनकी छबि विलक्षण और त्रिविध-मद बहानेवाले दिग्गजों के मुक्तामय वीरपट्टों की-सी थी। ३५९३

पुलवि मङ्गैयर् पूञ्जिलम् बरऱ्ऱडि पोक्कित्
तलैमै कण्णिन्ऱत् ताळ्हिला मणिमुडित् तलङ्गळ्

उलह मौत्ट्रित्तै विळक्कुरुङ् गदिरित्तै योट्टि
अलहि लॅव्वुल हत्तितुम् वयङ्गिरु ळहट्ट्र 3594

पुलवि–रूठी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; पूम्–सुन्दर; चिलम्पु–नूपुर; अरट्रु–जिनमें रहकर क्वणित होते हैं उन; अटि–चरणों को; पोक्कि–छोड़कर; तलमै कण्णिनर्–(अन्य) बड़ाई के अभिलाषी किसी के भी सामने; ताळ्किला–न झुकने वाले; मणि मुटि तलक्कळ्–रत्नकिरीटों के स्थान; उलकम् ऑत्ट्रितै–एक लोक को; विळक्कुरुम्–प्रकाश देनेवाले; कतिरित्तै–सूर्य को; ओट्टि–भगाकर; अलकु इल्–अनगिनत; ॲ उलकत्तितुम्–सभी लोकों में; बयङ्कु–रहनेवाले; इरुळ्–अन्धकार को; अकट्ट्र–हटाते रहे (हटाते)। ३५९४

उसके रत्न-किरीटाश्रय-स्थल (माथे) रूठी हुई स्त्रियों के चरणों के अलावा किसी भी बड़ाई चाहनेवाले के सामने झुके नहीं थे। वे केवल एक लोक को प्रकाश देनेवाले सूर्य को भगाकर अनंत सभी लोकों के अन्धकार को दूर कर रहे थे। ३५९४

नाह नानिल नान्मुह ताडॅत्त नयन्द
पाह मून्ड्रैयुम् वॅन्रुकॊण् डमरर्मुन् पणिन्द
वाहै मालैयिन् मरुङ्गुड़ वरिवण्डॊ डळवित्
तोहै यन्नवर् विळितॊडर् तुम्बैयुञ् जूट्टि 3595

नाकम्–नागलोक; नानिलम्–चतुर्विधा भूमि का भूलोक; नान्मुकन् नाटु–ब्रह्मा का (सत्य-) लोक; ॲत–आदि; नयन्त–इच्छित; पाकम्–भाग; मून्ड्रैयुम्–तीनों को; वॅन्रु कॊण्टु–जीत लेकर; मुन्पु–प्राचीनकाल में; अमरर् अणिन्त–देवों द्वारा पहनायी गयी; वाकै मालैयिन्–विजयमाला के; मरुङ्कु उड़–पास लगी रहे ऐसा; वरि वण्टॊटु–लकीरों-सह भ्रमरों के साथ; तोकै अन्नवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; अळावि–मिश्रित होकर; विळि तॊटर्–दृष्टियाँ जिसका पीछा करती हैं; तुम्पैयुम्–उस 'तुंबै' की माला को; चूट्टि–पहने हुए। ३५९५

नागलोक, चतुर्विधा भू-लोक और चतुर्मुखलोक आदि प्राप्ति की इच्छा के योग्य त्रिविध लोकों को जीतकर रावण ने देवों से दी गयी 'वाहै' की विजयमाला पहनी थी। उसके बग़ल में अब "तुंबै" (फूलों) की विजयमाला (जो युद्ध में जाने के चिह्न के रूप में पहनी जाती है) पहन ली, जिसका लकीरों से युक्त भ्रमर और कलापी-सी स्त्रियों के आतुर नेत्र पीछा कर रहे थे। (दोनों उस पर मँड़राते जाते थे।) ३५९५

अहळम् वेलैयि नहलत्तै यळक्करनुण् मणलै
निहळु मातिल विजयैयै निनैप्पदे तिन्ड्र
इहळ्विल् पूदङ्ग ळिड्रप्पिनु मिड्रुदिशॅल् लात्तन्
पुहळॅ नच्चरन् वॊलैविलात् तूणियुम् बूट्टि 3596

अकळ्म् वेलैयिन्–खनित समुद्र के; अकलत्तै–विस्तार को; अळक्कर्–समुद्र

को; नुण् मणलै–महीन बालुकाओं को; मा निलम् निकऴ्म्–बड़ी भूमि में प्रचलित; विज्जैयै–विद्याओं को; निनैप्पतु एन्–स्मरण करना क्यों; निन्ऱ–स्थायी; इकऴ्वु इल्–अनिंद्य; पूतङ्कळ्–(पाँचों) भूत; इऱप्पितुम्–मिट जाएँ तो भी; इऱुति चॆल्ला–जो अन्त को प्राप्त नहीं हों; तन् पुकऴ् अॆन–उसके ही यश के समान; अ चरम्–उन शरों के; तोले इला–अक्षय; तूणियुम्–तूणीर को; पूट्टि–बाँध लेकर। ३५९६

(सगरपुत्र-)खनित सागर के विस्तार को या उसकी महीन बालुकाओं को या विपुला पृथ्वी पर प्रचलित विद्याओं का स्मरण करना क्यों ? स्थायी रहनेवाले पाँचों भूतों का विनाश ही हो क्यों न जाए; पर रावण का यश अक्षुण्ण था और उसी प्रकार उसका तूणीर था जिसके शर अक्षय थे। ऐसे तूणीर को उसने धारण कर लिया। ३५९६

वरुह तेरॆन्न वन्ददु वैयमुम् वानुम्
उरह तेयमु मॊरुङ्गुड नेऱिनु मुच्चिच्
चॊरुहु पूवनुन चुमैयदु तुरहमिन्ऱॆ
निरुदर् कोमह निनैन्दुऴिच् चॆल्वदो रिमैप्पिल् 3597

तेर् वरुक–रथ आये; अॆन–आज्ञा देने पर; वैयमुम्–भूलोक; वानुम्–व्योमलोक और; उरक तेयमुम्–उरगलोक; ऑरुङ्कु–एक साथ; उटन् एऱिनुम्–एक साथ सवार हों तो भी; उच्चि चॊरुकु पू अनुन–चोटी में खोंसे जानेवाले फूल को जैसे; चुमैयतु–भारवाही; तुरकम् इन्ऱु ॲन्ऱिनुम्–घोड़े (जुते) न हों तो भी; निरुतर् को मकन्–राक्षसराज के; निनैन्तुऴि–विचार करने पर; ओर् इमैप्पिल्–एक क्षण में; चॆल्यतु–जा सकता था (वह रथ); वन्ततु–आ गया। ३५९७

ऐसा सजकर रावण ने आज्ञा दी कि रथ आये। वह ऐसा रथ था जिसके लिए नाकलोक, भूलोक और नागलोक का सम्मिलित भार भी चूडा-पुष्प जैसा हलका लगे; विना घोड़ों के ही वह रावण की इच्छा के अनुसार पल भर में जा पहुँच सकता था। वह आया। ३५९७

आयि रम्बरि यमुदॊडु वन्दवु मरुक्कन्
पाय्व यप्पशुङ् गुदिरैयिन् वऴियवुम् बडर्नीर्
वाय् मडुक्कुमा वडवैयिन् वयिऱ्ऱिनुवन् काऱ्ऱिन्
नाय हर्कुवन् दुदित्तवुम् बूण्डदु मलत्तिन् 3598

मलत्तिन्–सुन्दरता के साथ; अमुतॊटु–अमृत के साथ; वन्तवुम्–जो प्रगट हुए और; अरुक्कन्–सूर्य के; पाय्–चौकड़ी भरनेवाले; वयम्–विजयवायी; पचुम् कुतिरैयिन्–हरे घोड़ों के; वऴियवुम्–वंशज; पटर्–फैले रहे; नीर्–समुद्र-जल को; वाय् मटुक्कुम्–अपने मुख से पी लेनेवाले; मा–बड़े; वटवैयिन्–वडवा के अश्व की; वयिऱ्ऱिन्–कोख में; वल्–बलवान; काऱ्ऱिन् नायकऱ्कु–पवनदेव के द्वारा; वन्तु उतित्तवुम्–जो जनमे थे; आयिरम् परि–वे हज़ार घोड़े; पूण्टतु–जुते थे। ३५९८

उससे हज़ार घोड़े जुते थे। सूर्य के रथ से जुते हरे, ससौंदर्य अमृत

के साथ जनमे, सरपट दौड़नेवाले और विजयदायी अश्वों के वंशज थे। और वे समुद्रजलपायी वडवा के अश्व के पेट में वायु के वीर्य से पैदा हुए थे। ३५९८

पारिऱ् चॅल्वदु विशुम्बिडैच् चॅल्वदु परन्द
नीरिऱ् चॅल्वदु नॅरुप्पिनुज् जॅल्वदु निमिर्न्द
पोरिऱ् चॅल्वदु पोय्नॅडु मुहट्टिडै विरिञ्जऩ्
ऊरिऱ् चॅल्ववॅव् वुलहिनुज् जॅल्वदो रिमैप्पिऩ् 3599

ओर् इमैप्पिऩ्–पल भर में; पारिल् चॅल्वतु–भूमि पर जानेवाले; विचुम्पिटै चॅल्वतु–आकाश में जानेवाले; परन्त नीरिल्–विस्तृत (सागर-) जल पर; चॅल्वतु–जानेवाले; नॅरुप्पितुम् चॅल्वतु–आग में जानेवाले; निमिर्न्त–बढ़े; पोरिल् चॅल्वतु–युद्ध में जानेवाले; पोय्–जाकर; नॅटु मुकटु इटै–आकाश की लम्बी चोटी में; विरिञ्चऩ् ऊरिल्–विरंचि के नगर में; चॅल्वतु–जानेवाले; ऍ उलकितुम्–किसी भी लोक में; चॅल्वतु–जानेवाले। ३५९९

उनमें एक-एक एक पल में भूमि पर, आकाश में, विशाल सागर पर, आग पर और घोर युद्ध में, क्यों ऊँचे विरंचि-लोक में कहीं भी किसी लोक में भी जा सकता था। ३५९९

ऑण्डि शैप्पॅरुङ् गळिऱ्ऱिडै मणियॅऩ विशैक्कुम्
कण्डै यायिर कोडियिऩ् ऱॊहैयदु कदिरोऩ्
मण्डि लङ्गळै मेरुविऱ् कुवित्तॅऩ वयङ्गुम्
अण्डम् विऱ्कुनऩ् काशिनङ् गुयिऱ्ऱिय दडङ्ग 3600

ऑण् तिचै पॅरुम् कळिऱु इटै–बड़े अष्ट दिग्गजों की; मणि ॲऩ–घंटियों के समान; इचैक्कुम्–बजनेवाली; कण्टै–बड़ी घंटियाँ; आयिर कोटियिऩ् तॊकैयतु–हजार करोड़ की राशि की थीं; कतिरोऩ् मण्टिलङ्कळै–सूर्यमण्डलों को; मेरुविल् कुवित्तु ॲऩ–मेरु पर जमा किया गया हो ऐसा; वयङ्कुम्–शोभायमान; अटङ्क–सारे; अण्टम् विऱ्कुम्–अण्डों को अपना मूल्य बनानेवाले; नल्–श्रेष्ठ; काचु इतम्–रत्नराशियाँ; कुयिऱ्ऱियतु–(जिसमें) जड़ित थीं (वैसा रथ था वह)। ३६००

उसमें हज़ार करोड़ घंटियाँ बँधी थीं। वे बड़े दिग्गजों की बड़ी घंटियों के समान शब्द करनेवाली थीं। ऐसे रत्नों से सजे थे जो मेरु पर सूर्यमंडलों को एकत्रित किया गया हो ऐसा शोभित थे और उनका मूल्य सारा अंड भी भर नहीं सकता था। ३६००

मुनैवर् वाऩवर् मुदलिऩ रण्डत्तु मुदल्वर्
ॲऩैव रोऩ्दमु मिहलिनि लिट्टवु मियम्बा
विऩैयिऩ् वॅय्यऩ पडैक्कलम् वेलैयॅऩ् ऱिशैक्कुञ्
जुऩैयि ऩण्मणर् ऱॊहैयऩ शुमन्ददु तॊक्कु 3601

मुत्तैवर्–मुनि; वात्तवर्–देव; मुतलित्तर्–आदि; अण्टत्तु मुतल्वर्–अण्ड के नायक त्रिदेव; ॲत्तैवर्–सभी के; ईन्ततवुम्–दिये गये; इकलितिल्–युद्ध में; तुवट्टवुम्–(हारकर) छोड़े गये; वित्तैयिल्–कर्म में; इयम्पा–अकथनीय; वॅय्यन–कठोर; पट्टैक्कलम्–हथियारों को; वेलै ॲत्तुऱ इचैक्कुम्–सागर-कथित; चुत्तैयिल्–जलाशय में; नुण् मणल् तॊकैयत्त–महीन बालुकाओं-सी राशियों वाले (असंख्यक); तॊक्कु चुमन्ततु–एक साथ ढोता रहा (वह रथ)। ३६०१

उस पर अपार अस्त्र-शस्त्र लदे थे। मुनियों, देवों और आदिदेव त्रिदेवों द्वारा वर के रूप में दिये गये; युद्ध में शत्रुओं से छीने गये, सब मिलकर अकथनीय रीति से संतापक वे अस्त्र समुद्र की वालुकाओं से भी अधिक संख्या में थे। ३६०१

कण्णन् नेमियुङ् गण्णुदल् कणिच्चियुङ् गमलत्
तण्णल् कुण्डिहैक् कलशमु मऴियिनु मऴियात्
तिण्मै शाऩ्ऱदु तेवरु मुणर्वरुञ् जॅय्है
उण्मै यामॅऩप् पॅरियदु वॅऩ्ऱियि ऩुऱैयुळ् 3602

वॅन्ऱियिन् उऱैयुळ्–विजय का आगार (वह); कण्णन् नेमियुम्–विष्णु का चक्र; कण्णुतल् कणिच्चियुम्–भालनेत्र शिवजी का परशु; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव का; कुण्टिकै कलचमुम्–कमंडल-जैसा जलपात्र; अऴियिनुम्–नाश को प्राप्त हों तो भी; अऴिया–(यह) न नष्ट हो ऐसा; तिण्मै चान्ऱतु–सुदृढ़ है; तेवरुम् उणर्वु अरु–देव भी जान न सकें; चॅय्कै–ऐसी कारीगरी; उण्मै आम् ॲन–है, ऐसा कहने योग्य; पॅरियतु–अतिश्रेष्ठ है। ३६०२

वह विजय का आगर था। विष्णु का चक्र, त्रिनेत्र का परशु और कमलासन का कुण्डल आदि का नाश भले ही हो जाय, किन्तु यह अविनश्वर था और सुदृढ़ था। उसकी कारीगरी ऐसी थी कि देवता लोग भी जान नहीं पाएँ। ३६०२

अत्तैय तेरिऩै यरुच्चऩ वरऩ्मुऱै याऱ्ऱि
इत्तैय रॅऩ्बदोर् कणक्किला मऱैयव रॅवर्क्कुम्
वित्तैयि ऩऩ्ऩिदि मुदलिय वळप्परुम् वॅरुक्कै
नित्तैयि नीण्डदोर् पॅरुङ्गॊडै यरुङ्गड ऩेर्न्दाऩ् 3603

अत्तैय तेरिनै–उस रथ को; वरन्मुऱै–क्रमागत रीति से; अरुच्चनै आऱ्ऱि–अर्चना (पूजा) करके; इत्तैयर्–'इतने'; ॲन्पतु ओर् कणक्किला–ऐसी कोई संख्या जिसकी नहीं; मऱैयवर् ॲवर्क्कुम्–ब्राह्मण रहे सभी को; वित्तैयिन्–योग्य अनुष्ठान के साथ; नल् निति–श्रेष्ठ पदार्थ; मुतलिय–आदि; अळप्परुम् वॅरुक्कै–अपार संपत्तियाँ; नित्तैयिन् नीण्टतु–कल्पना से भी अधिक; ओर् पॅरु कॊटै–बड़े दान का; अरु कटन्–उत्तम कर्तव्य; नेर्न्तान्–पूरा किया। ३६०३

रावण ने उस रथ की यथावत् पूजा की। बेशुमार सभी लोगों

को विना कोई भेद किये बहुमूल्य पदार्थों का कल्पनातीत दानकर्म अदा किया। ३६०३

मऩ्ऱ लङ्गुळर् चऩहितऩ् मलर्क्कैयाऩ् वयिऱु
कॊन्ऱ लऩ्दलैक् कॊडुनॆडुन् दुयरिडैक् कुळित्तल्
अऩ्ऱि ऎऩ्ऱिडिऩ् मयऩ्मह ळत्तॊऴि लुऱुदल्
इऩ्ऱि रण्डिऩॊऩ् ऱाक्कुवऩ् ऱलैप्पडि ऎऩ्ऱाऩ् 3604

मऩ्ऱल् अम् कुऴल्–सुगंधित व सुन्दर-केशिनी; चऩकि–जानकी का; तऩ् मलर् कैयाल्–अपने कमलहस्त से; वयिऱु कॊऩ्ऱु–पेट को कष्ट देकर; अलम्–दुःख को; तलै कॊण्डु–सिर पर लेकर; नॆटु तुयरिटै–दीर्घ दुःख में; कुळित्तल्–मग्न रहना; इतु अऩ्ऱु ऎऩ्ऱिटिऩ्–यह नहीं होता हो तो; मयऩ् मकळ्–मयसुता मंदोदरी का; अ तॊऴिल् उऱुतल्–वह काम करना; इऩ्ऱु तलैप्पटिऩ्–आज युद्ध में लग जाऊँ तो; इरण्टिल् ऒऩ्ऱु–इन दो में एक; आक्कुवॆऩ्–करा दूंगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६०४

तब उसने यह सौगंद खायी। आज मैं युद्ध करने जाता हूँ। तो सुगंधित सुकेशिनी जानकी अपना पेट पीटती हुई, दुःख में आमस्तक डूबेगी या मयसुता मंदोदरी उसी स्थिति को प्राप्त हो जायगी। इन दो में एक करा दूंगा। यह निश्चित है। ३६०४

एऱि ऩाऩ्ऱॊऴु दिऩ्दिरऩ् मुदलिय विमैयोर्
तेऱि ऩार्हळुन् दियङ्गिऩार् मयङ्गिऩार् तिहैत्तार्
वेऱु ताऩ्जॆयुम् विऩैयिलै मॆय्यिऩैम् पुलऩुम्
आऱि ऩार्कळु मञ्जिऩा रुलहॆला मऩुङ्ग 3605

तॊऴुतु–रथ को नमस्कार करके; एऱिऩाऩ्–सवार हुआ; तेऱिऩार्कळुम्–जो डर से छूट गये थे वे; इन्तिरऩ् मुतलिय–इन्द्र आदि; इमैयोर्–देव भी; तियङ्किऩार्–निर्बल हुए; मयङ्किऩार्–सुधिहीन हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए; उलकॆलाम्–सभी लोकों के सारे जीव; अऩुङ्क–दुःखी हुए; मॆय्यिऩ्–शरीर की; ऐम् पुलऩुम्–पंचेंद्रिय को; आऱिऩार्कळुम्–जिन्होंने शान्त किया था वे (ऋषि) भी; अञ्चिऩार्कळ्–डर गये; ताम्–उन्हें स्वयं; चॆय्युम् विऩै–करने का काम; वेऱु इलै–और कुछ नहीं था। ३६०५

यह प्रतिज्ञा करके रावण रथ पर सवार हुआ। तो देव, जो पहले थोड़ा आश्वस्त हुए थे, अब फिर से चिंतित हुए, निर्बल हुए, क्षुब्ध हुए और भ्रांत हुए। सारे लोक दुःखी हुए; पंचेंद्रिय-निग्रही ऋषि, मुनि आदि भी डर गये। उनके पास कर्तव्य और कोई कार्य नहीं रहा। ३६०५

पलह ळऩ्दलै मौलियो डिलङ्गलिऱ् पः(ह्)ऱॊळ्
अलह ळऩ्दऱि यानॆडुम् बडैहळो डलङ्ग
विलह ळऩ्दरु कडऱ्ऱॆरै विशुम्बॊडु वियप्प
उलह ळऩ्दवऩ् मळर्न्दऩ ऩामॆऩ वुयर्न्दाऩ् 3606

पल् कळम्–अनेक कण्ठों पर; तलै–सिर; मौलियोटु–किरीटों के साथ; इलङ्कलित्–प्रकाशमान रहे और; पल् तोळ्–अनेक हाथ; अलकु अळन्तु अरिया–जिनका माप मापना कठिन है उन; नॆट्टु–लम्बे; पटैक्कळोटु–हथियारों के साथ; अलङ्क–हिलते रहे; विलक्कु–अलग रहे; अळम्–लोनारों को (नमक के खेतों को); तरु–अपने पास रहनेवाले; कटल्–समुद्र से; चूऴ्न्त–वलयित; तरै–भूमि के वासी; विचुम्पोटु–आकाश (वासियों) के साथ; वियप्प–आश्चर्य करते; उलकु अळन्तवन्–लोकमापक (त्रिविक्रम); वळर्न्तनन् आम् ऎन–प्रवृद्ध हुआ जैसे; उयर्न्तान्–(रथ पर) ऊँचा हुआ (दिखा)। ३६०६

रावण के कंधों के ऊपर के दसों सिर किरीटों के साथ शोभे। बीसों हाथ अमाप हथियार लिये हिल रहे थे। अपने तीर पर लोनारों के साथ रहनेवाले समुद्र से आवृत भूलोक के वासी और आकाशवासी विस्मित हो रहे थे। ऐसी स्थिति में रावण लोकमापक श्रीत्रिविक्रमदेव के समान रथ पर ऊँचा प्रगट हुआ। ३६०६

विशुम्बु विण्डिरु कूऱुरक् कऱ्कुलम् वॆडिप्पप्
पशुम्बुण् विण्डॆन्नप् पुविपडप् पहलवन् पशुम्बॊन्
तशुम्बि निऩ्ऱिडैन् दिरिन्दिड मदितहै यमिऴ्दिन्
अशुम्बु शिन्दिनॊन् दुलैवुरत् तोळ्पुडैत् तार्त्तान् 3607

विचुम्पु–आकाश; विण्टु–फटा; इरु कूऱु उऱ–और उसके दो भाग हो गये; कल् कुलम्–पर्वतसमूह; वॆटिप्प–टूटे; पुवि–भूमि; पचुम् पुण्–ताजा व्रण; विण्टु ऎन–खुला जैसे; पट–हो गयी; पकलवन्–दिनकर; पचुम् पॊन् तचुम्पिन् निन्ऱु–चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से); इटैन्तु इरिन्तिट–श्लथ हो इधर-उधर भागा; मति–चाँद; तकै–स्वाभाविक; अमिऴ्तिन् अचुम्पु–अमृत की बूँदें; चिन्दि–निकालकर; नॊन्तु–दुःखी हो; उलैवु उऱ–क्षुब्ध हुआ, ऐसा बनाते हुए; तोळ् पुटैत्तु–अपने कंधे ठोंककर; आर्त्तान्–घोष किया (रावण ने)। ३६०७

उसने कंधे ठोंकते हुए उच्च नाद किया तो मानो आकाश फटकर दो खण्ड हुआ। पर्वतकुल टूटे। भूमि का व्रण खुल गया। दिनकर अपने चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से) निकलकर अस्त-व्यस्त भाग खड़ा हुआ। और चाँद अपने स्वाभाविक अमृत की बूँदें निकालते हुए शिथिल और दुःखी हुआ। ३६०७

नणित्तु वॆञ्जम मॆन्नबदो रुवहैयि नलत्ताल्
तिणित्त डङ्गिरि वॆडित्तुहच् चिलैयैना णॆऱिन्दान्
मणिक्कॊ डुङ्गुऴै वानवर् तानवर् महळिर्
तुणुक्क मॆय्दिनर् मङ्गल नाण्गळैत् तॊट्टार् 3608

वॆम् चमम्–भयंकर युद्ध; नणित्तु–पास है; ऎन्पतु ओर्–ऐसे एक; उवकैयिन्–आनन्द के; नलत्ताल्–भले से; तिणि तट–कठोर और विशाल; किरि वॆटित्तु–गिरि फट; उक–गिर जाए ऐसा; चिलैयै–धनु के; नाण् ऎऱिन्तान्–डोरा टंकोरा;

मणि–रत्नमय; कोंडु–गोल; कुळै–कुंडलों से अलंकृत; वानवर् तानवर् मकळिर्–देव-दानव-दयिताएँ; तुणुक्कम् ॲय्तितर्–बहुल उठीं; मङ्कल नाण्कळै–और मंगलसूत्रों को; तॊट्टार्–स्पर्श (करके मंगल की प्रार्थना) करने लगीं। ३६०८

रावण ने पास आये युद्ध के विचार से फूलकर अपने धनु का डोरा टंकोरा तो कठोर, और बड़ी-बड़ी गिरियाँ मानो टूटकर चूर हो गयीं। रत्न-वक्र-कुंडल-धारिणी देव-दानव-दयिताओं ने अपने मंगलसूत्र स्पर्श किए और प्रार्थना की कि ये अहिवात न टूटें। ३६०८

शुरिक्कु मण्डलन् दूङ्गुनीर्च् चुरिप्पुऱ वीङ्ग
इरैक्कुम् बल्लुयि रियावैयु नडुक्कमुऱ् ऱिरियप्
परित्ति लन्पुवि पडर्शुडर् मणित्तलै पलवुम्
विरित्तॆ ऴुन्दन तन्नन्मी दॆन्नवदोर् मॆय्यान् 3609

तूङ्कु नीर्–हिलनेवाला (लहरानेवाला) समुद्रजल; चुरिप्पु उऱ–घूम जाए, ऐसा; चुरिक्कुम् मण्टलम्–उसको आवृत कर रहनेवाला भूमंडल; वीङ्क–अधिक हो जाए; इरैक्कुम्–शब्द करनेवाले; पल् उयिर् यावैयुम्–अनेक जीव सभी; नटुक्कमुऱ्ऱु–डरकर; इरिय–भाग जायँ ऐसा; अनन्तन्–आदिशेषनाग; पुवि परित्तिलन्–भू का वहन न करके; पटर्–विशाल; चुटर्–उज्ज्वल; मणि तलै–रत्नसहित सिर; पलवुम्–अनेक; विरित्तु–फैलाकर; मीतु–ऊपर; ॲऴुन्तनन्–उठा हो; ॲन्पतु ओर् मॆय्यान्–वैसा दिखनेवाले शरीर का (रावण)। ३६०९

रावण के रथ के चलने से लहरायमान समुद्र का विस्तार कम हो गया। भूमि बढ़ी। सभी जीव डर से शब्द करते हुए भागे। आदिशेष भू का भार वहन न करके अपने फनों को फैलाकर ऊपर आ खड़ा हो ऐसा दिख रहा था रावण। ३६०९

तोन्ऱि नान्वनु शुरर्हळो डशुररे तॊडङ्गि
मून्ऱु नाट्टिनु मुळ्ळव रियावरु मुडिय
ऊन्ऱि नान्शॆरु वॆन्ऱुयि रुमिऴ्दर वुदिरङ्
गान्ऱु नाट्टङ्गळ् वडवनऱ् किरुमडि कनल 3610

चुरर्कळोडु–देवों के साथ; अचुररे तॊटङ्कि–असुर आदि; मून्ऱु नाट्टिलुम् उळ्ळवर्–त्रिलोकवासी; यावरुम् मुटिय–सभी तक; चॆरु ऊन्ऱिनान् ॲन्ऱु–युद्ध में दृढ़ रूप से लग गया, कहकर; उयिर् उमिऴ् तर–प्राणों के बाहर निकलते; उतिरम् कान्ऱु–रक्त वमन करके; नाट्टङ्कळ्–आँखों के; वट अनलुक्कु–बड़वाग्नि को; इरु मटि–दुगुनी; कनल–आग निकालती; वन्तु तोन्ऱिनान्–आ प्रगट हुआ रावण। ३६१०

रावण निश्चित रूप से रण में लग गया —यह जानकर सभी देवों, दानवों और सभी त्रिलोकवासियों के प्राण मानो निकलने को हुए

और रक्त वह आया। रावण अपनी आँखों से बड़वा की तिगुनी आग उगलता हुआ-सा दिखायी दिया। ३६१०

उलहिऱ् ऱोत्ऱिय मरुक्कमु मिमैप्पिल रुलैवुम्
मलैयुम् वानमुम् वैयमु मरुहुरु मरुक्कुम्
अलैहोळ् वेलैह ळञ्जिन शलिक्किन्ऱ वयर्वुम्
तलैव नेमुदऱ् ऱण्डलि लोर्लाङ् गण्डार् 3611

उलकिल्–संसार में; तोन्ऱिय–प्रकट; मरुक्कमुम्–अशांति और; इमैप्पिलर् उलैवुम्–अपलक (देवों) की बुरी स्थिति; मलैयुम्–पर्वत; वानमुम्–आकाश और; वैयमुम्–भूमि; मरुकुरुम् मरुक्कुम्–इनकी जो बुरी दशा हुई वह दुर्दशा; अलै कोळ् वेलैकळ्–तरंग-भरे सागर; अञ्चिन–डरें और; चलिक्किन्ऱ अयर्वुम्––और उनकी विचलित थकान; तलैवन् मुतल्–नायक सुग्रीव से लेकर; तण्टल् इलोर् ऍलाम्–विषमता-रहित सभी तक ने; कण्टनर्–देखी। ३६११

इससे संसार में एक खलबली मच गयी। देवों में बेचैनी फैली। पर्वत, आकाश और पृथ्वी काँप गयी। तरंगाकीर्ण सागर डरे, विचलित हुए और निर्बल हुए। यह सब वानरपति सुग्रीव से लेकर सारे वानर वीरों ने समान रूप से देखा। ३६११

पोरिऱ्ऱा मण्ड मॅन्नबदो राहुलम् बिऱक्क
वेऱ्ऱिट् टोर्पॅरुङ् गम्बलै पम्बिमेल् वीङ्ग
मारिप् पल्पॉरुळ् मायवुरुङ् गालत्तुण् मरुक्कम्
एऱिऱ् रुरुळ दॅन्नॅहो लोवॅन वॅळुन्दार् 3612

अण्टम् पोऱिऱ्ऱ आम्–अण्डगोल फट गया हो; ऍन्नपतु ओर्–ऐसा एक; आकुलम् पिऱक्क–अस्त-व्यस्तता पैदा हो गयी तो; वेऱ्ऱिट्टु–विलक्षण; ओर्–एक; पॅरुम् कम्पलै–बड़ा शोर; पम्पि मेल् वीङ्क–पैदा हुआ, ऊपर उठा और स्फीत हुआ; पल् पॊरुळ्–विविध पदार्थ; मारि–विकार पाकर; मायवुरुम् कालत्तुळ्–जब मिट जाते हैं तब; उऱ्ऱुळतु–जो होता है वह; मरुक्कम्–अव्यवस्था; एऱिऱ्ऱु–उठ बढ़ी; ऍन्नॆ कॊलो–क्या कारण है; ऍन–पूछते हुए; ऍळुन्तार्–(वे वानर) उठे। ३६१२

"अण्ड फट गया जैसे एक आकुलता उठी और बड़ा हलचल मच गया। वह विलक्षण शोर पैदा हुआ, उठा और स्फीत हुआ। प्रपञ्च के विविध पदार्थों के नाश होते समय जो खलबली मचेगी, ऐसी अव्यवस्था उठी है। यह क्यों ?" ऐसा कहते हुए वे सब उठे। ३६१२

कडलूह ळियावैयुङ् गन्मलैक् कुलङ्गळुङ् गारुन्
दिडल् हॊण्मेरुवुम् विशुम्बिडैच चॆल्वन शिवण

अडल्हॉळ् शेनैयु मरक्कनुन् देरुम्वन् दार्क्कुङ्
गडल्हॉळ् पेरॉलिक् कम्बलै यॅन्बदुङ् गण्डार् 3613

कटल्कळ् यावैयुम्–सागर सभी; कल् मलै कुलङ्कळुम्–और प्रस्तरपर्वतकुल; कारुम्–मेघ; तिटल् कॉळ् मेरुवम्–ऊबड़-खाबड़ मेरु और; विचुम्पिटै चॅल्वत चिवण–आकाश में चलनेवाले जैसे; अटल् कॉळ् चेनैयुम्–बलसंयुक्त सेना और; अरक्कनुम्–रावण; तेरुम्–और उसका रथ; वन्तु आर्क्कुम्–जो आकर मचाते हैं, वह शोर; कटल् कॉळ्–समुद्र में उत्पन्न; पेर् ऑलि कम्पलै–उच्च गर्जन का शोर (जैसा नाद); ऍन्पतुम्–है यह; कण्टार्–देखा (वानर वीरों ने जाना)। ३६१३

सारे समुद्र, प्रस्तर-पर्वत-कुल, मेघ, ऊबड़-खाबड़ मेरु, आकाशगामी-सी सेनाएँ, रावण और उसका रथ —इन सबमें सुग्रीव को तुमुलनादी समुद्र का भान हुआ (उन्होंने वैसा दृश्य देखा और नाद सुना)। ३६१३

एळुन्दु वन्दन निरावण निराक्कदत् तानैक्
कॉळुन्दु मुन्दुवन् दुऱ्ऱ्दु कॉऱ्ऱ्व कुलुङ्गुऱ्
ऱ्ळुन्दु हिऩ्ऱ्दु नम्बल ममरर मञ्जि
विळुन्दु शिन्दिन रॅन्ऱ्नन् वीडणन् विरैवान् 3614

वीटणन्–विभीषण; कॉऱ्ऱ्व–विजयी राजा; इरावणन् ॲळुन्तु वन्तनन्–रावण उठ आया है; इराककतत् तानै कॉळुन्तु–राक्षस-सेना का किसलय (अग्रभाग); मुन्तु वन्तु उऱ्ऱ्तु–पहले आ गया है; नम् पलम्–हमारी सेना; कुलुङ्कुऱ्ऱ्–विकंपित हो गयी; अळुन्तुकिन्ऱ्तु–हतोत्साह होती है; अमररुम्–देव भी; अञ्चि विळुन्तु–डरकर गिरकर; चिन्तिनर्–बिखर गये; विरैवान्–तेज़ी से जाकर; ऍन्ऱ्नन्–बोला। ३६१४

तब विभीषण ने झट आकर श्रीराम से निवेदन किया कि विजयी राजा! रावण उठ आया है। राक्षस-सेना का अग्रभाग पहले आ गया है। हमारी सेना कंपित हो रही है। निर्बल हो रही है। देव भी डर के मारे इधर-उधर भागते हैं। ३६१४

35. इरामपिरान् तेरेरु पडलम् (श्रीराम-रथारोहण पटल)

तॉळुङ्गैयॊडु वाय्कुळरि मॅय्मुरै तुळङ्ग
विळुन्दुकवि शेनैयिड् पूशन्मिह विण्णोर्
अळुन्दवर वत्तमळि यञ्जलॆन वननाळ्
ॲळुन्दपडि येकडि दॆळुन्दन निरामन् 3615

कवि चेनै–कपि-सेनाएँ; तॉळुम् कैयॊटु–अंजलिबद्ध हाथों के साथ; वाय् कुळरि–वाणी के लड़खड़ाते; मॅय्–शरीरों के; मुरै तुळङ्क–बारी-बारी से काँपते; विळुन्तु–भूमि पर गिरकर; इट् पूचल्–जो होहल्ला मचाते हैं उसके; मिक–बढ़ते;

इरामन्–श्रीराम; अन्नाळ्–उस दिन; विण्णोर् अऴुन्त–देवों के शिथिल पड़ते; अञ्चल् ॲन्त–मत डरो कहते हुए; अरवत्तु अमळि–शेष-शय्या से; ॲऴुन्त पटिये–जैसे उठे ठीक उसी प्रकार; कटितु ॲऴुन्तनन्–झट उठे। ३६१५

कपिसेना अंजलिवद्धहस्त हो, जीभ के लड़खड़ाते, शरीरों के थर्राते नीचे गिरी और चीखने-चिल्लाने लगी। वह तुमुलनाद बढ़ उठा तो श्रीराम झट उस दिन जैसे उठे वैसे उठे जिस दिन वे दुःखी देवों को 'मत डरो का अभयदान' करते हुए शेष-शय्या पर से उठे थे। ३६१५

कडक्कळि ऍन्तत्तहैय कण्णनोरु कालन्
विडक्कयि ऍन्तप्पिऱऴुम् वाळ्वलन् विशित्तान्
मडक्कॊडि तुयर्क्कुमॅन्डु वानिनुऱै वोर्दम्
इटर्क्कड लिनुक्कुमुडि विन्ऱॆन्त विशैत्तान् 3616

कट कळिऱु ॲन्त तकैय–मदमत्तगज-मान्य; कण्णन्–सर्वनेत्र श्रीविष्णु; ओर–अप्रतिम; कालन्–यम का; विट कयिऱु ॲन्त–विषपाश के समान; पिऱऴुम्–शोभायमान; वाळ्–तलवार को; वलन्–दायीं ओर; विचित्तान्–बाँधकर; मटक्कॊटि–क्रीड़ायुक्त लतासमाना सीताजी के; तुयर्क्कुम्–दुःख का और; मॅट्–लम्बे; वानिन् उऱैवोर्–आकाश के वासी; तम्–(देवों) के; इटर् कटलिनुक्कुम्–दुःख-सागर का; इन्ऱु मुटिवु–आज अंत है; ॲन्त–ऐसा; इचैत्तान्–बोले। ३६१६

मत्तगज-सम सर्वनेत्र श्रीराम ने अद्वितीय यम के विषपाश-सी शोभायमान तलवार को कमर में दायीं ओर बाँध लिया। कहा कि आज का दिन बाला लता सीताजी के दुःख का और आकाशवासी देवों के दुःख-सागर का अन्तिम दिन होगा। ३६१६

तन्नह वशत्तुलहु तङ्गवोरु तन्निऱ्
पिन्नह वशत्तपॊरु ळिल्लॆपॆरि योनै
मन्नह वशत्तुऱ वरिन्ददॆनिन् मावो
इन्नह वशत्तैयुमी रीशनॆन लामाल् 3617

उलकु–सारे लोकों के; तन्न–उनके अपने में; कवचत्तु–कवच (रक्षण) में; तङ्क–रहते; ओरु तन्निल्–अप्रतिम उनको छोड़; पिन्नक वचत्त–भिन्न शेषी (नियामक); पॊरुळ् इल्लै–परमतत्त्व नहीं; पॆरियोनै–त्रिविक्रम को; मन्–दृढ़ रूप से; अक वचत्तु उऱ–अपने पूर्ण वश में रखकर; वरिन्ततु–बाँध लिया; ॲनिन्–तो; इन्त कवचत्तैयुम्–इस तरह के कवच को भी; ओर् ईचन्–एक ईश्वर; ॲनल् आम्–कह सकते हैं। ३६१७

सारे लोकों के वे कवच हैं यानी पूर्णरक्षक हैं। उनके अलावा दूसरे परमतत्त्व नहीं हैं। ऐसे उनको कवच ने अपने अन्दर बाँध लिया तो उसे भी ईश्वर कह सकते हैं। (श्रीराम ने कवच धारण कर लिया)। ३६१७

पुट्टिलॊडु कोदैहळ् पुळ्ङ्गियॆरि कूऱ्ऱिऩ्
अट्टिलॆऩ यायमल रङ्गैयि ऩडङ्गक्
कट्टियुल हिऱ्पॊरु ळॆऩक्करैयिल् वाळि
वट्टिल्पुऱम् वैत्तयल् वयङ्गुऱ वरिऩ्दाऩ् 3618

कूऱ्ऱिऩ्–यम के; पुळ्ङ्कि ॲरि–पवकी रीति से जलनेवाली; अट्टिल् ॲऩल् आय–अँगीठी कहने योग्य; मलर् अङ्कैयिल्–कमल-हस्त में; पुट्टिलॊडु–अंगुलित्राणों और; कोतैकळ्–हस्तत्राण; अटङ्क–खूब; कट्टि–पहन लेकर; उलकिल् पॊरुळ् ॲऩ–लोक के सारे पदार्थ समा जाएँ ऐसा; करैयिल्–अक्षय; वाळि–बाणों का; वट्टिल्–तूणीर; पुऱम् अयल्–पीठ पर; वयङ्कुऱ वैत्तु–ठीक तरह से रखकर; वरिन्तान्–बाँध लिया (श्रीराम ने)। ३६१८

श्रीराम ने यम को जलती अँगीठी-सम अपने हस्तों में अंगुलित्राण और हस्तत्राण पहने। अपनी पीठ से लगाकर अपना अक्षय बाणों का इतना भरा तूणीर बाँध लिया कि जिसमें के संसार सारे विविध पदार्थ समा सकें। ३६१८

इत्तहैय ऩाहियिहल् शॆय्दिवऩै यिऩ्ऩे
कॊत्तुमुडि कॊय्वऩॆऩ निऩ्ऱॆदिर् कुऱित्तु
तत्तमुरु वऱ्चॆय ऱविर्न्दवॆऩ वाऩिल्
शित्तर्हण् मुऩित्तलैवर् शिन्दैमहिऴ् वुऱ्ऱार् 3619

चित्तर्कळुम्–सिद्ध; मुनि तलैवर्–और मुनि श्रेष्ठ; इ तकैयन् आकि–इस भाँति बने; इकल् चॆय्तु–युद्ध करके; इन्ऩे–अभी; इवऩै–इस (रावण) के; कॊत्तु मुटि–गुच्छे के सिरों को; कॊय्वन्–तोड़ लेंगे; ॲऩ–ऐसा और; तत्तम्–अपना-अपना; उरुवल् चॆयल्–दुखने का काम; तविर्न्तु–छूट गया; ॲऩ–ऐसा; वाऩिल् ॲतिर् निऩ्ऱु–आकाश में समक्ष खड़े होकर; कुऱित्तु–(अपना मंतव्य) प्रगट करके; चिन्तै–मन में; मकिऴ्वुऱ्ऱार्–आनंद से भर गये। ३६१९

सिद्ध और मुनिश्रेष्ठों ने यह साज देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि इस भाँति तो अवश्य वे रावण के शीषगुच्छे को काट गिरा देंगे। हमारा दुःख का काम समाप्त हो गया। आकाश में वे आमने-सामने खड़े होकर यह आनंदभाव प्रगट करते हुए उदित हुए। ३६१९

मूण्डशॆरु विऩ्ऱळविऩ् मुऱ्ऱुमिऩि वॆऱ्ऱि
आण्डहैय दुण्मैयिऩि यच्चमहल् वुऱ्ऱीर्
पूण्डमणि याळिवय मानिमिर् पॊऩ्ऩन्देर्
ईण्डविडु वीरमर रीरॆऩ्ऱय ऩिशैत्ताऩ् 3620

अयन्–अज; अमररीर्–हे अमरगण; मूण्ट चॆरु–छिड़ा युद्ध; इन्ऱु अळविन्–आज तक में; मुऱ्ऱुम्–पूरा हो जायगा; इनि–आगे; वॆऱ्ऱि–विजय; उण्मैयिन्–सचमुच; आण् तकैयतु–पुरुषश्रेष्ठ की होगी; अच्चम् अकल्वु उऱ्ऱीर्–भयविमुक्त

हुए; मणि पूण्ट-घंटियों को पहने हुए; वयम् मा-बलवान अश्वों से जुते; आळि-पहिये; निमिर्-जिसके उत्तम है; पॊलम् तेर्-उस सुन्दर रथ को; ईण्ट-जल्दी; विट्टीर्-भिजवाओ; ऎन्ऱु इचैत्तान्-ऐसा बोले। ३६२०

तब (चतुर्मुख) अजदेव ने देवों से कहा कि हे देवो! यह युद्ध जो छिड़ा है आज एक दिन में समाप्त हो जायगा— और विजय पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की होगी। भय छोड़ दो। और घंटियों से अलंकृत अश्वों के जुते और श्रेष्ठ पहियोंदार स्वर्णरथ को शीघ्र श्रीराम के पास भिजवाओ। ३६२०

तेवरदु हॆट्टिदु शॆयऱ्कुरिय दॆन्ऱार्
एवल्पुरि मादलियो डिन्दिर निशैत्तान्
मूवुलहु मङ्गोरु कणत्तिन्मिशै मुऱ्ऱिक्
कावल्पुरि तेर्कडिदु नीकॊणर्दि यॆन्ऱे 3621

अतु-उसे; तेवर् केट्टु-देवों ने सुनकर; इतु चॆयऱ्कु अरियतु-यह करणीय है; ऎन्ऱार्-कहा; इन्तिरन्-देवेंद्र ने; एवल् पुरि-आज्ञाकारी; मातलियोटु-मातलि से; ओरु कणत्तिन् मिचै-एक क्षण में; मूवुलकुम् मुऱ्ऱि-तीनों लोकों में घूमकर; अङ्कु-वहाँ; कावल् पुरि-पहरा देते रहे; तेर्-रथ को; नी कटितु कॊणर्ति-तुम जल्दी लाओ; ऎन्ऱु इचैत्तान्-ऐसा कहा। ३६२१

वह वचन सुनकर देवों ने कहा कि यह करणीय है! देवेंद्र ने अपने सारथी मातलि से कहा कि तीनों लोकों में घूमकर पहरा देनेवाले रथ को जल्दी लाओ। ३६२१

मादलि कॊणर्न्दनन् महोददि वळावुम्
पूदल मॆळुन्दुपडर् तन्मैय पॊलन्देर्
शीदमदि मण्डलमु मॆन्नैयुळ वुन्दन्
पादमॆन निन्ऱदु पडिन्ददु विशुम्बिल् 3622

महोतति वळावुम् पूतलम्-महोदधि-वलयित भूतल; ऎळुन्तु-उठकर; पटर् तन्मैय-उसमें फैल जाए इस रीति के; पॊलम् तेर्-स्वर्णरथ को; मातलि कॊणर्न्तनन्-मातलि लाया; चीतम् मति मण्टलमुम्-शीतल चन्द्रमण्डल; एनै उळवुम्-और अन्य जो हैं वे; तन् पातम् ऎन-उसके चरण बनें ऐसा; निन्ऱतु-खड़ा रहा (वह रथ); विचुम्पिल् पटिन्ततु-आकाश को छूता रहा। ३६२२

बड़े समुद्र से घिरी भूमि से उठकर सर्वत्र चल सकनेवाले स्वर्णरथ को मातलि ले आया। शीतल चंद्रमंडल और अन्य व्योम के मंडल उनके पैरों के तल में रहें, ऐसा वह आकाश में स्थित था। ३६२२

कुलक्किरिह ळॆळिन्वलि कॊण्डुयर् कॊडिञ्जुम्
अलैक्कुमुयर् पारिन्वलि याळियिनि नच्चुम्

कलक्कर वहुत्तदु कदत्तरव मॅट्टुम्
वलक्कयिरु कट्टियदु मुट्टियदु वात्तै 3623

कुल किरिकळ् एऴिऩ्–सातों कुलगिरियों का; वलि कॊण्टु–बल लेकर; उयर्–ऊँचा जो रहा; कौटिञ्ञुम्–वह 'कौडिञ्जु' (नामक कमल के आकार का हाथ रखने का अंग) और; उयर् पारिऩ्–उन्नत भूमि का; वलि अलक्कुम्–बल मिटानेवाले; आऴियितिऩ्–चक्रों की; अच्चुम्–धुरी और; कलक्कु अऱ–न हिलें ऐसा; बकुत्तवु–बनाये गये थे ऐसा रथ था; कतत्तु अरवम् ॲट्टुम्–क्रोधी स्वभाव के आठों सर्पों को; वल कयिऱु–कठोर रस्सी के रूप में; कट्टियतु–बाँधा गया था, ऐसा रथ; वात्तै–आकाश से; मुट्टियतु–टकरानेवाला। ३६२३

उसके 'कौडिञ्जु' नामक (विश्रांति के लिए या हिलकर गिरने से बचाने के लिए जिस पर रथी अपना हाथ रख लेते हैं उस कली-से) भाग में सातों कुलगिरियों का-सा बल था। उन्नत भूमि के बल को तोड़ने की शक्ति रखते थे उसके पहिये और धुरी सुस्थिर बनी थी; उसकी रस्सियाँ क्रोधी अष्ट महानाग थीं। वह आकाश से टकराता था। (सात कुलगिरियाँ : कैलास, हिमालय, मन्दर, विंध्य, निषध, हेमकूट और नील। अष्ट महानाग : वासुकी, अनंत, दक्ष, शंखपाल, गुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक)। ३६२३

आण्डिऩॊडु नाळिरुदु तिङ्गळिव यॅऩ्ऱु
मीण्डऩवु मेलऩवुम् विट्टुविरि तट्टिऩ्
पूण्डुळदु तारहै मणिप्पॊरुविल् कोवै
नीण्डपुनै तारित्तदु निऩ्ऱुळदु कुऩ्ऱिऩ् 3624

आण्टिऩॊटु–वर्षों और; नाळ्–दिन; इरुतु–ऋतुएँ; तिङ्कळ्–मास; इवै–ये कालांश; मीण्टऩवुम्–भूत; मेलऩवुम्–भविष्य; विट्टु–इनको; विरि–विस्तार के; तट्टिऩ्–पीठ में; पूण्टुळतु–उसके अंगों के रूप में रखकर निर्मित था वह रथ; तारकै–नक्षत्रों को; पॊरुवु इल्–अनुपमेय; मणि कोवै–रत्नहारों की तरह; पुनै–रखनेवाले; नीण्ट तारित्तु–लम्बे दामों से अलंकृत था; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वत के समान; निऩ्ऱुळतु–आ खड़ा हुआ। ३६२४

उसके पीठ के वर्ष, दिन, मास, भूत भविष्य आदि अंग थे। नक्षत्रों रूपी रत्नों के बने दाम उसको अलंकृत कर रहे थे। वह पर्वत के समान इन्द्र के सामने आ खड़ा हुआ। ३६२४

मादिर मत्तैत्तैयु मणिच्चुवर्ह ळाहक्
कोदऱ वहुत्तदु मऴैक्कुऴुवै यॅल्लाम्
मीदुरु पदाहैयॅऩ वीशियदु मॅय्म्मैप्
पूदमवै यॅऩ्दिऩ्वलि यिऱ्पॊलिव दम्मा 3625

मातिरम् अत्तैत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मणि–मणिमय; चुवर्कळाक–भित्तियों के रूप में लेकर; कोतु अऱ–निर्दोष रूप से; वकुत्ततु–निर्मित हैं; मऴै

कुऴुवै यॅल्लाम्–सारे मेघकुलों को; **मीतु उय्र**–ऊपर रहनेवाली; **पताकै यॅन**–पताकाओं के रूप में; **वीचियतु**–हिलानेवाला; **पूतम् ऐन्तिऩ्**–पाँचों भूतों के; **मॅय्म्मै वलियिऩ्**–सच्चे वल के साथ; **पॊलिवतु**–विद्यमान; **अम्मा**–आश्चर्य री माँ। ३६२५

उसकी मणिमय भित्तियाँ दिशाओं से सुनिर्मित थीं। वह मेघों को अपनी पताकाओं के समान हिलाता था। वह पाँचों भूतों के यथार्थ बल-से बल के साथ शोभता था। ३६२५

मरत्तॊडु मरुन्दुलहिल् यावुमुळ वारित्
तरत्तॊडु तॊडुत्तकॊडि तङ्गियवु शङ्गक्
करत्तॊडु तॊडुत्तकडऩ् मीदुनिमिर् कालत्तु
उरत्तॊडु कडुत्तकद ळॊदॆयद ऩोदै 3626

उलकिल् उळ–संसार में प्राप्य; **मरुन्तु यावुम्**–सभी ओषधियाँ; **वारि**–उठाकर; **मरत्तॊडु**–खंभों पर; **तरत्तॊडु**–श्रेणीबद्ध रीति से; **तॊडुत्त**–बाँधी गयी; **कॊडि**–लताओं से; **तङ्कियतु**–संयुत था; **शङ्क**–शंख लानेवाले; **करत्तॊडु**–हाथों (लहरों) से; **तॊडुत्त**–युक्त; **कटल्**–समुद्र; **मीतु निमिर् कालत्तु**–जब (लोकनाश करते हुए) बढ़ आता है उस समय; **उरत्तॊडु**–ज़ोर के साथ; **कडुत्त**–तेज़ी के साथ उठनेवाले; **कतळ्**–उग्र; **ओतै**–शब्द; **अतऩ् ओतै**–उसकी ध्वनि है। ३६२६

उसके खंभों से संसार की ओषधि-मान्य सभी लताएँ ठीक तरह से बँधी थीं। उसकी गड़गड़ ध्वनि युगांत में हाथों रूपी शंखवाही लहरों के साथ उठकर प्रचण्ड रूप से बढ़नेवाले समुद्र के गर्जन के समान थी। ३६२६

पण्डरिव तुन्दिययऩ् वन्दपळ मुन्वॆप्
पुण्डरिह मॊट्टनैय मॊट्टिऩदु पूवम्
उण्डुतऩ् वयिऱ्ऱिडै यॊडुक्कि युमिळ्हिऱ्पोऩ्
अण्डशऩ् मणिच्चयऩ मॊप्प दहलत्तिऩ् 3627

पण्टु–प्राचीन समय में; **अरि**–हरि; **तऩ् उन्ति**–अपनी नाभी में; **अयऩ् वन्त**–ब्रह्मा के प्रगट होने के समय; **पळ मुन्तै**–बहुत प्राचीनकाल में प्रकट; **पुण्टरिक मॊट्टु अऩैय**–कमल-कोरक के समान; **मॊट्टिऩतु**–'मुकुल' नाम के अंग का है; **अकलत्तिऩ्**–चौड़ाई में; **पूतम् उण्टु**–(पंच-) भूतों (तथा भौतिक पदार्थों) को खाकर; **तऩ् वयिऱ्ऱिटै ऒटुक्कि**–उदर में समा लेकर; **उमिळ्किऱ्पोऩ्**–फिर बाहर निगलने वाले (प्रकट करानेवाले) श्रीविष्णु के; **अण्टचऩ्**–अण्डज आदिशेष रूपी; **मणि**–सुन्दर; **चयऩम् ऒप्पतु**–शय्या के समान है। ३६२७

उसका मुकुल नामक अंग ब्रह्मोद्भव के समय की श्रीविष्णु के नाभिकमल की कली के आकार का था। अपने विस्तार में वह श्रीविष्णु की दिव्य शय्या आदिशेष के सदृश था, जो (विष्णु) प्रपञ्च के सारे भूत और

भौतिक जीवों और पदार्थों को अपने उदर में समाहित करके सृष्टिकाल में प्रगट करा देते हैं। ३६२७

वेदमॊरु नालुनिऱै वेळ्विहळुम् वॆव्वे
ऱोदमवॆ येळुमलै येळुमुल हेळुम्
पूदमवै यैन्दुमॆरि मून्ऱुनन्ऱि पॊय्दीर्
मादवमु मावुदियु मैम्बुलनु मऱ्ऱुम् 3628

वेतम् ऒरु नालुम्–चारों वेद; निऱै वेळ्विकळुम्–और पूर्ण याग; वॆव्वेऱु–अलग-अलग; ओतम् एळुम्–समुद्र सात और; मलै एळुम्–सातों गिरियाँ; उलकु एळुम्–सातों लोक; पूतम् ऐन्तुम्–पाँचों भूत; ऎरि मून्ऱुम्–तीन अग्नियाँ; नन्ऱि–खब; पॊय् तीर्–निर्दोष; मा तवमुम्–दीर्घ तपस्या; आवुतियुम्–और आहुतियाँ; ऐम्पुलनुम्–पाँचों इंद्रियाँ; मऱ्ऱुम्–और अन्य। ३६२८

चार वेद, पूर्ण यज्ञ, अलग-अलग सातों (क्षीर,दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा और लवण के) समुद्र, सातों पर्वत, पाँचों भूत, तीन अग्नियाँ, निष्कलंक दीर्घ तप, आहुतियाँ, पाँच इन्द्रियाँ आदि— । ३६२८

अरुङ्गरण मैन्दुशुड रैन्दुतिशै नालुम्
ऑरुङ्गुकुण मून्ऱुमुळल् वायुवॊरु पत्तुम्
बॆरुम्बहलु नीळिरवु मॆन्ऱिवै पिणिक्कुम्
पॊरुम्बरिह ळाहनन्ऱि पूण्डदु पॊलन्देर् 3629

पॊलम् तेर्–स्वर्ण-रथ; अरुमै करणम् ऐन्तुम्–श्रेष्ठ पाँचों करण; चुटर् ऐन्तुम्–पाँचों ज्वालाएँ; तिचै नालुम्–और चारों दिशाएँ; ऒरुङ्कु कुणम् मून्ऱुम्–एकत्रित तीनो गुण; उळल्–संचरणशील; वायु ऒरु पत्तुम्–दसों पवन; पॆरुम् पकलुम्–बड़ा अह्न और; नीळ् इरवु–लम्बी रात्रि; ऎन्ऱु इवै–आदि इनको; पिणिक्कुम्–जुते; पॊरुम् परिकळाक–युद्ध करनेवाले अश्वों के रूप में; नन्ऱि–खूब; पूण्टतु–बाँध लिये रहता है। ३६२९

उस स्वर्णरथ के योद्ध अश्व थेः— पाँच अन्तःकरण, पाँच ज्वालाएँ (या पंचाग्नि), चार दिशाएँ, तीन गुण, संचरणशील दस पवन, लम्बा दिन और लम्बी रात। ३६२९

वन्ददनै वानवर् वणङ्गि वलियोय्नी
ऎन्दैतर वन्दनै यॆमक्कुदवु हिऱ्पाय्
तन्दरुळवॆ वॆन्ऱियॆन निन्ऱुतहै मॆन्बूच्
चिन्दिनरॆहळ् मादलि कडाविनन्ऱि शॆन्ऱात् 3630

वन्ततनै–आये उसे; वानवर्–देवों ने; वणङ्कि–प्रणाम करके; वलियोय्–शक्तिमान; नी–तुम; ऎन्तै तर–हमारे पिता तुल्य (इन्द्र) के बुलाने पर; वन्ततनै–आये; ऎमक्कु–हमें; उतवुकिऱ्पाय्–सहायता दो; वॆन्ऱि तन्तरुळवॆ–विजय

विलाओ; अँत–कहकर; निन्ऱु–पास रहकर; तर्फ मॅत्तु पू–श्रेष्ठ कोमल फूल; चिन्तिनर्कळ–समर्पित किये; मातलि–मातलि; नत्ति कटाविं–उसे अच्छी तरह चलाता; चॅन्ऱान्–गया। ३६३०

इस तरह आये रथ को देखकर देवों ने नमस्कार किया और प्रार्थना सुनायी कि हे शक्तिमान् रथ ! तुम हमारे स्वामी इन्द्र के कहने से आये हो। हमारा उपकार करो। विजय दिलाओ। उन्होंने पुष्पों से अर्चना की। मातलि उसे चलाता गया। ३६३०

विन्नैप्पहै मिशैक्कॉड्ड विशुम्बुरैवि मानम्
मनत्तिन्विशै पॅट्रुळदु वन्ददॅन्न वान्नो
डनैत्तुलह मुन्दॉऴ वडैन्द दमलन्पाल्
निनैप्पुमिडै पिट्पड निमिर्न्ददु नॅडुन्देर् 3631

विचुम्पु उर्र विमानम्–आकाशवासी विमान; विन्नै मिचै–बुरे कर्म पर; पकै कॉट्टु–शत्रुता ले; मनत्तिन् विचै पॅट्रुळतु–मनोगति पाकर; वन्ततु अँत–आया जैसे; नॅटु तेर्–वह ऊँचा रथ; वान्नोटु–व्योमलोक और; अनैत्तु उलकमुम्–सारे लोकों से; तॉऴ–स्तुत हो; अमलन् पाल्–विमल श्रीराम के पास; निनैप्पुम्–चिंतन भी; इटै पिट्पट–स्थान में पीछे छोड़कर; अटैन्ततु–पहुँचा; निमिर्न्ततु–ऊँचा खड़ा रहा। ३६३१

आकाशवासी दिव्य विमान, कोई पापों पर गुस्सा करके मन की गति-सी गति में आया हो जैसे वह बड़ा रथ व्योमलोक और अन्य लोकों की स्तुति का पात्र बनकर, सोचने की तेजी को भी कम करता हुआ विमल श्रीराम के पास आया और ऊँचा खड़ा रहा। ३६३१

अलरितनि याऴिपुनै तेरिदॅनि लन्ऱाल्
उलहिन्मुडि विऱ्पॅरिय वूऴॊळि यिदन्ऱाल्
निलैहॊण्डु मेरुकिरि यन्ऱुनॅडि दम्मा
तलैवरीरु मूवर्तनि मानमिदु तान्नो 3632

अलरि–सूर्य का; तनि आऴि–एक चक्र से; पुनै तेर् इतु–युक्त रथ है यह; ॲनिन्–कहें तो; अन्ऱु–नहीं; उलकिन् मुटिविल्–संसार के प्रलयकाल में; ऊऴ् पॅरिय ऑळि–होनेवाली बड़ी युगज्योति; इतु अन्ऱु–यह नहीं; निलै कॉळ्–सुस्थापित; नॅटु–बड़ा; मेरु किरि अन्ऱु–मेरुपर्वत नहीं; नॅटितु–बहुत ऊँचा है; अम्मा–आश्चर्य री माँ; ऑरु मूवर्–सर्वोत्तम तीन; तलैवर्–देवनायकों का; तनि मानम्–अनुपम यान; इतु तान्नो–क्या यही होगा। ३६३२

श्रीराम ने सोचा— क्या इसे सूर्य का अनुपम एकचक्र रथ माना जाय ? नहीं ! युगांत की ज्योति है ? नहीं ! चिरस्थायी मेरु गिरि भी नहीं ! कितना ऊँचा है ! मैया री ! त्रिदेवों का विमान यही होगा क्या ? । ३६३२

ऍन्नैयिदु नम्मैयिडै यॅय्दलॅन्न वॅण्णा
मन्नवर्द मन्ननमहन् मादलियै वन्दाय्
पॊन्निन्नॊळिर् तेरिदुकॊ डार्पुहल वॅन्ऱान्
अन्नवन् मन्नदनै याहवुरै शॅय्दान् 3633

मन्नवर् तम् मन्नन् मकन्–राजाधिराज (दशरथ) के पुत्र ने; नम्मै इटै ऍय्तल्–हमारे पास आनेवाला; ऍन्नै इदु–यह क्या है; ऍन्न ऍण्णा–ऐसा सोचकर; मातलियै–मातलि से; पॊन्निन् ऒळिर्–स्वर्णप्रकाश के; इदु तेर् कॊटु–इस रथ को लेकर; आर् पुकल–किसके कहने से; वन्ताय्–आये; ऍन्ऱान्–पूछा; अन्नवनुम्–उसने भी; अन्नतनै–वह कारण; आक–ठीक-ठीक; उरै चॅय्तान्–बतलाया। ३६३३

चक्रवर्तीसुत ने यह सोचकर कि हमारे पास आया यह रथ कौन सा है ? मातलि से प्रश्न किया कि यह स्वर्णमय रथ लेकर किसके कहने से आये हो ? मातलि ने हेतु बताया। ३६३३

मुप्पुर मॅरित्तवनु नान्मुहनु मुन्नाळ्
अप्पह लियऱ्ऱियुळ दायिर मरुक्कर्क्
कॊप्पुडैय दूऴितिरि कालुमुलै विल्ला
इप्पॊरुवि ऱेर्वरुव दिन्दिरनि लॅन्दाय् 3634

ऍम्ताय्–हमारे पालक; मुन् नाळ्–प्राचीन समय में; अ पकल्–उस अहन में; मुप् पुरम् ऍरित्तवनुम्–त्रिपुरदहन और; नान्मुकनुम्–चतुर्मुख के द्वारा; इयऱ्ऱियुळतु–निर्मित; आयिरम् अरुक्कर्क्कु–सहस्र सूर्यों के; ऒप्पुटैयतु–समान (प्रकाशमान) है; ऊऴि–युग; तिरि कालुम्–परिवर्तन के समय में भी; उलैवु इल्ला–न मिटनेवाला; पॊरुविल्–अप्रतिम; इ तेर्–यह रथ; इन्तिरनिल् वरुवतु–इन्द्र से आता है। ३६३४

मेरे पितातुल्य देव ! यह प्राचीन काल में त्रिपुरदहन और ब्रह्मा के द्वारा निर्मित था। सहस्रार्क-सम प्रकाशमान यह रथ जो युगपरिवर्तन के अवसर पर भी नहीं मिटेगा, इन्द्र की आज्ञा पर आया है। ३६३४

अण्डमिदु पोल्वन वळप्पिल वडुक्किक्
कॊण्डुपॅय रुङ्गुरुहु नीळुमवै कॊळ्ऱ्
ऱुण्डवन् वयिऱ्ऱिनैयु मॊक्कु मुवमैक्कुप्
पुण्डरिह निन्शर मॅनक्कडिदु पोमाल् 3635

पुण्टरिक–पुण्डरीक; इतु पोल्वन–इस (अण्ड) के समान; अण्टम्–अण्डों को; अळप्पिल् अटुक्कि–असंख्यक रीति से चुनकर; कॊण्टु–उन्हें ढो लेकर; पॅयरम्–स्थान से स्थान जा सकता है; कुऱुकुम् नीळुम्–(आवश्यकतानुसार) घट सकता है, बढ़ सकता है; अवै–उन (अण्डों) को; कॊळ्ऱु–लेकर; उण्टवन्–जिन्होंने समा लिया था उनके; वयिऱ्ऱिनैयुम् उवमैक्कु ऒक्कुम्–उदर के समान भी होगा; निन् चरम् ऍन्न–आपके बाण के समान; कटितु पोम्–तेज जा सकता है। ३६३५

हे पुण्डरीक ! यह इस अण्ड के समान अनेक अण्डों को एक साथ चुन रखकर ढो ले जानेवाला है ! यह आवश्यकतानुसार चौड़ा या छोटा हो सकता है ! इसकी तुलना भुवनभोक्ता श्रीविष्णु के उदर से की जा सकती है। यह आपके शर की ही भाँति तेज़ी से जा सकता है। ३६३५

कण्णुमत्त मुडुगडिय कालुमिवै कण्डाल्
उण्णुम्विशै यालुणर्वु पिऱ्पडर वोडुम्
विण्णुनिल नुम्मॅत्त विशेडमिल द:(ह्)दे
ऍण्णुनॅडु नीरिनु नॅरुप्पिडैयु मॅन्दाय् 3636

कण्णुम् मत्तुम्–आँखों और मन; **कटिय कालुम्**–तेज़ हवा आदि; **इवै कण्टाल्**–इनको देखे तो; **विचैयाल् उण्णुम्**–अपनी गति से (उनकी गति को) खा लेगा (उनसे आगे बढ़ जायगा); **उणर्वु**–भावना भी; **पिन् पटर**–पीछे दौड़े, ऐसा; **ओटुम्**–खुद आगे निकल जायगा; **ऍन्ताय्**–पिता (सम); **विण्णुम् निलनुम् ऍत्त**–आकाश या भूमि ऐसी; **विचेटम् इलतु**–फ़र्क़ नहीं है; **ऍण्णुम्**–सोचने योग्य; **नॅटु नीरिनुम्**–लम्बे समुद्र में; **नॅरुप्पिटैयुम्**–और आग में; **अ॰॰ते**–उसी भाँति। ३६३६

दृष्टि, मन, तेज़ हवा —इनको भी अपनी तेज़ी से खा (हरा) सकता है। भावना भी उससे पिछड़ जायगी; यह आगे निकल जायगा। मेरे विधाता ! इसके सामने आकाश, भूतल का कोई विशेष भेद नहीं रहता। यह गण्य सागर में भी जा सकेगा, और आग में भी। ३६३६

नीरुमुळ वेयवैयॉ रेऴुनिमिर् हिऱ्कुम्
पारुमुळ वेयदि निरट्टियवै पण्बिऱ्
पेरुमॊरु कालैयॊरु कालुमिडै पेरात्
तेरुमुळ देयिदु वलालुलहु शॅय्दोय् 3637

उलकु चॅय्तोय्–लोकनिर्माता; **ओर् एऴु नीरुम् उळवे**–सप्त सागर हैं न; **अतिन् इरट्टि**–उसके दुगुने; **निमिर्किऱ्कुम्**–उठे रहनेवाले; **पारुम् उळवे**–भुवन हैं न; **अवै**–वे; **ऒरु कालै**–कभी; **पण्पिल्**–अपनी रचना में; **पेरुम्**–बदल सकते हैं; **ऒरु कालुम् इटै पेरा**–कभी न बदलनेवाला; **तेरुम्**–रथ; **इतु अलाल्**–इसको छोड़कर; **उळते**–(अन्य) है क्या। ३६३७

हे लोकनिर्माता ! सात समुद्र हैं और चौदह भुवन ! वे भी कभी अपनी रचना में परिवर्तित (विघटित) हो जाते हैं। पर कभी भी न बदलने वाला इस रथ के सिवा कोई है क्या ? । ३६३७

तेवरु मुनित्तलैव रुञ्जिवनु मेनाळ्
मूवुलहळित्त ववनुम् मुदल्व मुतुनित्
ऱेविनर् शुरर्क्किऱैव नीन्दुळदि वॅन्ना
माविन्मत्त मॊप्पवुणर् मादलि वलित्तान् 3638

मुतल्व–सरदार; तेवरुम्–देव; मुनि तलैवरुम्–मुनिवर; चिवतुम्–शिव; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; मूवुलकु अळित्त अवतुम्–त्रिलोक की सृष्टि जिन्होंने की वे (ब्रह्मा); मुन्तित्तु एवित्तर्–(इन्होंने) सामने स्थित होकर प्रेरित किया; इवु–इसे; चुरर्क्कु इऱैवन्–सुरेन्द्र ने; ईन्तुळतु–जिसे भेजा वह यह है; ऍन्ऩा–ऐसा; मावित् मतम्–अश्वों के मन को; ओप्प उणर्–सम रूप से जाननेवाले; मातलि–मातलि ने; वलित्तान्–कहा। ३६३८

नाथ! देवों, मुनिवरों, शिव और पुरातन त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा ने सामने आकर प्रेरित किया। तब सुरेंद्र ने इसे आपके पास भेजा है। अश्वों का मन जाननेवाले मातलि ये बातें कहीं। ३६३८

ऐयनिदु केट्टिह लरक्कतदु मायच्
चॅय्हैहॉ लॅन्नच्चिऱिदु शिन्दैयि निनैन्दान्
मॅय्यव नुरैत्तदॅन देयिरद मेवुम्
मॉय्युळै वयप्परि मॊऴिन्दमुदु वेदम् 3639

ऐयन्–स्वामी ने; इदु केट्टु–यह सुनकर; इकल् अरक्कतदु–शत्रु राक्षस की; माय चॅय्कै कॉल्–माया का कार्य है क्या; ऍन्न–ऐसा; चिन्तैयिन्–मन में; चिऱितु निनैन्तान्–थोड़ा विचारा; अवन् उरैत्ततु–उसका कहना; मॅय् ऍन्नवे–सच ही है ऐसा; इरतम् मेवुम्–रथ से युक्त; मॉय् उळै–घने अयालों के साथ रहे; वय परि–विजयी अश्वों ने; मुतु वेतम्–प्राचीन वेदों को; मॊऴिन्त–स्वरित किया। ३६३९

श्रीराम ने यह सुना और थोड़ा मन में संशय किया कि क्या यह शत्रुता बरतनेवाले राक्षस का मायाकार्य तो नहीं है! तब रथ के जुते अश्वों ने पुरातन-वेदघोष करके मातलि के वचन को सच्चा प्रमाणित किया। ३६३९

इल्लैयिनि यैयमॅन वॅण्णिय विरामन्
नल्लवनै नीयुनदु नामनविल् हॅन्न
वल्लिदनै यूर्वदॊरु मादलि यॅनप्पेर्
शॊल्लुव रॅनत्तॊऴुदि रैञ्जियिवै शॊन्नान् 3640

इनि ऐयम् इल्लै–अब संशय नहीं; ऍन्न ऍण्णिय–ऐसा जिन्होंने सोचा; इरामन्–श्रीराम के; नल्लवनै–भलेमानुस से; नी–तुम; उनतु नामम्–अपना नाम; नविल्क–बताओ; ऍन्ऩ–कहने पर; वल्लि तलै–जुए के सिर पर; ऊर्वतु–बैठकर (रथ) चलानेवाला; ऒरु मातलि–एक (सारथी) मातलि; ऍन्न–ऐसा; पेर् चॊल्लुवर्–नाम बताते हैं (लोग); ऍन्न–कहकर; तॊऴुतु इऱैञ्चि–स्तुति तथा विनय करके; इवै चॊन्नान्–यों बोला। ३६४०

श्रीराम को लगा कि अब कोई संशय नहीं है। ,उन्होंने भलेमानुस मातलि से पूछा कि तुम अपना नाम बतलाओ। मातलि ने निवेदन किया

कि मुझे 'सारथी मातलि' कहते हैं। नमस्कार करके वह (श्रीराम से) यों बोला। ३६४०

मारुदियै नोक्किियिळ वाळरियै नोक्कि
नीर्हरुदु हित्ऱदै निहळ्त्तुमॅत्त नित्ऱात्
आरियत्व णङ्गियव रैयमिलै यैया
तेरिदु पुरन्दरत्त दॅत्ऱत्तर् तॅळिन्दार् 3641

मारुतियै नोक्कि–मारुति को देखकर; इळ वाळ् अरियै–बाल और क्रूर सिंह (सदृश लक्ष्मण) को; नोक्कि–देखकर; नीर् करुतुकित्ऱतै–तुम जो सोचते हो वह; निकळ्त्तुम् ऍत्त–कहो ऐसा पूछकर; नित्ऱात्–स्थित रहे; तॅळिन्तार् अवर्–अपने मन में निर्णय करनेवाले उन्होंने; आरियत् वणङ्कि–आर्य श्रीराम को नमस्कार करके; ऐया–स्वामी; ऐयम् इलै–संदेह नहीं; इतु तेर्–यह रथ; पुरन्तरततु–पुरन्दर का है; ऍत्ऱतर्–कहा। ३६४१

(फिर भी) श्रीराम ने मारुति और क्रूर वालकेसरी (-सदृश लक्ष्मण) से पूछा कि तुम्हारी राय क्या है? बताओ। तब उन दोनो ने खूब सोचकर निर्णय के साथ आर्य को नमस्कार करके उत्तर दिया कि प्रभु! इसमें संशय की गुंजाइश नही है। ३६४१

विळुन्दुपुर डीवित्तै निलत्तॉडु वॅदुम्वत्
तॉळुन्दहैय नल्वित्तै कळिप्पित्तॉडु तुळळ
अळुन्दुतुय रत्तमर रन्दणर्कै मुन्दुऱ्
ऍळुन्दुतलै येऱविति देऱित्त तिरामत् 3642

विळुन्तु पुरळ्–गिरकर लोटनेवाले; ती वित्तै–पापों के; निलत्तॉटु–भूमि के साथ; वॅतुम्प–जल जाते; तॉळुम् तकैय–स्तुत्य; नल् वित्तै–पुण्यकर्मों के; कळिप्पित्तॉटु–आनन्द के साथ; तुळ्ळ–उछलते; अळुन्तु तुयरत्तु–मग्नकारी दुःख से पीड़ित; अमरर्–देवों के; अन्तणर्–विप्रों के; कै–हाथों के; मुन्तु उऱ्–आगे बढ़कर; ऍळुन्तु–उठकर; तलै एऱ–सिर पर चढ़ते; इरामत्–श्रीराम; इतितु एऱितत्–सुख से (रथ पर) चढ़े (सवार हुए)। ३६४२

श्रीराम रथ पर इत्मीनान के साथ सवार हुए तो पाप नीचे भूमि पर गिरकर भूमि के साथ जल गये; पुण्य मोद के साथ नाचने लगा। दुःख-मग्न देवों और विप्रों के हाथ स्वतः आगे बढ़े और जुड़कर सिर पर (नमस्कार करने) चढ़े। ३६४२

36. इरावणत् वदैप् पडलम् (रावण-वध पटल)

आळियत् दडन्देर् वीर त्तेऱ्लु मलङ्गल् शिल्लिप्
पूळियिर् चुरित्त तत्मै नोक्किय पुलव रॆल्लाम्

ऊऴिवॆङ् गाऱ्ऱिऩ् वॆय्य कलुऴऩ यॊऩ्ऱुम् जॊल्लार्
वाऴिय वऩुमऩ् तोळे येत्तिऩार् मलर्कळ् तूवि 3643

वीरऩ्–श्रीवीरराघव; आऴि–पहियेदार; अम्–मनोहर; नटम् तेर्–बड़े रथ पर; एऱलुम्–चढ़े त्योंही; अलङ्कल् चिल्लि–प्रकाशमय पहिये; पूऴियिल्–धूलि में; चुरित्त–जो धँस गये; तऩ्मै–यह हाल; नोक्किय–जिन्होंने देखा; पुलवर् ऎल्लाम्–उन सारे देवों ने; ऊऴि वॆम् काऱ्ऱिऩ–युगान्त के गरम पवन से भी; वॆय्य कलुऴऩै–आतंककारी गरुड़ को; ऒऩ्ऱुम् चॊल्लार्–कुछ न कहकर; अनुमऩ् तोळे–हनुमान के कंधों पर; मलर्कळ् तूवि–फूल डालकर; एत्तिऩार्–उनकी प्रशंसा की। ३६४३

देवों ने श्रीराम के उस पहियोंदार विशाल और मज़बूत रथ पर चढ़ते ही रथ का धूलि में धँसने का प्रकार देखा तो उन्हें गरुड़ और हनुमान की शक्ति का ख़याल आया। उन्होंने गरुड़ के बल का कुछ नहीं कहा पर हनुमान के कंधों पर फूल डालकर उनकी सराहना की। ३६४३

ऎऴुहतेर् शुमक्क वॆल्लोम् वलियुम्बुक् किऩ्ऱे यॊऩ्ऱि
विऴुहपो ररक्कऩ् वॆल्ह वेन्दर्क्कु वेन्दऩ् विम्मि
अऴुहपो ररक्कि मारॆऩ् ऱारत्तऩ रमर राऴि
मुऴुहिमी दॆऴुन्द दॆऩ्ऩच् चॆऩ्ऱदु मूरित् तिण्डेर् 3644

तेर् ऎऴुक–रथ बढ़े; इऩ्ऱे–आज ही; ऎल्लोम् वलियुम्–(हमारे) सभी का बल; पुक्कु–इसमें समाहित हो; ऒऩ्ऱि–जमकर; चुमक्क–धारण करे; पोर् अरक्कऩ्–युद्धप्रिय राक्षस; विऴुक–मिट जाए; पोर् अरक्किमार्–युद्धप्रिय राक्षसियाँ; विम्मि अऴुक–सिसक-सिसक रोयें; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अमरर् आरत्तऩर्–देवों ने नाद किया; मूरि–शक्तिमान; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; आऴि–समुद्र में; मुऴुकि–डुबकी लगाकर; मीतु ऎऴुन्ततु ऎऩ्ऩ–ऊपर उठा हो जैसे; चॆऩ्ऱतु–(धूलि-समुद्र चीरकर) गया। ३६४४

देवों ने ज़ोर के साथ कहा कि रथ उठे। हमारा सारा बल उसमें प्रविष्ट हो जाए। युद्धप्रिय राक्षस का नाश हो। युद्ध चाहनेवाली राक्षसियाँ दुःख से भरकर रोएँ। तब बलवान सुदृढ़ वह रथ समुद्र में मग्न हो फिर उठकर चलता हो जैसे (धूलि-सागर को चीरकर) चलने लगा। ३६४४

अऩ्ऩदु कण्णिऱ् कण्ड वरक्कऩुममर रीन्दार्
मऩ्ऩॆडुन् दॆरॆऩ् ऱॆऩ्ऩि वाय्मडित् तॆयिऱ् तिऩ्ऱाऩ्
पिऩ्ऩदु किडक्क वॆऩ्ऩात् तऩ्ऩुडैप् पॆरुन्दिण् डेरै
मिऩ्ऩिवर् वरिविऱ् चॆङ्गै यिरामऩ्मेल् विडुदि यॆऩ्ऱाऩ् 3645

अऩ्ऩतु–उसे; कण्णिल् कण्ट–अपनी आँखों से देखकर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने भी; मऩ्–सुदृढ़; नॆटुम् तेर्–ऊँचा रथ; अमरर् ईन्तार्–देवों ने दिया है; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; वाय् मटित्तु–ओंठ काटकर; ऎयिऱु तिऩ्ऱाऩ्–

दाँत काटे; पिऩ्–बाद; अतु फिटक्क–वह रहे; ऍऩ्ऩा–कहकर; तऩ् उर्–मेरे; पॅरुम् तिण् तेरै–बड़े कठोर रथ को; मिऩ् इवर्–रोशनदार; वरिविल्–सबन्ध धनुर्धर; चॅम् कै इरामऩ् मेल्–लाल हाथवाले राम पर; बिटुति–चलाओ; ऍऩ्ड्राऩ्–कहा (सारथी से) रावण ने। ३६४५

राक्षस रावण ने उसे अपनी आँखों से देखा। मालूम हो गया कि यह उन्नत रथ देवों का दिया हुआ है। दाँत पीसे। फिर कहा कि रहे वह! अपने सारथी से कहा कि मेरे मजबूत व बड़े रथ को विद्युत्प्रकाश सबंध धनुर्हस्त श्रीराम की तरफ़ चलाओ। ३६४५

इरिन्दवाऩ् कविह ळॅल्ला मिमैयव रिरद मीन्दार्
अरिन्दमऩ् वॅल्लु मॅन्ड्रर् कैयुर विल्लॅऩ् ड्रञ्जार्
तिरिन्दनर् मरमुङ् गल्लुञ् जिन्दिनर् तिशैयो डण्डम्
पिरिन्दन होल्लॅऩ् ड्रॅण्णप् पिऱन्दडु मुळक्किऩ् पॅऱ्ऱि 3646

इरिन्त–जो अस्त-व्यस्त भागे थे वे; वाऩ् कविकळ् ॲल्लाम्–वानर सभी; इमैयवर्–देवों ने; इरतम् ईन्तार्–रथ दिया है; अरिन्तमऩ् वॅल्लुम्–अरिंदम जीतेंगे; ऍऩ्ड्रर्कु–ऐसा कहने को; ऐयुरवु इल्–संशय नहीं; ऍऩ्ड्र–ऐसा सोचकर; अञ्चार्–निडर हो; तिरिन्तनर्–घूमे-फिरे; मरमुम् कल्लुम् चिन्तिनर्–तरु और पत्थर चलाये; तिशैयोटु–दिशाओं के साथ; अण्टम्–अण्ड; पिरिन्तन कॊल्–क्या अस्त-व्यस्त हो गये; ऍण्ण–ऐसा सोचने योग्य रीति से; मुळक्किऩ् पॅऱ्ऱि–उनके शोर का हाल; पिऱन्ततु–दिखा। ३६४६

जो पहले भागे थे वे सब वानर यह जानकर लौट गये कि देवों ने रथ दिया है और अरिंदम श्रीराम की विजय निश्चित है। निडर होकर इधर-उधर घूमे और पर्वत और तरु फेंके। ऐसा नर्दन किया कि यह संशय हो कि दिशाओं के साथ अंड फट गया क्या? । ३६४६

वार्प्पॊलि मुरशि ऩोदै वाय्प्पुडै वयव रोदै
पोर्त्तॊळिर् कळत्तै मुऱ्ऱुञ् जुऱ्ऱिय पॊम्म लोदै
आर्त्तलि ऩियारुम् बार्वीऴ्न् दडङ्गिऩ रिरुव राडल्
तेर्क्कुर लोदै पॊङ्गच् चॅविमुऱ्ऱुञ् जॅविडु शॅय्य 3647

वार् पॊलि–फ़ीतों से बद्ध शोभमय; मुरचिऩ् ओतै–भेरियों का नाद; वाय् पुटै–मुखर; वयवर् ओतै–वीरों का शब्द; पोर् तॊऴिल् कळत्तै–युद्धकार्य के मैदान को; मुऱ्ऱुम् चुऱ्ऱिय–घेरे रही सेनाओं का; पॊम्मल ओतै–हर्षनाद; इरुवर्–दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; आटल् तेर्–युद्ध करने को सवार रथ के; कुरल् ओतै–गड़गड़ाहट का शब्द; चॅवि मुऱ्ऱुम्–कानों को पूर्णरूप से; चॅविटु चॅय्य–बहरा बनाते हुए; आर्त्तलिऩ्–उठ रहे थे इसलिए; यारुम्–सभी; पार् विऴ्न्तु–भूमि पर गिरकर; अटङ्किऩर्–संज्ञाशून्य पड़े रहे। ३६४७

फ़ीतों के बंधन से युक्त भेरियों की ठनक, मुखर वीरों का नाद, युद्ध-मैदान में सर्वत्र रही सेनाओं की हर्षध्वनि, और श्रीराम और लक्ष्मण के

रथों की गड़गड़ाहट —आदि सभी ध्वनियाँ बहरा करते हुए उठीं तो वहाँ रहे सभी गिरे और संज्ञाहीन हो रहे। ३६४७

मादलि वदऩ नोक्कि मामऱै यमलऩ् माऱाक्
कादलोय् करुम मॊऩ्ऱु केट्टियाऱ् कळित्त शिन्दै
एदलन् मिहुदि यॆल्ला मियऱ्ऱिय पिऩ्ऱै यॆन्ऱन्
शोदऩै नोक्किच् चॆय्दि तुडिप्पिलै यॆऩ्ऩच् चॊऩ्ऩाऩ् 3648

मा मऱै अमलऩ्–उत्कृष्ट वेदपुरुष विमल श्रीराम ने; मातलि वततम् नोक्कि–मातलि का वदन देखकर; माऱा कातलोय्–अचल स्नेही; करुमम् ऑऩ्ऱुम्–कार्य एक; केट्टि–सुनो; कळित्त चिन्तै–मुदितमन; एतलऩ्–शत्रु (रावण); मिकुति ऎल्लाम्–सभी बुराइयाँ; इयऱ्ऱिय पिऩ्ऱै–करने के बाद; ऎन् तऩ् चोतऩै नोक्कि–मेरा संकेत देखकर; चॆय्ति–अपना काम करो; तुटिप्पु इलै–त्वरा मत करो; ऎऩ्ऩ चॊऩ्ऩाऩ्–ऐसा कहा। ३६४८

तब उत्तमवेदपुरुष विमल श्रीराम ने मातलि का वदन देखकर उससे कहा हे अचल स्नेही ! एक कार्य सुन लो। मोदपूर्ण शत्रु रावण सभी बुरे कृत्य कर ले, उसके बाद मेरा संकेत देखकर तुम कार्य करो। जल्दी न करो। ३६४८

वळ्ळलिऩ् करुत्तु माविऩ् शिन्दैयु माऱ्ऱ लार्दम्
उळ्ळमु मिहैयु मुऱ्ऱ कुऱ्ऱमु मुऱुदि ताऩुम्
कळ्ळमिल् कालप् पाडुङ् गरुममुङ् गरुदे ऩाहिल्
तॆळ्ळिदॆऩ् विञ्जै यॆऩ्ऱा ऩमलऩुञ् जीरि दॆऩ्ऱाऩ् 3649

वळ्ळल्–उदार प्रभु; निऩ् करुत्तुम्–आपका विचार और; माविऩ्–अश्वों के; चिन्तैयुम्–मन; माऱ्ऱलार् तम् उळ्ळमुम्–शत्रुओं के अभिप्राय; मिकैयुम्–उनकी विशेषताएँ; उऱ्ऱ–उनसे होनेवाले; कुऱ्ऱमुम्–अपराध (संकट); उऱुति ताऩुम्–और निश्चय; कळ्ळम् इल्–वंचना-रहित; कालप्पाटुम्–काल की बात; करुममुम्–कार्य; करुतेऩाकिल्–सोचूँ नहीं तो; ऎऩ् विञ्चै–मेरी (सारथ्य-) विद्या; तॆळ्ळितु–साफ़ होगी; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (मातलि ने); अमलऩुम्–विमल देव ने भी; चीरितु–उत्तम बात है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६४९

मातलि ने उत्तर में निवेदन किया— हे उदार प्रभु ! आपका अभिप्राय, अश्वों का रुख, शत्रुओं का मन, उनकी ज्यादती, उसका बुरा फल, सभी का दृढ़ संकल्प, काल की ऋजुस्थिति, अपना कार्य —यह सब न सोचूँ तो मेरी सारथिविद्या भी ठीक होगी न ! (नहीं।) विमल देव ने भी कहा कि अच्छा, उत्तम है। ३६४९

तोऩ्ऱिऩ ऩिराप ऩीदाऱ् पुरन्दरऩ् तुरहत् तेर्मेल्
एऩ्ऱिरु वीरक्कुम् वॆम्बो रॆय्दिय दिडैये याऩोर्

शान्ऱॅन निऱ्ऱल् कुऱ्ऱन् दरुदियाल् विडैयीण् ॲन्ऱान्
वान्तोँडर् कुन्ऱ मन्न महोदर न्निलङ्गै मन्नै 3650

वान् तोँटर् कुन्ऱम् अन्न–आकाशस्पर्शी पर्वत के समान; मकोतरन्–महोदर ने; इलङ्कै मन्नै–लंकेश से; ईतु–यह; पुरन्तरन्–इन्द्र के; तुरकम् तेर् मेल्–अश्वों के (चालित) रथ पर; इरामन् तोन्ऱिलन्–राम प्रकट हुआ; एतिर–सामना करने; इरुवीर्क्कुम्–आप दोनों में; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध; ॲय्तियतु–आ गया है; इटैये–बीच में; यान् ओर् चान्ऱु ॲन–मैं एक साक्षी के रूप में; निऱ्ऱल्–(चुप) खड़ा रहना; कुऱ्ऱम्–ग़लती होगा; ईण्टु–अब; विटै–आज्ञा (लड़ने की); तरुति–दें; ॲन्ऱान्–कहा। ३६५०

उधर आकाशस्पर्शी पर्वत-सदृश महोदर ने लंकेश रावण को समझाया। देखिए! राम देवेंद्र के रथ पर प्रगट हो गया। आप दोनों में घमासान युद्ध होने को है। केवल साक्षीवत् मैं खड़ा रहूँ—यह अपराध होगा। मैं युद्ध करूँ, इसकी आज्ञा दें। ३६५०

अम्बुय मनैय कंण्णन् तन्नैया नरियि नेऱ्
तुम्बियैत् तोँलैत्त दॅन्नत् तोँलैक्कुवॅन् तोँडर्न्दु निन्ऱ
तम्बियैत् तडत्ति यायिऱ् ऱन्दनै कोँऱ्ऱ मॅन्ऱान्
वॅम्बिय लरक्क नः(ह्)दे शॅय्वॅन्न् ऱयलिन् मीण्डान् 3651

अम्पुयम् अनैय कण्णन् तन्नै–कमल-सी आँखोंवाले को; यान्–मैं; अरियिन् एऱु–नर केसरी ने; तुम्पियै तोँलैत्ततु ॲन्न–मर्दन किया हो जैसे; तोँलैक्कुवॅन्–मिटा दूँगा; तोँटर्न्तु निन्ऱ–पास लगे जो खड़ा है; तम्पियै–उसके छोटे भाई को; तटुत्तियायिन्–रोक सको तो; कोँऱ्ऱम् तन्तनै–विजय (तुमने) दिलवा दी; ॲन्ऱान्–कहा रावण ने; वॅम्पु इयल् अरक्कन्–क्रोधतप्त स्वभाव का राक्षस; अ∴ते चॅय्वॅन्–वही करूँगा; ॲन्ऱु–कहकर; अयलिन्–एक तरफ़; मीण्टान्–लौटा। ३६५१

रावण ने कहा कि पंकजाक्ष का नाश मैं गज को सिंह-जैसे कर लूँगा! उसके पीछे आनेवाले उसके छोटे भाई को तुम रोक लो तो तुम मुझे विजय दिलवा दोगे। क्रोधतप्त राक्षस महोदर ने कहा कि मैं वही करूँगा। वह एक ओर मुड़ चला। ३६५१

मीण्डव न्निळवल् निन्ऱ पाणियिन् विलङ्गा मुन्नम्
आण्डहै तॅय्वत् तिण्डे रणुहिय दणुहुङ् गालै
मूण्डॅऴु वॅहुळि योडु महोदरन् मुन्निन्दु मुट्टत्
तूण्डुदि तेरं यॅन्ऱान् शारदि तोँऴुदु शान्ऱान् 3652

मीण्टवन्–जो मुड़ चला वह; इळवल्–लघुराज; निन्ऱ पाणियिन्–जहाँ खड़े रहे उस तरफ़; विलङ्का मुन्नम्–जाए इसके पहले ही; आण्टकै–वीर श्रीराम

का; तॆय्वम् तिण् तेर्—दिव्य सुदृढ़ रथ; अणुकियतु—पास आया; अणुकुम् कालै—पास आते समय; मकोतरन्—महोदर ने; मूण्टु ॲऴु—उभर उठते; वॆकुळियोटु—क्रोध के साथ; मुनिन्तु—डाँटकर; तेरै—अपने रथ को; मुट्ट तूण्टुति—टकराने को चलाओ; ॲन्ऱान्—कहा; चारति—सारथी ने; तॊऴुतु—नमस्कार करके; चॊन्तान्—कहा। ३६५२

रावण से हटकर वह लघुराज लक्ष्मण की तरफ़ जाए, इसके पहले ही श्रीवीरराघव का मज़बूत व दिव्य रथ उसके पास आ गया। यह देख महोदर ने ग़ुस्से के साथ सारथी से कहा कि तुम हमारे रथ को ऐसा चलाओ कि वह उसके रथ को ठोकर लगा दे। सारथी ने विनय के साथ यों कहा। ३६५२

ऒण्णरुङ् गोडि वॆङ्ग णिरावण रेयु मिन्ऱु
नण्णिय पॊऴुदु मीण्डु नडप्परो किडप्प दल्लाल्
अण्णरन् तोऱ्ऱङ् गण्डा लैयनी कमल मन्न
कण्णनै यॊऴिय विप्पाऱ् चॆल्वदे करुम मॆन्ऱान् 3653

ऐय—स्वामी; अण्णल् तन्—महिमावान (श्रीराम) का; तोऱ्ऱम्—(मनोहर) रूप; कण्टाल्—देख लें तो; ऒण् अरुम्—असंख्य; कोटि—करोड़; वॆम् कण् इरावणरेयुम्—क्रूर आँखों के रावण भी; इन्ऱु नण्णिय पॊऴुतु—अब पास जाएँ तो; किटप्पतु अल्लाल्—मरकर गिर जाने के सिवा; मीण्टु नटप्परो—बचकर आगे बढ़ सकेंगे क्या; नी—आप; कमलम् अन्न कण्णनै—कमलाक्ष को; इ पाल् ऒऴिय—इस ओर छोड़कर; चॆल्वते—चले, यही; करुमम्—करने योग्य कार्य होगा; ॲन्ऱान्—कहा। ३६५३

स्वामी! महिमावान श्रीराम का रूप देख ले तो (एक रावण क्या) असंख्य करोड़ों की संख्या के क्रूर आँखों वाले रावण भी, पास जाने पर तो मरकर गिर जायँगे। उसको छोड़कर क्या वे बच निकल सकेंगे? इसलिए आप पंकजाक्ष को यही छोड़कर दूसरी तरफ़ निकल जाइए। ३६५३

ॲन्ऱलु मॆयिऱ्ऱुप् पेऴ्वाय् मडित्तॆडा वॆडुत्तु निन्नैत्
तिन्ऱनॆ नॆन्नि नुण्डाम् बऴियॆन्नच् चीऱ्ऱञ् जिन्दुम्
कुन्ऱन तोऱ्ऱत् तान्ऱन् कॊडिनॆडुन् देरि नेरे
शॆन्ऱदव् विरामन् तिण्तेर् विळैन्ददु तिमिलत् तिण्पोर् 3654

ॲन्ऱलुम् (सारथी के) यों कहने पर; ॲयिऱु पेऴ्वाय् मटित्तु—घोर दाँतों के अपने मुख को मोड़कर; ॲटा—रे; निन्नै—तुझे; ॲटुत्तु—उठाकर; तिन्ऱनॆन्—खा लूँ; ॲन्निन्—तो; पऴि उण्टाम्—निंदा होगी; ॲन्न—ऐसा; चीऱ्ऱम्—कोप को; चिन्तुम्—गिरनेवाले; कुन्ऱन तोऱ्ऱत्तान् तन्—पर्वताकार उसके; कॊटि नॆटु तेरिन् नेरे—ध्वजायुक्त बड़े रथ के सामने; अ इरामन् तिण् तेर्—उन श्रीराम का सुदृढ़ रथ; चॆन्ऱतु—गया; तिमिलम् तिण् पोर्—तुमुल और कठोर युद्ध; विळैन्ततु—चल गया। ३६५४

सारथी के ऐसा कहते पर महोदर ने ओंठ काटते हुए कहा कि रे ! तुमको उठाकर खा लूँ तो निंदा होगी ! ऐसा कहते हुए जो अपना अपार कोप दिखा रहा था, उस पर्वताकार महोदर के ध्वजा से अलंकृत रथ के सामने श्रीराम का मज़बूत रथ आ गया । युद्ध छिड़ गया । ३६५४

पॊऱ्ऱडन् देरु मावुम् बूट्कैयुम् बुलवु वाट्कैक्
कऱ्ऱडन् दिरडो ळाळु नॆरुङ्गिय कडलृह ळॆल्लाम्
वऱ्ऱिय विरामन् वाळि वडवन्नल् परुह वन्ना
ळुऱ्ऱवन् तडन्दे रोट्टि महोदर ऩॊरुवन् शॆन्ऱान् 3655

पॊन् तटम् तेरुम्–बड़े-बड़े स्वर्णरथ और; मावुम्–अश्व; पूट्कैयुम्–और हाथी; पुलवु वाळ् कै–मांसगंध तलवारधारी हाथों के; कल् तटम् तिरळ् तोळ्–और पत्थर-सम बड़े और पुष्ट कंधोंवाले; आळुम्–(पदाति) वीर; नॆरुक्किय–जिनमें भरे थे; कटल्कळ् ॲल्लाम्–वे सारे सेना-सागर; अ नाळ्–उस दिन; इरामन् वाळि–राम-बाण रूपी; वट वन्नल् परुक–वड़वानल के पीने से; वऱ्ऱिय–शुष्क हो गये; मकोतरन्–महोदर; उऱ्ऱ–अपना जो बना था; वन्–कठोर; तटम्–विशाल; तेर्–रथ; ओट्टि–चलाता हुआ; ऑरुवन्–अकेला; चॆन्ऱान्–(श्रीराम के पास) गया । ३६५५

(फल क्या हुआ ?) स्वर्ण-निर्मित रथ, अश्व, गज, मांसगंध-हथियार-धारी, प्रस्तर-सम पुष्ट विशाल भुजा वाले पदाति वीर —इनकी भरी चतुरंगिनी सेनाओं रूपी सारे सागर श्रीराम के शर रूपी वड़वा के सोखने से सूख गये । केवल महोदर बचा रहा । वह अपने मज़बूत रथ को चलाता हुआ अकेले आगे बढ़ आया । ३६५५

अशऩियॆ ऱिरुन्द कॊऱ्ऱक् कॊडियिऩ्मे लरवत् तेर्मेऱ्
कुशैयुरु पाहन् तऩ्मेऱ् कॊऱ्ऱवऩ् कुलवुत् तोण्मेल्
विशैयुरु पहऴि मारि वित्तिऩाऩ् विण्णि ऩोडु
तिशैहळुङ् गिऴिय वार्त्ताऩ् तीर्त्तऩु मुऱुवल् शॆय्दाऩ् 3656

अचऩि एऱु इरुन्त–अशनि-अंकित; कॊऱ्ऱ कॊटियिन् मेल्–विजयी ध्वजा पर; अरवम् तेर् मेल्–शब्दायमान रथ पर; कुचै उऱु–लगाम पकड़नेवाले; पाकन् तन् मेल्–सारथी पर; कॊऱ्ऱवन्–विजयी राजा राम के; कुलवु–मनोरम; तोळ् मेल् कंधों पर; विचै उऱु–वेगवान; पकऴि मारि–शरों की वर्षा; वित्तिनान्–बीज बोता-सा बरसा दी; विण्णिनोटु–आकाश के साथ; तिचैकळुम्–दिशाओं को; किऴिय–फाड़ते हुए; आर्त्तान्–घोष किया; तीर्त्तनुम्–तीर्थ श्रीराम भी; मुऱुवल् चॆय्तान्–मुस्कुराये । ३६५६

महोदर ने अशनि-अंकित ध्वजा पर, ध्वनि करनेवाले रथ पर, लगाम रखनेवाले सारथी पर और विजयराघव के शोभायमान कंधों पर बाणों की वर्षा-सी करा दी । फिर ऐसा गर्जन किया कि आकाश और दिशाएँ फट जायँ । तीर्थ श्रीराम मुस्कुराये । ३६५६

विल्लॊन्ऱाऱ् कवश मॊन्ऱाल् विऱलुडैक् करमो रॊन्ऱाऱ्
कल्लॊन्ऱु तोळु मॊन्ऱाऱ् कळुत्तॊन्ऱाऱ् कडिदिन् वाङ्गि
शॆल्लॊन्ऱु कणैह ळैयत् शिन्दिन्नान् शॆप्पि वन्द
शॊल्लॊन्ऱायच् चॆय्है यॊन्ऱायत् तुणिन्दन नरक्कन् तुञ्जि 3657

ऐयन्–प्रभु ने; ऒन्ऱाल्–एक (शर) से; विल्–(महोदर के) धनु को; ऒन्ऱाल् कवचम्–एक से कवच; ओर् ऒन्ऱाल्–एक-एक से; विऱल् उटै–विजयी; करम–हाथ को; ऒन्ऱाल्–एक से; कल् ऒन्ऱु–प्रस्तर-सम; तोळुम् कंधों–को; ऒन्ऱाल्–एक से; कळुत्तु–कंठ; चॆल् ऒन्ऱु–गतिशील; कणैकळ्–शरों को; कटितिल् वाङ्कि–शीघ्र लेकर; चिन्तिनान्–चलाया; अरक्कन्–राक्षस (महोदर); चॆप्पि वन्त चॊल्–जो कह आया वह वचन; ऒन्ऱाय्–एक हो और; चॆय्कै ऒन्ऱाय्–(जो हुआ वह) काम दूसरा हो, ऐसा; तुञ्चि–मरा; तुणिन्तनन्–खण्डित हुआ। ३६५७

प्रभु श्रीराम ने सवेग अस्त्रों को चलाया और एक-एक से क्रम से उसके धनु, कवच, हाथों, पर्वतस्कंध, और गले को काट गिराया। महोदर जो कह आया वह एक रहा पर यहाँ जो हुआ वह दूसरा बन गया। वह मरा और उसका शरीर कट गया। ३६५७

मोदरन् मुडिन्द वण्ण मूवहै युलहत् तोडु
मादिर मॆवैयुम् वॆन्ऱ वन्तॊळि लरक्कन् कण्डान्
शेदत्तै युण्णक् कण्डान् शॆलविडु शॆलवि डॆन्ऱान्
शूदनु मुडुहित् तूण्डच् चॆन्ऱदु तुरहत् तिण्डेर् 3658

मू वकै उलकत् तोटुम्–त्रिविध लोकों के साथ; मातिरम् ऎवैयुम्–सारी दिशाओं को; वॆन्ऱ–जिसने जीता था उस; वन् तॊऴिल् अरक्कन्–क्रूरकर्म रावण ने; मोतरन् मुटिन्त वण्णम्–महोदर के मरने का हाल; कण्टान्–देखा; चेतत्तै उण्ण कण्टान्–छिन्न हुआ रहना भी देखा; चॆलविटु चॆलविटु–चलाओ, चलाओ; ऎन्ऱान्–कहा; तुरक तिण् तेर्–अश्वसहित मजबूत रथ; चूतनुम् मुटुकि तूण्ट–सूत के जल्दी उकसाने से; चॆन्ऱतु–चला। ३६५८

त्रिलोक तथा दिग्जयी रावण ने महोदर का छिन्न होना और मरना देखा। उसने सारथी से कहा कि 'बढ़ाओ, बढ़ाओ।' साश्व सबल रथ के सारथी ने उकसाया और रथ आगे चला। ३६५८

पत्तिप्पडा निन्ऱ दॆन्नप् परक्किन्ऱ शेनै पाऱित्
तनिप्पडा नाहि निन्ऱन् दाळ्हिल नॆन्नुन् दन्मै
तुनिप्पडा निन्ऱ वीर नवन्तॊन्ऱु नोक्का वण्णम्
कुनिप्पडा निन्ऱ विल्ला लॊल्लैयि नूऱिक् कॊन्ऱान् 3659

पत्ति पटर निन्ऱतु ऎन्न–ओस फैली रही जैसे; परक्किन्ऱ– व्याप्त; चेनै–सेना; पाऱि–बिखर जाय; तनिप्पट्टान् आकि–(रावण) अकेला रह जाय;

इऩ्ऩम् ताऴ्किलऩ्–तब तक और नहीं झुकेगा; ॲऩ्ऩुम् तऩ्ऩै–वह तथ्य; तुणिप्पटा निऩ्ऱ–जिन्होंने विवेक करके जाना उन; वीरऩ्–श्रीवीरराघव ने; अवऩ् ऒऩ्ऱुम् नोक्का वण्णम्–वह कुछ देख न पाये ऐसा; कुऩिप्पटा निऩ्ऱ विल्लाल्–झुके धनुष से; ऒल्लैयिल्–सवेग; नूऱि कॊऩ्ऱाऩ्–छिन्न-भिन्न करके मार दिया। ३६५९

श्रीराम ने सोचकर विचार किया कि ओस-सम फैली इसकी सेनाएँ मिटें और यह अकेला हो जाय ! नहीं तो यह नहीं झुकेगा। उन्होंने अपने झुकाये गये धनुष से सेनाओं को इस भाँति मार मिटाया कि रावण देख भी न सके। ३६५९

अडल्वलि यरक्कऱ् कप्पोऴ्दु तण्डङ्ग ळऴुन्द मण्डुम्
कडल्हळुम् वऱ्ऱ वॆऱ्ऱिक् काल्हिळर्न्दु डुडऱ्ऱुङ् गालै
वडवरै मुदल वाऩ मलैक्कुलञ् जलिप्प माऩ
शुडर्मणि वलयञ् जिन्दत् तुडित्तऩ विडत्त पॊऱ्ऱोळ् 3660

अ पोऴ्दु–उस समय; अटल् वलि अरक्कर्क्कु–बहुत बलवान राक्षस को; अण्टङ्कळ् अऴुन्त–अंडों को धँसाते हुए; मण्टुम् कटल्कळुम् वऱ्ऱ–सभी सागर सूख जायँ ऐसा; वॆऱ्ऱि काल्–विजयी पवन; किळर्न्तु–उमग उठकर; उटऱ्ऱुम् कालै–जब हिला देता है, तब; वटवरै मुतल आऩ–उत्तरी मेरु आदि; मलैक् कुलम्–पर्वतगण; चलिप्प माऩ–जैसे काँप जाते हैं वैसे; चुटर् मणि–तेजोमय रत्नों के; वलयम् चिन्त–बाहुवलय आदि गिर जायँ ऐसा; इटत्त–वायीं; पॊऩ् तोळ्–सुंदर भुजाएँ; तुटित्तऩ–फड़कीं। ३६६०

तब अंडों को धँसाते हुए, उमगते सागरों को सुखाते हुए सर्वजयी युगांतपवन से त्रस्त होकर चलित होनेवाले उत्तरी दिशा के मेरु आदि पर्वतकुल के समान रावण की मनोरम वाम भुजाएँ फड़क उठीं जिससे प्रकाशमय रत्नखचित बाहुवलय आदि गिर गये। ३६६०

उदिर मारि शॊरिन्द दुलहॆलाम्, अदिर वाऩ मिडित्त दरुवरै
पिदिर वीऴ्न्द दशऩि यॊळिपॆऱाक्, कदिर वऩ्ऱऩै यूरुङ् गलन्ददाल् 3661

उलकु ॲलाम्–सारे लोक में; उतिर मारि–रुधिर-वर्षा; चॊरिन्तु–हुई; वाऩम्–मेघ; अतिर–कँपाते हुए; इटित्तऩ–कड़के; अचऩि–अशनि; अरु वरै पितिर–गौरवमय पर्वतों को तोड़ते हुए; वीऴ्न्ततु–गिरी; ऒळि पॆऱा–प्रभाहीन; कतिरवऩ् तऩ्ऩै–सूर्य को; ऊरुम्–परिवेश भी; कलन्ततु–मिल गया। ३६६१

सारे लोक में रुधिर-वर्षा हुई। मेघ थर्राते हुए कड़के। अशनि गिरी और पर्वत टूटे। निष्प्रभ सूर्य को परिवेश मिल गया। ३६६१

वावुम् वाशिह डूङ्गिऩ वाङ्गलिल्, एवुम् वॆञ्जिलै नाणिडै यिऱ्ऱऩ
नावुम् वायु मुलर्न्दऩ नाण्मलर्प्, पूविऩ् मालै पुलाल्वॆऱि पूत्तवाल् 3662

वावुम्–लपकनेवाले; वाचिकळ्–अश्व; तूङ्किऩ–सोये; एवुम्–शर-प्रेषक;

वॅम् चिलै–कठोर धनु; वाङ्कलिन्–(डोरा खींचने) झुकाने पर; नाण्–डोरे; इटै–बीच में; इऱ्ऱ–कट गये; नावुम् वायुम्–उसकी जीभें और उसके मुख; उलर्न्तन–सूखे; नाळ् मलर्–तद्दिनविकसित फूलों की; पूविन् मालै–पुष्प-माला; पुलाल् वँदि पूत्त–मांसगंध देती रही। ३६६२

रावण के गतिमान अश्व सोये। धनु के डोरे खींचते समय बीच में टूट गये। उनकी जीभें और मुख सूख गये। ताज़े फूलों की मालाओं से मांसगंध निकली। ३६६२

ॲळुदु वीणैकॉी डेन्दु पदाहैमेल्, कळुहुङ् गाहमु मॉय्त्तन कण्गणीर्
ऑळुहु हिन्ऱन वोडिह लाडन्मात्, तॉळुविल् निन्ऱन पोन्ऱन शूळिमा 3663

ॲळुतु वीणै कॉटु–लिखित वीणा के साथ; एन्तु–उसको उठाये रहनेवाली; पताकै मेल्–पताका पर; कळुकुम् काकमुम्–गीध और कौए; मॉय्त्तन–बैठे; ओटु–दौड़नेवाले; इकल्–युद्धोपयोगी; आटल् मा–घोड़ों की; कण्कळ्–आँखों से; नीर–(अश्रु-) जल; ऑळुकुकिन्ऱन–स्रवता है; शूळि मा–मुखपट्टों से अलंकृत हाथी; तॉळुविल्–पिंजरों में बद्ध; निन्ऱन पोन्ऱन–खड़े हों जैसे थे। ३६६३

वीणा से अंकित पताका पर गीध और काग बैठे। दौड़नेवाले युद्ध-योग्य अश्वों की आँखों से अश्रु बह निकला। मुखपट्टालंकृत हाथी पिंजरे में बद्ध जैसे श्रांत खड़े रहे। ३६६३

इन्न वाहि यिमैयवर्क् किन्बञ्जॅय्
तुन्नि मित्तङ्गळ् तोन्ऱिन तोन्ऱवुम्
अन्न वॉन्ऱु निनैन्दिल नाऱ्ऱुमो
ॲन्नै वॅल्ल मनित्तर्नॅन् ऱॅण्णुवान् 3664

इमैयवर्क्कु–देवों को; इन्पम् चॅय्–सुख देनेवाले; तुन्न् निमित्तङ्कळ्–बुरे शकुन; इन्न आकि–ऐसे बने; तोन्ऱिन–दिखे; तोन्ऱवुम्–प्रकट हुए तो; ॲन्नै वॅल्ल–मुझे जीतने में; मनित्तन् आऱ्ऱुमो–नर समर्थ होगा क्या; ॲन्ऱु ऍण्णुवान्–ऐसा सोचता; अन्नतु ऑन्ऱुम्–उनमें किसी एक पर भी; निनैन्तिलन्–मन नहीं लगाया। ३६६४

रावण के ये दुःशकुन हुए जो देवों को आनंद देनेवाले थे। पर रावण के ध्यान में कुछ नहीं आया, क्योंकि उसका विचार था कि क्या नर में मुझे जीतने का सामर्थ्य है ? । ३६६४

वीङ्गु तेर्शॅलुम् वेहत्तु वेलैनीर्, ओङ्गु नाळि लॉदुङ्गु मुलहुपोल्
ताङ्ग लाड्ऱ हिलार्तड् माऱ्ऱित्ताम्, नीङ्गि नारिरु पालु नॅरुङ्गिनार् 3665

वेलै नीर्–सागर-जल के; ओङ्कु नाळिल्–बढ़ते आते (युगांत के) दिन; ऑतुङ्कुम्–हटनेवाली; उलकु पोल्–पृथ्वी के समान; इरु पालुम् नॅरुङ्किनार्–दोनों ओर से सटकर मिले लोग; वीङ्कु–तेर्–(रावण के) तेज रथ के; चॅलुम् वेकत्तु–

जाने के वेग को; ताङ्कल् आऱ्ऱकिलार्–सह नहीं सके; तटुमाऱि–अस्तव्यस्त हो; नीङ्किनार्–हट गये । ३६६५

जब युगांत में समुद्र बढ़ आता है तब जैसे भूमि दोनों ओर हट चलती है, वैसे ही दोनों ओर खड़े रहे लोग रावण के रथ की तेज़ी से हड़बड़ाकर दोनों ओर दूर हट गये । ३६६५

करुम मुड्गडैक् काण्गुरु ञानमुम्
अरुमै शेरु मविऴ्जैयुम् विऴ्जैयुम्
बॅरुमै शाल्कॉडुम् बावमुम् बेर्हलात्
तरुम मुम्मॅनच् चॅन्ऱॅदिर् ताक्किनार् 3666

करुममुम्–कर्म; कटै–(और साधना के) अंत में; काण्कुरु–प्रगट होनेवाले; ञान्मुम्–ज्ञान की तरह; अरुमै चेरुम्—अभाव-मिलित; अविऴ्चैयुम्–अविद्या; विऴ्चैयुम्–और विद्या की तरह; पॅरुमै चाल्–बड़ा; कॉटुम्–हानिकारक; पावमुम्–पाप; पेर्कला–अचल; तरुमुम्–धर्म; ॲन–इनकी भांति; ॲतिर् चॅन्ऱु–आमने-सामने जाकर; ताक्किनार्–टकराये । ३६६६

श्रीराम और रावण कर्म और साधना के पूर्ण होने पर मिलनेवाला ज्ञान; अभाव पर आधारित अविद्या और विद्या; और बड़ा पाप और अचल धर्म— ये जोड़े टकराए-जैसे आपस में लड़े । ३६६६

शिरमॉ रायिरन् दाङ्गिय शेडनुम्, उरवु तोऱ्ऱत् तुवणत् तरशनुम्
पॉरवॅ दिर्न्दनर् पोलप् पॉलिन्दनर्, इरवु नण्बह लॅन्नवु मायिनर् 3667

ओरायिरम् चिरम् ताङ्किय–एक सहस्रशीर्ष; चेटनुम्–शेषनाग; उरवु तोऱ्ऱत्तु–और भारी आकार का; उवणत्तु अरचनुम्–गरुड़राज; पॉर–लड़ने; ॲतिर्न्त पोल–सामना करते जैसे; पॉलिन्ततर्–शोभे; इरवुम् नण् पकल् ॲन्नवुम्–रात और मध्याह्न जैसे भी लगे । ३६६७

वे सहस्रशीर्ष आदिशेष और बलवान भीमाकार के गरुड़ परस्पर भिड़ने आये हों जैसे भी लगे । और भी रात और मध्याह्न के समान भी दिखे । ३६६७

वॅन्ऱि यन्दिशै यानै वॅहुण्डुड, नॉन्ऱु यॉन्ऱु मुनिन्दवु मॉन्ऱनर्
अन्ऱि युन्दर शिङ्गमु माडहक्, कुन्ऱ मन्नव नुम्बॉरुङ् गॉळहैयार् 3668

वॅन्ऱि–विजयी; अम्–सुन्दर; तिचै यानै–दिग्गज; ऑन्ऱु ऑन्ऱु–एक-दूसरे से; वॅकुण्टु–कोप करके; उटन् मुनिन्तवुम्–परस्पर रोष दिखाते; ऑन्ऱनर्–बैसे रहे; अन्ऱियुम्–और भी; आटकम् कुन्ऱम् अन्नवनुम्–स्वर्णगिरि-सा हिरण्य और; नरचिङ्कमुम्–नरसिंह; पॉरुम् कॉळकैयार्–जैसे भिड़े उस प्रकार के बने (ये दोनों) । ३६६८

विजयी और सुन्दर दिग्गज आपस में क्रोध, रोष और वैर के साथ

गुँथने खड़े हों, वैसे भी रहे। और भी स्वर्ण-पर्वताकार हिरण्य और नृसिंहदेव युद्ध ठानकर खड़े हों वैसे भी लगे। ३६६८

तुवन्न विल्लित् पॊरुट्टॊरु तॊल्लैनाळ्
ऍवन्न विल्वलित् तॆन्ऱिमै योर्तॊळप्
पुवन्न मून्ऱुम् पॊलङ्गळ लाऱ्ऱॊडुम्
अवन्नु मच्चिव नम्मॆन लायिनार् 3669

तॊल्लै-प्राचीन काल में; ऑरु नाळ्-एक दिन; तुवन्न-ध्वनिपूर्ण; विल्लित् पॊरुट्टु-(दो) धनुओं के निमित्त; इमैयोर्-व्योमवासियों के; ऍवन्न विल्-किसका धनु; वलित्तु-अधिक बलवान है; ऍन्ऱु-पूछकर; तॊळ-नमस्कार करने पर; पुवन्न मून्ऱुम्-तीनों भुवनों को; पॊलन् कळलाल्-स्वर्णपायलधारी श्रीचरणों से; तॊट्टुम्-जिन्होंने स्पर्श किया (मापा); अवन्नुम्-उन (त्रिविक्रम) और; अ चिवनुम् ऍनल्-उन शिवजी के समान; आयिनार्-बने। ३६६९

पहले कभी देवों ने ज़ोरदार दो धनुओं में 'कौन सा धनु अधिक बलवान है ?' यह जानना चाहा। उन्होंने शिव और विष्णु से विनय की। तब, जिन्होंने तीनों लोकों को अपने स्वर्ण-पायलधारी श्रीचरण से मापा था, उन विष्णु और शिव में घमासान युद्ध छिड़ गया। तब के दोनों देवों के समान भी वे दिखे। ३६६९

कण्ड शङ्गर नान्मुहर् कैत्तलम्
विण्ड शङ्गत् तॊल्लण्डम् वॆडित्तिड
अण्ड शङ्गत् तमरर्द मार्प्पॆलाम्
उण्ड शङ्ग मिरावण नूदिनान् 3670

कण्ट-देखते हुए; चङ्कर् नान्मुकर्-शंकरजी और ब्रह्माजी; कैत्तलम्-हाथ; विण्टु-अलग हों; अचङ्क-काँपें ऐसा; तॊल् अण्टम्-प्राचीन ब्रह्माण्ड में; वॆटि-फटने का शब्द; पट-हो ऐसा; अण्टम्-व्योमलोक में; चङ्कत्तु अमरर्तम्-देवसमूह का; आर्प्पॆलाम्-आनंद का सारा आरव; उण्ट-जिसने निगल लिया; चङ्कम्-उस शंख को; इरावणन् ऊतिनान्-रावण ने बजाया। ३६७०

तब रावण ने व्योमलोक-मोद के शब्द को दबानेवाले शंख को ले बजाया तो दर्शक शंकर और ब्रह्मा के हाथ हिलकर काँपे और ब्रह्माण्ड से फूटने का शब्द निकला। ३६७०

शॆन्न शङ्गिन दोशै तुळक्कुऱ
ऍन्न शङ्गॊन् ऱिमैयव रेङ्गिड
अन्न शङ्गैप् पॊरामै यिन्नालरि
दन्न वॆण्शङ्गन् दानु मुळङ्गिऱ्ऱाल् 3671

अन्त चङ्कै–उस शंख को; पॉऱामैयिताल्–ईर्ष्या से (न सहकर); चॊन्न–उक्त; चङ्किनतु ओचै–शंख की ध्वनि; तुळक्कुर–काँप जाए ऐसा; इमैयवर्–देव; ऍन्न चङ्कु ऍन्ऱु–यह कैसा शंख है ऐसा; एङ्किट–संशय करें ऐसा; अरि तन्त–हरि का; वॆण् चङ्कम् तानुम्–श्वेत (पांचजन्य) शंख भी; मुऴङ्किऱ्ऱु–स्वतः बज उठा। ३६७१

यह शंखनाद सुनकर श्रीविष्णु का पांचजन्य नामक शंख जल उठा। वह उस शंखनाद को ही कँपाते हुए स्वरित हो उठा, जिसे सुनकर स्वयं देव पूछ बैठे कि यह कैसा शंख है ? । ३६७१

ऐय नैम्बडै तामु मडित्तॊऴिल्, शॆय्य वन्दयल् निन्ऱन तेवरित्
मॆय्य नन्नवै कण्डिलन् वेदङ्गळ्, पॉय्यि ऱन्नैप् पुलन्ऱॆरि यामैपोल् 3672

ऐयन्–प्रभु के; ऐम् पटै तामुम्–पाँचों (प्रकार के : चक्र, शंख, गदा, असि और धनु) अस्त्र; अटि तॊऴिल् चॆय्य–चरण-सेवा करने; वन्तु–आकर; अयल्–पास में; निन्ऱन–खड़े रहे; वेतङ्कळ्–वेद; पॉय्यिल् तन्नै–सच्चे उनको; पुलन् तॆरियामै पोल्–नहीं जान पाते जैसे; अन्नवै–उन्हें; तेवरित् मॆय्यन्–देवों के सत्यतत्त्व ने; कण्टिलन्–नहीं देखा। ३६७२

तब प्रभु श्रीराम (श्रीविष्णु) के (शंख, चक्र, दण्ड, खड्ग और कोदण्ड) पाँचों आयुध चरणसेवार्थ पास आये रहे। पर वेद जैसे उस सत्यतत्त्व को पहचान नहीं पाये वैसे ही देवों की सच्ची वस्तु, वे परम पुरुष उन्हें देख नही पाये। ३६७२

आशै युम्विशुम् बुम्मलै याऴियुम्
तेश मुम्मलै युन्नॆडुन् देवरुम्
कूश वण्डङ् गुलुङ्गक् कुलङ्गॊऴ्तार्
वाश वन्शङ्ग मादलि वाय्वैत्तान् 3673

आचैयुम्–दिशाएँ; विचुम्पुम्–और आकाश; अलै आऴियुम्–और तरंग-सहित सागर; तेचमुम्–देश; मलैयुम्–पर्वत; नॆटु तेवरुम्–और महान देव; कूच–संकुचित हुए; अण्टम् कुलुङ्क–अण्ड हिल उठे; कुलम् कॊऴ् तार्–राशियों में रहे फूलों की माला के; वाचवन् चङ्कै–वासव के शंख को; मातलि–मातलि ने; वाय् वैत्तान्–अपने मुख पर रखकर बजाया। ३६७३

तब मातलि ने पुष्पबहुल मालाधारी वासव के शंख ले फूंका, जिसकी ध्वनि सुनकर दिशाएँ, आकाश, तरंगपूर्ण समुद्र, देश, पर्वत और उत्कृष्ट देव –सारे सकुचा गये। और अण्ड भी अस्त-व्यस्त हो गया। ३६७३

शॆन्ऱ तेरॊ रिरण्डॊडुञ् जेर्त्तिय, कुन्ऱि वॆङ्गट् कुदिरै कुदिप्पन
ऑन्ऱै यॊन्ऱुऱ् ऱॆरियुह नोक्किन, तिन्ऱु तोर्वन्न पोलुञ् जिनत्तन 3674

चॆन्ऱ–जो गये उन; तेर् ओर् इरण्टॊटुम्–दो अपूर्व रथों के साथ; चेर्त्तिय–

जुते; कुन्ऱि–घुँघुचियों के समान (लाल); वॆम् कण् कुतिरै–भयोत्पादक आँखों वाले अश्व; कुतिप्पत्त–उछलने-कूदनेवाले; ऒन्ऱै ऒन्ऱु उऱ्‌ऱु–परस्पर पास आकर; ऎरि उक–आग उगलते हुए; नोक्कित–देखनेवाले; तिन्ऱु तीर्वत्त पोलुम्–खा जायेंगे ऐसा; चिनत्तन–क्रोधी (बने)। ३६७४

दोनों रथों के जुते घुँघुची-सम लाल तथा भयोत्पादक आँखों वाले अश्व उछलकर परस्पर पास गये। आँखों से आग उगलते हुए ऐसा क्रोध दिखाया मानो वे एक दूसरे को खा डालेंगे। ३६७४

कॊडियिन् मेलुऱै वोणैयुङ् गॊऱ्‌ऱमा, इडियु नेऱु मुऱैयि निडित्तन
पडियुम् विण्णुम् बरवयुम् बन्मुऱै, मुडियु मॆन्बदोर् मूरि मुऴक्किनाल् 3675

कॊटियिन् मेल् उऱै–ध्वजा में रहनेवाली; वीणै–वीणा और; कॊऱ्‌ऱम्–विजयी; मा इटियिन् एऱुम्–बड़ा अशनिराज; पटियुम्–पृथ्वी; विण्णुम्–और आकाश; परवैयुम्–समुद्र; मुटियुम्–मिट जायेंगे; ऎन्पतु–ऐसा संशय उत्पन्न करनेवाले; ओर् मूरि मुऴक्किनाल्–भारी शब्द के साथ; मुऱैयिन्–बारी-बारी से; पन्मुऱै इटित्तन–अनेक बार टकराये। ३६७५

दोनों ध्वजाओं की वीणा और विजयी अशनिराज भी भयंकर शोर के साथ अनेक बार आपस में ऐसा टकराए कि लगा कि पृथ्वी, आकाश और समुद्र नष्ट हो जायँ। ३६७५

एऴु वेलैयु मार्प्पॆडुत् तॆन्नलाम्, वीऴि वॆङ्ग णिरावणन् विल्लॊलि
आऴि नादन् शिलैयॊलि यण्डम्विण्, डूऴि पेर्वुऴि मामऴै यॊत्तदाल् 3676

वीऴि–'वीऴी' के फल के समान (लाल); वॆम् कण्–भयोत्पादक आँखोंवाले; इरावणन्–रावण के; विल् ऒलि–धनु की ध्वनि; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; आर्प्पु ऎटुत्त–गरजे; ऎन्नलाम्–ऐसा कही जा सकती है; आऴिनातन्–चक्रधारी नाथ श्रीराम के; चिलै ऒलि–धनु की ध्वनि; अण्टम् विण्टु–अंड फाड़कर; ऊऴि पेर्वु उऴि–युगांत के समय के; मा मऴै ऒत्ततु–बड़े मेघों के गर्जन के समान थी। ३३७६

'वीऴी' के फल के समान लाल और क्रूर आँखों वाले रावण के धनु की ध्वनि सातों समुद्रों के गर्जन के समान थी। चक्रधारी श्रीराम के धनु का शब्द अंडविदारक युगांतकालीन मेघों के गर्जन का-सा रहा। ३६७६

आङ्गु निन्ऱ वनुमनै यादियाम्, वीङ्गु वॆञ्जिन वीरर् विऴुन्दनर्
एङ्गि निन्ऱ दलालॊन् ऱिऴैत्तिलर्, वाङ्गु शिन्दैयर् शॆय्है मऱन्दुळार् 3677

आङ्कु निन्ऱ–वहाँ जो खड़ा रहा; अनुमनै आतियाम्–हनुमान आदि; वीङ्कु–स्फीत; वॆम्–भयानक; चिन वीरर्–क्रोध के वीर; वाङ्कु चिन्तैयर्–श्रांतमन होकर; एङ्कि निन्ऱतु अलाल्–तरसते खड़े रहे, उसके सिवा; चॆय्कै

मऱन्तुळार्–कार्य भूले; ऑन्ऱु इऴैत्तिलर्–कुछ न करके; विऴुन्तनर्–गिर पड़े। ३६७७

इनका शब्द सुनकर हनुमान आदि वर्धनशील क्रोध से अभिभूत वानरवीर भी श्रांतमन हो गये। उनका मन म्लान हो गया। किंकर्तव्यविमूढ और निष्क्रिय होकर गिर गये। ३६७७

आव दॆन्ऩेहों लामॆन् ऱऱिहिलार्, एवर् वॆल्वरॆन् ऱॆणणल रेङ्गुवार्
पोवर् मीळ्वर् पदैप्पर् पॊरुमलाल्, तेव रुन्दङ्गळ् शॆय्है मऱन्दऩर् 3678

तेवरुम्–देव भी; ऑन्ऩे कॊल् आवलु आम्–क्या ही होगा; ऑन्ऱु–यह; अऱिकिलार्–न जान सके; ऑवर् वॆल्वर्–कौन जीतेंगे; ऑन्ऱु ऑण्णलर्–यह सोच नहीं सके; एङ्कुवार्–म्लान रहे; तङ्कळ् चॆय्कै मऱन्तनर्–अपना कृत्य भूल गये; पॊरुमलाल्–(मन में) दुःख के भरने से; पोवर्–जाते; मीळ्वर्–लौटते और; पतैप्पर्–बेचैन होते थे। ३६७८

देव भी यह नहीं जान सके कि क्या होगा? यह नहीं सोच सके कि किसकी जीत होगी? स्थित होकर म्लान हो रहे, अपनी क्रियाएँ भूल गये। दुःख से भरकर जाते-आते और बेचैनी दिखाते थे। ३६७८

नीण्ड मिन्ऩॊडु वानॆडु नीलविल्
पूण्डि रण्डॆदिर् निन्ऱवुम् बोन्ऱऩ
आण्ड विल्लितन् विल्लु मरक्कन्ऱऩ्
तीण्ड वल्लव रिल्लाच् चिलैयुमे 3679

आण्ट–लोकरक्षक; विल्लि तन्–कोदण्डपाणी का; विल्लुम्–धनुष और; अरक्कन् तन्–राक्षस (राज) का; तीण्ट वल्लवर् इल्लाचिलैयुम्–ऐसा चाप जिसे अन्य कोई छू भी नहीं सके; नील वान्–नीले गगन में; इरण्टु नॆटु विल्–दो लंबे इन्द्रधनुष; नीण्ड मिन्ऩॊटु पूण्टु–लंबी विद्युत् (प्रत्यंचा) से युक्त होकर; ऑतिर् निन्ऱवुम्–आमने-सामने रहते हों; पोन्ऱन–जैसे भी रहे। ३६७९

लोकरक्षक श्रीराम का कोदण्ड और राक्षसराज का चाप, जिसे कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता था, दोनों नीले आकाश में आमने-सामने प्रकट दो बड़े इंद्रधनुषों के समान, जिनसे विद्युत् के डोरे बँधे हों, दिखे। ३६७९

अरक्क नन्ऱॆडुत् तार्त्तन वार्प्पुमोर्
शिरिप्पु माविर् ऱॆऴिप्पुमुण् डॆहॊलाम्
कुरैक्कुम् वेलैयु मेहक् कुऴाङ्गळुम्
इरैत् तिडिक्किन्ऱ वित्तुऱ्मॊ रीऱ्ऱिल 3680

कुरैक्कुम् वेलैयुम्–गरजते सागर और; मेक कुऴाक्कळुम्–मेघसमूह; इत्तुम्–आज भी; ओर् ईऱु इल–बिना अंत के; इरैत्तु–गरजकर; इटिक्किन्ऱ–

कड़कते हैं; अन्ऱु-उस दिन; अरक्कन्-राक्षस ने; ॲदुत्तु आर्त्तत-जो उठाकर शब्द किया; आर्प्पुम्-वह घोष; ओर् चिरिप्पुम्-और एक अट्टहास; विल् तॆळिप्पुम्-और धनु का शोर; उण्टे कॊल् आम्-आज होंगे क्या। ३६८०

गरजते सागर और मेघसमूह आज भी गरजते रहते हैं। पर उस दिन रावण का नर्दन, अट्टहास और उसके चाप का शब्द जो उठे वे आज प्राप्य हैं क्या ? । ३६८०

मण्णिऱ् काट्टुव वानिडि येऱ्ऱिनम्
ऍण्णिऱ् चूऩ्मऴै यल्ल विरावणऩ्
कण्णिऱ् चिन्दिय तीक्कडु वॆम्बॊऱि
विण्णिऱ् चॆल्वऩ विण्णिऩ्ऱु वीऴ्वऩ 3681

वान् इडि एऱ्ऱु इनम्-आकाश के अशनिराज-समूहों का; मण्णिल् काट्टुवन-भूमि पर प्रगट होना; ऍण्णिल्-सोचें तो; चूल् मऴै अल्ल-जलगर्भ-मेघ (जनित) नहीं; इरावणन्-(पर) रावण ने; कण्णिन् चिन्तिय-आँखों से जो गिराये; ती कटु वॆम् पॊऱि-वे अग्नि-सम भयानक अंगारे; विण्णिल् चॆल्वन-जो आकाश में जाते रहे और; विण् निन्ऱु-आकाश से; वीऴ्वन-गिरते रहे। ३६८१

"अशनियाँ तो आकाश में होती हैं। अब भूमि पर भी दिखाई देती क्यों ?" यह अन्वेषण करें तो मालूम होगा कि वे वज्र जलगर्भ मेघ-जमित नहीं। पर वे रावण की आँखों से निकले गरम अंगारे है, जो आकाश में जाते तथा नीचे आते रहे। ३६८१

इक्क णत्तु मॆऱिप्प तडित्तॆन
चॆक्कर् मेहत् तुदिक्कुम् नॆरुप्पॆनप्
पक्कम् वीशुम् बडेच्चुडर् पः(ह्)ऱिशै
पुक्कुप् पोहप् पॊडिप्पऩ पोक्किल 3682

पक्कम्-पार्श्वों में; वीचुम्-प्रकाश निकालनेवाले; पटै-हथियारों के; चुटर्-प्रकाश-कण; पल् तिचै पुक्कु पोक-अनेक दिशाओं में घुस चले तो; पॊटिप्पन-वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये; पोक्किल-वे मिटे नहीं; इ कणत्तुम्-अब भी; चॆक्कर् मेकत्तु-लाल मेघ में से; उतिक्कुम्-जनित; नॆरुप्पु ॲन-आग के समान; तटित्तु ॲन-तड़ित के समान; ऍऱिप्प-चलते रहते है। ३६८२

रावण के पार्श्वों में रहे हथियारों के प्रकाशकण सभी दिशाओं में चले और वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये। पर वे स्वयं नहीं मिटे। आज भी वे ही लाल मेघजन्य आग (बिजली) और तडित् के रूप में चलते रहते हैं। ३६८२

माल्क लङ्गलिल् शिन्दैयिन् मादिरम्
नाल्क लङ्ग नहुन्दॊऱु नावॊडु

कालुक्क लङ्गुवर् तेवर् कणमऴैच्
चूलुक्क लङ्गु विलङ्गल् तुलङ्गुमाल् 3683

कलङ्कलिद् चिन्तैयिन्–अचंचलमन; माल्–श्रीविष्णु के समान रहनेवाली; नाल् मातिरम् कलङ्क–चारों दिशाओं को कँपाते हुए; नकुम् तोरुम्–(रावण के) हँसते हर समय; तेवर्–देव; नावोटु–जीभों के साथ; काल्–पैर में; कलङ्कुवर्–लड़खड़ाते; चूल्–(जल-) गर्भ; कण मऴै–मेघसमूह; कलङ्कुम्–डर जाते; विलङ्कल्–(त्रिकूट) पर्वत; तुलङ्कुम्–काँप जाता। ३६८३

श्रीविष्णु के मन के समान रहनेवाली अचल दिशाओं को भी चलित करते हुए जब-जब रावण हँसा, तब देवों की जीभें और पैर लड़खड़ाये। जलगर्भ मेघसमूह अस्त-व्यस्त हुए; और त्रिकूट पर्वत भी चलित हुआ। ३६८३

कुऱ्ऱम् विऱ्कोडु कोल्लुदल् कोळिलाच्
चिऱ्ऱै याळनैत् तेवर्दन् वेरोडुम्
पऱ्ऱि वानिऱ् चुऴऱ्ऱिप् पडियिन्मेल्
ऍऱ्ऱु वेनॆन्ऱु उरैक्कु मिरैक्कुमाल् 3684

कोळ् इला–निर्बल; चिऱ्ऱै याळनै–छोकरे को; विऱ्कोडु–धनु लेकर; कोल्लुतल्–मारना; कुऱ्ऱम्–गलत है; तेवर् तम् तेरोटुम्–देव-रथ के साथ; पऱ्ऱि–पकड़कर; वानिल् चुऴऱ्ऱि–आकाश में घुमाकर; पटियिन् मेल्–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवेन्–पटक दूँगा; ऍन्ऱु उरैक्कुम्–यह कहता (रावण); इरैक्कुम्–चिल्लाता। ३६८४

'निर्बल छोकरे पर धनु का प्रयोग करके उसे मारना हीनता है। इसलिए मैं उसे देवरथ के साथ पकड़कर आकाश में घुमाकर भूमि पर पटक दूँगा' —ऐसा रावण चिल्लाकर कहता। ३६८४

तडित्तु वेत्तनन्न वॆङ्गणै ताक्कुऱ
वडित्तु वेत्तदु मानुडऱ् कोवलि
ऑडित्तुत् तेरै युदिर्त्तोरु विल्लोडुम्
बिडित्तुक् कोळ्वन् शिरैयॆनप् पेसुमाल् 3685

तटित्तु–गाज को; वेत्त अनन्न–रखकर निर्मित किया हो ऐसे; वॆम् कणै–भयानक शरों के; ताक्कुऱ–जोर से लगने पर; वलि–(सहने की) शक्ति; मानुटऱ्को–क्या मानव को; वटित्तु वेत्ततु–बनी रखी है; ऑटित्तु–तोड़कर; तेरै उतिर्त्तु–रथ को चूर कर; ओरु–श्रेष्ठ; विल्लोटुम्–धनु के साथ; चिरै पिटित्तु कोळ्वन्–बंदी बना लूँगा; ऍन पेचुम्–यह कहता। ३६८५

"वज्रनिर्मित-से कठोर अस्त्रों को झेलने की शक्ति क्या मानव को

मिली है ? उसे तोड़ दूँगा; रथ को चूर कर दूँगा; उसे उसके श्रेष्ठ कोदण्ड के साथ पकड़कर बंदी बना लूँगा।" —रावण ऐसा कहता। ३६८५

पदैक्किन्ड्रदोर् मत्रमुम्मळल् पडर्हिन्ड्रदोर् शिनमुम्
विदैक्किन्ड्रन पॉरिपॉङ्गिन विळियुम्मुडै वॅय्योन्
कुदैक्कुन्ड्रॅन निमिर्वॅञ्जिलै कुळैयक्कडुङ् गोडुङ्गाड्
रुदैक्किन्ड्रन शुडुवॅङ्गणै युरुमेरॅन वॅय्दान् 3686

पतैक्किन्ड्रतु–विकंपित; ओर् मत्रमुम्–एक मन; अळल् पटर्किन्ड्रतु–आग-फैलते; ओर् चिन्नमुम्–एक क्रोध; वितैक्किन्ड्रन–(सभी दिशाओं में) बिखरते; पॉरि–अंगारों से भरी; विळियुम्–आँखें; उटै–जिसकी थीं; वॅय्योन्–उस क्रूर रावण ने; कुतै–'कुदै' सहित; कुन्ड्रु अॅन–पर्वत-सम; निमिर्–तनकर रहे; वॅम् चिलै–भयंकर धनुष; कुळैय–झुकाकर; कटु कोटु काड्रु–तेज भयंकर पवन द्वारा; उतैक्किन्ड्रन–चालित; उरुम् एरु अॅन–अशनिराज के समान; चुटु वॅन् कणै–गरम क्रूर शर; अॅय्तान्–चलाये। ३६८६

अशांतमन, अग्नि-सम फैलता क्रोध, और अंगारे छितरनेवाली आँखें —इनसे युक्त क्रूर रावण ने कुदै- (बाण रखने का डोरे पर स्थान) सहित पर्वत के समान तने रहे धनु को झुकाया और प्रचंड पवनचालित अशनिराजों के समान जलानेवाले भयावह बाणों को छोड़ा। ३६८६

उरुमॉप्पन कनलॉप्पन वूड्रुन्दरु कूड्रिन्
मरुमत्तिनु नुळैहिड्पन मळैयॉप्पन वानोर्
निरुमित्तन पडैपड्रन निमिर्वुड्रुड वमिळ्दप्
पॅरुमत्तिनै सुड्रुड्रिय पॅरुम्बाम्बिनुम् बॅरिय 3687

उरुम् ऑप्पन–वज्र-सम थे; कनल् ऑप्पन–अग्नि-सरीखे; ऊड्रम् तरु–हानिकारक; कूड्रिन्–यम के भी; मरुमत्तिनुम्–मर्म (वक्ष) में; नुळैकिड्पन–घुस सकनेवाले; मळै ऑप्पन–वर्षा-सम; वानोर् निरुमित्तन–देव-रचित; पटै–(शत्रु के) हथियारों को; पड्रु अड–तोड़ते हुए; निमिर्वु उड्रुन–सिर तानकर चलनेवाले; अमिळ्तम् पॅरु मत्तित्तै–अमृत निकालने में लगायी गयी; मत्तित्तै–मथानी (मेरु) को; सुड्रै–ठीक प्रकार से; चुड्रिय–जो लिपटा रहा; पॅरुम् पाम्पितुम्–उस बड़े नाग (वासुकी) से भी; पॅरिय–बड़े थे। ३६८७

रावण-प्रेरित शर वज्र-सम थे। आग-से थे। घातक यम के मर्म को भेद सकनेवाले थे। मेघ-सम थे। देवनिर्मित थे। शत्रुओं के हथियारों को निर्मूल करते हुए शान के साथ चलनेवाले थे। अमृत निकालने को लगायी गयी मथानी (मेरु) पर जो लिपटा रहा, उस मोटे बड़े सर्प वासुकी के समान स्थूल और बड़े थे। ३६८७

तुण्डप्पड नॅडुमेरुवैत् तॉळैत्तुळ्ळुड़ै तॉङ्गा
तण्डत्तैयुम् बॉदुत्तेहुमॅन्ऱु ड़िमैयोर्हळु मयिर्त्तार्
कण्डत्तॅऱु कणैमारियै करुणैक्कडल् कन्नहच्
चण्डच्चिलैच् चरङ्गॉण्डवै यिडैयेयऱत् तडुत्तान् 3688

नॅडु मेरुवै–लंबे मेरु को; तुण्टप्पट–खण्ड-खण्ड बनाते हुए; तॉळैत्तु–छेदकर; इड़ै–कुछ देर भी; उळ् तॉङ्कातु–अंदर न रहकर; अण्टत्तैयुम्–अंड को भी; पॉतुत्तु–भेदकर; एकुम् ॲन्ऱु–जायँगे (रावण के बाण) ऐसा; इमैयोर्कळुम्–देव भी; अयिर्त्तार्–भ्रमित हुए; करुणै कटल्–करुणासागर; अ तॅऱु कणै मारियै–उस गरम शरवर्षा को; कण्टु–देखकर; चण्टम्–प्रचंड; कन्नकम् चिलै–स्वर्ण-धनुष से; चरम् कॉण्टु–शर चलाकर; अवै इटैये अऱ–उनको बीच में काट कर; तटुत्तान्–रोक दिया। ३६८८

उन्हें देखकर देवगण भी भ्रमित हुए कि ये बड़े मेरु को भी छेदकर विना कुछ देर भी ठहरे निकल जायँगे; अण्ड को भी भेदकर निफर जायँगे। तब करुणासागर श्रीराम ने अपने प्रचंड कनक-चाप से शर चलाये और उन गरम वर्षा के-से शरों को बीच में ही काटकर रोक दिया। ३६८८

उडैयान्मुयन्ऱु ऱुक्कारिय मुऱुतीविनै युडऱ्ऱ
इडैयूऱुरच् चिदैन्दाङ्गॅन्नच् चरञ्जिन्दिन विऱलुम्
तॉडैयूड़िय कणैमारिहळ् तॉहैतीर्न्दन तुरन्दान्
कडैनाळुऱु कणमामळै काल्वीळ्न्दॅन्नक् कडियान् 3689

उटैयान्–कोई स्वामी; मुयन्ऱु उऱु–जो प्रयत्न करके साधता है वे; कारियम्–कार्य; उऱु तीविनै–(उसे) मिले पापों के; उटऱ्ऱ–नष्ट करने पर; इटैयूऱु उऱ–जब बाधाएँ पड़ती हैं; चितैन्त ॲन्न–जैसे (वे कार्य) असफल हो जाते हैं वैसे; चरम्–(रावण के) शर; विऱलुम् चिन्तिन–अपनी शक्ति खो गये; कटियान्–निर्मम रावण ने; तॉटै उड़िय–चलाने से वल-प्राप्त; तॉकै तीर्न्तन–असंख्यक; कणै मारिकळ्–शरों की वर्षाओं को; कटै नाळ् उऱु–युगांत में चलनेवाली; कण मा मळै–बड़े मेघों के समूह; काल् वीळ्न्तु ॲन्न–नीचे उतरे हों जैसे; तुरन्तान्–छोड़ा। ३६८९

मानो कि कोई प्रयत्नवान खूब यत्न करके कार्य साधता है और बहुत क्रूर प्रारब्ध आकर वाधा देता है तो वे कार्य मिट जाते हैं। वैसे ही क्रूर रावण के शर व्यर्थ बने। रावण के चलाने से बलवान हुए वे असंख्यक शर बल खोकर युगांत के मेघ नीचे गिरे जैसे नीचे गिर गये। ३६८९

विण्पोर्त्तन तिशैपोर्त्तन मलैपोर्त्तन विमैयोर्
कण्पोर्त्तन कडल्पोर्त्तन पडिपोर्त्तन कलैयोर्

ऍण्पोर्त्तत वॅरिपोर्त्तन विरुळ्पोर्त्तन वॅन्ऩे
तिण्पोर्त्तोऴि लॅन्ऩ्ऱानेयि ऩुरिपोर्त्तवन् तिहैत्तान् 3690

आतैयिन् उरि पोर्त्तवन्—गजचर्माबरधारी (शिव) ने; विण्—आकाश; पोर्त्तत—आच्छावित कर गये (रावण-शर); तिचै पोर्त्तत—दिशाओं को ढँक गये; मलै पोर्त्तत—पर्वतों को ढाँप दिया; इमैयोर् कण् पोर्त्तत—देवों की आँखों पर छा गये; कटल् पोर्त्तत—समुद्रों को ढँक दिया; पटि पोर्त्तत—भूमि को ढाँप दिया; कलैयोर्—कलाविदों के; ऍण्—संख्याज्ञान को; पोर्त्तत—बेकार कर दिया; ऍरि पोर्त्तत—अग्नि को ढाँप दिया; इरुळ् पोर्त्तत—अन्धकार पर छा गये; तिण्—कठोर; पोर् तॉऴिल् इतु—युद्धकर्म यह; ऍन्ऩो—कौन-सा है; ऍन्ऱान्—पूछा (आश्चर्य से)। ३६६०

गजचर्मांबरधारी शिवजी ने यह आश्चर्य देखा कि उन शरों ने आकाश को, दिशाओं को, पर्वतों, देवों की आँखों, समुद्रों और भूमि सबको ढाँप दिया। गणितज्ञों के संख्याज्ञान को भी उन्होंने आच्छादित कर दिया! आग व अधिकार भी ढँक गया। शिव चकित हुए कि ऐसा कठोर युद्धकर्म है कैसा ? । ३६९०

अल्लानॆडु पॆरुन्देवरु मऱैवाणरु मञ्जि
ऍल्लार्हळुङ् गरङ्गॊण्डिरु विऴिपॊत्तिन रिरिन्दनर्
शॆल्लायिरम् विऴुङ्गालुहुम् विलङ्गॊत्तडु शेनै
विल्लाळनु मदुहण्डवै विलक्कुम्बडि विरैन्दान् 3691

अल्ला—(शिवजी से) अन्य; नॆटु पॆरु तेवरुम्—बहुत श्रेष्ठ देव और; मऱै वाणरुम्—वेदविप्र; ऍल्लार्कळुम्—सभी; अञ्चि—डरकर; करम् कॊण्टु—हाथों से; इरु विऴि—दोनों आँखों को; पॊत्तितर्—मूँदकर; इरिन्तनर्—भाग गये; चेऩै—सेना (वानरों की); आयिरम् चॆल्—हजार वज्र; विऴुम् काल्—जब गिरें तब; उकुम्—चूर होनेवाले; विलङ्कु—पर्वत; ऒत्ततु—के समान बन गयी; अतु कण्टु—उसको देखकर; विल्लाळऩुम्—धनुर्धर श्रीराम भी; अवै—उन्हें; विलक्कुम्पटि—रोकने को; विरैन्तान्—आतुर हुए। ३६६१

शिव के अतिरिक्त अन्य देवता लोग, ब्राह्मण लोग आदि सभी भयातुर होकर अपनी आँखों को अपने हाथों से मूँदते हुए इधर-उधर भाग गये। वानर-सेना भी सहस्र वज्राहत गिरि के समान छिन्न-भिन्न हो गयी। धनु के स्वामी श्रीराम ने यह हालत देखी तो उनमें उन बाणों को रोकने की आतुरता पैदा हो गयी। ३६९१

शॆन्दीविनै मऱैवाणनुक् कॊरुवन्ऩिशै विलैनाळ्
मुन्दोन्ददॊ रुणवित्पय नॆन्नलायिन मुदल्वन्
वन्दोन्दन वडिवॆङ्गणै यनैयान्वहुत् तमैत्त
वॆन्दीविनैप् पयनॊत्तन वरक्कन्ऩॊरि विशिहम् 3692

मुतल्वन्–आदिनाथ श्रीराम ने; वन्तु–आकर; ईन्तत–जो चलाये; वटि वॅम् कणै–तीक्ष्ण तापक शर; ऑरुवन्–किसी (दाता) के; मुन्नुम्–पहले किसी दिन; चॅम् ती वित्त–लाल तीनों "अग्नि" पालनेवाले; मऱै वाणऱ्कु–वेदविप्र को; चिऱु विलै नाळ्–अकाल में; ओर् उणविन्–एक भोजन; ईन्ततु–देने का; पयन् अॅतल्–फल जैसा; आयिन–बढ़ गये; अरक्कन् चॊरि विचिकम्–राक्षसप्रेरित विशिख; अतैयान्–उसके; वकुत्तु अमैत्त–संकलित; वॅम् तीविनै–कठोर पापों के; पयन् ऑत्तन–फल के समान हुए। ३६९२

श्रीराम ने मैदान में आकर तीक्ष्ण और दाहक जो अस्त्र चलाये, वे अकाल के समय किसी दाता द्वारा याजी ब्राह्मण को दिये गये भोजन के फल के समान बढ़ गये। उधर रावण के प्रेषित बाण उसके ही रचित पापों के फल के समान (क्षीण) हो रहे। ३६९२

नूऱायिरम् वडिवॅङ्गणै नॊडियॊन्ऱिनिन् विडुवान्
आऱाविऱल् मऱवोनवै तनिनायह नऱुप्पान्
कूऱायिन कनल्शिन्दिन कुडिक्कप्पुनल् कुऱुहिप्
चेऱायिन पॊडियायिन तिडरायिन कडलुम् 3693

आऱा विऱल्–अक्षुण्ण विजय के; मऱवोन्–वीर रावण; नॊटि ऑन्ऱिनिल्–चुटकी बजाने की देर में; नूऱायिरम्–एक लाख; वटि वॅम् कणै–तीक्ष्ण तापक शर; विटुवान्–छोड़ता; अवै–उन्हें; तनि नायकन्–बेजोड़ सरदार श्रीराम; अऱुप्पान्–काट देते; कूऱायिन–छिन्न हुए वे; कनल् चिन्तिन–आग छोड़ते हुए; कुऱुकि–आकर; पुनल्–जल को; कुटिक्क–पी (सोख) लेते तो; कटलुम्–समुद्र; चेऱु आयिन–पंक बनते फिर; पॊटि आयिन–धूलि बनते और; तिटर् आयिन–टीले बनते। ३६९३

अक्षुण्ण विजयी रावण एक क्षण में सहस्र तीक्ष्ण कठोर शर चलाता। अप्रतिम नायक श्रीराम उन्हें काट देते। कटे वे आग उगलते हुए जाकर जल को सोख लेते तो समुद्र पंक बनते, फिर धूलि बनते और फिर टीले बन जाते। ३६९३

विल्लाऱ्चरन् दुरक्किन्ऱवर् कुडन्तेमिडल् वॅम्बोर्
वल्लानॆऴु मऴुत्तोमर मणित्तण्डिरुप् पुलक्कै
तॊल्लार्मिडल् वळैशक्करज् जूलम्मिवै तॊडक्कत्
तॆल्लानॆडुङ् गरत्तालॆडुत् तॆऱिन्दान्शॆरु वऱिन्दान् 3694

विल्लाल्–धनु से; चरम्–बाणों को; तुरक्किन्ऱवर्क्कु–जो चलाते थे उन (श्रीराम) पर; चॆरु अऱिन्तान्–युद्धतंत्रज्ञ; मिटल् वॅम् पोर् वल्लान्–और भयंकर क्रूर युद्ध-समर्थ रावण ने; उटन्ते–तुरंत; ऍऴु मऴु तोमरम्–लोहस्तंभ, परसे और तोमर; मणित्तण्टु इरुम्पु उलक्कै–मणिदंड, और लोहे के मूसल; तॊल् आर्–प्राचीन; मिटल्–मजबूत; वळै–शंख; चक्करम्–चक्र; चूलम् इवै तॊटक्कत्तु–शूल

आदि; ऍल्लाम्–सभी; नॅट्टम् करत्तुताल्–लंबे हाथों से; ऍट्टत्तु ऍड़िन्ताऩ्–ले चलाये। ३६९४

रावण युद्धतंत्रज्ञ था और घोर युद्धसमर्थ भी। उसने शरप्रेषक श्रीराम पर अस्त्र चलाने के साथ-साथ लौहस्तंभ, परसे, दंड, तोमर प्राचीन व शक्तिमान शंख, चक्र, शूल आदि भी अपने लंबे हाथों से चलाये। ३६९४

वेलायिर मऴुवायिर मॅऴुवायिरम् विशिहक्
कोलायिरम् बिऱवायिर मॊरुकोल्पडक् कुरैव
कालायिऩ कऩलायिऩ वुरुमायिऩ कदिय
शूलायिऩ मऴैयत्तऩवन् तॊडैपल्वहै तॊडुक्क 3695

शूलायिऩ मऴै अत्तवऩ्–घनश्याम के; काल् आयिऩ–पवन-सम; कऩल् आयिऩ–अग्नि-सम; उरुम् आयिऩ–वज्र-सम; कतिय–तेज; पल् वकै–विविध प्रकार के; तॊडै तॊडुक्क–अस्त्र के चलाते; ऑरु कोल् पट–उनमें एक बाण के लगने पर; आयिरम् वेल्–हजार शक्तियाँ; आयिरम् मऴु–हजार परसे; आयिरम् ऍऴु–हजार "ऍऴु"; आयिरम् विचिकम् कोल्–हजार विशिख शर; आयिरम् पिऱ–और हजार अन्य (हथियार); कुरैव–मिट जाते। ३६९५

घनश्याम ने पवन, अग्नि और वज्र —इनके समान और तेज चलनेवाले बाण चलाये। उनमें एक-एक ने सहस्र-सहस्र भालों, परसों, लौहदंडों, विशिखों को और अन्य हथियारों को हीन करा दिया। ३६९५

ऑत्तुच्चॅरु विळैक्किऩ्ऱऩ रळवित्तलै युडऩे
पत्तुच्चिलै यॆडुत्ताऩ्कणै तॊडुत्ताऩ्पल मुहिल्काल्
तॊत्तुप्पडु नॆडुन्दारैहळ् शॊरिन्दालॆऩत् तुरऩ्दाऩ्
कुत्तुक्कॊडु नॆडुङ्गोल्पडु कळिऱामॆऩक् कॊदित्ताऩ् 3696

ऑत्तु–समता के साथ; चॅरु विळैक्किऩ्ऱतु ओर् अळवित्तलै–युद्ध जब करते तब; नॆट्टम् कुत्तु कोल् कॊटु–लंबी (लोहे की नोकवाली) चुभीली छड़ी से; पटु–आहत; कळिऱु आम् ऍऩ–हाथी के समान; कॊतित्ताऩ्–जो खौल उठा उस (रावण) ने; उटऩे–तत्काल; पत्तु चिलै ऍडुत्ताऩ्–दस धनु लिये; कणै तॊडुत्ताऩ्–उन बाणों को चलाया; पल मुकिल्–अनेक मेघों से; काल्–निकलने वाली; तॊत्तु पटु–राशीकृत; नॆटु तारैकळ्–लंबी धारें; चॊरिन्ताल् ऍऩ–गिरतीं जैसे; तुरऩ्ताऩ्–(अस्त्र) बरसाये। ३६९६

रावण यह देखकर कि श्रीराम लड़ाई में उसकी समता कर रहे हैं, ऐसा खौल उठा जैसे चुभीले काँटेदार छड़ी के काँटे की चुभन पाकर हाथी बौखला जाता है। उसने तुरन्त दस धनु लेकर ऐसी शरवर्षा करा

दी जैसे अनेक मेघ मिलकर अत्यधिक घनी राशियों में धारें गिराते हों। ३६९६

ईशऩ्विडु शरमारियु मॅरिशिऩ्दुरु तरुकण्
नीशऩ्विडु शरमारियु मिडैयॆङ्गण् नॆरुङ्गत्
तेशम्मुद लैम्बूदमुन् दिडुक्कुट्रऩ तिहैत्तुक्
कूशुम्बडि युडलुवाऩवर् कुलैन्दार्मऩ मुलैन्दार् 3697

ईचऩ् विट्ट–ईश्वर (श्रीराम) के चलाये; चर मारियुम्–शरों की वर्षा और; ऍरि–आग; चिऩ्तुरु–निकालनेवाली; तरु कण्–क्रूर आँखों के; नीचऩ्–नीच राक्षस की; विट्ट चर मारियुम्–प्रेषित शर-वर्षा; इट्टै अॆङ्कणुम्–सभी स्थानों में; नॆरुङ्क–भर गयी तो; तेचम्–भूमि; मुतल् ऐम् पूतमुम्–आदि पाँचों भूत; तिकैत्तु–भ्रमित हो; तिट्टुक्कुट्रऩ–भयभीत हो गये; वाऩवर्–देव; उटल् कूचुम्पटि–शरीर को संकुचित करते हुए; मऩम् कुलैन्तार्–व्यग्रमन हो गये; उलैन्तार्–बेचैन हुए। ३६९७

श्रीरामेश्वर द्वारा प्रेषित शर और जो शर आग निकालती आँखों वाले नीच राक्षस छोड़ रहा था, वे दोनों मिलकर सब जगह भर गये। तो भूमि आदि पाँचों भूत भ्रमित व चकित हुए। देव संकुचित शरीर वाले और व्यग्र मन वाले होकर विचलित हुए। ३६९७

मन्दरक् किरियॆऩ मरुन्दु मारुदि
तन्दवप् पॊरुप्पॆऩप् पुरङ्ग डामॆऩक्
कन्दरुप् पन्नहर् विशुम्बिऱ् कण्डॆन
अन्दरत् तॆऴुन्ददव् वरक्कऩ् तेररो 3698

अ अरक्कऩ् तेर्–उस राक्षस का रथ; विचुम्पिल् कण्ट–आकाश में दृष्ट; मन्तर किरि अॆऩ–मंदर पर्वत के समान; मारुति तन्त–मारुति द्वारा जो लाया गया; अ मरुन्तु पॊरुप्पु अॆऩ–उस ओषधि-पर्वत के समान; पुरङ्कळ् ताम् अॆऩ–त्रिपुर के समान; कन्तरुप्प नकर् अॆऩ–गंधर्व नगर के समान; अन्तरत्तु अॆऴुन्ततु–आकाश में उठ चला। ३६९८

तब रावण का रथ आकाश में चढ़कर आकाशस्थित मंदरगिरि के समान, मारुति द्वारा लायी गयी ओषधिगिरि के समान, त्रिपुरों में एक-एक के समान और गंधर्वनगर के समान भी लग रहा था। ३६९८

ऍऴुन्दुयर् तेर्मिशै यिलङ्गै कावलऩ्
पॊऴिन्दन शरमऴै युरुविप् पोदलाल्
ऒऴिन्ददु मॊऴिहिल दॆव्वॊ नॆल्लॆऩक्
कऴिन्ददु कविक्कुल मिरामऩ् काणवे 3699

इलङ्कै कावलऩ्–लंकापति (ने); उयर् तेर् मिचै–ऊँचे रथ पर; ऍऴुन्तु–

(आकाश में) उठकर; पॊऴिन्तन–जो बरसायी; चर मऴै–वह शर-वर्षा; उरुवि–(वानरों को) भेदकर; पोतलाल्–चली, इसलिए; ऒऴ्लॆत्त–शीघ्र; ऒऴिकिलतु–क्षीण न होनेवाला; ऒऴिन्ततु–क्षीण हो गया जैसा; कविक्कुलम्–वानरगण; इरामन् काणवे–श्रीराम के देखते ही ; कऴिन्ततु–छीजे । ३६९९

लंकेश ने वहाँ से शरों की वर्षा करा दी । वे वानरों के शरीरों को भेद चले तो 'अमिट भी मिट गया' की स्थिति पैदा करते हुए कपिकुल नष्ट हुआ । यह श्रीराम के देखते ही हुआ । ३६९९

मुऴविडु तोळॊडु मुडियुम् प:(ह्)ऱलै
विऴविडु वेतिनि विशुम्बिड् चेममा
मऴविडै यनैयनम् पडैञर् माण्डनर्
ऎऴविड तेरॆयॆन् ऱिरामन् कूऱिनान् 3700

इरामन्–श्रीराम ने; मऴ–तरुण; विटै अनैय–ऋषभ-सम; नम् पटैञर्–हमारी सेना के वीर; माण्डनर्–मर गये; मुऴवु इटु तोळॊटु–मर्दल-सम कंधों के साथ; मुटियुम्–किरीट और; पल् तलै–अनेक सिरों को; विऴ–गिराते हुए; इनि विटुवेन्–अब चलाऊँगा (शर); तेरै–रथ को; चेममा–सुरक्षित रूप से; विचुम्पिल् ऎऴ विटु–आकाश में चलने दो; ऎन्ऱु कूऱिनान्–ऐसा कहा । ३७००

यह देखकर श्रीराम ने मातलि से कहा कि देखो ! हमारे तरुण ऋषभ-से सैनिक मर गये । अब मैं अपने बाण रावण के मर्दल-सम कंधों, किरीटों और अनेक सिरों को काटने के लिए ही चलाऊँगा । तुम सुरक्षित रूप से रथ को ऊपर आकाश में उठ जाने दो । ३७००

अन्दुशॆय् हुवॆन्न वरिन्द मादलि
उन्दिनन् तेरॆनु मूऴिक् काऱ्ऱिनै
इन्दुमण् डिलत्तिन्मे लिरवि मण्डिलम्
वन्दॆन वन्ददम् मानल् तेररो 3701

अऱिन्त मातलि–समझकर मातलि; अन्तु चॆय्कुवॆन्–वही करूँगा; ऎन्ऱु–कहकर; तेर् ऎनुम् ऊऴि काऱ्ऱिनै–रथ रूपी युगांतपवन को; उन्तिनन्–ऊपर चलाया; अ मान तेर्–वह बड़ा रथ भी; इरवि मण्टलत्तिन् मेल्–सूर्यमंडल के ऊपर; इन्तु मण्टिलम्–चंद्रमंडल; वन्तॆन–आया जैसे; वन्ततु–आया । ३७०१

श्रीराम का मन जानकर मातलि ने 'वैसा ही करूँगा' कहकर रथ रूपी युगांत पवन को ऊपर चलाया । वह बड़ा रथ भी सूर्यमंडल के ऊपर चंद्रमंडल आया हो, ऐसा आ गया । (अन्तु —तमिऴ का शब्द नहीं । शायद तॆलुगु का शब्द है ! उसका अर्थ 'वैसा' है । इधर रविमंडल के ऊपर चंद्रमंडल अर्थ लगाया गया है । यद्यपि पद्य में "चंद्रमंडल के ऊपर

रवि-मंडल" की बात ही है। यह उ-वे-सु स्वामीनाथय्यर जी का संशोधन है, जो अन्य तमिऴ्-ग्रंथों के आधार पर किया गया है।) । ३७०१

इरिन्दन मऴैक्कुल मिऴुहित् तिक्कॅलाम्
उरिन्दन वुडुक्कुल मुदिर्न्दु शिन्दिन
नॅरिन्दन नॅडुवरैक् कुडुमि नेर्मुऱै
तिरिन्दन शारिहै तेरुन् देरुमे 3702

तेरुम् तेरुम्–(श्रीराम का) रथ और (रावण का) रथ; नेर् मुऱै–ठीक-ठीक; चारिकै तिरिन्तन–चक्कर काटने लगे; मऴै कुलम्–मेघवृन्द; तिक्कु अॅलाम्–सारी दिशाओं में; इऴुक्कि–सरककर; इरिन्तन–अस्त-व्यस्त हुए; उडु कुलम्–तारागण; उरिन्तन उतिर्न्तु चिन्तिन–चूर होकर चू गये; नॅडु वरै–ऊँचे पर्वतों के; कुडुमि–शिखर; नॅरिन्तन–फटे। ३७०२

जब वे दोनों (राम और रावण के) रथ चक्कर काटते रहे, तब मेघवृन्द सारी दिशाओं में तितर-बितर होकर बिखर गये। उडुगण-समूह चूर-चूर होकर चू गये। और ऊँचे पर्वतों के शिखर फट गये। ३७०२

वलम्वरु मिडम्वरु मरुहि वानॊडु
निलम्वरु मिडम्वल निमिरुम् वेलैयुम्
अलम्वरुङ् गुलवरै यत्तॆत्तु मण्डमुम्
शलम्वरुङ् गुयमहन् तिहिरित् तन्मैपोल् 3703

वलम् वरुम्–एक-दूसरे को कभी दायीं ओर से घूम आता; इटम् वरुम्–कभी बायीं ओर से घूम आता; मरुकि–संचरण कर; वानॊडु निलम् वरुम्–आकाश से भूमि पर आ जाता; इटम् वलम् निमिरुम्–बायीं या दायीं ओर ऊपर उठता; वेलैयुम्–पर्वत; कुलवरै अत्तॆत्तुम्–सारी कुलगिरियाँ और; अण्टमुम्–यह अंड; चलम् वरुम्–घूमनेवाले; कुयमकन् तिकिरि तन्मै पोल्–कुलाल के चक्र के स्वभाव के समान; अलम् वरुम्–घूमते और; चलम् वरुम्–काँप उठते। ३७०३

वे दोनों रथ एक दूसरे की 'कभी' दायीं तरफ़ से आते तो कभी बायीं तरफ़ से, कभी आकाश में रहते, कभी भूमि को स्पर्श कर आते। कभी बायें उठते, कभी दायें उठते। इससे समुद्र, कुलपर्वत और अंड कुलालचक्र के समान घूमते और हिल जाते। ३७०३

ऑऴुम्बुह ऴिऱैवत्ते ररक्कन् तेरिदॆन्
ऱुऴन्दुरुऴ् पॊऴुदिनिव् वुलहुम् जेर्वन
तऴुम्बिय तेवरुन् दॅरिव् तन्दिलर्
पिऴुम्बिन तिरिवन वॅन्नुम् बॆऱ्ऱियार् 3704

उऴन्तु उरुऴ् पॊऴुतिन्–उड़द की लुढ़कती देर में; ऑ उलकुम् चेर्वन–किसी

भी लोक में पहुँच सकनेवाले (रथों के संबंध में); तळ्ळुम्पिय तेवरुम्–अभ्यस्त देव भी; पिळम्पित्त–पिंडाकार हैं; तिरिवत्त–घूम रहे हैं; ऍन्नुम्–(इतना ही) कहने की; पॅट्रियार्–स्थिति में थे; ऍळुम्–ऊपर उठनेवाला; इतु–यह रथ; पुकळ् इरैवन् तेर्–प्रशंसा योग्य श्रीराम का रथ है; अरक्कन् तेर् इतु–यह राक्षस का रथ है; ऍन्ऱु ऍरिवु तन्तिलर्–ऐसा पहचान नहीं सके। ३७०४

उड़द की लुढ़कती देर में वे रथ किसी भी लोक में पहुँच जाते। अभ्यस्त देव भी यही समझने की स्थिति में रहे कि 'हाँ कुछ पिण्डवत् आकार हैं, घूमते हैं'। पर यह पहचान नहीं पाते कि उत्तरोत्तर बढ़ता यह रथ प्रकीर्तित श्रीराम का है या राक्षसराज का। ३७०४

उक्किला वुडुक्कळु मुरुळ्हळ् ताक्कलिन्
नॅक्किला मलैहळु नॅरुप्पुच् चिन्दलिन्
वक्किलात् तिशैहळु मुदिरम् वाय्वळिक्
कक्किला वुयिर्हळु मिल्लै काण्बन् 3705

उरुळ्कळ्–पहियों के; ताक्कलिन्–टकराने से; उक्किला–जो नहीं गिरे; उडुक्कळुम्–वे तारे भी; नॅरुप्पु चिन्तलिन्–आग निकालते इसलिए; नॅक्कु इला मलैकळुम्–जो टूटे नहीं थे वे पर्वत भी; वक्कु इला तिचैकळुम्–जो जली नहीं थी वे दिशाएँ भी; उतिरम् वाय् वळि–रुधिर मुख से; कक्किला–वमन जो न करते थे; उयिर्कळुम्–जीव भी; काण्पत्–दिखें; इल्लै–नहीं। ३७०५

पहिये टकराये। इसलिए ऐसे नक्षत्र नहीं रहे जो नहीं गिरे हों। आग के फैलने से ऐसे पर्वत नहीं रह गये जो चूर नहीं हुए; ऐसी दिशा नहीं रही जो नहीं जली। ऐसे जीव नहीं रहे जो अपने मुख से रक्त वमन नहीं करते हों। ३७०५

इन्दिर नुलहत्ता रॅन्ब रॅन्ऱवर्
चन्दिर नुलहत्ता रॅन्बर् तामरै
यन्दण नुलहत्ता रॅन्ब रल्लराल्
मन्दर मलैयित्ता रॅन्बर् वान्वर् 3706

वानवर्–व्योमवासी; इन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–इंद्रलोक के हैं कहते; ऍन्ऱवर्–ऐसा कहनेवाले; चन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–चंद्रलोक में हैं कहते; ऍन्पर्–ऐसा कहनेवाले ही; तामरै अन्तणन्–कमलदेव ब्राह्मण के; उलकत्तार् ऍन्पर्–लोक में हैं कहते; अल्लर्–अन्य; मन्तर मलैयित्तार् ऍन्पर्–मंदर पर्वत पर हैं कहते। ३७०६

देवगण कभी कहते कि वे इंद्रलोकस्थ हैं। तुरंत बदलते और कहते कि नहीं, वे चंद्रलोक में हैं। फिर कहते कि कमलदेव ब्रह्मा के लोक में हैं। ऐसों से अन्य लोग कहते कि वे मंदर पर्वत में रहते हैं। ३७०६

पाऱ्कडल् नडुवणो रॅऩ्बर् पल्वहै
माऱ्कड लिऩुक्कुमव् वरम्बिऩा रॅऩ्बर्
मेऱ्कड लारॅऩ्बर् किऴक्कुळा रॅऩ्बर्
आऱ्पुहै यिदुवॅऩ्ब रऱियुन् देवरुम् 3707

अऱियुम् तेवरुम्–दूरदृष्टि रखनेवाले देव भी; पाऱ्कटल् नटुविणोर् (वे दोनों) क्षीरसागर-मध्य हैं; ऍऩ्पर्–कहते; पल् वकै–(कभी) अनेक; माल् कटलि ऩुक्कुम् अ वरम्पिऩार् ऍऩ्पर्–बड़े बाह्य सागरों के उस पार हैं कहते; मेल् कटलार् ऍऩ्पर्–पश्चिमी सागर पर के बतलाते; किऴक्कु उळार् ऍऩ्पर्–पूर्वी सागरस्थ हैं कहते; आर्प्पु उटै इतु–उनकी ध्वनि है यह; ऍऩ्पर्–कहते। ३७०७

दूरदर्शी देव भी यह कहते कि दोनों क्षीरसागर-मध्य हैं। फिर कहते कि बाह्य सागरों के उस पार हैं। कभी कहते कि पश्चिमी सागर के तीर पर हैं। तुरंत कहते कि 'देखा पूर्वी सागर पर हैं। रथों की ध्वनि यह सुनो'। ३७०७

मीण्डऩ वोवॅऩ्बर् विशुम्बु विण्डुहक्
कीण्डऩ वोवॅऩ्बर् कीऴ् वोवॅऩ्बर्
पूण्डऩ पुरवियो पुदिय काऱ्ऱॅऩ्बर्
माण्डऩ वुलहमॅऩ् ऱणङ्गुम् वायिऩार् 3708

उलकम् माण्टऩ–(इन रथों के घूमने से) लोक ध्वंस हुए; ऍऩ्ऱु–सोचकर; अणङ्कुम् वायिऩार्–रोते मुख वाले; मीण्टऩवो–(भूमि को) लौट गये क्या; ऍऩ्पर्–कहते; विचुम्पु–आकाश; विण्टु उक–फटकर चू जाए ऐसा; कीण्टऩवो–चिर गया क्या; ऍऩ्पर्–संशय करते; कीऴ्वो–नीचे चले गये क्या; ऍऩ्पर्–कहते; पूण्टऩ–रथ में जो जुते हैं वे; पुरवियो–अश्व हैं; पुतिय–या अपूर्व; काऱ्ऱु–पवन; ऍऩ्पर्–बतलाते। ३७०८

"इनके चक्करों से लोक ध्वंस हो गये" —ऐसा सोचकर दुःखी हुए देवों ने बारी-बारी से कहा कि क्या ये भूमि को लौट गये? आकाश चिर कर खण्ड हो गया क्या? नीचे उतर गये क्या? इनसे जुते अश्व अश्व हैं क्या? नहीं ये कोई अनोखे अपूर्व पवन ही हैं! ३७०८

एऴुडैक् कडलिऩुन् दीवॉ रेऴिऩुम्
एऴुडै मलैयिऩु मुलहॉ रेऴिऩुम्
शूऴुडै यण्डत्तिऩ् शुवर्ह ळॅल्लैया
ऊऴिय काऱ्ऱॅऩत् तिरिन्द वोविल 3709

एऴुटै कटलिऩुम्–सातों समुद्रों से; तीवु ओर् एऴिऩुम्–सातों द्वीपों से; एऴुटै मलैयिऩुम्–पर्वत सप्तक से; उलकु ओर् एऴिऩुम्–(दो) सात लोकों से; चूऴ् उटै–विस्तृत बने; अण्टत्तिऩ्–अंड की; चुवर्कळ् ऍल्लैया–भित्तियों तक;

ऊऴिय कार्ऱु अँत–युगांतपवन के समान; ओवु इल–निरंतर; तिरिमुत–घूमे। ३७०९

सप्त समुद्र, सप्त द्वीप, सप्त पर्वत, सप्त लोक —इनके मिले अंड की भित्तियों तक पवन के समान वे रथ निरंतर घूमे। ३७०९

उडैक्कड लेऴिनु मुलह मेऴिनुम्
इडैप्पडु तीविनु मलैयो रेऴिनुम्
अडैक्कलप् पॉरुळ्ॅन वरक्कन् वीशिय
पडैक्कल मऴैपडु तुळियिन् पान्मैय 3710

कडल् एऴिनुम्–सातों समुद्रों में; उडै उलकम् एऴिनुम्–उनको वस्त्र के रूप में प्राप्त सातों पृथ्वी भागों में; इडै पडु तीविनुम्–मध्यस्थ द्वीपों में; मलै ओर् एऴिनुम्–सातों पर्वतों पर; अडैक्कलम् पॉरुळ् अँन–(रावण के रखे) धरोहर-पदार्थों के समान; अरक्कन् वीचिय–राक्षस-प्रेरित; पडै कलम्–हथियार; मऴै पडु–मेघ से निकली; तुळियिन् पान्मैय–बूंदों के समान हो रहे। ३७१०

सप्त समुद्र, समुद्रवसन सप्त भूखंड, सप्त पर्वत और मध्य-मध्य रहे द्वीप —इन सभी पर रावण ने जो अपने धरोहर के समान हथियार छोड़े वे मेघों की वर्षा की बूंदों के समान गिरे। ३७१०

उरुत्तुल हनैत्तैयु मुऴलुम् बोरिडै
इरुत्तिह लिरावण नॅरिन्द वॅय्दन
अरुत्तदुन् दडुत्तदु मन्ऱि यारियन्
शॅरुत्तॉरु तॉऴिलिडैच् चॅय्द दिल्लैयाल् 3711

उलकु अनैत्तैयुम्–सभी लोकों पर; उरुत्तु–गुस्सा करके; उऴलुम् पोर् इडै–होनेवाले युद्ध में; इकल् इरावणन्–बलवान रावण द्वारा; इरुत्तु अँरिन्त–जोर लगाकर फेंके गये; अँय्तन–चलाये गये हथियारों को; आरियन्–आर्य श्रीराम ने; अरुत्ततुम् तडुत्ततुम् अन्ऱि–काटा और रोका इसके अलावा; इडै–बीच में; चॅरुत्तु–गुस्सा करके; ऑरु तॉऴिल्–दूसरा काम; चॅय्ततु इल्लै–नहीं किया। ३७११

सारे लोकों से वैर करके रावण लड़ रहा था। पराक्रमी उसने अस्त्र चलाये और हथियार फेके। आर्य राम ने उन्हें काटा और रोका। इसके अलावा उन्होंने गुस्सा करके कुछ दूसरा काम नहीं किया। ३७११

विलङ्गलुम् वेलैयु मेलुङ् गीऴरुम्
अलङ्गॉळि तिरितरु मुलह नैत्तैयुम्
कलङ्गुडन् तिरिन्ददो रूऴिक् कालक्कार्
ऱिलङ्गैयै यॅय्दिन दिमैप्पिन् मन्दरो 3712

विलङ्कलुम्–पर्वतों को; वेलैयुम्–समुद्रों को; मेलुम्–ऊपर के लोकों;

कीऴुरुम्–नीचे के लोकों; अलङ्कु ऑळि–किरणमाली; तिरि तरुम्–जहाँ घूमता है; उलकु अत्तैत्तुयुम्–उन सारे लोकों को; कलङ्कुर–हिलाते हुए; तिरिन्ततु–जो चला; ओर् ऊऴि काल काट्र–उस युगांतपवन (रूपी रथों का जोड़ा); इमैप्पिन् वन्तु–पल भर में आकर; इलङ्कैयै ऍय्तित्तु–लंका पहुँचा। ३७१२

दोनों के रथों के अश्व रूपी युगांत पवन पर्वतों, समुद्रों, ऊपर के भुवनों, नीचे के लोकों और सूर्य के घूमने के दायरे के अंदर रहनेवाले सारे प्रदेशों को हिलाकर एक पल भर में लंका पहुँच गया। ३७१२

उय्त्तुल	हत्तैत्तिनु	मुळन्ड्र	शारिहै
मॊय्त्तुयर्	कडलिडै	मणलिन्	मुम्मैय
वित्तहर्	कडविय	विशयत्	तेर्प्परि
ऍय्त्तिल	वियर्त्तिल	विरण्डु	पालवुम् 3713

मॊय्त्तु–सटकर; उयर् बढ़नेवाले; कटलिट मणलिन्–समुद्र के बालुओं से; मुम्मैय–तिगुने; उलकु अत्तैत्तिन्म्–सारे लोकों में; उय्त्तु–चलाये जाकर; उळन्ड्र–जो चले; चारिकै–चक्कर काटे; वित्तकर्–रथसारथ्य-विद्या में निपुणों द्वारा; कटविय–चलाये गये; इरण्टु पालवुम्–दोनों पक्षों के; विचय तेर् परि–विजयी रथों के अश्व; ऍय्त्तिल–थके नहीं; वियर्त्तिल–स्वेद-भरे भी नहीं हुए। ३७१३

घने रूप से भरे और अधिक परिमाण के होते जानेवाले समुद्र के बालुओं के तिगुने प्रदेशों में घूमते चक्कर काटते रहने के बाद भी दोनों विजयी पक्षों के सारथ्य-विशारदों से चालित अश्व नहीं थके; न उनके शरीर में स्वेद ही झलक आया। ३७१३

इन्दिरन्	तेरिन्मे	लुयर्न्द	वॆन्दॊऴिल्
उन्दरुम्	वॆरुवलि	युरुमि	नेड्रिनैच्
चन्दिर	नत्तैयदोर्	शरत्ति	नाड्ररैच्
चिन्दिन	निरावण	नॆरियुम्	जॆङ्गणान् 3714

नॆरियुम्–जलती; चॆम् कणान् इरावणन्–लाल आँखों वाले रावण ने; इन्तिरन् तेरिन् मेल्–इंद्र के रथ के ऊपर; उयर्न्तु–ऊँचे रहे; वॆम् तॊऴिल्–त्रासक काम करनेवाले; उन्त अरुम् पॆरुम् वलि–अप्रतिहत शक्तिशाली; उरुमिन् एड्रिनै–अशनिराज को; चन्तिरन् अन्नैयतु–चंद्राकार; ओर् चरत्तिनाल्–एक अस्त्र से; तरै–भूमि पर; चिन्तिनन्–काटकर गिरा दिया। ३७१४

जलती लाल आँखों वाले रावण ने इन्द्र के रथ के ऊपर की संतापक व काटने में दुस्साध्य वज्र-ध्वजा को चंद्राकार बाण से काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७१४

शाय्न्दवल् लुरुमुपो यरवत् ताळ्हडल्
पाय्न्दवॆङ् गनलॆन मुळङ्गिप् पाय्दलुम्
काय्न्दपे रिरुम्बित्वन् कट्टि काय्वरत्
तोय्न्दनी रामॆन्च् चुरुङ्गिऱ् ऱाळियॆ 3715

शाय्न्त-गिरी; दल्-कठोर; उरुमु-वज्रध्वजा; पोय्-जाकर; अरवत्तु-गरजते; आळ् कटल्-गहरे समुद्र में; पाय्न्तु-उछलकर गिरी; वॆम् कनल् ॲन-गरम आग के समान; मुळङ्कि-शब्द करते हुए; पाय्तलुम्-झपटी तो; काय्न्त-तप्त; पेर् इरुम्पिन् वन् कट्टि-बड़ा लौहपिंड; काय्वु अऱ-गरमी छोड़ने के लिए; तोय्न्त नीर् आम् ॲन-मग्न जिसमें हुआ उस जल के समान; आळि-समुद्र; चुरुङ्किऱ्ऱु-सूख चला। ३७१५

वह भयंकर वज्र कटकर चला और गरजते गहरे सागर में झपटकर क्रूर गरम आग के समान शोर के साथ गिरकर डूब गया। तब तप्त लोहे के डूबकर शांत होने पर जल जैसे सूख जाता है वैसे ही सागर सूख गया। ३७१५

अॆळुत्तॆन्च् चिदॆविला विरामन् तेर्प्परिक्
कुळुत्तनै कूर्ङ्गणैक् कुप्पॆ याक्किनेर्
वळुत्तरु मादलि वयिर मार्बिडै
अळुत्तिनन् 'कॊडुञ्जर माऱॊ डाऱरो 3716

ॲळुत्तु ॲन-अक्षर के समान; चितॆवु इला-अक्षय; इरामन्-श्रीराम के; तेर् परि कुळु तन्नै-रथ के अश्वसमूह को; कूर् कणै कुप्पै आक्कि-तीक्ष्ण शरों की राशि बनाकर; नेर्-सीधे; वळुत्त अरु-अस्तुत्य; मातलि-मातलि के; वयिरम् मार्पु इटै-वज्रवक्ष में; कॊटु चरम्-घातक शर; आऱॊटु आऱु-छः और छः (बारह को); अळुत्तिनन्-गड़ा दिया। ३७१६

अक्षर (ॐ, वेद) के समान अक्षयपुरुष श्रीराम के रथ के अश्व तीक्ष्ण शरों के समूह के समान दिखे। रावण ने ऐसा उनको शरों से ढककर प्रत्यक्ष स्तुति के परे रहनेवाले मातलि के वज्र-सम वक्ष पर बारह शर गड़ा दिये। ३७१६

नील्निऱ निरुदर्को नॆय्द नीदियिन्
शाल्बुडै मादलि मार्बिऱ् ऱैत्तन
कोलिन् मिलक्कुवन् कोल मार्बिन्वीळ्
वेलिनुम् वॆम्मैये विळैन्द वीरर्क्कु 3717

नील् निऱ-काले रंग के; निरुतर् कोन्-राक्षसराज ने; ॲय्त-जो चलाया; इलक्कुवन् कोल मार्पिल्-लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर; वीळ्-और जो गिरा; वेलिनुम्-उस सांग के समान; नीतियिन् चाल्पु उटै-नीति में भरे; मातलि मार्पिल्

तैत्तन–मातलि की छाती में लगे; कोलिनुम्–शरों ने भी; वीरऩ्कु–श्रीवीरराघव को; वॆम्मैये विळैन्त–ताप दिया। ३७१७

तब श्रीराम के मन को उन रावण-प्रेरित और मातलि पर लगे शरों ने लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर लगे रावण के साँग से भी अधिक साल दिया। ३७१७

मण्डिल् वरिशिलै वाऩ विल्लॊड्
तुण्डवॆण् पिऱैयॆऩ्ऩत् तोऩ्ऱत् तूविय
उण्डवॆङ् गडुङ्गणै यॊरुङ्गु मूडलाल्
कण्डिल रिरामऩै यिमैप्पिल् कण्णिऩार् 3718

मण्टिल वरि चिलै–मंडलाकार व सबंध धनु; वाऩ विल्लॊटु–इंद्रधनुष और; तुण्ट–चिरे; वॆण् पिऱै ऎऩ्ऩ–श्वेत चंद्र के समान; तोऩ्ऱ–दिखकर; तूविय–जो चलाए गये; उण्टै–राशि के; वॆम् कटुम् कणै–भयंकर व तेज बाणों के; ऒरुङ्कु–एक साथ; मूटलाल्–आच्छादित करने से; इमैप्पिल् कण्णिऩार्–अपलक देवों ने; कण्टिलर्–उन्हें देखा नहीं। ३७१८

रावण ने धनु को मंडलाकार और अर्धचंद्र-सम झुकाकर धड़ाधड़ जो शर चलाये, उन तापक व तीक्ष्ण शरों की राशियों ने श्रीराम को आच्छादित कर दिया तो अपलक देव भी उन्हें देख नहीं सके। ३७१८

तोऱ्ऱऩ तेयिऩि यॆऩ्ऩुन् दोऱ्ऱत्ताल्
आऱ्ऱल्शा लमररु मच्च मॆय्दिऩार्
वेऱ्ऱव रार्त्तऩर् मेलुङ् गीऴुमायक्
काऱ्ऱियक् कऱ्ऱदु कलङ्गिऱ् ऱण्डमे 3719

आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; अमररुम्–देव; इऩि–अब; तोऱ्ऱऩऩे–हार गये तो; ऎऩ्ऩुम् तोऱ्ऱत्ताल्–ऐसे दृश्य से; अच्चम् ऎय्तिऩार्–डर गये; वेऱ्ऱवर्–शत्रुओं ने; आर्त्तऩर्–नर्दन किया; काऱ्ऱु–पवन; मेलुम् कीऴुमाय्–ऊपर और नीचे; इयक्कु अऱ्ऱतु–चलना बंद हुआ; अण्टम्–अण्ड; कलङ्किऱ्ऱु–क्षुब्ध हो गया। ३७१९

देव भी यह सोचकर डर गये कि श्रीराम अब हारे! शत्रुओं ने आनंद-नर्दन किया। पर पवन अचल हुआ और अण्ड अस्त-व्यस्त हुआ। ३७१९

अङ्गियुन् दऩ्ऩॊळि यडङ्गिऱ् ऱार्हलि
पॊङ्गिल तिमिर्त्तऩ विशुम्बिऱ् पोक्किल
वॆङ्गदिर् तण्कदिर् विलङ्गि मीण्डऩ
मङ्गुलुम् नॆडुमऴै वऱ्ऩदु शायऩ्ददाल् 3720

अङ्कियुम्–अग्नि भी; तन् ऑळि–अपनी ज्योति से; अटङ्गिय्ङ्ग–हीन हुई; आर् कलि–समुद्र; पोङ्किल–नहीं उमँगे; तिमिर्त्तन–भ्रमित रहे; वॅम् कतिर्–गरम सूर्य भी; तण् कतिर्–शीतल-किरण (चंद्र) भी; विचुम्पिल् पोक्फिल–आकाश में संचरण खोकर; विलक्कि–हटे और; मीण्टत–लौटे; मक्कुलुम्–मेघ भी; नॅटु मळै–अधिक वर्षा से; वऱन्तु पोय्–सूखकर; चाय्न्ततु–शुष्क हो गये। ३७२०

अग्नि कांतिहीन हो गयी। समुद्र नीरव होकर भ्रमित रहे। उष्ण-किरण तथा शीतल-किरण दोनों मार्ग से हटे और लौटे। मेघ भी जलशुष्क हो रहे। ३७२०

तिशैनिलै कडहरि शॅरुक्कुच्च् चिन्दिन
अशैविल वेलैह ळार्क्क वञ्जिन
विशैहोंडु विशाहत्तै नॅरुक्कि येऱिनन्
कुशनॅन मेरुवुङ् गुलुक्क मुऱ्ऱदे 3721

कुचन्–अंगारक; विचै कॉटु–तेजी के साथ; विचाकत्तै नॅरुक्कि–विशाखा नक्षत्र पर आक्रमण करके; एऱिनन्–चढ़ गया; ॲन–इसलिए; तिचै निलै–दिशाओं में स्थित; कट करि–मत्त गजों ने; चॅरुक्कु चिन्तिन–दंभ छोड़ दिया; वेलैकळ्–समुद्र; अचैवु इल–न हिले; आर्क्क अञ्चिन–गरजने से डरे; मेरुवुम्–मेरु भी; कुलुक्कम् उऱ्ऱतु–कंपन पा गया। ३७२१

('आक्रम्य अंगारकः तस्थौ विशाखामंबरे') अंगारक विशाखा पर आक्रमण करके उस पर चढ़ गया। दिग्गज सत्त्वहीन हो गये। समुद्र हिलना छोड़कर गरजने से डरे। अचल मेरु भी चंचल हो गया। ३७२१

वानरत् तलैवनु मिळैय मैन्दनुम्
एनैयत् तलैवनैक् काणगि लेमॅनक्
कानहक् करियॅनक् कलङ्गि नार्कडल्
मीनॅनक् कलङ्गिनार् वीरर् वेऱुळार् 3722

वानरर् तलैवनुम्–वानरपति और; इळैय मैन्तनुम्–लघुवीर; एनै–और अन्य; अ तलैवनै–उन नायक (श्रीराम) को; काणकिलेम्–देख नहीं सके; ॲन–कहकर; कानकम् करि ॲन–जंगली हाथी के समान; कलङ्कितार्–व्यग्र हुए; वेऱुळार् वीरर्–अन्य वीर; मीन् ॲन–(सेतुबंधन के समय की) मछलियों के समान; कलङ्कितार्–क्षुब्ध हुए। ३७२२

वानरपति, लघुराज और अन्य वीर श्रीराम को न देख सककर जंगली हाथी के समान कांप उठे। अन्य वीर (सेतुबंधन के अवसर पर जैसी) मछलियों के समान छटपटाये। ३७२२

ॲय्दन शरमॅला मिमैप्पिल् मुन्दुऱक्
कॉय्दन नहर्ऱिवॅङ् गोलिन् कोवैयाल्

नॉय्दॅत्त वरक्कतै नॅरुङ्ग नॉन्दन
शॅय्दत्त निराहवत् तेवर् तेट्रिनार् 3723

ॲय्तत्त–(रावण-) प्रेरित; चरम् ॲलाम्–सभी बाणों को; इमैप्पिन् मुन्नुट्र–पल भर के समय के अंदर ही; वॅम् कोलिन् कोवैयाल्–तापक शरराशि से; कॉय्ततत् अकट्रि–काटकर दूर करके; इराकवत्–श्रीराघव ने; नॉय्तॅत अरक्कतै–(लंकेश) राक्षस को; नॅरुङ्ग–लगकर; नॉन्तत्त चॅय्ततत्–दुःख दे ऐसा कर दिया; तेवर्–देव; तेट्रितार्–आश्वस्त हुए। ३७२३

श्रीराम ने सभी रावणप्रेरित कठोर शरों को काटकर दूर कर दिया। और लंकेश को क्षुब्ध करा दिया। ३७२३

तूणुडै निरैपुरै करमवै तॉऴुमक्
कोणुडै मलैनिहर् शिलैयिडै कुरैयच्
चेणुडै निहर्कणै शिदरित्त नुणर्वॉ
डूणुडै युयिर्तॉऴु मुऱैवुऱु मॊरुवत् 3724

उणर्वॉटु–ज्ञान के साथ; ऊण् उटै–उनको (ज्ञान) भोग का विषय माननेवाले; उयिर् तॉऴुम्–ज्ञानी जीवों में; उरैवुरुम्–जो "आत्मा ही" बनकर रहते हैं; ऑरुवत्–उन अप्रतिम श्रीराम ने; तूण् उटै निरै पुरै–खंभों की पंक्ति के समान; करम् अवै तॉऴुम्–हाथ-हाथ में; अ–वह; कोण् उटै–वक्र सिरवाले; मलै निकर् चिलै–पर्वत-सम धनु; इटै कुरैय–बीच से टूट जाए ऐसा; चेण् उटै–दूरगामी; निकर् कणै–उज्ज्वल अस्त्रों को; चितरित्तत्–बिखेर (-सा) दिया। ३७२४

ज्ञान भोग्य (ज्ञानगम्य) श्रीराम ने दूरगामी उज्ज्वल अस्त्र छोड़े और रावण के खंभों-सम हाथों में धृत वक्रशीर्ष तथा पर्वतोपम धनु बीच से कट गये। ३७२४

पडैयुह विसैयवर् परुवरल् कॅडवन्
दिडैयुऱु तिशैतिशै यिऱुकुऱ विऱैवत्
अडैयुऱु कॊडिमिशै यणुहित्त नळविल्
कडैयुह मुडिकॅळु कडल्पुरै कलुळत् 3725

युकम् कटै–युगांत में; मुटि कॅळु–उमँगकर बढ़नेवाले; अळविल् कटल् पुरै–अपार समुद्र-सम; कलुळत्–गरुड़; पटै उक–(रावण के) हथियारों (धनुओं) के कटते; इसैयवर् परुवरल् कॅट–देवों का दुःख दूर करते हुए; वन्तु–आकर; इटै उऱु–विशाल; तिचै तिचै इऱुकुर–दिशाओं को स्थिर करते हुए; इऱैवत्–ईश्वर श्रीराम की; अटै उऱु–(रथ पर) बनी; कॊटि मिचै–ध्वजा पर; अणुकितत्–आ बैठ गया। ३७२५

जब उसके धनु कटे तब युगांत के उमग आते समुद्र के समान रहनेवाला बड़ा गरुड़ श्रीराम के रथ पर लगी पताका पर आकर बैठ गया,

वलम् वरु कलुळऩ्–दायीं ओर से घूम आनेवाला गरुड़; पण्णवऩ्–भगवान श्रीराम की; उयर् कॉटि ॲऩ–उत्कृष्ट ध्वजा को चाहकर; नण्णलुम्–आया तब; इमैयवर्–देव; नमतु उरु करुमम्–हमारा करने योग्य काम; इनि ऍण्णलम्–अब नहीं सोचेंगे; मुऩिविऩऩ्–(गरुड़) क्रुद्ध होकर; इवरिऩऩ्–चढ़ गया (ध्वजा पर); ॲऩ–बोले तब। ३७२८

और समुद्र-मेखला पृथ्वी की परिक्रमा करके आनेवाला गरुड़ भगवान की पताका को उत्तम समझकर उस पर आकर बैठा। तब देवों ने विश्वास कर लिया कि अब हम, क्या करना है, यह नहीं सोचेंगे (क्योंकि आवश्यकता नहीं है)। क्योंकि गरुड़ क्रुद्ध होकर श्रीराम के रथ पर चढ़ बैठा है। ३७२८

आयदो	रमैदियि	ऩऱिविऩि	ऩऱिवाऩ्
नायह	ऩीरुवलै	नलिहिल	वुणर्वाऩ्
एयिऩ	ऩिरुळ्ळ्रु	शरमऴै	यॆऩुमत्
तीविऩै	तरुपडै	तॆऴ्रुतीऴिऩ्	मऱवोऩ् 3729

आयतु ओर् अमैतियिऩ्–वैसे एक समय में; तॆऴ्रु तीऴिल् मऱवोऩ्–संहारक कार्य की चाह करके पाप करनेवाला रावण; अऱिविऩिऩ् अऱिवाऩ्–ज्ञानगम्य; ओवियत्तै–अद्वितीय; नायकऩ्–जगन्नाथ श्रीराम का; नलिकिलतु–अपने शर का कुछ कर न सकना; उणर्वाऩ्–जानकर; इरुळ् उरु–अंधकारकारी; चरम् मऴै ऍऩुम्–शर-वर्षा के; अ तीविऩै तरु पडै–उस हानिकारक अस्त्र को; एविऩऩ्–प्रेषित किया। ३७२९

उस समय मारक कार्य पर तुले पापी रावण ने देखा कि मेरे बाण ज्ञानगम्य आदिदेव का कुछ अहित नहीं करते। तो उसने तामसास्त्र नामक अस्त्र प्रेरित किया जो शर-वर्षा-सी करके बड़े घातक कार्य करनेवाला था। ३७२९

तीमुह मुडैयऩ शिलमुह मुदिरऩ्, दोय्मुह मुडैयऩ शुरर्मुह मुडैय
पेय्मुह मुडैय पिलमुह नुऴैयुम्, वाय्मुहम् अरियर वऩैयऩ वरुव 3730

चिल मुकम्–कुछ के मुख (फल); ती मुकम्–अग्नि के मुखों के; उडैयऩ–रखनेवाले; उतिरम् तोय्–रक्तरंजित; मुकम् उडैयऩ्–मुखोंवाले (कुछ); चुरर् मुकम् उडैय–देवों के मुखों के; पेय् मुकम् उडैयऩ–पिशाचमुखी; पिलम् मुकम्–बिल के द्वार पर; नुऴैयुम्–घुसनेवाले; वाय् मुखम्–मुख के साथ के आननों के साथ; वरि अरवु–लकीरों वार सर्पों; अऩैयऩ–के समान; वरुवऩ–आनेवाले। ३७३०

उससे उत्पन्न हो जो बढ़े उनमें अग्निमुखी, रक्तमुखी, देवमुखी, पिशाचमुखी और बिल-प्रवेशक-सर्पमुखी थे। वे बढ़ते गये। ३७३०

ऒरुतिशै	मुदल्कडै	यॊरुतिशै	यळवुम्
इरुतिशै	यॆयिऱुर	वरुवऩ	वॆरिय

करुदिय करुदिय पुरिवन्न कन्नलुम्
परुदियै मदियोडु परुहुव पहळि 3731

पकळि–वे शर; और तिचै मुतल्–एक दिशा से; कडै और तिचै अळवुम्–विपरीत दिशा के अंत तक; इरु तिचै–दोनों दिशाओं में; ऍयिरु उरु–दांतों को गड़ाकर; वरुवन–आनेवाले हैं; पॅरिय–बहुत बड़े हैं; करुतिय करुतिय पुरिवन–(प्रेरक) जो चाहता वही करनेवाले हैं; कन्नलुम्–जलानेवाले; परुतियै–सूर्य को; मतियोडु–चंद्र के साथ; परुकुव–पी सकनेवाले। ३७३१

वे एक दिशा से दूसरे दिगंत तक दोनों बाजुओं की दिशाओं में अपने विषदंतों को लगाते हुए आ रहे थे। बहुत बड़े-बड़े थे। रावण के सोचे कार्य को पूर्ण करनेवाले थे। जलानेवाले सूर्य और चंद्र को पी सकनेवाले थे। ३७३१

इरुळोरु तिशैयोरु तिशैवॆयिल् विरियुम्
शुरुळोरु तिशैयोरु तिशैमळै तॊडरुम्
उरुळोरु तिशैयोरु तिशैयुरु मुरलुम्
मरुळोरु तिशैयोरु तिशैशिलै वरुडम् 3732

और तिचै इरुळ्–एक दिशा में अंधकार; और तिचै–दूसरी दिशा में; वॆयिल् विरियुम्–धूप फैलती; और तिचै चुरुळ्–एक दिशा में बवंडर; और तिचै मळै तॊटरुम्–दूसरी दिशा में वर्षा होती; और तिचै उरुळ्–एक दिशा में चक्र; और तिचै–एक दूसरी दिशा में वज्र; मुरलुम्–नाद करता; और तिचै मरुळ्–एक दिशा में भ्रम; और तिचै–दूसरी दिशा में; चिलै वरुटम्–पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

और भी वे एक दिशा में अंधकार और दूसरी दिशा में धूप फैला सकनेवाले; एक दिशा में बवंडर और दूसरी दिशा में वर्षा करनेवाले थे। उनके कारण एक ओर चक्र चलते और दूसरी ओर वज्र गिरते। एक दिशा में माया फैलती और दूसरी दिशा में पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

इन्नैयन निहऴ्वुऴि ऎऴुवहै युलहुम्
कन्नैयिरुळ् कडुविड वमरर्हळ् कदऱ
विन्नैयुऴि तॊऴिलिडै विरवलुम् विमलन्
निन्नैवुऴि तहैमैयि नॆऱियुऴि मुऱैयिन् 3733

इन्नैयन–ऐसी बातें; निकऴ्वु उऴि–जब होती रहीं; कन्नै इरुळ्–घने अंधकार के; ऎऴुवकै उलकुम्–सातों प्रकार के लोकों को; कटुविट–आच्छादित करते; अमरर्कळ् कतऱ–देवों के चिल्लाते; विन्नै उऴि–पाप से उत्पन्न-से; तॊऴिल् इटै–कार्य में; विरवलुम्–संसार का फँसना; विमलन्–विमल श्रीराम के; नॆऱि उऴि मुऱैयिन्–सीधे मार्ग में; निन्नैवुऴिम् तकैमैयिन्–सोचने के अच्छे गुण के कारण। ३७३३

करुदिय करुदिय पुरिवऩ कनलुम्
परुदियै मदियॊडु परुहुव पहळि 3731

पकळि–वे शर; ऒरु तिचै मुतल्–एक दिशा से; कडै ऒरु तिचै अळवुम्–विपरीत दिशा के अंत तक; इरु तिचै–दोनों दिशाओं में; ॲयिरु उऱ–दाँतों को गड़ाकर; वरुवन–आनेवाले हैं; पॆरिय–बहुत बड़े हैं; करुतिय करुतिय पुरिवन–(प्रेरक) जो चाहता वही करनेवाले हैं; कनलुम्–जलानेवाले; परुतियै–सूर्य को; मतियॊडु–चंद्र के साथ; परुकुव–पी सकनेवाले। ३७३१

वे एक दिशा से दूसरे दिगंत तक दोनों बाजुओं की दिशाओं में अपने विषदंतों को लगाते हुए आ रहे थे। बहुत बड़े-बड़े थे। रावण के सोचे कार्य को पूर्ण करनेवाले थे। जलानेवाले सूर्य और चंद्र को पी सकनेवाले थे। ३७३१

इरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैवॆयिल् विरियुम्
शुरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैमऴै तॊडरुम्
उरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैयुरु मुरलुम्
मरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैशिलै वरुडम् 3732

ऒरु तिचै इरुळ्–एक दिशा में अंधकार; ऒरु तिचै–दूसरी दिशा में; वॆयिल् विरियुम्–धूप फैलती; ऒरु तिचै चुरुळ्–एक दिशा में ववंडर; ऒरु तिचै मऴै तॊडरुम्–दूसरी दिशा में वर्षा होती; ऒरु तिचै उरुळ्–एक दिशा में चक्र; ऒरु तिचै–एक दूसरी दिशा में वज्र; मुरलुम्–नाद करता; ऒरु तिचै मरुळ्–एक दिशा में भ्रम; ऒरु तिचै–दूसरी दिशा में; चिलै वरुटम्–पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

और भी वे एक दिशा में अंधकार और दूसरी दिशा में धूप फैला सकनेवाले; एक दिशा में बवंडर और दूसरी दिशा में वर्षा करनेवाले थे। उनके कारण एक ओर चक्र चलते और दूसरी ओर वज्र गिरते। एक दिशा में माया फैलती और दूसरी दिशा में पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

इऩैयऩ निहऴ्वुऱ ॲऴुवहै युलहुम्
कऩैयिरुळ् कडुविड वमरर्हळ् कदऱ
विऩैयुऱ तॊऴिलिडै विरवलुम् विमलऩ्
निऩैवुऱु तहैमैयि नॆऱियुऱु मुऱैयिऩ् 3733

इनैयन–ऐसी बातें; निकऴ्वु उऱ–जब होती रहीं; कनै इरुळ्–घने अंधकार के; ॲऴुवकै उलकुम्–सातों प्रकार के लोकों को; कटुविट–आच्छादित करते; अमरर्कळ् कतऱ–देवों के चिल्लाते; विनै उऱ–पाप से उत्पन्न-से; तॊऴिल् इडै–कार्य में; विरवलुम्–संसार का फँसना; विमलन्–विमल श्रीराम के; नॆऱि उऱु मुऱैयिन्–सीधे मार्ग में; निनैवुऱुम् तकैमैयिन्–सोचने के अच्छे गुण के कारण। ३७३३

जब ये सब होते रहे, और घना अंधकार सातों लोकों को आच्छादित कर गया, देव चिल्ला उठे और भुवन पापकर्म में फँस गया जैसा रहा, तब विमलमूर्ति श्रीराम ने, जो सद्धर्मचित्त थे, । ३७३३

कण्णुद लोरुवन् दट्टुपडै करुदिप्
पण्णवन् विडुदलु मदुनत्ति परुह
ऒण्णुरु कत्तविन्नो डुणर्वॆन विमैयिल्
तुण्णॆनु निलैयिनि नॆरिपडै तोलैय 3734

कण्णुतल् ऒरुवत्तु–ललाटनेत्र उत्तम भगवान के; अट्टुपडै–संहारक अस्त्र को; करुति–परख लेकर; पण्णवन्–भगवान श्रीराम के; विट्टलुम्–छोड़ते ही; अतु–उस शर ने; नत्ति परुक–(अंधकारकारी तामसास्त्र को) खूब पी लिया; ऒण्णुरु–चित्य; कत्तविन्नोटु उणर्वु ऎन्न–स्वप्न के साथ-साथ जागरण के समान; इमैयिल्–पल भर में; तुण्णॆनु निलैयितिल्–सभी की भयभीत दिशा में; नॆरि पटै तोलैय–प्रेरित (तामस्-) अस्त्र के मिटते । ३७३४

सोचकर भालनेत्र शिव का पाशुपतास्त्र छोड़ा। तो उसने तामसास्त्र को सोख दिया। रावण ने देखा कि उसका चलाया अस्त्र एक क्षण में जागने पर स्वप्न जैसे मिट जाता है वैसे सबको भय में डालते हुए नष्ट हो गया। ३७३४

विरिन्द तन्पडै मॆय्कण्ड पॊय्यॆन वीय्न्द
ऎरिन्द कण्णिन नॆयिऱ्ऱिडै मडित्तवा यिनन्दन्
तॆरिन्द वॆङ्गणै कङ्गवॆञ् जिऱैयन्न तिऱत्तान्
अरिन्द मन्तिरु मेनिमे लऴुत्तिनिन् ऱार्त्तान् 3735

विरिन्त–विस्तृत; तन् पटै–उसका तामसास्त्र; मॆय् कण्ट–सत्य देखकर; पॊय् ऎन्न–असत्य के समान; वीय्न्त–मिटा तो; ऎरिन्त कण्णितन्–जलती आँखों वाले; ऎयिऱु इटै–दाँतों के मध्य; मटित्त वायिनन्–दबाये हुए अधरों वाले ने; वॆम् कङ्कम्–भयंकर बाज के; चिऱै अन्न–बँधे से; तॆरिन्त–चुने हुए; तन्–अपने; वॆम् कणै–क्रूर अस्त्रों को; तिऱत्ताल्–जोर से; अरिन्तमन्–अरिंदम (श्रीराम) के; तिरु मेनि मेल्–श्रीशरीर में; अऴुत्ति निन्ऱु–गड़ाकर; आर्त्तान्–गर्जन किया। ३७३५

अपने अस्त्र को सत्य के सामने की मिथ्या के समान मिटते देखकर अग्निवर्षक आँखों वाले रावण ने दाँतों के मध्य अधरों को दवाते हुए चुने हुए, कंकपक्ष अस्त्रों को ज़ोर से अरिंदम श्रीराम के श्रीशरीर में गड़ा दिया। ३७३५

आर्त्तलु वॆञ्जिनत् ताशुरप् पडैक्कल ममरर्
वार्त्तै युण्डदिन् नुयिर्हळान् मऱलितन् वयिऱ्ऱैत्

तूर्त्त दिन्दिरन् तुणुक्कुऱ तॊऴिलदु तॊडुत्तुत्
तीर्त्तत्तन् मेल्वरत् तुरन्दत्त नुलहॆलान् दॆरिय 3736

आर्त्तु–भीमनाद करके; अमरर् वार्त्तै उण्टतु–देवों के यश को जिसने खा लिया था; इन् उयिर्कळाल्–मधुर जीवों से; मऱलि तन् वयिऱ्ऱै–यम के पेट को; तूर्त्ततु–जिसने भरा था; इन्दिरन्–इंद्र को; तुणुक्कुऱ–ठिकानेवाला; तॊऴिलतु–कार्य जो करता था; वॆम् चित्ततु–(उस) भयंकर क्रोधी; आचुरर् पटैक्कलम्–असुरास्त्र को; उलकु ॲलाम् तॆरिय–सभी लोकों की दृष्टि के सामने; तीर्त्तत्तन् मेल् वर–तीर्थ श्रीराम पर लगे ऐसा; तुरन्तत्तन्–चलाया। ३७३६

फिर रावण ने बड़े हुंकार के साथ तीर्थ श्रीराम पर बहुत प्रचंड आसुरास्त्र छोड़ा जो देवयशभक्षी था, जिसने यम के पेट को जीवों से भर दिया था और जिसने देवेंद्र को भयातुर कर दिया था। ३७३६

आशु रप्पॆरुम् बडैक्कल ममररै यमरिन्
एशु विप्पदॆव् वुलहमु मॆवरैयुम् वॆन्ऱु
वीशु वॆऱ्पिऱत् तुरन्दवॆङ् गणैयदु विशैयिन्
पूशु रर्क्कॊरु कडवुण्मेऱ् चॆन्ऱदु पोलाम् 3737

अमररै–देवों को; अमरिन्–युद्ध में; एचुविप्पतु–अपयश दिलानेवाला; ॲ उलकमुम्–सभी लोकों में; ॲवरैयुम् वॆन्ऱु–चाहे कोई हो उसे जीतकर; वीचु–फेंके गये; वॆऱ्पु–पर्वतों को; इऱ–तोड़ते हुए; तुरन्त–चलाया गया; विचैयिन्–वेगवान; वॆम्–भयंकर; कणैयतु–अस्त्र; आचुरर् पॆरुम् पटैक्कलम्–आसुरास्त्र; पूचुरर्क्कु–भूसुरों के; ऒरु–अकेले; कटवुळ् मेल्–(आराध्य-) देवता पर; चॆन्ऱतु–गया। ३७३७

देवनिंदाक्षयी, सर्वलोकविजयी वह शर उस पर फेंके गये सभी पर्वतों को भेदता हुआ आ रहा था। उसके कई भयंकर उपास्त्र थे। वह बड़ा भयंकर अस्त्र भूसुरों के पूज्य अद्वितीय भगवान श्रीराम पर जा रहा था। ३७३७

नुङ्गु हिन्ऱदिव् वुलहैयोर् नॊडिवर यॆन्न
ॲङ्गु निन्ऱुनिन् ऱलमरु ममरर्हण् डिरैप्प
मङ्गुल् वल्लुरु मेऱ्ऱिन्मे लॆरिमडुत् तॆन्न
अङ्गि तन्नॆडुम् बडैतॊडुत् तिराहव नऱुत्तान् 3738

इ उलकै–इस लोक को; ओर् नॊटि वरै–एक पल में; नुङ्कुकिन्ऱतु ॲन्न–निगलता है ऐसा कहकर; ॲङ्कुम्–सब ओर; निन्ऱु निन्ऱु–खड़े-खड़े रहकर; अलमरुम्–भ्रांत; अमरर्–देवों के; कण्टु–देखकर; इरैप्प–आमंदरव उठाते; मङ्कुल–मेघमध्य; वल्–कठोर; उरुम् एऱ्ऱिन् मेल्–अशनिराज पर; ॲरि मटुत्तॆन्न–आग लगा दी गयी हो ऐसा; अङ्कि तन्–अग्नि के; नॆटु–लंबे; पटै तॊटुत्तु–अस्त्र चलाकर; इराकवन् अऱुत्तान्–श्रीराघव ने काट दिया। ३७३८

उसको देखकर देववृन्द सब ओर खड़े होकर इस डर से चिल्लाने लगे थे कि देखो यह लोक को एक पल में खा डालता है। तब श्रीराघव ने, मेघ के अशनिराज पर अग्नि डाल दी गयी हो ऐसा उस पर आग्नेयास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। अब देवों ने खुश होकर उच्चनाद किया। ३७३८

कूऱ्ऱुक् कोडिनुङ् गोडल कडलॅलाङ् गुडिप्प
नीऱ्ऱुक् कुप्पॅयिन् मेरुवै नूऱुव नॅडिय
काऱ्ऱुप् पिन्ऩॅलच् चॅल्वन उलहॅलाङ् गडप्प
नूऱ्ऱुक् कोडियम् बॅय्दन निरावण नॊडियिल् 3739

कूऱ्ऱु–यम (चाहे); कोटिऩुम्–डिग जाए; कोटल–जो चूकते नहीं; कटल् ऍलाम् कुटिप्प–जो सारे समुद्रों को पी सकें; मेरुवै–मेरु पर्वत को; नीऱ्ऱु कुप्पॅयिऩ्–धूलिराशि में; नूऱुव–तोड़कर बदलनेवाले; नॅटिय–लंबे; काऱ्ऱु पिऩ् चॅल–हवा को पीछे आने देकर; चॅल्वऩ–आगे जानेवाले; उलकॅलाम् कटप्प–सारे लोकों को लाँघनेवाले; नूऱु कोटि अम्पु–सहस्र कोटि शर; इरावणऩ्–रावण ने; नॊटियिल्–एक चुटकी की देर में; ऍय्तऩऩ्–चलाये। ३७३९

तब रावण ने एक पल में सौ करोड़ ऐसे बाण चलाये जो यम के चूक जाने की दशा में भी चूकते नहीं थे; जो सारे सागर-जल को सोख सकते थे; जो मेरु को चूर-चूर कर सकते थे; जो लंबे थे; जो पवन से भी तेज़ जाते और जो सारे लोकों को लाँघ सकते थे। ३७३९

ऍऩ्ऩ कैक्कडुप् पोवॅऩ्बर् शिलर्शिल रिवैयुम्
अऩ्ऩ मायमे यम्बल वॅऩ्बरव् वम्बुक्
किऩ्ऩ मुण्डुहॊ लिडमॅऩ्बर् शिलर्शिल रिहऱ्पोर्
मुऩ्ऩ मित्तऩै मुयऩ्ऱिल ऩामॅऩ्बर् मुऩिवर् 3740

मुऩिवर् चिलर्–कुछ मुनिगण; ऍऩ्ऩ कै कटुप्पो–क्या ही हस्त-लाघव; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ; इवैयुम्–ये भी; अऩ्ऩ मायमे–वैसी ही माया है; अम्पु अल–बाण नहीं; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ; अव् अम्पुकट्कु–उन शरों के लिए; इऩ्ऩम् इटम्–और स्थान; उण्टु कॊल्–है क्या; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ लोग; मुऩ्ऩम्–पहले; इकल् पोर्–विरोध के किसी युद्ध में; इत्तऩै–इतना; मुयऩ्ऱिलऩ् आम्–प्रयत्न नहीं किया है; ऍऩ्पर्–कहते। ३७४०

यह रावण-शर की तेज़ी देखकर कुछ मुनिवरों ने विस्मय किया कि यह क्या हस्तलाघव है? कुछ मुनियों ने विश्वास के साथ कहा कि ये माया हैं अस्त्र ही नहीं! कुछ लोगों ने प्रश्न किया कि क्या आज भी ऐसे अस्त्रों के लिए स्थान है? कुछ लोगों ने विचार व्यक्त किया कि इसके पूर्व रावण ने किसी भी युद्ध में इतना प्रयत्न नहीं किया था। ३७४०

मऱैमु दऱ्ऱनि नायहन् वानिनै मऱैत्त
शिऱैयु डैक्कोडुम् जरमॆला मिमैप्पॊऴुदिऱ् ऱिरियप्
पॊऱैशि हैप्पॆरुन् दलैनिन्ऱुम् पुङ्गत्ति नळवुम्
पिऱैमु हक्कडु वॆञ्जर मवैहॊण्डु पिळन्दान् 3741

मऱै मुतल्–वेदादि; तनि नायकन्–अद्वितीय स्वामी ने; वानिनै मऱैत्त–आकाश को ढँकनेवाले; चिऱै उटै–पक्षसहित; कॊटु चरम् ऎलाम्–क्रूर सभी शरों को; इमैप्पु ऒऴुदिल्–एक पल में; तिरिय–विकृत करते हुए; पिऱैमुकत्–अर्धचन्द्र के; कटु–वेगवान; वॆम् चरम् अवै–भयंकर शरों को; कॊण्टु–लेकर; पॊऱै–भारी; चिकै पॆरु तलै निन्ऱुम्–चोटी-सह बड़े सिर से लेकर; पुङ्कत्तिन् अळवुम्–पुंख तक; पिळन्तान्–चीर दिया। ३७४१

वेदहेतु आदिनायक श्रीराम ने आकाशगोपक पक्षों वाले सभी भयानक शरों को एक ही पल में कठोर अर्धचंद्र बाण छोड़कर सिर से पुंख तक चीरकर विफल कर दिया। ३७४१

अयन्प डैत्तपे रण्डत्ति लरुन्दव माऱ्ऱिप्
पयन्प डैत्तव रियारिनुम् बडैत्तवन् पल्पोर्
वियन्प डैक्कलन् दॊडुप्पॆना निनैन्न विरैन्दान्
मयन्प डैक्कलन् दुरन्दनन् तयरदन् महन्मेल् 3742

अयन् पटैत्त–अज-सृष्ट; पेर् अण्टत्तिल्–बड़े अण्ड में; अरु तवम् आऱ्ऱि–असाध्य तपस्या करके; पयन् पटैत्तवर्–जिन्होंने सुफल पाया; यारिनुम्–उनमें किसी से भी; पटैत्तवन्–अधिक फल जिसने पाया था उस रावण ने; इनि–अब; पल् पोर्–अनेक युद्धों में प्रयुक्त; वियन् पटै कलम्–गौरवमय अस्त्र को; नान् तॊटुप्पॆन्–मैं चलाऊँगा; ऎन्न–कहकर; विरैन्तान्–जल्दी करके; तयरतन् मकन् मेल्–दशरथ के पुत्र पर; मयन् पटै कलम्–मयास्त्र को; तुरन्तनन्–चलाया। ३७४२

ब्रह्मरचित अंड भर में जिन लोगों ने तपस्या करके फल प्राप्त किया था, उनमें रावण ने सबसे अधिक फल प्राप्त किया था। उस रावण ने निश्चय किया कि अब अनेक युद्धों में प्रयुक्त बड़े ही गौरवमय बाण का प्रयोग करूँगा। उसने शीघ्रता से दशरथ-सुत पर मयास्त्र चलाया। (यहाँ दशरथ की याद करना इसलिए कि वैसे प्रतापी तथा लोकस्वामी के पुत्र की आज यह दयनीय स्थिति हो गयी। उस ओर संकेत किया जाय)। ३७४२

विट्ट तन्विड् पडैक्कलम् वेरॊडु मुलहैच्
चुट्ट लन्ऩॆनत् तुणुक्कमुऱ् ऱमररुम् जुरुण्डार्
कॆट्ट तम्मॆन वान्नरत् तलैवरुङ् गिळिन्दार्
शिट्टर् तन्दनित् तेवनु मदनिलै तॆरिन्दान् 3743

विट्टवन्–प्रेरक के; विट्ट–प्रेरित; पटै कलम्–अस्त्र से; उलकै–लोक को; वेरोटु चुट्टतन्–जड़ के साथ जला दिया; ॲन–ऐसा; अमररुम्–देव भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–भयभीत होकर; चुरुण्टार्–लोटे; कॆट्टनम्–मिटे हम; ॲन–ऐसा डरकर; वानरर् तलैवरुम्–वानरयूथप भी; किऴिन्तार्–अस्त-व्यस्त हो भागे; चिट्टर् तम्–शिष्ट लोगों के; तनि तेवनुम्–अकेले देवता श्रीराम ने भी; अतन् निलै–उसका स्वभाव; तेरिन्तान्–जान लिया। ३७४३

'रावण-प्रेरित उस अस्त्र से उसने सारे लोकों को जला दिया।' देव यह सोचकर लोट गये। वानर वीर भी 'मरे हम' कहते हुए अस्त-व्यस्त भाग गये। शिष्टों के अद्वितीय देव श्रियःपति सीताराम जी ने उसका स्वभाव जान लिया। ३७४३

पान्दट् पः(ह्)ऱलैप् परन्दहन् पुविचिडैप् पयिलुम्
मान्दर्क् किल्लैयाल् वाऴ्वॆन वरुहिन्ऱ वदनैक्
कान्दर्प् पम्मॆनुङ् गडुङ्गोडुङ् गणैयिनाऱ् कडन्दान्
एन्दर् पन्मणि यॆऱुऴ्वलित् तिरळ्पुयत् तिरामन् 3744

पान्तल्–(आदिशेष-) नाग के; पल् तलै–अनेक सिरों पर; परन्तु–फैलकर; अकल्–विस्तृत रहती; पुवि इटै–भूमि पर; पयिलुम्–रहनेवाले; मान्तर्क्कु–जीवों का; वाऴ्वु इल्लै–जीवन नहीं होगा; ॲन–ऐसा; वरुकिन्ऱ–जो आता था; अतनै–उस भयास्त्र को; एन्तल्–पर्वतोपम; पल् मणि–बहुरत्न; ॲऱुऴ्वलि–कठोर बलसंयुक्त; तिरळ्–पुष्ट; पुयत्तु इरामन्–भुजाओं वाले श्रीराम ने; कान्तर्प्पम् ॲनुम्–गांधर्वास्त्र नाम के; कटु–वेगवान; कॊटु–क्रूर; कणैयिनाल्–अस्त्र से; कटन्तान्–बेकार किया। ३७४४

'आदिशेषनाग के अनेक सिरों पर फैली भूमि में रहनेवाले जीवों (तथा श्रीराम) का जीवन अब समाप्त हो गया।' ऐसा लोगों के मन में भय उत्पन्न करते हुए आनेवाले उस शर को पर्वतोपम बहुरत्नाभरणभूषण-योग्य तथा पुष्ट कंधोंवाले श्रीराम ने गंधर्वास्त्र नाम के कठोर और तेज बाण चलाकर नष्ट कर दिया। ३७४४

पण्डु नान्मुहन् पडैत्तदु कनहनिप् पारैत्
तोण्डु कॊण्डदु मदुवॆनु मवुणनमुन् तोट्ट
दुण्डिङ् गॆन्वयि नदुतुरन् दुयिरुणबॆ नॆन्नात्
तण्डु कॊण्डॆरिन् दाननदी डॆन्दुडैत् तलैयान् 3745

पण्टु–पहले; नान्मुकन् पटैत्ततु–जो चतुर्मुख ब्रह्मा द्वारा रचा गया; कनकन्–हिरण्य ने; इ पारै–इस भूमि को; तोण्टु कॊण्टतु–(जिससे) दास बना लिया था; मतु ॲनुम् अवुणन्–मधु नाम का राक्षस; मुन् तोट्टतु–पहले जिसका प्रयोग करता था; इङ्कु–यहाँ; ॲन् वयिन्–मेरे पास; उण्टु–(एक दंड) है; अतु तुरन्तु–उसको चलाकर; उयिर् उण्पॆन्–इसके प्राण खा (हर) लूंगा; ॲन्ना–

कहकर; ऐन्तोंड् ऐन्तुट्टै–पाँच और पाँच; तलैयान्–सिरों वाले (रावण) ने; तण्ट् कोण्ट्–दंड लेकर; अँरिन्तान्–चलाया । ३७४५

रावण ने विचारा । 'मेरे पास वह चतुर्मुखसृष्ट गदा है जो हिरण्य के भूमि के वशीकरण में बड़ी सहायता दे चुकी थी और जो मधु द्वारा प्रयुक्त रहती थी । उसको चलाकर मैं श्रीराम के प्राणों को निकाल दूँगा ।' ऐसा सोचकर दशग्रीव ने वह गदा चलायी । ३७४५

तारु हत्पणड्डु तेवरैत् तहर्त्तदु तत्तिमा
मेरु मन्दरम् पुरैवदु वॅयिलन्न वॉळिय
दोरु हन्दत्ति नुलहनित् रुरुट्टिनु मुरुळाच्
चीरु हन्वदु मुहन्वदु वानवर् शिरङ्गळ् 3746

पण्ट् पहले; तारुकन्–दारुक के; **तेवरै तकर्त्ततु–देवों के हराने में सहायक जो रहा;** तत्ति–अनुपम; मा–बड़े; **मेरु मन्तरम् पुरैवतु–मेरु और मंदर पर्वत के समान जो रहता है; वॅयिल् अन्न–सूर्य के समान; ऑळियतु–प्रकाशमान; ओर् उकम् तत्तिल्–एक युग तक; उलकम् नित्रु–सारे लोक मिलकर; उरुट्टिनुम्–लुढ़का दें तो भी; उरुळा–जो लुढ़क नहीं सकता; चीर् उकन्ततु–श्रेष्ठता के कारण प्रशंषित; वानवर्–देवों के; चिरङ्कळ्–सिरों को; मुकन्ततु–उठा लेनेवाला । ३७४६**

वह गदा ऐसी थी जिससे दारुक ने देवों को त्रस्त किया था, जो मेरु या मंदर पर्वत के समान थी; सूर्य के समान उज्ज्वल थी और जो ऐसी शक्तिसंपन्न थी कि उसे सारे लोकों के मिलकर लुढ़काने का प्रयत्न करने पर भी वह लुढ़के नहीं । वह श्रेष्ठता के कारण प्रशंसित गदा देवों के सिरों के भी ग्राहक रही थी । ३७४६

पशुम्बु तऱ्पॅरुम् बरवैपण् डुण्डदु पत्तिप्पुर्
रशुम्बु पायहित्ऱ दरुक्कत्ति नॉळिर्हित्ऱ दण्डम्
तशुम्बु पोलुडैन् दॉळियुमॅत् ऱनैवरुन् दळर
विशुम्बु पाळ्पड वन्ददु मन्दरम् वॅरुव 3747

पशु पुनल्–हरे जल के; पॅरु परवै–बड़े सागर को; पण्टु उण्टतु–पहले जिसने सोख लिया था; पत्तिप्पु उऱ्ऱु–शीतलता-सहित; अचुम्पु पाय्कित्ऱतु–नमी से युक्त; अरुक्कत्तिन्–सूर्य से भी अधिक; ऑळिर्कित्ऱतु–प्रकाश छिटकाने वाला वह दण्ड; अण्टम्–यह अंड; तचुम्पु पोल्–जलघट के समान; उटैन्तु ऑळियुम्–टूटकर मिटेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अनैवरुम् तळर–सब अशक्त हो जायँ ऐसा; विचुम्पु–आकाश; पाळ् पट–उजड़ जाय ऐसा; मन्तरम् वॅरुव–मंदर भी दहल उठे ऐसा; वन्ततु–आया । ३७४७

उसने कभी हरे (ताजे) जल के समुद्र को सोख लिया था । उसमें नमी और शीतलता थी । सूर्य से भी उज्ज्वल थी । वह गदा इस प्रकार

मंदर पर्वत को भी भयभीत करते हुए आयी कि लोगों ने विचारा कि अब यह अंड जलघट के समान टूट जानेवाला है। ३७४७

कण्ड तामरैक् कण्णनक् कडवुण्माक् कदैदान्
अण्डर् नायह नायिरङ् गण्णिनु मडङ्गाप्
पुण्ड रीहत्तिन् मुहैयत्तन् पुहर्मुहम् विट्टान्
उण्डै नूरुडै नूरुपट् टुळदेन वुदिर्त्तान् 3748

कण्ट–उसको देखकर; तामरै कण्णन्–कमलाक्ष ने; अ–उस; कटवुळ् मा कतै–उस दिव्य बड़ी गदा को; अण्टर् नायकन्–अण्डनायक इंद्र के; आयिरम् कण्णिनुम् अटङ्का–हजारों नेत्रों में भी न समानेवाले; नूऱ उण्टै उटै–सौ गोलों के साथ रहनेवाले; पुण्टरीकत्तिन् मुकै अन्न–कमल-कली-तुल्य; पुकर् मुकम्–तेजोमुख; विट्टान्–(अस्त्र) चलाकर; नूऱु पटट्ु उळतु–सौ टुकड़े (पहले ही) हो गये थे; एन–ऐसा; उतिर्त्तान्–चूर कर दिया। ३७४८

कमलाक्ष ने उसे देखा। उन्होंने देवेंद्र की हज़ार दृष्टियों में भी न समा सकनेवाले हज़ार मृद्गोलों से जुड़ा हुआ कमल-कली-सा उज्ज्वल-मुख अस्त्र छोड़ा और उस दंडायुध को ऐसा चूर कर दिया कि लोगों को यह भ्रम पैदा हुआ कि क्या यह 'घड़ा' पहले ही सौ खंडों में फूटा था ? । ३७४८

तेय निन्ऱवन् शिलैवलङ् गाट्टिनान् तीराप्
पेयै यॆन्पल तुरप्पदिङ् गिवन्पिळै यामल्
आय तन्पॆरुम् बडैयॊडु मडुहळत् तविय
मायै यिन्पडै तॊडुप्पलॆन् ड्रिरावणन् मदित्तान् 3749

तेय निन्ऱवन्–क्षय होने को जो था (उसने); चिलै वलम् काट्टिनान्–धनु-बल दिखाया है; तीरा–अवार्य; पेयै–पिशाच-सम; पल–अनेक अस्त्रों को; तुरप्पतु एन् पलन्–छोड़ने से क्या लाभ; इङ्कु–यहाँ; इवन्–यह; पिळैयामल् आय–अचूक बने; तन् पॆरु पटैकलत्तोटुम्–अपने बड़े अस्त्रों के साथ; अटुकळत्तु–युद्ध के मैदान में; अविय–बुझ जाय ऐसा; मायैयिन् पटै–माया का अस्त्र; तॊटुप्पन्–चलाऊँगा; एन्ऱु–ऐसा; इरावणन् मतित्तान्–रावण ने ठाना। ३७४९

क्षयोन्मुख रावण ने विचारा— असाधारण धनु-दक्षता दिखानेवाले इस पर पिशाच-सम अनेक अस्त्रों को चलाने से क्या लाभ है जो इसे मार नहीं सकें। यह इसके अपने अमोघ अस्त्र-शस्त्रों के साथ इस युद्ध के मैदान में मिट जाय —ऐसा मैं अपना माया-अस्त्र छोड़ूँगा। ३७४९

पूशनैत्तॊळिल् पुरिन्दुतान् मुऱैमैयिऱ् पोऱ्ऱुम्
ईशनैत्तॊळु दिरुडियुन् जन्दमु मॆण्णि
आशै पत्तिनु मन्दरप् परप्पिनु मडङ्गा
वीशितन्नॊंल विल्लिडैत् तॊडैहॊडु विट्टान् 3750

पूचनै तॊऴिल्-पूजा-कर्म; पुरिन्तु-संपन्न करके; तानृ-स्वयं; मुऱ्ऱैमैयिल्-यथारीति; पोऱ्ऱुम्-जिनकी स्तुति करता था; ईचनै-ईश्वर की; तॊऴुतु-वंदना करके; इट्टियुम् चन्तमुम् ऎण्णि-मंत्र के ऋषि और छंद का स्मरण करके; आचै पत्तिनुम्-दसों दिशाओं में; अन्तरम् परप्पिनुम्-अंतरिक्ष के विसतर में; अटङ्का-समा नहीं सके ऐसा; चॆल-चलने; विल् इटै तॊटै कॊटु-धनु में संधान कर; वीचिनन् विट्टान्-जोर से चलाया। ३७५०

उसने ऐसा निश्चय करके वह अस्त्र लिया। उसकी यथावत् पूजा की। फिर अपने इष्टदेव परमेश्वर की स्तुति की और उसके योग्य मंत्र के निर्माता ऋषि और उसके छंद का स्मरण कर धनु में संधान करके उसे चलाया जो ऐसा व्याप्त होकर चला कि लगता था कि दसों दिशाओं और आकाश के विस्तार में भी वह समा नहीं सके। ३७५०

मायै पॊत्तिय वयप्पडै विडुदलुम् वरम्बिल्
काय मॆत्तनै युळनॆडुङ् गायङ्गळ् कदुव
आय मुऱ्ऱॆऴुन् दारॆन वार्त्तन रमरिल्
तूय कॊऱ्ऱवर् शुडुशरत् तान्मुन्बु तुणिन्दार् 3751

मायै पॊत्तिय-मायापूर्ण; वयम् पडै-विजयदायी अस्त्र; विडुतलुम्-छोड़ने पर; तूय-पवित्र; कॊऱ्ऱवर्-प्रतापी श्रीराम और लक्ष्मण के; चुटु चरत्तान्-दाहक अस्त्रों से; मुन्पु-पहले; अमरिल्-युद्ध में; तुणिन्तार्-जो कट मरे उनके; वरम्पिल् कायम्-असंख्य शरीर; ऎत्तनै उळ-जितने हैं; नॆटु कायङ्कळ् कतुव-(वे सब) उसी आसमान को छूते हुए; आयम् उऱ्ऱु-(जीव) लाभ पाकर; ऎऴुन्तार् ऎन-उठे कहकर; आर्त्तनर्-शोर मचा उठे। ३७५१

माया-भरे विजयदायी अस्त्र को चलाने पर विजयी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा पहले युद्ध में हत होकर जितने वीरों के शव पड़े थे, वे सभी जीवित होकर आकाश स्पर्श करते हुए मानो जी उठे। यह देखकर सबने यह कहते हुए आनंदनर्दन किया कि सब जी उठे। ३७५१

इन्दि रऱ्कॊरु पहैवनु मवऱ्किळै योरुम्
तन्दि रप्पॆरुन् दलैवरुन् दलैत्तलै योरुम्
मन्दि रच्चुऱ्ऱत् तवर्हळुम् वरम्बिलर् पिऱरुम्
अन्द रत्तिनै मऱैत्तनर् मऴैयुह वार्प्पार् 3752

इन्तिरऱ्कु-इंद्र का; ऒरु-एक; पकैवनुम्-शत्रु (इंद्रजित्) और; अवऱ्कु इळैयोरुम्-छोटे भाई; पॆरुम्-बड़े; तन्तिर तलैवरुम्-सेनापति; तलै तलैयोरुम्-अन्य मुखिये; मन्तिरम् चुऱ्ऱत्तवर्कळुम्-मंत्रीमंडल के लोग; वरम्पु इलर् पिऱरुम्-और अगणित अन्य सभी; अन्तरत्तिनै-आकाश को; मऱैत्तनर्-छिपाते हुए; मऴै उक-मेघों को भी चुआते हुए; आर्प्पार्-घोष उठाने लगे। ३७५२

इन्द्रशत्रु इन्द्रजित्, उसके भाई अतिकाय, कुंभ, निकुंभ आदि बड़े-बड़े

सेनापति, अन्य मुखिये, मंत्री लोग और अन्य असंख्य राक्षस आकाश को छिपाते हुए ऐसे शोर मचा उठे कि मेघ भी छितर गये। ३७५२

कुडप्पॅ	रुञ्जॅविक्	कुन्ऱमु	मऱ्ऱुळ	कुळ्वुम्
पडैत्त	मूलमात्	तानैयु	मुदलिय	पट्ट
विडैत्तॅ	ऴुन्दन	यानैतेर्	परिमुदल्	वॅव्वे
ऱडैत्त	वूर्दिह	ळनैत्तुमुवन्	दवुवऴि	यडैय 3753

कुटम् पॅरु चॅवि–कुंभ के समान बड़े कानोंवाले; कुन्ऱमुम्–पर्वत (सम कुंभकर्ण और); मऱ्ऱुळ कुळ्वुम्–अन्य दल; पटैत्त–जो उसका हो रहता था वह; मूल मा तानैयुम्–मूलबल की सेना; मुतलिय पट्ट–आदि जो मर चुके; यानै तेर् परि–हाथी, रथ और अश्व; मुतल्–आदि; वेऱु वेऱु अटैत्त ऊर्तिकळ्–और और बहुत वाहन; अनैत्तुम् वन्तु–सब आकर; अ वऴि अटैय–जब वहाँ पहुँचे; विटैत्तु ऍऴुन्तन–क्रोध के साथ उठे। ३७५३

कुंभ-सम बड़े कानों वाला कुंभकर्ण और अन्य वीर, और मूलबल के वीर, गज, तुरग, रथादि सभी वाहन उठे और वहाँ आकर इकट्ठे हुए। और क्रोध दिखाने लगे। ३७५३

आयि	रम्वॅरु	वॅळ्ळमॅन्न्	ऱऱिञरे	यऱैनुव
कायुशि	नप्पॅरुङ्	गडऱ्पडै	कळप्पट्ट	वॅल्लाम्
ईश	निऱ्पॅऱ्ऱ	वरत्तिना	लॅय्दिय	वॅन्नत्
तेश	मुऱ्ऱवुम्	जॅऱिन्दन	तिशैहळुन्	दिहैक्क 3754

पॅरु आयिरम् वॅळ्ळम् ऍन्ऱु–बड़ा सहस्र वॅळ्ळम्, ऐसा; अऱिञरे अऱैनृत–शास्त्रज्ञ-गणित; कळम् पट्ट–मैदान में जो मरे पड़े थे; काय् चिनम्–संतापक क्रोधी; पॅरु कटल्–बड़े सागर-सम; पटै ऍल्लाम्–सारी सेना; ईचनिल् पॅऱ्ऱ वरत्तिनाल्–परमेश्वर से प्राप्त वर से; ऍय्तिय ऍन्न–जीव लाभ पाये, ऐसा; तिचैकळुम् तिकैक्क–दिशाओं के लोगों को चकित करते हुए; तेच मुऱ्ऱवुम्–देश भर में; चॅऱिन्तन–ठस भर गये। ३७५४

गणितज्ञों द्वारा बड़ा हजार वॅळ्ळम् गणित मृतक शरीर, सभी क्रुद्ध वीरों की सेना का सागर मानो परमेश्वर से प्राप्त वर के बल से जीवंत हों ऐसे उठकर देश भर में व्याप गये जिसको देखकर सारी दिशाएँ चकित हो गयीं। ३७५४

शॅन्ऱ	वॅङ्गणुन्	देवरु	मुनिवरुञ्	जिन्द
वॅन्ऱ	वॅङ्गळैप्	पोलुमुयाम्	विळिवदु	मुळदे
इन्ऱु	काट्टुदु	मॅय्दुमि	नॅय्दुमि	नॅन्नाक्
कॊन्ऱ	कॊऱ्ऱवर्	तम्बॅयर्	कुऱित्तऱै	कूवि 3755

वॅन्ऱ्ऱु–जीता; ॲङ्कळैपोलुम्–हमें क्या; याम्–हम; विळिवतुम् उळते–मरेंगे भी क्या; इन्ऱु काट्टुतुम्–आज दिखा देंगे; ॲय्तुमिन् ॲय्तुमिन्–आओ-आओ; ॲन्ऩा–कहकर; कॊन्ऱ–जिन्होंने मारा; कॊर्ऱ्ऱवर्तम्–उन वीरों के; पॅयर् कुऱित्तु–नाम साफ़ कहते हुए; अऱै कूवि–ललकार करके; तेवरुम् मुनिवरुम् चिन्त–देवों और मुनियों को भागने देते हुए; ॲङ्कणुम् चॅन्ऱ–(वे जीवित हुई सेनाएँ) सर्वत्र गयीं । ३७५५

वे वीर अपने-अपने घातकों से यह ललकार करते हुए सर्वत्र बढ़े आये कि क्या हम पर जीत पाये ? क्या हम भी यों मर जायँगे ? अब आओ, आओ । इससे देव और मुनिगण तितर-बितर हो गये । ३७५५

पारि डन्दुकॊण् डॅळुन्दन पाम्बॅनुम् बडिय
पारि डन्दुनॅन् दॅळुन्दन मलॅयॅनप् पडिय
पेरि डङ्गदु वरिदिनि विशुम्बॅनप् पिऱन्द
पेरि डङ्गरित् कॊडुङ्गुऴै यणिन्दन पेय्हळ् 3756

पाम्पु (वासुकी) आदि नाग; पार् इटन्तु कॊण्टु–भूमि को भेदते हुए; ॲऴुन्तन–निकले; ॲऩुम् पटिय–ऐसे और; पेर् इटम्–बड़ी पृथ्वी; कतुवरितु–रहने के लिए पर्याप्त नहीं; इति–अब; विचुम्पु–आकाश ही; ॲन–मानो ऐसा; मलै अनन पटिय–पर्वतों के समान; पारिटम्–भूत; तुन्नॆनु–जल्दी; ॲऴुन्तन–ऊपर उठे; पेर् इटङ्करित्–बड़े ग्राहों के समान; कॊटु कुऴै–वक्रकुंडल; अणिन्तन–जिन्होंने पहन रखे थे वे; पेय्कळ्–पिशाच; पिऱन्त–उदित हुए । ३७५६

भूत शीघ्र उठ आये और वे वासुकी आदि सर्पों के समान लगे जो भूमि को फाड़कर बाहर निकले हों । उनके शरीर पर्वतों के समान थे जिसको देखकर ऐसा लगता था कि अब भूमि में स्थान नहीं, आकाश में ही रहना होगा । फिर पिशाच भी आये जो कि बड़े ग्राहों के समान थे और जो कि वक्र कुंडल पहने हुए थे । ३७५६

ताम शत्तिनिऱ् पिऱन्दव रऱन्दॅऱुन् दहैयर्
ताम शत्तिनिऱ् चॅल्हिलाच् चदुमुहत् तवऱ्कुत्
ताम शत्तिरञ् जॅय्बवर् परिन्दनर् तळरत्
ताम शत्तिरञ् जित्तिरम् बॊऱन्दिनर् तयङ्ग 3757

तामचत्तिनिल् पिऱन्तनर्–तामसास्त्र से उद्भूत; अऱम् तॆऱुम् तकैयर्–धर्म-नाशक गुण वाले; ताम्–स्वयं; अचत्तिनिल्–बुरे मार्ग पर; चॆल्किला–जो न जाते; चतु मुकत्तवऱ्कु–चतुर्मुख ब्रह्मा के लिए; उत्तामम्–उत्तम; चत्तिरम्–यज्ञ; चॆय्पवर्–जो करते हैं वे मुनि; परिन्तनर्–व्यग्र होकर; तळर–निर्बल पड़ें ऐसा; उत्तमस्–उत्तम; चत्तिरम्–हथियारों को; तयङ्क–चमकाते हुए; चित्तिरम्–विचित्र; पॊऱन्तिनर्–दिखे । ३७५७

मायास्त्र से उद्भूत, धर्मनाशक शक्तियुक्त, ये लोग उज्ज्वल अस्त्र-

शस्त्रों के साथ अनोखे रूप से आतंकमय लगे और बुरे मार्ग पर न जाने वाले, चतुर्मुख की तृप्त्यर्थ उत्तम यज्ञ करनेवाले मुनिगण उद्विग्न होकर निर्बल पड़ गये। ३७५७

ताम विन्दुमी दॅळुन्दवर्क् किरट्टियिन् तहैयर्
ताम विन्दुविन् पिळवॅनत् तयङ्गुवा ळॅयिट्रर्
ताम विऴ्जैयर् कडऱ्पॅरुन् दहैयिनर् तरळत्
ताम विऴ्जैयर् तुवन्ऱिनर् तिशैतोऱुन् दरुक्कि 3758

तान् अविन्तु–खुद मरकर; मीतु–फिर; ॲळुन्तवर्क्कु–जो जीवित हो गये उनके; इरट्टियिन् तकैयर्–दुगुने; तामम्–उज्ज्वल; विन्तुविन्–चंद्र के; पिळवु अॅन–टुकड़े के समान; तयङ्कुम्–शोभनेवाले; वाळ् ॲयिट्रर्–दाँतों से युक्त; ताम्–लांघनेवाली; अविञ्चैयर्–माया करने में समर्थ; कटल्–समुद्र के समान; पॅरु तकैयिनर्–बड़े परिणाम के (असुर); तरळम् तामम्–मोती-माला-धारी; विञ्चैयर्–विद्याधर; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाओं में; तरुक्कि–सदंभ; तुवन्ऱिनर्–भीड़ लगाकर आये। ३७५८

इनके अलावा सागर-सम बड़ी संख्या में सुर भी आये। वे मरकर जी उठे राक्षसो के दुगुने बल रखते थे। अर्धचंद्र-सम उज्ज्वल दाँतों वाले थे और छलाँग मारने की मायाशक्ति रखनेवाले थे। फिर मुक्तमाला-मंडित विद्याधर आये। सभी सदंभ सारी दिशाओं में भीड़ लगाते हुए आये। ३७५८

ताम डङ्गलु मुडङ्गुळै याळियुन् दहुवार्
ताम डङ्गलु नॅडुन्दिशै युलहोडुन् दहैवार्
ताम डङ्गलुङ् गडलुमोत् तार्दरुन् दहैयार्
ताम डङ्गलुङ् गॊडुञ्जुडर्प् पडैहळुन् दरित्तार् 3759

ताम्–छलाँग मारनेवाले; मटङ्कलुम्–सिंह की; मुटङ्कु उळै–और वक्र अयालवाले; याळियुम्–शरभों की; तकुवार्–समानता करनेवाले और; ताम् अटङ्कलुम्–आप सारा; नॅटु तिचै–लंबी दिशाओं को; उलकोटुम्–पृथ्वी के साथ; तकैवार्–रोक सकनेवाले; ता–सशक्त; मटङ्कलुम्–युगांत की अग्नि की; कटलुम्–और समुद्र की; ऑत्तु–समानता करके; आर् तरुम्–सर्वत्र भर के; तकैयार्–योग्य रहनेवाले वे; ताम्–उज्ज्वल; मटङ्कलुम्–वज्रों और; कॊटु-ङ्कुर; चुटर्–ज्वलंत; पटैकळुम्–हथियारों को; तरित्तार्–धारण किये रहे। ३७५९

वे सभी छलाँग मारनेवाले सिंहों के और वक्र अयालवाले शरभों के सदृश थे। वे सभी दिशाओं को पृथ्वी के साथ मेटने की शक्ति रखते थे। युगांत की अग्नि तथा सागर के समान थे और समरभूमि भर में

व्याप सकनेवाले थे। वे ज्वलंत अशनि और क्रूर उज्ज्वल हथियार धारण किये हुए थे। ३७५९

इत्तैय तन्मैयै नोक्किय विन्दिरै कोळुनन्
वित्तैय मट्रिदु मायमो विदियदु विळैवो
वत्तैयुम् वन्कळ लरक्करतम् वरत्तित्तो मट्रो
नित्तैदि यामेनिर् पहरॅन मादलि निहळ्त्तुम् 3760

इत्तैय-ऐसी; तन्मैयै-स्थिति को; नोक्किय-देखकर; इन्दिरै कोळुनन्-इन्दिरापति ने; इतु-यह; वित्तैयम् मायमो-मायाकार्य है क्या; वितियतु विळैवो-विधि का विधान; वत्तैयुम्-धृत; वल् कळल्-कठोर पायलधारी; अरक्कर् तम्-राक्षसों के; वरत्तित्तो-वर से; मट्रो-अन्य क्या; नित्तैतियाम् ऍनिल्-जानते हो तो; पकर्-बताओ; ऍन्न-पूछा तो; मातलि निकळ्त्तुम्-मातलि बोले। ३७६०

इस बात को देखकर इन्दिरापति श्रीराम ने अपने सारथी मातलि से पूछा कि यह माया का कृत्य है? या विधि की लीला? या धृत पायल-धारी राक्षसों के वर का फल है? या कोई अन्य हेतु है? अगर तुम जानो तो बताओ। तब मातलि बोला। ३७६०

इरुप्पुक् कम्मियर् किळैनुळै यूशियोन् ट्रियट्रि
विरुप्पिट् कोडियाल् विलैक्कॅनुम् बदडियित् विट्टान्
करुप्पुक् कार्मळै वण्णवक् कडुन्दिशैक् कळिट्रिन्
मरुप्पुक् कल्लिय तोळवन् मोळरु मायम् 3761

करुप्पु-अकाल में उठ आये; कार् मळै-काले मेघ-सम; वण्ण-रंग वाले; इरुप्पु कम्मियर्कु-लुहार के लिए; इळै नुळै-सूत्र जिससे निकलता है; ऊचि ऑन्ऱु-ऐसी एक सूई; इयट्रि-बनाकर; विरुप्पित्-चाव के साथ; विलैक्कु कोटियाल्-खरीद लो; ऍन्नुम्-कहनेवाले; पतटियित्-मूर्ख के समान; अ-उन; कटु-कठिन मन; तिचै कळिट्रित्-दिग्गजों के; मरुप्पु-दाँतों से; कल्लिय-जो नोचे गये; तोळवन्-वैसे कंधोंवाले रावण ने; मोळ्वरुम्-अप्रतिहत; मायम्-मायास्त्र; विट्टान्-प्रेरित किया। ३७६१

अकाल में उठ आये मेघ के समान वर्णवाले! (अत्यंत आनंद-दायक मेघश्याम!) लुहार के पास जाकर जो कहे कि यह तागा घुसने देने वाली सूई क्रय कर लो उस बेवकूफ़ के समान इस रावण ने, जिसके कंधे कठोर दिग्गजों के दाँतों से नोच लिया गया था, यह मायास्त्र छोड़ा है। उसका निवारण साधारण रूप से दुस्साध्य है ही। ३७६१

वीक्कु वाययिल् वॅळ्ळॅयिट् ट्रवित्तॅव् विडत्तै
मायक्कु मानॅडु मन्दिरन् दन्ददोर् वलियित्

नोय्क्कु नोय्तरु विनैक्कुनिन् पॆरुम्बॆयर् नौडियिन्
नीक्कु वायुळै निनैक्कुवार् पिऱप्पॆन नीङ्गुम् 3762

नोय्क्कुम्–भवरोग (-निवारण) के लिए; नोय् तरु विनैक्कुम्–उस रोग को देनेवाले कर्मों को दूर करने के लिए; निन् पॆरुम् पॆयर्–आपके श्रेष्ठ नाम का; नौडियिन्–उच्चारण करें तो; नीक्कुवाय्–उनको दूर करनेवाले; वाय्–मुख में; अयिल्–तीक्ष्ण; वॆळ् ऎयिऱु–श्वेत दाँत (जिसके हैं); अरविन्–सर्प के; वीक्कुम् वॆव्विटत्तै–मारक भयंकर विष को; मायक्कुम्–विफल करनेवाले; नॆट्टु मन्तिरम्–उत्तम मंत्र द्वारा; तन्तुतु–दत्त; ओर् वलियित्–एक वल के समान; उन्नै निनैक्कुवार्–आपके स्मरण करनेवाले के; पिऱप्पु ऎन–जन्मके समान; नीङ्कुम्–हट जाएगा (ऐसा मातलि ने कहा)। ३७६२

भवरोग तथा भवरोग के हेतु कर्म के भी, नाम-स्मरण मात्र से नाशक हे नाथ! तीक्ष्ण श्वेत दाँतों के सर्प के विष को विफल करनेवाले श्रेष्ठ मंत्रदत्त वल के समान आपके अस्त्र के प्रभाव से यह मायास्त्र आपके स्मरणकर्ता के जन्म के समान दूर हो जायगा। ३७६२

वरत्ति नायिनु मायैयि नायिनुम् वलियोन्
उरत्ति नायिनु मुण्मैयि नायिनु मोडत्
तुरत्ति यालॆन वानमाक् कडुङ्गणै तुरन्दान्
शिरत्तिनान् मऱै यिऱैञ्जवुन् देडवुञ् जेयोन् 3763

नान् मऱै–चतुर्वेदों के; चिरत्तिन्–शीर्ष (उपनिषदों) से; इऱैञ्चयम्–स्तुति करने और; तेटवुम्–अन्वेषण के लिए; चेयोन्–दूर के श्रीराम ने; वलि योन्–बलवान जो है उसको; वरत्तिन् आयिनुम्–वर से सही या; मायैयिन् आयिनुम्–माया से ही सही; उरत्तिन् आयिनुम्–या अपने शरीर-बल से हो; उण्मैयिन् आयिनुम्–या सत्य से; ओट–भागे ऐसा; तुरत्ति–भगा दो; ऎन–कहकर; मा–बड़े; कटु–तेज जानेवाले; आनम् कणै–ज्ञानास्त्र; तुरन्तान्–चलाया। ३७६३

तब चतुर्वेदशीर्ष, उपनिषदों के भी अन्वेषण तथा स्तुति के परे रहने वाले श्रीराम ने बहुत बड़े तथा तीक्ष्ण ज्ञानास्त्र को छोड़ा और संकल्प किया कि वर से हुई हो, चाहे माया से; शरीर-बल से चाहे सत्य से, इस माया को भगा दो। ३७६३

तुऱत्तल लाऱ्‌ऱुऱु ञानमाक् कडुङ्गणै तॊडर
अऱत्तल लादुशॆल् लादुनल् लऱिवुवन् दणुहप्
पिऱत्तल लाऱ्‌ऱुम् बॆवॆसे पिणिप्पुऱत् तम्मै
मऱत्तल लाऱ्‌ऱुन्द मायैयित् सायन्दवदु मायम् 3764

तुऱत्तलाल्–छोड़ने से; तुऱु–घना; कटु–तेज; मा–बड़े; आनम् कणै–ज्ञानास्त्र के; तॊटर–पीछा करने से; अऱत्तु अलातु–अधार्मिक रीति से; चॆल्लातु–न जाकर; नल् अऱिवु वन्तु अणुक–अच्छे ज्ञान के आने पर; पिऱत्तलाल्–

जन्म से; तुड्रम्–गंभीर; पेतैमै–अज्ञान के; पिणिप्पु उड्र–बंधन के होने से; तम्मै मड्रत्तलाल्–आत्म-विस्मृति से; तन्त–उद्भूत; सायैयिङ्–माया (जाने) के समान; मायम् साय्न्ततु–माया हट गयी। ३७६४

श्रीराम से प्रेरित होकर वह कठोर ज्ञानास्त्र चला तो अधार्मिक मार्ग पर जाने से रोकते हुए जब ज्ञान आ जाता है तब जैसे अविद्या-जनित आत्म-विस्मृति-दत्त माया छिप जाती है, वैसे माया दूर हट गयी। ३७६४

नीलङ् गॊण्डार् कण्डत्तु नेमिप् पडैयोनुम्
मूलङ् गॊण्डार् कण्डह् रावि मुडिविप्पान्
कालङ् गॊण्डार् कण्डन मुन्ने कळिविप्पान्
शूलङ् गॊण्डा नण्डरै यॆल्लान् दॊळिल् कॊण्डान् 3765

नीलम् कॊण्ड आर्–नीले रंग के; कण्टनुम्–कंठ वाले शिव और; नेमि पटैयोनुम्–चक्रायुधधर श्रीविष्णु; मूलम् कॊण्टार्–नाभी कमलोत्पन्न ब्रह्मा; कण्टकर् आवि मुटिप्पान्–कंटकों के प्राणहरणार्थ; कालम् कॊण्टार्–काल-निर्णय कर चुके; अण्टरै ॲल्लाम्–सभी देवों को; तॊळिल् कॊण्टान्–जिसने अपना कर्मचारी बना लिया था उसने; मुन्ने कण्टन–सामने दृष्ट (सब) को; कळिविप्पान्–मिटाने हेतु; चूलम् कॊण्टान्–शूल लिया। ३७६५

नीलकंठ शिव, चक्रधर विष्णु और उनके नाभिकमलोत्पन्न ब्रह्मा—इन तीनों ने कंटकों के नाश का काल निर्णय कर दिया है! इसलिए देवों को अपने दास बना रखनेवाले रावण ने अपने सामने रहे सभी जीवों का नाश कर देने के विचार से शूल को अपने हाथ में ले लिया। ३७६५

कण्डा कुलमुड् डायिर मार्क्कितृ रुडुकणिड्
कण्डा कुलमुड् डुम्ब रयिर्क्किन् ड्रुदुवीरर्
कण्डा कुलमुड् डुम्जुडु मॆन्ड्रक्कळल् वॆय्योन्
कण्डा कुदन्मुन् शॆल्लवि शॆत्तुळ ळवुकण्डान् 3766

आयिरम् कण्ट आकुलम्–हजार घंटियों का समूह; मुड्रुम्–पूर्ण रूप से; आर्क्कित्तुरुतु–स्वरित हों ऐसा; उम्पर्–व्योमवासी; कण्टु–(जिसको) देखकर; आकुलम् उड्रु–व्याकुल होकर; अयिर्क्कितुरुतु–भ्रांत होते हों; वीरर् कण्–वीरों के; ता–बल को; कुलम्–और कुल को; मुड्रुम् चुटुम्–एक दम जला देगा; ॲन्ड्रु–ऐसा; अ कळल् वॆय्योन्–उस पायलधारी क्रूर लंकाधिप ने; कण् ताकुतल् मुन्–आँखों से देखने के पहले ही; चॆल्ल–जाने के लिए; विचैत्तु उळ्ळवु–जोर से जिसको चलाया था उस शूल को; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। ३७६६

उस शूल में हजार घंटियाँ बँधी थीं जो क्वणित हो रही थीं। देवगण उसे देखकर व्यग्र हुए और संशयमिश्रित भय करने लगे कि क्या होनेवाला है? उसे लंकाधिपति ने यह संकल्प करके छोड़ा कि सामने के

वीरों का सारा बल और कुल जला दो। दृष्टि लगने से पूर्व ही रावण से प्रेरित उस शूल को श्रीराम ने देखा। ३७६६

ऎरिया निऱ्कुम् वः(ह्)ऱलै मूऩ्ऱु मॆरियऩ्जत्
तिरिया निऱ्कत् तेवर्ह ळोडत् तिरळोड
इरिया निऱ्कु मॆव्वुल हुनृदन् नॊळियेयाय्
विरिया निऱ्कु निऱ्किल वार्क्कुम् विऴिशॆल्ला 3767

ऎरिया निऱ्कुम्–जो जलता है वह; पल् तलै–वह त्रिशूल; ऎरि मूऩ्ऱुम् अञ्च–तीनों अग्नियों को भयभीत करते हुए; तिरिया निऱ्क–घूमता आया, तब; तेवर्कळ् ओट–देव भागे ओर; तिरळ् ओट–वानरयूथ भागे; इरिया निऱ्कुम्–अस्त-व्यस्त; ऎव् उलकुम्–सभी लोकों में; तन् ऒळियेयाय्–अपनी ही ज्योति को; विरिया निऱ्कुम्–फैलाये जो रहा; आर्क्कुम्–(वह) किसी की भी; विऴि चॆल्ला निऱ्किलतु–दृष्टि में ठहरे बिना जाता रहा। ३७६७

वह त्रिशूल जलता हुआ, तीनों अग्नियों को भी भयभीत करता हुआ और घूमता हुआ आ रहा था। उसको देखकर देव भागे। वानरयूथ भागे। अस्त-व्यस्त सभी लोकों को प्रकाश से भरते हुए स्वयं तेज ही बनकर वह कहीं रुका नहीं और लोक में किसी की दृष्टि उस पर पड़ ही नहीं सकती थी। ३७६७

शॆल्वा यॆऩ्ऩच् चॆल्ल विडुत्ता त्तिवुतीर्त्तऱ्
कॊल्वाय् नीये वेऱॊरु वर्क्कुम् मुडैयादाल्
वल्वाय् वॆङ्गट् चूल मॆन्तुङ्गा लन्वळ्ळाल्
वॆल्वाय् वॆल्वा यॆऩ्ऱऩर् वानोर् मॆलिहिऩ्ऱार् 3768

वानोर्–देव; मॆलिकिऩ्ऱार्–म्लान होते हैं; चॆल्वाय्–चलो; ऎऩ्ऩ–कहकर; चॆल्ल विट्टुत्तात्–चलाया; इतु तीर्त्तऱ्कु–इसे मिटाने के लिए; नीये ऒल्वाय्–आप ही योग्य हैं; वेऱु ऒरुवर्क्कुम् उडैयातु–और किसी से नहीं टूटेगा; वल् वाय्–कठोरमुख; वॆम् कण्–सर्वनाशक; चूलम् ऎऩ्ऩुम् कालऩै–शूल रूपी काल को; वळ्ळाल्–करुणामय (प्रभु); नीये वॆल्वाय्–आप ही जीतें; ऎऩ्ऱऩर्–ऐसी प्रार्थना की। ३७६८

देवगणों को म्लान होने देते हुए रावण ने उसे 'चलो' कहकर छोड़ दिया। देवों ने श्रीराम से विनय की कि आप ही इसे दूर कर सकते हैं। यह किसी से तोड़े नहीं टूटेगा। हे करुणामय प्रभु! कठोर-मुख, भयानक इस शूल-यम को आप ही जीतें। ३७६८

तुन्नैयुम् वेहत् तालुरु मेरुन् तुण्णॆन्न
वन्नैयुङ् गालिऱ् ऱॊल्वन तन्नै मऱवादे

नित्तैयु ञातक् कण्णुडै यार्मेल् नितयादार्
वित्तैयम् बोलच् चिन्दित वीरत् शरम्वॅय्य 3769

तुतैयुम् वेकतूताल्–जाने की गति से; उरुम् एड्–अशनिराज भी; तुण् ॲत्त–बहल उठे ऐसा; चतैयुम्–घूमनेवाले; काल् ॲतूत–वात के समान; चॅल्वत–जानेवाले; वॅय्य चरम्–(श्रीराम के) कठोर शर; ततूतै मरवाले नित्तैयुम्–बिना भूले स्मरण करनेवाले; ञातम् कण् उडैयार् मेल्–ज्ञानचक्षुओं पर; नितैयातार्–ईश्वर-स्मरण न करनेवालों के; वित्तैयम्–षड्यंत्र; पोल–के समान; चिन्तित–गिरे। ३७६९

अतिवेग के साथ अशनिराज को भी भय में डालते हुए चक्रवात के समान जानेवाले श्रीराम के शर ईश्वरस्मरण-कर्ता ज्ञानियों पर ईश्वर-विमुख बुरे लोगों के षड्यंत्र जैसे कुछ असर नहीं कर पाते वैसे ही शूल पर गिरे और व्यर्थ हुए। ३७६९

ॲय्यु मॅय्युन् देव रुडैत्तिण् पडै यॅल्लाम्
पॉय्युन् दुय्यु मौत्तवै शिन्दुम् बुवि तन्दात्
वॅयुञ् जाब मॉप्पॅत् वॅप्पिन् वलि कण्डान्
ऐय नित्राल् शॅय्वहै यॉत्रु मरि हिल्लात् 3770

पुवि तन्तात्–भूपाल श्रीराम ने; तेवर् उडै–देवों के; तिण् पडै ॲल्लाम्–सभी सशक्त अस्त्रों को; ॲय्युम् मॅय्युम्–बिना छोड़े चलाया; अवै–वे; पॉय्युम् तुय्युम् ऑतुतु–असत्य और रूई के समान; चिन्तुम्–गिर गये; ऐयन्–प्रभु ने; वॅयुम् चापम् ऑप्पु ॲत–गाली के शाप के समान; वॅप्पित्–गरम उस शूल का; वलि कण्टात्–बल देखा; चॅय् वकै ऑतुरुम्–करने योग्य प्रकार कुछ; अऱिकिल्लात्–नहीं सोच सके; नित्रात्–खड़े रहे। ३७७०

भूपाल श्रीराम ने सारे दिव्यास्त्र लगातार छोड़े। पर वे असत्य और रूई के समान बिखर गये। श्रीराम ने देखा कि शाप के समान वह शूल अमोघ रूप से नाशकारी है। उसका बल जानकर वे किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े रहे। ३७७०

मऱन्दात् शॅय्है माऱॅदिर् शॅय्युम् वहैयॅल्लाम्
तुऱन्दा ॲत्ता वुम्बर् तुणुक्कन् वॉडर्वुऱ्ऱार्
अऱन्दा तञ्जिक् काल्कुलै यत्ता तऱियादे
पिऱन्दात् नित्रात् वन्ददु शूलम् बिऱरञ्ज 3771

चॅय्कै मऱन्तात्–कुछ करना भूलकर; माऱु–विपरीत; ॲतिर् चॅय्युम् वकै ॲल्लाम्–सामना करने के सारे प्रकारों को; तुऱन्तात्–छोड़ गये; ॲत्ता–कहकर; उम्पर्–देवगण; तुणुक्कम् तॉटर्वु उऱ्ऱार्–भयग्रस्त हुए; अऱम् अञ्चि–धर्म डरा; काल् कुलैय–उसके पैर कंपित हुए; पिऱन्तात्–(मनुष्य-रूप में) अवतरित जो हुए थे वे; अऱियाते नित्रात्–बिना जाने खड़े रहे; शूलम् पिऱर् अञ्च–शूल, अन्य (सबों) को भय में डालते हुए; वन्ततु–आया। ३७७१

देवगण यह कहते हुए भयग्रस्त हुए कि श्रीराम कुछ करना भूल गये। उसके आगे उसके विपरीत किये जायँ ऐसे सभी उपायों को उन्होंने छोड़ दिया है। धर्म भी डर गया और उसके पैर काँपने लग गये। मनुष्य के रूप में प्रकट श्रीराम विना (अपना परत्व) जाने खड़े रह गये। शूल सबको भयभीत करता हुआ आया। ३७७१

शङ्गा रत्तार् कण्डै यॉलिप्पत् तळल्शिन्दप्
पॉङ्गा रत्तान् मार्बॅदि रोडिप् पुहलोड्म्
वॅङ्गा रौत्तान् मुड्रु मुत्तिन्दान् वॅहुळिप्पेर्
उङ्गा रत्ता लुक्कदु पन्नू ऱुदिराहि 3772

चङ्कारत्ताल्—संहार-कार्य से; कण्टै ऑलिप्प—घंटियों के बजते; तळल् चिन्त—आग के गिरते; पॊङ्कु कारत्तात्—उभरनेवाले क्रोध के साथ; मार्पु ऍतिर् ओटि—वक्ष के सामने जाकर; पुकलोटुम्—जब घुसा तभी; वॅम् कार् ऑत्तान्—क्रूर मेघ-सम; मुट्रुम् मुत्तिन्तान्—बिलकुल नाराज हुए; वॅकुळि—क्रोध से उत्पन्न; पेर् उङ्कारत्ताल्—हुंकार से; पल् नूऱु—अनेक सौ; उतिर् आकि—खंड होकर; उक्कतु—गिर गया। ३७७२

संहारकार्य पर घंटियों के स्वर के साथ आग छितराते हुए वह उभरते क्रोध के श्रीराम के वक्ष के सामने आया और ज्योंही वह उनके वक्ष में घुसा, त्योंही घनश्याम ने क्रोध के साथ 'हुंकार' किया। उसकी ध्वनि से वह शूल अनेक सौ खण्डों में टूटकर चू गया। ३७७२

आर्प्पा रान्ना रच्चमुमट्रा रलर्मारि
तूर्प्पा रान्नार् तुळ्ळल् पुरिन्दार् तॊळुहिन्ड्रार्
तीर्प्पाय् नीये तीयॅन वेड्राय् वरुतीमै
पेर्प्पाय् पोला मॅन्ड्रनर् वान्नो रुयिर्पॅट्रार् 3773

वान्नोर्—व्योमवासियों की; उयिर् पॅट्रार्—जान में जान आयी; आर्प्पार् आन्नार्—शब्द कर उठे; अच्चमुम् अट्रार्—भयविमुक्त हुए; अलर् मारि—पुष्प-वर्षा; तूर्प्पार् आन्नार्—करनेवाले बने; तुळ्ळल् पुरिन्तार्—उछल-कूद मचायी; तॊळुकिन्ड्रार्—विनय करते; तीर्प्पाय् नीये—मेटनहार आप ही; ती ऍन्न—अग्नि के समान; वेड्राय् वरु तीमै—अलग आनेवाले संकट; पेर्प्पाय् पोलाम्—दूर करनेवाले बनेंगे; ऍन्ड्रनर्— । ३७७३

यह देखकर देवों की जान में जान आयी। उन्होंने आनंदनर्दन किया। भयविमुक्त होकर पुष्पवर्षा करायी। उछल-कूद मचाकर स्तुति की कि शूलहर्ता आप ही और आनेवाले सभी अग्नि-सम संकटों को दूर करनेवाले बन गये। ३७७३

वॅन्ड्रा तॅन्न्ड्रे पुळ्ळम् वॅयर्त्तान् विडशूलम्
कॊन्ड्रा तॅन्निर् पोहल दॅन्न्म् कॊरुळ्कॊण्डान्

ऑन्ड्रा मुङ्गा रत्तिडै युक्को डुवल्काणा
निन्ड्रा नन्नाळ् वीडण नार्शोल् निनैवुर्ड्रान् 3774

विट्टु बूलम्–जो शूल में छोड़ता; पोन्ड्रान् ॲन्तिल् पोकलतु–नहीं मरेगा तो दूर नहीं होगा; ॲन्नुम् पोरुळ्–यह सिद्धांत; कोण्टान्–जो मन में रखता था; ऑन्ड्र आम्–एक अपूर्व; उङ्कारत्तिटै–हुंकार से; उक्कु ओट्टतल्–टूटकर चला यह बात; काणा निन्ड्रान्–देखकर स्तब्ध रहकर; वॆन्ड्रान्–हम पर यह विजय पा चुका; ॲन्ड्रे–सोचकर; उळ्ळम्–मन में; वॆयर्त्तान् (डर से) स्वेद से युक्त हो गया; अन् नाळ्–उस दिन का; वीटणन्नार् चॊल्–विभीषण का कथन; निनैवुर्ड्रान्–स्मरण किया। ३७७४

रावण ने यही सिद्धांत बना लिया था कि मेरी शक्ति राम का अंत किये बिना हटेगी नहीं। पर उसने देखा कि एक ही हुंकार में वह टूटकर छिन्न-भिन्न हो गयी। सन्न बनकर उसने ताड़ लिया कि अब वह मुझे हरा देगा। तब उसका शरीर पसीने से भर गया। उसे उस दिन विभीषण ने जो कहा था वह कथन स्मरण हो आया। ३७७४

शिवनो वल्लन् नान्मुह नल्लन् तिरुमालाम्
अवनो वल्लन् मॆय्वर मॆल्ला मडुहिन्ड्रान्
तवनो वॆन्निर् चॆय्दु मुडिक्कुन् दरनल्लन्
इवनो तानव् वेद मुदट्का रणनॆन्ड्रान् 3775

मॆय् वरम् ॲल्लाम्–सच्चे सभी वरों को; अट्किन्ड्रान्–मटियामेट करता है; चिवनो अल्लन्–यह शिव नहीं; नान् मुकन् अल्लन्–चतुर्मुख नहीं; तिरुमालाम् अवनो अल्लन्–श्रीविष्णु नहीं; तवनो ॲन्तिल्–बड़े तपस्वियों में एक है क्या; चॆय्तु मुटिक्कुम् तरन् अल्लन्–कर चुकने योग्य नहीं लगता; इवन्–यह; अ वेतम् मुतल् कारणनो–क्या वह वेदमूल भगवान है; ॲन्ड्रान्–(ऐसा संशयवचन) कहा। ३७७५

'यह मेरे सभी सच्चे वरों को एक दम बेकार कर रहा है। यह क्या शिव है? नहीं। चतुर्मुख भी नहीं। श्रीविष्णु नहीं। बड़ा तपस्वी भी होने योग्य नहीं दिखता।' यह तर्क करके रावण ने संशय किया कि क्या यह वेदमूल नारायण तो नही? । ३७७५

यारे तुन्दा नाहुक यानॆन् तनियाण्मै
पेरे निन्ड्रे वॆन्ड्रि मुडिप्पॆन् पॆयर्हिल्लेन्
नेरे शॆल्वन् कॊल्लॆ नरक्क निलैयॆय्दि
वेरे निर्कु मीळ्हिलॆ नॆन्ना विडलुर्ड्रान् 3776

यारेनुम् तान् आकुक–कोई भी हो; यान्–मैं; ॲन्–अपना; तनि आणमै पेरेन्–अपनी निजी वीरता से नहीं हटूंगा; निन्ड्रे–स्थिर रहकर; वॆन्ड्रि मुटिप्पॆन्–विजय पूरा करूंगा; पॆयर्किल्लेन्–पीछे नहीं हटूंगा; कॊल्ल–मारे जाने के लिए (हो तो भी); नेरे चॆल्वन् –सीधे जाऊंगा; ॲन् अरक्कन्–कहनेवाले रावण ने;

निमिरवु अॅय्ति–तनकर; वेर् निऱ्कुम्–(विजय की) जड़ मेरे पास स्थिर रहेगी; मीळ्किलेंन्–नहीं लौटूंगा; अॅन्ऱा–कहकर; विवल् उऱ्ऱान्–शर छोड़ने लगा। ३७७६

(उसे तामस बुद्धि ने घेर लिया :) 'कोई भी हो ! मैं अपनी वीरता को नहीं छोड़ूंगा। विजयी बनूंगा। हटूंगा नहीं। मारे जाने के लिए भी हो तो समक्ष जाऊँगा।' ऐसा सोचकर रावण नयी उमंग से भर गया। उसने कहा, विजय की जड़ मेरे पक्ष में जमेगी। नहीं तो लौटूंगा नहीं। रावण उत्तरोत्तर वाण चलाने लगा। ३७७६

निरुदित् तिक्कि निन्ऱवन् वॅन्ऱिप् पडैनॅन्जिल्
करुदित् तन्बाल् वन्द दवन्गैक् कॉडुकालन्
विरुदॆच् चिन्दुम् विल्लिन् वलित्तुच् चॅलविट्टान्
कुरुदिच् चॅङ्गण् तीयुह वालङ् गुलैवॆय्द 3777

निरुति तिक्किल्–नैर्ऋत (दक्षिण-पूर्व) दिशा में; निन्ऱवन्–स्थित (दिग्पाल) के; वन्ऱि पटै–विजयदायी हथियार को; नॅञ्चिल् करुति–स्मृत करके; तन्पाल् वन्ततु–अपने पास आये उसको; अवन्–रावण ने; कै कॉटु–हाथ में लेकर; कालन् विरुतै चिन्तुम्–कालदेव के विरुदों को बिखेरनेवाले; विल्लिल् वलित्तु–धनु में रखकर खींचकर; कुरुति चॅम् कण्–रक्त-सम लाल आंखों से; ती उक–आग के निकलते; आलम् कुलैवु अॅय्त–संसार के अस्थिर होते; चॅल विट्टान्–चलाया। ३७७७

उसने नैर्ऋत (दक्षिणी पूर्व) दिग्पाल का स्मरण किया। उसका विजयदायी अस्त्र आया। उसने उसे हाथ में ग्रहण किया। यमविरुद-भक्षक अपने धनु पर चढ़ाया और प्रेरित किया। तब उसकी रक्तवर्ण आंखों से आग-सी निकल रही थी और संसार कंपायमान हो उठा। ३७७७

वैयन् दुन्जुम् वन्पिडर् नाह मनमन्जप्
पैयुङ् गोडिप् प:(ह)ऱले योडु मळविल्ला
मॅय्युम् वायुम् वॆंऱ्ऱन मेरुक् किरिशाल
नॊय्दॆंन् ऱोदुन् दन्मैय वाह नुळैहिन्ऱ 3778

वैयम् तुन्नुम्–संसार जिस पर स्थिर रहता है; वल् पिटर् नाकम्–कठोर फनों का नाग; मनम् अञ्च–मन में भय का अनुभव करे; कोटि–पंक्तिबद्ध; पल् तलैयोटुम्–अनेक सिरों के साथ; पैयुम्–फन; अळवु इल्ला मॅय्युम्–अपार बड़ा शरीर; वायुम् पॆऱ्ऱन–और मुख जिसके हों; मेरु किरि–वह मेरु पर्वत भी; चाल नॊय्तु अॅन्ऱु–बहुत ही छोटा है ऐसा; ओतुम् तन्मैय आक–कहने योग्य रीति के; नुळै किन्ऱ–बनकर आये। ३७७८

(उस अस्त्र के अनेकानेक सर्प बने। वे कैसे थे ?) एक एक को देखकर धरावाहक बड़े फनों वाला आदिशेषनाग भी मन में भय का अनुभव करे, ऐसे। अनेक सिरों, फनों से युक्त भीमकाय थे। मेरु भी उनके सामने हलका लगे, ऐसा बनके आ रहे थे। ३७७८

वाय्वाय् तोऱु माकडल् पोलुम् विडवारि
पोय्वार् हिन्ऱ पॊङ्गतल् कण्णिऱ् पॊऴिहिन्ऱ
मीवा यॆङ्गुम् वॆळ्ळिडै यिन्ऱि मिडैहिन्ऱ
पेय्वा यॆन्न वॆळ्ळॆयि ऱॆङ्गुम् बिऱऴ्हिन्ऱ 3779

वाय् वाय् तोऱुम्–हर मुख में; मा कटल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; विटम् वारि–विष-जल; पोय् वार्किन्ऱ–बहता है; पॊङ्कु अतल्–धधकती आग; कण्णिल्–आँखों से; पॊऴि किन्ऱ–बहुत निकालनेवाले; मी वाय् ऍङ्कुम्–ऊपर कहीं; वॆळ् इटै इन्ऱि–रिक्त स्थान न हो ऐसा; मिटैकिन्ऱ–सटे हुए आनेवाले; पेय् वाय् ऍन्न–पिशाचों के मुखों के समान; ऍङ्कुम्–सब ओर; वॆळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँत; पिऱऴ्किन्ऱ–छवि के साथ प्रकट करनेवाले। ३७७९

हर सर्प के हर मुख में समुद्र के समान विषजल स्रव रहा था। आँखों से धधकती आग निकल रही थी। वे इतनी भीड़ लगाकर आ रहे थे कि ऊपर कहीं कुछ रिक्त स्थान न दिखायी दिया। पिशाच के मुख के समान उनके मुख में सब ओर सफ़ेद दाँत विलस रहे थे। ३७७९

कडित्ते तीरुङ् गण्णहन् ञालङ् गडलोडुम्
कुडित्ते तीरु मॆन्ऱुल हॆल्लाङ् गुलैहिन्ऱ
मुडित्ता नन्ऱो वॆङ्ग णरक्कन् मुळ्मुऱ्ऱुम्
बॊडित्ता नाहु मिप्पॊऴ् दॆन्नप् पुहैहिन्ऱ 3780

कटित्ते तीरुम्–काटकर ही छोड़ेगा; कण् अकल् ञालम्–विशाल संसार को; कटलोटुम्–समुद्र के साथ; कुटित्ते तीरुम्–पीकर ही छोड़ेगा; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; उलकु ऍल्लाम्–सारे लोक; कुलैकिन्ऱ–काँपे उसके कारण बनकर; वॆम् कण्–दारुणाक्ष; अरक्कन्–राक्षस रावण; मुळ् मुऱ्ऱुम् मुटित्तान्–पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया; इप्पॊऴुतु–इसी समय; पॊटित्तान् आकुम्–चूर कर दिया रहेगा; अन्ऱो–न; ऍन्न पुकैकिन्ऱ–ऐसा धधकनेवाले। ३७८०

वे ऐसे भयंकर थे कि लोगों के मन में यह त्रास पैदा हो गया कि यह श्रीराम को काटे बिना नहीं छोड़ेगा। विशाल पृथ्वी को समुद्र के साथ पिये बिना नहीं रहेगा। 'भीषण आँखों वाला राक्षस इसी क्षण दुनिया को चूर करके तहस-नहस करनेवाला है' —ऐसा प्रभाव पैदा करके वे गुंगुआते हुए आये। ३७८०

अव्वा ऱुऱ्ऱ वाडर वङ्गा लहल्वायाल्
कव्वा निन्ऱ माल्वरै मुऱ्ऱु मवॆंकण्डान्
ऍव्वाय् तोऱु मॆय्दिन वॆन्ना वॆदिरॆय्दान्
तव्वा वुण्मैक् कारुड मॆन्नुम् बडैतन्नाल् 3781

अव्वाऱु उऱ्ऱ–वैसे बने; आटु अरवम्–फन फैलाकर नाचनेवाले नाग; काल्–

विष वमन करनेवाले; अकल् वायाल्–चौड़े मुखों से; कव्वा निन्र–ग्रस्त; माल् वरै अर्व–विशाल सीमा वाले स्थानों को; मुऱ्ऱुम्–पूरा; कण्डान्–जिन्होंने देखा उन श्रीराम ने; ॲव्वाय् तोऱुम् ॲय्तिऩ–सभी स्थानों में आ गये; ॲऩ्ऩा–सोचकर; तव्वा–अचूक; उण्मै–सत्यनिष्ठ; कारुडम् ॲऩ्ऩुम् पटै तऩ्ऩाल्–'गारुड़' नामक अस्त्र से; ॲतिर् चॅय्तान्–विरोध किया। ३७८१

श्रीराम ने देखा कि फन फैलाकर नाचनेवाले, विष वमन करनेवाले उन सर्पों के विशाल मुखों से बहुत विस्तृत पृथ्वी और आकाश का भाग ग्रस्त है! 'ओह! ये सब ओर आ जुड़े हैं!' यह सोचकर श्रीराम ने उसके विरोध में अमोघ और सच्चे गरुड़ास्त्र को प्रेरित किया। ३७८१

ॲवणॅत् तऩ्मैत् तेहिऩ नाहत् तिऩमॅऩ्ऩप्
पवणत् तऩ्ऩ वॅम्जिऱै वेहत् ताऴिल्पम्वच्
चुवणक् कोलत् तुण्ड नहनूदोल् शिऱैवॅल्पोर्
उवणप् पुळ्ळे यायिऩ वाऩो रुलहॅल्लाम् 3782

नाकत्तु इऩम्–नागसमूह; ॲवण्–कहाँ; ॲ तऩ्मैत्तु एकिऩ–जैसे गये; ॲऩ्ऩ–वैसे ही; पवणत्तु अऩ्ऩ–पवन के समान; वॅम् चिऱै–भीषण पक्षों के; वेकम् तॊऴिल् पम्प–वेग के कार्य के बढ़ते; चुवणम् कोलम्–स्वर्णवर्ण और; तुण्डम्–चोंचें और; नकम्–नख और; तॊल् चिऱै–प्राचीन पंख (इनके) साथ; पोर् वॅल्–युद्धविजय-कारी; उवणम् पुळ्ळे–गरुड़ पक्षी-मय; वाऩोर् उलकु ॲल्लाम्–सब स्वर्गलोक; आयिऩ–बन गये। ३७८२

तब देवलोक ही गरुड़ों से भर गये। (वे गरुड़ कैसे निकले?) बिलकुल उन नागों के ही सम, उनके पहुँचे स्थानों में सर्वत्र वे आये। उनके पक्षों से पवन निकालने का काम प्रचंड रीति से चल रहा था। स्वर्ण-वर्ण शरीर और उसी रंग की चोंच से और प्राचीन पक्षों के साथ एक-एक शोभता था। वे युद्धविजयी स्वभाव के थे। ३७८२

अळक्करुम् बुळ्ळिऩ मडॅय वारळल्
तुळक्करुम् वाय्तॊऱु मॅरियत् तॊट्टऩ
इळक्करु मिलङ्गैत्ती यिडुदु मीण्डॅऩ
विळक्किऩ मॅडुत्तऩ पोऩ्ऱ विण्णॅलाम् 3783

अळक्क अरुम्–असंख्य; पुळ्ळिऩम् अडॅय–पक्षी सब; तुळक्क अरुम्–अचल; वाय् तॊऱुम्–मुख-मुख पर; आर् अऴल्–भरी आग; ॲरिय तॊट्टऩ–जलती रखने वाले; इळक्क अरु–पिघलाने में कठिन; इलङ्कै–लंका में; ईण्डु–तेजी से; ती इडुतुम्–आग लगा देंगे; ॲऩ–ऐसा; विण् ॲलाम्–सभी व्योमलोकवासी; विळक्कु इऩम्–दीप-समूह को; ॲडुत्तऩ पोऩ्ऱ–ले रहे जैसे लगे। ३७८३

असंख्यक गरुड़ पक्षी-समूह मिलकर आये। हर गरुड़ के अचल मुख में

विपुल आग विद्यमान थी। वे देवों के लिये हुए दीपों के समान लगे जिनको देवों ने यह सोचकर उठाया हो कि लंका में, जिसको साधारण प्रकार से पिघलाना कठिन है, एक साथ अनेक दीपों से पिघला देंगे। ३७८३

कुयिन्ऱ्ऱ शुडर्मणि कनलिन् कुप्पैयिर्
पयिन्ऱ्ऱ शुडर्तरप् पदुम नाळङ्गळ्
वयिन्ऱ्ऱोऱुङ् गवर्न्दॆन्नत् तुण्ड वाळ्हळाल्
अयिन्ऱ्ऱ पुळ्ळिन्न मुहिरि नळ्ळिन्न 3784

कुयिन्ऱ्ऱ–जड़ित; चुडर् मणि–उज्ज्वल रत्न; कनलिन् कुप्पैयिन्–अग्निपुंजों के समान; पयिन्ऱ्ऱ–लगे; चुडए तर–प्रकाश देते रहे; पुळ् इनम्–पक्षीगण; पदुमम् नाळङ्कळ्–कमल-नालों को; वयिन् तोऱुम्–स्थान-स्थान में; कवर्न्दॆन्न–ग्रसे हों जैसे; उकिरिन् अळ्ळिन्न–नाखूनों से ग्रहण करके; तुण्टम् वाळ्कळाल्–चोंच रूपी तलवारों से; अयिन्ऱ्ऱ–छेदकर खाया। ३७८४

गरुड़ पक्षीगणों ने उन सिरों पर जड़ित रत्नों के प्रकाश के साथ रहे सर्पों को यत्र-तत्र कमलनालों के समान अपने नखों से उठाकर अपने असि-सम चोंचों से नोच खाया। ३७८४

आयिडै यरक्कन्तु मळ्ळूऱ नॆञ्जिनन्
तीयिडैप् पॊडिन्दॆळु मुयिर्प्पन् शीऱ्ऱत्तन्
मायिरु ञालमुम् विशुम्बुम् वॆप्पऱत्
तूयिनन् शुडुशर मुरुमिन् तोऱ्ऱत्त 3785

आयिटै–तब; अरक्कन्तुम्–राक्षस ने भी; अळ्ळूऱ नॆञ्चिनन्–लपते मन का; ती–आग; इटैये–मध्य-मध्य; पॊटिन्तु ऍळुम्–अंगारे बन छितरे ऐसा; उयिर्प्पन्–साँसें छोड़नेवाला; चीऱ्ऱत्तन्–क्रोधी; मा इरु ञालमुम्–बहुत बड़ी पृथ्वी और; विचुम्पुम्–आकाश; वॆप्पु अऱ–बिना खाली स्थान के; उरुमिन् तोऱ्ऱत्त–वज्र के आकार के; चुटु चरम्–गरम शरों को; तूयिनन्–बहुत संख्या में चलाया। ३७८५

तब राक्षस का मन खौल उठा, साँसें आग के साथ छूटीं। बहुत ही क्रुद्ध होकर उसने बड़ी भूमि और आकाश को कहीं अंतर न देकर वज्र के आकार के जलानेवाले शर छोड़े। ३७८५

अङ्गवॆङ् गडुङ्गण यियिलिन् वाय्तोऱुम्
वॆङ्गणै पडप्पड विशैयिल् वीळ्न्दन
पुङ्गमे तलैयॆन्नप् पुक्क पोलुमाल्
तुङ्गवा ळरक्कन तुरत्तिऱ् ऱोऱ्ऱल 3786

अङ्कु–वहाँ; अ–वे; वॆम्–दारुण; कटु कणै–वेगवान शर; अयिलिन् वाय् तोऱुम्–अपने तीक्ष्ण मुखों में; वॆम् कणै पट–ज्यों-ज्यों श्रीराम के संवाहक

शर लगते; विचैयिऩ्-त्यों-त्यों शीघ्र; वीऴ्न्तऩ-गिरे; तुङ्कम्-ऊँचे; वाळ् अरक्कऩ्तु उरत्तिल्-भयानक राक्षस की छाती में; पुङ्कमे तलै अँत-पुंख ही सिर हों ऐसे; पुक्क-घुसे; तोऱ्ऱल-दिखायी नहीं दिये। ३७८६

वे गरम और वेगवान शर, ज्यों-ज्यों उनके तीक्ष्ण मुखों पर श्रीराम के भयानक शर लगे, त्यों-ज्यों वेग के साथ ऊपर से नीचे आये और पुंख ही सिर को बनाकर उन्नत रावण के वक्ष में घुसे और अदृश्य हो रहे। ३७८६

ऑक्कनिऩ् ऍदिरम रुडऱ्ऱुङ् गालैयिऩ्
मुक्कणाऩ् तडवरै यॆडुत्त मॊय्म्बऱ्कु
नॆक्कऩ विज्जॆहळ् निलैयिऱ् ऱीऱ्ऩवऩ
मिक्कऩ विरामऱ्कु वलियुम् वीरमुम् 3787

ऑक्क निऩ्ऱु-समान रूप से स्थित होकर; ऍतिर्-विरोध में; अमर् उटऱ्ऱुम् कालैयिऩ्-युद्ध करते समय; मुक्कणाऩ्-त्रिनेत्र शिव के; तट वरै-विशाल पर्वत को; ऍटुत्त-जिसने उठाया उस; मॊय्म्पऱ्कु-उस भुजबली की; विञ्चैकळ्-(माया की) विद्याएँ; नॆक्कऩ-च्युत होकर; निलैयिल् तीऱ्न्तऩ-अपनी स्थिति से हट गयीं; इरामऱ्कु-श्रीराम के; वलियुम् वीरमुम्-बल और वीरता; मिक्कऩ-बढ़ी। ३७८७

श्रीराम के विरुद्ध समानता के साथ जब रावण लड़ रहा था, तब त्रिनेत्र शिव के कैलासहारी भुजबली रावण की सीखी हुई माया की विद्याएँ भूल गयीं और अपनी स्थिति से हट गयीं (बेकार हो गयीं)। पर श्रीराम का बल और साहस बढ़ चला। ३७८७

वेदियर् वेदत्तु मॆय्यऩ् वॆय्यवर्क्
कादिय ऩणुहिय वऱ्ऱ नोक्किऩाऩ्
शादियि ऩिमिर्न्ददोर् तलैयैत् तळ्ळिनाऩ्
पादियिऩ् मदिमुहप् पहऴि यॊऩ्ऱिऩाल् 3788

वेतियर् वेतत्तु मॆय्यऩ्-वेदविदों के वेदसत्यतत्त्व श्रीराम ने; वॆय्यवर्क्कु-लोकत्रासकों के; आतियऩ्-आदि राक्षस के; अणुकिय अऱ्ऱम्-पास आने का समय; नोक्किऩाऩ्-देखकर; चातियिल्-वृन्द में; निमिर्न्ततु-उन्नत रहे; ओर् तलैयै-एक सिर को; पातियिऩ् मति-अर्धचंद्र; मुकम्-मुखी; पकऴि ऒऩ्ऱिऩाल्-एक अस्त्र से; तळ्ळिऩाऩ्-काट दिया। ३७८८

वेदविदों के वेदसत्य श्रीराम ने राक्षसाधिपति के पास आने का संदर्भ देखा तो अपने वृन्द में उन्नत रहे एक सिर को एक अर्धचंद्र बाण चलाकर काट गिराया। ३७८८

मेरुविऩ् कॊडुमुडि वीशु कालॆऱि
पोरिडै यॊडिन्दुपोय्प् पुणरि पुक्कॆऩ

आरियन् शरम्बड वरक्कन् वन्इलै
नीरिडै विळुन्ददु नॅरुप्पॉ डन्रुपोय् 3789

वीशु काल्–बहनेवाले पवनदेव के साथ; ॲड्रि–टकराते; पोर् इडै–युद्ध में; मेरुविन् कॉट्टुमुडि–मेरु का शिखर; ऑटिन्तु पोय्–टूट गया और; पुणरि पुक्कॅत–समुद्र में घुसा जैसे; आरियन् चरम् पट–श्रीराम-शर के लगने से; अरक्कन् वल् तलै–राक्षस का कठोर सिर; नॅरुप्पॉटु–आग के साथ; अन्रु–उस दिन; पोय्–जाकर; नीरिटै वीऴ्न्ततु–समुद्र में गिरा। ३७८९

जब बहनेवाले पवनदेव और आदिशेष के बीच घोर युद्ध हुआ, तब मेरु का शिखर टूटकर समुद्र में जा गिरा। उसके समान आर्य श्रीराम के शर के आघात से राक्षस का कठोर सिर आग के साथ उस दिन जाकर समुद्र-जल में गिरा। ३७८९

कुदित्तनर् पारिडैक् कुन्रु कूट्टऱ
मिदित्तनर् वडमुहन् दूशुम् वीशिनार्
तुदित्तनर् पाडिनर् राडित् तुळ्ळिनार्
मदित्तनर् रिरामनै वानु ळोरॅलाम् 3790

वान् उळोर् ॲलाम्–आकाशवासी सभी (देव); कुतित्तनर्–कूदे; पार् इटै–भूमि पर; कुन्रु–(त्रिकूट) पर्वत; कूट्टु अऱ–संधियों को तोड़ते; मितित्तनर्–रौंदे; वटकमुम् तूचुम्–उत्तरीय और वस्त्र को; वीचिनार्–फेंका; तुतित्तनर्–स्तुति की; पाटिनर्–गाये; आटि–नाचे; तुळ्ळिनार्–उछले; इरामनै–श्रीराम का; मतित्तनर्–आदर किया। ३७९०

यह देखकर आकाशवासी भूमि पर त्रिकूट पर्वत पर कूदकर उसके संधिबंधों को तोड़ते हुए रौंद दिया। अपने उत्तरीय को और वस्त्र को उठाकर उछाला। श्रीराम की स्तुति की, नाचे, उछले। श्रीराम का मान किया। ३७९०

इऱन्ददो रुयिरुडन् करुमत् तीट्टिनाऱ्
पिऱन्दुळ दामॅनप् पॅयर्त्तु मत्तलै
मऱन्दिल वॅळुन्ददु मडित्त वायदु
शिऱन्ददु तवमलाऱ् चॅयलुण् डाहुमो 3791

इऱन्ततु–मृत; ओर् उयिर–एक जीव; करुमत्तु ईट्टिनाल्–कर्मभाग्य-संग्रह से; उटन्–तुरंत; पिऱन्तुळतु आम्–जन्म ले चुका; ॲन–जैसे; पॅयर्त्तुम्–फिर; मऱन्तिलतु–बिना भूले; मटित्त वायतु–मुड़े अधर के साथ; अ तलै–वह सिर; ॲऴुन्ततु–उठा; चिऱन्ततु–श्रेष्ठ; तवम् अलाल्–तपस्या के बिना; चॅयल्–ऐसा कार्य; उण्टाकुमो–साध्य होगा क्या। ३७९१

मृत जीव ने कर्मभाग्यसंग्रह से फिर जन्म लिया हो, ऐसा वह सिर

मुड़े हुए अधर के साथ फिर प्रगट हुआ। बड़ी उत्तम तपस्या के बिना यह कार्य सफल कैसे हो ? । ३७९१

कॊय्दद्‌दु कॊय्दिल दॆन्नुङ् गॊळ्हैयिन्
ऎय्दवन् दक्कणत् तॆळुन्द दोर्शिरम्
शॆय्दवॆम् जिनत्तुडन् शिरक्कुम् जॆल्वनै
वैदद्‌दु तॆळित्तद्‌दु मळैयि नार्प्पिनाल् 3792

कॊय्ततु–तोड़ा जाकर भी; कॊय्तिलतु–न तोड़ा गया हो; ऎन्नुम् कॊळ्कैयिन्–विचार पैदा करते हुए; ऎय्त अ क्कणत्तु–प्रेरित उसी क्षण में; ऎऴुन्ततु ओर् चिरम्–प्रगट हुआ एक सिर; चॆय्त वॆम् चिनत्तुटन्–उठे बहुत क्रोध के साथ; चिरक्कुम् चॆल्वनै–श्रेष्ठ धनी श्रीराम को; मऴैयिन् आर्प्पिनाल्–मेघ-गर्जन-से शोर के साथ; वैततु तॆऴित्ततु–गाली देकर डाँटा। ३७९२

यद्यपि सिर तोड़ा गया था तो भी तोड़ा ही नहीं गया हो, ऐसा भ्रम पैदा करते हुए उसी क्षण में, जब काटा गया था, वह सिर उग आया। वह बहुत प्रचंड कोप दिखाते हुए मेघगर्जन के-से स्वर में श्रीराम को डाँटा-डपटा। ३७९२

इडन्दद्‌दु किरिक्कुव डॆन्न वॆङ्गणुम्
पडर्न्दद्‌दु कुरैकडल् परुहुम् पण्बद्‌दु
विडन्दरु विळियद्‌दु मुड्डुहि वेलैयिल्
किडन्दद्‌दु मार्त्तद्‌दु मळैयिन् केळ्दु 3793

विटम् तरु–विषवर्षक; विऴियतु–आँखों का होकर; मुट्टकि–शीघ्र; वेलैयिल् किटन्ततुम्–जो समुद्र में रहा वह भी; किरि कुवट्टु–गिरिशिखर; इटन्ततु ऎन्न–अलग तोड़ लिया गया हो, ऐसा रहकर; वॆङ्कणुम् पटर्न्ततु–सर्वत्र जाकर; मऴैयिन् केऴ्तु–मेघ-सम; कुरै कटल्–शब्दायमान समुद्र के जल को; परुकुम् पण्पतु–पीने का स्वभाव पाकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठा। ३७९३

उधर कटे पर्वत-शिखर के समान जो समुद्र में गिरा था, वह सिर विषवमन करनेवाली आँखों के साथ सर्वत्र गया और मेघ के समान समुद्रजल को पीता हुआ शोर मचाने लगा। ३७९३

विळुत्तिनन् शिरमॆन्नुम् वॆहुळि मीक्कॊळ
वळुत्तिन नुयिर्हळिन् मुदलिन् वैत्तवोर्
ऎळुत्तिनन् तोळ्हळि नेर्ॆ डॆळुहोल्
अळुत्तिन नशनियै यॆयिर्क्कु मार्प्पिनान् 3794

अचनि एरु–अशनिराज को; अयिर्क्कुम् आर्प्पिनान्–डराते गर्जन वाले का; चिरम्–सिर; विऴुत्तिनन् ऎन्नुम्–गिरा दिया, यह; वॆकुळि–क्रोध; मीकॊळ–बढ़ा तो; वऴुत्तिनन्–प्रशंसित; उयिर्कळिन् मुतलिन्–स्वरों के आदि में; वैत्त–रखे

हुए; ओर्-एक; ॲळुत्तिनन्-(अकार) अक्षर रूप के; तोळ्कळिल्-कंधों पर; एळॊट्टु एळु कोल्-चौदह शर; अळुत्तिनन्-गड़वाये। ३७९४

वज्र-भीकर गर्जनकारी रावण का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ता गया, क्योंकि उसके सिर को श्रीराम ने काट गिराया। उसने सर्वलोकशंसित, आदि अक्षर ओंकार वाच्य उनके कंधों पर चौदह शर गड़वा दिये। ३७९४

तलैयऱिऩ् तरुवदोर् तवमु मुण्डॆऩ
निलैयुरु नेमियाऩ् ऱऱिन्दु नीशनैक्
कलैयुरु तिङ्गळिऩ् वडिवु काट्टिय
शिलैयुरु कैयैयुन् दलत्तिऩ् चेर्त्तिनान् 3795

तलै अऱिन्-सिर कटे तो; तरुवतु-दिलानेवाला; ओर् तवमुम्-अपार तप; उण्टु-है; ॲॅन अऱिन्तु-यह जानकर; निलै उरुम्-शाश्वत; नेमियान्-चक्रधारी ने; नीचनै-नीच रावण को; कलै उरु-कलादार; तिङ्कळिन्-चंद्र का; वटिवु काट्टिय-रूप रखनेवाले; चिलै उरु-धनुयुक्त; कैयैयुम्-हाथ को भी; तलत्तिल्-भूमि पर; चेर्त्तिनान्-गिराया। ३७९५

"रावण के पास कटे सिर को पुनः पाने की तपश्शक्ति है।" यह जानकर शाश्वत चक्रधारी श्रीराम ने उस नीच के अर्धचंद्राकार बने और धनुर्धर हाथ को काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७९५

कॊऱ्ऱवॆञ् जरम्बडक् कुऱैन्दु पोनकै
पऱ्ऱिय किडन्ददु शिलैयैप् पाङ्गुऱ
मऱ्ऱोर्है पिडित्तदु पोल वव्विय
दऱ्ऱकै पिऱन्ददै यार ऱिन्दुळार् 3796

कॊऱ्ऱम्-विजयी; वॆम् चरम् पट-शर के लगने से; कुऱैन्तु पोन कै-कटा हाथ; पऱ्ऱिय किटन्ततु चिलैयै-जिसको पकड़े रहा उस धनु को; पाङ्कु उऱ-मनोहर रीति से; मऱ्ऱु ओर् कै-दूसरे एक हाथ ने; पिटित्ततु पोल-पकड़ा हो जैसे; वव्वियतु-पकड़ा (नये प्रकट) हाथ ने; अऱ्ऱ कै-कटा हाथ; पिऱन्ततै-फिर जनमा; अऱिन्तुळार् यार्-किसने जाना। ३७९६

श्रीराम के विजयशर के लगने से जो हाथ कटकर गिरा उस कर की पकड़ में रहे धनुष को नये पैदा हुए हाथ ने इतने कम समय में पकड़ लिया मानो किसी दूसरे हाथ ने पकड़ा हो! कटा हाथ कब फिर लगा? —यह किसने जाना। ३७९६

पॊऩ्कैयिऩ् कूर्दियाऩ् वलियैप् पोक्कुवाऩ्
मुऩ्कैयिऩ् ऱुऱुमयिर् मुळ्ळिऩ् ऱुळ्ळुऱ
मिऩ्कैयिऩ् कॊण्डॆऩ विल्लै विट्टिला
वऩ्कैयैत् तऩ्कैयिऩ् वलियिऩ् वाङ्गिनाऩ् 3797

पोन् कयिऱु ऊर्तियान्–आकर्षक बागडोर पकड़, रथ चलानेवाले मातलि के; वलियै पोक्कुवान्–बल को तोड़ने के लिए; मुन् कैयिल्–हाथ के अगले भाग में; तुऱुम् मयिर्–घने बालों के; मुळ्ळिल् तुळ्ळुऱ–काँटों के समान फड़कते; मिन्–बिजली; कैयिल् कोण्टॆन–हाथ में लिये रहते जैसे; विल्लै–धनु को; विट्टिला–जो नहीं चला रहा था; वल् कैयै–उस सबल हाथ को; तन् कैयिन्–अपने हाथ से; वलियिन् वाङ्कितान्–बलात् उठा फेंका। ३७६७

रावण ने सोचा कि मनोहारी बागडोर के सहारे जो रथ को चला रहा था उस मातलि को बलहीन कर देना चाहिए। उसने उस कठोर हाथ को उठाकर, जिसके अगले भाग में बाल काँटों के समान फड़क रहे थे और जो धनु को चला नहीं रहा था, मातलि पर ज़ोर से फेंका। ३७९७

विळङ्गॊळि वयिरवा ळरक्कन् वीशिय
तळङ्गिळर् तडक्कैतन् मार्बिऱ् ऱाक्कलुम्
उळङ्गिळर् पॆरुवलि युलैविन् मादलि
तुळङ्गिनन् वाय्वऴि युदिरन् दूवुवान् 3798

विळङ्कु ऒळि–ज्वलंत शोभा वाली; वयिरम् वाळ् अरक्कन्–वज्र-तलवार के राक्षस के; वीचिय–फेंके गये; तळन् किळर्–मोटे और प्रफुल्ल; तट कै–विशाल हाथ के; तन् मार्पिल्–अपने वक्ष पर; ताक्कलुम्–लगते ही; उळम् किळर्–मन में उठा; पॆरु वलि–बड़ा दर्द; उलैविल् मातलि–अक्षय मातलि; वाय् वऴि–मुख से; उतिरम् तूवुवान् तुळङ्कितन्–रक्त बहाता हुआ अस्थिर हुआ। ३७६८

ज्वलंत प्रकाशमय वज्र-असि-धारी रावण का फेंका वह मोटा हाथ उसकी छाती पर जा टकराया तो अचल मातलि अपने मुख से रक्त वमन करता हुआ चलित हो गया। ३७९८

मामरत् तार्कैयाल् वरुन्दु वानॊर्
तोमरत् तालुयिर् तॊलैप्पत् तूण्डिनन्
तामरत् ताऱ्पॊरात् तहैहॊळ् वाट्पडै
कामरत् ताऱ्चिवन् करत्तु वाङ्गिनान् 3799

अरत्ताल् पॊरा–रेती से जो पैनाया नहीं गया; तकै कॊळ्–वैसे प्रकार का; वाळ्पटै–तलवार के हथियार को; कामरत्ताल्–'श्रीकामर' राग से; चिवन् करत्तु–शिवजी के हाथ से; वाङ्कितान्–जिसने पाया था; मा मरत्तु आर्–बड़े तरु के समान; कैयाल् वरुन्तुवानै–हाथ (के लगने) से दुःखते को; ओर् तोमरत्ताल्–एक तोमर से (को); उयिर् तॊलैप्प–प्राण लेने; तूण्टितन्–प्रेरित किया। (ताम्–पूरक ध्वनि)। ३७६६

जिस तलवार को रेत से पैनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, उस तलवार को रावण ने 'श्रीकामर' राग गाकर शिवजी से प्राप्त किया था।

उस रावण ने उस मातलि पर मारने के उद्देश्य से एक तोमर को चलाया, जो बड़े तरु के समान रावण के हाथ के प्रहार से छटपटा रहा था। ३७९९

माण्ड विऩ्ऱॊडु मादलि वाऴ्वॆऩ
मूण्ड वॆऩ्दऴल् शिऩ्द मुडुक्कलुम्
आण्ड विल्लियो रैम्मुह वॆङ्गणै
तूण्डि ताऩ्तुह ळाऩदु तोमरम् 3800

मातलि वाऴ्वु–मातलि की आयु; इऩ्ऱॊडु माण्टतु–आज समाप्त; ॲऩ–ऐसा; मूण्ट वॆम् तऴल् चिऩ्त–प्रज्वलित उग्र अनल निकालते हुए; मुटुक्कलुम्–जब प्रेरित किया तब; आण्ट विल्लि–स्वामी कोदंडपाणी ने; ओर्–एक; ऐ मुकम् वॆम् कणै–भयंकर पंचमुख बाण को; तूण्टिताऩ्–चलाया; तोमरम् तुकळ् आऩतु–तोमर चूर हुआ। ३८००

'मातलि की आयु आज हो गयी समाप्त !' ऐसी स्थिति की संभावना पैदा करते हुए रावण ने कोपाग्नि निकालते हुए जब तोमर चलाया तब सर्वशेषी कोदंडपाणी श्रीराम ने एक अप्रतिम पंचमुखी शर छोड़ा। उससे तोमर चूर हो गया। ३८००

ओय्व हऩ्ऱि यॊरुतलै नूऱुऱप्, पोय हऩ्ऱु पुरळप् पॊरुकणै
आयि रन्दॊडुत् ताऩऱि विऩ्ऱऩि, नाय हऩ्कैक् कडुप्पै नडत्तुवाऩ् 3801

अऱिविऩ् तऩि नायकऩ्–ज्ञानैकनायक ने; कै कटुप्पै–हाथ का जोर; नटत्तुवाऩ्–लगाकर; ओय्वु अकऩ्ऱु–निरंतर; ऒरु तलै नूऱु उऱ–एक सिर के सौ होने पर भी; अकऩ्ऱु पोय्–वे हट दूर जायें; पुरळ–और लोटें, ऐसा; पॊरुकणै–घातक बाण; आयिरम् तॊटुत्ताऩ्–हजार चलाये। ३८०१

ज्ञानैकनाथ ने बड़ा हस्तलाघव का प्रदर्शन करके सहस्र युद्धकारी शर चलाये, जिन्होंने एक-एक के सौ के रूप में उगनेवाले सिरों को काटकर भूमि पर गिराया, और वे सिर लोटने लगे। ३८०१

नीर्त्तर रङ्गळ् तॊऱु निलऩ्दॊऱुम्
शीर्त्तर माल्वरै तॊऱुन् दिशैदॊऱुम्
पार्त्तप पार्त्तप विडऩ्दॊऱुम् प:(ह)ऱ्ऱलै
आर्त्तु वीऴ्न्द वशऩिहळ् वीऴ्न्दॆऩ 3802

पल् तलै–अनेक सिर; नीर् तरङ्कङ्कळ् तॊऱुम्–सागर की तरंग पर; निलम् तॊऱुम्–भूमियों पर; चीर्त्त–उत्कृष्ट; माल् वरै तॊऱुम्–बड़े-बड़े पर्वतों पर; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पार्त्त पार्त्त इटऩ्तॊऱुम्–देखी जगह-जगह में; अचऩिकळ् वीऴ्न्तॆऩ–वज्र गिरे हों जैसे; आर्त्तु वीऴ्न्त–शोर करते हुए गिरे। ३८०२

ऐसे कटे सिर सागरतरंगों, भूमि के भागों, बड़े-बड़े पर्वतों, दिशाओं और प्रगट सभी स्थानों पर वज्र के समान बड़े शब्द के साथ गिरे। ३८०२

तहर्न्तु मालवरै शाय्वुडत् ताक्किन
मिहुन्द वानमिशै मीन सलैन्दन
पुहुन्द मामह रक्कुलम् बोक्कर
मुहन्द वायिर् पुनलिनै मुट्रुर 3803

तकर्न्तु—फटकर; माल् वरै—बड़े पर्वतों को; चाय्वु उर ताक्कित—गिराते टकराये; मिकुन्त वान् मिचै—विशाल आकाश पर; मीनम् सलैन्तन—नक्षत्रों से टकराये; पुकुन्त—सागर में घुसकर; मा—बड़े; मकरम् कुलम्—मकरकुलों को; पोक्कु अर—गन्तव्यस्थान रिक्त कर; पुनलिनै—जल को; मुट्रुर—पूर्ण रूप से; वायिल् मुकन्त—मुख में पी लिया। ३८०३

वे सिर फटकर पर्वतों से टकराये और वे पर्वत गिर गये। आकाश में जा नक्षत्रों से टकराये। और भी उन्होंने समुद्र में घुसकर सारे जल को निगल लिया और मकरकुल कहीं जा नहीं पाये। ३८०३

पॉऴुदु नीट्टिय पुण्णियम् बोनपिन्
पऴुदु शॅल्लुमत् ट्रॅमट्रॅप् पण्बॅलाम्
तॉऴुदु शूऴ्वन मुन्निन्ट्रु तोन्ट्रवे
कऴुदु शून्ट्र विरावणन् कण्णॅलाम् 3804

पॉऴुतु नीट्टिय—लंबे काल तक (भुक्त); पुण्णियम् पोन पिन्—पुण्य क्षय होने के बाद; मट्रु पण्पु ऍलाम्—अन्य यश आदि सभी गुण; पऴुतु चॅल्लुम् अन्ट्रे—व्यर्थ हो जाते हैं न; तॉऴुतु चूऴ्वन कऴुतु—नमन करते परिक्रमा करनेवाले पिशाचों ने; मुन् निन्ट्रु—सामने रहकर; तोन्ट्र—खुले रूप से; इरावणन् कण् ऍलाम्—रावण की सभी आँखों को; चून्ट्र—नोच लिया। ३८०४

दीर्घकाल तक फल जो देता रहा वह पुण्य भुक्त हो चुकने के बाद जब क्षीण हो जाता है, तब यश आदि सारी अच्छी बातें व्यय हो जाती हैं न ? वैसे ही वे पिशाच, जो रावण की परिक्रमा, स्तुति आदि करते थे, अब आमने-सामने खड़े रहकर प्रगट रूप से रावण की आँखों को नोचते रहे। ३८०४

वाळुम् वेलु मुलक्कैयुम् वच्चिरक्
कोळुन् दण्डु मऴुवॅनुङ् गूट्रमुम्
तोळिन् पत्तिहऴ् तोळुम् जुमन्दन
मीळि मॊयम्बन तुरुमॅन वीशिनान् 3805

मीळि मॊयम्पन्—महाबली रावण ने; तोळिन् पत्तिकऴ् तोळुम्—कंधों की पंक्तियों पर; चुमन्तन—जिन्हें धारण करता रहा; वाळुम् वेलुम् उलक्कैयुम्—तलवारें, भाले

और मूसल; वच्चिरम् कोळुल्–सशक्त वज्र; तण्डु–गदाएँ; मळु अँतुम् कूट्रमुम्–परशु नामक यम; उरुम् ॲंत वीचितान्–(इनको) अशनि के समान फेंका। ३८०५

अतिबली रावण ने, अपने कंधों की पंक्तियाँ पर जो हथियार थे, तलवारें, भाले, मूसल, सशक्त वज्र, गदाएँ, परशु नामक मौत आदि, उनको वज्र के समान उठाकर फेका। ३८०५

अन्नैय शिन्दिड वाण्डहै वीरनुम्, विन्नैय सॅन्निनि यादुहोल् वॅल्लुमो
निन्नैवॅ ॲन्नन निशशरन् मेनियैप्, पुनैवन् वाळियि नालॅनप् पौङ्गिनान् 3806

अन्नैय–वैसे हथियारों को; चिन्तिट–जब उसने फेंका, तब; आण् तकै वीरनुम्–पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम भी; इनि विन्नैयम् ॲन्–अब करना क्या है; वॅल्लुमा यातु कोल्–जीतने का उपाय क्या; निन्नैवॅन्–खोजूँगा; ॲन्न–कहकर; निचाचरन्–राक्षस के; मेनियै–शरीर को; वाळियिनाल् पुनैवन्–शरों से अलंकृत करूँगा; ॲन्न पौङ्किनान्–ऐसा विचार कर भड़क उठे। ३८०६

रावण के वैसे चलाने पर पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम ने मन में विचारा कि अब क्या करना चाहिए ? विजय का उपाय क्या होगा ? फिर निश्चय किया कि निशाचर के शरीर को अस्त्रों से सजा दूंगा। वे उबल पड़े। ३८०६

मञ्ज रङ्गिय मार्बिनुत् दोळिनुम्, नञ्ज रङ्गिय कण्णिनु नाविनुम्
वञ्जन् मेनियै वार्कणै यट्टिय, पञ्ज रम्मॅन लावहै पण्णिनान् 3807

मञ्चु अरङ्किय–मेघपरास्तकारी (काले) रंग के; मार्पिनुम् तोळिनुम्–वक्ष पर और कंधों पर; नञ्चु अरङ्किय–विषपरास्तकारी; कण्णिनुम् नाविनुम्–आँखों और जीभों पर; वञ्चन् मेनियै–वंचक के शरीर को; वार्कणै–लंबे शरों के; अट्टिय–रहने योग्य; पञ्चरम् ॲन्नलाम् वकै पण्णितान्–पंजर कहने की स्थिति दिलायी। ३८०७

मेघपरास्तकारी काले रंग के उसकी छाती और कंधों पर, विष-परास्तकारी नेत्रों और जीभों में अस्त्र चलाकर उन्होंने वंचक रावण के शरीर को लंबे शरों का पिंजरा-सा बना डाला। ३८०७

वाय्नि रैन्दन कण्गळ् मरैन्दन, मीनि रुङ्गळि लॅङ्गु मिडैन्दन
तोय्वु रुङ्गणै शॅम्बुनल् तोय्न्दिल, पोय्नि रैन्दन वण्डप् पुरमॅलाम् 3808

वाय् निरैन्तन–मुखों में भरे; कण्कळ् मरैन्तन–आँखों को छिपानेवाले; मी–श्रेष्ठ; निरङ्कळिल् ॲङ्कुम्–वक्ष पर सर्वत्र; मिटैन्तन–जो सटे रहे; तोय्वुरुम् कणै–गड़े हुए शर; चॅम् पुनल् तोय्न्तिल–रुधिर में न सनकर (उसके शरीर से निकलकर); अण्टम् पुरम् ॲलाम्–अण्ड और बाहर सर्वत्र; पोय् निरैन्तन–जा भर गये। ३८०८

मुखों में भरकर, आँखों को ढँककर, उन्नत वक्ष में सर्वत्र जो घने रूप से शस्त्र गिरे वे बिना रक्त के सने ही निफरे और अंड तथा बाहर सब स्थानों में जा भर गये। ३८०८

मयिरित् कारोरुम् वार्हणै मारिपुक्
कुयिरुन् दोर वुरुविन्न वोडलुम्
शॅयिरुम् जीड्रमु निड्कत् तिरल्तिरिन्
दयर्वु तोन्र्त् तुळङ्गि यळुङ्गिनान् 3809

मयिरित् काल् तोरुम्–हर रोम-कूप में; वार् कणै मारि–लंबे शरों की वर्षा; पुक्कु–घुसकर; उयिरुम् तोर–श्वास को रोकते हुए; ऊडुरुवित्त–निफर गये; ओटलुम्–आगे दौड़े; चॅयिरुम्–वैर और; चीड्रमुम्–क्रोध; निड्क–रहे; तिरल् तिरिन्तु–बल नष्ट हुआ; अयर्वु तोन्र–थकावट आयी; तुळङ्कि अळुङ्कितान्–थर-थर काँपकर लटा। ३८०९

सारे रोमकूपों में भी शर-वर्षा जा घुसी तो रावण दम भी भर नहीं सका। वे भेदकर चले। रावण का वैर और क्रोध रह गये पर थकावट के कारण काँपते हुए रावण बहुत जर्जर हो गया। ३८०९

वारि नीर्निन् रॅदिर्महर् रम्बडच्, चोरि शोर वुणर्वु तुळङ्गितान्
तेरिन् मेलिरुन् दान्पण्डु तेवर्दम्, ऊरिन् मेलुम् बवन्नि युलावुवान् 3810

पण्डु–पहले; तेवर् तम् ऊरिन् मेलुम्–देवलोक में भी; पवन्नि उलावुवान्–विजय यात्रा जो करता था वह; वारि नीर् निन्रु–समुद्र-जल से; ॲतिर्–सामने जो आये उन; मकरम् पट–मकरों को मारते हुए; चोरि चोर–रक्त के बहते; उणर्वु तुळङ्कितान्–प्रज्ञा खोयी; तेरिन् मेल् इरुन्तान्–रथ पर स्थिर रहा। ३८१०

देवलोकविजययात्री रावण के शरीर से रक्त ऐसा उग्र रूप से बहा कि समुद्रजल के मकर भी मर गये जो उससे टकरा गये। वह संज्ञाहीन हो रथ पर लेट गया। ३८१०

आर्त्तुक् कॊण्डॆळुन् दुम्बर्ह ळाडिनार्
वेर्त्तुत् तीविनै वॆम्बि विळुन्दवु
पोर्त्तुप् पोयन्दन्न ॲन्रु पॊलङ्गॊळ्तेर्
पेर्त्तुच् चारदि पोयिनन् पिन्रुवान् 3811

आर्त्तु कॊण्टु–कोलाहल मचाकर; ॲळुन्तु–उठकर; उम्पर्कळ् आटितार्–देव नाचे; तीविनै वॆम्पि–पाप संतप्त होकर; वेर्त्तु विळुन्ततु–स्वेद से भरकर गिरा; चारति–(रावण का) सारथी; पोर्त्तुप्पु ओयन्ततन्–युद्ध करने की शक्ति खो दी; ॲन्रु–कहकर; पिन्रुवान्–पीछे हटकर; पॊलम् कॊळ् तेर्–मनोरम रथ को; पेर्त्तु–पोयितान्–हटा ले गया। ३८११

देव यह देख कोलाहल मचाकर नाच उठे। पाप भी संतप्त हो गिर गया। रावण का सारथी रावण को युद्ध करने की क्षमता से शून्य पाकर स्वर्णमय रथ को पीछे की ओर हटा ले गया। ३८११

कैतु ऱन्द पडैयिनन् कण्णहन्, मॅय्तु ऱन्द वुणर्विनन् वीऴ्दलुम्
ॲय्दि ऱन्दविर्न् दानिमै योर्हळै, उय्दि ऱन्दुणिन् दात्तऱ मुन्नुवान् 3812

इमैयोर्कळै–देवों को; उय्तिऱम् तुणिन्तान्–उत्थान के मार्ग में चलने में सहायता देने के विचार वाले ने; कै तुऱन्त पडैयिनन्–अस्त्र-रिक्त हाथोंवाला; कण् अकल्–विशाल; मॅय् तुऱन्त उणर्विनन्–प्रज्ञाहीन शरीरवाला बनकर; वीऴ्तलुम्–नीचे ज्यों ही गिरा; अऱम् उन्नुवान्–धर्म की बात सोचकर; ॲय्तिऱम् तविर्न्तान्–अस्त्र चलाना रोक लिया। ३८१२

देवों को उत्थान में सहायता देने का निश्चय जिन्होंने किया था उन श्रीराम ने रावण को हस्तच्युत हथियारवाला और संज्ञाहीन बड़े शरीर वाला बना गिरा देखते ही धर्ममार्ग का विचार कर अस्त्र चलाने का काम रोक लिया। ३८१२

तेऱि नार्पिन्नै यादुम् जॅयर्करि, दूऱु तान्ऱुऱ पोदे युयर्तवन्
नूऱु वायॅन मादलि नूक्किनान्, एऱु शेवह नुम्मि दियम्बिनान् 3813

मातलि–मातलि ने (श्रीराम से); उयर् तवन्–उत्कृष्ट तपस्वी रावण; तेऱिनान्–होश में आया; पिन्नै यातुम्–फिर कुछ भी; चॅयऱ्कु अरितु–करना दुर्वार होगा; ऊऱु उऱ्ऱपोते–संकटग्रस्त है, तभी; नूऱुवाय्–मार दें; ॲन–कहकर; नूक्किनान्–उकसाया; एऱु चेवकनुम्–सिंह-सम वीर ने; इतु इयम्पिनान्–यह बात कही। ३८१३

मातलि ने श्रीराम को समझाया कि रावण उत्कृष्ट तपस्वी है। होश में आयगा तो कुछ (हानि) करना असंभव हो जायगा। जब वह कष्ट में है तभी उसे मिटा दें। उसने उन्हें उकसाया। पर वर्धन-शील बलवान श्रीराम ने यों उत्तर दिया। ३८१३

पडैतु ऱन्दु मयङ्गिय पण्बिना, लिडैतॅ ऱुम्बडि पार्त्तिहल् नीदियिन्
नडैतु ऱन्दुयिर् कोडलु नन्मैयो, कडैतु ऱन्दवु पोरॅन् करुत्तॅन्ऱान् 3814

पटै तुऱन्तु–निरस्त्र; मयङ्किय पण्पिनाल् इटै–संज्ञा-हीन स्थिति में रहनेवाले के प्रति; तॅऱुम्पटि पार्त्तु–मिटाने का मौक़ा देख; इकल् नीतियिन्–युद्धनीति का; नटै तुऱन्तु–मार्ग छोड़कर; उयिर् कोटलुम्–प्राण हर लेना; नन्मैयो–भला होगा क्या; ॲन् करुत्तु–मेरा विचार; पोर्–युद्ध को; कटै तुऱन्ततु–पूर्ण रूप से छोड़ गया; ॲन्ऱान्–कहा। ३८१४

निरस्त्र और बेहोश रावण को मिटाने की स्थिति में पाकर उसका

युद्धधर्मविरुद्ध रीति से प्राणनाश करना श्लाघ्य होगा क्या ? अब मेरा अभिप्राय बिलकुल युद्ध से दूर चला गया है। ३८१४

कूवि रञ्जॅंड्रि पॉऱ्कॉडित् तेरॉडुम्, पोव रञ्जित्त रन्नदॉर् पोऴ्दितित्
एव रञ्जलि यादव रॅण्णुडॆत्, तेव रञ्ज विरावणन् तेड्रिनान् 3815

कूबिरम् चॅंड्रि–कूबर से युक्त; **पॉन् कॉटि तेरॉट्टुम्**–स्वर्ण-ध्वजावाले रथों पर; **पोवर्**–जानेवाले राक्षस; **अञ्चितर्**–डर गये; **अन्नतु ओर् पोऴ्तितिन्**–उस समय; **एवर् अञ्चलियातवर्**–कौन थे, जिन्होंने श्रीराम का नमन नहीं किया हो; **ऍण् उडॆ**–आदर करनेवाले; **तेवर् अञ्च**–देवों को भय में डालते हुए; **इरावणन् तेड्रिनान्**–रावण होश में आ गया। ३८१५

उनका व्यवहार देखकर जो राक्षस अपने कूवर-सहित, स्वर्णध्वजा से अलंकृत अपने रथों में भय से भाग रहे थे उनमें कौन थे जिन्होंने उन्हें नमस्कार नहीं किया हो ? तब रावण देवों को भय में डालते हुए जाग उठा। ३८१५

उऱक्क मीङ्गि युणर्च्चियुऱ् ड्रानॅत
मऱक्कण् वञ्ज न्निरामनै वान्ड्रिशॅच्
चिऱक्कुन् देरॉडुङ् गण्डिलन् शीऱ्ऱत्तीप्
पिऱक्क नोक्किनन् पिन्नुऱ नोक्किनान् 3816

मऱम् कण् वञ्चन्–क्रूराक्ष, वंचक रावण ने; **उऱक्कम् नीङ्कि**–मूर्च्छा से जागकर; **उणर्च्चि उऱ्ऱान् ऍन्न**–होश में आया तो; **वान् तिचै**–उन्नत दिशाओं में; **चिऱक्कुम् तेरॉटुम्**–श्रेष्ठ रथ के साथ; **इरामनै कण्टिलन्**–श्रीराम को देख नहीं पाया; **पिन् उऱ नोक्किनान्**–पीछे की ओर देखकर; **चीऱ्ऱम् ती पिऱक्क**–कोपाग्नि जताते हुए; **नोक्किनान्**–दृष्टि डाली (अपने सारथी पर)। ३८१६

क्रूर आँखोंवाला रावण मूर्च्छा से जाग संज्ञा प्राप्त ही कर रहा था कि उसने श्रेष्ठ रथ के साथ श्रीराम को देख न पाकर पीछे की तरफ़ देखा और सारथी को कोपाग्नि पैदा करते हुए तरेरा। ३८१६

तेर्ति रित्तनै तेवरुङ् गाणवे, वीर विऱ्कै यिरामऱ्कु वॅण्णहै
पेर वुय्त्तनै येपिऴैत् तायॅन्नाच्, चार दिप्पॅय रोनैच् चलिप्पुऱा 3817

तेवरुम् काण–देवों के देखते; **तेर् तिरित्तनै**–रथ लौटाया; **वीरम् विऱ्कै इरामऱ्कु**–वीर धनुर्हस्त (कोदंडपाणी) राम को; **वॆळ् नकै**–श्वेत मुस्कुराहट के; **पेर उयत्तनै**–भागने का मौक़ा दिलाया; **पिऴैत्ताय्**–अपराध किया; **ऍन्ना**–कहकर; **चारति पॅयरोनै**–सारथी पदवीधारी से; **चलिप्पु उऱा**–झल्लाकर। ३८१७

'देवों के देखते मेरे रथ को फिरा दिया। तुमने वीर कोदंडपाणी श्रीराम को श्वेत मुस्कुराहट (हँसी) दिखाने का मौक़ा दिला दिया। तुमने घोर

अपराध किया है !' कहते हुए रावण सारथीपदविभूषित उस पर झल्लाहट दिखायी। ३८१७

तन्ज नाळुनैत् तेऱ्ऱत् तरिक्किला, वन्ज नीपॅरुम् जॅल्वत्तु वैहिनै
अन्जि नेनैतच् चॅय्दनै यावलाल्, उन्जु पोदिहो लामॅन्ऱ् रुरुत्तॅळा 3818

तरिककिला वन्च–अक्षम्य वंचक; तन्चम्–शरण देकर; नात् उनै तेऱ्ऱ–मैं तुम्हें पालता रहा और; नी पॅरुम् जॅल्वत्तु–तुम बड़े वैभव के साथ; वैकिनै–जीते रहे; अन्चितेन् ॲन चॅय्तनै–कायर बना दिया मुझे; आतलाल्–इसलिए; उन्चु पोति कॉल्–बचोगे क्या; ॲन्ऱु–कहकर; उरुत्तु ॲळा–कोप करके उठा। ३८१८

'अक्षम्य वंचक हो। मैंने तुम्हें शरण दिलायी और तुम बड़े वैभव भोग कर रहे थे। मुझे कायर का नाम दिला दिया। अब तुम बचोगे क्या ?' यह कहकर वह क्रोध के साथ उठा। ३८१८

वाळ्क डैक्कणित् तोच्चलुम् वन्दवन्, ताळ्क डैक्कणि यात्तलै ताळ्वुरा
मूळ्क डैक्कडुन् दीयिन् मुनिवॊळि, कोळ्क डैक्कणित् तॆन्ऱवन् कूऱुवान् 3819

वाळ् कटै कणित्तु–तलवार को तिरछी नजर से देख; ओच्चलुम्–उसे ऊपर उठाया तो; अवन्–उसने; वन्तु–पास आकर; ताळ्कटै कणिया–चरणों को देखकर; तलै ताळ्वु उऱा–सिर झुकाकर; कोळ् कटै कणित्तु–मेरा अभिप्राय जानकर; कटै–युगांत की; कटु तीयिन्–प्रचंड आग के समान; मूळ्–उठते; मुनिवु–क्रोध को; ऑळि–दूर करें; ॲन्ऱवन्–कहा और; कूऱुवान्–आगे बोला। ३८१९

रावण ने ज्योंही तलवार पर कटाक्षपात करके ऊपर उठाया, त्योंही सारथी ने आकर चरणों पर दृष्टि डाले सिर झुकाकर निवेदन किया कि मेरा अभिप्राय जानने की कृपा करें। और युगांत की अग्नि के समान भभक उठनेवाले अपने कोप को शांत कर लीजिए। ३८१९

आण्डॉ ळिऱ्ऱुणि वोय्न्दनै याण्डिऱै
ईण्ड निऱ्ऱिडि नैयनै निन्नुयिर्
माण्ड दक्कण मॅन्ऱिडर् माऱ्ऱुवान्
मीण्ड दित्तॊळि लॅम्विनै मॅय्म्मैयाल् 3820

ऐयनै–प्रभु; आण् तॉळिल्–वीरकृत्य के; तुणिवु ओय्न्ततै–धैर्य खो गये थे; आण्टु–वहाँ; इऱै–थोड़ी देर; ईण्ट निन्ऱिटिन्–पास खड़े रहें तो; नित् उयिर्–आपके प्राण; अक्कणम् माण्टतु–तभी अंत हो जायेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; इटर् माऱ्ऱुवान्–संकट दूर करने के लिए; मीण्टतु इ तॉळिल्–लौटाने का यह काम; ॲम् वितै–हमारा कर्तव्य; मॅय्म्मै–सच। ३८२०

प्रभु ! आप वीरता के कार्य से विरत हो गये थे। वहाँ एक क्षण भी रहते तो आपके प्राण चले जाते। अतः आपको कष्टमुक्ति दिलाने के विचार से आपको फिरा ले आना हमारा कर्तव्य हो गया। ३८२०

ओय्वु मूऱ्ऱमु नोक्कि युयिर्प्पॉरैच्
चाय्वु नीक्कुदल् शारदि तन्मैत्ताल्
माय्वु निच्चयम् वन्दुऴि वाळिनाऱ्
काय्वु तक्कदन् ऱाऱ्कडै काण्डियाल् 3821

चारति तन्मैत्तु–सारथी का स्वाभाविक कार्य; ओय्वुम्–थकावट और; ऊऱ्ऱमुम्–बल को; नोक्कि–देखकर; माय्वु–मृत्यु; निच्चयम् वन्तुऴि–निश्चित आयी तो; उयिर् पॉरै–प्राणभार का; चाय्वु नीक्कुतल्–हलका होना (मरना) दूर करना; वाळिनाल् काय्वु–तलवार से मारना; तक्कतु अन्ऱु–योग्य काम नहीं; कडै काण्टियाल्–अंत में जानेंगे। ३८२१

सारथी का धर्म है स्वामी की थकावट, उनका बल आदि पर निगाह रखना; और मौत की संभावना आयी तो उनके शरीर को दुःख पहुँचाए विना अलग ले जाना। इसलिए यह काम इस योग्य नहीं कि आप तलवार से मेरा काम तमाम कर दें। आप अंत में सत्य जान लेंगे। ३८२१

ऍन्ऱिरैञ्जलु मॅण्णि यिरङ्गिनाऩ्, वॅन्ऱि यन्दडन् देरिनै मीट्कॅनच्
चॅन्ऱॅ दिर्न्ददु तेरुमत् तेर्मिशै, निन्ऱ वञ्ज निरामनै नेर्वुरा 3822

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; इरैञ्चलुम्–याचना करते ही; ऍण्णि–सोचकर; इरङ्कित्ताऩ्–दया करके; वॅन्ऱि–विजयदायी; अम् तट–सुन्दर, विशाल; तेरिनै मीट्क–रथ को फिरा चलाओ; ऍन–ऐसा कहा तो; तेरुम्–रथ भी; चॅन्ऱु ऍतिर्न्ततु–जाकर (श्रीराम के) सामने हुआ; अ तेर् मिचै निन्ऱ–उस रथ पर स्थित; वञ्चन्–वंचक रावण ने; इरामनै नेर्वु उऱा–श्रीराम का सामना करके। ३८२२

सारथी के इतना कहकर विनय दरसाने पर रावण ने रहम खाकर आज्ञा सुनायी कि रथ फिराकर चलाओ। रावण का रथ श्रीराम के सामने आया। उस रथ पर स्थित वंचक रावण ने श्रीराम के प्रति—। ३८२२

कूऱ्ऱिनुम् वॅङ्गणै कोडियिन् कोडिहळ्,
तूऱ्ऱिनान् वलि मुम्मडि तोऱ्ऱिनान्
वेऱ्ऱोर् वाळरक् कन्ऍन वॅम्मैयाल्
आऱ्ऱिनान् ऱॉरुक् कण्डवर् रञ्जिनार् 3823

कूऱ्ऱिनुम्–यम से भी; वॅम् कणै–भयानक शर; कोटियिन् कोटिकळ्–कोटि-कोटि; तूऱ्ऱिनान्–बरसाये; वेऱु ओर् वाळ् अरक्कन्–अन्य एक क्रूर राक्षस है क्या; ऍन–ऐसा; मुम्मटि वलि तोऱ्ऱिनान्–तिगुने बल के साथ दिखा; वॅम्मैयाल्–उग्र रूप से; पोर् आऱ्ऱिनान्–युद्ध किया; कण्टवर् अञ्चिनार्–दर्शक सहम गये। ३८२३

मौत से भी दारुण कोटि-कोटि बाण चलाये। उसका बल तिगुना

हुआ था कि संशय होने लगा कि यह कोई दूसरा राक्षस है ! उसने बहुत उग्र रूप से युद्ध किया। दर्शक लोग सहम गये। ३८२३

ऍल्लुण् डाहि नॅरुप्पुण् डॅनुमिदोर्, शॊल्लुण् डायदु पोलवन् तोळिडै
विल्लुण् डाहिन् वॅलऱ्‌करि दामॆन्नाच्, चॅल्लुण् डालन्न दोर्हणै शिन्दिनान् 3824

ऍल् उण्टाकिल्–धुआँ हो तो; नॅरुप्पु उण्डु–आग होगी; ऍन्नुम्–ऐसा; इतु ओर् चॊल्–यह एक मसल; उण्टायतु पोल्–जैसे है वैसा; अवन्–उसके; तोळ् इटै–कंधों पर; विल् उण्टु आकिल्–धनु हो तो; वॅलऱ्‌करितु आम्–जीतना असंभव है; ऍन्ना–सोचकर; चॅल् उण्टाल् अन्नतु–वज्रगर्भ-सा; ओर् कणै चिन्तिनान्–एक बाण चलाया। ३८२४

पुराना मसल हो गया कि धुआँ होगा तो वहाँ अग्नि का भी अस्तित्व होगा। वैसे ही रावण के कंधे पर जब तक धनु होगा तब तक उसको जीतना असंभव होगा ! यह सोचकर श्रीराम ने वज्रगर्भ-सा एक अस्त्र प्रेरित किया। ३८२४

नार णन्पडै नायह नुय्प्पुराप्, पार णङ्गिनैत् ताङ्गुरुम् बल्वहै
वार णङ्गळै वॅन्ऱवन् वार्शिलै, आर णङ्गै यिरुतुणि याक्किनान् 3825

नारणन् नायकन्–श्रीमन्नारायण नायक; पटै उय्प्पु उरा–हथियार चलाकर; पार् अणङ्किनै–भूदेवी के; ताङ्कुरुम्–धारण करनेवाले; पल्वकै–विविध; वारणङ्कळै वॅन्ऱवन्–हाथियों के विजेता के; वार् चिलै–लम्बे धनु को; आर् अणङ्कै–भयकारी पदार्थ को; इरु तुणि आक्किनान्–दो भागों में खण्डित किया। ३८२५

श्रीराम ने अस्त्र चलाकर भूभारवाही गजों के विजेता रावण के लंबे धनु रूपी डरावनी चीज़ के दो टुकड़े कर दिये। ३८२५

अयन्प डैत्तविल् लायिरम् बेरिनान्
वियन्प डैक्कलत् तालऱ्‌ वीऴ्दलुम्
उयर्न्दु यर्न्दु कुदित्तन रुम्बराल्
पयन्प डैत्तनम् बः(ह्) ऱवत् तालॆन्ऱार् 3826

अयन् पटैत्त विल्–ब्रह्मारचित धनु; आयिरम् पेरिनान्–सहस्रनामी के; वियन् पटैक्कलत्ताल्–विशिष्ट हथियार से; अऱ्‌ वीऴ्तलुम्–कट गिरा तो; उम्पर्–देव; उयर्न्तु उयर्न्तु कुतित्तनर्–उछल-उछल कूदे; पल् तवत्ताल्–विविध तपस्या से; पयन्–फल; पटैत्तनम्–प्राप्त किया; ऍन्ऱार्–कहा देवों ने। ३८२६

ब्रह्मा-रचित धनुष सहस्रनामी के बड़े अस्त्र से कटकर गिरा तो देव ऊँचे-ऊँचे उछले। कहने लगे कि 'हमारे विविध तप का फल मिला'। ३८२६

मारि मारि वरिशिलै वाङ्गिनान्, नूऱु नूऱिनॊ डैयिरु नूऱवै
वेऱु वेऱु तिशैयुऱ वॅङ्गणै, नूऱि नूऱि यिराम नुऱुक्किनान् 3827

मार्रि मार्रि–बारी-बारी से; वरिचिलै वाङ्कितान्–सबन्ध धनु लिये रहा; इरामन्–श्रीराम ने; नूऱु नूट्रितोढु–सौ-सौ के; ऐयिऱु नूऱु अवै–दस (करोड़) को; वेऱु वेऱु तिचै उऱ–अलग-अलग दिशा में भेजते हुए; वॅम् कणै–दारुण अस्त्रों से; नूट्रि नूट्रि–काट-काट करके; नुऱुक्कितान्–चूर करा दिया। ३८२७

रावण बारी-बारी से नया धनुष लेता रहा। श्रीराम ने उन करोड़ धनुओं को भीषण अस्त्रों से चूर किया और दिशा-दिशा में उड़ा दिया। ३८२७

इरुप्पु लक्कैवेल् तण्डुको लीट्टिवाळ्, नॅरुप्पु लक्क वरुनॅडुङ् गप्पणम्
तिरुप्पु लक्कवुय्त् तान्तिशै यानैयिन्, मरुप्पु लक्क वळङ्गिय मार्बिनान् 3828

तिचै यानैयिन्–दिग्गजों के; मरुप्पु उलक्क–दाँतों को तोड़ते हुए; वळङ्किय–जो लाना था; मार्पिनान्–वैसे वक्ष वाला रावण; तिरु–श्रीराम की श्री; पुलक्क–रूठ चला जाय ऐसा; इरुम्पु उलक्कै–लोहे का मूसल; वेल्–शक्ति; तण्टु–दण्ड; कोल्–साँग; ईट्टि–भाला; वाळ्–तलवार; नॅरुप्पु–आग आदि; उलक्क–जलाने; वरु–आनेवाली; नॅटु–लम्बी; कप्पणम्–काँटेदार गदा; उय्त्तान्–आदि फेंका। ३८२८

दिग्गज-दन्त-भंजक-वक्ष रावण ने (वक्षःस्थलनिवासिनी) श्री को श्रीराम के वक्ष से गुस्साकर भागने को लाचार करते हुए लोहे का मूसल, दंड, साँग, भाला आदि की गरमी कम करते हुए जानेवाले लंबे 'कप्पण' (काँटेदार गदा ?) नामक अस्त्र को चलाया। ३८२८

अवैय नैत्तु मऱुत्तहन् वेलैयिऱ्, कुवैय नैत्तु मॅनक्कुवित् तान्कुऱित्
तिवैय नैत्तु मिवनैवॅल् लावॅना, नवैय नैत्तुन् दुऱन्दव नाडिनान् 3829

अवै अनैत्तुम्–उन सभी को; अऱुत्तु–काटकर; अनैत्तुम्–उन सभी को; अकल् वेलैयिल्–बड़े समुद्र में; कुवै ऍन कुवित्तान्–ढेर के समान ढेर लगा दिया; नवै अनैत्तुम्–सभी दोषों से; तुऱन्तवन्–विमुक्त श्रीराम; इवै अनैत्तुम्–ये सब; इवनै वॅल्ला–इसे जीत नहीं सकेंगे; ऍना–ऐसा; कुऱित्तु–मन में निर्णय करके; नाटिनान्–(उपाय) खोजने लगा। ३८२६

श्रीराम ने उन सबको रोककर काट दिया और सागर में उनके ढेर बना दिये। अनिंद्य अर्कवंशज ने यह सोच लिया कि ये सब अस्त्र इसे नहीं मार सकते। फिर उन्होंने तर्क किया कि क्या किया जाय ? । ३८२९

कण्णि नुण्मणि यूडु कळिन्दन, ऍण्णि नुण्मण लिऱ्पल वॅङ्गणै
पुण्णि नुण्णुळैन् दोडिय पुन्दियोर्, ऍण्णि नुण्णिय वॅन्नॅयर् पाऱ्ऱॅना 3830

ऍण्णिन्–विचार करें तो; नुण् मणलिल् पल–बारीक बालुओं से अधिक; पुन्तियोर्–पण्डितों के; ऍण्णिन् नुण्णिय–ज्ञान से सूक्ष्म; वॅम् कणै–क्रूर शर;

कण्णित् उळ मणि ऊटु कळिनृतत–आँख को पुतली को भेद चले; पुण्णित् उळ् मुळैन्तु ओटिय–व्रणों में घुसकर चले; अँन् अँयल् पाऱ्ऱु–क्या कहना उचित है; अँता–ऐसा सोचकर । ३८३०

विचारो तो बारीक बालुओं से संख्या में अधिक और ज्ञानी के विवेक से भी अधिक सूक्ष्म भीषण शर आँखों की पुतलियों में घुसकर चले थे। व्रणों में घुसकर चले थे! उन्होंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। इसलिए उन्हें सोचना पड़ा कि क्या किया जाय । ३८३०

नार णन्तिरु वुन्दियि नान्मुहन्, पार वॅम्बडै वाङ्गियिप् पादहन्
मारि नॅय्वॅन्ॅ ऱॅण्णि वलित्तनन्, आरि यन्नव नावि यहऱ्ऱुवान् 3831

आरियन्–आर्य श्रीराम; अवन् आवि अकऱ्ऱुवान्–उसके प्राणों का नाश करने; नारणन्–श्रीमन्नारायण की; तिरु उन्तियिल् नान्मुकन्–श्रीनाभि में उदित चतुर्मुख का; पारम् वॅम्पटै वाङ्कि–भारी भयंकर अस्त्र लेकर; इ पातकन्–इस पातक के; मारिन् अँय्वॅन्–वक्ष पर चलाऊँगा; अँन्ऱु अँण्णि वलित्तनन्–ऐसा सोचकर मन में ठान लिया । ३८३१

आर्य श्रीराम ने उसके प्राणों का अंत करने के विचार से श्रीमन्नारायण की श्रीनाभी से उदित ब्रह्मा का भारी व भीषण अस्त्र लेकर ठाना कि इस पातक के वक्ष पर यह अस्त्र चलाऊँगा । ३८३१

मुन्दि वन्दुल हीन्ऱ मुदऱ्पॅयर्, अन्द णन्पडै वाङ्गि यरुच्चियाच्
चुन्द रन्शिलै नाणिऱ् ऱॉडुप्पुऱा, मन्द रम्बुरै तोळुऱ वाङ्गिनान् 3832

मुन्ति वन्तु–पहले प्रगट होकर; उलकु ईन्ऱ–जिसने लोक रचा उस; मुतल–आदि; पॅयर्–नामी; अन्तणन्–ब्राह्मण ब्रह्मा के; पटै वाङ्कि–हथियार लेकर; अरुच्चिया–अर्चना (पूजा) करके; चिलै नाणिल्–धनु के डोरे पर; तॉटुप्पु उऱा–संधान करके; चुन्तरन्–सुन्दरराज; मन्तरम् पुरै–मन्दरतुल्य; तोळ् उऱ–कंधे तक; वाङ्कितान्–खींचा (डोरा) । ३८३२

आदि-सृष्टि, लोकसर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का अस्त्र लेकर श्रीराम ने उसकी यथावत् पूजा की। डोरे पर संधाना और मंदरतुल्य अपने कंधे तक डोरा खींचा । ३८३२

पुरञ्जु डप्पण् डमैत्तदु पॉऱ्पणै, मरन्दु ळैत्तदु वालियै माय्त्तुळ
दरञ्जु डच्चुडर् नॅञ्ज नरकक्र्होन्, उरञ्जु डच्चुड रोन्मह नुन्दिनान् 3833

पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; पण्टु अमैत्ततु–पहले रचित; पॉन् पणै मरम् तुळैत्ततु–सुन्दर डालों वाले सालवृक्ष को जिसने भेदा था; वालियै माय्त्तुळतु–वाली को जिसने मारा, उसे; अरम् चुट–(हथियार की) रेती से जलाने पर; चुटर्–ज्वलंत बननेवाला; नॅञ्चन्–मन से युक्त; अरक्कर् कोन्–राक्षसराजा के; उरम् चुट–वक्ष पर लगने; चुटरोन् मकन् उन्तिनान्–सूर्यवंश के पुत्र ने चलाया । ३८३३

त्रिपुरदहन के लिए पूर्व में रचित, सुंदर डालोंदार सालवृक्ष का भेदक और वाली का हननकारी जो था उस अस्त्र को सूर्यवंशज श्रीराम ने राक्षसराजा रावण के वक्ष से टकराये, ऐसा छोड़ा। रावण का वक्ष ऐसा था, जो ज्यों-ज्यों अस्त्र लगते त्यों-त्यों शोभा में बढ़ता। ३८३३

कालुम् वॅङ्गत्न लुङ्गडै काण्गिला, मालुङ् गॉण्ड वडिक्कणै मामुहम्
नालुङ् गॉण्डु नडन्दडु नान्मुहन्, मूल मन्दिरन् .दन्नॊडु मूट्टलाल् 3834

मालुम्–श्रीविष्णु ने; कॉण्ट–जो हाथ में लिया; कालुम्–पवन और; वॅम्कतलुम्–भयंकर आग; कटं काण्किला–जिसकी गति न देख सकें; वटि कणं–वह तीक्ष्ण बाण; नान् मुकन्–चतुर्मुख के; मूलम् मन्तिरम् ततॊटु मूट्टलाल्–बीज-मंत्र से अभिमंत्रित कर भेजने से; मा मुकम् नालुम् कॉण्टु–चारों बड़े मुखों को लेकर; नटन्ततु–चला। ३८३४

श्रीमन्नारायण के हाथ में लिया गया वह तीक्ष्ण अस्त्र इतना वेगवान था कि पवन और आग भी उसका सिरा न देख सकें। वह चतुर्मुख-मंत्र से अभिमंत्रित था। तो वह चार मुखों को अपनाकर चला। ३८३४

आऴि मालुवरैक् कप्पुऱत् तप्पुऱम्, बाऴि माक्कड लुम्वॅळिप् पायन्ददाल्
ऊऴि ञायिऱु मिन्मिनि यॊप्पुऱ, वाऴि वॆञ्जुडर् पेरिरुळ् वारवे 3835

वॅम् चुटर्–आतंकमयी प्रकाश से; पेर् इरुळ् वार–बड़े अंधकार को दूर करने में; ऊऴि ञायिऱुम्–युगांत का सूर्य भी; मिन्मिनि ऑप्पुऱ–खद्योत-सम बन गया, ऐसे; माल् आऴि वरै–बड़ी चक्रवालगिरि के; अप्पुऱत्तु–उस पार; अप्पु उऱुम्–जल से भरे; पाऴि मा कटलुम्–बहुत बड़ा समुद्र भी; वॅळि पायन्ततु–बाहर निकल बहने लगा। ३८३५

जब वह अपने भीषण प्रकाश से अंधकार को दूर कर रहा था, तब वह युगांत के सूर्य को इतना निष्प्रभ बना रहा था कि सूर्य उसके सामने केवल खद्योत-सम लगे। और चक्रवाल गिरि के उस पार का सागर भी बाहर निकल बहा। ३८३५

अक्क णत्ति नयन्पडै याण्डहै, चक्क रप्पडै योडुन् दळीइच्चॅन्ऱु
पुक्क दक्कॊडि योनुरम् बूमियुम्, तिक्क नैत्तुम् विशुम्बुन् दिरिन्दवे 3836

अक्कणत्तिन्–उस समय; अयन् पडै–ब्रह्मास्त्र; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ के; चक्करप् पडैयोटुम्–चक्रास्त्र के साथ; तळीइ चॅन्ऱु–मिलकर गया; अ कॊटियोन्–उस क्रूर की; उरम् पुक्कतु–छाती में घुसा; पूमियुम्–भूमि और; अनैत्तु तिक्कुम्–सारी दिशाएं; विशुम्पुम्–और आकाश; तिरिन्त–विचलित हुए। ३८३६

उस समय ब्रह्मास्त्र पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के चक्रास्त्र के साथ मिल चला और उस नृशंस के वक्ष में घुसा। तब भूमि, आकाश और सभी दिशाएँ विचलित हो घूमने लगीं। ३८३६

मुक्कोडि वाणाळु मुयन्रुडैय पॅरुन्दवमु मुदल्वन् मुन्नाळ्
ॲक्कोडि यॅवरालुम् वॅलप्पडा यॅनक्कॊडुत्त वरमु मेनत्
तिक्कोडु मुलहनैत्तुम् जॅरुक्कडन्द पुयवलियुन् दिन्रु मार्बिऱ्
पुक्कोडि युयिर्परुहिप् पुऱम्बोयिऱ् ऱिराहवन्ऱन् पुनिद वाळि 3837

इराकवन् तन्–श्रीराघव का; पुनित वाळि–पवित्र अस्त्र; मुक्कोटि वाळ्नाळुम्–तीन करोड़ (वर्ष) की आयु और; मुयन्ऱु उटैय–परिश्रम-प्राप्त; पॅरु तवमुम्–बड़ी तपस्या-फल; मुतल्वन्–आदि ब्रह्मा के; मुन् नाळ्–पहले; ॲक्कोटि ॲवरालुम्–कितने ही करोड़ के किसी से; वॅलप्पटाय्–न हराये जाओगे; ॲन्ऱु कॊटुत्त वरमुम्–कहकर दिये गये वर; एनै–अन्य; तिक्कु ओटुम्–दिशाओं के साथ; अनैत्तु–सभी; उलकुम्–लोकों को; चॅरु कटन्त–युद्ध में परास्त करनेवाला; पुयम् वलियुम्–भुजबल और; तिन्ऱु–हड़पकर; मार्पिल् पुक्कु–छाती में घुसकर; ओटि–जाकर; उयिर् परुकि–प्राण पीकर; पुऱम् पोयिऱ्ऱु–बाहर चला गया। ३८३७

श्रीराम का पवित्र अस्त्र रावण की तीन करोड़ (वर्ष) की आयु, परिश्रम से प्राप्त तप-फल, आदिदेव का यह कहकर दिया गया वर कि किसी भी देव-जाती के किसी से मारे नहीं जाओगे, और दिग्-लोक-विजयी भुजबल —इन सबको मिटाकर उसके शरीर में सर्वत्र घुस चला और प्राण लेकर निफर गया। ३८३७

आर्क्किन्ऱ वानवरु मन्दणरु मुनिवर्हळु माशि कूऱित्
तूर्क्किन्ऱ मलर्मारि तॊडरप्पोय्प् पाऱ्कडलिऱ् ऱूय्नी राडित्
तेर्क्कुन्ऱ विरावणन्ऱन् शॅळुङ्गुरुदिप् पॅरुम्बरवैत् तिरैमेऱ् चॅन्ऱु
कार्क्कुन्ऱ मनैयान्ऱन् कडुङ्गणैप्पुट् टिलिन्नडुवट् करन्द दम्मा 3838

आर्क्किन्ऱ वानवरुम्–हो-हल्ला मचानेवाले देव और; अन्तणरुम्–ब्राह्मण; मुनिवर्कळुम्–और मुनिगण; आचि कूऱि–आशीर्वाद कहकर; तूर्क्किन्ऱ–जो बरसाने लगे; मलर् मारि–वह पुष्पवर्षा; तॊटर पोय्–पीछा करे ऐसे जाकर; पाल् कटलिल्–क्षीरसागर में; तूय् नीराटि–पवित्र स्नान करके; कुन्ऱम् तेर्–पर्वत-सम रथ के; इरावणन् तन्–रावण के; चॅळु कुरुति–पुष्ट रथ के; पॅरु परवै–बड़े समुद्र की; तिरै मेल् चॅन्ऱु–तरंगों पर जाकर; कार् कुन्ऱम्–काले पर्वत के; अनैयान् तन्–समान रहनेवाले श्रीराम के; कटु कणै–वेगवान अस्त्रों के; पुट्टिलिन् नटुवण्–तूणीर-मध्य; करन्ततु–छिप गया। ३८३८

वह अस्त्र कोलाहलकारी देवों के और ब्राह्मणों के आशीर्वाद के साथ डाले गये फूलों के आगे-आगे चला। क्षीरसागर में पवित्र स्नान करके, पर्वतोपम रथ के स्वामी रावण के पुष्ट रक्त से भरे समुद्र की तरंगों के ऊपर से होकर नीलगिरि-तुल्य श्रीराम के वेगवान बाणों के तूणीर के अंदर जा छिप गया। ३८३८

कार्निन्ऱ मळैनिन्ऱु मुऱमुदिर्व वॅन्नत्तिणितोट् काट्टि निन्ऱम्
तार्निन्ऱ मलैनिन्ऱम् वणिक्कुलमु मणिक्कुलमुन् दहर्न्दु शिन्दप्

पोर्निन्ऱ विळिनिन्ऱुम् वॅरिनिन्ऱु पुहैयोडुङ् गुरुदि पॊङ्गत्
तेर्निन्ऱु नॆडुनिलत्तुच् चिरमुहङ्गीळ्प् पडविळुन्दान् शिहरम् बोल्वान् 3839

चिकरम् पोल्वान्–शिखर-तुल्य रावण; कार् निन्ऱ–काले रंग के; मझै निन्ऱुम्–मेघ से; उरुम् उतिर्व अॅत्त–गाज गिरती जैसे; तिणि–बलवान; तोळ् काट्टिन् निन्ऱुम्–कन्धों के वन से; तार् निन्ऱ–माला से अलंकृत; मलै निन्ऱुम्–पर्वत से भी; पणि कुलमुम्–रत्नकुल और; मणि कुलमुम्–आभरणराशियाँ; तकर्न्तु चिन्त–टूटकर गिरीं; पोर् निन्ऱ–युद्ध पर लगी; विळि निन्ऱुम्–दृष्टि से; पॊरि निन्ऱु–अंगारे निकलकर; पुकैयोटुम्–धुएँ के साथ; कुरुति पॊङ्क–रुधिर उमग आया; तेर् निन्ऱु–रथ से; नॆटु निलत्तु–बड़ी भूमि पर; चिरम् मुकम्–सिर और मुख; कीळ् पट–नीचे की ओर रहें ऐसा; विळुन्तान्–गिरा। ३८३९

राक्षसवंश रूपी पर्वत के शिखर के समान रावण के कंधों के वन से और हारालंकृत वक्ष से मेघों से गिरते वज्रों के समान रत्नों और आभरणों की राशियाँ टूटकर गिरी। आँखों से अंगारे निकले और धुएँ के साथ रक्त उमँग आया। इस स्थिति में वह रथ से विस्तृत भूमि पर सिर और मुख को नीचा किये औंधा गिर गया। ३८३९

वॆम्मडङ्गल् वॆहुण्डन्नैय शिन्नमडङ्ग मन्नमडङ्ग विन्नैयम् वीयत्
तॆम्मडङ्गप् पॊरुतडक्कैच् चॆयलडङ्ग मयलडङ्ग वाऱ्ऱल् तेयत्
तम्मडङ्गु मुनिवरैयुन् दलैयडङ्ग निलैयडङ्गच् चाय्त्त नाळिन्
मुम्मडङ्गु पॊलिन्दनवम् मुऱ्ऱुऱन्दा नुयिर्त्तुऱन्द मुहङ्ग ळम्मा 3840

वॆम् मटङ्कल्–भीषण सिंह; वॆकुण्टन्नैय–क्रुद्ध हुआ जैसे; चिन्नम् अटङ्क–क्रोध के थमते; मन्नम् अटङ्क–मन के थमते; विन्नैयम् वीय–कार्यों के रुक जाते; तॆव् मटङ्क–शत्रु मिटाकर; पॊरु तट कै–युद्ध करनेवाले विशाल हाथों के; चॆयल् अटङ्क–निष्क्रिय होते; मयल् अटङ्क–कामांधता के मिटते; आऱ्ऱल् तेय–शक्ति खोकर; उयिर् तुऱन्त–जिसने प्राण छोड़े; अम् मुऱ्ऱु तुऱन्तान्–उस अतिक्रमी के; मुकङ्कळ्–दसों मुख; तम् अटङ्कु–अपने अधीनस्थ; मुनिवरैयुम्–मुनियों को; तलै अटङ्क–सिर झुकाकर; निलै अटङ्क–स्थिति बिगाड़कर; चाय्त्त–जिस दिन परास्त किया था; नाळिन्–उस दिन से; मुम्मटङ्कु–तिगुने; पॊलिन्तन–शोभे। ३८४०

भीषण सिंह क्रुद्ध हो उठा हो वैसा क्रुद्ध जो था उसका क्रोध थम गया। मन रुक गया। कार्य-शक्ति खो गयी। शत्रुनाशक योद्धा और विशाल हाथों का काम रुक गया। सीता पर प्रेम दूर हो गया। बल मिट गया। इस तरह जो मर गया उस अधर्मी रावण के मुख अब उस दिन से तिगुने छविमय रहे, जिस दिन उन्होंने अपने अधीनस्थ मुनियों का सिर नवाया था और गौरव बिगाड़ा था। ३८४०

पूदलत्ति लाक्कुवाय् नीविडुमिप् पॊलन्देरॆन् ऱॆन्ऱु पोदिन्
मादलिप्पे रवन्कडव मण्डलत्ति लप्पॊळ्दे वरुद लोडुम्

मीदलत्त परुन्दारै विशुम्बळप्पक् किडन्दात्तन् मेनि मुऴुदुङ्
गादलित्त वुरुवाहि यऱम्वळर्क्कुङ् गण्णाळन् तॅरियक् कण्डान् 3841

नी विट्टुम्–तुम जो चलाते हो; इ पॉलम् तेरै–इस सुन्दर रथ को; पूतलत्तित्–भूमि पर; आक्कुवाय्–लगाते चलाओ; ॲन्नॅ पोतिन्–जब श्रीराम ने कहा; मातलि पेरवन्–तब मातलि श्रेष्ठ के; कटव–चलाने से; मण्टलत्तिन्–भूमंडल में; अप्पॉऴुते–तभी; वरुतलोटुम्–आया तो; तन् मेनि मुऴुदुम्–जिनका सारा शरीर; कातलित्त उरुवाळि–प्रेम का पात्र बना रहा; अऱम् वळर्क्कुम्–धर्मसंवर्धक; कण्णाळन्–दयालु ने; मीतु अलैत्त–ऊपर जो लहरें मारता रहा; पॆरु तारै–वह रक्त की बड़ी धारा; विचुम्पु अळप्प–आकाश तक गया; किटन्तात्–ऐसा जो पड़ा रहा; तॅरिय कण्टात्–उसे खूब देखा। ३८४१

श्रीराम ने मातलि को हिदायत दी कि तुम जो रथ चला रहे हो उसे भूमि पर लगे चलाओ। मातलि भूतल पर आया। तब रावण के शरीर से रक्त उछलकर धर्मसंवर्धक, दयालु, सर्व-काम्य-विग्रह श्रीराम पर लगता हुआ आकाश तक गया और वह शरीर नीचे पड़ा रहा। श्रीराम ने उसे खूब देखा। ३८४१

तेरित्तैनी कॉडुविशुम्बिऱ् चॅल्हॆन्न मादलियैच् चॅलुत्तिप् पिन्नर्प्
पारिडमी दिनिनणुहित् तम्बियॉडुम् बडैत्तलैव रॅवरुञ् जुऴप्
पोरिडैमीण् डॉरुवरुक्कुम् बुऱङ्गॊडाप् पोर्वीरन् पॉरुदु वीऴ्न्द
शीरित्तैये मनमुवप्प वुरुमुऴुदुन् दिरुवाळन् तॅरियक् कण्डान् 3842

नी तेरिन् कॉटु–तुम रथ लेकर; विचुम्पिल् चॅल्क–स्वर्गलोक चले जाओ; ॲन्न–कहकर; मातलियै–मातलि को; चॅलुत्ति–विदा देकर; पिन्नर्–बाद; पार् इटम् मीतितिन्–भूमि पर; अणुकि–पास आकर; तिरुवाळन्–श्रीनाथ; तम्पियॉटुम्–अपने भाई के साथ; पटै तलैवर्–सेनापति; ॲवरुम् चुऴ–सभी के घेरे आते; पोर् इटै मीण्टु–युद्ध से हटकर; ऑरुवर्क्कुम् पुऱम् कॊटा–किसी को भी पीठ न दिखानेवाले; पोर् वीरन्–योद्धा वीर; पॊरुतु वीऴ्न्त–जो लड़कर गिरा था; चीरित्तैये–उसकी श्रेष्ठता को; मनम् उवप्प–मन में आनन्द के साथ; उरु मुऴुम्–सारे शरीर पर; तॅरिय कण्टात्–खूब दृष्टि डालकर देखा। ३८४२

फिर श्रीराम ने मातलि को आज्ञा दी कि रथ को स्वर्ग में ले चलो। बाद श्रीनाथ श्रीराम भूमि पर आये। भाई लक्ष्मण और घेरे आये सेनापतियों के साथ वे और पास आये और उस महावीर रावण के युद्ध करके गिरे रहने का शान मोद के साथ देखा जो अब तक कभी युद्धस्थल से पीठ दिखाकर नहीं लौटा था। उन्होंने उसके शरीर के अंग-अंग को पूर्ण रूप से निहारा। ३८४२

अलैमेवुङ् गडलुवुडैशू ऴुवनियॅलाङ् गात्तळिक्कु मडऱ्कै वीरन्
शिलैमेवुङ् गुडुङ्गणैयाऱ् पडुहळत्ते मनत्तीमै शिवैन्दु वीऴ्न्दोन्

तलैमेलुन् दोण्मेलुन् दडमुदुहिड़् पडर्पुयत्तुन् दावि येर्रि
मलैमेनिन् ड्राडुवपो लाडिनवाल् वानरङ्गळ् वरम्बि लाद 3843

अलै मेवुम्–तरंगाकीर्ण; कटल् पुटै चूऴ्–समुद्र की घिरी; अवनि ॲलाम्–सारी भूमि का; कात्तु अळिक्कुम्–रक्षक व सहायक; अटल् कै वीरन्–सबल भुजा वाले के; चिलै मेवुम्–धनु में लगे; कटुकणैयाल्–वेगवान अस्त्र से; पटु कळत्ते–युद्ध के मैदान में; मनम् तीमै चितैन्तु–मन की बुराई मिटाकर; वीऴ्न्तोन्–जो गिरा रहा उसके; तलै मेलुम्–सिरों पर; तोळ् मेलुम्–और कंधों पर; तट मुतुकिल्–विशाल पीठ में; पटर् पुयत्तुम्–विशाल हाथों पर; तावि एर्रि–उछल, चढ़कर; वरम्पु इलात–असीम; वानरङ्कळ्–वानर; मलै मेल् निन्रु–पर्वत पर रहते; आटुव पोल्–नाचते जैसे; आटित–नाचे। ३८४३

तरंगाकीर्ण-समुद्रावृत लोकों के पालक और सहायक सबल भुजाओं के स्वामी श्रीराम के धनु पर से निकले क्रूर अस्त्र से हत होकर रावण युद्धस्थल में पड़ा रहा। उसके मन की बुराई नष्ट हो गयी थी। वानर उसके सिरों, कंधों, विशाल पीठ और विस्तृत भुजाओं पर उछल-उछल चढ़े। और वे असंख्यक वानर पर्वत पर नाचते जैसे नाचे। ३८४३

तोडुळ्ळ नरुन्दोडैयऱ् ऱोहैयुळ्ळ किळैवण्डिन् शुळियत् तोङ्गऱ्
पाडुळ्ळ पडर्वॅरिनिन् पणियुळ्ळ वणिनिहर्प्पप् पणैक्कै यानैक्
कोडुळ्ळ नॆडुन्दऴुम्बिन् कुवैतऴुवि यॆऴुमेहक् कुऴुविन् कोवैक्
काडुळ्ळ कोऴुम्बिऱैयिऱ् कऱैकळन्ऱ् किडन्दन्नपोऱ् किडक्कक् कण्डान् 3844

तोटु उळ्ळ–पंखुड़ियों-सह; नऱु तोटैयल–सुगंधित पुष्पमाला की; तोकै उळ्ळ–पुष्पराशियों पर रहे; किळै–शाखाओं-सहित; वण्टिन्–भ्रमरावृत; चुळियल् तोङ्कल्–'चक्र' मालाएँ; पाटुळ्ळ–पार्श्व में पड़ी रहीं; पटर्–विशाल; वॆरिन्–पीठ; इन् पणि उळ्ळ–अच्छी कारीगरी से युक्त; अणि निकर्प्प–आभरण के समान रही; पणै कै–मोटी सूंड़ों के; यानै कोटु उळ्ळ–गजों के दाँतों के छेदने से बने; नॆटु तऴुम्पिन्–बड़े दागों की; कुवै तऴुवि–राशियों से युक्त; ॲऴु म् मेकम् कुऴुविन्–उठते मेघसमूहों की; कोवै–पंक्तियों का; काटु–वन; उळ्ळ–जिसमें रहा; कोऴुम् पिऱैयिल्–उस पुष्ट कलाचन्द्र के साथ; कऱै कळन्ऱ–कलंक-रहित; किटन्तन्न पोल्–पड़ा रहा जैसे; किटक्क कण्टान्–पड़ा रहा रावण, उसको देखा श्रीराम ने। ३८४४

श्रीराम ने रावण की पीठ देखी। आसपास पंखुड़ियों-सहित सुन्दर फूलों की मालाएँ बिखरी पड़ी थीं और उन पर भ्रमर बैठे कुरेद रहे थे। उसकी पीठ पर दिग्गजों के भेदने से दाग़ लगे हुए थे। वे लंबे-चौड़े दाग़ उठते मेघ-मध्य शोभित पुष्ट तथा कलंक-हीन कलाचंद्र के समान आभरण-सा भास देते हुए पड़े हुए थे। श्रीराम ने उन निशानों को निहारा। ३८४४

तळिरियल् पॉरुट्टिऩ् वन्द शीऱ्ऱमुन् दरुक्कि तोऩ्ऱऩ्
किळरिय लुरुवि ऩोडुङ् गिळिप्पुऱक् किळर्न्दु तोऩ्ऱुम्
वळरियल् वडुविऩ् चॅम्मैत् तऩ्मैयु मरुव निऩ्ऱ
मुळरियङ् गण्णन् मूरल् मुरुवलऩ् मॊळिव दाऩाऩ् 3845

मरुव निऩ्ऱ–पास स्थित; मुळरि अम् कण्णन्–पंकजाक्ष; तळिर् इयल्–पल्लव-सम सीता के; पॉरुट्टिऩ् वन्त–कारण उत्पन्न; चीऱ्ऱमुम्–क्रोधी और; तरुक्किनोऩ् तऩ्–गर्वीले रावण के; किळरियल्–शोभित; उरुविऩोडुम्–आकार के साथ; किळिप्पु उऱ–चिर, मिट गया; किळर्न्दु तोऩ्ऱुम्–प्रफुल्लित दिखनेवाले; वळर् इयल्–वर्धनशील; वडुविल्–दाग़ से; चॅम्मैतु अऩ्मैयुम्–श्रेष्ठता से रहितता जान; मूरल् मुरुवलन्–मंदहासयुक्त हो; मॊळिवतु आऩाऩ्–(श्रीराम) कहने लगे। ३८४५

रावण के बहुत समीप खड़े थे पंकजाक्ष श्रीराम। पल्लव-तुल्य सीतादेवी के कारण रावण क्रोधी और घमंडी बना था। अब उसका सुंदर शरीर चिरकर विकृत हो गया था। उस पर विलसनेवाला दाग़ वर्धित होता लगता था। श्रीराम ने सोचा कि इस दाग़ ने उनकी वीरता को श्रेष्ठता से रहित बना दिया। अतः वे मुस्कुराते हुए बोले। ३८४५

वॅऩ्ऱिया नुलह मूऩ्ऱु मॅय्म्मै यान्मेवि ऩालुम्
पॊऩ्ऱिऩा ऩॅऩ्ऱु तोळैप् पॊदुवऱ नोक्कुम् बॊऱ्पुम्
कुऩ्ऱिया शुऱ्ऱ दऩ्ऱे यिवनॆदिर् कुऱित्त पोरिऱ्
पिऩ्ऱियाऩ् मुदुहिऱ् पट्ट पिळम्बुळ तळुम्बि ऩम्मा 3846

उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; मॅय्म्मैयाऩ्–सच्चे रूप से; वॅऩ्ऱियाल्–जीतकर; मेविऩालुम्–बड़ा बना रहा तो भी; पॊऩ्ऱिऩाऩ्–मर गया; ऎऩ्ऱु–कहकर; तोळै–भुजबल को; पॊदु अऱ नोक्कुम्–विशेष रीति से दिखनेवाला; पॊऱ्पुम्–गौरव; इवन्–यह; ऎतिर् कुऱित्त पोरिल्–सामने की लड़ाई में; पिऩ्ऱियाऩ्–पीछे मुड़ने से; मुतुकिऩ् पट्ट–पीठ पर लगे; तळुम्पिन् उळ–दाग़ के रूप में रहते; पिळम्पु–गोल से; कुऩ्ऱि–घटकर; आचु–कलंक से; उऱ्ऱतु–लगा हो गया; अऩ्ऱे–न। ३८४६

रावण सच ही त्रिलोक-विजय-प्रतापी था। तो भी वह मर गया। उससे मेरे भुजबल को गौरव प्राप्त हुआ। पर समक्ष चले उस युद्ध में पीठ दिखाने की वजह से उसकी पीठ पर दाग़ लग गया। रे! उस दाग़ के पुंज ने मेरे गौरव को कलंकित कर दिया न? । ३८४६

कार्त्तवी रियनॆऩ् ऩाऩाऱ् कट्टुण्डा ऩॆऩ्ऩक् कऱ्कुम्
वार्त्तैयुण् डदनैक् केट्ट नाणुऱ मऩत्ति ऩेऱ्कुप
पोर्त्तलैप् पुऱहिट् टेऱ्ऱ पुण्णुडैत् तळुम्बुम् बोलाम्
नेर्त्तदुङ् गाण लुऱ्ऱ वीरऩा रिरुक्कै निऱ्क 3847

कार्त्त वीरियन्–कार्तवीर्य; ऎऩ्पाऩाल्–जो था उससे; कट्टुण्डाऩ्–बद्ध

हुआ; ऍन्रु करुदुम्–ऐसा कहा; वार्त्तै उण्डु–वृत्तांत है; अतनै केट्टु–उसे सुनकर; नाण् उऱ्ऱ–लज्जायुक्त; मनत्तिनेऱ्कु–मन वाले मुझे; पोर्त्तलै–युद्ध में; पुऱ्किट्टु–पीठ दिखाकर; एऱ्ऱ–प्राप्त; पुण् उट्टै तऴुम्पुम्–व्रण का दाग भी; नेर्न्ततुम्–हुआ; काणल् उऱ्ऱ–देखना हो गया; ईचनार् इरुक्कुं निऱ्क–परमेश्वर का स्थान रहे। ३८४७

कार्तवीर्य द्वारा यह बद्ध हुआ था —यह एक वृत्तांत मैंने सुना था। उसी से मैं लज्जित हुआ था। तिस पर युद्ध में पीठ पर व्रण का निशान लग गया है। इसको मिलाकर देखता हूँ तो हालत और भी बिगड़ जाती है। (अपने से हीन व्यक्ति के साथ मुझे युद्ध में जीत मिली। यह कोई शालीनता नहीं!) ईश्वर का वासस्थान कैलास भी रहा एक ओर ही। ३८४७

माण्डॊऴिन् दुलहि निऱ्कुम् वयङ्गिशै मुयङ्ग माट्टा
दूण्डॊऴि लुहन्दु तॆव्वर् मुऱुवलॆन् पुहऴै युण्णप्
पूण्डॊऴि लुडैय मार्बा पोर्प्पुऱङ् गॊडुत्तोर्प् पोऩ्ऱ
आण्डॊऴि लोरिऱ् पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियु मवत्त मॆऩ्ऱाऩ् 3848

पूण् तॊऴिल्–आभरणधरणकार्य; उडैय मार्पा–के वक्षवाले; ऊण् तॊऴिल् उकन्तु–खाने का कार्य चाहकर; तॆव्वर् मुऱुवल्–शत्रु के हास के; ऍन् पुकऴै–मेरे यश को; उण्ण–चाट लेते; पोर्–युद्ध में; पुऱम् कॊडुत्तोर्–पीठ दिखानेवाले; पोऩ्ऱ–के समान; आण् तॊऴिलोरिन्–पौरुष के कार्य के इस; पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियुम्–की प्राप्त विजय; अवत्तम्–अ (गौरव) युक्त है; माण्टु ऒऴिन्ततु–मर गया इसलिए; उलकिल् निऱ्कुम्–लोक में स्थापित; वयङ्कु इचै–विशेष यश; मुयङ्क माट्टातु–मेरे पास नहीं आयगा; ऍन्ऱाऩ्–कहा श्रीराम ने। ३८४८

आभरणधारणकारी वक्षवाले विभीषण! भोग की कामना करके शत्रु की मुस्कुराहट ने मेरे यश को पोंछ दिया। युद्ध में पीठ दिखायी हो, ऐसा रावण की पीठ पर दाग़ लग गया है! इस वीर रावण पर जो जीत हुई है वह निपट अवद्ध है! रावण का मरण स्थायी रहेगा। और यश भी मेरे पास नहीं आ रहेगा। श्रीराम ने यों श्रीवचन उच्चारण किया। ३८४८

अव्वुरै युरैप्पक् केट्ट वीडण ऩऱविक् कण्णऩ्
वॆव्वुयिर्प् पोडु नीण्ड विम्मलऩ् वॆदुम्बु नॆञ्जऩ्
शॆव्वियिर् ऱॊडरन्द वल्ल शॆप्पलै शॆल्व वॆऩ्ऩा
अॆव्वुयिर्प् पॊरैयु नीङ्गि विरङ्गिनिऩ् ऱिनैय शॊऩ्ऩाऩ् 3849

अव् उरै–वह कथन; उरैप्प–कहते; केट्ट–जिसने सुना; वीटणन्–वह विभीषण; अऱवि कण्णन्–सरिता-सी आँखों वाला; वॆम्मै नीण्ट–अधिक गर्मी से युक्त; उयिर्प्पोटु–निःश्वास के साथ; विम्मलन्–सिसकता; वॆतुम्पुम् नॆञ्चन्–

उत्तप्तमन; वॆल्व-धनी; वॆव्वियिल् तॊदर्नुत अल्ल-श्रेष्ठता से असंबद्ध; चॆप्पलै-मत बोलें; ॲन्नृता-कहकर; ॲव् उयिर् पॊरुयुम्-किसी भी जन्ममार से; नीङ्कि निन्नृ-हटकर जो खड़ा था; इरङ्कि-(उस चिरंजीव ने) करुणार्द्र होकर; इतॅय चॊन्नतान्-ये बातें कहीं। ३८४६

वह कथन सुनकर विभीषण की आँखों से सरिता के समान अश्रु-धारा बहने लग गयी। गरम लंबी साँसें छोड़ते हुए क्षोभ के साथ उसने कहा कि धनी! आप ऐसी बातें मत कहें जो सीधी नहीं। फिर चिरंजीव विभीषण ने निम्नोक्त बातें कहीं। ३८४९

आयिरन् दोळि नानुम् वालियु मरिदि नैय
मेयिन वॆन्द्रि विण्णोर् शाबत्तिन् विळैन्द मॆय्म्मै
तायिनुन् दॊळत्तक् काण्मेड् रङ्गिय कादड् रन्मै
नोयुनिन् मुनिवु मल्लाल् वॆल्वरो नुवलड् पालार् 3850

ऐय-प्रभु; आयिरम् तोळित्तानुम्-सहस्रभुज कार्तवीर्य और; वालियुम्-बाली को; अरिदिन् मेय-कष्ट के साथ मिली; वॆन्द्रि-विजय; विण्णोर् चापत्तिन्-देवों के शाप के कारण; विळैन्त-मिली थी; मॆय्म्मै-सच; तायिनुम्-माता से भी; तॊळ तक्काळ् मेल्-पूजनीया पर; तङ्किय-ठहरा; कातल् तन्मै नोयुम्-प्रेम-रोग; निन् मुनिवुम् अल्लाल्-और आपका कोप, इनके बिना; नुवलल् पालार्-गण्य कोई; वॆल्वरो-जीत सकेंगे क्या। ३८५०

हे प्रभु! सहस्रबाहु (कार्तवीर्य) और वाली ने इस पर जो परिश्रम से विजय पायी थी वह देवों के शाप का फल था। माता से भी वंदनीया सीता पर इसने जो प्रेम रखा था उसका रोग, और आपका बाण, ये दोनों नहीं रहे तो गण्य कोई भी इसको परास्त करनेवाला है क्या? । ३८५०

नाडुळ दनयु मोडि नण्णलार् काण्गि लामर्
पीडुळ कुन्द्रम् बोलुम् बॆरुन्दिश यॆल्लै यानैक्
कोडुळ दनैयुम् बुक्कुक् कॊडुम्बुड़त् तळुन्दु पुण्णिन्
पाडुळ दन्द्रित् तॆव्वर् पडैक्कलम् बट्टॆन् शॆय्युम् 3851

नाट्टुळ तनैयुम् ओटि-लोक-सीमा तक दौड़कर; नण्णलार् काण्किलामल्-शत्रुओं को न पाकर; पीटु उळ कुन्द्रम् पोलुम्-शानदार पर्वत के समान; पॆरु तिशै ॲल्लै यानै-बड़े दिग्गजों से (लड़ने पर); कोट्टु-उनके दाँत; उळततनैयुम्-जितने लम्बे थे उतने; पुक्कु-घुसकर; कॊटु-वक्र; पुरत्तु-पीठ के पीछे; अळुन्तु-घुसे इसलिए; पुण्णिन्-व्रण-दारा; पाटु उळतु-पीठ पर है; अन्द्रि-नहीं तो; तॆव्वर्-शत्रुओं के; पडै कलम् पट्टु-हथियार लगकर; ॲन् चॆय्युम्-क्या कर सकते होंगे। ३८५१

यह जहाँ तक स्थल रहा वहाँ तक दौड़ा। फिर वहाँ कोई शत्रु न मिले। तब शानदार पर्वतोपम दिग्गजों से जा टकराया। उनके दाँत

जितने लंबे थे उतने सारे इसके वक्ष में घुस गये, और पीठ तक आ गये। वही दाग इसकी पीठ पर हैं। नहीं तो शत्रु का हथियार इसका क्या कर सकेगा ? । ३८५१

अप्पणै यन्नत्तु मार्बुक् कणियॆन्नक् किडन्द वीरक्
कैप्पणै मुळङ्ग मेन्ना ळमरिडैक् किडैत्त कालन्
तुप्पिणै वयिर वाळि विशैयिनुङ् गालिन् तोन्ऱल्
वॆप्पणै कुत्ति नालुम् वॆरिनिडैप् पोय वन्ऱे 3852

अ पणै अन्नत्तुम्–वे सभी दाँत; मार्पुक्कु–छाती के; अणि ॲन्न किटन्त–आभरण के समान रहे; मेनाळ्–प्राचीन दिन में; वीरम्–वीरता के प्रदर्शन में; कै पणै मुळङ्क–हाथ के शंख के बजते; अमर् इटै–युद्ध में; किटैत्त–जो आया; कालन्–उस काल के; तुप्पु इणै–बलसंयुक्त; वयिरम् वाळि–वज्र बाणों के; विशैयिनुम्–वेग से और; कालिन् तोन्ऱल्–वायुपुत्र के; वॆम् पणै–संतापक; कुत्तिनालुम्–घूंसे से; वॆरिन् इटै पोय–पीठ में भेद चले । ३८५२

वे सब दाँत इसके वक्ष के शृंगार के रूप में रहे। फिर प्राचीन दिन में वीरता प्रदर्शित करते हुए, शंख बजाते हुए इसने जब यम से युद्ध किया, तब यम के सबल शरों ने और बाद वायुपुत्र के भीषण घूँसों से ये दाँत पीठ में जाकर रह गये । ३८५२

अव्वडु वन्ऱि यिन्द वण्डत्तुम् बुऱत्तु मात्ऱ
तॆव्वडु पडैह ळञ्जा दिवन्वयिऱ् चॆल्लिऱ् ऱेव
वॆव्विड मीशन् तन्नै विळुङ्गिनुम् बऱवै वेन्दै
अव्विड नाह मॆल्ला मणुहिनु मणुह लाऱ्ऱा 3853

तेव–देव; चॆल्लिल्–विचार करें तो; अ वटु अन्ऱि–उस दाग के अलावा; वॆव्विटम्–दारुण विष; ईचन् तन्नै–परमेश्वर को; विळुङ्किनालुम्–निगल जाय तो भी; पऱवै वेन्तै–पक्षी-राज को; अव्विटम् नाकम् ॲल्लाम्–सभी आशी-विष; अणुकिनुम्–पास जायें तो भी; इन्त अण्टत्तुम्–इस अण्ड में और; पुऱत्तुम्–बाहर; आन्ऱ–उत्कृष्ट; तॆव् अटु–शत्रुघातक; पटैकळ्–हथियार; अञ्चातु–बेखटके; इवन् वयिन्–इसके पास; अणुकल् आऱ्ऱा–भटक नहीं सकते । ३८५३

देव ! विचार करें तो वह वही दाग है; नहीं तो हलाहल ही परमेश्वर को क्यों न निगल जाय, गरुड़ को चाहे सारे आशीविष सता दें, पर इस अंड में या बाहर उत्कृष्ट शत्रुघातक युद्ध के हथियार इसे कुछ कष्ट देने पास भी न भटक सकेंगे ! । ३८५३

वॆन्ऱियाय् पिऱिदु मुण्डो वेलॆशूळ् ञाल माण्डोर्
पन्ऱिया यॆयिऱ्ऱुक् कोण्ड परम्बरन् मुदल पल्लोर्
ऒन्ऱिया मिडुक्कण् डोर्व दॆन्गिन्ऱा रिवनिन् ऱुन्नाल्
पॊन्ऱिना नॆन्ऱ पोदुम् तुळप्पडार् पॊय्कॊ लॆन्बार् 3854

वॆत्रियाय्–विजयी; पिरितुम् उणटो–अन्य है क्या; वेलै चूऴ् ञालम्–समुद्रावृत भूमि को; आण्ट–पालन करके; ओर्–अनुपम; पन्रियाय्–वाराह बनकर; ऎयिऱ्ऱ् कॊण्ट–दाँतों पर लेनेवाले; परम्परन् मुतल–परात्पर विष्णु आदि; पल्लोर्–अनेक; याम् इटुक्कण–हम दुःख से; तीर्वतु ऎन्ऱ–छूटें किस दिन; ऎन्किन्ऱार्–ऐसा कहते; उन्ताल् इवन्–आपसे यह; इन्ऱु पोन्रिलान्–आज मरा; ऎन्ऱ पोतुम्–कहने पर भी; पॊय् कॊल्–झूठ है क्या; ऎन्पार्–कहनेवाले; पुलप्पटार्–अदृश्य (कई) रहते हैं। ३८५४

विजयी ! और कोई बात है क्या ? उस परात्पर भगवान विष्णु से लेकर, जिन्होंने उस दिन समुद्रावृत भूमि को वाराहावतार लेकर अपने वक्र दाँतों पर उठाया था, अनेक सारे देव यही पूछते रहते हैं कि हमारा संकट दूर होगा किस दिन ? 'आपसे यह आज मर गया।' यह सुनने पर भी जो संशय करते हैं कि क्या यह झूठ तो नहीं, वे कितने ही लोग अदृश्य रहते हैं। ३८५४

अन्नतो वॆन्ना वीश नैयमु नाणु नीङ्गित्
तन्नतो ळिणैयै नोक्कि वीडणा तक्क दन्ऱाल्
ऎन्नतो विऱन्दु ळान्मेल् वयिर्त्तलन्नी यिवनुक् कीण्डच्
चॊन्नदोर् विदियि नाले कडन्शॆयत् तुणिदि यॆन्ऱान् 3855

अन्नतो–वैसा क्या; ऎन्ना–कहकर; ईचन्–भगवान; ऐयमुम् नाणुम्–संदेह व लज्जा; नीङ्कि–त्यागकर; तन्न–अपने; तोळ् इणैयै–भुजद्वय को; नोक्कि–देखकर; वीटणा–विभीषण; इऱन्तुळान् मेल्–मृतक पर; वयिर्त्तल् ऎन्नतो–वैर करना क्या है; तक्कतु अन्ऱु–योग्य नहीं; नी–तुम; इवनुक्कु–इसके प्रति; ईण्ट–जल्दी; चॊन्नतोर्–शास्त्रोक्त; वितियिनाले–प्रकार से; कटन् चॆय्य–अपर कर्म करने; तुणिति–तैयार हो जाओ; ऎन्ऱान्–कहा। ३८५५

भगवान श्रीराम ने कहा कि क्या ऐसी बात है ? उनका संशय और उनकी शरम दूर हुई। अपने कंधों के जोड़े पर दृष्टि डालते हुए (मन में प्रफुल्लित होकर) श्रीराम ने कहा कि विभीषण ! जो मर गया उस पर वैर दिखाना क्या काम है ? वह उचित नहीं। तुम शीघ्र शास्त्रोक्त रीति से रावण का दाहकर्मादि करने को तैयार हो जाओ। ३८५५

अव्वहै यरुळि वळ्ळ लनैत्तुल हङ्ग ळोडुम्
ऎव्वहै युळ्ळ तेव रियावरु मिरैत्तुप् पॊङ्गिक्
कव्वैयिर् ऱीर्न्दार् वन्दु वीऴ्हिन्ऱार् तम्मैक् काणच्
चॆव्वैयि नवर्मुऱ् चॆन्ऱान् वीडण निदन्नैच् चॆय्दान् 3856

वळ्ळल्–प्रभु; अव्वकै अरुळि–उस तरह आज्ञा करके; इरैत्तु पॊङ्कि–कोलाहल व उत्साह करके; कव्वैयिल्–दुःख से; तीर्न्तार्–छूटे लोग; वन्तु वीऴ्किन्ऱार्–जो आकर नमस्कार करते; अनैत्तु उलकङ्कळोटुम्–सभी लोकवासियों के साथ; ऎव्वकै उळ्ळ तेवर्–सभी प्रकार के देव; यावर् तम्मैयुम्–सभी लोगों

के; काण-देखते; चॅव्वैयिन्-सीधे; अवर् मुन्-उनके सामने; चॅन्ऱान्-आये; वीटणन् इततै चॅय्तान्-विभीषण ने यह किया। ३८५६

श्रीराम उसे वह आज्ञा सुनाकर उन देवों और अन्य लोगों के सामने सीधे ढंग से गये, जो संकटविमुक्त होकर कोलाहल और उत्साह के साथ आकर उनके चरणों में नमस्कार करने आये थे। तब विभीषण ने निम्नोक्त काम किया। ३८५६

पोऴ्न्दॅन वरक्कन् शॅय्द पुन्ऱॊऴिल् पॊऱॆयिऱ् ऱामाल्
वाऴ्न्दनी यिवनुक् केऱ्ऱ वरन्मुऱै वहुत्ति यॅन्नत्
ताऴ्न्ददोर् करुणै तन्नाऱ् ऱलैमह नरुळत् तळ्ळि
वीऴ्न्दत्त नवन्मेल् वीऴ्न्द मलैयिन्मेन् मलैवीऴ्न् दॅन्न 3857

पोऴ्न्तॅत-चीर दिया जैसे; अरक्कन् चॅय्त-राक्षसकृत; पुन् तॊऴिल्-क्षुद्र काम; पॊऱॆयिऱ्ऱु आम्-क्षम्य नहीं; वाऴ्न्त नी-जयजीव तुम; इवनुक्कु एऱ्ऱ-इसके योग्य दाहकर्मादि; वरन् मुऱै-उचित क्रम से; वकुत्ति-करो; ॲन्न-ऐसा; ताऴ्न्ततु-पमय; ओर करुणै तन्नाल्-एक करुणा से; तलै मकन्-नायक श्रीराम के; अरुळ-कृपा-वचन कहने पर; वीऴ्न्त मलैयिन् मेल्-गिरे पड़े रहे पर्वत पर; मलै वीऴ्न्तॅन्न-पर्वत गिरा जैसे; तळ्ळि-दुःखचालित हो; अवन् मेल्-उस पर; वीऴ्न्तनन्-गिरा। ३८५७

'हृदय को चीरता-सा राक्षस रावण ने जो काम किया वह अक्षम्य है! पर तुम उत्कृष्ट जीवन बितानेवाले हो। तुम दाहकर्म उचित क्रम से संपन्न करो।' श्रीराम ने दयापूर्ण करुणा से यह आज्ञा जब सुनायी तब विभीषण दुःख से उकसाया जाकर गिरे पड़े रहे पर्वत पर दूसरा पर्वत गिरता हो ऐसा रावण पर गिरा। ३८५७

ओवरु मुलहत् तॅल्ला वुयिर्हळु मिरङ्गि येङ्गत्
तेवरु मुनिवर् तामुञ् जिन्दैयि निरक्कञ् जेरत्
तावरुम् बॊऱैयि नाऩ्ऱ नऱिविनैत् तहैन्दु निऱ्कुम्
आवलुम् तुयरुन् दीर वरऱ्ऱिनान् पहुवा यार 3858

ओवु अरुम्-अक्षय; उलकत्तु-लोकों के; ॲल्ला उयिर्कळुम्-सारे जीव; इरङ्कि एङ्क-दुःखी और शोकाकुल हुए; तेवरुम्-देव और; मुनिवर् तामुम्-मुनि भी; चिन्तैयिन्-मन में; इरक्कम् चेर-दया करने लगे; ता अरुम्-अमिट; पॊऱैयिनान्-क्षमाशील विभीषण; तन् अऱिविनै-अपनी बुद्धि को; तकैन्तु निऱ्कुम्-रोकते रहनेवाली; आवलुम्-इच्छा और; तुयरुम्-दुःख को; तीर-छोड़ने; पकुवाय् आर-खुले मुख-भर; अरऱ्ऱिनान्-रोया। ३८५८

अक्षय क्षमाशील विभीषण ने अपनी संज्ञा को रोकते रहनेवाले प्रेम और दुःख को दूर करते हुए विलाप करने लगा, जिसको देखकर अक्षय लोकों के सारे जीव दुःख और शोक से भर गये। देव और मुनि भी दयार्द्र हुए। ३८५८

उण्णादे युयिरुण्णा वोरुनञ्जु शत्तहियॅनुम् बॅरुनञ् जुत्तैक्
कण्णाले नोक्कवे पोक्कियदे युयिर्नीयुङ् गळप्पट् टाये
ॲण्णादे नॅण्णियशॊ लिन्ड्रिन्तिता नॅण्णुदियो वॅण्णि लाऱ्ऱल्
अण्णावो वण्णावो वशुरर्हळ्तम् बिरळयमे यमरर् कूऱ्ऱे 3859

ॲण् इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; अण्णावो अण्णावो–हे ज्येष्ठ भाई, भ्राता; अचुरर्कळ् तम्–असुरों के; पिरळयमे–प्रलय-तुल्य; अमरर् कूऱ्ऱे–देवों के यम; ओरु नञ्चुम्–कोई भी विष; उण्णाते–विना खाये; उयिर् उण्णातु–जान नहीं खाता; चत्तकि ॲत्तुम्–जानकी रूपी; पॅरु नञ्चु–घोर विष; कण्णाले–आँख से; नोक्कवे–देखते ही; उन्नैं–तुम्हें; उयिर् पोक्कियते–प्राणहीन कर चुका तो; नीयुम्–तुम भी; कळप्पट्टाये–युद्ध में मर गये; ॲण्णातेन्–(भाई का) मान न करके; ॲन्नुडैय–(जो गया) उस मेरे; ॲण्णिय चॊल्–विवेक-वचन पर; इन्ड्रु इत्ति तान्–आज अभी सही; ॲण्णुतियो–ध्यान दोगे क्या। ३८५९

अपार बलशाली हे मेरे ज्येष्ठ भ्राता! बड़े भैया! असुरों के प्रलय-रूप! देवों के यम! कोई भी विष बिना खाये किसी को नहीं मारता! पर जानकी बहुत घोर विष है! उसने आँख से देखते ही तुम्हारा काम तमाम कर दिया! हाय! तुम भी युद्ध के मैदान में मर गये! तुम्हें न मानकर मैं चला गया था। क्या अब ही सही मेरी बात पर ध्यान दोगे? । ३८५९

ओरादे यॉरुवन्ऱ् तुयिराशै कुलमहण्मे लुऱ्ऱ कादल्
तीराद वशैयॅन्ऱे नॅन्नै मुनिन्द मुनिवारित् तेऱ्ऱि नायो
पोराशैप पट्टॅळुन्द कुलमुऱ्ऱुम् बॊन्ऱ वन्दान् पॊङ्गि निन्ऱ
पेराशै पॅयर्न्ददो पॅयर्न्दाशैक् करियिरियप् पुरुवम् बेर्त्ताय् 3860

आचै करि–दिग्गज; पॅयर्न्तु इरिय–अस्थिर हो भागें ऐसा; पुरुवम् पेर्त्ताय्–भौंहें ताननेवाले; ओराते–विना सोचे; ओरुवन् तन्–अन्य की; उयिर् आचै–प्राणप्यारी; कुलमकळ् मेल्–कुलीन स्त्री पर; उऱ्ऱ कातल्–रखा प्रेम; तीरात–अमिट; वचै–कलंक; ॲन्ऱेन्–बताया; ॲन्नै मुनिन्त–मुझपर जो किया; मुनिवु आऱि–वह कोप शांत कर; तेऱ्ऱितायो–बात समझे क्या; पोर्–युद्ध में; आचै पट्टु–चाह करके; ॲळुन्त–उठा; कुलम् मुऱ्ऱुम्–सारा कुल; पॊन्ऱवुम्–मिट गया तब; पॊङ्कि निन्ऱ–उमँगती रही; पेर् आचै–लालसा; पॅयर्न्ततो–दूर हुई क्या। ३८६०

दिग्गजों को अस्त-व्यस्त करते भौंहें ताननेवाले! विना विचारे दूसरे की प्राणप्यारी पत्नी, कुलीन स्त्री पर मोह रखना मैने अमिट कलंक बताया। तुमने मुझ पर गुस्सा किया। क्या वह कोप शांत हुआ और तुम्हें बात ठीक लगी? युद्ध की चाह कर जो कुल उठा उस कुल का संपूर्ण नाश हो गया। क्या अब तुम्हारी उत्तरोत्तर बढ़ती लालसा शांत हुई? । ३८६०

अन्ऱॅरियिल् विऴुवेद वदियिवळ्का णुलहुक्को रन्नै यॅन्ऱु
कुन्ऱनैय नॅडुन्दोळाय् कूऱित्ते न्नदुमनत्तुट् कॉळ्ळा देपोय्
उन्ऱन्दु कुलमडङ्ग वुरुत्तमरिऱ् पडक्कण्डु मुऱवा हादे
पॉन्ऱिनैये यिराहवन्नार् पुयवलियै यित्ऱऱिन्दु पोयि नाये 3861

अन्ऱु–उस दिन; ऍरियिल्–अग्नि में; विऴु–जो प्रविष्ट हुई; वेतवति–वह वेगवती; उलकुक्कु ओर् अन्नै–संसार की अप्रतिम माता; इवळ् काण्–यह है, देखो; ऍन्ऱु–ऐसा; कुन्ऱु अनैय–पर्वतोपम; नॅटु तोळाय्–उन्नत कंधों वाले; कूऱिनेन्–मैंने कहा; अतु–वह; मनत्तुळ्–मन में; कॉळ्ळाते पोय्– न ले जाकर; उन् तन्तु–तुम्हारे; कुलम् अटङ्क–सारे कुल नष्ट होकर; अमरिल् उरुत्तु–युद्ध में गुस्साकर; पट कण्टुम्–मिट गये, देखकर भी; उऱवु आकाते–नाता न जोड़कर; पॉन्ऱिनैये–मरे तो; इराकवन्नार–श्रीराघव के; पुयम् वलियै–भुजबल को; इन्ऱु–आज; अऱिन्तु पोयिनाये–जानकर गये ही। ३८६१

"हे पर्वतोपम उन्नत कंधोंवाले ! उस दिन जो (तुमको शाप देकर) अग्नि में प्रवेश कर गयीं वे ही संसार की अप्रतिम जननी यह हैं जानो।" मैंने कहा। पर तुमने नहीं माना। पर क्रुद्ध हो लड़ने गये। तुम्हारा सारा कुल युद्ध में मिटा। यह देखकर भी तुमने श्रीराम से मित्रता नहीं की और मौत बुला ली ! पर अच्छा हुआ कि श्रीराम का पराक्रम प्रत्यक्ष जान पाये तभी मरे। ३८६१

मन्ऱन्मा मलरोनुम् वडिमऴुवाट् पडैयोनुम् वरङ्ग ळीन्द
ऑन्ऱला दन्नवुडैय मुडियोडुम् बॉडियाहि युदिर्न्दु पोन्न
अन्ऱुना नुणर्न्दिलैये यानालुम् वानाट्टै यणुहा नित्ऱ
इन्ऱुना नुणर्न्दनैये यिरामन्ना रियावरुक्कु मिऱैव नादल् 3862

मन्ऱल्–सुगंधित; मा मलरोनुम्–बड़े कमल का वासी; वटि–और तीक्ष्ण; मऴुवाळ्–परशु नाम के; पटैयोनुम्–हथियार के धारक; ईन्त–द्वारा दत्त; वरङ्कळ्–वर; ऑन्ऱु अलातन उटैय–एक नहीं अनेक (दस); मुटियोटुम्–सिरों के साथ; पॉटि आकि–चूर हुए; उतिर्न्तु पोन–चू गये; अन्ऱु नान्–उस दिन; उणर्न्तिलैये–नहीं समझे; आनालुम्–तो भी; वान् नाट्टै–स्वर्गलोक को; अणुका निन्ऱ–पहुँच जो गये; इन्ऱु नान्–आज ही; इरामन्नार्–श्रीराम का; यावर्क्कुम्–सभी का; इऱैवन् आतल्–ईश्वर रहना; उणर्न्तनैये–समझे तो। ३८६२

सुगंध-कमल-वासी और तीक्ष्ण परशुधर शिव के द्वारा दत्त वर, दस सिर —सभी चूर हुए और बिखर गये। पहले तुमने नहीं जाना था सही ! क्या कम से कम आज, जब तुम वीरस्वर्ग पहुँच गये हो, समझ पाये कि श्रीराम सर्वेश्वर हैं ? । ३८६२

वीरना डुऱ्ऱायो विरिन्जनाम् यावरुक्कु मेला मुत्ऱन्
पेरना डुऱ्ऱायो पिऱैशूडुम् बिन्जहन्नतन् पुरम् बॅऱ्ऱायो

आरणा वुन्नुयिरै यज्जादे कॊण्डहन्ऱा रवॆला निऱ्क
मारनार् वलियाट्टन् दविर्न्दारो कुळिर्न्दानो मदिय मॆन्बान् 3863

वीरर् नाट्टु–वीरों के (स्वर्ग) लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे क्या; विरिञ्चन् आम्–विरंचि; यावरुक्कुम् मेलाम्–सर्वश्रेष्ठ; उन्ऱन्–तुम्हारे; पेरन् नाट्टु–दादा के लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे; पिऱै चूट्टुम्–चन्द्रधर; पिञ्ञकन् तन्–शिव के; पुरम् पॆऱ्ऱायो–लोक पहुँचे; अणा–बड़े भैया; उन् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; अञ्चाते–बेखटके; कॊण्ट्टु अकन्ऱार्–ले जो गया; आर्–वह कौन है; अतु ऎलाम्–वह सब; निऱ्क–एक ओर रहे; मारनार्–मारदेव; वलि आट्टम्–अपने बल का नाच; तविर्न्तारो–छोड़ गये क्या; मतियम् ऎन्पान्–चन्द्र जो है वह; कुळिर्न्तानो–शीतल बना क्या। ३८६३

क्या तुम वीरस्वर्ग चले हो ? या अपने दादा विरंचि के लोक पहुँचे हो ? या चंद्रकलाधर शिवजी के स्थान को ? हे मेरे बड़े भैया ! तुम्हारे प्राणों को, बेखटके ले जानेवाला कौन है ? वह रहे ! क्या मारदेव ने अपने पराक्रम का नाच (प्रदर्शन) अभी छोड़ दिया ? चाँद भी शीतल हो गया क्या ? । ३८६३

कॊल्लाद मैत्तुननैक् कॊन्ऱायॆन् ऱडुकुऱित्तुक् कॊडुमै शूळ्न्दु
पल्लाले यिदळदुक्कुङ् गॊडुम्बावि नॆडुम्बारिऱ् पळितीर्न् दाळो
नल्लारुन् दीयारु नरहत्तार् शॊर्क्कतार् नम्बि नम्मो
डॆल्लारुम् बहैञरे यार्मुहत्ते विळिक्कित्ऱा यॆळियै यानाय् 3864

कॊल्लात–न मारने योग्य; मैत्तुनन–बहनोई को; कॊन्ऱाय्–तुमने मारा; ऎन्ऱु कुऱित्तु–यह सोचकर; कॊटुमै चूळ्न्तु–वैर साधकर; पल्लाले–दाँतों से; इतळ् अतुक्कुम्–अधर काटनेवाली; कॊट्टु पावि–क्रूर पापिनी ने; नॆट्टु पारिल्–बड़ी भूमि पर; पळि तीर्न्ताळो–बदला चुकाया क्या; नम्पि–हे पुरुषश्रेष्ठ; नरकत्तार्–नरकवासी और; चॊर्क्कत्तार्–स्वर्गवासी; तीयारुम्–बुरे लोग; नल्लारुम्–अच्छे लोग; ऎल्लारुम्–सभी; नम्मोटु–हमारे विरोधी; पकैञरे–शत्रु ही हैं; यार् मुकत्ते–किसके मुख पर; विळिक्किन्ऱाय्–दृष्टि डालते हो; ऎळिमै आनाय्–हलके बन गये। ३८६४

तुमने अपने बहनोई (विद्युज्जिह्वा) को, जिसे मारना उचित नहीं था, मार दिया था। उससे पापिनी बहिन शूर्पणखा खफ़ा हुई और क्या उसने अधर दाँतों से काटते हुए तुमसे इस विशाल भूमि पर बदला ले लिया ? हे पुरुषश्रेष्ठ ! नरकवासी क्या, स्वर्गवासी; बुरे लोग क्या, अच्छे लोग —सभी तुमसे शत्रुता करनेवाले ही हैं ! फिर अब किसके मुख पर दृष्टि डालोगे ? तुम हलके हो गये ! । ३८६४

पोर्महळैक् कलैमहळैप् पुहळ्महळैत् तळुवियकै पॊऱामै कूरच्
चीर्महळैत् तिरुमहळैत् तेवर्क्कुन् दॆरिवरिय दॆय्वक् कऱ्पिन्

पेर्महळैत् तळुवुवा तुयिर्हॊडुत्तुप् पळिहॊण्ड पित्ता पिन्नैप्
पार्महळैत् तळुविन्नैयो तिशैयान्नै मरुप्पिरुत्त पणैत्त मार्बाल् 3865

पोर् मकळै–विजयश्री को; कलै मकळै–सरस्वती को; पुकळ्मकळै–यशश्री को; तळुविय कै–आलिंगन करनेवाले हाथ; पोऱामै कूर–ईर्ष्या में बढ़कर; चीर्मकळै–श्रेष्ठ देवी; तिरुमकळै–श्री को; तेवर्क्कुम्–देवों से भी; तॆरिवु अरिय–अज्ञेय; तॆय्वम् कऱ्पिन्–दिव्य पातिव्रत्य को; पेर्मकळै–बड़ी देवी को; तळुवुवान्–गले लगाने हेतु; उयिर् कॊटुत्तु–प्राण देकर; पळि कॊण्ट–कलंक लेकर; पित्ता–हे उन्मत्त; तिचै यानै–दिग्गजों के; मरुप्पु इरुत्त–दाँत तोड़नेवाले; पणैत्त माऱ्पाल्–स्थूल वक्ष से; पिन्नै–फिर; पार्मकळै–भूदेवी को; तळुविनैयो–लगा लिया क्या। ३८६५

तुम्हारे हाथों ने विजयश्री को, सरस्वती को और यश की देवी को आलिंगन किया था। पर उन्हें ईर्ष्यावश कराके श्रेष्ठ देवी, श्रीलक्ष्मी, देवों से भी अज्ञेय पातिव्रत्य की देवी सीता का आलिंगन करना चाहने लगे। पर जान देकर निंदा कमा लेनेवाले हे उन्मत्त ! फिर दिग्गज-दंत-भंजक मोटी छाती से भूदेवी का आलिंगन करके पड़े रहते हो क्या ? । ३८६५

ऎन्ऱेङ्गि यरऱ्ऱुवान् तन्नैयॆडुत्तुच् चाम्बवना मॆण्णिन् वेन्दन्
कुन्ऱोङ्गु नॆडुन्दोळाय् विदिनिलैयै मदियाद कॊळ्हैत् ताहि
चॆन्ऱोङ्गु मुणर्विन्नैयो तेऱादे यळुन्दुदियो वॆन्नन् तेऱि
निन्ऱानप् पुऱत्तरक्क निलैकेट्टाळ् मयन्पयन्द नॆडुङ्गट् पावै 3866

ऎन्ऱु एङ्कि–ऐसा दुःख करके; अरऱ्ऱुवान् तन्नै–विलापनेवाले उसे; ऎटुत्तु–उठाकर; चाम्पवताम्–जाम्बवान; ऎण्किन् वेन्तन्–ऋक्षराज ने; कुन्ऱु ओङ्कु–पर्वतोन्नत; नॆट् तोळाय्–विशाल भुजावाले; विति निलैयै–विधि का विधान; मतियात–न मानने के; कॊळ्कैत्तु आकि–सिद्धान्त वाला बनकर; चॆन्ऱु ओङ्कुम्–जाकर बढ़नेवाले; उणर्विनैयो–भाव के हो गये क्या; तेऱाते–न सँभलकर; अळुन्तितियो–मग्न हो जाओगे; ऎन्न–ऐसा कहा तब; तेऱि–सँभलकर; अ पुऱत्तु–एक ओर; निन्ऱान्–खड़ा हो गया; मयन् पयन्त–मय-दुहिता; नॆटु कण् पावै–आयताक्षी प्रतिमा-सी मंदोदरी ने; अरक्कन् निलै–राक्षस का हाल; केट्टाळ्–सुना। ३८६६

दुःख से विभीषण विलाप करता रो रहा था। ऋक्षराज जाम्बवान ने उसे उठाया और धीरज दिलाया। हे पर्वतोन्नत कंधोंवाले ! विधि की गति को न मानने का सिद्धांत अपना लेकर अपनी इच्छानुसार चलनेवाले विचार-भाव के हो गये हो क्या ? सँभलोगे नहीं और दुःख में मग्न हो रहोगे क्या ? तब विभीषण सँभला और एक ओर खड़ा रह गया। तब मयसुता, आयताक्षी प्रतिमा-सी सुंदरी मंदोदरी ने रावण का हाल सुना। ३८६६

अत्तन्दन् द्रायिर मरक्कर् मङ्गैमार्
पुत्तैन्दपूङ् गुळल्विरित् तरड्रुम् बूशलार्
इत्तन्दोडरन् दुडत्तवर ऎहित्ता ळॆन्न
निनैन्दवु मरन्दवु मिलाद नॆञ्जित्ताळ् 3867

अनन्तम् नूड्र आयिरम्–अनंत लाख; अरक्कर् मङ्कैमार्–राक्षसस्त्रियाँ; पुनैन्त–अलंकृत; पू कुळल्–नरम केश; विरित्तु अरट्रुम्–खोलकर विलाप करते; पूचलार्–शोर के साथ; इतम् तॊडर्न्तु–भीड़ में पीछा करके; उटन् वर–साथ आयीं ऐसा; निनैन्ततुम् मरन्ततुम्–स्मरण, विस्मरण; इलात नॆञ्चिनाळ्–से रहित मनवाली (मंदोदरी); एकिनाळ्–आयी। ३८६७

वह स्मरण या विस्मरण से रहित मनवाली बनकर आयी और उसके चारों ओर अनंत लाख राक्षसियाँ अलंकृत अपने नरम केश खोल बिखेरकर रोती-कलपती हुई, उसे घेरे साथ आयीं। ३८६७

इरक्कमुन् दरुममुन् दुणैक्कॊण् डिन्नुयिर्
पुरक्कुनन् कुलत्तुवन् दॊरुवन् पूण्डदोर्
परक्कळि यामॆनप् परन्दु नीण्डदाल्
अरक्कियर् वाय्तिड्रन् दरड्रु मोदैये 3868

इरक्कमुम्–अनुताप; तरुममुम्–और धर्म को; तुणै कॊण्टु–साथी बनाकर; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों का; पुरक्कुम्–पालन करनेवाले; नल् कुलत्तु–श्रेष्ठ कुल में; वन्त ऒरुवन्–उदित एक ने; पूण्टतु ओर्–जो अर्जन किया; परक्कळि–उस अपयश; आम् ऎन–के समान; अरक्कियर्–राक्षसियों का; वाय् तिड्रन्तु–मुख खोलकर; अरट्रुम् ओतै–क्रंदन करने का स्वर; परन्तु नीण्टतु–फैला और बढ़ा। ३८६८

दया, धर्म आदि को अपना साथी बनाकर जीवरक्षण में अपना जीवन बितानेवाले सत्कुल-जात किसी के द्वारा अर्जित कलंक के समान राक्षसियों का खुले मुख से निर्गत विलाप का स्वर खूब फैला और वर्धित हुआ। ३८६८

नूबुरम् बुलम्बिडच् चिलम्बु नॊन्दळक्
कोबुरन् दॊरुम्बुरङ् गुरुहि नार्शिलर्
आबुरन् दरत्पहै यरड्र दामॆना
माबुरन् दविर्न्दुविण् वळिच्चॆन् ड्रार्शिलर् 3869

नूपुरम् पुलम्पिट–नूपुर बोले; चिलम्पु–पायलें; नॊन्तु अळ–दुःखी हो रोयीं; कोपुरम् तॊड्रुम्–गोपुर-गोपुर से; पुड्रम्–बाहर; चिलर् कुड्रुकिनार्–कुछ आयीं; चिलर्–कुछ; पुरन्तरन्–पुरंदर; पकै–शत्रु से; अड्रतु आम्–रहित हो गया; ऎन्ना–ऐसा कहकर; मा पुरम्–अपने शरीर; तविर्न्तु–छोड़कर; विण्वळि–आकाश-मार्ग में; चॆन्ड्रार्–गयीं। ३८६९

उनके नूपुर रुदन-स्वर निकाल रहे थे। पायलें विलाप रही थीं।

गोद्वारों से कुछ आयीं; अन्य कुछ राक्षसियाँ 'पुरन्दर शत्रुहीन हो गया, हाय !' कहते हुए अपने बहुत तगड़े शरीरों को छोड़कर स्वर्ग के मार्ग में चली गयीं। ३८६९

अऴैप्पॊलि मुऴक्कॆऴ वऴहु मिऩ्ऩिडक्
कुऴैप्पॊलि नल्लणिक् कुलङ्गळ् विल्लिड
उऴैप्पॊलि वुण्गणीर्त् तारै मीदुह
मऴैप्पॆरुङ् गुलमॆऩ्ऩ वाऩ्वऩ् दार्शिलर् 3870

अऴैप्पु ऑलि–पुकार का स्वर; मुऴक्कु ऍऴ–वज्र के समान उठा; अऴकु मिऩ्ऩिट–सुन्दरता बिजली-सी चमकी; कुऴै–कुंडल; पॊलि–छविमय; नल् अणि–श्रेष्ठ आभरण; कुलङ्कळ्–समूह; विल् इट–धनु के समान विलसे; उऴै पॊलि–हरिण-सम; उण् कण्–काजल-लगी आँखें; नीर् तारै–अश्रुधारा; मीतु उक–शरीर पर गिरि; मऴै पॆरु–बड़ी वर्षा के; कुलम् ऍऩ–समूहों के समान; चिलर्–कुछ; वाऩ् वऩ्तार्–आकाश-मार्ग से आयीं। ३८७०

कुछ पुकार मचाती आयीं। उनका स्वर वज्र के समान सुनायी दे रहा था। सुंदरता चमक रही थी। छविमय कुंडल आदि आभरणों का समूह प्रकाश का धनु छिटका रहे थे। हरिणों की-सी काजल-लगी आँखों से अश्रुधारा निकलकर उनके शरीर पर गिर रही थी। इस स्थिति में वर्षा के बड़े समूहों के समान कुछ राक्षसियाँ आकाश के मार्ग से आयीं। ३८७०

तलैमिशैत् ताङ्गिय करत्तर् तारैनीर्
मुलैमिशैत् तूङ्गिय मुहत्तर् मॊय्त्तुवन्
दलैमिशैक् कडलिऩ्वी ऴऩ्ऩम् बोलवऩ्
मलैमिशैत् तोळ्हळ्मेल् वीऴ्न्दु माऴ्हिऩ्ऩार् 3871

तलै मिचै–सिरों पर; ताङ्किय–धृत; करत्तर्–हाथोंवालियाँ; तारै नीर्–धारा के अश्रु; मुलै मिचै–स्तनों पर; तूङ्किय–गिरें ऐसा; मुकत्तर्–(विनत) वदन वालियाँ; मॊय्त्तु वन्तु–भीड़ लगाती आकर; कटलिऩ्–समुद्र की; अलै मिचै–तरंगों पर; वीऴ्–गिरते; अऩ्ऩम् पोल्–हंसों के समान; अवऩ्–उस रावण के; मलै मिचै–पर्वत से भी उन्नत; तोळ्कळ् मेल्–कन्धों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; माऴ्किऩार्–मूर्च्छित हुईं। ३८७१

वे स्त्रियाँ, जिनके हाथ सिर पर रखे हुए थे और जिनके मुख अवनत थे, जिसके कारण उनके अश्रु की धाराएँ स्तनों के अग्र भाग पर गिर रही थीं, समुद्र की तरंगों पर गिरनेवाले हंसों के समान रावण के पर्वतोन्नत कंधों पर गिरीं और मूर्छित हुईं। ३८७१

तऴुविऩर् तऴुविऩर् तलैयुऩ् वाऴ्हळुम्
ऍऴुवुयर् पुयङ्गळु मार्बु मॆङ्गणुम्

कुळुविनर् मुरैमुरै कूऱु कूऱुकॊण्
डळुदन रयर्त्तन ररक्कि मार्हळे 3872

अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; कुळुविनर्–भीड़ में; तलैयुम्–सिरों; ताळ्कळुम्–पैरों; ऑळु–लोहस्तंभ के समान; उयर्–उन्नत; पुयक्कळुम्–भुजाओं को; मार्पु–छाती; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; मुरै मुरै–बारी-बारी से; कूऱु कूऱु कॊण्टु–अलग-अलग भाग बनाकर; तळुवितर् तळुवितर्–अपने से लगा-लगाकर; अळुतनर्–रोयीं; अयर्त्ततर्–जर्जर हुईं। ३८७२

राक्षसियाँ भीड़ लगाकर आयीं। रावण के सिरों, पैरों, स्तंभ-सम कंधों और छाती आदि अंगों का बारी-बारी से उन पर अपना हक़ निश्चित करके गले लगा-लगाकर रोयीं और जर्जर हुईं। ३८७२

वरुत्तमे दॆनित्तु पुलवि वेहलुम्
वीरुत्तमे वाळ्वॆनप् पॊळ्दु पोक्कितार्
ऒरुत्तर्मे लॊरुत्तर्वीळ्न् दुयिरिऱ् पुल्लितार्
तिरुत्तमे यत्तैयवन् शिहरत् तोळ्हळ्मेल् 3873

वरुत्तम् एतु–दुःख क्या; ऎतितु–पूछो तो; अतु पुलवि–वह रूठन थी; वेकलुम्–रूठन के समय में भी; वाळ्वु–जीवन; पॊरुत्तमे–योग्य ही है; ऎत–मानकर; पॊळुतु पोक्कितार्–समय बिता रही थीं; तिरुत्तमे अत्तैयवत्–(वीरता के) घाट के समान उसके; चिकरम् तोळ्कळ् मेल्–शिखरोपम कंधों पर; ऒरुत्तर् मेल्–एक के ऊपर; ऒरुत्तर् वीळ्न्तु–एक गिरकर; उयिरिल् पुल्लितार्–प्राणों के समान कस लिया। ३८७३

उनके दुःख का हेतु क्या था ? वह उनकी रूठन था। रूठते हुए भी वे जीवन को जीने योग्य मानती थीं इस अभिमान से कि हम रावण की प्रेमिकाएँ हैं। वीरता के घाट के समान रहे रावण के शिखरोपम कंधों पर एक-एक करके वे गिरीं औरअपने प्राणों को जैसे कसकर पकड़ा। ३८७३

इयक्किय ररक्किय रुरह रेळैयर्
मयक्कमिल् शित्तियर् विज्जै मङ्गैयर्
मुयक्कियन् मुरैकॆड मुयङ्गि नार्हळ्तम्
तुयक्किला वन्बुमूण् डॆवरुम् जोरवे 3874

इयक्कियर्–यक्षस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; उरकर् एळैयर्–उरग-कन्याएँ; मयक्कम् इल्–अभ्रांत; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; विज्जै मङ्कैयर्–विद्याधर-महिलाएँ; ऎवरुम्–सभी; तम्–अपने; तुयक्कु इला–अक्षय; अन्पु मूण्टु–प्रेमाधिक्य से; चोर–जर्जर बनकर; मुयक्कियल्–आलिंगन का; मुरै कॆट–क्रम भंग करके; मुयङ्कितार्कळ्–आलिंगन करतीं। ३८७४

यक्षबालाएँ, राक्षसियाँ, उरगकन्याएँ, अभ्रांत सिद्धस्त्रियाँ, विद्याधर-

रमणियाँ —सभी अपने अक्षय प्रेम की प्रेरणा से मृत रावण को देखकर शिथिल हुईं और (आलिंगन का) क्रम भंग करके आलिंगन करके रोयीं। ३८७४

अऱन्दोलै वुऱमनत्त् तडैत्त शीदैयै
मऱन्दिलै योविनु मॆमक्कुन् वाय्मलर्
तिऱन्दिलै विऴित्तिलै यरुळुम् जॆय्हिलै
इऱन्दनै योवॆन विरङ्गि येङ्गिनार् 3875

अऱम्–धर्म का; तोलैवु उऱ–नाश करके; मनत्तु–मन में; अटैत्त–बंद की हुई; चीतैयै–सीता को; इन्नम्–अब भी; मऱन्तिलैयो–भूले नहीं क्या; ऍमक्कु–हमें; उन् वाय् मलर्–अपने मुख का फूल; अळित्तिलै–(वचन) नहीं देते; विऴित्तिलै–आँखें नहीं खोलते; अरुळुम् चॆय्किलै–दया नहीं करते; इऱन्तनैयो–मर गये क्या; ऍन–ऐसा; इरङ्कि–दुःख करके; एङ्किनार्–रोयीं। ३८७५

वे मुख खोलकर कलपने लगीं! धर्म का क्रम नष्ट करके तुमने अपने मन में सीता को बंद कर रखा था? क्या अब भी तुम उसे नहीं भूले? हमें अपने मुख का (वाणी रूपी) फूल नहीं देते! आँख खोलकर नहीं देखते! दया नहीं करते! क्या तुम सचमुच मर गये? । ३८७५

तरङ्गनीर् वेलैयिऱ् ऱडित्तु वीऴ्न्दॆन
उरङ्गिळर् मकुहैया नुरत्ति नुऱ्ऱनळ्
मरङ्गळु मलैहळु मुरुह वाय्तिऱन्
दिरङ्गिनळ् मयन्मह ळिन्नैय पन्निनाळ् 3876

मयन् मकळ्–मय-सुता मंदोदरी ने; उरम् किळर्–दृढ़चित्त; मकुकैयान्–बलवान रावण के; उरत्तिन्–वक्ष पर; तरङ्कम् नीर्–तरंग-सहित जल के; वेलैयिल्–सागर पर; तटित्तु वीऴ्न्तॆन–बिजली गिरी जैसे; उऱ्ऱनळ्–लगकर; मरङ्कळुम्–तरु और; मलैकळुम्–पर्वत; उरुक–पिघल जायं ऐसा; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इरङ्किनळ्–व्याकुलता के साथ; इन्नैय पन्निनाळ्–ये बातें कहीं। ३८७६

मयतनया मंदोदरी शरीर व मनोबल युक्त रावण की छाती पर तरंग-संकुल समुद्र पर गिरती तडित् के समान गिरी और मुख खोलकर निम्नोक्त प्रकार से विलाप करती रोयीं जिसे सुनकर तरु और पर्वत भी पिघलने लगे। ३८७६

अन्नैयो वन्नैयो वाकोंडियेऱ् ऱकुत्तवा ऱरक्कर् वेन्दन्
पिन्नैयो विऱप्पदुमुन् पिडित्तिरुन्द करुत्तदुवुम् बिडित्ति लेनो
मुन्नैयो विऴुन्ददुवु मुडित्तलैयो पडित्तलैय मुहङ्गळ् तानो
अॆन्नैयो वॆन्नैयो विरावणनार् मुडिन्दपरि शिदुवो पावम् 3877

अन्तेयो अन्तेयो–हाय, हाय; कॉटियेऱ्कु–कठोर मुझे; अट्टत्तवाऱु आ–क्या ही हो गया; अरक्कर् वेन्तऱ्–राक्षसराजा के; पिन्तेयो इऱप्पतु–बाद ही क्या मुझे मरना था; मुन्–पहले से; पिटित्तिरुन्त–जो (विचार) रखती थी; करुत्तुवुम्–वह विचार; पिटित्तिलेनो–दृढ़ता से नहीं रखती थी क्या; मुन्तेयो–सामने; विळुन्ततुवुम्–गिरे जो पड़े हैं; मुटि तलैयो–वे क्या (रावण के) मुकुट-मंडित सिर हैं; पटि तलैय–भूमि पर दिखनेवाले; मुकङ्कळ् तानो–उनके मुख हैं क्या; इरावणनाऱ्–रावण के; मुटिन्त परिचु–अंत का प्रकार; इतुवो–क्या यही; ऍन्तेयो ऍन्तेयो–क्या ही, क्या ही। ३८७७

हाय, हाय ! मैं क्रूरा हूँ ! मुझे जो हुआ वह हाल भी कैसा (संकट-मय) है ! राक्षसराज के मरने के बाद ही मेरी मृत्यु का होना था क्या ? पहले से जो विचार (एक साथ मरने का) रखती थी उसको बीच में मैंने छोड़ दिया था क्या ? हाय ! मेरे समक्ष जो पड़े रहते हैं क्या वे सचमुच मुकुटमंडित सिर हैं ? भूमि पर जो पड़े दिखते क्या वे मेरे प्राणनाथ के मुख हैं ? रावण का अंत भी ऐसा हुआ ? क्या ही अनर्थ हो गया ? कैसी (बात है), कैसा (विपरीत) है ? । ३८७७

वॆळ्ळॆरुक्कञ् जडैमुडियान् वॆऱ्पॆडुत्त तिरुमेनि मेलुङ् गीळुम्
ऍळ्ळिरुक्कु मिडमिन्ऱि युयिरुक्कु मिडनाडि यिळैत्त वाऱो
कळ्ळिरुक्कु मलर्क्कून्दऱ् चानहियै मनच्चिऱैयिर् करन्द कादल्
उळ्ळिरुक्कु मॆनक्करुदि युडल्पुहुन्दु तडवियदो वोरुवन् वाळि 3878

ऑरुवन् वाळि–अप्रतिम श्रीराम का शर; वॆळ्–सफ़ेद; ऍरुक्कम्–अर्क-भूषित; चटै मुटियान्–जटाधारी सिर के शिव के; वॆऱ्पु–(कैलास) पर्वत को; ऍडुत्त–जिन्होंने उठाया; तिरुमेनि–उनके शरीर को; मेलुम् कीळुम्–ऊपर और नीचे; ऍळ् इरुक्कुम्–तिल रखने का; इटम् इन्ऱि–स्थान न छोड़कर; उयिर् इरुक्कुम्–प्राणों के रहने का; इटम् नाटि–स्थान खोजकर; इळैत्त आऱो–करने का प्रकार क्या; कळ् इरुक्कुम्–मधु जिसमें रहता है; मलर् कून्तल्–ऐसे फूलों के केशवाली; चानकियै–जानकी को; मनम् चिऱैयिल्–मन की कारा में; करन्त कातल्–जिसने छिपा रखा था वह प्रेम; उळ् इरुक्कुम्–अंदर रहेगा; ऍन करुति–ऐसा सोचकर; उटल् पुकुन्तु–शरीर में घुसकर; तटवियतो–टटोला क्या। ३८७८

श्वेत मदार के पुष्पों से शोभायमान जटा के धारक श्रीशिवजी के कैलास पर्वत को जिन्होंने उठाया था उन रावण के श्रीशरीर के अंदर और बाहर, ऊपर और नीचे तिल भर का स्थान न छोड़कर क्या अप्रतिम नायक श्रीराम का शर प्राणों का स्थान खोजता फिरा ? यह हाल उसी सिलसिले में हुआ था क्या ? या उस शर ने यह सोचकर टटोला था कि मधुपूरित सुमनमंडित केशवाली सीता को मन की कारा में बंद रखनेवाला प्रेम इसी शरीर के अंदर तो कहीं छिपा रहेगा ! ३८७८

आरम्बोर् तिरुमार्बै यहत्मुळैह ळैंत्तत्तिऱन्दिव् वुलहुक् कप्पाल्
तूरम्बो यित्तवीरुवत् शिलैतुरन्द शङ्गळे पोरिऱ् ऱोऱ्ऱम्
वीरम्बो युरङ्गुरैन्दु वरङ्गुरैन्दु विळुन्दत्तैये वेऱे कॅट्टेत्
ओरम्बो युयिर्परुहिऱ् ऱिरावणत्तै मातुडव नूऱ्ऱ मीदो 3879

ऑरुवत् विलै–अद्वितीय श्रीराम का धनु; तुरन्त चरङ्कळ्–जो निकालता था वे शर; आरम् पोर्–हारालंकृत; तिरुमार्पै–श्रीवक्ष को; अकल् मुळैकळ्–खुली गुहाओं; ॲंत–के समान; तिऱन्तु–खोलकर; इव् उलक्ककु–इस लोक के; अप्पाल्–बाहर; तूरम् पोयित्त–बहुत दूर चले गये; पोरिल् तोऱ्ऱम्–युद्ध में दिखा; वीरम् पोय्–वीरता गयी; उरम् कुऱैन्तु–शक्ति क्षीण हुई; वरम् कुऱैन्तु–वर क्षीण हुए; एऱे–केसरी; विळुन्ततैये–मर गये तो; ओरम् पोय्–पक्षपात छोड़कर; इरावणत्तै–रावण के; उयिर् परुकिऱ्ऱ–प्राण पी गये; मातुटवत्–मनुष्य का; ऊऱ्ऱम्–साहस; ईतो–क्या यही है। ३८७९

अद्वितीय श्रीराम के शर हारशोभित श्रीवक्ष को खुली गुहाओं के समान विदीर्ण करके इस लोक के बाहर दूर चले गये। युद्ध में जो दिखाते थे वह वीरता खोकर साहस से हाथ धोकर और वर भी गँवाकर, हे केशरी-सम पतिदेव ! तुम चल बसे ! श्रीराम के शरों ने निष्पक्ष होकर तुम्हारे प्राण पी लिये ! क्या मनुष्य का भी इतना बल होगा ? (अब तक जानती ही नहीं थी)। ३८७९

कान्दैयरुक् कणियत्तैय शानहियार् पेरळहु मवर्दङ् गऱ्पुम्
एन्दुपुयत् तिरावणत्तार् कादलुमच् चूर्प्पणहै यिळन्द मूक्कुम्
वेन्दर्पिरान् तयरदत्तार् पणियित्ताल् वॅङ्गानिल् विरदम् बूण्डु
पोन्ददुवुङ् गडमुडैये पुरन्दरत्तार् पॅरुन्दवमाय्प् पोयिऱ् ऱम्मा 3880

कान्तैयरुक्कु–स्त्रियों के; अणि अत्तैय–श्रृंगार-रूप; चानकियार्–जानकी की; पेर अळकुम्–बड़ी सुन्दरता; अवर् तम् कऱ्पुम्–और उनका पातिव्रत्य; एन्तु पुयत्तु–और उन्नत भुजावाले; इरावणत्तार् कातलुम्–रावण का प्रेम; अ चूर्प्पणकै–उस शूर्पणखा की; इळन्त मूक्कुम्–खोयी नाक; वेन्तर् पिरान्–और राजाधिराज के; तयरतत्तार्–दशरथ के; पणियित्ताल्–हुक्म से; वॅम् कानिल्–भयंकर वन में; विरतम् पूण्टु–व्रत धारण कर; पोन्ततुवुम्–आना और; कटै मुडैये–आखिरकार; पुरन्तरत्तार्–पुरंदर का; पॅरुन्तवमाय्–बड़ा तप; पोयिऱ्ऱु–बन गये। ३८८०

स्त्रियों का श्रृंगार रूप जो हैं उन सीता की अपार सुन्दरता, उनका पातिव्रत्य, उन्नत भुजाओंवाले रावण का प्रेम, शूर्पणखा की खोयी नाक, राजाधिराज दशरथ की आज्ञा से भयंकर जंगल में कठोर व्रत धारण करके राम का आना —यह सब आखिर पुरंदर की तपस्या के फल हो गया। ३८८०

तेवर्क्कुन् दिशैक्करिक्कुञ् जिवत्तार्क्कु मयत्तार्क्कुञ् जॅङ्गण् माऱ्कुम्
एवर्क्कुम् वलियानुक् कॅन्ऱुण्डा मिऱुदियॅन्न वेमाप् पुऱ्ऱेन्

आवऱ्क णीयुळऩ्ऱ वरुन्दवत्तिऩ् पॆरुङ्गडऱ्कुम् वरमॆऩ् ऱाऩ्ऱ
कावऱ्कुम् वलियाऩोर् माऩुडव ऩुळऩॆऩ्ऩक् करुदि ऩेऩो 3881

तेवर्क्कुम्–देवों का; तिचै करिक्कुम्–दिग्गजों का; चिवऩार्क्कुम्–शिव का; अयऩार्क्कुम्–ब्रह्मा का; चॆम् कण्–अरुणाक्ष; माऱ्कुम्–श्रीविष्णु का; एवर्क्कुम्–अन्यों का; वलियाऩुक्कु–बलवान का; इऱुति ऎऩ्ऱ–अंत कहाँ; उण्टाम्–होगा (होगा नहीं); ऎऩ–ऐसा; एमाप्पु–गर्व; उऱ्ऱेऩ्–करती रही; नी आवत् कण्–तुम उत्साह के साथ; उळऩ्ऱ–कष्ट करके; अरु–कठिन; पॆरु कटल्–बड़े सागर; तवत्तिऱ्कुम्–(के समान) तपस्या का और; वरम् ऎऩ्ऱ–वर रूपी; आऩ्ऱ कावऱ्कुम्–श्रेष्ठ रक्षा का (अंत); ओर्–अनुपम; वलियाऩ्–बलवान; माऩुटवऩ्–मनुष्य; उळऩ् ऎऩ्ऩ–है ऐसा; करुतिऩेऩो–सोचा था क्या (मैंने)। ३८८१

देवों, दिग्गजों, शिव, अज, अरुणाक्ष श्रीमन्नारायण और सबसे बलवान रावण का अंत होगा कब (होगा ही नहीं)? ऐसा मैं गर्व के साथ सोचती रही। तुमने बहुत क्लेश उठाकर सागर-सा विशाल तप किया था और अनेक वर पाये थे। उन सबका अंतक एक मानव है, मैंने ऐसा सोचा था क्या? । ३८८१

अरैकडैयिट् टमैवुऱ्ऱ मुक्कोडि यायुवुम्बे रऱिञरक् केयुम्
उरैकडैयिट् टळप्परिय पेराऱ्ऱऱ् ऱोळाऱ्ऱऱ् कुलप्पो विल्लै
तिरैकडैयिट् टळप्परिय वरमॆऩ्ऩुम् बाऱ्कडलैच् चीदै यॆऩ्ऩुम्
पिरैकडैयिट् टऴिप्पदऩै यऱिन्देऩो तवप्पयऩिऩ् पॆरुमै पाऱ्पेऩ् 3882

अरै कटैयिट्टु–आधे को मिलाकर; अमैवुऱ्ऱ–जो रहती है; मुक्कोटि आयुवुम्–तीन करोड़ आयु; पेर् अऱिञरक्केयुम्–बड़े पण्डितों के लिए भी; उरै–शब्दों से; कटै इट्टु–अन्त लगाकर; अळप्पु अरिय–आँकने में कठिन; पेर् आऱ्ऱल्–बड़े बली; तोळ् आऱ्ऱऱ्कु–कंधों के प्रताप का; उलप्पु इल्लै–अंत नहीं; तवम् पयऩिऩ्–तपस्या के फल की; पॆरुमै पाऱ्पेऩ्–महिमा सोचती रही; तिरै कटै इट्टु–तरंगों का अंत बताकर; अळप्पु अरिय–अमाप; वरम् ऎऩ्ऩुम्–वर रूपी; पाल् कटलै–क्षीरसागर को; चीतै ऎऩ्ऩुम्–सीता नाम का; पिरै–जामन; कटै इट्टु–अंत में डालकर; अऴिप्पतऩै–मिटाना; अऱिन्तेऩो–क्या मैंने जाना था। ३८८२

साढ़े तीन करोड़ की आयु का और बड़े-बड़े ज्ञानी विद्वानों के कथनों से भी अमाप तुम्हारे भुजबल का नाश कभी नहीं होगा! ऐसा सोचती रही मैं। तुम्हारी तपस्या पर इतराती रही। पर तुम्हारे वर रूपी अनंत तरंगों से पूर्ण क्षीरसागर को सीता रूपी जामन आखिर नष्ट कर देगा— यह मैं जान ही नहीं सकी थी। ३८८२

आरता रुलहियऱ्कै यऱित्तक्का रवैयेऴु मेऴु मञ्जुम्
वीरता रुडलुऱन्दु विण्पुक्कार् कण्पुक्क वेळ विल्लाल्

नारनाण् मलर्क्कणैयाल् नाळॅल्लान् दोळॅल्ला नैय वॅय्युम्
मारतार् तनियिलक्कै मनितृतना रळितृतनरे वरत्तिनाले 3883

उलकु इयर्कै–लोक की गति; अरितक्कार्–जानने की क्षमता; अत्तार्–रखनेवाले; आर्–कौन है; अवं–उन; एळुम् एळुम्–चौदहों भुवनों के; अच्चुम्–भय का पात्र; वीरत्तार्–वीर भी; उटल् तुरन्तु–शरीर छोड़कर; विण् पुक्कार्–स्वर्ग पहुँच गये; कण् पुकक–गाँठों-सहित; वेळाम् विल्लाल्–ईख के धनु से; नारम्–(भ्रमरों के) डोरे के; नाण् मलर्–ताजे फूलों के; कणैयाल्–शरों से; नाळ् ॲल्लाम्–सदा; तोळ् ॲल्लाम्–कंधे सारे; नैय–म्लान हों ऐसा; ॲय्युम्–जो चला रहे थे; मारतार्–कामदेव के; तनि इलक्कै–अकेले निशाने को; मनितृतनार्–मनुष्यों ने; वरत्तिनाल्–उत्कृष्ट वर से; अळितृतनरे–मिटा दिया न। ३८८३

लोक-गति के जानने की क्षमता रखनेवाले कौन हैं ? चौदहों भुवन जिनसे डरते थे वे वीर भी मरकर स्वर्ग पहुँच गये। आखिर एक मानव ने अपने वर के बल से मारदेव के उस निशाने को मिटा तो दिया जिस पर मन्मथ सदा गाँठों-सहित ईख के धनु के भ्रमरों के डोरे पर पुष्पशर संधान कर चलाता रहा और सदा सताता रहा ! । ३८८३

आरा वमुदा यलैहडलिर् कण्वळरुम्
नारा यणनॅन् ड्रिरुप्पे निरामनैनान्
ओरादे कॊण्डहन्रा युत्तमत्तार् तेवितनैप्
परायो निन्नुडैय मार्वहलम् बट्टॅल्लाम् 3884

नान्–मैं; इरामनै–श्रीराम को; आरा अमुताय्–न उबारनेवाला अमृत; अलै कटलिल्–तरंग-सागर पर; कण् वळरुम्–निद्रामग्न; नारायणन्–श्रीनारायण; ॲन्ड्र इरुप्पेन्–ऐसा सोचती रहती; ओराते–बिना विचारे; उत्तमतार् तेवि तनै–उन उत्तम की पत्नी को; कॊण्टु–हर ले; अकन्ड्राय्–दूर आये; निन्नुटैय–तुम्हारे; मार्पु अकलम् पट्ट–वक्ष के विस्तार पर लगे; ॲल्लाम् पारायो–(कष्ट) सब नहीं देखोगे। ३८८४

श्रीराम ऐसा अमृत है जिससे कोई कभी नहीं अघाता। हिलते रहनेवाले क्षीरसागर पर सोनेवाले श्रीमन्नारायण है ! ऐसा मानकर रही मैं। बिना विचारे उन उत्तम देव की पत्नी को तुम हर लेकर बहुत दूर आ गये। पर तुम्हारी चौड़ी छाती के विशाल प्रदेश का क्या हाल हो गया ! देखते नहीं। ३८८४

ॲन्ड्र ळैत्तन ळेङ्गि यॅळुन्दवन्, पॊन्ड्र ळैत्त पॊरुवरु मार्बिनैत्
तन्ड्र ळैक्कैह ळाड्रळ वित्तनि, निन्ड्र ळैत्तुयिर्त् ताळ्यर् नीङ्गिनाळ् 3885

ॲन्ड्र अळैत्तनळ्–ऐसा बिलापती; एङ्कि–रोकर; ॲळुन्तु–उठी; अवन्–उसके; पॊन् तळैत्त–स्वर्णबहुल; पॊरु अरु–अनुपम; मार्पिनै–वक्ष को; तन्–अपने; तळै कैकळाल्–पुष्ट हाथों से; तळुवि–आलिंगन करके; तनि निन्ड्र–

अकेली खड़ी हो; अऴैत्तु–पुकारकर; उयिर्त्ताळ्–लम्बी साँसें छोड़ती; उयिर नीङ्कित्ताळ्–प्राण त्याग दिये। ३८८५

मंदोदरी ने इस भाँति विलाप किया। शोकाक्रांत हुई। रावण के स्वर्णालंकृत अनुपम वक्ष को अपने पुष्ट हाथों से लपेटकर आलिंगन किया। अकेली खड़ी रहकर नाम ले पुकारा। फिर निःश्वास छोड़कर वह प्राण-हीन हो गयी। ३८८५

वान मङ्गैयर् विज्जैयर् मऱ्ऱुमत्, तान मङ्गैय रुन्दवप् पालवर्
आन मङ्गैय रुम्मरुङ् गऱ्पुडै, मान मङ्गैयर् तामुम् वऴुत्तिनार् 3886

वानम् मङ्कैयर्–व्योमलोक की स्त्रियाँ; विज्चैयर्–और विद्याधरियाँ; मऱ्ऱुम्–और; अ–वे; तान मङ्कैयरुम्–दानवस्त्रियाँ; तवम् पालवर्–तपस्या के पक्ष में; आन–रहनेवाली; मङ्कैयर्–(मुनि-) स्त्रियाँ; अरु कऱ्पुडै–श्रेष्ठ पतिव्रता; मानम् मङ्कैयर् तामुम्–मानव-स्त्रियों ने; वऴुत्तिनार्–प्रशंसा की। ३८८६

व्योमवासिनी देवांगनाओं ने, विद्याधरियों ने, दानवस्त्रियों ने, तपस्विनी ऋषि-पत्नियों ने और पतिव्रता मानवस्त्रियों ने उसकी प्रशंसा और स्तुति की। ३८८६

पिन्नर् वीडणन् पेरॅऴिऱ् ऱम्मुनै, वन्नि कूवि वरन्मुऱै यान्मऱै
यॊन्न वीम विदिमुऱै याऱ्ऱोहुत्, तिन्न नॆञ्जिनॊ डिन्दनत् तेऱ्ऱिनान् 3887

पिन्नर्–बाद; वीटणन्–विभीषण; वान्मुऱैयान्–यथाक्रम; वन्नि कवि–अग्नि को निमंत्रण दे; मऱै ऒन्न–वेदोक्त; ईम विति मुऱैयाल्–अपरकर्मा के क्रम में; तॊकुत्तु–पूरा करके; इन्नल् नॆञ्चित्तोटु–दुःखपूरित मन के साथ; पेर ऎऴिल्–वीरता के सौंदर्य में बढ़े; तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ को; इन्तनत्तु–इंधन पर; एऱ्ऱिनान्–चढ़ाया। ३८८७

बाद विभीषण ने यथाविधि अग्नि का आवाहन किया। वेदोक्त क्रम से दाहसंस्कार संपन्न किये। दुःखपूरित मन के साथ उसने वीरता के सौंदर्य में बढ़े अपने ज्येष्ठ भाई को चिता पर चढ़ाया। ३८८७

इन्द नत्तहिल् शन्दन मिट्टुमेल्, अन्द मानत् तऴहुऱत् तानमैत्
तॆन्द वोशैयुङ् गीऴुऱ वार्त्तिडै, मुन्दु शङ्गॊलि यॆङ्गु मुऴङ्गिड 3888

इन्तनत्तु–इंधन पर; अकिल् चन्तनम् इट्टु–अगरु और चंदन डालकर; मेल्–ऊपर; अन्त मानत्तु–उस विमान पर; अऴकु उऱ–सुन्दर रीति से; तान् अमैत्तु–उस पर रखकर; ऎन्त ओचैयुम्–सभी शब्दों को; कीऴ् उऱ–नीचे दबाकर; इटै आर्त्तु–रह-रहकर बजने; मुन्तुम्–उठनेवाले; चङ्कु ऒलि–शंखध्वनि; ऎङ्कुम् मुऴङ्किट–सर्वत्र शब्द करे ऐसा। ३८८८

चिता में अगरु और चंदन की लकड़ियाँ रखीं। उस यान के रूप

में सजी चिता पर रावण के पार्थिव शरीर को रखा। रह-रहकर शंख बजाया, जिसकी ध्वनि इतनी ऊँची थी कि सभी अन्य शब्द उसमें दब गये। ३८८८

कॊऱ्ऱ वॆण्कुडै योडु कॊडिमिडैन्, दुऱ्ऱ वीम विदियि नुडम्बडीइच्
चऱ्ऱ मादर् तॊडर्न्दुडन् शूऴ्वर, मऱ्ऱ वीरन् विदियिन् वऴङ्गिनान् 3889

कॊऱ्ऱम् वॆण्–विजयी श्वेत; कुडै ओडु–छत्र के साथ; कॊडि मिडैन्दु उऱ्ऱ–ध्वजा मिली रही; ईमम् वितियिन्–दाहकर्म के; उडम्पटी इ–अनुसार; चुऱ्ऱम्–रिश्तेदार; मातर्–और स्त्रियाँ; तॊडर्न्तु–पीछा करके; उडन्–साथ; चूऴ्न्तु वर–घेरे आयीं; मऱ्ऱु–और; अ वीरन्–उस वीर ने; वितियिन्–विधिवत्; वऴङ्कितान्–दाहसंस्कार कराया। ३८८९

विजयी श्वेत छत्र ताना गया था। ध्वजाएँ फहर रही थीं। सभी बंधु-बांधव एकत्रित थे। स्त्रियाँ भी एकत्रित हुईं। विभीषण ने विधिवत् चिता में आग लगवाकर दाहसंस्कार कराया। ३८८९

कडन्गळ् शॆय्दु मुडित्तुक् कणवनो
डुडैन्दु पोन मयन्मह ळोडुडन्
अडङ्ग वॆङ्गन लुक्कवि याक्किनान्
कुडङ्गॊळ् नीरिनुङ् गण्शोर् कुमिऴियान् 3890

कुडम् कॊळ्–घड़ों भर के; नीरिनुम्–जल से अधिक; कुमिऴियान्–बुलबुलों के साथ; कण् चोर्–अश्रु बहाते; कडन्कळ् चॆय्तु–(विभीषण ने) कृत्य करके; मुडित्तु–पूरा करके; कणवनोडु–पति के साथ; उडैन्तु पोन–जो मर गयी उस; मयन् मकळोडु उडन्–मयसुता भी; अडङ्क–राख बने ऐसा; वॆम् कनलुक्कु–गरम अग्नि का; आवि आक्कितान्–हवि बना दिया (विभीषण ने)। ३८९०

विभीषण की आँखों से घड़ों के माप का अश्रुजल बुलबुलों के साथ निकल बहता था। उसने जल-क्रिया समाप्त की। पति के साथ-साथ जो मरी उस मयसुता मंदोदरी के शरीर को भी राख बनाते हुए उसने अग्नि का हवि बना दिया। ३८९०

मऱ्ऱै योर्क्कुम् वरन्मुऱै यालवहुत्, तुऱ्ऱ तीक्कॊडुत् तुण्गुऱ नीरुहुत्
तॆऱ्ऱै योर्क्कु मिवन्नल दिल्लॆन्ना, वॆऱ्ऱि वीरन् कुरैकऴन् मेविनान् 3891

मऱ्ऱैयोर्क्कुम्–अन्यों का भी; वरन् मुऱैयाल्–विधिवत्; वकुत्तु–कर्म करके; उऱ्ऱ–युक्त रीति से; ती कॊडुत्तु–अग्नि-कर्म करके; उण्कुऱ–ग्राह्य; नीर् उकुत्तु–जलतर्पण करके; ऎऱ्ऱैयोर्क्कुम्–सबके लिए; इवन् अलतु–इसके सिवा; इल् ऎन्ना–कोई नहीं ऐसा; वॆऱ्ऱि वीरन्–विजयी वीर; कुरै कऴल्–क्वणित पायलधारी श्रीराम के; मेवितान्–(चरणों में) आकर विनत हुआ। ३८९१

अन्य मरे हुए वीरों के लिए भी विभीषण ने अग्निसंस्कार, जलसंस्कार

आदि संपन्न किया। फिर सर्वैकमात्रशरण्य श्रीराम के क्वणित पायलधारी चरणों में आकर प्रणाम किया। ३८९१

वन्दु ताऴ्न्द तुणैवनै वळ्ळलुम्, शिन्दै वॅन्दुयर् तीरुदि तॅळ्ळियोय्
मुन्दै यॅय्दु मुरैमै यिदामॅन्ना, अन्द मिल्लिडर्प् पार महट्रिनान् 3892

वन्तु ताऴ्न्त–जो आकर झुका; तुणैवनै–उस मित्र को; वळ्ळलुम्–प्रभु ने भी; तॅळ्ळियोय्–सुलझे हुए विचारवाले; चिन्तै–मन के; वॅम् तुयर्–कठोर दुःख; तीरुति–दूर करो; मुन्तै–प्राचीन से; ऍय्तुम्–आनेवाला; मुरैमैयतु–क्रम यही; आम्–है; ऍन्ना–ऐसा; अन्तम् इल्–अनंत; इटर् पारम्–दुःखभार; अकट्रिनान्–दूर किया। ३८९२

आकर जो नत हुआ उस अपने मित्र से प्रभु ने कहा कि सुलझे हुए विवेकी! अपने मन के कठोर दुःख को छोड़ दो। प्राचीनों की विधान की हुई रीति यही है! उन्होंने अपने आश्वासन के वचनों से विभीषण के अपार दुःख-भार को दूर किया। ३८९२

37. मीट्चिप् पडलम् (प्रत्यागमन पटल)

वरुन्दल् नीदि मनुनॅरि यावैयुम्, पॅारुन्दु केळ्विप् पुलमैयि नोयॅना
अरुन्द वप्पय नालडैन्दाऱ् करैन्, दिरुन्द वत्तिळै योर्क्कि दियम्बिनान् 3893

मनु नॅरि–मनुशास्त्रोक्त; नीति यावैयुम्–सभी नीतियों से; पॅारुन्तु–सम्मत; केळ्वि–श्रौतज्ञान में; पुलमैयितोय्–विद्वान; वरुन्तल्–दुःख मत करो; ऍन्ना–कहकर; अरुतवम्–अपूर्व तपस्या के; पयनाल्–फल से; अटैन्ताऱ्कु–अपने शरणागत विभीषण से; अरैन्तु–कहकर; इरु तवत्तु–बड़ी तपस्या के; इळैयोर्क्कु–कनिष्ठ से; इतु इयम्पिनान्–यह कहा। ३८९३

श्रीराम ने अपार तपस्या के फल से अपने शरणागत विभीषण को धीरज बँधाया। मनुधर्मशास्त्रोक्त नीतियों के श्रवणज्ञाता! विद्वान्! विभीषण! तुम दुःख मत करो। फिर महातपस्वी अपने कनिष्ठ से यह बात कही। ३८९३

शोदि यान्महन् वायुविन् तोन्ऱल्मऱ्, ऱेदिल् वानर वीररॊ डेहिनी
आदि नायह नाक्किय नूल्मुरै, नीदि यानै नॅडुमुडि शूट्टुवाय् 3894

चोतियान् मकन्–सूर्य का पुत्र और; वायुविन् तोन्ऱल्–वायु का सुत; मऱ्ऱु–और; एतु इल्–निर्दोष; वानर वीररॊटु–वानर वीरों के साथ; एकि–जाकर; नी–तुम; आति नायकन्–आदिदेव विष्णु; आक्किय–द्वारा प्रणीत; नूल् मुरै–शास्त्र के अनुसार; नीतियानै–नयी को; नॅटुमुटि–ऊँचा किरीट; चूट्टुवाय्–पहना दो। ३८९४

तुम सूर्यपुत्र, वायुकुमार और अन्य अनिंद्य वानर वीरों के साथ

जाओ। और आदिदेव श्रीनारायणरचित वेदादि शास्त्रों में उक्त प्रकार से नीतिमान विभीषण को उत्कृष्ट किरीट पहना दो। ३८९४

ऎन्ऱु कूऱि यिळवलॊ डारॆयुम्, वॆन्ऱि वीरऩ् विडैयरुळ् वेलैयिल्
निन्ऱ तेवर् नॆडुन्दिशै योरॊडुम्, शॆन्ऱु तत्तम शॆय्है पुरिन्दनर् 3895

ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; वॆन्ऱि वीरऩ्–विजय वीर ने; इळवलॊट्–छोटे भाई को और; आरॆयुम्–सबको; विटै अरुळ्–जब विदा दिलायी बस; वेलैयिल्–समय; निन्ऱ तेवर्–जो खड़े रहे उन देवों ने; नॆट् तिचैयोरॊटुम्–बड़े दिग्पालों के साथ; चॆन्ऱु–जाकर; तत्तम्–अपने-अपने; चॆय्कै–योग्य कार्य; पुरिन्तऩर्–किये। ३८९५

विजयी वीर श्रीराम ने यह कहकर सबको विदा दी। तब वहाँ जो खड़े रहे उन देवों और दिग्पालों ने भी अपने-अपने कार्यों को करना आरंभ कर दिया। ३८९५

शूऴ्ह डऱ्पुन लुम्बल तोयमुम्, नीऴमु डित्तॊहै युम्बिऱ नीर्मैयुम्
पाऴि तुऱ्ऱरि पऱ्ऱिय पीडमुम्, ताऴ्विल् कॊऱ्ऱत् तमरर्हळ् तन्दनर् 3896

चऴ् कटल्–आवरणकारी समुद्र; पुऩलुम्–और जल; पल तोयमुम्–अनेक पुण्यजल; नीऴ्–लम्बे; मुटि तॊकैयुम्–किरीटों का समूह; पाऴि तुऱ्ऱ–बलसंयुक्त; अरि–सिंहों से; पऱ्ऱिय–धृत; पीटमुम्–आसन; पिऱ नीर्मैयुम्–अन्य सामग्रियाँ; ताऴ्वु इल्–अवनति से रहित; कॊऱ्ऱत्तु–विजय के; अमरर्कळ्–देवों ने; तन्तऩर्–ला दिये। ३८९६

भूमि को घेरे रहनेवाले सभी समुद्रों का जल, अन्य पवित्र तीर्थ, ऊँचे किरीटों का समूह, सशक्त सिंहों का धृत सिंहासन और अन्य सामग्रियाँ देवों ने ला दीं। उन देवों की विजयश्री अब ऐसी स्थिति पर आ गयी जहाँ पतन की गुंजाइश ही नहीं हो सकती थी। ३८९६

वाश नाण्मल रोन्शॊल मान्मुहन्, काशु मानिदि युङ्गॊडु कङ्गैशू
डीश नेमुद लोर्वियन् देत्तिडत्, तेशु लामणि मण्डवञ् जॆय्दनन् 3897

वाचम्–सुगंधित; नाण्–ताजे; मलरोऩ् चॊल्–पुष्पवासी ब्रह्मा के कहने पर; माऩ् मुकऩ्–हरिणमुख मय ने; काचुम्–रत्न; मानितियुम्–और बड़ी निधियाँ; कॊट्–लाकर; कङ्कै चूट्–गंगाधर; ईचऩ्–ईश्वर; मुतलोर्–आदि देवों के; वियन्तु–विस्मय-सहित; एत्तिट–स्तुति करते; तेचु उलाम्–तेजोमय; मणि मण्टपम्–सुन्दर मंडप को; चॆय्तऩऩ्–निर्मित किया। ३८९७

सुगंधपूर्ण कमलपुष्पभव ब्रह्मा की आज्ञा पाकर हरिणमुख मय ने एक नवरत्नखचित तेजोमय मण्डप रचा। उसमें रत्न और अन्य निधियाँ निहित थीं। उसको देखकर गंगाधर शिव और देवों ने भी वाहवाही मचा दी। ३८९७

मॅय्होंळ् वेद विदिमुऱै विण्णुळोर्, तॅय्व नीळ्पुन लाडल् तिरुत्तिड
ऐय नाणैयि नालिळङ् गोळरि, कैयि नाऩ्महु डङ्गवित् ताऩरो 3898

मॅय् कॉळ्–सच्चे; वेतम्–वेदोक्त; वितिमुऱै–विधानों के अनुसार; विण् उळोर्–व्योमवासियों के; तॅय्वम्–दिव्य; नीळ्–श्रेष्ठ; पुनल्–तीर्थों से; आटल्–स्नान; तिरुत्तिट–कराने पर; ऐयन्–श्रीराम की; आणैयिनाल्–आज्ञा से; इळ कोळरि–बाल केसरी ने; कैयिनाल्–अपने हाथ से; मकुटम् कवित्तान्–मुकुट पहनाया। ३८९८

देवों ने सत्य वेदोक्त रीति से दिव्य पवित्र जल लेकर विभीषण को स्नान कराया। प्रभु श्रीराम की आज्ञा के अनुसार बाल-केसरी लक्ष्मण ने अपने हाथ से विभीषण के सिर पर उत्कृष्ट किरीट को पहना दिया। ३८९८

करिय कुऩ्ऱु कदिरिलैच् चूडियोर्
ऑरिम णित्तवि शिऱ्पॉलिन् दॅऩ्ऩवे
विरियुम् वॅऱ्ऱि यिलङ्गैयर् वेन्दऩी
डरिय णॅप्पॉलिन् दाऩर मार्त्तॅळ 3899

करिय कुऩ्ऱु–काला पर्वत; कतिरिलै चूटि–सूर्य को सिर पर ले; ऑरि–जलनेवाले; मणि–रत्न लगे; ओर् तविचिल्–एक आसन पर; पॉलिन्तॅन्न–विराजमान हो ऐसा; विरियुम् वॅऱ्ऱि–विस्तृत विजयशील; इलङ्कैयर् वेन्तन्–लंका का राजा; अऱम्–धर्मदेवता के; आर्त्तु–कोलाहल; ॲळ–मचा उठते; नीटु–उत्कृष्ट; अरि अणै–सिंहासन पर; पॉलिन्तान्–विलसा। ३८९९

विस्तृत-विजयशील लंकाधिपति विभीषण जब सिंहासन पर विराजमान था, तब ऐसे एक काले पर्वत के समान लगा जो सूर्य को चोटी पर धारण करके जलते से रत्नों के एक आसन पर विराजमान हो! तब धर्मदेवता ने आनंदघोष किया। ३८९९

तेवर् पूमऴै शित्तर् मुदलिऩोर्, मेवु कादल् विरैमलर् वेऱिलार्
मूव रोडु मुऩिवर्मऱ् ऱियावरुम्, नावि लाशि नऱैमलर् तूविऩार् 3900

तेवर्–देवों ने; पूमऴै–पुष्पवर्षा; चित्तर्–सिद्ध; मुतलिऩोर्–आदियों ने; मेवु कातल्–उमँगते प्रेम के साथ; विरै मलर्–सुगंधित पुष्प; वेऱु इलार्–जो गैर नहीं; मूवरोटु–उन त्रिदेवों के साथ; मुऩिवर्–मुनियों ने; मऱ्ऱु यावरुम्–और अन्यों ने; नाविल्–मुख से; आचि–आशीर्वचन रूपी; नऱै मलर्–श्रेष्ठ फूल; तूविऩार्–बरसाये। ३९००

देवों ने पुष्प-वर्षा की। सिद्धों आदि अन्य गणों ने प्रेम के साथ सुगंधपूर्ण फूल बरसाये। आपस में भेद न माननेवाले त्रिदेवों ने और मुनियों और अन्यों ने अपने मुख से आशीर्वचन रूपी सुमन बिखेरे। ३९००

मुडिपु तैन्द निरुदर् मुदलवन्
अडिव णङ्गि यिळवलै याण्डैयन्
नॆडिय कादलि नोऱ्कुयर् नीर्मैशॆय्
दिडिहॊळ् शॊलुल नलङ्कि दियम्बिनान् 3901

मुटि पुऩैन्त–मुकुट जिसको पहनाया गया; निरुतर् मुतलवऩ्–वह राक्षसराज; इळवलै–लघुराज के; अटि वणङ्कि–पैरों में नमस्कार करके; आण्टै–वहाँ; अ नॆटिय–उन दीर्घ; कातलितोऱ्कु–प्रेम करनेवाले का; उयर्–उत्कृष्ट; नीर्मै–उपचार; चॆय्तु–करके; इटि कॊळ्–वज्र-सम; चॊल्लऩ्–बोलनेवाले ने; अनलऱ्कु–अनल से; इतु इयम्पिऩाऩ्–यह कहा। ३९०१

मुकुट पहनकर राक्षसराज ने लघुराज के चरणों में नमस्कार किया और उन दीर्घ स्नेही का उचित आदर-सत्कार किया। वज्र-भाषी विभीषण ने फिर अनल से निम्नोक्त बात कही। ३९०१

विलङ्गल् नाण मिडैतरु तोळिनाय्, इलङ्गै मानहर् यान्वरु मॆल्लैनी
कलङ्ग लानॆडुङ् गाव लियऱ्ऱॆना, अलङ्गल् वीर नडियिणै यॆय्दिनान् 3902

विलङ्कल् नाण–पर्वत भी लजाये; मिटै तरु–ऐसे तगड़े; तोळिऩाय्–कंधों वाले; याऩ्–मेरे; इलङ्कैमानकर्–लंका के बड़े नगर को; वरुम् ऎल्लै–आने के समय तक; नी–तुम; कलङ्कला–अचल रीति से; नॆटु कावल्–अच्छी रक्षा; इयऱ्ऱु–करो; ऎऩा–कहकर; अलङ्कल् वीरऩ्–मालाधारी वीर के; अटि इणै–चरणद्वय पर; ऎय्तिऩाऩ्–जा पहुँचा। ३९०२

'ऐसे तगड़े कंधों वाले, जिन्हें देखकर पर्वत भी सिर झुका ले! (मैं श्रीराम के पास जा रहा हूँ।) मेरे लंका नगर लौट आते तक तुम अस्थिर न होकर इस बड़े नगर की रक्षा करो।' यह कहकर विभीषण माला शोभित वक्षवाले श्रीराम के चरणद्वय पर आ गया। ३९०२

कुरक्कु वीर नरशिळङ् गोळरि
अरक्कर् कोमह नोडडि ताळ्दलुम्
पॊरुक्कॆ नप्पुहल् पुक्कवर् पुल्लियन्
तिरुक्कॊण् मार्ब निनैयन शॆप्पिनान् 3903

अरक्कर् को मकऩ्–राक्षसराज (विभीषण); कुरक्कु वीरऩ्–वानरों में वीर; अरसु–राजा सुग्रीव और; इळ कोळरि–छोटा सिंह अंगद के साथ; अटि ताळ्तलुम्–जब चरणों में झुका तो; अ तिरुकॊळ्–उन श्री से शोभित; मार्पऩ्–वक्ष वाले ने; पॊरुळ्कॆऩ–झट; पुकल् पुक्कवऱ्कु–शरणागत का; पुल्लि–आलिंगन करके; इऩैयऩ–ये बातें; चॆप्पिऩाऩ्–कहीं। ३९०३

राक्षसराज, वानरराज और वानर युवराज तीनों श्रीराम के चरणों में विनत हुए। तब श्रीनिवासवक्ष झट आये और विभीषण को अपनी छाती से लगा लेकर यों बोले। ३९०३

उरिमै मूवुल हुनद्‌ीळ वुम्बर्दम्, पॅरुमै नीदि यऱन्वळिप् पेर्‌हिला
दिरुमै येयर शाळुदि यीट्रिलात्, तरुम शीलवॅन् ड्रान्मऱै तन्दुळान् 3904

मऱै तन्तुळान्–वेदप्रकाशक; ईऱ इला–अनंत; तरुम चील–धर्मशील; मूवुलकुम्–तीनों लोकों की; तॉळ–वन्दना पाकर; उम्पर् तम्–देवों का; पॅरुमै–आदर; नीति–न्याय; अऱत्वळि–धर्ममार्ग के; उरिमै–योग्य रहकर; इरुमैये–यश और पुण्य से; पेर्किलातु–न हटकर; अरचु आळुति–राज करो। ३६०४

वेदप्रकाशक श्रीराम ने ये श्रीवचन उच्चारे। अक्षय धर्मशील! तुम ऐसा राज करो कि तीनों लोक तुम्हारी स्तुति करें और देवों का आदर, न्याय, धर्म-मार्ग यश और पुण्य —ये तुम्हारे शासन में अचल रहें। ३९०४

पन्नु नीदिहळ् पऱ्पल कूऱिमऱ्
ऱुन्नु डॆत्तम रोडुयर् कीर्त्तियोय्
मन्नि वाळ्हॅन् ऱुरैत्तडन् मारुदि
तन्नै नोक्किनन् तायर्शॊल् नोक्किनान् 3905

तायर् चॊल् नोक्किनान्–मातृवचन-परिपालक ने; पन्नुम्–पंडितोक्त; पऱ्पल्–विविध; नीतिकळ्–नीतियों को; कूऱि–कहकर; मऱ्ऱु–और; उयर्–उन्नत; कीर्त्तियोय्–यशस्वी; उन् उटै–तुम्हारे; तमरोटु–अपनों के साथ; मन्नि–मिले रहकर; वाळ्क–जिओ; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तु–कहकर; अटल्–पराक्रमी; मारुति तन्नै–मारुति पर; नोक्किनन्–दृष्टि डाली। ३६०५

मातृवचनपालक श्रीराम ने सज्जनोक्त अनेक नीति की बातें कहीं। फिर कहा— वर्धनशील यशस्वी! अपनों के साथ मिलकर जीवन बिताओ। फिर उन्होंने बलवान हनुमान की तरफ़ अपना श्रीमुख किया। ३९०५

इप्पु ऱत्तिन वॅय्दुऱु कालॅयिल्
अप्पु ऱत्तदै युन्नि यनुमनैत्
तुप्पु ऱच्चॅय्य वाय्मणित् तोहैपाल्
शॅप्पु ऱिप्पडिप् पोयॅनच् चॆप्पिनान् 3906

इ पुऱत्तु–यहाँ; इन–ऐसे काम; ऍय्तुऱु कालॅयिल्–जब होते रहे तब; अ पुऱत्तदै–वहाँ के कार्यों को; उन्नि–सोचकर; अनुमनै–हनुमान से; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम उस; चॅय्यवाय्–लाल अधर वाली; मणि तोकै पाल्–सुन्दर कलापी-सी देवी के पास; इ पटि पोय्–यहाँ का हाल जाकर; चॅप्पु उऱु–कहो; ऍन–ऐसा; चॅप्पिनान्–कहा। ३६०६

जब इधर यह सब हो रहा था, 'तब आगे क्या होना है' —यह विचार करके श्रीराम ने हनुमान से कहला भेजा कि तुम जाओ और प्रवालारुणाधरा कलापी-सी सीता से यहाँ का वृत्तांत कहो। ३९०६

वणङ्गि यन्दमिल् आरुदि मामलर्, अणङ्गु शेर्कडि कावुशॅन् ऱणुमिन्नान्
उणङ्गु कॉम्बुक्कु उयिर्दरु नीरॅनच्, चुणङ्गु तोय्मुलै याट्किवै शॉल्लुवान् 3907

अन्तमिल्–चिरंजीव; मारुति–मारुति; वणङ्कि–नमस्कार कर; मामलर्–श्रेष्ठ कमल पर; अणङ्कु–की देवी; चेर्–जहाँ रहीं; कटि–उस सुरक्षित; कावु चॅन्ऱु–वन में जाकर; अणुमिन्नान्–पहुँचा; उणङ्कु–मुरझायी; कॉम्पुक्कु–पुष्प-शाखा के लिए; उयिर् तरु–प्राणदायक; नीर् ॲन–जल के समान; चुणङ्कु तोय्–सुन्दर विवर्णता से युक्त; मुलैयाट्कु–स्तनों वाली (सीता) से; इवै चॉल्लुवान्–ये बातें कहने लगा। ३९०७

चिरजीव मारुति नमस्कार करके उस सुरक्षित अशोक वन में जा पहुँचा, जहाँ देवी कमला रह रही थीं। 'तेमल्' (सौंदर्यवर्धक श्वेत चिह्न) से अंकित स्तनों वाली सीता से उसने निम्नोक्त बातें कहीं जो मुरझायी पुष्प-शाखा को नया जीवन देनेवाले जल के समान उत्साहवर्धक साबित हुईं। ३९०७

पाडि नान्तिरु नामङ्गळ् पल्मुऱै, कूडु शारियिऱ् कुप्पुऱ्ऱुक् कूत्तुनिन्
ऱाडि यङ्गै यिरण्डु मलङ्गुरच्, चूडि निन्ऱनन् कुन्ऱनन्न तोळिनान् 3908

कुन्ऱु अन्न–पर्वतोपम; तोळिनान्–कंधों वाला; तिरु नामङ्कळ्–श्रीराम के अनेक नामों को; पल् मुऱै–अनेक बार; पाटिनान्–रटते हुए; कूटु चारियिल्–दायें और बायें; कुप्पुऱ्ऱु–कूदकर; निन्ऱु–खड़ा होकर; कूत्तु आटि–नाच-नाचकर; अम् कै–सुन्दर हाथों; इरण्टुम्–दोनों को; अलङ्कुऱ–कँपाते हुए; चूटि–सिर पर रख; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ३९०८

पर्वतोपम कंधों वाले हनुमान ने भगवान के अनेक नामों का बार-बार उच्चारण किया। पैंतरे बदलकर दायें और बायें घूमा। खड़ा होकर नाचा। फिर दोनों हाथों को काँपने देते हुए जोड़ा तथा सिर पर रख लिया और देवी के समक्ष खड़ा हो गया। ३९०८

एळै शोबन मेन्दिळै शोबनम्, वाऴि शोबन मङ्गल शोबनम्
आऴि यान वरक्कनै यारियच्, चूऴि यानै तुहैत्तदु शोबनम् 3909

एळै–बाले; चोपनम्–मंगल हो; एन्तिऴै–आभरणभूषिता; चोपनम्–शोभन हो; वाऴि चोपनम्–शुभमय जिओ; मङ्कलम् चोपनम्–मंगल पर मंगल हो; आऴियान अरक्कनै–पापसागर राक्षस को; आरियर् चूऴियानै–श्रीराम रूपी मुख-पट्टालंकृत गज ने; तुकैत्तनु–रौंद दिया। ३९०९

फिर उसने मंगलकामना बतायी। अबोध बाले! शोभन हो! आभरण-धारिणी मंगल हो! जिओ! शुभ हो! मंगल, शुभ, शोभन हो! पाप के सागर राक्षस को आर्य श्रीराम रूपी मुखपट्टालंकृत गज ने रौंद दिया। ३९०९

तलैक्कि डन्दन तारणि ताङ्गिय, मलैक्कि डन्दन पौन्मणित् तोळ्निरै
अलैक्कि डन्दन वाळि किडन्दन, निलैक्कि डन्द रुडल्निलत् तेंन्ऱान् 3910

तलै–सिर; तारणि ताङ्किय–भूमि के धारक; मलै किटन्तु अन्न–पर्वत पड़े हों ऐसा; किटन्तन–गिरे पड़े थे; पौन् मणि–स्वर्णरत्न-सज्जित; तोळ् निरै–कंधों की पंक्तियाँ; आऴि–समुद्र की; अलै किटन्तु अन्न–तरंगों के समान; किटन्तन–पड़े थे; उटल्–शरीर; निलत्तै–भूमि पर; निलै किटन्त–अचल पड़ा रहा; ऍन्ऱान्–बोला। ३९१०

रावण के सिर भूधर पर्वतों के समान गिरे पड़े थे। स्वर्ण और रत्नों से शोभित उसके कंधों की पंक्तियाँ समुद्र की तरंगों के समान पड़ी रहीं। शरीर भूमि पर गिरकर निस्पंद रहा। —हनुमान ने इस भाँति कहा। ३९१०

अण्ण लाणैयिन् वीडण नामरुक्, कण्णि लादवन् कादल् तॉडर्दलाल्
पॅण्ण लाकु पिऴैत्तुळ दाहुमॅन्, ऍण्ण लावदीर् पेरिल दालॅन्ऱान् 3911

अण्णल्–प्रभु श्रीराम की; आणैयिन्–आज्ञा से और; वीटणन् आम्–विभीषण को; अरुम् कण् इलातवन्–क्रूर नहीं था उसका; कातल्–प्रेम; तॉटर्तलाल्–लगातार रहा इसलिए; पॅण् अलातु–स्त्रियों को छोड़कर; पिऴैत्तुळतु आकुम्–कोई बचा रहा; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णल् आवतु–सोचने के लिए; पेर् इलतु–मौक़ा ही नहीं रहा; ऍन्ऱान्–कहा। ३९११

प्रभु श्रीराम की आज्ञा के कारण और संतस्वभाव के विभीषण के प्रेम के कारण सभी पुरुष मर गये। स्त्री-जाति के लोगों को छोड़कर अन्य कोई बचा भी हो, ऐसा सोचा जाय, इसके लिए लंका में कोई भी नहीं है! हनुमान ने यह कहा। ३९११

ऒरुक लैत्तनि यॊण्मदि नाळॊडुम्, वरुक लैक्कुळ् वळर्वदु मानुरप्
पॊरुक लैक्कुलम् बूत्तदु पोन्ऱनळ्, परुह लुरुरु वमुदु पयन्दनाळ् 3912

परुकल् उऱु–पेय (भोग्य); अमुतु–अमृत-सम वचन; पयन्त नाळ्–जिस दिन कहा; ऒरु कलै–एक ही कला के; तनि ऒळ् मति–अकेले प्रकाशमय चन्द्र को; नाळॊटुम्–दिन-ब-दिन; वरु कलैक्कुळ्–एक-एक करके कलाएँ; वळर्वतु–जब बढ़तीं तब; मान् उऱ–हरिण भी आता है; पॊरु–(पर) संकुलित; कलै कुलम्–कला-समूह; पूत्ततु–एक साथ मिल गया; पोन्ऱनळ्–ऐसी लगीं। ३९१२

भोग्य अमृत के समान हनुमान ने ये वचन कहे। तब जैसे रोज़ क्रम से कलाएँ बढ़ती है और एक ही कला का चंद्र सब कलाओं से समृद्ध होकर छविमय दिखता है वैसे ही सीता भी प्रफुल्लित हुई। ३९१२

आम्बल् वायु मुहमु मलर्न्दिडत्
तेम्बु नुण्णिडै तेयत् तिरण्मुलै

एमब लाशैक् किरट्टिवन् वॆय्दित्ताळ्
पाम्बु कात्तुर् पत्तिमदिप् पात्मैयाळ् 3913

पाम्पु कात्तुर्–(राहु-केतु) सर्प-निर्गत; पत्तिमति पात्मैयाळ्–शीतल चन्द्र की-सी स्थिति वाली; आम्पल् वायुम्–लाल कुमुद-से अधर; मुकमुम्–मुख; मलर्न्तिट–खिल उठे और; तेम्पुम्–म्लान; तुण् इटै–महीन कमर; तेय–क्षीण होती; तिरळ् मुलै–पुष्ट स्तन; एम्पल्–मोद और; आचैक्कु–आशा के कारण; इरट्टि वनुतु–दुगुने आकर; ऍय्तित्ताळ्–लग गये। ३९१३

राहु, केतु सर्पों के मुख से बाहर आये शीतल चंद्र की-सी स्थिति में देवी सीता के कुमुद-समान आनन और अधर खिल उठे। म्लान रही पतली कमर को और पतला बनाते हुए पुष्ट स्तनों में आनंद के कारण उत्पन्न आशा से दुगुनी स्फीति आ गयी। ३९१३

पुन्दि योङ्गु मुवहैप् पॊरुमलो, उन्दि योङ्गु मॊळिवळैत् तोळ्हॊलो
शिन्दि योडु कलैयुडैत् तेर्हॊलो, मुन्दि योङ्गिन यावै मुलैहॊलो 3914

पुन्ति ओङ्कुम्–मन में प्रवृद्ध; उवकै पॊरुमलो–संतोष का उत्थान; उन्ति–उकसाये आकर; ओङ्कुम्–बढ़नेवाले; ऑळि वळै–छविमय वलयों से भूषित; तोळ् कॊलो–कन्धे क्या; चिन्ति ओटु–लचककर चलनेवाली; कलै उटै–मेखला-सहित; तेर् कॊलो–रथ (वरांग) क्या; मुलै कॊल् ओ–स्तन क्या; मुन्ति–पहले; ओङ्किन–वर्धित हुए; यावैयो–(इनमें) क्या। ३९१४

(अब स्थिति ऐसी हो गयी कि इनमें कौन सा पहले बढ़ा, यह निश्चय करना कठिन था।) मन में बढ़नेवाले आनंद की उमंग? या आंतरिक बढ़ती खुशी के कारण प्रकाशमय वलयमंडित विशाल कंधे? या लचक के साथ पास से चलनेवाली मेखला से शोभायमान उनका रथ-सा वरांग? इनमें कौन सा पहले वर्धित हुआ? । ३९१४

कुनित्तत कोलप् पुरुवङ्गळ् कॊम्मैवेर्
पनित्तत कॊङ्गै मळलैप् पणिमॊळि
नुनित्तत वॊन्रु नुवल्वदॊन् रायिनाळ्
कनित्तत विन्कळि कळ्ळिनिर् काट्टुमो 3915

कोलम्–सुन्दर; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; कुनित्तत–कुंचित हुईं; कॊङ्कै–स्तन; कॊम्मै–स्थूलता के साथ; वेर् पनित्तत–स्वेदयुक्त हुए; मळलै–अस्पष्ट; पनिमॊळि–शीतल-वाणी देवी; नुनित्ततु–सोचती; ऑन्रुम्–कुछ; नुवल्वतु–बोलती; ऑन्रु–कुछ और; आयिनाळ्–हो गयीं; कनित्तत–पक्का; इन् कळि–मधुर आनंद; कळ्ळितिल्–मधु में; काट्टुमो–दिखायी देगा क्या। ३९१५

सुंदर भ्रू का कुंचन हुआ। स्तन स्थूल बने और उन पर स्वेद निकल आया। अस्पष्ट-वाणी सीता कुछ सोचने और कुछ कहने लगीं। उनके

मन में जो अति गंभीर आनंद हुआ वह मधु की मधुरिमा में भी प्राप्य हो सकेगा क्या ? । ३९१५

अन्नैय ळाहि यनुमनै नोक्किनाळ्, इन्नैय बिन्न दियम्बुव दॅन्बदोर्
निन्नैवि लादु नॅडिदिरुन् दाळ्नॅडु, मन्नैयिन् माशु तुडैत्त मनत्तिनाळ् 3916

नॅटु मन्नैयिन्–गौरवमय गृहस्थी के; माचु तुटैत्त–कलंक दूर करके; मनत्तिनाळ्–(निश्चित हुए) मनवाली ने; अन्नैयळ् आळि–उस स्थिति में आकर; अनुमनै–हनुमान पर; नोक्किनाळ्–दृष्टि डाली; इन्नैयतु–ऐसी; इन्नतु–अमुक बातें; इयम्पुवतु ॲन्पतु–कहना, यह; ओर् निन्नैवु–एक विचार; इलातु–न रहा, ऐसा; नॅटितु इरुन्ताळ्–बहुत देर चुप रहीं। ३९१६

गौरवपूर्ण गृहस्थी पर लगा-सा रहा कलंक दूर हो गया। इस आनंद में आयी सीता ने मन और शरीर से फूलकर हनुमान पर दृष्टि डाली। क्या कहना ? कैसे कहना ? कुछ निश्चय नहीं कर सकीं। अतः वे लंबी देर तक चुप रहीं। ३९१६

यादि दऱ्कोन्नु ऱियम्बुव लॅन्बदु
मीदु यरन्द वुवहैयिन् विम्मलो
तूदु पॊय्क्कुमॅन् ऱॆण्णिनच् चॊल्लिनान्
नीदि वित्तह नङ्गै निहऴ्त्तिनाळ् 3917

नीति वित्तकन्–नयज्ञ (हनुमान); मीतु उयरन्त–अपार; उवकैयिन् विम्मल्–आनंद के आधिक्य से; इतऱ्कु–इसका; यातु ऒन्ऱु–क्या कुछ उत्तर; इयम्पुवल्–कह देगी; ॲन्पतु–यह कारण क्या; तूतु पॊय्क्कुम्–दूत का वचन झूठा हो; ॲन्ऱो–ऐसा सोचकर क्या; ॲन–ऐसा; चॊल्लिनान्–पूछा; नङ्कै निकऴ्त्तिनाळ्–देवी बोलीं। ३९१७

नयज्ञ हनुमान ने यह प्रश्न किया कि अपार हर्ष के आधिक्य के कारण योग्य उत्तर नहीं सूझता ! इसलिए वे चुप हैं ? या दूत का वचन झूठा हो —इस संशय के कारण देवी अवाक् हैं ? देवी ने उत्तर में (यों) कहा। ३९१७

मेक्कु नीङ्गिय वॆळ्ळ वुवहैयाल्, एक्क मुऱ्ऱोन् ऱियम्बुव दियादॆन
नोक्कि नोक्कि यरिदॆन नीन्दुळेन्, पाक्कि यम्बॆरुम् बित्तुम् बयक्कुमो 3918

मेक्कु नीङ्किय–जिसके ऊपर कुछ नहीं; वॆळ्ळ उवकैयाल्–बाढ़ के मोद से; एक्कम् उऱ्ऱु–स्तब्ध होकर; इयम्पुवतु–कहना; ऒन्ऱु यातु–कुछ क्या; ॲन–ऐसा; नोक्कि नोक्कि–विचार कर करके; अरितु–दुस्साध्य; ॲन–ऐसा; नीन्तुळेन्–चिंतित हूँ; पाक्कियम्–सौभाग्य; पॆरुम् पित्तुम्–बड़ा पागलपन; पयक्कुमो–दिला देगा क्या। ३९१८

ऐसा अपार आनंद हो गया जिससे अधिक कुछ नहीं हो सकता। इसलिए स्तब्ध होकर योग्य उत्तर न सूझने के कारण मैं अवाक् रह गयी। चिंतित हो गयी। भाग्य भी पागलपन दिला सकता है क्या ? । ३९१८

मुऩ्ऩै नीक्कुवॆऩ् सॉय्शिऱै यॆऩ्ऱऩी, पिऩ्ऩै नीक्कि युवहैयुम् बेशिऩै
ॲऩ्ऩ पेऱिऩै यीहुव दॆऩ्वद, उऩ्ऩि नोक्कि युरैमऱन् दोविऩेऩ् 3919

मुऩ्ऩै–पहले; सॉय्चिऱै–कठोर कारावास; नीक्कुवॆऩ्–दूर करूँगा; ॲऩ्ऱऩी–ऐसा जो कहा तुम; पिऩ्ऩै नीक्कि–बाद उससे छुड़ाकर; उवकैयुम्–आनंद; पेचिऩै–(समाचार) बोले; ॲऩ्ऩ पेऱिऩै–क्या ही भाग्य; ईकुवतु–तुम्हें दूँ; ॲऩ्पतै–यह; उऩ्ऩि नोक्कि–सोच-विचार करती; उरै मऱन्तु–कहना भूलकर; ओविऩेऩ्–बोलने से रही। ३९१९

तुम पहले कह गये थे कि कारा से छुड़ाऊँगा। फिर तुमने वही कर दिया है। आकर संतोष वृत्तांत भी कहा है। ऐसे तुम्हें प्रत्युपकार में क्या भाग्य दूँ ? इसी विचार में उलझी रही और बोलना भूल गयी। ३९१९

उलह मूऩ्ऱु मुदवऱ् कॊरुतऩि, विलैयि लामैयु मुऩ्ऩिऩॆऩ् मेलव
निलैयि लामै निऩैन्दऩॆऩ् ऩिऩ्ऩैयॆऩ्, तलैयि ऩाऱ्ऱॊऴ वेतहुन् दऩ्मैयोय् 3920

तऩ्मैयोय्–सुयोग्य; मूऩ्ऱु उलकम्–तीनों लोक; उतवऱ्कु–देने में; ॲॊरु तऩि–कुछ भी; विलैयिलामैयुम्–बराबर मूल्य का नहीं; मुऩ्ऩिऩॆऩ्–वह विचार किया; मेल्–और भी; अवै–वे; निलैयिलामै–स्थायी नहीं; निऩैन्तऩॆऩ्–यह भी सोचा; निऩ्ऩै–तुम्हें; ॲऩ् तलैयिऩाल्–अपने सिर से; तॊऴवे–नमन करूँ; तकुम्–यही उचित होगा। ३९२०

सुयोग्य ! तीनों लोकों को देने की बात भी सोचूँ तो वे क्या बराबर के मूल्य के हो सकेंगे ? और भी वे अस्थायी हैं। यही सोचती रह गयी। सिर झुकाकर प्रणाम करूँ —यही उचित है। ३९२०

आद लाऩॊऩ् ऱुदवुद लाऱ्ऱलेऩ्, यादु शॅय्वदॆऩ् ऱॆण्णि यिरुन्दऩॆऩ्
बेद नन्मणि वेहडञ् जॆय्दऩ्ऩ, तूद वॆऩ्ऩिऩिच् चॅय्तिऱऩ् जॊल्लॆऩ्ऱाऴ् 3921

आतलाल्–इसलिए; ऒऩ्ऱु–कुछ; उतवुतल्–देने में; आऱ्ऱलेऩ्–अशक्त हूँ; यातु चॅय्वतु–क्या करूँ; ॲऩ्ऱु–ऐसा; ॲण्णि–सोचकर; इरुन्तऩॆऩ्–चुप रह गयी; वेतम्–छेदयुक्त; नल् मणि–अच्छे रत्न को; वेकटम्–तराशना; चॅय्तऩ्ऩ–किया गया जैसे; तूत–हे दूत; इऩि–अब; चॅय् तिऱम्–करने का प्रकार; ॲऩ् चॊल्–क्या है कहो; ॲऩ्ऱाऴ्–कहा, देवी ने। ३९२१

'इसलिए कुछ प्रत्युपकार करने में असमर्थ हूँ। मैं क्या करूँ ?' इसी पसोपेश में स्तब्ध रह गयी। छेदयुक्त और तराशी हुई मणि के

समान सुसंस्कृत तथा सुंदर कार्य करनेवाले दूत ! अब क्या कार्य करना है ? तुम्हीं बताओ। —सीताजी ने ऐसा कहा। ३९२१

अँतक्क ळिक्कुम् वरमॅम् बिराट्टिनिन्
मतक्क ळिक्कुमर् रुन्नैयम् मातवत्
तनक्क ळिक्कुम् बणियितुन् दक्ककदो
पुतक्क ळिक्कुल मामयिल् पोन्रुळाय् 3922

अँम् पिराट्टि–मेरी आराध्या; पुतम् कळि कुलम्–आकाश में मोद के साथ घूमनेवाले; मा मयिल्–श्रेष्ठ कलापी; पोन्रुळाय्–समाना; अँतक्कु–मुझे; अळिक्कुम् वरम्–देने योग्य वर; निन्–आपके; मतम्–मन के; कळिक्कु–आनंद के लिए; उन्नै–आपको; अम् मातवन्–उन मनुकुलश्रेष्ठ; ततक्कु–श्रीराम के पास; अळिक्कुम्–दिला देने के; पणियितुम् तक्कतो–कार्य से अधिक योग्य कुछ है क्या। ३९२२

भगवती ! आकाशचारी मत्त कलापी-सी देवी ! आप मुझे यही वर दें कि मैं आपको उन मनुकुलश्रेष्ठ के पास ले जाकर पहुँचा दूँ। उस संदर्भ से अधिक योग्य क्या होगा ? । ३९२२

अँतवु रैत्तुत् तिरिशडै याळॅम्मोय्
मतवि तिर्चुडर् मामुह माट्चियाळ्
तनैयो ळित्तिव् वरक्कियर् तङ्गळै
वित्तैयि तिर्चुड वेण्डुवॅन् यानॅन्रात् 3923

अँत उरैत्तु–ऐसा कहकर; अँम्मोय्–मेरी माता; मतविनिल्–रत्न के समान; यान्–मैं; चुटर्–कांतिमय; मा मुकम्–मुख की; माटचियाळ्–प्रफुल्लता वाली; तिरिचटैयाळ्–त्रिजटा; तनै ऑळित्तु–को छोड़कर; इव् अरक्कियर् तङ्कळै–इन राक्षसियों को; वित्तैयितिल्–बुरी तरह से; चुट वेण्डुवॅन्–जलाना चाहूँगा; अँन्रान्–कहा (हनुमान ने)। ३९२३

हनुमान ने ऐसा कहकर आगे कहा कि मेरी माता ! रत्न-सम छविमय प्रफुल्ल मुखवाली श्रेष्ठ त्रिजटा को छोड़कर अन्य इन राक्षसियों को बुरी तरह से जला देना चाहता हूँ। ३९२३

उरैय लावुरै युन्नै युरैत्तुराय्, विरैय वोडि विळुङ्गुव मॅन्रुळार्
वरैशॅय् मेनियै वळ्ळुहि रार्पिळन्, दिरैशॅय् वेन्मर लिक्किनि यॅन्नुमाल् 3924

उरै अला उरै–अकथ्य शब्द; उरैत्तु–कहकर; विरैय ओटि–सवेग दौड़कर; उराय्–ऊपर गिरकर; उन्नै विळुङ्कुवोम्–तुम्हें निगल लेंगी; अँन्रु उळार्–यह कह चुकी थीं; वरै चॅय्–पर्वतोपम स्थूल; मेनियै–शरीर को; इनि वळ्–अब तेज; उकिराल् पिळन्तु–नख से चीरकर; मरलिक्कु–यम का; इरै चॅय्वेन्–भोजन बना दूँगा; अँन्नुम्–यह कहा। ३९२४

उन्होंने न कहने योग्य वचन कहे थे। जल्दी दौड़कर आपके ऊपर गिरी थीं और धमकी दी थीं कि 'तुझे निगल लेंगी'। ऐसे उनके पर्वतोपम शरीर को अपने तेज नाखून से चीरना चाहूँगा; और यम को भोज दिलाना चाहूंगा। ३९२४

कुडल्कु ड़ैत्तुक् कुरुदि कुडित्तिवर्, उडलमु रुक्कियिट् टुण्गुवॅ नॆन्ऱलुम्
अडल रक्किय रन्नैनित् पादमे, विडल मॆय्च्चर णॆन्ऱु वॆरुवलुम् 3925

इवर्–इनकी; कुटल् कुरैत्तु–आँतें नोच लेकर; कुरुति कुटित्तु–रक्त पीकर; उटल्–शरीर को; मुरुक्कि इट्टु–ऐंठकर छिन्न कर; उण्कुवॆन्–खा लूंगा; ऍन्ऱलुम्–कहते ही; अटल् अरक्कियर्–सशक्त राक्षसियाँ; अन्नै–माताजी; नित् पातमे–तुम्हारे चरणों में ही; मॆय् चरण्–हमारा सच्चा आश्रय है; विटलम्–नहीं छोड़ेंगी; ऍन्ऱु–ऐसा; वॆरुवलुम्–डरते ही। ३९२५

इनकी आँतें निकाल दूँ; रक्त पी लूं; शरीर ऐंठकर छिन्न-भिन्न करा दूं और खा जाऊँ। जब हनुमान ने इस भाँति अपनी इच्छा प्रकट की तो तगड़ी राक्षसियाँ यह कहते हुए सीता की शरण में गयीं कि हे अंब! आपके चरण ही हमारे लिए सच्चा आश्रय हैं। हम उन्हें न छोड़ेंगी। वे भयातुर थीं। ३९२५

अन्नै यञ्जन्मि नञ्जन्मिन् नीरेन्नो, मन्नु मारुदि मामुह नोक्किवे
ऱॆन्न तीमै यिवरिऴैत् तारवन्, शॊन्न शॊल्लिन वल्लदु तूय्मैयोय् 3926

अन्नै–जगज्जननी; नीर्–तुम लोग; अञ्चन्मिन्–मत डरो; अञ्चन्मिन्–मत डरो; मन्नुम् मारुति–चिरंजीव मारुति का; मामुकम् नोक्कि–बड़ा मुख देखकर; तूय्मैयोय्–पवित्र पुरुष; इवर्–इन्होंने; अवन् चॊन्न–उसकी कही; चॊल्लिन–आज्ञा; अल्लतु–के सिवा; वेऱु–और; ऍन्न–कौन; तीमै इऴैत्तार्–बुराई की। ३९२६

जगज्जननी ने उन्हें यह कहकर आश्वस्त किया कि डरो मत! तुम लोग डरो नहीं। फिर चिरंजीव मारुति के बड़े मुख पर दृष्टि डालकर कहा कि पवित्र पुरुष! इन लोगों ने रावण की आज्ञा के अनुसार काम करने के सिवा कौन सी अन्य बुराई की थी? । ३९२६

यानि ऴैत्त विनैयिनि निव्विडर्, तान डुत्तदु तायिनु मन्बिनोय्
कूनि यिऱ्कॊडि यारल रेयिवर्, पोन वप्पॊरुळ् पोऱ्ऱले पुन्दियोय् 3927

तायिनुम्–माता से भी; अन्पिनोय्–प्रेम करनेवाले; यान्–मैंने; इऴैत्त–जो किया; विनैयिनिन्–उस बुरे कर्म से; इव् इटर्–यह संकट; अटुत्ततु–आया; इवर्–ये; कूनियिन्–कुब्जा से; कॊटियार् अलर्–क्रूर नहीं; पुन्तियोय्–बुद्धिमान; पोन–जो बीत गया; अ पॊरुळ्–वह कार्य; पोऱ्ऱलै–मानो मत। ३९२७

माता से भी अधिक प्रेम कर सकनेवाले! यह संकट मेरे कुकर्म के

फलस्वरूप आया था। ये बेचारी राक्षसियाँ कुब्जा (मंथरा)-सी क्रूर नहीं! हे बुद्धिमान! बीती बातों की परवाह मत करो। ३९२७

ऍन्नक्कु नोयरु ळिव्वरन् दीविन्ने, तन्नक्कु वाळ्विड माय शळक्कियर्
मन्नक्कु नोय्शॅय लॅन्रन्नळ् मामदि, तन्नक्कु मामरुत् तन्द मुहत्तिनाळ् 3928

ती विन्ने–बुराई; तन्नक्कु–के लिए; वाळ्विडम् आय–आगार जो है; नी मन्नक्कु–मन को; नोय् चॅयल्–दुःख मत दो; ॲन्रन्नळ्– चळक्कियर्–इन राक्षसियों के; अरुळ्–देने की कृपा करो; ऍन्नक्कु–तुम मुझे; इव् वरम्–यह वर; मामरु–बड़ा कलंक; तन्त मुकत्तिनाळ्–कहा; मामति तन्नक्कु–श्रेष्ठ चन्द्र को; जिसने दिया वैसे मुख वाली ने। ३९२८

पापागार इन राक्षसियों का मन मत दुखाओ। मुझे यह वर दो! ऐसा कहा मान्य चंद्र को भी (कम सौंदर्य का) कलंक जिन्होंने दिलाया था उन सुंदर मुखवाली ने!। ३९२८

ऍन्रु पोदि लिरैञ्जित्त नॅम्बिरान्, तन्रु णॅप्पॅरुन् दॅवि तयावॅन्ना
निन्र काले नॅडियवन् वीडण, ऍन्रु तानम तेवियैच् चीरॊडुम् 3929

ऍन्रु पोतिल्–कहने पर; ऍम्पिरान् तन्–मेरे नाथ की; तुणै पॅरु–संगिनी बड़ी; तेवि–देवी की; तया–दया; ऍन्ना–कहकर; इरैञ्चित्तन्–विनय करके; निन्र काले–जब खड़ा रहा, तब; नॅटियवन्–त्रिविक्रम ने; वीटण–विभीषण; ऍन्रु–आकर; नम् तेवियै–मेरी देवी को; चीरॊटुम् ता–शृंगार के साथ लाओ। ३९२९

जब उन्होंने ऐसा कहा तब मारुति ने कहा कि मेरे भगवान श्रीराम की संगिनी आदरणीय देवी की दया (जैसी हो यही हो)। जब यह कह कर हनुमान विनय के साथ इधर खड़ा रहा, तब उधर त्रिविक्रम के अवतार श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण! जाओ हमारी देवी को शृंगार करके लिवा लाओ। ३९२९

ऍन्नुङ् गाले यिरुळुम् वॅयिलुङ्गार्, मिन्नुङ् गाले यियर्कैय वीडणन्
उन्नुङ् गालेक् कॊणर्दियॅन् ऱोदुमप्, पॊन्निन् काड्ऱळिर् चूडिनन् पोन्दुळान् 3930

ऍन्नुम् काले–जब कहा तब; इरुळुम् वॅयिलुम्–अंधकार और धूप; कार् मिन्नुम्–मेघ में बिजली; काल्–निकालनेवाले; ऐ इयर्कैय–सुन्दर स्वभाव वाले; वीटणन्–विभीषण ने; पोन्तुळान्–आकर; उन्नुम् काले–सोचने की देर में; कॊणर्ति–लाओ; ऍन्रु–ऐसा; ओतुम्–जिसके सम्बन्ध में कहा गया; अ पॊन्निन्–उन लक्ष्मी के; काल् तळिर्–चरणपल्लव को; चूटिनन्–अपने सिर पर लगा लिया। ३९३०

उनके यों कहने पर अंधकार, धूप और मेघमध्य बिजली (क्रमशः शरीर, आभरणों और किरीट से) निकालनेवाले आकार-सौंदर्य का विभीषण अशोक वन में गया; और जिनके संबंध में श्रीराम ने कहा था उन

श्रीलक्ष्मी के चरणपल्लवों पर गिरकर उन्हें अपने सिर पर धारण कर लिया (दंडवत् की)। ३९३०

वेण्डिऱ्ऱु मुडिन्द दऩ्ऱे वेदियर् वेद नित्तैक्
काण्डऱ्कु विरुम्बु हिऩ्ऱा तुम्बरुङ् गाण निऩ्ऱार्
पूण्डहक् कोलम् वल्लै पुत्तैन्दले वरुत्तम् बोक्कि
ईण्डुक् कोण् डणैदि यॆऩ्ऱा ऩॆऴुन्दरु ळिऱैवियॆऩ्ऱाऩ् 3931

इऱैवि–भगवती; वेण्टिऱ्ऱु–चाही हुई (जीत); मुटिन्ततु–मिल गयी; वेतियर् वेतऩ्–वेदवेद्य; नित्तैक् काण्टऱ्कु–आपसे मिलना; विरुम्पुकिऩ्ऱाऩ्–चाहते हैं; उम्परुम्–देव भी; काण निऩ्ऱार्–दर्शनार्थ खड़े हैं; ईण्टु–यहाँ; कॊण्टु अणैति–ले आओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा है; वरुत्तम् पोक्कि–दुःख छोड़कर; वल्लै–शीघ्र; पूण्टक कोलम्–आभरणों से युक्त श्रृंगार; पुत्तैन्तत्तै–करा लें; ऎऴुन्तरुळ्–पधारें; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (विभीषण ने)। ३९३१

विभीषण ने निवेदन किया। भगवती! मनोकामना पूरी हो गयी। वेदवेद्य श्रीराम आपसे मिलना चाहते हैं। देवगण भी आपके दर्शन की चाह लेकर खड़े हैं। श्रीराम ने आज्ञा दी है कि उन्हें लिवा ले आओ। आप दुःख दूर करके शीघ्र श्रृंगार कर लें और पधारें। ३९३१

याऩिव णिरुन्द वण्णम् यिमैयवर् कुऴुवु मॆङ्गळ्
कोऩुमम् मुऩिवर् तङ्गळ् कूट्टमुङ् गुलत्तुक् केऱ्ऱ
वाऩुयर् कऱ्पिऩ् माद रीट्टमुङ् गाण्डल् माट्चि
मेऩिऩै कोलङ् गोडल् विऴुमिय दऩ्ऱु वीर 3932

वीर–वीर; याऩ्–मैं; इवण्–इधर; इरुन्त वण्णम्–जैसी रही उसी प्रकार; इमैयवर् कुऴुवुम्–देवगण और; ऎङ्कळ् कोऩुम्–हमारे राजा; अ मुऩिवर् तङ्कळ्–उन मुनियों के; कूट्टमुम्–समूह; कुलत्तुक्कु एऱ्ऱ–कुल के योग्य; कऱ्पिऩ्–पातिव्रत्यशीला; मातर्–स्त्रियों की; ईट्टमुम्–जमात; काण्टल–देखें यही; माट्चि–गौरव है; मेल्–फिर; निऩै कोलम्–तुम जैसे सोचते वैसा श्रृंगार; कोटल्–करना; विऴुमियतु अऩ्ऱु–श्लाघ्य नहीं। ३९३२

(देवी ने कहा—) हे वीर! मैं जैसे रहती हूँ उसी स्थिति में सुर लोग, हमारे ईश्वर, मुनिवृन्द और कुलोचित पातिवृत्य-शीला नारियाँ देखें —यही गौरव-दायी है! इतना होने के बाद जैसे तुम सोचते हो, वैसा श्रृंगार कर लेना श्लाघ्य नहीं। ३९३२

ऎऩ्ऱत ळिऱैवि केट्ट विराक्कदऱ्कु किऱैव ऩीलक्
कुऩ्ऱत तोळि ऩाऩ्ऱऩ् पणियिऩिऱ् कुऱिप्पि ऩॆऩ्ऱाऩ्
नऩ्ऱॆऩ नङ्गै नेर्न्दाळ् नायहक् कोलङ् गॊळ्ळच्
चॆऩ्ऱतर् वाऩ नाट्टुत् तिलोत्तमै मुदलोर् शेर 3933

अऩ्ऱुरैत्ताळ्–कहा; इऱैवि–भगवती ने; केट्ट–सुनकर; इराक्कतर्क्कु–राक्षसों के; इऱैवऩ्–राजा ने; नीलम् कुऩ्ऱु–नील-पर्वत; अऩ–के समान; तोळिऩाऩ् तऩ्–कन्धोंवाले की; पणियिऩिल्–आज्ञा का; कुऱिप्पु इतु–संकेत यही; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा; नङ्कै–देवी ने; नऩ्ऱु–अच्छा; ॲऩ–ऐसा कहकर; नेर्न्ताळ्–सम्मति दिलायी; नायकम्–अतिश्रेष्ठ; कोलम् कोळ्ळ–शृंगार कर लें, इस वास्ते; वाऩ नाट्टु–व्योमलोक की; तिलोत्तमै मुतलोर्–तिलोत्तमा आदि; चेर वॆन्तुऱ्ऱार्–मिलकर आयीं। ३९३३

देवी के ऐसा कहने पर राक्षसाधिपति ने निवेदन किया कि नील-पर्वतोपम कंधों वाले श्रीराम की आज्ञा का संकेत यही है! तब देवी 'ठीक है' कहकर सम्मत हुई। उन्हें उत्कृष्ट रीति से शृंगार किया जाय, इस वास्ते व्योमलोक की तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ एक साथ मिलकर आयीं। ३९३३

मेऩहै यरम्बै मऱ्ऱु युरुप्पशि वेऱु मुळ्ळ
वाऩह नाट्टु मादर् यारुमऩ् जऩत्तुक् केऱ्ऱ
नाऩॆय् यूट्टप् पट्ट नवैयिलाक् कलवै ताङ्गिप्
पोऩहऩ् दुऱन्द तैयल् मरुङ्गुऱ नॆरुङ्गिप् पुक्कार् 3934

मेऩकै–मेनका; अरम्पै–रंभा; मऱ्ऱु उरुप्पचि–और उर्वशी; वेऱुम् उळ्ळ–अन्य जो थीं; वाऩकम् नाट्टु–व्योमलोक की; मातर् यारुम्–सभी स्त्रियाँ; मञ्चऩत्तुक्कु एऱ्ऱ–स्नान योग्य; नाऩम् नॆय्–कस्तूरी का; ऊट्टप्पट्ट–मिलाया गया; नवै इला–अनिंद्य; कलवै ताङ्कि–लेप धरकर; पोऩकम् तुऱन्त–आहार जो नहीं करती थीं; तैयल्–उन देवी के; मरुङ्कु उऱ–पास; नॆरुङ्कि पुक्कार्–सटकर आयीं। ३९३४

मेनका, रंभा, उर्वशी और अन्य व्योमवासिनियाँ स्नान योग्य कस्तूरी आदि का अनिंद्य लेप आदि लेकर उन देवी के पास आयीं जो कि दस महीनों से आहार त्याग कर रही थीं। ३९३४

काणियैप् पॆण्मैक् कॆल्लाङ् गऱ्पिऩुक् कणियैप् पॊऱ्पिऩ्
आणियै यमिऴ्दिऩ् वन्द वमिऴ्दिऩै यऱत्तिऩ् तायैच्
चेणुयर् मऱैयै यॆल्ला मुऱैशॆय्द शॆल्व ऩॆऩ्ऩ
वेणियै यरम्बै मॆल्ल वरऩ्मुऱै शुहिर्त्तु विट्टाळ् 3935

पॆण्मैक्कु ॲल्लाम्–सभी स्त्री के लक्षणों की; काणियै–जनक-भूमि को; कऱ्पिऩुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–शृंगार को; पॊऱ्पिऩ् आणियै–सौंदर्य की कसौटी को; अमिऴ्तिऩ् वन्त–अमृत के साथ आयी; अमिऴ्तिऩै–अमृत को; अऱत्तिऩ् तायै–धर्म की माता को; वेणियै–(उनके) केश को; चेण् उयर् मऱैयै–बहुत उत्कृष्ट वेदों; ॲल्लाम्–सभी के; मुऱै चॆय्त–व्यवस्थाकारी; चॆल्वऩ् ॲऩ्ऩ–धनी श्रीविष्णु के समान; अरम्पै–रम्भा ने; मॆल्ल–धीरे से; वरऩ् मुऱै–यथाक्रम; चुकिर्त्तु विट्टाळ्–सँवार दिया। ३९३५

रंभा ने पहले उन स्त्रियों के लक्षणों की जनक-भूमि, पातिवृत्य के श्रृंगार, अमृत के साथ निकले अमृत, और धर्म की जननी सीता का केश सँवारा, उसी प्रकार जिस प्रकार श्रीविष्णु ने सारे वेदों को क्रमबद्ध किया था। ३९३५

पाहडर्न् दमुदु पिल्हुम् बवळवाय्त् तरळप् पत्ति
शेहड़ विळक्कि नात्तन् दीट्टिमण् शेर्न्द काशै
वेहडम् जॅय्यु मापोल् मज्जन्न विदियिन् वेदत्
तोहैमङ् गलङ्गळ् पाड वाट्टिन्न रुम्बर् मादर् 3936

उम्पर् मातर्–देवललनाओं ने; पाकु अटर्न्तु–मधुरता से भरकर; अमुतु पिल्कुम्–अमृतमय वाणी कहनेवाले; पवळम्–प्रवाल-सम; वाय्–मुखों के; तरळम् पत्ति–मुक्ता-सम दंतावली को; चेक्कु अऱ–मैल छुड़ाते हुए; विळक्कि–माँजकर; नातम्–सुवासित तेल; तीट्टि–(सिर पर) मलकर; मण् चेर्न्त–मैले; कासै–रत्न को; वेकटम् चॅय्युमापोल्–तराशा जाय जैसे; वेतत्तु–वेदविहित प्रकार से; मज्चनम् वितियिन्–स्नान-सन्ध्या विधिवत; ओकै–आनंद के साथ; मङ्कलङ्कळ् पाट–मंगलगीतों को गाते हुए; आट्टिनर्–स्नान कराया। ३९३६

देवललनाओं ने अमृतभाषी प्रवालाधरों के मुख की मुक्ता-सम दंत-पंक्ति को मैल दूर करते हुए माँज दिया। फिर सुगंधित तेल को सिर पर मलकर मैले रत्न को तराशा जाता हो ऐसा वेदोक्त रीति से मज्जन कराया। तब मगल-गीत गाये जा रहे थे। ३९३६

उरुविळै पवळ वल्लि पालुरै युण्ड वॆन्न
मरुविळै कलवै यूट्टिक् कुङ्गुम मुलैयिन् माट्टिक्
करुविलै मलरिन् काट्चिक् काशरु तूशु कामन्
तिरुविळै यल्हुर् केऱ्प मेहलै तळुवच् चॅय्दार् 3937

उरुविळै–बहुत सुन्दर; पवळ वल्लि–प्रवाल-लता; पाल् नुरै–दुग्धफेन से; उण्टतु ऍन्न–ढका हो जैसे; मरुविळै–सुगंधित; कलवै ऊट्टि–चोवा मलकर; कुङ्कुमम्–कुंकुम-लेप को; मुलैयिन् माट्टि–स्तनों पर चर्चित कर; करुविळै मलरिन्–नीलोत्पल-सम; काट्चि–दृश्यमान; कासु अऱु–निर्दोष; तूसु–रेशमी वस्त्र; कामन् तिरुविळै–मन्मथ-भोगश्री से; अल्कुऱ्कु–युक्त भग-प्रदेश के; एऱ्प–योग्य; मेकलै–मेखला को; तऴुव चॅय्तार्–युक्त रीति से पहनाया। ३९३७

उन्होंने देवी के श्रीशरीर पर चंदन-चर्चा की तब वे दुग्धफेन से आच्छादित प्रवाल-लता के समान लगीं। स्तनों पर कुंकुम लेप लगाया। नीलोत्पल-सम पवित्र वस्त्र पहनाया तथा काम-भोग-योग्य वरांग को अलंकृत करते हुए मेखला पहनायी। ३९३७

चन्दिरन् तेवि सारिड़् ड्रुहैयुरु तरळप् पैम्बूण्
इन्दिरै तेविक् केऱ्प वियॆवन्न पूट्टि याणर्च्

चिन्दुरप् पवळच् चॅव्वायत् तेम्बशुम् बाहु तीऱ्ऱि
मन्दिरत् तयिऱ्ऱि नीराल् वलञ्जॅय्दु काप्पु मिट्टार् 3938

इन्तिरै तेविक्कु–देवी इंदिरा (सीता) के; एऱ्ऱ–योग्य; इयैंवत्त–युक्त; चन्तिरन्–चन्द्र की; तेविमारिल्–पत्नियों के समान; तकै उरु–सुन्दर; तरळम्–मोती के और; पैम् पूण्–चोखे स्वर्ण के आभरण; पूट्टि–पहनाकर; याणर्–ताज़े; चिन्तुरम्–सिंदूर के समान; पवळम्–प्रवाल-सम; चॅव्वाय्–लाल अधरों पर; तेम्–मधुर; पचुम्–नवीन; पाकु–तांबूलरस; तीऱ्ऱि–लगाकर; मन्तिरत्तु–मंत्रोच्चारण के साथ; अयिऱ्ऱि नीराल्–अन्नमिश्रित जल को; वलम् चॅय्तु–दायीं ओर से घुमाकर; काप्पुम् इट्टार्–रक्षा-बन्धन किया। ३६३८

श्रीदेवी सीता के योग्य, चंद्रपत्नी नक्षत्रिकाओं के समान मुक्ताओं की तथा स्वर्णनिर्मित आभरण पहनाये। नये, सिंदूर तथा प्रवाल-सम अधरों पर मधुर तथा नवीन 'तांबूल सार' लगाया। फिर मंत्रोच्चारण के साथ अन्नमिश्रित जल की थाली घुमायी और उसी जल से भाल पर 'दृष्टिदोष' से रक्षित करने के लिए बिंदी लगायी। ३९३८

मण्डल मदियि नाप्पण् मानिरुन् दॅन्न मानम्
कौण्डन रेऱ्ऱि वान मडन्दैयर् तौडर्न्दु कूड
मण्डिवा नररु मोड वरक्करुम् बुरञ्जूळ्न् दोड
अण्डर्ना यहन्पा लण्णल् वीडण नरुळिर् चॅन्ऱान् 3939

मतियिन्–चन्द्र; मण्टलम् नाप्पण्–मंडलमध्य; मान् इरुन्तॅन्न–हरिण रहता जैसे; मानम्–यान पर; कौण्टनर् एऱ्ऱि–ले रखकर; वानम् मटन्तैयर्–देव-ललनाएँ; तौटर्न्तु कूट–साथ गयीं; वानररुम्–वानर भी; मण्टि ओट–एकत्र, साथ आये; अरक्करुम्–राक्षस भी; पुरम्–बाजू में; चूळ्न्तु ओट–घेरकर दौड़े आये; अण्टर्–देवों के; नायकन् पाल्–नायक के पास; अण्णल् वीटणन्–महिमावान विभीषण; अरुळिल् चॅन्ऱान्–श्रीरामाज्ञा के अनुसार गया। ३६३६

चंद्रमंडल के मध्य जैसे हरिण रहता हो वैसे उन्होंने सीताजी को यान पर चढ़ाया। देवस्त्रियाँ साथ रहीं। विभीषण उन्हें अंडनायक श्रीराम के पास उनकी आज्ञा के अनुसार ले चलने लगा। तब वानर वीर पास रहते गये और राक्षस लोग चारों ओर भीड़ लगाकर तेज चलने लगे। ३९३९

इप्पुऱत् तिमैयवर् मुनिव रेळैयर्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय् विञ्जैत् तोहैयर्
मुप्पुऱत् तुलहिनु मॅण्णिन् मुऱ्ऱिनोर्
ऑप्पुऱक् कुविन्दन रोहै कूऱुवार् 3940

इ पुऱत्तु–इधर; इमैयवर्–देव; मुनिवर्–ऋषि; एळैयर्–पत्नियाँ; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवन्त–लाल; वाय्–अधरों वाली; विञ्चै तोकैयर्–विद्याधारियाँ;

मु पुऱत्तु–त्रिविध; उलकित्तुम्–लोकों के; अॆण्णिल्–गिनती में; मुऱ्‌ऱिऴैयोर्–बढ़ी (स्त्रियाँ); ओकै कूऱुवार्–संतोष-समाचार कहते हुए; ऒप्पुऱ्–एक साथ; कुविन्ततर्–आकर भीड़ में मिले। ३९४०

इधर देव, ऋषि, उनकी पत्नियाँ, प्रवाल-सम अधर वाली विद्याधर-वनिताएँ और त्रिलोकवासिनी असंख्यक रमणियाँ आपस में संतोष समाचार कहते हुए एक साथ आकर जुटीं। ३९४०

अरुङ्गुलक् कऱ्‌पित्तुक् कणियै यण्मित्तार्
मरुङ्गुपिन् मुन्शॆल वऴियिन् ऱॆन्‌त्तलाय्
नॆरुङ्गित्तर् नॆरुङ्गुऴि निरुद रोच्चलाल्
करुङ्गडन् मुऴक्कॆत्तप् पिऱन्द कम्बलै 3941

अरु कुलम्–श्रेष्ठकुल-जाता; कऱ्‌पित्तुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–शृंगार को; अण्मित्तार्–पास आकर; मरुङ्कु–पास में; पिन् मुन्–पीछे और आगे; चॆल–हटने; वऴि इत्तु–मार्ग नहीं; ऎन्‌त्तलाय्–ऐसी रीति से; नॆरुङ्कित्तर्–सटे; नॆरुङ्कु उऴि–सटते समय; निरुतर् ओच्चलाल्–राक्षसों के बेत्र उठाकर भगाने से; करु कटल्–काले सागर के; मुऴक्कु ऎन–गर्जन के समान; कम्पलै पिऱन्त–हो-हल्ला मचा। ३९४१

इस भाँति सभी लोग पातिव्रत्य के शृंगार, कुलीना सीताजी को चारों ओर से पास से घेरकर आगे, पीछे, पार्श्वों में सर्वत्र जाने लगे और इधर-उधर हटने के लिए स्थान नहीं रहा। तब भीड़ को रोकने के लिए राक्षसों ने छड़ी घुमायी तो काले सागर के गर्जन के समान बड़ा हल्ला मच गया। ३९४१

अव्वऴि यिरामनु मलर्न्द तामरैच्
चॆव्विवाण् मुहङ्गॊडु शॆयिर्त्तु नोक्कुऱा
इव्वॊलि यावदॆन् ऱियम्ब विऱ्‌ऱॆन्‌ताक्
कव्वॆयिन् मुनिवरर् कऴऱि नाररो 3942

अव्वऴि–तब; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; अलर्न्त–प्रफुल्लित; तामरै–कमल-सम; चॆव्वि–अच्छे; वाळ् मुकम् कॊटु–प्रकाशमय मुख पर; चॆयिर्त्तु–क्रोध का भाव लाकर; नोक्कुऱा–देखकर; इव् ऒलि–यह शोर; यावतु–क्या; ऎन्‌ऱु इयम्प–ऐसा पूछा; कव्वॆयिन्–उच्च स्वर में; मुनिवरर्–मुनिवरों ने; इऱ्‌ऱु ऎन्ता–यही है; कऴऱित्तार्–ऐसी बात बतायी। ३९४२

तब श्रीराम का अरुण कमल के समान सुन्दर श्रीमुख पर कोप का भाव जग गया। कोप के साथ देखकर श्रीराम ने पूछा कि यह शोर काहे का? तब उच्च आवाज़ में मुनिवरों ने 'उसका कारण अमुक है' बताया। ३९४२

मुनिवरर् वाशहङ् गेट्पु ङ्रादमुन्
ननियिदळ् तुडित्तिड नहैत्तु वीडणन्
तनैयॆळ नोक्किनी तहाद शॆय्दियो
पुनिदनूल् करुणर् पुन्दि योयॆन्ङ्रान् 3943

मुनिवार्–मुनिवरों के; वाचकम्–वचनों को; केट्पुङ्रात मुन्–सुनने के पूर्व ही; इतळ्–अधरों के; नति–खूब; तुटित्तिट–फड़कते; नकैत्तु–हँसकर; वीटणन् तनै–विभीषण को; ॲळ नोक्कि–मुख उठा देख; पुनित नूल्–पवित्र ग्रंथ; करुङ्ग उणर्–पढ़कर ज्ञानमय; पुन्तियोय्–बुद्धिवाले; नी–तुम; तकात–अनुचित कार्य; चॆय्तियो–करो क्या; ॲन्ङ्रान्–पूछा। ३९४३

मुनिवरों का उत्तर सुनते ही श्रीरामजी क्रोध की हँसी हँसे, तब उनके सुंदर अधर खूब फड़के। विभीषण से पूछा कि हे पवित्र शास्त्रज्ञ बुद्धिमान! तुम भी अनुचित कार्य करोगे क्या? । ३९४३

कडुन्दिङ् लमर्क्कळङ् गाणु माशैयाल्
नॆडुन्दिशैत् तेवरु नितुङ् यावरुम्
अडैन्दन रुवहैयि नडैहित् ङार्हळैक्
कडिन्दिड यार्शॊनार् करुदु नूल्वलाय् 3944

करुतुम्–अन्वेषण योग्य; नूल् वलाय्–ग्रंथों में चतुर; कटु तिङल्–कठोर बल-प्रदर्शन के; अमर् कळम्–युद्धाजिर को; काणुम्–देखने की; आचैयाल्–इच्छा से; उवकैयित्–उत्साह के साथ; अटैकित्ङार्कळै–आनेवालों को; नॆटु तिचै–लम्बी दिशाओं में; तेवरुम्–रहनेवाले देवों को; नितुङ यावरुम्–अन्य स्थित लोगों को; कटिन्तिट–डाँटने को; चॊन्नार्–कहनेवाला; यार्–कौन था। ३९४४

अन्वेषण योग्य शास्त्रनिपुण हे विभीषण! बहुत क्रूरता के साथ जहाँ युद्ध किया गया था उस युद्धभूमि को देखने की उत्कट इच्छा से, उत्साह ले जो आ रहे हैं, उन लंबी दिशाओं के देवों और अन्य लोगों को डाँट-डपटकर दूर करने की आज्ञा किसने दी? । ३९४४

परशुडैक् कडवुळ् नेमिप् पण्णवन् पदुमत् तण्णल्
अरशुडैत् तॆरिवै मारै यिन्ङ्रिये यमैव दुण्डो
करैशॆयर् करिय तेव रेतैयोर् कलन्दु काण्बान्
विरशुरित् विलक्कु वारो वेरुळार्क् कॊन्गोल् वीर 3945

वीर–वीर; परचु उटै–परशुधर; कटवुळ्–ईश्वर; नेमि–चक्रायुध; पण्णवन्–के धारक; पतुमत्तु अण्णल्–पद्मासन देव; अरचु उटै–ऐश्वर्यमयी; तॆरिवै मारै–अपनी-अपनी स्त्रियों के; इन्ङि–विना; अमैवतु–रहें; उण्टो–ऐसा होगा क्या; वेङळार्क्कॊन् कोल्–फिर अन्यों की बात क्या; करै चॆयर्कु–सीमा जानने में; अरिय–कठिन; तेवर्–देवता; एतैयोर्–और अन्य; कलन्तु–मिलकर; काण्पान्–देखने; विरचुरित्–पास आयें तो; विलक्कुवारो–हटायेंगे क्या। ३९४५

हे वीर ! परशुधर शिव, चक्रधर विष्णु और पद्मासन ब्रह्मा विना अपनी पत्नियों को साथ लिये रहते हैं क्या ? फिर अन्यों की बात क्या ? (स्त्रियाँ साथ आयेंगी ही !) अपार देव और अन्य मुनिगण आदि मिलकर देखने के लिए आयें तो उन्हें कोई हटायेगे क्या ? । ३९४५

आदला नरक्कर् कोवे यडुप्पदन् ऱुनक्कु मिन्ने
शादुहै मानुदर् तम्मैत् तडुप्पदन् ऱुरुळिच् चॅङ्गण्
वेदना यहनुऱा निऱ्प वॅय्दुयिर्त् तलक्क णॅय्दिक्
कोदिला मनत्तु मॅय्युङ् गुलैन्ददनन् कुणङ्गळ् तूयोन् 3946

आतलाल्–इसलिए; अरक्कर् कोवे–राक्षसराज; इन्ने–अभी; चातु कै–साधु-प्रकृति के; मानुतर् तम्मै–लोगों को; तटुप्पतु–रोकना; उनक्कु–तुम्हारे लिए; अदुप्पतु–उचित; अनृऱु–नहीं; ॲन्ऱु अरुळि–ऐसा कहकर; चॅम् कण्–अरुणाक्ष; वेत नायकनृ–वेदनायक के; निऱ्प–स्थित होते; कुणङ्कळ्–गुणों में; तूयोन्–पवित्र; अलक्कण्–दुःख; ॲय्ति–पाकर; वॅय्तुयिर्त्तु–निःश्वास छोड़कर; कोतिला–निर्दोष; मनत्तुम्–मन और; मॅय्युम्–शरीर से; कुलैन्ततन्–काँपने लगा। ३९४६

इसलिए हे राक्षसराज ! उन साधु-व्यवहार लोगों को रोकना तुम्हारे लिए उचित काम नहीं। अभी आने दो। —इस तरह अरुणाक्ष वेद-नायक श्रीराम ने कृपा से आज्ञा सुनायी। पवित्र गुणों वाला विभीषण दुःखी हुआ ! लम्बी साँसें छोड़ता हुआ काँपने लगा यद्यपि शरीर और मन से वह अनिंद्य था। ३९४६

अरुन्ददि यनैय नङ्गै यमरक्कळ मणुहि याडऱ्
परुन्दोड् कळुहुम् वेयुम् पशिप्पिणि तीरु माऱु
विरुन्दिडु विल्लिन् शॅल्वन् विळावणि विरुम्बि नोक्किक्
करुन्दडङ् गण्णु नॅञ्जुङ् गळित्तिड विन्नैय शोन्नाळ् 3947

अरुन्तति–अरुन्धती; अनैय–समाना; नङ्कै–देवी ने; अमर् कळम्–युद्धाजिर; अणुकि–के पास आ; आटल्–सशक्त; परुन्तोटु–बाजों के साथ; कळुकुम्–गीधों और; पेयुम्–भूतों के; पचि पिणि–भूख का रोग; तीरुमाऱु–निवारण हो ऐसा; विरुन्तिटु–दावत जिन्होंने दी; विल्लिन् चॅल्वन्–उन कोदंडपाणी के; अणि विळा–सुन्दर उत्सव को; विरुम्पि–चाह के साथ; नोक्कि–देखकर; करु–काली; तट–विशाल; कण्णुम्–आँखों और; नॅञ्चुम्–मन के; कळित्तिट–मुदित होते; इन्नैय–ये वचन; चॊन्नाळ्–कहे। ३९४७

अरुंधती-सी सीताजी युद्धभूमि के पास आयीं। बाजों, गीधों और भूतों की भूख मिटाते हुए जिन्होंने उन्हें अच्छी दावत का प्रबंध कराया था, उन कोदण्डपाणी के युद्धोत्सव-दृश्य का चाव के साथ संदर्शन किया। फिर

मन में आनंद के साथ, जो उनकी काली और बड़ी आँखों में भी प्रगट हो रहा था, उन्होंने ये (निम्नोक्त) बातें (आप ही आप) कहीं। ३९४७

शीलमुङ् गाट्टियॅन् कणवन् शेवहक्
कोलमुङ् गाट्टियॅन् कुलमुङ् गाट्टियिञ्
ञालमुङ् गाट्टिय कविक्कु नाळ्ऱाक्
कालमुङ् गाट्टुङ्गॉ लॅन्ऱन् कऱ्पॆन्ऱाळ् 3948

चीलमुम्—मेरी सुशीलता; नाट्टि—सावित करके; ऍन् कणवन्—मेरे पति के; चेवकम्—वीरता के; कोलमुम्—दृश्य को; काट्टि—दिखाकर; ऍन् कुलमुम्—मेरे कुल को; काट्टि—दिखाकर; इञ्ञालमुम्—इस लोक को भी; काट्टिय—जिसने दिखाया; कविक्कु—उस वानर को; ऍन् तन्—मेरा; कऱ्पु—पातिव्रत्य; नाळ् अऱा—निरंतर; कालमुम्—काल तक जीना; काट्टुम् कॉल्—दिखा देगा क्या। ३९४८

इस हनुमान ने मेरे शील को सावित किया। मेरे पति की वीरता के दृश्य को लोकों के जानने में सहायता की। मेरे कुल की महिमा को प्रगट कराया। इस संसार को भी स्थिति दिलायी। इस वानर को क्या मेरा पातिव्रत्य चिरंजीवता दिला सकेगा? (इस पद्य में 'काट्टु'— दिखाना या प्रगट करना —शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त किया गया है।)। ३९४८

ऍच्चिलॅन् नुडलुयि रेहिऱ् ऱॆयिनि
नच्चिलै यॅन्बदोर् नवैयि लाळॆदिर्
पच्चिलै वण्णमुम् पवळ वायुमायक्
कैच्चिलै येन्दिनिन् ऱदनैक् कण्णुऱ्ऱाळ् 3949

ऍन् उटल्—मेरा शरीर; ऍच्चिल्—अपवित्र बन गया; उयिर्—प्राण; एकिऱ्ऱे—गये ही (समझो); इनि—अब; नच्चु—कोई इच्छा; इल्लै—नहीं; ऍन्पतु ओर्—ऐसे विचार की; नवै इलाळ्—पवित्र देवी; ऍतिर्—सामने; पच्चु इलै—तमाल; वण्णमुम्—वर्ण; पवळ वायुम् आय्—प्रवालाधर बन; कै चिलै एन्ति—हाथ में धनु लेकर; निन्ऱतनै—जो स्थित थे उन्हें; कण्णुऱ्ऱाळ्—देखा। ३९४९

मेरा शरीर (राक्षस की कारा में रहने से) जूठा (अपवित्र) हो गया है! प्राण ही गये हैं! अब मेरी कोई अभिलाषा न रही। निर्दोष सीताजी ने ऐसा एक भाव लेकर अपने सामने तमालवर्ण, प्रवालाधरयुक्त कोदंडपाणी के दर्शन किये। उन्हें अपनी आँखों से देखा। ३९४९

मान्मी दरम्बैयर् शूळ वन्बुलाळ्
पोन्पे रुयिरिनैक् कण्ड पॉय्युडल्
तान्दु कवर्वरुन् दन्मैत् तामॆन
आननङ् गाट्टुऱ ववनि यॆय्दिनाळ् 3950

अरमृवैयर्-अप्सराओं के; चूऴ-घेरे आते; मानम् मीतु-यान पर; वन्तुळाळ्-जो आयीं वे; पोत्त-छूटकर गये; पेर् उयिरित्तै-बड़े प्राणों को; कण्ट-फिर देखकर; पॉय्युटल्-भंगुर शरीर; तान्-स्वयं; अतु-उन प्राणों को; कवर्वुरुम्-फिर से अपना ले; तन्मैत्तु-ऐसी रीति; आम्-हो; ॲन्न-मानो; आननम्-आनन; काट्टुर-दिखाने; अवनि-भूमि पर; ॲय्तिनाळ्-उतरीं। ३९५०

अप्सराओं से आवृत, यान पर जो आयी थीं वे अपने आनन से ऐसा भाव दिखाते हुए यान से उतरी जिसमें पहले छूटे प्राणों को फिर से देखकर जड़ शरीर उन्हें अपना लेने की त्वरा दिखा रहा हो ! । ३९५०

पिऱप्पिनुम् तुणैवनैप् पिऱविप् पेरिडर्
तुऱप्पिनुम् तुणैवनैत् तॉऴुतु नानिनि
मऱप्पिनुम् नन्ऱिदु माऱु वेऱुवीऴ्न्दु
इऱप्पिनुम् नन्ऱॅन एक्कम् नीङ्गिनाळ् 3951

पिऱप्पिनुम्—(किसी भी) जन्म में; तुणैवनै-संगी जो होंगे उन्हें; पेर् पिऱवि-बड़ी, जन्म की; इडर् तुऱप्पिनुम्-बाधा छूटे तब भी; तुणैवनै-सहायक को; नान्-मैं; तॉऴुतु-नमस्कार करती; इनि-आगे; मऱप्पिनुम्-भूल जाऊँ तो भी; नन्ऱु-अच्छा है; इतु माऱु-इसके विपरीत; वेऱु-अन्य रीति से; वीऴ्न्दु-गिरकर; इऱप्पिनुम्-मर जाऊँ तो भी; नन्ऱु-अच्छा ही होगा; ॲन्न-ऐसा सोचकर; एक्कम्-दुःख; नीङ्गिनाळ्-छोड़ दिया। ३९५१

देवी ने सोचा कि मैं इनके दर्शन कर चुकी जो कि मेरे किसी भी भावी जन्म में जीवनसंगी रहेंगे और जन्म के कठोर दुःख के अंत होने के बाद भी मेरे संगी होंगे ! इनकी पूजा करने के बाद उन्हें भूल जाऊँ तो भी भला समझूँगी; या मरकर गिर जाऊँ तो भी अच्छा ! वे दुःख से छूट गयीं। ३९५१

कऱ्पिनुक् करशियैप् पॅण्मैक् काप्पिनैप्
पॉऱ्पिनुक् कऴहिनैप् पुहऴिन् वाऴ्क्कैयैत्
तऱ्पिरिन् दरुळ्पुरि तरुमम् पोलियै
अऱ्पिनन् तलैवनु मसैय नोक्किनान् 3952

तलैवनुम्-नायक श्रीराम ने; कऱ्पिनुक्कु-पातिव्रत्य की; अरचियै-रानी को; पॅण्मै-स्त्रीगुणों के; काप्पिनै-रक्षण को; पॉऱ्पिनुक्कु-सुन्दरता के; अऴकिनै-सौन्दर्य को; पुकऴिन्-यश की; वाऴ्क्कैयै-जीवनधात्री को; तन् पिरिन्तु-अपने से अलग; अरुळ् पुरि-कृपा करनेवाली; तरुमम्-धर्म के; पोलियै-समान रहने वाली को; अऱ्पिन्-प्रेम से; अमैय-खूब; नोक्किनान्-देखा। ३९५२

नायक श्रीराम ने भी सीताजी को प्रेम के साथ खूब निहारा, जो कि पातिव्रत्य की रानी थीं, स्त्रीगुणों की रक्षक थीं, सुंदरता की सुंदरता थीं,

यश की जीवनदायिनी थी और जो उनसे अलग रहकर कृपा करते रहे धर्म समान थीं। ३९५२

शुणङ्गुरु तुणैमुलै मुतुरिर् त्तूङ्गिय
अणङ्गुरु नॆडुङ्गणी राऱु पाय्दर
वणङ्गियल् मयिलिनै माशिल् कर्पिनै
पणङ्गिळ ररवॆन वॆळुनदु पार्प्पुट्रा 3953

शुणङ्कु उरु–पांडुरता से युक्त; तुणै मुलै–स्तनद्वय के; मुतुरिल्–अग्रभाग पर; तूङ्किय–गिरे हुए; अणङ्कु उरु–दुःख-प्रदर्शक; नॆडु कणीर्–लम्बी अश्रु-धारा की; आऱु पाय् तर–नदी के बहते; वणङ्कु–विनत; इयल्–छटा में; मयिलिनै–कलापी-सी सीता को; माचिल् कर्पिनै–अनिंद्य पतिव्रता को; पणम् किळर्–फन फैलाये; अरवु ॲन–सर्प के समान; ॲळुन्तु–कोप के साथ; पार्प्पुट्रा–देखकर। ३९५३

पांडुरता से भरे सुंदर स्तनद्वय के अग्रभाग पर आँखों से अश्रु की नदी-सी बहाते हुए छटा में कलापी-सी रहनेवाली सीताजी नमस्कार कर रही थीं, । उन अनिंद्य पतिव्रता को फन फैलाकर उठनेवाले सर्प के के समान सिर उठाकर श्रीराम ने देखा और। ३९५३

ऊण्डिर भुवन्दनै यॊळुक्कम् बाळ्पड
माण्डिलै मुरैतिऱम् बरक्कन् मानहर्
आण्डुरैन् दडङ्गिनै यच्चन् दीर्न्दिवण्
मीण्डदॆन् निनैवॆनै विरुम्बु मॆन्बदो 3954

मुरै तिऱम्पु–अक्रमी; अरक्कन्–राक्षस के; मा नकर्–बड़े नगर में; आण्टु–वहाँ; उऱैन्तु–वास करके; अटङ्किनै–अधीन रहीं; ऊण् तिऱम्–भोजन; उवन्तनै–भोगा; ऒऴुक्कम्–चरित्र के; पाऴ् पट–बिगड़ने पर भी; माण्टिलै–मरीं नहीं; अच्चम्–डर; तीर्न्तु–छोड़कर; इवण्–यहाँ; मीण्टतु–फिर आयीं जो; ॲन् निनैवु–वह क्या सोचकर; ॲनै–मुझे; विरुम्पुम्–चाहेगा; ॲन्पतो–यह विचार क्या। ३९५४

निष्ठुरता के साथ कहा कि अनीतिमान राक्षस के लंका नगर में बहुत दिन वास करती अधीन रही। यहाँ का भोजन तुम्हें भोग्य रहा। चरित्र नष्ट हो गया तो भी मरी नहीं! सारा भय छोड़कर तुम मेरे पास लौटीं क्या सोचकर? तुमने सोच लिया कि राम मुझे चाहेगा?। ३९५४

उत्तमैमीट् पान्पॊरुट् टुवरि तूर्त्तॊळिर्
मित्तैमीट् टुरुपडै यरक्कर् वेरऱ
पिन्नैमीट् टुरुपहै कडन्दि लेत्पिळै
ॲत्तैमीट् पात्पॊरुट् टिलङ्गै यॆय्दिनेन् 3955

उन्नै-तुम्हें; मीट्पान्-छुड़ाने; पॊरुट्टु-के लिए; उवरि-सागर; तूर्त्तु-पाटकर; ऒळिर्-उज्ज्वल; मिन्नै-विजली को; मीट्टुरु-भगानेवाले; पटै-हथियारों के; अरक्कर्-राक्षसों को; वेर् अऱ-मूल से काटकर; पिन्नै-फिर भी; मीट्टु-आगे भी; उऱ पकै-वने शत्रु को; कटन्दिलेन्-मारा नहीं; पिऴै-अपराध से; ऎन्नै-मुझे; मीट्पान् पॊरुट्टु-छुड़ा लेने के लिए; इलङ्कै-लंका में; ऎय्दिनेन्-आया। ३९५५

मैंने सागर पाटा; विद्युत्प्रहासी हथियार वाले राक्षसों को निर्मूल किया। उत्तरोत्तर युद्ध करके शत्रुसंहार किया —यह सब किया, तुम्हें छुड़ाने के वास्ते नहीं ! पर मुझे अपने को (पत्नी के अपहारी को न मारने के) दोष से छुड़ा लेना था। उसी के निमित्त मैं लंका आया। ३९५५

मरुन्दिनु मिनियमन् नुयिरिन् वान्ऱशै, अरुन्दिनै येनऱ वमैय वुण्डिये
इरुन्दनै येयिनि यॆमक्कु मेऱ्पन, विरुन्दुळ वोवुरै वॆम्मै नीङ्गिनाय् 3956

वॆम्मै-प्यार; नीङ्किनाय्-छोड़ चुकी; मन् उयिरिन्-नित्य जीवों के; वान् तचै-श्रेष्ठ मांस को; मरुन्दिनुम्-अमृत से भी; इनिय-मधुर मानकर; अरुन्दिनैये-खाया न; नऱवु-मद्य; अमैय-खूब; उण्टिये-पिया; इरुन्दनैये-इस तरह रहीं; इनि-अब; ऎमक्कुम्-हमारे भी; एऱ्पन-योग्य; विरुन्दु-भोज; उळवो-हैं क्या; उरै-कहो। ३९५६

मुझ पर प्रेम को हे छोड़ चुकनेवाली ! जीवंत जीवों के श्रेष्ठ मांस को अमृत से भी मधुर मानकर खाती रहीं ! मद्य खूब दिल अघाकर पीती रहीं ! इस भाँति मज़े में रहीं न ! फिर क्या हमारे लिए भी योग्य भोज का इंतिज़ाम होगा ? बताओ। ३९५६

कलत्तिनिऱ् पिऱन्दमा मणियिऱ् कान्ऱुऱ
नलत्तिनिऱ् पिऱन्दन नडन्द नन्मैशाल्
कुलत्तिनिऱ् पिऱन्दिलै कोळिल् कीडम्बोल्
निलत्तिनिऱ् पिऱन्दमै निरप्पि नायरो 3957

कलत्तिनिल्-आभरणों में; पिऱन्त-जड़ित होनेवाले; मामणियिल्-मूल्यवान रत्नों के समान; कान्ऱुऱ-कांतिमय; नलत्तिनिल्-श्रेष्ठता के साथ; पिऱन्तन-उत्पन्न; नटन्त-चले; नन्मै चाल्-उत्तम; कुलत्तिनिल्-कुल में; पिऱन्तिलै-जनमीं न हो ऐसे; कोळ् इल्-दुर्बल; कीटम् पोल्-कीड़े की तरह; निलत्तिनिल्-भूमि में; पिऱन्तमै-जनमने का गुण; निरप्पिनाय्-दिखा दिया। ३९५७

आभरण-मध्य जड़ित होनेवाले रत्नों के समान उज्ज्वल तथा श्रेष्ठता के लिए रचित अच्छे गुण तुम्हें छोड़ गये हैं ! तुम भूमि से उत्पन्न हुई और श्रेष्ठ कुल में पैदा न होकर धरती में उपजे निर्बल कीड़े के समान उसका-सा गुण दिखा दिया ! । ३९५७

पण्मैयुम् बॅरुमैयुम् बिऱप्पुङ् गऱ्पॅत्तुम्
तिण्मैयु मॉऴुक्कमुन् दॅळिवुम् जीर्मैयुम्
उण्मैयु नीयॅन् मॉरुत्ति तोन्ऱलाल्
वण्मैयिन् मन्नवन् पुहऴिन् मायन्ददाल् 3958

पॅण्मैयुम्–स्त्रियोचित गुण; पॅरुमैयुम्–गौरव; पिऱप्पुम्–जन्म; कऱ्पॅत्तुम्–पातिव्रत्य; तिण्मैयुम्–की दृढ़ता; ऑऴुक्कम्–शील; तॅळिवुम्–निर्णय; चीर्मैयुम्–यश और; उण्मैयुम्–सत्य; नी ऑन्ऱुम्–तुम जो; ऑरुत्ति–एक; तोन्ऱलाल्–पैदा हुई तो; वण्मैयिल्–अनुदार; मन्नवन्–राजा के; पुकऴिन्–यश के समान; मायन्ततु–मिट गये। ३९५८

(शरम, अबोधता, भय आदि) स्त्री के लिए उचित सारे गुण-गौरव, कुलीनता, पातिव्रत्यदृढ़ता, सच्चरित्र मन की निर्णयशीलता, यश, सत्य —ये सब तुम एक के जन्म के कारण अनुदार राजा के यश के समान मिट गये। ३९५८

अडॅप्परॅम् बुलन्गळै यॉऴुक्क माणियाच्
चडॅप्परन् दहैन्ददोर् तहैविन् मातवम्
बडॅप्परुवन् दिडॅयॉरु पऴिवन् दालदु
तुडॅप्पर् तम्मुयिरॉडुङ् गुलत्तिऱ् ऱोहैमार् 3959

कुलत्तिल्–कुलीन; तोकैमार्–रमणियाँ; ऐम् पुलन्कळै–पंचेंद्रिय को; अटॅप्पर्–रोकती हैं; ऑऴुक्कम्–चरित्र को; आणिया–दृढ़ता से; चटै परम्–जटा-भार; तकैन्ततु–बनाकर; ओर् तकविन्–एक सुयोग्य; मातवम्–महान तप; पटॅप्पर्–करती हैं; इटै–बीच में; ऑरु–एक; पऴि वन्ताल्–निंदा लगे तो; उयिरॉटुम्–प्राण त्याग; वन्तु–के साथ आ; अतु–वह; तुटॅप्पर्–पोंछ देंगी। ३९५९

कुलीन कलापीनिभ रमणियाँ वियोगावस्था में पंचेंद्रिय दमन करतीं, शील का सुदृढ़ पालन करके केश को जटाभार बनाके रखतीं और महान तपस्या में लीन रहतीं। बीच में कोई निंदा लगती तो प्राणों से उसको पोंछ लेतीं। (ये गुण तुम्हारे पास तो रहे ही नहीं।)। ३९५९

यादिया नियम्बुव दुणर्वै यीडऱच्
चेदिया नितॢऱदुन् नॉऴुक्कञ् जॅय्वदु
शादिया लन्ऱॅनिऱ् ऱक्क दोर्नॅऱि
पोदिया लॅन्ऱनन् पुलवर् पुन्दियान् 3960

पुलवर्–ज्ञानियों के; पुन्तियान्–ज्ञान रूपी श्रीराम; यान्–मैं; इयम्पुवतु–कहूँ; यातु–कौन सा है; उन् ऑऴुक्कम्–तुम्हारा चरित्र; उणर्वै–तुम्हारी बुद्धि को; ईटु अऱ–निर्बल बनाकर; चेतिया निनॢऱतु–छिन्न करता है; चॅय्वतु–करना (यही); चाति–मरो; अन्ऱॅ ऎनिल्–नहीं तो; तक्कतु–अपने योग्य; ओर् नॅऱि–किसी मार्ग में; पोति–जाओ। ३९६०

ज्ञनियों के ज्ञानदेव ने आगे जारी रखा— अब आगे कहने के लिए मेरे पास क्या है ? तुम्हारा अनुचित चरित्र मेरे (या तुम्हारे) मन को काटता है ! अव तुम्हारे लिए करना यही है कि मरो। वह नहीं हो सकेगा तो अपने योग्य किसी स्थान में चली जाओ। ३९६०

मुनैवरु ममररु मऱ्ऱु मुऱ्ऱिय, निन्नैवरु मह‌ळिरु निरुद रॆन्ऱुळार्
ऍन्नैवरुम् वानरत् तॆवरुम् वेऱुळार्, अन्नैवरुम् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱि नाररो 3961

मुनैवरुम्–मुनिवर और; अमररुम्–देव; मऱ्ऱुम्–और अन्य; मुऱ्ऱिय–पूर्णपवव; निनैवु अरु–ज्ञान से भी अगम; मकळिरुम्–स्त्रियाँ; निरुतर्–राक्षस; ऍन्ऱु–जो; उळार्–है; ऍन्नैवरुम्–सभी; वानरत्तु–वानर के; ऍवरुम्–सभी; वेऱु उळार्–अन्य; अन्नैवरुम्–सभी; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिनार्–रोने लगे। ३९६१

यह सुनकर मुनिवर, देव, अननुमित स्त्रियाँ, राक्षस जो थे वे, वानर जो थे वे और अन्य जाम्बवान आदि सभी असहनीय वेदना से तड़पते मुख खोलकर रोये। ३९६१

कण्णिणै युदिरमुम् बुनलुम् कान्ऱुह
मण्णिनै नोक्किय मलरिन् वॆहुवाळ्
पुण्णिनैक् कोलुऱुत् तन्नैय पॊम्मलाळ्
उण्णिनैप् पोविनिन् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिनाळ् 3962

मण्णिनै नोक्किय–भूमि पर दृष्टि डाले; मलरिन् वॆकुवाळ्–कमलासना; पुण्णिनै–व्रण में; कोल्–छड़ी; उऱुत्तु–घसी; अन्नैय–जैसे; पॊम्मलाळ्–दुःख से; कण्णिणै–अक्षद्वय से; उतिरमुम्–रक्त; पुनलुम्–और जल; कान्ऱु उक–अधिक गिराते हुए; उळ् निनैप्पु–प्रज्ञा; ओवि निन्ऱु–खोकर; उयिर्प्पु वीङ्कितताळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। ३९६२

कमलासना सीताजी ने भूमि पर दृष्टि दिये, व्रण में छड़ी घुस गयी हो —ऐसी वेदना के साथ, अपनी आँखों से रक्त और आँसुओं को अधिक परिमाण में बहाते हुए संज्ञाहीन स्थिति में लंबी साँसें लीं। ३९६२

परुन्दडर् शुरत्तिडैप् परुहु नीर्नशै
वरुन्दरुन् दुयरिनान् माळ लुऱ्ऱमान्
इरुन्दडङ् गण्डदि नॆय्दु ऱावहैप्
पॆरुन्दडै युऱ्ऱॆनप् पेदुऱ् ऱाळरो 3963

परुन्तु अटर्–बाजों से भरे; चुरत्तु इटै–मरु प्रदेश में; नीर् परुकुम्–जल पीने की; नचै–इच्छा से; वरुन्तु–पीड़ा के; अरु–कठोर; तुयरिताल्–दुःख से; माळल्–मरणोन्मुख दशा को; उऱ्ऱ मान्–प्राप्त हरिण; इरु तटम्–विशाल तट; कण्टु–देखकर; अतिन्–उसके पास; ऍय्तुरा वकै–न जा सके ऐसी; पॆरु तटै–बड़ी बाधा; उऱ्ऱु–पा गया; ऍन्न–जैसे; पेतुऱ्ऱाळ्–भ्रांत हुईं। ३९६३

बाज़ों से भरे मरु प्रदेश में पिपासा से मरणोन्मुख मृग किसी विशाल तट को पा जाय पर उसे वहाँ जाने से रोकते हुए कोई बाधा उपस्थित हो जाय —उस हरिण की-सी स्थिति में आकर देवी भ्रांत हुईं। ३९६३

उऱ्ऱुनिन्ऱु उलहिनै नोक्कि योडरि, मुऱ्ऱुऱु नॆडुङ्गणी रालि मॊय्त्तुह
इऱ्ऱदु पोलुम्या निरुन्दु पॆऱ्ऱपे, ऱुऱ्ऱदा लॆन्ऱव मिन्ऱॆन्ऱु रोदुवाळ् 3964

उऱ्ऱु निन्ऱु–भ्रांत रहकर; ओडु–चंचल; अरि मुऱ्ऱुऱुम्–डोरे से युक्त; नॆडुङ्कण्–लम्बी आँख से; नीर् आलि–अश्रुधारा; मॊय्त्तु उळ–घने रूप से गिराते हुए; उलकिनै नोक्कि–संसार को देखकर; यान्–मैं; इरुन्तु–(अच्छी) रहकर; पॆऱ्ऱ पेऱु–जो पायी उसका फल; इऱ्ऱतु–व्यर्थ गया; ॲन् तवम्–मेरी तपस्या; इन्ऱु–आज; उऱ्ऱतु–गयी; ॲन्ऱु–कहकर; ओतुवाळ्–बोलीं। ३९६४

इस तरह भ्रांतचित्त होकर, लाल डोरे के साथ शोभती आँखों से अश्रुकणों को निरंतर ढलकाते हुए आम रूप से लोकों को व्यथा जतायी कि जीवित रहकर पाया यही फल ! मेरी तपस्या आज गयी ! फिर श्रीराम से बोलीं। ३९६४

मारुदि वन्दॆन्नैक् कण्डु वळ्ळलो
शारुदि यीण्डॆनच् चमैयच् चॊल्लिनान्
यारिलु मॆय्म्मैया निशॆत्त दिल्लैयो
शोरुमॆन् निलैयवन् तूदु मल्लनो 3965

वळ्ळल्–उदार प्रभु; मारुति–मारुति ने; वन्तु–आकर; ॲनै कण्टु–मुझे देख; नी–तुम; ईण्टु–इधर; चारुति–आओ; ॲन–ऐसा; चमैय–धीरज देकर; चॊन्नान्–कहा; यारिनुम्–सबों में; मॆन्मैयान्–श्रेष्ठ उसने; चोरुम्–घुलती; ॲन् निलै–मेरी दशा; इचैत्ततु–बतायी; इल्लैयो–नहीं क्या; तूतुम्–क्या वह दूत; अल्लनो–नहीं था। ३९६५

हे वदान्य ! मारुति ने आकर मुझसे धैर्य के साथ कहा कि तुम इधर आओ। सर्वश्रेष्ठ उसने मेरी दीन-हीन स्थिति आपसे नहीं बतायी क्या ? क्या वह उत्तम दूत नहीं था शायद ? । ३९६५

ॲत्तव मॆन्नल मॆन्न कऱ्पुनान्
इत्तनै कालमु मुळन्द वीदॆलाम्
बित्तॆन लायवम् बिळैत्त दालन्ऱे
उत्तम नीमनत् तुणर्न्दि लामैयाल् 3966

उत्तम–पुरुषोत्तम; इत्तनै कालमुम्–इतना समय; नान् उळन्त–मैंने कष्ट उठाकर जो किया; ॲत्तवम्–वह सारा तप; ॲ नलम्–वह सारा सुकृत्य; ॲन्न कऱ्पुम्–मेरा श्रेष्ठ चरित्र; ईतु ॲलाम्–यह सब; नी मनत्तु–आपने मन में; उणर्न्तिलामैयाल्–नहीं जाना, इसलिए; पित्तु–पागल; ॲन्नल्–कहने योग्य जो; आय–रहा उसका; वम्पु–निरर्थक काम; इळैत्ततु–किया जैसा रहा। ३९६६

हे पुरुषोत्तम ! मैं अब तक जो साधना करती रही वह कितना बड़ा तप, कितना बड़ा शील, कितना उत्तम पातिव्रत्य वह सब आप समझ नहीं सके। इसलिए वह सारा किया कराया पागलों के कार्य के समान उपेक्षणीय हो गया। ३९६६

पार्क्कॅलाम् बत्तिनि पदुमत् तानुक्कुम्,
पेर्क्कलान् जिन्दय ळल्लळ् पेदैयेन्
आर्क्कलाङ् गण्णव नन्ऱॆन् ऱालदु
तीर्क्कलान् दहैयदु तॆय्वन् देऱुमो 3967

पेतैयेन्–बेचारी मैं; पार्क्कु ॲलाम्–सारे लोक में; पत्तिनि–पतिव्रता; पतुमत्तातुक्कुम्–पद्मासन के लिए भी; पेर्क्कलाम्–बदल जाय ऐसे; चिन्तयळ्–मनवाली; अल्लळ्–नहीं हूँ; पार्क्कॅलाम्–सारे लोकवासी; आर्क्कलाम्–वाह-वाही दे, ऐसी; कण्णवन्–दयालु आँख वाले श्रीराम; अनॖ ॲन्ऱाल्–'नहीं' कहें तो; अतु–वह राय; तीर्क्कलाम्–दूर किये जाने; तकैयतु–योग्य होगी क्या; तॆय्वम्–देव भी; तेऱुमो–समझेगा क्या। ३९६७

वराकी मुझे सारा संसार पतिव्रता मानता है! पद्मासन भी मुझे डिगा नहीं सकते। तो भी सभी लोकों द्वारा साधुवाद के उच्च स्वर में प्रशंसित श्रीराम मानें कि वह सच नहीं तो उस राय को कोई देव भी दूर कर सकेगा क्या ?। ३९६७

पङ्गयत् तॊरुवत्तुम् बशुविन् पाहत्तुम्
शङ्गुकैत् ताङ्गिय तरुम मूर्त्तियुम्
अङ्गैयि नॆल्लिपो लनैत्तु नोक्किनुम्
मङ्गैयर् मननिलै युणर वल्लरो 3968

पङ्कयत्तु–पंकज के; ऑरुवत्तुम्–अनुपम देव और; पशुविन् पाकत्तुम्–ऋषभवाहन; चङ्कु–शंख; कै–हाथ में; ताङ्किय–धरनेवाले; तरुम मूर्त्तियुम्–धर्ममूर्ति; अङ्कैयिन्–करतल के; नॆल्लि पोल्–आँवले के समान; अनैत्तुम्–सबको; नोक्किनुम्–देख सकें तो भी; मङ्कैयर्–स्त्रियों की; मन निलै–चित्त-स्थिति; उणर वल्लरो–समझ सकेंगे क्या। ३९६८

पंकजासन, ऋषभवाहन पशुपति, शंखधर धर्ममूर्ति विष्णु—ये सब किसी भी वस्तु को करतलामलकवत् देख सकते हैं। पर वे भी क्या स्त्रियों की चित्तस्थिति को समझ सकेंगे ?। ३९६८

आदलिऱ् पुरत्तिनि यारुक् काहवेन्
कोदऱ तवत्तिनैक् कूऱिक् काट्टुहेन्
शादलिऱ् चिऱन्ददीन् ऱिल्लै तक्कदे
वेवनिन् पणियदु विदियु मॆन्ऱनळ् 3969

वेत–वेदपुरुष; आतलाल्–इसलिए; इति–अब; ॲन् कोतु अरु–मेरे अनिद्य; तवत्तितै–तप को; पुरत्तु–बाहर; यारुक्कु आक–किसके लिए; कूरि–कह; काट्टुकेन्–दिखाऊँ; चातलिल्–मरने से; चिरन्ततु–श्लाघनीय; ओन्रु–कुछ; इल्लै–नहीं है; निन् पणि–आपकी आज्ञा; तक्कते–उचित ही है; वितियुम् अतु–मेरी विधि वही; ॲन्रतळ्–कहा (देवी ने)। ३९६९

वेदपुरुष ! इस स्थिति में अपने अनिद्य पातिव्रत्य की तपस्या की, पवित्रता को अन्य किसको कह सुनाऊँगी ? इसलिए मरने से श्लाघ्य कुछ नहीं ! आपकी आज्ञा बिलकुल उचित है ! मेरा प्रारब्ध भी वही है शायद ! देवी ने ऐसा कहा। ३९६९

इळैयवन् इरैयळैत् तिडुदि तीयॆन्न
वळैयॊलि मुन्गैयाळ् वायिऱ् कूऱलुम्
उळैवुऱु मनत्तव नुलहम् यावुक्कुम्
कळैकणैत् तॊळववन् कण्णिऱ् कूऱिनान् 3970

वळै ऑलि–क्वणित कंकणों वाले; मुन् कैयाळ्–अग्रहस्त वाली के; इळैयवन् तन्नै–लघु भ्राता को; अळैत्तु–बुलाकर; ती–आग; इटुति–जलाओ; ॲन्न–ऐसा; वायिल्–मुख से; कूरलुम्–कहने पर; उळैवु–दुःख से; उरु–पीड़ित; मनत्तवन्–मन वाले ने; उलकम्–लोकों; यावुक्कुम्–सारे के; कळै कणै–आश्रय की; तॊळ–वन्दना करने पर; अवन्–उन्होंने; कण्णिल्–आँखों के इशारे से; कूरिनान्–जताया। ३९७०

फिर क्वणित-कंकण-हस्ता ने लघुराज को बुलाया और खुल्लम-खुल्ला कहा कि आग रचो। उसे सुनकर व्यग्रमन लक्ष्मण ने लोकाश्रय श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया (और उनकी आज्ञा जाननी चाही)। श्रीराम ने भी आँखों के इशारे से अपना अभिप्राय जता दिया। ३९७०

एङ्गिय पॊरुमलि निऴिह णीरिनन्, वाङ्गिय वुयिरिन नन्नैय मैन्दनुम्
आङ्गॊरि विदिमुऱै यमैवित् तानदन्, पाङ्गुऱ नडन्दनळ् पदुमप् पोदिनाळ् 3971

वाङ्किय उयिरिनन्–हत-प्राणों वाले के; अनैय मैन्तनुम्–समान हुए कुँअर ने; एङ्किय पॊरुमलिन्–व्यग्रता के दुःख के कारण; इऴि कणीरिनन्–बहनेवाले अश्रु के हो; आङ्कु–वहाँ; ऑरि–आग को; विति मुरै–यथाविधि; अमैवित्तान्–रच दी; पतुमम् पोतिनाळ्–कमलासना; अतन् पाङ्कु उर–उसके पास लगी; नटन्तनळ्–चलीं। ३९७१

लक्ष्मण हतप्राण-से हो गये। दुःखतप्तमन से आँखों से आँसू बहाते हुए उन्होंने यथाविधि आग का प्रबंध करा दिया। कमलासना देवी उसके पास गयीं। ३९७१

तीयिडै यरुहुऱच् चन्ऱु तेवर्क्कुम्
तायॆननिक् कुऱुहलुन् दरिक्कि लामैयाल्

वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिन मरैहळ् नान्गोडुम्
ओय्विनल् लऱमुमऱ् ऱुयिर्हळ् यावैयुम् 3972

तेवर्क्कुम्–देवों की; ताय–अंबा के; तनि–अकेले; ती इडै–आग के; मरुकु उऱ–बहुत पास; चॅन्ऱ–जा; कुऱुकलुम्–पहुँचते ही; तरिक्किलामैयाल्–सह न सकने से; नान्कु मऱैकळोडुम्–चारों वेदों के साथ; ओय्विल्–अक्षय; नल् अऱमुम्–धर्म; मऱ्ऱु–और; उयिर्कळ् यावुम्–सभी जीव; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिन–आहृत स्वर में चिल्लाये। ३९७२

देवों की भी अंबा अकेली आग के पास गयीं तो चारों वेद, अक्षय धर्म और सभी जीव यह सह नहीं सके और मुख खोलकर प्रलाप करने लगे। ३९७२

वलम्वरु मळवैयिन् मऱुहि वान्मुदल्
उलहमु मुयिर्हळु मोल मिट्टन
अलम्वर लुऱ्ऱन वलऱ्ऱि यॅयविच्
चलमिदु तक्किल दॅन्ऩच् चाऱ्ऱिन 3973

वलम् वरम्—दायें घूमते; अळवैयिन्—समय में; वान् मुतल्–स्वर्ग आदि; उलकमुम्–लोक; उयिर्कळुम्–और जीव; मऱुकि–घुलकर; अलम् वरल् उऱ्ऱन—अस्त-व्यस्त घूमकर; ओलमिट्टन–चिल्लाये; अलऱ्ऱि–चिल्लाकर; ऐय–प्रभु; इ चलम् इतु–यह कोप; तक्किलतु–उचित नहीं; ॲन्ऩ–ऐसा; चाऱ्ऱिन–कहा। ३९७३

जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगीं, तब स्वर्गादि लोक और उनके सभी जीव क्षुब्ध हुए, अस्त-व्यस्त हुए और उच्च स्वर में चिल्लाये। विलाप करते हुए उन्होंने श्रीराम से विनय की कि हे प्रभु! यह कोप उचित नहीं। ३९७३

इन्दिरन् तेवियर् मुदल वेळ्ैयर्
अन्दर वानिनिन् ऱरऱ्ऱि हिन्ऱवर्
शॅन्दळिर्क् कैहळाऱ् चेय रिप्पॅरुञ्
जुन्दरक् कण्गळे यॅऱ्ऱित् तुळ्ळिनार् 3974

इन्तिरन्–इन्द्र की; तेवियर्–पत्नियाँ; मुतल एळैयर्–आदि स्त्रियाँ; अन्तरम्–अंतरिक्ष के; वानिल् निन्ऱु–आकाश में खड़ी होकर; अरऱ्ऱुकिन्ऱवर्–विलाप करतीं; चॅ तळिर् कैकळाल्–लाल पल्लवहस्तों से; चॅम्मै अरि–लाल डोरों-सह; पॅरु–बड़ी; चुन्तरम्–सुन्दर; कण्कळे–आँखों पर; ऍऱ्ऱि–पीटकर; तुळ्ळिनार्–तड़पीं। ३९७४

इंद्राणी आदि देवियाँ आकाश में खड़ी रहकर रोयीं और अरुण-पल्लव हाथों से अपनी सुंदर बड़ी आँखों को पीटकर तड़पीं। ३९७४

नडुङ्गिनर् नान्मुहन् मुदल नायहर्
पडङ्गुरुन् दडुपडि शुमन्द पाम्बुवाय्
विडम्बरन् दुळदेन वेंदुम्बिर् रालुल
हिडन्दिरिन् दनक्षुडर् कडलह ळेङ्गिन 3975

नान्मुकन्-चतुर्मुख; मुतल-आदि; नायकर्—मुख्य देव; नटुङ्कितर्-काँपे; पटि चुमन्त-भूमि को ढोनेवाला; पाम्पु-साँप; पटम्-फन; कुरुन्ततु-समेटकर; उलकु इटम्-भूतल में; वाय्-मुख से; विटम् परन्तु उळतु-निकला विष फैला हो; ॲॅन-ऐसा; वॅतुम्पिर्ऱु-तप्त हुआ; चुटर्-तेजपुंज; इटम्-स्थान; तिरिन्तन-बदले; कटल्कळ्-सागर; एङ्कित-रोये। ३९७५

चतुर्मुख आदि प्रमुख देवता काँपे। धरणीधर शेषनाग का फन संकुचित हो गया। भूतल सारा उसके मुख से निःसृत विष से ढँका जैसा तप्त हो गया। सूर्य आदि ज्योतिमंडल स्थान बदल गये। समुद्र तरस उठे। ३९७५

कनत्तिनार् कडैन्दपूण् मुलैय कैवळै
मनत्तिनाल् वाक्किनाल् मरुवुर् रेनॅनिन्
शिनत्तिनाऱ् चुडुदियाऱ् ऱीच्चॅल् वावॅन्ऱाळ्
पुनत्तुळाय्क् कणवर्कुम् वणक्कम् बोक्किनाळ् 3976

कनत्तिनाल्-स्वर्ण से; कटैन्त पूण्-तराशकर बनाये गये आभरण-भूषित; मुलैय-स्तनों वाली; कैवळै-कंकणहस्ता सीता ने; ती चॅल्वा-अग्निदेव; मनत्तिनाल्-मन से; वाक्किनाल्-वाक् से; मरु उऱ्ऱेन्-कलंकित हो गयी; ॲनिन्-तो; चिनत्तिनाल्-कोप के साथ; चुटुति-जला दो; ॲन्ऱाळ्-कहा; पुनम् तुळाय्—वन-तुलसीधारी; कणवर्कुम्-पति को भी; वणक्कम् पोक्किनाळ्-नमस्कार किया। ३९७६

तराशे हुए स्वर्ण से निर्मित आभरणधारिणी कंकणहस्ता सीता ने अग्नि से निवेदन किया कि हे अग्निदेव! मन से कलंकित हो रही तो तुम मुझे कोप के साथ जला दो। फिर वनतुलसीमालाधारी श्रीराम की भी वन्दना की। ३९७६

नीन्दरुम् बुनलिडै निवन्द तामरै
एयन्ददन् कोयिलै यॅय्दु वाळॅनप्
पाय्न्ददळ् पाय्दलुम् बालिन् पञ्जॅनत्
तीन्ददव् वॅरियवळ् करुपिन् तीयिनाल् 3977

नीन्त अरु-अतरणशक्य; पुनल् इटै-जलाशय में; निवन्त-ऊँचे उठे; तामरै-कमल रूपी; एय्न्त-योग्य; तन् कोयिलै-अपने मंदिर में; ॲय्तुवाळ् ॲन-जाती जैसे; पाय्न्ततळ्-वेग से कूदीं; पाय्तलुम्-कूदते ही; अव् ॲरि-वह अग्नि;

अवळ् कट्पिन्–उनके पातिव्रत्य की; तीयिन्नाल्–आग से; पालित् पञ्चु अॅन्न–शुद्ध रूई के समान; तीन्ततु–जली । ३९७७

फिर वे शीघ्र अग्नि में कूदीं मानो वे अपने ही अतरणयोग्य जल में ऊँचे उठे कमल रूपी मंदिर में पहुँच रही हों! उनके उसमें कूदते ही अग्नि उनके पातिव्रत्य की आग में दुग्ध-धवल रूई के समान जल गया। ३९७७

अऴुन्दिन्नळ् नङ्गैमऱ् ऱङ्गै यार्चुमन्
वॅऴुन्दन्न तङ्गिवॅन् वॅरियु मेनियान्
तॉऴुङ्गरत् तुणैयिनन् शुरुदि ञानत्तिन्
कॉऴुन्दिनैप् पूशलिट् टरट्रुङ् गॉळ्हैयान् 3978

अऴुन्तिनळ्–दुःखिनी; नङ्कै–देवी की (पातिव्रत्य की); अङ्कि–आग में; वॅन्तु–झुलसकर; वॅरियुम् मेनियान्–जलती देह वाला अग्नि; चुरुति ञानत्तिन्–वेदज्ञान के; कॊऴुन्तिनै–शिखर को; पूचल इट्टु–उच्च स्वर में बुलाकर; अरट्रुम्–रोने के; कॊळ्कैयान्–कार्य में लगा; तॊऴुम्–नमस्कार में जुड़े; करम् तुणैयिनन्–हस्तद्वय वाला; अङ्कैयाल्–अपने हाथों में; चुमन्तु–धारण करके; ऍऴुन्तनन्–उठा । ३९७८

दुःखिनी सीता के पातिव्रत्य के ताप से जल-भुनकर जलते शरीर के साथ अग्नि श्रुतिज्ञान के शिखर भाग श्रीराम की दुहाई में उच्च स्वर में रोते-चिल्लाते हुए अंजलिबद्ध अपने सुंदर हाथों में देवी को ले प्रगट हुआ। ३९७८

ऊडिन्न शीऱ्ऱत्ता लुवित्त वेर्हळुम्
वाडिन वित्लैया लुणर्त्तु माऱुण्डो
पाडिय वण्डॊडुम् बनित्त तेनॊडुम्
शूडिन्न मलर्हणीर् तोय्त्त पोन्ऱवाल् 3979

ऊटिन–झुंझलाहट से; चीऱ्ऱत्ताल्–(पति के) उत्पन्न क्रोध से दुःखी होने के कारण; उतित्त–झलक आये; वेर्कळुम्–स्वेदकण; वाटिन इल्लै–सूखे नहीं; उणर्त्तुम्–समझाने के वास्ते; माऱु–कोई प्रमाण; उण्टो–चाहिए क्या; चूटिन–धृत; मलर्कळ्–पुष्प; पाटिय–गाते; वण्टॊटुम्–भ्रमरों के साथ; पनित्त–रसते; तेनॊटुम्–मधु के साथ; नीर्–जल में; तोय्त्त पोन्ऱ–भिगोये-से लगे । ३९७९

सीतादेवी के शरीर पर श्रीराम के रुष्ट कोप के कारण उठे स्वेदकण भी न सूखे थे। फिर समझाने को क्या है? तो भी कहूँ। उन्होंने जो फूल धारण किये थे, वे उन पर गुंजार करते रहे भ्रमरों और उनसे झरते मधु के साथ वैसे ही नवीन रहे मानो वे जल में भिगोये गये हों। ३९७९

तिरिन्दन वुलहमुञ् जॅव्व तिन्नुरन, परिन्दव श्यिरॅलाम् बयन्द विरुन्दन
अरुन्ददि मुदलिय महळि राडुदल्, पुरिन्दनर् नाणमुम् वॉरैयु नीङ्गिनार् 3980

तिरिन्तन–अस्त-व्यस्त; उलकमुम्–लोक; चॅव्वन्–अब ठीक; निन्नुरन–स्थित हुए; परिन्तवर्–रोनेवाले; उयिर् ॲलाम्–जीव सभी; पयम्–भय; तबिर्न्तन–छोड़ चुके; अरुन्तति–अरुन्धती; मुतलिय–आदि; मकळिर्–देवियाँ; आट्टल्–नृत्य; पुरिन्तनर्–करने लगीं; नाणमुम्–शरम और; पोॅरैयुम्–संयम भी; नीक्किनार्–छोड़ दिया। ३९८०

जो लोक अस्त-व्यस्त हुए थे वे सब अब स्थिर हो गये। दुःखी हुए जीव सभी भयविमुक्त हुए। अरुन्धती आदि शीलवतियाँ आनंद के कारण शरम और संयम त्यागकर नाच उठीं। ३९८०

कनिन्दुयर् कर्पॅनुङ् गडवुट् टीयिनाल्, निनैन्दिलै यॅन्वलि नीक्कि नायॅन
अनिन्दनै यङ्गिनी ययर्वि लॅन्नैयुम्, मुनिन्दनै यामॅन मुरैयिट् टानरो 3981

नी–आप; निनैन्तिलै–बिना सोचे; कनिन्तु–पक्व हो; उयर्–उठे; कर्पॅनुम्–पातिव्रत्य रूपी; कटवुळ्–दिव्य; तीयिनाल्–आग से; ॲन्–मेरा; वलि–बल; नीक्किनाय्–हटा दिया; अनिन्तनै–अपचार कर; अयर्विल्–जो बुरा न किया; ॲन्नैयुम्–उस मुझसे भी; मुनिन्तनै–कोप किया; आम्–हाँ; ॲन–ऐसा; मुरैयिट्टान्–निवेदन किया; अङ्कि–अग्नि ने। ३९८१

अग्नि ने श्रीराम से शिकायत की। आपने बिना सोचे ही पातिव्रत्य रूपी दिव्य घने ताप से मुझे निर्बल बना दिया। मैंने तुम्हारे प्रति कोई अपराध नहीं किया था। आदर करने में स्थिर हूँ। तो भी आपने मुझ पर क्रोध दिखाया शायद ! । ३९८१

इन्नदोर् कालैयि लिरामन् यारॅनी
ॲन्नॅनी यियम्बिय दॅरियुळ् तोन्रियिप्
पुन्मैशा लॉरुत्तियैच् चुडादु पोर्रिनाय्
अन्नदार् शॉल्लवी दरैदि यालॅन्रान् 3982

इन्नतोर्–ऐसे; कालैयिल्–समय में; इरामन्–श्रीराम ने; नी यार्–तुम कौन हो; नी–तुम; ॲरियुळ्–आग में; तोन्रि–प्रकट होकर; इयम्पियतु–कहते; ॲन्नॅ–क्या हो; इ–इस; पुन्मैयाल्–नीचता की; ऑरुत्तियै–एक स्त्री को; चुटातु–न जलाकर; पोर्रिनाय्–रक्षित किया; अन्नतु–वह; आर् चॉल्ल–किसके कहने से; ईतु उरैति–यह कहो; ॲन्रान्–कहा। ३९८२

जब अग्नि ने ऐसा आर्त वचन कहा तब श्रीराम ने प्रश्न किया कि तुम हो कौन ? अग्नि से बाहर निकल आकर कहते क्या हो ? इस नीचता-युक्त स्त्री को न जलने देकर रक्षित किया —वह किसके कहने से ? यह बताओ। ३९८२

अङ्गिया ऎन्नैयिव् यन्नै करुपॆन्नुम्
पॊङ्गुवॆन् दीच्चुडप् पॊरुक्कि लामैयाल्
इङ्गणॆन् देन्नुरु मियऱ्कै नोक्कियुम्
शङ्गिया निऱ्ऱियो ऎवर्क्कुम् जान्ऱुळाय् 3983

यान्-मैं; अङ्कि-अग्नि हूँ; ऎन्नै-मुझे; इव् अन्नै-इन लोकमाता के; करुपु ऎन्नुम्-पातिव्रत्य रूपी; पॊङ्कु-भभकनेवाली; वॆम् ती-गरम आग ने; चुट-जलाया; पॊरुक्किलामैयाल्-सह नहीं सका, इसलिए; इङ्कु-यहाँ; अणैन्तेन्-आयी; ऎवर्क्कुम्-सबके; चान्ऱुळाय्-साक्षी-रूप; उऱुम्-मुझ पर आया; इयऱ्कै-यह हाल; नोक्कियुम्-देखकर भी; चङ्कियां-शंका करते; निऱ्ऱियो-रहेंगे क्या। ३६८३

अग्नि ने निवेदन किया कि मैं अग्नि हूँ! लोकमाता इनके पातिव्रत्य की आग ने मुझे जला दिया। मैं सह नहीं सका और इधर आया। हे सर्वसाक्षी! मुझ पर बीती स्थिति देखकर भी आप शंका करेंगे क्या? । ३९८३

वेट्पदु मङ्गैयर् विलङ्गि नारॆनिल्
केट्पदुम् बल्पॊरुट् कैयङ् गेडऱ
मीट्पदु मॆन्वयि नॆन्नु मॆय्प्पॊरुळ्
वाट्पॆरुन् दोळिनाय् मऱैहळ् शॊल्लुमाल् 3984

वाळ्-तलवार चलाने में; पॆरु तोळिनाय्-अभ्यस्त उन्नत कंधों वाले; वेट्पतुम्-विवाह करना; मङ्कैयर्-स्त्रियाँ; विलङ्कितार्-(गृहस्थ-धर्म से) अलग हुईं; ऎनिल्-तो; केट्पतुम्-पूछना; पल् पॊरुट्कु-अनेक बातों के संबंध में; ऐयम् केट्-संदेह और अन्याय; अऱ-दूर करके; मीट्पतुम्-शंका दूर करना; ऎन् वयिन्-मेरे समक्ष होते; ऎन्नुम्-ऐसा; मॆय् पॊरुळ्-सत्य तथ्य; मऱैकळ्-वेद; चॊल्लुम्-कहते हैं। ३६८४

असिविद्याप्रवीण कंधोंवाले! स्त्रियों का विवाह, स्त्रियों के डिगने पर विचारना, अनेक बातों में संदेह और अपराध से मुक्ति दिलाना—ये सब मेरे सान्निध्य में ही होते हैं। यह तथ्य वेदों द्वारा कहा जाता है। ३९८४

ऐयुऱु पॊरुळ्हळै याशिन् माशॊरीइक्, कैयुऱु नॆल्लियिन् कनियिऱ् काट्टुमॆन्
मॆय्युऱु कट्टुरै केट्टु मीट्टियो, पॊय्युऱा मारुदि युरैयुम् बोऱ्ऱलाय् 3985

पॊय् उऱा-जो असत्य नहीं बोलता; मारुति-उस मारुति का; उरैयुम्-कथन; पोऱ्ऱलाय्-आपने नहीं माना; ऐयुऱु-संदेहास्पद; पॊरुळ्कळै-विषयों को; आचिल्-शीघ्र; माचु-मैल; ऒरीइ-दूर करके; कै उऱु-कर में रखे; नॆल्लियिन् कनियिल्-आमलक फल के समान; काट्टुम्-दिखानेवाले; ऎन्-मेरा; मॆय् उऱु-

सत्य के; कट्टुरै—वचन को; केट्टुम्—सुनकर ही; मीट्टियो—देवी को अपना लेंगे (म)। ३९८५

आपने असत्य के अभाषी मारुति के कथन को नहीं माना! मैली वस्तुओं को शीघ्र मैल से छुड़ाकर करतलामलकवत् दिखाने की प्रकृति वाले मेरे सत्यवचन को सुनकर (ही सही) आप देवी को अपना लेंगे ? । ३९८५

तेवरु मुनिवरु तिरिव निऱ्पवुम्, मूवहै युलहमुङ् गण्गण् मोदिनिऩ्
ऱावॆनल् केट्किलै यऱत्तै नीक्किवे, ऱेवमॆऩ् ऱॊरुपॊरुळ् याण्डुक् कॊण्डियो 3986

तेवरुम्—देव और; मुनिवरुम्—मुनिगण; तिरिव निऱ्पवुम्—चराचर; मूवकै उलकमुम्—तीनों लोकों के वासी; कण्कण्—आँखें; मोति निऩ्ऱु—पीटते हुए; आ ॲनल्—'हाय' कहके रोते हैं; केट्किलै—नहीं सुनते; अऱत्तै नीक्कि—धर्ममार्ग छोड़कर; वेऱु—विपरीत; एवम् ॲनुऱु—पाप नाम के; ओरु पॊरुळ्—एक तथ्य को; याण्टु—कहाँ से; कॊण्टियो—अपनाया। ३९८६

देखिए— देव, मुनि, चराचर प्रपंच सभी आँखें पीटकर 'हाय' कहते रो रहे हैं —यह नहीं सुनते क्या ? धर्म छोड़कर धर्मेतर, पाप, के मार्ग को कहाँ से अपनाया आपने ? । ३९८६

पॆय्युमे मळैपुवि पिळप्प दन्ऱियें, शॆय्युमे पॊऱैयऱम् नॆऱियिऩ् चॆल्लुमे
उय्युमे युलहिव ळुणर्वु शीऱिनाल्, वैयुमेल् मलर्मिशै ययनु मायुमे 3987

इवळ्—ये; उणर्वु चीऱिनाल्—मन में गुस्सा करें; मळै पॆय्युमे—तो बरसात होगी क्या; पुवि—भूमि: पिळप्पतु—फटेगी; अन्ऱि—उसके सिवा; पॊऱै—भार वहन; चॆय्युमे—करेगी क्या; अऱम् नॆऱियिल्—धर्म अपने मार्ग मे; चॆल्लुमे—चलेगा क्या; उलकु उय्युमे—संसार जीवित रहेगा क्या; वैयुमेल्—ये शाप दें तो; मलर् मिचै—कमल पर रहनेवाले; अयनुम्—अजदेव भी; मायुमे—मर जायगा न। ३९८७

ये देवी मन से रुष्ट हों तो क्या बारिश हो सकती है ? भूमि फट जायगी न, नहीं तो भारवहन करेगी क्या ? धर्म सही मार्ग पर जा सकेगा क्या ? पृथ्वी बचेगी ? ये शाप देंगी तो कमलभव भी मिट जायगा न ! । ३९८७

पाडुऱु पऩ्मॊऴि यिऩैय पन्ऩिनिऩ्, ऱाडुऱु तेवरो डुलह मार्त्तॆऴच्
चूडुऱु मेऩिय वलरि तोहैयै, माडुऱक् कॊणर्न्दनऩ् वळ्ळल् कूऱुवाऩ् 3988

चटु उऱु—गरमीयुक्त; मेऩि—शरीर वाला; अव् अलरि—वह अग्नि; इऩैय—ऐसे; पाटु उऱु—गौरवपूर्ण; पल् मॊऴि—अनेक वचन; पन्ऩि निऩ्ऱु—कहकर; आटुऱु—नाचनेवाले; तेवरोटु—देवों के साथ; उलकम्—लोकों के; आर्त्तु ॲऴ—आनन्दरव कर उठते; तोकैयै—कलापीनिभ देवी को; माटु उऱु—पास लगाकर; कॊणर्नुतनऩ्—लाया; वळ्ळल्—उदार प्रभु; कूऱुवाऩ्—बोले। ३९८८

तापदग्धशरीरी अग्नि ऐसे गुरु और अनेक कथन कहकर कलापी-निभ देवी को श्रीराम के पास सौंपने ले आया। तब देव नर्तन कर उठे और सारे लोक नर्दन कर उठे। उदार प्रभु यों बोले। ३९८८

अऴिप्पिल शान्ऱनी युलहुक् कादलाल्
इऴिप्पिल शौल्लिनी यिवळै यादुमोर्
पऴिप्पिल ळॅन्ऱनै पऴियु मिन्ऱिनिक्
कऴिप्पिल ळॅन्ऱनन् करुणै युळ्ळत्तान् 3989

करुणै उळ्ळत्तान्–करुणहृदय ने; नी उलकुक्कु–तुम लोकों के; अऴिप्पिल–अक्षय; चान्ऱु–साक्षी हो; आतलाल्–इसलिए; इऴिप्पु इल–अनिंद्य; चौल्लि–कहकर; नी–तुमने; इवळै–इसे; यातुम् ओर्–किसी भी; पऴिप्पिलळ्–निंदा से रहित; ॲन्ऱनै–बताया; पऴियुम्–कलंक भी; इन्ऱु–नहीं; इनि–अब; कऴिप्पिलळ्–निवारणीय नहीं; ॲन्ऱनन्–कहा। ३९८९

करुणहृदय श्रीराम ने कहा कि हे अग्नि! तुम लोकों के अक्षय साक्षी हो! वैसे तुमने अनिंद्य वचन कहकर इसे अकलंक बता दिया। इसलिए इसमें कोई अपराध नहीं है (यह साबित है)। अब वह अत्याज्या हो गयी। ३९८९

उणर्त्तु वायुण्मै यौऴिवित्ऱि कालमुवन् दुळदाल्
पुणर्त्तु मायैयिऱ् पौदुवुऱ् निन्ऱवै युणरा
इणर्त्तु ऴाय्त्तॊङ्ग लिरामऱ्कॆन्ऱ् ऱिमैयव रिशैप्पत्
तणप्पिल् तामरैच् चदुमुह नुरैशॆयच् चमैन्दान् 3990

पुणर्त्तुम्–अपनी ही रची; मायैयिल्–माया में; पौतु उऱ् निन्ऱु–सामान्य रहकर; अवै–उन बातों को; उणरा–नहीं जानते जैसे; इणर् तुऴाय्–गुच्छों की तुलसी; तॊङ्कल्–मालाधारी; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; कालम् वन्तुळताल्–उचित समय आ गया, अतः; उण्मै–सत्य; औऴिवित्ऱु–बिना छिपाये; उणर्त्तुवाय्–बता दें; ॲन्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों के; इचैप्प–कहने पर; तणप्पिल्–बिना हटे; तामरै–कमल पर रहनेवाले; चतुमुकन्–चतुर्मुख; उरै चॆय–बताने में; चमैन्तान्–लग गये। ३९९०

तब देवों ने ब्रह्मा से कहा कि समय आ गया जब स्वरचित माया के चक्कर में सामान्य जीवों के समान बरत कर, उन्हें न जानते से रहनेवाले गुच्छों-सहित तुलसीमाला के धारणकर्ता श्रीराम का रहस्य प्रकट किया जा सके। अतः सच्ची स्थिति को बिना दुराव के बताइए। यह सुनकर नाभीकमल को कभी न छोड़नेवाले चतुर्मुख ब्रह्मा श्रीराम के सच्चे रूपों के कथन में प्रवृत्त हुए। ३९९०

मन्तर् तॉल्कुलत् तवरिन्नत् तुणैयॊरु मनिदत्
ॲन्न वुन्नलै युन्नैनी यिरामके ळिदत्तेच्
चॊन्न नाल्मरै मुडिविनिर् रुणिन्दमॆय्त् तुणिवु
निन्न लादिल्लै निन्निन्वे ऱुळदिलै नॆडियोय् 3991

इराम्–श्रीराम; नॆडियोय्–महान (त्रिविक्रम); उन्नै–अपने को; तॊल् कुलत्तवर्–प्राचीन कुल के; मन्तर् इत्तम् तुणै–राजवंश में उत्पन्न; ओरु मनितन्–एक मानव हैं; ॲन्न–ऐसा; उन्नलै–नहीं समझें; नी–आप; इतत्ते–यह; केळ्–सुनिए; चॊन्न–प्रशंसित; नाल् मरै–चारों वेदों के; मुडिविनिल्–अंत में -(वेदान्त में); तुणिन्त मॆय्–निर्णीत तत्त्व; तुणिवु–निर्णय; निन् अलातु–आपको छोड़कर; इल्लै–कुछ नहीं; निन्निल् वेरु–आपसे अलग; उळतु इलै–रहनेवाली वस्तु कुछ नहीं। ३९९१

हे श्रीराम! महान पुरुष (त्रिविक्रमदेव)! आप अपने को एक पुरातन सूर्यवंश के राजकुल में उत्पन्न केवल एक मानव नहीं मान लें। आप ये बातें सुनिएगा। प्रकीर्तित वेदों के शीर्षस्थ वेदांत द्वारा निर्णीत परतत्त्व आपके सिवा अन्य कोई नहीं। आपसे परे कोई तत्त्व भी नहीं। ३९९१

पकुदि यॆन्ऱुळ दियादिनुम् बऴैयदु पयन्द
विकुदि याल्वन्द विळैवुमर् ऱदर्कुमेल् निन्ऱ
पुकुदि यावर्क्कु मरियवप् पुरुडनु नीयिम्
मिकुदि युन्पॆरु मायैयि नाल्वन्द वीक्कम् 3992

यातिनुम् पऴैयतु–सबसे पुरातन; पकुति ॲन्ऱु–प्रकृति नाम का; उळतु–(तत्त्व) है; पयन्त–उससे निकली; विकुतियाल् वन्त–विकृति से आये; विळैवुम्–कार्य-तत्त्व; मऱ्ऱु–और; अतर्कु मेल् निन्ऱ–उन तत्त्वों से परे जो हैं; यावर्क्कुम्–सबके लिए; पुकुति अरिय–अज्ञेय; अ पुरुटनुम्–वे पुरुष; नी–आप ही; इम् मिकुति–यह प्रपंच; उन्–आपकी; पॆरु मायैयिनाल्–बड़ी माया से; वन्त वीक्कम्–निकला विस्तार है। ३९९२

सबसे पुरातन तत्त्व मूलप्रकृति है! उसके विकार के कार्यरूप तत्त्व और उनसे परे सबके लिए अवेद्य वह पुरुष भी आप ही हैं! यह चराचर प्रपंच आपकी महान माया का विस्तार ही है। ३९९२

मुन्बु पिन्बिरु पुडैयॆन्ऱुङ् गुणिप्परु मुरैमैत्
तन्बॆ रुन्दन्मै तान्दॆरि मऱैहळिन् तलैहळ्
मन्बॆ रुम्बर मार्त्तमॆन् ऱुरैक्किन्ऱ माऱ्ऱम्
अन्ब निन्नैयल् लान्मऱ्ऱिङ् गियारैयु मरैया 3993

अन्प–दयालु; मुन्पु–पहले (आदि); पिन्पु–(बाद) और अन्त; इरु पुडै

ॲंतुम्–दो सीमाओं के; कुणिप्पु अरु–अननुमेय; मुरैमै–क्रम की; तम् पॅरु तन्नै–अपनी महानता को; ताम्–स्वयं; ऑरि–जाननेवाले; मरैकळिन्–वेदों के; तलैकळ्–शीर्ष; मन् पॅरु परमार्त्तम्–अति महान परमार्थ; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैक्किन्ऱ–जो कहते; माट्रम्–वे वचन; निन्नै अल्लाल्–आपको छोड़; इङ्कु–यहाँ आये रहे; यारैयुम्–किसी को; अऱैया–नहीं इंगित करते। ३९९३

जीवप्रेमी ! आदि और अंत की दो सीमा के अंदर अगण्य क्रम के अंदर आपकी महिमा को वेदान्त ही जानते हैं और वे आपको परमार्थ (परमतत्त्व) कहते हैं। वह कथन आपकी ओर ही संकेत करना छोड़ यहाँ के (आये) किसी को द्योतित नहीं करता। ३९९३

ऍनक्कु मॅण्वहै यॉरुवर्क्कु मिमैयवर्क् किऱैवन्
तनक्कुम् पल्पॅरु मुनिवर्क्कु मुयिरुडन् तळीइय
अनैत्ति नुक्कुनी येपर मॅन्वदै यऱिन्दार्
विनैत्तु वक्कुडै वीट्टरुन् दळैनिन्ऱु मीळ्वार् 3994

ऍनक्कुम्–मुझे और; ऍण् वहै यॉरुवर्क्कुम्–अष्टमूर्ति शिव के; इमैयवर्कु–देवों के; इऱैवन् तनक्कुम्–राजा के; पल्–अनेक; पॅरु मुनिवर्क्कुम्–बड़े मुनियों के; उयिरुटन्–जीवन से; तळी इय–युक्त; अनैत्तिनुक्कुम्–सभी के; नीये परम्–आप ही परम; ऍन्पतै–यह बात; अऱिन्तार्–जाननेवाले; विनै तुवक्कु उडै–कर्मों के कारण बने; वीट्ट अरुम्–अनिवार्य; तळै निन्ऱु–बन्धन से; मीळ्वार्–मुक्त होंगे। ३९९४

जो यह सूक्ष्म बात जानते हैं कि आप ही मेरे, अष्टमूर्ति शिव के देवेंद्र के और अनेक मुनिगणों के, क्यों समस्त जीवराशि के परे रहनेवाले परमतत्त्व हैं, कर्मद्वय के बंधन से छूट जाते है जो अन्यथा अवार्य हैं। ३९९४

ऍन्नैत् तान्मुद लाहिय वुरुवङ्ग ळॅवैयुम्
मुन्नैत् तायतन्दै यॅनुम्वॅरु मायैयिन् मूळ्हित्
तन्नैत् तानऱि यामैयिऱ् चलिप्पवच् चलन्दीर्न्
दुन्नैत् तादैयन् ऱुणर्हुव मुत्तिवित् तॊळिन्द 3995

ऍन्नै मुतलाकिय–मुझसे लेकर; उरुवङ्कळ् ऍवैयुम्–सारे रूप (जीव); मुन्नै–जन्म-हेतु; ताय् तन्तै ऍनुम्–माँ-बाप आदि की; मायैयिल् मूळ्कि–माया में डूबकर; तन्नै तान्–आप अपने को; अऱियामैयिन्–नहीं समझते इस कारण; चलिप्प–चंचल व दुःखी हैं; अ चलम्–वह अविद्या; तीर्न्तु–दूर करके; ऑळिन्त–अलग रहे जो; उन्नै–वे आपको; तातै ऍन्ऱु–पिता ऐसा; उणर्कुव–जानकर; मुत्ति वित्तु–मोक्ष के मूल हैं। ३९९५

मुझसे लेकर सारे जीव रूप अपने जन्म के हेतु माता-पिता आदि के बंधन रूपी माया में मग्न रहकर आत्मज्ञान खो देते हैं। इसलिए चंचल

और दुःखी होते हैं। उस अविद्या से जो छूटे हैं वे, जो आपको धाता (तथा आदिकारण) समझते हैं, मोक्ष के बीज बनते हैं। ३९९५

ऐयन् जाहिय तत्तुवन् दॅरिन्दरिन् दवऱ्ऱिन्
मॅय्यॅन् जावहै मेनिऩ्ऱ नित्तक्कुमेल् यादुम्
पॉय्यॅन् जाविल दॅन्नुमी दरुमऱै पुहलुम्
वैयन् जाऩ्ऱिनिच् चान्ऱुक्कुच् चाऩ्ऱिलै वऴक्काल् 3996

ऐयन्दु–पाँच के पाँच; आकिय–जो हैं वे; तत्तुवम्–तत्त्व; तॅरिन्तु अऱिन्तु–विचारकर जानें तो; अवऱ्ऱिऩ्–उनके; मॅय् ऍऩ्चा वर्क–सत्य को अक्षय रखकर; मेल् निऩ्ऱ–उनके ऊपर स्थित; नित्तक्कु मेल्–आपके ऊपर; यादुम्–कोई; पॉय्–असत्य; ऍऩ्चा इलतु–न बने; ऍऩ्ऩुम्–ऐसा जो कहा जाय; ईतु–यह सत्य; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेद; पुकलुम्–कहते हैं; वैयम् चाऩ्ऱु–भूलोक साक्षी है; इनि–अब; वऴक्काल्–व्यवहार में; चाऩ्ऱुक्कु–साक्षी के लिए; चाऩ्ऱिलै–साक्षी नहीं। ३९९६

पचीस तत्त्व हैं। (पाँच तन्मात्राएँ, पाँच भूत, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेंद्रिय, मन, चित्त, अहंकार, महत्— फिर जीव —ये पचीस तत्त्व हैं।) ये सब सत्य हैं। उनके परे आप हैं। आपसे परे कोई सत्य तत्त्व नहीं। यह श्रेष्ठ वेदों की सीख है। इसके सभी भूलोकवासी साक्षी हैं। फिर आपके कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं। क्योंकि प्रमाण का प्रमाण नहीं होता। ३९९६

अळवै यालळन् दामऩ्ऱॅन् ऱऱिवुऱुममैदि
उळवै यावैयु मुन्नक्किल्लै युपनिडत् तुन्नदु
कळवै यायन्दुऱत् तॅळिन्दिल दायिनुङ् गण्णाल्
तुळवै यायमुडि यायुळै नीयॅन्नत् तुणियुम् 3997

आय्—सुन्दर; तुळवै मुडियाय्—तुलसी से अलंकृत केशवाले; अळवैयाल्—प्रमाणों के आधार पर; अळन्तु—माप कर; आम् अन्ऱु—है, या नहीं; ऍन्ऱु—ऐसा; अरिवुऱुम्—जाने जायें; अमैत—वे व्यवस्थायें; उळवै—जो हैं; यावैयुम्—वे सब; उन्नक्कु इल्लै—आपके विषय में नहीं; उपनिटत्तु—उपनिषद्; उन्नतु कळवै—आपकी माया को; आयन्तु—खूब अन्वेषण करके; उऱ—ठीक-ठीक; तॅळिन्तिलतु—नहीं जानते; आयिनुम्—तो भी; कण्णाल्—(ज्ञान-) चक्षु से; नी उळै—आप हैं; ऍन—ऐसा; तुणियुम्—निश्चित रूप से कहते। ३९९७

सुंदर तुलसी से शोभित केशवाले ! आप प्रमाणों द्वारा हाँ, या नहीं के रूप में स्थिर करनेवालों में नहीं ! उपनिषदों ने आपकी माया की विचारणा करके ठीक तरह से जाना नहीं तो भी ज्ञानचक्षु द्वारा ज्ञेय बताया है। ३९९७

करण मॆऩ्ऱुळ वुऩ्ऩैवऩ् दऱिवुका णामे
अरण मल्लवर्क् किवैकडऩ् दऱिवरि दाह
मरणम् दोऱ्ऱमॆऩ् ऱिवऱ्ऱिडै मयङ्गुव ववर्क्कुऩ्
शरण मल्लदोर् शरणिल्लै यऩ्ऩवै तविर्प्पाऩ् 3998

अरणम्–आपकी शरण; अल्लवर्क्कु–जिन्हें नहीं मिली; अऱिवु वन्तु–ज्ञान हो और; काणामे–आपके दिव्य रूप न दिखे ऐसा; करणम् ॲऩ्ऱु–'करण' उळ–हैं; इवै–इन्हें; कटन्तु–पार करके; उऩ्ऩै–आपको; अऱिवु अरिताक–जानना कठिन है, इसलिए; मरणम्–मरण; तोऱ्ऱम्–जन्म; ॲऩ्ऱु–जो हैं; इवऱ्ऱिटै–इनके मध्य; मयङ्कुप–भ्रमित रहते हैं; अवर्क्कु–उन्हें; अऩ्ऩवै–उनसे; तविर्प्पाऩ्–दूर होने के लिए; उऩ् चरणम्–आपके श्रीचरणों के; अल्लतु–अलावा; ओर्–कोई; चरण् इल्लै–आश्रय नहीं। ३९९८

आपका शरणागत होकर जिसने अनुभवगम्य ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, उससे आपके दिव्य रूप को छिपा देते उसके करण कलेवर! इनसे परे जाकर आपको पहचानना कठिन रहता है। इसलिए जन्म-मरण के चक्कर में फँसे भ्रमित रहते हैं। उनसे बचने के लिए आपकी शरण के सिवा अन्य कोई शरण नहीं! । ३९९८

तोऱ्ऱ मॆऩ्बदॊऩ् ऱुऩक्किल्लै निऩ्कणे तोऱ्ऱुम्
आऱ्ऱल् शाऩ्मुदऱ् पहुदिमऱ् ऱदनुळाम् बण्बाल्
काऱ्ऱै मुऩ्ऩुडैप् पूदङ्ग ळवैशॆऩ्ऱु कडैक्काल्
वीऱ्ऱु वीऱ्ऱुऱ्ऱु वीवुऱु नीयॆऩ्ऱुम् विळिपाय् 3999

उऩक्कु–आपका; तोऱ्ऱम् ॲऩ्पतु–जन्म ऐसा; ऒऩ्ऱु इल्लै–कुछ नहीं; आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; मुतल् पकुति–मूलप्रकृति; निऩ् कणे–आपसे ही; तोऱ्ऱुम्–प्रगट होती है; मऱ्ऱु–और; अतऩ् उळाम् पण्पाल्–उससे उत्पन्न होने से; काऱ्ऱै मुऩ् उटै–वायु आदि; पूतङ्कळ् अवै–पाँच भूत जो हैं वे; कटैक्काल्–युगक्षय में; चॆऩ्ऱु–जाकर; वीऱ्ऱु वीऱ्ऱु उऱ्ऱु–अलग-अलग हो; वीवु उऱुम्–मिट जायेंगे; नी–आप; ॲऩ्ऱुम्–सदा; विळिपाय्–नहीं मरते। ३९९९

आप अजन्मा हैं। सर्वशक्त मूल प्रकृति आप ही से प्रगट होती है। अन्य प्रपंच उसी से निकलते हैं। इसलिए वायु से लेकर सभी भूत और अन्यत त्व युगक्षय के अवसर पर चूर होकर मिट जाते हैं। ३९९९

मिऩ्ऩैक् काट्टुदल् पोल्वन्दु विळियुमिव् वुलहम्
तऩ्ऩैक् काट्टवुऩ् दऩमऩ्ऩै नाट्टवुऩ् वनिये
ॲऩ्ऩैक् काट्टुदि यिऩ्ऱियुङ् गाट्टुदि यॆऩक्कु
मुऩ्ऩैक् काट्टलै यॊळिक्किऩु मिलैमऱ् ऱुरैयाल् 4000

मिऩ्ऩै–बिजली को; काट्टुतल् पोल्–प्रकट करता जैसे; वन्तु–आकर;

विळियुम्–मिटनेवाला; इव् उलकम् तन्नै–इस संसार को; काट्टवुम्–प्रगट कराना और; तरुमत्तै–धर्म; नाट्टवुम्–संस्थापना करना; नी तनियै–आप अकेले; ॲन्नै–मुझे; काट्टुति–प्रगट कराते हैं; इरुतियुम्–अंत को भी; काट्टुति–दिखाते हैं; ॲनक्कु–मुझे भी; उन्नै–अपने को; काट्टलै–नहीं दिखाते; ऑळिक्किनुम्–अदृश्य रहें तो भी; मऱै उरैयाल्–वेदवचन-ज्ञान के कारण; इलै–नहीं (अ-जाने) रहते। ४०००

मेघों द्वारा प्रगट विद्युत् के समान प्रगट होकर अदृश्य होनेवाले इस प्रपंच को प्रगट कराने और धर्मसंस्थापन करने के लिए आप केवल मुझे रच देते हैं। फिर सबका अंत भी करा देते हैं। तो भी आप मुझे अपने रूप को नहीं दिखाते। आप अगोचर रहें तो भी वेदवाक्यों के आधार पर मैं आपको पहचान लेता हूँ, इसलिए आप मेरे लिए अज्ञात नहीं रहते। ४०००

ॲन्नु रुक्कॊंडिव् वुलहिनै यीनुदि यिडैयॆ
उन्नु रुक्कॊडु पुहुन्दुनिन् ऱोम्बुदि युमैयोन्
तन्नु रुक्कॊडु तुडैत्तिमर् ऱिदुतनि यरुक्कन्
मुन्नु रुक्कॊडु पहल्सॆयुन् दरत्तदु मुदलोय् 4001

मुतलोय्–आदिदेव; ॲन्–मेरा; उरु कॊंडु–रूप धरकर; इव् उलकिनै–इस संसार को; ईनुति–सृष्ट करते हैं; उन्–अपने; उरु कॊंडु–रूप में आकर; इडैयॆ–मध्य में; पुकुन्दु–प्रवेश करके; निन्ऱु ओम्पुति–स्थिति देकर पालन करते हैं; उमैयोन् तन्–उमापति का; उरु कॊंडु–रूप धरकर; तुडैत्ति–संहार कराते हैं; इदु–यह; तनि अरुक्कन्–विशिष्ट सूर्य; मुन्–समक्ष के; उरु कॊंडु–रूप से; पकल्–अह्न; सॆयुम्–जो बनाता; तरत्ततु–उस-सरीखा है। ४००१

हे आदिदेव! मेरा रूप ले आप इस संसार को जनाते हैं। अपना रूप लेकर उसे स्थिति देकर मध्य रहकर पालते हैं। फिर उमापति का रूप लेकर उसे पोंछ लेते हैं। यह वैसा है जैसा अर्क सबके समक्ष रहकर अह्न बना लेता हो। ४००१

तिरुक्कु वान्मलि सॆल्वत्तुच् चॆरुक्कुवेन् दिऱत्तुत्
तरुक्कु माय्वुऱत् तानव ररक्कर्वॆञ् जमरिल्
इरिक्क माळ्हिनोन् दुनैप्पुहल् याम्बुह वियैयाक्
करुक्कु ळाय्वन्दु तोऱ्ऱुदि यीङ्गिदु कडनो 4002

तिरुकुवाल्–श्री ढेर में हो; मलि–ऐसी अधिक; चॆल्वत्तु–निधि से; चॆरुक्कुवेम्–घमंड जो करते ऐसे हमारे; तिऱत्तु–पास के; तरुक्कु–गर्व को; माय्वु उऱ–मिटाते हुए; तानवर्–दानवों; अरक्कर्–और राक्षसों के; वॆम् चमरिल्–कठोर युद्ध में; इरिक्क–हमें भगाने पर; याम्–हम; माळ्कि–क्षुब्ध होकर; नॊन्तु–वेदना पाकर; याम् उनै–हम आपको; पुकल् पुक–शरण में आये तो; इयैया–बिलकुल बेमेल रूप से; करुक्कुळ–गर्भ में जन्म; आय् वन्तु–ले आकर; ईङ्कु–यहाँ; तोऱ्ऱुति–प्रगट होते हैं; इतु कटनो–यह आपके लिए फ़र्ज है क्या। ४००२

श्रीसंपन्नता से हम गर्वीले हो जाते हैं। वैसे हमारे गर्व को तोड़ने के हेतु देव-दानव युद्ध में हमें हारकर भागने की गति देते हैं। हम क्षुब्ध होकर आपकी शरण आते हैं तो आप अपने लिए निपट अनमेल रूप से गर्भ में आकर यहाँ अवतार लेते हैं। यह आपका फ़र्ज़ है क्या ? । ४००२

ओङ्गा रप्पॊरुळ् तेरुवोर् तामुन्नै युणर्वोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॆन्रुणर्न् दिरुविनै युहुप्पोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळामन्रॆन् रूऴिशॆन् ड्रालुम्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॊपॊरु ळॆन्गला वुरवोर् 4003

ओङ्कारम्–ओंकार (प्रणव) का; पॊरुळ्–अर्थ के; तेरुवोर् ताम्–ज्ञाता लोग; उन्नै–आपको; उणर्वोर्–जानते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळ्–ओंकार-तत्त्व; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तु–जानकर; इरु विनै–दोनों कर्मों को; उकुप्पोर्–दूर कर देते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळे–हे प्रणव-तत्त्व ही; पॊरुळ्–तत्त्व है; ऍन्कला–ऐसा जो नहीं जानें; उरवोर्–ऐसे लोग; ओङ्कारप् पॊरुळे–प्रणव-तत्त्व आपको; आम् ऍन्ऱुम्–हैं, ऐसा; अन्ऱु ऍन्ऱु–नहीं ऐसा; ऐयुऱ्ऱु–संशय करके; ऊऴि चॆन्ऱालुम्–युग-युग बीतें तो भी । ४००३

प्रणवार्थ जाननेवाले आपको प्रणवरूप जानते हैं, अतः कर्मद्वय के बंधन से छूट जाते हैं। प्रणवार्थ को ही परमार्थ न समझ सकनेवाले प्रणवरूप आपके संबंध में, हाँ या नहीं के संशय में रहते हैं और युग के युग बीत जाते हैं। (पर उनका निस्तार नहीं होता।) ४००३

इन्नैय दाहलि नॆन्नैयुमून् ऱुलहैयु मीन्ऱु
मन्नैयिन् माट्चियै वळर्त्तवॆम् मोयिनै वाळा
मुनैय लॆन्ऱदु मुडित्तनन् मुन्वुनीर् मुळैत्त
शिन्नैयिन् पन्दमुम् बहुदिह ळन्नैत्तैयुञ् जॆय्दोन् 4004

मुन्वु नीर्–सर्वपुरातनता के; मुळैत्त–नाभिकमलोत्पन्न; चिन्नैयिन् पन्तमुम्–(जीवों के) शरीर-बंधन और; पकुतिकळ् अन्नैत्तैयुम्–विविध विभागों को; चॆय्तोन्–जिसने रचाया; इन्नैयतु–आपका रूप ऐसा है; आकलिन्–इसलिए; ऍन्नैयुम् मून्ऱु उलकैयुम्–मुझे और तीनों लोकों को; ईन्ऱु–जनाकर; मन्नैयिन् माट्चियै–गृहस्थी की महिमा को; वळर्त्त–गृहस्थी चलाकर बढ़ानेवाली; ऍम् मोयिनै–हमारी जननी से; वाळा मुनैयल्–व्यर्थ कोप न करें; ऍन्ऱु–ऐसा; अतु–अपना अभिप्राय जो था उसे; मुडित्तनन्–कहकर समाप्त किया । ४००४

सबसे पुरातन (श्रीविष्णु) के नाभीकमल से उत्पन्न और जीव-शरीर-बंधन और जीवों के विविध विभागों के रचयिता ब्रह्मा ने कहा कि यही आपका सच्चा स्वरूप हैं। इसलिए आप सीताजी से व्यर्थ कोप न करें,

जिन्होंने हमें और तीनों लोकों को जनाया और जो कि आज गृहस्थ धर्म पाल रही हैं। ब्रह्मा ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की। ४००४

ऍन्ऱु मात्तिरत् तेऱमर् कडवुळ् मिशैत्तान्
उन्नै नीयॊन्ऱु मुणर्न्दिलै पोलुमा लुरवोय्
मुन्नै यादिया मूर्त्तिनी मूवहै युलहिन्
अन्नै शीदैया मादुनिन् मार्बिन्वन् दमैन्दाळ् 4005

ऍन्ऱु मात्तिरत्तु–कहने पर; एऱु–ऋषभ पर; अमर्–आसीन; कटवुळुम्–ईश्वर ने; इचैत्तान्–कहा; उरवोय्–पराक्रमी; नी–आप; उन्नै–अपने को; ऑन्ड्रम्–कुछ; उणर्न्तिलै पोलुम्–नहीं समझे शायद; नी–आप; मुन्नै–बहुत; आतियाम् मूर्त्ति–आदिमूर्ति है; मूवकै उलकिन्–त्रिविधि लोकों की; अन्नै–माता; चीतैयाम् मातु–सीतादेवी; निन्–आपके; मार्पिन्–श्रीवक्ष पर; वन्तु अमैन्ताळ्–आ रहनेवाली लक्ष्मी ही हैं। ४००५

ब्रह्मा के यह कह चुकने पर ऋषभवाहन शिवजी ने अपनी ओर से निम्नोक्त बातें कहीं। हे पराक्रमी! आप अपने को कुछ नहीं जानते क्या? आप अनादि परब्रह्म हैं। ये देवी त्रिलोकमाता आपके श्रीवक्ष की निवासिनी ही हैं। ४००५

तुऱक्कुन् दन्मैय ळल्लळाऱ् ऱॊल्लैयॆव् वुलहुम्
पिऱक्कुम् बॊन्वयिऱ् ऱन्नैयिप् पॆय्वळै पिळैक्किन्
इऱक्कुम् बल्लुयि रिऱैवनी यिवळ्तिऱत् तिहळ्च्चि
मऱक्कुन् दन्मैय दॆन्ऱनन् वरदर्क्कुम् वरदन् 4006

इऱैव–सर्वेश्वर; तॊल्लै–पुरातन; ऍव् उलकुम्–सभी लोक; पिऱक्कुम्–जनम जहाँ से ले; पॊन् वयिऱ्ऱु अन्नै–ऐसे सुन्दर पेट की माता; तुऱक्कुन्–त्याज्य हों; तन्मैयळ्–ऐसी स्थिति की; अल्लळ्–नहीं हैं; इ पॆय्वळै–इन कंकणहस्ता के प्रति; पिळैक्किन्–ग़लत भाव रखेंगे तो; पल् उयिर्–अनेक जीव; इऱक्कुम्–मर जायेंगे; नी–आप; इवळ् तिऱत्तु–इनके प्रति; इकळ्च्चि–अपमान का भाव; मऱक्कुम्–भुलाने; तन्मैयतु–योग्य है; ऍन्ऱनन्–कहा; वरतर्क्कुम्–वरदों के भी; वरतन्–वरद ईश्वर ने। ४००६

सर्वेश्वर! सर्वलोकोद्भवस्थान, सुंदर-गर्भ की माता सीता त्याज्या नहीं! इन कंकणहस्ता के प्रति आप ग़लत धारणा करेंगे तो अनेक जीव मर जायँगे। आपका इनके प्रति ग़लत भाव भूलने योग्य है। वरदवरद ने ऐसा कहा। ४००६

पिन्नु नोक्किनान् पॆरुन्दहैप् पुदल्वनैप् पिरिन्द
इन्नल् लालुयिर् तुऱन्दिरुन् दुऱक्कत्तु ळिरुन्द

मन्नर् चन्ऱनिन् मैन्दनै मनङ्गॊळन् तॆरुट्टि
मुन्नै वान्दुयर् नीक्कुदि यॆन्ऱान् 4007

पिन्नुम्–और भी; नोक्कितान्–विचार करके; पॆरुतकै–महान योग्य; पुत्तल्वनै–अपने पुत्र से; पिरिन्त–बिछुड़े रहे; इन्नतलाल्–दुःख से; उयिर् तुरन्तु–प्राण छोड़कर; इरु तुरक्कतत्तुळ्–श्रेष्ठ मोक्ष में; इरुन्त–जो रहे; मन्नन् चॆन्ऱु–उन (दशरथ) राजा के पास जाकर; मॊय्म्पिलोय्–बलवान; निन् मैन्तनै–आपके पुत्र को; मनम् कॊळ–धीरज धरने; तॆरुट्टि–धैर्य दें; मुन्नै–पहले से रहे; वान् तुयर्–बड़े दुःख को; नीक्कुति–दूर कर लें; ऎन्ऱान्–कहा। ४००७

परमेश्वर ने और सोचा। फिर वे दशरथ के पास गये जो पुत्र-वियोगदुःख से प्राण त्यागकर महान श्रीवैकुण्ठलोक (मोक्ष) में रहे। उनसे कहा कि बलवान! आप अपने पुत्र के पास जायँ और उन्हें समझायें और अपना गहरा दुःख दूर करें। ४००७

आदि यान्पणि यरुळ्पॆऱ्ऱ्र् वरशरुक् करशन्
कादल् मैन्दनैक् काणिय वुवन्ददोर् करुत्ताल्
पूद लत्तिडैप् पुक्कनन् पुहुदलुम् नीरिल्
वेद वेन्दनु मवन्मलर्त् ताळ्मिशै विळुन्दान् 4008

आतियान्–आदि ईश्वर की; पणि अरुळ् पॆऱ्ऱु–कृपापूर्ण आज्ञा जिन्होंने पायी; अरचर्क्कु अरचन्–उन राजा के राजा; कातल् मैन्तनै–प्रिय पुत्र को; काणिय–देखने की; उवन्ततु–चाह करके; ओर् करुत्ताल्–उस राय के साथ; पूतलत्तु–भूतल; इटै पुक्कनन्–मध्य आये; पुकुतलुम्–आते ही; नीरु इल्–अनुपम; वेतम् वेन्तनुम्–वेद नाथ भी; अवन्–उनके; मलर् ताळ्–कमल-चरणों; मिचै–पर; विळुन्तान्–गिरे। ४००८

राजाधिराज दशरथ आदिनाथ, शिवजी की कृपाज्ञा पाकर अपने पुत्र को देखने की मोदपूर्ण इच्छा से भूमि पर आये। उनके आते ही अप्रतिम वेदपति ने उनके चरणकमलों में गिरकर दण्डवत् की। ४००८

वीऴ्न्द मैन्दनै यॆडुत्तुत्तन् विलङ्गला हत्तिन्
आऴ्न्द ऴुन्दिडत् तऴुवित्तन् कण्णिनी राट्टि
वाऴ्न्द शिन्दैयिन् मनङ्गळुङ् गळिप्पुर मन्नन्
पोऴ्न्द तुन्बङ्गळ् पुरप्पड नित्तिरिवै पुहन्ऱान् 4009

मन्नन्–राजा दशरथ; वीऴ्न्त–गिरे; मैन्तनै–पुत्र को; ऎटुत्तु–उठाकर; तन्–अपने; विलङ्कल्–पर्वतोपम; आकत्तिन्–वक्ष से; आऴ्न्तु–खूब; अऴुन्तिट–दबाकर; तऴुवि–लगाकर; तन्–अपनी; कण्णिन्–आँखों के; नीर् आट्टि–जल से नहलाकर; वाऴ्न्त–जी गये ऐसे; चिन्तैयिन्–विचार के साथ; मनङ्कळुम्–अंतःकरणों के भी; कळिप्पु उऱ–आनंद विभोर होते; पोऴ्न्त–काटते

रहे; तुन्पक्कळ्-दुःखों के; पुऱप्पट-बाहर निकलते; निन्ऱु-खड़े रहकर; इवै पुकन्ऱान्-ये बातें बोले। ४००९

दशरथ ने उनको उठाया और अपने पर्वतोपम वक्ष से खूब दबाते हुए गाढ़ालिंगन किया। अपने अश्रु से उन्हें नहला-सा दिया। उन्हें लगा कि मेरा उद्धार हो गया और मेरा जीवन सार्थक हो गया। उनके अंतःकरण आनंदविभोर हो गये और उन्हें तोड़ते रहे दुःख दूर हुए। वे यों बोले। ४००९

अन्ऱु केहयन् महळ्कॊण्ड वरमॆन्नु मयिल्वेल्
इन्ऱु काऱुमॆन् ऩिदयत्ति ऩिडैनिन्ऱ दॆन्ऩैक्
कॊन्ऱु नीङ्गल दिप्पॊऴु दहन्ऱदुन् कुलप्पूण्
मन्ऱ लाहमाङ् गान्दमा मणियिन्ऱु वाङ्ग 4010

अन्ऱु-उस समय; केकयन् मकळ्-केकयतनया ने; कॊण्ट-जो पाया; वरम् ऍन्नुम्-वह वर रूपी; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाला; इन्ऱु काऱुम्-आज तक; ऍन्-मेरे; इतयत्तिन् इटै-हृदय-मध्य; निन्ऱतु-स्थित है; ऍन्नै-मुझे; कॊन्ऱु-मरवाकर भी; नीङ्कलतु-छोड़ता नहीं था; उन् कुलम् पूण् मन्ऱल्-तुम्हारे श्रेष्ठ आभरणधारी तथा सुगंधपूर्ण मालाधारी; आकमाम्-वक्ष रूपी; कान्तम् मा मणि-लोहकांतामणि ने; इन्ऱु वाङ्क-आज खींच लिया, तो; इप्पॊऴुतु-अब; अकन्ऱतु-दूर हुआ। ४०१०

उस दिन केकयसुता ने जो वर मुझसे लिया था वह वर रूपी शूल आज तक मेरे वक्ष में चुभा रहा। मेरे मरने के बाद भी वह दूर नहीं हुआ था। पर आज तुम्हारे आभरणमंडित तथा सुगंध-माला-विभूषित वक्ष रूपी लोहकांतामणि ने (आलिंगन के समय) उसे निकाल बाहर कर दिया। ४०१०

मैन्द रैप्पॆऱ्ऱु वानुयर् तोऱ्ऱत्तु मलर्न्दार्
शुन्द रप्पॆरुन् दोळिता यॆन्नुणैत् ताळिन्
पॆन्दु हट्कळु मॊक्किल रामॆनप् पडैत्ताय्
उय्न्द वर्क्करुन् दुऱ्क्कमुम् बुहळुम्बॆऱ् ऱुयर्न्देन् 4011

चुन्तरम्-सुन्दर; पॆरु तोळिताय्-बड़ी भुजा वाले; मैन्तरै-पुत्रों को; पॆऱ्ऱु-पाकर; वानुयर्-आकाश-सम उन्नत; तोऱ्ऱत्तु-दृश्य के साथ; मलर्न्तार्-जो शोभित रहे वे भी; ऍन्-मेरे; तुणै ताळिन्-चरणद्वय की; पैन्तुकळ्कळुम्-छोटी धूलि की; ऒक्किलर्-समानता नहीं कर सके; आम् ऍन-हाँ, ऐसा; पटैत्ताय्-मुझे गौरव दिलाया; उय्न्तवर्क्कु-कर्ममुक्तों के लिए भी; अरु-दुर्लभ; तुऱक्कमुम्-मोक्ष (वैकुंठ) लोक और; पुकळुम्-यश; पॆऱ्ऱु-पाकर; उयर्न्तेन्-बड़ा हो गया। ४०११

सुन्दर-महा-बाहु ! पुत्र पाकर गगनोन्नत गौरव के साथ जो शोभित थे, वे भी मेरे चरणद्वय की धूलि के बराबर नहीं हो सके, ऐसा गौरव तुमने मुझे दिलाया था। और भी कर्मविमुक्त भाग्यवानों के लिए भी दुर्लभ मोक्ष और अपर यश पाकर मैं बहुत उत्कृष्ट हो गया। ४०११

पण्डु नान्तॊऴुन् देवरु मुनिवरुम् बाराय्
कण्डु कण्डॆनैक् कैत्तलङ् गुविक्किन्ऱ काट्चि
पुण्ड रीहत्तुप् पुरादनन् तनॊडुम् बॊरुन्दि
अण्ड मूलत्तॊ राशनत् तिरुत्तिनै यऴह 4012

अऴक–सुन्दरमूर्ति; पण्टु–पहले; नान्–मैं; तॊऴुम्–जिन्हें नमस्कार करता था; तेवरुम्–वे देव; मुनिवरुम्–और मुनि; ऎन्नै–मुझे; कण्टु कण्टु–देख-देखकर; कै तलम्–करतल; कुविक्किन्ऱ–जोड़ते; काट्चि–वह दृश्य; पाराय्–देखो; पुण्टरीकत्तु–नाभीकमलोत्पन्न; पुरातनन् तनॊटुम्–पुरातन ब्रह्मा के साथ; पॊरुन्ति–सम रहकर; अण्टम् मूलत्तु–अण्डगोल के ऊपर; ओर्–एक; आचनत्तु–आसन पर; इरुत्तिनै–विराजित करा दिया। ४०१२

सुंदरमूर्ति ! देखो। पहले जिन्हें मैं नमस्कार करता था वे देव और ऋषि अब मेरी ओर बार-बार दृष्टि देकर हाथ जोड़ रहे हैं। तुमने मुझे पुरातन देवता श्रीविष्णु के नाभीकमल से उद्भूत ब्रह्मा के समकक्ष अंडगोल के ऊपर एक आसन पर विराजमान करा दिया है ! । ४०१२

ऎन्ऱु मैन्दनै यॆडुत्तॆडुत् तिऱुहुऱत् तऴुविक्
कुन्ऱु पोन्ऱुऴ तोळिनान् शीदैयैक् कुऱुहत्
तन्ऱु णैक्कऴल् वणङ्गलुङ् गरुणैयाऱ् ऱऴुवि
निन्ऱु मऱ्ऱिवै निहऴ्त्तिना निहऴ्त्तरुम् बुहऴोन् 4013

ऎन्ऱु–कहकर; मैन्तनै–पुत्र को; कुन्ऱु पोन्ऱु–पर्वत के समान; उऴ तोळिनान्–रहे कंधोंवाले; ऎटुत्तु ऎटुत्तु–बार-बार उठाकर; इऱुकुऱ तऴुवि–खूब गले लगाकर; चीतैयै कुऱुक–सीता के पास गये; तन् तुणै कऴल्–तो उनके चरणद्वय पर; वणङ्कलुम्–नमस्कार करने पर; निकऴ्त्तरुम्–अकथनीय; पुकऴोन्–यशस्वी; करुणैयाल्–कृपा के साथ; तऴुवि निन्ऱु–आलिंगन करके रहकर; इवै–ये; निकऴ्त्तिनान्–कहे। ४०१३

यह सब कहकर पर्वतोपम कंधों वाले दशरथ ने अपने पुत्र को बार-बार उठाकर गाढ़ालिंगन कर लिया। फिर सीतादेवी के पास गये तो उन्होंने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अवर्णनीय यशस्वी दशरथ ने उन्हें करुणा के साथ आलिंगन में लेकर निम्न बातें कहीं। ४०१३

नङ्गै मऱ्ऱुनिन् कऱ्पिनै युलहुक्कु नाट्ट
अङ्गि पुक्किडॆन् ऱुणर्त्तिय वडुमनत् तडैयेल्

शङ्गै युर्रवर् तेरुव दुण्डदु शरदम्
कङ्गै नाड्डैक् कणवनै मुनिवुरक् करुदेल् 4014

नङ्कै–देवी; निन् कर्पिनै–तुम्हारे पातिव्रत्य को; उलकुक्कु–लोक में; नाट्ट–स्थापित कराने; अङ्कि–आग में; पुक्किटु–प्रवेश करो; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्त्तिय–जो कहा; अतु–वह बात; मनत्तु अटैयेल्–मन में मत रखो; चङ्कै–शंका; उर्रवर्–करनेवाले; चरतम्–सत्य कराकर; अतु तेरुवतु उणटु–उससे समाधान पाने की प्रथा है; कङ्कै नाटु–गंगासिंचित देश के; उटै कणवनै–स्वामी पति से; मुनिवु उर–कोप करना; करुतेल्–मत सोचो। ४०१४

देवी ! तुम्हारे पातिव्रत्य की महिमा को लोक में प्रगट कराने के निमित्त ही राम ने जो कहा कि अग्नि में प्रवेश करो उस बात को मन में मत रखो। कभी शंका पैदा हो तो शंका के पात्र से सत्य को प्रमाणित करने को कहना और शंका निवारण करा लेना —यह प्रचलित बात ही है ! इसलिए गंगासिंचित कोसल देश के स्वामी अपने पति से गुस्सा करने की बात मन में मत लाओ। ४०१४

पोन्नैत् तीयिडैप् पॅय्वदप् पॉन्नुडैत् तूय्मै
तन्नैक् काट्टुदर् कॅन्बदु मनक्कोळल् तहुदि
उलैक् काट्टिनन् कर्पिनुक् करशियॅन् रुलहिल्
पिन्नैक् काट्टुव दरियदॅन् रॅण्णियिप् पॅरियोन् 4015

पोन्नै–स्वर्ण को; ती इटै–आग में; पॅय्वतु—डालना; अ पॉन् उटै–उस स्वर्ण की; तूय्मै तन्नै–शुद्धता को; काट्टुतर्कु–दिखाने हेतु; ऍन्पतु–वह बात; मनम् कॉळल्–मन में रखना; तकुति–उचित है; इ पॅरियोन्–यह महापुरुष; उलकिल्–लोक में; पिन्नै—बाद को; काट्टुवतु अरियतु–प्रगट कराना कठिन; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णि–समझकर; कर्पिनुक्कु अरचि–पातिव्रत्य की रानी; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नै काट्टिनन्–तुम्हें दिखाया। ४०१५

'स्वर्ण को आग में तपाना उसकी शुद्धता को प्रमाणित कराने के निमित्त ही' —यह बात मन में धारण करने अर्ह है ! महिमावान राम ने सोचा कि पीछे कभी तुम्हारी महिमा प्रकट कराने के संदर्भ का आना कठिन है। इसलिए सभी लोकों को प्रमाणित करा दिया कि तुम पतिव्रताओं में रानी हो। ४०१५

पॅण्पि रन्दव रुन्ददि येमुदर् पॅरुमैप्
पण्पि रन्दवर्क् करुङ्गल माहिय पावाय्
मण्पि रन्दह मुनक्कुनी यानिन्रुम् वन्दाय्
ऍण्पि रन्दनिन् कुणङ्गळुक् किन्नियिळुक् किलैयाल् 4016

पॅण् पिरन्तवर्–स्त्री-जाति; अरुन्ततिये मुतल्–अरुंधती आदि; पॅरुमै

पण्पु–महिमामय पातिव्रत्य गुण; इरुन्तवर्क्कु–जिनमें खूब है उनके लिए; मर कलम् आकिय–अतिश्रेष्ठ आभरण; पावाय्–(सम) देवी सीता; उनक्कु–तुम्हारा; पिऱन्तकम्–जन्मस्थान; मण्–पृथ्वी है; नी–तुम; वानिन्ऱुम्–आकाश से; वन्ताय्–आयीं; इनि–अब; निन् ऍण्पु इऱन्त–तुम्हारे अगणित; कुणङ्कळुक्कु–गुणों को; इऴुक्कु इलै–कोई कमी नहीं। ४०१६

हे अरुंधती आदि अपार चारित्र्यवती स्त्रियों के श्रेष्ठ शृंगार-सी देवी ! प्रतिमा-सी सीते ! तुम (परमपद) वैकुंठ से आयीं और पृथ्वी से प्रकट हुईं। फिर तुम्हारे अनगिनत सद्गुणों पर क्या वट्टा लगेगा ? नहीं लगेगा। ४०१६

ऍन्ऱनन् कूऱिड वेन्दिऴै तिरुमनत् तियादुम्
उन्ऩच् चॅय्वदोर् मुनिविन्मै मनङ्गॊळा वुवन्दाळ्
पिन्नैच् चॅम्मलव् बिळवलै युळ्ळन्बु पिणिप्पत्
तन्नैत् तानॅनत् तऴुविनन् कण्गणीर् तदुम्ब 4017

ऍन्ऩ कूऱिट–ऐसा कहने पर; अव् एन्तिऴै–उस आभरणालंकृता के; तिरुमनत्तु–श्रीमन में; यातुम्–कोई; उन्ऩ चॅय्वतु–याद कराये ऐसे; ओर्–एक; मुनिविन्मै–क्रोध की हीनता को; मनम् कॊळा–मन में बना लेकर; उवन्ताळ्–मुदित हुईं; पिन्नै–बाद; चॅम्मल्–श्रेष्ठ राजा ने; उळ् अन्पु पिणिप्प–अंदर के प्रेम के बंधन से; कण्कळ् नीर् ततुम्प–आँखों में अश्रु के भरते; अव् इळवलै–उन लघुराज को; तन्नै तान् ऍन–स्वयं आप अपने को जैसे; तऴुवितन्–आलिगन कर लिया। ४०१७

दशरथ ने ये बातें कहीं तो वे आभरणभूषिता सीताजी अपने उन्नत मन में किसी भी स्मरणीय,क्रोध की हीनता का अनुभव करके खुश हुईं। फिर श्रेष्ठ राजाधिराज दशरथ ने आंतरिक प्रेम से बद्ध होकर, आँखों से स्नेहाश्रु बहाते हुए श्रीराम के कनिष्ठ को, अपने-आप को ही आलिंगन कर रहे हों, ऐसा (दोनों को एक बनाते हुए) कसकर आलिंगन कर लिया। ४०१७

कण्णि नीर्प्पॅरुन् दारैयर् ऱवन्ऱाडैक् कडुरै
मण्णि नीत्तमॊत् तिऴितरत् तऴीइनिन्ऱु मैन्द
ऍण्णि नीक्करुम् विऱलियु मॅन्नॅन्जि निऱन्द
पुण्ण नीक्किनै युमैयनैत् तॊडर्न्दुडन् पोन्दाय् 4018

कण्णिन् नीर्–आँखों के जल की; पॅरु तारै–बड़ी धारा; अवन्–उनकी; कडुरै पटै–जटाजूट को; मण्णिन् मीत्तम्–स्नान कराने पर बहते जल; ऒत्तु–के जैसे; इऴि तर–बहते; तऴी इ निन्ऱु–आलिगन करके खड़ा रहकर; मैन्त–पुत्र; उमैयनै–तुम्हारे ज्येष्ठ का; तॊटर्न्तु–अनुसरण करके; उटन् पोन्ताय्–साथ आये;

अॅण्णिल्–असंख्य; नीक्क अरु पिऱविगुम्–दुर्वार जन्म और; अॅन् नॅञ्चिल्–मेरे मन के; इऱन्त–अपार; पुण्णुम् नीक्किनै–दुःखों को दूर कर दिया। ४०१८

उनकी आँखों से आँसू की धारा मानो लक्ष्मण की जटाजूट को नहलाकर नीचे उतरे, ऐसा आलिंगन करके उन्होंने कहा। हे मेरे पुत्र ! अपने भाई का अनुगमन करके तुम उसके साथ वन में आये हो ! इससे तुमने अपने अनंत जन्मों को और मेरे मन के व्रणों को काट दिया। ४०१८

पुरन्द रऩ्पॅरुम् बहैञनैप् पोर्वॅन्ऱ वुऩ्ऱऩ्
परन्दु यर्न्दतो ळाऱ्ऱले तेवरुम् बलरुम्
निरन्द रम्बुहल् हिऩ्ऱदु नीयिन्द वुलहिऩ्
अरन्दै यास्बहै तुडैत्तऱ निऱुत्तिनै यैय 4019

ऐय–तात; पुरन्तरऩ्–पुरंदर के; पॅरु पकैञनै–बड़े शत्रु को; पोर् वॅन्ऱ–युद्ध में हरानेवाले; उऩ्ऱऩ्–तुम्हारे; परन्तु उयर्न्त तोळ्–विशाल उन्नत कंधों का; आऱ्ऱले–बल ही; तेवरुम्–देवों और; पलरुम्–अन्य अनेकों का; निरन्तरम्–निरंतर; पुकल्किऩ्ऱतु–कथन-विषय है; नी–तुम; इन्त उलकिऩ्–इस संसार को; अरन्तै–त्रास देनेवाला; आम् पकै–जो है उस शत्रु को; तुटैत्तु–दूर करके; अऱम् निऱुत्तिनै–धर्म स्थापित कर गये। ४०१९

हे सुंदरमूर्ति ! इन्द्र के बड़े शत्रु इन्द्रजित् को युद्ध में हराकर मारने वाले तुम्हारे विशाल और उन्नत कंधे ही देवों की सतत प्रशंसा के विषय रहते हैं ! तुमने लोकशत्रु को मिटाया और धर्म को स्थापित करा दिया। ४०१९

अॅन्ऱु पिऩ्ऩरु मिरामनै यानुनक् कीव
दॊन्ऱु कूऱुदि युयर्कुणत् तोयॅन वुनैयान्
सॅन्ऱु वानिडैक् कण्डिडर् तीर्वनॅन् ऱिरुन्देन्
इन्ऱु काणप्पॅऱ् ऱेनिनिप् पॅऱुवदॅन् ऱॅन्ऱान् 4020

अॅन्ऱु–कहकर; पिऩ्ऩरुम्–फिर भी; इरामनै–श्रीराम से; उयर् कुणत्तोय्–उत्कृष्ट गुणोंवाले; यान् उनक्कु–मैं तुम्हें; ईवतु–जो दूँ; ऒन्ऱु–वह एक; कूऱुति–कहो; अॅन–ऐसा कहने पर; यान्–मैं; उनै–आपको; वान् इटै सॅन्ऱु–स्वर्ग में जाकर; कण्टु–देखकर; इटर् तीर्वॅन्–क्लेश दूर कर लूँगा; अॅन्ऱु–ऐसा; इरुन्तेन्–सोचता रहा; इन्ऱु–आज; काण पॅऱ्ऱेन्–दर्शन पा गया; इनि पॅऱुवतु अॅन्–फिर पाऊँ क्या; अॅन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०२०

यह कहकर फिर दशरथ ने श्रीराम की ओर मुखातिब होकर पूछा कि हे उत्कृष्ट गुणों वाले ! मैं तुमको दूँ ऐसा कोई वर माँग लो। श्रीराम ने उत्तर में निवेदन किया कि मैं ही स्वर्गलोक में आकर अपनी मनोव्यथा दूर करा लेने का विचार कर रहा था। अब आपसे भेंट करने का सौभाग्य मिल गया ! फिर क्या है जो पाने को रह गया ? । ४०२०

आयि नुम्मुनक् कमैन्ददौन् ऱुरैयॆन वऴहन्
तीय ळॆन्ऱुनी तुऱन्दवॆन् तॆय्वमु महनुम्
तायुन् दम्बियु माम्वरन् दरुहॆनत् ताऴ्न्वान्
वाय्ति ऱन्वॆळुन् दार्त्तन वुयिरॆलाम् वळुत्ति 4021

आयिनुम्–तो भी; उनक्कु–तुम्हें; अमैनततु–जो जँचे; ऑन्ऱु उरै–वह कोई कहो; ऍन–कहने पर; अऴकन्–सुन्दरमूर्ति ने; तीयळ् ऍन्ऱु–दुष्टा कहकर; नी तुऱन्त–आपने जिन्हें त्यागा; ऍन् तॆय्वमुम्–मेरी आराध्या देवी; मकनुम्–और उनका पुत्र; तायुम्–माता और; तम्पियुम्–कनिष्ठ भ्राता; आम्–बने रहें ऐसा; वरम् तरुक–वर दें; ऍन–ऐसा; ताऴ्न्तान्–कहकर नमन किया; उयिर् ऍलाम्–सारी जीवराशियों ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; ऍऴुन्तु–उच्च स्वर में; आर्त्तन–हाहाकार किया। ४०२१

तो भी दशरथ ने कहा। 'तुम जो जँचे वह वर माँग लो)' श्री सुंदर राम ने कहा। आपने जिन्हें दुष्टा कहकर त्याग दिया था, उन मेरी आराध्या देवी कैकयी को और उनके पुत्र को पुनः क्रमशः मेरी माँ और मेरा भाई बनाने का वर प्रदान करें। यह कहकर उन्होंने पिता के चरणों में प्रणमन किया तो भूलोक की सारी जीवराशियाँ मुख खोलकर वाहवाही का हाहाकार करने लगीं। ४०२१

वरद केळॆनत् तयरद नुरैसॆय्वान् मऱुविल्
परद नन्नवु पॆऱुहतान् मुडियिनैप् परित्तिव्
विरद वेडमर् ऱुदविय पाविमेल् विळिवु
शरद नीङ्गल दामॆन्ऱान् ऱळीइयकै तळर 4022

वरत–हे वरद; केळ्–सुनो; ऍन–कहकर; तयरतन्–दशरथ; उरै सॆय्वान्–बोले; मऱु इल्–अकलंक; परतन्–भरत; अन्नतु पॆऱुक–वह वर प्राप्त करे; मुटियिनै परित्तु–मुकुट छीनकर; तान् इव्विरतम् वेटम्–यह व्रत-वेष तुम्हें; उतविय–जिसने दिलाया; पावि मेल्–उस पापी पर; विळिवु–मेरा क्रोध; चरतम्–निश्चय; नीङ्कलतु आम्–दूर नहीं होगा; ऍन्ऱान्–कहा; तऴी इय–आलिंगित कै तळर–हाथों को ढीला करते हुए। ४०२२

दशरथ ने उत्तर में कहा कि हे वरद! मेरी बात सुनो। अकलंक भरत को वह भाग्य प्राप्त हो। पर तुम्हारे मुकुट को छीनकर जिसने तुम्हें यह तपस्वी का वेश दिला दिया उस पापिनी पर मेरा कोप निश्चय ही दूर नहीं होगा। जब उन्होंने यह कहा तब भावातिरेक से उनके आलिंगन के हाथ भी ढीले पड़ गये। ४०२२

ऊन्पि ळैक्किला वुयिर्नॆडि दळिक्कुनी ळरशै
वान्पि ळैक्किडु मुदलॆना दाळ्वुऱ मदित्तु

यान्पि ळैत्तवल् लालॅन्नै यीन्ड्रवॅम् बिराट्टि
तान्पि ळैत्तदुण् डोवॅन्ड्रा नवनुशलन् दविर्न्दान् 4023

ऊन्–शरीर को; पिळैक्किला–जो नहीं छोड़ते; उयिर्–उन जीवों का; नॅटितु–खूब; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; नीळ् अरशं–श्रेष्ठ राज्य-स्वत्व को; इतु–यह; वान्–बड़ी; पिळैक्कु–ग़लती का; मुलल्–हेतु; अॅन्तातु–न मानकर; आळ्वुड्र–शासन करना; मतित्तु–चाहकर; यान्–मैंने; पिळैत्ततु अल्लाल्–ग़लती की, नहीं तो; अॅन्नै ईन्ड्र–मेरी जननी; अॅम्पिराट्टि–मेरी आराध्या ने; तान्–स्वयं; पिळैत्ततु–अपराध किया; उण्टो–था क्या; अॅन्ड्रान्–कहा श्रीराम ने; अवन्–उन (दशरथ) ने; चलम्–क्रोध; तविर्न्तान्–त्याग दिया। ४०२३

श्रीराम ने कहा कि शरीरबद्ध जीवों का खूब पालन करने का, ज़िम्मेवार कार्य है बड़ा शासनाधिकार! वह बड़े-बड़े अपराधों का हेतु बन सकता है। इसका विचार किये विना ही राजपद को मानकर मैंने जो स्वीकारा वह मेरा अपराध था। नहीं तो इसमें मेरी जननी मान्या कैकेयी का इसमें दोष हुआ है क्या? तब दशरथ कोप छोड़कर शांत हुए। ४०२३

अॅव्व रङ्गळुङ् गडन्दव नप्पॉरु ळिशैप्पत्
तॅव्व रम्बरु कातिडॅच् चॅलुत्तिनाट् कीन्द
अव्व रङ्गळु मिरण्डवै याड्रिनार् कळित्त
इव्व रङ्गळु मिरण्डॅन्ड्रार् तेवरु मिरङ्गि 4024

अॅव्वरङ्कळुम्–सभी वरों से; कटन्तवन्–परे (श्रीराम के); अ पॉरुळ्–वह विषय; इचैप्प–कहते समय; तेवरुम्–देवों ने; इरङ्कि–सहानुभूति करके; वरम्पु अड्ड–असीम; तॅव्कान् इटै–शत्रु से भरे कानन में; चॅलुत्तिनाट्कु–जिसने भेजा उसको; ईन्त–दिये गये; अव्वरङ्कळुम्–वे वर भी; इरण्टु–दो; अवै–उनके अनुसार; आड्रिनाट्कु–जिन्होंने किया; अळित्त–उन्हें दिये गये; इव्वरङ्कळुम्–ये वर भी; इरण्टु–दो हैं; अॅन्ड्रार्–कहा। ४०२४

जब सभी वरों से परे रहनेवाले श्रीराम ने वह वाक्य कहा तब देवों को उन पर तरस आयी। उन्होंने कहा कि असीम शत्रुओं से भरे कानन में जिसने इन्हें भेजा उसे भी दो वर मिले। उन वरों को मानकर जो जंगल में आये उन्हें दिये गये वर भी दो ही हैं। ४०२४

वरमि रण्डळित् तळहत्तै यिळन्दले मलर्मेल्
विरवु पॉन्त्तिनै मण्णिडै निरुत्तिविण् णिडैये
उरवु मानमी देहित्त नुम्बरु मुलहुम्
परवु मॅय्यिनुक् कुयिरळित् तुरुपुहळ् पडैत्तोन् 4025

उम्परुम्–व्योमवासी और; उलकुम्–अन्य लोकवासी; परवुम्–जिनकी स्तुति करने; मॅय्यिनुक्कु–सत्य के लिए; उयिर् अळित्तु–मान का उत्सर्ग करके; उरु

पुकऴ्–योग्य यश; पट्टत्तोत्–जिन्होंने अर्जन किया था; इरण्टु–उन्होंने दो; वरम्–वर; अळित्तु–देकर; अऴकनै–सुन्दर राम को; इळवलै–और कनिष्ठ को; मलर् मेल्–कमल पर; विरवु पौन्तिनै–रहनेवाली श्री को; मण् इटै–भूमि में; निङ्गत्ति–छोड़कर; उरवु–सबल; मानम् मीतु–यान पर; विण् इटैये–आकाश-मध्य; एकितत्–चले गये । ४०२५

सत्यपालनार्थ जीवनदाता तथा देवों और अन्य लोकवासियों से स्तुत और विपुल यश प्राप्त दशरथ दो वरों को देने के बाद श्री सुंदर राम, उनके कनिष्ठ और कमलासनस्था श्रीदेवी को पृथ्वी पर ही छोड़कर एक सबल यान पर सवार हो व्योममध्य चले गये । ४०२५

कोट्टु वार्शिलैक् कुरिशिलै यमरर्तङ् गुऴाङ्गळ्
मीट्टु नोक्कुऱ्ऱा वीरनी वेण्डुव वरङ्गळ्
केट्टि यालॅन्न वरक्कर्हळ् किळप्परुम् जॅरुविल्
वीट्ट माण्डुळ कुरङ्गॅला मॅऴुहॅन्न विळम्बि 4026

अमरर् तम्–देवों के; कुऴाङ्कळ्–समूह; कोट्टु–मुके हुए; वार् बिलै–लम्बे धनुष के; कुरिचिलै–प्रभु को; मीट्टुम्–फिर एक बार; नोक्कुऱ्ऱा–देखकर; वीर–वीर; नी–तुम; वेण्टुव–इच्छित; वरङ्कळ्–वर; केट्टि–माँगो; ॲॅन्न–ऐसा; किळप्पु अरुम्–अवर्णनीय; चॅरुविल्–युद्ध में; अरक्कर्कळ्–राक्षसों के; वीट्ट–मारने से; माण्टुळ–जो मरे; कुरङ्कु ॲॅलाम्–वे सारे कपि; ॲॅऴुक–जी उठें; ॲॅन्न–ऐसा; विळम्पि–कहकर । ४०२६

देवों के वृन्दों ने कुंचित-धनुर्हस्त महिमावान श्रीराम को फिर से देखकर कहा कि हे वीर ! आप जो चाहें वे वर माँग लें। श्रीराम ने कहा कि अवर्णनीय भयंकर युद्ध में राक्षसों के हाथ जो मरे वे सब वानर जी उठें । ४०२६

पिऩ्ऩु मोर्वरम् वानरप् पॅरुङ्गडल् पॅयर्न्तु
मऩ्ऩु पल्वऩ माल्वरैक् कुलङ्गळ्मऱ् ऱिऩ्ऩ
तुऩ्ऩि डङ्गळ्काय् कऩिकिळङ् गोडतेऩ् ऱुऱ्ऱ
इऩ्ऩु णीरुळ वाहॅन्न वियम्बिडु हॅन्ऱाऩ् 4027

वानरर्–वानरों का; पॅरु कटल्–बड़ा सागर; पॅयर्न्तु–जाकर; मन्नुम्–नित्य; पल् वनम्–अनेक वन; माल् वरै कुलङ्कळ्–बड़े-बड़े पर्वत; मऱ्ऱु–और; इन्न–ऐसे; तुन् इटङ्कळ्–वासयोग्य स्थान; काय् कनि किळङ्कोटु–तरकारी, फलों, कंदों व; तेन् तुऱ्ऱ–मधुछत्तों से भरे; इन्–मधुर; उण् नीर् उळ–पेयजल-युक्त; आकॅन्न–बनें ऐसा; पिन्नुम्–और; ओर् वरम्–एक वर; इयम्पिटुक–कहिए; ॲॅन्ऱान्–कहा । ४०२७

उन्होंने और भी माँगा— वानर जाकर बसें ऐसे वन, बड़े पर्वत और

ऐसे अन्य वासस्थान हों; और तरकारी, फल, मूल कंद, मधु के छत्ते और मधुर पेय जल उनमें भरपूर रहें। ४०२७

वरन्द रुम्मुदत् मळुवलात् मुनिवरर् वानोर्
पुरन्द रादिमर् ऱैयोर् तनित्तनिप् पुहऴ्न्दाङ्
गरन्दै वॅम्बिऱप् पऱुक्कुना यहनिन दरुळाऱ्
कुरङ्गि नम्बॅऱ ऱॅन्ऱन उळ्ळमुङ् गुळिर्प्पार् 4028

वरम् तरुम्–वरदायी; मळुवलात् मुतल्–परशुधर शिव आदि; वानोर्–देवता लोग; मुनिवरर्–मुनिवर; पुरन्तरादि–पुरंदर आदि; मऱ्ऱु–और; एनैयोर्–अन्य; तनि तनि–अलग-अलग; पुकऴ्न्तु–स्तुति करके; उळ्ळमुम्–मन में; कुळिर्प्पार्–शीतल (सुखी) बनकर; आङ्कु–वहाँ; अरन्तै–दुःखजनक; वॅम्पिऱप्पु–भयंकर जन्मबाधा; अऱुक्कुम्–काटनेवाले; नायक–नायक; निनतु अरुळाल्–आपकी कृपा से; कुरङ्कु इनम्–वानरगण; पॅऱुकॅन्ऱनर्–प्राप्त करें; ऎन्ऱनर्–कहा (उन्होंने)। ४०२८

वरद परशुधर शिव, देवता लोग, मुनिवर और पुरंदरादि प्रधान देवों ने अलग-अलग उनकी स्तुति की और वरवचन कहा कि दुःखमूल भवव्याधि हरनेवाले हे नाथ! आपकी ही कृपा से वानरगण आपके माँगे वर प्राप्त करें। ४०२८

मुन्दै नाण्मुदर् कडैमुऱै यळवैयु मुडिन्द
अन्द वानर मडङ्गलु मॅऴुन्दुड नार्त्तुच्
चिन्दै योडुकण् कळिप्पुऱच् चॅरुवॅला निनैया
वन्दु तामरैक् कण्णनै वणङ्गिन महिऴ्न्दु 4029

मुन्तै नाळ् मुतल्–आरंभ के दिन से; कडै मुऱै–आखिरी दिन; अळवैयुम्–तक; मुडिन्त–जो मरे; अन्त वानरम्–वे वानर; अडङ्कलुम्–सभी; उडन् ऎऴुन्तु–झट जी उठकर; चॅरु ऎलाम्–सारे युद्ध का; निनैया–स्मरण करके; आर्त्तु–दुहाई देकर; चिन्तैयोडु–मन के साथ; कण्–आँखें भी; कळिप्पु–आनंद से; उऱ–भरकर; तामरै कण्णनै–अरुणाक्ष के; वन्तु–पास आकर; महिऴ्न्तु–मुदित होकर; वणङ्किन–विनत हुए। ४०२९

युद्ध के आरम्भ से लेकर अंतिम दिन तक जितने वानर मरे थे वे सब जी उठे। युद्ध-संबंधी सारी बातों का स्मरण करने से मन और आँखों में उदित आनंद के साथ कमलाक्ष श्रीराम के पास आये और मोद के साथ उनको नमस्कार किया। ४०२९

कुम्ब कन्नतो डिन्दिर शित्तुवॅङ् गुलप्पोर्
वॅम्बु वॅञ्जिनत् तिरावणन् मुदलिय वीरर्

अम्बिन् माण्डुळ वानर मङ्गुबवन् दार्प्प
उम्बर् यावरु मिरामतैप् पार्त्तिवै युरैत्तार् 4030

कुम्पकत्त्ततोटु–कुंमकर्ण के साथ; इन्तिर चित्तु–इन्द्रजित्; वॅम् कुलम् पोर्–भयंकर श्रेष्ठ युद्ध में; वॅम्पु–खौलते; वॅम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोध का; इरावणन्–रावण; मुतलिय वीरर्–आदि वीरों के; अम्पिन्–शरों से; माण्टु उळ–जो मरे थे; वानरम्–वे वानर; अङ्कु–वहाँ; वन्तु–आकर; आर्प्प–जयकार करने लगे; उम्पर् यावरुम्–सभी देवों ने; इवै–ये बातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०३०

कुम्भकर्ण, इंद्रजित्, खौलते क्रोध का रावण आदि वीरों के अस्त्रों से आहत सभी वानर आये और उच्च स्वर में जय-जयकार किया तो देवों ने श्रीराम से निम्न बातें कहीं। ४०३०

इडैयु वाविनिऱ् चुवेलम्वन् दिरुत्तॅयि लिलङ्गैप्
पुडैय वावुरुच् चेनॅयै वळैप्पुरप् पोक्किप्
पडैय वावुरु मरक्करदङ् गुलमुर्रुम् बडुत्तुक्
कडैयु वाविनि लिरावणन् तन्नैयुङ् गट्टु 4031

इटै उवाविनिल्–अपर (कृष्ण) पक्ष-मध्य; चुवेलम्–सुवेल पर्वत पर; वन्तु इरुत्तु–आकर ठहरकर; ऍयिल्–प्राचीरों-सहित रहते; इलङ्कै–लंका के; पुटै–चारों ओर; चेनॅयै–सेना को; अवा उरु–उत्साह के साथ; वळैप्पु उरु–घेरने; पोक्कि–भेजकर; पटै–हथियार; अवाउरुम्–चाहनेवाले; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुलम् मुर्रुम्–सारे वर्ग; पट्टुत्तु–मारकर; कटै उवाविनिल्–अन्तिम दिन में; इरावणन् तन्नैयुम्–रावण को भी; कट्टु–निहत कर। ४०३१

कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि के दिन आप सुवेल पर्वत पर आ ठहरे थे। प्राचीरवलयित लंका को घेरने हेतु उत्सुक वानरों को भेजा। फिर आपने अस्त्राभिलाषी राक्षसों का कुल निर्मूल करके अंतिम दिन में रावण का भी हनन किया। ४०३१

वञ्ज रिल्लैयिव् वण्डत्ति नॅनुम्वडि मडित्त
कञ्ज नाण्मलरक् कैयिना यन्नैशॅार् कडवा
अञ्जॊ डञ्जुनात् गॅन्रॅनु माण्डुपोय् मुडिन्द
पञ्ज मिप्पॅयर् पडैत्तुळ तिदियिन्रु पयन्द 4032

इव् अण्टत्तिल्–इस अंड में; वञ्चर्–वंचक राक्षस; इल्लै–नहीं रहे; ऍनुम्पटि–ऐसा; मटित्त–अंत करनेवाले; नाळ् कञ्चम् मलर्–तद्दिन विकसित कंजपुष्प; कैयिनाय्–हस्त वाले; अन्नै चॊल्–मातृवचन को; कटवा–उल्लंघन किये बिना; अञ्चॊटु अञ्चु नान्कु–पाँच, पाँच, चार (चौदह); ऍन्रु ऍनुम्–समझे जानेवाले; आण्टु–वर्ष; पोय् मुटिन्त–जो बीत गये; इन्रु–आज के दिन ने; पञ्चमि पॅयर् पटैत्तु उळ–पंचमी नाम की जो है; तिति पयन्त–वह तिथि बनायी है। ४०३२

इस संसार में अब वंचक राक्षस ही नहीं रहे। इसे प्रशस्त करते हुए उनका काम तमाम करनेवाले हे तद्दिन्विकसित कमल-से हस्तवाले ! आप मातृवचन का उल्लंघन न करके जंगल आये आपको आज चौदह साल पूरे हो गये। आज पंचमी तिथि है। ४०३२

इन्ऱु शॆऩ्ऱुनी परदऩै यॆय्दिलै यॆऩ्ऩिल्
पॊऩ्ऱु मालव ऩॆरियिडै यन्ऩदु पोक्क
वॆऩ्ऱि वीरनी पोदिया लॆऩ्बदु विळम्बा
निऩ्ऱ तेवर्हळ् नीङ्गिना रिराकव ऩिनैन्दान् 4033

वॆऩ्ऱि वीर–विजयी वीर; नी–आप; इन्ऱु–आज; चॆन्ऱु–जाकर; परतऩै–भरत के पास; ऍय्तिलै–पहुँचेंगे नहीं; ऍऩ्ऩिल्–तो; अवऩ्–वह; ऍरि इटै–आग में; पॊऩ्ऱुम्—मर जायगा; अऩ्ऩतु–उसे; पोक्क–रोकने के लिए; पोति–जाइएगा; ऍऩ्पतु–यह बात; विळम्पा–कहकर; निऩ्ऱ तेवर्कळ्–जो रहे वे देव; नीङ्कितार्–चले गये; इराकवऩ्–श्रीराघव ने; निऩैन्ताऩ्–विचार किया। ४०३३

विजयी वीर ! आज जाकर आप भरत से नहीं मिलेंगे तो भरत जलती आग में कूदकर आत्महत्या कर लेगा। उसे रोकने के वास्ते आप आज ही जायँ ! देव यह कहकर चले गये। श्रीराघव ने विचार किया। ४०३३

आण्डु पत्तॊडु नालुमिन् ऱोडरु मायिऩ्
माण्ड दामिनि यॆन्कुलम् बरदने मायिन्
ईण्डुप् पोहवो रूर्दियुण् डोवॆन विन्ऱे
तूण्डु मानमुण् डॆन्ऱडल् वीडणन् शॊन्नान् 4034

आण्टु–वहाँ; पत्तॊटु नालुम्–दस और चार, चौदह साल; इन्ऱोटु–आज के साथ; अरुम् आयिऩ्–समाप्त हो जायें तो; परतऩ् मायिऩ्–भरत मरें तो; इति–आगे; ऍऩ् कुलम्–मेरा वंश; माण्टतु आम्–मरा हो जायगा; ईण्टु–यहाँ; पोक–जाने का; ओर्–कोई; ऊर्ति–वाहन; उण्टो–है क्या; ऍऩ–ऐसा पूछा तो; वीटणऩ्–विभीषण ने; इन्ऱे–आज ही; तूण्टुम्–ले जाने का; अटल्–बलवान; मातम्–यान; उण्टु–है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ४०३४

आज चौदह साल समाप्त हो जायँगे। भरत मर जायगा तो मेरा कुल ही नष्ट हो गया ! "अभी जाने के लिए कोई वाहन मिलेगा क्या ?" श्रीराम ने विभीषण से पूछा तो विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ; आज ही पहुँचा सकनेवाला एक सशक्त विमान है। ४०३४

इयक्कर् वेन्दनुक् करुमरैक् किळवनन् ऱीन्द
तुयक्कि लादवर् मनमॆनत् तूयदु शुरर्हळ्

वियक्क वान्शॆलुम् बुट्पह विमानमुण् डॆन्ड्रे
मयक्कि लान्शॊलक् कॊणरुदि वल्लॆयि नॆन्ड्रान् 4035

इयक्कर् वेन्तनुक्कु–यक्षराज कुबेर को; अरु मऱै किऴवन्–उत्तम वेदों के रक्षक ब्रह्मा ने; अन्ड्रु–उस दिन; ईन्त–जो दिया था; तुयक्कु–बंधन; इलातवर्–रहित लोगों के; मनम् ऎन्न–मन के समान; तूयतु–पवित्र; चुरर्कळ–देवों को भी; वियक्क–विस्मित करके; वान् चॆलुम्–आकाश में चलनेवाला; पुट्पक विमानम्–पुष्पकयान; उण्टु–है; ऎन्ड्र–ऐसा; मयक्कु–भ्रम; इलान्–रहित विभीषण के; चॊल–कहने पर; वल्लॆयिन्–जल्दी; कॊणर्ति–लाओ; ऎन्ड्रान्–ऐसा कहा श्रीराम ने। ४०३५

वह चतुर्वेद ब्रह्मा का यक्षराज कुबेर को (जिस दिन उसने तपस्या की थी उस दिन) दिया हुआ है। वह निर्लिप्त ज्ञानी के मन के समान पवित्र है। सुरों को भी विस्मयाभिभूत करते हुए आकाश में चलनेवाला पुष्पक विमान यहाँ है। भ्रमरहित मनवाले विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने आज्ञा दिलायी कि लाओ जल्दी उसे। ४०३५

अण्ड कोडिह ळनन्दमॊत् तायिर मरुक्कर्
विण्ड वामॆन्न विशुम्बिडैत् तिशैयॆलाम् विळङ्गक्
कण्डै यायिर क्कोडिह ळॊलिप्पुड्रक् कमलक्
कॊण्ड णैन्दन नॊडियिनि नरक्करदङ् गोमान् 4036

अनन्तम्–अनंत; अण्ट कोटिकळ्–कोटि अण्ड; ऒत्तु–मिलकर; विचुम्पु इटै–आकाश में; आयिरम्–हज़ार; अरुक्कर्–सूरज; विण्टतु आम्–निकले हों; ऎन्न–ऐसा; तिचै ऎलाम्–सारी दिशाओं में; विळङ्क–प्रकाश देते; आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; कण्टैकळ्–घंटियाँ; ऒलिप्पु उड्र–शब्द हो ऐसे; कमल–बजतीं; अरक्कर् तम् कोमान्–राक्षसपति; नॊटियितिल्–एक 'चुटकी' की देर में; कॊण्टु अणैन्तनन्–ले आया। ४०३६

राक्षसपति विभीषण चुटकी बजाते देर में वह यान लाया। अनंत कोटि अण्डों का मिला-सा आकार लिये आकाश में उदित हज़ार सूर्य का सम्मिलित प्रकाश सारी दिशाओं में छिटकाते हुए वह आया और उसमें हज़ार करोड़ घंटियाँ बजकर ध्वनि उठा रही थीं। ४०३६

अन्नैय पुट्पह विमानम्वन् दवनियै यणुह
इन्निय शिन्दनै यिराहव नुवहैयो डिन्निनम्
विन्नैय मुड्रिय वॆन्ड्रुकॊण् डॆऴुनम् विण्णोर्
पुन्नैम लर्शॊरिन् दार्त्तनर् राशिहळ् पुहन्ड्रे 4037

अन्नैय–वैसा; पुट्पक विमानम्–पुष्पकविमान; अवनियै–भूमि पर; वन्तु–आ; अणुक–जब पहुँचा; इन्निय चिन्तनै–मधुर भाववाले; इराकवन्–श्रीराघव; उवकैयोटु–आनंद के साथ; इनि–अब; नम्–हमारा; विन्नैयम्–कार्य; मुड्रियतु–

संपन्न हो गया; ॲन्ऱु कॊण्डु—ऐसा मानकर; एऱिनन्—चढ़े; विण्णोर्—आकाशवासी (देवों) ने; आचिकळ्—आशीर्वचन; पुकन्ऱु—कहकर; पुन्नै मलर्—सुन्दरपुष्प; चोरिन्तु—बरसाकर; आर्त्तनर्—जय-जयकार किया। ४०३७

जब वह विमान भूमि पर उतरा तब मधुर भावनाओं से भरे मनवाले श्रीराघव ने आनंद के साथ यह आश्वासन लेकर आरोहण किया कि अब हमारा कार्य सिद्ध हो गया। व्योमवासियों ने आशीर्वचन कहे, पुष्प बरसाये और जय-जयकार किया। ४०३७

वणङ्गु नुण्णिडैत् तिरिशडै वणङ्गवान् कऱ्पिऱ्
किणङ्ग रिन्मैया णोक्कियो रिडरिन्ऱि यिलङ्गैक्
कणङ्गु तानॆन विरुत्तियॆन् ऱैयन्माट् टणैन्दाळ्
मणङ्गॊळ् वेलिळङ् गोळरि मानमीप् पडर्न्दान् 4038

वान् कऱ्पिऱ्कु—श्रेष्ठ पातिव्रत्य में; इणङ्कर्—सानी; इन्मैयाळ्—न रखने वाली देवी; वणङ्कुम्—लचीली; नुण् इडै—पतली कमरवाली; तिरिचडै—त्रिजटा के; वणङ्क—उन्हें नमस्कार करने पर; नोक्कि—देखकर; ओर् इडर् इन्ऱि—बिना किसी संकट के; इलङ्कैक्कु—लंका की; अणङ्कु तान् ॲन—एक देवी के समान; इरुत्ति—रहो; ॲन्ऱु—ऐसा कहकर; ऐयन् माट्टु—प्रभु श्रीराम के पास; अणैन्ताळ्—पहुँचीं; मणम् कॊळ्—मांस-गंधयुक्त; वेल्—शक्ति के; इळ कोळरि—बालकेसरी (लक्ष्मण); मानम् मी—विमान पर; पडर्न्तान्—चढ़े। ४०३८

अतिश्रेष्ठ पातिव्रत्यपालिका, जिनकी टक्कर की कोई नहीं थी वे सीताजी, अपने सामने बिनत लचीली कमरवाली त्रिजटा को यह आशीर्वाद दिया कि तुम विना किसी संकट के लंका की देवी के समान रहो और तब श्रीराम के पास आयीं। मांसगंधवह भालाधारी बालकेसरी (-सम) लक्ष्मण भी विमान पर आरूढ़ हुए। ४०३८

अण्ड मुण्डवन् मणियणि युदरमॊत् तनिलन्
शण्ड वेहमुङ् कुऱैतर निनैवॆनुन् दहैत्ताय्
विण्ड लन्दिहऴ् पुट्पह विमानमा मदन्मेऱ्
कॊण्ड कॊण्डलन् तुणैवरैप् पार्त्तिवै कुणित्तान् 4039

अण्टम्—अण्ड के; उण्टवन्—उदरस्थ करनेवाले के; मणि अणि—सुन्दरतायुक्त; उतरम् ऑत्तु—उदर के समान; अनिलन्—पवन के; चण्टम् वेकमुम्—उग्र वेग को; कुऱै तर—कम करते हुए; निनैवु ॲनुम्—मनोवेग कहने; तकैत्ताय्—योग्यरीति से; विण् तलम्—आकाशतल में; तिकऴ्—प्रकाशमान; पुट्पक विमानम् आम्—पुष्पक विमान जो था; अतन् मेल् कॊण्ट—उस पर जो चढ़े वे; कॊण्टल्—मेघ-श्याम ने; तन् तुणैवर्—अपने साथियों को; पार्त्तु—देखकर; इवै—ये वचन; कुणित्तान्—सोचकर बताये। ३०३९

प्रलय के अवसर पर सारे अंडों को अपने उदर में लय करा लेने

वाले श्रीविष्णु के अति सुन्दर उदर के समान जो रहा, जो अनल गति को भी कम बनानेवाली मनोगति से युक्त था और जो आकाश में अत्यद्भुत छवि के साथ रह रहा था, उस पर आरूढ़ होकर मेघश्याम ने अपने साथियों से निम्नोक्त विचार प्रकट किये। ४०३९

वीड णन्ऱत्तै यन्बुऱ नोक्कुऱा बिमलन्
तोड णैन्दतार् मवुलियाय् शौल्वदोन् ऱुळदुन्
माड णैन्दवर्क् किन्बमे वळङ्गिनी ळरशिन्
नाड णैन्दवर् पुहऴ्न्दिड वीऱ्ऱिरु नलत्ताल् 4040

विमलन्–विमल श्रीराम; वीटणन् तन्–विभीषण को; अन्पुऱ–सस्नेह; नोक्कुऱा–देखकर; तोटु–पंखुड़ियों-सहित; अणैन्त तार्–माला पहने; मवुलियाय्–मुकुटधारी; चॊल्वतु–कहना; ऒन्ऱु–एक; उळतु–है; उन् माटु–तुम्हारे पास; अणैन्तवर्क्कु–जो आते उन्हें; इन्पमे वळङ्कि–सुख ही देकर; नाटु अणैन्तवर्–देशवासी; पुकऴ्न्तिट–प्रशंसा करें ऐसा; नीळ् अरचिल्–बड़े इस शासन में; नलत्ताल्–भलाइयों के साथ; वीऱ्ऱिरु–विराजमान रहो। ४०४०

विमलमूर्ति ने विभीषण को सस्नेह देखकर कहा कि दलसंकुल पुष्पमालाधारी! तुमसे कहने की एक बात है। तुम्हारे पास जो आये हैं, उनका हित करो। देशवासियों की प्रशंसा का पात्र बने रहो और इस बड़े शासन-कार्य में सब तरह की भलाइयों के साथ विराजमान रहो। ४०४०

नीदि यारॆन्न तॆरिवुऱ निलैमैपॆऱ् ऱुदैयाम्
आदि नान्मऱैक् किऴवनिन् कुलमॆन्न वमैन्दाय्
एदि लार्तॊऴु मिलङ्गैमा नहरिनु ळिनिनी
पोदि यालॆन्नप् पुहन्ऱनन् नान्मऱै पुहन्ऱान् 4041

नीति आऱु–नीति-नदी; ऎन्न–के समान; तॆरिवुऱ–माने जाने की; निलैमै–स्थिति; पॆऱ्ऱु उदैयाय्–पा चुके हो; आति–अनादि; नान्मऱै किऴवन्–चतुर्वेद ब्रह्मा; निन् कुलम्–तुम्हारे कुलजनक हैं; ऎन्न–ऐसा; अमैन्ताय्–पैदा हुए हो; नी–तुम; एतिलार्–शत्रु से; तॊऴुम्–स्तुत; इलङ्कै–लंका; मा नकरिनुळ्–(के) बड़े नगर (के अंदर); पोति–जाओ; ऎन्न–ऐसा; पुकन्ऱनन्–कहा; नान्मऱै–चतुर्वेद के; पुकन्ऱान्–प्रकाशक ने। ४०४१

नीति-नदी-मान्य स्थिति में रहनेवाले! अनादि वेदों का ब्रह्मा जिस कुल का आदिपुरुष है, उस कुल में पैदा हुए हो। शत्रुप्रशंसित लंका नगर को लौट जाओ। ऐसा कहा चतुर्वेदप्रकाशक श्रीराम ने। ४०४१

शुक्कि रीवनिन् तोळ्ळै वन्मैयाऱ् ऱॆशन्दो
हक्कि रीवनैत् तडिन्दुवॆम् बडैयिना लशैत्त

मिक्क वानरच् चेत्तैयि निळैप्पइ् मीण्डूर्
पुक्कु वाळ्हॆन्नप् पुहन्ड्रन्न नीरिलाप् पुहऴोन् 4042

ईरु इला–असीम; पुकऴोन्–यश के स्वामी ने; चुक्किरीव–सुग्रीव; निन्–तुम्हारे; तोळ् उटै–वन्मैयाल्–भुजबल से; तॆचम् तॊकु–दस के; अ किरीवन्–ग्रीवा वाले को; तडिन्तु–मारकर; वॆम् पटैयिनाल्–भयंकर अस्त्रों से; अवॆत्त–अस्त-व्यस्त; मिक्क–बहुत; वानर चेत्तैयिन्–वानरसेना की; इळैप्पु अऱ–थकावट दूर करके; मीण्टु–फिर से; ऊर् पुक्कु–नगर में जाकर; वाळ्क–रहो; ऎन पुकन्ड्रनन्–ऐसा कहा। ४०४२

अनंतयशस्वी श्रीराम ने सुग्रीव से यह कहा:— सुग्रीव ! तुम्हारे भुजबल के कारण ही दशग्रीव का हनन कर सका। तुम भयंकर अस्त्रों से अस्त-व्यस्त तथा शिथिल जो हो गये थे उन वानरों की सेना को लेकर अपने नगर में लौट जाओ और रहो। ४०४२

वालि शेयित्तैच् चाम्बलैप् पनशनै वयप्पोर्
नील नादिय नॆडुम्बडैत् तलैवरै नॆडिय
कालिन् वेलैयैत् ताविमीण् डरुळिय करुणै
पोलुम् वीरनै नोक्किमऱ् ऱिम्मॊऴि पुहन्ऱान् 4043

वालि चेयित्तै–वालीपुत्र को; चाम्पनै–जाम्ववान को; पनचनै–पनश को; वयम् पोर्–बलवान योद्धा; नीलन् आतिय–नील आदि; नॆटु पटै–बड़ी सेना के; तलैवरै–नायकों को; नॆटिय–बड़े; कालिन्–पैरों के बल; वेलैयै–समुद्र को; तावि–लाँघकर; मीण्टु अरुळिय–लौट जो आया; करुणैपोलुम्–उस मूर्तिमान करुणा-सम; वीरनै–वीर हनुमान को; नोक्कि–देखकर; इ मॊऴि–यही बात; पुकन्ऱान्–कही। ४०४३

फिर श्रीराम ने वालीपुत्र, जाम्बवान, पनस, विजयी नील आदि बड़े योद्धायूथप, हनुमान, जिसने कि अपने लम्बे पैरों के बल समुद्र को लाँघकर लौट आने की कृपा की थी, और जो मूर्तिमान करुणा के समान था —इन सब पर कृपादृष्टि डालकर वही बात दुहरायी। ४०४३

ऐय निम्मॊऴि पुहन्ड्रिडत् तुणुक्कमो डवर्हळ्
मॆय्यु मावियुङ् गुलैतर विऴिहणीर् ततुम्बच्
चॆय्य तामरैत् ताळिणै मुडियुरच् चेर्त्ति
उय्हि लेनिनै नीङ्गिनॆन् ऱिनैयन वुरैत्तार् 4044

ऐयन्–प्रभु के; इ मॊऴि–यह बात; पुकन्ड्रिट–कहने पर; अवर्कळ्–उन्होंने; तुणुक्कमोटु–घबड़ाकर; मॆय्युम्–शरीर; आवियुम्–और प्राणों के; कुलै तर–काँपते; विऴिकळ्–आँखों में; नीर् ततुम्प–आँसू छलकते; चॆय्य–अरुण; तामरै ताळिणै–पद्मचरणों को; मुटिउऱ–सिर पर लगें ऐसा; चेर्त्ति–

मिलाकर; निन्नै नीङ्गिन्–आपसे अलग होंगे तो; उय्किलेम्–जियेंगे नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; इन्नयन्न–और ये वातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०४४

प्रभु के यह वचन कहते ही सुग्रीवादि घबड़ा गये, उनके शरीर और प्राण काँप गये। आँखों से अश्रु बहने लगा। उन्होंने अपने सिरों को श्रीराम के अरुणपद्मचरणों पर रखकर निवेदन किया कि अगर हमें आपसे अलग होना पड़ा तो हम जीवित नहीं रहेंगे। आगे भी उन्होंने कहा। ४०४४

पार मामदि लयोत्तियि लॅय्दिनित् पैम्बीन्
आर मामुडिक् कोलमुञ् जॅव्वियु मळहुम्
शोर्वि लादियाङ् गाणुगुरु मळवेयुन् दॉडर्न्दु
पेर वेयरु ळॅन्ऱुरत्त रुळ्ळन्बु पिणिप्पार् 4045

उळ्ळन्पु–सच्चे मन के; पिणिप्पार्–प्रेमबद्ध; पारम्–भारी; मा मतिल्–बड़े प्राचीरों की; अयोत्तियिन्–अयोध्या में; ॲय्ति–जाकर; निन्–आपके; पॅम् पॉन् आरम्–चोखे स्वर्ण से निर्मित तथा हारयुक्त; मा मुटि कोलमुम्–बड़े किरीट-धारण की झाँकी; चॅव्वियुम्–तथा उत्सव; अळकुम्–सौंदर्य; चोर्विलातु–क्षोभ दूर हो ऐसा; याम्–हम; काण्कुरुम्–देखें; अळवेयुम्–उतने समय तक; तॊटर्न्तु–पीछे आकर के; पेरवे–लौटें; अरुळ्–यह करुणा करें; ॲन्ऱुरत्तर्–बोले (विभीषण आदि)। ४०४५

मन के अधिक स्नेह से जो श्रीराम को बाँध सकते थे, उन्होंने श्रीराम से कहा कि हम बड़े प्राचीरों वाली अयोध्या में आकर आपके मुकुटधारण उत्सव में आपका, खरे स्वर्ण से निर्मित और हारों से अलंकृत मुकुट धारण करना, अन्य वैभव और तब की आपकी सुन्दरता देखना चाहते हैं। तभी हमारी थकावट दूर होगी। तब तक आपके साथ आने, उसके बाद लौटने की कृपा की आज्ञा दें। ४०४५

अन्बि ऩालवर् मॊऴिन्दवा शहङ्गळु मवर्हळ्
तुन्ब मॅय्दिय नडुक्कमु नोक्किनीर् तुळङ्गल्
मुन्बु नाऩिनैन् दिरुन्ददप् परिशुनुम् मुयऱ्चि
पिन्बु काणुमा ऱुरैत्तदॆन् ऱुरैत्तनन् पॅरियोन् 4046

पॅरियोन्–सम्मान्य श्रीराम; अन्पिनाल्–प्रेम से; अवर्–उनके; मॊऴिन्त–कहे; वाचकङ्कळुम्–वचन और; अवर्कळ्–उनका; तुन्पम्–(वियोग) दुःख से; ॲय्तिय–प्राप्त; नटुक्कमुम्–कंपन; नोक्कि–(सुन और) देखकर; नीर्–तुम लोग; तुळङ्कल्–भय मत करो; मुन्पु–पहले; नान्–मैं; निनैन्तिरुन्ततु–जो सोचता था; अप्परिचु–वह उसी प्रकार का था; पिन्पु–बाद (ऐसा); उरैत्ततु–कहना; नुम् मुयऱ्चि–तुम्हारा प्रबन्ध; काणुमाऱु–जानने के लिए; ॲन्ऱु–ऐसा; उरैत्तनन्–बोले। ४०४६

श्रीराम ने उनका स्नेहार्द्र वचन सुना और उनका दुःख और भय देखा, कहा कि डरो मत। मैंने पहले वही सोचा था। पर जानना चाहा कि आपका कोई दूसरा प्रबंध तो नहीं। इसलिए मैंने वह बात कही थी। ४०४६

ऐयऩ् वाशहङ् गेट्टलु मरिकुलत् तरशुम्
मॊय्हॊळ् शेऩैयु मिलङ्गैयर् वेन्दऩु मुदलोर्
वैय माळुडै नायहऩ् मलर्च्चरण् वणङ्गि
मॆय्यि ऩोडरुन् दुरक्कमुऱ् ऱारॆऩ वियन्दार् 4047

ऐयन्–प्रभु का; वाचकम्–वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; अरिकुलत्तु–अरिकुल के; अरचुम्–राजा और; मॊय्कॊळ्–घनी; चेऩैयुम्–सेना; इलङ्कैयर्–लंकावासियों का; वेन्तऩुम्–राजा; मुतलोर्–आदि लोग; वैयम्–भुवन के; आळुटै–शासक; नायकऩ्–नायक श्रीराम के; मलर् चरण्–कमल-चरणों में; वणङ्कि–नमस्कार करके; मॆय्यितोटु–सशरीर; अरु–अगम; तुरक्कम्–मोक्षलोक; उऱ्ऱार्–पहुँच गये; ऎऩ–जैसे; वियन्तार्–विस्मित हुए। ४०४७

प्रभु का वचन सुनते ही अरिकुलराज, घनी सेना, लंकापति आदि भुवननिकायपति श्रीराम के चरणों में विनत हुए। उन्हें ऐसा विस्मय तथा आनंद हो गया मानो उन्हें सशरीर ही स्वर्ग मिल गया हो। ४०४७

अऩैय दाहिय शेऩैयो डरशऩै यनिलऩ्
तऩय ऩादियाम् बडैप्पॆरुन् दलैवर्हळ् तम्मै
वऩैयुम् वार्हळ् लिलङ्गैयर् मऩ्ऩऩै वन्दिङ्
गितिदि ऩेऱुमिऩ् विमाऩमॆऩ् ऱिराघव ऩिशैत्ताऩ् 4048

अऩैयतु–वैसी स्थिति में; आकिय–आयी; चेऩैयोटु–सेना के साथ; अरचऩै–राजा सुग्रीव को; अनिलऩ्–और पवनदेव के; तऩयऩ्–पुत्र; आतियाम्–आदि; पटै पॆरु–सेना के बड़े; तलैवर्कळ् तम्मै–नायकों को; वऩैयुम्–पहनी; वार् कळल्–बड़ी पायलधारी; इलङ्कैयर्–लंका के; मऩ्ऩऩै–राजा को; इङ्कु–यहाँ; वन्तु–आकर; इतितिऩ्–प्रसन्नता के साथ; विमाऩम्–यान पर; एऱुमिऩ्–चढ़ो; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इराकवऩ्–श्रीराघव ने; इचैत्ताऩ्–कहा। ४०४८

उस तरह विस्मित सेना को श्रीराम ने राजा सुग्रीव, अनिलसुत आदि बड़े वानरयूथपों और पायलधारी विभीषण को 'अंदर सुख से आ बैठो' कहकर बुला लिया। ४०४८

शॊऩ्ऩ वाशहम् बिऱ्पडच् चूरियऩ् महऩुम्
मऩ्ऩु वीररु मॆळ्बदु वॆळ्ळवा नररुम्
कऩ्ऩि मामदि लिलङ्गैमऩ् ऩॊडुकडऱ् पडैयुम्
तुऩ्ऩि ऩार्नॆडुम् बुट्पह मिशैयॊरु शूळल् 4049

चॊत्त वाचकम्–उनका कहा वचन; पिऱ्पट–पिछड़ जाय ऐसा; चूरियत् मकत्तुम्–सूर्यपुत्र और; मट्रुम्–युक्त; वीररुम्–वीर; ऍऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळम्–वॆळ्ळम्; वानररुम्–वानर; कत्ति–अक्षय; मामतिल्–बड़े प्राचीरों की; इलङ्कै मन्नॊडु–लंका के राजा के साथ; कटल् पटैयुम्–समुद्र-सम सेना; नॆटु–बड़े; पुट्पकम्–पुष्पक-विमान; मिचै–पर; ऒरु चूऴल्–एक गोल में; तुत्तितार्–सटे हुए बैठ गये। ४०४९

कहने की भी देरी न रही कि सूर्यसूनु, अन्य यूथप, सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर वीर, अक्षय प्राचीरों वाली लंका का राजा और उसकी सागर-सम विशाल सेना —सभी उस बड़े पुष्पक यान पर आये और एक गोल पंक्ति में सटे हुए बैठ गये। ४०४९

पत्तु नालॆन वडुक्किय वुलहङ्गळ् पलविन्
मॆत्ति योतिह लेऱिनुम् वॆऱ्ऱिड मिहुमाल्
मुत्त रात्तव रिदनिलै मॊऴिहुव दल्लाल्
इत्त रादलत् तियम्बुदऱ् कुरियवर् यारे 4050

पत्तु नालॆन–दस और चार; अटुक्किय–एक-दूसरे के ऊपर रहे; उलकङ्कळ् पलविन्–अनेक लोकों के; मॆत्ति–बहुत; योतिकळ्–जीव; एऱिनुम्–चढ़ें तो भी; वॆऱ्ऱिटम्–खाली स्थान; मिकुम्–अधिक रहेगा; इतन् निलै–इसका हाल; मुत्तर् आत्तवर्–मुक्त लोग; मॊऴिकुवतु–कहें तो कहें; अल्लाल्–नहीं तो; इ तरातलत्तु–इस भूमि के वासियों में; इयम्पुतऱ्कु–कहने; उरियवर्–योग्य; यार्–कौन हैं। ४०५०

वह यान ऐसा था कि उसमें चौदहों भुवनों के सारे अनेक जीव सवार हों तो भी बहुत स्थान खाली रहे। मुक्त लोगों को छोड़ कोई इसके हाल का वर्णन कर सके, ऐसा कोई नहीं। ४०५०

ऍऴुबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरविकान् मुळैयु मॆण्णिन्
वऴुविला विलङ्गै वेन्दुम् वान्पॆरुम् बडैयुञ् जूऴत्
तऴुवुशी रिळैय कोवुञ् जनहन्मा मयिलुम् बोऱ्ऱ
विऴुमिय कुणत्तु वीरन् विळङ्गिनन् विमानत् तुम्बर् 4051

ऍऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तोरुम्–वॆळ्ळम् के सभी वीर; इरवि–और रवि का; कान् मुळैयुम्–पुत्र; ऍण्णिल्–मन में; वऴु–दोष; इला–न रहा (जिसके); इलङ्कै वेन्तुम्–वह लंकेश; वान्–श्रेष्ठ; पॆरु–बड़ी; पटैयुम्–सेना के; चूऴ–घेरे रहते; चीर् तऴुवु–महत्तायुक्त; इळैय–छोटे; कोवुम्–राजा और; चनकन्–जनक की; मा मयिलुम्–(दुहिता) बड़ी कलापीनिभ देवी के; पोऱ्ऱ–स्तुति करते; विऴुमिय–श्रेष्ठ; कुणत्तु–गुणों के; वीरन्–वीर श्रीराम; विमानत्तु उम्पर्–पुष्पक विमान पर; विळङ्कितन्–शोभायमान रहे। ४०५१

सत्तर वॆळ्ळम् सेनावीर, रविपुत्र, अकलंकमन लंकापति, उसकी श्रेष्ठ बड़ी सेना —सब घेरे रहे। बड़े यशस्वी छोटे राजा लक्ष्मण, जनकसुता

कलापीनिभ जानकी की स्तुति को अपनाते हुए बड़े उत्तम गुणवान श्रीराम पुष्पकयान पर शोभित रहे। ४०५१

अण्डमे पोनूड़ दैयन् पुट्पह मण्डत् तुम्बर्
ऍण्डरुङ् गुणङ्ग ळिनूड़ि मुदलिडै यीड़िन् ड्राहिप्
पण्डैनान् मड़ैक्कु मॅट्टाप् परञ्जुडर् पॉलिवदेपोड्
पुण्डरी हक्कण् वॅनूड़िप् पुरवलन् पॉलिन्दान् मनूनो 4052

ऐयन्–प्रभु का; पुट्पकम्–पुष्पकयान; अण्टमे–अण्ड के; पोनूड़तु–ही समान था; पुण्डरीकम्–पुण्डरीक-सम; कण्–आँखें और; वॅडूड़ि–विजय के स्वामी; पुरवलन्–पालक श्रीराम; अण्टत्तु–भूमि के; उम्पर्–ऊपर; ऍण् तरु–गिनती में आये; कुणङ्कळ्–गुणों के; इनूड़ि–विना; मुतल्–जन्म; इटै–मध्यायु; ईड़ु–मरण; इनूड़ु–के विना; आकि–रहकर; पण्टै–पुरातन; नान् मड़ैक्कुम्–चारों वेदों से भी; ऍट्टा–अग्राह्य; परम् चुडर्–परमज्योति; पॉलिवते पोल्–दमकती जैसे; पॉलिन्तान्–छविमय रहे। ४०५२

प्रभु का पुष्पक अंड के समान था; पुण्डरीकाक्ष, विजयी, रक्षक भगवान श्रीराम सभी लोकों के ऊपर (परमपद वैकुण्ठ में) असंख्यगुणगणपरिपूर्ण होकर अनादिमध्यांत, पुरातन चतुर्वेदागोचर परम वस्तु जैसे ज्योतिर्मय रहती हैं वैसे ही जाज्वल्यमय रहे। ४०५२

तेनुडै यलङ्गल् मौलिच् चॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् शेयुम्
मीनुडै यहळि वेलै यिलङ्गैयर् वेन्दुम् वॅड़्ड़ित्
तानैयुम् बिड़रु मड़्ड़ैप् पडैप्पॅरुन् दलैवर् तामुम्
मानुड वडिवङ् गॉण्डार् वळ्ळल्तन् वायमै तन्नाल् 4053

तेन् उटै–मधुयुक्त; अलङ्कल्–पुष्पमाला से युक्त; मौलि–किरीटवाला; चॅं कतिर्–लाल किरणों के; चॅल्वन्–धनी सूर्य का; चेयुम्–पुत्र; मीन् उटै–मछलियों-सहित; वेलै–समुद्र की; अकळि–खाई वाली; इलङ्कैयर् वेन्तुम्–लंका का पति; वॅड़्ड़ि–विजयी; तानैयुम्–सेना; पिड़रुम्–अन्य; मड़्ड़ै–और; पटै–सेना के; पॅरु–बड़े; तलैवर् तामुम्–नायक; वळ्ळल् तन्–प्रभु के; वाय्मै तन्नाल्–वचन के अनुसार; मानुट–मनुष्य के; वटिवम्–रूप; कॉण्टार्–ले लिये (सभी ने)। ४०५३

तब उदार प्रभु श्रीराम की प्रकट कही आज्ञा के अनुसार मधुयुक्त पुष्पमाला से अलंकृत मुकुटधारी, लाल किरणों के स्वामी सूर्य का पुत्र, मकरालय-परिखा लंका के वासियों का राजा और दोनों विजयी सेनाओं के वीर और अन्य सभी यूथप —सभी ने मानव रूप धर लिया। ४०५३

कुडतिशै मड़ैन्द पिन्नरक् कुणतिशै युदयञ् जॅय्वान्
वडतिशै ययन मुन्नि वरुवदे कडुप्प मानम्
तडैयीरु शिड़िदिन् ड्राहित् ताविवान् पडरुम् वेलै
पडैयमै विळियाट् कैय तिनैयन पहर लुड़्ड़ान् 4054

कुट तिचै–पश्चिम दिशा में; मऱैन्त पिन्नर्–अस्त होने के बाद; कुण तिचै–पूरब दिशा में; उतयम् चॆय्वान्–उदित होनेवाला; वट तिचै–उत्तर दिशा के; अयनम्–मार्ग में; मुन्नि–(जाना) सोचकर; वरुवतु–आता हो; कटुप्प–जैसे; मानम्–विमान; तटै–बाधा; ऒरु चिऱितु–कोई छोटी भी; इन्ऱि आकि–न होकर; वान्–आकाश में; तावि–लाँघकर; पटरुम् वेलै–जाता रहा तब; ऐयन्–प्रभु; वेलै पटै–भाला हथियार; अमै विऴियाट्कु–के समान आँखों वाली को; इवैयन–ये; पकरल्–कहने; उऱ्ऱान्–लगे। ४०५४

पश्चिम दिशा में अस्त होकर पूर्व दिशा में उदय होता रहा सूर्य मानो उत्तर दिशा के मार्ग में जाता हो, ऐसा पुष्पकयान अबाध गति से आकाश-मार्ग में जाता रहा। तब श्रीराम भाला-सी आँखों वाली सीता को निम्नलिखित विषय बताने लगे। ४०५४

इन्दिरऱ् कञ्जि मेन्ना ळिरुङ्गडल् पुक्कु नीङ्गाक्
कन्दर शयिलन् दन्नैक् कण्डवर् विनैह डीर्क्कुङ्
गन्दमा दनमॆन् ऱोदुङ् गिरियिवण् किडप्पक् कण्डाय्
पैन्दॊडि यडैत्त शेदु पावन माय दॆन्ऱान् 4055

पैन्तॊटि–खरे स्वर्ण से निर्मित कंकणधारिणी; मेनाळ्–पहले; इन्तिरऱ्कु–इन्द्र से; अञ्चि–डरकर; इरु कटल्–बड़े समुद्र में; पुक्कु–घुसकर; नीङ्का–जो बाहर नहीं आया; कन्तरम्–कंदरासहित; चयिलम् तन्नै–शैल को; कन्तमातनम्–गंधमादन; ऎन्ऱु–'इति'; ओतुम्–जो कहा जाता है; कण्टवर्–दर्शक के; विनैकळ् कर्मो को; तीर्क्कुम्–दूर करनेवाले; किरि–पर्वत को; इवण्–इधर; किटप्प–पड़ा हुआ; कण्टाय्–देखो; अटैत्त–बँधे हुए; चेतु–सेतु के कारण; पावनम्–पवित्र; आयतु–बना; ऎन्ऱान्–कहा प्रभु ने। ४०५५

खरे स्वर्णकंकणहस्ते! पहले इंद्र से डरकर कंदराओं-सह गंधमादन नामक पर्वत बड़े समुद्र में छिपा और वहीं रह गया। दर्शकों के कर्ममेटक उस गिरि को इधर पड़ा हुआ देखो। उसी से हमारा बाँधा सेतु पावन हुआ। श्रीराम ने वह कहा। ४०५५

कङ्गैयो डियमुनै कोदा विरिनरु मदैका वेरि
पॊङ्गुनीर् नदिहळ् यावुम् बडिन्दिलार् पुन्मै पोहा
शङ्गॆऱि तरङ्ग वेलै तडुत्तिच् चेदु वॆन्नुम्
इङ्गिदि नॆदिरन्दवोर् पुन्मै यावैयु नीक्कु मन्ऱे 4056

कङ्कैयोटु–गंगा और; यमुनै–यमुना; कोताविरि–गोदावरी; नरुमतै–नर्मदा; कावेरि–कावेरी आदि; नीर् पॊङ्कुम्–जलसमृद्ध; नतिकळ्–नदियाँ; यावुम्–सभी में; पटिन्तिलार्–स्नान किये बिना; पुन्मै–पाप (नीचता); पोका–नहीं छूटता; चङ्कु ऎऱि–शंख फेंकती; तरङ्कम्–तरंगाकुल; वेलै–समुद्र; तटुत्त–रोककर; चेतु ऎन्नुम्–सेतु नामक; इङ्कु–यहाँ; इतिन्–इसके; ऎतिरन्तोर्–

जो दर्शन करते उनका; पुतुमै–मल; यावैयुम्–सारा; नीक्कुम्–दूर कर देगा। ४०५६

गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी आदि नदियाँ, उनमें स्नान करो तभी पाप हरती हैं। पर शंख उछालती तरंगों से पूर्ण इस समुद्र में बाँधे गये इस 'सेतु' के तीर्थ का जिन्होंने दर्शन किया उनका पाप (उनकी नीच भाव) दूर हो जाता है। ४०५६

मरक्कल मियङ्ग वेण्डि वरिशिलैक् कुदैयाड् कीड्रित्
तरुक्किय विडत्तुप् पञ्ज पादह रेनुञ् जारिड्
पॅरुक्किय वेळ्ळ मूनृ पिऱवियुम् बिणिह णीङ्गि
नॅरुक्किय वमरर्क् कॅल्ला नीणिदि याव रत्तूरे 4057

मरक्कलम्–नौकाएँ; इयङ्क वेण्टि–चलें यह चाहकर; वरिचिलै–सबन्ध धनु के; कुतैयाल्–छोर से; कीड्रि–चीरकर; तरुक्किय–जहाँ मैंने गहरा बनाया; इटत्तु–उसको; पञ्च पातकर् एनुम्–पंचमहापातकी भी क्यों न हों; चारिल्–आकर स्नान करें; एळ्ळु मूनृ पॅरुक्किय–तो इक्कीस; पिऱवियुम्–जन्मों के; पिणिकळ् नीङ्कि–रोग दूर होंगे और; नॅरुक्किय–भीड़ के; अमरर्क्कु ॲल्लाम्–सभी देवों के लिए भी; नीळ् निति–बड़ी संपत्ति; आवर्–बनेंगे। ४०५७

मैंने यहाँ नौकाओं के चलने की सुविधा के लिए अपने सबंध धनु के नोक से मार्ग बनाया था। वहाँ पंचमहापातकी भी आकर स्नान करें, तो उनका इक्कीस जन्मों का पाप-रोग दूर हो जायगा। और उन्हें देव भी अपनी संपत्ति (सम्मान्य विभूति) मानेंगे। ४०५७

नॅड्रियि तळ्ळुञ् जॅङ्ग णीऱणि कडवु णीडु
कड्रैयञ् जडैयित् मेवु कङ्गैयुञ् जेदु वाहप्
पॅड्रिल मॅन्ड्रु कॉण्डु पॅरुन्दवम् बुरिहित् ड्राळाल्
मड्रिदत् तूय्मै यॅव्वा ऱुरैप्पदु मलर्क्कण् वन्दाय् 4058

मलर् कण्–कमल से; वन्ताय्–उत्पन्न श्रीमती; नॅड्रियिल्–भाल पर; अळ्ळुम्–जलती; चॅंकण्–लाल आँखों से; नीऱु अणि–भभूत से भूषित; कटवुळ्–ईश्वर के; नीटु–लंबे; कड्रै अम् चटैयिल्–कपर्द पर; मेवुम्–रहनेवाली; कङ्कैयुम्–गंगा भी; चेतुवाक–सेतु; पॅड्रिलम्–हम नहीं बन पायी; ॲन्ड्रु कॉण्टु–ऐसा सोचकर; पॅरु तवम्–बड़ी तपस्या; पुरिकिन्ड्राळाल्–करती तो; इतन् तूय्मै–इसकी पवित्रता का; ॲव्वाऱु–कैसा; उरैप्पतु–वर्णन किया जाय। ४०५८

हे कमले! भाल में जलती आँख से और शरीर पर भभूत से विभूषित शिव के कपर्द पर रहनेवाली गंगा भी पछताती हैं कि हम सेतु नहीं बनीं। वे तदर्थ बड़ी तपस्या कर रही हैं! तो इसकी पवित्रता का कैसा वर्णन हो? । ४०५८

तॆव्वडुम् जिलैक्क वीरन् शेदुविन् पॆरुमै यावुम्
वॆव्विडम् बॊरुदु नीण्डु मिळिर्दरुङ् गरुङ्गट् चॆव्वाय्
नॊव्विडै मयिल नाट्कु नुवन्ऱुळि वरुण नोना
दिव्विडै वन्दु कण्डाय् शरणॆन वियम्बिऱ् ऱॆन्ऱान् 4059

तॆव् अटुम्–शत्रु-संहारक; चिलै कै–कोदण्डपाणी; वीरन्–वीर ने; चेतुविन्–सेतु की; पॆरुमै यावुम्–सभी महिमा; वॆव्विटम्–भयंकर विष से; पॊरुतु–लड़कर; नीण्टु–(कान तक) लम्बे; मिळिर् तरुम्–उज्ज्वल; करु कण्–नीले नेत्र; चॆव्वाय्–लाल अधर; नॊव् इटै–पतली कमर; मयिल् अत्ताट्कु–कलापीनिभ देवी को; नुवन्ऱुळि–जब बतायी; इव् इटै–यह स्थल; वरुणन्–वरुण ने; नोनातु–सह न सककर; वन्तु–आकर; चरण् ऎन–"शरण" चाहता हूँ; इयम्पिऱ्ऱु–ऐसा कहा; कण्टाय्–देखो (यह स्थान); ऎन्ऱान्–कहा। ४०५९

परंतप कोदंडपाणी श्रीवीरराघव ने कठोर विष से लड़नेवाली और कानों तक लंबी रही नीली आँखें और लाल अधरों से युक्त सीताजी को सेतु की बड़ी महिमा बतायी। (तब वरुण-नमस्कार का स्थल आ गया तो) "देखो, यही स्थल है जहाँ वरुण आग्नेयास्त्र का प्रभाव न सहकर आकर बोला था कि 'मैं आपकी शरण में आया हूँ'। —श्रीराम ने कहा।" ४०५९

इदुतमिळ् मुनिवन् वैहु मियऱ्हु कुन्ऱु मुन्नान्
अदुवळर् मणिमे लोङ्ग लप्पुऱत् तुयर्न्दु तोन्ऱुम्
अदितिह ळनन्द वॆऱ्पॆन् ऱुरुडर वनुमन् ऱोन्ऱिऱ्
ऱॆंदुवॆन वणङ्गै नोक्कि यिऱ्ऱॆन विरामन् शॊन्नान् 4060

इरामन्–श्रीराम; इतु–यह; तमिळ् मुनिवन्–"तमिळ" के महर्षि; वैकुम्–जहाँ रहते हैं; इयल् तकु–वह योग्य; कुन्ऱम्–पर्वत है; अतु–वह; मुन्नान् वळर्–आदिदेव जहाँ रहते; मणि मेल्–रत्नगर्भ; ओङ्कल्–पर्वत (तिरुमालिरुन् जोलै मलै); अति तिकळ्–बहुत छविमय; अनन्त वॆऱ्पु–अनंत पर्वत (श्री वेंकटाद्रि); अ पुऱत्तु–उस ओर; उयर्न्तु तोन्ऱुम्–ऊँचा दिखता है; ऎन्ऱु–ऐसा; उरुळ् तर–कहने पर; अनुमन्–हनुमान; तोन्ऱिऱ्ऱु–सामने आया; ऎतु–कहाँ; ऎन–ऐसा कहने पर; अणङ्कै नोक्कि–देवी को देखकर; इऱ्ऱु–यहाँ; ऎन–ऐसा; चॊन्नान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०६०

श्रीराम ने आगे दिखाया। "यही तमिळ (वैयाकरण) ऋषि अगस्त्य का वासस्थल गिरि है। आदिभगवान श्रीविष्णु का वह रत्नमय 'तिरुमालिरुञ् जोलै मलै' नाम का पर्वत है। उधर श्री वेंकट गिरि ऊँचा दिखती है।" उनके यह कहने पर देवी ने प्रश्न किया कि हनुमान आपसे मिला कहाँ? श्रीराम ने ऋष्यमूक पर्वत को दिखाकर कहा कि 'यही'। ४०६०

वालियॆन् ऱळवि लाऱ्ऱल् वन्मैयान् महर नीर्शूळ्
वेलैयैक् कडक्कप् पायुम् विऱलुडै यवनै वीट्टि

नूलियड्‌ रुम नीदि तुन्नित्तरङ्‌ गुणित्त मेलोर्‌
पोलियड्‌ रवतन्‌ मैन्द तुरैतरुम्‌ वॊरैयी वॆन्‌रान्‌ 4061

अळविल्‌ आट्रल्‌–अमित विक्रम; वन्मैयान्‌–बलवान; मकरम्‌–मकर-भरे; नीर्‌चूळ्‌–जलपूर्ण; वेलैयै–समुद्र को; कटक्क–लाँघते; पायुम्‌–झपटने का; विरल्‌ उटै–बल जिसमें था; वालि ॲन्‌नुम्‌ अवर्त–वाली नाम के उसे; वीट्टि–मारकर; नूल्‌ इयल्‌–शास्त्रोक्त; तरुमन्‌–धर्म; नीति–नीति आदि; तुन्नित्तु–गुनकर; अरम्‌ कुणित्त–धर्मरत; मेलोर्‌–उत्तम लोगों; पोल्‌ इयल्‌–के समान स्वभाववाला; तपनन्‌ मैन्दन्‌–सूर्य का पुत्र; उरै तरुम्‌–जहाँ रहता; वॊरै ईतु–वह चट्टान यह है; ॲन्‌रान्‌–कहा (श्रीराम ने)। ४०६१

श्रीराम ने उसका वर्णन यों किया। अपार बलशाली, मकरजलाशय समुद्र को लाँघ सकनेवाले साहसी वाली को मारनेवाला और शास्त्रोक्त नीतिधर्म आदि गुनकर धर्मावलम्बी रहनेवाले उत्तम लोगों के-से स्वभाववाला, सूर्य का पुत्र यहीं रहता है। यही उसके वास का पर्वत है। ४०६१

किट्किन्दै यिदुवे लैय केट्टियाल्‌ लॆनदु पॆण्मै
मट्कुन्दा नाय वॆळ्ळ मह्ळिरिल्‌ लाहि वानोर्‌
उट्कुम्बोर्‌ शेनै शूळ्‌ वॊरुत्तिये ययोत्ति यॆय्दिन्‌
कट्कॊन्दार्‌ कुळलि नारै येट्रुदल्‌ कडन्मैत्‌ तॆन्राळ्‌ 4062

ऐय–प्रभु; इतु–यह; किट्किन्तैयेल्‌–किष्किंधा हो तो; केट्टियाल्‌–सुनिए; तान्‌–वे; वॆळ्ळम्‌ आय–'वॆळ्ळमों' में; वानोर्‌–देवों को भी; उट्कुम्‌–भयभीत होने देकर; पोर्‌–योद्धाओं की; चेनै चूळ्‌–सेना के चारों ओर रहते; मकळिर्‌–स्त्रियाँ; इन्‌राकि–नहीं हैं; ऑरुत्तियें–मैं अकेली; अयोत्ति–अयोध्या; ॲय्तिन्‌–जाऊँ तो; ॲनतु–मेरा; पॆण्मै–स्त्री गौरव; मट्कुम्‌–कम हो जायगा; कळ्‌ कॊन्तु आर्‌–मधु-सह गुच्छों को पहनी हुई; कुळलिनारै–केशिनियों को; एट्रुतल्‌–इसमें चढ़ा लेना; कटन्मैत्तु–करणीय है; ॲन्राळ्‌–कहा (देवी ने)। ४०६२

तब सीता ने कहा। यही किष्किधा हो तो सुनिए। पुरुष वॆळ्ळमों की संख्या में हैं और स्त्री मैं अकेली एक हूँ। अयोध्या में जब पहुँचूँ तब मेरे स्त्रीत्व की कमी मानी जायगी। मधुमिश्रित पुष्प-गुच्छों से अलंकृत केशवाली तन्वियों को ले जाना ही ठीक काम होगा। ४०६२

अम्मॊळि यिरवि मैन्दर्‌ कण्णरा नुरैप्प वन्नान्‌
मॆय्म्मैशे रनुमत्‌ रन्नै नोक्किनी विरैविन्‌ वीर
मैम्मलि कुळलि नारै मरबिनाड्‌ कॊणर्दि यॆन्नाच्‌
चॆम्मैशे रुळ्ळत्‌ तण्णल्‌ कॊणर्न्दनन्‌ शॆन्रु मन्नो 4063

अ मॊळि–वह वचन; अण्णल्‌–प्रभु ने; इरवि मैन्तर्क्कु–सूर्यपुत्र से; उरैप्प–कहा तो; अन्नान्‌–उसने; मॆय्म्मै चेर्‌–सत्यवादी; अनुमन्‌ तन्नै–हनुमान

को; नोक्कि–देखकर; वीर–वीर; नी–तुम; विरैवित्–जल्दी; मै मलि–काली; कुऴलितारै–केशिनियों को; मरपिताल्–क्रम के अनुसार; कोणर्ति–लाओ; ॲन्ऩा–कहा तो; चॅम्मै चेर्–सीधे-सादे; उळ्ळत्तु–मन का; अण्णल्–श्रेष्ठ हनुमान; चॅन्ऱु–जाकर; कोणर्न्ततऩ्–लाया। ४०६३

श्रीराम ने सुग्रीव से उनकी राय कही। सुग्रीव ने सत्यसंध हनुमान से कहा— वीर! जाओ। जल्दी काली केशिनियों को उचित रीति से बुला लाओ। सीधे-सादे मन वाला हनुमान गया और उन्हें बुला लाया। ४०६३

वरिशैयिऩ् वऴामै नोक्कि मारुदि मादर् वॅळ्ळम्
करैशॅय लरिय वण्णङ् गॊणर्न्दतऩ् कणत्तिऩ् मुत्तम्
विरैशॆऴि कुऴलि ऩार्तम् वेन्दऩै वणङ्गिप् पॅण्मैक्
करशियै यैय ऩोडु मडियिणै तॊऴुदु निऩ्ऱार् 4064

मारुति–मारुति; करै चॅयल्–सीमा बनाना; अरिय वण्णम्–मुश्किल हो, इतना; मातर् वॅळ्ळम्–स्त्री-समूह; कणत्तिऩ् मुत्तम्–पल भर में; वरिशैयिऩ्–आदर में; वऴामै–दोष न हो ऐसा; नोक्कि–ध्यान देकर; कोणर्न्ततऩ्–लाया; विरैचॆऴि–सुगंधमय; कुऴलिऩार् तम्–केशोंवाली; वेन्तऩै वणङ्कि–राजा को नमस्कार करके; ऐयऩोटुम्–प्रभु राजाराम और; पॅण्मैक्कु–स्त्रियों में; अरचियै–रानी के; इणै अटि–चरणद्वय; तॊऴुतु निऩ्ऱार्–नमस्कार करके रहीं। ४०६४

मारुति पल भर में असीम वानरियों को उचित गौरव के साथ ध्यान से ला चुका। सुगंधित केशिनियाँ वे पहले अपने राजा को नमस्कार करके फिर प्रभु और स्त्रीत्व की श्रृंगार सीताजी को नमस्कार करके खड़ी हुईं। ४०६४

मङ्गल मुदला वुळ्ळ मरबिऩिऱ् कॊणर्न्द यावुम्
अङ्गवर् वैत्तुप् पॅण्मैक् करशियैत् तॊऴुदु शूऴ
नङ्गैयु मुवन्दु वेऱोर् नवैयिलै यिऩिमऱ् ऱॆऩ्ऱाळ्
पॊङ्गिय विमाऩन् दाऩु मऩमॅऩ वॅऴुन्दु पोन 4065

अङ्कु अवर्–तब वे; मरपिऩिल्–जिस रीति से; कॊणर्न्त–लायी गयीं; मङ्कलम्–अष्टमंगल द्रव्य; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; यावुम्–उन सबको; वैत्तु–रखकर; पॅण्मैक्कु–स्त्री-गुणों की; अरचियै–रानी को; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चूऴ–घेरकर खड़ी रहीं; नङ्कैयुम्–देवी ने भी; उवन्तु–खुश होकर; इऩि–अब; वेऱु ओर्–और कोई; नवै इलै–त्रुटि नहीं है; ऎऩ्ऱाळ्–कहा; पॊङ्किय–उज्ज्वल; विमाऩम्–विमान; ताऩुम्–स्वयं; मऩम् ऎऩ–मन की गति में; ऎऴुन्तु पोऩ–उठ चला। ४०६५

वे नियमानुसार जो अष्टमंगल द्रव्य (चामर, दीप, पूर्णकुंभ, आईना आदि) लायी थीं उन्हें यथोचित रीति से अर्पित करके स्त्रीरत्न सीताजी के चारों ओर खड़ी हो गयीं। तब सीतादेवी ने कहा कि अब कोई त्रुटि नहीं! ज्वलंत विमान उठा और मनोगति में चलने लगा। ४०६५

पोदा विशुम्बिड़् ट्रिहळ्पुट्पहम् बोद लोडुम्
शूदार् मुलैत्तोहैयै नोक्किमुन् ड्रोन्रु शूळ्ल्
कोदा विरिसड़् डूदन्माडुयर् कुन्रु नित्तैप्
पेदाय् पिरिवुत् तुयर्पीळै पिणित्त दैन्ड्रान् 4066

पोता–उठकर; विचुम्पिल् तिकळ्–आकाश में दिखनेवाला; पुट्पकम्–पुष्पक; पोतलोटुम्–जब जाता रहा तब; चूतु आर् मुलै–गोटे के समान स्तनों वाली; तोकैयै नोक्कि–कलापीनिभ सीता को देख; पेताय्–अबोध; मुन् तोन्रु–सामने दिखनेवाला; चूळल्–स्थान; कोताविरि–गोदावरी है; अतन् माटु उयर्–उसके पास उन्नत; कुन्रु नित्तै–पर्वत ने ही तुम्हें; पिरिवु तुयर्–विरह-दुःख की; पीळै–पीड़ा; पिणित्ततु–में डाल दिया; ऍन्ड्रान्–कहा। ४०६६

जब पुष्पक आकाश में जा रहा था तब (जुए के) गोटों के समान स्तनों वाली सीता को देखकर श्रीराम ने बताया कि अबोध प्यारी ! सामने जो दिखता है वह गोदावरी तट है ! उसके पास ऊँचा जो पर्वत है उसी ने तुम्हें वियोग-दुःख में डाला। ४०६६

शिरत्तु वाशवण् डलम्बिडु तॆरिवैके ळिदुनीळ्
तरत्तु वाशवर् वेळ्वियर् तण्डह मदुतान्
वरत्तु वाशवन् वणङ्गुरु शित्तिर कूडम्
बरत्तु वाशव नुरैविड मिदुवॆन्प पहर्न्वान् 4067

चिरत्तु वाचम्–केश की सुगंधि के कारण; वण्टु–भ्रमर (जिसके केश पर); अलम्पिटु–गुंजार करते रहें; तॆरिवै–ऐसी रमणी; केळ्–सुनो; इतु–यह; नीळ् तरत्तु–बहुत योग्य; वाचवर्–उपासक और; वेळ्वियर्–याजी (ऋषियों का); तण्टकम्–दंडक वन है; अतु–वह; वरत्तु–महिमावान; वाचवन्–वासव द्वारा; वणङ्कुरु–पूजित; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट है; इतु–यह; परत्तुवाचवन्–भरद्वाज का; उऱैविटम्–वासस्थान है; ऍन पकर्न्तान्–ऐसा कहा। ४०६७

श्रीराम ने आगे कहा— सिर की गंध के कारण भ्रमर जिस पर गुंजार करते हैं ऐसे केशवाली हे रमणी ! सुनो। यही दंडकवन है जहाँ सुयोग्य उपासक और याजी वास करते हैं। वही चित्रकूट है जो वासववंद्य है ! यह भरद्वाजाश्रम है। ४०६७

मित्तै नोक्कियव् वीरनी दियम्बिडुम् वेलै
तन्नै नेरिला मुनिवर नुणर्न्दुलत् नहत्तिन्
ऍन्नै याळुडै नायह नॆय्दिन नॆन्नात्
तुन्नु मादवर् शूळ्तर वॆदिर्कोळ्वान् ड्रोडर्न्दान् 4068

मित्तै–विद्युत् (-सी देवी) को; नोक्कि–देखकर; अ वीरन्–उन वीर के; ईतु–यह; इयम्पिटुम् वेलै–बताते समय; तन्नै नेर् इला–अनुपम; मुनिवरन्–मुनिवर का; उणर्न्तु–जानकर; तन् अकत्तिन्–मेरे स्थान में; ऍन्नै–मेरे;

आळ् उटै–स्वामी; नायकन्–प्रभु; ॲय्तिनन्–आये; ॲन्ना–कहकर; ॲतिर् कॊळ्वान्–अगुवानी के लिए; तुन्नुम्–निकट के; मातवर्–महान तपस्वियों के; चूळ्तर–घेरे आते; तॊटर्न्तान्–गये। ४०६८

जब श्रीराम विद्युच्छवि सीता से यह बता रहे थे, तब उधर अनुपम मुनिवर भरद्वाज यह जानकर कि मेरे स्वामी प्रभु श्रीराम आ गये, उनकी अगुवानी के लिए निकट के तपोधनों के साथ आये। ४०६८

आद पत्तिरङ् गुण्डिहै यॊरुकैयि नणैत्तुप्
पोद मुट्रिय तण्डॊरु कैयिनिर् पॊलिय
माद वप्पय नुरुवुकॊण् डॆदिर्वरु मापोल्
नीदि वित्तह नडन्दमै नोक्किन नॆडियोन् 4069

आत पत्तिरम्–आतपत्र (छाता); कुण्टिकै–कमण्डल; ऒरु कैयिन्–एक हाथ में; अणैत्तु–लेकर; तण्टु–दण्ड; ऒरु कैयिनिल्–एक हाथ में; पॊलिय–रहा, ऐसा; पोतम् मुट्रिय–आत्मज्ञानपक्व; नीति–नीतिमान; वित्तकन्–विद्वान्; मा तवम्–महान तपस्या का; पयन्–फल; उरुवु कॊण्टु–मूर्तिमान होकर; ॲतिर् वरुमा पोल्–सामना आता जैसे; नटन्तमै–आना; नॆटियोन्–त्रिविक्रम् देव ने; नोक्किनन्–देखा। ४०६९

एक हाथ में छत्र और कमंडल और दूसरे हाथ में ब्रह्मदण्ड के साथ शोभायमान, आत्मबोधपक्व, नीतिमान तथा विद्वान् मुनि को मूर्तिमान तपस्या के फल के समान अपने सामने आता हुआ श्रीराम ने देखा। ४०६९

ॲट्प हत्तिनै यळवॆयुङ् गरुणैयो डिशैन्द
नट्प हत्तिला वरक्करै नरुक्किमा मेरु
विट्प हत्तुरै कोळरि यॆनप्पॊलि वीरन्
पुट्प हत्तिनै वदिहॆन निनैन्दनन् पुवियिल् 4070

करुणैयोटु–दया के साथ; इचैन्त–मिश्रित; नट्पु–मित्रता; तिनै अळवॆयुम्–बहुत कम भी; अकत्तु–मन में; इला–(जिनका) न रहा; अरक्करै–उन राक्षसों को; नरुक्कि–दबोकर; ॲण् पक–छिन्नमन कर; मा मेरु–बड़े मेरु की; विट्पु अकत्तु–दरार में; उरै–रहनेवाले; कोळरि–केसरी; ॲन–के समान; पॊलि–शोभित; वीरन्–वीर ने; पुट्पकत्तिनै–पुष्पक को; पुवियिल्–भूमि पर; वतिळ–रोकूँ; ॲन–ऐसा; निनैन्तनन्–सोचा। ४०७०

दया, मित्रता आदि जिनके मन में थोड़ी मात्रा में भी नहीं थी, उन राक्षसों के हंता श्रीराम ने, जो कि महान मेरु की दरार के वासी, केसरी के समान शोभते थे, मन में यह भाव किया कि पुष्पक भूमि पर उतरे। ४०७०

उन्नु मात्तिरत् तुलहिनै यॆडुत्तुम्ब रोङ्गुम्
पॊन्नि नाडवन् दिळिन्दॆनप् पुट्पहन् दाळ

ऍन्ऩै याळुडै नायहऩ् वल्लैयि ऩॆदिर्पोय्प्
पऩ्ऩु मामऱैत् तबोदऩऩ् ऱाण्मिशैप् पणिन्दाऩ् 4071

उऩ्ऩु मात्तिरत्तु–मन में विचार लाते ही; पुट्पकम्–पुष्पक; उलकिऩै–संसार को; ऍट्टुत्तु–ढोकर; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कुम्–ऊपर चलनेवाली; पॊऩ्ऩितिऩ् नाट्टु–अमरावती; वन्तु इऴिन्तॆऩ–आ उतरी जैसे; ताऴ–नीचे आयी तो; ऍऩ्ऩै–मेरे; आळुटै नायकऩ्–प्रभु श्रीनाथ; वल्लैयिऩ्–तुरन्त; ऍतिर् पोय्–सामने जाकर; पऩ्ऩुम्–पारायणगत; मामऱै तपोतऩऩ्–चतुर्वेदों के तपस्वी के; ताळ् मिचै–चरणों में; पणिन्ताऩ्–विनत हुए। ४०७१

ज्योंही वे अपने मन में यह भाव लाये त्योंही संसार के लोगों को धारण करते हुए आकाश में चलनेवाली अमरावती नगरी नीचे उतर आयी हो, ऐसा वह पुष्पक नीचे आया। तब हमारे (कवि के और भक्त हमारे) नियंता स्वामी श्रीराम ने सत्वर जाकर सतत वेद के पाठ में लगे रहनेवाले तपोधन भरद्वाज के चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४०७१

अडियिऩ् वीऴ्दलु मॆडुत्तुनल् लाशियो डणैत्तु
मुडियै मोयिऩ निऩ्ऱुऴि मुळरियङ् गण्णऩ्
शडिल नीडुह ळॊऴितरत् तऩदुकण् णरुवि
नॆडिय कादलङ् गलशम दाट्टिऩ नॆडियोऩ् 4072

अटियिऩ् वीऴ्तलुम्–चरणों पर गिरते ही; नॆटियोऩ्–महात्मा ने; ऍटुत्तु–उठाकर; नल् आचियोटु–मंगल वचनों के साथ; अणैत्तु–गले लगाकर; मुटियै–सिर को; मोयिऩऩ्–सूँघा; निऩ्ऱुऴि–और खड़े रहे तब; मुळरि–पद्म-सम; अम् कण्णऩ्–सुन्दर आँखों वाले की; चटिलम्–जटाजट पर की; नीळ् तुकळ्–घनी धूलि; ऒऴि तर–दूर हो ऐसा; नॆटिय कातल्–गहरे स्नेह के; तऩतु–अपने; कण् अरुवि–आँखों के आँसू के; कलचमतु–कलश से; आट्टिऩऩ्–नहलाया। ४०७२

ज्योंही श्रीराम गिरे त्योंही महान तपस्वी ने उन्हें उठाया और आशीर्वचन कहते हुए आलिंगन करके सिर को सूंघा (जो वात्सल्य-प्रदर्शन का एक उपाय है)। फिर अरुणपद्माक्ष श्रीराम की जटा की धूल को हटाते हुए अपने गहरे स्नेह से उमड़ते आये अश्रुजल के कलश से नहला दिया। ४०७२

करुहुम् वार्हुऴऱ् चनहियो डिळवल्कै तॊऴुदे
अरुहु शार्दर वरुन्दव नाशिहळ् वऴङ्गि
उरुहु कादलि ऩॊऴुहुकण् णीरिऩ ऩुवहै
परुहु सारमिऴ् दॊत्तुळङ् गळित्तऩऩ् परिवाल् 4073

करुकुम्–काले; वार् कुऴल्–लम्बे केशवाली; चतकियोटु–जानकी के साथ; इळवल्–कनिष्ठ लक्ष्मण के; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; अरुकु चार् तर–पास आने

पर; अरु तवन्–श्रेष्ठ तपस्वी; आचिकळ्–आशीर्वाद; वऴङ्कि–देकर; उरुकु कातलिन्–पिघलते प्रेम से; ओऴुकु–बहनेवाले; कण्णीरिनन्–आँसू की आँखोंवाले; उवकै परुकुम्–चाव के साथ पेय; अरुमै–अपूर्व; अमिऴ्तु ओत्तु–अमृत के समान; परिवाल्–स्नेह से; उळम्–मन में; कळितुततन्–संतोषपूरित हुए। ४०७३

काले तथा लंबे केश वाली जानकी और कनिष्ठ लक्ष्मण उनके पास हाथ जोड़ते हुए गये। तो भरद्वाज ने आशीर्वाद दिये। उनका दिल श्रीराम आदि को देखते-देखते स्नेह से पिघल जाता था। आनंदाश्रु बहाते हुए वे मानो चाव के साथ पेय अमृत के पान-से स्नेह के कारण आनंदभाव-विभोर हो गये। ४०७३

वान रेशनुम् वीडणक् कुरिशिलु मऱ्ऱै
एनै वीररुन् दौऴुन्दौऱु माशिह ळियम्बि
आन नादनैत् तिरुवोडु नन्मनै कॊणर्न्दान्
आन मादवर् कुऴात्तॊडु मरुमऱै पुहन्ऱे 4074

वानरेचनुम्–वानरेश्वर और; वीटणन्–विभीषण; कुरिचिलुम्–राजा; मऱ्ऱै–और; एनै वीररुम्–अन्य वीर; तोऴुन्तोऱुम्–ज्यों-ज्यों झुकते; आचिकळ्–त्यों-त्यों आशीर्वाद; इयम्पि–देकर; आन मातवर्–अपने महान तपस्वी; कुऴात्तोटुम्–दलों के साथ; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेदों का; पुकन्ऱे–पारायण करते हुए; आन नातनै–ज्ञाननाथ को; तिरुवोटु–श्री के साथ; नन्मनै–अपने श्रेष्ठ आश्रम में; कॊणर्न्तान्–लाये। ४०७४

वानरेश, राजा विभीषण और अन्य वीरों ने भरद्वाज को नमस्कार किया। वे उन्हें आशीर्वाद देकर अपनी मंडली के साथ वेदपाठ करते हुए ज्ञानगम्य श्रीराम को श्री के साथ अपने सुंदर आश्रम में लिवा लाये। ४०७४

पन्न शालैयुट् पुहुन्दुनी डरुच्चनै पलवुम्
शॊन्न नीदियिऱ् पुरिन्दपिन् शूरियन् मरुमान्
तन्नै नोक्किनन् पन्मुऱै कण्गणीर् तदुम्बप्
पिन्नॊर् वाशह मुरैत्तनन् तबोदरिऱ् पॆरियोन् 4075

तपोतरिल् पॆरियोन्–तपोधनों में श्रेष्ठ; पन्नचालैयुट् पुकुन्तु–पर्णशाला में प्रवेश करके; नीटु अरुच्चनै–श्रेष्ठ सत्कार; पलवुम्–अनेक तरह के; चॊन्न नीतियिल्–यथोक्त रीति से; पुरिन्त पिन्–करने के बाद; चूरियन् मरुमान् तन्नै–सूर्यवंशी राम को; कण्कळ्–आँखों में; नीर् ततुम्प–जल छलकाते हुए; पन्मुऱै–अनेक बार; नोक्किनन्–देखा; पिन्–बाद; ऒरु वाचकम्–एक वचन; उरैत्तनन्–कहा। ४०७५

तपोधनशिरोमणि ने पर्णशाला में आकर उचित सत्कार विविध प्रकार के और अच्छे, यथावत् रीति से किये। फिर सूर्यवंशी श्रीराम पर

आँखों में आँसू को छलकने देते हुए बार-बार दृष्टि डाली। बाद एक बात कही। ४०७५

मुऩिवर् वाऩवर् मूवुल हत्तुळोर् यारुम्
तुऩियु ळ्ऩ्दिडत् तुयर्दरु कॉडुमऩत् तॉऴिलोर्
नऩिम डिऩ्दिड वलहैहळ् नाडह नडिप्पक्
कुऩियुम् वार्शिलैक् कुरिशिले यॅऩ्ऩिऩिक् कुणिप्पाम 4076

मुऩिवर्–मुनिगण; वाऩवर्–और देव; मू उलकत्तुळोर् यारुम्–त्रिलोकवासी सभी; तुऩि उऴ्ऩ्तिट–डरकर दुःखी रहें ऐसा; तुयर् तरु–त्रास देनेवाले; कॉडु मऩम्–क्रूर मन; तॉऴिलोर्–क्रूर कर्म; नऩि मटिऩ्तिट–एक दम मर जायँ; अलकैकळ् नाटकम्–भूतगण नाच; नटिप्प–नाचें ऐसा; कुऩियुम्–झुके; वार्चिलै–सबन्ध धनुर्धर; कुरिचिले–वीर पुरुष; ॲॅऩ् इऩि कुणिप्पाम्–अब क्या माँगेंगे। ४०७६

त्रिलोक-मुनि-देव-त्रासक, नृशंस-मन-कर्म राक्षसों को एक दम मारते हुए और प्रेतों को नृत्य करने देते हुए झुके सबंध-कोदंडपाणी! आगे हम आपसे क्या माँगें? । ४०७६

विरादऩुङ् गरऩु माऩुम् विरल्हॆळु कवन्दऩ् ऱाऩुम्
मरामर मेळुम् वालि मार्बमु महर नीरुम्
इरावण ऩुरमुङ् गुम्ब हरुणऩ ऱेऱ्ऱऩ् दाऩुम्
अरावरुम् बहऴि यॊऩ्ऱा लऴित्तुल हळित्ता यैय 4077

ऐय–तात; विराततुम्–विराध और; करऩुम्–खर; माऩुम्–और हरिण; विरल् कॆळु–सशक्त; कवन्तऩ् ताऩुम्–कबन्ध और; मरामरम् एळुम्–सातों सालवृक्ष; वालि मार्पमुम्–वाली का वक्ष; मकरम् नीरुम्–और मकरालय; इरावणऩ्–और रावण की; उरमुम्–छाती और; कुम्पकरुणऩतु–कुंभकर्ण का; एऱ्ऱम् ताऩुम्–गौरव; अराव–पैनाये गये; अरुम् पकऴि ऑऩ्ऱाल्–अपूर्व एक शर से; अऴित्तु–मिटाकर; उलकु–संसार को; अळित्ताय्–रक्षित किया। ४०७७

प्रभु! आपने तीक्ष्ण एक ही शर से विराध, खर, हरिण (मारीच) सशक्त कबंध, सातों सालवृक्ष, वाली का वक्ष, मकरालय का जल, रावण की छाती और कुंभकर्ण की बड़ाई सबको भेदा और संसार को सुरक्षित किया। ४०७७

शित्तिर कूडऩ् दीर्न्दु तॆऩ्दिशैत् तीमै तीर्त्तिट्
टित्तिशै यडैन्दॆम् मिल्लि ऩिरुत्तलै यिरुदि याह
वित्तह मडन्दि लेऩ्याऩ् विरुन्दिनै याहि यॆम्मो
डित्तिऩ मिरुत्ति यॆऩ्ऱाल् मरैहळि ऩिरुदि कण्डाऩ् 4078

वित्तक–विदग्ध; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट; तीर्न्तु–छोड़कर; तॆऩ् तिचै–दक्षिणी दिशा में; तीमै–बुराई; तीर्त्तिट्टु–दूर कर; इ तिचै–इस दिशा में;

अहंन्तु–जो आये; अॅम् इल्लिन्–हमारे आश्रम में; इरुत्तमै–पहुँचे; इरुति आक–वहाँ तक; यान्–मैं; मरन्तिलेन्–भूला नहीं हूँ; विरुन्तिनै आकि–अतिथि बनकर; अॅम्मोटु–हमारे साथ; इ तिनम्–आज का दिन; इरुत्ति–ठहरें; अॅन्ऱान्–कहा; मऱैकळिन्–वेदों के; इरुति–पार; कण्टान्–जो देख चुके थे, उन्होंने। ४०७८

हे विदग्ध ! आपके चित्रकूट छोड़ देने से लेकर, दक्षिण दिशा के संकटों को दूर करके उत्तर दिशा में आकर मेरे आश्रम में पहुँचने तक की सारी बाते हम जानते हैं और एक बात भी नहीं भूले हैं। आप एक दिन हमारे अतिथि बनकर रहिए। वेदपारंगत भरद्वाज ने यह प्रार्थना की। ४०७८

करदल मदनि नीडु कार्मुहम् वळैय वाङ्गिच्
चरदवा नवर्हळ् तुन्बन् दणित्तुल हङ्गळ् ताङ्गुम्
मरहद मेनिच् चॅङ्गण् वळ्ळले वळुवा नीदिप्
परदन दियल्बु मिन्ऱे पणिक्कुवॅन् केट्टि यॅन्ऱान् 4079

करतलम् अतनिल्–हाथ में; नीटु–लम्बे; कार्मुकम्–धनुष को; वळैय वाङ्कि–झुका लेकर; वानवर्कळ्–देवों का; तुन्पम्–दुःख; चरतम्–सच्चे रूप से; तणित्तु–दूर करके; उलकङ्कळ् ताङ्कुम्–लोकपालक; मरकतम् मेनि–मरकत शरीर; चॅं कण्–लाल आँखों के; वळ्ळले–प्रभु; वळुवा नीति–अडिग नीतिमान; परतनतु इयल्पुम्–भरत का स्वभाव; इन्ऱे–आज ही; पणिक्कुवॅन्–कहूँगा; केट्टि–सुनो; अॅन्ऱान्–कहा। ४०७९

भरद्वाज ने आगे भी कहा। हाथ के लंबे धनुष को झुकाकर अपने वचनानुसार देवों का दुःख निश्चित रूप से दूर करके लोकपालन करनेवाले ! मरकत जैसा शरीर और अरुण अक्ष वाले दयानिधान प्रभु ! अडिग नीतिमान भरत का हाल भी अभी सुनाता हूँ, सुनिए। ४०७९

वॅयर्त्त मेनियन् विऴिपॉऴि मऴैयन्मू विनैयैच्
चॅयिर्त्त शिन्दैयन् तॅरुमर लुऴन्दुऴन् दऴिवान्
अयर्त्तु नोक्किनुन् दॅन्दिश यन्ऱिवे ऱऱियान्
पयत्त तुन्बमे मुरुवुकॉण् डॅन्नलाम् बडियान् 4080

वॅयर्त्त–स्वेदयुक्त; मेनियन्–शरीरी; पॉऴि विऴि मऴैयन्–बहनेवाली अश्रुधारा-सहित; मूविनैयै–तीनों विध कर्मो को; चॅयिर्त्त–दूर कर चुका; चिन्तैयन्–मन वाला; तॅरुमरल्–मतिभ्रंश में; उऴन्तु उऴन्तु–संकट सह-सहकर; अऴिवान्–मग्न रहनेवाला; अयर्त्तु नोक्किनुम्–भूल से देखें तब भी; तॅन् तिचै अन्ऱि–दक्षिण दिशा छोड़; वेऱु–दूसरी; अऱियान्–नहीं जानता; पयत्त–डर से युक्त; तुन्पमे–दुःख ही; उरुवु–मूर्तिमान; कॉण्टॅन्नलाम् पटियान्–बना हो ऐसी स्थिति का। ४०८०

उसका शरीर पसीने से तर है। आँखों से अश्रु की बारिश होती रहती है। प्रारब्ध, संचित तथा आगामी तीनों कर्मों को वह गुस्सा करके भगा चुका है। हमेशा भ्रमित मन के साथ दुःख सहता है और दुःखमग्न रहता है! भूल से भी सही वह किसी और दिशा की तरफ़ नहीं देखता, वरन् दक्षिण दिशा की ओर देखता है। भयमिश्रित दुःख मूर्तिमान हो गया हो, ऐसी स्थिति में रहता है। ४०८०

इन्दि यङ्गळॅन् दिरुङ्गनि कायनुहर्न् दिवुळिप्
पन्दि वन्दपुर् पायलान् पॅळम्बदि पुहादु
नन्दि यम्बदि यिरुन्दनन् परदनित् नामम्
अन्दि युम्बह लदनिनु मरप्पिल नाहि 4081

परतन्–भरत; इन्तियम् कळॅन्तु–इन्द्रिय-दमन करके; इरु कनि काय्–श्लाघ्य फल, तरकारी; नुकर्न्तु–भोगकर; इवुळि पन्ति बमृत–अश्ववृन्द के योग्य; पुल्–घास की; पायलान्–शय्या पर; नित्त नामम्–आपका नाम; अन्तियुम्–रात को; पकल् अततिनुम्–और दिन में; मरप्पिलन् आकि–बिना भुलाये; पळम्पति–पुरातन नगरी में; पुकातु–प्रवेश किये बिना; नन्ति अम्पति–नंदिग्राम में; इरुन्ततन्–रहता है। ४०८१

संत भरत इंद्रिय-दमन करके श्लाघ्य फल और तरकारी ही का भोजन करता है। अश्वों के झुंडों के योग्य घास की शय्या पर सोता है। सदा आपका नाम-स्मरण करता रहता है। रात हो कि दिन वह उसे नहीं भूलता। आपकी पुरानी अयोध्या नगरी में प्रवेश न करके नंदिग्राम में ही रहता है। ४०८१

ॲन्ऱुरैत् तरक्कर् वेन्द निरुबदॅन् ऱुरैक्कु नीलक्
कुन्ऱुरैत् तनैय तोळुङ् गुलवरैक् कुवडु मेय्क्कुम्
ॲन्ऱुरैत् तनैय मौलित् तलैपत्तु मिऱुत्त वीर
निन्ऱनैप् पिरिन्द दुण्डे यानॅन निहळ्त्ति नानाल् 4082

ॲन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराज; इरुपतु ॲन्ऱु–बीस; उरैक्कुम्–कहलानेवाले; नीलम् कुन्ऱु–नीले पर्वत-सम; तोळुम्–कंधों; कुलम्वरै–कुलपर्वतों के; कुवटुम्–शिखरों के; एय्क्कुम्–समान रहनेवाले; ॲन्ऱु उरैत्तु–कहें तो; अनैय–ठीक जो लगे; मौलि तलै पत्तुम्–किरीटधारी दसों सिर; इऱुत्त–काट दिये; वीर–वीर; निन्ऱनै–आपसे; पिरिन्ततु–बिछुड़ा; उण्टे–रहा क्या; ॲन–ऐसा; निकळ्त्तिनान्–बताया। ४०८२

यह कहकर मुनिवर ने आगे कहा। रावण के नीलपर्वत-से बीसों कंधों को और कुलपर्वतशिखर-सम किरीटमंडित दसों सिरों को छिन्न करनेवाले हे वीर! मैं (या भरत) कहाँ आपसे अलग था? । ४०८२

मिऩ्ऩैये युळैयि ऩाऩुम् विरैमलर्त् तविशि ऩाऩुम्
निऩ्ऩैये पुहऴ्दऱ् कौत्त नीदिमा तवत्तिऩ् मिक्कोय्
उऩ्ऩैये वणङ्गि युऩ्ऱ ऩरुळ्शुमन् दुयर्न्देऩ् मऱ्ऱिङ्
गॆऩ्ऩैये पॊरुवु मैन्दऩ् याऩला दिल्लै यॆऩ्ऱाऩ् 4083

मिऩ्ऩैये–विद्युत्-सी पार्वती के; उळैयित्ताऩुम्–अर्धांगी; विरैमलर्–सुगंधित कमल; तविचित्ताऩुम्–को आसन माननेवाले; निऩ्ऩैये–आपकी ही; पुकऴ्तऱ्कु–स्तुति करें; ऒत्त–उस योग्य; नीति–नीतिसम्मत; मा तवत्तिऩ्–महान तपस्या में; मिक्कोय्–बढ़े हुए; उऩ्ऩैये–आपकी ही; वणङ्कि–स्तुति करके; उऩ्ऱऩ्–आपकी; अरुळ्–कृपा; चुमन्तु–पाकर; उयर्न्तेऩ्–उत्कृष्ट बना; ऎऩ्ऩैये–मेरी; पॊरुवुम्–समानता करनेवाला; मैन्तऩ्–मानवपुत्र; याऩ् अलातु–मुझे छोड़कर; इङ्कु इल्लै–यहाँ कोई नहीं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४०८३

तब श्रीराम ने भरद्वाज से कहा— हे विद्युत्-छवि पार्वती के अर्धांगी पति शिव और सुगंधित-कमलासन ब्रह्मा से स्तुत्य महान तपस्वी ! आपको प्रणाम करके और आपकी कृपा का पात्र बनकर मैं उन्नत हो गया हूँ। मेरे समान मानवपुत्र, मुझे छोड़कर अन्य कोई नहीं ! । ४०८३

अव्वुरै पुहलक् केट्ट वऱिवऩु मरुळि ऩोक्कि
वॆव्वरम् बॊरुद वेलोय् विळम्बुहेऩ् केट्टि वेण्डिऱ्
ऱॆव्वर मॆऩिऩुम् दन्दे ऩियम्बुदि यॆऩलु मैयऩ्
कव्वैयिऩ् ऱाहि वॆऩ्ऱिक् कविक्कुलम् बॆऱ्ऱु वाऴ्ह 4084

अव् उरै–उस वचन को; पुकल–कहा; केट्ट–सुनकर; अऱिवऩुम्–ज्ञानी; अरुळिऩ् नोक्कि–प्रेम से देखकर; वॆम्मै–कठोर; अरम्–रेती से; पॊरुत–रेते गये; वेलोय्–भाले वाले; विळम्पुकेऩ्–एक बात कहूँगा; केट्टि–सुनिए; वेण्टिऱ्ऱु–चाहो; ऎव्वरम्–जो भी वर; ऎऩिऩुम्–हो वह; तन्तेऩ्–दिया; इयम्पुति–बताइए; ऎऩलुम्–कहने पर; ऐयऩ्–प्रभु ने; वॆऩ्ऱि–विजयी; कविकुलम्–अरिकुल; कव्वै–दुःख से; इऩ्ऱु आकि–रहित बनें; पॆऱ्ऱु वाऴ्क–मनचीता पायें। ४०८४

श्रीराम का यह वचन सुनकर ज्ञानी मुनि ने उन पर स्नेह-दृष्टि डाली और कहा कि रेती से पैनाये गये भालेवाले ! एक बात कहूँगा। सुनिए। आप जो भी वर चाहें, माँग लें। तब श्रीराम ने यह वर माँगा कि विजयी वानरगण विमुक्त दुःख रहें और मनचाही वस्तुएँ पाकर जियें। ४०८४

अरियिऩम् जॆऩ्ऱ शॆऩ्ऱ वडविह ळऩैत्तुम् वाऩम्
शॊरिदरु परुवम् बोऩ्ऱु किळङ्गॊडु कऩिकाय् तुऩ्ऱि
विरिपुऩल् शॆऴ्न्देऩ् मिक्कु विळङ्गु हॆऩ्ऱियम्बु हॆऩ्ऱाऩ्
पुरियुमा तवऩु मः(ह्)दे याहॆऩप् पुहऩ्ऱिट् टाऩाल् 4085

अरि इनम्–वानरगण; **चॅन्ड्र चॅन्ड्र**–जहाँ-जहाँ जाते; **अटविकळ् अतॅत्तुम्**–उन सभी वनों में; **वानम्**–आकाश; **चॉरि तरु**–जिसमें खब बरसाता है; **परुवम् पोन्ड्र**–उस मौसम के समान; **किळङ्कॉट्टु**–कंदमूल के साथ; **कनिकाय्**–फल भी; **तुन्ड्रि**–बहुतायत से हो; **विरिपुनल्**–विस्तृत जल; **चॅळु तेन्**–पुष्ट मधु; **मिकक्कु**–अधिक हो; **विळङ्कुक**–मिले; **ऍन्ड्र**–ऐसा; **इयम्पुक**–(वर) कहिए; **ऍन्ड्रान्**–कहा; **पुरियुम्**–करिष्यमाण; **मातवनुम्**–महा तप वाले; **अ..ते आक**–वही हो; **ऍन**–ऐसा; **पुकन्ड्रिट्टान्**–बोले। ४०८५

'वानरदल जहाँ भी जायँ वे वन वर्षाकालवत् कंद-मूल-फल-समृद्ध रहें। जल की समृद्धि हो और मधु भी बहुत मिले।' ऐसा वर दें। श्रीराम ने प्रार्थना की। तपस्या के कर्ता भरद्वाज ने 'वही हो' का वर दिया। ४०८५

अरुन्दव नैय निन्नो डलिहवॅन् जेनैक् कॅल्लाम्
विरुन्दिनि दमैप्पॅ नॅन्ना विळङ्गुमुत् तीयि नाप्पण्
पुरिन्दोरा हुदियै यीन्दु पुऱप्पड मळविर् पोहम्
तिरुन्दिय वान नाडु शेरवन् दिरुत्त दन्ड्रे 4086

अरुन्तवन्–महा तपस्वी; **ऐय**–तात; **निन्नॉटु**–आपके साथ; **अनिकम्**–दलबद्ध; **वॅम् चेनॅक्कु ऍल्लाम्**–सारी प्यारी सेना को; **इनितु**–मधुर रीति से; **विरुन्तु**–दावत का; **अमैप्पॅन्**–प्रबन्ध करूँगा; **ऍन्ना**–ऐसा कहकर; **विळङ्कुम्**–विद्यमान; **अ तीयिन्**–उस अग्नि के; **नाप्पण्**–मध्य; **ओर्**–एक; **आकुतियै**–आहुति; **पुरिन्तु**–करके; **पुऱप्पटुम् अळविल्**–बाहर आते समय; **पोकम् तिरुन्तिय**–भोग के लिए सुरचित; **वान नाट**–स्वर्ग; **चेर**–पास में; **वन्तु इरुत्ततु**–आकर ठहर गया। ४०८६

श्रेष्ठ तपस्वी ने श्रीराम से कहा कि हे प्रभु! आपकी अनेक विभागों की और प्यारी सेना को भोज देने का प्रबंध करूँगा। यह कहकर वे आग में आवश्यक आहुति देकर बाहर आये तो भोगपदार्थों में समृद्ध स्वर्ग पास आकर ठहर गया। ४०८६

अरशरे याहि याह वडियव रन्द माहक्
करैशॅय लरिय पोहन् दुय्क्कुमा कण्डि रामऱ्
करशियल् वळामै नोक्कि यऱुशुवै यमैक्कुम् वेलै
विरैशॅऴि कमलक् कण्ण ननुमनै विळित्तुच् चॉन्नान् 4087

अरचरे–राजा; **आतियाक**–से लेकर; **अटियवर्**–दास; **अन्तम् आक**–तक; **करै चॅयल्**–सीमा बताने में; **अरिय**–कठिन; **पोकम्**–भोग; **तुय्क्कुमा**–करते हैं; **कण्टु**–देखकर; **इरामऱ्कु**–श्रीराम को; **अरचियल्**–राजनीति में; **वळामै**–भंग न हो; **नोक्कि**–यह ध्यान कर; **अऱुचुवै**–षड्रस भोजन; **अमैक्कुम् वेलै**–प्रबन्ध करते समय; **विरै चॅऴि**–सुगंधित; **कमलम् कण्णन्**–कमल-सी आँखों वाले ने; **अनुमनै विळित्तु**–हनुमान को बुलाकर; **चॉन्नान्**–कहा। ४०८७

राजा से लेकर दासों तक के लिए अपार भोग-भोग्य आदि और श्रीराम के लिए राजोचित उपचार का प्रबंध हो रहा था। तब सुगंधित पद्म के समान आँखों वाले श्रीराम ने हनुमान को बुलाकर कहा। ४०८७

इन्ऱु नाम्वदि वरुदुमुन् मारुदि यीण्डच्
चॅन्ऱु तीदिन्मै शॅप्पियन् तीयवित् तिळैयोन्
निन्ऱ नीर्मैयु निन्नैवुनी तेर्न्दॅम्मि नेर्दल्
नन्ऱॅ नावन् मोदिरङ् गैक्कॉडु नडन्दान् 4088

मारुति–मारुति; नी–तुम; नाम्–हमारे; पति–अयोध्या; वरुतुम् मुन्–आने से पहले; इन्ऱु–अभी; ईण्ट चॅन्ऱु–जल्दी जाकर; तीतिन्मै–कष्ट का न होना; चॅप्पि–कहकर; म ती अवित्तु–उस आग को बुझाकर; इळैयोन्–भरत की; निन्ऱ नीर्मैयुम्–स्थिति का हाल; निन्नैवुम्–व विचार; तेर्न्तु–जानकर; ऍम्मित् नेर्तल्–हमारे पास आना; नन्ऱु–अच्छा होगा; ऍन्ना–ऐसा कहने पर; अवन्–मारुति; मोतिरम्–मुंदरी; कै कॉटु–हाथ में ले; नटन्तान्–गया। ४०८८

मारुति! तुम अभी, हमारे अयोध्या जाने के पहले ही, नंदिग्राम जाओ। भरत को हमारा दुःखरहित सुख-संवाद सुनाओ। फिर उसने आग लगायी हो तो आग बुझाओ। मेरे कनिष्ठ भरत की स्थिति का समाचार खूब ध्यान से जानकर हमारे पास आ जाओ। यही ठीक लगता है। उन्होंने उसे अपनी अँगूठी दी। हनुमान उसे लेकर चला। ४०८८

तन्दै वेहमुन् दन्नदुना यहन्ऱनिच् चिलैयिन्
मुन्दु शायहक् कडुमैयुम् बिऱ्पड मुडुहिच्
चिन्दै पिन्वरच् चॅल्ववन् गुहर्कुमच् चेयोन्
वन्द वाशहङ् गूऱिमेल् वान्वऴिप् पोनान् 4089

तन्तै वेकमुम्–(अपने) पिता का वेग और; तनतु–अपने; नायकन्–स्वामी के; तनि चिलैयिन्–विशिष्ट धनु से; मुन्तु–निकलनेवाले; चायकम्–अस्त्र की; कटुमैयुम्–तेजी को; पिन्पट–पीछे छोड़ते हुए; मुटुकि–जाकर; चिन्तै पिन्वर–मन को भी पीछे आने देकर; चॅल्पवन्–जो गया वह; कुकर्कुम्–गुह को और; अ चेयोन्–उस श्रेष्ठ श्रीराम के; वन्त–लौट आने का; वाचकम्–समाचार; कूऱि–कहकर; मेल्–फिर; वान् वऴि–आकाशमार्ग से; पोनान्–गया। ४०८९

हनुमान का वेग उसके पिता का वेग, उसके मालिक के अनुपम धनु से निकले सायक का वेग —दोनों को पीछे छोड़ता था। उसके मन को भी पीछे छोड़कर वह सवेग गया। रास्ते में गुह को श्रीराम के लौट आने की खबर दी और आकाश-मार्ग में आगे बढ़ा। ४०८९

इन्ऱि शॅक्किड माय विराहवन्, ऍन्ऱि शॅक्करु मच्चॅपल् शॅप्पिनाम्
अन्ऱि शॅक्कु मरिय वयोत्तियिल्, निन्ऱि शॅन्तुळ तन्मै निहऴ्त्तुवाय् 4090

इत्तुऱ–अब तक; इचैक्कु–वश का; इट्टम् आय–आश्रय जो रहे; इराकवन्–उन श्रीराघव का; तॆन्तिचै–दक्षिण दिशा के; करुमम्–कार्य का; चॆयल्–करना; चॆप्पिनाम्–कहा (हमने); अन्ऱु–तब; इचैक्कुम्–प्रकीर्तित; अरिय–उत्तम; अयोत्तियिल्–अयोध्या में; निन्ऱ–हो; इचैत्तु उळ–जो घटा; तत्मै–वह हाल; निकऴ्त्तुवाम्–कहेंगे। ४०९०

अब तक हम (कवि) यशस्वी श्रीराम के दक्षिण दिशा में किये गये कार्यों का वर्णन करते रहे। अब प्रकीर्तित तथा शत्रुओं के लिए अजेय अयोध्या में घटा हाल बतायँगे। ४०९०

नन्दि यम्बदि यित्तलै नाळ्तॊऱुम्, शन्दि यित्तॊऴि निरन्दरत् तम्मुन्ताऱ्
पन्दि यङ्गऴऱ् पाद मरुच्चिया, इन्दि यङ्गळै वॆन्ऱिरुन् दानरो 4091

अम्–मनोरम; नन्ति पतियित्त् तलै–नंदिग्राम में; नाळ् तॊऱुम्–दिने-दिने; चन्ति इऴुक्कि–संध्या का भी अनुष्ठान छोड़; निरन्तरम्–निरंतर; तम्मुन्ताऱ्–ज्येष्ठ श्रीराम के; पन्ति अम् कऴल्–भक्तियोग्य सुन्दर पायलधारी; पातम्–चरणों की; अरुच्चिया–अर्चना करके; इन्तियङ्कळै–इन्द्रियों को; वॆन्ऱिरुन्तान्–जीत कर रहा। ४०९१

भरत मनोरम नन्दिग्राम में दिन-प्रतिदिन सन्ध्या का अनुष्ठान भी छोड़कर, अनवरत ज्येष्ठ (बन्धु) श्रीराम के भक्तियोग्य सुन्दर पायलधारी पादों की अर्चना में लगे, इन्द्रिय-दमन करके रह रहे थे। ४०९१

तुन्बु रुक्कवुञ् जुऴ्ऱि युरुक्कॊणा, ऍन्बु रुक्कुन् दहैमैय दिट्टदाय्
मुन्बु रुक्कॊण् डॊरुवऴि मुऱ्ऱ्रा, अन्बु रुक्कॊण्ड दामॆन लाहुवात् 4092

तुन्पु–वियोग दुःख (ताप); चुऴ्ऱि उरुक्कवुम्–कसकर पिघलाता रहा; उरुक्क ऑणा–जिसको पिघला नहीं जा सकता; ऍन्पु–उस हड्डी को भी; उरुक्कुम्–पिघलाने की; तकैमैयतु–शक्ति; इट्टताय्–रखनेवाला; मुन्पु–पहले; ऑर वऴि–कहीं भी; उरु कॊण्टु–रूप लेकर; मुऱ्ऱ्रा–जो पूर्ण नहीं हुआ था; अन्पु उरु–वह प्रेम रूप; कॊण्टतु आम्–घर गया; ऍतल्–जैसे; आकुवान्–बने रहे। ४०९२

भरत को पहले ही दुःख की अग्नि गला रही थी, इसलिए उनको और गलाना असम्भव था। तो भी उनकी हड्डियों तक को पिघलाने की शक्ति रखनेवाला प्रेम, जो कि पहले कहीं मूर्तिमान नहीं दिखा था, अब रूप धर गया हो, और वह रूप भरत हो —ऐसा दिखते थे भरत। ४०९२

निन्नैक्क वुन्दडङ् गण्णिणै नीर्वर
इन्नत्त तण्डलै नाट्टिरुन् देयुमक्
कन्नत्त कन्दमुङ् गायुङ् गन्हिळुम्
वन्नत्त वल्ल वरुन्दलिल् वाऴ्क्कैयान् 4093

निनैक्कवुम्–स्मरण मात्र से; तट कण् इणै–विशाल नेत्रद्वय में; नीर् वर–जल आ जाता; इत्तुत–तरुपूर्ण; तण् तलै नाट्टु–शीतल वन के देश में; इरुन्तेयुम्–रहते थे तो भी; अ कन्तुत–उन स्थूल; कन्तमूम्–कंद; कायुम्–तरकारी; कनिकळुम्–फल आदि; वन्तुत अल्ल–जो वन के न रहे; अरुन्तल् इल्–उन्हें न खाने का; पाळ्क्कैयान्–जीवनव्रत वाले । ४०९३

जब कभी भरत श्रीराम-वन-गमन का स्मरण करते तब उनकी आँखों से आँसू की धारा निकल वहती । वे विविध तरुकुलों से भरे वनों से युक्त शीतल प्रदेश में रहते थे और वन्य कंद-मूल-फल आदि छोड़कर नगर में प्राप्त कोई वस्तु नहीं खाते थे । इस भाँति वे रूखा व दुःखतप्त जीवन विता रहे थे । ४०९३

नोक्किऩ् तॆऩ्तिशै यल्लदु नोक्कुऱाऩ्
एक्कुऱ् ऱेक्कुऱ् ऱिरवि कुलत्तुळाऩ्
वाक्किऩ् पॊय्याऩ् वरुम्वरु मॆऩ्ऱुयिर्
पोक्किप् पोक्कि युळक्कुम् पॊरुमलाऩ् 4094

नोक्किल्–देखते तो; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा; अल्लतु–छोड़कर; नोक्कुरान्–नहीं देखते; एक्कुऱ्ऱु एक्कुऱ्ऱु–तरस-तरसकर; इरवि कुलत्तुळान्–रविकुल के श्रीराम; वाक्किल्–वचन में; पॊय्यान्–असत्य न बनेंगे; वरुम् वरुम्–आयँगे, आयँगे; ऍन्ऱु–कहकर; उयिर् पोक्कि पोक्कि–निःश्वास छोड़-छोड़कर; उळक्कुम् पॊरुमलान्–विलोडित दुःखी । ४०९४

जब कभी आँख उठाकर देखते तो वे दक्षिण दिशा को छोड़कर किसी दूसरी दिशा पर दृष्टि नहीं दौड़ाते । तरसते-तरसते इसी विश्वास पर समय बिता रहे थे कि रविकुल राम हैं, वचन भंग नहीं करेंगे और अवश्य आ जायँगे, आ जायँगे । तो भी लंबी आहें भरते हुए घुलते रहते और रोते-कलपते थे । ४०९४

उण्णु नीर्क्कु मुयिर्क्कु मुयिरवऩ्
ऍण्णुङ् गीर्त्ति यिरामऩ् तिरुमुडि
मण्णु नीर्क्कु वरम्बुकण् डालऩ्ऱिक्
कण्णि नीर्क्कोर् करैयॆङ्गुङ् गाण्गिलाऩ् 4095

उण्णुम्–पीने के; नीर्क्कुम्–जल के; उयिर्क्कुम्–जीवों के; उयिरवन्–प्राणसम; ऍण्णुम्–सर्वमान्य; कीर्त्ति–यशस्वी; इरामन्–श्रीराम के; तिरुमुटि–मनोहर किरीट को; मण्णुम्–घुलाकर बहनेवाले; नीर्क्कु–जल को; वरम्पु कण्टाल्–सीमा देखे; अन्ऱि–विना; कण्णिन् नीर्क्कु–आँखों के जल को; ओर् करै–कोई सीमा; ऍङ्कुम्–कहीं; काण्किलान्–नहीं देखते । ४०९५

उनकी आँखों के अश्रु-जल का रुकना शायद तभी हो सकता था, जब पेय जल और जीवों के प्राण-सम प्रकीर्तित श्रीराम का अभिषेक हो, जब

उनके मुकुट को धुलाता हुआ अभिषेक-जल नीचे गिरेगा और उसका अंजाम भरत देख लेंगे। अब तो वे अपने आँसुओं का अंत नहीं देख पाये। ४०९५

अन्नैय ताय बरद तलङ्गलिऱ्, पुनैयुन् दम्मुन्नार् पादुहैप् पूशनै
निनैयुङ् गालै निनैन्दनन् नामरो, मनैयिन् वन्दव नॆय्द मदित्त नाळ् 4096

अन्नैयन् आय परतन्-ऐसे भरत ने; अलङ्कलिल्-पुष्पमाला से; पुनैयुम्-अलंकृत; तम्मुन्नार्-अपने बड़े भाई की; पातुकं पूचनै-पादुका की पूजा का; निनैयुम् कालै-जब स्मरण किया तब; अवन्-उनके; मनैयिन्-गृह में; वन्तु ऍय्त-आ जाने के लिए; मतित्त नाळ्-निश्चित दिन का; निनैन्तनन्-स्मरण किया। ४०९६

(एक दिन) ऐसे भरत ने पुष्पमाला से अलंकृत, अपने ज्येष्ठ भ्राता की पादुकाओं की पूजा करने का स्मरण किया तो उन्हें विचार आया कि यही दिन है जब श्रीराम ने लौट आने को निश्चित किया था। ४०९६

याण्डु वन्दिङ् गिरुक्कुमॆन् ऱॆण्णिनान्, माण्ड शोदिड वाय्मैप् पुलवरै
ईण्डुक् कूय्त्तरु हॆन्नवन् दॆय्दिनार्, आण्ड हैक्किन् ऱिरुदियॆन् ऱारो 4097

याण्टु-कब; इङ्कु वन्तु-यहाँ पधारकर; इरुक्कुम्-रहेंगे; ऍन्ऱु-ऐसा; ऍण्णिनान्-सोचा; माण्ट-गौरवयुक्त; चोतिटम्-ज्योतिष में; वाय्मै-सत्य भाषण में; पुलवरै-निपुणों को; ईण्टु-यहाँ; कूय् तरुक-बुला लाओ; ऍन्न-ऐसा कहने पर; वन्तु-आ; ऍय्तिनार्-पहुँचे; आण्टकैक्कु-पुरुषश्रेष्ठ के (आने के) लिए; इन्ऱु-आज; इऱुति-अंतिम दिन है; ऍन्ऱार्-कहा। ४०९७

उसे प्रश्न उठा कि कब आ रहे हैं इधर ? उन्होंने भृत्यों से कहा, गौरवयुक्त तथा सत्यवादी हमारे ज्योतिषियों को बुला लाओ। ज्योतिषी आये और बोले कि पुरुषोत्तम के वनवास का अंतिम दिन और इधर आ पहुँचने का दिन आज ही है। ४०९७

ऍन्ऱु पोदत् तिरामन् वनत्तिडैच्, चॆन्ऱु पोदत्त दव्वुरै शॆल्वत्तै
वॆन्ऱु पोदत्त वीरनुम् वीऴ्न्दनन्, कॊन्ऱु पोदत् तुयिर्प्पुक् कुऱैन्दुळात् 4098

ऍन्ऱु पोततु-ऐसा कहने पर; चॆल्वत्तै-धन (की इच्छा) को; वॆन्ऱु पोतत्त-जीतनेवाले ज्ञानी; वीरनुम्-वीर; इरामन्-श्रीराम के; वनततिटै-वन में; चॆन्ऱु-जाने के; पोततु-समय; अव्वुरै-(कहे) वे वचन; कॊन्ऱु पोततु-जब मारने (सताने) लगे; उयिर्प्पु-साँसें; कुऱैन्तुळात्-कम हुई; वीऴ्न्तनन्-गिर गये। ४०९८

जब उन्होंने वह कहा तो धन के आकर्षण को जो जीत चुके थे उनके मन में भी वनगमन के अवसर पर श्रीराम से उक्त वचन स्मरण हो आये। तो उनकी साँसें क्षीण होने लगीं और वे मूर्च्छित होकर गिर गये। ४०९८

मीट्टॆ ऴुन्दु विरिन्दशॆन् दामरैक्, काट्टै वॆन्ऱॆऴ् कण्कळु ऴिप्पुनल्
ओट्ट वुळ्ळ मुयिरिन यूशनिन्, राट्ट वुम्मव लत्तऴिन् दानरो 4099

मीट्टु ऍळुन्तु–फिर उठकर; विरिन्त–विशाल; चॅं तामरै काट्टै–अरुण-कमल-वन को; वॅन्ऱ–जीत; ऍळुकण्–जो उठी उन आँखों के; कलुळि–क्षुब्ध; पुनल्–जल को; ओट्ट–बहाते; उळ्ळम्–मन के; निन्ऱु–रहकर; उयिरिनै–प्राणों को; ऊचल् आट्ट–हिलाते; अवलत्तु–व्यग्रता से; अळिन्तान्–निर्बल हुए। ४०९९

कुछ देर बाद वे होश में आकर उठे। विशाल अरुण-कमल को जीतकर मनोहारिता में बढ़ी आँखों में दुःखविलोडित आँसू की धारा वह निकली। मन हर तरफ़ से प्राणों को दोलायमान करने लगा। अपार दुःख में मग्न होकर मिटे-से रहे। ४०९९

ऍन्नक्कि यम्बिय नाळुमॅन् निन्नलुम्
तन्नैप्प यन्दवळ् नेयमुन् दाङ्गियव्
वन्नत्तु वैहलॅय् यान्वन् दडुत्तदोर्
विन्नैक्कॊ डुम्बहै युण्डॅन्न विम्मिनान् 4100

ऍन्तक्कु–मेरे पास; इयम्पिय–जो कहा; नाळुम्–वह दिन; ऍन्–मेरा; इन्नलुम्–दुःख; तन्नै–उनकी; पयन्तवन्–जननी का; नेयमुम्–स्नेह; ताङ्कि–सहकर; अव्वनत्तु–उस वन में; वैकल्–ठहरना; चॅय्यान्–न करेंगे; वन्तु अटुत्ततु–जो आया हो; ओर्–वह एक; कॊटु–भयंकर; विनै पकै–कर्म का शत्रु; उण्टु–होगा; ऍन्न–ऐसा; विम्मिनान्–रोये। ४१००

(भरत ने विचार किया—) श्रीराम, मेरे पास कहा वचन, मेरा दुःख, उनकी जननी, उन पर वात्सल्य आदि भूलकर तथा उनसे जनित दुःख सहते हुए वन में ठहरनेवाले नहीं हैं। अवश्य कोई निरोधक घटना शत्रु के रूप में घटी है। यह सोचकर वे बहुत व्यग्र हुए। ४१००

मूव हैत्तिरु मूर्त्तिय रायिनुम्, पूव हत्तिल् विशुम्बिऱ् पुऱत्तिनिल्
एवर् किऱ्प रॅदिर्निऱ्क वॅन्नुडैच्, चेव हर्कॅन्न वॅयमुन् देरिनान् 4101

ऍन्नुटै–मेरे; चेवकऱ्कु–बड़े वीर का; ऍतिर् निऱ्क–सामना करने; मू वकै–तीन; तिरु मूर्त्तियर्–श्रेष्ठ मूर्ति भी; आयिनुम्–क्यों न हों; पू अकत्तिल–भूतल में; विचुम्पिल्–आकाश में; पुऱत्तितिल्–अन्य (पाताल) में; एवर् निऱ्पर्–कौन शक्त हैं; ऍन्न–सोचकर; ऐयमुम्–शंका से; तेरिनान्–मुक्त हुआ। ४१०१

"मेरे प्रभु वीर को सामना करने में, त्रिमूर्ति क्या, भूमि पर, आकाश में या पाताल में कौन समर्थ होगा?" यह विश्वास मन में आया तब वे संदेहमुक्त हुए। ४१०१

ऍन्नै यिन्नु मरशिय लिच्चैयान्, अन्न नाहि नवन्दु कॊळ्हवॅन्
ऱॅन्नि नान्कॊ लुऱवदु नोक्किनान्, इन्न दॆनल नॅन्ऱिरुन् दानरो 4102

ऍऩ्ऩै–मेरे सबन्ध में; अन्ऩवऩ्–वह (भरत); इऩ्ऩुम्–और भी; अरचियल्–शासन को; इच्चैयाऩ्–इच्छा रखनेवाला है; आकिल्–तो; अवऩ्–वह; अतु कॊळ्क–वही ले; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऩ्ऩिऩाऩ् कोल्–सोच लिया क्या; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऱुवतु–जो करना; नोक्किऩाऩ्–सोचा; इन्ऩते–यही; नलऩ्–भला है; ऍऩ्ऱु इरुन्ताऩ्–ऐसा निर्णय कर लिया। ४१०२

(उन्हें और एक संदेह हो गया—) मेरे संबंध में शायद श्रीराम ने यह सोच लिया कि भरत राजभोगेच्छा रखता है। तो वही राज्य ले ले! तो उन्होंने विचारा कि अब क्या करना है ? फिर यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि हाँ वही भला है। ४१०२

अवैत्ति लङ्गॊन्ऱु मायिनु माहुक, वनत्ति रुक्कविव् वैयम् बुहुदुह
निनैत्ति रुन्दु तुयर मुळ्क्किलेऩ्, मनत्तु माशॆऩ् नुयिरॊडुम् वाङ्गुवेऩ् 4103

वनत्तु इरुक्क–वन में ही रहें; इव् वैयम्–इस देश में; पुकुतुक–आयँ; अवैत्तिल्–उनमें; अङ्कु–वहाँ; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; आयिनुम्–हो तो; आकुक–हो; निनैत्तिरुन्तु–सोचते-सोचते; तुयरम्–कष्ट में; उळक्किलेऩ्–पिसूँगा नहीं; ऍऩ् उयिरॊडुम्–अपनी जान के साथ; मनत्तु माचु–मन का कलंक; वाङ्कुवेऩ्–दूर करूँगा। ४१०३

वे जंगल में ही रहें; चाहे देश में आ जायँ। उन (बातों) में वहाँ कुछ भी हो जाय! सोचते-सोचते दुःख में घुलना नही चाहता। अपने प्राणों के साथ अपने मन का कलक भी निकाल लूँगा। ४१०३

ऍऩ्ऩप् पन्ऩि यिळवलै यॆऩ्ऩुळैत्, तुन्ऩच् चॊल्लुदि ऱॆऩ्ऱलुन् दूदर्पोय्
उन्ऩैक् कूयिऩ ऩुम्मु ऩॆऩामुऩम्, मुऩ्ऩर्च् चॆऩ्ऱऩऩ् मूवर्क्कुम् पिऩ्ऩुळाऩ् 4104

ऍऩ्ऩ–ऐसा; पन्ऩि–विविध प्रकार से कहकर; ऍऩ् उळै–मेरे पास; इळवलै–मेरे कनिष्ठ को; तुन्ऩ चॊल्लुतिर्–निकट आने को कहो; ऍऩ्ऱलुम्–कहते ही; तूतर्–दूत; पोय्–गये; उम्मुऩ्–आपके ज्येष्ठ ने; उन्ऩै–आपको; कूयिऩऩ्–बुलाया; ऍऩा–कहने के; मुऩम्–पहले; मूवर्क्कुम्–तीनों के; पिऩ् उळाऩ्–अनुज; मुऩ्ऩर्–आगे; चॆऩ्ऱऩऩ्–गये। ४१०४

इस भाँति विविध प्रकार से बातें कहकर उन्होंने भृत्यों से कहा कि जाओ मेरे छोटे भाई से इधर मेरे समीप आने को कहो। दूतों ने शत्रुघ्न से जाकर कहा कि आपके ज्येष्ठ भ्राता ने आपको बुलाया है। कहते ही तीनों के छोटे भाई भरत के समक्ष गये। ४१०४

तॊऴुदु निऩ्ऱवऩ् तम्बियैत् तोय्कणीर्, ऒऴुकु मार्बत् तिरुहत् तऴुविऩाऩ्
अऴुदु वेण्डुव दुण्डॆय वव्वरम्, वऴुदि लामैयि ऩाऱ्ऱरर् पाऱ्ऱॆऩ्ऱाऩ् 4105

तॊऴुतु निऩ्ऱ–नमस्कार करके जो खड़ा था; तऩ्–उस अपने; तम्पियै–लघुभ्राता को; तोय् कण् नीर्–इकट्ठा अश्रुजल; ऒऴुकु–जिसमें गिरता था;

मार्पुत्तु–उस वक्ष से; इऱुक–कसकर; तऴुविताऩ्–लगा लेकर; अऴुतु–रोये; ऐय–तात! वेण्टुवतु उण्टु–माँग एक है; अव् वरम्–वह वर; पऴुतिलामैयित्–व्यर्थ न करके; तरल् पाऱ्ऱु–देने योग्य है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४१०५

आकर जो नमस्कार करके खड़े रहे उन छोटे भाई को भरत ने अपने वक्ष से कसकर लगा लिया, जिस पर कि आँखों का जल गिरता रहा। कहा कि तात ! एक वर माँगूँगा। वह अक्षय रूप से दिला देने योग्य है। ४१०५

ऎऩ्ऩ दाहुङ्गोॅ लव्वर मॆऩ्ऱियेल्, शॊऩ्ऩ नाळि लिरागवऩ् तोऩ्ऱिलऩ्
मिऩ्ऩु तीयिडै यातिऩि वीडुवॆऩ्, मऩ्ऩ नादियॆऩ् शॊल्लै मऱादॆऩ्ऱाऩ् 4106

अ वरम्–वह वर; ऎऩ्ऩतु–क्या; आकुम् कॊल्–होगा; ऎऩ्ऱियेल्–ऐसा पूछो तो; चॊऩ्ऩ–निर्णीत; नाळिल्–दिन में; इराकवऩ्–श्रीराघव; तोऩ्ऱिलऩ्–आये नहीं; इऩि–अब; मिऩ्ऩु–चमक, जलती; ती इटै–आग में; याऩ्–मैं; वीटुवॆऩ्–मरूँगा; ऎऩ् चॊल्लै–मेरे वचन को; मऱातु–अस्वीकार न कर; मऩ्ऩऩ् आति–राजा बन जाओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा भरत ने। ४१०६

क्या, पूछते हो कि वह वर क्या है ? कहूँगा। श्रीराम ने जो दिन निश्चित बताया था उस दिन में नहीं आये। मैं अपने वचन के अनुसार ज्वलंत आग में कूदकर प्राण त्यागूँगा। मेरी बात की अवज्ञा मत करो। तुम राजा बन जाओ। ४१०६

केट्ट तोऩ्ऱल् किळर्तडक् कैहळाल्, तोट्ट तऩ्शॆवि पॊत्तित् तुणुक्कुऱा
ऊट्टु नञ्जमुण् डाऩॆऩ् तुयङ्गिऩाऩ्, नाट्टमुम् मऩमुम् नडुङ्गा निऩ्ऱाऩ् 4107

केट्ट–श्रोता; तोऩ्ऱल्–राजकुमार; किळर् तट–शोभित विशाल; कैकळाल्–हाथों से; तोट्ट–छेद-सहित; तऩ्–अपने; चॆवि–कान को; पॊत्ति–ढँककर; तुणुक्कुऱा–ठिठककर; ऊट्टुम्–खिलाया गया; नञ्चम्–विष; उण्टाऩ् ऒऩ्ऩु–निगल गया जैसे; उयङ्किऩाऩ्–दुःखी हुआ; नाट्टमुम्–आँखें और; मऩमुम्–मन; नटुङ्का निऩ्ऱाऩ्–काँप जायें ऐसा हो गये। ४१०७

यह सुनते ही राजकुमार ने अपने विशाल हाथों से कर्णरंध्रों को ढँक लिया। वे एक दम ठिठक गये। खिलाया गया विष पी चुके जैसे क्षुब्ध हुए। उनकी आँखें और मन काँप गया। ४१०७

विऴुन्तु मेक्कुयर् विम्मलऩ् वॆय्दुयिर्त्
तॆऴुन्तु नाऩुऩक् कॆऩ्ऩ पिऴैत्तुळेऩ्
अऴुन्तु तुऩ्बत्ति ऩायॆऩ् ऱरऱ्ऱिऩाऩ्
कॊऴुन्तु विट्टु निमिर्हिऩ्ऱ कोबत्ताऩ् 4108

विऴुन्तु–गिरकर; मेक्कुयर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलऩ्–सिसकियों के; वॆय्तु–गरम; उयिर्त्तु–साँस छोड़ते; ऎऴुन्तु–उठकर; कॊऴुन्तु विट्टु–

ज्वाला-सहित; तिमिर्कित्त्र्-जलनेवाले; कोपत्तान्-क्रोध के होकर; अळुन्तु-जिसमें मग्न हों ऐसे दुःख से; तुन्पत्तिताय्-दुःखी; नान् उत्तक्कु-मैंने आपका; ॲन्न-क्या; पिळैत्तुळेन्-अपराध किया था; ॲन्ऱु-ऐसा; अरऱ्ऱिनान्-विलाप किया। ४१०८

वे गिर गये। सिसकियाँ अधिक होती गयीं। गरम साँसें छोड़ते हुए वे उठे। भभकनेवाली कोपाग्नि के साथ उन्होंने भरत से कहा कि हे दुःखमग्न भाई! मैंने तुम्हारा क्या अपराध किया था (कि तुमने मुझसे यह बात कही)? । ४१०८

* कानाळ निलमहळैक् कैविट्टुप् पोनानैक् कात्तुप् पिन्बु
पोनान् ऑरुतम्बि पोनवर्हळ् वरुमवदि पोयिऱ् ऱॅन्ना
आनाद वुयिर्विडवॅन् ऱमैवान् ऑरुतम्ब यले नाणा
यानामिव् वरशाळ्वॅ नॅन्नेयिव् वरशाट्चि यिनिदे यम्मा 4109

निलमकळै-भूदेवी को; कै विट्टु-त्यागकर; कान् आळ-वनराज को; पोनाने-जो गये; कात्तु-उनकी रक्षा के लिए; पिन्पु-अनुगमन कर; पोनानुम्-जो गया; ऑरु-वह एक; तम्पि-छोटा भाई है; पोनवर्कळ्-जो गये; वरुम् अवति-उनके आने की अवधि; पोयिऱ्ऱु-बीत गयी; ॲन्ना-कहकर; आनात-अशांत; उयिर्विट-प्राण त्यागूँ; ॲन्ऱु-ऐसा; अमैवानुम्-जो तैयार हुए; ऑरु तम्पि-वे भी एक लघु सहोदर हैं; अयले यान्-अन्य मैं; नाणातु-बेशरम; इव् अरचु-यह राज्य; आळ्वॅन् आम्-शासन लूंगा, हाँ; ॲन्ने-क्या ही खूब; इव् अरचाट्चि-यह राज्य-शासन; इनितु-(कितना) मधुर है। ४१०९

भू का शासन छोड़कर जंगल में जानेवाले की रक्षा करते हुए जो गया वह भी एक छोटा सहोदर है! 'जो गये उनके लौट आने की अवधि बीत चुकी' कहकर अशांत होकर प्राण त्यागने को तैयार हो गया, वह भी एक छोटा सहोदर है! पर मैं भी एक छोटा सहोदर हूँ जो निर्लज्ज होकर यह राज करूँगा! यही न बात! वाह! यह राज्यशासन भी अवश्य सुखद है! । ४१०९

मन्निऱ्पिन् वळनहरम् बुक्किरुन्दु वाळ्न्दाने परद नॅन्नुम्
शॊन्निऱ्कु मॅन्ऱञ्जिप् पुऱत्तिरुन्दु मरुन्दवमे तॊडङ्गि नाये
ॲन्निऱ्पिन् निवनुळना मॅन्ऱॆयुन्न् नडिमैयुनक् किरुन्द दॆनु
मुन्निऱ्पिन् निरुन्दडुवु मॊरुहुडैक्की ळिरुपपडुवु मॊक्कु मॅन्ऱान् 4110

मन्निन् पिन्-राजाराम के पीछे; परतन्-भरत; वळम् नकरम्-समृद्ध नगर में; पुक्कु इरुन्तु-प्रवेश करके; वाळ्न्ताने-जीवित रहे; ॲन्नुम्-ऐसा; चॊल् निऱ्कुम्-अपमान स्थिर रहेगा; ॲन्ऱु अञ्चि-ऐसा डरकर; पुऱत्तु इरुन्तु-बाहर रहकर; अरु तवमे-कठिन तपस्या; तॊटङ्किनाये-आपने आरम्भ की; ॲन्निन् पिन्-मेरे (मरने के) बाद; इवन्-यह; उळन् आम्-है; ॲन्ऱे-ऐसा सोचकर

ही; उन्-तुम्हारे; अटिमै-दास के संबंध में; उतक्कु-तुम्हारा विचार; इरुन्ततेनुम्-रहा तो भी; उन्निन् पिन्-तुम्हारे बाद; इरुन्ततुवुम्-जीवित रहना और; ओरु कुटै कीऴ्-एक श्वेत छत्र के नीचे; इरुप्पतुवुम्-रहना; ओक्कुम्-समान रहेगा; ॲन्ऱान्-कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

'राजाराम के वनगमन के बाद भी भरत समृद्ध नगर में आकर जीवित रहा न!' यह अपमान की बात स्थिर रहेगी —इस संभावना से डरकर तुमने बाहर के नंदिग्राम में रहकर तपस्या का जीवन बिताना आरम्भ कर दिया! शायद आपने सोच लिया कि मेरे बाद यह शत्रुघ्न रहेगा। मुझ दास के संबंध में तुम्हारा ऐसा विचार भी रहा हो! तो भी तुम्हारे मरने के बाद मेरे जीवित रहने में और श्वेतछत्र के नीचे राजा बनकर रहने में क्या अंतर है? दोनों बराबर हैं। —कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

मुत्तुरुक्कॊण् डमैन्दनैय सुऴ्वॆळ्ळिक् कॊऴुनिऱत्तु मुळरिच् चॆङ्गण्
शत्तुरुक्क नः(ह्)दुरैप्प ववनिङ्गुत् ताऴ्क्किन्ऱ तन्मै यानिङ्
गॊत्तिरुक्क लालन्ऱे युळन्दाऱ्पि ऩिव्वुलहै युलैय वॊट्टान्
अत्तिरुक्कुङ् गॆडमुडने पुहुन्दाळु मरशॊरिपो यमैक्क वॆन्ऱान् 4111

मुत्तु उरु कॊण्टु-मोती का रूप लेकर; अमैन्तनैय-बना जैसा; मुऴु वॆळ्ळि-खरी चाँदी के; कॊऴु निऱत्तु-समृद्ध वर्ण और; मुळरि चॆङ्कण्-कमल-सी लाल आँखों के; चत्तुरुक्कन्-शत्रुघ्न के; अ.'.तु उरैप्प-वह कहने पर; अवन्-वे; इङ्कु-यहाँ; ताऴ्क्किन्ऱ-विलम्ब करते; तन्मै-कारण; यान्-मेरे; इङ्कु-यहाँ; ऒत्तु इरुक्कलाल्-सम्मत रहने से; अन्ऱे-न; उलन्ताल्-मर जाऊँ तो; पिन्-बाद; इव् उलकै-इस पृथ्वी को; उलैय ऒट्टान्-संकट उठाने न देंगे; अ तिरुक्कुम्-वह विषमता; कॆटुम्-दूर होगी; उटने पुकुन्तु-तुरन्त आकर; अरचु-राज्य; आळुम्-शासन करेंगे; पोय्-जाकर; ऎरि-आग; अमैक्क-बनाओ; ॲन्ऱान्-कहा। ४१११

मुक्ता-रूप तथा खरी चाँदी के रंगवाले कमलाक्ष शत्रुघ्न के ऐसा कहने पर भरत ने कहा कि श्रीराम के विलम्ब करने का कारण मेरा इधर सम्मत होकर रहना है न? मैं मर जाऊँ तो वे संसार को संकट सहने नहीं देंगे। यह विषमता दूर हो जायगी। तुरंत आकर राज्य-शासन सँभाल लेंगे। इसलिए जाओ और अग्नि जला दो। ४१११

अप्पॊऴुदि लव्वुरैशॆन् ऱयोत्तियिनि लिशैत्तलुमे यरियै यीन्ऱ
ऒप्पॆऴुद वॊण्णाद कऱ्पुडैयाळ् वयिऱुपुडैत् तलमन् दॆङ्गि
इप्पॊऴुदे युलहिऱक्कुम् याक्कैयिनै मुडित्तॊऴिन्दान् महने यॆन्ना
वॆप्पॆऴुदि नालन्न मॆलिवुडैयाळ् कडिदोडि विलक्क वन्दाळ् 4112

अ पॊऴुतिन्-उस समय; अ उरै-वह शब्द; अयोत्तियितिल्-अयोध्या में; चॆन्ऱु-जाकर; इचैत्तलुमे-सुनाई दिया तो; अरियै ईन्ऱ-हरि की जननी; ऒप्पु

ऍऴुत–उपमा कहने में; ओण्णात–असमर्थ; कट्पुटैयाळ्–पतिव्रता; वयिङ्–पेट; पुट्टत्तु–पीटती हुई; अलमन्तु–भ्रमित होकर; एङ्कि–तरसकर; मकन्–पुत्र; याक्कैयिलै–शरीर का; मुटित्तु–अंत कर; ओळिन्ताल्–मरोगे तो; इप्पोऴुते–अभी; उलकु–धरती; इऱक्कुम्–मिट जायगी; ऍन्ना–कहती हुई; वॅप्पु–ताप से; मॅऴुतिताल्–बनी; अन्न–जैसे; मॅलिवु उटैयाळ्–कृश बनीं; विलक्क–रोकने के लिए; कटितु–तेज़ी से; ओटि वन्ताळ्–दौड़कर आयीं। ४११२

तब वह समाचार अयोध्या पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही हरि (श्रीराम) की जननी अनुपम पतिव्रता देवी कौसल्या भ्रांतमन होकर पेट पीटती हुई निकलीं। 'मेरे पुत्र! तुम शरीर को आग में डालकर प्राण त्याग दोगे तो सारे लोकवासी भी मर जायँगे।" —ऐसा विलापती हुई, अन्तर्ताप से गल गयी हो ऐसा कृश होती उसे रोकने के निमित्त तेज़ी से दौड़कर आयीं। ४११२

मन्दिरियर् तन्दिरियर् वळनहरत् तवर्मऱैयोर् मऱ्ऱुम् जुऱ्ऱच्
चुन्दरिय रॅत्तैप्पलरुङ् गैतलैयिऱ् पॅय्दिरङ्गित तॉडर्न्दु तुऱ्ऱ
इन्दिरत्ते मुदलाय विमैयवरु मुनिवररु मिऱैञ्जि येत्त
अन्दरमङ् गैयर्वणङ्ग वळ्दरऱ्ऱिप् परदत्तैवन् दडैन्दा ळन्ऱे 4113

मन्तिरियर्–मंत्री और; तन्तिरियर्–सेनापति और; चुऱ्ऱम्–बन्धुजन; चुन्तरियर्–सुन्दरी स्त्रियाँ; मऱैयोर्–विप्र; वळम्–समृद्ध; नकरत्तवर्–नगर के वासी; मऱ्ऱुम्–और; एत्तै–अन्य; पलरुम्–अनेक; कै–हाथ; तलैयिल्–सिर पर; पॅय्तु–रखकर; इरङ्कि–रोते हुए; तॉटर्न्तु–पीछे लगे; तुऱ्ऱ–आते; इन्तिरत्ते–इन्द्र ही; मुतलाय–आदि; इमैयवरुम्–देवों और; मुनिवर्रुम्–मुनियों के; इऱैञ्चि–विनय करके; एत्त–स्तुति करते; अन्तरम्–आकाशवासिनी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; वणङ्क–नमन करते; अऴुतु–रोती; अरऱ्ऱि–कलपती; वन्तु–आकर; परतत्तै–भरत के पास; अटैन्ताळ्–पहुँचीं। ४११३

तब मंत्री, सेनापति, रिश्ते की सुन्दरी स्त्रियाँ, ब्राह्मण, समृद्ध अयोध्या नगर के वासी-सभी सिर पर हाथ रखे रोते हुए उनको घेरकर आये। इंद्रादि देवों ने और ऋषियों ने नमस्कार कर स्तुति की। आकाशलोक-वासिनी अप्सराओं ने उनको नमस्कार किया। इस स्थिति में कौसल्या रोती-कलपती भरत के पास आ पहुँचीं। ४११३

ऍरियमैत्त मयानत्तै यॅय्दुहिन्ऱ कादलनै यिडैये वन्दु
विरियमैत्त नॅडुवेणि पुऱत्तशैन्दु वीऴ्न्दॉशिय मेनि तळ्ळच्
चॉरिवमैप्प दरिदाय मऴैक्कण्णाळ् तॉडरुदलुन् दुणुक्क मॅय्दाप्
परिवमैत्त तिरुमनत्ता नडितॉऴुदा नवळ्पुहुन्दु पऱ्ऱिक् कॊण्डाळ् 4114

चॊरिवु–बहना; अमैप्पतु–रोकना; अरितु आय–कठिन जो था; मऴै कण्णाळ्–वारिश-सी आँखवाली; विरि अमैत्त–बिखरे हुए; नॅटु वेणि–लम्बे केश;

पुऱत्तु–पार्श्व में; अचॅनृतु–हिलते; वीऴ्न्तु–गिरते; ऒॅचिय–लचकते; मेति–शरीर; तळ्ळ–लड़खड़ाता; ऎॅरि अमैत्त–आग-रचित; मयानत्तै–श्मशान में; ऎॅय्तुकिन्ऱ–जाते; कातलर्त्तै–पुत्र को; इटैये–मध्य में; वन्तु–आकर; तॉटर्न्तुम्–साथ लगीं तो; परिवु–प्रेम से; अमैत्त–भरे; तिरुमनत्तान्–मनवाले ने; तुणुक्कम्–ठिठक; ऎॅय्ता–पाकर; अटि तॉऴुतान्–चरणों में नमस्कार किया; अवळ्–उन्होंने; पुकुन्तु–पास आकर; पऱ्ऱि–पकड़; कॉण्टाळ्–लिया। ४११४

उनकी आँखों से अबाध गति से आँसू बह रहा था। लंबे केश खुले, बिखरे और पीछे तथा पार्श्व में लटके हिल रहे थे। शरीर लड़खड़ा रहा था। वे भरत के पास आ लग गयीं, जो कि श्मशान को जा रहे थे जहाँ आग का प्रबंध हुआ था। श्रीराम-प्रेम-परिपूर्ण-मन भरत उनको देखते ही ठिठक गये। उन्होंने माता के चरणों में नमस्कार किया तो देवी ने झट जाकर उन्हें पकड़ लिया। ४११४

मन्ऩ ळैत्तदु मैन्द ऩिऴैत्तदुम्, मुन्ऩि ळैत्त विदियिन् मुयऱ्चियाल्
पिन्ऩि ळैत्तदु मॆण्णिलप् पॆऱ्ऱियाल्, ऎॅन्ऩि ळैत्तऩै यॆन्मह ऩॆयॆन्ऱाळ् 4115

मन् इऴैत्ततुम्–राजा (दशरथ) का कृत्य; मैन्तन्–पुत्र का; इऴैत्ततुम्–कृत्य; मुन् इऴैत्त–पहले कृत; वितियिन्–मेरे कर्मों के; मुयऱ्चियाल्–विधान से हुए; ऎॅण्णिल्–सोचा जाय तो; पिन् इऴैत्ततुम्–बाद का कृत्य; अ पॆऱ्ऱियाल्–उसी से; ऎॅन् मकने–मेरे पुत्र; ऎॅन्–क्या ही; इऴैत्तनै–कर दिया; ऎॅन्ऱाळ्–पूछा। ४११५

देवी ने कहा कि राजा दशरथ ने जो किया, फिर (मेरे) पुत्र ने जो किया, वह सब मेरे पूर्वकृत दुष्कर्मों का विधान था। विचारा जाय तो पीछे जो हुआ, वह भी उसी का फल है। अब तुम यह क्या काम करने चले ? । ४११५

नीयि दॆण्णिऩै येल्नॆडु नाडॆरि, पायु मन्ऩरुम् जेऩैयुम् बाय्वराल्
ताय रॆम्मळ वन्ऱु तऩियऱम्, तीयिन् वीऴु मुलहुन् दिरियुमाल् 4116

नी–तुमने; इतु–यह; ऎॅण्णितैयेल्–विचार किया तो; नॆटु नाटु–बड़ा देश; ऎॅरि पायुम्–आग में घुसेगा; मन्नरुम्–राजा और; चेनैयुम्–सेना के लोग; पायवर्–घुसेंगे; तायर्–माता; ऎॅम् अळवु–हमीं तक; अन्ऱु–नहीं रुकेगा; तनि अऱम्–विशिष्ट धर्म भी; तीयिन्–आग में; वीऴुम्–गिर जायगा; उलकुम् तिरियुम्–संसार भी अस्त-व्यस्त होगा। ४११६

अगर तुमने ऐसा करना ठान लिया तो समझ लो यह दीर्घ कीर्तिवाला बड़ा देश आग में घुस जायगा। हमारे मित्र राजा लोग और सेना के वीर सब आग में गिर मर जायँगे। केवल हम माताओं तक बात नहीं रुकेगी। स्वयं अनुपम धर्म भी अग्निप्रवेश कर लेगा। सारा लोक अस्त-व्यस्त हो जायगा। ४११६

तरुम नीदियित् इऱ्पय त्तावदु, करुम मेयत्तिरिक् कण्डिलङ् गण्गळाल्
अरुमै यौन्ऱु मुणर्न्दिलै यैयनिन्, पॆरुमै यूऴि तिरियितुम् बेरुमो 4117

ऐय–तात; उन् करुमम्–तुम्हारा कार्य; तरुमम् नीतियिन् तन्–धर्म तथा नीति का; पयन्–सार; आवतु–रहता है; अन्ऱि–उसके सिवा; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टिलम्–हमने नहीं देखा; अरुमै–अपनी उत्कृष्टता; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; उणर्न्तिलै–तुमने नहीं पहचानी; निन्–तुम्हारी; पॆरुमै–महत्ता; ऊऴि–युग; तिरियितुम्–परिवर्तन में भी; पेरुमो–बदल सकेगी क्या। ४११७

तात ! तुम्हारा कार्य धर्म-नीति-सम्मत ही रहा करता है। दूसरे ढंग का होता हमने नहीं देखा। पर अब तुम अपनी महत्ता को पहचानते नहीं दिखते। तुम्हारी महानता युगपरिवर्तन की अवस्था में भी बदल सकेगी क्या ? । ४११७

ऎण्णिल् कोडि यिरामर्ह ळॆन्निनुम्, अण्णल् निन्नरु ळुक्करु हावरो
पुण्णि यम्मॆनु निन्नुयिर् पोयिनाल्, मण्णुम् वानु मुयिर्हळुम् वाऴ्मो 4118

अण्णल्–महिमावान; ऎण्णिल्–सोचा जाय तो (या असंख्य); कोटि–करोड़; इरामर्कळ्–राम भी; ऒन्निनुम्–एक साथ मिलें; निन्–तुम्हारी; अरुळुक्कु–कृपा के; अरुकु–पास; आवरो–आनेवाले बनेंगे क्या; पुण्णियम्–पुण्य ही; ऎनुम्–सम; निन् उयिर्–तुम्हारी जान; पोयिनाल्–चली गयी तो; मण्णुम्–भूमि और; वानुम्–आकाश; उयिर्कळुम्–और जीव; वाऴ्मो–जीते रहेंगे क्या। ४११८

महिमावान ! सोचा जाय तो (असंख्य) करोड़ राम भी एक साथ मिलें तो तुम्हारी कृपा के पास भी नहीं आ सकेंगे। साक्षत् पुण्य-सम रहनेवाले तुम्हारे प्राण चले जायँ तो भूमि तथा आकाश और जीव जीवित रहेंगे क्या ? । ४११८

इन्ऱु वन्दिल नेयॆनि नाळैये, ऒन्ऱुम् वनुदुनै युन्नि युरैत्तशॊल्
पिन्ऱु मॆन्ऱुण रेऱ्पिऴैत् तालॆनिल्, पॊन्ऱुन् दन्मै पुहुन्ददु पोयॆन्ऱाळ् 4119

इन्ऱु–आज; वन्तिलते–नहीं आया; ऎनिन्–तो; नाळैये–कल ही; उनै वनुतु–तुम्हारे पास आ; ऒन्ऱुम्–लगेगा; उन्नि–सोचकर; उरैत्त–जो कहा; चॊल्–वह कथन; पिन्ऱुम्–तोड़ देगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उणरेल्–मत समझो; पिऴैत्ताल्–उल्लंघन करे; ऎनिल्–तो; पॊन्ऱुम्–मृत्यु का; तन्मै–हाल; पोय् पुकुन्ततु–आ गया (ऐसी स्थिति होगी); ऎन्ऱाळ्–कहा देवी ने। ४११९

राम आज नहीं आया तो कल ही आ जायगा तुम्हारे पास। उसने खूब विचारकर जो कहा है उस वचन से वह मुकरेगा, यह मत सोचो। वचनभंग करेगा तो मृत्यु की संभावना उसमें निहित है। कौसल्या ने यह कहा। ४११९

ऑरुवन् माण्डन नॅन्ऱुकॉण् डूऴिवाऴ्, पॅरुनि लत्तुप् पॅऱ्ऱलरु मिन्नुयिरॅक्
करुवु माण्डऱक् काणुदि योकलैत्, तरुम नीयल दिल्लॅनुन् दन्मैयाय् 4120

कलै तरुमन्-शास्त्रोक्त धर्म; नी अलतु इल्-तुम्हारे सिवा कोई नहीं; ऎन्नुम् तन्मैयाय्-ऐसी महिमा वाले; ऑरुवन्-एक; माण्टनन्-मर गया होगा; ऎन्ऱु कॉण्टु-ऐसा समझकर; ऊऴि वाऴ्-युगांत तक जीने योग्य; पॅरु निलत्तु-बड़ी भूमि में; पॅऱ्ऱल् अरु-दुर्लभ; इन् उयिर्-प्यारे प्राणों को; करुवुम् माण्टु-गर्भस्थित जीवों तक; अऱ-मरें यह; काणुतियो-देखोगे क्या। ४१२०

शास्त्रोक्त धर्म ही तुम हो ! तुम्हारे सिवा कुछ नहीं। इस भाँति रहनेवाले हे भरत ! यह अनुमान करके कि राम मर गया होगा क्या तुम युगांत तक जी सकनेवाले दुर्लभ प्राणों को, गर्भस्थ जीवों तक को मरते देखना चाहते हो ? । ४१२०

इऱक्कै युञ्जिल रेहलु मोहत्ताल्, पिऱक्कै युङ्गड नॅन्ऱुपिन् पाशत्तै
मऱक्कै युम्मह लेवलि यावदु, तुऱक्कै तानॅन्न ऱाळमनन् तूयमैयाळ् 4121

मकले-पुत्र; चिलर्-कुछ का; इऱक्कैयुम्-मरना; एकलुम्-छोड़ जाना; मोकत्ताल्-मोह से; पिऱक्कैयुम्-जन्म लेना; कटन् ऎन्ऱु-कर्तव्य समझकर; पिन्-फिर; पाचत्तै-स्नेहपाश को; मऱक्कैयुम्-भूलना; तुऱक्कै तानुम्-संग तोड़ना; वलियावतु-भला होगा; ऎन्ऱाळ्-कहा; मनम्-मन की; तूयमैयाळ्-पवित्र देवी ने। ४१२१

हे पुत्र ! कुछ का मरना, कुछ का चला जाना, कुछ का मोह के फलस्वरूप जन्म लेना आदि लोक सामान्य कार्य हैं —ऐसा मानकर अपना स्नेह-बंधन भूल जाना ही धीरता है। पवित्र हृदय वाली देवी कौशल्या ने कहा। ४१२१

मैन्द नॅन्नै मऱुत्तुरैत् तालॅन्नल्, ऎन्दै मॅय्म्मैयु मिक्कुलच् चॅय्हैयुम्
नैन्दु पोह वुयिर्निलै नच्चिलेन्, मुन्नु शॅय्द शबद मुडिप्पॅन्नाल् 4122

ऎन्तै-मेरे तात राम की; मॅय्म्मैयुम्-सत्यवादिता और; इ कुलम्-इस कुल के; चॅय्कैयुम्-कृत्यों को; नैन्तु पोक-क्षीण हो मिटने देकर; उयिर् निलै-प्राणों की स्थिति; नच्चिलेन्-नहीं चाहता; मुन्नु-पहले; चॅय्त-कृत; चपतम्-शपथ; मुटिप्पॅन्-पूरा करूँगा; मैन्तन्-पुत्र ने; ऎन्नै-मेरी बात; मऱुत्तुरैत्तान्-अस्वीकार की; ऎन्नल्-ऐसा मत कहिए। ४१२२

भरत ने माता से कहा— मैं अपने पितृ-सम श्रीराम के सत्य को और इस वंश के कार्यों को नाश होने देते हुए जीना नहीं चाहता। मैंने जो शपथ खायी थी, पहले वह अभी पूरा कर दूँगा। आप यह न मानें कि मेरे पुत्र ने मेरी बात को अस्वीकार दिया। ४१२२

यान् मॅय्यितुक् कितुयि रीन्दुपोय्
वान् ळॅय्दिय मन्नवन् सैन्दनाल्
कान् ळॅय्दिय काहुत्तर् केकडन्
एनै योर्क्कि दिळ्क्किल् वळक्कन्ऱो 4123

यानुम्–मैं भी; मॅय्यिनुक्कु–सत्य के लिए; इन् उयिर्–प्यारी जान; ईन्तु–देकर; पोय्–जाकर; वानुळ्–मोक्ष; अॅय्तिय–जो पहुँचे हैं; मन्तवन्–उन चक्रवर्ती का; मैन्तन् आल्–पुत्र हूँ न; कान् उळ्–वन में; अॅय्तिय–जो गये उन; काकुत्तर्के–काकुत्स्थ के लिए; कटन्–कर्तव्य; एनैयोर्क्कुम्–अन्यों के लिए; इतु–यह; इळुक्कु इल्–अकलंक; वळक्कु अन्ऱो–व्यवहार नहीं है क्या। ४१२३

मैं भी तो उस राजा का पुत्र हूँ, जो कि सत्य की वेदी पर प्राणों का उत्सर्ग कर स्वर्ग पहुँचा! वन में गये काकुत्स्थ श्रीराम का यह कार्य हो सकता है! पर अन्यों के लिए (शपथ का न रखना) कलंककारी है न? । ४१२३

तायशोऽ् केट्टलुन् दन्दैशोऽ् केट्टलुम्
पाशत् तन्बिनैप् पऱ्ऱऱ नोक्कलुम्
ईशऱ् केकडन् यान:(ह्) दिळैक्किलॅन्
माशऱ् ऱेतिदु काट्टुवॅन् माण्डॅन्ऱान् 4124

ताय् चॊल्–मातृ-वचन का; केट्टलुम्–सुनना (पालन) और; तन्तै चॊल्–पिता का कहना; केट्टलुम्–सुनना; पाचत्तु अन्पिनै–बन्धन के प्रेम को; पऱ्ऱु अऱ–संग काटकर; नोक्कलुम्–दूर करना; ईचऱ्के–ईश्वर का ही; कटन्–कार्य है; यान्–मैं; अ.ःतु–वह; इळैक्किलॅन्–नहीं करूँगा; माण्टु–मरकर; माचऱ्ऱेत्–कलंकहीन होकर; इतु–यह; काट्टुवॅन्–साबित करूँगा; अॅन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१२४

राम ईश्वर हैं। पितृवचन-पालन, मातृवचन-पालन और प्रेम-भंजन आदि उन्हें कर्तव्य लग सकता है! पर मैं वह नहीं करूँगा। मरूँगा और अपना कलंक धुलवा लूँगा। ऐसा करके यह दिखा दूँगा। ४१२४

अॅन्ऱु तीयिनै यॅय्दि यिरैत्तॅळुन्, दॊन्ऱु पूश लिडुमुल होरुडन्
निन्ऱु पूशनै शॅय्हिन्ऱ नेशऱ्कुक्, कुन्ऱु पोल्नॆडु मारुदि कूडिनान् 4125

अॅन्ऱु–यह कहकर; तीयिनै अॅय्ति–आग के पास जाकर; इरैत्तु–शोर करते; अॅळुन्तु–उठते; ऒन्ऱु–और मिलते; पूचल् इटुम्–हाहाकार मचाते; उलकोरुटन्–लोकवासियों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; पूचनै–पूजा; चॅय्किन्ऱ–करनेवाले; नेचऱ्कु–(श्रीराम के) भक्त से; कुन्ऱु पोल्–पर्वत-सम; नॆटु मारुति–लंबोतरा मारुति; कटितान्–अकस्मात आ मिला। ४१२५

इस भाँति कहकर भरत आग के बहुत निकट गये। सारे लोकवासी भी शोरगुल मचाते हुए वहीं खड़े थे। उनके साथ रहकर भरत अग्नि की पूजा कर ही रहे थे कि उन श्रीरामभक्त से पर्वताकार दीर्घकाय हनुमान अकस्मात् प्रगट होकर मिल गया। ४१२५

ऐयन् वन्दत्त नारियन् वन्दनन्, मॆय्यिन् मॆय्यनुन निन्नुयिर् वीट्टिनाल्
उय्युमॆयव नॆन्ऱुरॆत् तुट्पुहाक्, कैयि नालॆरि यक्करि याक्किनान् 4126

ऐयन्—प्रभु श्रीराम; वन्ताननन्—आ गये; आरियन् वन्तनन्—आर्य आ गये। मॆय्यिन्—सत्य के; मॆय् अनुन—सत्य-सम; निन् उयिर्—अपने प्राण; वीट्टिनाल्—त्याग देंगे तो; अवन्—वे; उय्युमे—जीते रहेंगे क्या; ऎन्ऱु—ऐसा; उरॆत्तु—कहकर; उळ् पुका—अंदर घुसकर; कैयिनाल्—हाथ से; ऎरियै—आग को; करि—राख; आक्किनान्—बना दी। ४१२६

हनुमान ने भीड़ में घुसकर जोर से कहा कि प्रभु आ गये; आर्य आ गये। सत्य के सत्य रूप आप अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दें तो क्या वे (श्रीराम) जीवित रहेंगे? यह कहते हुए आग को अपने हाथों से बुझाकर राख बना दी। ४१२६

आक्कि मऱ्ऱव नाय्मलर्त् ताळ्हळैत्
ताक्कत् तन्तलै ताऴ्न्दु वणङ्गिक्कै
वाक्किऱ् कूट्टप् पुदैत्तोर् माऱ्ऱमी
तूक्किक् कोळ्ळत् तहुमॆनच् चॊल्लिनान् 4127

आक्कि—बनाकर; अवन्—उन (भरत) के; आय् मलर् ताळ्कळै—सुन्दर कमल-चरणों से; ताक्क—लगाकर; तन् तलै—अपने सिर को; ताऴ्न्दु—नवाया; वणङ्कि—झुककर; वाक्किल्—मुख पर; कै कूट—हाथ लगाकर; पुतैत्तु—ढँककर; ओर् माऱ्ऱम्—एक बात; नी—आप; तूक्कि कोळ्ळत् तकुम्—मान लेने योग्य है; ऎन—ऐसा; चॊल्लिनान्—कहा। ४१२७

राख बनाकर हनुमान ने भरत के सुंदर कमल-चरणों पर सिर लगे, ऐसा सिर नवाया। मुख पर हाथ रखकर विनम्रता से बोला। एक बात कह रहा हूँ जिसे आपको मानना पड़ेगा। ४१२७

इन्न नाऴिहै यॆण्णॆन् दुळवैय, उन्नै मुन्नमुवन् दॆय्द वुरैत्तनाळ्
इन्न दिल्लॆ यॆनिनडि नायिनेन्, मुन्नम् वीऴ्न्दिव् वॆरियिन् मुडिवॆन्नाल् 4128

ऐय—प्रभु; उन्नै—आपके पास; वन्तु—आ; ऎय्त मुन्नम्—पहुँचे, इसके पहले; उरैत्त नाळ्—कथित दिन में; इन्नम्—अब भी; ऎण् ऐन्तु नाऴिकै—चालीस घड़ियाँ; उळ—बाकी हैं; इन्नतु—यह; इन्नै—नहीं; ऎनिन्—तो; अटि—दास; नायिनेन्—कुत्ता-सम मैं; मुन्नम्—पहले; इव्—इस; ऎरियिन्—अग्नि में; वीऴ्न्तु—कूदकर; मुटिवॆन्—मर जाऊँगा। ४१२८

प्रभु ! जिस दिन श्रीराम ने आपसे आने का वादा किया था, उस दिन के बीत जाने में अभी चालीस घड़ियाँ बाक़ी हैं। यह मेरा कथन झूठा साबित किया जाय तो मैं ही आपके पहले इस आग में कूदकर मर जाऊँगा। ४१२८

ऑऩ्ऱु तानुळ दुऩ्ऩडि येऩ्शॊलाल् निऩ्ऱु ताऴ्त्तरुळ् नेमिच्च् चुडर्कुणक्
कुऩ्ऱु तोऩ्ऱळ वुम्मिदु कुऩ्ऱुमेल्, पॊऩ्ऱु नीयु मुलहमुम् बॊय्यिलाय् 4129

पॊय्यिलाय्–असत्य से दूर रहनेवाले; ऑऩ्ऱु ताऩ्–एक ही बात; उळतु–है; नेमि–गोल; चुटर्–किरणमाली; कुणक्कु कुऩ्ऱु–पूर्व की उदयगिरि में; तोऩ्ऱु अळवुम्–उदित हो तब तक; उऩ्–आपके; अटियेऩ्–दास मेरे; चॊलाल्–कथन से; निऩ्ऱु–रुककर; ताऴ्त्तु अरुळ्–विलंब करने की कृपा करो; इतु कुऩ्ऱुमेल्–यह नहीं होगा तो; नीयुम्–आप और; उलकमुम्–संसार; पॊऩ्ऱुम्–नाश होंगे। ४१२९

असत्य से दूर रहनेवाले ! एक ही बात है। गोल किरणमाली सूर्य पूर्व की उदयगिरि पर जब तक उदित न हो तब तक मेरी बात पर विश्वास करके रुक जाने की कृपा कीजिए। यह अवधि बीत जायगी तो निश्चित है कि आप ही नहीं सारा लोक भी नष्ट हो जायगा। ४१२९

ऍङ्ग णायहर् कित्तमु दीहुवाऩ्, पङ्ग यत्तुप् परत्तुवऩ् वेण्डलाल्
अङ्गु वेहिन ऩल्लदु ताऴ्क्कुमो, इङ्ग णल्लदॊऩ् ऱिऩ्ऩमुङ् गेट्टियाल् 4130

पङ्कयत्तु–कमलमणि-मंडित; परत्तुवऩ्–भरद्वाज की; ऍङ्कळ् नायकऱ्कु–हमारे नायक को; इऩ्–मधुर; अमुतु–भोज; ईकुवाऩ् वेण्टलाल्–देने की प्रार्थना से; अङ्कु–वहाँ; वेकित्तऩ् अल्लतु–ठहर गये, नहीं तो; ताऴ्क्कुमो–देर करेंगे क्या; इङ्कण्–यहाँ; इऩ्ऩमुम्–अब भी; नल्लतु–और अच्छी बात; ऑऩ्ऱु–एक; केट्टि–सुनिए। ४१३०

कमलमणि-भूषित भरद्वाज ने प्रार्थना की कि हम यहाँ मधुर भोज देना चाहते हैं। उसी से श्रीराम वहाँ ठहर गये। नहीं तो कहीं विलंब करेंगे क्या ? अब और भी एक शुभ समाचार कहता हूँ। सुनिये। ४१३०

अण्डर् नाद ऩरुळि यळित्तुळ, दुण्डॊर् पेरडै याळ मुऩक्कदु
कॊण्ड् वन्दऩॆऩ् कोदऱ्ऱ शिन्दैयाय्, कण्डु कॊण्डरुळ् वायॆऩक् काट्टिऩाऩ् 4131

अण्टर् नातऩ्–अंडनायक ने; अरुळि–देने की; अळित्तुळतु–कृपा जो की; ओर्–एक; पेर्–बड़ा; अटैयाळम्–अभिज्ञान; उण्टु–है; उऩक्कु–आपको; अतु–वह; कॊण्टु–ले; वन्तऩॆऩ्–आया हूँ; कोतु अऱ्ऱ–निर्दोष; चिन्तैयाय्–मन वाले; कण्टु कॊण्टु–देख लेने को; अरुळ्वाय्–कृपा करें; ऍऩ–ऐसा कहकर; काट्टिऩाऩ्–दिखाया। ४१३१

अंडनायक ने मुझ पर कृपा करके एक श्रेष्ठ अभिज्ञान दिया है। मैं उसे आपके लिए लाया हूँ। अकलंकमन ! देखने की कृपा करें, कहकर हनुमान ने उस मुँदरी को दिखाया। ४१३१

काट्टिय मोदिरङ् गण्णिऱ् काण्डलुम्, ऊट्टिय वल्विड मुऱ्ऱु मुऱ्ऱुवाऱ्क्
कूट्टिय नन्मरुन् दॊत्त दामरो, ईट्टिय वुलहुक्कु मिळैय वेन्दऱ्कुम् 4132

काट्टिय मोतिरम्–दिखायी गयी मुँदरी; कण्णिल् काण्टलुम्–आँखों से देखने पर; ईट्टिय–एकत्रित; उलकुक्कुम्–लोकवासियों को; इळैय–छोटे; वेन्तऱ्कुम् राजा को; ऊट्टिय–खिलाये गये; वल् विटम्–कठोर विष; उऱ्ऱु–के कारण; मुऱ्ऱुवाऱ्क्कु–मरणोन्मुख को; ऊट्टिय–खिलाये गये; नल् मरुन्तु–अच्छे अमृत; ऒत्ततु–के समान साबित; आम्–हुआ। ४१३२

हनुमान की दिखायी अँगूठी को देखते ही वहाँ एकत्रित लोगों के लिए और भरत के लिए कठोर विष खाकर संतप्त रहे लोगों को खिलाये गये अच्छे अमृत के समान रही वह मुँदरी। ४१३२

अऴुहिन्ऱ वायॆला मार्त् तॆऴुन्दन, विऴुहिन्ऱ कण्णॆलाम् वॆळ्ळ माऱ्िन
उऴुहिन्ऱ तलैयॆला मुयर्न्दॆ ऴुन्दन, तॊऴुहिन्ऱ कैयॆलाङ् गालिन् तोन्ऱलै 4133

अऴुकिन्ऱ–जो रोते थे; वाय् ऎलाम्–वे सभी मुख; आर्त्तु–आनंदरव; ऎऴुन्तन–कर उठे; विऴुकिन्ऱ–(आँसू) गिरानेवाली; कण् ऎलाम्–सभी आँखें; वॆळ्ळम् माऱिन–प्रवाह से मुक्त हुईं; उऴुकिन्ऱ–झुके हुए; तलै ऎलाम्–सभी सिर; उयर्न्तु ऎऴुन्तन–उन्नत हो उठे; कै ऎलाम्–सभी हाथ; कालिन् तोन्ऱलै–पवन-सुत को; तॊऴुकिन्ऱ–नमस्कार करते हैं। ४१३३

तब जो रोते रहे वे सभी मुख आनंद-रव कर उठे। आँसू गिराती रही सभी आँखों के आँसू सूख गये। झुके रहे सभी सिर उन्नत हो उठे। सभी (के) हाथों ने हनुमान को नमस्कार किया। ४१३३

मोदिरम् वाङ्गित्तन् मुहत्तिन् मेलणैत्, तादरम् बॆऱुवदऱ् काक्कै योवॆना
ओदिनर् नाणुऱ वोङ्गि नान्तॊऴुम्, तूदनै मुऱैमुऱै तॊऴुदु तुळ्ळुवान् 4134

तॊऴुम् तूतनै–दूत को; मुऱै मुऱै तॊऴुतु–बार-बार नमस्कार कर; तुळ्ळुवान्–आनंद से उछलते; मोतिरम्–मुँदरी को; वाङ्कि–लेकर; तन् मुकत्तिन् मेल्–अपने मुख पर; अणैत्तु–रख लेकर; आतरम्–श्रीराम का प्रेम; पॆऱुवतऱ्कु–धारण करने; आक्कैयो–योग्य शरीर क्या; ऎना–ऐसा; ओतिनर् नाण् उऱ–जो कहते थे, वे लजा जायें, ऐसा; ओङ्किनान्–फूल गये। ४१३४

नमस्कार करते हनुमान को भरत ने बार-बार नमस्कार किया। आनंद से उछलकर मुँदरी का ग्रहण किया। फिर उसे अपने मुख से लगा लिया। तब उनका शरीर एकदम फूल उठा और उनको पहले देखकर जो यह सोच रहे थे कि क्या इसका यह कृश शरीर श्रीराम के प्रेम के भार को सह सकेगा, अब लज्जा का अनुभव करने लगे। ४१३४

आदिवॆन् दुयरला लरुन्द लिन्मैयाल्
ऊदुऱप् पऱप्पदा युलर्न्द याक्कैयोय्

एदिल तौरुवत्तकौ लॆन्न लायदु
मादिरम् वळर्न्दन वयिरत् तोळ्हळे 4135

आति–तबसे; वॆम्–कठोर; तुयर्–दुःख; अलाल्–के सिवा; अरुन्तल्–खाना-पीना; इन्मैयाल्–न रहा इसलिए; ऊतुइ–फूँकने पर; परप्पताय्–उड़ जाय, ऐसा; उलर्न्त–सूखा; याक्कै–शरीर; पोय्–बदल गया; ऍतिलत् ऑरुवन् कोल्–दूसरा एक है क्या; ऍन्तल्–ऐसा कहने योग्य; आयतु–बने; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र (-सम) सुदृढ़ कंधे; मातिरम् वळर्न्तन–पर्वतों के समान स्थूल हुए। ४१३५

तभी से भरत दुःख को छोड़ अन्य किसी का भोग नहीं करते थे। फूँको तो उड़ जाय, ऐसा उनका शरीर कृश हो गया था। पर अब वे ऐसे स्थूल हो गये कि देखनेवाले समझें कि यह कोई दूसरा है। उनके वज्र-सम कन्धे पर्वतों के समान फूल उठे। ४१३५

अळुनहु मनुमनै याळिक् कैहळाल्
तौळुमॆळुन् दुळ्ळुम्वॆङ् गळितु ळक्कलाल्
विळुमळिन् दॆङ्गुम्बोय् वीङ्गुम् वेर्क्कुमक्
कुळुवोडुङ् गुनिक्कुन्दन् तडक्कै कॊट्टुमाल् 4136

वॆम् कळि–अधिक आनंद के; तुळक्कलाल्–उकसाने से; अळुम्–रोते; नकुम्–हँसते; अनुमनै–हनुमान को; आळि कैकळाल्–मुँदरी-सहित हाथों से; तॊळुम्–नमस्कार करते; ऍळुम्–उठते; तुळ्ळुम्–उछलते; विळुम्–गिरते; अळिन्तु–घुलकर; एङ्कुम्–तरसते; पोय् वीङ्कुम्–फूल जाते; वेर्क्कुम्–स्वेद से भर जाते; अ कुळुवोटुम्–(वहाँ रहे) उस समूह के साथ; कुनिक्कुम्–नाचते; तन्–अपने; तट कै–विशाल हाथ; कॊट्टुम्–पीटते (ताली बजाते)। ४१३६

भरत की स्थिति विचित्र हो रही। आनंद के प्रभाव से वे कभी रोते, कभी हँसते। हाथ में मुँदरी के साथ हनुमान को बार-बार नमस्कार करते। ऊपर उठते, उछलते, कूदते, गिरते, थककर रोते। फूल जाते और स्वेद से भर जाते। वहाँ रही उस भीड़ के साथ तालियाँ बजाते। ४१३६

आडुमि ताडुमि लॆन्नु मैयन्पाल्, ओडुमि नोडुमि लॆन्नु मोङ्गिशै
पाडुमिन् पाडुमि लॆन्नुम् बाविहाळ्, शूडुमिन् शूडुमिन् तूदन् ताळॆन्नुम् 4137

पापिकाळ्–पापी लोगो; आट्टुमिन् आट्टुमिन्–नाचो-नाचो; ऍन्नुम्–कहते; ऐयन् पाल्–प्रभु के पास; ओटुमिन् ओटुमिन्–भागो-भागो; ऍन्नुम्–कहते; ओङ्कु इचै–वर्धित यश; पाट्टुमिन् पाट्टुमिन्–गान करो, गाओ; ऍन्नुम्–कहते; तूतन् ताळ्–दूतों के चरणों को; चूटुमिन् चूटुमिन्–(सिर पर) धारण कर लो, धारण करो; ऍन्नुम्–कहते। ४१३७

कहते कि हे पापियो ! नाचो, नाचो। प्रभु के पास दौड़ो, दौड़ो।

प्रभु का उन्नत यशगान करो। कभी यह कहते कि दूत (हनुमान) के पैरों को सिर पर धारण कर लो। ४१३७

वञ्जनै यियऱ्ऱिय मायक् कैकेयार्
तुञ्जुव रिन्नियॆन्नत् तोळैक् कॊट्टुमाल्
कुञ्जिद वडिहळ्मण् डिलत्तिऱ् कूट्टुऱ
अञ्जनक् कुन्ऱिनिन् ऱाडुम् बाडुमाल् 4138

वञ्चनै–वंचना; इयऱ्ऱिय–जिसने की वह; माय कैकेयार्–मायाविनी कैकेयी; इन्नि–अब; तुञ्चुवार्–शिथिल होंगी; ऍन्न–ऐसा कहकर; तोळै कॊट्टुम्–कंधे ठोंकते; कुञ्चित–झुके; अटिकळ्–पैर; मण्टलत्तिल्–चक्राकार; कूट्टु उऱ–मिल जायँ ऐसा; अञ्चनम् कुन्ऱिन्–अंजन-पर्वत के समान; निन्ऱु–रहकर; आटुम् पाटुम्–नाचते-गाते। ४१३८

यह कहकर कंधे ठोंकते कि अब वंचकी कैकेयी दब जायगी। पैर झुकाकर, चक्राकार घुमाकर अंजनपर्वत के समान भरत नाचे और गाये। ४१३८

* वेदियर् तमैत्तॊऴुम् वेन्द रैत्तॊऴुम्
तादियर् तमैत्तॊऴुन् दन्नैत् तान्तॊऴुम्
एदुमॊन् ऱुणर्हुरा दिरुक्कु निऱ्कुमाल्
कादलॆन् ऱदुवुमोर् कळ्ळिन् तोऱ्ऱमे 4139

वेतियर् तमै–ब्राह्मणों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; वेन्तरै तॊऴुम्–राजाओं को नमस्कार करते; तातियर् तमै–दासियों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; तन्नै तान्–अपने ही आपको; तॊऴुम्–नमस्कार करते; एतुम् ऒन्ऱु–कुछ भी; उणर्कुऱावु–न जानते से; इरुक्कुम्–रहते; निऱ्कुम्–स्थिर रहते; कातल् ऍन्ऱु–प्रेम जो है; अतुवुम् ओर्–वह भी एक; कळ्ळिन् तोऱ्ऱमे–मद्य के स्वभाव का है। ४१३९

भरत ब्राह्मणों को नमस्कार करते। राजाओं को, दासियों को और फिर अपने-आप को नमस्कार करते। ऐसे विना कुछ समझे-बूझे स्तब्ध खड़े रहते। स्नेह भी मद्य की प्रकृति का ही है! । ४१३९

अत्तिऱत् ताण्डहै यनुमन् तन्नैनी
ऍत्तिऱत् तायॆमक् कियम्बि यीदियाल्
मुत्तिऱत् तवरुळे यॊरुवन् मूर्त्तिवे
ऱॆत्तिरुन् दायॆन वुणर्हिन् ऱान् 4140

अ तिऱत्तु–उस भाँति के; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अनुमन् तन्नै–हनुमान से; नी–तुम; ऍ–किस; तिऱत्ताय्–तरह के हो; ऍमक्कु–हमें; इयम्पि ईति–कहने की कृपा करो; मुत्तिऱत्तवर् उळे–त्रिमूर्ति में; मूर्त्ति वेऱु ऒरुवन्–एक अलग वेश में;

ओत्तिरुन्ताय्–के समान रहे; ॲन्न–ऐसा; उणर्किन्ऱेन्–मैं समझता हूँ; ॲन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१४०

इस भाँति जो रहे, उन भरत ने हनुमान से पूछा कि तुम कैसे आदमी हो ? कृपाकर यह बताओ। अलग तो दिखते तो भी मुझे तो त्रिमूर्ति में एक ही हो पर अलग रूप में दिखते हो। ४१४०

मऱैयवर् वडिवुकोण् डणुह वन्दनै
इऱैवरि नोरुत्तनेन् ऱॆण्णु हिन्ऱनेन्
तुऱैयॆनक् कियादॆनच् चॊल्लु शॊल्लॆन्ऱान्
अऱैकऴ लनुमनु मऱियक् कूऱुवान् 4141

मऱैयवर्–वेदज्ञ (ब्राह्मण) का; वटिवु–रूप; कोण्टु–लेकर; अणुक–मिलने; वन्तनै–आये हो; इऱैवरिल्–त्रिदेवों में; ओरुत्तन्–एक हो; ॲन्ऱु–ऐसा; ॲण्णुकिन्ऱनेन्–सोचता हूँ; तुऱैयातु–वृत्तांत क्या है; ॲन–ऐसा; ॲनक्कु–मेरे पास; चॊल्लु चॊल्लु–कहो, कहो; ॲन्ऱान्–कहा; अऱैकऴल्–क्वणनशील पायलधारी; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; अऱिय–समझाकर; कूऱुवान्–कहा। ४१४१

तुम ब्राह्मण का वेश धरकर आये हो। पर त्रिदेवों में एक मानता हूँ। असल में तुम्हारा वृत्तांत क्या है ? मुझे बताओ। जल्दी कहो। भरत ने सुनना चाहा। क्वणित पायलधारी हनुमान ने समझाकर कहा। ४१४१

काऱ्ऱिनुक् करशन्पाऱ् कविक्कु लत्तिनुळ्
नोऱ्ऱवळ् वयिऱ्ऱिनुवन् दुदित्तु नुम्मुनाऱ्
केऱ्ऱिला वडित्तोऴि लेव लाळनेन्
माऱ्ऱिनें नुरुवोरु कुरङ्गु मन्नयान् 4142

मन्न–राजा; यान्–मैं; ओरु–एक; कुरङ्कु–वानर हूँ; काऱ्ऱिनुक्कु–पवन के; अरचन् पाल्–देवता द्वारा; कवि कुलत्तिनुळ्–वानरकुल में; नोऱ्ऱवळ्–तपस्या करनेवाली (अंजना) के; वयिऱ्ऱिल्–गर्भ से; वन्तु उतित्तु–जनम लेकर; एऱ्ऱिला–उपमाहीन; नुम्मुनाऱ्कु–आपके ज्येष्ठ भ्राता के; अटि तोऴिल्–दासता-कृत्य का; एवल्–सेवक; आळनेन्–मनुष्य हूँ; उरु माऱ्ऱिनेन्–रूप बदलकर आया हूँ। ४१४२

राजा ! मैं एक वानर हूँ। पवनदेव का अंजनादेवी के गर्भ में से आया। —जो कि वानर जाति की थीं और जिसने पुत्र के लिए तपस्या की। अनुपम आपके ज्येष्ठ भ्राता की दासता करनेवाला सेवक हूँ। रूप बदलकर मैं इधर आया। ४१४२

अडित्तोऴिल् नायिनें नऱ्प याक्कैयेक्
कडित्तडन् दामरैक् कण्णि नोक्कॆनाप्

पिडित्तपोय् युरुवित्तैप् पॅयर्त्तु नीक्किताऩ्
मुडित्तलम् वाऩवर् नोक्किऩ् मुऩ्ऩुवाऩ् 4143

अटि तॉऴिल्–दासकृत्य करनेवाला; नायिऩेऩ्–कुत्ता (-सा) हूँ; अऱ्प याक्कैयै–अल्प शरीर को; कटि तट–सुगंधित विशाल; तामरै कण्णिऩ्–कमल-सी आँखों से; नोक्कु–देख लें; ऍऩा–कहकर; पिटित्त–धृत; पोय् उरुवित्तै–मिथ्या रूप को; पॅयर्त्तु नीक्किताऩ्–छोड़ दिया; मुटि तलम्–सिर का भाग; वाऩवर् नोक्किऩ्–देवों के समक्ष; मुऩ्ऩुवाऩ्–बढ़ता गया। ४१४३

दास, कुत्ते से भी नीच (यह विनम्रतासूचक तमिऴ मुहावरा है) मेरे क्षुद्र शरीर को आप सुगंधपूर्ण कमल-सम आँखों से निहार लें। ऐसा कहकर हनुमान ने अपने गृहीत मिथ्या ब्राह्मण-रूप को दूर फेंक दिया। वह इतना ऊँचा बढ़ने लगा कि देवता लोग (अपने लोक में रहकर) उसके सिर को (अपने समक्ष) देख सकें। ४१४३

वॅञ्जिलै यिरुवरुम् विरिञ्जऩ् मैन्दऩुम्
ॲञ्जलि लदिशय मिदुवॅऩ् ड्रॅण्णिऩार्
तुञ्जिल दायिनुम् जेऩै तुण्णॆऩ
अञ्जित दञ्जऩै शिरुव ऩाक्कैयाल् 4144

अञ्चऩै चिऱुवऩ्–अंजना-सुत के; आक्कैयाल्–शरीर को देखकर; वॅम् चिलै–कठोर धनुर्धर; इरुवरुम्–दोनों और; विरिञ्चऩ् मैन्तऩुम्–विरंचिसुत वसिष्ठ; इतु–यह रूप; ॲञ्चल् इल्–अक्षय; अतिचयम्–अतिशय रूप है; ॲऩ्ऱु ॲण्णिऩार्–ऐसा सोचने लगे; चेऩै–सेना; तुञ्चिलतु–मरी तो नहीं; आयिऩुम्–फिर भी; तुण् ॲऩ–ठिठककर; अञ्चितु–डर गयी। ४१४४

अंजना-सुत के विश्वरूप के शरीर को देखकर धनुर्धर वीर दोनों भाई, भरत और शत्रुघ्न, और विरंचिसुत वसिष्ठ ने विस्मय किया कि यह अतिशय अद्भुत रूप है! पास रही सेना मरी तो नहीं पर गंभीर रूप से भयभीत हो गयी। ४१४४

ईङ्गुनिऩ् ऱियामुनक् किशैत्त माऱ्ऱमत्
तूङ्गिरुङ् गुण्डलच् चॅवियिऱ् चूऴ्वर
ओङ्गलिल् उयर्प्पुरु मुलप्पिल् याक्कैयै
वाङ्गुदि विरैन्दॆऩ मऩ्ऩऩ् वेण्डिऩाऩ् 4145

अ–सुन्दर; ईङ्कु निऩ्ऱु–इधर खड़े होकर; याम्–हम; उऩक्कु–तुमसे; इचैत्त–जो कहेंगे; माऱ्ऱम्–वे शब्द; तूङ्कु–लटकते; इरु–दो; कुण्टलम्–कुंडलों वाले; अ चॅवियिल्–उन कानों में; चूऴ्वर्–घूमें (पड़ें); ओङ्कलिल्–पर्वत-सम; उयर्प्पु उऱुम्–ऊँची रहते; उलप्पिल्–इस अक्षय; याक्कैयै–शरीर को; वाङ्कुति–छोटा कर लो; ॲऩ–ऐसा; मऩ्ऩऩ्–राजा ने; वेण्टिऩाऩ्–प्रार्थना की। ४१४५

राजा भरत ने तब हनुमान से प्रार्थना की कि तुम अपने पर्वतोपम उन्नत रूप को छोटा कर लो, ताकि हमारे कहे शब्द तुम्हारे लटकते कुण्डलों से भूषित कानों में पड़ सकें। ४१४५

शुरुक्किय वुरुवन्नात् तॊळुदु मुन्निन्ऱ
अरुक्कन्मा णवहनुक् कैय नन्बिनाल्
पॊरुक्कॆन्न निदियमुम् बुनैपॊन् पूण्गळिन्
वरुक्कमुम् वरम्बिल नन्िव ळङ्गिनान् 4146

ऐयन्–प्रभु भरत; अन्पिनाल्–प्रेम से; चुरुक्किय–अपना शरीर छोटा कर; उरुवन्ना–उस रूप में; तॊळुतु–नमस्कार करके; मुन् निन्ऱ–जो समक्ष रहा उस; अरुक्कन्–सूर्य भगवान के; माणवकन्कक्कु–शिष्य को; पॊरुक्कॆन्न–झट; नितियमुम्–निधियाँ; पुनै–पहनने योग्य; पॊन्–स्वर्ण; पूण्कळिन्–आभरणों की; वरुक्कमुम्–राशियाँ; वरम्पिल–असीम; नन्ि–खूब; वळङ्किनान्–भेंट किया। ४१४६

हनुमान ने भरत की इच्छा के अनुसार अपना रूप छोटा कर लिया। फिर नमस्कार करके उनके समक्ष खड़ा रहा। तब उस अर्क-शिष्य को भरत ने झट निधियाँ, धारण योग्य अनेक आभरणों की राशियाँ आदि अपार रूप में खूब दान किया। ४१४६

कोवॊडु तूशुनऱ् कुलम णिक्कुळाम्, मावॊडु परिक्कुलम् वादु तेरिनम्
तावुनी रुडुत्तनऱ् ऱरणि तन्नुडन्, एवरुञ् जिलैवलान् यावु नल्हिनान् 4147

एवरुम्–शर-प्रेषक; चिलै वलान्–धनुर्विद्या में दक्ष; कोवॊटु–गायों के साथ; तूचु–वस्त्र; नल् कुलम् मणि–उत्तम जाति के रत्नों के; कुळाम्–समूह; मावॊटु–हाथी और; कुलम्परि–श्रेष्ठ अश्व; वातु–तेज जानेवाले; तेर् इनम्–रथवृन्द; तावुम् नीर्–उछल जाते जल से; उटुत्त–आवृत; नल् तरणि तन्नुटन्–श्रेष्ठ भूमि के साथ; यावुम् नल्कितान्–सभी दान में दिया। ४१४७

बाण-प्रेषण-धनुर्निपुण भरत ने और भी गायें, वस्त्र, हाथी, उत्तम रत्नों के ढेर, कुलीन अश्व, तेज चलनेवाले रथों के वृन्द और उछलकर बहने वाले जल से आवृत उत्तम भूमि आदि भी दान में दिया। ४१४७

इळवलै यण्णलुक् कॆदिर्हॊण् मॆन्ऱनर्
वळॆमदि लयोत्तियिल् वाळु माक्कळॆक्
किळैयॊडु मेहॆन्क् किळत्ति यॆङ्गणुम्
अळैयॊलि मुरशिन्न मऱैविप् पायॆन्ऱान् 4148

इळवलै–छोटे भाई से; वळै मतिल्–गोलाकार प्राचीर वाली; अयोत्तियिल् वाळुम्–अयोध्या में रहनेवाले; माक्कळै–लोगों को; अण्णलुक्कु–महिमावान प्रभु को; ऎतिर् कॊणम्–अगवानी करें; ऎन्ऱम्–ऐसा और; किळैयॊटुम्–परिवारों के साथ; एकु–चलो; ऎन्न–ऐसा; किळत्ति–बताने के लिए; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र;

अळै ऑलि–गूँजनेवाली ध्वनि को; मुरचु इतम्–भेरियों के समूह को; अऱैविप्पाय्–पिटवा दो; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। ४१४८

तब भरत ने अपने कनिष्ठ भ्राता शत्रुघ्न से कहा। आवरणयुक्त अयोध्या के वासियों को बड़ी ध्वनि निकलनेवाली भेरियाँ पिटवाकर खबर दो कि वे महिमावान प्रभु के आवभगत में जायँ और अपने बंधु-बांधवों को भी साथ लायें। ४१४८

तोरण नट्टुमेऱ् तुहिल्पॉ दिन्दुनऱ्, पूरणप् पॉऱ्कुडम् पॉलिय वैत्तुनीळ्
वारण मिवुळितेर् वरिशै तान्वळाच्, चीरणि यणिहॅन्च् चॅप्पु वायॅन्ऱान् 4149

तोरणम् नट्टु–तोरण आदि गाड़कर; मेल्–खम्भों के ऊपर; तुकिल्–वस्त्रों से; पॉतिन्तु–आच्छादित करके; नल्–श्रेष्ठ; पूरणम् पॉन् कुटम्–स्वर्णपूर्ण कुंभ; पॉलिय–शोभायुक्त; वैत्तु–रखकर; नीळ्–बड़े; वारणम्–गजों; इवुळि–अश्वों और; तेर–रथों को; वरिचै वळा–क्रम भंग न करके; चीर् अणि–श्रेष्ठ अलंकार; अणिक ऍन–अलंकृत करो, ऐसा; चॅप्पुवाय–कहो; ऍन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१४९

तोरण गाड़कर उन पर वस्त्राच्छादन करें। सुंदर पूर्णकुंभ तैयार कर रखें। बड़े गजों को, अश्वों को और रथों को उचित रीति से पंक्तियों में रखकर नगर को श्रेष्ठ अलंकारों से अलंकृत करें। —यह सब मुनादी पिटवा दो। भरत ने यों कहा। ४१४९

परत्तुव	नुऱैविडत्	तळवुम्	पॅम्पॉन्नीळ्
शिरत्तॉहै	मदिऱ्पुऱत्	तिरुदि	शेर्दर
वरत्तहु	तरळमॅन्	पन्दर्	वैत्तुवान्
पुरत्तैयुम्	बुदुक्कुमा	पुहऱि	पोयॅन्ऱान् 4150

परत्तुवन्–भरद्वाज के; उऱैयिटत्तु अळवुम्–आश्रम से लेकर; पॅम् पॉतिन्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; नीळ्–लंबे; चिरम्–शिखरों के; तॉकै–समूह के; मतिल् पुऱत्तु–प्राचीर के; इऱुति अळवुम्–अंत तक; चेर् तर–मिलाकर; वरम् तक–श्रेष्ठ, युक्त; तरळम्–मोतियों का; मॅल् पन्तर् वैत्तु–सुखद (मृदु) वितान बनाकर; वान् पुरत्तैयुम्–उत्तम नगर को भी; पुतुक्कुमा–नवीन बना लेने को; पोय् पुकऱि–जाकर कह दो; ऍन्ऱान्–कहा। ४१५०

स्वर्णशिखरसहित अयोध्या के प्राचीरों के छोर से भरद्वाज जी के वासस्थान तक श्रेष्ठ मोतियों का वितान तनवा दो। अयोध्या का नवीनीकरण करा दें —यह भी कहो। ४१५०

ऍन्ऱलु	मवनडि	यिऱैञ्जि	यॅय्दियक्
कुन्ऱुऱळ्	वरिशिलैक्	कुववृत्	तोळित्तान्
नन्ऱुणर्	केळ्विय	नवैयिल्	शॅय्हैयन्
तन्ऱुणैच्	चुमन्दिरऱ्	करियच्	चाऱ्ऱिनान् 4151

ऎन्ऱलुम्–कहते ही; वरिचिलै–सबंध धनुर्धर; अ कुन्ऱु उऱऴ्–वे पर्वतोपम; कुववु–पुष्ट; तोळिनान्–कंधों वाले; अवन्–उनके; अटि–चरणों में; इऱैञ्चि ऎय्ति–नमस्कार करके जाकर; नन्ऱु उणर्–खूब ज्ञात; केळ्वियन्–श्रौतज्ञान वाले; मवै इल्–अनिंद्य; चॆय्कैयन्–कार्यों के कर्ता; तन् तुणै–अपने मित्र; चुमन्तिरऱ्कु–सुमन्त्र के पास; अऱिय–समझाकर; चाऱ्ऱिनान्–बोल दिये। ४१५१

भरत के यों कहने पर सबंध धनुर्धर पर्वतोपम कंधों वाले शत्रुघ्न भरत के चरणों में नमस्कार करके गया और श्रौतज्ञान के समृद्ध, निर्दोष कार्य करनेवाले अपने मित्र सुमंत्र से भरत की आज्ञा सुना दी। ४१५१

अव्वुरै केट्टलु मऱिवित् वेलैयान्
कव्वैयि लन्बिनाऱ् कळिक्कुञ् जिन्दैयान्
वॆव्वॆयि लॆऱिमणि वीदि यॆङ्गणुम्
ऎव्वमिन् ऱऱैपऱै यॆऱ्ऱु हॆन्ऱिड 4152

अऱिवित् वेलैयान्–ज्ञान-सागर के; अव् उरै–वह वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; कव्वै इल्–निर्दोष; अन्पिनाल्–प्रेम से; कळिक्कुम्–मुदित; चिन्तैयान्–मन से; वॆव्वॆयिल् ऎऱिमणि–प्यारी छवि बिखेरनेवाले रत्नों से पूर्ण; वीति ऎङ्कणुम्–सभी वीथियों में; ऎव्वम् इन्ऱु–दोषहीन रीति से; अऱै पऱै–पिट सकनेवाले ढिंढोरे; ऎऱ्ऱुक–पीटो; ऎन्ऱिट–कहने पर। ४१५२

ज्ञानसागर सुमंत्र का निर्दोष मन यह वचन सुनकर उत्साह से भर गया। उसने 'वळ्ळुवर' लोगों को आज्ञा दी कि उज्ज्वल रत्नमय वीथियों में ठीक तरह से बजनेवाली भेरियाँ हाथियों पर लेकर पीटो और मुनादी करा दो। ४१५२

वानैयुन् दिशैयैयुङ् गडन्द वान्पुहऴ्क्
कोनैयिन् ऱॆदिर्हॊळ्वान् कोल मानहर्त्
तानैयु मरशरु मॆऴुह तानॆना
यानैयिन् वळ्ळुवर् मुरश मॆऱ्ऱिनार् 4153

वानैयुम्–आकाश को; तिचैयैयुम्–और दिशाओं को; कटन्त–जो पार कर चुका; वान् पुकऴ्–ऐसे श्रेष्ठ यश के भाजन; कोनै–राजा की; इन्ऱु–आज; ऎतिर् कॊळ्वान्–अगवानी करने के लिए; कोलम्–सुन्दर; मा नकर्–महान नगर की; तानैयुम्–सेना; अरचरुम्–राजा लोग; ऎऴुक–उठें; ऎना–ऐसा; यानैयिन्–गजों पर से; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर' लोगों ने; मुरचम्–ढिंढोरा; ऎऱ्ऱिनार–पिटवाया। ४१५३

"आकाश-दिशा-पार यशस्वी श्रीराम की अगवानी के लिए सुंदर

तथा बड़े नगर अयोध्या की सेना और अयोध्या के राजा लोग उठ आयें।" ऐसा हाथियों पर रहकर 'वळ्ळुवरों' ने ढिंढोरा पीटा। ४१५३

मुरशौलि केट्टलु मुळङ्गु मानहर्
अरशरु मान्दरु मन्द णाळरुम्
करैशॅय लरियदो रुवहै कैतरत्
तिरैशॅड्रि कडलॅन्न वॅळुन्दु शॅन्ड्रवाल् 4154

मुरचु ऑलि–ढिंढोरे की ध्वनि; केट्टलुम्–सुनते ही; करै चॅयल्–सीमा बांधना; अरियतु–जिसका कठिन हो; ओर् उवकै–ऐसा एक संतोष; कै तर–अधिक हुआ; अरचरुम्–राजा और; मान्तरुम्–प्रजाजन और; अन्तणाळरुम्–ब्राह्मण लोग; मुळङ्कुम्–कोलाहलमय; मा नकर्–बड़ा नगर; तिरै चॅट्रि–तरंगाकीर्ण; कटल्–सागर; ॲन्न–सम; ॲळुन्तु चॅन्ड्र–उठ चला। ४१५४

ढिंढोरे की ध्वनि सुनते ही सबके मन में अपार हर्ष उमड़ा। राजा लोग, प्रजाजन और ब्राह्मणों के साथ कोलाहलमय वह अयोध्या नगर तरंगाकुल समुद्र के समान उठ चला। ४१५४

अन्नहन् ॲदिर्होळ्हॅन्न् ड्रॅन्द पेरिनल्
कन्नहनल् कूर्न्दवर् कैप्पट्ट ॲन्नुवुम्
शन्नहन् नूर्क्कॅन्न मुन्नम् जाड्रिय
वन्नैकडिप् पेरियु मौत्त वामरो 4155

अन्नकन्–अनघ श्रीराम का; ॲतिर् कॊळ्क–आवभगत करें; ॲन्ड्र–ऐसा; पेरि–भेरियां; नल् कनकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण; नल् कूर्न्तवर्–दरिद्र को; कै पट्टु–मिल गया; ॲन्नवुम्–जैसा और; चनकनतु–जनक के; नर्क्कु–नगर को (जाओ); ॲन्न–ऐसा; मुन्नम् चाट्रिय–पहले पीटी गयी; वन्नै–सुंदर बनी; कटि पेरियुम्–विवाह-भेरी; ऒत्त आम्–के समान रही। ४१५५

'अनघ श्रीराम की अगवानी के लिए उठ आयें' —यह जो मुनादी उस दिन पीटी गयी, वह उस दिन का स्मरण दिलाती थी— जिस दिन जनक-राज के नगर को उठ जाने की आज्ञा कही गयी; और दरिद्र को निधि प्राप्त होने पर जो आनंद होगा वैसा आनंद दिलाती थी। ४१५५

अरुबदि नायिर मक्कु रोणियॅन्
ड्रिरुदिशॅय् शेनैयु मेनै वेन्दरुम्
शॅड्रिनहर् मान्दरुन् दॅरिवै मार्हळुम्
उरुपोरु ळॅदिर्न्दॅन वुवन्दु पोयिनार् 4156

अरुपतिनायिरम्–साठ हज़ार; अक्कुरोणि–अक्षौहिणी; ॲन्ड्र–ऐसा; इरुति चॅय्–गिनी हुई; चेनैयुम्–सेना और; एनै वेन्तरुम्–अन्य राजा; चॅट्रि नकर्–समृद्ध

नगर के; मानुतरुम्–वासी और; तॅरिवैमार्कळुम्–स्त्रियाँ; उरु पॉरुळ्–इच्छित वस्तु; ऑतिर्नुतॅत–मिली जैसे; उवन्तु पोयिनार्–खुश होकर गये। ४१५६

निश्चित रूप से साठ हज़ार अक्षौहिणी की सेना और राजा, समृद्ध अयोध्यावासी प्रजाजन, स्त्रियाँ --सभी मानो इच्छित वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा से, उत्साह के साथ गये। ४१५६

अन्नैयर् मूवरु ममरर् पोऱ्ऱिडप्
पॉन्तियल् शिविहैयि लॅळुन्दु पोयपिन्
तन्निहर् मुनिवरुन् दमरुम् जूळ्तर
मन्नवन् मारुदि मलर्क्कै पऱ्ऱुरा 4157

अन्नैयर् मूवरुम्–तीनों जननियाँ; अमरर् पोऱ्ऱिट–देवों के स्तुति करते; पॉन् इयल्–स्वर्णनिर्मित; चिविकैयिन्–शिविका में; ऍळुन्तु–उठकर; पोय पिन्–गयीं फिर; मन्नवन्–राजा; तम् निकर्–स्वोपम; मुनिवरुम्–मुनियों और; तमरुम्–परिवारों के; चूळ् तर–घेरे आते; मारुति–मारुति का; मलर् कै–कमल-हस्त; पऱ्ऱुरा–पकड़े। ४१५७

तीनों जननियाँ, देवों की स्तुति सुनते हुए स्वर्णनिर्मित शिविकाओं में निकल चलीं। बाद राजा भरत स्वोपम मुनिगण और अपने परिवारों के साथ हनुमान के कमल-चरण को हाथ में लिये हुए (चले)। ४१५७

तिरुवडि यिरण्डुमे शॅम्बॉन् मौलिया, इरुपुरत् जामरै यिरट्ट वेळ्कडल्
वॅरुवरु मुळक्कॅन वेळ मार्त्तॅळप्, पॉरुवरु वॅण्कुडै निळऱ्ऱप् पोयिनान् 4158

तिरुवटि इरण्टुम्–दोनों पादुकाओं को; चॅम् पॉन्–लाल स्वर्ण के; मौलिया–किरीट का स्थान देकर; इरु पुरम्–दोनों बाजुओं में; चामरै–चामरों के; इरट्ट–डुलते; एळ् कटल्–सात समुद्रों को; वॅरुवरु–भयभीत करनेवाली; मुळक्कु–ध्वनि; ऍन–जैसी; वेळम्–बाजाओं के; आर्त्तु ऍळ–बजते; पॉरु अरु–अनुपम; वॅण् कुटै–श्वेतछत्र के; निळऱ्ऱ–छाँह देते; पोयिनान्–गये। ४१५८

उनके सिर पर किरीट के स्थान पर खरे सोने की (श्रीराम-) पादुकाएँ थीं। दोनों बाजुओं में चामर डुलता था। सातों समुद्रों के सम्मिलित गर्जन की-सी ध्वनि में बाजे बजते जाते थे। उनके ऊपर श्वेतछत्र छाया दे रहा था। ४१५८

ऍल्लवन् मरैन्दन नॅन्नै याळुडै
विल्लियै यॅदिर्हॉळप् परदन् मीच्चॅल्वान्
अल्लियङ् गमलमे यळैय ताळ्हलिल्
कल्लदर् शुडुन्दन कदिरि नॅन्नवे 4159

परतन्–भरत; ऍन्नै–मेरे; आळ् उटै–शासक (श्रीराम); विल्लियै–

कोदंडपाणी का; ऍतिर् कॉळ्–आवभगत करने; मीच् चॅल्वान्–भूमि पर चलते हैं; अल्लि–दलसंकुल; अम्–सुंदर; कमलमे–कमल ही; अनैय–सम; ताळ्कळिल्–पैरों में; कल् अतर्–कंकड़ीला मार्ग; तन् कतिरिल्–अपनी किरणों से; चुटुम्–जलायगा; ऍन्न–समझकर; ऍल्लवन्–सूर्य; मरैन्ततन्–छिप गया। ४१५९

"भरत हमारे (कवि के) शासक कोदंडपाणी के स्वागत के लिए भूमि पर पैदल जा रहा है। उसका पथरीला मार्ग, मेरी किरणों से ताप पाकर उसके दलसंकुल कमल-सम चरणों को जला देगा।" —(यह होने देना नहीं चाहिए) यह समझकर सूर्य डूब गया। ४१५९

अव्वऴि मारुदि यङ्गै पऱ्ऱिय
शॅव्वऴि युळ्ळत्तान् तिरुवि नायहन्
ऍव्वऴि युऱैन्ददच् चॅयलॅ लाम्विरित्
तिव्वऴि यॅमक्कुनी यियम्बु वायॅन्ऱान् 4160

अव् वऴि–तब; मारुति–मारुति के; अम्–सुंदर; कै–हाथ को; पऱ्ऱिय–पकड़े रहे; चॅव्वऴि–सीधे-सादे; उळ्ळत्तान्–मनवाले भरत ने; तिरुविन् नायकन्–श्रियःपति; ऍ वऴि उऱैन्ततु–कहाँ ठहरे थे; अ चॅयल्–वह हाल; ऍलाम्–सारा; नी–तुम; ऍमक्कु–हमें; इ वऴि–अब; विरित्तु इयम्पुवाय्–विस्तार से कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ४१६०

तब आर्जव-मन भरत ने, जो कि हनुमान का हाथ पकड़े जा रहे थे, उससे कहा कि वन में श्रियःपति कहाँ-कहाँ ठहरे, क्या-क्या किया? —आदि बातें विस्तार के साथ तुम अभी हमें बताओ। ४१६०

ऍन्ऱलु मारुदि वणङ्गि यॅम्पिरान्, मन्ऱलर् तॉडैयिना ययोत्ति मानहर्
निन्ऱदु मणविनै निरप्पि मीण्डुकान्, शॅन्ऱदुम् नायिनेन् शॅप्पल् वेण्डुमो 4161

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; मारुति–मारुति; वणङ्कि–नमन करके; मन्ऱु–सुगन्धपूर्ण; अलर्–खिले फूलों की; तॉटैयिनाय्–मालाधारी; ऍम्पिरान्–हमारे प्रभु का; मा अयोत्ति नकर्–महा अयोध्या नगर में; निन्ऱतुम्–वास; मणम्–विवाह; विनै निरम्पि–कार्य पूरा करके; मीण्टु–लौटकर आने के बाद; कान् चॅन्ऱतुम्–जंगल जाना; नायिनेन्–मुझ दास को; चॅप्पल्–कहना; वेण्टुमो–चाहिए क्या। ४१६१

यह सुनकर हनुमान ने उत्तर दिया। सुगंधित तथा प्रफुल्लित पुष्पों की मालाधारी! हमारे प्रभु का अयोध्यावास, विवाहोपरांत अयोध्या में प्रत्यागमन, फिर वनगमन आदि वृत्तांत, मुझ कुत्ते को कहना पड़ेगा क्या? नहीं न! ।४१६१

शित्तिर कूडत्तैत् तीर्न्द पिन्शिरम्
पत्तुडै यवनुडन् विळैन्द पण्बॅलाम्

इत्तलै यङनवदु मिऱुदियाय पोर्
वित्तहत् तूदनुम् विरिक्कुम् जिनृदैयान् 4162

चित्तिर कूडत्तै–चित्रकूट को; तीर्न्तपिन्–छोड़ने के बाद; चिरम् पत्तु उटै–दशग्रीव से सम्बंधित; विळैन्त–जो हुआ; पणपु ॲलाम्–वह सारा हाल; इ तलै–यहाँ तक; अटैमृततुम्–आने का हाल; इऱुतियाक–(तब) तक; पोर् वित्तकम्–समर्थ योद्धा; तूततुम्–दूत; बिरिक्कुम्–वर्णन करने का; चिन्तैयान्–विचार किया (हनुमान ने)। ४१६२

हनुमान ने सोचा कि चित्रकूट-त्याग से लेकर श्रीराम-दशग्रीव-वृत्तांत और अपने यहाँ आने का हेतु और हाल बखानूँ। ४१६२

कुन्ऱुरळ् वरिशिलैक् कुरिशि लॅम्बिरान्
तॅन्ऱिशैच् चित्तिर कूडन् दीर्न्दपिन्
वन्ऱिऱल् विरादनै मडित्तु मादवर्
तुन्ऱिय तण्डह वनत्तुळ् तुन्निनान् 4163

कुन्ऱु उऱळ्–पर्वतोपम; वरिचिलै–सबंध कोदण्ड के; कुरिचिल्–धारक राजाराम; ॲम्पिरान्–हमारे प्रभु; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा के; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट को; तीर्न्त पिन्–छोड़ने के बाद; वल् तिऱल्–कठोर बली; विरातनै–विराध को; मटित्तु–मारकर; मातवर्–महा तपस्वियों से; तुन्ऱिय–पूर्ण जो रहता है; तण्टक वनत्तुळ्–उस दण्डकवन में; तुन्निनान्–गये। ४१६३

पर्वत-सदृश तथा सबंध धनु के धारक, हमारे पुरुषोत्तम दक्षिण दिशा में चित्रकूट को छोड़ जाने के बाद कठोर बलवान विराध का संहार करके महातपस्वियों से भरे दंडकवन में पहुँचे। ४१६३

आङ्गुऱै तवोदन ररक्करक् काऱ्ऱलेम्
नीङ्गिनन् दवत्तुऱै नीदि योयॅनत्
तीङ्गुशॅय् ववर्हळैच् चॅहुत्तल् तिण्णनीर्
वाङ्गुमिन् मनत्तुयर् वाय्मै यालॅन्ऱान् 4164

आङ्कु उऱै–वहाँ रहे; तपोततर्–तपोधनों के; नीतियोय्–नीतिमान; अरक्कर्क्कु–राक्षसों (के अत्याचार) को; आऱ्ऱलेम्–नहीं सह सकते; तवम् तुऱै नीङ्कितम्–तपस्या का मार्ग छोड़ चुके; ॲन–ऐसा करने पर; तीङ्कु चॅय्पवर्कळै–आततायियों को; चॅकुत्तल्–मारना; तिण्णम्–ध्रुव है; वाय्मैयाल्–मेरे सत्य-वचन से; नीर्–आप लोग; मनम् तुयर्–मन का दुःख; वाङ्कुमिन्–छोड़ दें; ॲन्ऱान्–कहा। ४१६४

वहाँ के वासी, तपोधनों ने श्रीराम से अपना कष्ट निवेदन किया। हे नीतिमान ! राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले कष्टों को हम नहीं सह पाते। हम अपने तप के मार्ग से हट ही गये हैं। तब श्रीराम ने आश्वासन दिया

कि आततायियों का दमन निश्चय होगा। आप हमारे वचन के बल पर निश्चित हो जायँ। ४१६४

आऱुना लाण्डवण् वैहि यप्पुऱत्
तीऱिला मुऩिवर रेय वाणैयाल्
माऱिलात् तमिऴ्मुऩि वऩत्तै नण्णिऩाऩ्
ऊऱिला मुऩिवर ऩुवन्दु मुऩ्वर 4165

आऱु नाल् आण्टु–छः और चार (दस) साल; अवण्–वहाँ; वैकि–रहकर; अ पुऱत्तु–उसके पश्चात; ईऱ इला–अनंत; मुऩिवरर्–मुनिवरों की; एय–कही हुई; आणैयाल्–आज्ञा के अनुसार; माऱ इला–अप्रतिम; तमिऴ् मुऩि वऩत्तै–तमिऴ ऋषि (अगस्त्य) के वन में; ऊऱ इला–दुःखहीन; मुऩिवरऩ्–मुनिवर के; उवन्तु–खुशी से; मुऩ्वर–आवभगत करने पर; नण्णिऩाऩ्–गये। ४१६५

श्रीराम दस साल वहाँ रहे। बाद अपार मुनिपुंगवों की हिदायत के अनुसार अप्रतिम तमिऴ ऋषि (अगस्त्य) के आश्रम गये। चिंताहीन मुनि-पुंगव ने आनंद के साथ उनका आवभगत किया। ४१६५

कुडङ्गैयिल् वारिदि यणैत्तुक् कॊण्डवऩ्
तडङ्गणाऩ् तऩ्ऩैयॆदिर् तऴुविच् चापमुम्
कडुङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशन् दाऩुमत्
तिडम्बडु शुरिहैयुञ् जेर वीन्दऩऩ् 4166

कुटङ्कैयिल्–हथेली में (अंजलि में); वारिति–वारिधि को; अणैत्तुक् कॊण्टवऩ्–जिन्होंने समा लिया था; तट कणाऩ् तऩ्ऩै–उन्होंने विशालाक्ष श्रीराम का; ऎतिर् तऴुवि–सामने से आलिंगन करके; चापमुम्–धनु और; कटुकणै–तेज़ बाणों से भरे; पुट्टिलुम्–तूणीरों को; कवचम् ताऩुम्–और कवच को; अ–उतने; तिटम् पटु–सुदृढ़; चुरिकैयुम्–छुरे; चेर–के साथ; इन्तऩऩ्–प्रदान किये। ४१६६

अगस्त्य मुनि ने, जिन्होंने अंजलि में समुद्र को उठाकर आचमन किया था, विशालाक्ष श्रीराम को आलिंगन कर लिया। और उन्हें चाप, तेज़ शरों के (दो) तूणीर, कवच और सुदृढ़ छुरा —यह सब प्रदान किया। ४१६६

अप्पुऱत् तॆरुवैयि ऩरशैक् कणणुऱात्
तुप्पुऱच् चिवन्दवायत् तोहै तऩ्ऩुडऩ्
मॆय्प्पुहऴ्त् तम्बियुम् वीरऩ् ताऩुम्बोय्
मैप्पॊऴि लुरुपञ्ज वडियिऩ् वैहिऩार् 4167

अ पुऱत्तु–उसके बाद; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवन्त वाय्–लाल अधरों की; तोकै तऩ्ऩुटऩ्–कलापी-सी देवी के साथ; मॆय् पुकऴ्–सच्चे यशस्वी; तम्पियुम्–

कनिष्ठ सहोदर के साथ; वीरत्–वीर; तानुम्–भी; पोय्–जाकर; अँरुमैयिन् अरचं–गीधों के राजा से; कण् उट्रा–भेंटकर; मै उरु–मेघाश्रय; पोंळिल्–वनों से पूर्ण; पञ्चवटियित्–पंचवटी में; वैकिनार्–ठहरे। ४१६७

उसके बाद प्रवालाधरा कलापी-सी सीताजी, सच्चे यशस्वी वीर लक्ष्मण और श्रीराम आगे गये और उन्होंने गीधों के राजा जटायु से भेंट की। फिर मेघाश्रय वनों से पूर्ण पंचवटी में जा ठहरे। ४१६७

पल्पह लिरुन्द पिन्रैप् पादह वरक्कि तोन्ड्रि
मॅल्लिय विडैयि नाळै वॅहुण्डुळि यिळैय वीरन्
अल्हिय तिरुवैत् तेड्रि यवळ्ळैच् चॅवियु मूक्कुम्
मल्हिय मुलैयुङ् गॊय्दान् मड्रितवळ् करड्कुच् चॊन्नाळ् 4168

पल् पकल्–अनेक दिन; इरुन्त पिन्रै–बीते, बाद; पातक अरक्कि–पातकिनी राक्षसी; तोन्ड्रि–प्रगट होकर; मॅल्लिय इटैयिनाळै–पतली कमर वाली सीता से; वॅकुण्टुळि–द्वेष करने लगी तो; इळैय वीरन्–छोटे वीर; अल्किय–दुःखी हुई; तिरुवै–श्रीसीता को; तेड्रि–आश्वासन देकर; अवळ् उटै–उसके; चॅवियुम् मूक्कुम्–कान और नाक को; मल्किय–स्थूल; मुलैयुम्–स्तनों को; कॊय्तान्–काट दिया; अवळ्–उसने; मड्रितु–बाद; करड्कु–खर को; चॊन्नाळ्–बताया। ४१६८

वहाँ अनेक दिन बीते। वहीं राक्षसी शूर्पणखा आयी और उसने क्षीणकटि सीता से द्वेष किया। सीताजी दुःखी हुई तो छोटे वीर लक्ष्मण ने उनको आश्वस्त करके उस राक्षसी के कानों, नाक और स्थूल स्तनों को काट दिया। वह जाकर खर से बोली। ४१६८

करनॊडु तिरिशि रावुङ् गडियतू डणनुङ् गान्दि
ॲरियुमून् ड्रनले यॊप्पा रॅळुन्दुवॅन् जेनै योडुम्
विरविन रैयन् शॅङ्गै विल्लिनै नोक्कु मुन्बोर्
ॲरितवळ् पञ्जि नुक्का ररक्कियु मिलङ्गै पुक्काळ् 4169

करनॊटु–खर के साथ; तिरिच्चिरावुम्–त्रिशिरा और; कटिय–क्रूर; तूटणनुम्–दूषण; कान्ति–खौलकर; ॲरियुम्–जलती; मून्ड्र अनले ऑप्पार्–तीन अग्नियों के समान; ॲळुन्तु–उठकर; वॅम्–भयंकर; चेनैयोटुम्–सेना लेकर; विरविनर्–मिले आये; ऐयन्–प्रभु के; चॅं कै–लाल हाथ के; विल्लिनै–धनु को; नोक्कुम् मुन्पु–देखने से पहले; ॲरि–आग में; तवळ्–गिरी; पञ्चिन्–रूई के समान; उक्कार्–अदृश्य हो गये; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; इलङ्कै पुक्काळ्–लंका जा पहुँची। ४१६९

खर, त्रिशिरा और क्रूर दूषण तीनों त्रिदंड के समान मिलकर तीनों अग्नियों के समान आये। उनके साथ भयंकर विराट् सेना भी आयी। श्रीराम अपने सुन्दर धनु को निहारें (लड़ें) इसके पहले ही अग्निगत रूई के समान वे राक्षस मिट गये। बाद राक्षसी लंका पहुँची। ४१६९

इरुपदु तडक्कै यान्माट् टिशैत्तलु मॅळ्ळुनवु पॉङ्गि
ऑरुपदु तिशैयु मुट्क वञ्जह वुळैयॉन् ऱेवित्
तरुपदत् जमैन्द मुक्कोऱ् ऱाबद वडिवङ् गॉण्डु
तिरुविनै निलत्तॊ डॆनदित् तॆन्ऱिशै यिलङ्गै पुक्कान् 4170

इरुपतु तटकैयान् माट्टु–बीस बड़े-बड़े हाथों वाले रावण के पास; इचैत्तुतम्–उसके कहते ही; पॊङ्कि ऍऴुन्तु–खौल उठकर; ऑरु पतु–दसों; तिचैयुम्–दिशाओं को; उट्क–भयभीत करते हुए; वञ्चकम् उळै–मायामृग; ऑन्ऱु एवि–एक भेजकर; तरु पतम्–ऐन समय पर; चमैन्त–(तीन सिरों का) बना; मुक्कोल्–त्रिदण्डधारी; तापतन्–तपस्वी का; वटिवु कॊण्टु–वेश धरकर; तिरुविनै–श्री सीताजी को; निलत्तॊटु एन्ति–भूमि के साथ उठाकर; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; इलङ्कै पुक्कान्–लंका पहुँचा। ४१७०

बीस भुजाओं वाले रावण के पास शूर्पणखा के शिकायत करने पर वह बौखला उठा। दशों दिशाओं में भय भरते हुए उसने एक मायामृग को भेजा। वह हरिण श्रीराम को बहका ले जाता रहा। मौक़ा पाकर त्रिदंडी संन्यासी का रूप धरकर रावण आया और सीता को भूमि के साथ उठा लेते हुए लंका पहुँचा। ४१७०

पोहिन्ऱ कालै येऱ्ऱ शडायुवैप् पॊरुदु वीट्टि
वेहिन्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॅञ्जिऱै यदनिन् वैत्तान्
एहिन्ऱ वञ्ज मान्मा रीशऩ्कॊन् ऱिळव लोडु
पाहिन्ऱ कीर्त्ति यण्णल् तन्दैयैप् परिविऩ् कण्डान् 4171

पोकिन्ऱ कालै–जाते समय; एऱ्ऱ–सामने जो आया; चटायुवै–उस जटायु से; पॊरुतु–लड़कर; वीट्टि–संहार कर; वेकिन्ऱ–तप्त; उळ्ळत्ताळै–मन वाली सीताजी को; वॅम् चिऱै अतऩिऩ्–कठोर कारा में; वैत्तान्–बंद रखा; पाकिन्ऱ–फैलते; कीर्त्ति अण्णल्–यश के स्वामी; एकिन्ऱ–बहका ले जानेवाले; वञ्चमान्–मायामृग के रूप में जो था उस; मारीचन् कॊन्ऱु–मारीच का हनन करके; इळवलोटु–लक्ष्मण के साथ; तन्तैयै–पिता (जटायु) को; परिविन्–प्यार के साथ; कण्टान्–मिले। ४१७१

जब वह देवी को अपहरण करके ले जा रहा था तब जटायु रोकने आया। रावण ने उसे काट गिराया। तप्त मनवाली सीता को कठोर कारा में रख दिया। उधर विस्तारशील यशस्वी श्रीराम ने माया-मृग के रूप में रहे मारीच को मार दिया जो कि उन्हें बहका ले जा रहा था। फिर वे लघुराज के साथ गये और पिता (-सम) जटायु को मिले। ४१७१

अन्नवन् तनक्कु वेण्डु मरुङ्गडन् मुऱैयि ऩाऱ्ऱि
नन्नुदल् तन्नैत् तेडित् तॆन्ऱिशै नडक्कु मैयत्

मत्तिय कवन्दन् तन्नै युयिरोडु शाब माट्रित्
तत्तैये मरूप्पि लाद शवरिपू शनैयुङ् गोण्डान् 4172

अमृतवन् ततक्कु–उस जटायु के; वेण्डुम्–कर्तव्य; अरु कटन्–दाहकर्म आदि; मुट्रैयित् आट्रि–यथाक्रम पूरा करके; नल् नुतल् तन्नै–श्रेष्ठ भाल वाली को; तेटि–खोजते हुए; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा में; नटक्कुम् एयन्–जो गये वे श्रीराम; मत्तिय–आ जो लगा उस; कवन्तन् तन्नै–कबंध को; उयिरोटु–प्राणों के साथ; चापम् माट्रि–शाप बदलकर (आगे गये और); तन्नै–उसको; मरप्पु इलात–जो नहीं भूलती थीं; चवरि–उस शबरी की; पूचनैयुम्–पूजा को भी; कोण्टान्–स्वीकार कर लिया। ४१७२

मृत जटायु का दाहकर्म यथाविधि संपन्न करके श्रीराम और लक्ष्मण सुन्दर भालवाली सीता की खोज में दक्षिण दिशा में गये। रास्ते में कबंध के प्राणों तथा उसके शाप का अंत किया। फिर श्रीराम ने शवरी का पूजा-सत्कार स्वीकार किया जो कि उन्हें कभी भूलती नहीं थी। ४१७२

आङ्गवळ् तन्दु शॉल्ला लरुक्कन्मा मकनै यण्मिप्
पाङ्गुर नट्टु वालि परुवरल् कॅडुप्प लॅन्ना
ओङ्गिय मरमुम् वालि युरमुमू डुरुव वॅय्दिट्
टाङ्गवन् तनक्कुच् चॅल्व मरशॉडु मरुळि नीन्दान् 4173

आङ्कु–वहाँ; अवळ् तनतु–उसके; चॊल्लाल्–कथनानुसार; अरुक्कन्–सूर्य के; मा मकन–श्रेष्ठ पुत्र के; अणमि–पास जाकर; पाङ्कुर–उचित रीति से; नट्टु–मित्रता करके; वालि–वाली का (दिया); परुवरल्–संकट; कॅटुप्पल्–दूर करूंगा; ॲन्ना–कहकर; ओङ्किय मरमुम्–उन्नत (साल) वृक्षों; वालि उरमुम्–और वाली के वक्ष को; ऊटुरुव–भेदते हुए; ॲय्तिट्टु–बाण चलाकर; आङ्कु–वहाँ; अवन् तनक्कु–उसे; चॅल्वम्–राजधन; अरचॊटुम्–शासन के साथ; अरुळिन्–कृपा से; ईन्तान्–दिया। ४१७३

तब उसने जो कहा, उस कथनानुसार वे सूर्य के उत्तम पुत्र के पास आये। उनसे उत्तम रीति से मित्रता बना ली। वादा किया कि वाली रूपी कंटक को निकाल दूंगा। फिर उन्होंने सातों ऊँचे साल वृक्षों और वाली के वक्ष को भेदते हुए शर चलाया और वचन के अनुसार सुग्रीव को राज्य-धन के साथ शासनाधिकार भी दिलाया। ४१७३

कालमा मारि नीङ्गक् कवयनो डिडबन् कान्दु
नीलन्मा मयिन्दन् शाम्बन् शदवलि पनश नीडु
वालिमा मैन्द नॅन्ट्रिव् वानरत् तलैव रोडु
कूलवात् शेनै शूळ वडैन्दन तॅङ्गळ् कोमान् 4174

मा मारि कालम्–लंबा वर्षाकाल; नीङ्क–बीत गया; कवयनोटु–गवय के साथ; इटपन्–ऋषभ; कान्तुम्–क्रुद्ध; नीलन्–नील और; मा–बड़ा;

मयिन्तत्–मैंद; चाम्पन्–जाम्बवान; चतवलि पत्तच्–शतवली, पनस; नीट–यशोवृद्ध; वालि मा मैन्तन्–वाली का बड़ा पुत्र; अँन्ऱु–आदि; इव्वानरर्–ये वानर; तलैवरोटु–यूथपों के साथ; कूलम्–दल के दल; वान् चेतै–श्रेष्ठ सेना के; चूऴ–घेरे आते; अँऴ्कळ्–हमारे; कोमान्–राजा; अटैन्तनन्–उस (श्रीराम के पास) पहुँचे। ४१७४

फिर लंबी वर्षाऋतु बीती। हमारे राजा गवय, ऋषभ, क्रोधी नील बड़ा मैंद, जाम्बवान, शतवली, पनस तथा बड़े यशस्वी वाली का महान पुत्र अंगद आदि यूथपों और विपुल वानर-सेना के साथ प्रभु के पास आये। ४१७४

अँऴुबदु वॅळ्ळत् तुट्ट्र कुरक्किन सॅऴुन्दु पॊङ्गि
अऴुवनीर् वेलै यॅन्न वडैन्दुऴि यरुक्कन् मैन्दन्
तऴुविय तिशैहळ् तोऱुन् दन्नित्तन्नि यिरण्डु वॅळ्ळम्
पॊऴुदिरै तडाद्रु मीळप् पोक्किनन् तिरुवै नाड 4175

अँऴुपतु–सत्तर; वॅळ्ळत्तु उट्ट्र–वॅळ्ळम् के; कुरङ्कु इनम्–वानरगण; पॊङ्कि अँऴुन्तु–उत्साह से उठकर; अऴुवम् नीर्–बड़े जल-विस्तार के; वेलै अॅन्न–सागर के समान; अटैन्तुऴि–जब आये तब; अरुक्कन् मैन्तन्–सूर्यपुत्र ने; तऴुविय–सब ओर लगी; तिचैकळ् तोऱुम्–सभी दिशाओं में; तिरुवै नाट–श्री (सीता) को खोजने; तन्नि तन्नि–अलग-अलग; इरण्टु वॅळ्ळम्–दो वॅळ्ळम्; पॊऴुतु–अवधि का; इऱै तटातु–कुछ भी उल्लंघन किये बिना; मीळ–लौटने की आज्ञा से; पोक्किनन्–भिजवाया। ४१७५

जब सत्तर 'वॅळ्ळम्' की सेना के वानर वीर उत्साह और कोप के साथ विस्तृत जल-सागर के समान उठ आये तब सूर्यपुत्र सुग्रीव ने चारों दिशाओं में श्रीसीतादेवी के अन्वेषण के कार्य में अलग-अलग दो-दो 'वॅळ्ळम्' नियत करके भेजा। यह आज्ञा दी कि नियत अवधि का उल्लंघन न हो। ४१७५

तॅन्ऱिशै यिरण्डु वॅळ्ळञ् जेनैयुम् वालि शेयुम्
वल्ऱिऱल् चाम्ब नोडु वाविन्न रेव नायेन्
कुन्ऱिडै यिलङ्गै पुक्कुत् तिरुविनैक् कुऱित्तु मीण्ड
पिन्ऱैवन् वळक्कर् वेलै पॅरुम्बडै यिरुन्त दन्ऱे 4176

इरण्टु वॅळ्ळम्–दो वॅळ्ळम्; चेनैयुम्–सेना के वीर; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा में; वाविन्नर्–गये; वालि चेयुम्–वाली का पुत्र और; वल् तिऱल्–कठोर बलिष्ठ; चाम्पनोटु–जाम्बवान ने; एव–मुझे प्रेरित किया; नायेन्–कुत्ता-सम मैं; कुन्ऱिटै–महेंद्रपर्वत से; इलङ्कै पुक्कु–लंका जाकर; तिरुविनै–श्री को; कुऱित्तु–देखकर जानकर; मीण्ट पिन्ऱै–वापस आया, बाद; वेलै पॅरु पटै–सागर-सम बड़ी सेना; अळक्कर् वन्तु–समुद्र के किनारे आकर; इरुन्ततु–ठहरी। ४१७६

दक्षिण दिशा में दो 'वॅळ्ळम्' की सेना गयी, जिसके साथ वालीपुत्र और अतिवली जाम्बवान थे। उनके कहने से मैं महेंद्रपर्वत से उछलकर लंका पहुँचा और श्रीदेवी का समाचार लेकर लौट आया। बाद वानर-सेना-सागर सागरतीर पर आ ठहरा। ४१७६

अऱिविन्नुक् कऱिवु पोल्वान् वीडण नलङ्गर् ऱोळान्
शॅऱिपुयत् तरक्कन् तम्बि तिरुविनै विडुदि यन्ऱेल्
इऱुदियुर् ऱननिन् वाणा ळॅन्नवन् नुरैप्पच् चीऱिक्
कऱुवुऱप् पॅयर्न्दु पोन्दु करुणैयान् शरणम् बूण्डान् 4177

अऱिविन्नुक्कु–ज्ञान के; अऱिवु–जो ज्ञान के; पोल्वान्–समान हैं; अलङ्कल् तोळान्–मालाधारी कंधोंवाला; चॅऱि पुयत्तु–घने हाथों वाले; अरक्कन्–राक्षस का; तम्पि–छोटा भाई; वीटणन्–विभीषण; तिरुविनै–श्रीदेवी को; विटुति–छोड़ दो; अन्ऱेल्–नहीं तो; निन्–तुम्हारी; वाळ् नाळ्–आयु के दिन; इऱुति–पूरे; उऱ्ऱन–हो गये; ॲन–ऐसा बोला; अवन्–वह (रावण); चीऱि उरैप्प–गुस्सा कर बोला तो; कऱुवु उऱ–वैर करके; पॅयर्न्तु–अलग हट; पोन्तु–जाकर; करुणैयान्–दयालु के; चरणम्–चरणों को; पुण्टान्–धारण कर लिया (विभीषण ने)। ४१७७

उधर ज्ञानी के ज्ञान के समान रहनेवाला मालाधारी कंधों वाला अधिक संख्या की भुजाओं वाले रावण का छोटा भाई विभीषण जो था, उसने अपने बड़े भाई को समझाया कि श्री को छोड़ दो। नहीं तो तुम्हारी आयु का अन्त हो जायगा। पर रावण क्रोध से बोला तो उसके साथ वैर ठानकर विभीषण दयालु श्रीराम की शरण में आ गया। ४१७७

आङ्गवर्क् कवय नल्हि यरशोडु मुडियु मीन्दु
पाङ्गिनाल् वरुणन् तन्नै यळैत्तिडप् पदैप्पि लादु
ताङ्गिनन् शिऱिदु पोदु तामरै नयनञ् जेप्प
ओङ्गुनी रेळु मन्नान् नुडलमुम् वॅन्द वन्ऱे 4178

आङ्कु–तब; अवर्क्कु–उसे; अवयम्–अभय; नल्कि–प्रदान करके; अरचोटु–राज्य और; मुटियुम्–मुकुट; ईन्तु–देकर; वरुणन् तन्नै–वरुण को; पाङ्किनाल्–उचित रीति से; अळैत्तिट–निमंत्रित करने; पतैप्पु इलातु–उतावली के बिना; चिऱितु पोतु–कुछ समय तक; ताङ्किनान्–(दर्भशयन में) ठहरे; तामरै नयनम्–कमल-से नेत्र; चेप्प–लाल हुए; अन्ऱे–तभी; ओङ्कुम्–तरंगें जिनमें ऊँची उठतीं; नीर् एळुम्–वे सातों समुद्र और; अन्नान्–उस (वरुण) का; उटलमुम्–शरीर; वॅन्त–जल गये। ४१७८

तब श्रीराम ने उसे अभयदान के साथ लंका का राज्य दिया और मुकुट धारण करा दिया। फिर वरुण को निमंत्रित करने की इच्छा से दर्भशयन में कुछ समय रहे। (वह नहीं आया तो) प्रभु की आँखें लाल

हुई ही थीं कि उधर उत्तुंग तरंगोंवाले सातों समुद्र उस वरुण के शरीर के साथ जल गये। ४१७८

मऱ्ऱव नवय मॅन्न मलर्च्चर णडैन्द वेल
वॅऱ्ऱिवा नरर्हळ् पॉङ्गि वॅऱ्पिनाल् वेलै तट्टल्
मुऱ्ऱुऱ नन्गि यऱ्ऱि मॉय्यॉळि यिलङ्गै पुक्कुप्
पऱ्ऱिनर् शुऱ्ऱि यार्त्तार् वानवर् पयङ्गळ् तीर्न्दार् 4179

मऱ्ऱु–बाद; अवन्–उसके; अबयम्–अभय; ऍन्न–(माँगने) कहने पर; मलर् चरण्–कमल-चरण में; अडैन्द वेलै–आये समय; वॅऱ्ऱि–विजयी; वानरर्कळ्–वानरों ने; पॊङ्कि–उत्साह के साथ; वॅऱ्पिनाल्–पर्वतों से; वेलै तट्टल्–समुद्र पर बाँध बनाना; नन्कु–अच्छी तरह; मुऱ्ऱुऱ–पूरा; इयऱ्ऱि–करके; मॊय् ऒळि–भरे प्रकाशमय; इलङ्कै पुक्कु–लंका में घुसकर; चुऱ्ऱि–चारों ओर; पऱ्ऱिनर्–घेरकर; आर्त्तार्–नर्दन किया; वानवर्–देव; पयङ्कळ्–भय से; तीर्न्दार्–मुक्त हुए। ४१७९

उसके बाद वरुण अभयदान माँगता हुआ आया और भगवान के कमल-चरणों में लग लगा। तो विजयी वानर उत्साह के साथ उमंगित हुए। बहुत सुचारु रूप से समुद्र पर सेतुबंधन संपन्न करके प्रकाशमय लंका में गये और उसे घेरकर भीम-युद्ध ललकार-नाद करने लगे। देव भयमुक्त हुए। ४१७९

मलैयिनै यॅडुत्त तोळु मदमलै तिळैत्त मार्बुम्
तलैयॊरु पत्तुञ् जिन्दित् तम्बितन् ताळुन् दोळुम्
कॊलैत्तॊळि लरक्क रायोर् कुलत्तॊडु निलत्तु वीऴच्
चिलैयिनै वळैवित् तैयन् तेवर्ह ळिडुक्कण् तीर्त्तान् 4180

ऐयन्–प्रभु श्रीराम ने; मलैयिनै–(कैलास) पर्वत को; ऍडुत्त–जिन्होंने उठाया; तोळुम्–वे कंधे; मतम्मलै–मत्त, पर्वतोपम गजों से; तिळैत्त–गुँथे; मार्पुम्–वक्ष को; तलै–सिर; ऒरु पत्तुम्–एक दस को; तम्पि तन्–उसके छोटे भाई के; तोळुम्–कंधों और; ताळुम्–पैरों को; कॊलै तॊऴिल्–घातक काम; अरक्कर्–करनेवाले राक्षस; आयोर्–जो थे उन्हें; कुलत्तॊडुम्–कुल के साथ; चिन्ति–मारकर; निलत्तु वीऴ–भूमि पर गिराते; चिलैयिनै–धनु को; वळैवित्तु–झुकाकर; तेवर्कळ्–देवों का; इडुक्कण्–संकट; तीर्त्तान्–मिटाया। ४१८०

श्रीराम ने धनुष झुकाकर रावण के कैलासपर्वतोत्पाटक हाथों, मत्त-दिग्गज-विद्ध वक्ष, और दसों सिरों को, उसके भाई के हाथों और पैरों को और सकुल ख़ूनी राक्षसों को मारकर भूमि पर गिराया और देवों का संकट मिटाया। ४१८०

इलक्कुवऩ् पहऴि यॊऩ्ऱा लिऩ्दिर शित्तॆऩ् ऱोदुम्
विलक्करु वलत्ति ऩाऩ् मिळैञरुङ् गिळैयुम् वीऴ्न्दार्
मलक्कमुण् डुळ्ळुन् देवर् मलर्मऴै तूवि यार्त्तऩर्
रुलक्कुनर् कुऴुक्कळ् तोरु मुडर्कुरै याडल् कण्डार् 4181

इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण के; पकऴि ऒऩ्ऱाल्–एक शर से; इन्दिरचित्तु–'इन्द्रजित्'; ऎऩ्ऱु–ऐसा; ओतुम्–प्रकीर्तित; विलक्क अरु–अवार्य; वलत्तिऩाऩुम्–बलवाला; इळैञरुम्–युवा वीर; किळैयुम्–बन्धु-बान्धव; वीऴ्न्तार्–मरे गिरे; मलक्कम्–त्रस्त-व्यस्तता; उण्टु–(खाकर) पाकर; उळ्ळुम् तेवर्–व्यग्र रहे देवों ने; मलर् मऴै तूवि–पुष्प-वर्षा करके; आर्त्तु–नर्दन करके; अऩ्ऱु–उन दिनों में; उलक्कुनर्–मृतकों के; कुऴुक्कळ् तोरुम्–दल-दल में; उटल् कुऱै–कवंधों का; आटल् कण्टार्–नाचना देखा। ४१८१

श्रीलक्ष्मण के एक ही शर से प्रकीर्तित इंद्रजित्, उसके जवान वीर और बंधु मरकर गिर गये। क्षुब्ध तथा व्यग्र देवों ने पुष्पवर्षा की। और आनंद नर्दन-किया। उन दिनों उन्होंने मृतकों के दल-दल में कवंधों को नाचता देखा। ४१८१

तेवरु मुऩिवर् तामुञ् जित्तरुन् दॆरिवै मारुम्
मूवहै युलहु ळोरु मुऱैमुऱै तॊऴुदु मॊय्प्पप्
पूवैपोल् निऱत्ति ऩाऩुम् वीडणप् पुलवर् कोमाऱ्कु
यावैयु मियम्बि माण्डाऱ्क् कियऱ्ऱुदि कडऩ्ग ळॆऩ्ऱाऩ् 4182

तेवरुम्–देवों; मुऩिवर् तामुम्–मुनियों; चित्तरुम्–सिद्धों; तॆरिवै मारुम्–स्त्रियों और; मू वकै उलकुळोरुम्–त्रिविध लोकवासियों के; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तॊऴुतु मॊय्प्प–स्तुति कर घेरते; पूवै पू–अतसी पुष्प के; निऱत्तिऩाऩुम्–रंगवाले श्रीराम; पुलवर् कोमाऩ्–ज्ञानियों में राजा; वीटणऱ्कु–विभीषण से; यावैयुम् इयम्पि–सभी बातें कहकर; माण्टार्क्कु–मृतकों का; कटऩ्कळ्–अपर कर्म; इयऱ्ऱुति–करो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४१८२

देवगण, मुनिवृंद, सिद्ध और उनकी पत्नियाँ बारी-बारी से स्तुति करते आकर घेर गयीं। तब अतसीपुष्पवर्ण अयोध्याधिपति ने ज्ञानियों में श्रेष्ठ विभीषण को समझा-बुझाकर कहा कि मृतकों का अपर कर्म करो। ४१८२

नाऩ्मुहऩ् विडैयै यूरु नारियोर् पाहऩ् तण्णल्
माऩ्मुहऩ् मुदला युळ्ळ वाऩवर् तॊऴुदु पोऱ्ऱ
ऊऩ्मुहङ् गॊळुवु वेला युम्बर्ना यहियैच् चीऱ्ऱित्
तेऩ्मुह मलरुन् दारा ऩॆरिशॊलच् चीऱ्ऱन् दीर्न्दाऩ् 4183

ऊऩ् मुकम्–मांस, मुख में; कॊळुवु वेलाय्–लगे रहे ऐसे भाल वाले; तेऩ् मुकम्–मधुयुक्त; मलरुम्–पुष्पित; ताराऩ्–माला वाले; नाऩ् मुकऩ्–चतुर्मुख; विटैयै–

ऋषभ पर; ऊरुम्–सवार; नारियोर् पाकत्तु–अर्धांगी; अण्णल्–भगवान और; माऩ् मुकत्–हरिण-मुख; मुतलाय् उळ्ळ–मय आदि जो रहे; वाऩवर्–उन देवों के; तोऴुतु पोऱ्ऱ–स्तुति तथा बधाई देते; उम्पर् नायकियै–देवों की ईश्वरी से; चीऱि–कुपित होकर; ॲरि चॉल–अग्नि के कहने से; चीऱ्ऱम् तीर्न्ताऩ्–कोप से शांत हुए। ४१८३

हे मांसलिप्त भालेवाले ! मधुयुक्त पुष्पमालाधारी श्रीराम की जब चतुर्मुख, वृषभवाहन अर्धनारीश्वर और हरिणमुख मय आदि स्तुति कर रहे थे, तब श्रीराम ने देवों की ईश्वरी सीता पर ग़ुस्सा किया। तब अग्नि ने देवी की पवित्रता के संबंध में कहा तो वे कोप छोड़कर शांत हुए। ४१८३

मॅय्यित्तुक् कुयिरै यीन्द वेन्दर्कोऩ् विमाऩत् तॅय्द
ऐयऩु मिळैय कोवु मऩ्ऩमु मडियिल् वीऴक्
कैयिऩाऱ् पॅरुन्दप् पुल्लिक् कण्णित्तीर्क् कलश माट्टिच्
चॅय्यवट् करुळ्ह वॅऩ्ऱाऩ् तिरुविऩा यहऩुङ् गॉण्डाऩ् 4184

मॅय्यित्तुक्कु–सत्य के लिए; उयिरै–जीवन को; ईन्त–जिन्होंने दिया; वेन्तर् कोऩ्–वे चक्रवर्ती; विमाऩत्तु–विमान पर; ॲय्त–आये तो; ऐयऩुम्–प्रभु और; इळैय कोवुम्–लघुराज और; अऩ्ऩमुम्–हंस-सी देवी; अटियिल् वीऴ–चरणों में गिरे; कैयिऩाल्–हाथों से; पॅरुन्त–कसकर; पुल्लि–आलिंगन करके; कण्णित् कलचम् नीर्–अक्ष-कलश-जल से; आट्टि–मज्जन कराके; चॅय्यवट्कु–श्रीदेवी पर; अरुळ्क–कृपा करो; ॲऩ्ऱाऩ्–बोले; तिरुविऩ्–लक्ष्मी के; नायकऩुम्–पति भी; कॉण्टाऩ्–सम्मत हुए। ४१८४

तब सत्य के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की बलि दी थी वे दशरथ विमान पर सवार हो पधारे। श्रीराम, लघुराज और हंस-सी देवी ने उनके चरणों पर गिरकर दंडवत् की। दशरथ ने इनका खूब आलिंगन किया और अक्ष-कलश-जल से नहला दिया। उन्होंने श्रीराम से कहा कि सुंदरी श्रीसीता पर कृपा रखो। श्रियःपति ने भी सम्मति दिला दी। ४१८४

ॲऩ्ऩैनऩ् करुणै तऩ्ऩा लीऩ्ऱॅडुत् तिऩिदु पेणुम्
अऩ्ऩैयु महऩु मुऩ्बो लाहॅऩ वरुळि ऩीन्दु
मऩ्ऩवऩ् पोय पिऩ्ऱै वाऩरम् वाऴ्वु कूरप्
पॉऩ्ऩॅडु नाट्टि ऩुळ्ळार् वरम्बल वऴङ्गिप् पोऩार् 4185

ॲऩ्ऩै–मुझे; नल् करुणै तऩ्ऩाल्–अच्छी दया से; ईऩ्ऱु ॲडुत्तु–जन्म लेकर; इऩितु–सुख से; पेणुम्–पालनेवाली; अऩ्ऩैयुम्–देवी को; मकऩुम्–और पुत्र (भरत) को; मुऩ्पोल्–पूर्ववत्; आक–बना लें; ॲऩ–ऐसा प्रार्थना करने पर; अरुळि ईन्तु–कृपा से सम्मति देकर; मऩ्ऩवऩ्–राजा के; पोय पिऩ्ऱै–जाने के बाद; नॅटु–विशाल; पॉऩ् नाट्टिल्–देवलोक में; उळ्ळार्–वास करनेवाले;

वानरम्–और वानर; वाऴ्वु कूर–अच्छा जीवन पावें; वरम्–यह वर; वऴङ्कि–देकर; पोत्तार्–गये। ४१८५

'मेरी दयामयी जननी, सुख से पालनेवाली कैकेयी को और उनके पुत्र को पूर्ववत् स्थान दिला दें।' —यह वर श्रीराम ने माँगा तो दशरथ ने कृपा करके दिया। फिर वे चले गये। उसके बाद देव वानरों को यह वर देकर चले गये कि उनका जीवन सदा सुख-सुविधा-पूर्वक रहे। ४१८५

वॆळ्ळमो रेऴ् पत्तु विलङ्गरुम् वीर राहि
उळ्ळव ररुबत् तेऴु कोडियु मॊऱ्ऱै याऴि
वळ्ळरत् महत्तु मुळ्ळ मंहिऴ्वुऱ विमात्त मीन्दात्
ऍळ्ळलि लाद कीर्त्ति वीडण लिलङ्गै वेन्दन् 4186

ऍळ्ळल् इलात–अनिंद्य; कीर्त्ति–यशस्वी; इलङ्कै वेन्तत्–लंकापति ने; एऴु पत्तु–सत्तर; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्'; विलङ्करुम्–वानर; वीरर् आकि–(राक्षस) वीर; अऱु पत्तु एऴु कोटियुम्–सड़सठ करोड़ और; ऑऱ्ऱै आऴि–एक-चक्र-रथी; वळ्ळल् तत् मकतुम्–भगवान सूर्य के पुत्र; उळ्ळम्–मन में; मकिऴ्वुउऱ–सतोष करें, ऐसा; विमातम्–पुष्पक यान; ईन्तात्–दिया। ४१८६

अनिंद्य यशस्वी लंकापति ने पुष्पकविमान दिया, जिससे सत्तर सहस्र वानर बीर, सड़सठ करोड़ राक्षस वीर और एकचक्ररथ के स्वामी सूर्य के पुत्र मुदित हुए। ४१८६

आरियत् पित्तै नित्तै यत्बिताल् नित्तैन्दु कादल्
शूरियन् महनुन् दॊल्लैत् तुणैवरु मिलङ्गै वेन्दुम्
पेरियऱ् पडैयुम् जूऴप् पॆण्णिनुक् करशि योडुम्
शीरिय विमानत् तेऱिप् परत्तुव तिरुक्कै शेर्न्दात् 4187

आरियन्–आर्य श्रीराम; पित्तै–बाद; नित्तै–आपका; अन्पिताल्–प्यार से; नितैन्तु–स्मरण करके; चूरियत्–सूर्य के; कातल् मकतुम्–प्यारे पुत्र; तॊल्लै–और पुरातन; तुणैवरुम्–साथी और; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकाधिपति; पेर् इयल्–उत्कृष्ट; पटैयुम्–सेना के; चूऴ–घेरे रहते; पॆण्णितुक्कु–स्त्रियों में; अरचियोटुम्–रानी के साथ; चीरिय–बहुत श्रेष्ठ; विमानत्तु एऱि–विमान पर चढ़कर; परत्तुवत्–भरद्वाज के; इरुक्कै–आश्रम; चेर्न्तात्–आये। ४१८७

श्रीराम प्यार के साथ आपसे मिलने की त्वरा से सूर्यनंदन सुग्रीव, पुराने संगी-साथी, लंकाधिपति और उत्कृष्ट सेना को चारों ओर रहने देकर उनके मध्य स्त्रियों की रानी सीताजी के साथ विमान पर चढ़े और भरद्वाजाश्रम पधारे। ४१८७

अऩ्बिऩा लॆऩ्ऩै निऩ्पा लाऴियुङ् गाट्टि याऩ्ऱ
तुऩ्बॆलाम् दुडैत्ति यॆऩ्ऱु तुरन्दऩऩ् तोऩ्ऱ लॆऩ्ऱु
मुऩ्बिऩा लियऩ्ऱ वॆल्ला मॊऴिन्दऩऩ् मुदुनीर् तावि
अऩ्बिना लिलङ्गै मुऱ्ऱु मॆरिक्कुण वाह वॆत्तोऩ् 4188

तोऩ्ऱल्–श्री राजाराम ने; अऩ्पिऩाल्–प्यार के साथ; ऍऩ्ऩै–मुझे; निऩ्पाल्–आपके पास; आऴियुम् काट्टि–मुँदरी दिखा; आऩ्ऱ–गम्भीर; तुऩ्पु ऍलाम्–दुःख सब; तुटैत्ति–पोंछ आओ; ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; तुरन्तऩऩ्–भेजा; ऍऩ्ऱु–ऐसा; मुऩ्पिऩाल्–पहले; इयऩ्ऱ–जो घटा; ऍल्लाम्–वह सारा; मॊऴिन्तऩऩ्–कहा; मुतु नीर्–प्राचीन समुद्र; तावि–लाँघकर; अऩ्पिऩाल्–प्यार से; इलङ्कै मुऱ्ऱुम्–सारी लंका को; ऍरिक्कु उणवाक–अग्नि का भोजन; वैत्तोऩ्–बनाया (जिसने था) उसने। ४१८८

श्रीराजाराम ने आपसे प्रेम के कारण मुझे यह कहकर भेजा कि अँगूठी दिखाओ और भरत का गंभीर दुःख पोंछ दो। इस भाँति जो श्रीराम-भक्ति के वश में हो पुराना समुद्र लाँघकर, लंका गया और जिसने अग्नि का भोजन बनाया था, उस हनुमान ने पूर्व घटित घटनाएँ बतायीं। ४१८८

कालिऩ्मा मदलै शॊल्लप् परदऩुङ् गण्णीर् शोर
वेलिमा मदिल्हळ् शूऴ् मिलङ्गैयिल् वेट्टङ् गॊण्ड
नीलमा मुहिल्पिऩ् पोऩा ऩॊरुवऩा निऩ्ऱु नैवेऩ्
पोलुमा लिवैहळ् केट्पेऩ् पुहऴ्ऴुडैन् दडिमै मऩ्ऩो 4189

कालिऩ्–पवन के; मा मतलै–श्रेष्ठ पुत्र के; चॊल्ल–कहने पर; परतऩुम्–भरत; कण्णीर् चोर–आँसू बहाते हुए; ऑरुवऩ्–एक (भाई); मा मतिल्कळ्–बड़े प्राचीरों की; वेलि चूऴुम्–दीवारों की गिरी; इलङ्कैयिल्–लंका में; वेट्टम् कॊण्ट–शिकार करनेवाले; नीलम्–नीले; मा मुकिल्–बड़े मेघ-सम श्रीराम के; पिऩ्–अनुसरण में; पोऩाऩ्–गया था; नाऩ्–मैं; निऩ्ऱु–यहीं रहकर; नैवेऩ्–लटता हूँ; इवैकळ्–ये भी; केट्पेऩ् पोलुम्–सुनूँगा शायद; अटिमै–मेरी दासता; पुकऴ्–यश से; उटैत्तु–युक्त अवश्य है। ४१८९

पवनपुत्र की बातें सुनकर भरत ने अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी व्यथा जतायी। 'एक भाई है जो प्राचीरवलयित लंका में शिकार खेलने गये नीलमेघ-सदृश श्रीराम का अनुसरण करता गया। मैं भी एक छोटा भाई हूँ, जिसे यहीं रहकर घुलना पड़ा है। मुझे यह सब सुनने का ही सौभाग्य प्राप्त है शायद! हा! दासता मेरी बड़े यश के योग्य रही! ४१८९

ऍऩ्ऱव ऩिरङ्गि येङ्गि यिरुकणु मरुवि शोर
वऩ्ऱिऱ लऩुमऩ् शॊङ्गै वलक्कैयाऱ् पऱ्ऱिक् कालिऱ्

चॆऩ्ऱऩऩ् तिरुळि तूडु शॆऱिपुऩऱ् कङ्गै शेर्न्दाऩ्
कुन्ऱिऩै वलञ्जॆय् तेरोऩ् कुणकडऱ् ऱोऩ्ऱु मुऩ्ऩर् 4190

ऎऩ्ऱु-ऐसा कहकर; अवऩ्-वे भरत; इरङ्कि एङ्कि-दुःखी होकर तरसकर; इरु कणुम्-दोनों आँखों से; अरुवि चोर-नदी-सी बहाते हुए; वलि तिऱल्-कठोर बली; अनुमऩ्-हनुमान का; चॆङ्कै-सुन्दर हाथ; वलम् कैयाल्-दाहिने हाथ से; पऱ्ऱि-पकड़कर; कालिल्-पैदल; चॆऩ्ऱऩऩ्-गये; कुऩ्ऱिऩै-मेरु पर्वत की; वलम् चॆय्-परिक्रमा करनेवाले; तेरोऩ्-रथी; कुणक्कु कडल्-पूर्वी समुद्र में; तोऩ्ऱुम् मुऩ्ऩर्-प्रगट हो, उसके पहले; इरुळिऩ् ऊडु-अँधेरे में ही; पुऩल्-जल से; चॆऱि-पूर्ण; कङ्कै-गंगा पर; चेर्न्दाऩ्-आये। ४१९०

इस भाँति भरत दुःखी व व्यग्र होकर दोनों आँखों से आँसू बहाते हुए अतिबली हनुमान के सुंदर हाथ को दाहिने हाथ से पकड़े पैदल चले। मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले रथ के रथी सूर्य के पूर्वी समुद्र में उग आने के पहले ही अँधेरे में चलकर जलपूर्ण गंगा के किनारे पहुँच गये। ४१९०

इरावणऩ् वेट्टम् पोय्मीण्डु ऎम्बिराऩ् योत्ति ऎय्दिऩ्
तरादल मह‌ळुम् पूविऱ् ऱैयलुम् महिऴ्च्चि चूडुम्
अराविय पॊऩ् मौलिक्कु एयऩ्द शिहामणि कुणपा लण्णल्
विरावुऱ वॆट्टित्ता लॆऩ्ऩ वॆय्यवऩ् ऱुदयञ् जॆय्दाऩ् 4191

ऎम्पिराऩ्-हमारे नाथ; इरावणऩ्-रावण के; वेट्टम् पोय्-शिकार के लिए जाकर; मीण्टु-लौटकर; अयोत्ति-अयोध्या; ऎय्ति-आकर; तरातल मकळुम्-भूमिदेवी और; पूविल् तैयलुम्-कमलादेवी; मकिऴ-दोनों के मुदित होते; चूटुम्-धारण जो करेंगे; अरावुम्-तराशे गये; पॊऩ्-स्वर्ण के; मौलिक्कु-किरीट के; एयऩ्त-योग्य और; चिकामणि-सिर पर धारण करने योग्य श्रेष्ठ रत्न; कुणक्कु पाल्-पूर्व दिशा के; अण्णल्-पालक इन्द्र ने; विरावु उऱ-चुनकर युक्त हो ऐसा; ऎट्टित्ताल् ऎऩ्ऩ-ले लिया हो, ऐसा; वॆय्यवऩ्-सूर्य; उतयम् चॆय्ताऩ्-उदित हुआ। ४१९१

हमारे प्रभु रावण के शिकार के लिए गये थे और लौट आ गये। अब भूदेवी और कमलादेवी को मोद में डालते हुए मुकुट धारण करने वाले थे। तदर्थ खूब तराशकर चमकदार किये गये स्वर्ण का मुकुट बना था। उसके योग्य सिर पर धारणार्थ एक महान रत्न की आवश्यकता थी। मानो पूरब के दिग्पाल इंद्र उससे मेल खानेवाला रत्न ले आये हों वैसा लगा सूर्य। ४१९१

कालॆवऩ् विरुत्त पिऩ्ऩरक् कडऩ्मुऱै कमलक् कण्णऩ्
कोलनीळ् कऴलह ळेत्तिक् कुरक्किऩत् तरशै नोक्किच्

चालवुङ् गलैहळ् वल्लोय् तवरुण्डु पोलुम् वाय्मै
मूलमे युणरि नुन्ऱन् मॊऴिक्कॆदिर् मॊऴियु मुण्डो 4192

कालै वन्दु–सवेरा होकर; कटन् मुडि–संध्या-वंदन आदि आह्निक; इरुत्त पित्तर्–पूरा करने के बाद; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम की; कोलम्–सुन्दर; नीळ्–श्रेष्ठ; कऴल्कळ्–पादुकाओं का; एत्ति–पूजन करके; कुरक्कु इनत्तु–वानरकुल के; अरचै नोक्कि–पति को देखकर; चालवुम्–बहुत; कलैकळ्–शास्त्रों में; वल्लोय्–निपुण; वाय्मै–तुम्हारे वचन में; तवरु–गलती; उण्ट पोलुम्–होगी शायद; मूलमे–आदि से; उणरिन्–देखें तो; उन्तन्–तुम्हारे; मॊऴिक्कु–वचन का; ऍतिर् मॊऴियुम्–उत्तर-वचन भी; उण्टो–होगा क्या। ४१९२

सवेरा होने पर भरत ने आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। फिर कमलाक्ष श्रीराम की सुंदर तथा सम्मानित पादुकाओं का पूजन किया। पश्चात् वानरयूथप हनुमान से पूछा कि हे बहुशास्त्र-निपुण! तुम्हारे वचन में कोई गलती है शायद! आदि से देखें तो तुम्हारे वचन की अन्यथा की संभावना होगी क्या? । ४१९२

ऍऴुबदु वॆळ्ळञ् जेनै वानर रिलङ्गै वेन्दन्
मुऴुमुदर् चेनै वॆळ्ळङ् गणक्किल मुडुहिऱ् ऱॆन्ऱाल्
अऴुवनीर् वेलै यन्न वरवमिन् ऱाह वट्रो
विऴुमिदॆम् बिरान्वन् दानॆन् ऱुरैत्तदु वीर वॆन्ऱान् 4193

वीर–वीर; ऍऴुपतु वॆळ्ळम्–सत्तर वॆळ्ळम्; वानरर् चेनै–वानर-सेना; इलङ्कै वेन्तन्–लंकापति की; मुऴु मुतल्–बहुत अधिक; चेनै वॆळ्ळम्–सेना-सागर; कणक्कु इल–असंख्यक; मुटुकिऱ्ऱु–तेज आती; ऍन्ऱाल्–तो; अऴुवम् नीर्–गहरे जल के; वेलै अन्न–सागर-सम; अरवम् इन्ऱु–शब्द आज; आक वट्रो–हो न रहेगा क्या; ऍम्पिरान्–हमारे नायक; वन्तान्–पधारे; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्ततु–जो कहा; विऴुमितु–बहुत सुन्दर है; ऍन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१९३

वीर! सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना और लंकापति की विपुल सेना दोनों अपार तेज़ी से आती रहें तो गंभीर सागर के समान शोर उठता नहीं होगा क्या? (यह तो सुनाई देता। इसलिए) तुमने जो कहा कि हमारे प्रभु आ रहे हैं, वह बहुत ही सुंदर लगता है! भरत ने शंका के साथ ताने के स्वर में कहा। ४१९३

ओशनै यिरण्डॆण् डन्ऱे परत्तुव नुऱैयुञ् जोलै
वीशुतॆण् डिरैयिऱ् ऱाय वॆळ्ळमो रेऴ पत्तुम्
मूशिय पऴुव मिङ्ङन् किडप्पवो मुरट्ऱ लित्ऱिप्
पेशिय दमैयु नङ्गो तॆङ्गुळन् पॆरुम वॆन्ऱान् 4194

पॆरुम्–अभिनंदनीय; परत्तुवन्–भरद्वाज का; उऱैयुम् चोलै–आश्रम;

इरण्टु–दो; ओचत्तै उण्टु–योजन है; वीचु–लहरानेवाली; तॆळ्–स्वच्छ; तिरैयिऱ्ऱु–लहरोंवाले समुद्र के समान; आय–रहनेवाले; ओर्–एक; वॆळ्ळम् एळु पत्तुम्–सत्तर वॆळ्ळम्; मूचिय–जिसमें भरे रहते हैं; पळुवम्–वह उपवन; मुरऱ्ऱल् इन्ऱि–बिना शोर के; इङ्ङन् किटप्पतो–इस तरह रहे; पेचियतु–तुम जो बोले; अमैयुम्–जचेगा वह; नम् कोन्–हमारे प्रभु; ऍङ्कु–कहाँ; उळान्–हैं; ऍन्ऱान्–पूछा भरत ने। ४१९४

भरत ने अपने अविश्वास के स्वर में आगे कहा कि हे मान्य मारुति! भरद्वाजाश्रम दो ही योजन पर है। तरंगोद्वेलित तोयनिधि-सम सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना तथा लंकाधिपति की विपुल सेना उस आश्रम में रहती है। उस स्थिति में उस आश्रम से कुछ भी शोर नहीं आता। क्या वह ऐसा रह सकता है? तुम्हारा कथन बड़ा युक्त है! कहो, हमारे प्रभु हैं कहाँ? ।४१९४

परदन:(ह्) वुरैत्त लोडुम् बणिनृदुमा रुदियुज् जीर्शाल्
विरदमा तवत्तु मिक्कोय् विण्णवर् तम्मै वेण्डि
वरदनन् ड्रळित्त वन्द वरत्तिनाल् मलरुन् देनुम्
शरदमे मान्दि मान्दित् तुयिन्ऱदु तानै यॆल्लाम् 4195

परतन्–भरत के; अ.·तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहते ही; मारुतियुम्–मारुति; पणिन्तु–विनीत होकर; चीर्चाल्–श्रेष्ठतायुक्त; विरतम्–व्रत के रूप में; मातवत्तु–तपस्या में; मिक्कोय्–बढ़े हुए; वरतन्–वरद भरद्वाज; विण्णवर् तम्मै–देवों से; वेण्टि–प्रार्थना करके; अतऩ् अळिप्प–तब दिये गये; अन्त वरत्तिनाल्–उस वर से; वन्त–जो आये; मलरुम्–उन पुष्पों और; तेनुम्–मधु को; मान्ति मान्ति–पी-पीकर; तानै ऍल्लाम्–सारी सेना; तुयिन्ऱतु–सो गयी; चरतम्–सच। ४१९५

जब भरत ने ऐसा कहा तो हनुमान ने विनीत होकर कहा कि हे महाव्रत तपस्वी! वरद भरद्वाज ने देवों से प्रार्थना की और देवों ने वर दिया। उसके फलस्वरूप पुष्प और मधु जो मिले उन्हें खा-पीकर सारी सेना सो गयी है। हाँ, सच! ।४१९५

वानवर् कॉड्क्क वन्द वरत्तिनान् मबुब मूशुम्
तेनॊडु किळङ्गुङ् गायुङ् गनिहळुम् बिऱवुज् जीर्त्तुक्
कानहम् बॊलिद लाले कविक्कुल मवऱ्ऱै मान्दि
आनन मलर्न्द दिल्लै याहुनी तुयर लॆन्दाय् 4196

ऍन्ताय्–मेरे धाता; वानवर्–देवों के; कॊटुक्क वन्त–देने से प्राप्त; वरत्तिनाल्–वर से; कानकम्–वन में; मतुपम् मूचुम्–मधुप-मंडरित; तेनॊटु–मधु और; किळङ्कुम्–कंद; कायुम्–तरकारी; कनिकळुम्–फल; पिऱवुम्–और अन्य; चीर्त्तु–विशेष रूप से; पॊलितलाले–रहते हैं, इसलिए; कवि कुलम्–

वानरवृन्द; अवर्ट्रै–उन्हें; मान्ति–खा-पीकर; आननम्–मुख; मलर्न्तनु–खोलते; इल्लै आकुम्–नहीं हैं; नी–आप; तुयरल्–दुःखी न हों। ४१९६

मेरे धाता ! देवों के वर से वन में मधुपमंडरित मधु, कंद, मूल, फल और अन्य वन्यपदार्थ बहुतायत से पाये जाने लगे तो वानरवृंद उन्हें भुगतकर मुख नहीं खोल पाते। ४१९६

इन्नियोरु कणत्ति लॅङ्गो लॅऴुन्दरुळ् तन्मै यीण्डुप्
पन्निवरुङ् गण्णि नीये पार्त्तियॅन् ऱुरैत्ता निप्पाल्
मुनितन दिडत्तु वन्द मुळरियङ् गण्णन् वण्णक्
कुनिशिलैक् कुरिशिल् शॅय्द दिट्रॅनक् कुणिक्क लुट्राम् 4197

इनि–अब; ओरु कणत्तिल्–एक क्षण में; ऍङ्कोन्–हमारे राजा; ऍऴुन्तरुळ् तन्मै–पधारते, यह हाल; ईण्टु–यहाँ; पनिवरुम्–आँसू भरे; कण्णिन्–नेत्रवाले; नीये–आप ही; पार्त्ति–देखेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तान्–कहा; इप्पाल्–इधर; मुनि तनतु–मुनि के; इटत्तु वन्त–वासस्थान में आये; मुळरि–कमल-सम; अम् कण्णन्–सुन्दर आँखों वाले; वण्णम्–सुन्दर; कुनिचिलै–कुंचित धनुष वाले; कुरिचिल्–राजाराम; चॅय्ततु–का कार्य; इट्ऱु ऍन–ऐसा या ऐसा; कुणिक्कल्–कहने; उट्राम्–लगते हैं। ४१९७

अब एक ही क्षण में हमारे प्रभु पधारेंगे। यह आप अपने अश्रु-बहाते नेत्रों से देख लेंगे। —मारुति ने विश्वास दिलाया। अब उधर भरद्वाज के आश्रम में आगत कमलाक्ष तथा कुंचित-कोदंडपाणि राजाराम ने जो किया, वह कैसा था, उसका वर्णन करेंगे। ४१९७

अरुन्दवन् शुवैह ळाट्रो डमुदिनि दळिप्प वैयन्
करुन्दडङ् गण्णि योडुङ् गळैहणान् ट्रुणैव रोडुम्
विरुन्दिनि दरुन्दि निन्ऱ वेलैयिन् वेलै पोलुम्
वॅरुन्दडन् दानै योडुङ् गिरादर्कोन् पॅयर्न्दु वन्दान् 4198

अरु तवन्–मान्य तपस्वी; आऱु चुवैकळोटु–षड्रसों के साथ; अमुतु–भोज; इनितु अळिप्प–मधुर देने पर; ऐयन्–प्रभु; करु तट–काली, विशाल; कण्णियोटुम्–आँखों वाली सीताजी के साथ; कळैकणाम्–सहायक; तुणैवरोटुम्–साथियों के साथ; विरुन्तु–भोज को; इनितु–सुख से; अरुन्ति निन्ऱ वेलैयिल्–जब भुगतते रहे तब; किरातर् कोन्–किरातराज; वेलै पोलुम्–सागर-सम; पॅरु तट–बड़ी, विस्तृत; तानैयोटुम्–सेना के साथ; पॅयर्न्तु वन्तान्–निकलकर चला आया। ४१९८

कठिन तपस्वी भरद्वाज ने षड्रस भोजन खिलाया। तब प्रभु असित-विशालाक्षी के साथ और सहायक साथियों के साथ आराम से भोजनकर के रहे; तब निषादराज गुह विस्तृत सागर-सम सेना के साथ निकल आया। ४१९८

तॊळुदनन् मनमुङ् गण्णुन् दुळङ्गिनान् शूळ वोडि
अळुदनन् कमल मन्न वडित्तल मदलिन् वीळ्न्दान्
तळुविन लॆडुत्तु मार्बिऱ् इम्बियैत् तळुवु मापोल्
वळुविला वलिय रन्ऱो मक्कळु मनैयु मॆन्ऱान् 4199

मनमुम्–मन में; कण्णुम्–और आँखों में; तुळङ्कितनन्–प्रसन्न होकर; चूळ ओटि–परिक्रमा करके; अळुतनन्–रोया; कमलम् अन्न–कमल-सम; अटि तळम् अततिल्–चरण-तल में; वीळ्न्तान्–गिरा (श्रीराम ने); ऍटुत्तु–उठाकर; तम्पियै–छोटे भाई को; तळुवुमा पोल्–गले लगाते जैसे; मार्पिल्–छाती से; तळुविनन्–लगा लिया; मक्कळुम्–पुत्र; मनैयुम्–घर वाली; वळुवु इला–बिना कमी के; वलियर् अन्ऱो–सकुशल हैं न; ऍन्ऱान्–पूछा। ४१९९

श्रीराम के दर्शन करके गुह मन में प्रसन्न हुआ, जिसकी झलक उसकी आँखों में भी प्रकट हो रही थी। पर दीर्घवियोग-जनित दुःख से रोते हुए उनकी परिक्रमा करके उसने उनके कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। श्रीराम ने उसे उठाया और भ्रातृवत् आलिंगन कर लिया; फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारे पुत्र तथा पत्नी सकुशल तथा सानंद हैं? । ४१९९

अरुळुन दुळवु नायेऱ् कवरॆला मरिय वाय
पॊरुळलर् निन्नै नीङ्गाप् पुणर्प्पिनाऱ् ऱॊडर्न्दु पोन्दु
तॆरुळ्तरु मिळैय वीरन् शॆय्वन शॆय्ह लादेन्
मरुळ्तरु मनत्ति नेनुक् किनिदन्ऱो वाळ्वु मन्नो 4200

उन्तु अरुळ्–आपकी कृपा; उळ्ळतु–है; अवर् ऍलाम्–वे सभी; नायेऱ्कु–मेरे; अरिय आय–मूल्यवान; पॊरुळ्–पदार्थ; अलर्–नहीं; निन्नै–आपके; नीङ्का–अपृथक्; पुणर्प्पिनाल्–प्रेम से; तॊटर्न्तु पोन्तु–पीछे लगे आकर; तॆरुळ् तरुम्–शुद्ध ज्ञानयुक्त; इळैय वीरन्–छोटे वीर ने; चॆय्वन–जो किये वे कार्य; चॆय्कलातेन्–नहीं कर पाया; मरुळ् तरु–अज्ञान-भरे; मनत्तिनेनुक्कु–मनवाले मुझे; वाळ्वु–अपना जीवन; इनितु अन्ऱो–प्यारा था न। ४२००

गुह ने उत्तर में निवेदन किया कि आपकी कृपा से वे सब ठीक हैं। पर वे मुझ दास के लिए मूल्यवान चीज़ नहीं हैं। आपका अक्षुण्ण भक्ति के साथ अनुगमन करके आकर उद्बुद्ध ज्ञानी छोटे वीर ने जो सेवककर्म किया वह मैं कर नहीं पाया। अज्ञमन मेरे लिए यहाँ का जीवन सुखद रह गया न! । ४२००

आयन पिऱवुम् बन्नि यळुङ्गुवान् तन्नै यैय
नीयिवै युरैप्प दॆन्ने परदनि नीवे कुण्डो
पोयिनि दिरुत्ति यॆन्नप् पुळिञर्को निळवल् पॊऱ्ऱाळ्
मेयिनन् वणङ्गि यन्नै विरैमलरत् ताळिन् वीळ्न्दात् 4201

आयत्न-वैसे; पिऱवुम् पन्नुत्ति-और अन्य बातें कहकर; अऴुङ्कुवान् तत्तै-अशांत रहनेवाले उससे; ऐय-तात; नी-तुम; इवै-ये; उरैप्पतु-कहते; ॲन्ने-क्यों हो; परतनिन्-भरत से; नी-तुम; वेऱु-अन्य; उण्टो-हो क्या; पोय्-जाकर; इनितु-सुख से; इरुत्ति-रहो; ॲन्न-ऐसा बोले; पुळिञर् कोन्-निषादराज; इळवल्-छोटे राजा के; पोन् ताळ्-सुन्दर चरणों में; मेवित्तन् वणङ्कि-नमस्कार करके; अन्नै-माताजी के; विरै मलर्-सुगन्ध-कमल-सम; ताळिन्-चरणों में; वीऴ्न्तान्-गिरा। ४२०१

ऐसी और अन्य ऐसी बातें कहकर गुह दुःखी हो रहा था। श्रीराम ने उससे पूछा कि तात! तुम क्यों ऐसी बातें कह रहे हो? क्या भरत में और तुम में भेद है? जाओ सुख से रहो। निषादराज ने लक्ष्मण के चरणों में, फिर माता सीताजी के सुगंधित कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४२०१

तॊऴुदुनिन्ऱवनै नोक्किन् तुणैवर्हळ् तमैयु नोक्कि
मुऴुदुणर् केळ्वि मेलोन् मॊऴिहुवान् मुऴुनीर्क् कङ्गै
तऴुविरु करैक्कु नादन् तायिनु मुयिर्क्कु नल्लान्
वऴुविला वॆयिनर् वेन्दन् कुहनॆन्नुम् वळ्ळ लॆन्ऱान् 4202

मुऴुतु उणर्-सर्वज्ञ; केळ्वि-श्रौतज्ञान; मेलोन्-श्रेष्ठ श्रीराम; तॊऴुतु निन्ऱवनै-विनत उसे; नोक्कि-देखकर; तुणैवर्कळ् तमैयुम्-साथियों को; नोक्कि-देखकर; मॊऴिकुवान्-बोले; मुऴुनीर्-समृद्ध-जल; कङ्कै-गंगा; तऴुवु-के साथ लगी; इरु करैक्कु-दोनों तट की भूमि का; नातन्-अधिपति है; उयिर्क्कु-प्राणों से; तायिनुम्-माता से; नल्लान्-हितैषी है; वऴु इला-निर्दोष; ॲयिनर् वेन्तन्-निषादराज है; कुकन् ॲन्नुम्-गुह नाम का; वळ्ळल्-उदार पुरुष है; ॲन्ऱान्-बोले। ४२०२

सर्वज्ञ तथा श्रौतज्ञानश्रेष्ठ श्रीराम ने अपने साथियों से गुह की तारीफ़ की। यह जलसमृद्ध गंगा के दोनों तटीय क्षेत्र का पालक है। मेरा प्राणों से और माता से अधिक हितू है! निर्दोष निषादराज है। गुह नाम का है और उदारचेता है। ४२०२

अण्णलः(ह्) दुरैत्त लोडु मरिहुलत् तरश रादि
नण्णिय तुणैवर् यारु मिनिदुऱत् तऴुवि नट्टार्
कण्णहन् ञाल मॆल्लाङ् गङ्गुलाऱ् पॊदिवान् पोल
वण्णमाल् वरैक्कु मप्पाल् मऱैन्दन निरवि यॆन्बान् 4203

अण्णल्-प्रभु के; अ:तु-वह; उरैत्तलोटुम्-कहने पर; अरि कुलत्तु-वानरकुल का; अरचन् आति-राजा सुग्रीव आदि; नण्णिय-आगत; तुणैवर् यारुम्-सभी मित्र ने; इनितु उऱ-मधुरता से; तऴुवि-गले लगाकर; नट्टार्-मित्रता बना ली; इरवि ॲन्पान्-सूर्य; कण् अकल्-विशाल; ञालम् ॲल्लाम्-

भूतल भर को; कङ्कुलाल्–अन्धकार से; पोंतिवान् पोल–आच्छादित करता-सा; वण्णम्–श्रेष्ठ; माल् वरैक्कुम्–बड़े मेरु पर्वत के; अप्पाल्–उस तरफ़; मऱैन्ततन्–छिप गया। ४२०३

प्रभु श्रीराम द्वारा गुह की तारीफ़ सुनकर वानरराज सुग्रीव ने सामने आकर उससे मित्रता कर ली। तब सूर्य विस्तृत भूतल भर को अँधेरे से आच्छादित करता-सा सुंदर बड़े मेरुपर्वत के पीछे छिप गया। ४२०३

अलङ्गलन् दॉडैयि नानु मन्दियिऩ् कडऩ्ग ळाऱ्ऱिप्
पॉलङ्गुऴै मयिलि ऩोडु तुयिलुऱप् पुणरि पोलुम्
इलङ्गिय शेऩै शूऴ विळवलु मॅयिऩर् कोनुम्
कलङ्गलर् कात्तु निऩ्ऱार् कदिरव ऩुदयञ् जॅय्दान् 4204

अलङ्कल्–हिलनेवाली; अम्–सुन्दर; तॉटैयिऩानुम्–मालाधारी श्रीराम भी; अन्तियिऩ्–संध्या का; कटऩ्कळ्–अनुष्ठान; आऱ्ऱि–पूरा करके; पॉलम्–स्वर्ण के; कुऴै–कुंडलधारिणी; मयिलिऩोटुम्–कलापी-सी सीता के साथ; तुयिल् उऱ–सोने गये; इळवलुम्–छोटे वीर; ऍयिऩर् कोऩुम्–निषादराज; पुणरि पोलुम्–समुद्र-सम; इलङ्किय–विद्यमान; चेऩै चूऴ–सेना के मध्य; कलङ्कलर्–अधीर न होकर; कात्तु निऩ्ऱार्–पहरा दे खड़े रहे; कतिरवऩ्–सूर्य; उतयम् चॅय्ताऩ्–उदित हुआ। ४२०४

हिलती मालाधारी श्रीराम ने सायंसंध्यावंदन आदि अनुष्ठान पूरा किया। फिर वे स्वर्णकुंडलधारिणी और कलापी-निभ सीताजी के साथ निद्रा करने गये। छोटे वीर और निषादराज सागर-सम सेना को चारों ओर लगा देकर पहरा देते रहे। रात बीती और सूर्य उदित हुआ। ४२०४

कदिरव ऩुदय कालैक् कडऩ्कऴित् तिळव लोडुम्
अदिर्पॉलऩ् कऴलि ऩाऩव् वरुन्दवऩ् तऩ्ऩै येत्ति
विदितरु विमाऩ मेवि विळङ्गिऴै योडुङ् गॊऱ्ऱम्
मुदिर्तरु तुणैव रोडु मुऩिमऩत् तॊडरप् पोऩाऩ् 4205

अतिर्–स्वरशील; पॉलऩ्–स्वर्णिम; कऴलिऩाऩ्–पायलधारी; कतिरवऩ्–सूर्य के; उतयम् कालै–उदय के समय में; कटऩ् कऴित्तु–आह्निक अनुष्ठान करके; अव्–उन; अरु तवऩ् तऩ्ऩै–श्रेष्ठ तपस्वी को; एत्ति–पूजा करके; इळवलोटुम्–छोटे के साथ; विळङ्किऴैयोटुम्–सुन्दर आभरणधारिणी के साथ; कॊऱ्ऱम्–और विजय; मुतिर् तरु–युक्त; तुणैवरोटुम्–साथियों के साथ; विति तरु–ब्रह्मा-दत्त; विमाऩम्–विमान पर; मेवि–चढ़कर; मुऩि मऩम्–मुनि के मन के; तॊटर–पीछे आते; पोऩाऩ्–गये। ४२०५

ध्वनिमय पायलधारी श्रीराम ने प्रातःकाल का आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। उन महान तपस्वी की पूजा की। फिर उज्ज्वल आभरण-भूषिता सीताजी, लघुराज लक्ष्मण, विजयोत्कृष्ट साथियों के साथ ब्रह्मा-

दत्त विमान पर सवार होकर प्रस्थान किया। मुनि का मन उनके पीछे जा रहा था। ४२०५

तावियान् पडर्न्दु मानन् दडैयिल देहुम् वेलैत्
तीविय कनिय दाहिच् चॅरुक्किय कामच् चॅव्वि
ओविय मुयिर्पॅऱ् ऱॅऩ्ऩ वुम्बर्को नहरु मॉव्वा
माविय लयोत्ति शूऴ मदिऱ्पुऱन् दोन्ऱिऱ् ऱऩ्ऱे 4206

मानम्–विमान; तावि–तेजी से जाता; वान्–आकाश में; तडै–बाधा से; इलतु–हीन; पटर्न्तु–आगे बढ़कर; एकुम् वेलै–जब जाता रहा; तीविय–मधुर; कनियतु आकि–अक्षय रहकर; चॅरुक्किय–मस्त; कामम्–मनोहारी; चॅव्वि–सौंदर्ययुक्त; ओवियम्–चित्र; उयिर् पॅर्ऱॅऩ्ऩ–जीवंत हो उठा जैसे; उम्पर् कोन्–देवेंद्र का; नकरम्–नगर भी (जिसकी); ऑव्वा–उपमान न बन सके; मा इयल्–प्रशंसा योग्य; अयोत्ति–अयोध्या के; चूऴम्–आवरण की; मतिल् पुऱम्–बाहरी दीवार; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखायी दी। ४२०६

पुष्पक विमान आकाशमार्ग में अबाध गति से जा रहा था। तब मधुर तथा अक्षय प्रकृति वाला, तथा मस्त बनानेवाला, मनोहारी सौंदर्य से युक्त चित्र कोई जीवंत हो आए जैसे देवेंद्रनगर भी जिसकी उपमा नहीं बन सकता, उस अयोध्या के प्राचीर की बाहरी दीवार दिखायी दी। ४२०६

पॉन्मदिऱ् किडक्कै शूऴप् पॉलिवुडै नहरन् दोन्ऱ
नन्मदित् तुणैवर् तम्मै नोक्किय ञान मूर्त्ति
शॉन्मदित् तॊरुव रालुञ् जॊलप्पडा वयोत्ति तोन्ऱिऱ्
ऱॅन्नलुङ् गरङ्गळ् कूप्पि यॅऴुन्दन रिऱैञ्जि निन्ऱार् 4207

पॉन् मतिल्–स्वर्णिम प्राचीर के; किटक्कै–स्थान; चूऴ–घेरे रहे; पॉलिवु उटै–शानदार; नकरम् तोन्ऱ–नगर दिखायी दिया; नन्मति–बुद्धिमान; तुणैवर् तम्मै–साथियों को; नोक्किय–देखकर; ञानमूर्त्ति–ज्ञानमूर्ति श्रीराम ने; ऑरुवरालुम्–किसी से भी; मतित्तु–अनुमान कर; चॉल्–वर्णन; चॉलप्पटा–नहीं किया जा सके ऐसी; अयोत्ति–अयोध्या नगरी; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखायी दे गयी; ऍन्नलुम्–कहने पर; करङ्कळ्–हाथ; कूप्पि–जोड़कर; ऍऴुन्तनर्–उठे; इऱैञ्चि निन्ऱार्–विनत खड़े रहे। ४२०७

स्वर्ण-प्राचीर की छवि के अंदर शोभायमान अयोध्या दिखायी दी तो सद्बुद्धिमान साथियों को देखकर ज्ञानमूर्ति श्रीराम ने कहा कि किसी से भी अवर्णनीय महिमावाली अयोध्या दिखायी देती है, देख लो। उसे सुनते ही सभी हाथ जोड़ उठे और नमस्कार किया। ४२०७

अन्नदो रळवैयिन् विशुम्ब दायिनुम्
तुन्निरुङ् गदिरवर् तोन्ऱिना रनप्

पॊन्नणि पुट्पहप् पौरुविन् मानमुम्
मन्नवर्क् करशनुम् वन्दु तोन्ऱिनार् 4208

अन्नतु ओर् अळवैयिन्–उस समय; विचुम्पतु–आकाश में रहनेवाला; आयितुम्–हो तो भी; तुन्–पास-पास रहे; इरु कतिरवर्–दो सूर्य; तोन्ऱिनार् ऐन्त–प्रगट हों जैसे; पॊन्–स्वर्णमय; अणि–सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक नाम का; पॊरु इल्–अनुपम; मानमुम्–विमान; मन्नवर्क्कु अरचनुम्–और राजाधिराज; वन्तु तोन्ऱिनार्–आ दिखायी दिये। ४२०८

तब पुष्पक बहुत दूर पर था। तो भी स्वर्णमय, सुंदर पुष्पक नाम का वह अप्रतिम विमान और राजाधिराज श्रीराम दोनों दो (या अनेक) सूर्यों के समान आ दिखायी दिये। ४२०८

अण्णले काण्डिया ललर्न्द तामरैक्
कण्णनुम् वानरक् कडलुङ् गऱ्पुडैप्
पॆण्णरुङ् गलमुनिन् पिन्बु तोन्ऱिय
वण्णविल् कुमरनुम् वरुहिन्ऱार्हळ् 4209

अण्णले–महापुरुष; अलर्न्त–खिले; तामरै कण्णनुम्–कमल-सम आँखों वाले; वानरर्–और वानरों का; कटलुम्–सेना-सागर; कऱ्पु उटै–पतिव्रता; पॆण्–नारियों का; अरुकलमुम्–श्रेष्ठ श्रृंगार श्री सीताजी; निन्–आपके; पिन्पु–बाद; तोन्ऱिय–जनित; वण्णम्–सुन्दर; विल् कुमरनुम्–धनुर्धर कुमार; वरुकिन्ऱार्कळ्–आते हैं (जो); काण्टि—(उन्हें) देख लें। ४२०९

हनुमान ने भरत से कहा कि हे महिमावान! उत्फुल्ल-कमलाक्ष सागर-सम सेना, और पतिव्रता स्त्रियों का श्रृंगार सीताजी और आपके अनुज, चित्र-धनुर्धर लक्ष्मण आ रहे हैं, देख लें। ४२०९

एऴिरण् डाहिय वुलह मेऱिनुम्
पाऴ्पुऱङ् गिडक्कुरु पडिय दायदोर्
शूऴॊळि मानत्तुत् तोन्ऱु हिन्ऱनन्
ऊऴियान् ऱॆन्ऱुकोण् डुणर्त्तुङ् गालैये 4210

एऴु इरण्टु आकिय–सात के दो (चौदह); उलकम् एऱिनुम्–लोक सवार हों; पाऴ् पुऱम्–तो भी खाली स्थान; किटक्कुरु–बाक़ी रखनेवाली; पटियतु आयतु–प्रकृति के बने; ओर्–एक; चूऴ् ऒळि–सर्वव्यापी प्रकाश के; मानत्तु–विमान पर; ऊऴियान्–युगपति; तोन्ऱुकिन्ऱनन्–दर्शन देते हैं; ऎन्ऱु कॊण्टु–ऐसा; उणर्त्तुम् कालै–समझाते समय। ४२१०

वह पुष्पक यान ऐसा है कि उसमें चौदहों लोकों के वासी सवार हो जायँ तो भी खाली स्थान पाया जाय। वह व्यापनेवाली छवि से युक्त है, उस पर युगपति श्रीराम दर्शन देते हैं। ऐसा जब हनुमान ने बताया तब—। ४२१०

पॊन्ऩॊळि मेरुविऩ् पॊंदुम्बिऱ् पुक्कदोर्
मिऩ्ऩॊळि मेहम्बोल् वीरऩ् तोऩ्ड्रलुम्
मन्नॆदिर् वरुहुन रार्प्पि रावणऩ्
तॆन्नहर्क् कप्पुड्रत् तळवुञ् जॆऩ्ड्रदाल् 4211

पॊऩ् ऒळि–स्वर्ण-छवि; मेरुविऩ्–मेरु पर; पॊतुम्पिल्–एक कंदरा में; पुक्कतु–घुसी; ओर्–एक; मिऩ् ऒळि–बिजली के प्रकाश के साथ; मेकम् पोल्–(रहते) मेघ-सदृश; वीरऩ्–वीर श्रीराम के; तोऩ्ड्रलुम्–दर्शन देने पर; मऩ्–राजा के; ऍतिर् वरुकुनर्–स्वागतार्थ आनेवालों का; आर्प्पु–कोलाहल; इरावणऩ्–रावण के; तॆऩ् नकर्क्कु–दक्षिणी नगर के; अप्पुड्रत्तु–उस तरफ़; अळवुम्–तक भी; चॆऩ्ड्रतु–गया। ४२११

स्वर्णच्छवि मेरु पर कंदरा में घुसी रही बिजली के साथ रहनेवाले मेघ के समान (सीताजी के साथ) श्रीवीरराघव के दर्शन पाते ही अगवानी के लिए आगत लोगों का कोलाहल सुदूर, दक्षिण की लंका के उस तरफ़ भी जा फैल गया। ४२११

ऊऩुडै याक्कैविट् टुण्मै वेण्डिय, वाऩुडैत् तन्दैयार् वरवु कण्डॆऩक्
काऩिडैप् पोहिय कमलक् कण्णऩैत्, ताऩुडै युयिरिऩैत् तम्बि नोक्किऩाऩ् 4212

ऊऩ्डै–मांसल; याक्कै विट्टु–शरीर त्यागकर जिन्होंने; उण्मै वेण्टिय–सत्य खोजा उन; वाऩ् उटै–स्वर्गवासी; तन्तैयार्–पिता का; वरवु कण्टु ऍऩ–आगमन देखा जैसे; काऩ् इटै–वन में; पोकिय–जो गये उन; कमलम् कण्णऩै–कमलाक्ष को; ताऩ् उटै–उनके; उयिरिऩै–प्राणों (सम) को; तम्पि नोक्किऩाऩ्–कनिष्ठ भरत ने देखा। ४२१२

सत्यपालनार्थ मांसमय शरीर को जिन्होंने छोड़ दिया वे स्वर्गीय पिता स्वयं आ रहे हों, ऐसा; वन में जो गये थे उन कमलाक्ष श्रीराम को, अपने प्राण-सम भ्राता को भरत ने देखा। ४२१२

कॆट्टवाऩ् पॊरुळ्वन्दु किडैप्प मुन्बुताम्
बट्टवान् पडरॊळिन् दवरिऱ् पैयुणोय्
शुट्टवऩ् मातवर् ड्रॊळुद लुन्ऩिये
विट्टऩऩ् मारुदि करत्तै मेऩ्मैयाऩ् 4213

मेऩ्मैयाऩ्–उत्तम भरत; कॆट्ट–खोयी गयी; वाऩ् पॊरुळ्–श्रेष्ठ वस्तु; वन्तु किटैप्प–आ मिल गयी तो; मुन्पु–पहले; ताम् पट्ट–जो सहा; वाम् पटर्–वह महादुःख जिनसे; ऒळिन्तवरिल्–छूट गया उनके समान; पैयुळ् नोय्–दुःख-रोग (जिसको); चुट्टवऩ्–अब जिन्होंने जला दिया; मातवऩ्–(उन्होंने) मनुवंश दीप का; तॊळुतल्–नमस्कार करना; उऩ्ऩि–चाहकर; मारुति–मारुति के; करत्तै–हाथ को; विट्टऩऩ्–छोड़ दिया। ४२१३

उन्नत गुणों वाले उत्तम भरत ने, जिन्होंने खोयी चीज़ प्राप्त कर पहले के दुःख-दर्द से मुक्त लोगों के समान दुःख के रोग को जला दिया था, मनुकुलदीप श्रीराम को नमस्कार करने के विचार से हनुमान का हाथ छोड़ दिया। ४२१३

अक्कणत् तनुमन् मवणिन् ऱेहियत्
तिक्कुऱ मानत्तैच् चॅव्व नेय्दियच्
चक्करत् तण्णलत् ताळ्न्दु मुन्निन्ऱान्
उक्कुऱ कण्णनी रोळ्हु मार्बिनान् 4214

अ कणत्तु–तब; अनुमनुम्–हनुमान; अवण् निन्ऱु–वहाँ से; एकि–जाकर; अ तिक्कु उऱु–उस उत्तर दिशा की ओर आनेवाले; मानत्तै–विमान के पास; चॅव्वन् ॲय्ति–सीधे जाकर; अ–उन; चक्करत्तु–चक्रधारी; अण्णलै–प्रभु के सामने; उकु उऱु–बहनेवाले; कण्ण नीर्–अश्रुजल से; ऒळ्कु–सिंचित; मार्पिनान्–वक्षवाले बनकर; ताळ्न्तु–झुककर; मुन् निन्ऱान्–खड़ा रहा। ४२१४

उसी क्षण हनुमान भी वहाँ से चला। उसके सामने आनेवाले पुष्पक विमान की ओर सीधे गया। अपने वक्ष को अपनी आँखों के अश्रु-जल से भिगोते हुए वह उनके सामने विनत खड़ा हो गया। ४२१४

उरुप्पविर् कनलिडै यॊळिक्क लुऱ्ऱवप्
पॊरुप्पविर् तोळनैप् पोरुन्दि नायिनेन्
तिरुप्पॊलि मार्बनिन् वरवु शॅप्पिनेन्
इरुप्पन वायिन वुलहम् यावैयुम् 4215

तिरु पॊलि–श्रीशोभित; मार्प–वक्ष वाले; नायिनेन्–कुत्ता (दास) मैं; उरुप्पु अविर्–तापयुक्त; कनल् इडै–आग में; ऒळिक्कल् उऱ्ऱ–छिपने को जो रहे; अ पॊरुप्पु–उन पर्वत; अविर्–के समान; तोळनै–कंधोंवाले के पास; पॊरुन्ति–जाकर; निन् वरवु–आपका आगमन; चॅप्पिनेन्–कहा; उलकम् यावैयुम्–सारे लोक; इरुप्पन आयिन–स्थायी हुए। ४२१५

श्रीशोभित वक्ष वाले! कुत्ते-सदृश मैंने तापयुक्त आग में छिपने को उद्यत रहे उन पर्वतस्कंध भरत के पास जाकर आपके आगमन की सूचना दी। तभी सारे लोक रहनेवाले हुए। ४२१५

तीविनै याम्बल शॅय्यत् तीर्विला
वीविनै मुऱैमुऱै विळैव मॅय्म्मैयाय्
नीयवै तुडैत्तुनिन् ऱॊळिक्क नेर्न्दनै
यायिनु मन्बिना याज्जॅय् मादवम् 4216

मॅय्म्मैयाय्–सत्यनिष्ठ; आयिनुम् अन्पिनाय्–माता से भी प्यारे; याम्–हमारे; पल–अनेक; तीविनै–दुष्कर्म के; चॅय्य–किये रहने से; तीर्विला–

अवार्य; वीविर्त्तै–मरण के सन्दर्भ; मुरै मुरै–बार-बार; विळैव–आते हैं; नी–तुम; अवै–उन्हें; तुटैत्तु निन्ऱु–पोंछते रहकर; अळिक्क नेर्न्तनै–बचाने आये; याम्–हमारे; चॅय्–पूर्वकृत; मा तवम्–महान तप (का फल) है। ४२१६

श्रीराम ने हनुमान की प्रशंसा की। हे सत्यनिष्ठ; माता से भी प्यारे! हमारे पूर्वकृत अनेक दुष्कर्मों के अवार्य फलस्वरूप मरण के संदर्भ बार-बार आते हैं। पर तुम उनको दूरकर प्राण बचाने आये हो! यह भी हमारे किये हुए महान तप का फल है! । ४२१६

ऍन्ऱुरैत्	तनुमनै	यिरुहप्	पुल्लिनान्
ऑन्ऱुरैत्	तिऱप्पदॅन्	नुनक्कु	मॅन्दैक्कुम्
इन्ऱुणैत्	तम्बिक्कुम्	यायक्कु	मॅन्ऱननन्
कुन्ऱिणैत्	तनवुयर्	कुववुत्	तोळिनान् 4217

ऍन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; कुन्ऱु इणैत्तु अन–दो पर्वत मिले हों ऐसे; उयर्–उन्नत; कुववु–पुष्ट; तोळिनान्–कंधोंवाले; उनक्कुम्–तुम्हारे; ऍन्तैक्कुम्–मेरे पिता जटायु के; इन् तुणै–प्यारे संगी; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई के; आय्क्कुम्–मेरी जननी के संबंध में; ऑन्ऱु–एक बात; उरैत्तु–कहकर; इऱप्पतु–छूट जाना; ऍन्–कैसे सम्भव हो; ऍन्ऱननन्–कहा और; अनुमनै–हनुमान को; इरुक–फसकर; पुल्लिनान्–आलिंगन कर लिया। ४२१७

यह कहकर जुड़े पर्वत-सम उन्नत कंधों वाले श्रीराम ने आगे यह भाव भी प्रकट किया कि तुम्हारे, मेरे पिता (जटायु या दशरथ) के मेरे भाई (लक्ष्मण) के, और मेरी जननी के (प्रतीकार के) संबंध में कोई भी शब्द कहकर कैसे पार पाया जाय? और उसको गाढ़ालिंगन कर लिया। ४२१७

इडुरु	वान्तुणै	यिरामन्	शेवडि
शूडिय	शॅन्नियन्	तॉळुद	कैयिनन्
ऊडुयि	रुण्डॅन	वुलर्न्द	याक्कैयन्
पाडुरु	पॅरुम्बुहळ्प्	परदन्	तोन्ऱिनान् 4218

ईटु उऱु–परस्पर-सम; वान् तुणै–अपने बड़े आश्रय; इरामन्–श्रीराम की; चेवटि–पादुकाओं को; चूटिय–धारण करते; चॅन्नियन्–सिर वाले; तॉळुत–अंजलिबद्ध; कैयिनन्–हाथों वाले; उयिर्–जान; ऊटु–मध्य में; उण्टु–है; ऍन–ऐसा; उलर्न्त–(अनुमान से जाना जाय) शुष्क; याक्कैयन्–शरीरी; पाटु उऱु–विशिष्टतायुक्त; पॅरु पुकऴ्–प्रबल यशस्वी; परतन् तोन्ऱिनान्–भरत (पास) दिखाई दिये। ४२१८

(तब पुष्पक स्वागतार्थ आये लोगों के पास आ पहुँचा तो) परस्पर सम और भरत का आधार जो रहीं, उन श्रीराम की पादुकाओं को सिर पर धारण करके अंजलिबद्धहस्त भरत, जिनके प्राणवंत होने में बहुत

बारीकी से देखकर ही कुछ निश्चय किया जा सकता था, जो क्षीणकाय थे और जो बहुत यशस्वी हो गये थे प्रगट हुए। ४२१८

तोऩ्ड्रिय परदत्तै तॊऴुदु तॊल्लऱच्
चाऩ्ऱॆऩ्ऩ निऩ्ऱव ऩित्तैय तम्बियै
वाऩ्ऱोडर् पेरर शाण्ड मऩ्ऩऩै
ईऩ्ऱवळ् पहैञर्क् काण्डि यॆण्डॆऩ्ऱाळ् 4219

तॊल् अऱम्–सनातन धर्म के; चाऩ्ऱु–साक्षी; ॲऩ्ऩ–रूप; निऩ्ऱवऩ्–जो रहा उस (हनुमान) ने; तोऩ्ऱिय–पास आये; परतऩै–भरत को; तॊऴुतु–नमस्कार करके; वाऩ्–मोक्ष; तोटर्–पहुँचानेवाले; पेर्–बड़े; अरचु–(कैंकर्य) राज्य के; आण्ट–शासक; मऩ्ऩऩै–राजा को; ईऩ्ऱवळ्–जननी के; पकैञऩै–शत्रु को (भरत को); इऩैय तम्पियै–ऐसे छोटे भाई को; ईण्टु–यहाँ; काण्टि–देख लें; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (श्रीराम से)। ४२१९

सनातनधर्म-साक्षीरूप हनुमान ने आगत भरत को नमस्कार किया और श्रीराम को बताया कि मोक्षप्रापक कैंकर्य-राज्य के शासक और मातृ-शत्रु और आपके ऐसे छोटे भाई भरत को इधर देखिये। ४२१९

काट्टिऩऩ् मारुदि कण्णिऩ् कण्डवऩ्
तोट्टलर् तॆरियला ऩिलैमै शॊल्लुङ्गाल्
ओट्टिय माऩत्तु ळुयिरिऩ् ऱन्दैयार्
कूट्टुरुक् कण्डऩ्ऩ तऩ्मै कूडिऩाऩ् 4220

मारुति–मारुति ने; काट्टिऩऩ्–दिखाया; कण्णिल् कण्ट–आँखों से देखकर; अ तोटु–उन पुष्पों से; अलर्–खिली; तॆरियलाऩ्–मालाधारी का; निलैमै–हाल; चॊल्लुङ्काल्–कहा जाय तो; ओट्टिय–चलाये गये; माऩत्तु–विमान पर; उयिरिऩ् तन्तैयार्–जीवंत पिता का; कूटु उरु कण्टु अऩ्ऩ–युक्त आकार देखा जैसी; तऩ्मै कूटिऩाऩ्–स्थिति में आये। ४२२०

मारुति ने दिखाया और श्रीराम ने देखा। तो पुष्पित-सुमन-माला-धारी श्रीराम का हाल क्या कहें? विमान में आगत जीवंत पिता के दर्शन होने पर जो आनंद हुआ वैसे आनंद से भर गये। ४२२०

अव्वयि ऩयोत्ति वैहुञ् जऩमॊडु मक्कु रोणि
तव्वलि लाऱु पत्ता यिरमॊडुन् दाय रोडुम्
इव्वयि ऩडैन्दु ळोरैक् काण्बऩ्ऩ् ऱिराम ऩऩ्ऩच्
चॆव्वैयि ऩिलत्तै वन्दु शेर्न्ददु विमाऩम् दाऩुम् 4221

अव्वयिऩ्–तब; अयोत्ति–अयोध्या में; वैकुम्–वास करनेवाले; चऩमॊटुम्–लोगों के साथ; तव्वल् इल्–त्रुटिहीन; आऱुपत्तु आयिरम्–साठ हजार; अक्कुरोणियॊटुम्–अक्षौहिणी सेना के साथ और; तायरोटुम्–माताओं के साथ;

इव्वयित्–यहाँ; अटैन्तुळोरै–आये हुओं को; काण्पॅन्–देखूँ; ॲन्रु–ऐसा; इरामन् उन्न–श्रीराम ने सोचा तो; विमानम् तानुम्–विमान स्वयं; निलत्तै–भूमि को; चॅव्वयित्–सीधे; वन्तु–आकर; चेर्न्ततु–पहुँचा। ४२२१

श्रीराम ने तुरन्त मन में विचार किया कि मैं अयोध्यापुरिवासी, निर्दोष साठ सहस्र अक्षौहिणी सेना; माताएँ और यहाँ आगत लोग —इनसे मिलना चाहता हूँ। उनका भाव जानकर पुष्पक यान सीधे भूमि पर उतर आया। ४२२१

ॲव्वयि तुयिर्हट्कु मिराम तेऱिय
शॅव्विय पुट्पह निलत्तैच् चेर्दलुम्
अव्ववर्क् कणुहिय वमरर् नाडुय्क्कुम्
ॲव्वमिल् मानमॅन् ऱिशैक्क लायदाल् 4222

इरामन् एऱिय–श्रीराम जिस पर सवार थे; चॅव्विय–वह सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक; निलत्तै–भूमि में; चेर्तलुम्–आया तो; ॲव्वयित्–सर्वत्र रहनेवाले; उयिर्कट्कुम्–जीवों को; अव्ववर्क्कु–उनके योग्य; अणुकिय–प्राप्त; अमरर नाटु–स्वर्गलोक; उय्क्कुम्–पहुँचा सकनेवाला; ॲव्वम् इल्–निर्दोष; मानम् ॲन्ऱु–यान; इचैक्कल् आयतु–कहलाने योग्य रहा। ४२२२

जब श्रीराम का वाहन पुष्पक यान भूमि पर आया तब वह उस विमान के समान रहा, जो पुण्यवान जीवों को उनके योग्य स्वर्ग लोकों में पहुँचानेवाला हो और सर्वथा निर्दोष हो। ४२२२

तायरुक् कन्ऱु शार्न्द कन्ऱॅनुन् दहैय नानान्
मायैयिऱ् पिरिन्दोर्क् कॅल्ला मनोलयम् वन्द वॊत्तान्
आयिळै यर्क्कुक् कण्णु ळाडिरुम् बावै यानान्
नोयुरुत् तुलर्न्द याक्कैक् कुयिर्पुहुन् दालु मॊत्तान् 4223

तायरुक्कु–माताओं के सामने; अन्ऱु–उसी दिन; चार्न्त–मिला; कन्ऱु–बछड़ा; ॲनुम्–कहा जाय; तकैयन् आनान्–ऐसे हो गये; मायैयिन्–माया से; पिरिन्तोर्क्कु–छूटे लोगों (के); ॲल्लाम्–सभी के लिए; मनोलयम्–मन के पहुँचने स्थान; वन्ततु ऑत्तान्–आ गया जैसे रहे; आय्–सुन्दर; इळैयर्क्कु–छोटे भाइयों के लिए; कण् उळ्–आँखों के अंदर की; आटु इरुम्–हिलती मूल्यवान; पावै आनान्–पुतली-सदृश रहे; नोय् उऱुत्तु–रोगपीड़ित हो; उलर्न्त–सूख गये-से; याक्कैक्कु–शरीर में; उयिर् पुकुन्तालुम्–जान आयी; ऑत्तान्–जैसे भी रहे। ४२२३

श्रीराम तब माताओं के लिए तद्दिन-जनित बछड़े के समान रहे। माया से छूटे लोगों के लिए समाधि (मनोलय) के पद के समान दिखे। सुंदर कनिष्ठ भ्राताओं के लिए आँखों के तारे बने। रोगपीड़ित क्षीण शरीर में प्राण आ गये हों जैसे लगे। ४२२३

ऍळिवरु मुयिर्क्कट् कॅल्ला मीन्ऱदा यॅदिर्न्द वौत्ताल्
अळिवरु मनत्तोर्क् कॅल्ला मरुम्बद वमुद मात्ताल्
ऑळिवर्प् पिर्न्द वौत्ता नुलहिनुक् कौण्क णार्क्कुत्
तॅळिवरुङ् गळिप्पुच् चॅय्युन् देम्बिळित् तेर लौत्तान् 4224

ऍळिवरम्—दीन बने; उयिर्कट्कु—जीव; ऍल्लाम्—सभी के लिए; ईन्ऱ ताय्—जननी माता; ऍतिर्न्ततु—सामने आयी हो; औत्तात्—जैसे बने; अळिवरम्—प्यार-गद्गद; मनत्तोर्क्कु ऍल्लाम्—मन वाले सभी के लिए; अरु पत—श्रेष्ठ, पक्व; अमुतम् आतान्—अमृत बने; उलकिनुक्कु—(ज्ञानियों के) लोक को; ऑळिवु अर—दुराव छोड़कर; पिर्न्ततु औत्तान्—प्रत्यक्ष प्रगट जैसे रहे; ऑळ् कणार्क्कु—सुन्दराक्षियों के लिए; तॅळिवु अरु—अस्पष्टतायुक्त अच्छा; कळिप्पु चॅय्युम्—मोद देनेवाले: तेम्पिळि—मधुर मधु के; तेरल्—मद्य; औत्तान्—के समान रहे। ४२२४

दीन लोगों को जननी के समान लगे। प्यारे लोगों के लिए पक्व अमृत के समान रहे। ज्ञानी लोगों के लिए प्रत्यक्ष प्रकट भगवान लगे। सुंदराक्षी स्त्रियों के लिए अस्पष्ट मस्ती लानेवाले मधुर मद्य के समान लगे। ४२२४

आवियङ् गवन लान्मऱ् ऱिन्मैया लनैय नीङ्गक्
कावियङ् गळनि नाडु नहरमुङ् गवन्ऱ वाळुम्
माविय लुण्क णारु मैन्दरुम् वळ्ळ लॅय्द
ओविय मुयिर्पॅऱ् ऱॅन्न वोङ्गिन रुणर्वु पॅऱ्ऱार् 4225

अङ्कु आवि—वहाँ के प्राण; अवन् अलात्—उनके सिवा; मऱ्ऱु इन्मैयाल्—और कुछ नहीं थे, अतः; अनैयन्—उनके; नीङ्क—छोड़ जाने पर; कावि—नीलोत्पलयुक्त; अम्—सुन्दर; कळनि नाटुम्—खेतों के कोसल देश में; नकरमुम्—और अयोध्या नगर में; कवन्ऱ वाळुम्—चिंतित जो रहीं; मा इयल्—आमके टिकोरे-सी; उण् कणारुम्—अंजन लगी आँखों वालियाँ; मैन्तरुम्—और पुरुष; वळ्ळल् ऍय्त—प्रभु के लौटने पर; ओवियम्—चित्र; उयिर् पॅऱ्ऱु—जीवित हो गये; ऍन्न—जैसे; ओङ्किनर्—फूल उठे; उणर्वु पॅऱ्ऱार्—सप्रज्ञ हो गये। ४२२५

वहाँ के लोगों के लिए प्राण श्रीराम ही थे। अत. उनके चले जाने पर नीलोत्पलसंकुल खेतों वाले कोसल देश में और अयोध्या नगर में आम के टिकोरे-सी आँखों वाली स्त्रियाँ और पुरुष सभी दुःखी तथा कृश रहते थे। अब उनके आकर मिल जाने से जीवन-प्राप्त चित्रों के समान वे सप्रज्ञ हो गये और फूल उठे। ४२२५

चुण्णमुञ् जान्ड्रु नॅय्युञ् जुरिवळै मुत्तुम् बूवुम्
ऍण्णॅयुङ् गलिन्न मावि लाळियु मॅण्णिल् यानै

वण्णवार् मदमुन् नीरु मान्मदन् दऴ्वु मादर्
कण्णवाम् बुनलु मोडिक् कडलैयुङ् गडन्द वन्ऱे 4226

चुण्णमुम्–सुगंधचूर्ण; चान्तुम्–चन्दन; नेय्युम्–और घी; चुरिवळै–आवर्तयुक्त शंखों; मुत्तुम्–के मोती और; पूवुम्–पुष्प; ऍण्णेयुम्–तेल; कलितम्–रासयुक्त; मा–अश्वों के; विलाऴियुम्–मुख का झाग; ऍण्णिल्–असंख्य; यानै–हाथियों से; वण्णम्–रंगीन; वार्–झरनेवाला; मतमुनीरुम्–त्रिमदनीर; मान्मतम्–कस्तूरी; तऴुवुम्–शरीर पर मलकर; मातर्–रही स्त्रियों के; कण्ण आम् पुनलुम्–नेत्र का आनंद-वाष्प; ओटि–बहकर; कटलैयुम्–समुद्र को भी; कटन्त–पार कर गये। ४२२६

लोगों ने आनंदातिरेक का उत्सव मनाया और सर्वत्र सुगंध चूर्ण, चंदन, घी, आवर्तयुक्त शंखों के जनाये मोती, पुष्प, तेल आदि बिखेरे। रासयुक्त अश्वों का मुख का झाग, और हाथियों का विविध रंग का त्रिमदनीर निकल बहा। कस्तूरी-चर्चित रमणियों की आँखों से आनंद-बाष्प झरकर बहा। सब मिलकर समुद्र को भी पार कर गया। ४२२६

अनैवरु मन्नैय राहि यडैन्दुऴि यरुळिन् वेलै
तनैयिनि दळित्त तायर् मूवरुन् दम्बि मारुम्
पुनैयुनून् मुनिवन् तानुम् बौन्नणि विमानत् तेऱ
वनैहऴर् कुरिशिन् मुन्दि मादवन् ताळिल् वीऴ्न्दान् 4227

अनैवरुम्–सभी; अन्नैयर् आकि–उस स्थिति में; अटैन्तुऴि–आये तब; अरुळिन्–कृपा के; वेलै तनै–सागर को; इनितु अळित्त–सुख-जनानेवाली; मूवर् तायरुम्–तीनों माताएँ; तम्पि मारुम्–और छोटे भाई; पुनैयुम् नूल्–यज्ञोपवीतधारी; मुनिवन् तानुम्–मुनि वसिष्ठ; पौन् अणि–स्वर्णशोभित; विमानत्तु–विमान पर; एऱ–चढ़े तब; वनै कऴल्–धृत पायलधारी; कुरिचिल्–पुरुषोत्तम ने; मुन्ति–पहले; मातवन्–महातपस्वी के; ताळिल्–चरणों में; वीऴ्न्तान्–दण्डवत् की। ४२२७

ऐसी साज के साथ वे सब गये। विमान आकर रुका। तब तीनों जननियाँ जिन्होंने दयासागर श्रीराम को सुखद रूप से जनाया (या पाला था), और उपवीतधारी महर्षि वसिष्ठ विमान पर चढ़े। धृत पायलधारी श्रीराम ने प्रथमतः महातपस्वी के चरणों में नमस्कार किया। ४२२७

ऍडुत्तनन् मुनिवन् मऱ्ऱव् विरामनै याशि कूऱि
अडुत्तुळ तुन्ब नोङ्ग वणैत्तणैत् तन्बु कूर्न्दु
विडुत्तुऴि मिळैय वीरन् वेदियन् ताळिल् वीऴ
वडित्तनून् मुनियु मेन्दि वाऴ्त्तिना नाशि कूऱि 4228

मुनिवन्–मुनि ने; अव् इरामनै–उन श्रीराम को; ऍटुत्तनन्–उठाया; आचि कूऱि–आशीर्वाद कहकर; अटुत्तु उळ–आगे होनेवाला; तुन्पम्–दुःख;

नीङ्क–दूर हो ऐसा; अतुपु फूर्न्तु–प्रेम के आधिक्य से; अणैत्तु अणैत्तु–कई बार आलिंगन करके; विट्टतुळि–छोड़ दिया फिर; इळैय वीरन्–छोटे वीर के; वेलियत् ताळिल्–महर्षि के चरणों में; वीळ–गिरते समय; वटित्त–श्रेष्ठतम; नूल् मुनियुम्–शास्त्रज्ञ मुनि ने; एन्ति–उठाकर; आचि कूरि–आशीर्वाद देकर; वाळ्त्तितान्–मंगल-कामना प्रगट की। ४२२८

मुनिवर ने उन्हें उठाया और आशीर्वाद दिया और भावी (जन्म आदि) दुःख से निवृत्ति के हेतु भक्ति के साथ उन्हें आलिंगन कर लिया। जब उन्होंने आलिंगन छोड़ा तब लघुवीर लक्ष्मण उनके चरणों में गिरे। शास्त्रसारज्ञ महर्षि ने उन्हें आशीर्वाद देकर मंगलकामना प्रकट की। ४२२८

केहयन् तनयै मुन्दक् कालुरप् पणिन्दु मट्रै
मॆय्कुळ लिरुवर् ताळु मुरैमैयिन् वणङ्गुञ् जॆङ्गण्
ऐयनै यवर्हळ् तामु मन्बुरत् तळुविन् तन्तम्
शॆय्यता मरैक्क णीराल् मञ्जनत् तॊळिलुञ् जॆय्दार् 4229

केकयन् तनयै–केकय-तनया को; मुन्त–पहला स्थान देकर; काल् उर–चरणों पर; पणिन्तु–नमन करके; मट्रै–बाद; मॆय् कुळल्–घने केश वाली; इरुवर् ताळुम्–दोनों माताओं के चरणों में; मुरैमैयिन्–यथाक्रम; वणङ्कुम्–नमन करने पर; चॆं कण्–अरुणाक्ष; ऐयनै–प्रभु को; अवर्कळ् तामुम्–उन्होंने भी; अन्पु उर–सस्नेह; तळुवि–आलिंगन करके; तम् तम्–अपनी-अपनी; चॆय्य–लाल; तामरै कण् नीराल्–कमल-सी आँखों के जल से; मञ्चतम्–मज्जन का; तॊळिलुम् चॆय्तार्–कार्य कर दिया। ४२२९

फिर अरुणाक्ष प्रभु ने पहले केकयतनया के चरणों में सिर लगाकर नमस्कार करने के बाद अन्य घने केश-वाली दोनों माताओं के चरणों में क्रमानुसार नमस्कार किया। माताओं ने भी उन्हें स्नेह के साथ गले लगा लिया और अपने अरुण-कमल-नेत्रों से बहनेवाले अश्रुजल से मज्जन करा दिया। ४२२९

अन्नमु मुन्नरच् चॊन्न मुरैमैयि नडियिल् वीळ्न्दाळ्
तन्निह रिलाद वॆन्ऱित् तम्बियुन् दायर् तङ्गळ्
पॊन्नडित् तलत्तिल् वीळत् तायरुम् बॊरुन्दप् पुल्लि
मन्नवर्क् किळव नीये वाळियॆन् ऱाशि शॊन्नार् 4230

अन्नमुम्–हंस-सी देवी; मुन्नर्–पहले (ऊपर); चॊन्न–कहे गये; मुरैमैयिन्–क्रम में; अटियिल् वीळ्न्ताळ्–चरणों में गिरीं; तन् निकर्–अपनी सानी; इलात–न रखनेवाले; वॆन्ऱि तम्पियुम्–विजयी कनिष्ठ भी; तायर् तङ्कळ्–माताओं के; पॊन् अटि–मनोरम चरणों में; तलत्तिल् वीळ–भूमि पर गिरे तो; तायरुम्–माताओं ने; पॊरुन्त–कसकर; पुल्लि–गले लगाकर; मन्नवर्कु–राजाराम के; इळवल् नीये–छोटे भाई (कहने योग्य) तुम ही हो; वाळि–जय हो; ऎन्ऱु–कहकर; आचि चॊन्नार्–आशीर्वचन कहे। ४२३०

हंस-सी सीताजी ने भी पूर्वोक्त क्रम में उनका नमस्कार किया। फिर उपमा-रहित लक्ष्मण ने भी माताओं के सुंदर चरणतल में गिरकर दण्डवत् की। माताओं ने गाढालिंगन करके जयोच्चार किया कि (कार्य में) केवल तुम एक राजाराम के छोटे भाई हो! और आशीर्वाद किया। ४२३०

शेवडि यिरण्डु मन्बु सडियुरै याहच् चेर्त्तिप्
पूवडि पणिन्दु वीऴ्न्द परदनैप् पॉरुमि विम्मि
नाविडै युरैप्प दॊन्रु मुणर्न्दिल निन्र नम्बि
आवियु मुडलु मॊन्रत् तऴुविन् नऴुदु शोर्वान् 4231

चेवटि इरण्टुम्–दोनों पादुकाओं और; अन्पु–भक्ति को; अटि उरै आक–चरण-भेंट के रूप में; चेर्त्ति–समर्पित करके; पू अटि–कमल-चरणों में; पणिन्तु–झुककर; वीऴ्न्त–जो गिरे; परतनै–उन भरत को देख; पॉरुमि विम्मि–सिसक कर, कलप कर; ना इटै–जिह्वा से; उरैप्पतु–कहना; ऑन्रुम्–कुछ; उणर्न्तिलन्–नहीं जानकर; निन्र–जो खड़े रहे; नम्पि–उन श्रीराम ने; आवियुम्–प्राण और; उटलुम्–शरीर; ऑन्र–मिल जायँ, ऐसा; तऴुविनन्–गले लगा लिया; अऴुतु चोर्वान्–रोकर व्यग्र होनेवाले ने। ४२३१

भरत ने दोनों पादुकाओं को अपनी भक्ति-सहित श्रीराम को भेंट के रूप में समर्पित किया और कमल-चरणों में दण्डवत् की। उन्हें देखकर श्रीराम दुःखी हो सिसके। जीभ से क्या कहा जाय? वे कुछ बोल नहीं पाये। कुछ देर स्तब्ध रहने के बाद वे प्राणों और शरीर को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके रोये और शिथिल बने रहे। ४२३१

तऴुविन निन्र कालैत् तत्तिवी ऴरुवि कालुम्
विऴुमलर्क् कण्णीर् मूरि वॆळ्ळत्ताल् मुरुहिन् शॆव्वि
वऴुवुरप् पिन्नि मूशु माशुण्ड शडैयिन् मालै
कऴुविन नुच्चि मोन्दु कन्रुकाण् करवै यन्नान् 4232

तऴुविनन्–गले लगाकर; निन्र कालै–रहते वक्त; तत्ति वीऴ्–उछलकर गिरनेवाली; अरुवि कालुम्–नदी निकालनेवाली; विऴुमलर्–श्रेष्ठ कमल-सी; कण्णीर्–आँखों के जल की; मूरि वॆळ्ळत्ताल्–बड़ी बाढ़ के कारण; मुरुकिन् चॆव्वि–यौवन का सौंदर्य; वऴु उर–बिगाड़कर; पिन्नि मूचु–ऐंठकर बटी; माचु उण्ट–मैली; चटैयिन् मालै–जटाजूट को; कऴुविनन्–धुला दिया; उच्चि मोन्तु–मूर्धा सूँघकर; कन्रु काण्–वत्स को देखनेवाली; करवै अन्नान्–दुधारी गाय के समान रहे। ४२३२

आलिंगन करके श्रीराम ने फाँदती-गिरती अश्रुजल-नदी बहानेवाली आँखों के जल की बाढ़ से यौवन-सौंदर्यहारी, ऐंठकर बटी और मैली (भरत

की) जटा को धुलाते हुए सिर सूंघा। वे तब बछड़े से मिलनेवाली दुधारी माता गाय की-सी स्थिति में रहे। ४२३२

अत्तैयदोर् कालन् दम्बीरु चडैमुडि यडिय दाहक
कत्तैकळ लमरर् कोमाड् कट्टवड् पडुत्त काळै
तुत्तैपरि करिते रूर्दि यॅन्ऱिवै पिऱवुन् दोलिन्
विनैयुरु वॅरुप्पुक् कीन्दान् विरैमलर्त् ताळिन् वीऴ्न्दान् 4233

अत्तैयतु–ऐसे; ओर् कालत्तु–उस समय में; कत्तैकऴल्–ध्वनिमय पायलधारी; अमरर् कोमात्–देवेन्द्र के; कट्टवत्–विजेता (इन्द्रजित्) को; पट्टुत्त काळै–जिन्होंने मारा, उन ऋषभ-सम; तुत्तै–तीव्रगामी; परि–अश्व; करि–हाथी; ऊर्ति तेर्–सवारी का रथ; ऍन्ऱ्–जो है; इवै–ये और; पिऱवुम्–अन्य; तोलित्–चमड़े की; विन्तै उरु–बनी; चॅरुप्पुक्कु–पादुका को; ईन्तात्–समर्पित किये थे (जिन्होंने) वे भरत; विरै मलर्–सुगंधित कमल-सम; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्णवर्ण; चटै मुटि–जटाभार को; अटियतु आक–चरणों में लगाकर; ताळित् वीऴ्न्तात्–चरणों पर गिरे। ४२३३

तब ध्वनिमय पायलधारी देवेंद्रविजेता इंद्रजित् के संहारक, ऋषभ-सम लक्ष्मण ने उन भरत के चरणों से अपना सुगंधित कमल-सम स्वर्णिम जटा वाला सिर लगाकर उनमें नमस्कार किया; जिन्होंने श्रीराम की चमड़े की बनी पादुका को तीव्रगामी अश्व, गज, वाहन रथ आदि समर्पित किये थे। ४२३३

ऊडुरु कमलक् कण्णीर् तिशैतोरुञ् जिविरि योडत्
ताडोडु तडक्कै यारत् तऴुविनन् तनिमै नीङ्गिक्
काडुरैन् दुलैन्द मॅय्यो कैयरु कवलै कूर
नाडुरैन् दुलैन्द मॅय्यो नैन्ददॅन् ऱुलह नैय 4234

उलकम्–लोकवासी; तनिमै नीङ्कि–अकेला रहना असंभव करके; काटु उऱैन्तु–वन में वास करके; उलैन्त–जो धुला; मॅय्यो–वह शरीर; कै अऱु–निष्क्रिय बनानेवाली; कवलै कूर–चिंता के बढ़ने से; नाटु उऱैन्तु–देश में रहकर; उलैन्त मॅय्यो–जो घुला वह शरीर; नैन्ततु–कृश हुआ; ऍन्ऱु–ऐसा पूछकर; नैय–क्षुब्ध हुए; कमलम् कण्–कमल-से नेत्र; ऊटु उऱु–से बहनेवाला; कण्णीर्–अश्रु; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाओं में; चिविऱि ओट–छितरकर बहा; ताळ् तोटु–आजानु; तट कै–विशाल बाहुओं से; आर तऴुवितत्–खूब लपेट लिया। ४२३४

उन दोनों को देखकर लोकवासी यह पूछने लगे कि प्रभु को अकेले न जाने देकर जो वन में रहे और कृश हो गये उन लक्ष्मण का शरीर कृश है या निष्क्रिय बनानेवाले दुःख के बढ़ते राज्य में रहकर जो घुले उन भरत का शरीर कृश है? लोकवासियों के दुःख के कारण व्यग्र होते उनके कमल-नेत्रों से जो अश्रु बह निकला वह सभी दिशाओं में बिखरकर बहा।

तब भरत ने अपने आजानु भुजाओं से लक्ष्मण को गाढ़ालिंगन कर लिया। ४२३४

मूवर्क्कु मिळैय वळ्ळल् मुडिमिशै मुहिऴ्त्त कैयन्
तेवर्क्कुन् देवन् ताळुम् जॅऴिकऴ लिळवल् ताळुम्
पूवर्क्कम् बॉऴिन्दु वीऴ्न्दा नॆडुत्तनर् पॊरुन्दप् पुल्लि
वाविक्कु ळन्न मन्नाळ् मलरडित् तलत्तु वीऴ्न्दान् 4235

मूवर्क्कुम्–तीनों के; इळैय–छोटे; वळ्ळल्–प्रभु शत्रुघ्न; मुटि मिचै–सिर पर; मुकिऴ्त्त–अंजलि करके रखे गये; कैयन्–हाथोंवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के; तेवन्–देव श्रीराम के; ताळुम्–चरणों में और; चॅऴि कऴल्–पहनी हुई पायल वाले; इळवल् ताळुम्–लघुराज के चरणों में; पू वर्क्कम्–पुष्पवर्ग; पॊऴिन्तु–बरसकर; वीऴ्न्तान्–गिरे; ऍटुत्तनर्–उठाया; पॊरुन्त–खूब कसकर; पुल्लि–आलिंगन करके; वाविक्कुळ्–सरोवर में (रहते); अन्नम् अन्नाळ्–हंस के समान जो रहती हैं उनके; मलर्–कमल-सम; अटि तलत्तु–चरणतल में; वीऴ्न्तान्–गिरा शत्रुघ्न। ४२३५

फिर तीनों के छोटे भाई शत्रुघ्न सिर पर अंजलिबद्ध हाथ धरे आये और देव-देव श्रीराम के और धृत पायलधारी लक्ष्मण के चरणों में पुष्पराशि बरसाकर विनत हुए।' दोनों ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। बाद शत्रुघ्न सरोवरवासी हंस के सदृश रहनेवाली सीताजी के कमल-चरण में गिरे। ४२३५

पिन्तिणैक् कुरिशिल् तन्नैप् पॅरुङ्गैयाल् वाङ्गि वीङ्गुम्
तन्तिणैत् तोळ्ह ळारत् तऴुवियत् तम्बि मारुक्
किन्नुयिर्त् तुणैवर् तम्मैक् काट्टिना निरुवर् ताळुम्
मन्नुयिर्क् कुवमै कूर वन्दवर् वणक्कन् जॅय्दार् 4236

पिन् इणै कुरिचिल् तन्नै–अपने लघु भ्राता भरत से जो कभी नहीं बिछड़ता उसे; पॅरु कैयाल्–विशाल हाथों से; वाङ्कि–उठाकर श्रीराम ने; तन्–अपने; वीङ्कुम्–फूले हुए; इणै तोळ्कळ्–हस्तद्वय से; आर तऴुवि–कसकर आलिंगन करके; अ तम्पि मारुक्कु–उन छोटे भाइयों को; इन् उयिर्–अपने प्राणप्यारे; तुणैवर् तम्मै–साथियों को; काट्टिनान्–दिखाया; मन् उयिर्क्कु–नित्य प्राणों के; उवमै कूर–समान जो रहे उन; वन्तवर्–आगतों ने; इरुवर् ताळुम्–दोनों के चरणों में; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। ४२३६

बाद श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भरत से अपृथक् रहनेवाले शत्रुघ्न को उठाकर अपने दोनों स्थूल भुजाओं से कसकर आलिंगन किया। फिर उन दोनों भाइयों को अपने प्राणप्यारे मित्रों का परिचय कराया। श्रीराम के मधुर प्राण-सम प्यारे उन लोगों ने जो श्रीराम के साथ आये थे भरत और शत्रुघ्न के चरणों में नमस्कार किया। ४२३६

कुरक्कितत् तरशैच् चेयैक् कुमुदनैच् चाम्बत्र् तन्नैच्
चॅरुक्किळर् नीलन् तन्नै मऱ्ऱुमत् तिऱत्ति नोरै
अरक्ककरुक् करशै वेव्वे ऱडैवितिन् मुदन्मै कूऱि
मरुक्कमऴ् तॉडैयन् मालै मार्बिनन् परद निन्ऱान् 4237

मरु कमऴ्–सुगंध छिटकानेवाली; तॉटैयल्–गुँथी; मालै मार्पिनन्–माला से शोभित वक्ष वाले भरत; कुरक्कु इनत्तु–वानरकुल के; अरचै–राजा को; चेयै–पुत्र अंगद को; कुमुतनै–कुमुद को; चाम्पन् तन्नै–जाम्बवान को; चॅरु किळर्–युद्धोत्साही; नीलन् तन्नै–नील को; मऱ्ऱुम्–और; अ तिऱत्तिनोरै–उस वर्ग को; अरक्ककरुक्कु–राक्षसों के; अरचै–राजा को; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; अटैविनिल्–क्रमानुसार; मुतन्मै–शिष्टवचन; कूऱि निन्ऱान्–कहकर खड़े रहे। ४२३७

सुगंधित, गुँथी मालाधारी भरत ने वानरराजा, राजपुत्र अंगद, कुमुद, जाम्बवान, युद्धोत्साही नील से और अन्य वानरों से, तथा राक्षसराज से अलग-अलग और क्रमानुसार शिष्ट वचन कहे। कहकर वे खड़े रहे। ४२३७

मन्दिरच् चुऱ्ऱत् तुळ्ळार् तम्मॊडुम् वयङ्गु तानैत्
तन्विरत् तलैव रोडुन् दमरोडुन् दरणि याळुम्
शिन्दुरक् कळिऱु पोल्वा रॅवरोडुञ् जेनै योडुम्
शुन्दरत् तडन्दोळ् वॅऱ्ऱिच् चुमन्दिरन् तोन्ऱि नान् 4238

चुन्तरम्–सुन्दर; तट तोळ्–विशाल-बाहु; वॅऱ्ऱि–विजयी; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मन्तिरम्–मंत्री; चुऱ्ऱत्तु–मंडल में; उळ्ळार् तम्मॊटुम्–रहे लोगों के साथ; वयङ्कु तानै–गण्य सेना के; तन्तिरर् तलैवरोटुम्–सेनानायकों के साथ; तमरोटुम्–परिवारों के साथ; तरणि–धरणी के; आळुम्–पालक; चिन्तुरम्–सिंदूर-तिलक-धारी; कळिऱु पोल्वार्–हाथियों के समान; ॲवरोटुम्–सभी के साथ; चेनैयोटुम्–सेना के साथ; तोन्ऱिनान्–आया। ४२३८

सुंदर विशाल-बाहु तथा विजयी सुमंत्र, मंत्रीगण, सेना-सहित सेनानायकों तथा अपने (या उनके) परिवारों और सिंदूरतिलकधारी हाथियों-सम धराधिपों को साथ लेकर श्रीराम के दर्शन के लिए आया। ४२३८

अळुहैयु मुवहै तानुन् दनित्तनि यमरशॆय् देऱत्
तॊळुदन ॲळुन्दु विम्मिच् चुमन्दिर निऱ्ऱ लोडुम्
तळुविन निरामन् मऱ्ऱैत् तम्बियु मनैय नीरात्
वळुविनि युळदन् ऱॆन्द मानिलक् किळत्तिक् कॊन्ऱान् 4239

अळुकैयुम्–रोना और; उवकै तानुम्–आनन्द; तनि तनि–अलग-अलग; अमर्–युद्ध; चॆय्तु–करके; एऱ–चढ़ा; तॊळुतनन्–नमन करके; ॲळुन्तु–उठा; विम्मि–रोकर; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; निऱ्ऱलोटुम्–जब खड़ा रहा तब; इरामन्–श्रीराम ने; तळुविनन्–गले लगा लिया; मऱ्ऱै तम्पियुम्–अन्य भाई (लक्ष्मण) ने

भी; अतैय नीरान्–वही किया; इन्त मानिलम् किऴत्तिक्कु–इस बड़ी भूमिदेवी को; इत्ति–आगे; वऴु–हानि; उळतु–होगी; अनॢ–नहीं; ॲन्ऱान्–कहा। ४२३९

सुमंत्र के मन में रोना और आनंद दोनों परस्पर स्पर्धा करके उठ आते थे। नमस्कार करके, सिसकते हुए वह खड़ा रहा। तब श्रीराम ने उसे गले लगा लिया। उनके कनिष्ठ लक्ष्मण ने भी वैसा ही किया। सुमंत्र ने आनंद के साथ श्रीराम से कहा कि अब यह महीयसी भूमिदेवी निर्विघ्न हो गयी। ४२३९

एऱुह शेत यॅल्लाम् विमानमी दॅन्ऱु तन्बोल्
माऱिला वीरन् कूऱ वन्दुळ वनीह वॅळ्ळम्
ऊऱिरुम् बरवै वानत् तॅऴिलियु ळॊडुङ्गु मापोल्
एऱिमऱ् ऱिळैय वीर तिणैयडि तॊऴुद दन्ऱे 4240

तन् पोल्–जिनके समान; माऱु इला–दूसरा नहीं रहा; वीरन्–वीर श्रीराम के; चेनै ॲल्लाम्–सारी सेना; विमान मीतु–विमान पर; एऱुह–चढ़े; ॲन्ऱु कूऱ–ऐसा कहने पर; वन्तु उळ–जो आयी थी; अनीकम् वॅळ्ळम्–वह सेना की बाढ़; ऊऱु इरु परवै–स्रोतयुक्त बड़ा सागर; वानत्तु–आकाश के; ॲऴिलियुळ्–मेघ के अन्दर; ऒडुङ्कुमा पोल्–समा जाय जैसे; एऱि–चढ़कर; इळैय वीरन्–छोटे वीरों के; इणै अटि–चरणद्वय की; तॊऴुतु–वन्दना करके रही। ४२४०

तब अप्रतिम वीर श्रीराम ने आज्ञा दी कि सारी सेना विमान पर सवार हो जाये। सारी सेना इस प्रकार विमान में घुसी मानो स्रोतयुक्त बड़ा सागर आकाशस्थित मेघ में समा जाता हो। उसने छोटे वीर के चरणद्वय की वन्दना की। ४२४०

उरैशॅयि नुलह मुण्डान् मणियणि युदर मॊव्वा
करैशॅय लरिय वेदक् कुऱुमुनि कैयु मॊव्वा
विरैशॅऱि यलङ्गन् मालैप् पुट्पह विमान मॅन्ऱॆन्
ऱुरैशॆय्दु वानु ळोर्ह ळॊण्मलर् तूवि यार्त्तार् 4241

वानुळोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; विरै चॅऱि–सुगन्धपूर्ण; अलङ्कल् मालै–हिलती माला से अलंकृत; पुट्पकम् विमानम्–पुष्पकविमान; उरै चॅयिन्–कहना हो तो; उलकम् उण्टान्–लोकभोक्ता; मणि अणि–सुघड़ सुन्दर; उतरम् ऒव्वा–उदर भी उपमा न होगा; करै चॅयल् अरिय–अपार; वेतम्–वेदज्ञ; कुऱु मुनि कैयुम्–छोटे मुनि अगस्त्य का हस्त; ऒव्वा–उपमा नहीं बन सकता; ॲन्ऱु–ऐसा; ॲन्ऱु–यह; उरै चॅय्तु–कहकर; ऒळ् मलर्–उज्ज्वल पुष्प; तूवि–बिखेरकर; आर्त्तार्–जयनाद किया। ४२४१

आकाशलोकवासी देवों ने कहा कि इस पुष्पकविमान की उपमा कहनी हो तो कहना चाहिए कि श्रीविष्णु ने सारे लोकों को प्रलयमें जिस

अपने उदर में समा लिया था, वह बहुत सुंदर और सुडौल उदर भी इसकी उपमा नहीं हो सकता। क्यों? नाटे मुनि अगस्त्य ने सारे समुद्र को अपने चुल्लू में उठा लिया था वह चुल्लू भी इससे उपमित नहीं किया जा सकता। उन्होंने उज्ज्वल पुष्प बिखेरकर जयनाद किया। ४२४१

अशनियिऩ् कुळुवु माऴि येऴमौत् तार्त्त दॅन्ऩ
विशैयुरु मुरशुम् वेदत् तोदैयुम् विळिहोळ् शङ्गुम्
इशैयुरु कुरलु मेत्ति ऩरवमु मॅळ्ऩ्दु पोङ्गित्
तिशैयुरच् चॅन्ऱु वाऩो रन्दरत् तॊलियिऱ् ऱीर्न्द 4242

विचै उरु–शीघ्र फैलनेवाली; मुरचुम्–भेरी ध्वनि और; वेतत्तु ओतैयुम्–वेदध्वनि; विळि कॊळ्–गूँजनेवाली; चङ्कुम्–शंखध्वनि; इचै उरु–संगीत की; कुरलुम्–कण्ठध्वनि; एत्तिन्–स्तुति का; अरवमुम्–शब्द और; अचनियिन्–अशनि की; कुळुवुम्–राशियाँ; एळु आऴियुम्–सात समुद्र; ऒत्तु–एक साथ; आर्त्तत्तु ॲन्न–ध्वनि कर उठे जैसे; ॲऴुन्तु–उठ; पोङ्कि–बढ़कर; तिचै उरु–दिशाओं में; चॅन्ऱु–जाकर; वानोर्–देवों की (स्तुति) की; अन्तरत्तु ऒलियिल्–अंतरिक्ष ध्वनि में; तीर्न्त–समा गये। ४२४२

शीघ्र फैलती भेरी-ध्वनि, वेदस्वर, गूँजती शंखध्वनि, और कंठ-संगीत-ध्वनि तथा स्तुति का शब्द— सब अशनिराशियाँ और सातों समुद्र गर्जन कर उठे हों, ऐसा उठा, बढ़ा, दिशाओं में गया और आकाश में जाकर देवों की स्तुति के नाद में विलीन हो गया। ४२४२

अव्वयिऩ् विमाऩन् दावि यन्दरत् तयोत्ति नोक्किच्
चॅव्वैयिऱ् पडर लुऱ्ऱ शॅहतल मडन्दै योडुम्
इव्वुल हत्तु ळोर्ह ळिन्दिर ऩुलहु काण्बान्
कव्वैयि ऩेहु हिऩ्ऱ नीर्मैयैक् कडुक्कु मऩ्ऱे 4243

अव्वयिन्–वहाँ से; विमानम्–विमान; अन्तरत्तु तावि–आकाश में उड़कर; अयोत्ति नोक्कि–अयोध्या की तरफ़; चॅव्वैयिल्–सीधे; पटरल् उऱ्ऱ–जो गया वह; चॅक तलम्–जगतल की; मटन्तैयोटुम्–देवी के साथ; इव् उलकत्तु उळोर्कळ्–इस लोक के लोग; इन्तिरन्–इन्द्र के; उलकु–लोक को; काण्पान्–देखने के लिए; कव्वैयिन्–बड़े कोलाहल के साथ; एकुकिन्ऱ–जाते हों वैसी; नीर्मैयै–स्थिति; कटुक्कुम्–के समान था। ४२४३

तब विमान उठा, आकाश में उड़ा और अयोध्या की तरफ़ जाने लगा। वह दृश्य तब ऐसा लगा मानो भूलोकवासी भूमि की अधीश्वरी के साथ देवेंद्रनगर को देखने के निमित्त बड़े शोर के साथ उठ जा रहे हों। ४२४३

आऩदो रळवैयि ऩमरर् कोऩॊडुम्
वाऩवर् तिरुनहर् वरुव दामॆऩ
मेऩिरै वाऩवर् वीशुम् बूवॊडुम्
ताऩुयर् पुट्पह निलत्तॆच् चाऱ्ऩददाल् 4244

आऩतु ओर् अळवैयिऩ्—उस (एक) समय; ताऩ् उयर्—सर्वश्रेष्ठ; पुट्पकम्—पुष्पकयान; अमरर् कोऩॊटुम्—देवेन्द्र के साथ; वाऩवर्—देवों का; तिरुनकर्—श्रीनगर; वरुवतु आम्—आता हो; ऎऩ—जैसे; मेल्—ऊपर; निरै—भीड़ में रहे; वाऩवर् वीचुम्—देववर्षित; पूवॊटुम्—पुष्पों के साथ; निलत्तै—भूमि पर; चाऱ्ऩतु (नंदिग्राम) आया। ४२४४

और उस समय सर्वश्रेष्ठ पुष्पक देवेंद्र-सह देवेंद्रनगर (अयोध्या के दर्शनार्थ) आ रहा हो, जैसे आया। उस पर आकाशस्थ बड़ी भीड़ के देवों ने फूल बरसाये। पुष्पों से भरा वह भूमि पर (नंदिग्राम) आया। ४२४४

38. तिरुमुडि शूट्टु पडलम् (श्रीकिरीट-धारण पटल)

नम्बिय परद ऩोडु नन्दियम् बदियै नण्णि
वम्बलर् शडैयु माऱ्ऱि मयिर्विऩै मुऱ्ऱि मऱ्ऱैत्
तम्बिय रोडु ताऩुम् शरयुविऩ् पुऩलिऩ् ऱोय्न्दे
उम्बरु मुवहै कूर वॊप्पऩै यॊप्पच् चॆय्दार् 4245

नम्पिय—विश्वासी; परतऩोटु—भरत के साथ; मऱ्ऱैत् तम्पियरोटु—अन्य सहोदरों के साथ; ताऩुम्—स्वयं; नन्ति अम्पतियै—सुन्दर नंदिग्राम; नण्णि—आकर; वम्पु—सुगन्ध; अलर्—देनेवाली; चटैयुम् माऱ्ऱि—जटा निवारकर; मयिर् विऩै—केश-श्रृंगार का कार्य; मुऱ्ऱि—पूरा करके; चरयुविऩ्—सरयू के; पुऩलिल्—तीर्थ में; तोय्न्तु—स्नान करके; उम्परुम्—देवों को भी; उवकै कूर—आनंद अधिक देते हुए; ऒप्पऩै—श्रृंगार; ऒप्प—युक्त; चॆय्तार्—कर लिये। ४२४५

अपने पर अकाट्य विश्वास रखनेवाले भरत के और अन्य लघु सहोदरों के साथ श्रीराम रमणीय नंदिग्राम आये। वहाँ सुगंधित जटा का निवारण करके बाल के बनाने का कार्य किया गया। सरयू में स्नान करने के बाद उचित रीति से उनका श्रृंगार किया गया, जिसे देखकर देव लोगों का आनंद बढ़ा। ४२४५

निरुदियिऩ् तिशैयिऩ् ऱोऩ्ऱु नन्दियम् बदियै नीङ्गि
कुरुदिकॊप् पळिक्कुम् वेलाऩ् कॊडिमदि लयोत्ति मेवच्
चुरुदियेत् तनैय वॆळ्ळैत् तुरहदक् कुलङ्गळ् पूण्ड
परुदियोत् तिलङ्गुम् बॆम्बॊऱ् परुमणित् तेरि ऩाऩ्ऱाऩ् 4246

कुरुति—रक्त; कॊप्पळिक्कुम्—उगलते; वेलाऩ्—भाले वाले; निरुतियिऩ्—दक्षिण-पश्चिम; तिचैयिल्—दिशा में; तोऩ्ऱुम्—रहनेवाले; नन्ति अम् पतियै—सुन्दर नंदिग्राम को; नीङ्कि—छोड़कर; कॊटि मतिल्—ध्वजाओं वाले प्राचीरों को;

अयोत्ति मेव-अयोध्या आये; एत्तु-स्तोता; चुरुति-वेदों के; अतैय-समान; वॆळ्ळै-श्वेत; तुरकतम्-अश्वों को; कुलङ्कळ् पूण्ट्ट-राशियों से जोता जाकर; परुति-सूर्य; ऑत्तु-के समान; इलङ्कुम्-रहनेवाले; पॆम्पूण्-ताजे स्वर्ण से निर्मित; परु मणि-बड़े रत्नों से युक्त; तेरिन् आतान्-रथस्थ हुए। ४२४६

रक्तवमनकारी भाले के धारक स्वामी श्रीराम ने दक्षिण-पश्चिम के नंदिग्राम को छोड़कर ध्वजाओं से युक्त प्राचीरों वाली अयोध्या जाने के लिए स्तोता वेद-सदृश श्वेत तुरगचतुष्टय के जुते, सूर्य-सम शोभायमान तथा जडित स्वर्ण-सह मणिमय रथ पर सवार हुए। ४२४६

ऊऴियिन् तिरुदि काणुम् वलियित्त उयर्पॊऱ् ऱेरिन्
एऴुयर् मदमा वत्त्त इलक्कुवन् कविहै येन्दप्
पाऴिय मऱ्ऱैत् तम्बि पाल्निऱक् कवरि पऱ्ऱप्
पूऴियै यडक्कुङ् गण्णीर्प् परदन्कोल् कॊळ्ळप् पोनान् 4247

ऊऴियिन्-युग का; इऱुति-अन्त; काणुम्-देख सकनेवाले राम; वलियित्तु-बल से युक्त; उयर्-उन्नत; पॊन् तेरिन्-स्वर्णरथ पर; एऴु-सात हाथ के; उयर्-ऊँचे; मतम्मा अत्तु-मस्त गज के समान; इलक्कुवन्-लक्ष्मण के; कविकै एन्त-श्वेत छत्र धारण करते; पाऴिय-पराक्रमी; मऱ्ऱै तम्पि-अन्य भाई (शत्रुघ्न) के; पाल् निऱम्-दुग्धवर्ण; कवरि पऱ्ऱ-चामर डुलाते; पूऴियै-धूलि को; अटक्कुम्-थमानेवाले; कण्णीर्-अश्रुजल वाले; परतन्-भरत के; कोल् कॊळ्ळ-वेत्र हाथ में लेते; पोनान्-गये। ४२४७

युगांतदर्शनबली उस उन्नत रथ पर जब श्रीराम गये तब सात हाथ के ऊँचे, मस्त हाथी के समान लक्ष्मण श्वेत छत्र धारण करते गये। बलवान शत्रुघ्न ने दुग्धवर्ण चामर डुलाया। धूलि को जमा दे, इस रीति से आँसू बहानेवाले भरत ने वेत्र लेकर सारथ्य किया। ४२४७

वीडणक् कुरिशिल् मऱ्ऱै वॆङ्गदिर्च् चिऱुवन् वॆऱ्ऱिक्
कोडणै कुन्ऱ मेऱिक् कॊण्डरेर् मरुङ्गु शॆल्लत्
तोडणै मवुलिच् चॆङ्गण् वालिशेय् तूशि शॆल्लच्
चेडनैप् पॊरुवुम् वीर मारुदि पिन्बु शॆन्ऱान् 4248

कुरिचिल् वीटणन्-श्रेष्ठ विभीषण; मऱ्ऱै-और; वॆम् कतिर् चिऱुवन्-गरम किरणमाली का पुत्र; वॆऱ्ऱि-विजयी; कोट्टु अणै-तथा दाँतों से युक्त; कुन्ऱम् एऱि-पर्वत (हाथी) पर चढ़कर; कॊण्टल्-मेघसदृश श्रीराम के; तेर् मरुङ्कु-रथ के पास-पास; चॆल्ल-गये और; तोट्टु अणै-पुष्पदलों वाले; मवुलि-किरीटधारी; चॆं कण्-लाल आँखों के; वालि चेय्-वालीपुत्र के; तूचि चॆल्ल-हरावल में जाते; चेटनै पॊरुवुम्-शेषनाग-सम; वीर मारुति-वीर मारुति; पिन्पु चॆन्ऱान्-पीछे गया। ४२४८

उत्तम विभीषण और गरम किरणों के स्वामी सूर्य का सुत सुग्रीव

दोनों विजयी दंती पर्वत-सम गजों पर आरूढ़ हो रथ के दोनों ओर पास-पास गये। मालाधारी किरीटमंडित लाल आँख का वालीपुत्र अंगद हरावल में चला और शेषनाग-सम मारुति सबसे पीछे। ४२४८

अऱुपत्ते ऴुमैन्द कोडि याऩैमेल् वरिशैक् कातॣऱ
तिऱमुड्ऱ शिऱप्प राहि माऩुडच् चॆव्वि वीरम्
पॆरुहुड्ऱ वऩप्प रुच्चि पिऱङ्गुवॆण् कुडैयर् शॆच्चै
मऱुवड्ऱ वलङ्गत् मार्बर् वानरत् तलैवर् पोऩार् 4249

वरिचैक्कु–पद के; आतॣऱ–अनुसार युक्त; तिऱम् उड्ऱ–बल से लगकर; चिऱप्पर् आकि–विशिष्ट बनकर; मानुटम्–मानव के; चॆव्वि–रूप में रहकर; वीरम् पॆरुकुड्ऱ–वीरता में बढ़े; वऩप्पर्–सौंदर्य वाले; उच्चि पिऱक्कु–ऊपर शोभित; वॆळ् कुटैयर्–श्वेत छत्रवाले; चॆच्चै–लाल चंदन लेप से लिप्त; मऱु अड्ऱ–निर्दोष; अलङ्कल्–मालाधारी; मार्पर्–वक्षवाले; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; अमैन्त कोटि–करोड़; वानरर् तलैवर्–वानरयूथप; याऩै मेल् पोऩार्–हाथियों पर (सवार हो) गये। ४२४९

पद के अनुसार स्थान में, युक्त विशेषता के साथ सड़सठ वानरयूथप मानव-रूप में सुन्दर बनकर ऊपर श्वेतछत्र के शोभित होते लाल चंदन-लिप्त तथा मालाधारी वक्ष की शोभा दिखाते हुए गजों पर गये। ४२४९

ऎॅट्टॆऩ विऱुत्त पत्ति ऩेऴ्पॊऴिल् वळाह वेन्दर्
पट्टम्वॆत् तमैन्द नॆऱ्ऱिप् पहट्टिऩर् पैम्बॊऩ् ऱेरर्
वट्टवॆण् कुडैयर् वीशु शामरै मरुङ्गर् वाऩत्
तॊट्टवॆञ् जोदि मोलिच् चॆन्ऩियर् तॊऴुदु शूऴ्न्दार् 4250

पट्टम् वॆत्तु–मुखपट्ट लगाकर; अमैत्त–सजे हुए; नॆऱ्ऱि पकट्टिऩर्–मस्तकों के हाथियों के; पैम् पॊऩ्–खरे स्वर्ण के; तेरर्–रथों पर सवार; वट्टम् वॆण् कुटैयर्–मंडलाकार श्वेत छत्र वाले; चामरै वीचुम्–चामर डुलानेवाले; मरुङ्कर्–जिनके पार्श्व में हों, वे; वाऩ् तॊट्ट–आकाशस्पर्शी; वॆम् चोति–तेज ज्योति के; मोलि चॆन्ऩियर्–किरीट-धारी सिरों वाले; ऎॅट्टु ऎॅऩ्–आठ में; इऱुत्त पत्तिऩ्–समाप्त दस, अठारह के; एऴु पॊऴिल्–सात भू के; वळाकम् वेन्तर्–मंडलों के राजा; तॊऴुतु चूऴ्न्तार्–नम कर घेरते आये। ४२५०

अठारह भागों में विभक्त सात मंडलों के अधिपति राजा मुखपटालंकृत गजों के साथ, खरे स्वर्ण के रथों पर, श्वेतछत्र, चामर आदि राज-मर्यादाओं की सेवा स्वीकार करते हुए मनोरम ज्योतिर्मय मुकुट पहने, विनत होकर श्रीराम को घेरे जा रहे थे। ४२५०

वाऩर महळि रॆल्लाम् वाऩवर् महळि रायवऩ्
दूऩमिल् पिडियु मॊण्डार्प् पुरवियुम् बिऱवु मूर्न्दु

मीऩिऩ मदियैच् चूऴ्न्द तऩ्मैयिऩ् विरिन्दु शुऱ्ऱप्
पूनिऱ विमाऩत् दऩ्मेऩ् मिदिलैनाट् टऩ्ऩम् पोनाळ् 4251

वानर मकळिर् ॲल्लाम्–वानरियाँ सभी; वानवर् मकळिराय् वन्तु–देवांगनाओं के रूप में आकर; ऊनम् इल्–निर्दोष; पिटियुम्–हथिनियों; ऑळ् तार्–उज्ज्वल किंकिणी वाले; पुरवियुम्–अश्वों और; पिऱवुम्–अन्यों पर; ऊर्न्तु–सवार हो आयीं; मीन् इऩम्–नक्षत्रगण; मतियै–चन्द्र को; चूऴ्न्त–आवृत रहें; तऩ्मैयिन्–उस प्रकार; विरिन्तु चुऱ्ऱ–विस्तृत मंडल में घेरे रहीं; पू–सौंदर्य तथा; निऱम्–रंगीन; निमाऩम् तऩ् मेल्–विमान पर; मितिलै नाटु–मिथिला देश की; अऩ्ऩम् पोनाळ्–हंस-सी सीता गयीं। ४२५१

सभी वानरियाँ अप्सराओं के रूप में आयीं और वे निर्दोष सुडौल हथिनियों, उज्ज्वल हारों से अलंकृत अश्वों और अन्य (शिविका आदि) वाहनों पर आरूढ़ होकर चंद्र को आवृत रहनेवाले नक्षत्रगणों के समान आ रही थीं। सुन्दर सुवर्ण-विमान पर श्री मिथिलादेशजा हंस-सी सीता उनके मध्य गयीं। ४२५१

तेवरु मुऩिवर् तामुन् दिशैतोऱु मलर्हळ् शिन्द
ओवलिऩ् मारि येय्प्प वॆङ्गणु मुदिर्न्दु वीङ्गिक्
केवल मलराय् वेऱो रिडमिऩ्ऱिक् किडन्द वाऱ्ऱाल्
पूवॆऩ्ऩु नाम मिऩ्ऱिव् वुलहिऱ्कुप् पॊरुन्दिऱ् ऱिऩ्ऱे 4252

तेवरम्–देवों के; मुऩिवर् तामुम्–और मुनियों के; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाओं में; ओवलिल्–निरन्तर; मारि–वर्षा; एय्प्प–के समान; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; मलर्कळ् चिन्त–पुष्पों को बिखेरने से; उतिर्न्तु–छितरकर; वीङ्कि–बहुत फैलकर; केवलम्–केवल; मलराय्–सुमन ही सुमन; वेऱु ओर्–अन्य कोई; इटम् इऩ्ऱि–स्थान नहीं; किटन्त आऱ्ऱाल्–पड़े रहे इसलिए; पू ॲऩ्ऩुम्–'भू' का; नामम्–नाम; इऩ्ऱु–आज; इव् उलकिऱ्कु–इस लोक के लिए; पॊरुन्तिऱ्ऱु–बहुत ही युक्त रहा। ४२५२

देवगण और मुनि लोग निरंतर बारिश होती हो जैसे फूल बरसा रहे थे। इसलिए सर्वत्र पुष्प ही पुष्प अत्यधिक परिमाण में छितरे पड़े थे और खाली स्थान दिखायी ही नहीं देता था। उस दृश्य को देखकर लगता है भू का नाम इस धरा के सम्बंध में सार्थक तथा समुचित बन गया। (तमिऴ में "पू" संस्कृत की "भू" को भी कहते हैं; यद्यपि संस्कृत में 'पू' और 'भू' में उच्चारण में भी अंतर है और अर्थ में भी। संस्कृत के 'भ' को तमिऴ में 'प' ही लिखा जा सकता है।)। ४२५२

कोडैयिल् वऱन्द मेहक् कुलमॆऩप् पदित्ता लाण्डु
पाडुऱु मदत्तॆय् याद पणैमु परमहप् याऩै

काडुरै यण्ण लॅय्दक् कडान्दिऱन् दुहुत्त वारि
ओडिन वुळ्ळत् तुळ्ळ कळितिऱन् दुडैत्त दॅपोल् 4253

कोटॅयिर्–ग्रीष्मकाल में; वऱन्त–शुष्क; मेकम् कुलम् अॅन–मेघसमूह के समान; पतिनालु आण्टु–चौदह साल; पाटु उऱ–बहनेवाले; मतम्–मद को; चॅय्यात–जिन्होंने न निकाला; पणै–दाँतों को; मुकम्–मुख पर रखनेवाले; परमम् यानै–हौदेयुक्त गजों ने; काटु उऱै–वनवासी रहे; अण्णल्–प्रभु के; अॅय्त–लौटने पर; कटाम् तिऱन्तु–गण्डस्थल खोलकर; उकुत्त वारि–जो बहाया वह मदजल; उळ्ळत्तु उळ्ळ–अन्दर (मन में) रहा; कळि तिऱन्तु–आनन्द खुलकर; उटैत्तते पोल्–मानो बाँध तोड़कर; ओटिन–बहा। ४२५३

इन चौदह सालों में जो हाथी शुष्क मेघों के समान मदनीर-रहित थे, अब उनमें मस्ती आ गयी और गण्डस्थल खोलकर मदनीर बहाने लगे। वह ऐसा लगा मानो उनका आंतरिक आनंद गाल खोलकर बाहर मदजल के रूप में बह रहा हो। ४२५३

तुरुवत्तार्प् पुरवि यॅल्ला मूङ्गैयर् शॊर्पॅऱ् ऱॅन्न
अरवप्पोर् मेह मॅन्न वालित्त मरङ्ग ळात्ऱ
परुवत्ताऱ् पूत्त वॅन्नप् पूत्तन पहैविऱ् चीऱुम्
पुरुवत्तार् मेनि यल्लाम् वीत्निऱप् पशलै पूत्त 4254

तुरुवम् तार्–सदा पहने हुए हारों वाले; पुरवि अॅल्लाम्–सारे अश्व; मूङ्कैयर्–गूँगे; चॊल् पॅऱ्ऱ–वाणी पा गये हों; अॅन्न–ऐसा; अरवम्–गर्जन; पोर् मेकम्–युक्त मेघों के; अॅन्न–समान; आलित्त–हिनहिनाये; मरङ्कळ्–तरु; आऩ्ऱ–युक्त; परुवत्ताल्–मौसम में; पूत्त अॅन्न–खिले जैसे; पूत्तन–पुष्पों से भर गये; पकै–शत्रु पर; विल् चीऱुम्–धनु के समान गुस्सा करनेवाली; पुरुवत्तार्–भौंहों वाली; मेनि अॅल्लाम्–सभी रमणियों के शरीरों में; पॊन् निऱम्–स्वर्ण-रंग का; पचलै पूत्त–वैवर्ण्य फैला। ४२५४

सदा हारों से अलंकृत रहनेवाले घोड़े भाषण-शक्ति प्राप्त गूँगों के समान, वा अशनिघोषयुक्त मेघों के समान उच्च स्वर में हिनहिनाये। तरुओं में मानो मौसम आया हो, खूब पुष्प लग गये। शत्रु पर झुकाये गये धनुष के समान गुस्सा दिखानेवाली भौंहों से युक्त तरुणियों के शरीर में स्वर्ण वर्ण का रमणीय (हुलस प्रगट करनेवाला शारीरिक परिवर्तन-द्योतक) वैवर्ण्य फैल गया। ४२५४

आयदो रळविल् शॅल्वत् तण्णलु मयोत्ति नण्णित्
तायरै वणङ्गित् तङ्ग ळिऱैयॊडु मुनियैत् ताळ्न्दु
नायहक् कोयि लॅय्दि नाऩिलक् किळत्ति योडुम्
शेयॊळिक् कमलत् ताळुङ् गळिनडञ् जॅय्यक् कण्डात् 4255

आयतु ओर् अळविल्–ऐसे उस समय; चॅल्वत्तु अण्णलुम्–श्रीमान प्रभु;

अयोत्ति नण्णि–अयोध्या में आकर; तायरै वणङ्कि–माताओं को नमस्कार करके; नायकम्–सर्वलोकनायक के; कोयिल् अॅय्ति–मंदिर में जाकर; तङ्कळ् इरैयोटु–अपने इष्टदेव रंगनाथ को और; मुतियै ताळ्न्तु–मुनिवर वसिष्ठ की पूजा करके; नातिलम् किळत्तियोटुम्–भू देवी (श्री) के साथ; चॅम्मै ऑळि–ललाई वाली; कमलत्ताळुम्–कमला को; कळि नटम्–मोद के साथ; चॅय्य कण्टान्–नाचता देखा। ४२५५

उस समय सर्वश्रीमान श्रीराम ने अयोध्या पहुँचकर माताओं को नमस्कार किया। फिर सर्वलोकनायक श्रीविष्णु के मंदिर जाकर इष्टदेव श्रीरंगनाथ की पूजा की। फिर वसिष्ठ का अभिनंदन किया। तब भूदेवी और लाल कमल निवासिनी दोनों अपार संतोष के साथ नाच उठीं। यह श्रीराम ने देखा। ४२५५

वाङ्गुदुन् दुहिलह ळॅन्नु मन्नमिलर् करत्तिऱ् पल्हाल्
ताङ्गिन्न रॅन्नऱ् पोदु मैन्दरुम् तैय लारुम्
वीङ्गिय वुवहै मेनि शिऱक्कवु मेन्मेऱ् ऱुळ्ळि
ओङ्गवुङ् गळिप्पाऱ् चोर्न्द वुडैयिला रार यॊत्तार् 4256

तुकिल्कळ्–वस्त्रों को; वाङ्कुतुम्–उतार दें; ॲन्नुमु–यह; मतम् इलर्–विचार नहीं रखते तो भी; मैन्तरुम्–पुरुष और; तैयलारुम्–स्त्रियाँ (फिसलते वस्त्रों को); करत्तिल्–अपने हाथों से; पल्काल्–बार-बार; ताङ्कितर्–पकड़कर ठीक करते; ॲन्नऱ् पोतुम्–तो भी; वीङ्किय–बढ़े हुए; उवकै–आनंद से; मेनि–शरीर; चिऱक्कवुम्–फूल जाते; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; तुळ्ळि–उछलते; ऑङ्कवुम्–कूदते; कळिप्पाल्–मोद से; चोर्न्त–ढलते; उटै इलातारै–वस्त्रहीन (दिगंबर); ऑत्तार्–रहते-से रहे। ४२५६

स्त्रियाँ और पुरुष नंगा रहना चाहनेवाले नहीं थे। इसलिए बार-बार खिसकनेवाले वस्त्रों को पकड़-पकड़कर ठीक कराते रहे। पर संतोषाधिक्य से उनके शरीर फूले; संतोष उत्तरोत्तर बढ़ता गया और वे इतनी उछल-कूद मचाने लगे कि दिगंबर-से रह गये। ४२५६

वेशिय रुडुत्त कूऱै वेन्दर्हळ् ज़ुऱ्ऱ वॅऱ्ऱिप्
पाशिळै महळि राडै यन्दणर् पऱित्तुच् चुऱ्ऱ
वाशमॅन् कलवैच् चान्दॅन् ऱिन्नैयन मयक्कम् दन्नाल्
पूशिनर्क् किरट्टि यान्नार् पूशलार् पुहुन्दु ळोरुम् 4257

वेचियर्–वेश्याओं के; उटुत्त–पहने हुए; कूऱै–वस्त्रों को; वॅऱ्ऱि वेन्तर्कळ्–विजयी राजाओं के; चुऱ्ऱ–लपेट लेते; पचुमै इळै–खरे स्वर्णाभरण; मकळिर्–पहनी स्त्रियों के; आटै–वस्त्रों को; अन्तणर्–ब्राह्मणों के; पऱित्तु–छीनकर; चुऱ्ऱ–लपेट लेते; वाचम्–सुगन्ध-द्रव्य; मॅल् कलवै चान्तु–मृदु चंदन लेप; ॲन्ऱु इन्नैयन–आदि ऐसा; पूचलार्–न मलकर; पुकुन्तुळोरुम्–जो आये; मयक्कम्

तम्ताल्–भीड़-भड़भड़ के कारण; पूचित्तर्क्कु–जो मलकर आये थे; इरट्टि आतार्–उनसे दुगुने लिप्त हो रहे। ४२५७

(आनंदातिरेक से और भी कुछ अनोखी बातें हो गयीं।) वेश्याओं की साड़ियों को राजा लोग लपेट आये थे। ब्राह्मणों ने श्रेष्ठ स्वर्णाभरण-भूषिता स्त्रियों के वस्त्रों को छीनकर पहन लिया था। जो सुगंधित अंगराग और चंदन-लेप आदि मलकर नहीं आये थे (या न मल सकनेवाले ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि जो आये थे), उनके शरीर भी भीड़ के कारण अंगराग चंदन आदि से लिप्त हो गये। ४२५७

इऱैप्पॆरुञ् जॆल्व नीत्त वॆऴिरण् डाण्डुम् यारुम्
उऱैप्पिल राद लाल्ते वेऱ्ऱिरुन् दोऴिन्द वन्नार्
पिऱैक्कॊऴुन् दन्नैय नॆऱ्ऱिप् पॆय्वळै महळिर् मॆय्यै
मऱैत्तनर् पूणिन् मैन्द रुयिर्क्कॊरु मरुक्कन् दोन्ऱ 4258

इऱै–राजा के पद का; पॆरु सॆल्वम्–बड़ा धन; नीत्त–छोड़ जो गये थे; एऴिरण्टु आण्टुम्–उन चौदहों वर्ष में; उऱैप्पिलर्–संतोष-रहित रहे; आतलाल्–इसलिए; वेऱु इरुन्तु–अकेले रहकर; ओऴिन्त–जो समय बिताती रहीं; पिऱै कॊऴुन्तु–बालचन्द्र; अन्नैय नॆऱ्ऱि–समान भाल वाली; पॆय् वळै–धारण किये हुए कंकण वाली; मकळिर् अन्नार्–उस नगर की स्त्रियों ने; यारुम्–सभी; मैन्तर्–पुरुषों के; उयिर्क्कु–प्राणों में; ओरु मरुक्कम् तोन्ऱ–एक विलोडन पैदा करते हुए; मॆय्यै–शरीर को; पूणिन्–आभरणों से; मऱैत्तनर्–ढक दिया। ४२५८

राजा राज्य-वैभव को छोड़कर जंगल गये थे। उन चौदहों सालों में स्त्रियाँ दुःख के कारण अपने पतियों से अलग तथा श्रृंगार-हीन रहती थीं। अब बालचंद्र-से भालवाली, तथा कंकणहस्ता दयिताओं ने मुदित होकर अपने शरीर को खूब आभूषणों से सजा लिया तो उन्हें देखकर उनके प्रेमियों के मन में गुदगुदी और छटपटाहट पैदा हो गयी। ४२५८

विण्णुऱै वोर्तन् दॆय्व वॆऱ्ऱियॊडुम् वेऱु ळोर्तम्
तण्णऱु नाऱ्ऱन् दम्मिऱ् ऱलैतडु माऱु नीराल्
मण्णुऱै माद रार्क्कुम् वानुऱै मडन्दै मार्क्कुम्
उण्णिऱैन् दुयिर्प्पु वीङ्गु मूडलुण् डायिऱ् ऱन्ऱे 4259

विण् उऱैवोर् तम्–व्योमलोकवासियों के; तॆय्वम् वॆऱ्ऱियॊटुम्–दिव्य सुगंध के साथ; वेऱु उळोर् तम्–अन्य लोगों के; तण् नऱु–शीतल; नाऱ्ऱम्–सुगन्ध; तम्मिल्–आपस में; तलै तडुमाऱु नीराल्–मिश्रित होते, उस हाल से; मण् उऱै–भूलोकवासिनी; मातरार्क्कुम्–स्त्रियों में; वान् उऱै–और व्योमवासिनी; मटन्तैमार्क्कुम्–स्त्रियों में; उळ् निऱैन्तु–अन्दर से भरकर; उयिर्प्पु–श्वास को; वीङ्कुम्–फुलानेवाली; ऊटल्–रूठन; उण्टायिऱ्ऱु–पैदा हो गयी। ४२५९

देवलोकवासियों की स्वाभाविक दिव्य सुगंध और मानवलोक-वासियों की कृत्रिम सुगंध दोनों मिश्रित हो गये तो देवों के शरीर से कृत्रिम सुबास और मानवों के शरीर से दिव्य सुगंध आने लगा तो दोनों तरह की स्त्रियों के मन में रूठन पैदा हो गयी और नाक से निश्वास छूटने लगे। ४२५९

आयदो रळवि लैयत् परदत्तै यरुळि नोक्कित्
तूयवी डणर्कु मट्रैच् चूरियत् महर्कुन् दोल्लै
मेयवा नरर्ह ळाय वीरर्क्कुम् बिड्र्क्कु नन्दम्
नायहक् कोयि लुळ्ळ नलमॆलान् दॆरित्ति यॆन्ड्रान् 4260

आयतु ओर् अळविल्–वैसे विशिष्ट काल में; ऐयन्–प्रभु श्रीराम; परतनै–भरत को; अरुळिन्–सस्नेह; नोक्कि–देखकर; तूय वीटणर्कुम्–पवित्र विभीषण को; मट्रै–और; चूरियन्–मकर्कुम्–सूर्यपुत्र को; तोल्लै मेय–पुरातनतायुक्त; वानरर्कळ् आय–वानरों के; वीरर्क्कुम्–वीरों को और; पिड्र्क्कुम्–दूसरों को; नम् तम्–हमारे; नायकम् कोयिल् उळ्ळ–प्रमुख महल की; नलम् ऎलाम्–सारी श्रेष्ठ विशिष्टताएँ; तॆरित्ति ऎन्ड्रान्–बताओ, यह आज्ञा दी। ४२६०

उस समय श्रीरामनाथ ने भरत को स्नेह के साथ देखकर कहा कि पवित्र विभीषण को और सूर्यपुत्र सुग्रीव को और हमारे बहुत काल के वानर वीरों को प्रमुख महल की सारी विशेषताएँ बतलाओ। ४२६०

ऎन्ड्रलु मिड्रैञ्जि मट्रैत् तुणैवर्हळ् याव रोडुम्
शॆन्ड्रन नॆळुन्दु माडम् बलवोरीइ युलहिर् ऱॆय्वप्
पॊन्ड्रिणिन् दमर रोडुम् बूमह ळुरैयु मेरुक्
कुन्ड्रॆन विळङ्गित् तोन्ड्रु नायहक् कोयिल् पुक्कान् 4261

ऎन्ड्रलुम्–सुनाते ही; इड्रैञ्चि–नमन करके; मट्रै तुणैवर्कळ्–अन्य मित्रों; यावरोटुम्–सभी के साथ; ऎळुन्तु चॆन्ड्रनन्–उठ चले; माटम् पल–अनेक प्रासाद; ऒरी इ–पार करके; पॊन् तिणिन्तु–स्वर्णनिर्मित; अमररोटुम्–देवों के साथ; पू मकळ् उरैयुम्–कमला जहाँ रहती थी; मेरु कुन्ड्रु ऎन–उस मेरु पर्वत के समान; उलकिल्–संसार में; विळङ्कि तोन्ड्रुम्–शानदार रहनेवाले; तॆय्वम्–दिव्य; नायकम् कोयिल्–प्रमुख महल में; पुक्कान्–गये। ४२६१

यह आज्ञा सुनकर भरत उन्हें नमस्कार करके साथियों को ले गये। अनेक प्रासादों को पार कर प्रमुख मंदिर में आये जो देवों और कमला के वास के योग्य मेरु के समान दैवी शोभा के साथ खड़ा था। ४२६१

वयिरमा णिक्क नील मरहद मुदला युळ्ळ
शॆयिरऱु मणिह ळीन्ड्र शॆळुञ्जुडर्क् कट्रै शुट्र
उयिर्तुणुक् कुड्रु नॆञ्जु मुळ्ळमु मूश लाड
मयर्वऱु मनत्तु वीर रिमैप्पिलर् मयङ्गि निन्ड्रार् 4262

मयर्वु अऱ्ऱ मनत्तु–निर्भ्रांत मन के; वीरर्–वीर; वयिरम्–वज्र; मणिक्कम्–माणिक्य; नीलम्–नील; मरकतम्–मरकत; मुतलाय् उळ्ळ–आदि जो हैं; चॅयिर् अऱ्ऱ–निर्दोष; मणिकळ् ईन्ऱ–रत्नों से छूटनेवाले; चॅळु चुडर् कऱ्ऱै–पुष्ट प्रकाश-पुंज के; चुऱ्ऱ–आवृत रहने से; उयिर्–प्राण; तुणुक्कुऱ्ऱु–भयत्रस्त होकर; नॅञ्चुम्–मन और; उळ्ळमुम्–चित्त के; ऊचल् आट–झूलते; इमैप्पु इलर्–अपलक; मयङ्कि निन्ऱार्–मुग्ध खड़े रहे। ४२६२

निभ्रांतमन विभीषण आदि के भी उसको देखकर प्राण ठिठक गये। उनके मन डोलायमान हो गये। उनकी आँखें अपलक स्थिर रह गयीं। क्योंकि हीरे, माणिक्य, नील, मरकत आदि रत्नों की कांति की बाढ़ में वह मंदिर जगमगा रहा था। ४२६२

विण्डुविन् मार्बिऱ् कान्ड्र मणियॅन विळङ्गु माडम्
कण्डनर् परदन् तन्नै विन्नविन रवर्क्कुक् कादऱ्
पुण्डरी हत्तुळ् वैहुम् बुरादनन् कन्नऱ् ऱोळान्
कॊण्डनर् उवन्दन् नाले मुवन्दुमुन् कॊडुत्त दॆन्ऱान् 4263

विण्टुविन्–श्रीविष्णु के; मार्पिल्–वक्ष में; कान्ऱुम्–चमकनेवाली; मणि ऑन–श्रीकौस्तुभमणि के समान; विळङ्कुम् माटम्–शोभित प्रासाद को; कण्टनर्–देखा, उन्होंने; परतन् तन्नै–भरत से; विनविनर–पूछा; अवर्क्कु–उन्हें; पुण्टरीकत्तुळ्–कमल में; वैकुम्–रहनेवाले; पुरातनन्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा; कन्नल् तोळान्–इक्षु-सम मनोहर कन्धों के इक्ष्वाकु के; कॊण्ट नल्तवम् तन्नाले–अपनाये गये श्रेष्ठ तप से; उवन्तु–खुश होकर; कातल्–प्यार के साथ; मुन् कॊटुत्तत्तु–पहले दिया गया था; ऎन्ऱान्–यह जवाब दिया भरत ने। ४२६३

श्रीविष्णुवक्षशोभाकारिणी कौस्तुभ मणि के समान रहे उस प्रासाद को देखकर उन लोगों ने भरत से पूछा कि इसकी तारीफ़ क्या है? भरत ने उत्तर दिया कि कमलासन ब्रह्मा ने इसे इक्षु-बाहु को (तमिऴ् और संस्कृत का समास करके इसका विग्रह किया जाय तो इक्षु+बाहु हो जाता है। अतः इक्षु-सम बाहुवाले का अर्थ किया गया है।) उनकी श्रेष्ठ तपस्या से खुश होकर दिया था। ४२६३

पङ्गयत् तॊरुव निक्कु वाहुविऱ् कळित्त पान्मै
इङ्गिदु मलराळ् वैहु माडमॆन् ऱुरैत्त पोदिन्
ऎङ्गळाऱ् ऱुदिक्क लाहु मियल्बदो वॆन्ऱु कूऱिच्
चॆङ्गैहळ् कूप्पि वेरोर् मण्डब मदनिऱ् चेर्न्दार् 4264

पङ्कयत्तु ऒरुवन्–पंकजवासी ब्रह्मा द्वारा; इक्कुवाकुविऱ्कु–इक्षुबाहु (इक्ष्वाकु) को; अळित्त–दिया गया; पान्मै–ऐसा; इङ्कु इतु–यहाँ यह; मलराळ् वैकुम्–श्रीलक्ष्मी के वास का; माटम्–प्रासाद है; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैत्त पोतिल्–जब कहा गया तब; ऎङ्कळाल्–हमारे द्वारा; तुतिक्कल् आकुम्–स्तुति

हो; इयल्पतो–ऐसी प्रकृति का है क्या; ॲन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; चॆं कैकळ्–लाल हाथों को; कूप्पि–जोड़कर; वेऱु ओर्–अन्य एक; मण्टपम् अततिल्–मंडप में; चेर्न्तार्–पहुँचे। ४२६४

इक्ष्वाकु को कमलवासी ब्रह्मा द्वारा दिया हुआ यह प्रासाद श्रीकमला का वासस्थान है। भरत ने जब यह कहा तो उन्होंने विस्मय तथा गौरव-बुद्धि के साथ कहा कि इसका यशोगान हमें संभव है क्या ? हाथ जोड़कर नमस्कार करके वे दूसरे एक मंडप (महल) में चले आये। ४२६४

इरुन्दन रतैय माडत् तियल्बॅला ॲण्णि ॲण्णिप्
परिन्दन त्तिरवि मैन्दन् परदनै वणङ्गित् तूयोय्
करुन्दडङ् गण्णि नाट्कुक् काप्पुना णणियु नन्नाळ्
तॆरिन्दिडा दिरुत्त लॆन्नो वॆन्ऱलु मण्णल् सॆप्पुम् 4265

अतैय माटत्तु–उस प्रासाद की; इयल्पॅलाम्–सारी विशिष्टताओं पर; ॲण्णि ॲण्णि इरुन्ततर्–सोचते-सोचते रहे; इरवि मैन्तन्–सूर्यपुत्र सुग्रीव ने; परिन्ततन्–स्नेह से; परततै वणङ्कि–भरत को नमस्कार करके; तूयोय्–पवित्रमूर्ति; करुतट–असित विशाल; कण्णिनाट्कु–आँखों वाले का; काप्पु नाण्–रक्षा-कंकण; अणियुम्–पहनने का; नल् नाळ्–अच्छा दिन; तॆरिन्तिटातु इरुत्तल्–बिना शोधे रहना; ॲन्नो–क्यों तो; ॲन्ऱलुम्–पूछा तो; अण्णल् सॆप्पुम्–भरत ने उत्तर दिया। ४२६५

विभीषण आदि उन प्रासादों की विशेषताओं पर ध्यान दे-देकर विस्मय से अभिभूत रहे। तब रविकुमार सुग्रीव ने स्नेह के साथ भरत से प्रश्न किया कि हे पवित्र मूर्ति ! असितविशालाक्ष श्रीराम का रक्षाकंकण-बंधन का पवित्र दिन अब तक क्यों नहीं शोध लिया गया है ? भरत ने उत्तर में कहा। ४२६५

एऴ्कड लदनिर् ऱोय मिरुनदि पिऱविर् ऱोयम्
ताऴ्विला दिवण्वन् दॆय्दर् करुमैत्तोर् तन्मैत् तॆन्न
आऴियोन् ऱुडैयोन् मैन्द ननुमनैक् कडिदि नोक्कच्
चूऴ्पुवि यदनै यॆल्लाङ् गडन्ददन् कालिन् तोन्ऱल् 4266

एऴु कटल् अततिल्–सातों समुद्रों से; तोयम्–पवित्र जल; पिऱ इरु नतियिल्–और बड़ी श्रेष्ठ नदियों का; तोयम–तीर्थ; ताऴ्वु इलातु–अविलंब; इवण् वन्तु ॲय्तर्कु–इधर आ जाय, इसमें; ओर् अरुमै तन्मैत्तु–एक कठिनाई है; ॲन्न–ऐसा कहने पर; ओन्ऱु–एक; आऴि–चक्ररथ के; उटैयोन्–स्वामी के; मैन्तन्–पुत्र ने; अनुमनै–हनुमान पर; कटितिन् नोक्कि–जल्दी दृष्टि डाली तो; चूऴ् पुवि अततै ॲल्लाम्–(समुद्र) आवृत भूमि सारी; कटन्ततन्–पार की। ४२६६

(भरत का उत्तर :) सातों समुद्रों से पवित्र तीर्थ लाना है। अविलम्ब लाना बड़ा कठिन काम है। यह सुनकर एक-चक्र-रथी सूर्य के

पुत्र सुग्रीव ने तुरन्त हनुमान पर दृष्टि दौड़ायी तो इंगितज्ञ हनुमान समझ गया और समुद्रमेखला पृथ्वी को पार कर गया। ४२६६

कोमुनि योडु मड़्रै मऱैयवर्क् कॉणर्ह वॅन्ना
एविनन् तेर्व लान्शॅन् ड्रिशैत्तलु मुलह मीन्ऱ
पूमहन् तनूद कादऱ् पुनिदमा दवन्वन् दॅय्द
यावरु मॅळुन्दु पोऱ्ऱि यिणैयडि तॊळुदु निन्ऱार् 4267

को मुनियोडु–मुनिराज वसिष्ठ; मड़्रै–और अन्य; मऱैयवर्–ब्राह्मणों को; कॉणर्क–ले आओ; ऍन्ना–ऐसा; एविनन्–प्रेरित किया (भरत ने); तेर्वलान्–सारथी सुमन्त्र के; चॅन्ऱ–जाकर; इशैत्तलुम्–कहते ही; उलकम्–लोक के; ईन्ऱ–सर्जक; पू मकन् तनूत–कमलासन-जनित; कातल्–प्यारे वसिष्ठ; पुनितन्–पवित्र; मातवन्–महान तपस्वी; वन्तु ऍय्त–आ पहुँचे तो; यावरुम्–सभी; ऍळुन्तु–उठकर; पोऱ्ऱि–स्तुति करके; इणै अटि–चरणद्वय की; तॊळुतु निन्ऱार्–वंदना कर खड़े हुए। ४२६७

भरत ने सुमंत्र को आज्ञा दी कि मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ और अन्य ब्राह्मणों को बुला लाओ। सारथी सुमंत्र जाकर बोला तो लोकसर्जक ब्रह्मा के पुत्र, पवित्र महर्षि पधारे। सभी ने उठकर उनके चरणद्वय में नमस्कार किया और स्तुति की। ४२६७

अरियणै परद नीय वदन्कणाण् डिरुन्द वन्दप्
पॅरियव नवनै नोक्किप् पॅरुनिलक् किळत्ति योडुम्
उरियमा मलरा ळोडु मुवन्दिनि दूळिक् कालम्
करियव नुय्त्तऱ् कौत्त काप्पुनाळ् नाळै यॅन्ऱान् 4268

परतन्–भरत के; अरि अणै–सिंहासन; ईय–बिछाने पर; आण्टु–वहाँ; अतन् कण्–उस पर; इरुन्त–विराजे; अन्त पॅरियवन्–उन महानुभाव ने; अवनै नोक्कि–उन भरत को देख; पॅरु निलम् किळत्तियोटुम्–मान्या भूदेवी के साथ; उरिय–अपने स्वत्व की; मा मलराळोटुम्–श्रीकमलाजी के साथ; उवन्तु–मोद के साथ; इनितु–ससुख; ऊऴि कालम्–युग, युग तक; करियवन्–श्यामल मूर्ति; उय्त्तऱ्कु–राजभोग करें इसके लिए; औत्त–युक्त; काप्पु नाळ् नाळै–कंकण-धारण का दिन, कल ही; ऍन्ऱान्–कहा। ४२६८

भरत ने सिंहासन दिया और महानुभाव वसिष्ठ उस पर विराजे। उन्होंने भरत से कहा कि भूदेवी और श्रीदेवी के साथ श्रीराम युग-युग राज्य-वैभव भोगें—तदर्थ कंकण धारण का योग्य शुभ दिन कल होगा। ४२६८

इन्दिर कुरुवु मन्ना रेनैय रॅन्न निन्ऱ
मन्दिर विदियि नारुम् वशिट्टनुम् विरैन्दु विट्टार्
शन्दिर कविहै योड्गुन् दयरद रामन् तामच
चन्दर मवुलि शूडु मोरैयु नाळुन् दूक्कि 4269

इन्तिर कुरुवुम्–इन्द्रगुरु बृहस्पति के; अन्नतार्–समान रहनेवाले; एत्तैयर् ॲन्नत–कितने ही थे; निन्ऱ्–जो खड़े रहे, वे सब; मन्तिर वितियितारुम्–मन्त्र-विधि-दक्ष ब्राह्मण; वचिट्टनुम्–और वसिष्ठ; चन्तिरन् कविकै–चन्द्र-श्वेत छत्र; ओङ्कुम्–जिनके ऊपर खुला रहा; तयरत रामन्–उन दशरथराम का; तामम्–प्रकाशमय; चुन्तरम्–सुन्दर; मवुलि–मुकुट के; चट्टम्–धारण का; ओरैयुम्–लग्न और; नाळुम्–तिथि; तूक्कि–शोधकर लिखकर; विरैन्तु विट्टार्–जल्दी संदेश भेजा। ४२६९

देवगुरु बृहस्पति-तुल्य कितने ही रहे! उन मंत्रविधिज्ञाता गुरुओं और वसिष्ठ ने दाशरथी राम के श्वेत-छत्रधारी होकर छविमय सुन्दर मुकुट धारण करने योग्य दिन शोधा, उसे लेखबद्ध करके सर्वत्र भिजवाया। ४२६९

अडुक्किय वुलहृ मून्ऱु मादरत् तूवर् कूऱ
इडुक्कॉरु पेरु मिन्ऱि ययोत्तिवन् दिरुत्ता रॆन्ऱाल्
तॊडुक्कुरु कवियात् मऱ्ऱैत् तॊहैयितै मुडिवु तोन्ऱ
ऑडक्कुरत् तुरैक्कुन् दन्मै नान्मुहत् तोरुवर् कुण्डो 4270

आतरम् तूतर्–आतुर दूत; अटुक्किय–एक के ऊपर एक रहे; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों में; कूऱ–कह आये तो; इटुक्कु–कोने में भी; ओरु पेरुम्–कोई; इन्ऱि–न रहा, ऐसा सब; अयोत्ति वन्तु–अयोध्या आकर; इरुत्तार् ॲन्ऱाल्–ठहर गये तो; मऱ्ऱै–अलग; तॊकैयितै–संख्या को; मुटिवु तोन्ऱ–निर्धारित कर; तॊटुक्कुरु–रचित; कवियान्–कविता द्वारा; ऑटुक्कुरुत्तु–संग्रह करके; उरैक्कुम्–कहने की; तन्मै–शक्ति; नान्मुकत्तु–चतुर्मुख के; ओरुवर्कु उण्टो–उनके पास भी है क्या। ४२७०

आतुर दूतों ने सब जगह संदेश पहुँचा दिया और कोने-कोने के सभी लोग आ गये। उन आगतों की संख्या को निर्धारित कर बताने की शक्ति चर्तुमुख में भी रही क्या? । ४२७०

अव्वयिन् मुनिव नोडुम् बरदनु मरियिन् शेयुम्
शॆव्विय निरुदर् कोनुज् जाम्बनुम् वालि शेयुम्
ॲव्वमि लाऱ्ऱल् वीरर् यावरु मॆळुन्दु शॆन्ऱाङ्
गव्विय मवित्त शिन्दै यण्णलैत् तॊळुदु शॊन्नार् 4271

अव् वयिन्–उस समय; मुनिवनोटुम्–मुनिवर के साथ; परतनुम्–भरत और; अरियिन् चेयुम्–सूर्यपुत्र; चॆव्विय–सीधा-सादा; निरुतर् कोनुम्–राक्षसराज और; चाम्पनुम्–जाम्बवान और; वालि चेयुम्–वालीपुत्र, अंगद; ॲव्वम् इल्–अनिंद्य; आऱ्ऱल्–बलवान; यावर् वीररुम्–सभी वीर; आङ्कु–वहाँ से; ॲळुन्तु चॆन्ऱु–निकल, चलकर; अव्वियम्–ईर्ष्या-द्वेष; अवित्त–हननकारी; चिन्तै–मन के; अण्णलै–प्रभु को (उन्हें); तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊन्नार्–बोले। ४२७१

तव वसिष्ठ जी के साथ भरत, रविकुमार, सीधा-सादा राक्षसेन्द्र,

जाम्बवान, वालीपुत्र और अनिंद्य बलशाली सारे वीर —सबों ने श्रीराम के पास जाकर नमस्कार किया और निवेदन किया (कि कल आपका मुकुट-धारण होगा)। ४२७१

नाळैनी मवुलि शूड नन्मैशाल् परुमै नन्नाळ्
काळैनी यदन्नुक् केऱ्ऱ कडऩ्मैमो दियऱ्ऱु हॆन्ऱु
वेळैये कायु नॆऱ्ऱि विऴियिनन् मेवु मॆन्बूप्
पूळैये शूडु वानॆप् पॊरुवुमा मुनिवन् पोनान् 4272

काळै—ऋषभ-सम; नी—आपके; मवुलि—किरीट; चूट—धारण करने; नन्मै चाल्—मंगलकारी; पॆरुमै नल् नाळ्—श्रेष्ठ सुदिन; नाळै—कल है; नी—आप; अतन्नुक्कु—उसके लिए; एऱ्ऱ—आवश्यक; मोतु कटऩ्मै—उत्कृष्ट कर्मानुष्ठान; इयऱ्ऱुक—करें; ऎन्ऱु—ऐसा बोलकर; वेळैये कायुम्—मन्मथ को भी दहन करनेवाली; नॆऱ्ऱि विऴियिनन्—भाल की आँखों वाले; मेवुम्—आकर्षक; मॆल्—मृदु; पू—फूल; पूळैये—'पूळै' का; चूटुवान्—धारण करनेवाले शिव; पॊरुवुम्—के समान विद्यमान; मा मुनिवन्—महान मुनि; पोनान्—गये। ४२७२

वसिष्ठ ने कहा कि हे ऋषभ-सम ! आप मुकुट धारण करें, तदर्थ मंगलमय और श्रेष्ठ सुदिन कल ही है। आप उसके लिए आवश्यक कर्मानुष्ठान करें। यह कहकर मन्मथदाहक भाल के नेत्र वाले, प्यारे मृदुल 'पूळै' (सेमर ?) पुष्पधारी शिवतुल्य महान मुनि विदा हुए। ४२७२

नान्मुहत् तॊरुव नेव नयनरि मयनॆन् ऱोदुम्
नून्मुहत् तोङ्गु केळ्वि नुणङ्गियोन् वणङ्गु नॆन्जन्
कोन्मुहत् तळन्दु कुऱ्ऱन् जॆऱ्ऱुल हॆल्लाङ् गॊळ्ळुम्
मान्मुहत् तॊरुव नन्नान् मण्डबम् वयङ्गक् कण्डान् 4273

नान् मुकत्तु ऒरुवन्—अनुपमेय चतुर्मुख के; एव—आज्ञा देने पर; नयन् अरि—कलाविद्; मयन् ऎन्ऱु ओतुम्—मय कहलानेवाला; नूल् मुकत्तु—शास्त्रज्ञान में; ओङ्कुम्—बढ़ा हुआ; केळ्वि—श्रौतज्ञान का; नुणङ्कियोन्—सूक्ष्मज्ञ; मान् मुकत्तु ऒरुवन्—हरिणमुख वाला जो था उस अप्रतिम शिल्पी ने; वणङ्कुम् नॆञ्चन्—विनत दिलवाला; कोल् मुकत्तु—मानदंड से; अळन्तु—नापकर; कुऱ्ऱम् चॆऱ्ऱु—त्रुटियाँ दूर करके; उलकु ऎल्लाम्—सारे लोकों को; कॊळ्ळुम्—समा लेनेवाले; मण्टपम्—मंडप को; वयङ्क—उज्ज्वल रूप से; कण्टान्—(निर्मित) देखा (बनाया)। ४२७३

चतुर्मुख की प्रेरणा से वास्तुशास्त्रचतुर, श्रौत-सूक्ष्म-ज्ञानी, हरिणमुख, श्रेष्ठतम शिल्पी, मय विनय के साथ आया। उसने सारे लोकों को समा लेनेवाला (या सारे लोकों को मोल लेनेवाला) एक मंडप बनाया जो सब तरह से निर्दोष व ज्योतिर्मय था। ४२७३

शूळ्कड नात्गिर् रोय मॅळ्वहै याहच् चॊन्न
आळ्तिरै यार्रि नीरो डमैत्तियिन् रॆन्न वामॆन्
ऊळियि निरुदि शॆल्लुन् दादैयि नुलवि यन्रे
एळ्तिरै नीरुन् दन्दा निरुन्दुयर् मरुन्दु तन्दान् 4274

शूळ्–आवरण के; कटल् नात्किन्–चारों सागरों से; तोयम्–तीर्थ; ऍळ्वकै आक–सात विध; चॊन्न–उक्त; आळ्तिरै–गम्भीर तथा तरंग-सहित सागरों का जल; आऱ्ऱिन् नीरोडु–नदियों के तीर्थ के साथ; इन्ऱु अमैत्ति–आज लाओ; ऍन्न–कहने पर; इरु तुयर्–बड़े संकट में; मरुन्तु तन्तान्–ओषधि जो लाया था; आम् ऍन्ऱु–(वह) हाँ कहकर; ऊळियिन् इऱुति चॆल्लुम्–युगांत में बहनेवाले उसके; तातैयिन्–पिता के समान; उलवि–चलकर; एळ् तिरै–सातों समुद्रों का; नीरुम् तन्तान्–तीर्थ लाया। ४२७४

'आवरण के चारों समुद्रों से, सप्त समुद्र से और अन्य नदियों से पवित्र तीर्थ आज ही लाओ।' यह आज्ञा सुनकर संकट के अवसर पर जो ओषधि लाया था वह हनुमान 'हाँ' कहके गया और उस युगांत काल के अपने पिता वायु के-से वेग मे जाकर उसी दिन सागरों का पवित्र तीर्थ लाया। ४२७४

ऍरिमणिक् कुडङ्गळ् पत्तूऱ् रियानैमेल् वरिशैक् कान्ऱ
विरिमदिक् कुडैयि नीळल् वेन्दर्हळ् पलरु मेन्दिप्
पुरैमणिक् काळ मार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्पप् पॊङ्गुम्
शरयुविऱ् पुत्तलुन् दन्दार् शङ्गित्त मुरल मन्नो 4275

वेन्तर्कळ् पलरुम्–अनेक राजा लोग सभी; वरिचैक्कु आन्ऱ–पद के अनुकूल; विरि मति–पूर्ण चन्द्र के समान; कुटैयिन् नीळल्–छत्र के नीचे; पल् नूऱु–अनेक सौ; ऍरि मणि–कांतिमय रत्न के; कुटङ्कळ्–घड़ों को; यानै मेल् एन्ति–हाथियों पर चढ़ाकर; पुरै–पोले; मणि–सुन्दर; काळम् आर्प्प–'काहल' वाद्य के बजते; पल् इयम्–अनेक बाजों के; तुवैप्प–स्वरित होते; चङ्कितम् मुरल–शंखराशियों के गूँजते; पॊङ्कुम्–उमगती; चरयुविल् पुत्तलुम्–सरयू का जल भी; तन्तार्–लाये। ४२७५

राजा जो अनेक थे वे सभी पूर्णचन्द्र-सम श्वेतछत्र के नीचे, गजों की पीठ पर बैठकर ज्योतिर्मय रत्नघटों में पवित्र सरयू का जल ले आये। तब 'पोले काहल' नाम के बाजे तुमुल नाद कर उठे; अन्य विविध बाजे स्वरित हुए और शंखराशियाँ गूँज उठीं। ४२७५

माणिक्कप् पलहै तॆत्तु वयिरत्तिन् कालहळ् शेर्त्ति
आणिप्पॊन् शुऱ्ऱि मुऱ्ऱि यळहुऱच् चमैत्त पीडम्
एणुऱ्ऱ पळिक्कु माडत् तिट्टन्न रदनिन् मीदु
पूणुऱ्ऱ तिरडोळ् वीरन् तिरुवॊडुम् बॊलिन्दान् मन्नो 4276

मणिक्कल् पलकै–माणिक्य-फलक; तैत्तु–लगाकर; वयिरम्–हीरे के; तिण् कालकळ्–सुदृढ़ पैर; चेर्त्ति–जोड़कर; आणि पौन् चुर्रि–उत्कृष्ट स्वर्ण से बाजुओं को; सुर्रि–निर्मित करके; अळकु उरु–सुघड़ रूप से; चमैत्त–निर्मित; पीटम्–पीठ को; एण् उर्र–उत्कृष्ट; पळिङ्कु माटत्तु–स्फटिक मकान में; इट्टतर्–डाला; अतनिन् मीतु–उस पर; पूण् उर्र–आभरणभूषित; तिरळ् तोळ् वीरन्–पुष्ट कंधों वाले; तिरुवोटुम्–श्री (सीता) सह; पौलिन्तान्–शोभित हुए। ४२७६

स्वर्णमय बाजुओं के साथ हीरों के पैरों पर माणिक्य-फलक ठोंककर पीठ बनायी गयी और वह सुन्दर पीठ उत्कृष्ट एक स्फटिक महल में डाली गयी। उस पर आभरणभूषित पुष्ट भुजाओं के वीर श्रीराम श्रीलक्ष्मी (सीता) जी के साथ शोभित हुए। ४२७६

मङ्गल कीदम् वाड मर्रैयौलि मुळङ्ग वल्वाय्च्
चङ्गितङ् गुमुरप् पाण्डिल् तण्णुमै यौलिप्पत् ताविल्
पौङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पूमळै पौळ्यि विण्णोर्
अङ्गणा यहनै वॅव्वे रॅदिरबि डेहत् जॅय्दार् 4277

मर्रै औलि मुळङ्क–वेद-स्वर घोषित हुए; मङ्कलम् कीतम् पाट–मंगलगीत गाये गये; वल् वाय्–सघनस्वर; चङ्कु इनम्–शंखराशियाँ; कुमुर–गुंजित हुईं; पाण्टिल् तण्णुमै औलिप्प–ताल और मृदंग बजे; ता इल्–निर्दोष; पौङ्कु–उच्चस्वरनिनादी; पल् इयक्कळ्–अनेक बाजे; आर्प्प–बजाये गये; पू मळै पौळिय–पुष्पवर्षा हुई; विण्णोर्–व्योमवासियों ने; अङ्कळ् नायकनै–हमारे नायक को; वॅव्वेरु–अलग-अलग; अँतिर्–(अयोध्या के) मुक़ाबले में; अपिटेकम्–अभिषिक्त; चॅय्तार्–करा दिया। ४२७७

वेदस्वर, मंगलगीत, शंखनाद, ताल और मृदंग की ध्वनि और अनेक विविध वाद्यों के नाद के बीच देवों ने पुष्पवर्षा की और हमारे नाथ का अलग-अलग, अयोध्या के मुक़ाबले में अभिषेक किया। ४२७७

मादवर् मर्रै लाळर् मन्दिरक् किळवर् मर्रुम्
मूदरि वाळ रुळ्ळ शानर्वर् मुदनी राट्टच्
चोदियान् महनु मर्रैत् तुणैवरु मनुमत् रानुम्
तीदिला विलङ्गै वेन्दुम् पिन्नवि डेहत् जॅय्दार् 4278

मा तवर्–महान तपस्वी; मर्रै वलाळर्–वेदज्ञ; मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा में दक्ष; मर्रुम्–और; मुतुमै अर्रिवाळर्–वृद्ध ज्ञानी; उळ्ळ–(जो वहाँ) रहे; चान्रवर्–उन साधुओं ने; मुतल् नीर् आट्ट–पहले स्नान कराया; पिन्–बाद; चोतियान् मकनुम्–ज्योति (सूर्य) पुत्र; मर्रै तुणैवरुम्–अन्य साथियों ने; अनुमन् तानुम्–और हनुमान ने; तीतु इला–साधु; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकापति ने भी; अपिटेकम् चॅय्तार्–अभिषिक्त कराया। ४२७८

फिर महान तपस्वी, वेदविप्र, मंत्रीगण, वृद्ध ज्ञानी तथा साधूजन —इन्होंने पहले क्रमशः श्रीराम का अभिषेक कराया (पवित्र जल से नहलाया)। फिर ज्योति-अर्क-पुत्र ने, अन्य मित्रों ने और बुराई से रहित साधु विभीषण ने अभिषेचन किया। ४२७८

मरहदच् चयिलत्र् जॅन्दा मरॅमलरक् काडु पूत्तुत्
तिरै यॅरि कङ्गैवीशुन् दिवलैया ननैन्दु शॅय्य
इरुकुळै तोडरुम् वेऱ्कण् मयिलोडु मिरुन्द देय्प्पप्
पॅरुहिय शॅव्वि कण्डार् पिऱप्पॅनुम् बिणिहळ् तीर्न्दार् 4279

मरकतम् चयिलम्–मरकत पर्वत; चॅ तामरै–लाल कमल के; मलर् काडु पूत्तु–पुष्पवनविकसित; तिरै ऍऱि–तरंगें फेंकनेवाली; कङ्कै–गंगा; वीचुम्–जिन्हें छिटकातीं; तिवलैयाल्–उन सीकरों में; नतैन्तु–भीगकर; चॅय्य–लाल; इरु कुळै–दो कुंडलों में; तॉटरुम्–लगी चलनेवाली; वेल्कण्–भाले-सी आँखों की; मयिलॉटुम्–कलापी से; इरुन्ततु एय्प्प–रहता जैसे; पॅरुकिय–अधिक (श्रीराम का); चॅव्वि–सौंदर्य; कण्टार्–देखा (जिन्होंने) वे; पिऱप्पु ऍनुम्–जन्म नाम के; पिणिकळ्–रोगों से; तीर्न्तार्–वियुक्त हो गये। ४२७९

कोई मरकत पर्वत लाल खिले कमलों के वन के साथ तरंगायमान गंगा के सीकरों से भीगे, दोनों कुंडलों तक दौड़नेवाली, भाले-सी आँखों से भूषित एक कलापी के साथ विराजा हो —ऐसे दिखनेवाले श्रीराम का उस दैवी सौंदर्य की झाँकी जिसने देखी उसका भवरोग छूट गया! । ४२७९

तॅय्वनी राडऱ् कॉत्त शॅय्विन्न वशिट्टन् शॅय्य
ऐयमिल् शिन्दै यानच् चुमन्दिर नमैच्च रोडुम्
नॉय्दिनि नियऱ्ऱ नोऱ्बिन् मादवर् नुनित्तुक् काट्ट
ॲय्दिन वियन्ऱ पल्वे ऱिन्दिरऱ् कियन्ऱ वॆन्न 4280

तॅय्वम्–दैवी; नीर् आटऱ्कु–तीर्थस्नान के लिए; ऑत्त–योग्य; चॅय्विनै–कर्म आदि; वचिट्टन् चॅय्य–वसिष्ठ ने कराया; नोऱ्पिन् मातवर्–व्रती तपश्रेष्ठों ने; नुनित्तु काट्ट–सूक्ष्मता से इंगित किया; ऐयम् इल्–असंशय; चिन्तैयान्–मन वाले; अ चुमन्तिरन्–उस सुमन्त्र ने; अमैच्चरोटम्–मन्त्रियों के साथ; नॉयतिनिन् इयऱ्ऱ–जल्दी तैयार किया; इन्तिरऱ्कु–देवेंद्र को; इयन्ऱ ऍन्न–प्राप्य जैसे; पल्वेऱु–अनेक, विविध; इयन्ऱ–सामग्रियाँ; ऍय्तिन–आ पहुँचीं। ४२८०

वसिष्ठ को दिव्य तीर्थाभिषेक-कार्य में सहायता देते हुए व्रती तपस्वियों के सूक्ष्मतंत्रों के मार्गदर्शन में असंशयमन सुमंत्र ने मंत्रियों के साथ आवश्यक कार्य किया और देवेंद्र को प्राप्त जैसी सामग्रियाँ आ जुट गयीं। ४२८०

अरियणै यनुमन् ताङ्ग वङ्गद नुडैवाळ् पऱ्ऱप्
परदन् वॅण्कुडै कविक्क विरुवरुङ् गवरि वीश

विरैशेरि कमलत् ताळ्शेर् वॆण्णॆय्मन् शडैयन् तङ्गळ्
मरबुळोर् कॊडुक्क वाङ्गि वशिट्टने पुनैन्दान् मौलि 4281

अरि अणै–सिंहासन को; अनुमन्–हनुमान के; ताङ्क–धारण करते; अङ्कतन्–अंगद के; उटैवाळ्–कटिखड्ग; पऱ्ऱ–पकड़े रहते; परतन्–भरत के; वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; कविक्क–ऊपर करते; इरुवरुम्–दोनों भाइयों के; कवरि वीश–चामर डुलाते; विरै शॆरि–घनी सुगन्ध के; कमलम् ताळ्–कमल पर आसीन श्री से; चेर्–युक्त; वॆण्णॆय् मन–वॆण्णॆय् नल्लूर के स्वामी; चटैयन् तङ्कळ्–शडैयप्पन के; मरपुळोर्–पूर्वजों के; कॊटुक्क वाङ्कि–बढ़ाते लेकर; वचिट्टने–वसिष्ठ ने ही; मवुलि–किरीट; पुनैन्तान्–पहनाया। ४२८१

हनुमान ने सिंहासन धारण किया। अंगद करिखड्ग पकड़े रहा। भरत ने श्वेत छत्र श्रीराम के ऊपर किया। दोनों भाइयों ने (लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने) चामर डुलाये। सुगधित कमल पर आसीन श्री से युक्त और तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर के स्वामी शडैयप्प वळ्ळल् (दानी) के पूर्वजों ने किरीट बढ़ाया तो वसिष्ठ ने ही उसे लेकर श्रीराम के सिर पर पहनाया। [१ 'श्री से युक्त' श्रीराम का विशेषण बन सकता है। तब सीताजी का अर्थ होगा। नहीं तो दौलत की देवी लक्ष्मी का अर्थ होगा। तब श्रीमान् शडैयप्प वळ्ळप् का अर्थ होगा। २ शडैयप्पन का नाम अमर कराकर अपनी कृतज्ञता जताने का जो कम्बन ने वादा किया था कहा जाता है कि उसका पालन इधर, अन्य स्थलों में जैसे किया गया। ३ यह पद्य बड़ा प्रसिद्ध मंगलमय पद्य है।]। ४२८१

वॆळ्ळियुम् बॊन्नु मॊप्पार् विदिमुऱै सॆय्यिर् कॊण्ड
ऒळ्ळिय नाळि नल्ल वोरैयि नुलह मून्ऱुम्
तुळ्ळिन कळिप्प मौलि शूडिनान् कडलिन् वन्द
तॆळ्ळिय तिरुवुन् दॆय्वप् पूमियुञ् जेरुन् दोळान् 4282

कटलिन् वन्त–क्षीरसागर से प्रगट; तॆळ्ळिय तिरुवुम्–सुलक्षणा श्रीदेवी; तॆय्वम् पूमियुम्–दिव्य भूदेवी; चेरुम्–जिनसे लगीं उन; तोळान्–कंधों वाले ने; कॊण्ट–शोधित; ऒळ्ळिय–मंगलमय; नाळिल्–दिन में; नल्ल ओरैयिल्–शुभलग्न में; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों के; तुळ्ळिन कळिप्प–उछलते और मुदित होते; वॆळ्ळियुम्–शुक्र और; पॊन्नुम्–बृहस्पति के; ऒप्पार्–समान पुरोहितों के; विति मुऱै–बताये क्रम में; मौलि–मुकुट को; सॆय्यिल्–सिर पर; चूटिनान्–धारण किया। ४२८२

क्षीरसागर से उत्पन्न सुलक्षणा लक्ष्मी और दिव्य भूदेवी दोनों जिन भुजाओं से लग गयीं उन भुजाओं के स्वामी भगवान श्रीराम ने शोधित शुभ दिन में शुक्र-बृहस्पति-सदृश पुरोहितों के बताये क्रम से अपने सिर पर मुकुट धारण कर लिया। तब तीनों लोक मोद के साथ उछले। ४२८२

शित्तमॊत् तुळक्कन् इरॊडुन् दिरुनहर्त् तॆय्व नन्नूल्
वित्तह नॊरुवन् शॆन्नि मिलैच्चिय दॆनिन् मेन्मै
ऒत्तम् वुलहत् तोर्क्कु मुवहैयि नुरुदि युत्तिल्
तत्तमुच् चियिन्मेल् वैत्त दॊत्तदत् ताम मौलि 4283

तिरु नकर्–उस श्रीनगर में; तॆय्व नल् नूल्–दिव्य शास्त्रों में दक्ष; चित्तम् ऒत्तुळत्–मनतोषक; ऎन्रु ओतुम्–कहलानेवाले ने; वित्तकन् ऒरुवन्–सर्वज्ञ उत्तम श्रीराम के; चॆन्नि–सिर पर; मिलैच्चियतु–पहनाया; ऎतिनुम्–कहा जाय तो भी; अ ताममम् मौलि–वह उज्ज्वल किरीट; मेन्मै ऒत्त–गौरवयुक्त; मू उलकत्तोर्क्कुम्–तीनों लोकवासियों को; उवकैयिन् उरुति–संतोष का निश्चय; उत्तिल्–सोचें तो; तम् तम्–अलग-अलग उनके; उच्चियिन् मेल्–सिरों पर; वैत्तु ऒत्ततु–रखा गया हो जैसे रहा। ४२८३

उस श्रीनगर के शास्त्रविदग्ध तथा मनोनुकूल वसिष्ठ ने सर्वज्ञ श्रीराम के सिर पर मुकुट क्या पहनाया; श्रेष्ठ सारे तीनों लोकों ने ऐसा आनंद मनाया मानो अलग-अलग हर एक के सिर पर मुकुट रखा गया हो। ४२८३

पन्नॆडुङ् गाल नोऱ्ऱुत् तन्नुडैप् पण्बिऱ् कॆऱ्ऱ
पिन्नॆडुङ् गणवऩ् तन्नैप् पॆऱ्ऱिडैप् पिरिन्दु मुऱ्ऱम्
तन्नॆडुम् बीळै नीङ्गत् तळुविनाळ् तळिर्क्कै नीट्टि
नन्नॆडुम् बूमि यॆन्नुम् नङ्गैतन् कॊङ्गै यार 4284

पल् नॆटुकालम्–दीर्घ काल तक अनेक; नोऱ्ऱु–व्रतों का पालन कर; पिन्–बाद; तन् उडै–अपने; पण्पिऱ्कु एऱ्ऱ–गुण के योग्य; नॆटु कणवन्–माननीय पति को; पॆऱ्ऱु–प्राप्त करके; इटै पिरिन्तु–बीच में अलग होकर; तन्–अपनी; नॆटु पीळै–बड़ी पीड़ा; मुऱ्ऱम्–पूरी; नीङ्क–दूर होने पर; नल् नॆटु–अच्छी बड़ी; पूमि ऎन्नुम्–भूमि की; नङ्कै–देवी ने; तळिर् कै नीट्टि–अपने पल्लवहस्त बढ़ाकर; तन्–अपने; कॊङ्कै यार–स्तनों को पूर्ण संतोष देते हुए; तळुविनाळ्–छाती से खूब लगा लिया। ४२८४

भूदेवी ने बहुत काल तक तपस्या की और फलस्वरूप अपने गुण के योग्य मान्य पति के रूप में श्रीराम को पाया; पर तुरंत ही वियोग हो गया। बड़ा दुःख सहती रही। अब फिर वे आ गये और भूमिपति हो गये। तो उस श्रेष्ठ विशाल भूमि रूपी देवी ने अपने दोनों पल्लवहस्तों को बढ़ाकर अपनी छाती से खूब लगा लिया, जिससे उसके स्तन खूब हुलस गये। (भूमि को देवी के रूप में कल्पित करके राजा की पत्नी बताने की परिपाटी सर्वविदित है ही। राजा को भूप या भूपति कहना भी प्रचलित है। उस कल्पना को कुछ आगे बढ़ाकर पति-पत्नी व्यवहार में रंग लाना कवि की विदग्धता है।)। ४२८४

विरदनूल् मुनिवन् शॉन्न विदिनॅरि वऴामै नोक्कि
वरदनु मिळैञरक्कु आङ्गण् मामणि मकुडम् जूट्टिप्
परदनैत् तन्नडु शॅङ्गोल् नडावुरप् पणित्तु नाळुम्
करैतॅरि विलाद पोहक् कळिप्पिनु ळिरुन्दान् मन्नो 4285

विरत नूल्–व्रतपालक; मुनिवन्–मुनि के; चॉन्न–कहे अनुसार; विति नॅरि–विधि का विधान; वऴामै नोक्कि–उल्लंघन न करना देखकर; वरतनुम्–वरद श्रीराम ने; इळैञरक्कु–छोटे भाइयों को; आङ्कण्–वहाँ; मा मणि–बड़े रत्नों से निर्मित; मकुटम् चूट्टि–किरीट पहनाकर; परतनै–भरत को; तन् चॅङ्कोल्–अपना राजदण्ड (शासन); नटावुर–चलाने की; पणित्तु–आज्ञा देकर; नाळुम्–दिने-दिने; करै तॅरिविलात–अपार; पोकम् कळिप्पिनुळ्–भोग-विलास में; इरुन्तान्–लगे रहे। ४२८५

व्रतशास्त्रविदग्ध वसिष्ठ के कहे अनुसार यथाविधि श्रीराम ने अपने तीनों छोटे भाइयों के सिरों पर बड़े रत्नकिरीट पहनाये। भरत को राज्यपरिपालन की आज्ञा दी और स्वयं अपार भोगविलास में रत रहे। ४२८५

39. विडै कॉडुत्त पडलम् (अनुमति-प्रदान पटल)

पूमहट् कणिय दॅन्नप् पॉलिपशुम् बूरि शेर्त्ति
मामणित् तूणिर् चॅय्द मण्डब मदनि नाप्पण्
कोमणिच् चिविहै मीदे कॉण्डलु मिन्नुम् बोलत्
तामरैक् किळत्ति योडुन् दयरद रामन् शार्न्दान् 4286

पू मकट्कु–भूमिदेवी का; अणियतु ऎन्न–शृंगार जैसा; पॉलि–विद्यमान; पचुम् पूरि–खरा सोना; चेर्त्ति–लगाकर बने; मा मणि–श्रेष्ठ रत्न-जड़ित; तूणिल्–खम्भों पर; चॅय्त–सुनिर्मित; मण्टपम् अततिन्–मंडप के (दरबार के); नाप्पण्–मध्य में; कोमणि–हीरों की; चिविकै मीतु–शिविका पर; कॉण्टलुम्–मेघ और; मिन्नुम् पोल–बिजली के समान; तामरै किळत्तियोटुम्–कमल की स्वामिनी के साथ; तयरत रामन्–दाशरथी राम; चार्न्तान्–आये। ४२८६

देवी पृथ्वी का शृंगार जैसा शोभायुक्त, स्वर्ण-निर्मित तथा रत्न-जड़ित खंभों वाला सभामंडप (दरबार का मंडप) था। दाशरथी श्रीराम और कमला सीताजी मेघ और बिजली के समान शोभायमान होकर रत्न-विशिष्ट एक शिविका पर बैठकर उस मंडप में आये। ४२८६

विरिकडल् नडुवुट् पूत्त मिन्नॅन वारम् वीङ्ग
ऎरिक्किदिर्क् कडवुळ् तन्नै यिन्नमणि महुड मेय्प्पक्
करुमुहिर् करशु शॅन्दा मरैमलर्क् काडु पूत्तोर्
अरियणैप् पॉलिन्द दॅन्न विरुन्दन नयोत्ति वन्दान् 4287

विरि कडल्–विशाल सागर के; नटुवुळ् पूत्त–मध्य खिली; मिन् ऎन्न–बिजली के समान; आरम् वीङ्क–मुक्ताहार ऊंचा दिखा; ऎरि–जलानेवाले;

इनम् मणि–राशियों में रत्न; मकुटम्–जिनमें कतिर् कटवुळ् तन्नै–किरणमाली को; एय्प्प–समान रहते; कारु मुकिऱ्कु–काले मेघ का; जड़ित हो उस किरीट के; चॅन्तामरै मलर्–लाल कमल-पुष्प; काटु पूत्तु–वन में खिल रहते; अरचु–राजा; अरि अणै–सिंहासन पर; पॊलिन्ततु ऑत्त–विराजकर शोभित रहा ओर्–अपूर्व; अयोत्ति वेन्तन्–अयोध्याधिपति; इरुन्तनन्–आसीन रहे। ४२८७ जैसे;

विस्तृत सागर-मध्य बिजली कौंधती रहती हो, ऐसा मुक्ताहार चमक रहा था। किरणमाली की समानता कर रहा था उनका रत्नजड़ित मुकुट। काला मेघराज खिले कमल-पुष्पों के वन के साथ सिंहासन पर विराज रहा हो, ऐसा अयोध्याधिपति सिंहासन पर दर्शन दे रहे थे। ४२८७

मरहदच् चयिल मीदु वाळिलाप् पाय्व दॅन्न
इरुकुळै यिडरुम् ऒरुक णिळमुलै यिळैन लारुतम्
करकम लङ्गळ् पूत्त कऱ्ऱैयङ् गवरि तॅऱ्ऱ
उरहरु नररुम् वानत् तुम्बरुम् बरवि येत्त 4288

मरकतम्–मरकत के; चयिलम्–पर्वत; मीतु–पर; वाळ् निला–श्वेत चाँदनी; पाय्वतु ऑत्त–फैलती जैसे; इरुकुळै–दोनों कुंडलों से; इटरुम्–टकराती; वेल् कण्–भाले-सी आँखों; इळ मुलै–बालस्तन वाली; इळै नलार् तम्–आभरणभूषिता स्त्रियों के; करम् कमलङ्कळ्–कर-कमलों में; पूत्त–खिले; अम्–सुन्दर; कऱ्ऱै कवरि–चामर; तॅऱ्ऱ–शरीर से धीरे से लगते; उरकरुम्–नागलोकवासी और; नररुम्–नर और; वानत्तु उम्परुम्–आकाश के देव; परवि–प्रशंसा में; एत्त–स्तुति करते (उस स्थिति में)। ४२८८

लोल कुंडलों से टकरानेवाली आँखों की, बालस्तनी आभरणालंकृता नारियों के करकमलों पर चामर डुलते थे और उनकी छवि मरकत शैल पर पड़नेवाली श्वेत चाँदनी के समान श्रीराम पर पड़ रही थी। नागलोक-वासी, भूलोकवासी नर और व्योमवासी देव यशगान राजस्तवन कर रहे थे। ४२८८

उलहमी रेळुन् दन्न वॊळिनिलाप् परप्प वानिल्
तिलहवा णुदल्वॆण् डिङ्गळ् शिन्दैनॊन् दॆळिदिऱ् ऱेयक्
कलहवा णिरुदर् कोनैक् कट्टळित् तिट्ट कीर्त्ति
इलहिमे लिवन्द दॆन्न वॆळुत्तनिक् कुडैनिऴ् ऱेय 4289

तिलकम्–तिलक-सहित; वाळ्–सुन्दर; नुतल्–भाल रूपी; वॆळ्–श्वेत; तिङ्कळ्–चन्द्र; उलकम् ईरेळुम्–चौदहों लोकों में; तन्न–अपनी; ऑळि–उज्ज्वल; निला–ज्योति; परप्प–फैलाता; वानिल्–आकाश में; वॆण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; चिन्तै नॊन्तु–मन में दुःख कर; ऎळितिल् तेय–आसानी से क्षय होता; कलकम्–कलहप्रिय; वाळ् निरुतर् कोनै–तलवारधारी राक्षसेंद्र रावण को; कट्टु अळित्तु–निर्मूल करके; इट्ट कीर्त्ति–मिली कीर्ति; इलकि मेल्–प्रकाशमान होकर, ऊपर;

निवन्ततु अँतूत–उन्नत रहा जैसे; अँळु–उठा हुआ; तत्ति कुटै–अनोखा छत्र; निऩ्ऱु–रहकर; एय–छाया देता रहा (उस साज में)। ४२८९

श्रीराम का तिलक-सहित भाल रूपी चाँद चौदहों भुवनों में प्रकाश (यश) फैला रहा था। इसलिए आकाश का श्वेत चाँद दुःख से घुलकर अनायास क्षीण हो रहा था। कलहप्रिय, तलवारधारी राक्षसेंद्र को निर्मूल करके श्रीराम ने जो यश अर्जित किया था वह यश तेजोमय हो ऊपर झलक रहा हो —ऐसा श्वेत छत्र छाया दे रहा था। ४२८९

मङ्गल कीदम् बाड मऱैयव राशि कूऱच्
चङ्गिनम् कुमुऱप् पाण्डिल् तण्णुमै तुवैप्पत् ताविल्
पॉङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पॉरुहयऱ् करुङ्गट् चॅव्वाय्प्
पङ्गय मुहत्ति ताऱ्हळ् मयिऩ्ऩडम् बयिल मादो 4290

मङ्कल कीतम् पाट–मंगलगीत गाये जाते; मऱैयवर्–ब्राह्मण; आशि कूऱ–आशीर्वाद देते; चङ्कु इनम्–शंखराशियाँ; कुमुऱ–गूँजतीं; पाण्टिल्–ताल; तण्णुमै–मृदंग आदि; तुवैप्प–बजते हैं; ता इल्–निर्दोष; पॉङ्कु–बजनेवाले; पल् इयङ्कळ्–अनेक बाजे; आर्प्प–शब्द करते; पॉरु–परस्पर लड़नेवाली; कयल्–'कयल' सी; करु कण्–काली आँखें; चॅव्वाय्–लाल अधर; पङ्कयम्–कमल-से; मुकत्तितार्कळ्–मुखवालियाँ; मयिल् नटम् पयिल–मोर के समान नाचतीं। ४२९०

मंगलगीत, ब्राह्मणों का आशीर्वाद, शंखध्वनि, ताल, मृदंग आदि की ठनक, विविध वाद्यनाद, इनके मध्य परस्पर स्पर्धालू, 'कयल' (मछली-) सी आँखों तथा लाल अधरों वाली पंकजमुखी रमणियाँ 'मयूर-नाच' दिखा रही थीं। ४२९०

तिरैकडऱ् कदिरु नाणच् चॅळुमणि महुड कोडि
करैत्तॅरि विलाद शोरिक् कदिरॉळि परप्प नाळुम्
वरैपॉरु माड वायिल् नॅरुक्कुऱ वन्दु मन्नर्
परशिये वणङ्गुन् दोरुम् बदयुहज् जेप्प मन्नो 4291

तिरै कटल्–तरंग-सागर में; कतिरुम्–सूर्य को; नाण–लजाने देकर; चॅळुमणि–पुष्ट मणियों-सहित; मकुटम् कोटि–मुकुटपंक्तियाँ; करै तॅरिवु इलात–पार न जाना जाय, इस भाँति; चोरि–जो छिटकाते; कतिर्–उस प्रकाश को; ऑळि–ज्योति; परप्प–फैलती; नाळुम्–दिने-दिने; वरै पॉरुम्–पर्वतोपम; माटम् वायिल्–महल के द्वार पर; नॅरुक्कु उऱ–भीड़ लगाकर; वन्तु–आकर; मन्नर्–राजा लोग; परचि–स्तुति करके; वणङ्कुम् तोरुम्–जब-जब नमस्कार करते; पतयुकम्–दोनों पर; चेप्प–लाल हो जाते (ऐसा)। ४२९१

लहरोंवाले समुद्र-मध्य उठते सूर्य को भी लजानेवाली रीति से जो प्रकाश छिटक रहे थे, उन मुकुटों की पंक्तियाँ अपार ज्योति की वर्षा-सी

कर रही थीं। हर दिन पर्वतोपम प्रासाद के द्वार पर श्रीराम आते तब भीड़ लगाकर राजा लोग आते और पैरों से सिर लगाकर नमस्कार और स्तवन करते। उससे श्रीराम के चरण लाल हो जाते थे। ४२९१

मन्दिरक् किळवर् शुट्र मऱैयवर् वळ्त्ति येत्तत्
तन्दिरत् यलॆवर् पोट्रत् तम्बियर् मरुङ्गु शूळ्च्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय्त् तॆरिवैयर् पलाण्डु कूऱ
इन्दिरऱ् कुवमै येय्प्प वॆम्बिरा निरुन्द कालै 4292

मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा के अधिकारी मंत्री लोग; चुट्र–घेर लेते तब; मऱैयवर्–ब्राह्मण; वळ्त्ति–आशीर्वाद देकर; एत्त–स्तुति करते; तन्तिरम् तलॆवर्–सेना-नायक; पोट्र–स्तवन करते; तम्पियर्–सहोदर; मरुङ्कु चुळ–पार्श्व में घेरते; चिन्तुरम्–सिंदूर तथा; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवालोपम लाल अधरों की; तॆरिवैयर्–स्त्रियाँ; पल् आण्टु कूऱ–जयजीव का गान करतीं; इन्तिरऱ्कु–(इस भाँति) इन्द्र से; उवमै एय्प्प–उपमित हों ऐसा; ऍम्पिरान्–हमारे प्रभु; इरुन्त कालै–जब रहे तब। ४२९२

मंत्रणाचतुर मंत्री लोग घेरे रहे। ब्राह्मण मंगल-कामना में स्तुति करते व सेनापति लोग स्तवन करते रहे। कनिष्ठ सहोदर चारों ओर रहे। सिंदूर-सम, प्रवालोपम लाल अधरों वाली स्त्रियाँ 'जुग-जुग जियो' का गान करती रहीं। इस भाँति जब हमारे प्रभु देवेंद्र की समानता करते हुए रहते थे तब। ४२९२

मयिन्दन्मा तुमिन्दन् कुम्ब नङ्गदन् ननुमन् माट्रिल्
कयन्दरु कुमुदक् कण्णन् शदवलि कुमुदन् तण्डार्
नयन्दॆरि तदिमु हन्को हशमुहन् मुदल नण्णार्
वियन्दॆळ्ळ मऱुबत् तेळ् कोडियाम् वीर रोडुम् 4293

मयिन्तन्–मैंद; मा तुमिन्तन्–बड़ा द्विविद; कुम्पन्–कुंभ; अङ्कतन्–अंगद; अनुमन्–हनुमान; माट्रिल्–श्रेष्ठ; कयम् तरु–तड़ाग से उत्पन्न; कुमुतक्कण्णन्–कुमुद जैसी आँखों वाला; चतवलि–शतबली; कुमुतन्–कुमुद; तण्टार्–शीतल मालाधारी; नयन्तॆरि ततिमुकन्–नयशील दधिमुख; को कचमुकन्–उत्तम गजमुख; मुतल–आदि; नण्णार्–शत्रु को भी; वियन्तु ऍळ्ळम्–विस्मित कर युद्ध करनेवाले; अऱुपत्तेळ्–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ संख्या के; वीररोटुम्–वीरों के साथ। ४२९३

मैंद, द्विविद, कुंभ, अंगद, हनुमान, कुमुदाक्ष, शतवली कुमुद, दधिमुख, गजमुख आदि शत्रुविस्मयकारी योद्धा, सड़सठ करोड़ वीरों और—। ४२९३

एनैयर् पिऱरुन् जुट्र वॆळ्ळनदु वॆळ्ळत् तुट्र
वानर रोडुम् वॆय्योन् महन्वनदु वणङ्गिच् चूळ्त्

तेऩ्ऩिमि रलङ्गऱ् पैन्दार् वीडणऩ् कुरिशिल् शॆय्य
माऩवा ळरक्क रोडु वन्दडि वणङ्गिच् चऴ्न्दाऩ् 4294

एऩैयर् पिऱरुम्–अन्य और लोगों के; चुऱ्ऱ–चारों ओर रहते; ॲऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तु–वॆळ्ळम् में; उऱ्ऱ–रहे; वानररोटुम्–वानरों के साथ; वॆय्योऩ् मकऩ्–तापक सूर्य का पुत्र; वन्तु–आकर; वणङ्कि चूऴ–नमस्कार कर पास रहा तो; तेऩ् इमिर्–भ्रमर-गुंजरित; अलङ्कल्–हिलनेवाली; पचुमै तार्–नवीन मालाधारी; वीटणऩ् कुरिच्चिल्–विभीषण साधु; चॆय्य मानम्–श्रेष्ठ मान और; वाळ्–तलवार रखनेवाले; अरक्करोटु–राक्षसों के साथ; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पालागन करके; चूऴ्न्ताऩ्–पास रहा। ४२६४

अन्य वीरों के मध्य, सत्तर वॆळ्ळम् की सेना के वानरों को लेकर गरम किरणमाली का पुत्र सुग्रीव आया। फिर भ्रमर-मंडरित तथा हिलने वाली मालाधारी साधु विभीषण मान और तलवार रखनेवाले राक्षस वीरों को लेकर आया और स्थित हुआ। ४२९४

वॆऱ्ऱिवॆम् जेऩै योडुम् वॆऱिप्पॊऱिप् पुलियिऩ् वॆव्वाल्
शुऱ्ऱुऱत् तॊडुत्तु वीक्कु मरैयिऩऩ् शुऴलुङ् गण्णऩ्
कऱ्ऱिरळ् वयिरत् तिण्डोळ् कडुन्दिऱ् मडङ्ग लऩ्ऩाऩ्
ॲऱ्ऱुनीर्क् कङ्गै नावाय्क् किऱैकुहऩ् तॊऴुदु शूऴ्न्दाऩ् 4295

वॆऱि–आग्रह और; पॊऱि–चित्तियों-सहित; वॆम्मै पुलियिऩ्–वैरी बाघ की; वाल्–पूँछ को; चुऱ्ऱु उऱ–घुमाकर; तॊटुत्तु–लपेटकर; वीक्कुम्–बँधी; अरैयिऩऩ्–कमर वाला; चुऴलुम् कण्णऩ्–घूमती आँखों का; कल् तिरळ्–पत्थर-सम कठोर; वयिरम्–वज्र-सम; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों का; कटु तिऱम्–सख्त ताकत के; मटङ्कल् अऩ्ऩाऩ्–सिंह के समान; ॲऱ्ऱुम्–लहराते; नीर्–जल की; कङ्कै–गंगा पर; नावाय्क्कु–नौकाओं का; इऱै–मालिक; कुकऩ्–(जो था वस) गुह ने; वॆऱ्ऱि–विजयी; वॆम् चेऩैयोटुम्–भयंकर सेना के साथ; चूऴ्न्तु तॊऴुताऩ्–आकर नमस्कार किया। ४२६५

फिर गुह अपनी विजयवाहिनी के साथ आया। उसकी कमर में आग्रह तथा चित्तियों-सहित रहे व्याघ्र की पूँछ लपेटी गयी थी। घूमने वाली (चंचल) आँखें, पत्थर-सम वज्रदृढ़ स्थूल कंधे, कठोर, वली सिंह-सम, लहराते जल की गंगा पर की नौकाओं का स्वामी वह नमस्कार करके पास रहा। ४२९५

वळ्ळलु मवर्हळ् तम्मेल् वरम्बिऩ्ऱि वळर्न्द कादल्
उळ्ळुऱप् पिणित्त शॆय्है यॊऴिमुहक् कमलङ् गाट्टि
अळ्ळुऱत् तऴुवि ऩाऩ्पोऩ् ऱहमहिऴ्न् दिऩिदि ऩोक्कि
ॲळ्ळलि लाद मॊय्म्बी रीण्डिऩि दिरुत्ति रॆऩ्ऱाऩ् 4296

वळ्ळलुम्–वरद प्रभु भी; अवर्कळ् तम्मेल्–उनसे; वरम्पु इन्ऱि–असीम रीति से; वळर्न्त कातल्–बढ़ा रहा प्रेम; उळ् उऱ–अंदर से; पिणितुल–जो बाँधे रहा उस; चॅय्कै–हाल को; ऑळि मुकम्–प्रसन्न मुख के; कमलम् काट्टि–कमल में दिखाकर; अळ् उऱ–कसकर; तऴुवितान् पोतुऱ–आलिंगन किया जैसे; अकम् मकिऴ्न्तु–मन में मोद पाकर; इत्तितिन् नोक्कि–मधुर दृष्टि से देखकर; अॅळ्ळल् इलात–अनिंद्य; मॉय्म्पीर्–बलवान लोगो; ईण्टु–यहाँ; इत्तितु–सुख से; इरुत्तीर्–आसीन हो जाओ; अॅन्ऱान्–कहा। ४२९६

वरद प्रभु के मुख पर असीम प्रेम का आंतरिक भाव झलकता था। उन पर उन्होंने ऐसी मधुर दृष्टि डाली, जिससे लगता था कि उन्हें गाढ़ालिंगन का-सा सुख मिल रहा हो। उन्होंने उन्हें आसन दिखाकर कहा कि सुख से आसीन हो जाओ। ४२९६

नऩ्ऩॅऱि यऱिवु शाऩ्ऱोर् नाऩ्मऱैक् किऴवर् मऱ्ऱैच्
चॊऩ्ऩॅऱि यऱियु नीरार् तोमऱु पुलमैच् चॅल्वर्
पऩ्ऩॅऱि तोऱुन् दोऩ्ऱुम् वरुणिदर् पण्बिऩ् केळा
मऩ्ऩवर्क् करशऩ् पाङ्गर् मरबिऩाऱ् चुऱ्ऱ मन्ऩो 4297

नल् नॅऱि–सन्मार्गगामी; अऱिवु–बुद्धिमान; चाऩ्ऱोर्–साधु; नाल् मऱै किऴवर्–चतुर्वेदज्ञ और; चॊल् नॅऱि–भाषण-रीति; अऱियुम्–जानने का; नीरार्–सामर्थ्यशाली; तोम् अऱु–निर्दोष; पुलमै–विद्वत्ता के; चॅल्वर्–धनी; मऱ्ऱै–और; पण्पिऩ्–श्रेष्ठ गुणों के; केळ् आम्–नातेदार ऐसे; पल् नॅऱि तोऱुम्–विविध शास्त्रों में; तोऩ्ऱुम्–चतुर रहे; वरुणितर्–उत्कृष्ट पंडित; मऩ्ऩवर्क्कु–राजाओं के; अरचऩ्–राजा के; पाङ्कर्–पास; मरपिऩाल्–क्रम के अनुसार; चुऱ्ऱ–घेरे रहे। ४२९७

सन्मार्गी बुद्धिमान, चतुर्वेदज्ञ, भाषण की रीति के ज्ञाता, निर्दोष विद्वत्ता के धनी और सुसंस्कृत गुणी और विविध शास्त्रों में विदग्ध पंडित राजाधिराज श्रीराम के पास अपने-अपने स्थान में स्थित रहे। ४२९७

तेम्बडु पडप्पै मूदूर् तिरुवॊडु मयोत्ति शेर्न्द
पाम्बणै यमलऩ् तऩ्ऩैप् पऴिच्चॊडुम् वणक्कम् बेणि
वाम्बुऩऱ् परवै ञालत् तरशरु मऱ्ऱु ळोरुम्
एम्बलुऱ् ऱिरुन्दार् नॊय्दि निरुमदि यिऱन्द दन्ऱे 4298

वाम् पुऩल्–उछलते (तरंगायमान) जल के; परवै–समुद्रावृत; ञालत्तु अरचरुम्–पृथ्वी के राजा; मऱ्ऱुळोरुम्–और अन्य लोग; तेम् पटु–मधुपूर्ण; पटप्पै–उपवनों से युक्त; मुतुमै ऊर्–प्राचीन नगरी; अयोत्ति–अयोध्या में; तिरुवॊटु–श्री के साथ; चेर्न्त–मिले; पाम्पु अणै–शेषशायी; अमलऩ् तऩ्ऩै–अमलदेव को; पऴिच्चॊटुम्–स्तुति के साथ; वणक्कम्–नमस्कार; पेणि–करके; एम्पल् उऱ्ऱु–संतोष से भरकर; इरुन्तार्–रहे; नॊय्तिऩ्–अनायास; इरुमति–दो महीने; इऱन्ततु–बीत गये। ४२९८

इस भाँति लहरों वाले समुद्र से आवृत धरणी के राजा लोग और अन्य जन मधुपूरित उपवनों से भरी पुरातन नगरी अयोध्या में श्रियःपति शेषशायी श्रीराम की स्तुति तथा सेवा करते हुए आनंद के साथ रहते थे। अनायास दो मास बीत गये। ४२९८

नॆरुक्किय वमर रॆल्ला नॆडुङ्गडऱ् किडैनिन् ऱेत्तप्
पॊरुक्कॆन वयोत्ति यॆय्दि मऱ्ऱवर् पॊरुमल् तीर
वरुक्कमो डरक्कर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
तिरुक्किळर् मार्बि नान्पिऱ् चॆय्ददु शॊप्प लुऱ्ऱाम् 4299

नॆट्टु–घने; कडऱ्कु–क्षीरसागर के; इडै–मध्य; नॆरुक्किय–सघन इकट्ठे हुए; अमरर् ऎल्लाम्–सारे देवों ने; निन्ऱु एत्त–रहकर स्तुति की; पॊरुक्कॆन–झट करके; अयोत्ति–अयोध्या; ऎय्ति–आकर; अवर् पॊरुमल्–उनका दुःख; तीर–दूर करने; वरुक्कमोडु–सवर्ग; अरक्कर् यारुम्–सभी राक्षसों को; मडि तर–मरने देने; वरिविल् कॊण्ड–सबन्ध कोदंड जिन्होंने लिया; तिरु–उन श्री; किळर्–निवास; मार्पिनान्–वक्षवाले श्रीराम ने; पिन् चॆय्ततु–जो बाद किया; चॊप्पल् उऱ्ऱाम्–वह बताने लगते हैं। ४२९९

देवों ने सघन भीड़ में एकत्रित होकर क्षीरसागर-मध्य रहकर श्रीविष्णु से प्रार्थना की थी। वह सुनकर उन्होंने झट अयोध्या में अवतार लेकर, राक्षसों को निर्मूल करके देवों के दुःखनिवारण करने के संकल्प से सबंध कोदंड हाथ में लिया था। उन श्रीनिवासवक्ष श्रीराम ने आगे जो किया वह अब हम (कवि) कहने लगते हैं। ४२९९

मऱैयवर् तङ्गट् कॆल्ला मणियॊडु मुत्तुम् बॊन्नुम्
निऱैवळम् बॆरुहु पूवुम् जुरबियु निरैत्तु मेन्मेल्
कुऱैयिदॆन् ऱिरन्दोर्क् कॆल्लाङ् गुऱैवरक् कॊडुत्तुप् पिन्नर्
अऱैकऴ लरशर् तम्मै वरुहॆन वरुळ वन्दार् 4300

मऱैयवर् तङ्कट्कु ऎल्लाम्–सभी ब्राह्मणों को; मणियॊडु–रत्नों के साथ; मुत्तुम्–मोती; पॊन्नुम्–और सोना; वळम् निऱै–उर्वरतापूर्ण; पॆरुकु पूवुम्–समृद्ध भूमि; चुरपियुम्–और गायें; मेल् मेल् निऱैत्तु–बार-बार पंक्तियों में देकर; कुऱै इतु–यह हमारी माँग है; ऎन्ऱु–ऐसा; इरन्तोर्क्कु ऎल्लाम्–जो याचना करते उन सभी को; कुऱैव् अऱ–मनमाने रूप से; कॊडुत्तु–देकर पिन्नर–बाद; अऱै कऴल्–क्वणित पायलधारी; अरचर् तम्मै–राजाओं को; वरुक–आओ; ऎन–ऐसा; अरुळ–कृपा की आज्ञा देने पर; वन्तार्–आये। ४३००

उन्होंने सारे ब्राह्मणों को, रत्न, मोती, स्वर्ण, उर्वर वा समृद्ध भूमि, गायें आदि बार-बार पंक्तियों में भरकर दान किया। फिर क्वणित पायलधारी धराधिपतियों को 'आओ' कहकर बुलाया। वे भी आये। ४३००

ऐयनु मवर्हळ् तम्मै यहमहिळ्न् दरुळि नोक्कि
वैयहम् जिविहै तोङ्गन् मामणि महुडम् बोंर्पूण्
कोय्युळैप् पुरवि तिणडेर् कुञ्जर माडै यिन्न
मॅय्युरक् कोडुत्त पिन्नरक् कोडुत्तनन् विडैयु मन्नो 4301

ऐयनुम्–स्वामी भी; अवर्कळ् तम्मै–उन्हें; अकम् मकिळ्न्तु–प्रसन्नचित्त होकर; अरुळिन् नोक्कि–कृपा-दृष्टि डालकर; वैयकम्–भूमि; चिविकै–शिविका; तोङ्कल्–हार; मामणि मकुटम्–किरीट; पोंन् पूण्–स्वर्णाभरण; कोय् उळै–सँवारे अयालवाले; पुरवि–अश्व; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; कुञ्चरम्–कुंजर; आटै–वस्त्र; ॲन्न–आदि इन्हें; मॅय् उर–सच्चे स्नेह के साथ; कोटुत्त पिन्नर्–देने के बाद; विटैयुम्–विदा भी; कोटुत्तनन्–दिलायी। ४३०१

प्रभु ने उन्हें सस्नेह देखा और उन्हें भूमि, शिविकाएँ, हार, रत्न-मुकुट, स्वर्णाभरण, सँवारे अयालवाले अश्व, सुदृढ़ रथ, कुंजर, बहुमूल्य वस्त्र आदि इन वस्तुओं को सच्चे प्यार के साथ दान किया। उसके बाद विदा भी दिलायी। ४३०१

शम्बरन् तन्नै वॅन्र तयरद नीन्र कालत्
तुम्बर्तम् बॅरुमा नीन्द वॉळिमणिक् कडहत् तोडुम्
कोम्बुडै मलैयुन् देरुङ् गुरहदक् कुळुवुन् दूशुम्
अम्बरत् तनन्दर् नीत्ता नलरिका दलनुक् कीन्दान् 4302

अम्परत्तु–सागर में; अनन्तर्–निद्रा; नीत्तान्–(के) त्यागी; चम्परन् तन्नै–शम्बरासुर के; वॅन्र–विजेता; तयरतन्–दशरथ ने; ईन्र–जब जनाया; कालत्तु–उस समय; उम्पर् तम्–देवों के; पॅरुमान्–राजा देवेंद्र द्वारा; ईन्त–दत्त; ऑळि मणि–उज्ज्वल रत्नमय; कटकत्तोटुम्–कटक के साथ; कोम्पु उटै–दाँतों वाले; मलैयुम्–पर्वत-सम गजों; तेरुम्–रथों और; कुरकतम् कुळुवुम्–अश्ववृन्द और; तूचुम्–वस्त्र; अलरि–सूर्य के; कातलनुक्कु–पुत्र को; ईन्तान्–दिया। ४३०२

क्षीरसागर-शयन त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन श्रीराम ने दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लेने के समय देवेंद्र ने जो कटक-दाँत वाले गज दिये थे उन पर्वतोपम हाथियों, रथों, अश्ववृन्दों और वस्त्रों को सूर्यसूनु को दान किया। ४३०२

अङ्गद मिलाद कॉऱ्ऱत् तणणलु महिल मॅल्लाम्
अङ्गद नॅन्नु नाम मळहुरत् तिरुत्तु मापोल्
अङ्गदङ् गन्नर् रोळाङ् कयनूकोडुत् तदनै यीन्दान्
अङ्गदन् पॅरुमै मण्मे लारिद्रिन् दरैय हिर्पार् 4303

अङ्कतम्–अपयश; इलात–रहित; कॉऱ्ऱत्तु अणणलुम्–विजय के स्वामी प्रभु ने भी; अकिलम्–संसार; ॲल्लाम्–भर में; अङ्कतन्–अंगद; ॲन्नुम्–का;

नामम्-नाम; अऴकु उऱ-सुन्दर रीति से; तिरुत्तुमा पोल्-सार्थक करते से; कन्तल्-इक्षु-सम; तोळाऱ्कु-कंधों वाले को; अयन्-ब्रह्मा ने; कोटुत्ततै-जो दिया था उस; अङ्कतम्-अंगद को; ईन्तान्-दिया; अङ्कु अतन् पॅरुमै-वहाँ उसका महत्व; मण् मेल्-पृथ्वी पर; अऱिन्तु-जानकर; अऱैय निऱ्पार्-कहने की शक्ति रखनेवाला; आर्-कौन है। ४३०३

अकलंक विजयी श्रीराम ने अंगद को इक्ष्वाकु को ब्रह्मा द्वारा दत्त अंगद को दान किया मानो उससे अंगद का नाम सार्थक बनाकर संसार भर में प्रशस्त करा रहे हों ! उस आभरण की महिमा कह सकनेवाले इस पृथ्वी में कौन मिले ? । ४३०३

पिन्नरु मवनुक् कैयन् पॅरुविलै यारत् तोडु
मन्नुनुण् तूशु मावु मदमलैक् कुऴवु मीन्दु
उन्नैनी यन्ऱि यिन्द वुलहिनि लोप्पि लादाय्
मन्नुह कदिरोन् मैन्दन् तन्नोडु मरुवि यॅन्ऱान् 4304

पिन्नरुम्-फिर भी; ऐयन्-प्रभु ने; अवनुक्कु-उसे; पॅरुविलै-बड़े मूल्य के; आरत्तोटु-हार के साथ; मन्नुम्-युक्त; नुण्-महीन; तूचुम्-वस्त्र; मावुम्-अश्व; मत मलै-मत्त पर्वतों (गजों) के; कुऴुवुम्-झुण्डों को; ईन्तु-देकर; इन्त-इस; उलकितिल्-भूमि पर; उन्नै अन्ऱि-अपने को छोड़कर; ओप्पु इलाताय्-अपनी सानी न रखनेवाले; नी-तुम; कतिरोन्-किरणमाली के; मैन्तन् तन्नोटु-पुत्र के साथ; मरुवि-मेल करके; मन्नुक-रहो; ऑन्ऱान्-कहा। ४३०४

और भी प्रभु ने उसे बहुमूल्य हार, सुंदर सूक्ष्म कारीगरी से युक्त वस्त्र, अश्व और हाथियों के दल आदि दिये और कहा कि स्वोपम वीर ! तुम अर्कपुत्र के साथ मेल बनाकर रहो। ४३०४

मारुदि तन्नै यैयन् महिऴ्न्दिनि दरुळि नोक्कि
आरुद विडुदऱ् कॊत्तार् नीयला लन्ऱु शॅय्द
पेरुद विक्कि यान्शॅय् शॅयल्पिऱि दिल्लैप् पॅम्बूण्
पोरुद वियतिण् तोळाय् पॊरुन्दुऱप् पुल्लु हॅन्ऱान् 4305

ऐयन्-प्रभु; मारुति तन्नै-मारुति को; मकिऴ्न्तु-संतोष और; अरुळि-कृपा करके; इनितु नोक्कि-मधुर दृष्टि से देखकर; उतविटुतऱ्कु-सहायता देने में तुम्हारी; ऑत्तार्-समानता करनेवाले; नी अलाल्-तुम्हारे सिवा; आर्-कौन है; अन्ऱु चॅय्त-उस दिन कृत; पेरुतविक्कु-बड़ी सहायता का; यान् चॅय्-मैं (प्रतिकार) करूँ; चॅयल्-ऐसा कार्य; पिऱितु इल्लै-दूसरा नहीं; पॅम् पूण्-स्वर्णाभरण-भूषित; पोर् उतविय-युद्ध सहायक; तिण् तोळाय्-सुदृढ़ कंधों वाले; पॊरुन्तुऱ-कसकर; पुल्लुक-आलिंगन कर लो; ऑन्ऱान्-कहा। ४३०५

प्रभु ने मारुति पर संतोष और कृपा की दृष्टि डाली। कहा कि

सहायता करने में तुम्हारी, तुमको छोड़कर बराबरी करनेवाले कोई नहीं ! ऐसे बेजोड़ वीर ! उस दिन तुमने जो उपकार किया उसके प्रतीकार में कुछ करके उऋण हो जाऊँ, ऐसा कोई कार्य नहीं। तुम गाढ़ालिंगन कर लो। ४३०५

ऍन्ऱुरैत्तलुम् वणङ्गि नाणि वाय्पुदैत् तिलङ्गु तानै
मुन्ऱलै यॊदुक्कि निन्ऱ मॊय्म्बनैत् मुळ्ळुदु नोक्किप्
पॊन्ऱिणि वयिरप् पैम्बू णारमुम् बुनैमॆन् ऱूशुम्
वन्ऱिऱर् कयमु मावुम् वळङ्गिनन् वयङ्गु शीरान् 4306

वयङ्कु–ज्वलंत; चीरान्–कीर्तिवाले के; अन्ऱुरलुम्–यों कहते ही; नाणि–शरमाकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख को ढँककर; इलङ्कु–विद्यमान; तानै–सेना के; मुन् तलै–हरावल में; ऑतुक्किन् निन्ऱ–हटकर जो खड़ा रहा; मॉय्म्पनै–उस बलवान को; मुळ्ळुतुम् नोक्कि–पूर्ण रूप से देखकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमयी; वयिरम् पैम् पूण्–हीरा का श्रेष्ठ आभरण; आरम्–हार; पुनै–धार्य; मॆल्–महीन; तूचुम्–वस्त्र और; वन् तिऱल्–सशक्त; कयमुम्–गज और; मावुम्–अश्व; वळङ्किनन्–दिये। ४३०६

श्रीराम के ऐसा कहते ही हनुमान लजाते हुए सिर झुकाकर सेना के अग्रभाग में किसी कोने में दूर खड़ा हो गया। अपने मुख पर उँगलियों को (विनय-मुद्रा में) रखकर खड़े रहे उस पर प्रभु ने पूर्ण रूप से कृपा-दृष्टि डाली और स्वर्ण-रत्न-हीरे के आभरण, हार, धार्य वस्त्र और बलवान हाथी और अश्व दिये। ४३०६

पूमलर्त् तविशै नीत्तुप् पॊन्मदिल् मिदिलै पूत्त
तेमॊऴित् तिरुवै यैयन् तिरुवरुण् मुहन्दु नोक्कप्
पामरैक् किळत्ति यीन्द परुमुत्त मालै कैक्कॊण्
डेमुऱक् कॊडुत्ता ळन्ना ळिडररिल् दुदवि नाऱ्कै 4307

पू मलर्–छविमय कमल के; तविचै–आसन को; नीत्तु–छोड़कर; पॊन् मतिल्–स्वर्णप्राचीर वाली; मितिलै पूत्त–मिथिला में उदित; तेम् मॊऴि–मधु-मधुर वाणी; तिरुवै–श्री (सीता) को (एक मुक्तामाला देकर); ऐयन्–प्रभु ने; तिरुवरुण्–कृपा को; मुकन्तु–लेकर; नोक्क–देखने पर; पा मऱै किळत्ति–वेदभाषित सरस्वती के; ईन्त–दिये गये; परु मुत्तम्–स्थूल मोतियों के; मालै–हार को; कै कॊण्टु–हाथ में लेकर; अन्नाळ्–उन्होंने अपना; इटम्–मौका अऱिन्तु–समझकर; उतवित्तार्क्कु–जिसने सहायता की उसे; एम्–आनंद; उऱ–के साथ; कॊटुत्ताळ्–दे दिया। ४३०७

श्रीराम ने कमलवास त्यागकर जो मधुरवाणी भगवती लक्ष्मी स्वर्ण-प्राचीरों वाली मिथिलावासिनी हो गयी थीं, उनके हाथ में एक मुक्तामाला दी और एक सार्थक दृष्टि डाली। वह मुक्तामाला वेदभाषित सरस्वती

से दी गयी थी। सीताजी ने उस ऐन मौक़े पर जिसने उनकी सहायता की थी, उस हनुमान के हाथ में दे दिया। ४३०७

चन्दिरर् कुवमै शातूर तारहैक् कुऴुवै वॆन्ऱ
इन्दिरर् केयन्द दाहु मॆन्नुमुत् तारत् तोडु
कन्दडु कळिऱु वाशि तूशणि कलन्गळ् मऱ्ऱुम्
उन्दिन ऱॆण्गिन् वेन्दर् कुलहमुन् दुदवि नाने 4308

तारकै–नक्षत्रों के; कुऴुवै–समूहों को; वॆन्ऱ–जिसने हराया था; चन्तिरर्कु–चन्द्र को; उवमै–उपमा; चात्ऱ–जो बन सके; इन्तिरर्कु–इन्द्र को; एय्न्तनु आकुम्–जो योग्य हो सके; ऍन्नुम्–ऐसे; मुत्तु आरत्तोटु–मुक्ताहार के साथ; कन्तु–खूँटा; अऱ्ऱु–तोड़नेवाले; कळिऱु–हाथी; वाचि–अश्व; तूचु–वस्त्र; अणिकलन्कळ्–आभरण; मऱ्ऱुम्–और अन्य चीजों को; ऍण्किन्–रीछों के; वेन्तर्कु–राजा को; उलकमुम्–प्रपंच को; उतविनान्–जिन्होंने रचा था, उन श्रीराम ने; उन्तिनन्–दिया। ४३०८

फिर त्रिलोकपिता श्रीराम ने रीछों के राजा जाम्बवान को निम्नलिखित उपहार दिये— नक्षत्रप्रकाशहारी, इंद्रयोग्य मुक्तामाला, खूँटे तोड़ सकनेवाले गज, वाजी, वस्त्र, आभरण और अन्य उपहार। ४३०८

नवमणिक् काऴु मुत्तु मालैयु नलङ्गॊळ् तूशुम्
उवमैमऱ् ऱिलाद पॊऱ्पू णुलप्पिल पिऱवु मॊण्डारक्
कवनवॆम् बरियुम् वेहक् कदमलैक् करशुङ् गादल्
पवननुक् किनिय नण्बन् पयन्दॆडुत् तवनुक् कीन्दान् 4309

नवमणि–नव रत्नों से; काऴम्–निर्मित; मुत्तु मालैयुम्–मोती-माला; नलम् कॊळ्–मनोहर; तूचुम्–वस्त्र; मऱ्ऱु–और; उवमै–उपमा; इलात–जिसकी न हो; पॊऩ् पूण्–ऐसे स्वर्णाभरण; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य उपहार; ऒळ्–उज्ज्वल; तार्–हार से अलंकृत; कवनम्–तेज चलनेवाले; वॆम् परियुम्–क्रूर अश्व; वेकम्–तेज; कतम् मलैक्कु–क्रोधी गजों के; अरचुम्–राजा को; पवनन्–पवन के; इनिय नण्पन्–प्यारे सखा (अग्नि) के; पयन्तु–जाये; ऍटुत्तवनुक्कु–पुत्र को; कातल्–प्यारे नील को; ईन्तान्–दिया। ४३०९

फिर उन्होंने नवरत्नयुक्त मुक्तामाला, सुन्दर वस्त्र, अनुपम स्वर्णाभरण अक्षय अन्य उपहार, उज्ज्वल हारालंकृत तीव्रगामी भयंकर घोड़े, क्रोधी गजराज आदि उपहार, पवन-सखा अग्नि के पुत्र प्यारे (नील) को दिये। ४३०९

पदवलिच् चदङ्गैप् पैन्दाऱ् पाय्परि पणैत्तिण् कोट्टु
मदवलिध् चैलम् वॊऱ्पूण् सामणिक् कोवै मऱ्ऱुम्

उदवलिड़् ऱहैव वन्ऱि यिल्लत्त वुळ्ळ वॅल्लाम्
शदवलि तन्नक्कुत् तन्दान् शदुमुहत् तवनैत् तन्दान् 4310

चदु मुकत्तवनै–चतुर्मुख के; तन्तान्–जनक (श्रीराम) ने; पतम्–चरणों में; वलि–वल्लरी-सम; चतङ्कै–घुंघुरुओं-सहित; पं तार्–स्वर्णहार से अलंकृत; पाय् परि–फाँद चलनेवाले अश्व; पर्ण–स्थूल; तिण्–सुदृढ़; कोटु–दाँतों वाले; मतम् वलि–मत्त बली; चैलम्–शैल-सम हाथियों को; पोंन् पूण्–स्वर्ण-आभरण; मामणि–श्रेष्ठ रत्नों के; कोवै–हारों को और; मऱ्ऱुम्–और; उतवलिल्–देने में; तकैव–देने के; अल्ऱि–सिवा; इल्लत्त–नहीं है ऐसे; उळ्ळ–जो रहे; ॲल्लाम्–उन सारे पदार्थों को; चतवलि तन्नक्कु–शतबली को; तन्तान्–दिया। ४३१०

चतुर्मुखजनक श्रीराम ने वल्ली-सम घुँघुरुओं से युक्त स्वर्ण-हार से विभूषित और फाँद चलनेवाले घोड़े, स्थूल सुदृढ़ दाँतों वाले हाथी, स्वर्णाभरण, रत्नहार और ऐसे अन्य उपहार, जिनके संबन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि ये देने योग्य नहीं, वे सारे (उपहार) शतबली को दिये। ४३१०

पेशरि दॉरुवर्क् केयुम् बॅरुविलै यिदनुक् कीदुक्
कोशरि मिलवॅन् ऱॅण्णु मौळिमणिप् पूणुन् दूशुम्
मूशरिक् कुवमै मुम्मै मुम्मदक् कळिऱु मावुम्
केशरि तन्नक्कुत् तन्दान् किळर्मणि मुळवुत् तोळान् 4311

किळर्–भासमान; मणि–रत्नाभरणधारी; मुळवु तोळान्–'मर्दल'-सम कंधों वाले; इतनुक्कु–इसके लिए; एयुम्–जो योग्य होगा; पॅरु–वह बड़ा; विलै–मूल्य; ऑरुवर्क्केयुम्–किसी के लिए भी; पेचरितु–कहना कठिन है; ईतुक्को–इसका; चरि इलतु–बराबरी का नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; ॲण्णुम्–मान्य; ऑळि मणि–उज्ज्वल रत्नों के; पूणुम्–आभरण; तूचुम्–वस्त्र; मूचु–फैलती; अरि–वडवा के; मुम्मै–तिगुने (मान्य); मुम्मतम्–त्रिमद वाले; कळिऱुम्–हाथियों को; मावुम्–और अश्वों को; केचरि तन्नक्कु–केसरी को; तन्तान्–दिया। ४३११

जाज्वल्यमान नवरत्नाभरणों से भूषित भुजावाले श्रीराम ने केसरी को ऐसे ज्वलंत रत्नाभरण दिये, जिनके योग्य बड़े मोल किसी से भी निर्धारित नहीं हो सकते थे और जिनके समान कोई दूसरी वस्तु नहीं थी। और वडबा के तिगुने बलवान तथा सर्वत्रग घोड़े और हाथी दिये। ४३११

वळत्तणि कलनुन् दूशु मामदक् कळिऱु मावुम्
नळत्तोडु कुमुदन् तार नवैयऱु पनशन् मऱ्ऱोर्
उळमहिळ् वॅय्दुम् वण्ण मुलप्पिल पिऱवु मीन्दान्
कळत्तमर् कमल वेलिक् कोशलक् काव लोने 4312

कळन्–धान पीटने के मैदान; अमर्–युक्त; कमलम् वेलि–कमल के बाड़ों से पूर्ण; कोचलम् कावलोन्–कोसल के अधिपति ने; वळम्–समृद्ध; अणिकलनुम्–आभरण और; तूचुम्–वस्त्र; मा मतम्–अधिक मद से युक्त; कळिऱुम्–हाथी;

मावुम्–और अश्व; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य, सबको; नळनोटु–नल और; कुमुतन् तारन्–कुमुद, तार और; नवै अऱ्–निर्दोष; पतचन्–पनस और; मऱ्ऱोर्–अन्यों को; उळम्–मन; मकिऴ्वु–खुश; ॲय्तुम्–हो जाय; वण्णम्–ऐसा; ईन्तान्–दे दिया। ४३१२

धान पीटने के मैदान, कमलवन आदि से भरे कोसल देश के अधिपति श्रीराम ने बहुमूल्य आभूषण, वस्त्र, बहुमदमत्त हाथी, अश्व और अक्षय अनेक उपहार नल, कुमुद, तार, निर्दोष पनस आदि को देकर उनके मन को खूब तृप्त कर दिया। ४३१२

अव्वहै अऱुपत् तेऴु कोडिया मरियित् वेन्दर्क्
कॅव्वहैत् तिऱत्तु नल्हि यितियत पिऱवुङ् गूऱिप्
पव्वमोत् तुलहिऱ् पल्हु मॅऴुपदु वॅळ्ळम् बार्मेल्
कव्वैयऱ् ऱिनितु वाऴक् कॉडुत्तत् कडैक्क णोक्कम् 4313

अव्वकै–उस भाँति; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ जो थे; अरियिन्–उन वानरों के; वेन्तर्क्कु–नायकों को; ॲव्वकै–विविध; तिऱत्तम्–उपहार-पदार्थों को; नल्कि–देकर; इतियत–मधुर वचन; पिऱवुम्–अनेक; कूऱि–कहकर; पव्वम्–समुद्र; ओत्तु–के समान; उलकिल्–संसार में; पल्कुम्–भरे-से रहनेवाले; ॲऴुपतु–सत्तर; वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' वानर-सेना को; पार् मेल्–भूमि में; कव्वै–दुःख से; अऱ्ऱु–रहित; इतितु वाऴ–सुख से रहें, तदर्थ; कटै कण्–आँखों के कोर से; नोक्कम्–कृपा की दृष्टि; कॉटुत्ततन्–डाली। ४३१३

इस भाँति सड़सठ हज़ार करोड़ वानर-यूथपों को भाँति-भाँति के उपहार देकर मधुर वचनों से खुश किया। फिर समुद्र-सम संसार में फैले रहनेवाले सत्तर वॅळ्ळम् वानरों पर कृपाकटाक्ष फेरी कि वे इस भूमि में विना किसी बाधा के, सुख से, रहें। ४३१३

मिन्नैयेर् मवुलिच् चॅङ्गण् वीडणप् पुलवर् कोमान्
ऱन्नैये यिनिदु नोक्किच् चराशरञ् जूऴ्न्द शाल्बिन्
निन्नैये यॉप्पार् निन्नै यलदिल रुळरे लैय
पॉन्नैये यिरुम्बु नेरु मायिनुम् बॉरुवन् ऱॅन्ऱान् 4314

मिन्नै एर्–विद्युत्-संकाश; मवुलि चॅं कण्–लाल मुकुटधारी व लाल आँखों वाले; वीटणन्–विभीषण; पुलवन्–ज्ञानियों में; कोमान् तन्नैये–राजा को; इतितु नोक्कि–मधुरभाव से देखकर; चराचरम्–चराचर को; चूऴ्न्त–आवृत; चाल्पिन्–इस सृष्टि में; निन्नै–तुम्हारी; ऑप्पार्–बराबरी करनेवाला; निन्नै–तुम्हें; अलतु–छोड़कर; इलर्–है कोई; उळरेल्–तो; ऐय–तात; पॊन्नैये–स्वर्ण की; इरुम्पु–लोहा; नेरुम्–समता करेगा; आयिनुम्–तो भी; पॊरु अन्ऱु–समान नहीं; ॲन्ऱान्–बोले। ४३१४

विद्युत्संकाश मुकुटधारी, रक्तनेत्र विभीषण को निहारकर श्रीराम ने

कहा। चराचरसंकुल इस सृष्टि में तुम्हारे समान तुमको छोड़कर कोई नहीं होगा। होगा तो भी स्वर्ण की समता करने का व्यर्थ प्रयास करनेवाले लोहे के समान होगा। तुम्हारी पूर्ण रूप से बराबरी करनेवाला कोई होगा ही नहीं। ४३१४

ऍन्ऱुरैत्तु तमर रीन्द वॅरिमणिक् कडहत्तोडु
वन्ऱिऱऱ् कळिऱुन् देरुम् वाशियु मणिप्पॊऩ् पूणुम्
पॊन्ऱिणि तूशुम् वाशक् कलवैयुम् बुदुमॆन् शान्दुम्
नन्ऱुऱ ववनुक् कीन्दान् नाहणैत् तुयिलैत् तीर्न्दान् 4315

नाकु अणै–शेषशयन; तुयिलै–निद्रा; तीर्न्तान्–जिन्होंने छोड़ा, उन्होंने; ऍन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; अमरर् ईन्त–देवों द्वारा दत्त; ऍरि–ज्वलन्त; मणि कटकत्तोटु–रत्नकटक और; वल् तिऱल्–बहुत ही बलवान; कळिऱुम्–गज और; तेरुम्–रथ; वाचियुम्–अश्व; मणि पॊन्–रत्न, स्वर्ण; पूणुम्–आभरण; पॊन् तिणि–स्वर्ण-खचित; तूचुम्–वस्त्र; वाचम्–सुवासित; कलवैयुम्–लेप; पुतु–नवीन; मल्–मृदु; चान्तुम्–चंदन; नन्ऱु–श्रेष्ठ; उऱवु–रिश्ते के; अवनुक्कु–उसे; ईन्तान्–दिया। ४३१५

ऐसा कहकर शेषशयन-निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन्होंने देवों द्वारा दिया गया रत्नकटक और कठोर बलवान हाथी, रथ, वाजी, रत्नखचित आभरण, स्वर्ण-वस्त्र, सुवासित लेप, नवीन मृदु चंदन आदि श्रेष्ठ भाई के रिश्ते के उसे दिये। ४३१५

शिरुङ्गपे रियदॆन्ऱ् ऱोदुञ् जॆऴुनहर्क् किऱैयै नोक्कि
मरुङ्गिनि युरैप्प दॆन्नो मऱुवऱु तुणैवऱ् कॆन्ऱाक्
करुङ्गैमाक् कळिऱु मावुङ् गनहमुन् दूशुम् बूणुम्
ऑरुङ्गुऱ वुदविप् पिन्ऱै युदविनन् विडैयु मन्नो 4316

मरुङ्कु–पास में रहे; चिरुङ्क पेरियतु–शृंगवेरपुर; ऍन्ऱु–ऐसा; ओतुम्–कहा जो जाता है; चॆऴु नकर्क्कु–उस समृद्ध नगर के; इऱैयै नोक्कि–राजा को देखकर; मऱु अऱु–अनिंद्य; तुणैवऱ्कु–साथी तुम्हें; इनि–अब; उरैप्पतु–कहने के लिए; ऍन्नो–क्या है; ऍन्ऱा–कहकर; करु–बड़े; कै मा–सूँड़ों वाले; करु–सबल; कळिऱुम्–हाथी और; मावुम्–अश्व; कनकमुम्–कनक और; तूचुम्–वस्त्र; पूणुम्–आभरण; ऑरुङ्कु–एक साथ; उऱ–मिलाकर; उतवि–देकर; पिन्ऱर्–बाद; विटैयुम्–विदा भी; उतविनन्–दिलायी। ४३१६

समृद्ध शृंगवेरपुर के अधिपति गुह से श्रीराम ने कहा कि अकलंक सखा, तुमसे क्या कहूँ? फिर उसे बड़े-बड़े हाथी, अश्व, स्वर्ण, कौशेय-वस्त्र, आभरण आदि एक साथ खूब दिये और विदा भी दिलायी। ४३१६

अनुमनै वालि शेयैच् चाम्बनै यरुक्कन् ऱनद
कनैहऴऱ् कालि ऱानैक् करुणैयङ् गडलु नोक्कि

निन्नैवदऱ्‌ करिदु नुम्मैप्‌ पिरिहॅन्ऱ नीविर्‌ वैप्पुम्‌
ॲन्नदु कावऱ्‌ कॅन्ऱ न्नेवलि न्नेहु मॅन्ऱान्‌ 4317

अनुमनै–हनुमान को; वालि चेयै–वालीपुत्र को; चाम्बनै–जाम्बवान को; अरुक्कन्‌ तनूत–सूर्य-जनित; कनै कऴल्‌–स्वरित पायलधारी; कालिनानै–चरणों वाले सुग्रीव को; करुणै–दया के; अम्‌–सुन्दर; कडलुम्‌–सागर ने भी; नोक्कि–देखकर; नुम्मै–तुमसे; पिरिक–विदा हों; ॲन्ऱल्‌–ऐसा कहना; निनैवतऱ्कु–सोचना भी; अरितु–संकट देता है; नीविर्‌–तुम लोगों का; वैप्पुम्‌–स्थान भी; कावऱ्कु–पालना; ॲनतु–मेरा ही; अतु–काम है; ॲन्ऱन्‌–मेरी; एवलिन्‌–आज्ञा से; एकुम्‌–चलो; ॲन्ऱान्‌–कहा श्रीराम ने। ४३१७

फिर करुणासागर श्रीराम ने हनुमान, वालीसुत, जाम्बवान, अर्कपुत्र वीरकटकचरण सुग्रीव आदि की ओर देखकर कहा कि तुमसे 'विदा लो' कहना सोचने के लिए भी कठिन लगता है। पर तुम्हारे देश भी मेरे पालनार्ह हैं! इसलिए मेरी आज्ञा मानकर तुम लोग अपने-अपने स्थान चले जाओ। ४३१७

इलङ्गैवेन्‌ दऱ्कु मिव्वा ऱिनियन याबुङ्‌ गूऱि
अलङ्गल्वेन्‌ मदुहै यण्णल्‌ विडैहॉडुत्‌ तरुळ लोडुम्‌
नलङ्गॉऴ्पे रुणर्विन्‌ मिक्कोर्‌ नामुरु नॅञ्जर्‌ पिन्नर्क्‌
कलङ्गल रेवल्‌ शॅय्दल्‌ कडनॅनक्‌ करुदिच्‌ चूऴ्न्दार्‌ 4318

इलङ्कै वेन्तऱ्कुम्‌–लंकेश से भी; इव्वाऱु–इस भाँति; इनियन–मधुर; यावुम्‌–वचन सब; कूऱि–कहकर; अलङ्कल्‌–विजयमाला के; वेल्‌–मालाधारी; मतुकै–महानुभाव; अण्णल्‌–प्रभु के; विडै कॉडुत्तु–विदा देकर; अरुळलोडुम्‌–कृपा कहने पर; नलम्‌ कॉऴ्–श्रेष्ठ; पेर्‌ उणर्विन्‌–बड़ी बुद्धि में; मिक्कोर्‌–बढ़े सुग्रीव, गुह, विभीषण आदि; नाम्‌ उरु–भयमिलित; नॅञ्चर्‌–मनवाले; पिन्नर्‌–बाद; कलङ्कलर्‌–अधीरता छोड़कर; एवल्‌ चय्तल्‌–आज्ञा-पालन करना; कडन्‌–कर्तव्य है; ॲन–ऐसा; करुति–सोचकर; चूऴ्न्तार्‌–निर्धारण किया। ४३१८

मालाभूषित मालाधारी वीर तथा महान श्रीराम ने विभीषण से भी ऐसे मधुर विदाई के वचन कहे। श्रेष्ठ ज्ञानी वे लोग विदाई से घबड़ाये पर धीरे-धीरे धीर हुए और निश्चय किया कि आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है। ४३१८

परदनै यिळैय कोवैच्‌ चत्तुरुक्‌ किन्नैप्‌ पण्बार्‌
विरदमा दवनैत्‌ तायर्‌ मूवरै मिदिलैप्‌ पॊन्नै
वरदनै वलङ्गॊण्‌ डेत्ति वणङ्गिनर्‌ विडैयुड्‌ गॊण्डे
शरदमा नॅऱियुम्‌ वल्लोर्‌ तत्तम पदियैच्‌ चार्न्दार्‌ 4319

चरतम्‌–शाश्वत; मा नॅऱियुम्‌–श्रेष्ठ धर्ममार्ग में; वल्लोर्‌–सुदृढ़ उन्होंने;

परतनै–भरत को; इळैय कोवै–लघुराज को; चत्तुरुक्कितनै–शत्रुघ्न को; पण्पु आर्–गुणपूर्ण; विरतम्–व्रती; मातवनै–महातपस्वी को; मूवर् तायरै–तीनों जननियों को; मितिलैप् पौत्तै–मिथिला की देवी; वरतनै–वरद श्रीराम को; वलम् कॉण्टु–परिक्रमा कर; एत्ति–स्तुति करके; वणङ्कितर्–नमस्कार किया; विटैयुम्–विदा भी; कॉण्टु–लेकर; तम् तम्–अपने-अपने; पतियै–स्थान को; चार्न्तार्–प्रस्थान कर गये। ४३१९

शाश्वत सन्मार्गगामी वे लोग भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, गुणपूर्ण व्रती तथा महातपस्वी वसिष्ठ, तीनों राजमाताएँ; मिथिला की देवी और वरद श्रीराम की परिक्रमा, वंदना और विनती करके विदा लेकर अपने-अपने स्थान को प्रस्थान कर गये। ४३१९

कुहनैत्तन् पदियि नुयत्तुक् कुन्ऱिनै वलञ्जॅय् तेरोन्
महनैत्तन् पुरत्तिल् विट्टु वाळॅयिऱ् ऱरक्कर् शूळ्क्
कहनत्तिन् मिशैये येहिक् कनैहड लिलङ्गै पुक्कान्
अहनुऱ्ऱ काद लण्ण ललङ्गल् वीडणन्शॅन् ऱन्ऱे 4320

अकन् उऱ्ऱ–मन में स्थिर; कातल् अण्णल्–प्रेम रखनेवाले; अलङ्कल्–विजयमालाधारी; वीटणन्–विभीषण; कुकनै–गुह को; तन् पतियित्–उसके स्थान में; उयत्तु–छोड़कर; कुन्ऱिनै–मेरु की; वलम् चॅय्तेरोन्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य के; मकनै–पुत्र को; तन्–उसके; पुरत्तिल्–नगर में; विट्टु–छोड़कर; वाळ् ऎयिऱ्–तलवार-सम दाँतों के; अरक्कर् चूळ्–राक्षसों से आवृत; ककनत्तिन्–आकाश; मिचैये–मार्ग में ऊपर; एकि–जाकर; कनै कटल्–गरजते सागर-मध्य; इलङ्कै–लंका में; अन्ऱे–उसी दिन; चॅन्ऱु–जा पहुँचा। ४३२०

आंतरिक प्रीति में बढ़ा तथा महिमावान और विजयमालाविभूषित विभीषण गुह को उसके स्थान में और मेरु की परिक्रमा करनेवाले सूर्य के पुत्र सुग्रीव को उसके स्थान में छोड़ देकर गगनमार्ग से गया और गर्जनशील सागर से आवृत लंका पहुँचा। ४३२०

ऐयनु मवरै नीक्कि यरुळ्शॅरि तुणैव रोडुम्
वैयह मुळ्दुञ् जॅङ्गोन् मनुनॅऱि मुऱैयिऱ् चॅल्लच्
चॅय्यमा महळु मऱ्ऱच् चॅहतल महळुन् जऱ्ऱुम्
नैयुमा ऱिन्ऱिक् कात्ता नानिलप् पॊऱैहळ् तीर्त्ते 4321

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; अवरै नीक्कि–उन्हें आज्ञा देकर; अरुळ् चॅरि–अपनी कृपा के पूर्ण पात्र; तुणैवरोटुम्–साथी, भाइयों के साथ; वैयकम्–संसार; मुळुमतुम्–भर में; चॅङ्कोल्–उत्तम राजदण्ड; मनुनॅऱि–मनुधर्म के अनुसार; मुऱैयिल्–उचित क्रम में; चॅल्ल–चलाते हुए; चॅय्य–सौभाग्यदायिनी; मा मकळुम्–भगवती लक्ष्मी; मऱ्ऱुम्–और; अ–वे; चॅकतलम् मा मकळुम्–जगतल की ईश्वरी

भूदेवी; नैयुम् आक्र–कष्ट के हेतु; इन्ऱि–बिना ही; पॊऱैकळ्–भार का; तीर्त्तु–निवारण करके; कात्तान्–पालन किया। ४३२१

प्रभु श्रीराम उन्हें विदा देकर अपने पूर्ण प्रेम के पात्र भाई साथियों के साथ भू भर में राजदंड मनुनीति के अनुसार चलाने लगे। उनके शासन में न सौभाग्यदायिनी लक्ष्मी को कोई शिकायत रही; न जगतीतल की ईश्वरी भूमिदेवी को कुछ दुःख करने का संदर्भ आया। भूभार-निवारण करते हुए उन्होंने राज्य किया। ४३२१

उम्बरो डिम्बर् काऱु मुलहमो रेऴु मेऴुम्
ऎम्बॆरु मानॆन् ऱेत्ति यिऱैञ्जिनिन् ऱेवल् शॆय्यत्
तम्बिय रोडुन् दानुन् दरुममुन् दरणि कात्तान्
अम्बरत् तनन्दर् नीङ्गि ययोत्तियिल् वन्द वळ्ळल् 4322

अम् परत्तु–अंबर (क्षीरसागर) में; अनन्तर्–निद्रा; नीङ्कि–त्यागकर; अयोत्तियिल्–अयोध्या में जो; वन्त–आये थे; वळ्ळल्–उन उदार प्रभु ने; उम्परोट्–ऊपर के लोक से; इम्पर्–इस लोक; काऱुम्–तक; उलकम्–लोक; ओर् एऴुम् एऴुम्–सात और सात चौदहों भुवनों के; ऎम् पॆरुमान्–हमारे प्रभु; ऎन्ऱु एत्ति–कहकर स्तुति कर; इऱैञ्चि निन्ऱु–विनत रहकर; एवल् चॆय्य–सेवा करते; तम्पियरोटुम् तानुम्–भाई के साथ, खुद और; तरुममुम्–धर्म के साथ; तरणि–भूमि का; कात्तान्–पालन किया। ४३२२

अंबर के क्षीरसागर में अपना शयन और अपनी निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन उदार श्रीमान् श्रीराम ने ऊपर से नीचे तक के चौदहों भुवनों का अपने भाइयों के साथ रहकर पालन किया। धरणी के साथ धर्म का भी पालन हुआ। और सारे लोकवासी हमारे प्रभु कहकर उनकी वंदना करते, स्तुति करते और उनकी सेवा करते रहे। ४३२२

फलश्रुति

इरावणन् तन्नै वीट्टि यिरामनाय् वन्दु तोन्ऱि
तरादल मुऴुदुङ् गात्तुत् तम्बियुन् दानु माहप्
पराबर माहि निन्ऱ पण्बिनैप् पहरु वार्हळ्
नरापदि याहिप् पिन्नु नमनैयुम् वॆल्लु वारे 4323

परापरम्–परात्पर पदार्थ; इरामनाय्–श्रीराम के रूप में; वन्तु–अवतार ले आकर; तोन्ऱि–प्रकट रहकर; इरावणन् तन्नै–रावण को; वीट्टि–मारकर; तम्पियुम् तानुम् आक–भाई और खुद; तरातलम्–धरातल; मुऴुतुम्–सारा; कात्तु–पालन करके; आकि निन्ऱ–इस भाँति जो रहे; पण्पिनै–उस चरित्र को; पकरुवार्कळ्–कहनेवाले; नरापति–नराधिपति; आकि–बनकर; पिन्नुम्–फिर; नमनैयुम्–यम को भी; वॆल्लुवारे–जीत लेंगे। ४३२३

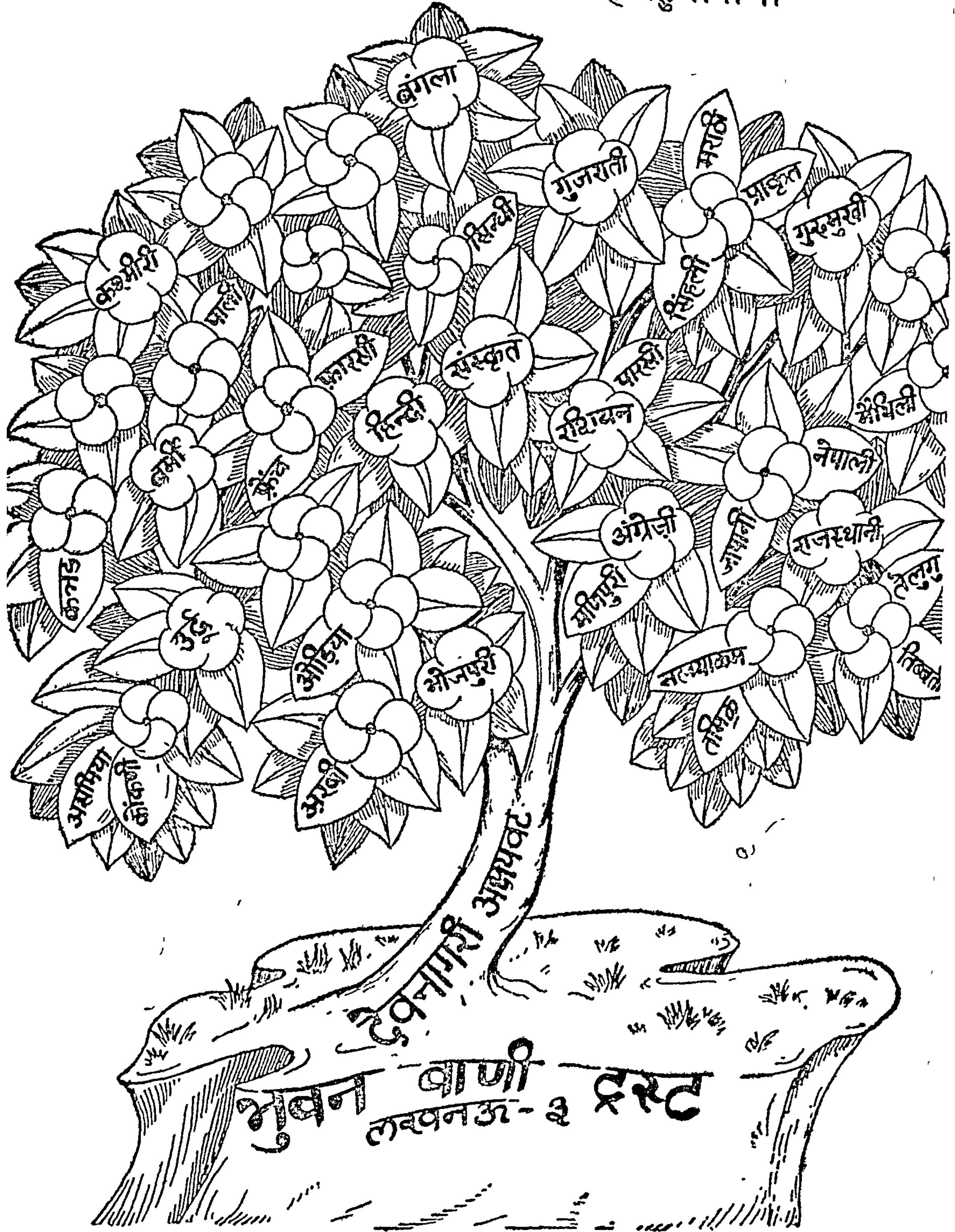
परात्पर पदार्थ वह आदिपुरुष श्रीराम के रूप में प्रगट हुआ। उन्होंने रावण का संहार करके भाई और खुद मिलकर धरातल सारा रक्षित किया। ऐसा जो रहे उनके गुणगण-वर्णन करते उनके चरित्रगान करनेवाले लोग नराधिपति बनेंगे और फिर यम पर भी विजय पा जायँगे। ४३२३

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) समाप्त ॥ कम्ब रामायण संपूर्ण ॥

॥ जय श्रीरामचरणों की ॥



'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

